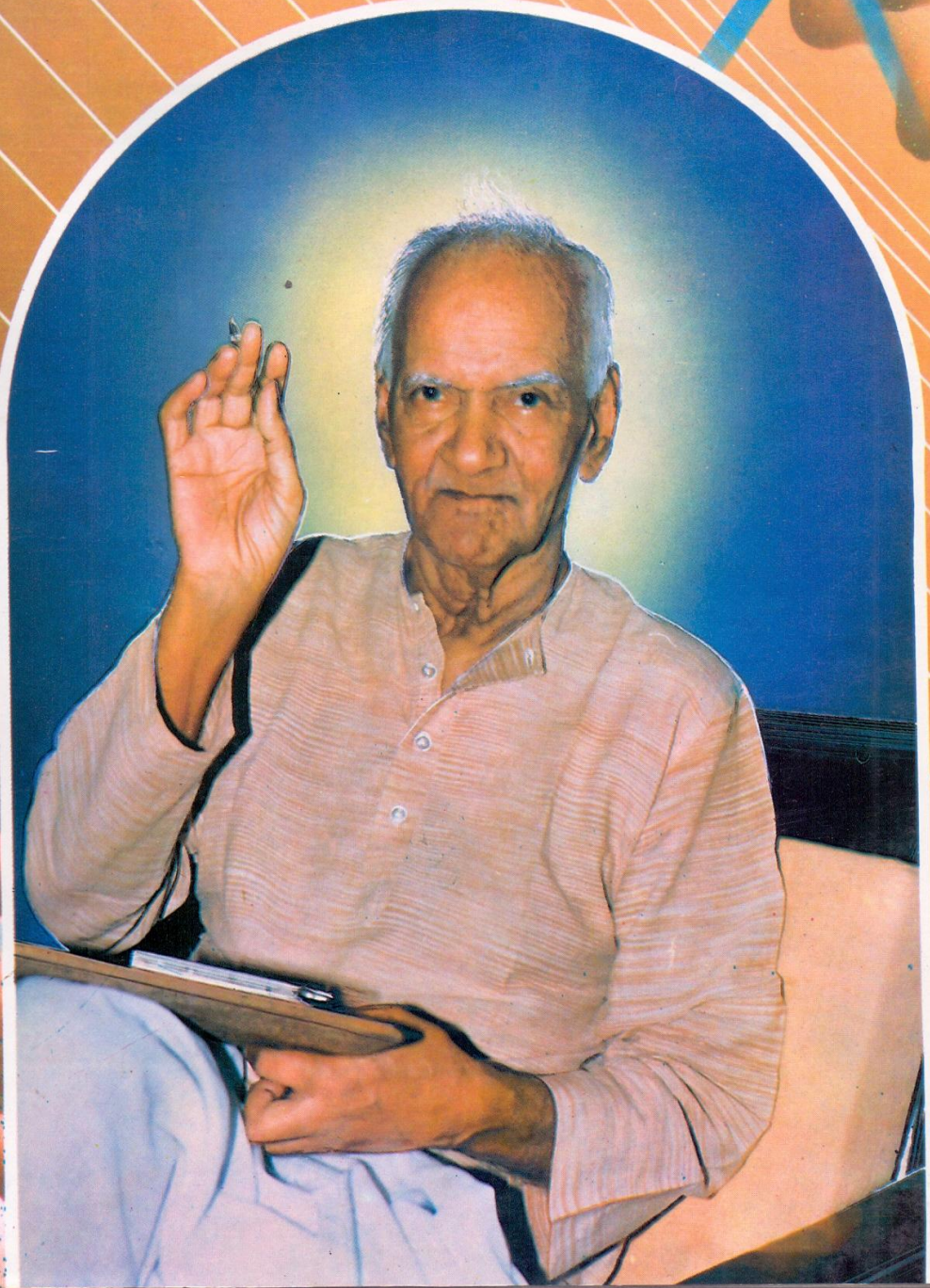
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

प्राण शक्ति : एक दिव्य विभूति

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस



प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य :150/-
सत्तर खण्डों के सैट का मूल्य ७०००)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ॥

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ॥

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की., उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी। उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी। धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है। १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है। १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया। कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था। तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी-रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं। हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया। परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था। तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए। स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये। एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे। इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक। इसके

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

भूमिका

प्राण शक्ति को एक प्रकार की सजीव विद्युत शक्ति कहा जा सकता है जो समस्त संसार में वायु, आकाश, गर्मी एवं ईथर-प्लाज्मा की तरह समायी हुई है । यह तत्त्व जिस प्राणी में जितना अधिक होता है, वह उतना ही स्फूर्तिवान, तेजस्वी, साहसी दिखाई पड़ता है । शरीर में संव्याप्त इसी तत्त्व को जीवनीशक्ति अथवा 'ओजस' कहते हैं और मन में व्यक्त होने पर यही तत्त्व प्रतिभा या 'तेजस्' कहलाता है । अपनी शक्ति क्षरण के द्वारा बंद कर लेने के कारण शारीरिक एवं मानसिक ब्रह्मचर्य साधने वाले साधकों को मनस्वी एवं तेजस्वी इसी कारण कहा जाता है । यह प्राणशक्ति ही है जो कहीं बहिरंग के सौंदर्य में, कहीं वाणी की मृदुलता व प्रखरता में, कहीं प्रतिभा के रूप में, कहीं कला-कौशल व कहीं भक्ति भाव के रूप में देखी जाती है । वस्तुतः प्राणशक्ति एक बहुमूल्य विभूति है । यदि इसे संरक्षित करने का मर्म समझा जा सके तो स्वयं को ऋद्धि-सिद्धि संपन्न-अतीन्द्रिय सामर्थ्यों का स्वामी बनाया जा सकता है ।

हम सबके शरीर में पाँच प्राण पंचदेवों के रूप में विद्यमान हैं एवं प्राणाग्नि का अक्षय भण्डार कुण्डलिनी शक्ति के रूप में विद्यमान है । प्राण योग की उच्चस्तरीय साधनाओं द्वारा रयि से मंथन की तरह इसी कुण्डलिनी-प्राणाग्नि को मथा जाता है एवं स्वयं को प्राण ऊर्जा से अभिपूरित बनाया जाता है, जो किसी भी वैभवशाली भण्डार की तुलना में कहीं अधिक वरेण्य है । मानवी काया में प्राणशक्ति के इस भण्डार को विभिन्न प्रकार के उत्तरदायित्व निबाहते देखा जा सकता है । प्राण एक ही है, अनेक नहीं किन्तु, विभिन्न प्रयोजनों में उसकी व्यवहार पद्धति पृथक-पृथक हैं । मानव शरीर में प्राण को दस भागों में विभक्त किया गया है । इनमें पाँच प्राण और पाँच उपप्राण हैं । प्राणमय कोश जो पंचकोशों में द्वितीय आवरण है, इन्हीं दस के सम्मिश्रण से बनता है । पाँच मुख्य प्राण हैं-अपान, समान, प्राण, उदान और व्यान तथा उपप्राण हैं-देवदत्त, वृकल, कर्म, नाग और धनंजय । शरीर क्षेत्र में इन सभी के कार्य अलग-अलग हैं । अपान शरीर के मलों के निष्कासन से संबंधित है तथा मूलाधार चक्र को प्रभावित करता है । समान सप्त धातुओं-रसादि का परिपाक करता है और मणिपूरित चक्र से संबंधित इसे बताया गया है । प्राण का कार्य श्वांस-प्रश्वांस की क्रिया का सम्पादन है तथा यह अनाहत चक्र को प्रभावित करता है । उदान-ग्रहण प्रक्रिया व ऊर्ध्वगमन से संबंधित है । विशुद्धि चक्र इससे प्रभावित होता है । व्यान अंतिम प्रमुख प्राण तत्त्व है जो रक्त आदि के संपूर्ण शरीर में संचार से संबंधित है एवं स्वादिष्ठाव चक्र से संबंधित बताया गया है । प्राण के साथ नाग, अपान के साथ कूर्म, समान के साथ वृकल, उदान के साथ देवदत्त और व्यान के साथ धनंजय उनके सहायकों के रूप में जुड़े रहते हैं ।

परमपूज्य गुरुदेव ने पंचप्राण-पंचदेवों-पंचकोशों के इस जटिल गुत्थियों भरी एनॉटामी पर प्रकाश डालकर यह समझाया है कि प्राणवान कैसे बना जाता है ? प्राण शक्ति का अभिवर्धन कैसे संभव है ? प्राण शक्ति के संवर्धन से स्वास्थ्य संवर्धन कैसे होता देखा जाता है तथा प्राण शक्ति के शरीर में होने के प्रमाण कभी-कभी हमें ज्वालमाल के-आग के शोलों के फड़कने के रूप में कैसे देखे जाते हैं ? यह मानवीय विद्युत ही है जो कभी-कभी स्पार्क के रूप में-चिनगारी के रूप में भड़क उठती है एवं शरीर से निकलकर अपनी उपस्थिति का आभास देने लगती है । कभी-कभी स्वदहन के रूप में यह किसी को भी जला भी डालती है । यह इसका ज्वालमाल वाला भयावह रूप है जो बताता है कि कितना प्रचण्ड शक्ति का-प्राण ऊर्जा का भण्डार अंदर भरा पड़ा है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने मानवीय विद्युत के चमत्कार व मैस्मेरिज्म की शक्ति पर काफी पूर्व पुस्तकें लिखीं थीं जो बड़ी लोकप्रिय हुई थीं । इन पुस्तकों का सार संक्षेप भी इस खण्ड में है । यह बताता है कि मनोनिग्रह से-प्राण शक्ति के संचय से व्यक्ति जड़-चेतन सभी को प्रभावित कर सम्मोहित कर लेने की शक्ति रखता है । यह तभी संभव है, जब वह अपने अंदर सोये पड़े जखीरे के महत्त्व को जान सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति का सुनियोजन ही अनेकानेक चमत्कारी शक्तियों के अतीन्द्रिय सामर्थ्य के विकास के रूप में देखा जा सकता है । इसमें साधक को प्राण प्रवाह को सही दिशा भर देनी होती है । किसी-किसी में यह बिना किसी पुरुषार्थ-प्रयास-योगाभ्यास के स्वत: ही उद्‌भूत होती देखी जाती है । उसके पीछे एक ही स्पष्टीकरण दिया जा सकता है कि या तो यह पूर्वजन्म के संचित कर्मों के कारण पैदा हुई विभूतियाँ हैं जो विलक्षण क्षमता संपन्न व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देती हैं अथवा यह प्राण शक्ति के प्रवाह का अनियमित बहाव है जो इस रूप में प्रस्फुटित होता दिखाई दे रहा है । इसका अर्थ यह नहीं कि ये सभी महानता की सूचक हैं । ये मात्र प्राण शक्ति की उपस्थिति की परिचायक हैं । महानता तो इस शक्ति प्रवाह को बनाए रख-सुनियोजित कर मानव मात्र के मंगल के निमित्त उसका प्रयोग करने में है । अतीन्द्रिय क्षमताओं का आधार क्या है, इस पर विज्ञान व अध्यात्म दोनों ही पक्षों की ओर से पैरवी करते हुए पूज्यवर ने इसमें विस्तार से सांगोपांग विवेचन किया है । अनेकानेक भविष्य वक्ताओं के संदर्भ इसमें दिये गये हैं । पूर्वाभास, दूरदर्शन, पदार्थ संचालन, पदार्थ हस्तान्तरण, दूरश्रवण, दूरानुभूति, स्वप्नों में अनुभूति, विलक्षण आविष्कार आदि की अनेकानेक घटनाओं से प्राणशक्ति रूपी दिव्य विभूति के एक विस्तृत संसार की जानकारी हमें मिलती है । निश्चित ही इस खण्ड का विवेचन करने पर हमारे पाठक एक ऐसी विधा को विस्तार से जान समझ सकेंगे जो जीवन में उतारने पर अनेकानेक चमत्कारी क्षमताएँ हस्तगत कराती हैं ।

ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अध्याय-१	
प्राण शक्ति : एक बहुमूल्य विभूति	
मानवी विद्युत का प्रचण्ड प्रवाह प्राण शक्ति में	१.१
तेजोवलय : एक बहुमूल्य आत्मिक विभूति	१.३
मनुष्य में हिलोरें लेता चुम्बकीय महासागर	१.६
मानवी सत्ता विद्युत्स्फुल्लिंगों का क्रीड़ा कल्लोल मात्र	१.९
मनुष्य और धरातल का तेजोवलय	१.१२
मानवी तेजोवलय	१.१४
जीवनी शक्ति की विद्युत चुम्बकीयता	१.१६
मानवी तेजोवलय एक आध्यात्मिक सम्पदा	१.१८
प्रभा-मण्डल द्वारा पढ़ा जायेगा मनुष्य अब ?	१.२०
प्राण शक्ति और वैज्ञानिक अभिमत	१.२२
प्राण संस्थान : कितना स्पष्ट, कितना अद्‌भुत ?	१.२४
विश्व प्राण और व्यष्टि प्राण का सुयोग संयोग	१.२८
प्राण शक्ति का प्रचण्ड विद्युत प्रवाह	१.२९
एकाग्रता का प्रतिफल	१.३०
मन ही मित्र, मन ही शत्रु	१.३०
परा प्रकृति की चेतना शक्ति	१.३०
प्राण-तत्व की उपलब्धि	१.३१
शरीर और मन पर जीवन तत्व का प्रभाव	१.३१
श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया	१.३२
प्राण शक्ति एक जीवन्त ऊर्जा	१.३२
जैव चेतना की सर्वोच्च शक्ति का सुनियोजन	१.३५
मानवी विद्युत के चमत्कार	१.३७
शरीर में एक और शरीर : प्राण-शरीर	१.३९
गुप्त बातों का जानना	१.४१
महामानवों से सम्बद्ध उपकरण और उनसे लिपटी प्राण-सत्ता	१.४२
अध्याय-२	
प्राण-चेतना का मर्म	
मनुष्य की प्राण ऊर्जा और उसका अभिवर्धन	२.१
आत्म सत्ता में प्राण सत्ता की अवधारणा	२.३
तेजोवलय का वैज्ञानिक आधार	२.५
प्राण ऊर्जा के विभिन्न पक्षों का वैज्ञानिक विश्लेषण	२.८
उच्चस्तरीय रहस्यमय प्राण-तत्व	२.१०
मानवी विद्युत शक्ति की गरिमा और उपयोगिता	२.१२
आभामण्डल रूपी विद्युत्सम्पदा का सुनियोजन सदुपयोग	२.१४
अन्तःस्थिति का प्रकटीकरण तेजोवलय के रूप में	२.१६
कैसे बढ़ायें ? अपना तेजोवलय एवं आत्मबल	२.१७
प्राण विद्युत की चमत्कारी कार्य क्षमता	२.१९
सूक्ष्म शरीर का प्रतीक तेजोवलय	२.२३
मानवी काया में प्रचण्ड प्राण ऊर्जा का अस्तित्व	२.२५
प्राण ऊर्जा हमारी सर्वोपरि सम्पदा	२.२८
पेड़ पौधों में भी मनुष्य स्तर की बिजली होती है	२.३०
प्राण चेतना का रहस्य समझें : महाप्राण बनें	२.३२
मानवी चुम्बकत्व : प्रतिभा का उद्‌गम स्रोत	२.३३
प्राणाग्नि का पुंज यह देह पिंजर	२.३६
शरीर, एक बिजलीघर	२.३८
जैव चुम्बकत्व में निहित शक्ति सम्वर्धक सामर्थ्य	२.४०
चुम्बकत्व व्यक्ति और विश्व का आधार	२.४२
मनुष्य शरीर की चमत्कारी विद्युत शक्ति	२.४६
अध्याय-३	
पाँच प्राण : पाँच देव	
क्या हम उतने ही हैं जितना स्थूल शरीर	३.१
सूक्ष्म शरीर का शक्तिशाली व्यक्तित्व	३.३
बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी	३.६
स्थूल ही नहीं सूक्ष्म का भी ध्यान रखें	३.११
सूक्ष्म शरीर की प्राथमिक ईंटें प्राण-स्फुल्लिंग	३.१२
परा प्रकृति की चेतना शक्ति	३.१२
प्राण शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण	३.१५
मनुष्य ही अपवाद नहीं	३.२१
पाँच प्राण, पाँच शक्ति धाराएँ	३.२३
प्राणों का क्षय : मृत्यु का भय	३.२५
अन्तरंग में उतरें : आत्म बल प्राप्त करें	३.२९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
अध्याय-४	
प्राणवान बनने की प्रक्रिया	
प्राण शक्ति की सर्व समर्थता	४.१
मनुष्य की तेजस्विता का अन्तर्निहित स्रोत भण्डार	४.३
काय ऊर्जा के सुनियोजन से प्रखरता का विकास	४.४
यह प्राण विद्या ही हमें समर्थ बनायेगी	४.६
कैसे जगायें प्रसुप्त प्राणाग्नि को	४.८
प्राणतत्व के उभार की चमत्कारी परिणति	४.९
प्राण विद्युत का परिमार्जन एवं उन्नयन	४.१०
प्राण शक्ति का उदात्तीकरण	४.१२
चुम्बकत्व का असाधारण प्रभाव	४.१३
तेजोवलय अथवा बायोप्लाज्मा	४.१४
प्राणाग्नि : अणु शक्ति से भी बृहत्तर	४.१५
प्राण ऊर्जा का सम्वर्धन, चेतना का उदात्तीकरण	४.१७
ओजस् और ब्रह्मवर्चस का भी महत्त्व समझें	४.१९
प्राण ऊर्जा बनाम अतीन्द्रिय क्षमता	४.२३
जैव चुम्बकत्व की चमत्कारी शक्ति	४.२६
आभामण्डल की प्रभाव-क्षमता अब सन्देह से परे !	४.२८
प्राण शक्ति का आकर्षण अवधारणा	४.३१
अध्याय-५	
प्राण शक्ति के अभिवर्धन द्वारा स्वास्थ्य-सम्वर्धन	
महान प्राण-तत्व	५.१
प्राण चिकित्सा की विशेषता	५.३
प्राण चिकित्सा का इतिहास	५.३
प्राणाकर्षण क्रिया	५.४
रोगों का निदान	५.५
रोगी का उपचार	५.६
किस रोग में क्या उपचार ?	५.८
प्राण चिकित्सा के प्रमुख उपचार	५.१०
(१) मार्जन	५.१०
मार्जन की तैयारी	५.१०
(२) प्राणमय श्वासोच्छ्वास	५.१२
कुछ रोग निवारक श्वास क्रियाएँ	५.१३
(३) स्पर्श क्रिया	५.१५
(४) कम्प उपचार	५.१६
(५) मन्त्रित वस्तुओं द्वारा उपचार	५.१६
फलालेन को मन्त्रित करना	५.१७
कागज में शक्ति भरना	५.१८
मन्त्रित औषधियाँ	५.१८
अन्य उपचार	५.१८
द्रव्य पदार्थों को अभिमन्त्रित करना	५.१८
प्राण चिकित्सकों को निजी सलाह	५.१८
अपना इलाज	५.२०
किसी खास रोग का उपचार	५.२१
मानसिक चिकित्सा	५.२२
प्राण शक्ति का चिकित्सा उपचार में प्रयोग	५.२७
प्राण शक्ति द्वारा कठिन रोगों का उपचार	५.२९
प्राण शक्ति से शारीरिक और मानसिक उपचार	५.३१
प्राण ऊर्जा से उपचार का विज्ञान सम्मत आधार	५.३३
चुम्बकत्व की सामर्थ्य और उसका उच्चस्तरीय उपयोग	५.३५
मानवी विद्युत इस जगत की प्रचण्डतम ऊर्जा	५.३८
मनुष्य शरीर की अद्‌भुत बिजली और उसके चमत्कार	५.४०
मनुष्य का प्रचण्ड चुम्बकत्व और तेजोवलय	५.४३
मनुष्य में संव्याप्त जैव विद्युत	५.४५
मनुष्य की सशक्त प्राण-ऊर्जा	५.४६
वर्चस की सिद्धि एवं युग समस्याओं का समाधान	५.४९
अध्याय-६	
प्राण ऊर्जा का ज्वालमाल रूप में प्रकटीकरण	
क्यों धधक उठते हैं अग्नि के ये शोले	६.१
भाग रे भाग ! ..... शरीर में आग !	६.३
शरीर एक विद्युत संस्थान	६.४
मनुष्य भी ज्वालामुखी की तरह फूटता है	६.५
प्राण ऊर्जा का ज्वाला रूप में प्रकटीकरण	६.६
उनके शरीर से शोले फूटते हैं	६.८
प्राणाग्नि के जब-तब फूटने वाले शोले	६.१०
कायाग्नि के भड़कते शोले	६.१३
मनुष्य है, जीता-जागता एक बिजलीघर	६.१५
काय बिन्दु में समाया सिन्धु	६.१७
काया में समाया ऊर्जा का जखीरा	६.१९
मानवी काया में सन्निहित ऊर्जा भण्डार	६.२०
मानवी काया : एक उच्चस्तरीय विद्युत्भाण्डागार	६.२३
विलक्षणताओं की विभूतियों का भण्डार : मनुष्य	६.२६
मनुष्य शरीर एक अच्छा खासा बिजलीघर	६.२७
शरीरगत ऊर्जा एक प्रचण्ड शक्ति : भाण्डागार	६.३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
अध्याय-७	
प्राण-तत्व के सदुपयोग को समझें और लाभ उठायें	
मनुष्य की विद्युत शक्ति का उभार एवं सुनियोजन	७.१
सदुपयोग और दुरुपयोग प्राणाग्नि का भी समझें	७.२
प्राण विद्युत के भले-बुरे उपयोग	७.४
प्राणे सर्व प्रतिष्ठतम्	७.७
प्राण प्रवाह के सुनियोजन से चिरयौवन	७.९
प्राण शक्ति का अपव्यय मूर्खतापूर्ण अनाचरण	७.१२
अन्तरंग ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण उपयोग	७.१३
प्राण-सत्ता का कलेवर यह कायपिंजर	७.१७
मनुष्य शरीर की बिजली और उसके चमत्कार	७.२०
इच्छाशक्ति बनाम प्राण शक्ति	७.२२
विचार सम्प्रेषण बिना माध्यम के भी सम्भव	७.२४
आइए ! देखें विचारों के रंग एवं रूप को	७.२६
विचारों का रंग-रुचि से सम्बन्ध	७.२८
शरीरगत विद्युतशक्ति को सुरक्षित रखें, बढ़ायें	७.२९
मुट्ठी में मौत और जेब में जीवन	७.३१
अध्याय-८	
मानवीय विद्युत के चमत्कार	
आत्म तेज का परिचय	८.१
मनुष्य की शारीरिक-विद्युत !	८.३
(१) काले पर्दे की सहायता से	८.४
(२) आकर्षक प्रभाव	८.४
(३) जल का स्वाद परिवर्तन	८.४
(४) चक्र में झनझनाहट	८.४
(५) मृत वस्तुओं को जीवित रखना	८.५
(६) लटकती हुई वस्तु को झुलाना	८.५
(७) जीव-जन्तुओं पर प्रतिबन्ध	८.५
(८) फोटो खींचना	८.५
(९) चौंका देना	८.५
(१०) विचार उत्पन्न करना	८.६
भोजन की आन्तरिक पवित्रता	८.६
जड़ वस्तुओं पर प्रभाव	८.८
विचारों की बिजली	८.१३
स्त्री पुरुष का आकर्षण	८.१५
सत्संग	८.१७
रोगों का निवारण	८.२१
बच्चों की सावधानी	८.२३
आत्म तेज बढ़ाने के उपाय	८.२६

विषय	पृष्ठ
अध्याय-९	
मेस्मेरिज्म क्या है ?	
मेस्मेरिज्म और योग	९.१
मेस्मेरिज्म का इतिहास	९.३
सम्मोहन अथवा हिप्नोटिज्म	९.४
मेस्मेरिज्म सम्बन्धी शोधें	९.५
मेस्मेरिज्म का तत्व ज्ञान	९.७
मेस्मेरिज्म का अभ्यास	९.१०
निद्रित करने की कुछ विधियाँ	९.१३
अपने ऊपर मेस्मेरिज्म करना	९.१५
(१) आरोग्य प्राप्ति के लिए	९.१७
(२) ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए	९.१७
(३) मानसिक शक्तियों की उन्नति के लिए	९.१७
(४) आत्मिक बल बढ़ाने के लिए	९.१७
(५) किसी सांसारिक वस्तु को प्राप्त करने के लिए	९.१८
(६) प्रार्थना द्वारा इच्छा पूर्ति	९.१८
मेस्मेरिज्म की सिद्धियाँ	९.१८
(१) दूरस्थ व्यक्ति पर प्रभाव-प्रेरणा	९.१८
(२) दूसरों के कुप्रयोग से बचाव	९.१९
(३) दूरदर्शन	९.१९
(४) भविष्य-ज्ञान	९.२०
(५) व्यक्तित्व की पहचान	९.२०
(६) सन्देश पहुँचाना	९.२०
(७) दूसरों के मन की बात जानना	९.२१
(८) पीड़ा दूर करना	९.२१
(९) शक्ति-पात	९.२१
हिप्नोटिज्म के तीन खेल	९.२१
(१) दृष्टि बन्ध (Sightism)	९.२२
(२) प्रेत-विद्या (Spiritualism)	९.२३
(३) सम्मोहन (Hypnotism)	९.२४
नकली मेस्मेरिज्म	९.२५
(१) यह कौन है ? इन्सान	९.२६
(२) पेशा	९.२६
(३) इसे बताओगे ?—कपड़ा ।	९.२६
(४) इसे बताओ ?—कोई रंगीन चीज ।	९.२६
(५) इसे बता सकते हो ?—कागज ।	९.२६
(६) यह बताओगे ?—सिक्के ।	९.२६
(७) यह बताओगे ?—संख्या ।	९.२६
(८) यह बता सकते हो ?—एक चीज ।	९.२६
(९) मैं क्या पकड़े हूँ ?—कोई जिस्म ।	९.२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
मेस्मेरिज्म का प्रयोजन	६.२७
अचेतन का अनावरण सम्मोहन द्वारा सम्भव	६.२७
सम्मोहन विद्या के चमत्कार	६.३०
सम्मोहन से मानसोपचार	६.३२
सम्मोहन और उसकी क्षमता	६.३३
समूचे व्यक्तित्व को ही सम्मोहन बनायें	६.३४
अध्याय-१०	
दिव्य शक्तियों का उद्भव प्राण शक्ति से	
अतीन्द्रिय सामर्थ्यों का मूल स्रोत : प्राणमय कोश	१०.१
अन्तर्निहित प्रकाश और उसकी अपारशक्ति	१०.४
दूरदर्शन के छिपे सत्य	१०.६
आज्ञा-चक्र	१०.१०
विचार सम्प्रेषण विज्ञान	१०.१०
अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति	१०.११
वेधक दृष्टि भी असम्भव नहीं	१०.१३
गुरुत्वाकर्षण से मुक्त प्राण चेतना	१०.१४
मानवी विद्युत अति प्रचण्ड शक्ति	१०.१६
शक्ति का विपुल भण्डार अपनी मुट्ठी में	१०.१६
प्राण की अजस्र धारा हमारे लिए	१०.१८
मनुष्य की तेजस्विता का अन्तर्निहित भण्डार	१०.१८
गायत्री उपासना : प्रकाश की साधना	१०.१९
गायत्री का देवता सविता	१०.२१
गायत्री उपासना से प्राण शक्ति का अभिवर्धन	१०.२२
प्राण शक्ति से सर्वतोन्मुखी कल्याण साधना	१०.२५
टेलीपैथी : एक विज्ञानसम्मत प्रक्रिया	१०.२८
विचार संचालन का यन्त्र	१०.२८
मानसिक शक्तियों की परिपुष्टि	१०.२९
टेलीपैथी का प्रथम तत्व : एकाग्रता	१०.२९
शिथिलीकरण का प्रयोग	१०.३०
टेलीपैथी का द्वितीय तत्व : उर्वरा कल्पना	१०.३०
तृतीय तत्व : दृढ़ इच्छाशक्ति	१०.३१
विचार की लहरें और कम्पन्न	१०.३२
माध्यम ईथर पदार्थ	१०.३२
भाव-समाधि	१०.३५
भाव समाधि के अभ्यास में सावधानी	१०.३५
टेलीपैथी	१०.३६
विचार संचालन की क्रिया के अभ्यास	१०.३७
विचार पुष्टीकरण के दो और उपाय	१०.३९
इस विद्या के अन्य उपयोग	१०.३९
कुछ स्मरणीय तत्व	१०.४०

विषय	पृष्ठ
अध्याय-११	
अतीन्द्रिय क्षमताओं का आधार	
अतीन्द्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि व आधार	११.१
कल्पनाएँ सजीव सक्रिय	११.२
श्रवण और दर्शन की दिव्य शक्तियाँ	११.८
क्या दृष्टि सम्पन्न हुआ जा सकता है ?	११.१४
अन्तर्निहित विभूतियों का आभास प्रकाश	११.१६
पूर्वाभास और स्वप्न	११.१७
पूर्वाभास : संयोग नहीं सत्य	११.२३
पूर्वाभास से मार्गदर्शन	११.२५
भूत और भविष्य भी ज्ञात और ज्ञेय	११.२७
सपनों के झरोखे से	११.३१
पूर्वाभास और अतीन्द्रिय दर्शन के वैज्ञानिक आधार	११.३६
समय फैलता व सिकुड़ता है	११.३८
समय और चेतना से परे	११.३९
अध्याय-१२	
अतीन्द्रिय शक्ति का उद्भव और विकास	
अतीन्द्रिय शक्ति का विकास हर किसी के लिए सम्भव	१२.१
अतीन्द्रिय शक्तियों का आधार हमारा मन	१२.३
अतीन्द्रिय शक्तियाँ और उनका प्रयोजन	१२.६
अतीन्द्रिय क्षमता कोरी करामात नहीं	१२.९
अतीन्द्रिय क्षमताओं के बीजाँकुर जो कभी भी कहीं भी उग सकते हैं	१२.१०
किनमें जागती है अतीन्द्रिय सामर्थ्य ?	१२.१३
अतीन्द्रिय क्षमता बनाम प्रचण्ड आत्म-शक्ति	१२.१५
उनकी आँखों से वेधक किरणें निकलती थीं	१२.१८
मनुष्य की विलक्षण सत्ता	१२.२०
मनुष्य की विलक्षण अतीन्द्रिय क्षमताएँ	१२.२१
क्या आप बनना चाहेंगे चलते-फिरते कम्प्यूटर	१२.२२
अविज्ञात रहस्यों से भरी मानवी चेतना	१२.२४
अतीन्द्रिय क्षमताओं का सुविस्तृत भण्डार	१२.२६
अतीन्द्रिय क्षमताएँ अभ्यास की देन	१२.२९
जन्मजात अर्जित अतीन्द्रिय सामर्थ्य	१२.३१
अतीन्द्रिय चेतना निराधार नहीं, विज्ञान सम्मत	१२.३२
अतीन्द्रिय शक्ति : विकास के प्राचीन और नवीन प्रयोग	१२.३५
ज्ञानेन्द्रियों की देव शक्तियाँ	१२.३९
सिरजनहार का जगती को अनुपम उपहार	१२.४२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
अध्याय-१३	
प्रसुप्त की जागृति द्वारा भविष्य-ज्ञान सम्भव है	
प्रसुप्त पड़ा अतीन्द्रिय सामर्थ्य का जखीरा	१३.१
मन के झरोखे से भविष्य की झाँकी	१३.३
क्या सुदूर अतीत का पुनरावलोकन सम्भव है ?	१३.४
भूत व भविष्य दोनों को वर्तमान में देखा जाना जा सकता है !	१३.७
वर्तमान की मुट्ठी में भूत और भविष्य-दर्शन	१३.८
अविज्ञात भूत और अकल्पित भविष्य जानना भी सम्भव है	१३.१०
न यहाँ भूत है, न वर्तमान, न भविष्यकाल	१३.१५
चलें काल से परे, समझें महाकाल को	१३.१७
भविष्यवक्ता बन सकना हर किसी के लिए सम्भव है	१३.२१
मानवी अन्तराल में सन्निहित दिव्य विभूतियाँ	१३.२४
अनायास ही मिलने वाला श्रेय	१३.२७
सम्भावित घटनाक्रमों के पूर्वाभास	१३.३०
क्रिया-कलाप प्रत्यक्ष प्रेरणा परोक्ष	१३.३३
मात्र संयोग नहीं, अन्तःस्फुरणा से उपजे चमत्कार	१३.३३
अन्दर का आईना साफ करें, भविष्य ज्ञान पायें	१३.३६
जगायें तो सही इस प्रसुप्त जखीरे को	१३.३८
अन्तर्जगत के सन्देशवाहक पूर्वाभास	१३.४०
आत्मा के सनातनत्व का प्रमाण पूर्वाभास	१३.४१
हमारी प्रसुप्त एवं जागृत अतीन्द्रिय क्षमताएँ	१३.४२
अतीन्द्रिय क्षमताएँ कल्पना नहीं, विज्ञान सम्मत	१३.४५
वर्तमान के आँगन में भूत और भविष्यत्	१३.४८
नियति द्वारा प्रस्तुत मानवीय सत्ता की विलक्षणताओं का परिचय	१३.५०
विज्ञान सम्मत विचार सम्प्रेषण विधा	१३.५२
मनुष्य की अदृश्य सत्ता अति समर्थ	१३.५४
समर्थ सत्ता को खोजें : पत्तों में न भटकें	१३.५८
विज्ञान का सच्चा उच्चस्तरीय सोपान	१३.५९
अध्याय-१४	
असामान्य और विलक्षण किन्तु सम्भव और सुलभ	
दैहिक सीमाओं से परे आत्मा का विचरण	१४.१
परकाया प्रवेश	१४.२
सम्मोहन और परकाया प्रवेश	१४.५
निग्रहीत मन की अपार शक्ति सामर्थ्य	१४.८
चाहे जो बन जाय इतनी भर ही छूट है	१४.१२
आत्मचेतना का उपयोग	१४.१५
अतीन्द्रिय-क्षमताओं का आधार और विज्ञान	१४.१७
चन्द्र यात्रा में एक प्रयोग	१४.१९
शब्द वेधी बाण	१४.२०
क्षमताओं की जागृति	१४.२१
समर्थ सत्ता का अनुदान	१४.२३
जो रहस्य है वह इन्द्रिय चेतना से परे	१४.२५
इस संसार में रहस्य कुछ नहीं	१४.२९
अध्याय-१५	
दिव्य विभूतियों से ओत-प्रोत यह मानवी सत्ता	
मनुष्य अतीन्द्रिय शक्तियों का भण्डार है	१५.१
अतीन्द्रिय क्षमता और उसके उद्गम स्रोत	१५.३
मानवी चेतना में सन्निहित दिव्य शक्तियाँ	१५.८
मनुष्य की अतीन्द्रिय और अद्भुत क्षमताएँ	१५.१०
मनुष्य में अन्तर्निहित अलौकिक दिव्य शक्ति	१५.१३
हम भूत और भविष्य भी जान सकते हैं	१५.१५
मनुष्य में अलौकिक क्षमताएँ भरी पड़ी हैं	१५.१७
छठी इन्द्रिय और उसकी चमत्कारी शक्ति	१५.१९
भन्ना भील	१५.२०
मनुष्य की विलक्षण दिव्य शक्तियाँ	१५.२१
अतीन्द्रिय क्षमता में जैव ऊर्जा का योगदान	१५.२५
विज्ञानमय कोश की अतीन्द्रिय सामर्थ्य	१५.२८
मनुष्य की चमत्कारी अतीन्द्रिय चेतना	१५.३२
प्रत्यक्ष से परे एक परोक्ष जगत का अस्तित्व	१५.३५
सूक्ष्म जगत का प्रत्यक्षीकरण अतीन्द्रिय ज्ञान से	१५.३७
दृश्य एवं अदृश्य शरीर	१५.४०
वह प्रकाश क्या सूक्ष्म शरीर था ?	१५.४३
मनुष्य की असीम अद्भुत क्षमताएँ	१५.४४
दिव्य शक्तियाँ भी मनुष्य के हस्तगत होंगी	१५.४५
मनुष्य अपनी 'छठी' इन्द्रिय विकसित कर सकता है	१५.४८
स्रष्टा का सुव्यवस्थित किन्तु अद्भुत संसार	१५.४८
प्राणधारियों में अतीन्द्रिय चेतना विद्यमान है	१५.५०
विभूतियाँ उनमें भी हैं	१५.५३
पराज्ञान का कुछ अर्थ भी निकालें	१५.५३

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति : एक बहुमूल्य विभूति

मानवी विद्युत का प्रचण्ड प्रवाह प्राण शक्ति में

संस्कृत में प्राण शब्द की व्युत्पत्ति 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'अन्' धातु से होती है । 'अन्' धातु (प्राण ने) जीवनी शक्ति चेतना बोधक है । इस प्रकार प्राण शब्द का अर्थ चेतना शक्ति होता है । जीवधारियों को प्राणी इसीलिए कहते हैं । प्राण और जीवन दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं । प्राण आत्मा का गुण है । यह परम आत्मा से, परब्रह्म से, निःसृत होता है । आत्मा, परमात्मा का ही एक अविच्छिन्न घटक है । वह अंश रूप है तो भी उसमें मूल सत्ताधीश के सारे गुण विद्यमान हैं । व्यक्तिगत प्राण धारण करने वाला प्राणी जब सुविकसित होता है तो वह भी बूँद के समुद्र में पड़ने पर सुविस्तृत होने की तरह ही व्यापक बन जाता है ।

जड़ जगत में शक्ति तरंगों के रूप में, संव्याप्त सक्रियता के रूप में, प्राण शक्ति का परिचय दिया जा सकता है और चेतन जगत में उसे विचारणा एवं सम्वेदना कहा जा सकता है । इच्छा, ज्ञान और क्रिया के रूप में यह जीवधारियों में काम करती है । जीवन्त प्राणी इसी के सहारे जीवित रहते हैं । इस जीवनी शक्ति की जितनी मात्रा जिसको मिल जाती है वह उतना ही अधिक प्राणवान कहा जाता है । चेतना की विभु सत्ता समस्त विश्व ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है । चेतना प्राण कहलाती है । उसी का अमुक अंश प्रयत्नपूर्वक अपने में धारण करने वाला प्राणी, प्राणवान एवं महा प्राण बनता है । यह प्राण जड़ पदार्थों में सक्रियता के और चेतन प्राणियों में सजगता के रूप में दृष्टिगोचर होता है । जड़ चेतन जगत की सर्वोपरि शक्ति होने के कारण उसे ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ कहा गया है ।

प्राणो बा व ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च ।

—छांदोग्य ५।१।१

यह तत्व अनादि और अनन्त है । इसी में सृष्टि बार-बार विलीन और उत्पन्न होती रहती है । सृष्टि से पूर्व यहाँ क्या था ? इसका उत्तर देते हुए शास्त्र कहता है—

असद् वा इद मग्न् आसात् तदाहुः किं तदसदासी दित्यृषयो वा च । तेऽग्नेऽसदा सीत्, तदाहुः के ते ऋषय इति प्राणा वा ऋषय ।

—शतपथ

पूछा गया—सृष्टि से पहले क्या था ? उत्तर दिया—ऋषि थे । पूछा—यह ऋषि क्या थे ? उत्तर दिया—वे प्राण थे । यह प्राण ही ऋषि है ।

सृष्टि के आरम्भ में सर्व प्रथम प्राण-तत्व के उत्पन्न होने का वर्णन है । जड़ जगत में पंच तत्वों का और चेतन प्राणियों में विचार शक्ति का आविर्भाव उसी से हुआ है ।

'स प्राणमसृजत, प्राणच्छ्रद्धां, रवं वायुर्ज्योति रूपः पृथिविन्द्रिय मनोऽन्नम् ।'

—प्रश्नोपनिषद् ६।४

अर्थात् उस ब्रह्म ने प्राण उत्पन्न किया । प्राण से श्रद्धा, बुद्धि, मन एवं आकाश, वायु , तेज, जल, पृथ्वी पंच तत्वों की उत्पत्ति हुई । तब अन्न उत्पन्न हुआ ।

वैदिक विवेचना में प्राण के साथ 'वायु' का विशेषण भी लगा है । उसे कितने ही स्थानों पर प्राण वायु कहा गया है । इसका तात्पर्य ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि वायु विकारों से नहीं, वरन् उस प्रवाह से है जिसकी 'गतिशील विद्युत तरंगों' के रूप में भौतिक विज्ञानी चर्चा करते रहते हैं । अणु विकिरण, ताप, ध्वनि आदि की शक्ति धाराओं के मूल में संव्याप्त सत्ता भी उसे कहा जा सकता है । यदि उसके आध्यात्म स्वरूप का विवेचन किया जाय तो अंग्रेजी के लेटेन्ट लाइट-डिवायन लाइन्ट आदि शब्दों से संगति बैठती है, जिसमें उसके दिव्य प्रकाश के समतुल्य होने का संकेत मिलता है । प्रश्नोपनिषद् में प्राण का उद्गम केन्द्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूर्य को माना गया है—"सं एष वैश्वानरो विश्व रूपः प्राणोऽग्निरुदयते ।" अर्थात् प्राणाग्नि विश्वव्यापी है । उसका केन्द्र उदीयमान सूर्य है ।

प्राण विद्युत के सम्बन्ध में शरीर विज्ञानी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पेशियों में काम करने वाली स्थिति तक ऊर्जा पोटेन्शियल का तथा उसके साथ जुड़े रहने वाले आवेश—इन्टेन्सिटी का जीव संचार में बहुत बड़ा हाथ है । इन विद्युत धाराओं का वर्गीकरण तथा नामकरण—सीफेली ट्राइजमिल न्यूनैलाजिया की व्याख्या, चर्चा के साथ प्रस्तुत किया जाता है । ताप विद्युत संयोजन—थर्मोलैरिक कपलिंग, के शोधकर्त्ता अब इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि, मानव शरीर का सारा क्रिया-कलाप इसी विद्युतीय संचार के माध्यम से गतिशील रहता है ।

पृथ्वी के इर्द-गिर्द एक चुम्बकीय वातावरण दूर-दूर तक फैला हुआ है । धरती का गुरुत्वाकर्षण ही सब कुछ नहीं है । यह चुम्बकीय वातावरण उसके साथ मिलकर अपने लोक में संव्याप्त कितनी ही क्षमताओं को जन्म देता है । उनके आधार पर संसार की अनेक गतिविधियों तथा प्राणियों को कितनी ही आवश्यकता पूरी करने वाले सुयोग बनते हैं । यह चुम्बकत्व आखिर आता कहाँ से है ? उसका उद्गम स्रोत कहाँ है ? इसकी खोज अन्तर्ग्रही अनुदानों के रूप में की जा रही थी पर अब यह पता चला है कि यह पृथ्वी के अपने ही गहन अन्तराल से निकलने वाला शक्ति प्रवाह ही है । लोहे की सुई यदि धागे से बाँधकर अधर लटकाई जाय तो उसका एक सिरा उत्तर की ओर दूसरा दक्षिण की ओर रहेगा । दिशा निर्देशक यन्त्र—कम्पास इसी आधार पर बनते हैं । प्राणियों के कितने ही क्रिया-कलाप इसी चुम्बकीय निर्देशन के आधार पर विनिर्मित होते हैं ।

मनुष्य शरीर में बिजली काम करती है, यह तथ्य सर्वविदित है । इलेक्ट्रो कार्डियो ग्राफी तथा इलेक्ट्रो इनसिफैलो ग्राफी द्वारा इस तथ्य को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । हमारी रक्त नलिकाओं में लौह युक्त हीमोग्लोविन भरा पड़ा है । लौह चूर्ण और चुम्बक जिस प्रकार परस्पर चिपके रहते हैं, उसी प्रकार हमारी जीवन सत्ता भी जीव कोशों को परस्पर सम्बद्ध किए रहती है । उनकी सम्मिश्रत चेतना से वे समस्त क्रिया-कलाप चलते हैं, जिन्हें हम जीवन संचार व्यवस्था कहते हैं ।

शरीर में जो चमक, स्फूर्ति, ताजगी, उमंग, साहस, उत्साह, निष्ठा, तत्परता जैसी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं, वे प्राण ऊर्जा की ही प्रतिक्रियाएँ हैं । मनस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी, तपस्वी आदि शब्द इसी क्षमता का बाहुल्य व्यक्त करते हैं । ऐतिहासिक महामानवों में यही विशेषता प्रधान रूप से रही है ।

ऊर्जा के सहारे यन्त्रों का संचालन होता है । मनुष्य शरीर भी एक यन्त्र है । उसके संचालन में जिस विद्युत की आवश्यकता पड़ती है, उसे प्राण कहते हैं । प्राण एक अग्नि है जिसे ज्वलन्त रखने के लिए आहार की आवश्यकता पड़ती है । आधुनिक वैज्ञानिक ने इसे 'जीव विद्युत' नाम दिया है ।

निद्रा मात्र थकान मिटाने की, विश्राम प्रक्रिया मात्र नहीं है । वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार निद्रा में मस्तिष्क का सचेतन भाग अचेतन की स्थिति में इसलिए जाता है कि उस स्थिति में अन्तरिक्ष में प्रवाहित रहने वाली विद्युत धाराओं में से अपने उपयोग का अंश संग्रह, सम्पादित कर सकने का अवसर मिल जाय । 'एरियल' रेडियो तरंगों को पकड़ता है । निद्रावस्था में हमारा अचेतन मस्तिष्क उसी स्थिति का बन जाता है और आकाश से इतनी विद्युतीय खुराक प्राप्त कर लेता है जिससे शारीरिक और मानसिक क्रिया-कलापों का संचालन ठीक प्रकार सम्भव हो सके । निद्रा की पूर्ति न होने पर शारीरिक और मानसिक स्थिति में जो गड़बड़ी उत्पन्न होती है, उसे अभीष्ट मात्रा में विद्युतीय खुराक न मिलने को चेतनात्मक 'बुभुक्षा' कहते हैं । इसके बने रहने पर मनुष्य विक्षिप्त या अर्द्ध-विक्षिप्त बन जाता है । पागलपन छा जाने से पूर्व प्रायः कुछ दिन पहले से अनिद्रा रोग उत्पन्न होता है । अनिद्रा में इस विद्युतीय आहार की ही कमी पड़ती है ।

भौतिक लौह चुम्बक से सभी परिचित हैं; पर यह तथ्य कम ही लोगों का मालूम है कि उससे भी कहीं अधिक उच्च स्तर का एक जैव चुम्बक भी होता है जिसे वैज्ञानिकों की भाषा में ऐनिमल मैगनेट कहा जाता है । आध्यात्म विज्ञान के अनुसार इसका उपयोग, वरदान, आशीर्वाद स्तर के आदान-प्रदान में होता रहता है । छोटे अपने बड़ों के चरण स्पर्श करके अभिवादन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हैं, इस स्पर्श में बड़ों की शुभेच्छा सम्पन्न विद्युत शक्ति का अनुदान दोनों को मिलता है । गुरु शिष्य परम्परा में भी यह परिपाटी चलती है । इसका एक प्रकार सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देना भी है । छोटों के द्वारा बड़ों के पैर दबाने और बड़ों के द्वारा छोटों का आलिंगन, चुम्बन, गोदी में लेना, पीठ आदि पर हाथ फिराना भी इसी विद्युतीय अनुदान प्रक्रिया के अन्तर्गत आता है । बड़ों की विद्युत छोटों की ओर, समर्थों की असमर्थों की ओर दौड़ती है । इस प्रकार इस स्पर्श में छोटे ही प्रमुखतया लाभ लेते हैं । देने का सन्तोष बड़ों के हिस्से में भी आता है ।

शरीर संचार की समस्त गतिविधियाँ तथा मस्तिष्कीय उड़ानें, रक्त, माँस जैसे साधनों से नहीं उस विद्युत प्रवाह के द्वारा सम्भव होती हैं जो जीवन तत्व बनकर रोम-रोम में संव्याप्त हैं । इसी को मानवीय विद्युत कहते हैं । ओजस्वी, मनस्वी और तेजस्वी उसी विशेषता से सुसम्पन्न लोगों को कहते हैं । प्रतिभाशाली, प्रगतिशील लोगों और शूरवीर साहसी लोगों में इसी क्षमता की बहुलता पायी जाती है ।

यह जैव विद्युत उस भौतिक-बिजली से भिन्न है जो विद्युत यन्त्रों में प्रयुक्त होती है । बैटरी, मैगनेट, जनरेटर आदि का स्पर्श करने पर बिजली का झटका लगता है । उसके सम्पर्क से बल्ब, पंखे, रेडियो, हीटर आदि काम करने लगते हैं । जीव विद्युत का स्तर भिन्न है । इसलिए वह यह कार्य तो नहीं करती पर अन्य प्रकार के प्राणी की अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पूरी करने वाले कार्य सम्पन्न करती देखी जा सकती है । इसी कारण इस विद्युत के संरक्षण का उल्लेख पग-पग पर आर्ष ग्रन्थों में मिलता है । भौतिक और आत्मिक सफलताओं का मूल आधार प्राण रूपी यही बिजली है । इसके अपव्यय से बचना चाहिए ।

तेजोवलय : एक बहुमूल्य आत्मिक विभूति

देवताओं, अवतारों के चेहरे के चारों ओर एक प्रभा-मण्डल चित्रित किया जाता है । श्रद्धावश महापुरुषों और सन्त-सिद्ध पुरुषों के चेहरे पर भी यह अंकन होता है । खुले नेत्रों से देखने पर जीवित महामानवों के चेहरों पर ऐसा कुछ दिखाई नहीं पड़ता । तब यह सन्देह होता है कि जितने अवतारी शरीरधारियों को देखा होगा, उन्हें वह प्रकाश दृष्टिगोचर होता होगा या नहीं, जो चित्रों में अंकित किया जाता है ।

यह उनकी आत्मिक विशिष्टता का परिचय है । यह तेजोवलय खुली आँखों से नहीं देखा जाता, पर सूक्ष्म नेत्र जिनके भी खुल सके होते हैं, उन्हें प्रतीत होता है, कि दैवी महामानवों का देवत्व उनके चेहरे पर विशिष्ट रूप से देखा जाता है । यह उनकी आन्तरिक शक्तियों का बहिरंग में परिचय है । यों यह होता तो समस्त शरीर के इर्द-गिर्द है, पर उसकी अधिक मात्रा चेहरे के आस-पास ही प्रधान रूप से परिलक्षित होती है ।

आध्यात्म रहस्योद्घाटनों में नेत्रों को सूर्य-चन्द्र की उपमा दी गई है । वाणी को सरस्वती की, नासिका को पवन की और कानों को आकाश की । चेहरे के भीतरी भाग में भृकुटी के स्थान पर दिव्य तृतीय नेत्र माना गया है, जिससे अदृश्य को देखा जा सकता है । उसका तेजस् प्रत्यक्ष नेत्रों की तुलना में कहीं अधिक होता है । इसी को खोलकर शिवजी ने कामदेव को जलाया था । त्रिकालदर्शी उसी की सहायता से दूरदर्शन ही नहीं भूत और भविष्य को भी देख पाते हैं । मस्तिष्क के भीतर ब्रह्मरन्ध्र सहस्रार चक्र है । विष्णु के उपासक इसे क्षीर सागर में सोया हुआ सहस्र फन वाला शेषनाग मानते हैं और शिव उपासकों के लिए यह ब्रह्मरन्ध्र ही कैलाश और उसके इर्द-गिर्द का क्षेत्र मानसरोवर है । गुरुतत्व का ध्यान यहीं किया जाता है । इस प्रकार मस्तिष्क का भीतरी भाग भी दिव्य शक्तियों से भरा है । ज्ञानेन्द्रियाँ यदि परिशोधित स्थिति में हों तो वे भी देवतुल्य हैं । इस प्रकार चेहरे का बाहरी और मस्तिष्क का भीतरी भाग देव शक्तियों का निवास स्थान माना गया है और उन सबका प्रतीक चेहरे के इर्द-गिर्द फैला हुआ तेजोवलय माना गया है । प्राचीनकाल में तेजोवलय दिव्यता का, दिव्य शक्तियों के भण्डार का सूचक माना जाता था और चित्रों में उसका अंकन इसी आधार पर होता था । सन्तों और महामानवों को भी जो लोग वही पदवी देना चाहते थे, वे उनके चेहरे पर भी वैसा ही अंकन करते थे । बुद्ध, राम, कृष्ण आदि के चेहरों पर तो यह प्रकाश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अति प्राचीनकाल से चला आ रहा है । ईसा मसीह के चित्रों में भी तात्कालिक चित्रकारों ने इसका समावेश करना आरम्भ किया ।

अब वैज्ञानिक शोधों ने इस सन्दर्भ में नया कदम उठाया है । उन्होंने अपनी शोधों में पाया कि प्रत्येक व्यक्ति में यह प्रकाश तीव्र अथवा क्षीण रूप में पाया जाता है । वे इसे प्राण ऊर्जा का प्रतीक मानते हैं । ऐसे यन्त्र विनिर्मित हो चुके हैं अथवा जो किसी भी व्यक्ति के चेहरे के इर्द-गिर्द फैले हुए इस प्रकार की छाया ले सकते हैं । समस्त शरीर के इर्द-गिर्द भी यह होता है, पर वह क्षीण रहता है, क्योंकि चेहरे के भीतर और बाहर विद्युत सम्पदा का भण्डार है । गले से नीचे के अवयवों में प्राण ऊर्जा—गर्मी अथवा विद्युत का कितना भाग है, इसी का पता चलता है ।

इसे दो भागों में विभक्त किया जा सकता है । एक शारीरिक, दूसरा मानसिक । शरीर से सीधा-साधा प्रकाश निकलता है । प्रकाश सफेद होता है । मानसिक तेजोवलय इसी में घुला होता है । उसमें रंगों की झलक होती है । जिस प्रकार इन्द्र धनुष में हल्के भारी कई रंगों की झलक मिलती है, उसी प्रकार तेजोवलय का श्वेत भाग शरीरगत समर्थता का प्रमाण प्रस्तुत करता है । इसमें रंगों की झलक मिले तो, उसे मानसिक विशेषता का परिचायक माना जायेगा ।

दिव्यता विहीन मोटे-तगड़े शरीरों में तेजोवलय धुँधले कुहरे जैसा होता है । उसमें शुभ्रता का अंश बहुत कम होता है । मानसिक दृष्टि से जो गए, बीते, पतित हैं, उनके प्रकाश में कालेपन की बहुलता रहती है । दोनों मिलाकर जो स्थिति बनती है, उसे धुँधलापन कह सकते हैं । उसका अच्छा चित्रण नहीं हो सकता है ।

आध्यात्मिक दृष्टि से यह प्रभा-मण्डल किसी की दिव्यता का परिचायक है । उसमें विशिष्टताएँ होनी ही चाहिए । ऐसा प्रकाश दिव्य चक्षुओं से ही देखा जा सकता है । जिस प्रकार कर्णेन्द्रियों को जागृत करके नादयोग सुना जाता है, जैसे अर्न्तदृष्टि से अन्तर्मुखी होकर ध्यान योग द्वारा सूक्ष्म शरीर के, अन्तरंग के किसी भाग के दर्शन किए जाते हैं, उसी प्रकार ज्ञान चक्षुओं से दैवी विभूति सम्पन्न पुरुषों का तेजोवलय देखा जाता है और यह अनुमान लगाया जाता है कि, किसके भीतर कितनी दिव्यता है ।

अब इस क्षेत्र में विज्ञान ने कुछ कदम आगे बढ़ाये हैं और शरीरगत प्राण ऊर्जा को विशिष्ट यन्त्रों से आभा-मण्डल के रूप में प्रत्यक्ष देखना आरम्भ किया है । इस आधार पर किसी के सशक्त या दुर्बल होने का, स्वस्थ या रुग्ण होने का पता चलता है । भौतिक विवेचन का क्षेत्र भी यही है । विज्ञानी किसी भी आध्यात्मिक स्थिति का पता नहीं लगा सकते, तो भी शरीर या मन की स्वस्थता, दुर्बलता का आंकलन भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

शरीर में रक्त, माँस ही नहीं होता, उसमें विद्युत शक्ति भी होती है । इसके भी दो भाग हैं । एक वह जो हृदय और मस्तिष्क से विनिर्मित होकर नाड़ी संस्थान का संचालन करती है । दूसरी वह जो निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त रहते हुए, प्रत्येक शरीरधारी, वनस्पति एवं पदार्थ को प्रभावित करती है । दोनों के सम्मिश्रण से जो विद्युत बनती है, उसी को वैज्ञानिक देख या समझ पाते हैं । उसी आधार पर किसी की स्थिति का विश्लेषण करते हैं । वैज्ञानिक तेजोवलय विशुद्धतः भौतिक होता है, वही यन्त्र गम्य है । आध्यात्मिक प्रभा-मण्डल मशीनों से नहीं देखा जा सकता उसे ज्ञान-चक्षुओं से ही ध्यानयोग द्वारा देखा जा सकता ।

अब तक तेजोवलय के सम्बन्ध में कुछ निश्चित अभिमत नहीं था, पर अब प्राण विद्युत के रूप में उसका आंकलन होने के उपरान्त यह आशा बँधती है, कि दिव्य आभा-मण्डल का भी किसी न किसी आधार पर दर्शन आंकलन किया जा सकेगा ।

प्रभा-मण्डल के सम्बन्ध में वैज्ञानिक खोजबीन आरम्भ हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं । तेजोवलय का मापन सबसे पहले डॉ. किल्नर ने १९११ में किया । उन्होंने हाइवोल्टेज लाइट स्रोत का प्रयोग कर यह पाया कि हर जीवित वस्तु के चारों ओर एक प्रभा-मण्डल होता है । वैग्नेल (लन्दन) के १९३७ तथा रिगस (अमेरिका) के १९७४ में किए गए कार्यों से यह पता चला है कि, कुछ व्यक्तियों के आस-पास का प्रभा-मण्डल विशिष्ट आभा लिए होता है । उसमें विद्यमान किरणों का स्पेक्ट्रम भी अन्य जीवों की तुलना में भिन्न होता है । इसे उन्होंने पहले कीर्लियन तथा वाद में शेर्लियन फोटोग्राफी द्वारा फोटो प्लेट पर अंकित किया । उँगलियों के पोरों, चेहरे के चारों ओर एक सुषुम्ना के निचले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाग पर इसकी सघनता की मात्रा भिन्न-भिन्न पायी गई । इन्हीं वैज्ञानिकों का मत था कि, ऑरा का मापन करके पहले से बताया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति किस मनोविकार या ग्रन्थि का शिकार है एवं इससे आगे चलकर क्या रोग हो सकते हैं । मस्तिष्क में रक्त स्राव, दमा, हृदयाघात, कैंसर जैसे रोगों में निदान की इस विधि में ६० से ८० प्रतिशत सफलता पायी गई । निषेधात्मक चिन्तन वाले व्यक्ति एवं विधेयात्मक व्यक्तित्व में अन्तर उनके ऑरा के विश्लेषण से हो सकता है । यह डॉ. श्रोडिंजर ने १९७६ में बताया ।

आभा-मण्डल के ३ स्पष्ट भाग वैज्ञानिकों ने किए हैं । पहला शरीर तक सीमित विद्युत विभव, दूसरा शरीर से एक इंच बाहर तक निकला तेजोवलय एवं तीसरा शरीर को कवच की तरह चारों ओर से लपेटे ६ से ८ इंच व कभी-कभी कई फीट तक शरीर से बाहर तक फैला हुआ—विशेष कर चेहरे, उँगलियों व जननेन्द्रियों पर । इस तीसरे आभा-मण्डल को जार्जमीक ने 'जोन ऑफ एनर्जी' माना है । पहले में बिन्दु होते हैं, दूसरी में रेखाएँ तथा तीसरे में सघन आयनों का समुच्चय । पहले को वे स्थूल शरीर व वायोप्लाज्मा या सम्मिश्रण कहते हैं, दूसरे को प्लाज्मा तथा तीसरे को विकिरण, जिसमें वास्तव में ही लिंग (चिकित्सा) की क्षमता होती है ।

भारतवर्ष में यह कार्य सबसे पहले डॉ. पी. नरेन्द्रन् ने किया है । वे भारत सरकार के विज्ञान और तकनीक मन्त्रालय के अनुदान के अन्तर्गत अपना काम चला रहे हैं । सन् १९८३ में उन्होंने हाँगकाँग में एशियन एण्ड आस्ट्रेलियन कॉंग्रेस में अपनी शोध का प्रदर्शन किया था, जिसमें उपस्थित वैज्ञानिकों ने बहुत रुचि ली, प्रतिपादन यह किया गया है कि, दूसरा "ऑरा" प्रकाश के आधार पर शारीरिक और मानसिक स्थिति का अधिक गहराई से विश्लेषण किया जा सकता और जाना जा सकता है कि इन क्षेत्रों में किन्हीं रोगों का प्रवेश हो चुका है या होने वाला है । समय रहते इस प्रकार की जानकारी मिल जाने से उपचार कहीं अधिक सरल पड़ेगा ।

डॉ. नरेन्द्रन् का ध्यान इस विषय में पहले हो चुकी शोधों ने विशेष रूप से आकर्षित किया और वे उस कार्य को अपने ढंग से आगे बढ़ाने में लग गए । लन्दन के सेण्ट जोन्स थामस हास्पिटल के प्रमुख सर्जन डब्ल्यू. जे. किल्नर ने ऐसे प्रकाश की जानकारी प्राप्त की थी और अपनी शोधों का विवरण "दी ह्यूमन एटमॉसफियर' में विस्तारपूर्वक लिखा है ।

सन् १९३९ में रूसी वैज्ञानिक किरलियन ने इलेक्ट्रोथिरेपी की शोध करते हुए पाया कि उनके शरीर में से रंग-बिरंगी विद्युतीय चिन्गारियाँ निकल रही हैं । फिर उन्होंने दूसरे शरीरों की जाँच-पड़ताल की और पाया कि यह उनकी निजी विशेषता नहीं है, वरन् न्यूनाधिक मात्रा में दूसरों के शरीरों में से भी ऐसा ही प्रकटीकरण होता है ।

मद्रास इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूरोलॉजी के अध्यक्ष पी. नरेन्द्रन् को इसी आधार पर अपने प्रयास आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली । उन्होंने एक ऐसी मशीन बनाने में भी सफलता पायी जो उँगलियों के फोटोग्राफ प्रभा-मण्डल सहित खींच लेती है ।

इस प्रभा-मण्डल को इन्फ्रारेड फोटोग्राफी के सिद्धान्तों से मिला देने पर घोर अँधेरे में घूमते हुए किसी आदमी का फोटो खींचा जा सकता है और अँधेरे में चोरी करने वालों का भी पता लगाया जा सकता है । उस व्यक्ति के चले जाने पर भी इन्फ्रारेड फोटोग्राफी से यह विदित होता रह सकता है कि कुछ समय पूर्व यहाँ कौन था और क्या कर रहा था । क्रिया-कलाप समाप्त हो जाने पर भी यह निशान बने रह सकते हैं, कि किसने क्या किया था ?

यही सिद्धान्त आध्याम क्षेत्र में विकसित होने पर यह जानकारी दे सकते हैं कि किस चरित्र एवं व्यक्तित्व का व्यक्ति किस स्थान पर, कितने समय रहा है और उसने उस स्थान को किस दिशा में प्रभावित किया है ?

प्रभा-मण्डल एक प्रकार का छाया पुरुष है, जो प्रकाश रूप होते हुए भी यह बताता है कि जिसका यह प्रकाश है, उसके गुण, कर्म, स्वभाव, उद्देश्य एवं कृत्य क्या थे ? इस प्रकार यह विज्ञान विकसित होने पर किसी व्यक्ति के न रहने पर भी उसके निवास स्थान से सम्पर्क साधकर बहुत समय तक यह जाना जा सकेगा कि, यहाँ किसी मनुष्य की प्राण ऊर्जा अपना कैसा और कितना प्रभाव छोड़ गई है ।

प्रभा-मण्डल एक प्रकार से किसी व्यक्ति का अदृश्य व्यक्तित्व है जो उसके प्रभाव से उस क्षेत्र को देर तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभावित करता रहता है । तेजोवलय के चित्रण का महत्त्व ऐसी ही अनेक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए समझा जा सकता है ।

मनुष्य में हिलोरें लेता चुम्बकीय महासागर

स्रष्टा ने मानवी काया में बीज रूप में वे सभी तत्व, पदार्थ, वैभव, पराक्रम एवं क्षमतायें भर दी हैं जो विश्व ब्रह्माण्ड के जड़ पदार्थों तथा चेतन प्राणियों में कहीं भी देखे, पाये जा सकते हैं । वह स्वयं में एक चलता-फिरता चुम्बक है । उसकी विलक्षण काय संरचना को एक अच्छा खासा बिजली घर कह सकते हैं, जिससे उसकी अपनी मशीन चलती और जिन्दगी की गुजर बसर होती है. । इसके अतिरिक्त वह दूसरों को प्रकाशित करने से लेकर भले-बुरे अनुदान दे सकने में भी भली प्रकार सफल होता रहता है । चुम्बक होने के नाते वह जहाँ प्रभावित करता है, वहाँ स्वयं भी अन्यान्यों से आकर्षित किया और दबाया-घसीटा जाता रहता है ।

मानवी चुम्बकत्व का स्रोत ढूँढ़ने वालों ने अभी इतना ही जाना है कि, वह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से यह अनुदान उसी प्रकार प्राप्त करता है, जैसे कि धरती सूर्य से । ब्रह्माण्ड व्यापी चुम्बकत्व से भी उसका आदान-प्रदान चलता रहता है । इस ऊर्जा की मात्रा में न्यूनाधिकता होने तथा सदुपयोग, दुरुपयोग करने से वह आये दिन लाभ-हानि उठाता रहता है । अच्छा हो इस सम्बन्ध में अधिक जाना जाय और सफलतापूर्वक हानि से बचने तथा लाभ उठाने के लिए तत्पर रहा जाय ।

मनुष्य का मैगनेट घटता-बढ़ता रहता है । इसकी अल्पता से आँखों का विशेष आकर्षण समाप्त हो जाता है । शरीर रूखा, नीरस, कुरूप, निस्तेज, शिथिल सा दिखाई पड़ने लगता है । साथ ही मनुष्य को विस्मृति, भ्रान्ति, थकान जैसी अनुभूति होती है । जबकि चुम्बकत्व के आधिक्य से वह आकर्षक, मोहक एवं सुन्दर लगने लगता है । उसकी प्रतिभा, स्मृति, स्फूर्ति जैसी विशेषताएँ उभरी हुई प्रतीत होती हैं । सत्संग और कुसंग के परिणाम भी व्यक्ति की निजी प्राण ऊर्जा की न्यूनाधिकता के सहारे ही सम्भव होते हैं । बढ़े हुए चुम्बकत्व वाला अपने से हल्के वालों को प्रभावित करने में सफल रहता है । साथ ही यह बात भी है कि, उससे बड़े स्तर की प्रतिभा उसे अपनी पकड़ में करा लेती है । इतने पर भी कुछ मनस्वी ऐसे होते हैं जो आत्मबल पर दृढ़ रहते हैं । आदान-प्रदान तो करते हैं, किन्तु अनिवार्य रूप से किसी से भी प्रभावित नहीं होते ।

अन्तरिक्ष में संव्याप्त भले-बुरे अनुदानों को मनुष्य अपने चुम्बकत्व द्वारा ही स्वीकार-अस्वीकार करता है । इस शक्ति का ऊर्ध्वगामी प्रवाह मस्तिष्क में केन्द्रित है । मस्तिष्क को मानवी चुम्बक का उत्तरी ध्रुव कहा जाता है । उस मर्मस्थल के प्रभाव से व्यक्तित्व निखरता और प्रतिभाशाली बनता है । चेहरे के इर्द-गिर्द छाये ओजस्—"तेजोवलय" को इस ऊर्ध्वगामी विद्युत का ही प्रतीक मानना चाहिए । जननेन्द्रिय मूल में काया का दक्षिणी ध्रुव स्थित है । ऊर्जा का अधोगामी प्रवाह यहीं केन्द्रित होता है । यौनाकर्षण के पीछे यही प्रवाह काम करता है । भिन्न प्रकृति के होते हुए भी दोनों प्रवाहों में परस्पर सम्बन्ध है । कामातिरेक और कामविकार पर अंकुश की प्रक्रिया को क्रमशः अधोगामी और ऊर्ध्वगामी प्रवाह की परिणति ही मानना चाहिए । प्राण ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन ही प्रखरता का द्योतक है ।

सेन फ्रांसिस्को के प्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री डॉ. अलबर्ट अब्राह्म के अनुसार मानवी काया को चुम्बकीय ऊर्जा तरंगों का भँवर कहा जाना चाहिए । उसमें भी पृथ्वी की भाँति उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव होते हैं जो विद्युत एवं चुम्बकत्व के नियमों के अनुसार काम करते हैं । शरीर द्वारा ऊर्जा तरंगों के निष्कासन एवं ग्रहण का कार्य सतत चलता रहता है । अपने अनुसंधान निष्कर्ष में उन्होंने बताया है कि मनुष्य के शरीर से ८० अरब साइकल्स प्रति सेकण्ड की दर से विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का विकिरण होता रहता है, जबकि आकर्षण क्षमता इससे कई गुनी अधिक है । मस्तिष्क, हाथ पैर की अंगुलियाँ, नेत्र, जननेन्द्रिय आदि से इन ऊर्जा तरंगों का सबसे अधिक निष्कासन होता है । डॉ. अब्राह्म ने शरीर के विभिन्न अंगों से निकलने वाले इस ऊर्जा प्रवाह को मापने की एक विधि का विकास किया, जिसे चिकित्सा विज्ञान में "रेडिस्थेसिया" के नाम से जाना जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधुनिक बायोमेडिकल साइन्स की मान्यता के अनुसार मनुष्य का स्वास्थ्य शारीरिक कोशिकाओं के विभिन्न समूहों के मध्य चुम्बकीय क्षेत्र के सामंजस्य सन्तुलन पर निर्भर करता है । शारीरिक संरचना में भाग लेने वाले विभिन्न तत्वों के अतिसूक्ष्म परमाण्विक कण इलेक्ट्रान, प्रोटान, न्यूट्रान आदि विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा से परिपूर्ण होते हैं । लाल रक्त कणों में भी लोहे की प्रचुर मात्रा होती है । सारे शरीर में रक्त के निरन्तर प्रवाहित होते रहने से एक निश्चित प्रवाह बनता है । इस प्रवाह से चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है । यही लौह तत्व विश्वव्यापी ऊर्जा का अवशोषण करके कोशिकाओं को विभिन्न कार्यों के सम्पादन के लिए ऊर्जा की पूर्ति करता है । स्वस्थ कोशिकाओं की शक्ति क्षमता अधिक होती है । इसमें कमी होने पर शरीर रोगग्रस्त होने लगता है । जीवनी शक्ति क्षीण हो जाती है । इस प्रकार शरीर में निर्धारित परिमाण में चुम्बकीय क्षमता का होना पूर्णतः विज्ञान सम्मत है ।

लेनिनग्राड यूनिवर्सिटी, रूस के अनुसंधानकर्त्ता मूर्धन्य वैज्ञानिकों ने डिटेक्टर के माध्यम से मनुष्य शरीर में स्थित जैव चुम्बकीय क्षेत्रों का पता लगाया है । उनका कहना है कि किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में ये क्षेत्र विशेष रूप से सक्रिय हो उठते हैं, जिससे उनके लिए कभी-कभी अनेकों मुश्किलें पैदा हो जाती हैं । जोनी माइकेल एवं रावर्ट जे. एम. रिचर्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मीस्टिरियसफिनानिना" में इस तरह की अनेक घटनाओं का वर्णन किया है, जिनमें विभिन्न व्यक्तियों को चुम्बकत्व की बहुलता के कारण विचित्रताओं का शिकार होना पड़ा ।

कनाडा में कैरोलिना क्लेयर नामक एक ऐसी महिला थी, जिसमें चुम्बकत्व की अधिकता थी । ओण्टोरियो मेडीकल एसोसियेशन के जाँच कर्त्ता वैज्ञानिकों ने परखने पर पाया था कि, जब वह आवेशित अवस्था में होती तो उसके शरीर से छुरी, काँटे, कीलें जैसी लौह धातुएँ चिपक जातीं । इसी तरह अमेरिका के मेरीलैण्ड की एक छात्रा लुई हैवर्गर की अंगुलियों के अग्रभाग में चुम्बकीय गुण था । आधी इंच मोटी, एक फुट लम्बी लोहे की छड़ वह अँगुलियों के पोरों से छूकर अधर उठा लेती थी । धातुओं से विनिर्मित वस्तुएँ उसके हाथ से चिपक कर रह जाती थीं । समीप आने वाले लोग उसमें एक विचित्र सा आकर्षण महसूस करते थे । मेरीलैण्ड कॉलेज आफ फार्मेसी के अनुसंधानकर्त्ताओं ने उसकी इस क्षमता को जाँचा, परखा और हर तरह से सत्य पाया था । कम्पास निडल उसके समीप रखने पर रुक जाती थी ।

जोपलिन, मिसौरी के फ्रैंक मैक किन्स्ट्री नामक व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि वह चुम्बकीय ऊर्जा से आवेशित होता तो, चलते वक्त उसके पैर धरती से चिपक जाते । वह एक कदम भी आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता । ऐसी आकस्मिक स्थिति में राहगीर ही उसकी मदद करते उसके पैरों को छुड़ाते तभी वह फिर से आगे बढ़ पाता ।

मनुष्य में अपना चुम्बकत्व तो है ही पर उसे न्यूनाधिक करने में उसके अपने प्रयत्न ही चमत्कार दिखाते हैं । सुप्रसिद्ध मनःशास्त्री विक्टर ई. क्रोमर का कथन है कि मनःशक्ति को केन्द्रीयभूत करके यदि इस शक्ति को किसी दिशा विशेष में प्रयुक्त किया जा सके तो बहिरंग में सम्मोहन प्रक्रिया द्वारा दूसरो को तथा अन्तरंग में स्वयं की सूक्ष्म शक्तियों को प्रभावित करने, जगाने में सफलता मिल सकती है ।

आस्ट्रिया के वियेना शहर में निवास करने वाले डॉ. फ्रांसिस्कम् एण्टोनियर्स मेस्मर को सम्मोहन विद्या का जनक माना जाता है । अपने समय के वे प्रख्यात चिकित्सा शास्त्री थे । एक बार चिकित्सा करते समय एक रोगी के शरीर से अत्यधिक रक्त बहने लगा । मेस्मर के पास उस रक्त प्रवाह को बन्द करने की कोई औषधि नहीं थी । इस पर उन्होंने उक्त स्थान पर अपना हाथ फिराना आरम्भ किया । कुछ क्षणों में चमत्कारिक ढंग से रक्त का रिसना बन्द हो गया । इससे प्रभावित होकर उन्होंने कई अन्य प्रयोग-परीक्षण किए और सफल रहने पर यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि—मनुष्य के शरीर में एक प्रकार की बायोइलेक्ट्रोमैगनेटिक विद्युत धारा सतत प्रवाहित होती रहती है । यह प्रवाह अंगुलियों के अग्रभाग से अधिक होता है, जो रुग्ण स्थान पर हाथ फिराने से रोगी के शरीर में प्रवेश कर जाता है और रोग को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है । मेस्सर ने इस शक्ति प्रवाह को "जैव चुम्बक" नाम दिया । वान हैल्माण्ट ने इसी ऊर्जा शक्ति का शारीरिक एवं मानसिक रोगियों पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सफल प्रयोग करने में अच्छी ख्याति प्राप्त की थी । लोग उन्हें चमत्कारी सिद्ध पुरुष कहने लगे थे ।

वस्तुतः मेस्मेरिज्म के प्रयोगों में प्रयोक्ता द्वारा अपने चुम्बकीय विद्युत के सहारे दूसरों को सम्मोहित करने की प्रक्रिया सम्पादित होती है । इसी माध्यम से एक व्यक्ति का प्राण दूसरे में प्रवाहित होने लगता है, तथा शारीरिक रुग्णता एवं मानसिक अक्षमता को दूर करने में सहायक होता है । ऐसे अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं, जिसमें प्रयोक्ताओं ने अपनी प्राण शक्ति से दूसरों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया ।

जर्मनी के तानाशाह हिटलर का उसकी रुग्णावस्था में उपचार इस्टोनिया निवासी "क्रिस्टन" नामक एक चिकित्सक करता था । उसकी उँगलियों में दर्द दूर करने की चमत्कारिक क्षमता थी । जिनके स्पर्श से वह रोगियों को चंगा कर देता था । अभ्यास के द्वारा ही उसने ऐसी जादुई क्षमता प्राप्त की थी । हिटलर के अन्तरंग मित्र हिमलर तक ने उससे कई बार अपनी चिकित्सा करवाई और रुग्णता के पंजे से मुक्ति पायी थी । क्रिस्टन ने अपनी क्षमता का हिमलर पर सदुपयोग करके उसके माध्यम से हिटलर के मृत्युपाश में जकड़े हुए लगभग एक लाख व्यक्तियों को छुटकारा दिलाया था ।

महामनीषी हिपोक्रेट्स को प्राण-तत्व के प्रति असाधारण श्रद्धा थी । वे लिखते हैं कि—"शरीर आत्मा की शक्ति से संचालित एवं नियन्त्रित होता है तो उसकी प्रचण्ड प्राण शक्ति से रोगों का निवारण भी सम्भव है । स्कार्टलैण्ड के मैक्सवेल नामक विद्वान का भी विश्वव्यापी प्राण-तत्व में अटूट विश्वास था । प्राण चिकित्सा प्रशिक्षण के लिए उन्होंने एक केन्द्र खोल रखा था ।

इस्कुलेपियस नामक एक यूरोपीय व्यक्ति अस्वस्थ व्यक्तियों के रुग्ण अवयवों पर साँस छोड़कर और हाथो से थपथपाकर चिकित्सा करने में पारंगत था । इंग्लैण्ड के पादरी डुइड को इस क्षेत्र में असाधारण ख्याति मिली थी । अनेक विद्वान ने अपने साहित्य में उनकी इस विलक्षण क्षमता का वर्णन किया है । लन्दन का लेन्हर्ट नामक माली अंगुलियों से छूकर रोगमुक्त करने के लिए प्रसिद्ध था ।

प्रख्यात परामनोविज्ञानी डॉ. थेल्मामॉस एवं उनके सहयोगियों ने ऐसे कई व्यक्तियों को जाँचा-परखा है जो सम्मोहन द्वारा चिकित्सा करते हैं । उनमें से एक हैं—किडनी स्पेशलिस्ट डॉ. मार्शल वार्शेय, जिन्हें पाश्चात्य जगत में आध्यात्मिक चिकित्सक के रूप में प्रसिद्धि मिली हुई है । अंगुलियों तथा हाथ के स्पर्श से वे अब तक सैकड़ों रोगियों को नवजीवन प्रदान कर चुके हैं । सिर दर्द जैसी सामान्य बीमारियाँ उनके स्पर्श मात्र से दूर होती देखी गई हैं । डॉ. थेल्मामॉस ने परीक्षण करने पर पाया कि इस तरह उपचार करते समय मार्शल की अंगुलियों से प्राण ऊर्जा, प्रकाश पुंज के रूप में निकलकर मरीज के शरीर में प्रविष्ट हो जाती हैं । जिससे उसकी अंगुलियों का परिमण्डल भी प्रदिप्त हो उठता है । रोगी को हीलर के हाथ से अपने शरीर में गर्मी प्रवेश करती हुई झुनझनाहट सी महसूस होती है, साथ ही एक शक्तिधारा के अपने शरीर में प्रवेश होने की सुखद अनुभूति होती है । यह अनुभूति काफी समय तक बनी रहती है ।

काया में सन्निहित प्राण चुम्बकत्व की खोज विभिन्न वैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से की है और उसे बायोमैगनेटिज्म, बायोप्लाज्म, एक्टोप्लाज्म, बायोफ्लक्स आदि भिन्न-भिन्न नामों से सम्बोधित किया है । मनुष्य में इसका विशेष बाहुल्य होता है, जबकि वनस्पतियों एवं अन्य जीवधारियों में यह साधारण रूप से विद्यमान होता है । डॉ. किर्लियन, एवं डॉ. थेल्मामॉस जैसे वैज्ञानिकों ने किर्लियन तथा आर्गान फोटोग्राफी द्वारा इसके रंगीन चित्र भी खींचे हैं । थियोसोफिस्ट इसे "ईथरिक डबल" कहते हैं, जो शरीर के चारों ओर आवरण के समान विद्यमान हैं । अतीन्द्रिय क्षमता वाली विशेषताएँ इसी चुम्बकत्व पर निर्भर बतायी गई हैं ।

प्राण चुम्बकत्व को विकसित एवं परिष्कृत करने के ध्यान धारणा तथा प्राणायाम के कितने ही प्रयोग अपनी स्थिति एवं आवश्यकता के अनुरूप अपनाये जा सकते हैं, किन्तु उससे भी अधिक अनिवार्य यह है कि इन्द्रिय निग्रह, मनोनिग्रह की नीति-निष्ठा, जीवनचर्या अपनाकर ईश्वर प्रदत्त प्राण विद्युत के अपव्यय से बचे रहने की सतर्कता बरती जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी सत्ता विद्युत्स्फुल्लिंगों का क्रीड़ा कल्लोल मात्र

इस संसार में गुण और सामर्थ्य की दृष्टि से मनुष्यों की अगणित श्रेणियाँ हैं । यहाँ ऐसे लोग भी हैं, जिनकी क्षमता और योग्यता को देखकर हतप्रभ होना पड़ता है तथा ऐसे भी, जिनकी जड़ता, अयोग्यता और मूर्खता पर बुद्धि यह मानने को तनिक भी तैयार नहीं होती कि यह मनुष्य ही है । इस भारी अन्तर के कारणों की गहराई में प्रवेश कर विज्ञानियों और तत्व ज्ञानियों ने जो निष्कर्ष निकाला है, उसके अनुसार इसका निमित्त वह प्राण ऊर्जा ही है, जो जिस अनुपात में जहाँ इकट्ठी होती है, उसी स्तर के चमत्कार प्रस्तुत करने लगती है । यहाँ यदि कोई शारीरिक दृष्टि से अधिक तेजस्वी, सुन्दर, सक्रिय, स्फूर्तिवान, ओजस्वी, प्रतिभावान दिखाई पड़ता है तो, इसका मूल हेतु भी ऊर्जा की अधिक मात्रा में विद्यमानता ही है और यदि किसी में मस्तिष्क की सूक्ष्मदर्शिता, दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता दृष्टिगोचर होती है, तो यह भी उसी एक तथ्य की ओर इंगित करता है कि व्यक्ति प्राण विद्युत सम्पन्न है ।

स्वभावगत शालीनता एवं वाणी की मिठास को आमतौर पर आकर्षण का मुख्य कारण कहा जाता है । अंगों की कोमलता में भी जिस सौन्दर्य की झाँकी होती है, उनमें भी शरीरशास्त्रीय दृष्टि से विद्युत कम्पन की ही विशेष थिरकन समायी रहती है । किसी की आँखों में, किसी के होठों में, किसी की ठुड्डी, तो किसी के गालों में विशेष मनमोहकता देखी जाती है । इसका तात्विक विश्लेषण करने पर मानवी शरीर की बिजली ही लहराती सिद्ध होती है । इसमें जब कमी होने लगती है, तो शरीर रूखा, नीरस, कुरूप, शिथिल, निस्तेज दिखाई देने लगता है । आँखों में दीनता, चेहरे पर उदासी छायी रहती है । इस विघटन को देखकर इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है, कि तेजस्विता की तरंगें शिथिल हो गईं और अभीष्ट ऊर्जा का अभाव हो गया ।

शरीर में रक्त-माँस की वृद्धि के लिए उपाय किए जाते हैं, पर इस तथ्य पर पहुँचने में भूल हो जाती है कि अग्नि मंद पड़ जाने पर पकने और पचने की क्रिया ही नहीं, उमंग और उत्कर्ष का प्रत्येक पक्ष शिथिल पड़ जाता है । यह अभाव समस्त शरीर की दुर्बलता अथवा अंग विशेष की आशक्तता के रूप में प्रकट होकर मनुष्य को रुग्ण बनाता है । बीमारों में रोग कीटाणुओं की खोज की जाती है । इनकी उपस्थिति कारण नहीं, लक्षण मात्र है । जिस तरह निर्जीव प्राण रहित माँस पिण्ड में कीड़े पड़ जाते हैं, उसी प्रकार देह में विद्युत की अभीष्ट मात्रा में जहाँ कमी आयी, वहाँ उस अर्धमृत काया पर तुच्छ से कीटाणु अपना अड्डा जमाते और वंश बढ़ाते चले जाते हैं । यदि शरीर में गर्मी की, बिजली की आवश्यक मात्रा विद्यमान हो, तो उसके प्रचण्ड तेज में किसी विजातीय द्रव्य को, रोग कीटक को जीवित रहने का अवसर ही नहीं रहता । बाहर के आक्रमणकारी कीटाणु उसमें प्रवेश करते ही जल-भुन कर नष्ट हो जाते हैं ।

शरीर विज्ञानियों का मत है कि, सामान्यतया किसी मनुष्य की मृत्यु जब घोषित की जाती है, तब भी उसकी पूर्ण मृत्यु नहीं होती । रक्त प्रवाह रुक जाने के बाद प्रायः ५ मिनट के उपरान्त हृदय अपना काम करना बन्द कर देता है । इसीलिए कृत्रिम श्वास-प्रश्वास क्रिया करके मृततुल्य व्यक्ति के हृदय की गति को पुनः आरम्भ कराने का प्रयत्न किया जाता है । मृत्यु क्रमिक होती है । पहले मस्तिष्क मरता है, फिर अन्य अवयव मरते हैं । फ्रांस राज्य क्रान्ति के समय एक विद्रोही का सिर काटा गया । सरकारी रिकॉर्ड में उल्लेख है कि कटा हुआ सिर बहुत देर तक इस तरह होठ और मुँह चलाता रहा, मानो वह कुछ कह रहा हो । पुराने जमाने में जब तलवारों से लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं, तो मुण्ड के कट कर अलग हो जाने के बाद भी रुण्ड उसी प्रकार तलवारें हवा में लहराते रहते थे, जैसे जीवित शरीर युद्ध कर रहे हों । ऐसे ही मुण्ड भी इधर-उधर लुढ़कते-उछलते देखे जाते थे । यह इस बात का प्रमाण है कि कानूनी मृत्यु के बाद भी किसी रूप में देर तक जीवन बना रहता है मरणोपरान्त भी क्रिया-कलाप चलाते रहने वाली इस सत्ता को आत्मवादी प्राण-चेतना ही मानते रहे हैं ।

वस्त्रों, स्थानों तथा अन्य उपयोग में आने वाली वस्तुओं के बारे में भी यही बात है । भली या बुरी प्रकृति के मनुष्य उन वस्तुओं पर अपना प्रभाव अधिक छोड़ते हैं, जिन्हें वे अधिक रुचिपूर्वक प्रयोग करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सच्चे साधु-सन्तों की माला, जनेऊ, खड़ाऊँ, प्रयुक्त वस्त्रों को कोई व्यक्ति उपहार-आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त कर लेते हैं और उनके प्रभाव से देर तक लाभान्वित होते रहते हैं । कलम, घड़ी, अँगूठी, बटन जैसी वस्तुओं का भी ऐसा ही महत्त्व है । भगवान बुद्ध का एक दाँत लंका में सुरक्षित है । ऐसे ही हजरत मुहम्मद साहब का एक बाल कश्मीर की हजरत बल दरगाह मस्जिद में रखा है । जैसे शरीर के साथ जुड़े हुए अवयव बाल या नाखून अपना महत्त्व रखते हैं, वैसे ही उनसे जुड़े हुए स्थलों का भी अपना विशेष महत्त्व है । जो भी इनके सम्पर्क में आते हैं, वे उनके अच्छे-बुरे प्रभावों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते, कारण कि इन सबके साथ सम्बद्ध व्यक्ति की प्राण विद्युत कुछ अंशों में चिपकी रहती है । यही विद्युत अपना असर दिखाती रहती है । अभिचार कृत्या, घात, चौकी, मूँठ जैसी क्रियाओं में तान्त्रिक लोग इसी बिजली का प्रयोग कर सम्बद्ध व्यक्ति में भले-बुरे परिणाम उत्पन्न करते हैं ।

जीवित व्यक्ति में उक्त बिजली अथवा आभा-मण्डल की व्यक्तित्व पर गहरी छाप रहती है । प्रायः यह जन्म-जन्मान्तरों के अभ्यास, प्रयास एवं संस्कार के आधार पर विनिर्मित होता है, पर मनुष्य अपनी स्वतन्त्र चेतना का उपयोग करके उसे बदल भी सकता है । सामान्य स्तर के लोग इस बने-बनाये तेजोवलय के अनुसार अपना स्वभाव और कर्म बनाये रहते हैं, पर मनस्वी लोग अपनी सुदृढ़ संकल्प शक्ति से अपनी अभ्यस्त आन्तरिक एवं बाह्य स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन भी कर सकते हैं । तब विनिर्मित प्रभा-मण्डल में भी वैसा ही परिवर्तन हो जाता है । उसके रंगों में, कम्पनों में इस परिवर्तन का हेर-फेर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । सुकरात कहते थे—"प्रकृतितः मैं कुख्यात हत्यारा ही हो सकता था, पर मैंने प्रयत्नपूर्वक अपने को बदलने में सफलता प्राप्त की ।"

साधारणतः रूप-रंग का आकर्षण हर किसी को मुग्ध-मोहित करता है, पर यदि तेजोवलय तदनुरूप न हुआ, तो कुछ ही समय में वह मूल्यांकन बदल जाता है । रूपवान काया में विषधर सर्प जैसी विद्रूपता प्रकट हो जाती है और कुरूपों को अष्टावक्र, सुकरात, गाँधी की तरह सिर-आँखों पर बिठाया जाने लगता है । शरीर की कुरूपता, सज्जा-साधना से एक हद तक छिपायी भी जा सकती है, पर तेजोवलय के सूक्ष्म शरीर पर किसी भी प्रकार पर्दा नहीं डाला जा सकता । जिनका अन्तःकरण थोड़ा जागृत हो चला है और किसी की भीतरी स्थिति समझने-देखने योग्य जिनकी सूक्ष्म दृष्टि जागृत हो गई है, वे रंग-रूप की उपेक्षा करके तेजोवलय में संव्याप्त सुन्दरता एवं कुरूपता को देख सकते हैं और उसी के अनुरूप किसी के प्रति श्रद्धालु-अश्रद्धालु होने की आवश्यकता अनुभव कर सकते हैं । वस्त्र पहनने का कारण शरीर को सर्दी-गर्मी से बचाना या शोभा बढ़ाना भी हो सकता है, पर मूल कारण तेजोवलय पर आवरण आच्छादित किए रहना ही है । भीतर की शक्ति बाहर निकल कर बिखरने न पाये, इसके लिए वस्त्रों का आवरण चढ़ाया जाता है ।

नग्न शरीर रहने वाले साधु-संन्यासी भी शरीर पर भस्म या मिट्टी का आवरण चढ़ाये रहते हैं । पूर्ण नग्न शरीर रखना असभ्य आचरण माना जाता है । इसका कारण सामाजिक मान्यता भी है, पर आत्मिक कारण यह है कि कोई शरीर नग्न होने की दशा में अपनी शक्ति तरंगें बड़ी मात्रा में बाहर बिखेरता रहेगा, साथ ही दूसरों के भले-बुरे प्रबल प्रभावों से अपने को बचा भी न सकेगा । अनावृत्त शरीर पर धूप का प्रभाव अधिक पड़ता है, उसी प्रकार दूसरों का चुम्बकत्व भी निर्वस्त्र लोगों को अधिक प्रभावित कर सकता है ।

रेशम एवं ऊन में शारीरिक विद्युत पर आवरण डाले रहने की क्षमता अधिक होती है, इसलिए प्रायः पुरश्चरणपरक प्रबल साधना प्रयोजनों में सूती वस्त्रों की अपेक्षा ऊनी या रेशमी कपड़ों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। यहाँ एक बात नोट कर ली जानी चाहिए कि वध करने के उपरान्त भेड़ों की उतारी हुई ऊन अथवा कीड़ों को उबाल कर उन्हें मार डालने के उपरान्त पाया जाने वाला रेशम आत्मिक उद्देश्यों में काम आने लायक नहीं रह जाता । वध के समय निकला चीत्कार उनकी सूक्ष्म स्थिति को आसुरी प्रकृति का बना देता है । शरीरगत विद्युत के आवागमन में प्रतिरोध उत्पन्न करने की क्षमता तो ऐसे ऊन या रेशम में हो सकती है, पर उनसे आध्यात्मिक प्रयोजनों में तो उल्टी बाधा ही पड़ेगी । उससे तो धुला हुआ सूती वस्त्र ही अच्छा है, जो तेजोवलय को अपने सात्विक सम्पर्क में रख कर कम-से-कम निर्मल बनाये तो रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभा-मण्डल में विद्युत कण, चुम्बकत्व, रेडियो विकिरण स्तर की चेतनायुक्त ऊर्जा भरी रहती है । इसे यन्त्रों से भी जाना व मापा जा सकता है और समीपवर्ती लोग भी इसको अपने शरीर और मन पर पड़ने वाले अदृश्य प्रभाव के आधार पर अनुभव कर सकते हैं । कई व्यक्तियों की समीपता अनायास ही बड़ी सुखद, प्रेरणाप्रद और हितकर होती है, कइयों का सान्निध्य अरुचिकर और कष्टकर प्रतीत होता है—इसका वैज्ञानिक कारण व्यक्तियों के शरीर से निकलने वाली इस ऊर्जा का पारस्परिक आकर्षण-विकर्षण ही होता है । समान प्रकृति के लोगों की ऊर्जा घुलती-मिलती है और सहयोग-प्रोत्साहन प्रदान करती है, पर यदि समीपवर्ती व्यक्तियों की प्रकृति में प्रतिकूलता हो, तो वह ऊर्जा टकराकर वापस लौटेगी और घृणा, अरुचि, अप्रसन्नता, खीझ जैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगी ।

देखा गया है कि कई व्यक्तियों में रास्ता चलते मित्रता हो जाती है । अपरिचित होते हुए भी वे ऐसा अनुभव करते हैं, मानो चिरपरिचित हों और पास आये, बात किये बिना रह ही नहीं सकते । इस अनायास आकर्षण के पीछे पूर्व जन्मों का सम्बन्ध परिचय भी हो सकता है, पर प्रत्यक्ष कारण दोनों के तेजोवलय की समानता है, जो एक-दूसरे को समीप खींचती रहती है । बात की बात में वे परस्पर परिचित, घनिष्ठ और विश्वस्त बन जाते हैं । तर्क के आधार पर यह आकर्षण भावुकता मात्र प्रतीत होता है और ऐसी जल्दबाजी में खतरे की आशंका की जा सकती है, पर तथ्य इतने प्रबल होते हैं कि इन सम्भावनाओं को निरस्त करते हुए घनिष्ठता उत्पन्न कर ही देते हैं । उसी प्रकार यह भी देखा जाता है कि स्वजन-सम्बन्धी से भी अकारण अरुचि रहती है और उसकी समीपता में कष्टकर अनुभूति ही होती रहती है । ढूँढ़ने पर वैसा कुछ कारण प्रतीत नहीं होता, तो भी ऐसी विषमता बनी रहती है । इसमें आभा-मण्डल के कम्पनों में ऐसी असाधारण विपन्नता ही प्रधान अवरोध होती है । इसी को कवियों ने "प्रकृति मिले मन मिले, अनमिल से न मिलाय" की उक्ति के साथ चित्रित किया है । यह "प्रकृति" मात्र आहार-विहार वेश-भूषा आदि की समानता पर निर्भर नहीं रहती, वरन् कारण गहरा होता है । इसे तेजोवलय के स्तर की समानता में ही खोजा जा सकता है । अनुशासन के पालन एवं उल्लंघन में प्रायः इसी समानता-असमानता के कारण उत्तेजना-उत्साह मिलता है ।

श्मशानों में कई बार धुँधले प्रकाश पुंज की लहरें उड़ती देखी जाती हैं । यह और कुछ नहीं, मृत व्यक्तियों की वह प्राण ज्योतियाँ ही हैं, जो स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने के पश्चात् इधर-उधर तैरती फिरती हैं । इनका नाश देह के साथ नहीं हो जाता है । कब्र में गाड़े गए व्यक्ति की लाश सड़ जाने पर भी उसकी वलय ऊर्जा उस क्षेत्र में उड़ती रह सकती है । इसे कभी-कभी आँखों से देखा जाता है और कभी उधर से निकलने वालों को रोमान्च, कँपकँपी, धड़कन, वृद्धि के रूप में इसका असुखद अनुभव होता है और वहाँ से जल्दी निकल भागने की इच्छा होती है । ऐसी अनुभूतियाँ भय और आशंका के भी कारण हो सकती हैं, पर कितनी ही बार पूर्ण निर्भय और मरणोत्तर सत्ता को अस्वीकार करने वाले व्यक्ति भी उस तरह की प्रतीति करते और कहते हैं कि उन्हें उस क्षेत्र में कुछ अदृश्य हलचल का आभास होता है । अघोरी, कापालिक इन्हीं वलय-पुंजों को वशवर्ती कर उनसे अपनी स्वार्थ-सिद्धि करते रहते हैं ।

उक्त स्वतन्त्र पुंज जब शरीर में होता है तो उसे सुरक्षित-संरक्षित रखने वाले व्यक्तियों में चेहरे के गिर्द आलोक की तरह फैला रहता है । यह इस ऊर्जा पुंज का ऊपरी या उत्तरी ध्रुव है । इस केन्द्र की तरह ही इसका एक दक्षिणी ध्रुव भी है । यह लिंग क्षेत्र वाला भाग है, पर चूँकि उसमें प्रजनन सम्बन्धी आकर्षण अधिक रहता है इसलिए इस वलय का प्रभाव यौन आकर्षण उत्पन्न करने वाला होता है । भिन्न लिंग की समीपता ही उस वलय में अधिक उभार उत्पन्न करती है । समलिंग की निकटता में वह तेजस् उत्तेजित नहीं होता । इन अड़चनों को देखते हुए ही कटि क्षेत्र को ढका रखा जाता है । विद्युत प्रवाह की दृष्टि से वहाँ भी चेहरे की अपेक्षा मात्रा कम नहीं होती, पर उपरोक्त बाधाओं ने उसे सीमित प्रयोजनों के लिए ही उपयोगी रहने दिया है । दाम्पत्य स्तर पर ही सर्वसाधारण उसका लाभ उठा पाते हैं, इस कारण ही उसे ढका हुआ, केवल प्रणय प्रयोजन के लिए ही सीमित-अवरुद्ध किया गया है । यदि यह दोष न होता, तो यह वलय-ऊर्जा चेहरे पर छाये रहने वाले पुंज से न्यून

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं, अधिक ही प्रभावशाली सिद्ध होती और शक्ति-जागरण के कितने ही प्रयोजन पूरे करती । तन्त्र मार्ग के पंचम मकार "मैथुन" द्वारा इसी की संसिद्धि की जाती है । यह मार्ग काली तत्व से सम्बन्धित होने के कारण इसमें रुद्र ग्रन्थि से जब शक्ति संचय करने के लिए कर्म प्राण को आधार बनाना होता है, तो मैथुन द्वारा ही सामर्थ्य भण्डार जमा किया जाता है । जननेन्द्रिय के प्रभाव क्षेत्र में मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र के अतिरिक्त शक्ति के कितने ही महत्त्वपूर्ण संस्थान और प्राण के अवस्थान हैं । इनमें प्रमुख हैं—वज्र मेरु तड़ित, कच्छप, कुण्डल, सर्पिणी, रुद्रग्रन्थि, समान एवं सुषुम्ना आदि । इनका आकुंचन-प्रकुंचन जब तन्त्र विद्या के आधार पर होता है, तो वलय-ऊर्जा को सँजोने वाले शक्ति-संस्थान उत्तेजित होते और शक्ति का अद्‌भुत प्रवाह उत्पन्न करते हैं । यह प्रवाह दोनों ही दिशा में उल्टा-सीधा चल सकता है । इस विद्या के ज्ञाता जननेन्द्रिय का उचित रीति से संयोग करके काम शक्ति से आशातीत लाभ उठाते हैं, परन्तु जो लोग इस विषय में अनभिज्ञ हैं, वे स्वास्थ्य और शक्ति दोनों ही खो बैठते हैं । साधारण जन तो रति-क्रिया में गवाँते ही अधिक हैं, पर योग साधना के विधानों द्वारा इस क्षेत्र में संकेन्द्रित वलय ऊर्जा से अन्नमय और प्राणमय कोशों की सुप्त शक्तियाँ जगायी भी जा सकती हैं ।

इस शक्ति-विज्ञान को समझा और लाभ उठाया जा सके, तो प्रस्तुत विपन्नता से उबरा जा सकता है और मनुष्य भौतिक एवं आत्मिक दृष्टि से इतना सम्पन्न वन सकता है, जिसे अद्‌भुत आश्चर्य स्तर का अचम्भा कहा जा सके ।

मनुष्य और धरातल का तेजोवलय

मनुष्य को दृश्यमान समर्थता उसके काय कलेवर के अन्तर्गत उसी परिधि में काम करती हुई दीखती है । पर वस्तुतः उसका क्षेत्र इतना सीमित नहीं है, वह समीपवर्ती क्षेत्र में बाहर भी विद्यमान रहती है और सम्पर्क में आने वाले वातावरण को भी प्रभावित करती है । सान्निध्य में आने वाले व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है ।

शरीरगत क्षमता का क्रिया-कलाप किसी भी रूप में दृष्टिगोचर क्यों न होता हो, वस्तुतः वह विद्युत प्रवाह के रूप में होता है । नस-नाड़ियाँ उसी के आधार पर अपना रक्त संचार क्रम जारी रखती हैं । ज्ञानतन्तु उसी के सहारे मस्तिष्क के साथ विभिन्न अंग अवयवों का सम्बन्ध जोड़े रहते हैं । माँसपेशियों का आकुंचन-प्रकुंचन उसी के सहारे गतिशील रहता है । निद्रा और जागृति में भी उसी की भूमिका रहती है ।

इसी जीवन्त विद्युत को आध्यात्म भाषा में प्राण शक्ति कहा जाता है । शरीरधारियों की शारीरिक, मानसिक हलचलों में इसी की प्रधानता रहने से उन्हें प्राणी कहा जाता है । जिसमें इसकी अधिकता होती है उन्हें प्राणवान और न्यूनता वालों को अल्प प्राण कहते हैं । कई बार बातचीत में इस न्यूनता का अत्युक्तिपूर्ण दोषारोपण किसी को निष्प्राण कहकर भी किया जाता है । वस्तुतः जीवधारियों की वास्तविक एवं आन्तरिक समर्थता इसी क्षमता के आधार पर दृष्टिगोचर होती है । कईयों के कायकलेवर भैंसे जैसे सुदृढ़ और विशाल भी होते हैं पर अल्प प्राण होने के कारण उनका पुरुषार्थ नगण्य रहता है, जबकि उसमे कहीं छोटे आकार का चीता दौड़ने-उछलने और वजन ढोने में असाधारण सामर्थ्य का परिचय देता है ।

यों प्राण अदृश्य है । उसे आमतौर से खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता । तो भी अब सूक्ष्मदर्शी उपकरणों से यह सम्भव हो गया है कि उसका अस्तित्व शरीर के बाहर भी देखा जा सके । उसे आभा-मण्डल या तेजोवलय कहते हैं । यही है वह विद्युत अंश जो सम्पर्क में आने वाले अन्यान्य प्राणियों तथा पदार्थों को आकर्षित-प्रभावित करता रहता है । शरीर के भीतर काम करने वाली इस बिजली को भी अवयवों की हलचलों में तीव्रता, न्यूनता देखकर जाना जा सकता है । इससे रहित तो कोई भी प्राण नहीं रहता, पर उसकी न्यूनाधिकता के आधार पर स्फूर्ति, तत्परता क्रियाशीलता एवं क्षमता में अन्तर तो बना ही रहता है ।

अब इस आभा-मण्डल को भी प्राणी की समर्थता का मूल्यांकन करते समय जाना जाने लगा है और यह भी विचार होता है कि, इसे किस प्रकार बढ़ा या घटा कर सन्तुलित स्तर पर लाया जाय । सामान्य स्वस्थता और समर्थता के लिए आवश्यक है कि यह विद्युत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सन्तुलन हर किसी में ठीक स्तर का बना रहे । विशिष्ट प्रयोजनों के लिए इसे बढ़ाने या घटाने की बात भी सोची जाती है । समाधि, तन्द्रा एवं शान्ति, विश्रान्ति के लिए उसकी न्यूनता अपेक्षित होती है । जबकि दुस्साहसी पराक्रमों के लिए उसे कहीं अधिक मात्रा में बढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है । अब इस सन्दर्भ में अपेक्षाकृत अधिक ध्यान दिया जा रहा है और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भौतिक स्तर का अनुसन्धान क्रम भी चल रहा है । आध्यात्मवादी तो आरम्भ से इसे खोजने और आवश्यकतानुसार घटाने-बढ़ाने की कुशलता प्राप्त करने के लिए साधना स्तर के विभिन्न प्रयोग करते रहे हैं ।

मानवीय प्रभा-मण्डल की जानकारी अति प्राचीन काल से चली आ रही है । यह एक प्रकाश-पुँज के रूप में मनुष्य के शरीर को ढके रहता है । इजीप्ट, भारत, ग्रीस और रोम में इसे धार्मिक मान्यताएँ प्राप्त हैं और प्रत्येक धार्मिक मूर्तियों में इसका प्रदर्शन भी किया जाता है ।

प्रभा-मण्डल का स्वरूप प्रत्येक मनुष्य में भिन्न-भिन्न रंगों व विशिष्टताओं का पाया जाता है । यह भिन्नता उनके स्वास्थ्य, भावना व धार्मिक मान्यताओं के ऊपर आधारित होती है । एक महान दार्शनिक स्वीडेन बोर्ग नें अपनी "स्प्रीचुअल डायरी" में लिखा है कि "प्रत्येक मनुष्य को चारों ओर एक आध्यात्मिक, प्राकृतिक व शारीरिक प्रभा-मण्डल का घेरा विद्यमान होता है ।"

इंग्लैण्ड के डॉ. वाल्टर जौन किल्नर ने अपने अथक प्रयास से इस मानवीय प्रभा-मण्डल की वास्तविकता को जन-सामान्य के लिए सुलभ बनाने में सफलता प्राप्त की है । उन्होंने १९०९ ई. में डिक्यानिन (अलकतरा रंग) द्रव्य के उपयोग से इसे प्रयोग द्वारा सिद्ध करने का भी प्रयास किया । कई प्रयोगों में सफलता प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने अपनी उपलब्धि को १९११ में "दी ह्युमन एटमोसफेयर" नामक पुस्तक में प्रकाशित किया । उनके इन प्रयोगों को कई विवाद का भी सामना करना पड़ा, परन्तु इसके बावजूद भी डॉ. किल्नर ने अपना प्रयोग अन्ततः जारी रखा । उन्होंने अपने प्रयोगों के अन्तर्गत रोग लक्षण को भी ज्ञात करने का कार्य आरम्भ किया और उन्होंने इस कार्य में सफलता भी पायी । उनके इस अद्‌भुत प्रयोग की जानकारी अभी जन-सामान्य को मिल भी नहीं पायी थी, कि २३ जून, १९२० को ७३ वर्ष की उम्र में उनका देहान्त हो गया ।

आगे चलकर उनके इन प्रयोगों को एक ब्रिटिश आध्यात्मवादी मिस्टर हैरी बोडिंगटन ने और आगे बढ़ाया । किल्नर ने प्रभा-मण्डल को देखने के लिए एक संकुचित बॉक्स की सहायता ली थी, जिसकी दीवारें शीशे की बनी थीं और उसमें अलकतरा रंग का अल्कोहलिक घोल रखा था । परन्तु इसमें कुछ कठिनाइयाँ थीं, क्योंकि अत्यधिक रंग की आवश्यकता पड़ती जो अत्यन्त ही मँहगा पड़ता था, साथ ही इसकी दीवारों को देखने में अति-कठिनाई होती थी । अतः बोडिंगटन से एक रंगीन चश्मे का प्रयोग आरम्भ किया जो, दोहरे शीशे का बना था और उसके बीच में अलकतरे का घोल रखा रहता था । अतः इसमें इस खर्चीले द्रव्य की बहुत ही कम आवश्यकता पड़ती थी । इसके पश्चात् १९३७ में प. जर्मनी के ओश्कर बैगनल ने किल्नर के प्रयोगों को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया और इस पर उन्होंने एक पुस्तक "दी आरिजिन एण्ड् प्रोपर्टिज ऑफ दी ह्युमन ऑरा" भी लिख डाली । बैगनल ने अपने प्रयोगों में डिक्यानिन की अपेक्षा एक अन्य अलकतरा रंग "पिनैसियानोल' का प्रयोग किया था, जो अत्यन्त सस्ता था ।

वर्तमान में इंग्लैण्ड के मेटाफिजिकल रिचर्ड ग्रुप के वैज्ञानिक मिस्टर जे. जे. विलियमसन ने किल्नर, बोडिंगटन और बैगनल के प्रयोगों का समन्वयात्मक परीक्षण तथा प्रयोग किया है । डॉ. डब्ल्यू. इ. बेनहम, जो कि एक आधुनिक रेडिएस्थेटिस्ट हैं, ने तो यह बताया है कि कीड़ों के भी प्रभा-मण्डल होते हैं जिसे प्रयोगों द्वारा देखा जा सकता है, उदाहरणस्वरूप मधुमक्खी का २० फीट लम्बा प्रभा-मण्डल दृष्टिगोचर हुआ है । अब इससे हाइवोल्टेज स्रोतों द्वारा स्पष्ट फोटोग्राफ भी खींचे जाने लगे हैं ।

डॉ. किल्नर की शोधें इस सन्दर्भ में प्रख्यात हैं । वे किसी का भी प्रभा-मण्डल देखकर यह बता सकते हैं कि उसकी जीवनी शक्ति एवं मानसिक क्षमता का स्तर क्या है । इस आधार पर किसी के पराक्रम एवं आयुष्य का भी पता चल सकता है । साथ ही स्वभाव एवं उपयोग के सम्बन्ध में भी ऐसा कुछ निर्धारण किया जा सकता है, जिसके सहारे कि उसके लिए ऐसे उपयुक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य का चुनाव किया जा सके, जो सरलता और सफलता के साथ बन पड़े । डॉ. क्लिनर उन उपायों की खोज निकालने के लिए भी प्रयत्नशील हैं, जिससे इस प्राण विद्युत का अनुपात घटाने-बढ़ाने की विधि हस्तगत करके किसी को भी अधिक समर्थ या असमर्थ बनाया जा सके । जिस प्रकार रक्त की शुद्धता, मात्रा एवं गतिशीलता पर स्वस्थता निर्भर रहती है, ठीक उसी प्रकार आभा-मण्डल की स्थिति का भी महत्त्व है ।

यह तेजोवलय प्रकृति क्षेत्र में कहाँ से उपलब्ध होता है ? इसकी खोज करते-करते वैज्ञानिकों ने इस समूची पृथ्वी को ही एक पदार्थ शरीर कहा है और उससे एक विशिष्ट आभा-मण्डल बाहर निकलते देखा है । सूर्य किरणों से तो चमकता ही है । इसके अतिरिक्त उसमें निजी चुम्बकत्व और प्रकाश भी है । वह भीतर भी है और बाहर भी । इसे भू-मण्डल का प्राण कहा जा सकता है । यदि यह उबलने लगे तो विस्फोटक स्थिति उत्पन्न होगी और गिरने-घटने लगे तो उर्वरता समाप्त होने अथवा हिम-युग आ पहुँचने जैसी स्थिति बनेगी । पृथ्वी की अनेकानेक अदृश्य परिस्थितियों में समय-समय पर उतार-चढ़ाव आते रहते हैं उसके लिए इस भू-चुम्बकत्व अथवा तेजोवलय को उत्तरदायी माना जाने लगा है ।

पृथ्वी वस्तुतः एक विशाल स्थायी चुम्बक है । इसका चुम्बकीय क्षेत्र कहीं कम, तो कहीं पर सबसे ज्यादा है । भू-चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव आकाश में कई किलोमीटर दूर तक फैला हुआ है । ये चुम्बकीय क्षेत्र सूर्य और अन्य ग्रहों से आने वाले आकाशीय विकिरण कणों को अपनी ओर खींचते रहते हैं । वैज्ञानिकों, इन्जीनियरों को पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र की जानकारी रहने पर खनन कर्म के पूर्वेक्षण में पर्याप्त सहायता मिलती है । लौह अयस्क (आयरन ओर) के चारों तरफ एकत्र अन्य तत्वों जैसे—एस्बस्टस, सल्फर, लेड, क्रोमियम, तेल और गैस तथा अन्य धातुओं की खोज में भू-चुम्बकीय क्षेत्र के प्रभाव का मापन उपयोगी सिद्ध हुआ है ।

वैज्ञानिकों का अभिमत है कि चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव पृथ्वी के हर स्थान पर बदलता रहता है । किसी-किसी स्थान पर प्रतिदिन, तो अन्यत्र स्थानों पर वार्षिक चुम्बकीय परिवर्तन होता रहता है । प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन बहुत छोटे होते हैं, परन्तु जब कभी अचानक ज्यादा परिवर्तन होता है तो, चुम्बकीय तूफान उठ खड़े होते हैं, जिसका प्रभाव समस्त भू-मण्डल पर पड़ता है ।

भू-चुम्बकीय क्षेत्र के प्रभावों के अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि, मनुष्य पर भी इस क्षेत्र का प्रभाव पड़ता है । ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने अपने विभिन्न प्रयोग, परीक्षणों के आधार पर इस बात की पुष्टि की है कि, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में होने वाले तीव्रगामी परिवर्तनों से हृदय और मस्तिष्क के विद्युतीय क्रिया-कलापों में आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ता है । कमजोर मनःस्थिति वाले व्यक्तियों पर इस परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है ।

जलवायु के आधार पर किन्हीं क्षेत्रों को स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त-अनुपयुक्त माना जाता रहा है । अब इस शृंखला में एक कड़ी और जुड़ती है कि पृथ्वी की भू-चुम्बकीय तेजोवलय आभा के अनुरूप भी मनुष्य की स्वस्थता, समर्थता पर अविज्ञात प्रभाव पड़ते रहते हैं । अस्तु विशेष महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए तद्नुरूप स्थान चयन करते समय अब न केवल स्थानीय सुविधा साधनों का महत्त्व माना जाता है, वरन् यह भी खोजा जाता है कि किस क्षेत्र के भू-चुम्बकत्व की स्थिति क्या है ?

व्यक्तित्व के उच्चस्तरीय विकास में हिमालय एवं गंगा के हर क्षेत्र की धरातल प्रखरता को उपयुक्त माना जाता रहा है । इसी प्रकार महाप्राण ऋषि-तपस्वियों के सान्निध्य में न केवल उनके परामर्श का वरन् तेजोवलय का भी लाभ मिलता है । इस सन्दर्भ में ऋषि आश्रमों में सिंह गाय का एक घाट पानी पीना एक उपयुक्त उदाहरण है । ये सारे प्रसंग वातावरण में संव्याप्त चुम्बकीय तेजोवलय की महत्ता बताते हैं, जिसे बढ़ा कर व्यक्ति सामर्थ्य सम्पन्न बन सकता है ।

मानवी तेजोवलय

मोटे तौर पर चेहरे को देखकर कितने ही व्यक्ति बहुत कुछ जानने और समझने में सफल हो जाते हैं । आकृति देखकर प्रकृति का अनुमान लगाने वाले सूक्ष्मदर्शी नाक, कान, आँख, मुँह आदि की बनावट को नहीं, वरन् चेहरे के चारों ओर उमड़ते-घुमड़ते तेजोवलय को ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परखते हैं और उसी के आधार पर व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व का प्रभाव एवं परिचय प्राप्त करते हैं ।

तेजोवलय का एक केन्द्र चेहरे की ही तरह जननेन्द्रिय क्षेत्र में छाया रहता है, इस क्षेत्र में प्रजनन सम्बन्धी केन्द्र होने से लय का प्रभाव यौन आकर्षण उत्पन्न करने वाला होता है । किशोर वय के भिन्न लिंगों के बीच यह वलय ही अधिक उभार उत्पन्न करता है । समलिंगों की समीपता में वह तेजस् उत्तेजित नहीं होता । कटि प्रदेश को सदा ढके रहने के पीछे यही आधार होता है कि समलिंगों का तेजोवलय भिन्न लिंगों के बीच अनावश्यक उभार न पैदा करे ।

साधु, सन्तों, महापुरुषों की माला, जनेऊ, खड़ाऊँ, वस्त्र अथवा अन्य वस्तुएँ उपहार-आशीर्वाद स्वरूप पाकर लोग कृतार्थ हो जाते हैं और उनके प्रभाव से देर तक लाभान्वित होते रहते हैं । दीर्घकाल तक उनमें वह दिव्य प्रभाव बना रहता है ।

तेजोवलय मात्र प्रकाश ही नहीं, उसमें चुम्बत्व भी मिश्रित है । जो दुर्बलों को प्रभावित करता और सशक्तों से प्रभावित होता है । इसे आध्यात्म साधना के विभिन्न स्वरूपों को अपना कर निश्चित ही बढ़ाया जा सकता है । सुपात्र योगी यही कर अपनी सामर्थ्य बढ़ाते हैं ।

हमारी जीव चेतना में प्राण की एक सीमित मात्रा ही भरी हुई है, जिसके द्वारा जीवन का दैनिक व्यापार चलता है । भौतिक सफलताओं एवं आत्मिक विभूतियों की अतिरिक्त उपलब्धि के लिए हमें आन्तरिक प्राण सम्पदा की मात्रा क्रमशः बढ़ानी पड़ती है और इसके लिए विराट् ब्रह्माण्ड में विपुल परिमाण में संव्याप्त प्राण शक्ति से सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है ।

ब्रह्माण्ड एक ऐसा विराट् सागर है, जिसमें प्राण-तत्व हिलोरे ले रहा है । पिण्ड सत्ता, जीव सत्ता में समाहित प्राण-तत्व को आत्माग्नि कहा जा सकता है और ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राण को ब्रह्माग्नि । आत्माग्नि लघु है तो ब्रह्माग्नि विभु । ठीक इसी प्रकार आत्माग्नि में ब्रह्माग्नि का अनुदान सतत पहुँचते रहना आवश्यक है । जिस साधना प्रक्रिया द्वारा इस प्रयोजन की पूर्ति होती है, उसे प्राणायाम कहते हैं । प्राणायाम अर्थात् प्राण का आयाम जोड़ने की, प्राण-तत्व सम्वर्धन की एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें जीवात्मा का क्षुद्र प्राण—विराट चेतना के महा प्राण से जुड़कर उसी के समतुल्य बन जाय । विराट् चेतना से जुड़ने और पूर्णता प्राप्त करने का यही राजमार्ग है ।

यों तो "डीप ब्रीदिंग" अर्थात् गहरी साँस लेने को आरोग्यवर्धक बताया गया है, इससे फेफड़ों को अधिक ऑक्सीजन मिलती है । जो स्वास्थ्य सन्तुलन एवं सम्वर्धन में सहायक सिद्ध होती है, पर आध्यात्म विज्ञान में जिस प्राणायाम की चर्चा की जाती है, वह शरीर शास्त्रियों की प्रचलित डीप ब्रीदिंग से भिन्न होती है । गहरी साँस से अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलने और स्वास्थ्य सम्वर्धन का मात्र शारीरिक स्थूल प्रयोजन पूरा होता है, पर यौगिक प्राणायामों में ब्रह्माण्ड व्यापी प्राण-तत्व का असाधारण लाभ भी मिलता है ।

वस्तुतः प्राणायाम में साँस की गति में असामान्य व्यतिक्रम पर निर्धारित है । इसमें घर्षण का असामान्य क्रम उत्पन्न होता है और उसकी प्रतिक्रिया जीवन निर्वाह की आवश्यकता पूरी करने से आगे बढ़कर शरीर में विशेष हलचलें उत्पन्न करती हैं । दाएँ-बाएँ नासिका स्वरों से चलने वाले विशेष प्रकार के मेरुदण्ड के इड़ा, पिंगला विद्युत प्रवाहों को उत्तेजित करती हैं, वे असामान्य हलचलें ऐसे प्रसुप्त संस्थानों को जगाती हैं, जो सामान्यतया निर्वाह क्रम में तो आवश्यक नहीं होते पर जागृत होने पर मनुष्य में विशेष स्तर की अतिरिक्त मात्रा में विशेष क्षमता प्रदान करते हैं । प्राणायाम साँस की गति को तीव्र करना नहीं, उसे तालबद्ध और क्रमबद्ध करना है । इस ताल-लय और क्रम के हेर-फेर के आधार पर ही अनेक प्रकार के प्राणायाम बने हैं और उनके विविध प्रयोजनों के लिए विविध प्रकार के उपयोग होते हैं ।

प्राणायामों का विधान सरल भी है और कठिन भी । सरल प्राणायाम यह है कि गहरी साँस ली जाय और पूरे फेफड़े खाली करके उसे बाहर निकाला जाय । साँस खींचते समय विश्व प्राण को अपने भीतर प्रवेश करने और स्थिर होने की भावना की जाय और निकालते समय भावना की जाय कि दुर्बलता, रुग्णता एवं अनैतिकता के सभी तत्व निकल कर बाहर जा रहे हैं और वे फिर कभी लौटने वाले नहीं हैं । यह एक प्राणायाम हुआ । यह न्यूनतम तीन बार किया जाय और फिर प्रति सप्ताह उसे एक-एक की संख्या में बढ़ाते चला जाय ।

स्मरण रहे मात्र गहरी साँस लेना-छोड़ना ही प्राणायाम नहीं है । उसके साथ संकल्प, भावना और दृढ़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वास भी जुड़ा रहना चाहिए । इस प्रकार अपने में प्राण-तत्व की मात्रा निरन्तर बढ़ायी जाय । उसे निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त अनुभव किया जाय और खींचते समय तदनुरूप भावना की जाय । इसी आकर्षण से साँस में प्राण-तत्व की अधिक मात्रा अन्तरिक्ष से खिंचती और घुलती चली आती है । इस प्राणायाम में श्वास-प्रश्वास क्रम की विशेष प्रक्रिया और साधक की संकल्प शक्ति का समावेश होने से वह सामान्य साँस लेना न रहकर विशिष्ट ऊर्जा की उपलब्धि का विशेष आधार बन जाता है । इस प्रक्रिया द्वारा प्राण-तत्व का विधिवत् आकर्षण और अवधारण किया जा सके तो ओजस् तत्व उभर कर ऊपर आता है और साधक को मनस्वी, तेजस्वी एवं ओजस्वी बनने का अवसर मिलता है । भौतिक सिद्धियों एवं आत्मिक क्षेत्र की ऋद्धियों के उन्नयन का आधार प्राण प्रखरता का सम्पादन ही है ।

जीवनी शक्ति की विद्युत चुम्बकीयता

शक्ति तत्वों के बारे में वैज्ञानिक जानकारियाँ जितनी बढ़ती जा रही हैं, जीवन और प्राण से सम्बन्धित पाश्चात्य मान्यताएँ उतनी ही तेजी से गलती और बदलती जा रही हैं, भारतीय तत्व दर्शन की सत्यता की सम्भावनाओं में उतनी ही तीव्र वृद्धि होती जा रही है । साधनाओं की—योगाभ्यास की कठिन प्रक्रियाओं को पार कर भारतीय तत्व दर्शियों ने जो खोजें की हैं, पाश्चात्य विज्ञान उधर ही बढ़ रहा है । प्रस्तुत लेख में पाश्चात्य विज्ञान द्वारा प्रमाणिक मानव-जीवन के विद्युत चुम्बकीय स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है । जिससे पाठकों को जीवन-शक्ति, प्राण-तत्व की कल्पना का एक नया रूप मिलेगा ।

एक बार डॉ. रेगनाल्ट एक रोगी की परिचर्या कर रहे थे । मानसिक तनाव के उस बीमार को वे जब-जब पूर्व-पश्चिम दिशा की ओर सुलाते "औसिलोमीटर" की सहायता से पता चलता कि, कष्ट बढ़ गया है जबकि चारपाई की दिशा उत्तर-दक्षिण करते तत्काल लाभ मिलता । उन्होंने बताया यह घटना इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य का पृथ्वी की चुम्बकीय धाराओं से सम्बन्ध है । डॉ. रेगनाल्ट की यह खोज एक दिन विकासबाद और मनुष्य के अमीबा जैसे एक कोषीय जीव से उत्पत्ति की बात को खण्डित कर दे तो कुछ आश्चर्य नहीं । प्राण या जीवन शक्ति एक सनातन तत्व है, जो विस्फोट के कारण ब्रह्माण्ड के किसी केन्द्र पिण्ड से बहता हुआ सारे विश्व में नाना प्रकार की रचनाओं के रूप में व्यक्त हो रहा है ।

कुत्ते, बिल्लियाँ, बैल एक बार जिस रास्ते को देख लेते हैं, दुबारा उधर कभी जाना हो तो वे उधर से आसानी से लौट आते हैं । इनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वे प्राकृतिक चिन्हों की मदद से यात्राएँ कर लेते होंगे पर कुछ पक्षी, मछलियाँ हजारों मील लम्बी यात्राएँ करती हैं, रात में करती हैं, विभिन्न ऋतुओं में करती हैं तो भी नियत स्थानों में ही पहुँचती हैं । यह एक आश्चर्य है कि वे बिना किसी दिशा निर्देश के अन्तवृत्ति द्वारा किस प्रकार इस तरह की लम्बी यात्राएँ सम्पन्न कर लेते हैं ।

योरोपीय सारस ठण्डक के दिनों में योरोप से उड़ती हैं और अफ्रीका जा पहुँचती हैं । काले सिर वाले कौवे (हूडेड क्रो) अबा बीलें ६००० मील की यात्राएँ करके एक स्थान से दूसरे स्थानों तक पहुँच जाती हैं । उन्हें कोई दिशा ज्ञान न होने पर भी वे नियत स्थानों में कैसे पहुँच जाते हैं, यह आश्चर्य का विषय था । यात्राएँ अधिकांश रात में होती है, तारों का कोई ज्ञान हो पक्षियों के बारे में ऐसे भी कोई तथ्य प्रकट नहीं हैं अतएव आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है । जीव-शास्त्रियों ने खोज की और पाया कि रहस्य कुछ भी हो पर एक बात निश्चित रूप से साफ हो जाती है, वह यह कि सभी पक्षी पृथ्वी की चुम्बकीय रेखाओं के समानान्तर प्रवास करते हैं, प्रयोगों से यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है ।

एक बार कुछ कौवों को पकड़ कर उनके शरीर में कुछ चिन्ह बाँध दिए गए । ये कौवे उत्तर पूर्व दिशा में प्रवास के आदी थे । इस बार उन्हें प्रशा (जर्मनी) में पकड़ा गया और वहाँ से ५०० मील पश्चिम ले जाकर कील नहर के किनारे छोड़ा गया । इस बार उन्होंने उड़ान भरी और स्कैडेनेविया में जाकर उतरे । पहली उड़ान वाले मार्ग से इस मार्ग की तुलना की गई तो स्पष्ट ज्ञात हो गया कि यह यात्रा पथ पहले प्रवास पथ से ठीक समानान्तर और पृथ्वी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चुम्बकीय रेखा के भी ठीक समानान्तर था । ह्वेल और सालोमन मछलियों के प्रयोग से भी यही बात सामने आयी और उससे एक बात पूर्ण स्पष्ट हो गई कि जीव-जन्तुओं का जीवन चुम्बक शक्ति से प्रभावित और प्रेरित होता है । इन प्रयोगों में शियर-वाटर (जल में तैरने वाले पक्षी) का उदाहरण सर्वाधिक आश्चर्य जनक था । इसे अटलांटिक महासागर के एक किनारे पर छोड़ा गया वहाँ से वे ३०५० मील लम्बी यात्रा सम्पन्न कर स्कोरवोम द्वीप के अपने निवास स्थान पर जा पहुँचे ।

जीव-जगत चुम्बकीय शक्ति से बहुत अधिक प्रभावित पाया जाता है । टरमाइन कीड़ा अपना घर ठीक पृथ्वी की चुम्बकीय रेखाओं के समानान्तर बनाता है । पृथ्वी पर कभी चुम्बकीय आँधियाँ आती हैं तो दीमक, चीटियाँ तक विक्षुब्ध हो उठती हैं । यहाँ तक कि जीव कोशों (लाइफ सेल्स) का सूत्र विभाजन भी अपनी प्रारम्भिक और मध्य अवस्था में चुम्बकीय शक्ति से प्रभावित होता है । क्रोमोसोम हमेशा सेलों के ध्रुवों की ओर ही चलते हैं । यह इस बात का प्रमाण है कि जीवनी शक्ति विद्युत चुम्बकीय क्षमता से ओत-प्रोत अथवा वैसी ही कोई शक्ति है ।

जीव जन्तु ही नहीं मनुष्यों के जीवन भी चुम्बकीय शक्ति से प्रभावित होते हैं । १८४५ में डॉ. रीचेन बैक ने अनेक लोगों पर उनके स्वप्नों का अध्ययन कर बताया कि पूर्व की ओर सिर और पश्चिम की ओर पैर करके सोने में बड़ी बेचैनी होती है । जबकि उत्तर-दक्षिण सोने में सुखद अनुभूतियाँ होती हैं । डॉ. क्लैरिक तथा डुरविले के प्रयोग भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं और बताते हैं कि स्वप्नों में दिखाई देने वाले दृश्यों का सम्बन्ध कैसे भी हो, चुम्बकीय शक्ति से ही है । डॉ. रेगनाल्ट, अम्ब्रास मुलर, लैंप्रिस आदि ने भी उक्त मान्यताओं की पुष्टि की है ।

पृथ्वी की चुम्बक शक्ति के बारे में यद्यपि वैज्ञानिक अभी कल्पनाएँ ही करते हैं और अनुमान लगाते हैं कि पृथ्वी के गर्भ में मैगनेटाइट या फैरस ऑक्साइड की विशाल राशि संग्रहीत है उसी के फलस्वरूप पृथ्वी एक विशाल चुम्बक की तरह काम करती है । मानवीय जीवन या जीव जन्तुओं की चुम्बकीय धाराओं से प्रभावित होने के कारण उनके शरीर में लौह युक्त हीमोग्लोबिन का होना बताते हैं, पर वस्तुतः यह दोनों ही कारण सूर्य के प्रकाश कणों की विद्युत चुम्बकत्व के कारण हैं । पृथ्वी को चुम्बक बनाने का काम सूर्य करता है । पिछले एक लेख में ध्रुव प्रभा के निर्माण की व्याख्या करते समय यह बात प्रकट हुई है । अखण्ड-ज्योति के पिछले एक अंक में "पत्थर में भगवान" शीर्षक में यह बताया गया है कि सूर्य के प्रकाश कण (फोटोन्स) ही जीवन का आधारभूत तथ्य हैं । पुरुष के शरीर में पाया जाने वाला "हीमोग्लोबिन" यह प्राण ही है जो सूर्य से निःसृत होता है और वायु द्वारा, इच्छा शक्ति द्वारा तथा अन्न द्वारा हमारे शरीरों में पहुँचता रहता है, स्त्री के शरीर में इसे ही "रयि" कहते हैं विपरीत ध्रुव संचय होने के कारण ही स्त्री-पुरुषों में परस्पर आकर्षण का स्वभाव पाया जाता है ।

डॉ. मैरिनेस्को ने तो कई प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि चुम्बकत्व हमारे मानसिक संस्थान को भी प्रभावित करते हैं । वे मस्तिष्क की तीसरी वेन्ट्रिकल में धन विद्युत प्रविष्ट कर निन्द्रा ला देते थे । विद्युत और चुम्बक लगभग एक जैसी ही शक्तियाँ और परस्पर परिवर्तनीय हैं । उन्होंने यह भी दिखाया कि स्वप्न की अनुभूतियाँ भी चुम्बकीय क्षेत्र से प्रभावित होती हैं । हम ऐसे सैकड़ों उदाहरण दे चुके हैं कि, कई बार मनुष्य के स्वप्न नितान्त सत्य पाये जाते हैं इससे प्रतीत होता है कि चुम्बक शक्ति में विचार, सर्वज्ञता, सर्व व्यापकता के सारे लक्षण विद्यमान हैं, यदि ऐसा ही है तो ध्रुव प्रभाओं (अरोरल लाइट) द्वारा जीवात्मा के ऊर्ध्व या अधोगामी लोकों में प्रस्थान की भारतीय मान्यताएँ भी गलत नहीं होनी चाहिए । पुराणों में वर्णन आता है—

नाथवीथ्युत्तरं यच्च सप्तर्षिभ्यश्च दक्षिणम् ।
उत्तर सवितुः पन्था देवयान इति स्मृतः ॥
उत्तरं यद गस्तस्य अजवीथ्याश्च दक्षिणम् ।
पितृयानः स वै पन्था वैश्वानर पथाद् बहिः ॥

अर्थात्—नाथ वीथी से उत्तर और सप्तर्षि से दक्षिण सूर्य का जो उत्तर की तरफ का मार्ग है, उसे देवयान कहते हैं । अगस्त के तारे से जो उत्तर और अजवीथी दक्षिण है, वह वैश्वानर मार्ग से बाहर पितृयान का मार्ग है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह मार्ग पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति और सूर्य के प्रकाश कणों के सम्मिलित रूप से बनते हैं, उनका स्वरूप विद्युत चुम्बकीय ही होता है, जैसा कि पिछले ध्रुव प्रभा वाले लेख में दिया है । धन और ऋण विद्युत कणों का एक दूसरी ओर आना-जाना ही विद्युत या चुम्बक शक्ति का क्रम है, वैदिक भाषा में इसे ही "एति च प्रेति च" कहा है इसे ऋग्वेद में—

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणद पानती,
व्यख्यनमहिषो दिवम् ।

—ऋग्वेद १०/१८६/२

अर्थात्—प्राण अपान रूप में स्पन्दित यह शक्ति ही जीवन का आधार है । यों उसका मूल आधार सूर्य है—

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यच ।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन ॥

अर्थात्—काले वर्ण के लोकों से विचरता हुआ मृत्य और अमृत अर्थात् प्रकृति और प्राण (धन और ऋण या उत्तरी ध्रुव चुम्बकत्व व दक्षिणी ध्रुव चुम्बकत्व) दोनों को सुव्यवस्थित करता हुआ, सुवर्णमय रथ से सविता (आदित्य प्राण) समस्त लोगों को देखता हुआ, दर्शन देता हुआ आ रहा है ।

जहाँ अब यह सिद्ध होता जा रहा है कि जीवनी शक्ति विद्युत चुम्बकीय तत्व है, वहाँ उसके सूर्य लोक से निसृत होने का प्रमाण भी वैज्ञानिकों को मिल रहे हैं सूर्य में काले धब्बों का वैज्ञानिकों द्वारा अंकन इस बात की पुष्टि करता कि सूर्य लोक का सम्बन्ध किसी और भी सुविशाल बीज ग्रह से अथवा ब्रह्माण्ड से है । इस सम्बन्ध में आगे की खोजें स्वर्ग मुक्ति और एक विश्वव्यापी सत्ता के अस्तित्व और उसकी प्राप्ति की आवश्यकता का ही बोध करायेंगी ।

मानवी तेजोवलय एक आध्यात्मिक सम्पदा

भले-बुरे व्यक्तियों के सान्निध्य से पड़ने वाला प्रभाव सर्वविदित है, जिसे प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया जा सकता है । पदार्थों की भाँति व्यक्तियों का भी अपना आकर्षण होता है । मानवी चुम्बकत्व की इस विशेषता को साधना क्षेत्र में तेजोवलय के रूप में जाना जाता है । यों समस्त शरीर में उसकी मात्रा होती है, पर आवाज की भाँति शरीर से निकलकर दूर क्षेत्र में जाते ही उसका प्रभाव कम हो जाता है । शरीर से निकलते समय यह विद्युत धारा अत्यन्त तीव्र होती है, जिसके शरीर में तेजोवलय जितना अधिक प्रखर होता है, वह उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है । यह 'वलय' भला भी हो सकता है और बुरा भी । अपने-अपने ढंग का आकर्षण और प्रभाव दोनों में रहता है । समीपवर्ती व्यक्ति तथा वातावरण उसी के अनुरूप प्रभावित होते हैं ।

तेजोवलय की सर्वाधिक मात्रा चेहरे पर होती है । देवताओं के चित्रों में उनके चेहरे के इर्द-गिर्द सूर्य जैसा एक घेरा चित्रित किया जाता है । यह इसी अदृश्य तेजोवलय का चित्रण है । ज्ञानेन्द्रियों का जमघट तथा मस्तिष्क का विद्युत भण्डार एक ही जगह है, इसीलिए चेहरा सबसे अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली होता है । मोटे तौर पर चेहरे को देखकर कितने ही व्यक्ति बहुत कुछ जानने और समझने में सफल हो जाते हैं । आकृति देखकर प्रकृति का अनुमान लगाने वाले सूक्ष्मदर्शी नाक, कान, आँख, मुँह आदि की बनावट को नहीं, वरन् चेहरे के चारों ओर उमड़ते-घुमड़ते तेजोवलय को ही परखते हैं और उसी के आधार पर व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व का प्रभाव एवं परिचय प्राप्त करते हैं ।

जैसा भी तेजोवलय होगा अपने निकटवर्ती क्षेत्र को, सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को, स्पर्श व्यवहार में आने वाले पदार्थों को सुनिश्चित रूप से प्रभावित करेगा । जिस तरह विद्युत, ताप, चुम्बक जैसी ऊर्जाएँ अपनी विशेषताओं के अनुरूप व्यक्तियों एवं पदार्थ पर प्रभाव डालती हैं, उसी प्रकार तेजोवलय का विद्युत मण्डल समीपवर्ती क्षेत्र एवं सम्बन्धित व्यक्तियों एवं पदार्थों में अपना प्रकाश, प्रभाव फैलाता रहता है । इसे अब वैज्ञानिक यन्त्रों के माध्यम से भी नापा और जाना जा सकता है । 'ह्यूमन ऑरा' पर पश्चिमी देशों में विस्तृत शोध भी सतत चल रही है । इसका मापन व फोटोग्राफिक अंकन भी अब सम्भव है ।

कितने ही व्यक्तियों की समीपता अनायास ही बड़ी सुखद, प्रेरणाप्रद और हितकर होती है और कितनों का सान्निध्य अरुचिकर तथा कष्टकर प्रतीत होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसका वैज्ञानिक कारण व्यक्तियों के शरीर से निकलने वाली इस ऊर्जा का पारस्परिक आकर्षण, विकर्षण होता है । समान प्रकृति के लोगों की ऊर्जा घुलती-मिलती और सहयोग, प्रोत्साहन प्रदान करती है, पर यदि समीपवर्ती व्यक्तियों की प्रकृति में प्रतिकूलता हो तो वह ऊर्जा टकरा कर वापस लौटेगी तथा घृणा, द्वेष, अरुचि, अप्रसन्नता एवं खीझ जैसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करेगी । रास्ता चलते कितने ही अनजान व्यक्तियों के बीच मित्रता हो जाती और वह घनिष्ठता में परिवर्तित हो जाती है । इसके विपरीत सदा एक-दूसरे के निकट रहते हुए कितने ही घनिष्ठ नहीं बन पाते—पराए जैसे लगते हैं । यह सब अन्तःऊर्जा के प्रतीक तेजोवलय का ही चमत्कार है, जो एक जैसी प्रकृति वालों के बीच आकर्षण तथा विपरीत के बीच विकर्षण पैदा करता है ।

तर्क के आधार पर अनायास उत्पन्न हुआ आकर्षण भावुकता मात्र प्रतीत होता है और जल्दबाजी में घनिष्ठता में बँध जाने की आशंका की जा सकती है, पर तथ्य इतने प्रबल होते हैं कि इन सम्भावनाओं को निरस्त करते हुए घनिष्ठता उत्पन्न कर ही देते हैं जबकि स्वजन सम्बन्धियों से भी अकारण अरुचि रहती है और उनकी समीपता में कष्टकर अनुभूति ही होती रहती है । ढूँढ़ने पर ऐसा कोई कारण प्रतीत नहीं होता तो, भी विषमता बनी ही रहती है । इसमें तेजोवलय के कम्पनों की गति में छायी असाधारण विपन्नता ही प्रधान अवरोध होती है ।

यह तो सम स्तरीय तेजोवलय सम्पन्न व्यक्तियों की चर्चा हुई । प्रचण्ड प्रतिभा से युक्त व्यक्तित्वों में तेजोवलय की प्रखरता एवं बहुलता होती है । चुम्बक का स्पर्श करने से साधारण लोहे में भी चुम्बक की विशेषता उत्पन्न हो जाती है । प्रखर व्यक्तित्वों में मानवी विद्युत की प्रचण्डता होती है । उनके परामर्श ज्ञान सहयोग का भी लाभ समीपवर्ती लोगों को मिलता है, पर सबसे बड़ा लाभ उस तेजोवलय का होता है, जो अपनी शक्तिशाली क्षमता को निरन्तर निसृत करता रहता है । जो भी उस सम्पर्क, सान्निध्य की लपेट में आता है, उसे बदलने-प्रभावित करने में सफल होता है । महामानवों के दर्शन, चरण-स्पर्श, आशीर्वचन, दृष्टिपात में जो सत्परिणाम विद्यमान रहते हैं, उसमें उनका प्रकाश पुंज तेजोवलय ही काम करता है । दूसरे शब्दों में इसे सूक्ष्म सत्ता का अदृश्य व्यक्तित्व भी कह सकते हैं । दृश्य व्यक्तित्व पंचतत्वों से बनी काया के रंग-रूप, सुडौलता, अंगों की बनावट आदि पर निर्भर करता है, पर अदृश्य. व्यक्तित्व पर, इस दृश्य स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । शरीर के स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक होते हुए भी कोई व्यक्ति आचरण की दृष्टि से हेय और हीन स्तर का हो सकता है । इसके विपरीत कोई काला, दुर्बल, कुरूप होते हुए भी अत्यन्त तेजस्वी और प्रतिभा का धनी हो सकता है, जबकि वह बाहर से कितना भी उपहासास्पद क्यों न लगे ? आँखों को आरम्भिक दर्शन में काय-कलेवर के अनुरूप किसी की वस्तुस्थिति समझने में भ्रम हो सकता है, पर जैसे ही उसकी यथार्थता अनुभव की जायेगी वह भ्रम दूर हो जायेगा और वास्तविक व्यक्तित्व के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन किया जाने लगेगा ।

शरीर के अंग अवयवों में मरणोपरान्त भी वलय का प्रभाव देखा जाता है । मरघट में तान्त्रिक साधनाएँ करने, कापालिकों के मृतकों की खोपड़ी साफ करने, उससे जल पीने जैसी अघोर क्रियाओं के पीछे मृतकों की अवशिष्ट वलय ऊर्जा को संग्रहित करने का सिद्धान्त ही कार्यान्वित होता है । तन्त्र साधना में तान्त्रिक अपने मनोवल की वृद्धि अन्यों के शरीरों की ऊर्जा के दोहन द्वारा भी करते हैं । कभी-कभी श्मशानों में धुँधले प्रकाश की गोलियाँ, लहरें अथवा धुँध उड़ती देखी जाती हैं । यह मृतक का अवशिष्ट तेजोवलय ही होता है, जो शरीर के जल जाने के बाद भी सूक्ष्म रूप में वहाँ विद्यमान रहता है । श्मशान में जाने पर वहाँ रुकने की इच्छा नहीं होती । अकारण भय छाया रहता है । मन विक्षुब्ध हो उठता है, यह उस वातावरण में छाये तेजोवलय का ही प्रभाव होता है ।

व्यक्तित्व पर तेजोवलय की भारी छाप रहती है । प्रायः यह जन्म-जन्मान्तरों के प्रयास, अभ्यास एवं संस्कार के आधार पर विनिर्मित होता है, पर मनुष्य अपनी स्वतन्त्र चेतना का उपयोग करके उसे बदल सकता तथा बढ़ा सकता है । सामान्य स्तर के व्यक्ति इस बने बनाये तेजोवलय के अनुरूप अपना स्वभाव और कर्म बनाये रहते हैं, पर मनस्वी साधक अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति से अभ्यस्त बाह्य एवं आन्तरिक स्थिति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर लेते हैं । तत्पश्चात तेजोवलय भी उसी के अनुरूप बन जाता है ।

सत् तत्वों से ओत-प्रोत तेजोवलय में परिवर्तन ही आध्यात्मिक कायाकल्प है । साधना की तप-तितिक्षा द्वारा तेजोवलय के प्रखरीकरण का उद्देश्य पूरा होता है । कहना न होगा कि इस महत्ती उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही तप-साधना के उच्चस्तरीय प्रयोगों, उपचारों की व्यवस्था बनायी जाती है, जिससे प्रत्येक साधक साधना के उपरान्त तेजोवलय की एक बहुमूल्य आध्यात्मिक पूँजी लेकर वापस लौटता है ।

प्रभा-मण्डल द्वारा पढ़ा जायेगा मनुष्य अब

मनुष्य मात्र हाड़ माँस का वह पिण्ड नहीं है, जो बाह्य रूप से दीखता है, वरन् वह चेतना का सूक्ष्म रूप है जो मृत्यु के बाद भी बचा रहता है । चेतना के इस सूक्ष्म शरीर की जानकारी काया के चारों ओर छाये बादलों में जैसे धुन्ध से होती है, जिसके प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया जा सकता है । इसका अपना एक विशिष्ट आकर्षण होता है । मानवी चुम्बकत्व की इसी विशेषता को साधना क्षेत्र में प्रभा-मण्डल या तेजोवलय के रूप में जाना जाता है । अंग्रेजी में इसे ही हेलो या ऑरा कहा जाता है । यों समस्त शरीर में उसकी मात्रा होती है, पर आवाज की भाँति शरीर से निकलकर दूर क्षेत्र में जाते ही उसका प्रभाव कम हो जाता है । कहा जाता है कि शरीर से निकलते समय यह विद्युत धारा अत्यन्त तीव्र होती है । जिसके शरीर में तेजोवलय जितना अधिक प्रखर होता है, वह उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है । यह वलय प्रभाव, सामर्थ्य के अनुरूप भला भी हो सकता है और बुरा भी । अपने-अपने ढंग का आकर्षण और प्रभाव दोनों में रहता है। समीपवर्ती व्यक्ति तथा वातावरण उसी के अनुरूप प्रभावित होते हैं ।

जिस तरह ताप, विद्युत, चुम्बक जैसी ऊर्जाएँ अपनी विशेषताओं के अनुरूप व्यक्तियों एवं पदार्थों पर प्रभाव डालती हैं, उसी प्रकार ऑरा का विद्युत मण्डल समीपवर्ती क्षेत्र, सम्बन्धित व्यक्तियों एवं पदार्थों में अपना प्रकाश, प्रभाव फैलाता रहता है । यही मनुष्य की चेतना का सूक्ष्म शरीर है, जिसकी वास्तविकता को अब वैज्ञानिक खोजों द्वारा भी प्रमाणित किया जा रहा है । सेण्ट थामस अस्पताल, लन्दन के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक वाल्टर जे. किल्नर अपनी पुस्तक "द ह्यूमन एटमास्फियर" में लिखा है कि प्रभा-मण्डल किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों में ही नहीं प्रत्युत सभी व्यक्तियों तथा प्राणि मात्र में होता है । प्रत्येक प्राणी की स्थूल काया के चारों ओर वलय रूप में ईथरिक फोर्स, फील्ड या बायोप्लाज्मा का घेरा प्रकाश के रंगों और लहरों के रूप में विद्यमान होता है । भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों में यह भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, उनके अनुसार यह आशा सदैव एक सी नहीं रहती । समय-समय पर उसमें बदलाव आता रहता है और यह रंग परिवर्तन स्वास्थ्य में आये उतार-चढ़ाव की ओर इंगित करता है । चिकित्सा क्षेत्र में रोग निदान के रूप में उन्होंने, इसका सफल प्रयोग भी किया है ।

वस्तुतः हमारी आँखों की देखने की एक निर्धारित सीमा है । वह इस सीमित दायरे की ही वस्तु को देख सकती है, भौतिक विज्ञानियों का कहना है कि हमारे नेत्र उन्हीं प्रकाश किरणों को पकड़ सकते हैं जिनकी तरंग दैर्ध्य ३८० से ७६० मिली माइक्रॉन सीमा क्षेत्र में आती हैं । इनसे अधिक या कम तरंग लम्बाई के प्रति नेत्रों के ज्ञान तन्तु असम्वेदनशील होते हैं, फलतः उन्हें हम नहीं देख पाते । प्रभा-मण्डल इसी सीमा के अन्तर्गत आता है, जिसे सामान्य दृष्टि से नहीं देखा जा सकता, किन्तु वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से इसे नापा और जाना जा सकता है । ह्यूमन ऑरा पर पाश्चात्य देशों में विस्तृत अनुसन्धान सतत चल रहे हैं । इसका मापन व फोटोग्राफिक अंकन भी अब सम्भव हो गया है ।

प्रभा-मण्डल का चित्रांकन सर्वप्रथम रूस के प्रख्यात वैज्ञानिक सेमयन किर्लियन ने किया । उन्हीं के नाम पर बाद में इसे किर्लियन फोटोग्राफी के नाम से जाना जाने लगा । इसकी खोज उस समय हुई जब किर्लियन अपनी प्रयोगशाला में एलेक्ट्रोथेरेपी के ऊँची आवृत्ति वाले यन्त्र की मरम्मत कर रहे थे । अचानक उन्होंने अपनी शरीर से छोटे-छोटे प्रदीप्त कणों को प्रकट होते देखा तथा अनुभव किया कि स्थूल काया के अन्दर कोई विशिष्ट ऊर्जा तत्व विद्यमान है । बाद में उन्होंने अपनी पत्नी के सहयोग से आभा-मण्डल को चित्रित करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की विधि खोज निकाली और एक विशेष प्रकार के यन्त्र का विकास किया । अब इस यन्त्र द्वारा मनुष्य के सूक्ष्म शरीर का—जिसे विज्ञान की भाषा में "बायोप्लाज्मा" अथवा "बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी" कहा जाता है, छायाचित्र लेना सम्भव हो गया है । इस क्षेत्र में काफी शोध अनुसन्धान भी हुए हैं । इतना ही नहीं, शरीर शास्त्रियों एवं मनः शास्त्रियों ने प्राणियों के व्यवहार पर भी इसके प्रभाव का अध्ययन किया है ।

थियोसाफी के विद्वानों के अनुसार यह आभा-मण्डल "इथरीक डबल" के रूप में भौतिक शरीर से एक चौथाई इंच बाहर उभरा रहता है, किन्तु फोर्स फील्ड के रूप में यह उससे कई इंच और अधिक बाहर तक फैला होता है । विज्ञान भी अब इसे स्वीकार करने लगा है कि मनुष्य शरीर के अन्दर कोई दिव्य चेतना ऊर्जा विद्यमान है । जिसकी विद्युत चुम्बकीय तरंगें सतत बाहर विकसित होती रहती हैं । इसमें चुम्बकत्व तथा विद्युत के कुछ गुण विद्यमान होने पर भी यह स्वयं न तो विद्युत है और न चुम्बकत्व । तीक्ष्ण रंगों व किरणों के रूप में इसे देखा और ताप के रूप में अंकित किया जा सकता है । सामान्यतः जीवधारियों के शरीर से २ से ८ इंच बाहर तक इस ऊर्जा का प्रसार होता है । वैज्ञानिकों ने प्राणियों के इस प्रभा विकिरण को "बायोफ्लक्स" नाम दिया है । उनके अनुसार मनुष्य की स्थिति में यह आयु, स्वास्थ्य, थकावट, मूड़ एवं भावनाओं के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है । योगाभ्यास द्वारा इसे उभारा और शरीर से बाहर निकाला जा सकता है एवं जीवधारियों तथा मनुष्य को इससे प्रभावित-प्रेरित किया जा सकता है । इतना ही नहीं वृक्ष-वनस्पतियों तथा जड़ पदार्थों में भी इसके द्वारा प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है । एकाग्रता के माध्यम से इसे दूर तक सम्प्रेषित किया जा सकना भी सम्भव है ।

मात्र मानवी काया से ही नहीं, वरन् अन्य प्राणियों व वनस्पतियों में भी प्रभा विकिरण को जाँचा-परखा गया है और पाया गया है कि प्रत्येक प्रजाति के हर सदस्य तथा हर सदस्य के विभिन्न अंग-अवयवों का अपना अलग और स्पष्ट तेजोवलय होता है । इस सन्दर्भ में मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. थेल्मामास ने अनकों प्रयोग परीक्षण किए तथा जीवित प्राणियों में एवं वनस्पतियों के किर्लियन तथा आर्गान विधि द्वारा फोटोग्राफ लिए । उनके अनुसार प्राणियों की दीप्तिशीलता परिवर्तित होती रहती है । पौधों से तुरन्त अलग की गई पत्तियों के जब चित्रांकन किए गए तो उनसे चिन्गारियों जैसे चमकदार स्फुलिंग निकलते दिखाई दिए । जैसे-जैसे पत्तियाँ सूखती जाती हैं, प्रदीप्तिता कम होती जाती है और अन्त में गायब हो जाती हैं । जिससे प्रकट होता है कि पत्ती के "बायोप्लाज्म बाडी' की मृत्यु हो गई । हरी पत्ती के कुछ अंश काटकर चित्र लेने पर भी पत्ती के छायाचित्र का पूर्ण तेजोवलय अंकित हो जाता है ।

मनुष्य शरीर के किसी अंग अवयव के कट जाने पर उसमें समाहित चेतना नष्ट नहीं होती, वरन्, अपना रूप-रंग और आकार बनाये रखती है । इस तथ्य की पुष्टि जैव-भौतिक विज्ञानी विक्टर एडामेन्को तथा जान ह्वावेचर ने अपने अनुसन्धानों के आधार पर की है । उनके अनुसार कटे हुए भाग का किर्लियन विधि से छाया चित्र लेने पर शेष शरीर के साथ उस अंग का भी प्रभा-मण्डल आ जाता है । यह प्रक्रिया चिकित्सा शास्त्रियों की उस धारणा को प्रमाणित करती है जिसमें कभी-कभी व्यक्ति के शरीर का कोई भाग कट जाने या काट दिए जाने पर भी उसे उक्त अंग में दर्द की अनुभूति होती रहती है । चिकित्सा क्षेत्र में इसे "फैन्टम लिम्बपेन" कहा जाता है । इन वैज्ञानिकों का कहना है कि वस्तुतः उस अंग के प्लाज्मा बॉडी का मरण नहीं होता, वरन् सम्पूर्ण काया के चेतन शरीर के साथ उसकी एकरूपता सदैव बनी रहती है, जिससे रोगी को "फैन्टमपेन" का अनुभव होता रहता है । एडमेन्को के अनुसार मनुष्य में भावनात्मक, उत्तेजनात्मक तथा सम्मोहन जैसे विभिन्न चेतना स्तरों के साथ किर्लियन फोटो में भी नाटकीय परिवर्तन आते रहते हैं ।

नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. डगलस ए. डीन के अनुसार मानवी अंगुलियों के पोरुओं तथा हथेली के चारों ओर के आभा-मण्डल से किसी के भविष्य में रोगी होने, न होने की सम्भावना व्यक्त की जा सकती है । फरवरी, ८८ के अन्तिम सप्ताह में "बायोइलेक्ट्रोग्राफी" पर पाण्डिचेरी में हुई एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में अपने शोध निष्कर्ष बताते हुए प्रोफेसर डीन ने कहा कि उन्होंने पोलेराइड इंस्टाण्ड फिल्म एवं बायोइलेक्ट्रोग्राफ की मदद से मात्र दो मिनट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में प्रभा-मण्डल का मापन व रोग का निदान कर पाने में वे सफल हुए हैं, अपने इसी कार्य पर उन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है । कोई आश्चर्य नहीं कि अगले दिनों "ऑरा मापन" चिकित्सा विज्ञान में एक महत्त्वपूर्ण स्थान ले ले ।

वस्तुतः अब इस विधा का उपयोग चिकित्सा विज्ञान में विभिन्न रोगों के निदान के रूप में किया भी जाने लगा है । ट्यूमर, आर्थ्राइटिस, कैंसर जैसे रोग इस विधि में फोटो प्लेट पर गर्म क्षेत्र के रूप में धूमिल धब्बेदार या फ्लास्कनुमा परिलक्षित होते हैं । रोगों की निकट भविष्य में होने की सम्भावना से भी व्यक्ति का प्रभा-मण्डल बदल जाता है । इस आधार पर रोगों की पूर्व सूचना प्राप्त कर, उनका पूर्व उपचार निदान भी किया जा सकता है । मद्रास यूनिवर्सिटी के चिकित्सा विज्ञानियों ने भी एक ऐसा कैमरा विकसित किया है, जिसके द्वारा इस प्रकार की फोटोग्राफी ली जा सकती है । रोगी व्यक्तियों पर उन्होंने इस प्रकार के कई प्रयोग परीक्षण भी किए हैं । उनका कहना है कि स्वस्थ और अस्वस्थ व्यक्तियों की चेतना मण्डल का आकार व रंग अलग-अलग प्रकार का होता है । इस आधार पर शरीर के भीतर छिपे रोगों की जानकारी प्राप्त करने में भी उन्होंने सफलता पायी है । अब तक उन्होंने एक हजार से अधिक व्यक्तियों के तेजोवलय के चित्र खींचे हैं और उसके आधार पर यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि प्रत्येक व्यक्ति का प्रभा-मण्डल उसके विचार और व्यक्तित्व के अनुरूप होता है । सिद्ध पुरुषों, महामानवों की तुलना में सामान्य व्यक्तियों के प्रदीप्त मण्डल क्षीण होते हैं । इसके अतिरिक्त संकल्पवान, चरित्रनिष्ठ, प्रभावशाली लोगों में यह अधिक दैदीप्यमान पाया गया है । शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के प्रभा-मण्डल चमकीले तथा स्पष्ट होते हैं जबकि हेय जीवन जीने एवं दुश्चिन्तन में डूबे रहने वालों में यह धुँधला होता है । डॉ. डेविड शीनकिन तथा टेड डान जैसे ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों की भी यही धारणा है कि आभा-मण्डल की प्रदीप्तिता-उज्ज्वलता मनुष्य की भावना और चेतना की उत्कृष्टता पर अवलम्बित है । साधना, ध्यान, समाधि के समय साधकों का प्रदीप्त मण्डल बहुत चमकीला एवं विस्तृत देखा जाता है । इसका कारण वैज्ञानिकों ने भावना, विचारणा एवं अन्तःकरण की पवित्रता, उत्कृष्टता को माना है ।

यह सुनिश्चित है कि व्यक्तित्व की आभा-मण्डल पर भारी छाप रहती है । प्रायः यह जन्म-जन्मान्तरों के प्रयास, अभ्यास एवं संस्कारों के आधार पर विनिर्मित होता है, पर मनुष्य अपनी स्वतन्त्र चेतना का उपयोग करके उसे बदल सकता तथा बढ़ा सकता है । सामान्य स्तर के व्यक्ति इस बने बनाये तेजोवलय के अनुरूप अपना स्वभाव और कर्म बनाये रहते हैं, पर मनस्वी साधक अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति से अभ्यस्त बाह्य एवं आन्तरिक स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर लेते हैं । तत्पश्चात् तेजोवलय भी उसी के अनुरूप बन जाता है । तप साधना के उच्च स्तरीय प्रयोग, उपचारों की व्यवस्था प्रभा-मण्डल के प्रखरीकरण की महती उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही बनायी जाती है । सत् तत्वों से ओत-प्रोत प्रभा-मण्डल में परिवर्तन ही आध्यात्मिक कायाकल्प है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति और वैज्ञानिक अभिमत

डॉ. थेरेस ब्रॉस ने निमोग्राफिक और कार्डियोग्राफिक मशीन से योग की स्थिति में अध्ययन से पाया है कि योगी द्वारा अपने हृदय पर नियन्त्रण करने से हृदय की धड़कन बन्द हो जाती है और आइसो इलेक्ट्रिक ग्राफ पर इसका मापन नहीं किया जा सकता, परन्तु नियन्त्रण हटा देने पर यह धड़कन नॉरमल हो जाती है और योगी की इच्छा के अनुसार इसकी वोल्टेज बढ़ भी जाती है । यह प्रभाव योगी की प्राण शक्ति की इच्छानुसार प्रयोग का है ।

विज्ञान द्वारा यह पाया गया है कि श्वास से खींचे गए ऑक्सीजन की शक्ति (ऋणात्मक आयन्स) को फेफड़े की महीन नलिकाएँ कोलोइड्स को भेज देती है, जिससे यह यौगिक नियन्त्रण हो पाता है । योगी बिना शरीर विज्ञान की जानकारी के इस तरह शारीरिक क्रियाओं पर पूर्ण नियन्त्रण कर लेते हैं । फिर भी पूर्ण स्वस्थ रहते हैं और सुख शान्ति से भरपूर रहते हैं, उनका स्वस्थ रहना असम्भव था ! यदि वे शारीरिक नियमों का पालन न करते होते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान को अब विश्वास हो गया है कि वातावरण में संव्याप्त प्राण बिजली के कणों द्वारा आवेशित हैं, विशेषकर ऋण आयनों द्वारा और शरीर द्वारा ग्रहण किये गये प्राण का, शरीर में ही वास्तविक चयापचय होता है । इस प्राण के पूर्ण रहस्य को जानने के लिए विज्ञान उत्सुक है । स्ट्रासबर्ग की चिकित्सा अकादमी के प्रोफेसर और जीव भौतिक संस्थान के डायरेक्टर फ्रेड वैलेस ने अपनी पुस्तक "द बायोलॉजिकल कन्डिशन्स क्रीएटेड बाई द इलेक्ट्रिकल प्रापर्टीज ऑफ द एटमॉसफियर" में इस सम्बन्ध में पूर्ण वैज्ञानिक जानकारी लिखी है ।

भू भौतिकी विज्ञानियों ने प्रयोगों से पाया है कि पृथ्वी की ऊपरी सतह ऋण आवेशित है और ऊपरी वायुमण्डल धनात्मक है । हमारा प्राणवान वायुमण्डल ऊर्ध्वाकार विद्युतीय क्षेत्र है, जिसमें प्रतिमीटर अल्टीट्यूड में १०० से १५० वोल्ट बिजली है । चीनी वैज्ञानिक सूली. डी. मोरेण्ट के अनुसार चीन के "यांग" और "यिन" परक विचार इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण हैं । शान्त वातावरण धनात्मक होता है । इसे चीनी "यांग" कहते हैं, जो कि सूर्य और तारों के कारण होता है । ऋणात्मक आवेश पृथ्वी के कारण होती है, जिसे वे 'यिन' कहते हैं । सोलहवीं सदी की चीनी पुस्तक के अनुसार यांग हल्की और शुद्ध होती है । यह शक्ति ऊपर की ओर बढ़ती है, जिससे आकाश बना है । यिन भारी और मोटी है, जिससे पृथ्वी बनी है । आकाश की शक्ति ऊपर है और पृथ्वी की शक्ति वनस्पति में नीचे है । यह प्राण शक्ति समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार कम या अधिक होती रहती है ।

सूर्य और तारे भी प्राण शक्ति को प्रभावित करते हैं । प्राण शक्ति में दो तरह के आयन्स होते हैं—

(१) ऋण आवेश युक्त, छोटे अधिक क्रियाशील, जो शरीर के सेल्स को शक्ति देते हैं और वायुमण्डल से प्राणियों को प्राप्त होते हैं । स्वच्छ आवोहवा में प्रत्येक बड़े आयन के साथ दो या तीन यह छोटे आयन्स होते हैं । ऋण आयन्स, धूल, धूआँ, कोहरा और गन्दी हवा मे नष्ट होते हैं ।

(२) बड़े, मन्द, अनेक अणुओं वाला न्यूक्लियस वाला आयन । ये गन्दे स्थानों पर अधिक होते हैं । ये वातावरण में छोटे आयन्स में मिल जाते हैं और अनेक आयन्स के मेल से बड़े आयन्स बनाते हैं । इनके बढ़ने से क्रियाशील (प्राणवान) छोटे आयन्स वातावरण में कम हो जाते हैं ।

इन वैज्ञानिक निष्कर्षों से योगियों का यह कथन प्रामाणित होता है कि प्राण कोई ऑक्सीजन, नाइट्रोजन या रसायन नहीं है । बड़े आयनों की अधिकता के कारण ही शहर की हवा प्राणवान और स्फूर्तिदायक नहीं होती । धूल, कल-कारखानों एवं कारों से निकलने वाली गैस के समान ही हानिकारक हैं, क्योंकि यह प्राण को नष्ट कर देती है । एयर कन्डीशन्स जगहों में भी प्राण नहीं पाये जाते, सिर्फ धूल का प्रवेश वहाँ रुकता है । धुआँ और कोहरा भी इसी तरह प्राणहीन होते हैं ।

प्राण शक्ति का मुख्य स्रोत सूर्य के शार्ट वेव्ह इलेक्ट्रोमैगनेटिक रेडिएशन्स हैं । वातावरण के क्रियाशील ऋण आवेशित आयन्स इसी के परिणाम हैं । यही मनुष्यों जीव जन्तुओं, वनस्पति, पेड़-पौधों, अणु-परमाणुओं, प्रोटान्स, न्यूट्रान्स एवं समस्त पदार्थों की प्राण शक्ति (जीवनी शक्ति) है । प्राणवान ऋणात्मक आयनों का दूसरा प्रमुख स्रोत ब्रह्माण्डीय किरणें हैं । जो लगातार दिन-रात आती हैं ।

ये शक्तिशाली ऋण आवेशी आयन्स पानी के लहराने और वाष्पीकरण से भी अधिक मात्रा में निकलते हैं । इसीलिए समुद्री हवा उत्साहवर्द्धक होती है । समुद्री तूफानों और धूल की अनुपस्थिति में भी ये अधिक होते हैं । समुद्र के किनारों और समुद्र में हम प्राण से स्नान करते हैं और इससे हमारे क्रियाशील एवं अति सम्वेदना वाले रंग अधिक पुष्ट होते हैं । चिड़चिड़े और स्नायविक लोगों को भी समुद्री हवा लाभप्रद है । प्राणायाम का उद्देश्य भी इस क्रियाशील आयन्स की शक्ति को ग्रहण करना, उन्हें अन्यान्य अंगों में भेजना एवं शक्ति अर्जित करना है ।

अन्न और जल के चयापचय प्रणालियों की तरह मानव शरीर में विद्युत (प्राण) के चयापचय की प्रणाली भी है । पाश्चात्य वैज्ञानिक वैलेस के अनुसार मनुष्य इस प्राण शक्ति के क्रियाशील ऋण आवेशी आयन्स को प्राप्त करके ऋण आवेशी हो जाता है । इस प्राण प्रणाली की शक्ति पर ही दूसरी प्रणालियाँ काम करती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । श्वास द्वारा ली गई वायु से मनुष्य इन ऋण आवेशी आयन्स को तब तक ग्रहण करता है, जब तक वे अधिक होने के कारण त्वचा से बाहर नहीं निकलते । वैलेस ने अपने प्रयोगों में पाया है कि हमारे अंग ऋण आवेशी आयनों से क्रियाशील रहते हैं और इनकी वृद्धि से उसकी जीवनी-शक्ति बढ़ती एवं स्फूर्ति एवं साहस में वृद्धि होती है । इस तरह पाश्चात्य विज्ञान पूर्णतः भारतीय योगियों के प्राण सम्बन्धी सिद्धान्तों की पुष्टि करता है ।

यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि गहरी और लम्बी श्वास लेने में हमें अधिक हवा मिलती है और हम अधिक प्राण पाते हैं । इससे नर्वस सिस्टम फेफड़ों को हवा प्रदूषण करने के लिए उत्तेजित करता है । नासिका के नर्वस में थोड़ा भी विक्षेप पूरे श्वासनांगों पर बहुत प्रभाव डालता है—यथा छींक । इसलिए प्राणायाम के द्वारा नथुनों को अधिक फैलाकर वायु ग्रहण करने का हम अभ्यास करें । इसमें हमें अधिक प्राण मिलेगा और हमारे मन एवं अंग सशक्त एवं स्फूर्तिवान बने रहेंगे । लगातार अभ्यास से हम यह सतत लाभ उठा सकते हैं ।

इस गहरे श्वास से हमें दस प्रतिशत हवा अधिक मिलती है । प्रति मिनट १८ श्वास के हिसाब से एक वर्ष में पाँच लाख मीटर हवा अधिक पायेंगे जो हमारे श्वासनांगों एवं अन्यान्य अंगों को अधिक शक्तिशाली बनायेगी । अभ्यास होने पर यह सुगम होगा और श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया इससे अधिक नियमित होगी ।

डॉ. वैलेस के अनुसार मानव शरीर में बिजली (प्राण) के चयापचय से अनेक बातें मालूम होती हैं । ऋण आयन्स का पाचन शरीर के अंगों को क्रियाशील रखने के लिए अति आवश्यक है और क्षतिग्रस्त आयनों का शरीर से निष्कासन भी उतना ही जरूरी है ।

वैलेस का कथन है कि यह प्राण सूर्य की अल्ट्रावॉयलेट किरणों (परा बैगनी किरणों) की फोटोकेमिकल (प्रकाश रसायन) क्रिया के द्वारा प्राप्त होती है । सूर्य स्नान हमारे विद्युत चयापचय को क्रियाशील बनाकर हमें अधिक शक्ति (स्फूर्ति) देता है । शरीर को पृथ्वी से पृथक (इन्सुलेटेड) नहीं रखना चाहिए क्योंकि लगातार क्रियाशील ऋण आयन्स का प्रवाह तब शरीर में नहीं हो सकेगा । प्राणियों के फरवाली चमड़ी से उनमें प्राण अधिक आकर्षित होता है और सुरक्षित बना रहता है । मनुष्य के शरीर में कपड़े पहनने से वह इन्सुलेटेड हो जाता है और क्रियाशील आयन्स का लाभ नहीं उठा पाता । इससे वह सुस्त और रोगग्रस्त होता है । अच्छा यही है कि प्राणायाम की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया हर क्षण अपनाते रहा जाय ।

प्राण संस्थान : कितना स्पष्ट, कितना अद्‌भुत ?

भारतीय मान्यता है कि मनुष्य की स्थूल काया में व्याप्त उसी के अनुरूप एक प्राण शरीर भी होता है । प्राण शरीर—शरीरस्थ प्राण संस्थान के न केवल अस्तित्व का, बल्कि उसके गुण, धर्मों तथा क्रिया-कलापों, प्रभावों आदि का भी वर्णन विस्तारपूर्वक भारतीय ग्रन्थों में मिलता है । इस मान्यता को स्थूल विज्ञान बहुत दिनों तक झुठलाता रहा, किन्तु शरीर विज्ञान के सन्दर्भ में जैसे-जैसे उसकी जानकारियाँ बढ़ रहीं हैं, प्राण संस्थान के अस्तित्व को एक सुनिश्चित तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है । भौतिक विज्ञान के स्थूल उपकरणों की पकड़ में भी इस सूक्ष्म सत्ता के अनेक प्रमाण आने लगे हैं ।

रूस के इलेक्ट्रानिक विज्ञान वेत्ता ऐमयोन किर्लियान ने एक ऐसी फोटोग्राफी का आविष्कार किया है, जो मनुष्य के इर्द-गिर्द होने वाली विद्युतीय हलचलों का भी छायांकन करती है । इससे प्रतीत होता है कि स्थूल शरीर के साथ-साथ सूक्ष्म शरीर की भी सत्ता विद्यमान है और वह ऐसे पदार्थ से बनी है, जो इलेक्ट्रॉनों से बने ठोस पदार्थ की अपेक्षा भिन्न स्तर की है और अधिक गतिशील भी ।

इंग्लैण्ड के डॉ. किलनर एक बार अस्पताल में रोगियों का परीक्षण कर रहे थे । एक मरणासन्न रोगी की जाँच करते समय उन्होंने देखा कि उनकी दुर्बीन (माइक्रोस्कोप) के शीशे पर एक विचित्र प्रकार के रंगीन प्रकाश कण जम गए हैं जो अब तक कभी भी देखे नहीं गए थे । दूसरे दिन उसी रोगी के कपड़े उतरवा कर जाँच करते समय डॉ. किलनर फिर चौंके उन्होंने देखा जो प्रकाश कल दिखाई दिया था आज वह लहरों के रूप में माइक्रोस्कोप शीशे के सामने उड़ रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोगी के शरीर के चारों ओर छः सात इन्च परिधि में यह प्रकाश फैला है, उसमें कई दुर्लभ रासायनिक तत्वों के प्रकाश कण भी थे । उन्होंने देखा जब प्रकाश मन्द पड़ता है, तब तक उसके शरीर और नाड़ी की गति में शिथिलता आ जाती है । थोड़ी देर बाद एकाएक प्रकाश पुंज विलुप्त हो गया । अब की बार जब उन्होंने नाड़ी पर हाथ रखा तो पाया कि उसकी मृत्यु हो गई । इस घटना को कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने के साथ-साथ डॉ. किलनर ने विश्वास व्यक्त किया कि जिस द्रव्य में जीवन के मौलिक गुण विद्यमान होते हैं, वह पदार्थ से प्रथम अति सूक्ष्म सत्ता है । इसका विनाश होता हो ऐसा नहीं है ।

प्राण-तत्व को एक चेतन ऊर्जा (लाइव एनर्जी) कहा गया है । भौतिक विज्ञान के अनुसार एनर्जी के छः प्रकार माने जाते हैं—(१) ताप (हीट), (२) प्रकाश (लाइट), (३) चुम्बकीय (मैगनेटिक), (४) विद्युत (इलेक्ट्रिसिटी), (५) ध्वनि (साउण्ड), (६) घर्षण (फ्रिक्शन) अथवा यान्त्रिक (मैकेनिकल) । एक प्रकार की एनर्जी को किसी भी दूसरे प्रकार की एनर्जी में बदला भी जा सकता है । शरीरस्थ चेतन क्षमता—लाइफ एनर्जी इन विज्ञान सम्मत प्रकारों से भिन्न होते हुए भी उनके माध्यम से जानी समझी जा सकती है ।

एनर्जी के बारे में वैज्ञानिक मान्यता है कि वह नष्ट नहीं होती, बल्कि उसका केवल रूपान्तरण होता है । यह भी माना जाता है कि एनर्जी किसी भी स्थूल पदार्थ से सम्बद्ध रह सकती है, फिर भी उसका अस्तित्व उससे भिन्न है और वह एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में स्थानान्तरित (ट्रान्सफर) की जा सकती है । प्राण के सन्दर्भ में भी भारतीय दृष्टाओं का यही कथन है । अब तो पाश्चात्य वैज्ञानिक भी इसे स्वीकार करने लगे हैं ।

इस सन्दर्भ में फोटोग्राफ, प्रकाश के बल्ब के आविष्कर्त्ता टामस एडिसन के अत्यन्त बोधगम्य प्रकाश डालते हुए लिखा है—"प्राणी की सत्ता उच्चस्तरीय विद्युत-कण गुच्छकों के रूप में तब भी बनी रहती है जब वह शरीर से पृथक हो जाती है । मृत्यु के उपरान्त यह गुच्छक विधिवत् तो नहीं होते, पर वे परस्पर सम्बद्ध बने रहते हैं । यह बिखरते नहीं, वरन् आकाश में भ्रमण करते रहने के उपरान्त पुनः जीवन चक्र में प्रवेश करते और नया जन्म धारण करते हैं । इनकी बनावट बहुत कुछ मधुमक्खी के छत्ते की तरह होती है । पुराना छत्ता वे एक साथ छोड़ती हैं और नया एक साथ बनाती हैं । इसी प्रकार उच्चस्तरीय विद्युत कणों के गुच्छक अपने साथ स्थूल शरीर की सामग्री अपनी आस्थाओं और सम्वेदनाओं के साथ लेकर जन्मने-मरने पर भी अमर बने रहते हैं ।

इन प्रमाणों से शरीर में अन्नमय कोश से सम्बद्ध किन्तु एक स्वतन्त्र अस्तित्व सम्पन्न प्राणमय कोश का होना स्वीकार करना ही पड़ता है । यह भी शरीर में विज्ञान सम्मत ताप आदि छः प्रकार की एनर्जी ऊर्जा के प्रमाण पाये जाते हैं, किन्तु सारे शरीर में संव्याप्त प्राणमय कोश का स्वरूप सबसे अधिक स्पष्टता से जैवीय विद्युत (बायोइलेक्ट्रिसिटी) के रूप में समझा जा सकता है ।

शरीर विज्ञान में अब कायिक विद्युत पर पर्याप्त शोधें हो रहीं हैं । शरीर में कुछ केन्द्र तो निर्विवाद रूप से विद्युत उत्पादक केन्द्रों के रूप में स्वीकार कर लिए गए हैं । उनमें प्रधान हैं—मस्तिष्क, हृदय तथा नेत्र । मस्तिष्क में विद्युत उत्पादन केन्द्र को वैज्ञानिक 'रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम' कहते हैं । मस्तिष्क के मध्य भाग की गहराइयों में स्थित कुछ मस्तिष्कीय अवयवों में से विद्युत स्पन्दन (इलेक्ट्रिक इम्पल्स) पैदा होते रहते हैं तथा सारे मस्तिष्क में फैलते जाते हैं । यह विद्युतीय आवेश ही मस्तिष्क के विभिन्न केन्द्रों को संचालित तथा परस्पर सम्बन्धित रखते हैं । चिकित्सा विज्ञान में प्रयुक्त मस्तिष्कीय विद्युत मापक यन्त्र (इलेक्ट्रो एन्कैफलोग्राफ) ई. ई. जी. द्वारा मस्तिष्कीय विद्युत धाराओं को नापा जाता है । उन्हीं के आधार पर मस्तिष्क एवं सिर से सम्बन्धित रोगों के बारे में निर्धारण किया जाता है । सिर में विभिन्न स्थानों पर यन्त्र के रज्जु (कार्ड) लगाए जाते हैं । उनसे नापे गए विद्युत विभव (पोटेंशल) का योग लगभग १ मिली वोल्ट आता है ।

हृदय के संचालन में लगभग २० तार शक्ति विद्युत की आवश्यकता पड़ती है । यह विद्युत हृदय में ही पैदा होती है । हृदय में जिस क्षेत्र से विद्युत स्पन्दन पैदा होते हैं, उसे 'पेस मेकर' कहते हैं । यह विद्युत स्पन्दन पैदा होते ही लगभग ०.८ सेकिण्ड में एक विकसित मनुष्य के सारे हृदय में फैल जाते हैं । इतने ही समय में हृदय अपनी एक धड़कन पूरी करता है । हृदय की धड़कन के कारण तथा नियन्त्रक यही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्युत स्पन्दन होते हैं । इन विद्युत स्पन्दनों का प्रभाव ई. सी. जी. (इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफ) नामक यन्त्र पर अंकित होते हैं । हृदय रोगों के निर्धारण के लिए इन विद्युत स्पन्दनों को ही आधार मानकर चला जाता है ।

नेत्रों में भी वैज्ञानिकों के मतानुसार फोटो इलेक्ट्रिक सैल जैसी व्यवस्था है । फोटो इलेक्ट्रिक सैल की विशेषता यह होती है कि वह प्रकाश को विद्युत तरंगों में बदल देता है । नेत्रों में भी इसी पद्धति से विद्युत उत्पादन की क्षमता वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं । नेत्र रोगों के निर्धारण, वर्गीकरण के लिए नेत्रों में उत्पन्न विद्युत स्पन्दनों को ई. आर. जी. (इलेक्ट्रो रैटिनोग्राफ) यन्त्र पर अंकित किया जाता है ।

इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि शरीरस्थ कुछ केन्द्रों में विद्युतीय स्पन्दनों के उत्पादन के साथ-साथ सारे शरीर में उनका संचार भी होता है । ई. ई. जी. द्वारा सिर के हर हिस्से में मस्तिष्कीय विद्युत के स्पन्दन रिकार्ड किए जाते हैं । यहीं नहीं बहुत बार तो उनका प्रभाव गर्दन से नीचे वाले अवयवों में भी स्पष्टता से मिलता है । हृदय की विद्युत का प्रभाव तो ई. सी. जी. यन्त्र द्वारा पैर के टखनों तक पर रिकॉर्ड किया जाता है । हृदय के निकटतम तथा दूरतम सभी अंगों में यह स्पन्दन समान रूप से शक्तिशाली पाये जाते हैं ।

शरीरस्थ प्राण प्रवाह के माध्यम से रोगों के निदान पर चिकित्सा शास्त्रियों का विश्वास दृढ़ हो गया है । माँसपेशियों की निष्क्रियता तथा स्नायु संस्थान के रोगों में भी प्राणांकन पद्धति प्रयुक्त की जाती है । इसके लिए ई. एम. जी. (इलेक्ट्रो मायो ग्राफ) का प्रयोग होता है । शरीर के हर क्षेत्र के स्नायुओं अथवा माँसपेशियों में विद्युतीय ऊर्जा की उपस्थिति तथा सक्रियता का यह स्पष्ट प्रमाण है । यहाँ तक कि शरीर की त्वचा जैसी पतली पर्त में भी उसकी अपने ढंग की विद्युत विद्यमान है । चिकित्सा-शास्त्री त्वचा के परीक्षण में भी त्वक विद्युतीय प्रतिक्रिया (गैल्वॉनिक स्किनरिस्पॉन्स) पद्धति प्रयोग करते हैं ।

इन वैज्ञानिक प्रमाणों के अतिरिक्त सामान्य व्यावहारिक जीवन में भी मस्तिष्क से लेकर त्वचा तक में विद्युत संवेगों की क्षमता के प्रमाण मिलते रहते हैं । किसी व्यक्ति विशेष के प्रति आकर्षण तथा किसी के प्रति विकर्षण, यह शरीरस्थ विद्युत की समानता, भिन्नता की ही प्रतिक्रियाएँ हैं । दो मित्रों के परस्पर एक दूसरे को देखने, स्पर्श करने में विद्युतीय आदान-प्रदान होता है । योगी तो स्पर्श से अपनी विद्युत का दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश प्रयोग संकल्प शक्ति के सहारे विशेष रूप से कर सकते हैं, किन्तु सामान्य स्पर्श से भी शरीरस्थ विद्युत का आंशिक आदान-प्रदान होता है । स्पर्श, सहलाने, हाथ मिलाने, गले मिलने आदि से जो स्पन्दन अनुभव किए जाते हैं वे विद्युतीय आवेगों के ही आदान-प्रदान के फलस्वरूप होते हैं । यह तथ्य भी अब वैज्ञानिक स्वीकार करने लगे हैं ।

भारतीय मत रहा है कि शरीर का अस्तित्व बनाये रखने, उसके पोषण, पुनर्निर्माण, विकास एवं संशोधन जैसी हर क्रिया प्राण द्वारा ही संचालित है । अन्नमय कोश में व्याप्त प्राणमय कोश ही उनका संचालन, नियन्त्रण करता है । शरीर संस्थान की छोटी से छोटी इकाई में भी प्राण-विद्युत का अस्तित्व अब विज्ञान ने स्वीकार कर लिया है । शरीर की हर कोशिका विद्युत विभव (इलेक्ट्रिक चार्ज) है । यही नहीं किसी कोशिका के नाभिक (न्यूक्लियस) में लाखों की संख्या में रहने वाले प्रजनन क्रिया के लिए उत्तरदायी जीन्स जैसे अति सूक्ष्म घटक भी विद्युत आवेश युक्त पुटिकाओं (पैक्ट्रिस) के रूप में जाने और माने जाते हैं । तात्पर्य यह है कि विज्ञान द्वारा जानी जा सकी शरीर की सूक्ष्मतम इकाई में भी विद्युत आवेश रूप में प्राण-तत्व की उपस्थिति स्वीकार की जाती है ।

शरीर की हर क्रिया का संचालन प्राण द्वारा होने की बात भी सदैव से कही जाती रही है । योग ग्रन्थों में शरीर की विभिन्न क्रियाओं को संचालित करने वाले प्राण-तत्व को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है उन्हें पंच-प्राण कहा गया है । इसी प्रकार शरीर के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय प्राण को पंच उप प्राण कहा गया है । वर्तमान शरीर विज्ञान ने भी शारीरिक अन्तरंग क्रियाओं की व्याख्याएँ विद्युत संचार क्रम के ही आधार पर की हैं । शरीर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जो संचार क्रम चलता है, वह विद्युतीय सम्वहन प्रक्रिया के माध्यम से ही है । संचार कोशिकाओं में ऋण और धन प्रभार (निगेटिव तथा पॉजिटिव चार्ज) अन्दर बाहर होते रहते हैं और इसी से विभिन्न संचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रम चलते रहते हैं । इसे वैज्ञानिक भाषा में सैल का डिपोलेराइजेशन तथा 'रीपोलेराइजेशन' कहते हैं । यह प्रक्रिया भारतीय मान्यतानुसार पंच-प्राणों में वर्णित 'व्यान' के अनुरूप है ।

आमाशय तथा आँतों में भोजन का पाचन होकर उसे शरीर के अनुकूल रासायनिक रसों में बदल दिया जाता है । वह रस आँत की झिल्ली में से पार होकर रस में मिलते हैं तब सारे शरीर में फैल पाते हैं । कुछ रसायन तो सामान्य संचरण क्रम से ही रक्त में मिल जाते हैं, किन्तु कुछ के लिए शरीर को शक्ति खर्च करनी पड़ती है । इस विधि को 'एक्टिव ट्रान्सपोर्ट' (सक्रिय परिवहन) कहते हैं । यह परिवहन आँतों में जो विद्युतीय प्रक्रिया होती है, उसे वैज्ञानिक 'सोडियम पम्प' के नाम से सम्बोधित करते हैं । सोडियम कणों में ऋण और धन प्रभार बदलने से वह सैलों की दीवार के इस पार से उस पार जाते-आते हैं । उनके संसर्ग से शरीर के पोषक रसों (ग्लूकोज, वसा आदि) की भेदकता बढ़ जाती है तथा वह भी उसके साथ संचरित हो जाते हैं । यह प्रक्रिया पंच-प्राणों में 'प्राण' वर्ग के अनुरूप कही जा सकती है ।

ऐसी प्रक्रिया हर सैल में चलती है । हर सैल अपने लिए उपयुक्त आहार खींचता है तथा उसे ताप ऊर्जा में बदलता है । ताप ऊर्जा भी हर समय सारे शरीर में लगातार पैदा होती और संचरित होती रहती है । पाचन केवल आँतों में नहीं शरीर के हर सैल में होता है । उसके लिए रसों को हर सैल तक पहुँचाया जाता है । यह प्रक्रिया जिस प्राण ऊर्जा के सहारे चलती है, उसे भारतीय प्राणवेत्ताओं ने 'समान' कहा है । इसी प्रकार हर कोशिका में रस परिपाक के दौरान तथा पुरानी कोशिकाओं के विखण्डन से जो मल बहता है उसके निष्कासन के लिए भी विद्युत रासायनिक (इलेक्ट्रो कैमिकल) क्रियाएँ उत्तरदायी है । प्राण-विज्ञान में इसे 'अपान' की प्रक्रिया कहा गया है ।

पंच-प्राणों में एक वर्ग 'उदान' भी है । इसका कार्य शरीर के अवयवों को कड़ा रखना है । वैज्ञानिक भाषा में इसे इलेक्ट्रिकल स्टिमुलाइजेशन कहा जाता है । शरीरस्थ विद्युत संवेगों से अन्नमय कोश के सैल किसी भी कार्य के लिए कड़े अथवा ढीले होते रहते हैं ।

शरीर में इस प्रकार की अनेक अन्तरंग प्रक्रियाएँ कैसे चलती हैं ? इसकी व्याख्या वैज्ञानिक पूरी तरह नहीं कर सके हैं । इसके लिए उन्होंने कई तरह के स्थूल सिद्धान्त बनाये हैं । उनमें सोडियम, पोटेशियम साइकिल, पोटेशियम पम्प, ए. टी. पी.—ए. डी. पी. सिस्टम तथा साइकिलिक ए. एम. पी. आदि के हैं । इनकी क्रिया पद्धति तो कोई रसायन विज्ञान का विद्यार्थी ही ठीक से समझ सकता है, किन्तु है यह सब 'विद्युत रासायनिक' सिद्धान्त ही । इस सिद्धान्त के अनुसार किसी घोल में रासायनिक पदार्थों के अणु ऋण और धन प्रभार युक्त भिन्न-भिन्न कणों में विभक्त हो जाते हैं । इन्हें आयन कहा जाता है । इन आयनों की संचार क्षमता बहुत अधिक होती है । इच्छित संचार के बाद ऋण और धन प्रभार युक्त आयन मिलकर पुनः विद्युतीय दृष्टि से उदासीन (न्यूट्रल) अणु बना लेते हैं । शरीर में पाचन, शोधन, विकास एवं निर्माण की अगणित प्रक्रियाएँ इसी आधार पर चल रही हैं । तत्व दृष्टि से देखा जाय तो सारे शरीर संस्थान में प्राण-तत्व की सत्ता और सक्रियता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ेगी ।

इन मोटी गतिविधियों से आगे बढ़कर शरीर की सूक्ष्म, गहन गतिविधियों का विश्लेषण करने पर उनमें भी प्राण शरीरस्थ प्राण-तत्व का नियन्त्रण तथा प्रभाव दिखाई देता है । शरीर में हारमोनों और एन्जाइमों की अद्‌भुत प्रक्रिया सर्वविदित है । इन दोनों की सक्रियता शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाने एवं शक्ति संचार करने में समर्थ है । प्रजनन विज्ञान के अन्तर्गत जीन्स की विलक्षण भूमिका की चर्चा आजकल वैज्ञानिक क्षेत्र में सर्वत्र की जाती है । इन सभी को विद्युत चुम्बकीय संवेगों द्वारा प्रभावित किए जाने की सम्भावना वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं । वह अभी ऐसा कर नहीं सके हैं, किन्तु उस पर विश्वास करते हैं, तथा उसके लिए तीव्र शोध कार्य किए जा रहे हैं । विश्वास किया जाता है कि ऐसी विधि हाथ लग जाय तो शरीर क्षेत्र में हर चमत्कार सम्भव हो जायेगा ।

भारतीय ऋषियों ने प्राण-प्रक्रिया द्वारा शरीरस्थ संस्थान में चमत्कारी परिवर्तन लाने के लिए प्राणमय कोश की शुद्धि, शरीरस्थ प्राण-ऊर्जा के प्रयोग की बात बलपूर्वक कही है । वह कोई अतिश्योक्ति नहीं । स्थूल विज्ञान की दृष्टि से ही मस्तिष्क एवं हृदय जैसे विलक्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केन्द्रों से लेकर त्वचा तक में व्याप्त प्राण संस्थान तथा उसके प्रभाव को स्वीकार किया जा रहा है । योगदृष्टि तो इससे भी सूक्ष्म रही है । उसके द्वारा जो निष्कर्ष निकाले गए हैं, वे और भी अधिक गहन तथा व्यापक स्तर के रहस्यों तथा तथ्यों को प्रकट करने वाले होने ही चाहिए । अस्तु, 'प्राणमय कोश को परिष्कृत एवं सबल बनाकर न केवल अपने शरीर बल्कि दूसरे शरीरों को भी प्रभावित एवं विकसित करने की बात कोई अतिश्योक्ति नहीं है । प्राण-तत्व सम्बन्धी विज्ञान जैसे-जैसे प्रगति करेगा, भारतीय तत्व दृष्टाओं की विलक्षण किन्तु तथ्यपूर्ण घोषणाओं को नतमस्तक होकर स्वीकार करता चलेगा ।

विश्व प्राण और व्यष्टि प्राण का सुयोग संयोग

प्राण का एक रूप वह है, जिससे यान्त्रिक कार्य सम्पन्न होते हैं । यान्त्रिक प्रविधि का उद्देश्य प्राण-ऊर्जा के इसी स्वरूप को वशवर्ती बनाकर उसका अधिकाधिक इच्छानुसार उपयोग करना है ।

प्राण का दूसरा रूप दैवी चेतन एवं अधिक सूक्ष्म है । वह दीप्तिमान चैतन्य विकिरण रूप है । मन उसी का एक रूप है । देव सत्ताएँ प्राणमय ही होती हैं । योग में इसी प्राण-ऊर्जा को वशवर्ती बनाया जाता है ।

अज्ञानवश लोग योग को चमत्कारपूर्ण एवं विचित्रताओं से भरपूर कोई रहस्य-विद्या मानते हैं, किन्तु वस्तुतः योग एक श्रेष्ठ प्रविधि है, जिसका एक लक्ष्य है, प्राण-ऊर्जा का तात्विक ज्ञान प्राप्त कर, उसका सूक्ष्म प्रक्रियाओं से अवगत होकर, उसका सर्वोत्तम उपयोग करने में समर्थ होना है । प्राण शक्ति के अधिकतम उपयोग की प्रविधि भी योग के नाम से जानी जाती है । यान्त्रिक प्रविधि से वह अधिक समर्थ, अधिक शक्तिशाली एवं अधिक परिपूर्ण है ।

जब व्यक्ति सामान्य सांसारिक गतिविधियों में लिप्त रहता है, उस समय उसकी पिण्ड सत्ता में सक्रिय मुख्य प्राण-प्रवाह सम्पूर्ण सम्वेदन-तन्त्र में फैला रहता है । इस प्राण-प्रवाह को जब तीव्र संवेग के साथ एक ही दिशा में निर्देशित किया जाता है, तो वह कितना विस्फोटक—रूप धारण कर लेता है । इसका एक प्रमाण है, कामावेग, जो मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों की सामान्य वृत्तियों को उस समय पीछे ठेल देता है ।

मानव शरीर में विद्यमान प्राण शक्ति से ही समस्त अन्तः संचालन एवं नाड़ी समूह संचालन होता है । मस्तिष्क की कल्पना, धारणा, इच्छा, निर्णय, नियन्त्रण, स्मृति, प्रज्ञा आदि समस्त शक्तियों का उत्पादन अभिवर्धन तथा संचालन प्राण शक्ति द्वारा ही होता है । इन्द्रियों की सजीवता प्राण शक्ति से ही सम्भव है । सम्पूर्ण बोध एवं क्रिया की धारक शक्ति प्राण है ।

इस प्राण को वशीभूत करने के लिए मन की निर्मलता आवश्यक है । इसीलिए यम एवं नियम प्राण-प्रविधि या प्राण-विद्या के अनिवार्य प्राथमिक सोपान हैं । अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह को 'यम' और शोच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान का 'नियम' कहते हैं । इन यम-नियमों के पालन से शरीर यन्त्र शुद्ध बनता है, मन पवित्र बनता है, प्राण-ऊर्जा के स्वरूप का बोध होता है और लक्ष्य के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है । इसके साथ आसन सिद्धि का अभ्यास आवश्यक है, जिससे पर्याप्त समय तक एक ही मुद्रा में स्थिर रहकर साधना अभ्यास किया जा सके ।

इसके उपरान्त प्राणायाम का अभ्यास किया जाता है । सामान्यतः शरीर में क्रियाशील प्राण शक्ति अनियन्त्रित ढंग से वासनाओं एवं तज्जन्य क्रियाओं के चपल संकेतों पर थिरकती, घूमती रहती है । उस शक्ति को इच्छानुसार चला सकने की साधना प्रविधि प्राणायाम है ।

मनःसाधना से मनःशुद्धि एवं प्राण-साधना परस्पर अन्योन्याश्रित है । मन-प्राण में जनक-जन्य का सम्बन्ध है । वृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है—

"मन एव पिता, वाङ्माता प्राणः प्रजा ।"

—वृहदा. उ. १/५/७

अर्थात्—मन ही पिता है, विचार-प्रक्रिया रूप वाणी माता है और प्राण सन्तान है । अतः प्राण-साधना में मन, विचार एवं प्राण-प्रवाह तीनों की ही साधना अन्तर्निहित है । मन और विचारों को एक ही दिशाधारा में नियोजित रखते हुए प्राण-प्रवाह पर नियन्त्रण प्राप्त करने का अभ्यास ही प्राणायाम है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीरस्थ पाँच प्राणों एवं पाँच उप-प्राणों के कार्य-कलापों का स्वरूप भली-भाँति समझकर उन्हें वशवर्ती बनाना प्राण-साधना है । ये सभी प्राण-उपप्राण एक ही व्यष्टि प्राण के वर्गीकरण मात्र हैं । मूलतः प्राण-सत्ता एक ही है और वह विराट् प्राण-सत्ता का ही अंश है ।

पूर्णाधिकार न सही 'विराट् प्राण' पर सीमित अधिकार भी व्यक्ति को कम शक्तिशाली नहीं बनाता । प्रबल प्राण-संवेग से भौतिक द्रव्यों की प्रकृति का परिवर्तन हो सकता है और दूसरों की मनःस्थितियों को प्रभावित किया जा सकता है । नियन्त्रित प्राण शक्ति के द्वारा अचेतन मन को अपनी सम्पूर्ण क्षमता से सक्रिय बनाया जा सकता है । दूरदर्शन, दूर-श्रवण, दुरानुभूति, भविष्य दर्शन जैसी शक्तियाँ इसी अचेतन मन में होती हैं । ग्रह-नक्षत्रों, सूक्ष्म लोकों से सम्बन्ध जोड़ना, दिव्य ज्ञान की ज्योति को दीप्तिमान रखना, प्राण पर अधिकार पाने पर ही सम्भव है, किन्तु उच्चस्तरीय प्राण-साधना समर्थ मार्गदर्शक के निर्देशन में ही सफल हो सकती है ।

यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि, मनन और चिन्तन मन के माता-पिता एवं अभिन्न सहयोगी हैं । मन और विचार को अस्त-व्यस्त रखते हुए प्राणायाम की उच्चस्तरीय साधना तो असम्भव है ही, अस्त-व्यस्त मन की स्थिति में प्राणायाम का अधिक समय तक अभ्यास व्यक्तियों को पागल भी बना देता है । अतः प्राणायाम सदैव तत्व बोध एवं ध्यान-अभ्यास के साथ करना चाहिए । मन की प्रचण्ड संकल्प शक्ति को अभीष्ट दिशा में नियोजित किए विना प्राण-साधना मात्र श्वास-प्रश्वास का साधारण व्यायाम और फेफड़ों की कसरत होकर रह जाती है । उससे स्वास्थ्य लाभ तो सम्भव है, किन्तु वह न तो योग है और न ही उसके द्वारा प्राण शक्ति पर नियन्त्रण हो सकता है ।

प्राणायाम-अभ्यास में प्रारम्भ में ही पेशियों पर नियन्त्रण एवं लक्ष्य का निरन्तर ध्यान रखने का अभ्यास सम्मिलित होता है । उसी के लिए विभिन्न प्रकार के वेध, मुद्राएँ तथा वन्ध हैं, जिसका अभ्यास कर, प्राण को वशवर्ती बनाना होता है । संकल्प शक्ति के प्रवल चुम्वकत्व से व्यापक प्राण-तत्व आकाश से खींचा जाता है । फिर इस उपार्जित उपलब्धि को अभीष्ट स्थान पर भेजने तथा मनोवांछित परिणाम पाने की प्रक्रिया सीखनी होती है । यह सब प्रचण्ड मनोबल के बिना सम्भव नहीं ।

प्राण साधना का उद्देश्य स्पष्ट है । वह है—पिण्डस्थ प्राण शक्ति का ब्रह्माण्डव्यापी प्राण शक्ति में योग एवं इस योग की प्रक्रिया पर अपना अधिकार । वही प्राण शक्ति मनुष्यों में चेतना, ऊर्जा, शक्ति, स्फूर्ति, तत्परता तन्मयता, साहस, शौर्य, उमंग, उत्साह, वीरता, चमक या सौन्दर्य, तेजस्विता, सजीवता, प्रखरता, दृढ़ता आदि के रूप में अभिव्यक्त होती है । जिनमें यह प्राण शक्ति प्रचुर मात्रा में विद्यमान होती है, वे ही महामानव-महाप्राण कहलाते हैं ।

शरीर में सामान्यतः जो प्राण शक्ति भरी-बिखरी रहती है, उसका भी साधारण व्यक्ति इच्छित उपयोग नहीं कर सकते । चित्त-चांचल्य और वासनात्मक उद्वेग इस प्राण शक्ति को हर क्षण फुलझड़ी की तरह बिखेरता-फेंकता रहता है । यम एवं नियमों का अभ्यास व्यक्ति में वह सामर्थ्य उत्पन्न करता है, जिससे वह प्राण शक्ति को संयमित ढंग से ही व्यय करने में कुशल होता चले । प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान के समन्वित स्वरूप के साथ की गई प्राण-साधना वह सामर्थ्य इतनी अधिक विकसित कर देती है, कि व्यक्ति समष्टिगत महाप्राण की वांछित मात्रा स्वयं में खींच सके तथा उस एकत्र शक्ति का अधिकतम उपयोग उत्कृष्ट रीति से कर सके ।

प्राण शक्ति का प्रचण्ड विद्युत प्रवाह

मन की चंचलता और लोलुपता प्रसिद्ध है । अनियन्त्रित मन अल्हड़ वछड़े की तरह खाड़-खण्डकों में कूदता-फाँदता रहता है । उसकी इन गतिविधियों के कारण मनुष्य का सारा जीवन ही अव्यवस्थित हो जाता है । आकांक्षाएँ वहुल, कामनाएँ असीम, पर दृढ़ता और तत्परता जरा भी नहीं, ऐसी मनोभूमि उपहासास्पद ही होती है । उसमें असन्तोष ही असन्तोष भरा रहता है । उन्नतिशील को देखकर ईर्ष्या बढ़ती है, अपने दुर्भाग्य पर रोना आता है, असफलता का दोष किसी न किसी पर थोपते रहने की विडम्बना चलती रहती है । इनसे काम तो कुछ नहीं बनता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन की असंस्कृत स्थिति एक ऐसी कमी है जिसकी पूर्ति संसार की और किसी भी वस्तु से नहीं हो सकती । इस कमी के रहते हुए हर व्यक्ति ओछा-छिछोरा, अविवेकी, असंयमी, बाल-बुद्धि, अविकसित और हर क्षेत्र में असफल ही रहता है ।

एकाग्रता का प्रतिफल

मनोमय-कोश की साधना का उद्देश्य स्वर्ग, मुक्ति या सिद्ध चमत्कारों की खोज करना ही नहीं, वरन् व्यावहारिक जीवन को सुसंयत और सुविकसित बनाना है । मन की शक्ति उस जल-प्रपात की तरह है जो साधारणतः यों ही मुद्दतों से गिरता और बहता रहता है, पर यदि उसी से पनचक्की या बिजली बनाने का कार्य किया जाय तो आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होने की सुविधा बन जाती है और वह निरर्थक दीखने वाला झरना बहुत लाभदायक एवं उपयोगी सिद्ध होता है । मन में जो प्रचण्ड शक्ति भरी है उसका महत्त्व जिन्होंने जान लिया वे अपना सारा ध्यान मन को नियन्त्रित करने में लगाते हैं । उसकी चंचलता को रोकते और एकाग्रता को बढ़ाते हैं । अच्छे नम्बरों से, ऊँची डिवीजनों से पास होने वाले विद्यार्थी, महत्त्वपूर्ण अन्वेषण करने वाले वैज्ञानिक, मेधावी वकील, डॉक्टर, इंजीनियर और कारीगर एकाग्रता के बलबूते पर ही गौरवान्वित होते हैं । कवि, लेखक, चित्रकार, गायक, कलाकारों में जो प्रतिभा दीख पड़ती है, वह उनकी तन्मयता का ही प्रतिफल हैं । कुशल व्यापारी अपने कारोवार में अपने को घुला देता है । लक्ष को वही वेध पाता है, जिसे अर्जुन की तरह बाण की नोंक और चिड़िया का मस्तक ही दिखाई देता है । भक्त और साधकों को अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाने पर ही साक्षात्कार का लाभ मिलता है । समाधि और कुछ नहीं चित्त को एकाग्र करने की परिपूर्ण सफलता का ही दूसरा नाम है ।

मन ही मित्र, मन ही शत्रु

गीता में कहा गया है कि वश में किया हुआ मन ही अपना मित्र और अव्यवस्थित चित्त ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है । जिसने अपने आपको जीत लिया, वह तीनों लोक जीत लेने के समान विजयी माना जाता है । आध्यात्मिक और भौतिक विभूतियाँ इस संसार में इतनी अधिक हैं कि ध्यानपूर्वक देखने से यह दुनियाँ जादू की नगरी जैसी प्रतीत होती है । परमात्मा की इस पुण्य वाटिका में खिला हुआ हर पुष्प उसका कोई भी पुत्र बेरोकटोक प्राप्त कर सकता है, पर साथ ही यह प्रतिबन्ध लगा हुआ है, कि मनस्विता की नाप-तौल के आधार पर ही यहाँ ऊँचे स्तरों तक प्रवेश मिलता है । जिस प्रकार सिनेमा में अधिक दाम का टिकट खरीदने वाले को अधिक सुविधा की सीट मिलती है, वैसे ही ईश्वर की इस जादू नगरी खेल में अधिक आनन्ददायक अनुभूतियाँ उन्हें मिलती हैं, जिनके पास अधिक मनस्विता संग्रह होती है । मन का ही साम्राज्य इस सारे चेतना जगत पर छाया हुआ है । ऋषियों के आश्रमों में उनकी प्रचण्ड विचारधारा से प्रभावित होकर गाय और सिंह एक साथ बैठे रहते हैं । युग पुरुष अपने संकल्प बल से संसार की विचारधारा ही बदल डालते हैं । महात्मा गाँधी, भगवान बुद्ध, ईसा मसीह आदि महापुरुषों ने कितने अधिक लोगों का जीवन बदल डाला यह किसी से छिपा नहीं है ।

मनोमय-कोश से अगला प्राणमय-कोश है । कई स्थानों पर पहले प्राणमय-कोश और फिर मनोमय-कोश का उल्लेख मिलता है । इस क्रम भेद में उलझने से कोई लाभ नहीं । थाली में आये हुए पदार्थों में से पहले दाल खावें या शाक यह प्रश्न अभिरुचि और सुविधा से सम्बन्धित है । इसका कोई सैद्धान्तिक महत्त्व नहीं है । इस प्रकार मनोमय और प्राणमय कोश के आगे पीछे वाले क्रम को कोई महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए । मन की शक्ति से प्राण की शक्ति अधिक एवं सूक्ष्म है । यह शरीर का एक अंग मात्र है, उसे ग्यारहवीं इन्द्रिय कहा गया है, पर प्राण इससे भिन्न, इससे प्रबल और इससे सूक्ष्म है । इसलिए हमने महत्त्व की दृष्टि से मन के बाद प्राण की शिक्षा देने का क्रम अपनाया है ।

परा प्रकृति की चेतना शक्ति

सृष्टि परा और अपरा प्रकृति के दो भागों में विभक्त है । एक को जड़ दूसरे को चेतन कह सकते हैं । शरीर में मन की चेतना पंचतत्वों के सम्मिलन की चेतना मानी जाती है । आत्मा में प्रकाश प्राप्त करते हुए भी वह आत्मा का नहीं, शरीर का ही अंश माना जाता है । इसी प्रकार विश्वव्यापी पंच-तत्वों की, महाभूतों की सम्मिलित चेतना का नाम प्राण है । प्राण को जीवनी-शक्ति भी कह सकते हैं । वह वायु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में, आकाश में घुला तो रहता है, पर इनसे भिन्न है । जिसे जड़ प्रकृति कहते हैं, वस्तुतः वह भी जड़ नहीं है । उसमें प्राण की एक स्वल्प मात्रा भरी रहती है । पूर्ण निष्प्राण वस्तुः पूर्णतः निरुपयोग ही नहीं होती, वरन् नष्ट भी हो जाती है । प्राण के अभाव में कोई वस्तु अपना स्वरूप धारण किए नही रह सकती, उसके जो स्वाभाविक गुण हैं वे भी स्थिर नहीं रहते ।

प्राण को एक प्रकार की सर्जीव विद्युत शक्ति कह सकते हैं, जो समस्त संसार में वायु, आकाश, गर्मी एवं ईथर की तरह समाई हुई है ! यह तत्व जिस प्राणी में जितना अधिक होता है, वह उतना ही स्फूर्तिवान्, तेजस्वी, साहसी एवं सुदृढ़ दिखाई देता है । शरीर में व्याप्त इसी तत्व को जीवनी-शक्ति एवं 'ओज' कहते हैं और मन में व्यक्त होने पर यही तत्व प्रतिभा एवं तेज कहलाता है । वीर्य में यही विद्युत शक्ति अधिक मात्रा में भरी रहने से ब्रह्मचारी लोग मनस्वी एवं तेजस्वी बनते हैं । इसी के अभाव से चमड़ी गोरी पीली होने पर भी, नख-शिख का ढाँचा सुन्दर दीखने पर भी मनुष्य निस्तेज, उदास, मुरझाया हुआ और लुंज-पुंज सरीखा लगता है । भीतरी तेजस्विता के अभाव से चमड़ी की सुन्दरता निर्जीव जैसी लगती है । मन को लुभाने वाले सौन्दर्य में जो तेजस्विता एवं मृदुलता बिखरी होती है, वह और कुछ नहीं प्राण का ही उभार है । वृक्ष, वनस्पतियों, पुरुषों से लेकर शिशु और शावकों, किशोरों-किशोरियों में जो कुछ आह्लाद दीख पड़ता है वह सब प्राण का ही प्रताप है । वह शक्ति कहीं चेहरे के सौन्दर्य में, कहीं वाणी की मृदुलता में, कहीं प्रतिभा में, कहीं बुद्धिमता में, कहीं कला-कौशल में, कहीं भक्ति में, कहीं अन्य किसी रूप में देखी जाती है ।

प्राण-तत्व की उपलब्धि

यों स्वास्थ्य जन्मजात रूप से भी किसी-किसी का अच्छा होता है । कोई-कोई आहार-विहार ठीक रखने मात्र से बलवान बने रहते हैं, व्यायाम की पूर्ति वे अपने दैनिक कार्यों से भी कर लेते हैं । तात्पर्य यह कि बिना व्यायाम के भी कितने ही व्यक्ति बलवान और परिपुष्ट देखे जाते हैं, इतने पर भी व्यायाम का महत्त्व कम नहीं होता । जिन्हें विशेष रूप से अपना स्वास्थ्य सँभालना है, उन्हें नियमित व्यायाम को अपने दैनिक जीवन में स्थान देना पड़ता है । कोई पहलवान, कोई खिलाड़ी ऐसा नहीं होता जो रोज व्यायाम न करता हो । स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के लिए जिस प्रकार व्यायाम का एक विशेष महत्त्व है । उसी प्रकार प्राण शक्ति की अभिवृद्धि के लिए प्राणायाम का स्थान है । प्राणों के व्यायाम को ही 'प्राणायाम' कहते हैं । जीवन विकास के लिए प्राण-धन की समुचित मात्रा चाहिए । इसका उपार्जन करना अपने को एक बड़ी शक्ति से वंचित रखना ही कहा जायेगा । धन के बिना व्यापार नहीं हो सकता । पूँजी के अभाव में कोई उद्योग धन्धा चल सकना सम्भव नहीं । इसी प्रकार चेतना और प्रेरणा, प्रतिभा और पुरुषार्थ के बिना जीवन विकाश की प्रक्रिया अग्रसर नहीं हो पाती । यह सब लक्षण प्राण शक्ति के ही हैं । प्राण का सम्पादन जीवन व्यापार के लिए आवश्यक पूँजी एकत्रित करने के समान है । इस तथ्य को भली प्रकार समझकर ही ऋषियों ने आध्यात्म साधना में प्राणायाम को प्रमुख स्थान दिया है । संध्या वन्दन, हवन, अनुष्ठान आदि प्रत्येक नित्य नैमित्तिक धर्म कार्यों में प्राणायाम को अनिवार्य स्थान मिला हुआ है । कोई भी धर्म कार्य ऐसा नहीं, जिसे आरम्भ करते हुए हमें प्राणायाम न करना पड़ता हो । यों सभी कार्यों में प्राण चाहिए पर असुरता एवं दुष्प्रवृत्तियों से लड़ते हुए धर्म चेतना को आगे बढ़ाने में पग-पग पर प्रलोभनों से संग्राम करना पड़ता है, इसलिए आत्म-कल्याण के मार्ग पर चलने वाले को अतिरिक्त प्राण की भी आवश्यकता होती है । इसलिए प्राणायाम को आवश्यक महत्त्व मिलना उचित ही है ।

शरीर और मन पर जीवन तत्व का प्रभाव

दैनिक जीवन में आवश्यक जीवनी शक्ति प्राप्त करके सफलता के मार्ग प्रशस्त करना हर किसी को आवश्यक होता है । इसलिए प्राणायाम की साधारण प्रक्रिया भी सर्व साधारण के लिए उपयोगी है । प्राण-तत्व के आधार पर शरीर और मन के अनेक रोगों का निवारण कर सकना अब विज्ञान सम्मत तथ्य के रूप में सामने आ चुका है । मेस्मेरिज्म और हिप्नाटिज्म के सिद्धान्तों से पाश्चात्य चिकित्सक, वैज्ञानिक अब अपने रोगियों को आवश्यक प्राण-तत्व प्रदान करके उन्हें रोगमुक्त बनाने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करने लगे हैं । हमारी "प्राण चिकित्सा विज्ञान" पुस्तक जिन्होंने पढ़ी है, वे जानते हैं कि औषधि विज्ञान की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह 'प्राण-विज्ञान' भी एक स्वतन्त्र आरोग्य-विज्ञान है और उसके द्वारा भी अन्य चिकित्सा प्रणालियों की भाँति ही रोग मुक्ति एवं आरोग्य वृद्धि का उद्देश्य पूर्ण किया जा सकता है । जापान के सुप्रसिद्ध डॉक्टर शेराबुज ने विशुद्ध रूप से प्राणायाम के आधार पर अपने असाध्य, क्षय रोग से छुटकारा पाया था । अच्छा होने पर उन्होंने प्राण-विद्या के महान ज्ञान को जनसाधारण में फैलाने का व्रत लिया था और हजारों- लाखों व्यक्तियों को इसी आधार पर आरोग्य वृद्धि के लाभ से लाभान्वित किया था । भारत के योगीजन इस तत्व का उपयोग शरीर और मन की साधारण उन्नति में एवं लौकिक समस्याओं के समाधान में करते रहे हैं । स्वर-विज्ञान इसी का एक स्वतन्त्र शास्त्र है । शिवस्वरोदय आदि कितने ही प्राचीन ग्रन्थ इस सम्बन्ध में मिलते हैं । प्रायः सभी योगशास्त्रों में स्वर-विद्या का न्यूनाधिक उल्लेख मिलता है ।

श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया

प्राण को ग्रहण करना श्वास-प्रश्वास क्रिया के आधार पर ही सम्भव होता है । प्राण, वायु में घुला रहता है । इसलिए मोटे तौर से उसे वायु ही समझा जाता है । "प्राण वायु" शब्द भी इसी स्थूल दृष्टि के कारण प्रचलित हुआ है, अन्यथा प्राण और वायु दोनों एक दीखते हुए भी वस्तुतः उसी प्रकार पृथक हैं, जैसे मीठे दूध में, दूध और चीनी दो अलग पदार्थ होते हुए भी किसी उद्देश्य के लिए मिलाये हुए होते हैं । स्वर विज्ञान, श्वास विकृति के नाम से जो भी प्रक्रियाएँ प्रचलित हैं, उन्हें वस्तुतः प्राण-विज्ञान ही समझना चाहिए, क्योंकि साँस में ली जाने वाली वायु में ऑक्सीजन आदि गुणों को ही साधारण रीति से शरीर खींच पाता है । उसमें जो प्राण घुला है उसको विशेष विधि व्यवस्था से, प्राणायाम प्रक्रिया से ही प्राप्त कर सकना सम्भव होता है ।

प्राणकोश की साधना में प्राणायाम का विशेष महत्त्व माना गया है, पर वही सब कुछ नहीं है । प्रारम्भिक साधकों को श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया की विशेष विधि द्वारा अखिल आकाश में से प्राण-तत्व की आवश्यक मात्रा खींच कर अपने भीतर धारण करनी पड़ती है, जिससे शरीर और मन में आवश्यक बलिष्ठता का समावेश हो सके । पीछे प्राण-तत्व को आकाश से अभीष्ट मात्रा में खींचकर, उसका उपयोग संसार के विभिन्न कार्यों में करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है तो यह नर देह एक प्रकार का विशाल बिजली घर बन जाता है जिससे अपना ही नहीं दूसरे अनेकों का भी हित साधन हो सकता है । किसी बड़े बिजलीघर से सम्बन्धित अनेकों कल कारखाने चलते रहते हैं और हजारों-लाखों घरों में रोशनी, पंखा, रेडियो आदि की आवश्यकता पूरी होती है । प्राण-विद्या का निष्णान्त व्यक्ति अखिल आकाश में ध्यान धारणा के तथ्य को अभीष्ट मात्रा में उपलब्ध करके उससे इतना बड़ा श्रेय साधन अर्जित कर सकता है, जितना कर सकना किसी बड़े अमीर, धनी, सत्तावान् एवं शासक के लिए भी सम्भव नहीं है ।

प्राण शक्ति एक जीवन्त ऊर्जा

मनुष्य शरीर में विद्युत शक्ति का विपुल भण्डार भरा पड़ा है । मस्तिष्क से विचारों के कम्पन विद्युत प्रवाह के रूप में ही निकलते हैं । शरीर की आन्तरिक क्रिया-प्रक्रिया नाड़ी समूह के साथ-साथ प्रवाहित होते रहने वाले विद्युत प्रवाह के द्वारा ही सम्भव होती है । मस्तिष्कीय विद्युत में मन और बुद्धि के द्वारा देखे जाने वाले अनेकानेक चमत्कार आये दिन सामने आते हैं । साहस और उत्साह के रूप में, स्फूर्ति और उमंगों के रूप में, इसी क्षमता के उभार उफनते दीख पड़ते हैं । विज्ञानवेत्ता 'प्राण' की व्याख्या इसी मानवी विद्युत के रूप में करते हैं ।

मनुष्य में काम करने वाला यह विद्युत प्रवाह भौतिक बिजली के समतुल्य नहीं है । बादलों में कड़कने वाली बिजली और धूप से अनुभव होने वाली गर्मी के समकक्ष उसे नहीं माना जा सकता । यह बिजलीघरों में उत्पन्न की जाने वाली 'शक्ति' के समान भी नहीं है । भौतिक बिजली में धक्का मारने, आगे बढ़ाने एवं फैलाने की क्षमता है । उसकी गणना 'अश्व शक्ति' के रूप में की जाती है, किन्तु मानवी विद्युत की क्रिया पद्धति इससे भिन्न है । उसमें व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास की अनेकानेक सम्भावनाएँ जुड़ी हुई हैं । इतना ही नहीं वह अन्य प्राणियों को, पदार्थों को, प्रभावित करती है और वातावरण पर अपना असाधारण प्रभाव छोड़ती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्म विवेचना में उसका वर्णन 'प्राण' के रूप में किया जाता है । ह्यूमन मैगनेटिज्म एवं मैटावोलिज्म उसे कहा जाता है । इसी को जीवनी शक्ति एवं मानवीय विद्युत कहा जाता है ।

"प्रोजोक्टिज्म ऑफ एस्ट्रल बॉडी" ग्रन्थ में मानवी काया की अद्‌भुत संरचना और विचित्र कार्य पद्धति पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि इतना अद्‌भुत होते हुए भी यह यन्त्र अपना काम कर सकने में उस क्षमता के आधार पर ही समर्थ होता है जिसे मानवीय विद्युत कहा जाना चाहिए । इसकी मात्रा एवं स्थिति यदि दुर्बल होगी, तो उसका प्रभाव, शरीर संरचना सब प्रकार उपयुक्त होते हुए भी निराशाजनक ही देखा जा सकेगा । लेखक का कथन है कि सौर-मण्डलीय परिवार की तथा अन्यान्य ग्रह-नक्षत्रों की ज्ञात और अज्ञात किरणें धरती पर आती हैं । उनका प्रभाव पदार्थों पर तो पड़ता ही है । मानवी काया भी उस अनुदान में से अपना भाग ग्रहण करती है । सामान्यतया पदार्थों की तरह जीवधारियों को भी उस अभिवर्षण का लाभ अनायास ही मिलता रहता है, किन्तु यदि संकल्प शक्ति की प्रखरता हो तो, व्यक्तिगत चुम्बकत्व प्रचण्ड होता चला जायेगा और उस आकर्षण से वह अन्तर्ग्रही सामर्थ प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होती चली जायेगी ।

गामा, बीटा, एक्स, लेसर, आल्ट्रा वायलेट, अल्फा वायलेट आदि कितने ही स्तर की शक्ति किरणें भू-मण्डल के भीतर और बाहर काम करती हैं । उन सबका समुचित समावेश मनुष्य के सूक्ष्म शरीर में हुआ है । स्थूल शरीर जड़ पदार्थों की बन्धन रज्जुओं से जकड़ा होने के कारण ससीम है, पर सूक्ष्म शरीर में सम्मिलित शक्तियों का कोई अन्त नहीं । उसका निर्माण ऐसी इकाइयों से हुआ है, जिनकी हलचल ही इस वातावरण में विविध-विधि, क्रिया-कलाप उत्पन्न करती है । इस दृष्टि से मनुष्य बाहर से एक जीवधारी मात्र दीखते हुए भी वस्तुतः असीम सामर्थों का पुंज है । कठिनाई एक ही है कि वे सामान्यतया प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती हैं, जिन्हें अधिक मात्रा में आकर्षित करने और व्यावहारिक भूमिका को निर्वाह कर सकने योग्य बनाने में व्यक्तिगत रूप से प्रबल प्रयत्न करने पड़ते हैं ।

ब्रह्माण्ड व्यापी महाशक्तियों में ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण क्षमता सर्वविदित है । आकाश में अवस्थित सभी ग्रह नक्षत्र इसी के आधार पर टिके हुए हैं और गतिशील हैं । यह गुरुत्वाकर्षण आखिर है क्या ? इसका सूक्ष्म अन्वेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह मूलतया इलेक्ट्रोमैगनेटर विद्युत चुम्बकीय सत्ता है । जो ग्रह नक्षत्रों से निकलता है कि यह मूलतया—इलेक्ट्रो मैगनेटिक विद्युत चुम्बकीय क्षमता है । जो ग्रह-नक्षत्रों की भ्रमणशीलता और आकर्षण शक्ति के उभय-पक्षीय प्रयोजन पूरे करती है । प्रकाश, ताप, ध्वनि, विद्युत इसी के स्वरूप हैं । अणुओं की हलचलों से लेकर रासायनिक परिवर्तनों का सरंजाम वही जुटाती है । ईथर के ब्रह्माण्डव्यापी महासागर पर इसी विद्युत चुम्बक का आधिपत्य छाया हुआ है । यह शक्ति जड़ नहीं है । यदि वह जड़ रही होती, तो अणु-परमाणुओं की संरचना और हलचलों में अद्‌भुत व्यवस्था दिखाई पड़ती और उसके दर्शन न होते ।

यही विद्युत चुम्बक 'प्राण' है । मनुष्य में वह तेजोवलय के रूप में काया के इर्द-गिर्द फैला हुआ देखा जा सकता है । शरीर में ऊर्जा के रूप में उसका अस्तित्व जीवाणुओं की, अवयवों की विभिन्न हलचलें इसी के सहारे संचारित होती हैं । मस्तिष्क की मशीन अपने आप में अद्‌भुत है, पर वह स्वसंचालित नहीं है । यदि उसकी अपनी सामर्थ्य रही होती तो फिर मृत शरीर का मस्तिष्क भी अपना काम करते रह सका होता । यह 'प्राण' ही है जो मस्तिष्क की चेतन और अचेतन पर्तों पर छाया हुआ है और उन्हें अपने निर्धारित क्रिया-कलाप करते रहने के लिए आवश्यक सामर्थ्य प्रदान करता है ।

ग्रहों में अपना-अपना गुरुत्वाकर्षण है । फिर भी वह उनका निजी उत्पादन नहीं है । ब्रह्माण्डव्यापी विद्युत चुम्बकीय क्षमता में से ही यह ग्रह-नक्षत्र अपना हिस्सा बँटाते हैं और गुरुत्वाकर्षण दूसरे शक्ति संचारों से भरे रहते हैं । यह सम्मिलित पूँजी है, जिसमें से विश्व परिवार के सभी घटक अपना-अपना भाग पाते और गुजारा करते हैं । यही बात प्राण शक्ति के सम्बन्ध में भी है । विश्वव्यापी 'महाप्राण' एक तथ्य है । उसी विशाल वैभव में से पृथ्वी के जीवधारी अपनी-अपनी पात्रता और आवश्यकता के अनुरूप भाग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बँटाते हैं । मनुष्य की यह विशेषता है कि वह इस सामान्य वितरण में से उपेक्षापूर्वक उसे गवाँता रह सकता है, जो उसके लिए सहज सुलभ है । इसी प्रकार उसके लिए यह भी सम्भव है कि प्रयत्न करे, उत्साह संजोये और संकल्पबल के सहारे व्यापक प्राण शक्ति में से बड़े से बड़ा भाग अपने लिए उपलब्ध कर सके । प्राणयोग की साधना—प्राणायाम प्रक्रिया इसी प्रयोजन की पूर्ति का एक सुनिश्चित विज्ञान सम्मत आधार है ।

प्राण एक चेतन विद्युत ऊर्जा है, जिसकी मात्रा बढ़ी-चढ़ी होने पर बहिरंग और अन्तरंग जीवन के दोनों पक्षों में उसका चमत्कारी प्रभाव देखा जा सकता है । यह प्राण शक्ति ही व्यक्तिगत जीवन में साहस और उत्साह के रूप में चमकती है । उसे दृढ़ता और तत्परता के रूप में देखा जा सकता है । संकल्प शक्ति के रूप में उसी का परिचय प्राप्त किया जाता है । निश्चय को पूर्ण करने के लिए मनुष्य इसी क्षमता के सहारे अनेकानेक कठिनाइयों को चीरता, अवरोधों से जूझता, श्रम-साध्य और समय-साध्य मंजिल को पार करता है । प्रतिकूलताओं के बीच भी जो अनुकूलता उत्पन्न करने का प्रबल प्रयास कर रहा है । निराशाजनक परिस्थितियों में जिस आशा की क्षीण, किन्तु सुनिश्चित किरणें दीख पड़ती हों, उसे प्राणवान कहा जा सकता है । लोक प्रवाह के विपरीत जो अपनी राह एकांकी बना सके, अपने बलबूते अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने का शौर्य दिखा सके, उसमें आत्मविश्वासी प्राण शक्ति की उपयुक्त मात्रा काम करते हुए देखी जा सकती है ।

ऐतिहासिक महामानवों में इसी प्राण-तत्व की समुचित मात्रा रही है, इसी के सहारे उन्होंने महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए और दुस्साहसपूर्ण कदम उठाये । लोक-प्रवाह के विपरीत जब उन्होंने अपने स्वतन्त्र भाव, निश्चय घोषित किए, तो कुटुम्बी, सम्बन्धी और तथाकथित हितैषी एक जुट होकर उनका उपहास, असहयोग और विरोध करने पर उतारू हो गए । उनके प्रवाह के विपरीत चलने में खतरे की आशंका देखी और शुभ-चिन्तक के नाते उस खतरे से बचने का परामर्श दिया, किन्तु प्राणवानों को तो आदर्शवादी मार्ग अपनाने में, संकटों के साथ आँख-मिचौनी खेलने में ही मजा आता रहा है । खतरों के बीच ही प्रगतिशीलता पनपती है ।

महामानवों की सफलताएँ उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं, जितनी कि उसके साहस, प्रदर्शन की स्मृतियाँ । सफलताएँ तो अनेकों को संयोगवश भी मिल जाती हैं । उन्हें छलबल से भी उपार्जित किया जा सकता है । महत्त्व उन घटनाओं का है, जिनमें साहस के आधार पर घनघोर अँधेरे में प्रकाश जलाया गया और आँधी-तूफान के बीच उस आलोक को बुझने से बचाया गया ।

लिंकोलन के राजा रिचार्ड ने तत्कालीन विशप ह्यूगो को आदेश भेजा कि वे अपनी समस्त सेनाएँ नारमण्डी युद्ध के लिए भेजें । विशप ने इस आज्ञा को मानने से इन्कार कर दिया । स्पष्ट था कि ऐसी अवज्ञा क्रोधी रिचर्ड सहन न करेगा और विशप को पदच्युत करने से लेकर मौत तक को कोई दण्ड देगा, किन्तु विशप ह्यूगो इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए, वरन् वे सीधे दनदनाते हुए राजमहल में चले गए । राजा उस समय भोजन कर रहे थे, विशप को देखते ही वे आग-बबूला हो गए और उनकी ओर से मुँह फेर लिया ।

विशप ने कड़क कर कहा—"उठो, विशप का अभिवादन करो ।" राजा चुप रहा । इस पर ह्यूगो ने राजा का कन्धा पकड़ कर बुरी तरह झकझोर डाला और आज्ञा पालन का आदेश दिया ।

रिचार्ड सन्न रह गए । वे उठे और अभिवादन किया । भोजन के बाद परामर्श का क्रम चला और जैसा विशप चाहते थे, वैसा ही समाधान बन गया । रिचार्ड ने अपने एक संस्मरण में स्वयं लिखा है—'विशप में कुछ विलक्षण शक्ति है । उनसे आँख मिलाते ही मनुष्य स्वयंमेव पराभूत हो जाता है ।'

क्या भौतिक सफलताएँ पाने वाले, क्या आत्मिक प्रगति करने वाले सभी के व्यक्तित्व का तात्विक विश्लेषण करने पर उनकी विलक्षणता के पीछे प्राण-प्रतिभा ही झाँकती पायी जायेगी । नेपोलियन, सिकन्दर सरीखे पराक्रमी और लिंकन, वाशिंगटन जैसे प्रगतिशील अपने संकल्पों को पूरा करने में प्राणप्रण से जुटे रहने के कारण ही कुछ कहने लायक प्रगति कर सके थे ।

आत्मिक क्षेत्र की समस्त सिद्धियों का स्रोत यही सत्साहस और प्रबल पुरुषार्थ है, जिसे वैज्ञानिक शब्दों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में प्राण शक्ति का चमत्कार कह सकते हैं । आत्म-संयम नदी के प्रवाह को रोकने की तरह है, उसमें इन्द्रियों के उद्दण्ड घोड़ों की लगाम कसकर पकड़नी होती है । मन एक दुर्दान्त दैत्य है, उसे वशवर्ती बना लेना, सर्कस के हिंस्र पशुओं से विलक्षण खेल कराने वाले प्रशिक्षक द्वारा दिखाये जाने वाले दुस्साहस की तरह है । जबकि हर जगह सुविधाओं की पुकार है, तब तप-तितीक्षा का स्वेच्छा संकल्प कितना कठिन और कितना जटिल समझा जा सकता है । संग्रह और उपभोग के लिये सर्वत्र बिखरी आकुलता के बीच जो त्याग और बलिदान की बात सोचते ही नहीं, उसे कर दिखाने के लिए भी कटबद्ध हो जाते हैं । उन्हें प्राणवान ही कहा जा सकता है । उन्हें जो उपहार मिलते हैं, उन्हें उस साहसिकता का ही पुरस्कार कह सकते हैं, जिसकी व्याख्या प्राण शक्ति के नाम से भी की जा सकती है ।

पनडुब्बे गहरे समुद्र में डुबकी लगाकर मोती बीनते हैं । बहुमूल्य खनिज प्राप्त करने के लिए धरती को गहराई तक खोदते जाने और उस विभीषिका के मुख में प्रवेश करने का साहस जुटाना पड़ता है । अपनी प्रसुप्त शक्तियों के जागृत करने के लिए, अन्तःचेतना की गहरी पर्तों में उतरने के लिए, अदभूत धैर्य और अविचल प्रयत्न करने होते हैं । यह सब अनायास ही नहीं हो जाता, वरन् अग्नि परीक्षा में गुजरने पर ही सफलता का श्रेय प्राप्त होता है । सोते सर्प और सोते सिंह को जगाने में जितना पराक्रम चाहिए, उतना ही अन्तःचेतना के सूक्ष्म संस्थानों को जगाते समय भी चाहिए । वन्य पशुओं को पालतू और प्रशिक्षित करना धैर्यवान लोगों का काम है । मरुस्थल को उर्वर बना लेने के लिए दूरदर्शिता, अथक श्रमशीलता और साधन सामग्री जुटानी पड़ती है । अनगढ़ व्यक्तित्व सुगढ़ और सुसंस्कृत बनाने के लिए कलाकारों जैसा कौशल विकसित करना पड़ता है । शत्रु को मित्र बना लेने की प्रशंसा है । अनर्थ में संलग्न विकृत कुसंस्कारों को आमूल-चूल परिवर्तित करके श्रेय साधक बना देना विष से अमृत निकालने के समतुल्य है । ऐसे मार्ग पर चलने के लिए अजस्र प्राण शक्ति चाहिए । आध्यात्म साधनाओं में प्राणमय कोश को जागृत करके प्रचण्ड आत्मबल संचय करने की आवश्यकता इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बतायी गई है ।

जैव चेतना की सर्वोच्च शक्ति का सुनियोजन

प्राण ही जड़ जगत एवं चेतना जगत दोनों की सर्वोपरि शक्ति है । यही जीवन का सार और प्रगति का आधार है । शास्त्रकारों ने इसे आदि एवं अनन्त कहा है । सृष्टि उसी से उत्पन्न होती और प्रलय काल में उसी में विलीन हो जाती है । कठोपनिषद् में कहा गया है कि सृष्टि का प्रारम्भ ही प्राण-ऊर्जा के कम्पनों से होता है—"यदिदं किंचजगत्सर्वम् प्राण एजति निस्सृतम् ।" अर्थात् जो भी कुछ इस सम्पूर्ण संसार में है वह प्राणों के ही कम्पनों की अभिव्यक्ति है । अथर्ववेद में उसी को नमन् करते हुए कहा गया है—

"प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त सर्व प्रतिष्ठतम् ॥"

अर्थात् उस प्राण को नमस्कार है, जिसके वश में समस्त संसार है । जो स्वयंभू है, सबका ईश्वर है और जिसमें सब कुछ प्रतिष्ठित है ।

शतपथ ब्राह्मण में प्राण-तत्व को ही आदि ऋषि कहा गया है । प्रश्नोपनिषद् में उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए ऋषि ने कहा है—

"स ईक्षांचक्रे । कस्मिन्नहमुत्क्रान्त उत्क्रान्तों भविष्यामि । कस्मिन्वे प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति ॥"

अर्थात् परम पुरुष परमेश्वर ने महासर्ग के आदि में विचार किया कि ब्रह्माण्ड में ऐसा कौन-सा तत्व उत्पन्न किया जाय, जिसके निकल जाने पर मैं भी उससे निकल जाऊँ और जिसके प्रतिष्ठित रहने पर मैं प्रतिष्ठित रहूँ ।

इससे स्पष्ट है कि सृष्टि का प्राथमिक तत्व प्राण है । वैज्ञानिक जानते हैं कि जड़ जगत में फोटोन, टैक्योन जैसी आधारभूत ऊर्जा तरंगें और इलेक्ट्रान, प्रोटान, मेसान, न्यूक्लियान जैसे तरंगमय मूल कण, जिनका शास्त्रीय नाम पंचमहाभूत है, उसी प्राण-ऊर्जा के परिणाम हैं । चेतन जगत में इच्छा, क्रिया एवं ज्ञानं के रूप में वही संव्याप्त हैं, सजीवता, सजगता और सक्रियता उसी रूप के कारण हैं । जीवन तत्व वही है । समस्त विश्व ब्रह्माण्ड संव्याप्त विभु सत्ता वह प्राण ही है । वही चेतना कहलाती है, जिसमें प्राण-तत्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, वही प्राणी कहलाता है, प्राण-तत्व निकल जाने पर प्राणी निष्प्राण हो जाता है । तैत्तरीय उपनिषद् में कहा भी गया है—

"प्राणो हि भूतानामायु; तस्मात्सर्वायुषमुच्यते ।"

अर्थात्—प्राण ही प्राणियों की आयु है । इसीलिए इसे 'सर्वायुष' कहा जाता है ।

मानव शरीरगत प्राण ब्रह्माण्डव्यापी महाप्राण का एक घटक है । यही चेतन प्रवाह अपनी प्रचण्डता और उत्कृष्टता के आधार पर स्तर-भेद और रूप-भेद से विभिन्न प्रतिभाओं एवं ऋद्धि-सिद्धियों का उद्गाता सिद्ध होता है । इन्द्रियों की क्रियाशीलता, मन की सजगता और संकल्पशीलता, बुद्धि की प्रखरता तथा अन्तःकरण की उदात्तता का आधार प्राण शक्ति ही है । प्राण की न्यूनाधिकता से ही व्यक्ति-व्यक्ति के बीच अन्तर पाया जाता है । विभिन्न शारीरिक, मानसिक क्रियाओं के संचालन का कार्य इसके द्वारा ही सम्पादित होता है । शरीर के पाँच प्रमुख भागों में अवस्थित होने से उसको पाँच प्राणों के नाम से सम्बोधित किया जाता है । इनके पाँच भेद हैं—प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान । पाँच उप प्राण भी हैं । जिन्हें देवदत्त, कृकल, कूर्म, नाग और धनंजय के नाम से जाना जाता है । ये पाँच प्रमुख प्राणों के सहायक घटक हैं । कुछ वैज्ञानिक इसे "क्लाउड ऑफ आयन्स" अर्थात् आयनों का बादल कहते हैं । शरीर विज्ञानी इसी को 'बायोप्लाज्मिक एनर्जी' के नाम से सम्बोधित करते हैं । विभिन्न देशों में इसको भिन्न-भिन्न नामों से जाना, समझा जाता है, जैसे चीन में 'ची एनर्जी' जापान में 'की एनर्जी' पाश्चात्य देशों में यूनीवर्सल एनर्जी, वाइटल फोर्स आदि । आइन्स्टीन के सिद्धान्तानुसार ऊर्जा का सम्मलित स्वरूप ही पदार्थों के रूप में दिखाई देता है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि, भारतीय योग शास्त्रों में वर्णित 'प्राण' और 'ऊर्जा' एक दूसरे के पर्यायवाची हैं । भौतिक ऊर्जा को जिस प्रकार चुम्बकीय क्षेत्र या विद्युतीय क्षेत्र से आकृष्ट किया जाता है उसी प्रकार प्राण-ऊर्जा को मनः शक्ति के द्वारा भी प्रभावित, आकर्षित किया जा सकता है ।

प्राण-तत्व का वायु से सीधा सम्बन्ध है । श्वास-प्रश्वास के माध्यम से शरीर के अन्दर इसका निरन्तर प्रवाह होता रहता है । चेतन ऊर्जा के इस प्रवाह को जैविक विद्युत प्रवाह के समतुल्य कहा जा सकता है । सूर्य एवं चन्द्रनाड़ी जिन्हें क्रमशः पिंगला तथा इड़ा नाड़ियाँ अथवा नासिका का दायाँ और बायाँ स्वर भी कहा जाता है, के द्वारा यह चेतन तत्व वायु के साथ आवागमन करता है । काया की सक्रियता इसी प्राण विद्युत की ऊर्जा, ताप एवं प्रकाश के सहारे सम्भव होती है । इसी को स्पायरोमेट्री स्कीन पोटेन्शियल, इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी तथा इलेक्ट्रोएनसिफैलो ग्राफी के माध्यम से प्रत्यक्ष देखा जाता है । यह जैव विद्युत ही जीवन का सार है । समस्त एन्द्रिक गतिविधियाँ और मस्तिष्कीय उड़ानें इसी के प्रवाह द्वारा सम्भव होती हैं । शारीरिक कोशिकाओं में यह विद्युत शक्ति के रूप में भरी होती है । प्राणायाम प्रयोगों में इसी चेतन ऊर्जा के व्यवस्थित विकास का अभ्यास किया जाता है । हिप्नोटिज्म, मेस्मेरिज्म, साइकिक हीलिंग और में भी इसी शक्ति का उपयोग किया जाता है । इससे सम्पन्न लोग ही ओजवी, तेजस्वी और मनस्वी कहे जाते हैं । साहस, शौर्य, उत्साह तथा स्फूर्ति के रूप में यही विशेषता अभिव्यक्त होती है ।

परामनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चेतना के विभिन्न स्तरों में एक स्तर "आयनोप्लाज्मा' का होता है, जिसका हमारे मन और शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है । वस्तुतः यह आयनोप्लाज्म प्राण-ऊर्जा ही है जिसकी अभिवृद्धि के लिए पूर्वार्त्त दर्शन में प्राणयोग का सहारा लिया जाता है । इस विधा में शरीर में प्रवाहित सूक्ष्म एवं शक्तिशाली प्राण चेतना को मनः शक्ति के द्वारा शृंखलाबद्ध कर एक पंक्ति में प्रवाहित किया जाता है, जिससे मूलाधार से लेकर सहस्रार तक एक-प्रकार का 'बायोजनरेटर' स्पन्दित होने लगता है । इससे काया स्थित दक्षिणी ध्रुव-सहस्रार का मिलन सम्भव होता है । भौतिक समृद्धि एवं आत्मिक उन्नति का मूल यही है ।

कनाडा के मूर्धन्य मनोविज्ञानी डॉ. हंसा सेल्ये के अनुसार मनुष्य की सर्वोच्च शक्ति प्राण ऊर्जा का अधिकांश भाग व्यर्थ के क्रिया-कलापों, कुकल्पनाओं एवं अचिन्त्य-चिन्तन में ही समाप्त हो जाता है । मानसिक तनाव, चिन्ता, अनिन्द्रा आदि भी प्राण शक्ति का असाधारण गति से क्षरण करते हैं । प्राण-तत्व की यह न्यूनता ही अनेकानेक बीमारियों का कारण बनती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । इसकी कमी जीवन अवधि पूर्ण होने के पूर्व मनुष्य को काल का ग्रास बनने को बाध्य कर देती है ।

योग विद्या विशारदों का कहना है कि प्राण-विद्या के नियमों को जानने और अपनाने पर इस क्षरण को रोका जा सकता है और साथ ही व्यय हुए प्राण-तत्व की क्षतिपूर्ति भी की जा सकती है । संयमित आहार-विहार एवं चिन्तन-मनन में उत्कृष्टता का समावेश करके उस बहुमूल्य सम्पदा का कोश भी अन्तरंग सत्ता में स्थापित किया जा सकता है । जो अपनी तथा दूसरों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति में काम आता है ।

प्राण शक्ति का अनावश्यक क्षरण रोकने, क्षरण से हुई क्षति की पूर्ति करते रहने तथा प्राण-तत्व की अधिक मात्रा को आकर्षित कर अपना व्यक्तित्व अधिकाधिक समुन्नत प्राणवान्, परिष्कृत बनाये जाने की समग्र साधना पद्धति को ही प्राण-विद्या या प्राणायाम साधना कहा गया है । इसी का उच्चस्तरीय रूप कुण्डलिनी जागरण है । इस साधना का अनिवार्य अंग संकल्प होता है । संकल्प शक्ति के सहारे उसी के चुम्बकत्व से ब्रह्माण्डव्यापी समष्टिगत प्राण-तत्व को आकाश से आकर्षित किया और श्रद्धा के बल पर उसे अपने में धारण किया जाता है । जो जिस सीमा तक व्यष्टिगत प्राण को वशवर्ती बना लेता है, उसी सीमा तक समष्टिगत प्राण भी वशवर्ती हो जाता है और साधक प्राण जगत की अनेकानेक दिव्य क्षमताओं का स्वामी बन जाता है । यह मार्ग सभी साधकों के लिए समान रूप से खुला है ।

मानवी विद्युत के चमत्कार

सोसाइटी ऑफ फिजीकल रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार केवल अमेरिका में ही २० से अधिक बिजली के आदमी पाये गए हैं । तलाश करने पर वे संसार के अन्य देशों में भी मिल सकते हैं । कोलराडो निवासी डब्ल्यू. पी. जोन्स और उनके सहयोगी नार्मन लोग ने इस सन्दर्भ में लम्बी शोधें की हैं और इस नतीजे पर पहुँचे हैं, कि इसमें कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं है । मामान्य मा शारीरिक व्यतिक्रम है । शरीर की कोशाओं के नाभिकों की बिजली आवरण ढीले पड़ने पर 'लीक' करनें लगती है । तब शरीर की बाहरी पर्तों पर उसका प्रवाह दौड़ने लगता है । वस्तुतः नाभिकों में अनन्त विद्युत शक्ति का भण्डार तो पहले से ही विद्यमान है । इन शोधकर्त्ताओं का कथन है कि स्थान और उपयोग की भिन्नता से प्राणि विद्युत और पदार्थ विद्युत, के दो भेद हो जरूर गए हैं, पर तात्विक दृष्टि से उनमें मूलभूत एकता ही पायी जाती है ।

शोधकर्त्ता जोन्स स्वयं भी एक विद्युत मानव थे । उन्होंने नंगे पैरों धरती पर चलकर भू-गर्भ की अनेकों धातु खदानों का पता लगाने में भारी ख्याति प्राप्त की थी । उनके स्पर्श से धातुओं से बनी वस्तुएँ जादूगरों के खिलौने की तरह उछलने खिसकने की विभिन्न हलचलें करने लगती थीं, छूते ही बच्चे झटका खाकर चिल्लाने लगते थे ।

अमेरिका में मोन्टाना राज्य के मेडालिया कस्बे की जेनी मोरन नामक लड़की एक चलती फिरती बैटरी थी । जो उसे छूता वही झटका खाता । अन्धेरे में उसका शरीर चमकता था । अपने प्रकाश से वह घोर अन्धेरे में भी मजे के साथ यात्रा कर लेती थी । उसके साथ चलने वाले किसी जीवित लालटेन के साथ चलने का अनुभव करते थे । उसके शरीर के स्पर्श से १०० वाट तक का बल्ब जल उठता था । यह लड़की ३० वर्ष की आयु तक जीवित रही और अस्पर्श बनी एकान्त कोठरी में दिन गुजारती रही ।

कनाडा के ओन्टोरियो क्षेत्र वोण्डन गाँव में जन्मी एक लड़की १७ वर्ष तक जीवित रही है । धातु का मामान उसके शरीर से चिपक जाता था । इसलिए उसके भोजन पात्र तक लकड़ी या काँच के रखे जाते थे ।

मास्को निवासी कुमारी माइखेनोवा रूमी वैज्ञानिकों के लिए एक दिलचस्प शोध का विषय रही है । वह अपने दृष्टिपात से चलती घड़ियाँ बन्द कर देती थीं अथवा सुइयाँ आगे पीछे घुमा देती थी । इसके करतबों की फिल्म बनाकर कितनी ही प्रयोगशालों में भेजी गई ताकि अन्यत्र भी उस विशेषता के सम्बन्ध में अन्वेषण कार्य चलता रह सके । वैज्ञानिकों ने इसे मस्तिष्कीय विद्युत की चुम्बकीय शक्ति-इलेक्ट्रो मैगनेटिक-फोर्स की विद्यमानता निरूपित किया है । वे कहते हैं कि यह शक्ति हर मनुष्य में मौजूद है । परिस्थितिवश वह किसी में भी अनायास ही प्रकट हो सकती है और प्रयत्नपूर्वक उसे बढ़ाया भी जा सकता है । रूमी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक लाखसोव ने हर मनुष्य के शरीर से निकलने वाले विद्युत विकरणों को अंकित कर सकने वाला एक यन्त्र ही बना डाला है ।

विश्व के अनेक भागों में पायी जाने वाली ईल मछली के शरीर में प्रायः १५ अश्व शक्ति की बिजली आँकी गई है । इससे यह एक घातक अस्त्र की तरह अपने 'शिकार पर प्रहार करती है । यदि ईल की बिजली का उपयोग हो सके तो, उससे एक अच्छा खासा कारखाना चल सकता है ।

विश्वव्यापी विद्युत चुम्बक से कौन कितना लाभ उठा ले यह उस प्राणी की शरीर रचना एवं चुम्बकीय क्षमता पर निर्भर है । कितने ही पक्षी ऋतु परिवर्तन के लिए झुण्ड बनाकर सहस्रों मील की लम्बी उड़ानें भरते हैं । वे धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा पहुँचते हैं । इनकी उड़ानें प्रायः रात को होती है । उस समय प्रकाश जैसी कोई सुविधा भी उन्हें नहीं मिलती, यह कार्य उनकी अन्तः चेतना पृथ्वी के इर्द-गिर्द फैले हुए चुम्बकीय घेरे में चल रही हलचलों के आधार पर ही पूरा करती है । इस धारा के सहारे वे इस तरह उड़ते हैं, मानो किसी सुनिश्चित सड़क पर चल रहे हों ।

टरमाइन कीड़े अपने घरों का प्रवेश द्वार सदा निर्धारित दिशा में ही बनाते हैं । समुद्री तूफान आने से बहुत पहले ही समुद्री बतखें आकाश में उड़कर तूफानी क्षेत्र से पहले ही बहुत दूर निकल जाती हैं । चमगादड़ अँधेरी रात में आँख के सहारे नहीं, अपनी शरीर विद्युत के सहारे ही वस्तुओं की जानकारी प्राप्त करते हैं और पतले धागों से बचकर उपयोगी रास्ते पर उड़ते हैं । मेढ़क मरे और जिन्दे शिकार का भेद अपनी शारीरिक विद्युत के सहारे ही जान पाता है । मरी और जीवित मक्खियों का ढेर सामने लगा देने पर वह मरी छोड़ता और जीवित खाता चला जायेगा । उल्लू की शिकार दबोचने की क्षमता उसकी आँखों पर नहीं विद्युत संस्थान पर निर्भर रहती है । साँप समीपवर्ती प्राणियों के शरीरों के तापमान का अन्तर समझता है और अपने रुचिकर प्राणी को ही पकड़ता है । भुनगों की आँखें नहीं होतीं वह अपना काम विशेष फोलो सेलों में बनाते हैं । अपने युग में अनेकों वैज्ञानिक यन्त्र प्राणियों की अद्‌भुत विशेषताओं को छानबीन करने के लिए उपरान्त उन्हीं सिद्धातों के सहारे बनाये गए हैं । प्राणियों में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति ही जीवन निर्वाह के आधार पर बनाती है । इन्द्रिय शक्ति कम होने पर भी उसी के सहारे सुविधापूर्वक समय गुजारते हैं ।

यूनान के चिकिसा विज्ञानी 'पैपिरस' ने रोगों की उपचार प्रक्रिया में चिकित्सक द्वारा रोगी के सिर पर हाथ फिराकर अच्छा करने की प्रक्रिया को शास्त्रीय रूप दिया था । सम्राट पाइरस और वैस पैसियन को ऐसे ही उपचारों से कष्टसाध्य रोगों से मुक्ति मिली थी । फ्रांस के शाही परिवार में फ्रांसिस प्रथम से लेकर चार्ल्स दशम तक की चिकित्सा में जीव चुम्बक का प्रयोग शक्तिशाली प्रक्रियाओं द्वारा होता रहा है । हाथ का स्पर्श और विशिष्ट दृष्टिपात इस प्रक्रिया में विशेष रूप से प्रयुक्त हुआ है ।

विद्वान स्काचमेन मैक्सवेल ने सन् १६०० से यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया था कि ब्रह्माण्ड व्यापी एक 'जीवनी शक्ति' का अस्तित्व मौजूद है । प्रयत्न करके उसकी न्यूनाधिक मात्रा अपने में भरी जा सकती है और उसे स्व पर उत्कर्ष के अनेक प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जा सकता है ।

मैक्सवेल से पहले महामनीषी गोक्लेनियस अनेक तर्कों और प्रमाणों से यह सिद्ध कर चुके थे, कि मनुष्य के आत्मबल का प्रमुख आधार यह जीवनी शक्ति ही है जिसे 'जैक चुम्बकत्व' के स्तर का समझा जा सकता है । वान हेलमान्ट इस शक्ति का उपयोग करके शारीरिक और मानसिक रोगियों के कष्ट मुक्त करने में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं । महाप्रभु अपनी इसी क्षमता के कारण अपने जीवन काल में ही सिद्ध पुरुष गिने जाने लगे थे ।

इटली के वैज्ञानिक सेटानेली ने अठारवीं सदी के आरम्भ में अनेकों प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया था, कि मनुष्य शरीर में प्रचण्ड विद्युतीय विकिरण का अस्तिव विद्यमान है ।

सन् १७३४ से सन् १८१५ तक लगभग पूरे जीवन में डॉक्टर फैडरिक मेस्मर ने प्राण शक्ति के अस्तित्व एवं उपयोग के सम्बन्ध में शोध कार्य किया । उन्होंने अपने अनुसन्धानों के निष्कर्षों को क्रमबद्ध बनाया और मेस्मेरिज्म नाम दिया । आगे चलकर उनके शिष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कॉंस्टेट युसिगर ने उसमें सम्मोहन विज्ञान की नई कड़ी जोड़ी और कृत्रिम निन्द्रा लाने की विधि को 'हिप्नोटिज्म' नाम दिया । फ्रांस के अन्य विद्वान भी इस दिशा में नयी खोजें करते रहे । ला फान्टेन एवं डॉ. ब्रेड ने इन अन्वेषणों को और आगे बढ़ाकर इस योग्य बनाया कि चिकित्सा उपचार में उसका प्रामाणिक उपयोग सम्भव हो सके ।

पिछले दिनों अमेरिका में न्यू आरलीयन्स तो ऐसे प्रयोगों का केन्द्र ही बना रहा है, इस विज्ञान को अमेरिकी वैज्ञानिक डाकलिंग और फ्राँसीसी डॉ. द्रुराण्ड डे ग्रास की खोजों ने विज्ञान जगत को यह विश्वास दिलाया कि प्राण शक्ति का उपयोग अन्य महत्त्वपूर्ण उपचारों से किसी भी प्रकार कम लाभदायक नहीं है । इस प्रक्रिया को 'इलेक्ट्रो बायो-लाजिकल्स' नाम दिया गया है । ली वाल्ट की जीव विद्युत के आधार पर चिकिसा उपचार पुस्तक को प्रामाणिकता भी मिली और सराहना भी हुई । इस सन्दर्भ में जिन तीन प्रमुख संस्थाओं ने विशेष रूप में शोध कार्य किए हैं । उनके नाम हैं—(१) दि स्कूल ऑफ नेन्सी, (२) दि स्कूल ऑफ चारकोट, (३) दि स्कूल ऑफ मेस्मेरिस्ट । इनके अतिरिक्त भी छोटे बड़े अन्य शोध संस्थान व्यक्तिगत एवं सामूहिक अन्वेषणों को प्रोत्साहन देते रहे हैं ।

विज्ञानी मोडाच्यूज तथा काउण्ट पुलीगर के शोधों ने यह सिद्ध किया है कि प्राण शक्ति द्वारा रोग उपचार तो एक हल्का सा खिलवाड़ मात्र है । वस्तुतः उसके उपयोग बहुत ही उच्च स्तर के हो सकते हैं । उसके आधार पर मनुष्य अपने निज के व्यक्तित्व में बहुमुखी प्रखरता उत्पन्न कर सकता है । प्रतिभाशाली बन सकता है । आत्म विकास की अनेकों मंजिलें पार कर सकता है । पदार्थों को प्रभावित करके अधिक उपयोगी बनाने तथा इस प्रभाव से जीवित प्राणियों की प्रकृति बदलने के लिए भी प्रयोग हो सकता है । जर्मन विद्युत विज्ञानी रीकन वेक इसे एक विशेष प्रकार की 'अग्नि' मानते हैं । उसका बाहुल्य वे चेहरे के इर्द-गिर्द मानते हैं और 'औरा' नाम देते हैं । प्रजनन अंगों में उन्होंने इस अग्नि की मात्रा चेहरे से भी अधिक परिमाण में पायी है । दूसरे शोधकर्त्ताओं ने नेत्रों में तथा उँगलियों के पोरों में उसका अधिक प्रवाह माना है ।

हाँगकाँग की अमेरिकी डॉक्टर आर्नोल्ड फास्ट ने सम्मोहन विधि से निद्रित करके कई रोगियों के छोटे ऑपरेशन किए थे । पीछे डैन्टल सर्जनों ने यह विधि अपनाई और उन्होंने दाँत उखाड़ने में सुन्न करने के प्रयोग बन्द करके सम्मोहन विधि प्रयोग को सुविधाजनक पाया । दक्षिण अफ्रीका, जोहन्सबर्ग के टारा अस्पताल में डॉ. वर्नार्ड लेविन्सन के बिना क्लोरोफॉर्म सुँघाए इसी विधि से कितने की कष्ट रहित ऑपरेशन करके यह सिद्ध किया कि यह विधि कोई जादू-मन्तर नहीं वरन् विशुद्ध वैज्ञानिक है । अंग्रेज विज्ञानी जेम्स ब्राइड ने भी नाड़ी संस्थान में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति की क्षमता को मात्र शरीर निर्वाह तक सीमित न रहने देकर, उसमें अन्य उपयोगी कार्य सम्भव हो सकने का प्रतिपादन किया है ।

द्वितीय महायुद्ध के समय लोगों के मनों में से छिपे हुए रहस्य उगलवा लेने के लिए प्राण विद्युत के प्रयोग की रहस्यमयी विधियाँ खोजी गई थीं । मनोविज्ञानी जे. एच. एट्स ब्रुक ने इस सन्दर्भ में कई नये सिद्धान्त खोज निकाले थे और उसका प्रयोग जासूसी विभाग के अफसरों को सिखाया था । इसके लिए तब जर्मनी में एक 'हिप्नोटाइज्ड इन्टेलीजेन्स' विभाग ही अलग से बनाया गया था । उसके माध्यम से कितनी ही अद्‌भुत सफलताएँ भी मिली थीं ।

प्राण शक्ति के वैज्ञानिक अनुसन्धान के क्षेत्र में अभी प्राथमिक जानकारियाँ ही उपलब्ध हो सकी हैं । उसके थोड़े से सूत्र निर्धारित किए गए हैं और यत्किंचित उपयोग उपचार जाने गए हैं । आत्म विज्ञानी मानवी चेतना में सन्निहित इस अद्‌भुत सामर्थ्य की गरिमा आरम्भ से ही गाते रहे हैं और कहते रहे हैं कि जो प्राण विद्या को जान लेता है उसके लिए इस संसार में ऐसा कुछ भी अनुपलब्ध नहीं रह जाता जो समृद्धि-प्रगति, और सुख-शान्ति के लिए आवश्यक है ।

शरीर में एक और शरीर
प्राण-शरीर

भारतीय योगियों द्वारा परकाया प्रवेश के विज्ञान को तर्कवादी व्यक्ति अतिरंजित कल्पना कहकर टाल देते हैं, वस्तुतः मनुष्य के स्थूल शरीर की अपेक्षा उसके प्राण-शरीर की महत्ता असंख्य गुनी अधिक है । जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के सत्य, शरीर और ब्रह्माण्ड की अन्तवर्ती रचना, विज्ञान और क्रिया का ज्ञान जिस शरीर और माध्यम द्वारा सम्भव है, वह प्राण-शरीर ही है । स्थूल शरीर की अपेक्षा प्राण-शरीर कहीं अधिक सशक्त और आश्चर्यजनक काम कर सकने की सामर्थ्य से ओत-प्रोत होता है ।

प्रशान्त महासागर में समाओ द्वीप के निकट एक जीव पाया जाता है उसे पैलोलो कहते हैं । यह जल में छिपी चट्टानों में घर बनाकर रहता है और वर्ष में दो बार अक्टूबर तथा नवम्बर के उन दिनों में, जब चन्द्रमा आधा होता है और ज्वार अपनी छोटी अवस्था में होता है, यह बाहर निकल कर पानी की सतह पर आता है और सतह पर आकर अण्डे देकर फिर वापस चला जाता है ।

अण्डा देने आने और वापस चले जाने में कोई विचित्र बात नहीं है । आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि पैलोलो जब अपने घर से चलता है तो अपना आधे से अधिक शरीर वह घर में ही सुरक्षित छोड़ आता है । अण्डा देने और तैरने के लिए जितना शरीर आवश्यक होता है उतने से ही वह अपना सतह में आने का अभिप्राय पूरा कर जाता है । इस बीच उसका शरीर मृत मिट्टी के ढेले की तरह निष्क्रिय पड़ा रहता है । घर लौटकर पैलोलो फिर से अपने उस छोड़े हुए अंग को फिट कर लेता है । उसके बाद उस शरीर में भी रक्त संचार, प्राण संचार की गतिविधियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं । यह एक उदाहरण है, जो यह बताता है कि मनुष्य अपनी आध्यात्मिक उन्नति शरीर के बिना भी चला सकता है, शरीर से तो उसका सम्बन्ध कुछ वर्षों का अधिक से अधिक एक शताब्दी का ही होता है पर प्राण-शरीर उसकी जीवन धारण करने की प्रक्रिया से लेकर मुक्ति पर्यन्त साथ-साथ रहता है ।

बालक गर्भ में आता है तब वह किसी प्रकार की श्वास नहीं लेता फिर भी उसके शरीर में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा पहुँचती है और शरीर के विकास की गति चलती रहती है । उस समय बच्चे की नाभि का सम्बन्ध माँ की नाभि से बना रहता है । नाभि सूर्य का प्रतीक है । प्राणायाम द्वारा वस्तुतः सूर्य चक्र का ही जागरण किया जाता है । जिससे आत्मा अपना सम्बन्ध सीधे सूर्य से जोड़कर प्राणाग्नि का विकास करती रहती है । प्रारम्भ प्राणायाम की क्रियाओं से होता है और चरम विकास ध्यान धारणा और समाधि अवस्था में मुक्ति और कुछ नहीं । प्राणमय शरीर को सूर्य के वृहद् प्राण में घुलाकर स्वयं आद्य शक्ति के रूप में परिणत हो जाना होता है । जिस प्रकार नदी से एक लोटा जल लेने से लोटे के जल की सत्ता अलग हो जाती है, पर नदी में उड़ेल देने के बाद वह जल फिर नदी हो जाता है, वैसी ही गति प्राणों की भी होती है ।

शरीर के न रहने पर भी प्राणों में गति बनी रहती है । प्रसिद्ध तिब्बती योगी लामा श्री टा. लाबसाँग रम्पा ने अपनी पुस्तक "यू फार एवर" (आप अमर हैं) पुस्तक में मनुष्य का तेजोवलय (चतुर्थ आध्यात्म) में एक घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि, "फ्रांस क्रान्ति के समय एक देशद्रोही का सिर काट दिया गया । धड़ से शीश अलग हो जाने पर भी उसके मुँह से स्फुट बुदबुदाहट की क्रिया होती रही । ऐसा जान पड़ा कि वह कुछ कहना चाहता है । इस घटना को फ्रांसीसी शासन ने सरकारी पुस्तकों में रिकार्ड करवाया जो अभी तक विद्यमान है ।"

कर्नल टाउन सेण्ड ने प्राणायाम के अभ्यास से प्राणमय शरीर के नियन्त्रण में सफलता प्राप्त की थी । सुप्रसिद्ध अमेरिकी अणु-वैज्ञानिक श्रीमती जे. सी. ट्रस्ट की भाँति उन्होंने भी प्राण-सत्ता के अद्भुत प्रयोगों का प्रदर्शन किया था । एक बार सैकड़ों वैज्ञानिकों व साहित्यकारों से खचाखच भरे हॉल में उन्होंने प्रदर्शन किया । स्वयं एक स्थान पर बैठ गए । ब्लैक बोर्ड के साथ खड़िया बाँध दी गई । इसके बाद उन्होंने अपना प्राण शरीर से बाहर निकाल कर अदृश्य शरीर से ब्लैक बोर्ड पर बोले हुए अक्षर लिखे सवाल हल किए । बीच-बीच में वे अपने शरीर में आ जाते और वस्तु स्थिति भी समझाते जाते । इस प्रदर्शन ने लोगों को यह सोचने के लिए विवश किया कि मनुष्य शरीर जितना दिखाई देता है, वहीं तक सीमित नहीं वरन् वह जो अदृश्य है इस शरीर से कहीं अधिक उपयोगी व मार्मिक है ।

डॉ. वानडेन फ्रेंक ने इस सम्बन्ध में व्यापक खोज की थी और यह पाया था कि सिर के उस स्थान का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ हिन्दू लोग चोटी रखते हैं, प्राण शरीर से सम्बन्ध रहता है, यहीं से हृदय और रक्त विसरण की क्रियाएँ भी सम्पन्न होती हैं । उन्होंने शरीर के विकास में इन्हीं खोजों के आधार पर मानसिक क्रियाओं का बहुत अधिक महत्त्व माना था ।

वायु मिश्रित ऑक्सीजन, प्राण अग्नि स्फुल्लिंग सब एक तत्व के नाम हैं । इस पर नियन्त्रण करके योगीजन शरीर न रहने पर भी हजारों वर्ष तक संसार में बने रहते हैं । उसे न जानने वाले संसारी लोग अपने इस महत्त्वपूर्ण शरीर को भी उसी तरह नष्ट करते हैं, जिस तरह इन्द्रियों द्वारा शरीर की क्षमताओं को । प्राण शरीर का विकास किए बिना जीवन के रहस्यों में गति असम्भव है । आत्म साक्षात्कार और ईश्वर दर्शन नामुमकिन है ।

गुप्त बातों का जानना

हमारा ज्ञान बहुत सीमित है । केवल सुनी-देखी हुई और अनुभव में आई हुई बातों की ही जानकारी हमें होती है, परन्तु संसार में और भी ऐसी अनेक जानने योग्य बातें मौजूद हैं, जिन्हें स्थूल इन्द्रियों की सहायता से नहीं जाना जा सकता । विश्व में बहुत सारा ज्ञान छिपा पड़ा है, जिनमें सामर्थ्य है, वे उसे अनायास ही जान लेते हैं, और लाभ उठाते हैं । सभी ज्योतिषी, भविष्य वक्ता, मूक प्रश्न बताने वाले, मनकी बात जानने वाले और भूत भविष्य की जानकारी रखने वाले झूठे या दम्भी होते हों, सो बात नहीं है, इनमें से कितनों ही में बड़ी विविध सामर्थ्य होती है और वे अपने ज्ञान से बड़ा आश्चर्य उत्पन्न कर देते हैं ।

जिस अवस्था में दिव्य ज्ञान का अनुभव होता है, उसे समाधि अथवा क्लेरोवायन्स कहते हैं । क्लेरोवायन्स का तात्पर्य है—स्पष्ट देखना । धुँधली इन्द्रियाँ जिस बात को नहीं देख पातीं उन्हें जानने योग्य सूक्ष्म इन्द्रियों को यदि जागृत कर लिया जाय तो वह अवस्था प्राप्त हो सकती है । बाह्य मस्तिक की घुड़दौड़, तर्क, शृंखला और अस्थिरता एवं सांसारिक झंझटों का बहुत अधिक दबाव जब मन के ऊपर पड़ता है, तो वह धुँधला हो जाता है, किन्तु यदि हम अन्तर्मुखी होने का अभ्यास करें, बाहरी झंझटों की अपेक्षा आत्म साधना में अधिक मन लगावें, तो हम समाधि अवस्था के निकट होते जा सकते हैं ।

योग की वह समाधि जिसमें रक्त का संचालन और श्वास-प्रश्वास क्रिया बन्द हो जाने पर भी मनुष्य जीवित रहता है, यहाँ उस अवस्था का उल्लेख नहीं किया जा रहा है, क्योंकि वह बहुत ही ऊँची चीज है; और साधना में पारंगत साधुओं को छोड़कर साधारण लोगों के लिए सम्भव नहीं है । छोटी श्रेणी की समाधि साधारण लोगों को भी प्राप्त हो जाती है, और उसके लिए संज्ञाहीन होने की कोई आवश्यकता नहीं है । हठ योग की पुस्तकों में समाधि की सात कक्षाएँ बतायी हैं । उनकी कुछ आरम्भिक कक्षाएँ थोड़ा-सा अभ्यास करने पर कई साधकों को प्राप्त हो जाती हैं । कितने ही उदाहरण ऐसे देखे जाते हैं, जिनमें अशिक्षित, असभ्य और अज्ञानी मनुष्यों में यह सामर्थ्य जागृत होती है और वे गुप्त बातों को आश्चर्यजनक रीति से बताते हैं ।

मानवीय विद्युत तेज (औरा) विचार कम्पनों का प्रवाह, अन्य मनुष्य के मन का अनुभव, छिपी हुई वस्तुओं का ज्ञान, किसी वस्तु की पूर्व परम्परा, भावी घटनाओं का पूर्वाभास आदि का अनुभव यह उसी मनुष्य को प्रगट होगी, जिसे पूर्व संस्कारों के आधार पर अथवा आधुनिक अभ्यास के द्वारा समाधि की कुछ स्थिति प्राप्त होती होगी । यह स्थिति जितनी धुँधली होगी, उतने ही अस्पष्ट अनुभव आवेंगे, और जितनी साफ होती जायेगी उतना ही स्वच्छ ज्ञान होगा ।

यह योग्यता मनुष्य को स्वभावतः प्राप्त है, उसको कहीं बाहर से प्राप्त नहीं करना है, केवल उसके ऊपर जमे हुए मैल को हटाना है । इसलिए क्लेरीवायन्स के अभ्यास के लिए किसी कठिन अभ्यास की जरूरत नहीं है । अन्तर्मुखी होना, आत्म चिन्तन में समय लगाना । ईश्वराधन, पूजा, पाठ, जप-तप करना इनमें से अपने विश्वास के आधार पर जो कुछ भी अभ्यास सच्चे हृदय से और निष्ठापूर्वक किया जाय, वही इस मार्ग को खोलने में सहायक हो सकता है । चित्त की स्थिरता और हृदय की पवित्रता यह दो गुण इस दिशा में बहुत उत्तम सिद्ध होते हैं । दुर्गुणी और दुष्ट प्रकृति के लोग त्रिकाल में भी इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ हठ योगी इसलिए गाँजा, भाँग, चरस, शराब आदि पीते हैं कि उनकी बाह्य चेतना निद्रित हो जाय और समाधि का आनन्द आने लगे, किन्तु भ्रम में उलझे रहने के अतिरिक्त उन्हें कुछ वास्तविक लाभ नहीं होता । बाह्य चेतना निन्द्रित कर लेना तब तक व्यर्थ है, जब तक कि आन्तरिक चेतना जागृत न हो, नशीली चीजों से आन्तरिक तत्वों का जागृत होना तो दूर रहा, उल्टे वह जड़ता को प्राप्त हो जाते हैं, इसलिए साधकों को इस दृष्टि से मादक द्रव्यों का सेवन कदापि न करना चाहिए ।

बाह्य चेतना को निन्द्रित करने का अच्छा मार्ग चित्त की एकाग्रता और आन्तरिक शान्ति ही हो सकती है । इसी के द्वारा सूक्ष्म इन्द्रियों का जागरण सम्भव है । जो इस विषय का अभ्यास करना चाहते हैं, उन्हें उचित है कि अपनी कोई प्रिय वस्तु चुन लें और बहुत समय तक उसी पर ध्यान जमाने का अभ्यास करें । जैसे आपको अपनी हीरे की अँगूठी प्रिय है, तो उसे सामने रख कर मन उस पर जमाइए और उसी के सम्बन्ध में चिन्तन कीजिए । दस पाँच मिनट प्रतिदिन इसका अभ्यास करने से अँगूठी और हीरे के सम्बन्ध में बहुत ही सूक्ष्म बातें ध्यान में आने लगेंगी । निरन्तर छः सप्ताह के अभ्यास से बहुत लाभ होगा ।

आरम्भिक अभ्यास किसी जड़ वस्तु पर से किया जा सकता है । छः सप्ताह बाद मानसिक ध्यान करना चाहिए, अपने इष्ट देव की मूर्ति का मानसिक ध्यान करने और उनके अंग-प्रत्यंगों को स्पष्ट देखने का अभ्यास करने से सूक्ष्म चेतना बहुत साफ होती जाती है और धीरे-धीरे अप्रत्यक्ष बातों की जानकारी बढ़ने लगती है । क्लेरीवायन्स के लिए गाँजे का नशा नहीं आत्म साधना का नशा होना चाहिए । सांसारिक कार्य करते हुए भी यदि संसार से भूले रहें और आध्यात्मिक लोक में भ्रमण करने का अभ्यास डालें, तो यह दिव्य शक्ति, हमें धीरे-धीरे प्राप्त हो सकती है ।

दूसरों के मन की बात जानने में, स्वभाव जानने में, इतिहास जानने में अपनी आरम्भिक योग्यता की परीक्षा शुरू करनी चाहिए । पहले यदि एक चौथाई बातें ठीक निकलें तो हताश नहीं प्रसन्न होना चाहिए । जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ता जायेगा, तिहाई, आधी, पौना बातें ठीक आने लगेंगी । एक दिन ऐसी अवस्था भी प्राप्त हो सकती है, जब विश्व की कोई बात गुप्त न रहेगी और प्रत्यक्ष पदार्थों की भाँति गुप्त पदार्थ स्पष्ट दिखाई देने लगेंगे ।

महामानवों से सम्बद्ध उपकरण और उनसे लिपटी प्राण-सत्ता

यह एक मान्यता युगों-युगों से चली आ रही है कि महामानवों, देव पुरुषों के सम्पर्क में आने वाली हर वस्तु उनकी दैवी शक्ति से ओत-प्रोत होने के कारण श्रद्धास्पद पूज्यनीय हो जाती है । कथा-पुराणों में ऐसे कई आख्यान आते हैं, जिनमें देवमानवों के अनुयायी उनके स्पर्श किए हुए पदार्थों को उनकी शक्ति सामर्थ्य से ओत-प्रोत मानकर उसे ही प्रतीक मान पूजा करते रहे हैं । भरत जब राम द्वारा वन से लौटा दिए गए तो अपने साथ भगवान की खड़ाऊ लेते आये, जो उन्हें आत्मिक सम्बल, मार्गदर्शन देते रहे । इन सबके पीछे स्पर्शजन्य सामर्थ्य की महत्ता छिपी पड़ी है, साथ ही श्रद्धा की अपार शक्ति भी उसमें जुड़ती है ।

पारस पत्थर अपने समीपवर्ती लोहे के कणों को स्वर्ण बना देता है । चन्दन का वृक्ष आस-पास के वातावरण को भी सुवासित कर देता है । इसी तरह महामानवों की प्राण विद्युत न केवल उनके अंग-प्रत्यंग से बल्कि हाव-भाव, प्रत्येक क्रिया-कलाप एवं वेधक दृष्टि के माध्यम से निरन्तर उत्सर्जित होती रहती है ।

ईसामसीह के कफन के साथ भी कुछ इस प्रकार के तथ्य जुड़े हैं । काफी समय तक इन्हें किंवदन्ती माना जाता रहा । सन् १८९८ में सेकोन्दोपिया नामक छविकार ने उक्त वस्त्र में ईसा मसीह का चित्र नेगेटिव के रूप में अंकित कर ईसाइयों के इस श्रद्धा आधार को बहुत बड़ा सम्बल प्रदान किया । यह छायांकन कैसे उभरा यह वैज्ञानिकों के लिए एक अचम्भा ही माना हुआ है ।

यह वस्त्र १४ फीट लम्बा एवं ३$\frac{१}{२}$ फीट चौड़ा है । हाथ से बुने गए हल्के पीले रंग का यह कफन अब किसी को देखने के लिए उपलब्ध नहीं है । केवल इसकी नकल ही दर्शनार्थ उपलब्ध है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह पवित्र धरोहर उत्तरी इटली के ट्यूरियन कस्बे में स्थित चर्च में चाँदी की एक छोटी पेटी में विशेष प्रार्थना-ग्रह की वेदी पर १४वीं शताब्दी से रखा है । पहली शताब्दी में येरुशलम से भागने वाले ईसाई अपने साथ इसे लाये थे । पिछले ३०० वर्षों में १२ बार ही जनता को इसके दर्शन कराए गए हैं । इसे पाँचवा 'इन्जील' मानकर इसकी पूरा ईसाई समाज श्रद्धा से पूजा करता है ।

देवदूत ईसा के महान उत्सर्ग की प्रत्यक्ष गवाही देने वाले इस वस्त्र पर स्वर्गीय आत्मा की छवि किस प्रकार उभरी, इसके सम्बन्ध में बहुतों ने खोज की है । उन्हीं खोजियों में से एक ब्रिटिश लेखक ज्याफ्रेएश कहते हैं कि, मृतक के शरीर से फूटने वाला विकिरण ही वस्त्र पर आकृति के उभर आने का कारण है, क्योंकि मृतात्मा देवदूत स्तर की थी । विकिरण का प्रभाव इतना अधिक था कि उसकी आकृति उनके परिधान पर स्वयमेव उतर आयी । अमेरिकी अन्तरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. जैन जेक्सन ने कम्प्यूटर एनालिसिस के बाद इस चित्र को त्रिआयामीय बताया है । यह अपने आप में एक ऐसा आश्चर्य है, जिसकी वैज्ञानिकता खोजने पर भी मिल नहीं सकती ।

हजरत साहब का बाल जो जम्बू की हजरत बल दरगाह में रखा है एवं बुद्ध का दाँत जो रंगून के एक पूजागृह में रखा गया है, अपने-अपने मतावलम्बियों के लिए वे प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं । मुस्लिम मूर्ति पूजा को नहीं मानते पर सहज उपजने वाली श्रद्धा किसी भी मतभेद से परे है । यह श्रद्धा उस महामानव के प्रति प्रकट होती है, जो अपने समय में अपने सुकर्मों से असंख्यों को प्रेरणा दे जाते हैं ।

उत्कृष्ट व्यक्तित्व असंख्यों को अपने तेजोवलय से प्रभावित करते हैं । उन्हीं प्रभावितों में उनके सम्पर्क में आने वाले पदार्थों को भी यह सौभाग्य मिलता है कि उन ज्योति पुंजों की ऊर्जा अपने में संग्रह करें और चिरकाल तक अनेकों की श्रद्धा एवं दिव्य क्षमता जगाने में सहायता करते रहें । प्रायः दो हजार वर्ष पुराने ईसा का कफन इस तथ्य को प्रत्यक्ष साक्षी देता है । इस प्रभाव शक्ति का एक अतिरिक्त प्रमाण है, कफन पर ईसा की वैसी छवि का उभरना, जिसमें किसी भी रासायनिक पदार्थ का उपयोग नहीं हुआ है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण-चेतना का मर्म

मनुष्य की प्राण ऊर्जा और उसका अभिवर्धन

मनुष्य एक हँसने, बोलने, सोचने और निर्णय निर्धारण करने वाला कल-कारखाना है । किसी भी कारखाने को चलाने के लिए 'शक्ति' की जरूरत पड़ती है । इसे तेल, भाप, कोयला, बिजली आदि के सहारे ताप रूप में प्राप्त किया जाता है । प्राणियों द्वारा धकेले जाने पर भी यह शक्ति प्राप्त होती है । शरीर का कारखाना भी शक्ति चाहता है । इसके लिए उसे ईश्वर का दिया हुआ स्वसंचालित यन्त्र प्राप्त है । अन्न, जल और वायु के ईंधन से यह भट्टी गर्म भर होती है, इससे आगे का सब कुछ अपने आप चलता है । पेट में पाचक रासायनिक द्रव अन्न से नहीं अपने परम्परागत शक्ति स्रोतों से उत्पन्न होते हैं । आहार तो उन स्रोतों को धकेलने वाली गर्मी भर उत्पन्न करते हैं ।

यों चेतना का केन्द्र मस्तिष्क माना गया है और उसका पोषक रक्त संस्थान हृदय कहा गया है । हृदय को सामग्री पेट से मिलती है । पेट को भरना मुँह का काम है । मुँह के लिए साधन हाथ जुटाते हैं । यह चक्र तो चलता ही है, पर असल में पूरा शरीर ही शक्ति भण्डार है । यह शक्ति असामान्य विद्युत स्तर की है । असामान्य इस अर्थ में है कि वह भौतिक बिजली की तरह अन्धी दौड़ नहीं लगाती वरन् सामने वाले को देखकर ही अपनी गतिविधियाँ फैलाती, सिकोड़ती है ।

मानवी विद्युत हर व्यक्ति की अपनी विशिष्ट सम्पत्ति है । वह इसी के आधार पर ऐसे अनुदान देता है, ऐसे आदान-प्रदान करता है जो पैसे या किसी वस्तु के आधार पर उपलब्ध नहीं हो सकते । एक व्यक्ति से दूसरा प्रभाव ग्रहण करता है, यह तथ्य सर्वविदित है । संगति की महिमा गायी गई है । कुसंग के दुष्परिणाम और सत्संग के सत्परिणामों को सिद्ध करने वाले उदाहरण हर जगह पाये जाते हैं । यह प्रभाव मात्र वार्त्तालाप, व्यवहार, लोभ या दबाव से उतना नहीं पड़ता जितना मनुष्य के शरीर में रहने वाली बिजली के आदान-प्रदान से सम्भव होता है ।

ताप और बिजली का गुण है कि जहाँ अनुकूलता होती है वह वहाँ अपना विस्तार करती और प्रभाव क्षेत्र बढ़ाती है । प्राणवान शक्तिशाली व्यक्तित्व अपने से दुर्बलों को प्रभावित करते हैं । यों दुर्बल भी अपनी न्यूनता के कारण समर्थों में सहज करुणा उत्पन्न करते हैं और उन्हें कुछ देने के लिए विवश करते हैं । बच्चे को देखकर माता की छाती से दूध उतरने लगता है, मन हुलसने लगता है । इस प्रकार शक्तिवान अपने से दुर्बलों को अनुदान देकर घाटे में नहीं रहते । उदारता जन्य आत्म-सन्तोष से उनकी क्षतिपूर्ति भी हो जाती है । दूध पिलाने में माता को प्रत्यक्षतया घाटा ही है, पर वात्सल्यजन्य तृप्ति से उसकी भी भावनात्मक पूर्ति हो जाती है ।

मनुष्य को एक अच्छा खासा चुम्बक कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी । चुम्बक का कार्य है आकर्षण । वह अपनी कला द्वारा अन्य लोहे के पदार्थों के आकर्षित करता है । उनको अपना जैसा बनाने का प्रयत्न करता है । एक और विशेषता चुम्बक की है । यह यदि टुकड़ों-टुकड़ों में भी विभक्त कर दिया जाय तो हर टुकड़े की वही विशेषता बनी रहेगी । एक टुकड़े को एक धागे में बाँधकर यदि अधर में लटकाया जाय तो इसके दोनों सिरे क्रमशः उत्तर-दक्षिण की तरफ ही रहेंगे । चाहे जैसी परिस्थिति आ जाय अपनी दिशा नहीं बदलेंगे । स्थिरता का सहज गुण चुम्बक में है । इसीलिए जलयानों या वायुयानों में 'कम्पास' के सहारे ही दिशा-ज्ञान का बोध होता है ।

यह सारे लक्षण मनुष्य में भी पाये जाते हैं । यदि मन की प्रवृत्तियाँ सही ढंग से कार्य कर रही हों तो एक महान व्यक्ति बना जा सकता है । ठीक चुम्बक की तरह सारी विशेषताएँ विकसित की जा सकती हैं । महान व्यक्तित्वों में इतना आकर्षण होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि वे जिस स्थान पर खड़े हो जाते हैं लोग अपने आप उनके चारों ओर एकत्रित हो जाते हैं ।

चुम्बक की दूसरी विशेषता "एक रसता" की है । वह चाहे कितना विखण्डित क्यों न हो जाय उसकी आकर्षण शक्ति कम नहीं होती । महान मनुष्य ऐसे ही होते हैं । वे बाह्य रूप से चाहे जितने छोटे हो जायें, परन्तु उनकी महानता में कोई अन्तर नहीं आता है । उनका व्यक्तित्व खण्डित नहीं होता है । वे अनेकों लोगों से एक साथ सम्बन्ध रखते हैं, परन्तु उनके व्यक्तित्व में अपने-पराए का, पक्षपात का कोई अन्तर नहीं आता । एक सूर्य अनेक घड़ों के जल में एक रूप ही दिखाई देता है ।

चुम्बक की तीसरी विशेषता है दिशा के प्रति स्थिरता । इसके द्वारा सदैव ही उत्तर एवं दक्षिण दिशा का ज्ञान होता रहेगा, आप चाहे जहाँ चले जायें—आकाश में या समुद्र में कम्पास आपको दिशा ज्ञान अवश्य ही करायेगा । वही स्थिति विकसित व्यक्ति की भी होती है । यदि सद्प्रवृत्तियाँ जगा ली गयी हैं, भावना एवं व्यक्तित्व का परिष्कार कर लिया गया है तथा उद्देश्य को गम्भीरता से ग्रहण करने की शक्ति पैदा कर ली गई है तो यह निश्चित है कि मनुष्य अपनी दिशा से कभी हिल नहीं सकता है । दूसरों को सही प्रेरणा प्रदान करने का काम भी तो चुम्बक के गुण की तरह ही है ।

बड़ी से बड़ी विशेषताओं एवं महान गुणों से युक्त मनुष्य भी पतित क्रियाओं एवं विचारणाओं के अपनाने से गर्त में गिर जाता है और अपनी समस्त विशेषताएँ धीरे-धीरे खो देता है । ठीक इसी तरह जैसे चुम्बक को बार-बार पटकने तथा ऊपर-नीचे करने से उसकी आकर्षण शक्ति लुप्त हो जाती है, महान पुरुषों की भी पुण्य की पूँजी एवं प्रभाव उनके पतन के गर्त में गिरने से नष्ट हो जाते हैं ।

धरती की चुम्बकीय शक्ति की तरह मनुष्य में भी एक सहज आकर्षण शक्ति विद्यमान है, उसका प्रयोग करके समर्थता एवं साधन सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है । मनुष्य यदि अपने चुम्बकत्व का प्रयोग करे तो उसे भी वैसे ही पुराण-वर्जित चमत्कार प्रस्तुत करने का अधिकार मिल सकता है । यदि तप, साधना के द्वारा आत्मबल को बढ़ा लिया जाय तो हम आज से हजारों वर्ष पहले घटित घटनाओं को भी यथार्थ रूप में आकाश मण्डल में सुन या देख सकते हैं । विज्ञान से तो अब यह सिद्ध ही हो चुका है कि जो भी ध्वनियाँ निःसृत होती हैं वे कभी भी नष्ट नहीं होती ।

अपनी इस पृथ्वी के चतुर्दिक एक चुम्बक क्षेत्र व्याप्त है, उसी के सहारे वह समस्त ब्रह्माण्ड में फैली हुई तमाम आवश्यक विशेषताओं को इकट्ठी करती रहती है, यदि इस स्रोत से उसे यह अनुदान न प्राप्त होता तो उसका अक्षय भण्डार एक दिन अवश्य समाप्त हो जाता और साधन सम्पन्न कही जाने वाली धरती विपन्न एवं दीन-हीन की स्थिति में पहुँच जाती ।

मनुष्य की अतीन्द्रिय क्षमता में वह चुम्बकत्व विद्यमान है, जिसके द्वारा वह असम्भाव्य कार्यों को भी कर सकता है । आँखों से न देख पाने वाले स्थानों की वर्तमान में घटित होने वाली घटनाओं का सचित्र वर्णन कर सकता है । एक स्थान से दूसरे स्थान को परस्पर सम्वाद आदान-प्रदान कर सकता है । इसके अतिरिक्त यदि हमने तप, साधना द्वारा प्रेरक क्षमता अर्जित कर ली है तो किसी दूसरे को प्रेरित कर लाभ पहुँचाया जा सकता है ।

जड़ अणुओं की गति एक प्रकार की विद्युत उत्पन्न करती है, उसमें जब चेतन सत्ता का समावेश होता है तो जीवन का, जीवधारियों का आविर्भाव होता है । ध्रुवों के क्षेत्र में चुम्बकीय तूफान उठते रहते हैं, जिनका प्रकाश 'अरोरा बोरीलिस', तेजोवलय के रूप में छाया रहता है । इसे पृथ्वी के साथ अन्य ग्रहों की सूक्ष्म हलचलों का मिलन स्पन्दन कह सकते हैं । यही है वह पृथ्वी का ग्रहों के साथ प्रणय-परिणय जिसके फलस्वरूप कुन्ती के पाँच पुत्रों की तरह पाँच की विविध-विधि हलचलें जन्म लेती हैं और उनके क्रिया-कलाप एक से एक बढ़कर अद्भुत और शक्तिशाली बने हुए सामने आते रहते हैं । समुद्र का खारा जल जब धातु विनिर्मित नौकाओं तथा जलयानों से टकराता है तो उससे विद्युत तरंगें उत्पन्न होती हैं । नौका विज्ञानी इस अनायास होते रहने वाले विद्युत उत्पादन से परिचित रहते हैं और उसकी हानिकारक लाभदायक प्रतिक्रिया से सतर्क रहते हैं ।

ठीक इसी प्रकार शरीरगत जीवाणु भी ईथर एवं वायुमण्डल में भरे विद्युत प्रवाह से टकराते रहते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं । जीव कोशों में उन धातुओं तथा रसायनों की समुचित मात्रा रहती है जो आघातों से उत्तेजित होकर विद्युत प्रवाह उत्पन्न कर सकें । यही कारण है कि हर मनुष्य में गर्मी ही नहीं रहती वरन् विद्युत प्रवाह की अनेक स्तरों की धाराएँ बहती रहती हैं । इन्हें यन्त्रों द्वारा भी भली प्रकार परखा, जाना जा सकता है ।

मानवी चुम्बक अन्तरिक्ष से बरसने वाले अनेक भले-बुरे अनुदानों को अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप स्वीकार-अस्वीकार करता है । वह जैसा कुछ स्वयं है उसी का चुम्बकत्व उसे इस विश्व ब्रह्माण्ड में अपनी जैसी सूक्ष्म धारा प्रवाह से अनायास ही सम्पन्न सज्जित करता रहता है ।

डॉ. एच. एस. वर ने अपने साथियों सहित प्राणियों की जिस जैविक विद्युत के शास्त्र की संरचना की है, उसमें प्राणिज विद्युत का आधार एवं क्रिया-कलाप भौतिक बिजली से भिन्न है । वे प्राणिज विद्युत में इच्छा और बुद्धि का सम्मिश्रण भी मानते हैं भले ही वह कितना ही झीना क्यों न हो । इसी प्रवाह के कारण प्राणिज विद्युत अपने-अपने क्षेत्र में विशेष परिस्थितियों एवं साधनों की संरचना करती है । प्राण चुम्बकत्व पदार्थ में से अपने उपयोगी भाग को खींचता है, उसे अपने ढाँचे में ढालता है और इस योग्य बनाता है कि चेतना के स्वर में अपना ताल बजा सके । किस प्राणी के डिम्ब से किस आकृति-प्रकृति का जीव उत्पन्न हो इसका निर्धारण मात्र रासायनिक संरचना के आधार पर नहीं हो जाता वरन् यह निर्धारण रज और शुक्र कीटों के अन्दर भरी हुई चेतना के द्वारा होता है । इसी चुम्बकत्व से भ्रूण में विशिष्ट स्तर के प्राणियों की आकृति एवं प्रकृति ढलना शुरू हो जाती है । यदि ऐसा न होता तो संसार में पाये जाने वाले समस्त प्राणी प्रायः एक ही जैसे आकृति-प्रकृति के उत्पन्न होते क्योंकि अणुओं का स्तर प्रायः एक ही प्रकार का है । उनमें जो रासायनिक अन्तर है उसके आधार पर कोटि-कोटि वर्ग के प्राणी उत्पन्न होने और उनकी वंश परम्परा चलते रहने की गुंजाइश नहीं है । अधिक से अधिक इतना हो सकता था कि कुछ थोड़ी सी—कुछ थोड़े से अन्तर की जीव जातियाँ इस संसार में दिखाई पड़तीं । वंश परम्परा और जीव-विज्ञान का जो स्वरूप सामने है उसमें प्राणि चुम्बकत्व की अपनी विशिष्ट भूमिका है ।

योग-साधना का उद्देश्य इस चेतना विद्युत शक्ति का अभिवर्धन करना भी है । इसे मनोबल, प्राणबल और आत्मबल भी कहते हैं । संकल्प शक्ति और इच्छा शक्ति के रूप में इसी के चमत्कार देखे जाते हैं ।

आध्यात्म शास्त्र में प्राण-विद्या का एक स्वतन्त्र प्रकरण एवं विधान है इसके आधार पर साधनारत होकर मनुष्य इस प्राण विद्युत की इतनी अधिक मात्रा अपने में संग्रह कर सकता है कि उस आधार पर अपना ही नहीं अन्य अनेकों का भी उपकार, उद्धार कर सके ।

योग-साधना इस मानवी विद्युत भण्डार को असाधारण रूप से उत्तेजित करती और उभारती है । यदि सही ढंग से साधना की जाय तो मनुष्य प्राणवान और ओजस्वी बनता है । उपार्जित प्राण विद्युत की ऊर्जा के सहारे स्वयं कितनी ही अद्‌भुत सफलताएँ प्राप्त करता है और दूसरों को सहारा देकर ऊँचा उठाता है ।

आत्म सत्ता में प्राण सत्ता की अवधारणा

प्राण शब्द की व्युत्पत्ति 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'अन्' धातु से होती है, जिसका अर्थ जीवनी शक्ति के रूप में किया जाता है । आध्यात्म शास्त्र में प्राण तत्व की गरिमा का भाव भरा उल्लेख है और उसे जीवन का सारतत्व प्राण कहते हैं । यह प्राण प्रगति का आधार है । यह प्राण तत्व अपने भीतर प्रचुर परिमाण में भरा पड़ा है और यदि प्रयास किए जायें तो उस शक्ति को विश्व भण्डार से और भी अधिक मात्रा में आकर्षित किया जा सकता है । विश्व के अन्तराल में काम करने वाली समग्र सामर्थ्य के रूप में व्याख्यायित प्राण शक्ति जड़, चेतन दोनों को प्रभावित करती है उपासना उसके एक पक्ष की ही की जाती है, जो मनुष्य को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करे । अन्यथा चेतना की सामर्थ्य तो उभयपक्षीय है, वह दुष्टता के क्षेत्र में दुःसाहस बन कर भी काम करती है और उत्कृष्टता के क्षेत्र में मानवी चेतना का स्तर ऊँचा उठाने वाले सत्साहस के रूप में भी सक्रिय रहती है । प्राण के जिस रूप की उपासना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की जाती है वह दुष्टता का निषिद्ध पक्ष नहीं उत्कृष्टता का वरणीय स्वरूप ही है । इसी विशेषता को ब्राह्मी, शक्ति-ब्रह्म प्रेरणा, साक्षात् ब्रह्म आदि नामों में पुकारा गया है । इस प्राण शक्ति की व्याख्या करते हुए शास्त्रों में कहा गया है—

प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह कोषीतकिस्तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो दूतं वाक्परिवेष्ट्री चक्षुर्गात्र श्रोत्रं संश्रावयितृ यो ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो दूतं वेद दूतवान्भवति यश्चक्षु गोप्तृ गोप्तृमान्भवति यः श्रोतं संश्रावयितृ संश्रावयितृ मान्भवति यो वाचं परिवेष्ट्री परिवेष्ट्रामान्भवति ।

—कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद् २।१

यह प्राण ही ब्रह्म है । यह सम्राट है, वाणी उसकी रानी है, कान उसके द्वारपाल हैं, नेत्र अंग रक्षक, मन दूत, इन्द्रियाँ दासी, देवताओं द्वारा यह उपहार उस प्राण ब्रह्म को भेंट किए गए हैं ।

प्राणो भवेत् परंब्रह्म जगत्कारणमव्ययम् ।
प्राणो भवेत् यथामंत्र ज्ञानकोश गतोऽपिवा ॥

—ब्रह्मोपनिषद्

प्राण ही जगत का कारण परमब्रह्म है । मन्त्र ज्ञान तथा पंच कोश प्राण पर आधारित हैं ।

अधिकांश, उपनिषद्कारों ने प्राण को आत्मसत्ता की त्रिपदा शक्ति माना है और उससे अविच्छिन्न कहा है । आत्मा को ब्रह्म भी कहा है । दोनों की एकता बोधक कितने ही प्रतिपादन मिलते हैं । इस दृष्टि से प्राण को ब्राह्म शक्ति भी कहा गया है । जिनमें यह शक्ति जागृत होती है, उसी व्यक्ति को जागा हुआ बताया गया है । अन्यथा निष्प्राण, जीवट से रहित और दुर्बल व्यक्तियों को सोया हुआ ही बताया गया है । शास्त्रों में कहा है—

तदाहुः कोऽस्यप्नुमर्हति, यद्वाव प्राणो
जागार तदेव जागरितम् इति ।

—ताण्ड्य १०।४।४

कौन सोता है ? कौन जागता है ? जिसका प्राण जागता है, वस्तुतः वही जागता है ।

उस रहस्य-मर्म को जानने वाले व्यक्तियों को ही बुद्धिमान कहा गया है—

य एवं विद्वान् प्राणं वेद रहस्या प्रजा,
हीयतेऽमृतो भवति तयेव श्लोकः ।

—प्रश्नोपनिषद् ३।११

जो बुद्धिमान इस प्राण रहस्य को जान लेता है वह अमर बन जाता है उसकी परम्परा नष्ट नहीं होती ।

प्राणाग्नय एवास्मिन् ब्रह्मपुरे जागृति ।

—प्रश्नोपनिषद्

इस ब्रह्मपुरी में प्राण की अग्नियाँ ही सदा जलती रहती हैं ।

इस प्राण को ही ब्रह्म कहा गया है और इस कारण प्राण को प्रत्यक्ष ब्रह्म भी कहा गया है । अप्रत्यक्ष ब्रह्म की सत्ता किसी प्राणी पर कितनी मात्रा में अवतरित हुई, इसका परिचय उसमें दृष्टिगोचर होने वाले प्राण तत्व को देखकर ही लगाया जा सकता है । गायत्री को प्राण और 'प्राण' को ब्रह्म कहा गया है । इस तरह एक प्रकार से गायत्री साक्षात् ब्रह्म भी कही जा सकती है—

कतम एको देव इति । प्राण इति स ब्रह्म तदित्या वक्षते ।

—वृहदारण्यक

यह एकमात्र देव कौन है ? वह प्राण है । उसे ही ब्रह्म कहा जाता है ।

बप्राणा ब्रह्म इति दृस्याह कौषीतकिः ।

—ब्रह्म संहिता

प्राण ही ब्रह्म है । ऐसा कौषीतिक ऋषि ने कहा है ।

स एव वैश्वानरो विश्व रूपः प्राणोदऽग्नि रुदयते ।

—पिप्पलाद

यह प्राण ही समस्त विश्व में वैश्वानर रूप मे उदय होता है ।

ऋतम्भरा प्रज्ञा को गायत्री का प्राणरूप बताते हुए शास्त्रकार ने कहा है—

प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्या । तं मामायुरमृत भित्युपास्वायुः प्राणः प्राणोवा आयुः । प्राणेन हि एवास्मिन् लोकेऽमृतत्व माप्नोति।

—सांख्यायन, आरण्यक ५।२

मैं ही प्राण रूप प्रज्ञा हूँ मुझे ही आयु और अमृत मान कर उपासना करो । प्राण ही जीवन है । इस लोक में अमृत की प्राप्ति करो ।

यो वै प्राणः सा प्रज्ञा, या वा प्रज्ञा स प्राणः ।

—सांख्यायन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो प्राण है वही प्रज्ञा है । जो प्रज्ञा है वही प्राण है ।

इसी प्राण शक्ति को गायत्री कहते हैं । यों वह क्षमता स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों के कण-कण में संव्याप्त है, पर उसका केन्द्र संस्थान मल मूत्र छिद्रों के मध्य मूलाधार चक्र गहवर में माना गया है । प्राण शक्ति के अभिवर्धन से इसी मूलाधार संस्थान का द्वार खटखटाना पड़ता है । दुर्ग में प्रवेश करने के लिए उसका फाटक खोलना या तोड़ना पड़ता है । मूलाधार चक्र की साधना से यही प्रयोजन पूरा होता है । गायत्री की प्राण शक्ति मूलाधार चक्र से सम्बन्धित होने का उल्लेख गायत्री मंजरी में मिलता है—

यौगिकानां समस्तानां साधनानां तु हे प्रिये ।
गायत्र्येव मतालोके मूलाधारा विदो वरैः ॥

—गायत्री मंजरी

विद्वानों का मत है कि समस्त यौगिक साधनाओं का मूलाधार गायत्री ही है ।

यद्वावं प्राणा जागर तदेवं जागारितम इति ।

—ताण्डय.

प्राण को जागृत करना ही महान जागरण है ।

प्राण का ज्ञान एवं जागरण ही अमृतत्व एवं मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग है । उसी से यह लोक और परलोक सुधरता है । इसी से भौतिक और आत्मिक विभूतियाँ प्राप्त होती हैं क्योंकि इसी शक्ति के बल पर आत्म परिष्कार तथा आत्मिक शक्तियों का विकास होता है ।

तेजोवलय का वैज्ञानिक आधार

मनीषियों का मत है कि मनुष्य के शरीर से सदैव एक प्रकार की प्राण विद्युत निकलती रहती है जिसका उद्भव सूक्ष्म शरीर के निर्माण में भाग लेने वाले न्यूट्रॉन कणों की तीव्रतम गति के कारण होता है । वैज्ञानिक ने इसे बायोइलेक्ट्रिसिटी, बायोप्लाज्मा, कॉस्मिक एनर्जी वाइटल फोर्स, लाइफ-फील्ड आदि अनेकों नामों से सम्बोधित किया है । यह प्राण विद्युत मनुष्य के स्थूल शरीर से कुछ इंचों से लेकर ३ फीट की दूरी तक प्रवाहित होती रहती है । इसी को आभामण्डल कहते हैं । यह प्राण शरीर से विकसित होने वाली वैद्युतीय तरंगों से बनता है । समस्त प्राणियों, वृक्ष-वनस्पतियों का अपना अलग-अलग आभामण्डल होता है । पाया गया है कि मनुष्य का आभामण्डल उसकी भावनाओं, विचारणाओं तथा आवेग-संवेगों के अनुसार बदलता रहता है ।

मनुष्य के अन्तर्जगत में सदैव देवा-सुर संग्राम चलता रहता है । दो प्रकार के स्पन्दन सतत् स्पन्दित होते रहते हैं । मनःसंस्थान और अन्तःकरण में विचारों और भावनाओं की दो धाराएँ साथ-साथ बहती रहती हैं । विचारों की धारा ज्ञान से सम्बन्धित होती है जिनमें बाह्य परिस्थितियाँ और व्यावहारिक जगत भी सम्मिलित है । मनुष्य वातावरण से, समाज से, शिक्षा, स्वाध्याय, सत्संग से अथवा गुरुजनों से जो भी ज्ञान अर्जित करता है उसी के अनुरूप उसके चिन्तन-मनन और सोचने-समझने की एक गोलाकार परिधि-सी बनती जाती है । मन-मस्तिष्क में बहते हुए यह विचार ही एक धारा का रूप ले लेते हैं । अन्तःकरण में प्रवाहित होने वाली क्षुद्र भावनाओं की धारा को कषाय-कल्मषों की धारा भी कहते हैं । काम, क्रोध, मद, मत्सर, मोह, राग, द्वेष आदि विषय वासनाओं, एषणाओं की धारा मनुष्य के सूक्ष्म और कारण जगत में सदैव प्रवाहित होती रहती है । जबकि संत महापुरुषों में उदारता, आत्मीयता, सहृदयता, करुणा, पवित्रता आदि की शुभ कल्याणकारी धाराएँ प्रवाहित होती रहती हैं ।

वैज्ञानिकों के मतानुसार विचारधारा और भावधारा के सतत प्रवाह से स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के निर्माण में भाग लेने वाले तत्वों के सूक्ष्म परमाणुओं, न्यूट्रॉन कणों में स्पन्दन होता रहता है और उसी से प्राण ऊर्जा का निर्माण होता है । प्राणमय शरीर भौतिक परमाणुओं से बने होने के कारण दृश्य होता है और उसका रंग-रूप भी होता है । अतः उससे विनिर्मित आभामण्डल का भी गुण-रूप होता है । उसमें अनेकों वर्ण होते हैं । जैसे—पीला, लाल, नीला, हरा, काला आदि ।

वैज्ञानिकों ने अपने अनुसन्धान में पाया है कि जैसे-जैसे व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार होता जाता है । विचारणा, भावना और गुण, कर्म, स्वभाव में ऊर्ध्वगामी उच्चस्तरीय परिवर्तन करने पर व्यक्ति के मन, मस्तिष्क और अन्तःकरण में जिस गति से उत्कृष्टता का समावेश होता है आभामण्डल भी तदनुरूप शुभ्र और विकसित होता जाता है । भावनाओं के परिष्कार और रंगों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ध्यान विशेषकर प्रातः उदीयमान स्वर्णिम सूर्य के ध्यान द्वारा प्राण ऊर्जा का अभिवर्धन होता है । जैसे-जैसे प्राणमय सूक्ष्म शरीर परिपुष्ट होता और ओजस्वी-तेजस्वी बनता जाता है, शरीर से सतत विकिरित होने वाली प्राण ऊर्जा का प्रभाव क्षेत्र-'लाइफ फील्ड' बढ़ता जाता है । इससे चारों ओर दूर-दूर तक का वातावरण प्रभावित होता है । पशु-पक्षी एवं मानव पवित्र आत्माओं महान सन्त योगियों के इसी 'लाइफ फील्ड' अर्थात् आभामण्डल के प्रभाव से जन्मजात विरोध भाव भूलकर शान्तिपूर्वक उनके सान्निध्य से पास-पास बैठे रहते हैं ।

आभामण्डल को रंगों के आधार पर ६ भागों में विभक्त किया गया है । (१) काला-पराबैंगनी से बैंगनी तक, (२) नीला, (३) हरा, (४) लाल, (५) हल्का नीला और (६) शंख के समान श्वेत । ये सभी रंग भौतिक परमाणुओं के सम्मिश्रण के कारण होते हैं ।

थियोसोफिक सोसाइटी की जन्मदात्री मैडम ब्लैवटस्की के अनुसार मनुष्य का आभामण्डल एक बहुत ही जटिल और उलझा हुआ अभिव्यक्तिकरण है जो उस क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न प्रभावों से निर्मित होता है । आभामण्डल में भाग लेने वाले कुछ तत्व स्थूल शरीर से बाहर निकलते रहते हैं, तो कुछ सूक्ष्म और कारण शरीर से । तीनों शरीर से निकलने वाले प्रकाश पुंज एक दूसरे में मिल जाते हैं और मिश्रित रूप में एक स्थान में छाए रहते हैं । विशेषज्ञों ने आभामण्डल को पाँच भागों में विभक्त किया है—

(१) हेल्थ ऑरा, (२) वाइटल ऑरा, (३) कॉस्मिक ऑरा, (४) ऑरा ऑफ करेक्टर, (५) ऑरा ऑफ द स्प्रिचुअल नेचर ।

हेल्थ ऑरा या स्वास्थ्य आभामण्डल प्रायः रंगहीन होता है और स्थूल शरीर के चारों ओर से सीधी रेखा के रूप में प्रस्फुटित होता रहता है । वाइटल ऑरा को सक्रिय आभा भी कहते हैं । इसे सूक्ष्म शरीर से विकिरित माना गया है । यह इच्छा शक्ति द्वारा नियन्त्रित होता है । सूक्ष्म शरीर से निकलते समय इसका रंग हल्का गुलाबी आभायुक्त होता है और बाहर आते ही नीले रंग में परिवर्तित हो जाता है । कॉस्मिक ऑरा को जीवन दर्पण या अभिव्यक्तिकरण का क्षेत्र भी कहते हैं जिससे मनुष्य की भावनाएँ, इच्छाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं । इस आभामण्डल का रंग नियमित रूप से परिवर्तित होता रहता है । ईर्ष्या, द्वेष, काम क्रोध आदि विषय विकारों की एक लहर से ही इसका रंग बदल जाता है । क्रोध की एक चिन्गारी अन्दर सुलगते ही आभा का रंग गहरा सुर्ख लाल हो जाता है । अचानक भयभीत हो जाने पर आभामण्डल का रंग बदल कर कुछ ही क्षणों में डरावने धूसर रंग का हो जाता है । चरित्र आभा स्थायी लक्षणों वाला होता है और मनुष्य के व्यक्तित्व की वर्तमान एवं भूतकालीन चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाता है । आध्यात्मिक ज्योतिमण्डल—द ऑरा ऑफ द स्प्रिचुअल नेचर—विशेष प्रकार के प्रकाश पुंजों से निर्मित पवित्र आत्माओं, सन्त, ऋषियों में एक दैदीप्यमान आभामण्डल के रूप में पाया जाता है ।

ऑरा का सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन लन्दन के सेण्ट थॉमस अस्पताल के चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. वाल्टर किल्नर ने किया । विशेष प्रकार के रंगीन काँच के माध्यम से जब उन्होंने शरीर एवं उसकी विभिन्न अंग-अवयवों का पर्यवेक्षण किया तो उन्हें उनके चारों ओर एक चमकदार आभा दिखाई पड़ी, जिसे उन्होंने 'ऑरा' की संज्ञा दी और शरीर से निकलने वाली एक प्रकार की बिजली इसे कहा ।

किल्नर के बाद कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के ओस्कार बैग्नॉल ने इसके काय विद्युत होने को निर्विवाद रूप से सिद्ध कर दिया । पहली बार भौतिकी भाषा में इसकी व्याख्या की । उनका कहना था कि आभामण्डल हवा द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता है, किन्तु यदि त्वचा के अति निकट कोई चुम्बक रखा जाय, तो उसकी ओर इसके आकर्षण को स्पष्ट देखा जा सकता है । इतना ही नहीं एक आवेशित कण्डक्टर के चारों ओर वैद्युतिक क्षेत्र की तरह यह उभरे हुए स्थानों, यथा—नाक उँगलियों के पोरों से बाहर की ओर तथा जननांगों के चारों ओर अधिक उभरा दिखाई पड़ता है । बैग्नॉल ने ऑरा को दो स्पष्ट भागों में विभक्त किया है । बाहरी धुन्ध वाला भाग तथा भीतर का तेजपूर्ण चमकदार भाग । बैग्नॉल एवं अन्य अनेकों का कहना है कि इस अन्दरूनी हिस्से में त्वचा से समकोण बनाती हुई अनेक नाड़ियाँ होती हैं । इन नाड़ियों से थोड़े-थोड़े समय पर सर्चलाइट की भाँति तीक्ष्ण प्रकाशयुक्त किरणें निकलती रहती हैं जो शरीर से अनेकों फुट बाहर आकर फिर तिरोहित हो जाती हैं । इन्हें देखने के लिए बैग्नॉल ने एक विशेष प्रकार का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चश्मा तैयार किया, जिसके लेन्स खोखले थे । इनमें विशेष प्रकार का रंग डायसाइनिन भरा था । इस रंग की विशेषता यह है कि इसके माध्यम से देखने से आँख की दृश्य-सीमा बढ़ जाती है, वह अधिक सम्वेदनशील बन जाती है और वह सब कुछ देख सकती है, जो सामान्य स्थिति में उसकी क्षमता से परे हो ।

इसके पश्चात् किर्लियन ने अपने विशेष यन्त्र से ऑरा का अध्ययन किया । उन्होंने इस यन्त्र से जब एक ताजी पत्ती का पर्यवेक्षण किया तो उसके रोम-छिद्रों से तीक्ष्ण प्रकाश पुंज निकलते पाया, किन्तु देखा गया कि जैसे-जैसे कोशिकाएँ मरती गईं, ये पुंज भी बुझते गए । एक ही प्रजाति की पत्तियों में ऑरा-पैटर्न समान पाया गया, मगर रोगी पत्तियों में यह पृथक प्रकार का दिखाई पड़ा । जन्तुओं में यह उसके आन्तरिक मनोभावों की अभिव्यक्ति है और उसमें आये परिवर्तन के आधार पर बदलता रहता है .। इस उपकरण से पहली बार जाना जा सका कि क्यों कोई हाथ-पैर कट जाने के बाद भी उसकी उपस्थिति का अहसास करता रहता है । किर्लियन ने देखा कि स्थूल अंग के पृथक हो जाने के बावजूद भी उसका सूक्ष्म भाग स्थूल शरीर से जुड़ा रहता है । जब एक आधी कटी पत्ती का चित्र इस यन्त्र से लिया गया तो उसमें सम्पूर्ण पत्ती की तस्वीर मौजूद थी । इसे 'फैण्टम इफेक्ट'' नाम दिया गया ।

इन सारे प्रयोग-परीक्षणों से एक बात स्पष्ट हो गई कि सभी जीवधारियों में किसी न किसी प्रकार का ऊर्जा मैटिक्स होता अवश्य है, भले ही उसका रूप-आकार भिन्न-भिन्न हो । यह बात भी सुनिश्चित है कि वह स्थूल शरीर से पूर्णतः स्वतन्त्र है, पर वस्तुतः यह है क्या ? इसके कार्य क्या हैं और भौतिक शरीर में इसकी आवश्यकता क्यों पड़ती है ? इस आशय पर गहन अध्ययन रूस में चल रहा है । किरोव स्टेट यूनिवर्सिटी, अलमा-अता के जैव वैज्ञानिक इस ऊर्जा का अध्ययन इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से कर रहे हैं । उनका कहना है कि यह और कुछ नहीं, आयनीकृत कणों का प्लाज्मा-समूह है । वे यह स्वीकारते हैं कि पदार्थों की प्लाज्मा अवस्था अति उच्च तापक्रम पर प्राप्त होती है और शरीर तापमान पर इस प्रकार की किसी प्रक्रिया का अब तक कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है, किन्तु शरीर शास्त्री यह भी मानते हैं कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ऐसा सम्भव हो सकता है क्योंकि विज्ञान की यह शाखा बिल्कुल नयी है । अभी तक हमने इसके बारे में जो कुछ जाना-समझा है, वह नगण्य-सा है और काफी कुछ जानना अभी शेष है ।

वैसे तो ऑरा हर व्यक्ति में न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता हैं, पर महापुरुषों और पवित्र आत्माओं के शरीर व मस्तक के चारों ओर पाया जाने वाला आभामण्डल अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत व विशेष आभायुक्त होता है । ऐसी स्थिति में इसे ''ऑरिओल-ज्योतिचक्र'' कहते हैं । सिर के चारों ओर छाए रहने वाले प्रकाश पुंज को ''प्रभामण्डल'' या ''हैलो'' कहा गया है .। जब मस्तिष्क का सहस्रार चक्र जागृत हो जाता है तो सहस्र दल कमल से सहस्रों-सहस्र प्रकाश-रश्मियाँ प्रस्फुटित होती हैं और सिर के चारों ओर वृत्ताकार रूप में प्रभामण्डल का निर्माण करती हैं । इसका रंग सुनहला चमकीला होता है । यह वर्ण स्थायी होता है और इसे पवित्र मनुष्यों द्वारा चर्म-चक्षुओं से भी देखा जा सकता है ।

ग्रन्थों में प्रभामण्डल की उत्पत्ति केवल आध्यात्मिक और महान पुरुषों में ही होती बतायी गई है । रामकृष्ण परमहंस और योगी अरविन्द के बारे में कहा जाता है कि जब वे गहन ध्यान की स्थिति में होते थे, तो उनके सिर के चारों और बादलों जैसा एक चमकीला धुन्ध दिखाई पड़ता था । यह घेरा तब तक बना रहता था, जब तक वे ध्यानावस्था में रहते थे । ध्यान भंग होते ही यह तिरोहित हो जाता था । देवी-देवताओं और राजे-महाराजाओं के मुकुट के साथ लगाया जाने वाला क्राउन इसी का प्रतीक है । जब कभी इस प्रचलन का शुभारम्भ हुआ होगा, तब राजाओं के मन में सम्भवतः इसके माध्यम से अपनी गरिमा प्रदर्शित करने की बात आयी होगी, फलतः मुकुटों में इसका प्रतीक-चिन्ह लगाने की, बड़प्पन जताने की परम्परा चल पड़ी हो ।

यह एक सुनिश्चित अकाट्य तथ्य है कि व्यक्ति अपनी अन्तः की शक्तियों को जगाकर अपना आभामण्डल प्रभाव क्षेत्र बढ़ाते रह सकता है । सामान्य से सामान्य मानव से महामानव बनने की विद्या का क्षेत्र हर किसी के लिए खुला पड़ा है । विचारणा-भावनाओं के परिष्कार एवं अन्तः के उदात्तीकरण की प्रक्रिया से प्रसुप्त शक्तियों को जगा लेना सबके लिए सम्भव है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण ऊर्जा के विभिन्न पक्षों का वैज्ञानिक विश्लेषण

मनुष्य के शरीर के सूक्ष्म क्रिया-कलापों में से बहुसंख्य के ऊपर से अब पर्दा हट चुका है एवं प्रत्यक्ष क्रिया-कलापों के मूल में कार्य करने वाले ऊर्जा समुच्चय को अब विज्ञान सम्मत माना जाने लगा है । वैज्ञानिक जहाँ हतप्रभ हैं, वह है मनुष्य की परामनोवैज्ञानिक क्षमता, विचार ऊर्जा की परोक्ष सामर्थ्य एवं ऐसी असम्भव प्रतीत होने वाली क्रियाएँ जिनका प्रत्यक्षतः कोई वैज्ञानिक आधार नहीं दिखाई देता । चूँकि इनका अस्तित्व है, उन्हें नकारा नहीं जा सकता अतः उन्हें भी एक विधा के अन्तर्गत सम्मिलित कर रहस्यों की जाँच-पड़ताल जारी है । वैज्ञानिक प्रतिक्रिया को नहीं, प्रक्रिया को देखना चाहते हैं एवं यह जानकर सबको सुखद आश्चर्य होना चाहिए कि आज के बींसवी सदी के आधुनिक युग में गुह्य विद्या पर कार्य करने वाले वैज्ञानिकों की संख्या पदार्थ विज्ञानियों से कुछ कम नहीं, अधिक ही है ।

गुह्य समझी जाने वाली अनेकानेक परामनोवैज्ञानिक क्षमताओं में से एक है—परामनश्चिकित्सा अथवा "सायकिक हीलिंग" । किसी में यह सामर्थ्य हो सकती है एवं बिना किसी औषधि या स्थूल उपादान के रोगी को ठीक किया जा सकता है, इस पर गत तीन दशकों में काफी कुछ विवाद छिड़ चुका है । ऐसे अनेकों व्यक्तियों की सामर्थ्य पर सन्देह व्यक्त करते हुए वैज्ञानिकों ने जाँच-पड़ताल की है एवं वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रहस्यमयी विधा अस्तित्व रखती है एवं अपवाद स्वरूप कुछ व्यक्तियों में ऐसी विलक्षण सामर्थ्य भी पायी जाती है जिससे वे अपनी ऊर्जा का हस्तान्तरण कर रोगियों को ठीक कर देते हैं ।

पूर्वार्त्तदर्शन एवं मनोविज्ञान इसे चिकित्सा का रूप न देकर प्राण ऊर्जा के सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्ति से अन्यों में स्थानान्तरण की एक दैवी प्रक्रिया मानता है जो आध्यात्म साधना के बलबूते कतिपय योगी महामानवों में विकसित होती देखी जाती है । इस मान्यता के अनुसार चिकित्सा तो इस प्राण-प्रवाह की एक प्रतिक्रिया भर है । यह होती वस्तुतः एक उच्चस्तरीय प्रक्रिया है जिसमें दैवी क्षमता सम्पन्न सिद्ध साधक सुपात्रों को अपनी ऊर्जा से लाभान्वित करते हैं । विशुद्धतः आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए उपलब्ध इस ऊर्जा समुच्चय की एक प्रतिक्रिया पदार्थपरक-बहिर्मुखी भी हो सकती है, किन्तु वही सब कुछ नहीं है ।

इस ऊँची स्थिति तक वैज्ञानिक न तो चिन्तन कर पाये हैं, न वे इसे प्रतिपादित कर पाने की स्थिति में हैं किन्तु मनश्चिकित्सा, फेथ हीलिंग, सायकिक हीलिंग जैसे पक्षों पर उन्होंने विचार अवश्य किया है व अनेकों महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष भी निकाले हैं ।

माँट्रियल की मैक्गिल यूनिवर्सिटी के डॉ. बर्नार्ड ग्राड ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि ऐसे व्यक्ति जिनमें यह क्षमता होती है, जब अपने हाथ में रखे फ्लास्क के जल को जौ के बीजों पर डालते हैं तो उनमें तुलनात्मक दृष्टि से काफी वृद्धि होती है, इसी जल को रोगियों को पिलाने पर वे ठीक होते देखे जाते हैं । उनका एक महत्त्वपूर्ण प्रतिपादन यह है कि यही जल किसी अवसाद ग्रस्त मनः स्थिति वाले व्यक्ति द्वारा बीजों या अन्य रोगी पर आरोपित किया जाय तो इसकी प्रतिक्रिया निषेधात्मक होती है । इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जो भी व्यक्ति "सायकिक हीलिंग" की क्षमता रखता है, उसकी मनः स्थिति के अनुरूप ही प्राण ऊर्जा का स्थानान्तरण होता देखा जाता है । यह प्राण ऊर्जा अन्ततः है क्या ? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने इसे "एक्स फैक्टर" नाम दिया है । यह वह ऊर्जा है जो हर व्यक्ति में उसकी मनःशक्ति के अनुरूप न्यूनाधिक मात्रा में होती है । हीलिंग से लेकर प्रायोगिक परीक्षणों में यह एनर्जी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती देखी जा सकती है । बर्नार्ड ग्राड द्वारा "सम बायोलॉजीकल इफेक्टस ऑफ लेयिंग ऑन हैण्डस" नाम से जरनल ए. एस. पी. आर. के. एप्रिल १९६५ में प्रकाशित इस शोध प्रबन्ध में कहा गया है कि 'हीलर्स' के हाथ से निकली तीव्र आभायुक्त जिन प्रकाश तरंगों का डॉ. किर्लियन ने अपनी फोटोग्राफी में सेल्युलाइड पर अंकित किया है, वह यही "एक्स एनर्जी" है ।

शीला ऑस्ट्रेण्डर एवं लिन श्रोडर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "साइकिक डिस्कवरीज बिहाइन्ड दी आयरन करटेन" में लिखते हैं कि प्राण चिकित्सा की प्रक्रिया में चिकित्सक की बायोप्लाज्मिक काया से रोगी की बायोप्लाज्मिक काया में प्राण ऊर्जा स्थानान्तरित होती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । इस प्रक्रिया में जो स्थूल परिवर्तन होते हैं, वे रोग निवारण के रूप देखे जाते हैं । इस सिद्धान्त के आधार पर वैज्ञानिकों ने बायोप्लाज्मिक बॉडी के कार्य करने की प्रणाली के मॉडल के समानान्तर ऋण आयन्स, विद्युतचुम्बकीय दबाव एवं सतत् कम्पायमान चुम्बकीय क्षेत्र को मिलाकर अनेकों असाध्य व्याधियों हेतु चिकित्सा का एक वैकल्पिक रूप निकाला है जो सम्भवतः आने वाले दिनों में कैंसर, तनाव, अवसाद, मेनिया मस्तिष्कीय रक्त स्राव जैसे रोगों में कारगर सिद्ध हो सके ।

अभी तक स्पर्श द्वारा चिकित्सा को झाड़-फूँक के स्तर की ओझागिरी माना जाता रहा है, किन्तु अब इस सम्बन्ध में प्राप्त वैज्ञानिक जानकारियों से ये मान्यताएँ क्रमशः बदली हैं । मेस्सर द्वारा प्रतिपादित निर्देश-चिकित्सा या हैण्ड-पास थेरेपी को लगभग २ शतक तक उपेक्षा का सामना करना पड़ा लेकिन अब चिकित्सा विज्ञान में इस मान्यता को बल मिल रहा है कि क्षमता सम्पन्न व्यक्तियों के माध्यम से सम्प्रेरित ऊर्जा प्रवाह अथवा विचारों की शक्ति से चिन्तन एवं शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से दुर्बल व्यक्तियों पर विधेयात्मक प्रभाव डाला जा सकता है ।

श्रीमती ओल्गा वॉरिल को एक सायकिक हीलर माना जाता है । वे "अमेरिकी होलीस्टीक हेल्थ एसोशिएशन" की सदस्या हैं एवं सभी प्रकार के वैज्ञानिक परीक्षणों के लिए सतत तैयार रहती हैं । उनका दावा है कि वे स्पर्श मात्र से रोगियों को स्वस्थ्य कर सकती हैं । अनेकों रोगी उनके पास आकर स्वस्थ होकर भी गए हैं, पर वैज्ञानिक इससे सन्तुष्ट नहीं हुए । वे इस प्रक्रिया को समझना चाहते थे । अटलाण्टा जॉर्जिया के डॉ. रॉबर्ट. ए. मिलर ने अपने द्वारा बनाये हुए क्लाउड चेम्बर में श्रीमती वॉरिल के हाथ से निकलने वाले ऊर्जा प्रवाह का परीक्षण करना चाहा । इस चेम्बर में उच्चस्तरीय ऊर्जा युक्त न्यूक्लीयर कणों को देखा व उन्हें फोटोग्राफ किया जा सकता है । उन्होंने एटॉमिक लेबोरेट्रीज की मदद से एक चेम्बर बनाया जो ७ इंच व्यास के एक शीशे के सिलेण्डर का बना था । इसकी लम्बाई ५ इंच थी, वह एल्युमीनियम की एक चादर पर फिट किया गया था । इसके अन्दर मिथाइल एल्कोहल की १/४ इंच की तह जमाकर पूरी इकाई को सूखी बर्फ पर रख दिया गया । ऊपर से झाँककर देखने के लिए एक खिड़की थी । एल्कोहल के वाष्पीभूत होने से आयन मिश्रित धुँए से यह चेम्बर भर गया । इस पूरी प्रक्रिया से यह सुनिश्चित हो गया कि इससे होकर गुजरने वाले ऊर्जा विकिरण या आवेश युक्त कण को क्लाउड्स के अन्दर देखा जा सकता है । श्रीमती वॉरिल को क्लाउड चेम्बर के एक ओर बैठा दिया गया और रोगी को दूसरी ओर । बिना इस चेम्बर को स्पर्श किए उन्होंने हाथ किनारे रखकर ध्यान एकाग्र किया मानो वे रोगी पर ऊर्जा प्रवाह फेंक रही हों । उनके हाथों के समानान्तर एक तरंग चित्र उस चेम्बर में बनता देखा गया । उन्होंने अपने हाथों को जब ९० डिग्री अंश पर मोड़ा तो तरंगें भी उसी दिशा में मुड़ गईं । इन्गो स्वान, एम. एच. टेस्टर, रालिंग थण्डर, हैनरी मॉडेल (सभी अमेरिका के), विक्टर क्रिवोरोटोव (रशिया), हैरी एडवर्ड्स (इंग्लैण्ड) एवं जोसेफ पेड्रो डि फ्रेटास उर्फ एरिमो (ब्राजील) ऐसे सायकिक हीलर हैं जिनकी पाश्चात्य जगत में काफी चर्चा है । एरिगो के ऊपर तो अनेकों शोधकर्त्ता काफी वर्ष खपा चुके किन्तु उनकी दैवी सामर्थ्य का कारण उनकी मृत्यु तक न जान पाये । फिलीपीन्स की फेलीसा मकानास एवं जौसेफीना सीसन तथा टोनी एणोआ, जोस मर्केडो, रोमी बुगेरीन एवं मार्सेलोजीनर की साइकिक हीलर्स की टीम भी वैज्ञानिक जगत में काफी तहलका मचा चुकी है ।

उस सूक्ष्म ऊर्जा प्रवाह को, जो चिकित्सा प्रयोजन हेतु सायकिक हीलर्स द्वारा विकिरण के रूप में छोड़ा जाता है, क्या भौतिक शक्ति माना जाय, अथवा पूर्वार्त्त गुह्यविज्ञान के अनुसार एक पराभौतिक प्रभामण्डल से निस्सृत प्रवाह माना जाय, इस पर अच्छा खासा विवाद है इन दिनों यू. सी. एल. ए. के डॉ. थेल्मामॉस एवं स्टेन फोर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. टिलर इसी विषय पर शोधरत हैं । अभी तक प्राप्त निष्कर्ष उन्हें परामनोविज्ञान की गुत्थियों में उलझाये हुए हैं । विल्मिंग्टन डेलावेयर की डॉ. एडवर्ड ब्रेम ने "हीलर्स" की ऊँगलियों से निःस्सृत विद्युत से गुजरे जल का विश्लेषण कर यह पाया है कि सामान्य जल में सौ प्रतिशत हाइड्रोजन अणु संयुक्त होते हैं, जबकि "संस्कारित जल" में ९७.०४ प्रतिशत हाइड्रोजन बाइब्डिंग थी । इसका अर्थ यह हुआ कि निःस्सृत विद्युत निश्चित ही जल की आण्विक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संरचना को तोड़कर उसे सूक्ष्मीकृत बना देती है । ऊर्जा इस जल से गुजरी है, इसका प्रमाण बदले हुए 'सरफेस टेन्सन' पृष्ठीय तनाव (अर्थात धरातल पर दबाव) से भी मिलता है । यह एक स्मरणीय तथ्य है कि जब भी यह दबाव कम होता है जल की रोग निवारक-प्रतिरोधी-भेदक क्षमता बढ़ जाती है । डॉ. मिलर जिनका वर्णन क्लाउड चेम्बर के साथ किया गया था, ने फिशर मॉडल टेन्शियोमीटर का प्रयोग इस प्रयोजन हेतु किया था, जिससे किसी प्रकार की शंका की गुजांइश नहीं रह जाती ।

साइन्स डाइजेस्ट (मई १९८२) में प्रकाशित एक शोध प्रबन्ध में एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है जिससे इस साइकिक ऊर्जा पर प्रकाश पड़ता है । मेनिन्जर फाउण्डेशन टोपे का कन्सास के जैव मनोविज्ञानी डॉ. एल्मर ग्रीन एवं पेन एण्ड हेल्थ रिहेबिलीटेशन सेण्टर विस्कान्सिन के डॉ. सी. नारमन ने परामनश्चिकित्सकों के मानवी फिजियालॉजी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन कर कुछ निष्कर्ष निकाले हैं । लम्बी व्याधि से पीड़ित रोगी जिनके विभिन्न संस्थान रोग ग्रस्त थे, इन प्राण चिकित्सकों के सम्पर्क में लाये गए । उनके हाथ रखने एवं ध्यानस्थ होने पर रोगियों की हृदय एवं श्वसन दर, मस्तिष्क की विद्युत तरंगें, तापक्रम, त्वचा प्रतिशोध एवं रोग निरोधी कोशाणुओं में विलक्षण परिवर्तन देखा गया । रोगियों से उनके अनुभवों के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि उन्हें लगा—मानो दिव्य ऊर्जा प्रवाह उनके अन्दर प्रवेश कर गया हो । किसी-किसी को बिजली के तेज झटके से लगे । इस प्रयोग के बाद ८० प्रतिशत रोगियों के दर्द व अन्य लक्षणों में कमी देखी गई । कई पूर्णतः रोग मुक्त हो गए ।

वस्तुतः यह क्षमता हर मनुष्य में विद्यमान है । दैनन्दिन जीवन में हम देखते हैं कि जिस चिकित्सक पर अमुक रोगी का विश्वास होता है वह उसकी दी हुई किसी भी औषधि से आरोग्य लाभ प्राप्त कर लेता है जबकि उसी चिकित्सक पर अन्य रोगी का विश्वास न होने से वही रोग व लक्षण होते हुए भी चिकित्सा कारगर नहीं होती । प्राण विद्युत, संकल्प, बल, विश्वास की शक्ति परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्धित है । चाहे उसका प्रयोग रोग निवारण हेतु किया जाय अथवा आत्मबल बढ़ाने हेतु हर किसी के लिए उसकी प्रचण्ड मात्रा अपने अन्दर ही विद्यमान है । यह बात अलग है कि अपवाद रूप में कुछ में वह अधिक मात्रा में होती व अपने परिणाम प्रत्यक्षतः दिखाती है । महामानवों में यही ऊर्जा भाण्डागार विपुल मात्रा में होता है । स्पर्श, अभिसिंचित जल एवं दृष्टिपात द्वारा भी वे मानव समुदाय में इसे विपरीत करते देखे जाते हैं । सायकिक हीलिंग से लेकर इस ऊर्जा वितरण तक हरेक के मूल में एक ही शक्ति काम करती है । वैज्ञानिक उसे कुछ भी रूप दे दें, उसका अस्तित्व तो नकारा नहीं जा सकता ।

उच्चस्तरीय रहस्यमय प्राण-तत्व

प्राणवायु और प्राण-तत्व का अन्तर हमें भली-भाँति समझ लेना चाहिए । प्राणवायु हवा में मिली हुई ऑक्सीजन गैस कहलाती है । यह ज्वलनशील है । शरीर का तापमान इसी के आधार पर स्थिर रहता है । हर मशीन को चलाने के लिए ऊर्जा चाहिए । शरीर यन्त्र के संचालन में यह ऊर्जा ही काम देती है । यह मुँह और नाक के माध्यम से छोड़ी या ग्रहण की जा सकती है ।

प्राण-तत्व सूक्ष्म चेतना है । उसमें क्रिया, व्यवस्था, विचारणा एवं भावना का समावेश है । प्राणी इसी के रहने से जीवित रहते हैं । प्राण निकल जायें तो मृत्यु निश्चित है, फिर ऑक्सीजन मिश्रित वायु फेफड़ों में पम्प की जाती रहे तो भी जीवन लौटना सम्भव नहीं । ऑक्सीजन पदार्थ है जबकि प्राण पदार्थ के साथ जुड़ी हुई चेतना ।

सर्वविदित है कि चुम्बकत्व अदृश्य क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली क्षमता है, जो सजातीय तत्वों को अपनी ओर खींचती है । शरीरगत प्राण शक्ति चुम्बकत्व के रूप में दूसरे शरीरधारियों को आकर्षित करती है । नर, नारी के बीच ऐसा ही आकर्षण है । सौन्दर्य में भी इसी विशेषता की बढ़ी-चढ़ी मात्रा होती है । सत्संग और कुसंग में यही प्रतिभा दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करती है, प्रभावित और अनुकरण के लिए बाधित भी ।

कई चिकित्सक प्राणबल से आधि-व्याधियों का निवारण कर सकते हैं । मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म के उपचारों में इसी का प्रभाव काम करता है । वही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आकर्षण एक-दूसरे के बीच घनिष्ठता एवं मित्रता करता है । तेजोवलय के रूप में इसे देखा और शरीरगत विद्युतशक्ति मापक यन्त्रों से इसकी क्षमता को तौला भी जा सकता है । इसका प्रयोग शारीरिक बलिष्ठता, सुन्दरता, निरोगता एवं दीर्घ जीवन के रूप में किया जाता है ।

प्राण की दूसरी पर्त वह है जिससे सूक्ष्म शरीर प्रभावित होता है । सूक्ष्म शरीर अर्थात् चिन्तन, विवेचन एवं सूझ-बूझ का संस्थान । इस क्षेत्र में प्राण प्रक्रिया की विशिष्टता में मनुष्य बुद्धिमान, विवेकशील एवं सूझ-बूझ, प्रभाव-प्रतिभा का धनी बनता है । मनीषियों की गणना ऐसे ही प्राणवानों में की जाती है । वे विचारणा का वातावरण बनाते एवं सुधारते हैं । अनन्त आकाश में फैली हुई ज्ञान सम्पदा को इच्छानुसार बटोर बुलाते हैं ।

प्राण की तीसरी पर्त भावना स्तर की है । इसे कारण शरीर में सन्निहित कहते हैं । इसका केन्द्र हृदय है । आध्यात्मिक हृदय दोनों पसलियों के जोड़ पर शारीरिक हृदय से कुछ हट कर है । इसी को हृदय गुफा कहते हैं । जिसमें परब्रह्म का दर्शन दिव्य ज्योति के रूप में होता है ।

इस निखिल अन्तरिक्ष में ग्रह, नक्षत्रों की तरह दिवंगत आत्माएँ भी सूक्ष्म शरीर से प्रेत-पितर के रूप में भ्रमण करतीं तथा समाधि स्थिति में सोई रहती हैं । समुद्र में उठने वाली लहरों की तरह इसी में देवदानव भी रहते हैं । ज्वार अर्थात् देव और भाटा अर्थात् दैत्य । यह मनुष्यों की ओर सम्बन्ध साधने के लिए आकर्षित होते हैं और इन्हें हृदयगत प्राणचेतना के चुम्बकत्व से खींच कर बुलाया जा सकता है । इस तृतीय शरीर अन्तराल का चुम्बकत्व तप, योग की साधना द्वारा अधिक शक्ति सम्पन्न किया जाता है ।

कारण शरीर भावनाओं का केन्द्र है । वासना, तृष्णा और अहंता का खेल तो शरीर और मन ही मिलजुल कर खेलते रहते हैं । पर दिव्य भावना, जिन्हें श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञा, दया, करुणा, उदारता, आत्मीयता, आस्था आदि के रूप में जाना जाता है, हृदय क्षेत्र की कारण शरीर की देन है । इनका गंगावतरण उच्च लोक के दिव्य अन्तःकरण में होता है । संत, सुधारक, शहीद, लोकसेवी, पुण्यात्मा, परमार्थी इसी क्षेत्र में दिव्य सम्पदाएँ भर जाने पर कोई भी बन सकता है अन्यथा व्यवसायिक बुद्धि तो सदा संकीर्ण और स्वार्थपरता से ही प्रभावित होती है और लोभ, मोह और दर्प की अधिकाधिक उपलब्धि के प्रयासों में लगी रहती है ।

स्थूल शरीर का काया को प्रभावित करने वाला और सूक्ष्म शरीर का मन को प्रभावित करने वाला प्राण दिनचर्या में अभ्यास का उपयोग करने से करतलगत होता जाता है । इसके लिए प्राणाकर्षण जैसी सामान्य ध्यान-धारणाएँ काम दे जाती हैं और व्यक्ति आधि-व्याधि से छुटकारा पाने जैसा लाभ उठा सकता है । प्राणायाम की मोटी परिधि यही है । गहरी साँस लेने के साथ संकल्प शक्ति का चुम्बकत्व काम दे जाता है, किन्तु उच्चस्तरीय स्वः लोक की विभूतियों को आकर्षित करने के लिए कुछ बड़े पराक्रम करने पड़ते हैं क्योंकि उसकी उपलब्धियाँ भी मूल्यवान हैं । उत्कृष्ट, आदर्शवादी त्याग-बलिदान, परोपकार, सेवा साधना की भावनाएँ जगाने के लिए दिव्य लोक से खींच बुलाने के लिए शारीरिक और मानसिक संयम साधने पड़ते हैं । सयंमों को ही तप-तितिक्षा कहते हैं । ऊपर से गिरते झरने की धार जहाँ गिरती है वहाँ गड्ढा बन जाता है । बिजली उत्पादन जैसे संयन्त्र भी उसी वेग के साथ जुड़ते हैं संयमी जिन्हें तपस्वी भी कहते हैं अपनी संकल्प शक्ति इतनी प्रचण्ड बना सकते हैं कि देवताओं की सम्पत्ति दिव्य श्रद्धा को हस्तगत करके वे महामानव, ऋषि, देवात्मा एवं अवतार बन सकें ।

इसी क्षेत्र में निवास करने वाली दैत्यसत्ता भी पराक्रमी असुर प्राप्त कर लेते हैं । रावण, कुम्भकरण, हिरण्यकश्यप, वृत्रासुर, महिषासुर, भस्मासुर आदि ने प्रचण्ड भौतिक पराक्रम इसी क्षेत्र की दैत्यधारा से जुड़कर कमाया था ।

मनुष्य के काय कलेवर में जो क्षमताएँ होती हैं वह सर्वविदित हैं । बलिष्ठ, बुद्धिमान, प्रतिभावान, समृद्धिवान, यशस्वी इन्हीं शक्तियों के आधार पर बना जाता है जो शरीर और मन में रहती हैं । उन्हें हस्तगत करने के लिए संकल्पशक्ति से काम चल जाता है । उसे प्राणायाम की साधारण या मध्यवर्ती आकर्षणशक्ति के सहारे उपलब्ध कर सकने भर से बात बन जाती है । मनस्वी अपने बल-बूते पर सांसारिक समृद्धियाँ एवं सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं । संकल्पवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनस्वी बनने के लिए व्यवहारकौशल के अतिरिक्त प्राणायाम स्तर की विशिष्ट साधनाओं के सहारे भी प्रयास करना पड़ता है ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं का बोध तो आज्ञाचक्र भूमध्य भाग में होता है पर इसकी जड़ कारण शरीर की हृदय गुफा में रहती है । इसके लिए प्राणायाम भी उच्चस्तरीय करने पड़ते हैं । उसमें सर्वसुलभ सोऽहम् साधना है । उससे आत्मिक स्तर की विशिष्टताएँ उत्पन्न होती हैं । व्यक्ति भावनाशील एवं उदात्त बनता है ।

यदि अतीन्द्रिय स्तर की प्रचण्ड क्षमताएँ चाहिए तो मूलाधार अवस्थित कुण्डलिनी प्राणाग्नि को प्रज्ज्वलित करना होता है और उसकी ज्वाल-माल मेरुदण्ड से सुषुम्ना मार्ग में मस्तिष्क के मध्यवर्ती ब्रह्मरंध्र तक पहुँचाना होता है । अतीन्द्रिय क्षमताओं में दूरदर्शन, दूरश्रवण, विचार-संचालन, प्राण-प्रहार, परकाया प्रवेश जैसी सिद्धियों की गणना होती है । इन बड़े कार्यों के लिए डाइनामाइट स्तर की प्रचण्ड ऊर्जा चाहिए । उसे कुण्डलिनी जागरण पंचकोष अनावरण-षटचक्र वेधन स्तर की साधनाओं द्वारा करना होता है, किन्तु इस सभी साधनाओं के लिए मूलभूत उपकरण की आवश्यकता होती है वह प्राण शक्ति की प्रचण्डता ही है । कठोर चट्टानें काटने के लिए हीरे की आरी अथवा बर्मा चाहिए । यह कार्य प्राण शक्ति की विशिष्ट क्षमता द्वारा ही सम्पन्न किए जा सकते हैं । ऐसे प्राणायामों को गुप्त रखा जाने और सुपात्रों को बताये जाने की ही परम्परा है । इसी स्तर के लोग ही उन अभ्यासों में सफल भी हो सकते हैं ।

मानवी विद्युत शक्ति की गरिमा और उपयोगिता

मोड़ेना के रेडियो लॉजिकल स्कूल के तीन शोधकर्त्ता यह निष्कर्ष निकालने में सफल हुए कि व्यक्तित्व के विकास, अंगों की सामर्थ्य तथा चिकित्सा उपचार में मानवी चेतना में विद्यमान विद्युत शक्ति का गहरा योगदान रहता है । प्रगति अथवा अवगति के विविध घटना क्रमों में इस मानवी विद्युत शक्ति की घट-बढ़ को ही प्रधान भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है । क्षत-विक्षत अवयवों की पूर्ति में जो आन्तरिक शक्ति काम करती है उसे नियोप्लासिया विद्युत व्यवस्था के रूप में जाना जा सकता है ।

निद्रा के सम्बन्ध में बहुत पहले इतना ही जाना गया था कि मात्र थकान मिटाने की एक सामान्य नित्य प्रक्रिया है । अब पता चला है कि मस्तिष्क का सचेतन भाग अचेतन स्थिति में इसलिए चला जाता है कि अचेतन मस्तिष्क को अन्तरिक्ष में प्रवाहित विद्युत धाराओं में से अपने उपयोग का अंश संग्रह सम्पादित करने का अवसर मिल जाय । 'एरियल' रेडियो तरंगों को पकड़ता है निद्रावस्था में हमारा अचेतन मस्तिष्क उसी स्थिति का बन जाता है और आकाश से इतनी विद्युतीय खुराक प्राप्त कर लेता है जिसमें शारीरिक और मानसिक क्रिया-कलापों का संचालन ठीक प्रकार सम्भव हो सके । निद्रा की पूर्ति न होने पर शारीरिक और मानसिक स्थिति में जो गड़बड़ी उत्पन्न होती है उसे अभीष्ट मात्रा में विद्युतीय खुराक न मिलने की 'विभुक्षा' कहा जा सकता है ।

हिन्दू धर्म के आचार सूत्रों में सिर उत्तर की ओर करके सोने का निर्देश है । हिब्रू धर्म के प्राचीन ग्रन्थ क्षुलचन आरुख में भी ऐसा ही उल्लेख है । जापानी तत्वदर्शी एवं डुचटिल भी यही बात कहते रहे । ऐलोपैथी के जन्मदाता हिप्पोक्रेट्स ने भी ऐसा ही प्रतिपादन किया है । यह दिशा और निद्रा का सम्बन्ध स्थापन सम्भवतः इसी आधार पर है कि पृथ्वी का चुम्बकीय प्रवाह जिधर प्रवाहित होता है उसके साथ हम टकराव उत्पन्न न करें और उस लाभ से वंचित न रहें जो अनुकूलता की स्थिति में रहने से सहज ही उपलब्ध होता रहता है ।

जिस प्रकार शरीर में रक्त शुद्धि, पाचक ऊष्मा, स्नायु परिपुष्टता आदि से सुदृढ़ता एवं निरोगता अक्षुण्ण रहती है, ठीक उसी प्रकार मानवी विद्युत शक्ति की प्रचुरता से मानसिक सन्तुलन स्थिर रहता है । विवेक, तथ्य, चिन्तन, कला-कौशल, शौर्य, साहस जैसे सद्गुणों का बाहुल्य रहता है । ओजस्विता एवं मनस्विता उसी का नाम है । दूसरे शब्दों में इसे प्रचण्ड संकल्प शक्ति भी कह सकते हैं उसी से आन्तरिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उसी के आधार पर उस पुरुषार्थ की उपलब्धि होती है जो कठिन परिस्थितियों को चीरते हुए सुदूर लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ होता है । योग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और तप की साधना इसी मानवी विद्युत शक्ति को बढ़ाने के लिए की जाती है ।

भौतिक लौह-चुम्बक से ही लोग परिचित होते हैं, यह तथ्य कम ही लोगों को मालूम है कि उससे भी कहीं अधिक ऊँचे स्तर का एक और जैव चुम्बक होता है जिसे वैज्ञानिकों की भाषा में एनिमल मैग्नेट कहते हैं ।

भूतकाल में भी इस शक्ति का लोगों को पता था । उसका उपयोग शारीरिक और मानसिक रोगों की निवृति के लिए किया जाता रहा है । सिर पर हाथ फेरना, कंधे सहलाना, पीठ थपथपाना प्रकारान्तर से इसी जैव चुम्बक का दुर्बलों एवं रोगियों को समर्थ व्यक्तियों द्वारा लाभ पहुँचाने का एक विधान है । गुरु-शिष्यों को, अभिभावक, बच्चों को स्नेह सिक्त आशीर्वाद देते समय प्रायः ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ करते हैं । स्नेहीजनों के प्रति, परिपक्व व्यक्तित्व के प्रति वात्सल्य पूर्वक न केवल मुख से, मन से शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं वरन् अपने हाथ से स्पर्श भी करते हैं, इससे शक्तिशाली पक्ष की विद्युत धारा हल्के पड़ने वाले छोटों के शरीर एवं मनःक्षेत्र में प्रवेश करके उन्हें शक्ति प्रदान करती है । हाथ न फेरने पर भी पैर छूकर यह अनुदान छोटे लोग बड़ों से अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं । भारत में गुरुजनों के चरण स्पर्श करके प्रणाम करने की प्रथा में यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सन्निहित है ।

क्या लौह चुम्बक का भी मनुष्य शरीर पर कुछ प्रभाव हो सकता है । इस सन्दर्भ में आंशिक सफलता ही मिली । मनुष्य चुम्बकत्व की अपनी अलग ही जाति और किस्म है । वह सजातीय स्तर पर ही अधिक प्रभावित होता है और उपयुक्त प्रक्रिया उत्पन्न करता है । यों कुछ तो प्रभाव लौह-चुम्बक का भी पड़ता है ।

मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म यों पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं पर वस्तुतः उनमें भारी अन्तर है । हिप्नोटिज्म किसी को सम्मोहन निद्रा में ले जाने और उससे अन्तर्मन की सम्वेदनाएँ उगलवाने अथवा दिए हुए निर्देशों के अनुरूप अनुभव करने के लिए किया जाता है । यह अनुभव वास्तविक भी हो सकते हैं और अवास्तविक भी । जैसे सम्मोहन ग्रस्त व्यक्ति को लकड़ी दिखाकर उसे भयंकर सर्प जैसा अनुभव कराया जा सकता है । साधारण मिट्टी खाकर वह चीनी जैसा मिठास अनुभव कर सकता है ।

मेस्मेरिज्म मानवी विद्युत शक्ति का रोग निवारण तथा दूसरे प्रयोजनों के लिए उपयोग करने की विधि का नाम है । इसे वियना (आस्ट्रिया) के डॉ. मेस्मर फ्रेडरिक ने आविष्कृत किया था । उनका प्रतिपादन है कि मनुष्य के शरीर में चुम्बकत्व भरा पड़ा है जो आँखों से एवं उँगलियों के पोरुओं से बाहर निकलता रहता है । इस प्रवाह से अपने निज के लिए तथा दूसरों के लिए उपयोगी लाभ उठाया जा सकता है । मोडाव्यू तथा काउण्ट पुलीगर ने इस सन्दर्भ में गहरी खोजें कीं और सिद्ध किया कि यह सामान्य समझी जाने वाली उपेक्षित मानवी विद्युत शक्ति बड़े काम की है और इसके प्रयोग से महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं । जर्मन विद्युत विज्ञानी रीकन वेक ने इसे एक विशेष अग्नि के रूप में सिद्ध किया और उसे "औरा" नाम दिया । मुख मण्डल के इर्द-गिर्द तथा प्रजनन अंग में उसकी विशेष उपस्थिति सिद्ध की । नाड़ी संस्थान एवं स्नायु मण्डल को उसका उत्पादन कर्त्ता माना । अगले शोध कर्त्ताओं ने इसकी उत्पत्ति का केन्द्र मस्तिष्क क्षेत्र में बताया ।

सम्मोहन विद्या किसी जमाने में जादू मन्त्र में गिनी जाती थी । हिप्नोटिज्म यों मेस्मेरिज्म से भिन्न प्रकार का विज्ञान है तो भी मिलती-जुलती प्रक्रिया के कारण दोनों को एक ही स्तर पर गिना जाने लगा है ।

अठाहरवीं सदी के अंग्रेज शरीर विज्ञानी जेम्स ब्राइड ने सम्मोहन स्थिति को 'नर्वस स्लीप' माना है और कहा है नाड़ी संस्थान में उथल-पुथल करने के लिए इस शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है ।

मनोविज्ञान वेत्ता जी. एच. एट्स ब्रुक ने इस विद्या को जासूसी के क्षेत्र में प्रयोग करने का एक विचित्र तरीका निकाला । इस विधि से किसी रहस्यमय व्यक्ति को सम्मोहित करके उसके पेट के सारे भेद उगलवाये जा सकते थे । इन प्रयोगों से द्वितीय महायुद्ध के समय 'हिप्नोटाईज्ड इण्टेलीजेन्स' को एक विशेष युद्ध कौशल की तरह प्रयोग किया जाने लगा । दूसरे पक्ष पर इसका प्रयोग करने किन्तु अपनों को बचाने के सम्बन्ध में उन दिनों बहुत-बहुत चेष्टाएँ की गईं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक बिजली द्वारा तरह-तरह के उपयोगी यन्त्र चलाने की विधि से परिचित होकर हमने बहुत लाभ उठाया है । मनुष्य शरीर की बिजली की क्षमता से भी यदि हम परिचित हो सके और उसका उपयोग जान सके तो इससे व्यक्तित्वों के विकास में असाधारण योगदान मिल सकता है । इतना ही नहीं उसके द्वारा बढ़ी हुई शक्ति वाले लोग कम शक्ति वालों की विविध विधि सहायताएँ भी कर सकते हैं ।

आभामण्डल रूपी विद्युत्सम्पदा का सुनियोजन-सदुपयोग

चेतन प्रकृति एवं मनुष्य सहित अन्य जीवधारियों के बीच सृष्टि ने एक ऐसी विधि-व्यवस्था विनिर्मित की है, जिसे परस्पर अन्योन्याश्रित अनुशासन नाम दिया जा सकता है । सारा जीवजगत न केवल अपने दैनन्दिन क्रिया-कलापों अपितु विकास हेतु उस प्राण सम्पदा से जुड़ा हुआ है जो समष्टि रूप में उसके चारों ओर विद्यमान है । मानव, पादप-वृक्ष-वनस्पति, जीव-जन्तु सभी इस चक्र में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं । यह पर्यावरण चक्र ही जीवजगत की सुनियोजित कार्यपद्धति के लिए उत्तरदायी माना जाता है ।

वैज्ञानिकों का मत है कि मानवी काया व मस्तिष्क जिन सूक्ष्म रस-स्रावों से प्रभावित होती है, वें मनुष्य के आस-पास के वातावरण में स्थित ऋण आयनों की मात्रा के अनुपात पर निर्भर करती है । जब भी धन आवेश इस आभा मण्डल में बढ़ता है, तामसी प्रवृत्तियाँ उभरने लगने लगती हैं, तनाव जन्म लेता है व कई साइकोसोमेटिक बीमारियाँ जन्मती हैं । ऋण आयन प्रकृति के साहचर्य में रहने वालों के आभामण्डल में अधिक होते हैं । वे ही व्यक्ति की स्फूर्ति, चेतनशक्ति एवं सक्रियता बढ़ाते हैं ।

इस व्यवस्था में कहीं भी तनिक व्यतिरेक आने पर मानव द्वारा उसमें छेड़छाड़ किए जाने पर परिणतियाँ विषम होती हैं । मनुष्य को आधि-व्याधियों से जूझना पड़ता है । पर्यावरण सन्तुलन अस्त-व्यस्त हो जाता है । अन्ततः आकाश के पोले ईथर भाण्डागार में भरी यह प्राण सम्पदा है क्या ? एवं किस प्रकार जीवधारियों को प्रभावित करती है ? इस पर वैज्ञानिकों ने भी गहराई से अनुसन्धान किया है एवं अपना अभिमत व्यक्त किया है ।

जीवधारी जिस वातावरण में रहते हैं, वह कितनी विपुल ऊर्जा, सम्पदा अपने अन्तराल में छिपाये हुए है, इसकी सहज ही कल्पना नहीं होती । हम निरन्तर बाह्य वातावरण से श्वास खींचते व छोड़ते रहते हैं । प्राणवायु रूपी ऑक्सीजन यदि थोड़ी देर न मिले तो जीना दूभर हो जाय । सारे शरीर की गन्दगी अन्यान्य मार्गों के अतिरिक्त कार्बन डाई-ऑक्साइड के रूप में प्रश्वास द्वारा एक व्यक्ति के द्वारा हर मिनट १५ से बीस बार छोड़ी जाती है । मोटे रूप में यही व्यक्ति का पर्यावरण से आदान-प्रदान क्रम माना जाता है । तनिक गहराई से देखें तो पाते हैं कि हर जीवधारी एक समर्थ एवं सशक्त विद्युतमण्डल से घिरा हुआ है । आयनोस्फियर की सबसे निचली परत पृथ्वी से साठ किलोमीटर दूरी पर है । दोनों के मध्य स्थित इस आयन मण्डल में लगभग ५ वोल्ट प्रतिमीटर के औसत से विद्युत का दबाव बना हुआ है । हर व्यक्ति को घेरे एक सूक्ष्म विद्युत रूपी कवच प्राण ऊर्जा का समुच्चय है एवं यही शरीरगत गतिविधियों एवं मस्तिष्कीय क्रिया-कलापों पर अपना सर्वाधिक प्रभाव डालता है ।

विद्युत आवेश धन व ऋण दो में बँटा होता है । मनुष्य के लिए ऋण विद्युतधारी आयन्स की मात्रा का अधिक-कम होना ही बहुत बड़े परिवर्तन का कारण बन जाता है । ये ऋण आयन्स श्वास में भी अन्दर जाते हैं एवं त्वचा से भी । कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार प्रकाश की गति के समकक्ष चलने वाले फोटान्स के समरूप न्यूट्रीनो कण—माइण्डान्स भी सूक्ष्म रूप से बिना किसी प्रतिरोध के शरीर एवं मस्तिष्क के विद्युतमण्डल से आदान-प्रदान करते रहते हैं ।

सबसे पहले बर्कले विश्वविद्यालय (कैलिफोर्निया) के अलवर्ट पाल क्रूगर ने आज से कुछ वर्ष पूर्व यह प्रतिपादित किया था कि शरीर व मस्तिष्क में सूक्ष्म रस स्रावों की वृद्धि तथा स्फूर्ति एवं सक्रियता के लिए ऋण आयनों का वायुमण्डल में होना अत्यधिक आवश्यक है । यह प्रभाव पूरी तरह इन आवेशित कणों की मात्रा पर निर्भर है । धन आवेशित कणों का जब भी बाहुल्य होता है, व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है, चिड़चिड़ापन, थकान एवं एकाग्रता में कमी नजर आती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है । जैसे ही वातावरण में ऋण कण बढ़ा दिए जाते हैं, तनाव क्रमशः कम होने लगता है एवं व्यक्ति की चैतन्यता, स्फूर्ति में वृद्धि आ जाती है ।

मनुष्य के चारों ओर जन्म के बाद गर्भावस्था से बाहर आते ही ऋण आयन का घेरा बन जाता है एवं अन्त तक यही उसे प्राण का शक्ति पुंज बनाते हुए जीवनी शक्ति उसमें फूँकता रहता है । जैसा कि सभी जानते हैं कि गर्भ में स्थित भ्रूण के लिए भी विधाता ने ऐसी ही व्यवस्था कर रखी है ताकि वह रज्जु से जुड़कर माँ से पोषण प्राप्त के अतिरिक्त "एम्नियाटिक द्रव्य रूपी" अपने कवच से भी रासायनिक आदान-प्रदान करता रहे । यह थैली न केवल "शॉक एक्जार्बर" की भूमिका निभाती है, वरन् इसमें विद्यमान विद्युतकण, एन्जाइम्स आदि का भी भ्रूण से आदान-प्रदान क्रम बराबर चलता रहता है । गर्भकाल के समापन के तुरन्त बाद अत्यधिक प्रतिकूलताओं से भरे, विद्युतविभवयुक्त वातावरण में उसका आगमन होता है यहाँ उसे ऋण आयन का यह गोला सुरक्षा प्रदान करता है । प्रकारान्तर से इस विद्युतपुंज को थियॉसाफी के मत से वायटल बॉडी कह सकते हैं । भारतीय आध्यात्म मतानुसार इसे प्राणमय कोश का बहिरंग में अभिव्यक्त होने वाला रूप माना जा सकता है ।

वैज्ञानिक मतानुसार स्वच्छ वायु में प्रति घन सेण्टीमीटर पन्द्रह सौ से चार हजार आयन्स होते हैं । चूँकि पृथ्वी का आवेश ऋण प्रधान है, इस वायु कवच में भी ऋण-धन का अनुपात ९०:१० का होता है । प्रदूषण रहित नैसर्गिक वायुमण्डल, हरितिमा—स्वच्छ झरनों से युक्त स्थानों पर ऋण आयन्स अधिक होते हैं । ऐसे वातावरण में रहने वाले व्यक्तियों की जीवनी शक्ति, मनोबल अधिक होने से रोग-शोक इन्हें नहीं सताते एवं ये सदैव स्वास्थ्य लाभ कर विधेयात्मक चिन्तन में लीन होते देखे जाते हैं । औद्योगीकरण, जनसंख्या का बाहुल्य, निर्वानीकरण एवं प्रदूषण से ऋण आयन्स घटते चले जाते हैं । धन आयनों की मात्रा अधिक होने से श्वास से ली जाने वाली वायु भी विकारयुक्त होती हैं । ऐसे स्थानों पर मनोविकारों, असाध्य रोगों का बाहुल्य होता देखा जाता है । आत्म-हत्या, आक्रामक वृत्ति एवं अपराधों को जन्म देने में ऋण आयनों की कमी प्रधान हो सकती है । चूँकि ये सीधे मानवी काया एवं मस्तिष्कीय विद्युत प्रवाहों पर प्रभाव डालते हैं, मनुष्य के दैनन्दिन क्रियाकलाप इनकी कमी व धन आयनों की बढ़ोत्तरी से निरन्तर प्रभावित होते हैं ।

वैज्ञानिकों के शिथिलता, बेचैनी, तनाव आदि मिटाने के लिए उपरोक्त सिद्धान्त के आधार पर "ऋण आयन जेनरेटर" बनाये हैं, जो निरन्तर वायु को शुद्ध कर मनुष्य के आस-पास ऋण आवेश का कवच विनिर्मित करते रहते हैं । ये जनरेटर चालू होते ही ३५०० ऋण एवं १०० घन आयन्स प्रतिघन सेण्टीमीटर पैदा करते हैं एवं बन्द होने पर लगभग ५-६ घण्टे तक ५५० ऋण व ५०० धन आयन्स का अनुपात आस-पास के वातावरण में बनाये रखते हैं । तुलनात्मक दृष्टि से जब अध्ययन किया गया कि नैसर्गिक वातावरण की तुलना में विनिर्मित कणों में स्वास्थ्यवर्धक— प्रफुल्लता बढ़ाने वाले गुण नहीं थे । एयर कण्डीशनर का प्रयोग भी जहाँ-जहाँ होता देखा गया वहाँ इन आयन्स की मात्रा शून्य के बराबर पायी गई । यही कारण है कि अब वैज्ञानिक भी सैनिटोरियम, बड़े-बड़े निर्णय लेने वाले अधिकारियों के कार्यालयों आदि के आस-पास कृत्रिम झरने, फुब्बारे आदि लगाकर, हरितिमा को भी स्थान देते हैं ।

मात्र परिस्थितियाँ ही मानव के आयन मण्डल का निर्धारण नहीं करतीं । यह भी पाया गया है कि किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में मन के बेचैन, अस्त-व्यस्त, तनावग्रस्त होने पर उनके आस-पास का विद्युत मण्डल ही बदल गया । ऋण आयनों का स्थान धन आयनों ने ले लिया । इसके लिए उन्हें एक इलेक्ट्रॉन भर से मुक्ति पानी होती है । रोगग्रस्त व्यक्तियों एवं प्रारम्भिक लक्षणों का विश्लेषण करने वाले चिकित्सकों का कहना है कि मन की विचार तरंगों के अनुरूप ही बाहर का आयन मण्डल और शुद्ध भाषा में कहें तो आभामण्डल बदलता रहता है । न्यूयार्क विश्वविद्यालय के डॉ. फ्रैंक हॉकिन्शायर एवं राकफेलर विश्वविद्यालय के डॉ. जोनाथन चैरी ने विश्लेषण कर पाया है कि तनाव, थकान, एकाग्रता में कमी, असंयम, चिड़चिड़ापन जैसी मनःस्थिति जैसे-जैसे रोगी के अन्दर विकसित होने लगती है, उसका आयन मण्डल अपना आवेश खोकर धनात्मक होने लगता है । कई रोगियों में तो इस विश्लेषण के आधार पर ही इन मनोविकारों की जिनके सम्बन्ध में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोगी बहुधा मौन देखे जाते हैं, तथा भावी प्रतिक्रियाओं की पहले से भविष्यवाणी की जा सकती है ।

वैज्ञानिकों का कथन है कि केन्द्रीय स्नायु संस्थान की क्रिया प्रणाली बड़ी वैचित्र्य पूर्ण है । पुरुषों से स्वचालित (ए. एन. एस.) में ऋण आयनों को धन में बदलने के अवसर अधिक पाये जाते हैं, इसी कारण वे रोगी भी जल्दी होते हैं । इसमें परिस्थितियों का क्रम, मन-मस्तिष्क की बनावट का अधिक हाथ होता है । इनकी तुलना में स्त्रियाँ भावुक होते हुए भी दृढ़ स्वचालित संस्थान होने के नाते कम रोगी होती देखी जाती हैं । उनका विद्युत कवच भी पुरुषों की तुलना में ऋण आवेशों से अधिक भरा होता है । भावनात्मक उद्वेगजन्य शारीरिक रोग, इसी कारण उन्होंने स्त्रियों में कम पाये ।

मनःस्थितिजन्य आयन्स के प्रभाव एवं पर्यावरण से उत्पन्न होने वाले रोग कारक आयन्स की प्रतिक्रियाओं को जानने के बाद एक विलक्षण प्रसंग की चर्चा भी यहाँ अभीष्ट हो जाती है, जिसकी आज पश्चिम में बड़ी चर्चा है । "इलविण्ड्स" (बुरी हवाओं का बहना) के रूप में मौसम में होने वाले परिवर्तनों का वर्णन इन दिनों समाचारों की सुर्खी में है । पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि नमी से भरी तेज पूर्वी हवाएँ कभी-कभी वातावरण में अनायास ही धनात्मक आयन्स का अनुपात बढ़ा देती हैं । "वेदरिंग" नामक पुस्तक में स्टीफन रोजेन लिखते हैं कि जब ये हवाएँ संव्याप्त प्रदूषण एवं पर्यावरण असन्तुलन के कारण बहती हैं तो क्षय रोगियों में प्रसुप्त रोग के उभर आने, मिर्गी का दौरा आने के अवसर बढ़ जाते हैं । वातावरण के प्रभाव के कारण तनाव एवं चिड़चिड़ापन व्यक्तियों में बढ़ते देखा जाता है जिससे आत्महत्या, आक्रामक वृत्ति, दमा, हार्ट अटैक, स्ट्रोक जैसे घटनाक्रम घटने का अनुपात उन क्षेत्रों में बढ़ जाता है । दक्षिणी हवाएँ रक्त का थक्का जमने का समय कम कर देती हैं जिससे शरीर में कहीं भी अनायास रक्त स्राव एवं लकवे का प्रकोप हो सकता है । ऐसा उनके साथ घटते अधिक देखा जाता है जिनके आस-पास ऋण आवेश की मात्रा पूर्व से ही कम हो स्विट्जरलैण्ड, बवेरिया जैसे आल्प्स पर्वत की तलहटी में बसे क्षेत्रों में इस हवा को "फोहेन" नाम दिया गया है । वहाँ जब यह हवा बहती है सड़क पर दुर्घटनाएँ अनायास ही बढ़ जाती हैं । लोग घरों में रहना पसन्द करने लगते हैं जब तक कि हवा का प्रभाव समाप्त न हो जाय ।

अब सभी इस अभिमत को मानने लगे हैं कि रोगों का कारण जानने के लिए विस्तृत सूक्ष्म पर्यवेक्षण अनिवार्य है । इससे भावी घातक व्याधियों से बचना भी सम्भव है एवं वांछित आयन मण्डल विकसित कर नैसर्गिक जीवन क्रम अपनाकर जीवनी शक्ति का बढ़ाया जाना भी शक्य है । व्यवहार विज्ञानी एवं प्रख्यात स्नायु विशेषज्ञ इस सम्बन्ध में पूर्वार्त्त दर्शन में वर्णित साधना उपक्रमों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि इनके माध्यम से अपने बहिरंग वातावरण को ऋण आवेशयुक्त बनाना सम्भव है ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि योगसाधना के द्वारा प्राण ऊर्जा का सम्वर्धन भली प्रकार सम्भव है । इसके लिए उचित वातावरण मिल सके तो ठीक, नहीं तो आत्मशोधन एवं साधना प्रक्रिया द्वारा भी मनःस्थिति द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ विनिर्मित की जा सकती हैं । विज्ञान का यह स्थूल पक्ष तो इस दिशा में संकेत भर देता है । इससे आगे की—शरीर की 'सटलर' जानकारी एवं उसे उपकरण मानकर विद्यमान ऊर्जा सम्पदा का सदुपयोग—सुनियोजित योग शास्त्रों में वर्णित है । इस ज्ञान का लाभ उठाया जा सके तो वह सब कुछ अर्जित कर सकना सम्भव है जिसे ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में वर्णित किया जाता रहा है ।

अन्तःस्थिति का प्रकटीकरण तेजोवलय के रूप में

विचार धाराएँ परिपुष्ट होकर व्यक्तित्व या प्रतिभा का रूप धारण करती हैं । तब मनुष्य उसी रंग में रंग जाता है, उसी ढाँचे में ढल जाता है । प्राण शक्ति और विचार प्रक्रिया का समन्वित निर्माण तेजस् के रूप में होता है । उसे चेहरे के आस-पास तेजोवलय के रूप में देखा जा सकता है । देवताओं की तस्वीरों में उनके चेहरे के इर्द-गिर्द सूर्य जैसी आभा का चित्रण किया जाता है, यह मात्र देवताओं में ही नहीं होता वरन् हर व्यक्ति में देखा जा सकता है विशेषतया उन व्यक्तियों में जिन्हें तेजस्वी समझा जाता है । इस प्रभामण्डल को अंग्रेजी में "औरा" कहते हैं, संस्कृत में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओजस् । शारीरिक स्वास्थ्य या सौन्दर्य से उसका सीधा सम्बन्ध नहीं है । चेहरे की बनावट या चमक अलग बात है, तेजस्विता उससे बिलकुल भिन्न वस्तु है । विचार, भाव, संकल्प और लक्ष्य की समन्वित प्रखरता से इसका निर्माण होता है । व्यवहार में उसकी अनुभूति चुम्बकीय आकर्षण के रूप में देखी जा सकती है ।

देखा गया है कि किन्हीं विशेष व्यक्तियों को देखते ही उनके प्रति हमारी सहज श्रद्धा, ममता और आत्मीयता जगती है, विश्वास होता है और प्रेम उमड़ता है । इच्छा होती है कि उनके सान्निध्य में रहा जाय । जब तक साथ रहते हैं उच्चस्तरीय विचार उठते हैं । यह सात्विक एवं उच्चस्तरीय तेजोवलय का प्रभाव है ।

किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों को देखते ही मन में भय, आशंका, घृणा, अविश्वास और सन्देह के भाव अनायास ही मन में उठते हैं । उनसे दूर हटने या दूर हटाने की अकुलाहट होती है । प्रत्यक्षतः इसका कुछ भी कारण नहीं होता, पर भीतर ही भीतर न जाने क्यों ऐसी हलचल उठती है । उस सान्निध्य में जब तक रहते हैं तब तक बुरे विचार ही उठते चले जाते हैं और एक अजीब किस्म की अशान्ति रहती है । यहि तमोगुणी व्यक्ति एवं निकृष्ट कोटि की मनोभूमि का प्रभाव है ।

जो हो, तेजोवलय एक सम्पदा है जो दूसरों पर प्रभाव या छाप छोड़ने के सन्दर्भ में बहुत काम करती है । यह किसी प्रयत्न या उपचार से उत्पन्न नहीं किया जा सकता, वह तो अन्तः स्थिति का दर्पण मात्र है । व्यक्तित्व को ढालने के लिए जो कुछ करना आवश्यक होता है उसे ही तेजोवलय की साधना कह सकते हैं । इस ओजस् तेजस्विता के सामने या सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति ही प्रभावित नहीं होते वरन् वातावरण भी विनिर्मित होता है । जहाँ सज्जन निवास करते हैं वहाँ बसन्त जैसी सुरभित प्रफुल्लिता छाई हुई देखी जा सकती है और उस सुषमा से कितनों को कितनी प्रेरणा मिल रही है उसे प्रत्यक्ष देखा जा सकता है ।

अघोरी, तांत्रिक, कापालिक एवं पिशाच सिद्धि में संलग्न व्यक्ति आतंकवादी तेजस्विता बढ़ा सकते हैं । गायत्री उपासना जैसे सात्विक योगानुष्ठान देव स्तर का ब्रह्मतेजस भी उत्पन्न करते हैं । पर यह साधना उपचार भर है । वह इन साधनों, उपक्रमों के जारी रहने तक ही अक्षुण्ण रहता है । विचार, भाव, संकल्प, लक्ष्य और चरित्र के समन्वय से ही व्यक्तित्व की सुदृढ़ आधार शिला रखी जाती है और उसी से जो तेजोवलय प्रादुर्भूत होता है उसमें स्थिरता एवं प्रखरता रहती है ।

उत्कृष्ट, चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व सर्वतोमुखी व्यक्तित्व और वर्चस्व का विकास करता है, इसी को प्रखर तेजोवलय के रूप में हम आत्मबल सम्पन्न लोगों की प्रभाव शक्ति में समाविष्ट देखते हैं ।

कैसे बढ़ायें ? अपना तेजोवलय एवं आत्मबल

पिण्ड और ब्रह्माण्ड का अपना स्वतन्त्र चुम्बकीय क्षेत्र होता है । हम जिस ग्रह गोलक में निवास करते हैं उसका भी एक चुम्बकीय क्षेत्र है । इसमें रहने वाले समस्त जीव-जन्तुओं और वृक्ष-वनस्पतियों का भी आकार की न्यूनाधिकता के अनुरूप अपना विशिष्ट चुम्बकीय प्रभाव होता है । यहाँ तक कि धरती में भी स्थान भेद के आधार पर भू-चुम्बकीय क्षेत्र में भिन्नता देखी जाती है । मनुष्य में जब यह प्रभाव कमजोर हो जाता है अथवा उसे किसी ऐसे भू-भाग में रहने की विवशता आ पड़ती है, जहाँ का चुम्बकीय क्षेत्र निर्बल हों तो वह उसे प्रभावित किए बिना नहीं रहता ।

आमतौर से बोलचाल की भाषा में इस प्रभाव को जलवायु की संज्ञा दे दी जाती है और कहा यह जाने लगता है कि हमारे अथवा हमारे जैसे व्यक्तियों के लिए वहाँ की आबोहवा अनुकूल नहीं, पर सभी के स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल हो, ऐसी बात भी नहीं है । अन्य अनेक लोग उसी जलवायु और स्थान में स्वस्थ व सबल रहते देखे जाते हैं । फिर दूसरों के लिए यह अनुपयुक्ता क्यों ? इसका उत्तर विज्ञान देता है ।

विज्ञान की इन दिनों एक नितान्त नूतन शाखा बड़ी तेजी से फूलती, फलती और विकसित होती दिखाई पड़ रही है । इसे विज्ञान जगत में मैगनेटोबायोलॉजी के नाम से अभिहित किया गया है । इसके अग्रणी वैज्ञानिक पूर्व सोवियत संघ के डॉ. यूरी खोलोडोव हैं । जीव विज्ञानी डॉ. खोलोडोव ने जब एक प्रयोग के दौरान चूहों और कुछ विशेष किस्म के पौधों को न्यून

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चुम्बकीय क्षेत्र वाले भू-भाग में कुछ दिनों तक रखा, तो उनकी चयापचय क्रियाओं एवं अमीनो अम्ल निर्माण प्रक्रियाओं में स्पष्ट व्यवधान पड़ता देखा गया । अनेकों में ट्यूमर का विकास भी स्फुट परिलक्षित हुआ, किन्तु सबसे अधिक और स्पष्ट प्रभाव इसका तन्त्रिका तन्त्र पर पड़ता देखा गया । परीक्षणों के दौरान इस बात का संकेत मिला कि न्यून चुम्बकीयता से स्मृति, धारणा शक्ति और मनःसंस्थान भी सर्वथा अप्रभावित नहीं रह पाते हैं । स्मृति और एकाग्रता में इसके कारण ह्रास आता है, जबकि उत्तेजना को बल मिलता है ।

आध्यात्म विज्ञान के अनुसार जिस व्यक्ति में जीवनी शक्ति जिस अनुपात में घटती जाती है, वह उतना ही दीन-दुर्बल बनता जाता है । सबसे अधिक रोग-शोक ऐसे ही लोगों को सताते हैं । उत्तेजना और उन्माद इन्हीं में सर्वाधिक देखे जाते हैं । शरीर बाहर से फूला दीख पड़ने पर भी उस विद्युत का अभाव होता है, जिसे 'जीवट' कहा गया है । ऐसी दशा में उससे न तो कोई कहने लायक काम बन पड़ता है, न किसी में पूर्ण सफलता मिल पाती है । यदा-कदा मिलती भी है, तो वह ऐसी अधूरी और अधकचरी होती है, जिससे असन्तोष ही बढ़ता है । आत्मबल और मनोबल इस कदर घट जाते हैं, कि कोई श्रेष्ठ कार्य करने का साहस नहीं जुट पाता और कर्त्ता निरन्तर पतनोन्मुख बनता जाता है ।

इस दृष्टि से विचार करें, तो वर्तमान सामाजिक स्थिति इससे बिल्कुल मिलती-जुलती दीखती है । इन दिनों बरसाती उदिभजों की तरह जिस गति से व्याधियाँ पनपी हैं, वैसा पूर्व में कदाचित ही कभी रहा हो । मनःसंस्थान की विकृतियाँ भी सम्प्रति जोर पर हैं । उन्माद, उत्तेजना और पागलपन इतने उग्र हो उठे हैं, जिन्हें देखकर आशंका यह होने लगती है कि संसार और समाज इनसे मुक्त हो पायेंगे क्या ? पूरी तरह इनके चंगुल से छूट पायेंगे क्या ? बुरे कृत्यों के प्रति लगाव व झुकाव तो इन दिनों आम बात है, पर समाज को उठाने व दिशा देने वाले सत्कार्यों के प्रति समर्पण और सत्साहस किन्हीं-किन्हीं में ही देखे जाते हैं । आज न अनीति के प्रति मन्यु प्रदर्शित करने एवं उन्हें घटाने-मिटाने के निमित्त गाण्डीव धारण करने वाले अर्जुन दृष्टिगोचर होते हैं, न अपने दुर्धर्ष व भीष्म संकल्प से मृत्यु तक को लौट जाने के लिए विवश करने वाले पितामह, न कर्ण, न उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठावान हनुमान कहीं दीख पड़ते हैं । न्यूनाधिक मिलते और दीखते भी हैं, तो इतने थोड़े कि उतनी कम विभूतियों से काम किसी प्रकार चलने वाला नहीं । इनका तो पूरा-का-पूरा परिकर चाहिए, ताकि आज की प्रतिकूलता को उलट कर सीधा किया जा सके । उसे अनुकूल बनाया जा सके । आखिर इस वीर-प्रसूता भूमि को हो क्या गया है ? जिससे यह निर्जीव-निष्प्राण-सी लगने लगी है ।

आध्यात्म विज्ञानी इसका एक ही कारण बताते हैं—जीवनी शक्ति का अतिशय अभाव । यहाँ पदार्थ विज्ञान और आध्यात्म विज्ञान की परस्पर संगति बैठती दिखाई पड़ती है । विज्ञान की अधुनातन शोधें बताती हैं कि किसी स्थान की न्यून चुम्बकीयता व्यक्ति के मन-मस्तिष्क को प्रभावित किए बिना नहीं रहती । यही आध्यात्म विज्ञान की मान्यता है । उसके अनुसार जब जीवनी शक्ति घटती है, तो व्यक्ति का स्वास्थ्य और संकल्प लड़खड़ाने लगता है । उल्लेखनीय है कि आध्यात्म विज्ञान जिस ऊर्जा को जीवनी शक्ति के नाम से पुकारता है, भौतिक विज्ञान उसे ही काय-विद्युत, काय चुम्बकत्व एवं आभामण्डल जैसे सम्बोधनों से सम्बोधित करता है । दोनों में नाम के अतिरिक्त कोई और अन्तर नहीं है ।

यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि वर्तमान में व्यक्ति की शरीर-ऊर्जा जब बेतरह जीर्ण और जर्जर हो गई है, तो एक ही स्थान में रहने वाले लोगों की स्वस्थता में भिन्नता क्यों नजर आती है ? मानसिक विक्षोभों की यदि उपेक्षा कर दें, तो क्यों कोई व्यक्ति स्थान विशेष पर शारीरिक दृष्टि से निरोग नजर आता है ? जबकि दूसरे कई यह शिकायत करते सुने जाते हैं, कि उक्त स्थान की जलवायु उनके अनुकूल नहीं । इतना ही नहीं, वहाँ वे लगातार रुग्ण रहते और अनेकानेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक बीमारियों से पीड़ित दिखाई पड़ते हैं । इसका कारण बताते हुए विशेषज्ञ कहते हैं कि वर्तमान में शरीर—ऊर्जा, जिसे विज्ञान कायविद्युत अथवा चुम्बकीयता भी कहता है, मनुष्यों में अपेक्षाकृत घट गई है, जिससे उसके मन-मस्तिष्क पर हर वक्त बेचैनी और व्याकुलता सवार रहती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ हद तक तो इस कमी की परिपूर्ति उस स्थान की भू-चुम्बकीयता करती रहती है, किन्तु जब शरीर चुम्बकत्व में एक निश्चित सीमा से अधिक न्यूनता आ जाती है, तो उस क्षेत्र का भू-चुम्बकत्व भी उस क्षति की पूर्ति करने में अक्षम साबित होता है । ऐसे में विक्षोभों का विस्तार मानसिक स्तर तक सीमित न रह कर काय-ऊर्जा की कमी विभिन्न प्रकार के शारीरिक लक्षणों के रूप में भी प्रकट होने लगती है और व्यक्ति को शरीर-मन से दीन-दुर्बल बनाकर रोग-शय्या पर ला पटकती है । इस स्थिति में चिकित्साशास्त्री उसे सैनिटोरियमों, हिल स्टेशनों में ले जाने की सलाह देते हैं । हिल स्टेशनों में वृक्ष वनस्पतियों को सघनता होने से उस स्थान विशेष में भैषजीय चुम्बकत्व की प्राणवायु ऑक्सीजन के अतिरिक्त स्वभावतः प्रचुरता होती है । इस प्रकार रोगी के शरीर चुम्बकत्व की कमी का सन्तुलन-समीकरण पादपीय चुम्बकत्व से बन जाने के कारण बीमार स्वाभाविक ढंग से स्वास्थ्य लाभ करने लगता है और कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है, पर यह उपचार अस्थायी होता है । इस मध्य मरीज की जीवनी शक्ति यदि नहीं बढ़ी, तो स्थान परिवर्तन के साथ उसके दुबारा रुग्ण बनने की पूरी सम्भावना रहती है, अस्तु इसे स्थायी इलाज नहीं कहा जा सकता । स्वास्थ्य का स्थायित्व तो कायचुम्बकत्व के संरक्षण और संवर्धन पर ही आधारित है, अतः इस ऊर्जा को बढ़ाकर के ही स्वस्थ्य और सबल रहा जा सकता है ।

इसके दो तरीके हैं—उपासना और साधना । उपासना के दौरान इष्ट से प्राण-ऊर्जा ग्रहण-धारण करने की प्रबल भावना और साधना के माध्यम से उन तत्वों को नष्ट-भ्रष्ट करना, जो प्राण-संचय में विघ्न-उपस्थित करते और उसके भण्डार को निरन्तर खाली करते रहते हैं । ईर्ष्या, द्वेष, असंयम आदि ऐसे ही अवांछनीय तत्व हैं, जो हमारे शरीर चुम्बकत्व को, जीवनी शक्ति को लगातार घटाते रहते हैं । यदि इस ऊर्जा को बढ़ाया जा सके, तो कोई कारण नहीं कि हमारी शारीरिक, मानसिक स्वस्थता न बढ़ सके, हम अक्षुण्ण स्वास्थ्य न प्राप्त कर सकें । इतना ही नहीं, फिर हम चाहे कितने ही न्यून भू-चुम्बकीय क्षेत्र में चले जायें, उससे हमारा स्वास्थ्य सर्वथा अप्रभावित ही रहेगा और किसी प्रकार के अवांछित असर उत्पन्न करने में वह एकदम विफल बन जायेगा । कहावत है कि निर्बल को सभी सताते हैं, पर सबल का सामना करने से कतराते हैं । बीमारियों, बाह्य कारकों के सम्बन्ध में भी सत्य यही है । कमजोर शरीर में ही उनका आक्रमण होता है । बलवान-वीर्यवान शरीर से वह कोसों दूर रहते हैं । हम हतवीर्य न बनें—इसके लिए आवश्यक है कि अपने चुम्बकत्व को अभीष्ट परिमाण में बढ़ायें, ताकि स्थान विशेष का चुम्बकत्व हमें प्रभावित न करें, वरन् हम उस स्थान को, वहाँ के निवासियों को अपने प्रबल चुम्बकत्व से प्रभावित कर सकने में समर्थ हो सकें । यह आरम्भिक प्रयोग और पुरुषार्थ हममें से प्रत्येक को सम्पादित करना आना चाहिए ।

प्राण विद्युत की चमत्कारी कार्य क्षमता

शरीर के अवयवों के संचालन एवं क्रिया-कलाप में आमतौर से रक्त की प्रधान भूमिका मानी जाती है । यह मोटी जानकारी है । यदि थोड़ी गहराई में घुसकर देखा जाय तो प्रतीत होता है कि समूचे काय तन्त्र की अनेकानेक गतिविधियों का उत्तेजन एवं नियमन एक विशेष प्रकार की बिजली के सहारे होता है जो मस्तिष्क में उत्पन्न होती और नाड़ी तन्तुओं द्वारा समस्त अवयवों के भीतर तथा बाहर छाई रहती है । बिजली की शरीर में वही भूमिका होती है जो मोटर में बैटरी डायनमो की । रक्त पैट्रोल है, तो जैव विद्युत बैटरी । दोनों के संयोग से ही जीवन धारण बन पड़ता है ।

यह कायिक बिजली मशीनी बिजली से भिन्न है । यन्त्र विद्युत झटका मारती और मशीनें चलाती है । कायिक बिजली शरीर और मस्तिष्क के अवयवों को सँभालती है । बाहरी क्षेत्र में अपने प्रभाव का परिचय देती है । इसे प्राण कहते हैं । वह ब्रह्माण्डव्यापी महाप्राण का एक अंश है जो मनुष्य शरीर में काम करता है । इसे घटाया-बढ़ाया जा सकता है । संकल्प बल एवं अभ्यास से जिस प्रकार अनेक कला-कौशलों की प्रवीणता प्राप्त होती है, उसी प्रकार प्राण विद्युत को भी योग साधनों के सहारे समुन्नत किया जा सकता है ।

यों छोटी बैटरी भी विद्युत भाण्डागार का एक घटक ही है और टार्च जलाने जैसे छोटे काम वह भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर सकती है पर यदि किसी नगर या कारखाने की मशीनें चलानी हों तो बड़ा जनरेटर चाहिए । इसी प्रकार सामान्य प्राण से शरीर निर्वाह एवं उपार्जन की आवश्यकता पूरी होती रहती है । पेट प्रजनन के लिए अनिवार्य साधन सधते रहते हैं किन्तु यदि उच्चस्तरीय क्रिया-कलाप सम्पादित हों तो उसके लिए महाप्राण स्तर की प्राण शक्ति चाहिए और वह साधनात्मक विशेष उपाय उपचारों से ही अर्जित करनी पड़ती है ।

प्राण विद्या के ज्ञाता गुरु अपने प्राण देकर शिष्यों के व्यक्तित्व और उनकी क्षमताएँ बढ़ाया करते थे । इसी कारण श्रद्धावनत होकर लोग ऋषि आश्रमों में जाया करते थे । ऋषि अपने प्राण देकर उन्हें तेजस्वी, मेधावान और पुरुषार्थी बनाया करते थे । महर्षि धौम्य ने आरुणि को, गौतम ने जावालि को, इन्द्र ने अर्जुन को, यम ने नचिकेता को, शुक्राचार्य ने कच को इसी तरह उच्च स्थिति में पहुँचाया था । योग्य गुरुओं द्वारा यह परम्पराएँ, अब भी चलती रहती हैं । परमहंस स्वामी रामकृष्ण ने विवेकानन्द को शक्तिपात किया था । स्वामी विवेकानन्द ने सिस्टर निवेदिता में प्राण प्रत्यार्पित किए थे । महर्षि अरविन्द ने प्राण शक्ति द्वारा ही सन्देश भेजकर पांडिचेरी आश्रम की संचालिका 'मदिति-सह भारत-माता' की सम्पादिका 'श्री यज्ञ शिखा माँ' को पेरिस से बुलाया था और उन्हें योग विद्या देकर भारतीय दर्शन का निष्णात बनाया था ।

कहते हैं जब राम वनवास में थे, तब लक्ष्मण अपने तेजस्वी प्राणों का संचालन करके प्रत्येक दिन की स्थिति के समाचार अपनी धर्मपत्नी उर्मिला तक पहुँचा देते थे । उर्मिला उन सन्देशों को चित्रबद्ध करके रघुवंश परिवार में प्रसारित कर दिया करती थी और बेतार-के-तार की तरह के सन्देश सबको मिल जाया करते थे ।

अनुसुइया आश्रम में अकेली थी । भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश वेष बदलकर परीक्षार्थ आश्रम में पहुँचे । अत्रि मुनि बाहर थे । उन्होंने ही भगवान के त्रिकाल रूप को पहचाना था और वह गुप्त सन्देश अनुसुइया को प्राण शक्ति द्वारा हा प्रेरित किया था । ऐसी कथा-गाथाओं से सारा हिन्दू-शास्त्र भरा पड़ा है ।

एक बार राजा दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन इन्द्र के पास पहुँचे । इन्द्र ने उसके पुरुषार्थ से प्रसन्न होकर कहा—"मैं तुम्हें लोक-कल्याण करने वाली प्राण-विद्या सिखाऊँगा ।" इसके बाद इन्द्र ने प्रतर्दन को प्राणतत्व का उपदेश दिया—"प्राण ही ब्रह्म है । साधनाओं द्वारा योगी, ऋषि-मुनि अपनी आत्मा में प्राण धारण करते और उससे विश्व का कल्याण करते हैं ।"

कौषीताकि ब्राह्मणोपनिषद् के दूसरे अध्याय में भगवान इन्द्र ने प्रतर्दन को यह प्राण विद्या सिखायी है । इस अध्याय में असीम प्राण शक्ति द्वारा दूसरों तक अन्तः प्रेरणाएँ व विचार पहुँचाने का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया गया है—

'अथ खलु तस्मा देतमेवोक्थ मुपासीत ।

यौ वै प्राणः सा प्रज्ञा या वा प्रज्ञा स प्राण ·····।

स यदा प्रतिबुद्धते यथाऽग्नेर्विस्फुलिंग ।

विप्रतिष्ठन्ते प्राणेभ्यो देवा देवेभ्यो लोका·····।'

अर्थात्—जब मन विचार करता है तब अन्य सभी प्राण उसके सहयोगी होकर विचार मग्न हो जाते हैं । नेत्र किसी वस्तु को देखने लगते हैं तो अन्य प्राण उनका अनुसरण करते हैं । वाणी जब कुछ कहती है, तब अन्य प्राण उसके सहायक होते हैं । मुख्य प्राण के कार्य में अन्य प्राणों का पूर्ण सहयोग होता है ।

मनुष्य शरीर भी एक व्यवस्थित बिजलीघर है । मस्तिष्क से लेकर हाथ के पोरुओं तक शरीर के इंच-इंच भाग को ठण्डा और गर्म नाड़ियों इफरेन्ट एण्ड ऑफरेन्ट नर्वस फैली हुई हैं । ठीक डॉ. ब्राउन के अनुसार शारीरिक और मानसिक कार्यों को चलाने में जितनी बिजली खर्च होती है उतने से एक बड़ा मिल चल सकता है । छोटे बच्चे के शरीर में प्राप्त विद्युतशक्ति ही इतनी अधिक होती है कि उससे रेल के इंजन को चलाया जा सकता है ।

स्नायु विज्ञानी कार्ल लैसले ने तो यहाँ तक खोज करने में सफलता प्राप्त कर ली है कि किस स्थान पर कितना विद्युत प्रवाह किए जाने से किस काल खण्ड में किस किस्म की स्मृति उभारी जा सकती है ।

कैलीफोर्निया इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नालॉजी के डॉ. रोगर स्पैरी ने सुदीर्घ कालिक संचित, आदत, अभ्यासों से मुक्त होने तथा सर्वथा नये अभ्यासों को अपनाये जाने के लिए मस्तिष्क को प्रेरित कर सकने के अपने प्रयोगों में सफलता प्राप्त कर ली है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वीडन के डॉक्टर हाल्गर डाउडन आर. एन. ए. (रिवो यूक्लिक एसिड) मात्रा को बढ़ाकर चेतना की पर्तों में विविध उभार, उतार-चढ़ाव में सफल रहे हैं ।

आध्यात्मिक चिकित्सा और प्राण संचालन की प्रक्रिया को समझने के लिए शरीर के अन्तर्गत रहने वाली मनःशक्ति को समझ लेना आवश्यक है, क्योंकि जिस प्रकार ध्वनि-तरंगों को पकड़ने के लिए रेडियो में एक विशेष प्रकार का क्रिस्टल फिट किया जाता है, शरीर आध्यात्म का भी एक क्रिस्टल है और वह मन है । विज्ञान जानने वालों को पता है कि ईथर नामक तत्व सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, हम जो भी बोलते हैं, उनका भी एक प्रवाह है, पर वह बहुत हल्का होता है, किन्तु जब अपने शब्दों को विद्युत परमाणुओं में बदल देते हैं तो वह शब्द तरंगें भी विद्युत शक्ति के अनुरूप ही प्रचण्ड रूप धारण कर लेती हैं और बड़े वेग से चारों तरफ फैलने लगती हैं । वह शब्द तरंगें सम्पूर्ण आकाश में भरी रहती हैं, रेडियो उन लहरों को पकड़ता है और विद्युत परमाणुओं को रोककर केवल शब्द तरंगों को लाउडस्पीकर तक जाने देता है, जिससे दूर बैठे व्यक्ति की ध्वनि वहाँ भी सुनाई देने लगती है । शब्द की तरंग और तरंग को फिर शब्द में बदलने का काम विद्युत करती है, उसी प्रकार आध्यात्मिक चिकित्सा और विचार प्रेषण (टैलीपैथी) का काम मन करता है ।

यों मन शरीर में एक प्रथम सत्ता की भाँति दिखाई देता है, पर वैज्ञानिक जानते हैं कि शरीर के प्रत्येक कोश में एक पृथक मन होता है । कोशों के मनों का समुदाय ही अवयव समग्र मन का निर्माण करता है । प्रत्येक अवयव का क्रिया क्षेत्र अलग-अलग है, पर वह सब मन अवयव के अधीन है । मान लीजिए यौन केन्द्रों के समीपवर्ती न जीवकोश (सैल्स) अपनी तरह के रासायनिक पदार्थ ढूँढ़ते और ग्रहण करते हैं । उनकी उत्तेजना, कामवासना को भड़काने का काम करती है, किन्तु समग्र मन नहीं चाहता कि इन यौनावस्थित जीवकोशों की इच्छा को पूरा किया जाय, तो वह कामवासना पर नियन्त्रण करं लेगा । इसी प्रकार शरीर के हर अंग के मत अपनी-अपनी इच्छाएँ प्रकट करते हैं, पर समग्र मन उन सबको काँटता-छाँटता रहता है । जो इच्छापूर्ण नहीं होने की होती, उसे दबाता रहता है और दूसरों को सहयोग देकर वैसा काम करने लगता है ।

यह जीवकोशों के मन ही मिलकर समग्र मन का निर्माण करते हैं, इसीलिए मन को एक वस्तु न मानकर आध्यात्म शास्त्र में उसे 'मनोमय कोश' कहा गया है । एक अवस्था ऐसी होती है जब शरीर के सब मन उसके आधीन काम करते हैं, जब यह अनुशासन स्थापित हो जाता है तो मन की क्षमता बड़ी प्रचण्ड हो जाती है और उसे जिस ओर लगा दिया जाय वहीं तूफान की-सी तीव्र हलचल पैदा कर देता है ।

प्रत्युत्पन्न मन जब एकाग्र और संकल्पशील होता है तो सभी कोश स्थित मन जो विभिन्न गुणों और स्थानों की सुरक्षा करने वाले होते हैं, उसी के आधीन होकर कार्य करने में लग जाते हैं, फिर उस संग्रहीत शक्ति से किसी भी स्थान के जीवकोशों को किसी दूसरे के शरीर में पहुँचा कर उस व्यक्ति की किसी भी रोग से रक्षा की जा सकती है, सुनने-समझने वाले मनों में हलचल पैदा करके उन्हें सन्देश दिया जा सकता है, किसी को पीड़ित या परेशान भी किया जा सकता है ।

चौथी सदी में एक युवक जिसे प्रेतबाधा थी उसके पिता उसे अच्छा करने के लिए सन्त मकारियस के पास ले गए जो मिश्र के मरुस्थल में रहते थे । उन्होंने एक हाथ युवक के सिर पर और एक छाती पर रखा और प्रार्थना करने लगे । धीरे-धीरे युवक का शरीर फूलने लगा और इतना फूला कि ऐसा लगने लगा कि युवक अधर में लटका हो । फिर अचानक युवक चीखा और उसके शरीर से पानी निकला । इसके बाद युवक अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ गया और रोग मुक्त होकर अच्छा हो गया ।

सन्त आगस्टाइन, मिलान के सन्त एम्ब्रोज, टूर के सन्त मार्टिन, विशिष्ट हस्तियाँ थीं, जिन्होंने प्रार्थना एवं सिर पर हाथों के स्पर्श द्वारा रोगोपचार की परम्परा को जीवित रखा ।

शताब्दियों तक ऐसे अनेक सन्त होते रहे हैं । जिनके पास अपने हाथों के स्पर्श एवं प्रार्थना के द्वारा रोगमुक्त करने की ईश्वरीय शक्ति रही है । इन सन्तों की वजह से लोगों में धर्म के प्रति झुकाव बना रहा । बारहवीं सदी में असीसी के सन्त फ्रान्सिस और क्लेअर बाक्स के सन्त बरनॉर्ड ने अनेकों को अपनी रोगमुक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने की शक्ति से अच्छा किया । चौदहवीं सदी में सियेना के सन्त केथराइन तथा सोलहवीं शताब्दी में सन्त फ्रान्सिस जेवियर, अपनी रोगमुक्त करने की शक्तियों के लिए बहुत प्रख्यात रहे और अनेकों को इसका लाभ पहुँचाया । जार्ज फाक्स जिसने सत्रहवीं सदी में "सोसाइटी ऑफ फ्रैन्डस" की स्थापना की थी, ने इंग्लैण्ड और अमेरिका में अनेक रोगियों को अपनी रोगमुक्त करने की शक्ति से अच्छा किया । इन्होंने अपने द्वारा आध्यात्मिक उपचार से रोगमुक्त करने के अनुभवों का वर्णन, अप्रकाशित पुस्तक "बुक ऑफ निरेकल्स" में किया है ।

सेंटपाल के समय से ही प्रसिद्ध सन्तों, आत्म बलिदानियों अथवा शहीदों के द्वारा उपयोग में लाये गए रूमालों और एप्रनों को रोगी के अंगों पर रखकर उन्हें दबाया जाता जिससे उन्हें रोगमुक्ति से छुटकारा मिलता था । ऐसा लिखित रिकॉर्ड उपलब्ध है । बाद में यह सुरक्षित महसूस किया गया कि आत्म बलिदानी धर्म-प्रचारकों के अवशेष उसकी कब्र से निकालकर उन्हें नये चर्चों में स्थापित किया जाय । सेंट स्टीफन के ऐसे रखे हुए अवशेषों से अनेक रोगियों को बहुत लाभ हुआ है । सन्त कोसमास तथा सन्त डाभियन, दो चिकित्सक भाइयों एवं अनेक धर्म प्रचारक सन्तों के अवशेषों का उपयोग इस प्रकार लगातार रोग मुक्ति के लिए होता रहा ।

बहुत सारी कब्रों को समाधियों का रूप दिया गया, जहाँ बहुत से रोगी उन समाधियों के पास, जिनमें सन्तों के शव अथवा उनके अवशेष रखे होते थे, के नजदीक श्रद्धा से पूरी रात गुजारते थे । ईसामसीह का "काँटों का ताज" जिसे उन्हें सूली पर चढ़ाते समय पहनाया गया था एक अति महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी अवशेष सिद्ध हुआ । जिसके द्वारा अनेकों रोगियों को लाभ मिला ।

प्राण का वाहुल्य ही विशिष्ट प्रतिभा के रूप में परिलक्षित होता है । प्राणवान व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से सामान्य होते हुए भी ऐसे पराक्रम करते देखे गए हैं मानो उन्हें कोई दैवी वरदान उपलब्ध हो । व्यक्तित्व की विशिष्टता प्राण वैभव की बहुलता पर ही निर्भर है ।

आमस्टा माइजे निवासी जॉन मिल्ने १२४ वर्ष तक जीया । उसने अन्तिम विवाह ८० वर्ष की आयु में एक १८ वर्षीय युवती से किया । इसके बाद उसके १० बच्चे जन्मे और दीर्घजीवी रहे । मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व उसके सफेद बाल फिर से काले होने लगे थे ।

जियान्गी प्रान्त में रहने वाला १०१ वर्षीय चीनी किसान को अपने द्वितीय बचपन की दाँत समस्या का सामना करना पड़ रहा है । अब कुल उसके १६ दाँत नीचे ११ दाँत ऊपर वाले जबड़े में सबके सब नये-चमकीले उग आये हैं । किसान अब प्रसन्नतापूर्वक अपने भोजन को चबाने लगा है । यह समाचार "वेनहू वाओ" नामक दैनिक पत्र ने दिया है ।

मैक्सिस जर्मनी का प्रसिद्ध भारोत्तोलक हुआ है । उसका निज का वजन १४७ पौंड था । पर एक प्रदर्शन में उसने अपने से ४० पौंड भारी १८७ पौंड के व्यक्ति को एक हाथ पर बिठाकर १६ बार अपने सिर से ऊपर तक उठाया । दूसरे हाथ में वह पानी से लवालव भरा गिलास इसलिए थामे रहा कि कोई यह न सोचे कि इतना वजन उठाने में उसके ऊपर कोई खिंचाव पड़ता है । खिंचाव पड़ेगा तो पानी फैलेगा यह प्रमाण देने के लिए उसने दूसरे हाथ में गिलास थामे रहने का प्रदर्शन किया ।

ओलम्पिक खेलों में अमेरिका का सर्वप्रथम दौड़ विजेता जेन्सवीन कौलौनी था । सन् १८९६ में उसने होप स्टैप एण्ड जम्प की प्रतियोगिता में भाग लिया और बाजी मारी । वह अभ्यस्त एवं प्रशिक्षित खिलाड़ी नहीं था । अमेरिकी सरकार का वह प्रतिनिधि था । निजी तौर पर किसी प्रकार वह खिलाड़ियों के समुदाय में बड़ी कठिनाई से सम्मिलित हुआ था । विजय के उपरान्त उसने यह कहा—बचपन से ही दौड़ के उसके एकांगी शौक को आज संयोगवश प्रोत्साहन का अवसर मिल गया ।

सन् १८१८ में इंग्लैण्ड में एक ऐसी महिला के साहसिक कृत्यों की चर्चा रही, जिसने दिखा दिया था कि उसका शरीर बिल्कुल ही ज्वलनशील नहीं है । नाइट्रिक ऐसिड को कुछ देर तक मुँह में रखने के बाद ३८ वर्षीय 'जो गिराडेल' ने उसे लोहे पर थूक दिया तो लाल लपटें निकलने लगीं । उसने इसी प्रकार जब उबलते तेल को कुछ देर तक मुँह में रखने के बाद कुल्ला किया तो उसके पश्चात भी उसे गर्म ही पाया गया । पिघले मोम को गर्म पानी की भाँति मुँह में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखकर उसने अपने होठों पर सील लगवा दी थी । उबलते जस्ते ने जब द्रव का रूप धारण कर लिया तो इस महिला ने उसमें अपनी उँगलियों को डालकर कुछ अंश उठाया और उसे अपने मुँह में रख लिया । इसे चूसकर एक सिक्के के आकार में परिवर्तित कर दिया ।

जो गिराडेल का जन्म इटली में हुआ था । अपनी अग्नि परीक्षा दिखाने के लिए वह पिघले हुए लोहे के टुकड़ों पर नंगे पांव ऊपर से कूदती थी । फावड़े को गर्म करके लाल बनाया गया । जब उसके डंडे से आग निकलने लगी, तब उसने अपनी बाहुओं पर, पैरों पर तथा सिर के बालों पर उससे चोट पहुँचाई । जब रक्त तप्त फावड़े ने उसे चोट नहीं पहुँचाई तो उसने अपनी ऐड़ी से गरम लोहे को पीटकर मोड़ दिया । उस लोहे से 'छन्न' की आवाज तब हुई जब गिराडेला ने उसे अपनी जीभ से चाट लिया । आठ जलती मोमबत्तियों पर हाथों और पैरों की उँगलियों को क्रमशः इस प्रकार घुमाया करती थी कि उनकी गर्मी शरीर को लगे किन्तु उँगलियों के बीच से लौ निकलती रहे । धुँये से वे अंग तो काले हो गए किन्तु जलने का कोई चिन्ह दृष्टिगोचर न हो पाया । परीक्षण के बीच पाया गया कि गर्म धातु की शलाका जब उसके शरीर की त्वचा से स्पर्श की जाती थी तो किसी प्रकार की वाष्प बिलकुल नहीं निकलती थी । 'जो गिराडेली' कहा करती थी कि वह अग्नि की भट्टी में माँस के लोथड़े के साथ प्रवेश कर सकती है । आग से माँस बुरी तरह जल जाता और वह निरापद बच निकलती ।

प्राणवानों में शारीरिक ही नहीं मानसिक विशिष्टता भी पायी जाती है । मस्तिष्कीय संरचना में कोई अन्तर न होने पर भी कोई-कोई व्यक्ति ऐसे देखे गए हैं जिनकी मानसिक क्षमता सामान्यजनों की तुलना मे असाधारण रूप से बढ़ी-चढ़ी होती है । प्रयत्न करने पर प्राण शक्ति का अभिवर्धन हर कोई कर सकता है ।

सूक्ष्म शरीर का प्रतीक तेजोवलय

शरीर में तापमान भी होता है और हलचल भी । इन्हीं के आधार पर जीवनचर्या चलती है । इन दोनों प्रयोजनों को साधने वाली शक्ति का नाम है (वप्यो इलैक्ट्रिसिटी) जैव विद्युत । इसका भण्डार जिसमें जितना अधिक है वह उतना ही ओजस्वी, तेजस्वी माना जाता है ।

इस क्षमता को प्राण भी कहा जाता है । जब तक प्राण की मात्रा विद्यमान है तभी तक जीवधारी को प्राणी कहा जाता है । जब वह तिरोहित हो जाती है तो शरीर लाश मात्र रह जाता है और विकृत होकर दुर्गन्ध फैलाता है । इस दुर्गति से बचने के लिए मित्र-कुटुम्बी उसका दाह संस्कार करते या दफना देते हैं । ऐसा न किया जाय तो भीतर से ही कृमि उत्पन्न हो जाते हैं और उसे चाटकर साफ कर देते हैं । बाहर के श्वान, शृंगाल, चील, गिद्ध कौए आदि भी उस पर टूट पड़ते हैं और अस्थि पिंजर मात्र शेष रह जाता है । यह दुर्गति इसीलिए होती है कि प्राण निकल जाता है । यदि वह बना रहता तो शरीर के अस्तित्व को मिटाया न जाता ।

प्राण विश्वव्यापी है । उसी का एक अंश जब जीवधारी को मिल जाता है तो वह प्राणियों की तरह अपनी क्षमता का परिचय देने लगता है । यह प्राण प्रत्यक्ष शरीर में तो होता ही है उसे यन्त्र-उपकरणों से जैव विद्युत के रूप में आँका और मापा जा सकता है । इसकी घट-बढ़ भी विदित होती रहती है । घटने पर दुर्बलता आ दबोचती है । इन्द्रियों में तथा उत्साह में शिथिलता प्रतीत होती है । इसकी पर्याप्त मात्रा रहने पर मन और बुद्धि अपना काम करती है । उत्साह और साहस, पराक्रम और पुरुषार्थ अपनी प्रदीप्त गतिविधियों का परिचय देने लगता है । मरने के बाद यह प्राण शरीर छोड़कर अन्तरिक्ष में भ्रमण विश्राम करने लगता है—स्वर्ग-नरक भोगता है और संस्कार के अनुरूप नया जन्म धारण करने की तैयारी करता है । इस अवधि में उसका अस्तित्व सूक्ष्म शरीर के रूप में बना रहता है । उसकी उद्विग्नता कभी-कभी भूत-प्रेत के रूप में भी प्रकट होती रहती है ।

स्थूल और सूक्ष्म शरीर आपस में गुँथे रहते हैं । स्थूल शरीर एक कारखाना और सूक्ष्म शरीर उसकी मोटरें घुमाने वाली बिजली । शरीर के भीतर वह कितनी है, किस स्थिति में है इसे शरीर विज्ञानी सरलतापूर्वक जाँच कर सकते हैं, पर क्या वह शरीर से बाहर भी पाया जाता है ? इसका उत्तर हाँ में दिया जा सकता है । भाप या कुहरे के रूप में उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्यमान पाया जाता है । वह चमकदार भी होता है । चमकीली भाप की तरह शरीर के चारों ओर उसे छाया हुआ देखने के लिए अब तद्विषयक यन्त्र उपकरण भी बनने लगे हैं । इसे सूक्ष्म शरीर कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी । प्राण निकल जाने पर यह चमकीला कुहरा भी समाप्त हो जाता है । सम्भवतः यही घनीभूत होकर सूक्ष्म शरीर की अनेकानेक भूमिकाएँ निभाता है ।

जीवित व्यक्ति के चारों और इसे छाया हुआ देख सकना अब सम्भव हो गया है । यह चेहरे के इर्द-गिर्द अधिक स्पष्ट और घनीभूत होता है ।

देवी-देवताओं के चित्रों में उनके चेहरों के इर्द-गिर्द यह तेजस् आभामण्डल के रूप में देखा जा सकता है । महामानवों—ऋषियों के चेहरे पर एक विशेष ज्योति छाई रहती है । इसका प्रभाव क्षेत्र दूर-दूर तक होता है । वे उसके द्वारा दूसरों को प्रभावित कर लेते हैं, आकर्षित एवं सहमत भी । विरोधियों को सहयोगी बना लेना इनके बायें हाथ का खेल होता है । आक्रमणकारी उनके निकट पहुँचते-पहुँचते हक्के- बक्के हो जाते हैं ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर को मारने के लिए उनके विरोधियों ने एक किराये का हत्यारा भेजा । वह छुरे से आक्रमण करने आया । टैगोर अपने कमरे में अकेले थे । कविता लिखने में व्यस्त थे । आँख उठाकर देखा तो उस आक्रमणकारी का प्रयोजन समझ गए । कड़क कर कहा—"देखते नहीं मैं कितना जरूरी काम कर रहा हूँ । उस कोने में बैठ जाओ । जब मेरा काम पूरा हो जाय तब अपना काम करना । आक्रमणकारी उनके रौब में आ गया और एक कोने में बैठ गया । वे कविता लिखने में तन्मय हो गए । अब निवृत्त हुए तो सिर उठाकर उस व्यक्ति को अपना काम करने के लिए पुकारा, पर वह तो भयभीत होकर पहले ही गायब हो चुका था ।"

इस तेजस् को आध्यात्मवादी साधक अपनी खुली आँखों से भी देख सकते हैं और उसका स्तर देखकर किसी के व्यक्तित्व एवं मनोभावों का पता लगा लेते हैं । अब नई वैज्ञानिक खोजों के आधार पर, इस तेजोवलय के आधार पर मनुष्य की शारीरिक और मानसिक रुग्णता का पता लगाने और तद्नुरूप उपचार करने लगे हैं । आध्यात्मवादी इसी तेजोवलय को देखकर उसके चिन्तन, चरित्र एवं स्तर का पता लगा लेते हैं ।

चेहरे के इर्द-गिर्द विशेष रूप से और समस्त शरीर के आसपास सामान्य रूप से फैले रहने वाले इस तेजोवलय या आभामण्डल को वैज्ञानिक भाषा में 'औरा' कहते हैं । यह चेहरे की तरह उँगलियों के पोरों में भी अतिरिक्त मात्रा में पाया गया है । हाथ का स्पर्श करके योगीजन दूसरों को कष्ट मुक्त करते हैं । इस प्रक्रिया के साथ अन्य प्रकार के आशीर्वाद भी देते हैं ।

शरीर शास्त्री अब इस 'औरा' के सम्बन्ध में तरह-तरह की खोजें कर रहे हैं और ऐसे उपकरण बना रहे हैं जिनसे उसे देख सकना सम्भव हो सके । इस सन्दर्भ में हॉर्वर्ट एडल मैन की खोजें प्रख्यात हैं और वे प्रामाणिक भी मानी जाती हैं । उन्होंने अपनी खोजों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है ।

वाल्टर जान किलनर लन्दन के सेन्ट थामस अस्पताल में सर्जन थे । उन्होंने अस्पताल के काम से छुट्टी लेकर इलेक्ट्रोथिरेपी पर काफी खोजबीन की और इसी सन्दर्भ में "औरा" परीक्षण को एक सशक्त माध्यम पाया ।

जर्मन के वैज्ञानिक कार्लवान राइखन वाल ने तथा अमेरिका के डॉक्टर एडविन वाविट ने भी इस खोज में बहुत समय लगाया और श्रम किया । उनके प्रयास से न केवल 'औरा' का देख सकना सम्भव हुआ वरन् मनुष्य को व्यक्तित्व सम्बन्धी अनेकों अविज्ञात जानकारियों का प्रकटीकरण सम्भव बनाया ।

डॉ. किलनर ने वे विधियाँ आविष्कृत कीं, जिनके आधार पर 'ऑरा' को अधिक अच्छी तरह सरलतापूर्वक देख सकना सम्भव हो सके । इस सम्बन्ध में अपनी खोजों का निष्कर्ष उन्होंने 'दि ह्यूमन एटमासफियर' पुस्तक के रूप में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है ।

थियोसोफिकल सोसाइटी के मान्य ग्रन्थ "सीक्रेट डॉक्टरिन' में इस तेजोवलय को "एथरिक डवल" के रूप में प्रतिपादित किया है । उसमें इसे मनुष्य के सूक्ष्म शरीर का आभास बताया गया है ।

हॉर्वर्ड एडल मेन तो शारीरिक, मानसिक रोगियों की जाँच-पड़ताल इस तेजोवलय का निरीक्षण, परीक्षण करके किया करते थे । तद्नुसार चिकित्सा करते जो बहुत सफल रही । उनके अतिरिक्त अब अन्य विज्ञानवादी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी औरा की वास्तविकता और उपयोगिता पर सुविस्तृत शोध प्रयास करने में संलग्न है ।

भौतिक विज्ञान में तेजोवलय की भिन्नता उसमें मिले, पाये जाने वाले रंगों के आधार पर करते हैं । जिस प्रकार हर व्यक्ति के चेहरे की बनावट में भिन्नता होती है । उँगलियों के पोरों की लकीरें भी किसी की किसी से नहीं मिलती । उसी प्रकार आभामण्डल के रंगों की गहराई हल्कापन, मिश्रण आदि की भिन्नता रहती है और उस आधार पर व्यक्ति का वर्गीकरण विश्लेषण किया जाता है ।

आध्यात्मवाद की एक धारा में मनुष्य के पसीने की गन्ध सूँघ करके भी उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति की जाँच पड़ताल की जाती है । पहने हुए कपड़े में भी यह गन्ध रहती है । जब तक उसे धोया न गया हो तब तक उसे परीक्षण का माध्यम बनाकर कई योगाभ्यासियों को उपचार करते देखा गया है । यह भी तेजोवलय के साथ जुड़ा होता है । कृत्रिम गंध शरीर पर लगी होने या साबुन आदि से उसे धो डालने के उपरान्त वह प्रभाव समाप्त हो जाता है तब परीक्षण सम्भव नहीं रहता ।

मानवी काया में प्रचण्ड प्राण ऊर्जा का अस्तित्व

आँखों से शरीर के अवयव दीखते हैं । कुरेदने पर रक्त, माँस और हड्डियों का ईंट, चूना सामने आ खड़ा होता है । सूक्ष्मदर्शी यन्त्रों में कोशिकाओं और ऊतकों का जाल-जंजाल विचित्र हलचलें करता हुआ देखा जा सकता है । विद्युत विज्ञानी उसके तन्त्र समुच्चय में मस्तिष्कीय बिजली दौड़ती हुई देखते हैं । उतने पर भी यह रहस्य प्रायः अविज्ञात ही बना रहता है कि इसी काया में ऊर्जा के प्रचण्ड ज्वालामुखी धधकते रहते हैं । धरती के भीतर घुसने पर कुछ ही गहराई पर इतनी आग पायी जाती है जिससे कठोर से कठोर धातु भी द्रवीभूत स्थिति में रह सकती है । यह आग प्रत्यक्षतः अविज्ञात ही है । धरती की ऊपरी पर्तों पर उसका कोई प्रमाण नहीं मिलता । रहस्यमय तथ्यों की जानकारी के लिए गहराई में उतरना ही आवश्यक है ।

मानवीय सत्ता की गहराई में उतरने पर उसमें ऊर्जा निर्झर उछलते हुए देखे जा सकते हैं । दबे पड़े रहने पर भी खदानों की बहुमूल्य खनिज सम्पदा का पता नहीं चलता । जमीन के नीचे बहने वाले महानदों की जलराशि ऊपरी सतह पर रहने वाले को कहाँ मिल पाती हैं । लाभ तो गहरी डुबकी लगाने वाले गोताखोर ही पाते हैं । बहुमूल्य मोती कमाने का लाभ और श्रेय उन्हीं को मिलता है ।

आग और बिजली की ऊर्जा का लाभ पग-पग पर उठाया जाता है । यदि उनका उपयोग कर सकना सम्भव न रहे तो मनुष्य फिर अपनी आदिम स्थिति में लौट जायेगा और वनमानुषों की तरह पिछड़ा हुआ जीवन जीने लगेगा । दृश्यमान भौतिक प्रगति के पीछे भौतिक ऊर्जा के चमत्कार ही देखे जा सकते हैं । यही बात व्यक्तित्व के सम्बन्ध में है । उसकी सारी विशेषता एक जीवन्त विद्युत शक्ति के ऊपर निर्भर है । आध्यात्म की भाषा में इसे प्राण कहते हैं । चेतन आत्मा को क्रियाशील बनाये रहने और अभीष्ट लक्ष्य की दिशा में द्रुत गति से बढ़ने की सामर्थ्य प्रदान करने का आधार उस प्राण ऊर्जा को ही माना जा सकता है ।

प्रश्नोपनिषद् में प्राण तत्व की अभ्यर्थना करते हुए ऋषि ने कहा है "हे प्राण आप ही प्राणियों, प्राण-धारियों के जीवन हैं । निर्वाह के साधन जुटाने वाली अग्नि आप से ही पैदा होती है । आप ही हमारे पिता हैं आपकी शक्ति के सहारे ही वाणी, कान, नेत्र और अन्तःकरण में गतिशीलता रहती है । हमारी सुरक्षा और प्रगति का भार आप ही उठाते हैं । कृपा कीजिए और हमसे विलग न होइये ।

प्राण की सुषुप्ति ही दुर्बलता है । पिछड़ापन इसी को कहते हैं । इसका अभाव किसी में भी नहीं है । प्रसुप्ति और जागृति का अन्तर ही पाया जाता है जो उसे जगाने का प्रयत्न करते हैं वे प्रतिभावान बनते हैं । शरीर में ओजस्, मन में तेजस् अन्तःकरण में वर्चस् के रूप में इसी प्राण ऊर्जा के अस्तित्व और विकास का परिचय मिलता है ।

काया का विद्युतीय विश्लेषण करने वाले विज्ञानी बताते हैं कि शरीर और मस्तिष्क के क्वैन्टम फील्ड की शक्तिमत्ता शरीर गठन पर नहीं वरन् उसकी आन्तरिक क्षमता पर निर्भर है । यह नाड़ियों में पायी तो जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है पर उनसे उत्पन्न नहीं होती । उसके उत्पादन सूत्र कहीं अन्यत्र हैं, उन उद्‌गमों को खोजा नहीं जा सकता है । इस सन्दर्भ की शोधें बताती हैं कि शरीर अन्न, जल, श्वास आदि के सहारे अपनी आन्तरिक ऊर्जा को प्रज्वलित रखने में ईंधन का काम लेता है । वे जलते तो हैं पर जलने की मूल क्षमता उनकी अपनी नहीं है । शरीर में भीतर काम करने वाली ऊर्जा का यत्किंचित परिचय उसमें पायी जाने वाली रेडियोधर्मी विकिरण—गामा विकिरण—विद्युत चुम्बकीय विकिरण के रूप में मिलता है, पर यह पता नहीं चलता कि इसका उद्‌गम स्रोत कहाँ है ? शरीर और मन इस अनुदान को ब्रह्माण्ड व्यापी महाप्राण से अपनी आकर्षण क्षमता के अनुरूप मात्रा में प्राप्त करता है । शरीरगत ओजस्विता और मनोगत तेजस्विता की संयुक्त शक्ति को प्राण कहा गया है । यही है वह ऊर्जा भण्डार जिसके सहारे जीवन संयन्त्र के अनेकानेक कलपुर्जे अपना-अपना काम करते रहे हैं ।

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. टेल्मामास ने फोटोग्राफी के कुछ नमूने एकत्र कर यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर अपने आस-पास कुछ प्रकाश किरणें बिखेरता रहता है । यह विकिरण समीपवर्ती व्यक्ति पर अनायास ही प्रभाव डालने में सक्षम होता है । उन्होंने दुष्ट और क्रोधी व्यक्ति को देखते ही परेशान होने और कोमल हृदयों वाले सन्त सहिष्णु पुरुषों के सामीप्य में मिलने वाली शान्ति और प्रसन्नता का भी उल्लेख किया है और लिखा है कि यह भी सम्भव है कि इस विकिरण में अपनी इच्छा शक्तियों को जोड़कर सामने वाले को मनचाही दिशा में प्रभावित किया जा सके । इस विधान से दूसरे की शक्ति का अवशोषण भी किया जा सकता है और सामान्य स्थिति में तो शरीर से बहुत न्यूनतम मात्रा में अवरक्त (इन्फ्रारेड) किरणों का विकिरण होता है पर असामान्य स्थिति में यह मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाती है । इसलिए एक मनुष्य का उग्र और उत्तेजित होना समीप वाले सैकड़ों लोगों को बेचैन कर देता है ।

पदार्थों की चुम्बकीय शक्ति के बारे में वैज्ञानिकों को बहुत पहले पता था पर उसका विधिवत् अन्वेषण एवं रहस्योद्‌घाटन विनयना के डॉ. फ्रेडरिक मेस्मर ने किया । सन् १७८० में उन्होंने इस तथ्य के बारे में प्रयोग द्वारा बताया कि एक व्यक्ति की विद्युत चुम्बक दूसरे को प्रभावित और उपयोगी सहायता कर सकती है । उन्होंने इस प्राण तत्व का नाम एनीमलमैगनेट रखा और इस आधार पर चिकित्सा पद्धति विकसित की और रोगियों के कष्ट निवारण में उत्साहवर्धक सफलता प्राप्त की । शोध जारी रही । सन् १८१३ में मोड़ाल्यूज का "मेग्नेटिज्म" का इतिहास प्रकाशित हुआ तो लोगों ने जाना कि भले ही विधिवत इस विद्या का नामकरण और प्रचलन न हुआ हो पर इस तथ्य को एक सीमा तक समझने और उससे लाभ उठाने की बात चिरकाल से चली आ रही है । प्राण चिकित्सा की पद्धति फ्रांस में बहुत लोकप्रिय हुई । अस्तु इसके पक्ष और विपक्ष में भारी विवाद उठ खड़ा हुआ । इसके सम्बन्ध में तथ्यों का पता लगाने के लिए फ्रांस सरकार को दो बार जाँच कमीशन नियुक्त करने पड़े। सन् १७८४ के कमीशन की रिपोर्ट असमाधान कारक रही अस्तु १८२६ में दूसरा कमीशन बैठा । उसने काफी जाँच पड़ताल के उपरान्त प्राण शक्ति और उसके उपचार को वैज्ञानिक एवं तथ्य पूर्ण घोषित किया । आज तो फ्रांस के ही नहीं कितने ही प्रगतिशील देशों के अस्पताल इस विद्या का प्रयोग कर रहे हैं और उत्साहवर्धक निष्कर्षों पर पहुँच रहे हैं ।

कितने ही वैज्ञानिकों ने मानवी प्राण शक्ति की वैज्ञानिकता एवं उसकी प्रयोग प्रक्रिया के पक्ष में अनेकों आधार एवं प्रमाण प्रकाशित किए हैं । प्रो. विलियम क्रुक्स वेलिस इस सन्दर्भ में बहुत आगे रहे । अमेरिका में क्रिश्नच साइन्स, न्यूथाट, मेन्टल हीलिंग आदि नामों से चिकित्सा उपचार के रूप में इस शक्ति का प्रयोग किया जाता है उसकी वैज्ञानिकता का प्रतिपादन करने के लिए मेस्मेरिज्म एलेक्ट्रोबायोलॉजी साइकोथिरेपी आदि कई प्रतिपादन चल रहे हैं और शोध निष्कर्षों में अनेक ग्रन्थ छप रहे हैं । यह प्राणाग्नि आमतौर से सूखी लकड़ी में पायी जाने वाली आग की तरह होती है जो आमतौर से अविज्ञात रहती है पर परस्पर रगड़ने से उसे प्रकट प्रत्यक्ष होते हुए भी देखा जा सकता है । शरीरगत तापमान और विद्युत प्रवाह की यन्त्रों से नापतोल की जा सकती है । पर वह अग्नि वैसी नहीं होती जैसी चूल्हे में जलती है । इतने पर भी देखा गया है जब प्राणाग्नि शरीर से फूट निकली और अपने अस्तित्व का प्रमाण ऐसे देने लगी मानो वह भौतिक अग्नि का रूप धारण कर सकने में समर्थ है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

२.२७ प्राण शक्ति : एक दिव्य विभूति

कई बार जंगलों में सूखे पेड़ हवा के जोर से परस्पर रगड़ कर अग्नि उत्पन्न कर लेते हैं और उसके बढ़ जाने पर पूरे जंगल को जला डालने जैसा उत्पादन खड़ा होता देखा गया है । भूमिगत अग्नि आमतौर से भीतर ही दबी पड़ी रहती है और ज्वालामुखी के रूप में लावा उगलती देखी जाती है । भूकम्प भी उसी भीतरी अग्नि की उथल-पुथल के परिणाम होते हैं । दूध में घी की तरह काय सत्ता में समायी हुई यह प्राणाग्नि कई बार अलग से ही प्रकट होती है और यह बताती है कि शरीर में ६०% पानी और १०% में अन्य रसायनिक पदार्थ होने का विश्लेषण ही पर्याप्त नहीं है उसमें यह तथ्य भी जुड़ना चाहिए कि आग की प्रचण्ड भट्ठी और चुम्बकीय विद्युत की उत्पादन फैक्ट्री भी इसी के भीतर विद्यमान है ।

सामान्यतया तो प्राणाग्नि अपने अभीष्ट प्रयोजनों में ही लगी रहती है पर कभी-कभी ऐसे प्रसंग भी देखने में आते हैं जिसमें उस अन्तः ऊर्जा का विस्फोट भौतिक अग्नि की तरह प्रकट होकर अपनी सत्ता का परिचय देता है । कई बार शरीरों से अग्नि प्रकट होती हुई और उसे जलाती तक देखी गई है, यह अग्नि सर्वथा चूल्हे की आग की तरह ही नहीं होती, वैसी दीख तो पड़ती है पर उसमें विद्युतीय प्रभाव भी जुड़ा रहता है तथा अन्य कई प्रकार की विभिन्नताएँ-विशेषताएँ पायी जाती हैं ।

संसार के सरकारी रिकार्डों में ऐसा अनेक घटनाओं का उल्लेख है जिसमें शरीर के भीतर से ही अग्नि उत्पन्न होने और उसके कारण मनुष्य के जल मरने का तथ्य सामने आया है ।

३० जुलाई १६३६ की बात है इंग्लैण्ड में एक परिवार नाव में यात्रा कर रहा था । अचानक उसी समुदाय की एक महिला के शरीर में से अग्नि प्रकट हुई वह चिता की तरह फैलने लगी । बुझाने का शक्ति भर उपक्रम किया पर आग रोकी न जा सकी और वह वहीं जलकर ढेर हो गई । पूरी तरह व्यक्तिगत और सरकारी जाँच हुई पर पता न चल सका कि यदि आग बाहर से लगी तो कैसे ? और भीतर से प्रकट हुई तो क्यों कर ? दोनों ही जाँच-पड़तालों में ऐसा कुछ हाथ न लगा जिससे उस अग्निकाण्ड के कारण को जाना जा सकता ।

इंग्लैण्ड के सरकारी रिकॉर्डों में ऐसे आश्चर्य जनक अग्निकाण्डों, घटनाओं का उल्लेख है । अमेरिका में ऐसी घटनाओं में से जिनकी जाँच-पड़ताल पुलिस को करनी पड़ी है उनकी संख्या एक सौ से ऊपर चली गई है । अन्य देशों में अविज्ञात रूप से जो घटनाएँ और भी होती होंगी उनकी तो किसी को जानकारी नहीं है ।

जासूसी साक्षी, स्थानीय प्रमाण, वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल जैसे सभी आधार जब इन घटनाओं का कोई कारण ढूँढ़ने में असमर्थ रहे तो विवशता में वे सरकारी फाइलें बन्द कर देनी पड़ीं जो मुद्दतों तक जाँच-पड़ताल के लिए खुली रहीं । भारी माथा-पच्ची और दौड़-धूप के बाद यदि कुछ नतीजा न निकले तो आखिर किया क्या जाय ?

प्राचीनकाल में ऐसे व्याख्यान सुनने को मिलते हैं जिनमें योगाग्नि प्रकट करके अपनी भीतरी अग्नि द्वारा आप ही जल मरने का वर्णन है । कई योगी ऐसा करते सुने हैं । सतियों के बारे में ऐसा ही कहा जाता है कि पति के साथ वे योगाग्नि के सहारे जलीं, किसी ने चिता में आग नहीं लगायी पर वे वर्णन कथानक हैं । उनके प्रमाण में ऐतिहासिक साक्षी नहीं मिलता जिससे उसे तथ्य की तरह स्वीकार किया जा सके ।

शरीर में भीतर से अग्नि प्रकट होना बहुत ही उलझी हुई वैज्ञानिक पहेली है । शरीर में ६०% पानी भरा है उसे जलने के लिए ३ हजार डिग्री फारेनहाइट गर्मी चाहिए । उतनी गर्मी भीतर से उत्पन्न करने वाले रासायनिक पदार्थ शरीर में कहाँ हैं । जिनके सहारे शरीर में प्रज्वलन एवं अग्नि जलना सम्भव हो सके । इस प्रकार के प्रत्यक्ष प्रकटीकरण और परोक्ष रूप में मनस्विता, ओजस्विता, तेजस्विता के रूप में दृष्टिगोचर होने वाली ऊर्जा तपस्वी तत्व ज्ञानियों द्वारा प्रतिपादित प्राणाग्नि ही है । उसका जागरण, अभिवर्धन और प्रतिपादन और सदुपयोग कर सकना यदि सम्भव हो सके तो मनुष्य सच्चे अर्थों में प्राणवान हो सकता है । महाप्राण मानवों की सामर्थ्य हर दृष्टि से क्षेत्रों में असीम ही परिलक्षित होती है ।

भारतीय मनीषियों और तत्त्ववेत्ताओं ने गायत्री उपासना पर अधिक जोर इसलिए दिया है कि हर व्यक्ति प्राण की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध रखकर ही अपनी लौकिक एवं पारलौकिक सुख-शान्ति अक्षुण्ण रख सकता है । उपरोक्त तथ्यों का प्रतिपादन आर्ष सिद्धान्तों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक विज्ञान द्वारा पुष्टि है । उसका लाभ श्रद्धा भावना युक्त गायत्री उपासना और प्राणायाम दोनों ही तरह से लिया जा सकता है ।

प्राण ऊर्जा हमारी सर्वोपरि सम्पदा

समुद्र की लहरें अपनी हलचलों के कारण बिजली उत्पन्न करती हैं । ज्वार-भाटों से विद्युत प्रवाह निःसृत होता है । वैज्ञानिक इस खोज में हैं कि यह अन्तरिक्ष में छितराती रहने वाली बिजली किस प्रकार रोक-थाम कर रखी जाय और उसे किस तरह मानवी उपयोग के कार्यों में लगाया जाय ? निकट भविष्य में इस दिशा में महत्त्वपूर्ण सफलताएँ मिलने की भी आशा की जाती है ।

मनुष्य शरीर को भी एक प्रकार का समुद्र कहा जा सकता है जिसमें असंख्य नस-नाड़ियाँ, नदी, नालों की तरह बहती हैं, श्वास-प्रश्वास के ज्वार-भाटे उठते हैं । मस्तिष्क का जनरेटर और हृदय का पम्पिंग स्टेशन मिल-जुलकर जिस स्तर की ऊर्जा उत्पन्न करते हैं उसे मानवी विद्युत का नाम सहज ही दिया जा सकता है । इस बिजली से शरीर और मन मस्तिष्क की अगणित हलचलों का—सृजन-विसर्जन का क्रम चलता है । आवश्यक क्रिया-कलापों के लिए क्षमता इसी विद्युत उत्पादन के क्रिया-कलाप द्वारा सम्भव होती है ।

शरीर विज्ञान क्षेत्र में सर्वविदित इस मानवी विद्युत के अतिरिक्त एक चेतन बिजली भी मानवी सत्ता के साथ जुड़ी हुई है इसे 'प्राण' कहते हैं । ब्रह्म के अंशधर जीव का चिन्तन परक एवं सम्वेदनात्मक गतिविधियों का उभार एवं अवसाद इसी प्राण शक्ति की स्थिति पर निर्भर रहता है । इस प्राण शक्ति की प्रखरता ही शरीर में संव्याप्त होकर उसे ओजस्वी बनाती है । मनःसंस्थान में उभरती है, जिससे व्यक्ति मनस्वी दीखता है और अन्तःकरण में उसका समुचित समावेश होने पर मनुष्य तेजस्वी बनकर अपने आत्म तेज से समीपवर्ती वातावरण को प्रकाशित करता है ।

शारीरिक काम करने वाला आण्विक ऊर्जा प्रवाह तथा चेतना में संव्याप्त प्राण तत्व के सम्मिश्रण से जो ब्रह्मवर्चस उत्पन्न होता है उसे मानवी सत्ता की सबसे बड़ी सशक्त क्षमता कहा जा सकता है । सम्पदाओं और विभूतियों की दृष्टि से उसका मूल्यांकन किया जाय तो फिर उसे ऋद्धि-सिद्धि कह सकते हैं । योगियों और देवताओं में इसी स्तर की विशेषताएँ पायी जाती हैं । देवताओं के प्रतीक चित्रों में उनके चेहरों पर तेजोवलय छाया हुआ अंकित किया जाता है । अंग्रेजी में उसे "औरा" कहते हैं । वैज्ञानिक भाषा में इसे प्राणि चुम्बक के नाम से पुकारा जाता है । यान्त्रिक प्रयोजनों को चुम्बक शब्द से सामान्य "मैगनेट" का अर्थ लिया जाता है, पर उसकी चर्चा जब प्राणि सन्दर्भ में होती है तो उसे ऐसी सचेतन विद्युत के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है जो न केवल पदार्थ परमाणुओं को वरन् वातावरण में अपने प्रवाह को फेंकती और सजातीय जीवधारियों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती हैं ।

इस व्यक्ति चुम्बक की क्षमता विचार शक्ति के द्वारा अपने ऊपर-सम्पर्क क्षेत्र में तथा समस्त ब्रह्माण्ड में उत्पन्न होने वाले संक्षोभों के आधार पर अनुभव की जाती है । इसी शक्ति के सहारे अतीन्द्रिय क्षमताएँ उभरती हैं और ब्रह्माण्डीय चेतना के साथ सम्पर्क मिलाते हुए सूक्ष्म जगत की गतिविधियों को समझ सकना तथा उनको अपने पक्ष में झुका सकना सम्भव होता है ।

साधना का उद्देश्य इसी चुम्बकत्व का—ब्रह्मवर्चस का अभिवर्धन है । इसी के सामान्य मनुष्य को राजर्षि, ब्रह्मर्षि और देवर्षि स्तर तक पहुँचने का अवसर मिलता है । जीवात्मा को क्रमशः महात्मा, देवात्मा और परमात्मा स्तर तक ऊँचा उठा ले जाने वाले प्रचण्ड ईंधन के रूप में इसी आत्म-विद्युत का—प्राण चुम्बक का प्रयोग करना पड़ता है । संयम ब्रह्मचर्य से, मनोनिग्रह से, मौन-व्रत उपवासों से, ध्यान-धारणा से तथा अनेक सरल कठोर विधि-विधानों से इस या उस प्रकार से साधना मार्ग के पथिकों को इसी प्राण ऊर्जा के अभिवर्धन, नियन्त्रण एवं उच्चस्तरीय प्रयोजनों में संलग्न करने की विधि व्यवस्था से अवगत कराया जाता है । वैज्ञानिक क्षेत्र में कुछ हल्के स्तर पर इसी प्राण विद्युत की खोज-बीन सम्भव हुई है । क्रमशः इस सन्दर्भ में उपयोगी निष्कर्ष भी निकल रहे हैं ।

जैविक विद्युत शास्त्र के प्रवर्तक डॉ. एच. ए. वर के अनुसार प्राणिज विद्युत का आधार भी भौतिक विद्युत मे भिन्न होता है और उसका क्रिया-कलाप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी । प्राणिज विद्युत में, डॉ. वर के अनुसार इच्छा और बुद्धि भी सूक्ष्म रूप में होती है । इसी के चलते प्राणिज विद्युत अपने क्षेत्र में विशिष्ट परिस्थितियों एवं साधनों की संरचना करती है । किस प्राणी के डिम्ब से किस आकृति-प्रकृति का जीव उत्पन्न हो, यह मात्र उस प्राणी की रासायनिक संचरना पर निर्भर नहीं । अपितु रज और शुक्र कीटों के अन्दर भरी चेतना ही इसका मुख्य निर्धारक तत्व है । यदि ऐसा न होता, तो मात्र रासायनिक अन्तर के बल पर कोटि-कोटि वर्ग के प्राणियों की उत्पत्ति व उनकी वंश परम्परा का प्रवाह-क्रम कायम नहीं रह पाता । जीव-जातियों की संख्या सीमित ही होती ।

मानव-शरीर की कोशिकाओं की आन्तरिक संरचना एक महत्त्वपूर्ण आधार है—माइटोकोन्ड्रिया । भोजन का स्वरूप रस, रक्त, माँस, अस्थि आदि क्रम से इस संस्थान तक पहुँच कर ऊर्जा का रूप लेता है । ऊर्जा ही कोशिका को सक्रिय रखती है । एक माइटोकोन्ड्रिया में केन्द्रित ऊर्जा को लघुत्तम प्राणांश कह सकते हैं । सम्पूर्ण काय-कलेवर में इसका सम्पुन्जन महाप्राण कहलाता है तथा वही ऊर्जा ब्रह्माण्ड-व्यापी रूप में विराट् प्राण कही जाती है । विराट् प्राण है—ऊर्जा सिन्धु और कोशिकागत ऊर्जा है—ऊर्जा बिन्दु । यह दोनों परस्पर अन्योन्याश्रित हैं ।

मनुष्य की अतीन्द्रिय सामर्थ्य एक शक्तिशाली चुम्बकत्व है । असम्भाव्य कार्य भी उसके द्वारा सहज सम्भव हैं । आँखों से न देख पाने वाले स्थानों की वर्तमान में घट रही घटनाएँ स्पष्ट देख पाना और उनका सचित्र वर्णन कर पाना, एक स्थान से दूसरे स्थान को परस्पर सम्वादों का आदान-प्रदान, सूक्ष्म-जगत में पक रही भावी घटनाओं की सूक्ष्म क्रियाओं के संकेतों को समझ कर भविष्य कथन, जो कि स्थितियों के सर्वथा अप्रत्याशित परिवर्तन की स्थिति में ही गलत सिद्ध हों तो हों अन्यथा जिनका सही होना सुनिश्चित है, आदि सभी असामान्य कार्य इसी चुम्बकत्व के द्वारा सम्पन्न होते हैं । तप, साधना द्वारा प्रेरक प्राप्त कर लेने वाले दूसरों को उपयोगी व सार्थक प्रेरणा देकर उन्हें लाभान्वित कर सकते हैं ।

प्रत्येक व्यक्ति एक अच्छा-खासा चुम्बक है । चुम्बक की एक विशेषता है 'आकर्षण' । दूसरी विशेषता है एकरसता की । तीसरी स्थिर दिशा की ।

व्यक्ति अपनी चुम्बकीय शक्ति का सायास विकास कर सकता है । विकसित सामर्थ्य स्पष्ट दिख जाती है । यद्यपि सामान्यतः वह होती सभी में है, पर अल्पप्राण मनुष्यों की सामर्थ्य प्रकट नहीं हो पाती ।

चुम्बक की ही तरह यदि मनुष्य अपने मन की प्रवृत्तियों रूपी चुम्बकीय कणों को सही ढंग से सुव्यवस्थित व क्रमबद्ध कर ले तो उसकी शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं । ऐसे महान व्यक्तित्वों में प्रबल आकर्षण होता है-और वे जहाँ भी हों, लोग चारों ओर से उनकी ओर खिंचे चले आते हैं ।

जिस तरह चुम्बक में 'एकरसता' होती है और कितने भी विखण्डित रूप में होने पर भी उसमें आकर्षण क्षमता बनी ही रहती है, उसी तरह कभी बाह्य रूप में दब जाने या छोटे हो जाने पर भी महापुरुषों के व्यक्तित्व में एकरसता बनी रहती है । उसमें क्षुद्रताएँ और विसंगतियाँ नहीं आ पातीं तथा अनेकों लोगों से एक साथ सम्बन्ध रखने पर भी व्यक्तित्व में अपने-पराये के पक्षपात की रंच मात्र प्रवृत्ति नहीं होती ।

'दिशा की स्थिरता' का गुण तो महापुरुषों की सदा ही विशेषता होती है । वस्तुतः लक्ष्य केन्द्रित व्यक्ति ही महान बन सकते हैं । परिष्कृत व्यक्तित्व अपने जीवन मूल्यों को कभी भी खोते नहीं, क्योंकि ये उनके अस्तित्व और उनकी अस्मिता का ही पर्याय बन जाते हैं । अपनी इसी अविचलन निष्ठा द्वारा वे औरों को सदा सही प्रेरणा देते रहते हैं ।

यों चुम्बक को बार-बार पटका जाय और ऊपर-नीचे ऊल-जलूल ढंग से उल्टा-पल्टा जाय, तो उनकी आकर्षण शक्ति लुप्त ही हो जाती है । अपनी पुण्य-पूँजी, शक्ति-सामर्थ्य और सद्गुण-सम्पदा का दुरुपयोग करने वाले तथा पतित क्रियाओं, विचारणाओं को किसी मानसिक दुर्बलता वश अपना लेने वाले मनुष्य अपनी सारी विशेषताओं और महान गुणों के बावजूद भी पतन के खड्ड में गिर जाते हैं ।

पृथ्वी अपने चतुर्दिक व्याप्त चुम्बकीय क्षेत्र के सहारे समस्त ब्रह्माण्ड में फैली विशेषताओं में से अपने लिए आवश्यक विशेषताएँ संचित करती रहती है अन्यथा उसका अक्षय भण्डार भी एक दिन रिक्त ही हो जाय और साधन-सम्पन्न धरती विपन्ना-दीना ही बन जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य भी अन्तरिक्ष से बरसने वाले अनेक अनुदानों को अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप स्वीकार-अस्वीकार करता रहता है । ब्रह्म-चेतना से तादात्म्य ही आध्यात्मिक महापुरुषों को अनन्त सामर्थ्य देता है अन्यथा उनको मुख्यतः घटिया अन्तःकरण वाले लोगों से भरी इस धरती में शीघ्र ही अपनी पुण्य-पूँजी लुटाकर कंगाल हो जाना पड़े ।

प्रत्येक व्यक्ति जैसा होता है, विश्व-ब्रह्माण्ड की वैसी ही सूक्ष्मधारा के प्रवाह से अनायास ही जुड़ जाता है और अपने चुम्बकत्व को बढ़ाता रहता है ।

जड़ अणुओं की गति एक तरह की विद्युत उत्पन्न होती है । उसमें चेतन सत्ता का समावेश होने पर जीवन का—जीवधारियों का आविर्भाव होता है । ध्रुवीय क्षेत्रों में उठने वाले चुम्बकीय तूफानों का प्रकाश 'अरोरा बोरीलिस' तेजोवलय के रूप में छाया रहता है । पृथ्वी के अन्य ग्रहों से संयोग की हलचलों का यह स्वरूप संकेत है । समुद्र का खारा जल नौकाओं, जलयानों से टकराने पर विद्युत तरंगें पैदा करता है ।

मानवीय शरीरगत जीवाणु भी ईथर एवं वायुमण्डल में भरे विद्युत प्रवाह से टकराकर विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं । जीवकोशों में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान विभिन्न रसायन तथा धातुएँ इन आघातों से उत्तेजित हो विद्युत प्रवाह पैदा करते हैं । प्रत्येक व्यक्ति में ऊष्मा तो होती ही है, विभिन्न स्तरों की विद्युत धाराएँ भी होती हैं । अब तो इन्हें यन्त्रों द्वारा भली-भाँति देखा, परखा जाने लगा है । उत्पन्न विद्युत, ऊर्जाओं का प्रकाश-वलय प्रत्येक व्यक्तित्व में चतुर्दिक व्याप्त रहता है, ध्रुवीय क्षेत्रों में चुम्बकीय तूफानों से उत्पन्न 'अरोरा बोरीलिस' की ही तरह । यह प्रकाश-वलय आन्तरिक चुम्बकत्व व विद्युत प्रवाहों के अनुरूप भिन्न-भिन्न होता है । तत्वदर्शी मनीषी किसी व्यक्ति के चतुर्दिक व्याप्त इसी तेजोवलय से उसका आन्तरिक चेतना स्तर व अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ भाँप लेते हैं ।

तपस्वी तेजस्वी बनता है । तपस्या का उद्देश्य तेजस्विता उत्पन्न करना है । यहाँ किसी को चेहरे की चमक के साथ इस आत्मिक आलोक की संगति नहीं जोड़नी चाहिए । स्वास्थ्य और सौन्दर्य शारीरिक विशेषताएँ हैं । नव-यौवन से सभी के चेहरे चमकते हैं । प्रौढ़ता के साथ रुक्षता आती है और वयोवृद्ध होने पर चेहरे पर तथा अन्यत्र झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं । इसी मौसमी परिवर्तन को देखकर आत्मिक तेजस्विता की न्यूनाधिकता नापी जाने लगी तब तो अनर्थ उत्पन्न हुआ ही समझा जायेगा । ब्रह्मतेजस् का रूप समझने के लिए संकल्प, धैर्य, दृढ़ता, श्रद्धा, निर्धनता, चरित्र, साहस, निश्चय जैसे गुणों को टटोलना पड़ेगा और देखना होगा कि भय और प्रलोभनों को छोड़कर—लोकमान्यता एवं आग्रहों की उपेक्षा करके मनुष्य किस सीमा तक सत्य का आग्रही होने और उसे अपनाने के लिए तैयार हो सका ।

महामानवों का उदात्त विनियोग, समर्थों का वैभव, पुरुषार्थियों का पराक्रम, नैष्ठिकों का चरित्र हम ब्रह्म तेजस् के रूप में देख सकते हैं । ईश्वर भक्ति इसी अक्षय वट के नीचे बैठकर होती है । आत्म-साक्षात्कार और ब्रह्म-साक्षात्कार का प्रयोजन पूरा करने के लिए हमें इसी उपार्जन को सुदामा की पोटली की तरह—शवरी के बेरों की तरह—गोपियों की छाछ की तरह संजोना पड़ता है ।

पेड़ पौधों में भी मनुष्य स्तर की बिजली होती है

मनुष्य शरीर का सूत्र संचालन विद्युत शक्ति से होता है । मस्तिष्क उस विद्युत का केन्द्र है और समस्त शरीर में बिखरे हुए ज्ञान तन्तु उसके संवाहक ।

समझा जाता रहा है कि शरीर का केन्द्र हृदय है । उसकी रक्त संचार पद्धति ही जीवन को बनाये रहती है । पर यह आंशिक सत्य है । हृदय की धड़कन बिजली के झटकों से देर तक जारी रखी जा सकती है । हृदय को अलग निकाल कर उसे कृत्रिम साधनों से धड़कता हुआ रखा जा सकता है, किन्तु मस्तिष्कीय बिजली का प्रवाह उसे न मिले तो जीवन सम्भव नहीं । अकेला हृदय किसी को सजीव बनाये नहीं रह सकता है । भले ही उसमें रक्त की अभीष्ट मात्रा विद्यमान हो ।

भूतकाल में नाड़ी चलना बन्द होने अर्थात् हृदय की धड़कन रुक जाने पर मनुष्य की मृत्यु घोषित की जाती थी पर अब ऐसा नहीं होता । मस्तिष्क का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विद्युत प्रवाह बन्द होना आत्यन्तिक मृत्यु होना समझा जाने लगा है ।

मानव शक्ति मात्र माँसपेशियों पर निर्भर नहीं है । जिन माँसपेशियों में जितने सशक्त ज्ञान तन्तु हैं, वे जितनी मात्रा में विद्युत उपलब्ध कराते हैं, मनुष्य में उतनी ही स्फूर्ति और सहन शक्ति रहती है । इसलिए प्राण विद्युत की अभीष्ट मात्रा का होना समर्थ जीवन के लिए आवश्यक समझा जाने लगा है ।

मानवी विद्युत मशीनों में काम आने वाली बिजली से भिन्न है । यही कारण है कि उसकी उपस्थिति सामान्य रूप से अनुभव नहीं होती । सूक्ष्म अंकन करने वाले मीटर ही उसका पता लगा सकते हैं किन्तु यान्त्रिक पद्धति से ऐसा नहीं हो सकता है कि उसे घटाने-बढ़ाने का कोई कार्यक्रम बनाया या अपनाया जा सके ।

पेड़-पौधे भी इस दृष्टि से मनुष्य की बिरादरी में ही आते हैं । उनमें पोषक रसायनों की भरमार तो है, जिसे वे उपयोगी मनोरंजन की तरह फूलों और खाद्य के रूप में फलों द्वारा देते रहते हैं । वायु शोधन उनका प्रमुख कार्य है । मनुष्य द्वारा छोड़ी कार्बन डाई-ऑक्साइड गैस वे स्वयं के काम लाते हैं और अपनी छोड़ी हुई ऑक्सीजन से मनुष्यों का पोषण करते हैं ।

इस पुरातन धारणा के अतिरिक्त अब इस सन्दर्भ में एक नयी मान्यता और जुड़ी है कि पेड़ों में बिजली भी होती है । उससे विद्युत घटक जैसा काम भी लिया जा सकता है और मनुष्य शरीर में इसकी जो कमी पड़ती है उसकी पूर्ति भी हो सकती है । यदि वृक्षों की छाया में घर, झोपड़ा बनाकर रहा जाय तो वह मानवी विद्युत को बढ़ाने और स्फूर्ति समर्थता प्रदान करने में सहायता करता है ।

भारतीय वैज्ञानिकों ने यह तथ्य बहुत पहले सिद्ध कर दिया था कि पेड़-पोधों में जीवन होता है । वे सुख-दुःख का अनुभव करते हैं । समीपवर्तियों से वार्त्तालाप करते हैं और एक-दूसरे को यथा सम्भव सहायता भी पहुँचाते हैं ।

अब आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसी श्रृंखला में एक और कड़ी जोड़ी है कि इस बिजली के माध्यम से वे छुटपुट कार्य भी हो सकते हैं जो बिजली या बैटरी की सहायता से किए जा सकते हैं ।

आन्ध्र विश्वविद्यालय के एक शोधार्थी ने पपीते के तने से वह कार्य करके दिखाया है जो टी. वी. एन्टीना द्वारा होता है । एन्टीना अन्तरिक्ष में भ्रमण करती हुई शब्द तरंगों को पकड़ता है । उसे नीचे जुड़े हुए टेलीविजन यन्त्र में भेजता है और दूरदर्शन का चित्र प्रदर्शन होने लगता है । बिना ऐन्टीना के भी टी. वी. चलाने का सहज तरीका यह है कि पतले तने वाले पेड़ों से वायुमण्डल में से विद्युत तरंगें पकड़ने का काम लिया जाय । इस प्रकार वे विद्युत धारक और संचालक बन बैठते हैं ।

वृक्षों की समीपता में रहने का लाभ वैसा ही है जैसा माता द्वारा अपने बच्चों को समीप रख दिया जाता है । छोटे बालक माताओं की गोदी में जितनी देर रहते हैं, उतनी देर उन्हें माता के शरीर से निकलने वाली बिजली प्राप्त होती रहती है । यह दुर्बल पक्ष के हित में है । पेड़ों विशेषतः कतिपय दिव्य वनस्पतियों की समीपता को शास्त्रों में अत्यधिक महत्त्व दिया गया है । उसे भी इसी प्रकार समझा जा सकता है । उससे शारीरिक और मानसिक कई प्रकार के लाभ हैं । अध्ययन के लिए पेड़ों के नीचे स्वच्छ वायु में बैठकर अपनी स्मरण शक्ति को अपेक्षाकृत अधिक तत्परतापूर्वक काम करती हुई देखा जा सकता है । बौद्धिक कार्य पेड़ों के नीचे बैठकर अधिक अच्छी तरह पूरे हो सकते हैं । पुरातन काल में ऋषि मनीषी आध्यात्मिक और भौतिक खोजें करते थे । उनके निर्वाह भव्य भवनों में नहीं बरन् सघन वृक्षावली के बीच ही होते थे । कवीन्द्र रवीन्द्र ने शान्ति निकेतन की स्थापना इसी रूप में की थी । पुष्पोद्यान में टहलना मनुष्य को ताजगी प्रदान करता है । मात्र सुगंधि का, स्वच्छ वायु का ही लाभ नहीं मिलता वरन् उस क्षेत्र में लहलहाती प्राण स्तर की ऊर्जा से भी लाभान्वित होने का अवसर मिलता है ।

इससे एक कदम और आगे बढ़कर कितने ही पौधों में भावनाएँ भी पायी जाती हैं और वे मनुष्य के साथ प्रेम सम्बन्ध जोड़ते हुए प्रसन्नता अनुभव करते हैं । कितने ही पौधे अपने मालिकों और मालियों के दुःख-सुख में भी साझी होते हैं । उनकी निकटता में अधिक प्रसन्न रहते और अधिक फलते-फूलते हैं । उनकी प्रसन्नता मनुष्य पर भी अपनी छाप छोड़ती

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । पौधों को मनुष्य की और मनुष्यों को पौधों की भाव सम्वेदना उभारती है । इस सम्बन्ध में डॉ. बेक्सटर द्वारा किए गए प्रयोग महत्त्वपूर्ण हैं । कितने ही पेड़-पौधों की प्रकृति में सौम्य, सात्विक भावनाओं का समावेश रहता है । वट, पीपल, आँवला, बेल, अशोक आदि को देवतुल्य माना गया है । इनकी समीपता में रहना उन्हें अपने निवास क्षेत्र में लगाना आयुष्य वृद्धि की दृष्टि से, आरोग्य, सुदृढ़ रखने के उद्देश्य से प्रत्यक्ष लाभदायक है । उनसे निकलने वाली तरंगें मनुष्य को प्रकृति सान्निध्य का लाभ देती हैं और शारीरिक और मानसिक आधि-व्याधियों के निराकरण में उपयोगी सिद्ध होती हैं । दिन में पौधे शीतलता और रात में गर्मी देते हैं । तापमान की घट-बढ़ से शरीर पर जो अनुपयुक्त प्रभाव पड़ता है उसे वृक्ष रोकते हैं । पेड़ पौधों का प्रेम और सान्निध्य एक प्रकार से प्रकृति के साथ घनिष्ठता बनाये रहना है । इससे हम उन्हीं की तरह सुविकसित होते और दूसरों की सहायता करने की प्रवृत्ति अपनाते हैं ।

प्राण चेतना का रहस्य समझें महाप्राण बनें

प्राण-तत्व अनादि और अनन्त है । मानवी काया का संचालन एवं स्थिर स्थापना इसी प्राण चेतना पर निर्भर है । यों तो शरीर की प्रकट, संरचना पंचतत्वों से निर्मित रासायनिक पदार्थों द्वारा होती है । जिसके क्रिया-कलापों का संचालन वैद्युतीय चेतना से होता है जिसे आध्यात्म की भाषा में अन्नमय कोश कहते हैं । पर इसका भी संचालन तन्त्र अन्यत्र है । इसी को प्राण या प्राणमय कोष कहते हैं । जैसे बिजली का प्रवाह बन्द हो जाने पर या घट-बढ़ जाने पर बल्व, पंखे आदि के कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है, उसी प्रकार शरीर के समस्त अवयव यथावत रहने पर भी प्राण विद्युत के क्रमबद्ध संचार में बाधा पड़ते ही मनुष्य भयंकर रोगों से ग्रस्त हो जाता है या मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।

यों सामान्य भाषा में प्राणवायु ऑक्सीजन को कहते हैं, किन्तु वस्तुतः ऐसी बात है नहीं । प्राण एक सचेतन विद्युत है जिसका विस्तार तो ब्रह्माण्ड व्यापी है, पर वह मनुष्य को उसकी चुम्बकीय क्षमता के अनुरूप उतनी ही मात्रा में मिलती है जितनी कि वह खींच सकने, धारण कर सकने या प्रयोग में ला सकने में समर्थ होता है । बहती हुई नदी सामने होते हुए भी उसमें से अपने बर्तन के अनुरूप ही जल ग्रहण कर सकते हैं । उसी प्रकार मनुष्य कितना प्राणवान बने, यह उसकी निजी स्थिति पर निर्भर है ।

यही ऊर्जा शरीर में चमक, स्फूर्ति, ताजगी, उमंग, साहस, उत्साह, संकल्प आदि विशेषताओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है । पेट में भूख और मन में कामोत्तेजना के रूप में भी इसी की प्रखरता का परिचय मिलता है । यह प्राण एक शरीर से दूसरे शरीर में भी आदान-प्रदान की स्थिति में रहता है । जिस प्रकार बिजली एक तार से दूसरे तार में, एक शरीर से दूसरे शरीर में दौड़ जाती है, उसी प्रकार बलिष्ठ का प्राण दुर्बल की ओर दौड़ जाता है । ऊँची सतह के तालाब को नीची सतह के तालाब के साथ जोड़ दिया जाय तो नीची सतह की ओर पानी दौड़ने लगेगा और तब तक दौड़ता रहेगा, जब तक कि दोनों बराबर लेविल पर नहीं पहुँच जाते हैं । बड़ों के चरण छूने, उनके सिर पर हाथ रखने, पीठ थपथपाने के पीछे यही सिद्धान्त काम करता है । बच्चों को गोदी में खिलाने के पीछे भी यही विद्या काम करती है । महाप्राण व्यक्ति स्वल्प प्राण वालों का स्पर्श करके रोग निवारण करते हैं । ब्रह्मचर्य के मूल में प्राण निग्रह ही काम करता है ।

आध्यात्मवेत्ताओं के अनुसार प्राणतत्व ही जीवनी-शक्ति है । इसका जो जितनी अधिक मात्रा में संरक्षण एवं ब्रह्माण्डव्यापी प्राण से आकर्षण, अवधारण कर लेता है, उतने ही अंश में वह जीवनी शक्ति से भरपूर माना जा सकता है । स्त्री शरीर निगेटिव और पुरुष शरीर पॉजीटिव होता है । इस प्रकार के संयोग-मिलन में पुरुष ही घाटे में रहता है । चुम्बन-आलिंगन भी एक प्रकार का संयोग ही है । इसलिए आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए किए गए अनुष्ठानों में इस प्रकार की चेष्टाओं का निषेध है । प्रतिभाशाली प्राणवान लोगों के सम्पर्क से दुर्बलों को प्राणतत्व का लाभ अनायास ही मिलता रहता है । इसी को मानवी विद्युत या जैव चुम्बकत्व कहते हैं । ओजस्वी, तेजस्वी इसी स्तर के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होते हैं । बैटरी, जनरेटर, मैग्नेट आदि को स्पर्श करने से जिस प्रकार छूने वाले के शरीर में बिजली दौड़ जाती है, उसी प्रकार की प्रतिक्रिया प्राण चेतना के क्षेत्र में भी होती है । प्राण सम्पन्न एक प्रकार का डायनमो बन जाता है जो अपने में विद्युत उत्पन्न करता और दूसरों को बाँटता रहता है । दुर्बल काया वाले भी तेजस्वी, प्रभावशाली होते देखे गए हैं और मोटे-तगड़ों में भी पस्त हिम्मत, डरपोक पाये जाते हैं । यह प्राण-तत्व की न्यूनाधिकता का ही प्रतिफल है ।

कभी-कभी प्राण विद्युत शरीर कलेवर में से उछलकर बाहर आने लगती है तो ऐसे व्यक्ति बिजली के आदमी बन जाते हैं । विश्व भर में इस तरह के सैकड़ों व्यक्तियों की खोजबीन पिछले दिनों वैज्ञानिकों द्वारा की जा चुकी है । उन्हें छूने पर ही नहीं आँखों से आँखें मिलाने पर भी कमजोर व्यक्ति हैरान होता है । इस तरह के मानवी विद्युत के स्रोत तथा प्रयोग पर गहरे अन्वेषण करने के लिए संसार भर में कितनी ही संस्थाएँ काम कर रही हैं ।

इसके आधार पर मनुष्य अपने निज के व्यक्तित्व में बहुमुखी प्रखरता उत्पन्न कर सकता है । प्रतिभाशाली बन सकता है । आत्म विकास की अनेकों मंजिलें पार कर सकता है । पदार्थों को प्रभावित करके उन्हें अधिक उपयोगी बनाने तथा इस प्रभाव से जीवित प्राणियों की प्रकृति बदलने में भी सहायता कर सकता है । ऋषियों के आश्रमों के समीप इसी प्रभाव के कारण सिंह और गाय साथ-साथ एक घाट पर पानी पीते थे ।

पदार्थ और मैटर की तरह ही इस विश्व-ब्रह्माण्ड में सचेतन प्राण विद्युत भरी पड़ी है । हम सभी प्राण विद्युत के लहलहाते महासागर के मध्य रहते हुए भी प्रायः उससे अनभिज्ञ हैं । हम में से हर कोई मनुष्य प्राणायाम जैसे उपचारों से उसकी अतिरिक्त मात्रा उपलब्ध कर सकता है और महाप्राण बन सकता है । जिस प्रकार फेफड़े गहरी साँस लेकर अधिक मात्रा में वायु उपलब्ध कर सकते हैं और उसमें विद्यमान ऑक्सीजन का लाभ उठा सकते हैं, उसी प्रकार प्राणायाम प्रक्रिया द्वारा प्राणाकर्षण करके उसे अन्तराल में अधिक मात्रा में भरा जा सकता है ।

शरीर में इस प्राण विद्युत का अवतरण उस स्थान पर होता है जिसे ब्रह्मरन्ध्र या सहस्रार कमल कहते हैं । इसी विद्युत उत्पादन केन्द्र को वैज्ञानिक भाषा में 'रैटिक्युलर एक्टिवेटिंग सिस्टम' कहते हैं । यहीं से सचेतन स्फुल्लिंग—'इलेक्ट्रिकल इम्पल्स' उत्पन्न होते हैं और मस्तिष्कीय तन्त्र द्वारा समस्त मस्तिष्क में फैल जाते हैं । इतना ही नहीं वे काया के विभिन्न अवयवों तक अपनी तरंगें फेंकते हैं । सिर के विभिन्न स्थानों पर यन्त्र के रज्जु मेरुदण्ड के माध्यम से आगे बढ़ते हैं और सर्वत्र प्राण विद्युत का संचार कर उसे नवीन प्राण चेतना से भर देते हैं । सविता द्वारा प्रदत्त गायत्री के द्वारा आकर्षित प्राण चेतना का अवतरण साधक के अन्तराल में जितने अधिक परिमाण में होता चलेगा, उसी अनुपात में वह ओजस्वी, तेजस्वी एवं मनस्वी बनता जायेगा । प्रश्नोपनिषद् में कहा भी गया है—

'य एष विद्वान् प्राणं वेद रहस्य प्रज्ञा हीय ते ।'

अर्थात् जो इस प्राण को जान लेता है उस पर प्रज्ञा के रहस्य भी प्रकट हो जाते हैं ।

मानवी चुम्बकत्व : प्रतिभा का उद्गम स्रोत

मनुष्य क्या है ? इसका सही उत्तर दिया जा सकना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि वह एक समूची विचित्रता है । उसे भानुमती का पिटारा कह सकते हैं । जितने दृष्टिकोणों से देखा जाय उन सभी के अनुसार वह पूर्ण प्रतीत होता है । रासायनिक संरचना, ज्ञान तन्तुओं का जाल-जंजाल, अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ, मनःसंस्थान, भाव समुच्चय, आदि को प्रधानता देने से भी बात बन जाती है और उसके अन्तर्गत जुड़ी हुई विशेषताओं को गौण या सहायक सिद्ध किया जा सकता है ।

मनुष्य अविनाशी आत्मा भी है और चलता-फिरता मरणशील पेड़ पादप भी । वह किसी का शत्रु, किसी का मित्र, किसी का ग्राहक, किसा का स्वामी, किसी का दास हो सकता है । विभिन्न सम्बन्धी—नातेदार उसे अपनी-अपनी स्थिति के अनुरूप विभिन्न रिश्तों में बाँधते हैं । किन्हीं के दृष्टिकोण में वह विद्वान, पहलवान, कलाकार हो सकता है और कोई उसके दोष-दुर्गुणों को देखते हुए आलसी, व्यसनी, अपव्ययी आदि ठहरा सकते हैं । यह सभी निर्धारण आंशिक रूप से ही सही हैं—समग्र रूप से नहीं । जिसने जैसा सोचा या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखा है, वह उसे उसी रूप में प्रतीत होगा । कोई भी एक व्यक्ति किसी दूसरे को समग्र रूप से जानने में समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि हर किसी की दृष्टि एक ढाँचे में ढली और एक सीमा में ही पर्यवेक्षण कर सकने में समर्थ हो सकती है ।

मनुष्य क्या है ? इसका उत्तर देना ही हो तो प्रश्नकर्त्ता से उलटकर पूछना चाहिए, मनुष्य क्या नहीं है ? अर्थात् बीज रूप में उसमें वे सभी तथ्य, पदार्थ, वैभव, पराक्रम विद्यमान हैं जो इस संसार के जड़ पदार्थों तथा चेतन प्राणियों में कहीं भी देखे पाये जा सकते हैं ।

एक पर्यवेक्षण के अनुसार मनुष्य एक चलता-फिलता चुम्बक है । उसकी काय संरचना को एक अच्छाःखासा बिजलीघर कह सकते हैं जिससे उसकी अपनी मशीन चलती और जिन्दगी की गुजर-वशर होती है । इसके अतिरिक्त वह दूसरों को प्रकाशित करने से लेकर भले-बुरे अनुदान दे सकने में भी भली प्रकार सफल होता रहता है, चुम्बक होने के नाते वह जहाँ प्रभावित करता है वहाँ स्वयं भी अन्यान्यों से आकर्षित किया और दबाया, घसीटा जाता रहता है ।

मनुष्य चुम्बक का स्रोत ढूँढ़ने वालों ने अभी इतना ही जाना है कि वह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से यह अनुदान उसी प्रकार प्राप्त करता है जैसे कि धरती सूर्य से । इस ऊर्जा की मात्रा में न्यूनाधिकता होने तथा सदुपयोग-दुरुपयोग करने से मनुष्य आये दिन लाभ-हानि उठाता रहता है । अच्छा हो इस सम्बन्ध में अधिक जाना जाय और सफलतापूर्वक हानि से बचने तथा लाभ उठाने में तत्पर रहा जाय ।

मनुष्य का मैग्नेट घटता-बढ़ता रहता है । किसी के चेहरे पर निराशा छायी रहती है, कोई खुशहाली से भय दिखाई पड़ता है । किसी की आँखों में विशेष आकर्षण मालूम होता है और किसी की आँखों में दीनता-हीनता की झलक दृष्टिगोचर होती है । किसी व्यक्ति के पास बैठने, सम्पर्क बढ़ाने की अनायास ही इच्छा होती है और किसी से दूर रहने, बात न करने तक का जी होता है । यह मानवी चुम्बकत्व की अधिकता एवं अल्पता के कारण ही होता है । जब शारीरिक चुम्बकत्व का ह्रास होने लगता है तो शरीर रूखा, नीरस, कुरूप, निस्तेज, शिथिल सा दिखाई पड़ने लगता है और इसके आधिक्य से आकर्षक, मोहक एवं सुन्दर लगने लगता है ।

चुम्बकत्व घटने में मनुष्य को विस्मृति, भ्रान्ति, थकान जैसी अनुभूति होती है, बढ़ने में प्रतिभा, स्मृति, स्फूर्ति जैसी उत्साहवर्धक विशेषताएँ उभरी हुई प्रतीत होती हैं । बढ़े हुए चुम्बकत्व वाला अपने से हल्के वालों को प्रभावित करने में सफल रहता है । साथ ही यह बात भी है कि उससे बड़े स्तर की प्रतिभा उसे अपनी पकड़ में कस लेगी । इतने पर भी कुछ मनस्वी ऐसे होते हैं जो आत्मवलय पर दृढ़ रहते हैं । आदान-प्रदान तो करते हैं किन्तु आवश्यक रूप से किसी से भी प्रभावित नहीं होते ।

इस मानवी चुम्बकत्व के दो प्रवाह हैं—एक ऊर्ध्वगामी—दूसरा अधोगामी । ऊर्ध्वगामी मस्तिष्क में केन्द्रित है । उस मर्मस्थल के प्रभाव से व्यक्तित्व निखरता और प्रतिभाशाली बनता है । बुद्धि-कौशल, मनोबल के रूप में शौर्य, साहस, आदर्शवादी उत्कृष्टता के रूप में यही चुम्बकत्व मिश्रित विद्युत ही काम करती है । मनुष्य के चेहरे के इर्द-गिर्द छाए तेजोवलय—ओजस्—ऑरा को इस ऊर्ध्वगामी विद्युत का ही प्रतीक मानना चाहिए । अधोगामी विद्युत जननेन्द्रियों में केन्द्रित रहती, रति सुख का आनन्द देती और सन्तानोत्पादान की उपलब्धि प्रस्तुत करती है । यौन आकर्षण के पीछे यही चुम्बकीय विद्युत काम करती है ।

ऊर्ध्वगामी और अधोगामी चुम्बकीय प्रवाह उत्तरी, दक्षिणी ध्रुव की तरह भिन्न प्रकृति के होते हुए भी परस्पर सम्बद्ध हैं । कामोत्तेजना और काम विकार के शमन की प्रक्रिया को क्रमशः इस अधोगामी, ऊर्ध्वगामी प्रवाह की परिणति ही मान सकते हैं । जहाँ शरीर को कई प्रकार खाद्य पदार्थ एवं पोषण चाहिए वहाँ उसे वातावरण में संव्याप्त चुम्बकीय ऊर्जा की मात्रा भी उसी प्रकार चाहिए जैसे कि साँस के लिए हवा की जरूरत पड़ती है । इसी प्रकार मस्तिष्क को भी अपनी बैटरी चार्ज करने वाला 'चार्जर' चाहिए । अन्यथा वह 'डाउन' होती चली जायेगी और मनुष्य अपने ओजस् को व्यक्तित्व में झलकते आकर्षण को, अपनी प्रखरता को गवाँ बैठेगा ।

मानवी सत्ता के, ब्राह्मी सत्ता से सम्बन्धों की तुलना गर्भस्थ बालक और माता के सम्बन्ध से ही की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जा सकती है । गर्भस्थ बालक की तन्तु नलिका (गर्भरज्जु) के समान ही मानवी चुम्बकत्व विश्वव्यापी समष्टि चेतना और व्यष्टि सत्ता को परस्पर जोड़ने में एक सशक्त गठबन्धन की भूमिका निभाता है । विष्णु की नाभि कमल से ब्रह्मा के सम्बन्ध की पौराणिक कल्पना भी इसी तथ्य का उद्घाटन करती है ।

अन्तरिक्ष में संव्याप्त भले-बुरे अनुदानों को मनुष्यों अपने चुम्बकत्व द्वारा ही स्वीकार-अस्वीकार करता है । इस शक्ति का केन्द्र स्थल उसका मस्तिष्क ही है । इसी कारण जब तक मनुष्य का मस्तिष्क निष्प्राण नहीं हो जाता, तब तक व्यक्ति के जीवित होने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है । शरीर मृत हो जाता है पर चुम्बकत्व रूपी तेजोवलय सूक्ष्म स्थिति में विद्यमान होता है व अपनी उपस्थिति का परिचय विभिन्न रूपों में देता है । फ्रांस के सरकारी रिकार्डों में वर्णन है कि राज्य क्रांति में सिर कटे एक व्यक्ति का मुँह और होंठ बहुत देर तक इस प्रकार चलते रहे, मानों वह कुछ कह रहा हो । प्राचीन काल में रण क्षेत्र में कई ऐसे उदाहरण देखने में आते थे जिनमें योद्धा तलवार द्वारा सिर कटने पर भी अपने तलवार को हवा में चलाते पाये जाते थे । ये उदाहरण मृत्यु के बाद भी तेजोवलय के होने की मान्यता का सत्यापन ही करते हैं ।

वैसे ब्रह्माण्डव्यापी चुम्बकत्व, जिससे मनुष्य का आदान-प्रदान चलता रहता है, का उपयोगी प्रवाह ही मनुष्य के काम आता है । यदि प्रतिकूल प्रवाह घुस पड़े तो विषैले खाद्य की तरह उससे भी हानि उठानी पड़ेगी । मनुष्य में अपना चुम्बकत्व है तो सही पर उसे न्यूनाधिक करने में मनुष्य के अपने प्रयत्न ही चमत्कार दिखाते हैं । अतीन्द्रिय क्षमता वाली विशेषताएँ मनुष्य के इसी चुम्बकत्व पर निर्भर हैं ।

इस क्षमता को वैज्ञानिकों ने 'मैग्नेटिक सेन्स' (चुम्बकीय इन्द्रिय) नाम दिया है । 'न्यू साइन्टिस्ट' पत्रिका के अनुसार मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विशेषज्ञों ने एक प्रयोग में वहाँ के कुछ छात्रों की आँखों पर पूरी तरह पट्टी बाँधकर उल्टे-सीधे रास्ते से ५२ किलोमीटर दूर ले जाकर एक स्थान पर छोड़ दिया । फिर उनसे आँखों पर पट्टी बाँधे ही उसी रास्ते से वापस चलने की कोशिश करने के लिए कहा गया । १५ प्रतिशत छात्र रास्ते का सही अनुमान लगा सकने में सफल रहे ।

प्रयोग के दूसरे चरण में हर एक छात्र के सिर पर एक चुम्बकीय छड़ रखकर उसी प्रयोग को दोहराया गया, तो सभी रास्ता भूल गए । चुम्बक की छड़ हटाकर पुनः ८ किलोमीटर की दूरी तक ले जाकर वापस पहुँचने के प्रयोग में पहले की भाँति ही अधिकांश छात्र सफल रहे ।

वैज्ञानिकों ने इस क्षमता को चुम्बकीय इन्द्रिय बताते हुए कहा कि पृथ्वी का चुम्बकत्व मानवी चुम्बकत्व पर प्रभाव डाले, इसमें दूसरे प्रयोग में रखी छड़ ने व्यवधान डाला । मानवी चुम्बकत्व अपनी क्षमता के सहारे अपनी दिशा स्वयं ढूँढ़ने में मनुष्य की सहायता करता है । वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपनी इस चुम्बकीय क्षमता का प्रयोग करता है । इस प्रकार छठी इन्द्रिय (अर्थात् चुम्बकीय इन्द्रिय) कोरी कल्पना नहीं है ।

चुम्बकीय क्षमता अन्य जीवधारियों में भी मिलती है । अनेकों पक्षी हजारों किलोमीटर की पृथ्वी की परिक्रमा प्रतिवर्ष करते हैं । इस 'माइग्रेशन' की प्रक्रिया में भी पृथ्वी की चुम्बकीय धाराएँ व जीवधारियों का वैयक्तिक चुम्बकत्व ही आधार बनता है । वे दिन-रात, बादल छाए मौसम में भी समान रूप से निर्बाध यात्रा करते हैं, पर यदि इनके सिर पर छोटा-सा चुम्बक बाँध दिया जाय तो ये पक्षी अपना रास्ता भूल जाते हैं ।

मनुष्य के जीवकोशों के सूत्र विभाजन की आरम्भिक और मध्यावस्था का चुम्बकीय शक्ति रेखाओं के साथ आश्चर्यजनक तालमेल है । कोशों के विभाजन में क्रोमोसोम निरन्तर जीव कोषों के ध्रुवों की ओर ही चलते हैं ।

मनुष्य के रक्त में चुम्बकीय क्षमता होने की बात बहुत समय से मानी जाती रही है । इसका प्रधान आधार है—रक्त के लाल कणों में लोहे का प्रचुर मात्रा में होना । यह लोहा शीघ्र ही चुम्बकीय क्षेत्र से प्रभावित हो जाता है । इस कारण चुम्बक द्वारा किसी भी स्थान में रक्त के जमाव-प्रवाह को प्रभावित करके वहाँ विद्यमान किसी भी प्रकार की विकृति का शमन किया जा सकता है । रक्त अभिसरण शरीर में स्वयं अपना चुम्बकत्व भी उत्पन्न करता है । शरीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यिकी की एक प्रामाणिक पुस्तक के लेखक वेस्ट एण्ड टेलर के अनुसार हर लाल कण की सतह पर एक ऋण विद्युत आवेश होता है । इसके कारण ही ये कण परस्पर एक-दूसरे को विकर्षित करते हैं तथा सामान्यतः रक्त नलियों में चिपकते नहीं । इन कणों का रक्त में निरन्तर परिभ्रमण एक विद्युत्प्रवाह का निर्माण करता है ।

लाल कणों की कुल सतह का क्षेत्रफल शरीर के क्षेत्रफल १५०० गुना होता है । इस प्रकार यदि त्वचा के क्षेत्रफल को $१\frac{१}{२}$ वर्ग मीटर मान लिया जाय तो लाल कणों की कुल सतह का क्षेत्रफल किसी भी तरह २००० वर्ग मीटर से कम नहीं है । सारे शरीर में बिछे रक्त नलिकाओं के जाल में निरन्तर अभिसरण होते रहने से एक स्वल्प किन्तु निश्चित विद्युत प्रवाह बनता है । इस प्रवाह से चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है । इस प्रकार शरीर में चुम्बकीय क्षमता का होना पूर्णतः विज्ञान सम्मत है ।

मनुष्य की जिस क्षमता को हाल ही में वैज्ञानिकों ने 'मैग्नेटिक सेन्स' की संज्ञा दी है, उसके आधार पर प्राचीनकाल में लोग हाथ में छड़ लेकर स्थान-स्थान पर घूमते थे और उस छड़ की चेष्टाओं से भूमिगत पदार्थों का पता लगा लेते थे । यह विधि 'डाउजिंग' नाम से जानी जाती है एवं पाश्चात्य देशों में कुछ समय पूर्व तक बहुत प्रचलित थी । इस प्रकार उपयुक्त होने वाली छड़ 'डाउजिंग रॉड' कहलाती थी और साधनहीन व्यक्ति भी मात्र इसके माध्यम से भूमिगत जल और धातुओं का अप्रत्याशित रूप से सही अनुमान लगा लेते थे ।

मनःशास्त्री विक्टर ई. क्रोमर का कथन है कि मनःशक्ति को घनीभूत कर दिया इस चुम्बकत्व को किसी दिशा विशेष में प्रयुक्त किया जा सके तो बहिरंग में सम्मोहन प्रक्रिया द्वारा दूसरों को तथा अन्तरंग में स्वयं की सूक्ष्म शक्तियों को प्रभावित करने, जगाने में सफलता मिल सकती है ।

इसी मानवी चुम्बकत्व को बायोप्लाज्मा के रूप में 'कीट-पतंगों' के चित्र लेकर तथा किर्लियन फोटोग्राफी द्वारा मनुष्य के आस-पास के प्रभामण्डल को चित्रांकित कर डॉ. इन्शुसिन (कजाकिस्तान) एवं डॉ. किर्लियन द्वारा किया जा चुका है । थियोसोफिस्ट इसे 'इथरीके डबल' कहते हैं जो शरीर के चारों ओर आवरण के समान विद्यमान है ।

मेस्मेरेज्म के प्रयोगों में प्रयोक्ता द्वारा इसी चुम्बकीय विद्युत के सहारे दूसरों को सम्मोहित करने की प्रक्रिया सम्पादित होती है । इसी माध्यम से एक व्यक्ति का प्राण दूसरे में प्रवाहित होने लगता है तथा शारीरिक रुग्णता एवं मानसिक अक्षमता को दूर करने में सहायक होता है । सत्संग और कुसंग के परिणाम भी व्यक्ति की निजी ऊर्जा के सहारे ही सम्भव होते हैं । मात्र कहने-सुनने भर से कोई किसी के साथ चल पड़ने या बात मानने के लिए विवश नहीं किया जा सकता ।

प्राण विद्युत को विकसित एवं परिष्कृत करने के ध्यान-धारणा तथा प्राणायाम के कितने ही प्रयोग अपनी स्थिति एवं आवश्यकता के अनुरूप अपनाये जा सकते हैं, किन्तु उससे भी अधिक आवश्यक यह है कि इन्द्रिय निग्रह मनोनिग्रह की नीति-निष्ठा, जीवनचर्या अपनाकर ईश्वर-प्रदत्त प्राण चुम्बकत्व की बर्बादी से बचे रहने की सतर्कता बरती जाय ।

प्राणाग्नि का पुंज यह देह पिंजर

प्राण को 'अग्नि' की संज्ञा दी गई है । शरीर के सारे क्रिया-व्यापार इसी से संचालित होते हैं । इस दृष्टि से यह काफी महत्त्वपूर्ण है । जब यह नियमित, नियन्त्रित होती है, तो शरीर को चेतना व आवश्यक शक्ति प्रदान करती है, किन्तु इसकी विकृत अवस्था तरह-तरह के विग्रह खड़े करती है । क्रोध, कलह, दर्प, दुराचरण सब इसी के परिणाम हैं । यहाँ तक तो इसकी स्थिति सहज सामान्य कही जा सकती है, परन्तु जब इसमें कल्मष की अतिरिक्त पर्त चढ़ती और दिशाहीन बनती है, तो शरीर को ही जला कर खाक करने के लिए उद्यत हो जाती है ।

इस प्राणाग्नि को विज्ञान-वेत्ताओं ने भी खोजा और स्वीकारा है । उनके अनुसार यह ऊर्जा न सिर्फ जीव-जन्तुओं, वरन् वृक्ष-वनस्पतियों में भी समान रूप से पायी जाती है । मानवी शरीर में इसकी मात्रा अधिक होती है । यह मात्रा इतनी होती है, जितनी से २०-६० वोल्ट तक का विद्युत बल्ब जलाया जा सके । यही बिजली आँखों के माध्यम से संसार दिखाती है, हृदय में अवस्थित होकर रक्त-संचरण का काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती है और मस्तिष्क द्वारा विभिन्न प्रकार के शारीरिक क्रिया-कलापों का नियन्त्रण करती है, पर जब यह असन्तुलित होती है, तो शरीर-सत्ता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ा प्रतीत होता है । आये दिन ऐसी घटनाएँ घटती ही रहती हैं जो प्राणाग्नि की सशक्तता को प्रदर्शित करती हैं ।

पिछले दिनों की ही बात है । ससेक्स की एक अधेड़ महिला अपनी कुटिया में कुछ काम कर रही थी कि न जाने कैसे उसके शरीर से एक धधकता शोला प्रकट हुआ, जिसने देखते-देखते कुटिया समेत उसे भस्मसात् कर दिया । लंदन के "डेली टेलीग्राफ" अखबार ने सन् १९८९ में एक खबर छापी थी कि लन्दन के एक बोटलिंग प्लांट में एक मैकेनिक कार्य कर रहा था कि अचानक उसके वस्त्र में आग लग गई । बड़ी मुश्किल से तात्कालिक सक्रियता के कारण उसकी आग बुझ सकी, पर इस प्रयास में वह गम्भीर रूप से जल गया । महीनों के उपचार के बाद जब उसकी स्थिति कुछ सुधरी, तो उससे अग्नि के बारे में पूछताछ की गई । उसका कहना था कि आग उसके शरीर से ही प्रकट हुई थी और कपड़ों में लग गई ।

कुछ वर्ष पूर्व जापान के 'टोकियो न्यूज' नामक दैनिक में एक घटना छपी थी । उसके अनुसार 'सैनियो' कम्पनी का मालिक अपनी फैक्ट्री के अग्निकाण्ड से परेशान था । उसके यहाँ पिछले दो वर्षों (सन् १९८०-८२) में दस बार आग लग चुकी थी, पर अग्निकाण्ड का कारण किसी प्रकार ज्ञात न होता था । अन्ततः उसने बुकलिन यूनिवर्सिटी के विज्ञान के प्रोफेसर तोसिको मासाचू से सहायता माँगी । प्रोफेसर ने फैक्ट्री का सूक्ष्म निरीक्षण करने के उपरान्त एक दिन सभी कर्मचारियों को एक स्थल पर इकट्ठा किया । इसके बाद उनमें से प्रत्येक को वोल्टमीटर से जुड़ी एक धात्विक पट्टिका से होकर गुजरने को कहा । इस क्रम में प्रायः देखने में आता है कि हर बार वोल्टमीटर की सुई में थोड़ी हलचल मचती और वह पुनः अपने निर्धारित स्थान पर जा टिकती । काफी समय तक यही क्रम चलता रहा । वोल्टमीटर की सुई में कोई असामान्य हलचल न दिखाई पड़ी । मासाचू परीक्षण में जुटे रहे । उसी बीच एक महिला के पैर पट्टी पर पड़े । सुई में तीव्र हलचल हुई और वह वोल्टमीटर की उच्च बिन्दु पर जा टिकी । आग का रहस्य समझ में आ गया । उसकी अत्यधिक शरीर विद्युत ही इसके लिए जिम्मेदार थी । उसे फैक्ट्री के ऐसे भाग में भेज दिया गया, जहाँ जलने व आग पकड़ने जैसी कोई वस्तु न थी । इसके बाद अग्निकाण्ड का सिलसिला बन्द हो गया ।

आस्ट्रेलिया (होबार्ट) की एक घटना है । सन् १९८५ की शाम मेकडोनाल्ड नामक एक कार चालक अपनी गाड़ी को गैरेज में रखकर निकल ही रहा था कि अपने कपड़ों से निकलती लपटों को देखकर चौंक पड़ा । चीखा-चिल्लाया तो भीड़ एकत्रित हो गई । कपड़े सारे नोंच डाले गए, किन्तु आग शरीर को झुलसा चुकी थी । वह ७० प्रतिशत जल चुका था । अस्पताल में बचाने का उसे हर सम्भव प्रयास किया गया, पर वह बच न सका । कारण ढूँढ़ने वाले सिगरेट-सिगार के टुकड़े भी घटनास्थल पर नहीं दिखाई पड़े, जिससे आग का कारण धूम्रपान को समझा जा सके । अन्ततः जाँचकर्त्ताओं ने इस घटना को भी शरीर विद्युत का ही परिणाम बताया ।

मनुष्य के साथ घटने वाली ऐसी घटनाओं की पुष्टि तो वैज्ञानिक भी कर चुके हैं, पर वे अभी तक इसका कोई समाधानकारक हल नहीं ढूँढ़ पाये हैं । सम्भव है अगले दिनों इसका मूल कारण खोज पाना शक्य हो जाय, किन्तु अभी तो मात्र इतना ही कहा जा सकता है कि ऐसा अनियन्त्रित प्राण-प्रवाह के कारण ही होता है । यद्यपि जल-मरने की ऐसी घटनाएँ यदा-कदा ही देखने को मिलती हैं, फिर भी प्राण की प्रचण्ड शक्ति को सिद्ध करने वाले ये प्रकरण काफी महत्त्वपूर्ण हैं । इनसे यह अनुमान सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है कि यदि प्राण ऊर्जा के प्रवाह को सुनियोजन द्वारा सही दिशाधारा दी जा सके तो, ऐसे विलक्षण करतब दिखाने में यह सफल समर्थ हो सकती है । मात्र इतना ही नहीं अतीन्द्रिय सामर्थ्य के नाम से जानी जाने वाली क्षमता का विकास भी सम्भव है, जैसा कि कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है ।

कनाडा के पीटर वान जोन्स के साथ १९७९ में एक ऐसी ही घटना घटी । एक बार वे प्रातः टहलते हुए शहर से दूर सुनसान क्षेत्र में पहुँच गए । कँटीली झाड़ियों का वनखण्ड उनके दोनों ओर दूर-दूर तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैदान में फैला हुआ था । एक घनी झाड़ी के नीचे विश्राम के लिए वे बैठ गए । जूते कुछ समय के लिए उतार दिए । शरीर को शिथिल करने के लिए आँखें बन्द कर लीं, तो जमीन के नीचे चमकीली धातुएँ दिखाई पड़ने लगीं । पहते तो उसे यह आँखों का भ्रम मालूम पड़ा, किन्तु बार-बार आँखों के आगे से वह झिलमिलाहट गई नहीं तो उसे सन्देह हुआ । कुछ मजदूरों को लेकर स्थान की खुदाई की गई तो ज्ञात हुआ कि यहाँ स्वर्ण भण्डार है । इसके बाद तो यह उसका धन्धा बन गया । वह प्रायः नंगे पाँव चलकर धरती के नीचे का धात्विक खजाना पता लगाने में अपनी इस क्षमता का उपयोग करता । मनुष्य शरीर की यही बिजली जब विकारग्रस्त होती है तो ऐसा व्यक्ति स्वयं डूबता एवं औरों को भी पतन के मार्ग में घसीट ले चलता है ।

मनुष्य जीवन इस प्राणाग्नि को शोधने, सुधारने और परिष्कृत स्तर तक पहुँचा ले जाने का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है । यदि इतना सम्भव हो सका, तो वह चेतना के उच्च आयामों में पहुँचकर उस सर्वोच्च स्तर में प्रतिष्ठित हो सकता है, जिसके लिए आये दिन लोग कितने ही कौतुक करते और टण्ट-घण्ट रचते देखे जाते हैं, किन्तु फिर भी छूँछ ही रहते हैं । हम प्राण को परिष्कृत करें और सही अर्थों में प्राणवान बनें । इसकी सामर्थ्य इसी स्थिति में फलित होती और व्यक्ति को विलक्षण विभूतियों से ओत-प्रोत करती है ।

शरीर, एक बिजलीघर

कई प्रकार के रासायनिक पदार्थों, जल या जनरेटर द्वारा बिजली इकट्ठा करके उसे एक बिजलीघर में इकट्ठा कर लेते हैं पीछे ठंडी और गर्म (निगेटिव एण्ड पॉजिटिव) दो धाराओं में प्रवाहित और नियन्त्रित करके उससे प्रकाश व गर्मी उत्पन्न करने, कल-कारखाने चलाने, टेलीफोन और तार व्यवस्था का संचालन करने आदि के सैकड़ों कार्य उससे कर लिए जाते हैं । विद्युत इस युग की सबसे सस्ती शक्ति है, उससे औद्योगिक क्षेत्रों में एक प्रकार की क्रांति पैदा हो गई है । जो कार्य हजारों व्यक्ति वर्षों में नहीं कर सकते बिजली उसे कुछ घण्टों में करके दिखा देती है ।

मनुष्य शरीर भी एक व्यवस्थित बिजलीघर है । मस्तिष्क से लेकर हाथ के पोरुओं तक शरीर के इन्च-इन्च भाग में ठंडी और गर्म नाड़ियाँ इफरेन्ट एण्ड ऑफरेन्ट नर्वस फैली हुई हैं यह मानव शरीर की विद्युत का उपभोग ठीक बिजलीघर की बिजली के समान करती रहती हैं । मनुष्य शरीर की सामान्य क्रियाएँ भी किसी शक्ति से संचालित होती हैं, वह शारीरिक विद्युत ही है, डॉ. ब्राउन के अनुसार शारीरिक और मानसिक कार्यों को चलाने में जितनी बिजली खर्च होती है उतनी से एक बड़ा मिल चल सकता है । छोटे बच्चे के शरीर में प्राप्त विद्युत शक्ति ही इतनी अधिक होती है कि उससे रेल के इंजन को चलाया जा सकता है किन्तु खेद है कि ऐसी महत्त्वपूर्ण शारीरिक शक्ति का उपयोग मनुष्य अपनी सामान्य इच्छाओं की पूर्ति में ही करता रहता है । सर्वोत्तम जनरेटर और डायनमो होने पर भी न तो शरीर से विशिष्ट कार्यों के लिए आवश्यक विद्युत शक्ति उत्पन्न कर पाते हैं और न ही उसका श्रेष्ठ कार्यों में सदुपयोग । मनुष्य शरीर जैसा बहुमूल्य यन्त्र यों ही मल-मूत्र के खेल, पेट और प्रजनन, कमाई के गोरख-धन्धों और इन्द्रिय सुखों की वाह्य तृष्णा में ही बीत जाता है वह जीवन का कोई उल्लेखनीय उपयोग नहीं कर पाता ।

प्रश्न यह है कि यदि शरीर में विद्युत शक्ति है तो हम उसे जान क्यों नहीं पाते ? बिजली के तार का स्पर्श करें तो वह तुरन्त झटका मारता है किन्तु शरीर किसी का भी स्पर्श करे, कभी झटका नहीं लगता ? उत्तर यह है कि मानवीय विद्युत का एक नगण्य अंश जितना ही सामान्य रूप मे व्यवहार में आता है उसकी इकट्ठी मात्रा (स्टोर) शरीर के कुछ विशिष्ट चक्रों, ग्रंथियों और उपत्यिकाओं में होती है । यह चक्र आदि शरीर के बहुत ही कोमल और सम्वेदनशील भागों में होते हैं और उनका जागरण, विशिष्ट योग साधनाओं द्वारा ही हो पाता है । योग साधनाओं का उद्देश्य इन महत्त्वपूर्ण शक्ति संस्थाओं का जागरण ही है । इन शक्तियों को जागृत कर उन्हें नियन्त्रित कर लेने वाला व्यक्ति परमाणु बम की तरह अनन्त शक्ति का स्वामी होता है । शाप, वरदान, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि ऋद्धि-सिद्धियाँ इस शक्ति के ही वरदान हैं पर जितनी महत्त्वपूर्ण, यह शक्ति है भगवान ने उसे उतना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ही सुरक्षित भी बनाया है ताकि उसका हर कोई दुरुपयोग न कर सके, केवल अधिकारी पात्र ही उसका लोक-कल्याण में उपयोग करें । इस दृष्टि से योगाचार्य यह साधनाएँ योग्य और उपयुक्त व्यक्तियों को ही सिखाते हैं । शक्ति का भले कामों में भी उपयोग हो सकता है और बुरे कार्यों में भी । रुपये से व्यापार भी किया जा सकता है और शराब भी पी जा सकती है उसी प्रकार इस शक्ति से आत्म-कल्याण और लोक-मंगल की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है । साथ ही उससे दूसरों का अहित करके अपनी स्वार्थपूर्ति भी । मनुष्य का मन अधिकांश में लौकिक और भौतिक सुखों का इच्छुक होता है इसलिए इस शक्ति को पाकर अधिकांश लोग अनुचित कार्य ही करते हैं, इसीलिए उसे गुप्त और प्रतिबन्ध लगाकर रखा गया है ।

इस कारण कई लोग आशंका करते हैं और ऐसी शक्ति से शरीर में होने की बात स्वीकार नहीं करते तो भी वह शक्ति है और घटनाएँ उसकी पुष्टि करती हैं । जिस प्रकार बिजली का तार कई बार नंगा हो जाता है तो विद्युत शक्ति बहक कर वहाँ से अलग बहने लगती है खुले तार का स्पर्श करने से तीव्र झटका लगता है और पता चलता है कि यहाँ बिजली का करेन्ट है, प्राणियों के शरीरों में भी कई बार ऐसा होता है कि गुप्त शक्ति संस्थानों को ढकने वाले कोई अवयव खराब हो जाते हैं तो उससे बिजली बाहर आने लगती है और वह ठीक बाह्य बिजली की तरह ही अपना प्रभाव व्यक्त करने लगती है ।

एक बार बोलोन के एक भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिक ने प्रयोग के दौरान देखा कि एक मेढ़क के पांव से बिजली का प्रवाह निकल रहा है उससे उस मेढ़क की माँसपेशियाँ उत्तेजित हो रही हैं । इस जानकारी के आधार पर फोर्ली निवासी डॉ. मैटूची ने कई नई जानकारियाँ हासिल करके बताया कि माँसपेशियों के सिकुड़ने-फैलने से विद्युत धाराएँ उत्पन्न होती हैं इससे पता चला कि शरीर के आन्तरिक संस्थानों में विद्युत के छिपे खजाने हैं इस पर अंग्रेज वैज्ञानिक वाल्टर ने बहुत खोजें कीं और उन खोजों का लाभ चिकित्सा जगत को प्रदान किया ।

मनुष्य शरीर में विद्युत की तेज तरंगें विद्यमान हैं यह बात १८६६ में सर्वप्रथम फ्रांस से निकलने वाले "मेडिकल टाइम्स एण्ड गजेट" के अप्रैल अंक में डॉक्टरों द्वारा निरीक्षण के एक ताजे बयान के रूप में सामने आयी । लियोन्स में एक गृहस्थ के घर एक बच्चा पैदा हुआ । बच्चा सात महीने का हुआ तभी से घर वालों को शिकायत होने लगी कि बच्चे के शरीर को स्पर्श करने से बिजली का झटका लगता है । १०वें महीने तक स्थिति यह हो गई कि बच्चे के पास जाना भी कठिन हो गया । कई लोग हिम्मत करके उसके पलने के पास गए भी पर उसके झटके को सहन न कर सके । वे झटका खाकर नीचे गिर गए । अन्ततः बच्चे की मृत्यु हो गई । मरने से १० सेकिण्ड पूर्व उसके शरीर से हल्का नीला प्रकाश प्रस्फुटित हुआ, डॉक्टरों ने उसके फोटो भी लिए पर वे उसका कुछ विश्लेषण न कर सके । बच्चा मर गया तब न उसके शरीर में गर्मी थी न कोई झटका । इससे यही तो साबित हुआ कि मनुष्य का प्राण विद्युत जैसी ही कोई शक्ति है चाहे वह ग्रहण किए हुए अन्न से उत्पन्न होती हो या किन्हीं और आकाशस्थ माध्यमों से, पर यह निश्चित है कि यह विद्युत ही जीवन गति और चेतना को धारण करने वाली है उसकी जानकारी न हो तब तक मनुष्य जीवन की यथार्थता नहीं जानी जा सकती, विज्ञान चाहे कितना ही प्रगति क्यों न कर ले ।

प्राण शब्द की व्युत्पत्ति "प्र" उपसर्ग पूर्वक "अन्" धातु से है । "अन्" धातु जीवन शक्ति एवं चेतना वाचक है इसलिए प्राण शब्द का अर्थ चेतन शक्ति से किया जाता है । "लेटेन्ट हीट" या "साहकिक-फोर्स" इसे ही कहते हैं । ताण्ड्य जैमिनी तथा शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों ने प्राण को "गायत्री-प्रणौ वै गायत्री" कहा है । ताण्ड्य १२।१।२ में उसे ही "दवियनुतती वै गायत्री" अर्थात् यह विद्युत ही गायत्री है । इस प्रकार हम देखते हैं गायत्री, प्राण, विद्युत सब एक ही तत्व हैं उसी से जीवन के समस्त व्यापार चलते हैं । वशिष्ठ ने वायु में हुई प्राण-विद्युत को गहन शोध करके ही प्राणायाम के उन विधानों को खोजा था जो न केवल मानवीय क्षमताएँ बढ़ाते हैं वरन् मनुष्य का सम्बन्ध अन्य लोकों की सूक्ष्म शक्तियों से भी जोड़ते हैं । प्राण विद्या प्रकरण ६वें अध्याय में २४वें सूक्त के २० से ३१ तक के मन्त्रों में उसकी विशद् विवेचना हुई है और यह बताया है कि जिस प्रकार कोई यान्त्रिक (इन्जीनियर) यन्त्र चलाता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसी प्रकार जीवन की समस्त गतिविधियों का व्यापार इस शक्ति से ही होता है ।

यह शक्ति इतनी प्रचण्ड होती है कि उससे संसार की आश्चर्यजनक मशीनरी का काम मनुष्य केवल अपनी इच्छा शक्ति से कर सकता है अर्थात् प्राण विद्युत पर नियन्त्रण इच्छा शक्ति का ही होता है । सामान्य स्थिति में तो ऊर्जा और श्वासों से प्राप्त विद्युत ही काम करती रहती है । जैसे-जैसे योगाभ्यासी उस सत्ता का आन्तरिक परिचय पाता चला जाता है । वह इस शक्ति का विकास भी इच्छा शक्ति से ही करके कोई भी मनोरथ सफल करने और इच्छानुसार जीने में समर्थ होता है ।

१८८२ में अमेरिका के शहर में हुई एक घटना से इस तथ्य का प्रमाण मिलता है कि वस्तुतः यदि मानवीय विद्युत का नियन्त्रण किया जा सके तो जो बातें ऊपर कही गईं हैं वह असम्भव न होनी चाहिए । न्यूयार्क के एक २२ वर्षीय युवक के शरीर में विद्युत झटके लगने की बात वैज्ञानिकों को मालूम पड़ी उस युवक के शरीर की बिजली दिनभर में समाप्त हो जाती थी पर रात में अपने आप चार्ज हो जाती थी । बहुत प्रयोग के बाद भी वैज्ञानिक उसका रहस्य न जान पाये उसके १३ वर्ष बाद कुमारी जेनी मोरान नामक एक लड़की के शरीर में भी यह शक्ति प्रचण्ड रूप से उभर आयी । एक वैज्ञानिक ने प्रयोग के तौर पर जेनी को छुआ तो इतना तेज झटका लगा कि बेचारे कई घण्टे बाद होश में आये । जेनी के प्रेमी एन्थोनी एश क्राफ्ट ने उसे धोखे से छू लिया तो उन्हें झटका ऐसा लगा कि उसकी हीरे की अँगूठी काली पड़ गई । एक बार उसने स्नेहवश एक बिल्ली को उठाकर हृदय से लगा लिया बेचारी बिल्ली न केवल मूर्छित हो गई वरन् उस प्यार ने उसका प्राणान्त ही कर दिया । जेनी हाथ के स्पर्श से १०० वाट का बल्ब जला देती थी । कोलराडो के डॉ. डब्ल्यू. पी. जेन्स और उनके मित्र डॉ. नार्म लोंग ने उसकी विस्तृत खोज के बाद बताया कि यह विद्युत शरीर के कोशों (सेल्स) में नाभिक (न्यूक्लियस) में उपलब्ध विद्युत कणों का ही प्रवाह है पर जब उनसे पूछा गया कि ऐसा सबके शरीर में क्यों नहीं होता तो उन्होंने माना कि इस शक्ति के कोई केन्द्र शरीर में होने चाहिए जिन्हें हम डॉक्टर वैज्ञानिक भी नहीं जानते ।

यह उदाहरण इस बात के प्रतीक हैं कि मनुष्य शरीर प्राण-विद्युत का खजाना है । हम सामान्य आहार-विहार, साधारण श्वास और निर्बल इच्छा शक्ति के कारण न तो उस शक्ति को जगा पाते हैं, न कोई विशिष्ट उपयोग ही कर पाते हैं, पर यह विद्युत ही है जिसे विभिन्न योग साधनाओं द्वारा जागृत और नियन्त्रित करके योगीजन अपने लोक और परलोक दोनों को समर्थ बनाते थे । वह कार्य करने में सफल होते थे जो साधारण व्यक्तियों को कोई प्रताप और चमत्कार जैसा लगता है ।

जैव चुम्बकत्व में निहित शक्ति सम्वर्धक सामर्थ्य

अन्यान्य शक्तियों की तरह मानवी चेतना की प्रगति में जैव चुम्बकत्व की भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है । यह शक्ति समस्त संसार में वायु एवं आकाश तत्व, क्वांटा तरंगों, सूक्ष्म बिखरी प्रकाश किरणों के रूप में समाई हुई है । मानवी काया ही नहीं वरन् जीव-जन्तुओं में यही जैव चुम्बकत्व कभी प्रत्यक्ष चुम्बक के रूप में एवं कभी प्रकाश किरणों के रूप में परिचय देता है, किन्तु जीवितों में यह जैव चुम्बक जो प्रमुख कार्य करता है, वह है इसकी उपस्थिति से शरीर की टूट-फूट का अपनी पूर्व की स्थिति को प्राप्त कर लेना ।

"द रूट्स ऑफ कान्शीयसनेस" नामक पुस्तक में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेफरे मिशलोव ने लिखा है कि पाश्चात्य देशों में इस जैव चुम्बकीय शक्ति का पता लगाने हेतु अनेक प्रयोग सम्पन्न हुए हैं । सुप्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक अलेक्जेण्डर गोवौच ने अपने शोध के दौरान पाया है कि प्रत्येक जीवित पदार्थों के जीव कोशों से अदृश्य विकिरण निःसृत होता है । इसे उन्होंने जैविक विकिरण नाम दिया । ठीक ऐसी ही जानकारी मास्को विश्वविद्यालय में बायोफिजिक्स के चेयरमैन डॉ. बोरिस ने भी दी है । डॉ. बोरिस के अनुसार जीव-जन्तुओं के जीव कोशों से निकलने वाला चुम्बकीय प्रकाश ठीक वैसा ही है जैसे इन्फ्रारेड किरणों द्वारा प्रकाश निःसृत होता है । अंधेरे में भी इससे गुप्तचरी की जा सकती है । उन्होंने देखा कि पौधों के प्रत्येक स्वतन्त्र जैवकोशों से हल्का चमकीला दृश्य प्रकाश निकलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है जो पत्तों में परिलक्षित होता है । इन प्रकाश किरणों में चुम्बकीय शक्ति विद्यमान रहती है । यह प्रकाश निरुद्देश्य अथवा अस्त-व्यस्त नहीं निकलते वरन् पौधों के चयापचय एवं प्रकृति के अनुरूप निकलते हैं । इन किरणों का सम्बन्ध रोगों से भी है, जिनके बारे में अब पूर्व ही पता लगाया जा सकता है । पौधों में यह प्रकाश जड़ में निहित नमक, लवण, खाद की अधिकता अथवा न्यूनता एवं बैक्टीरिया, फन्गस के हमलों पर निर्भर करता है । इससे स्वस्थ एवं रोगी पौधों में भिन्नता का परिचय मिलता है । ठीक ऐसी ही चुम्बकीय प्रथा मनुष्य के शरीर से भी निःसृत होती है, जो तेजोवलय से भिन्न दिखाई पड़ती है । जिसमें रोग के आगमन की पूर्व चेतावनी का संकेत रहता है । अमेरिका के वैज्ञानिक विलियम जोइन्ल ने इस सम्बन्ध में गहन अध्ययन के उपरान्त विशेष तथ्यों को उजागर किया है । पाश्चात्य अभाव में इस आधार पर रोगी बनने से पूर्व ही सुरक्षा के उपाय किए जाने एवं रोगमुक्त रहने के विभिन्न प्रयोग चल रहे हैं । यह चुम्बकीय शक्ति वास्तव में प्राण ऊर्जा का ही एक रूपान्तरित स्वरूप है । यह प्राण जिस प्राणी में जिस अनुपात में होता है, वह व्यक्ति उतना ही स्फूर्तिवान, तेजस्वी एवं साहस का धनी होता है जबकि इसका अभाव मनुष्य को निस्तेज, उदास, मुरझाये फूल-सा लुंज-पुंज एवं वीर्यहीन बना देता है ।

वह चुम्बकीय शक्ति मात्र रोगों के बारे में ही जानकारी नहीं देती है वरन् हड्डियों की टूट-फूट को ठीक करने एवं अस्त-व्यस्त ऊतकों को व्यवस्थित करने में इसकी अहम् भूमिका होती है । इस सम्बन्ध में अमेरिका के मूर्धन्य शरीर शास्त्री डॉ. हेराल्ड एम्बर ने वरिष्ठ मनो विशेषज्ञ लेमवार्ड जे. राबिट्ज के साथ "जीवन विकास के विद्युत चक्रीय सिद्धान्त" पर गहन अनुसंधान किया है । सूक्ष्मग्राही यन्त्र उपकरणों के माध्यम से संवदेनाओं की शरीर पर प्रतिक्रिया का अध्ययन करने पर उन्होंने पाया है कि जीवित प्रोटोप्लाज्म के विकास के लिए एवं टूट-फूट की मरम्मत हेतु यह जैव विद्युत चुम्बकीय शक्ति महती भूमिका निभाती है । इसे उन्होंने "लाइफ-फील्ड" नाम से सम्बोधित किया है । उनके अनुसार लाइफ फील्ड का मानवी गुण, कर्म, स्वभाव से सीधा सम्बन्ध हैं । व्यक्ति के चिन्तन, चरित्र, दृष्टिकोण एवं व्यवहार के अनुसार इसमें घट-बढ़ होती रहती है । मनुष्य की प्राण शक्ति यही है जो शरीर के अंग-अवयवों, कोशिकाओं की विकृतियों को दूर करती और टूटी हड्डियों को शीघ्र जुड़ने में सहायक होती है । भावनात्मक स्तर में उत्कृष्टता की अभिवृद्धि के साथ जीवन क्षेत्र अधिकाधिक सघन होता चला जाता है, फलतः व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ, सन्तुलित एवं सुखी, समुन्नत बनता चला जाता है । इसकी विरलता व्यक्ति की आन्तरिक कमी को दर्शाती है । यह मस्तिष्क में आसपास विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है, जिसका चित्रांकन करना अभी सम्भव नहीं है । अब इसमें आने वाला उतार-चढ़ाव व्यक्ति की बाह्य बनावट से सम्बन्धित नहीं है, वरन् आन्तरिक बनावट एवं पर्यावरण के विद्युतीय दबाव से सम्बन्धित है । वातावरण के आयन मण्डल में जब कोई गम्भीर उथल-पुथल होती है, उसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे शरीर की सामान्य जैव विद्युत चुम्बकीय शक्ति पर पड़ता है । उससे सामान्य क्रियाशीलता गड़बड़ा जाती है । उस उथल-पुथल व असन्तुलन से ही शरीर में कई तरह की मानसिक व शारीरिक व्याधियाँ उठती दिखाई देती हैं, किन्तु वातावरण के आयनों का प्रभाव कमजोर अन्तःकरण एवं हीन वृत्तियों वाले मनुष्यों पर अधिक पड़ता देखा गया है, जबकि सबल शक्ति वाले इसे यों ही झेल लेते हैं । यही जीवनी शक्ति या जैव चुम्बकीय शक्ति का चमत्कार है ।

डॉ. राविट्ज ने पाँच सौ व्यक्तियों पर विविध प्रयोग किए तथा पाया कि मनोरोगी की विभिन्न मनोदशाओं के अनुरूप इस जीवन क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई देता है । यह मनोविकृति से विशेष सम्बन्धित है । हीन भावना एवं आत्मबल शक्तिरहित व्यक्तियों का यह क्षेत्र सीमित एवं घटने वाला होता है जिसमें तन्तुओं एवं शारीरिक गड़बड़ियों को ठीक करने की क्षमता कम होती है । फलस्वरूप शारीरिक रूप से स्वस्थ दिखाई पड़ने वाले व्यक्ति इसकी न्यूनता के कारण, थोड़े-थोड़े संकट, कष्ट कठिनाइयों से डर कर आत्म-हत्या जैसे जघन्य कृत्य करते देखे गए हैं एवं ऐसे व्यक्तियों की शारीरिक निवृत्ति लम्बे समय तक बनी रहती है । विशेष उपचार करने पर भी टूट-फूट की भरपाई जल्दी नहीं हो पाती । जबकि इसकी अधिकता, अर्थात् निर्मल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मबल सम्पन्न व्यक्ति युद्ध के मैदान में घायल होने, अंग-भंग होने की दशा में भी लड़ते रहते हैं । इससे इसकी महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है ।

इस सम्बन्ध में न्यूयार्क अस्पताल के डॉ. राबर्ट ओवेकर ने उभयचर जीवों पर ऐसे कई प्रयोग किए जिससे जाना जा सके कि इनके पैरों की चोट कैसे ठीक हो जाती है एवं हड्डियाँ टूटने पर जल्दी कैसे जुड़ जाती हैं । उन्होंने देखा कि चोट पहुँचे पैरों की हड्डियाँ वहाँ से तुरन्त 'करेन्ट ऑफ इन्जरी' (चोट लगने का सन्देश) प्रवाहित करती हैं, जो मस्तिष्क के पुनर्उत्पादक तन्तुओं से जुड़ी होती है, वहाँ से तत्काल पुनर्उत्पादक शक्ति आकर अपनी सक्रियता के द्वारा टूटे अंगों को ठीक कर देती है । बेकर ने आगे बताया है कि यही सिद्धान्त मनुष्य की टूटी हुई हड्डियों अथवा तन्तुओं को जोड़ने में लागू होता है । यह विद्युत धारा प्रचण्ड रूप से सम्वेदना सम्पन्न भावना एवं आत्मबल सम्पन्न व्यक्तियों में तत्काल उत्पन्न होती है और व्यक्ति को स्वस्थ बना देती है जबकि सम्वेदना रहित व्यक्तियों में अधिक समय लगता है ।

मनो विशेषज्ञ डॉ. डी. एच. विल्सन के मतानुसार इस चुम्बकीय क्षेत्र का विभिन्न तन्तुओं, रक्त दबाव, त्वचा की प्रतिरोधक क्षमता आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि शारीरिक बनावट में ऐक्यता है किन्तु मानसिक कमी अथवा मानसिक रूप से सबल होने पर इसका प्रभाव भिन्न देखा गया है । इससे स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक जीवन चर्या का सम्बन्ध स्वस्थ शरीर और सुसंस्कृत मन के निर्माण से है इसके विपरीत जीवन चर्या अपनाने पर तन्तुओं की टूट-फूट-मरम्मत करने वाली जीवनी शक्ति निरन्तर घटती ही जाती है ।

मानवी माया इच्छाओं, भावनाओं, विचारणाओं द्वारा संचालित है । जैव चुम्बकत्व की इसमें प्रधान भूमिका देखी जा सकती है । यदि चिन्तन का बिखरा हुआ प्रवाह ऊर्ध्वगामी है तो चुम्बकीय धाराएँ शक्ति संवर्धन एवं मनोबल संकल्प बल में प्रचण्ड वृद्धि करती देखी जा सकती हैं । यही प्रवाह अधोगामी होने पर शक्ति का क्षरण करता व काय सन्तुलन को अस्त-व्यस्त कर देता है । एकाग्रता व संयम द्वारा शक्ति का निग्रह व उसे ऊर्ध्वगामी बनाने में ही मनुष्य की समझदारी है ।

चुम्बकत्व व्यक्ति और विश्व का आधार

एक-दूसरे का आकर्षण ही मनुष्य समाज को परस्पर बाँधे हुए है और उसे समुन्नत बनाने में सहयोग कर रहा है । व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति आकर्षण ही प्रेम के रूप में बदलता है और सहयोग का पथ प्रशस्त करता है । सच्ची मित्रता जहाँ लौकिक दृष्टि से, हर दृष्टि से उपयोगी और पारस्परिक अपूर्णताओं को पूर्णता में बदलने वाली होती है वहाँ उसका आत्मिक लाभ भी है । आत्माओं का गहन स्तर पर मिलन एक ऐसे आह्लाद का सृजन करता है जिसकी तुलना संसार की किसी भी सुविधा के कारण मिली हुई प्रसन्नता के साथ नहीं की जा सकती । प्रेम को मानव-जीवन का रस और सार कहा है । उल्लास इस तत्व के अतिरिक्त और कहीं है ही नहीं । पदार्थों में भी यदि कभी कुछ प्रिय लगता है तो वैसा तभी होता है जब उसके साथ ममत्व जुड़ जाय । परायापन या उपेक्षा भाव रहने से कोई वस्तु कितनी ही अच्छी क्यों न हो अपने लिए तनिक भी उत्साह प्रदान न कर सकेगी ।

भावनात्मक क्षेत्र में जिस आकर्षण को 'प्रेम' कहते हैं वही प्रकारान्तर से समस्त जड़ चेतन में संव्याप्त है । सौर मण्डल के ग्रह-उपग्रह सूर्य के साथ उसकी चुम्बकीय शक्ति से बँधे हैं । आकाश गंगा के साथ सौर मण्डल बँधा है । महा सूर्य का ध्रुव केन्द्र समस्त आकाश गंगाओं को अपने साथ जोड़े हुए है । सारा ब्रह्माण्ड परस्पर मजबूत रस्सों से बँधा है, उसे चुम्बकत्व ही कहना चाहिए । मानव समाज ही नहीं ब्रह्माण्ड व्यापी ग्रह नक्षत्रों को भी आकर्षण विशेष की शृंखलाओं में प्रकृति ने जकड़ कर रखा है तभी वह यथा स्थान टिका हुआ है और यथाक्रम चल रहा है ।

जिस धरती पर हम रहते हैं उसके अन्तरंग और बहिरंग समस्त क्रिया-कलाप उसके कण-कण में सन्निहित आकर्षण शक्ति पर ही अवलम्बित हैं । पृथ्वी एक बड़ा चुम्बक है । उसकी चुम्बकीय किरणें निरन्तर हर जड़, चेतन को प्रभावित करती रहती हैं । समुद्र में आने वाले ज्वार-भाटों के पीछे इसी शक्ति का आकर्षण-विकर्षण काम करता है । शरीर के कोषाणुओं का निर्माण, परिवर्तन और क्रिया-कलाप गतिशील रखने में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति ही प्रेरक है । इतना ही नहीं हमारा प्रत्येक कोषाणु एक छोटा चुम्बक है जो वायुमण्डल में लहराते हुए शक्ति तत्व की फ्रीक्वेन्सी (आकृति) ग्रहण करते हैं । उनके वाइब्रेट और आसीलेट क्रिया-कलाप इस चुम्बकीय क्षमता के कारण ही चलते हैं । मनुष्य शरीर में इस चुम्बकीय शक्ति का परिचय कहीं भी अनुभव किया जा सकता है । बालों मे कंघी कीजिए उस कंघी को लोहे की पिन से स्पर्श कराइये । चुम्बकीय गुण तत्काल प्रत्यक्ष होगा ।

यों यह चुम्बक तत्व न्यूनाधिक मात्रा में समस्त भूमण्डल के दृश्य और अदृश्य पदार्थों में भरा पड़ा है पर उसको अधिक स्पष्ट और सशक्त चुम्बक के नाम से पहचाने जाने वाले पत्थर से लोहे में देखा जाता है । प्राकृतिक रूप से वह शिला खण्डों में यत्र-तत्र पाया जाता है । लोहे में विद्युतधारा का प्रवेश कराने से कृत्रिम चुम्बक भी बन जाता है । शोधकारों का कथन है कि सर्वप्रथम अब से ढाई हजार वर्ष पूर्व किसी मैगनस नामक गड़रिये को चुम्बक पत्थर का पता चला था इसलिए उस गड़रिये के नाम पर उसे 'मैगनेट' कहा जाने लगा ।

जो हो 'चुम्बक' एक अति उपयोगी शक्ति है । कल-कारखानों, यन्त्रों में उसकी उपयोगिता अत्यधिक बढ़ती जाती है । यदि चुम्बक का प्रयोग शक्य न रहे तो लगभग आधे कल-कारखाने बन्द करने पड़ें और रेडियो, ट्रांजिस्टरों का तो अस्तित्व ही शेष न रहे ।

चुम्बक की आवश्यकता जहाँ यन्त्र उपकरणों में है वहाँ उसकी उपयोगिता शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण में भी कम नहीं है जिस प्रकार आयुर्वेद के हिसाब से शारीरिक सन्तुलन वात, पित्त, कफ के ऊपर टिका हुआ है । तिब्बी में जिस प्रकार आबी, वादी, खाकी का बोलवाला है, उसी प्रकार विद्युत विज्ञानवेत्ता शरीरगत चुम्बकीय क्रिया-कलाप को देखते हुए यह कहते रहे हैं कि अंग विशेष में इस चुम्बकीय तत्व की न्यूनाधिकता हो जाने से रोगों की उत्पत्ति होती है और यदि उसके अभाव की पूर्ति एवं विकृति की निवृत्ति कर दी जाय तो रुग्णता से छुटकारा पाया जा सकता है । बायोकैमिक विज्ञान में बारह लवणों की कमी-वेशी से रोगों की उत्पत्ति मानी जाती है और उन क्षारों को देह में पहुँचा कर चिकित्सा की जाती है । ठीक उसी प्रकार चुम्बक विज्ञान के ज्ञाताओं का कथन है कि शरीर का सारा क्रिया-कलाप 'विद्युतमय' है । उसकी सक्रियता चुम्बकीय आधार पर खड़ी है । वही जीवन का सबसे बड़ा आधार है । रुग्णता का कारण इस विद्युत प्रवाह में गड़बड़ी उत्पन्न हो जाना ही है । रोगों की निवृत्ति में चुम्बकीय उपचार—दवादारू से कहीं अधिक कारगर हो सकता है । इसी आधार पर इलेक्ट्रोपैथी का एक स्वतन्त्र चिकित्सा विज्ञान खड़ा किया गया है ।

शोधकर्त्ता चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति को नवीन आविष्कार नहीं मानते वे कहते हैं यह विधान प्राचीन लोगों को भली प्रकार मालूम था और वे इसे रोग निवारण के लिए चिरकाल से प्रयुक्त करते रहे हैं । यूनान के चिकित्सा साहित्य में इस उपचार की विस्तृत प्रक्रिया मौजूद है । पन्द्रहवीं शताब्दी में स्विटजरलैण्ड के चिकित्सक फिलिप्स आरोलस पेरासेल संस ने चुम्बकीय उपचार से कष्टसाध्य रोगों की चिकित्सा करने में भारी सफलता और ख्याति प्राप्त की थी । मिस्र, चीन, यूनान आदि देशों में भी इस प्रकार के प्रयोगों का प्रचलन रहा है ।

मनुष्य का आन्तरिक चुम्बकत्व प्रेम, शिथिल पड़ जाने पर सारा संसार रूखा, नीरस, स्वार्थी, कर्कश और बेतुका प्रतीत होता है उसे छोड़कर कहीं नीरव सुनसान में भाग जाने को मन करता है और यहाँ सब कुछ ऐसा उलझा, बेतुका लगता है कि आत्म-हत्या करने को जी करता है । आस्था खोकर—हिप्पी-दर्शन अपनाने के लिए कदम उठाते हैं—न कोई अपना न हम किसी के वाली दृष्टि तभी उपजती है जब अन्तःकरण में प्रेम का निर्झर सूख जाता है । यह स्थिति मानव-जीवन में कितनी विषम और कितनी भयंकर है इसे प्रेम शून्य हृदय रूपी मरघट की एक झाँकी निकट से लेने पर ही जाना जा सकता है । अगणित मनोविकार तो इस स्थिति में उठ खड़े होते ही हैं । शारीरिक रुग्णता भी धर दबोचने में पीछे नहीं रहती ।

बीमारियों के उपचार में परिचर्या और चिकित्सा का भी स्थान है, पर यदि चुम्बक चिकित्सा की व्यवस्था हो जाय, उस प्रयोजन को पूरा करने वाले अस्पताल खुल जायें तो संसार में से आधी शारीरिक और मानसिक रुग्णता समाप्त होने में देर न लगे । प्रेम, सहानुभूति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्भाव, ममत्व की कुछ बूँद पाने पर किसी को भी नव-जीवन संचार का अनुभव हो सकता है । अमृत की चर्चा बहुत होती रहती है । धरती पर यदि अमृत का रसास्वादन करना हो तो सच्चे हृदय से निकली हुई गहरी सहानुभूति ही अमृत का प्रयोजन पूरा करती दिखाई पड़ेगी उसे पाकर मृतक को जीवन मिल सकता है और सूखे पर हरियाली छा सकती है । रोगों का बहुत बड़ा कारण स्नेह, सहानुभूति से वंचित जीवन ही है । विटामिनों और प्रोटीनों का अभाव नहीं । यदि स्नेह सद्भाव की चुम्बक चिकित्सा का प्रबन्ध इस दुनिया में हो सका होता तो न जाने कितने कराहते व्यक्तियों के चेहरों में मुस्कान अठखेलियाँ करती दिखाई देतीं ।

पृथ्वी की तरह चुम्बक में भी दो ध्रुव होते हैं । शरीर भी एक मैगनेट ही है उसमें भी दो ध्रुव हैं । मस्तिष्क में उत्तर ध्रुव और प्रजनन केन्द्र में दक्षिण ध्रुव की समस्त विशेषताएँ पायी जाती हैं । शरीर शास्त्र की दृष्टि से उत्तर-ध्रुव का काम जीवाणु क्रिया का नियन्त्रण और दक्षिणी ध्रुव का काम शक्ति परीक्षण करना है । दोनों के सम्मिलन से विविध शक्ति धाराओं का प्रादुर्भाव होता है और फिर उसका प्रभाव विविध विधि काम क्रिया-कलापों को गतिशील करता है ।

जब कहीं इस चुम्बकीय क्षमता में न्यूनता, दुर्बलता अथवा विकृति उत्पन्न होती है और अवयवों की संचार व्यवस्था गड़बड़ा जाती है—जिस प्रकार बत्ती, पंखे, रेडियो में करेण्ट कम पड़ जाने से वे मन्द या बन्द हो जाते हैं वही गति शारीरिक अवयवों की होती है । कहीं तार 'शॉट' हो जाय तो वहाँ चिन्गारियाँ उड़ने लगती हैं और यदि उन्हें देर तक सँभाला न जाय तो अग्निकाण्ड जैसी विभीषिका उत्पन्न हो जाती है । उसी प्रकार यह विद्युतीय विकृति शरीर में असह्य एवं कष्ट-साध्य पीड़ाएँ उत्पन्न कर देती है और मृत्यु का कारण बन जाती है ।

प्रकृति गत चुम्बकीय प्रवाहों की प्रतिक्रिया भी शरीरों को प्रभावित कर सकती है और भीतरी गड़बड़ न होने पर भी बाहर के प्रभाव स्वास्थ्य को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं यह भी उनका कहना है ।

रोगों के घटाने-बढ़ाने में चुम्बकीय शक्ति का कितना हाथ हो सकता है इस सन्दर्भ में पिछले दिनों शरीर शास्त्री बहुत प्रयोग करते रहे हैं । अमेरिका के डॉक्टर हैराल्ड एस. अलेक्जेण्डर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चुम्बकीय उपचार से केंसर सरीखे भयावह रोगों पर नियन्त्रण किया जा सकता है, हंगरी के डॉक्टर जीन वारनोथी ने भी चुम्बकीय उपचार पर लम्बी शोध की है । उनका यह शोधकार्य "बायोमैगनेटिक रिसर्च फाउण्डेशन' के तत्वावधान में चला और परिणामों की विस्तृत रिपोर्ट 'मेडिकल वर्ल्ड न्यूज' में प्रकाशित हुई । इसमें कितने ही ऐसे मनुष्य और पशु रोगियों की चर्चा है जिन पर किए गए यह मैगनेटिक उपचार आशा जनक रीति से सफल हुए । इस प्रक्रिया में चुम्बक के उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव के हेर-फेर से उत्पन्न परिणामों का वर्णन किया गया है और बताया गया है कि स्थिति के अनुरूप इस ध्रुवीय सामर्थ्य का उचित नियोजन ही अभीष्ट सफलता प्रदान करता है ।

अब तक आहार व्यवहार को ही आरोग्य का एक मात्र आधार माना जाता था । मिनिरल, विटामिन, प्रोटीन आदि को ही स्वास्थ्य के उत्थान पतन का कारण माना जाता था पर अब शोधें यह प्रमाणित कर रही हैं कि कुछ सूक्ष्म कारण भी ऐसे हैं जो अप्रत्यक्ष होते हुए भी प्रत्यक्ष पोषणों से कहीं अधिक उपयोगी एवं आवश्यक हैं । इनमें चुम्बकत्व की पोषक शक्ति को अब अधिक महत्त्व मिलने लगा है । अविवाहित युवा लड़कियों को मूर्छा, मृगी सरीखे मानसिक रोग हो जाते हैं । इनमें उनकी शारीरिक और मानसिक चुम्बकीय भूख ही प्रधान कारण होती है ।

युवा लड़कों में खीझ, आवेश, उद्दण्डता, आक्रोश, अवज्ञा जैसे मनोविकार फूटते हैं । शरीर में भी युवा व युवतियों में कई तरह के रोग उठते देखे गए हैं । यह उनके उसी अदृश्य भूख और अतृप्ति के कारण होते हैं जिसे साथी सहचर की आवश्यकता कह सकते हैं दाम्पत्य जीवन में शारीरिक और मानसिक चुम्बकत्व का जो आदान-प्रदान होता है उसके कारण अस्वस्थता से बचने और स्वास्थ्य संवर्धन का पथ प्रशस्त होता है । काम-सेवन की नहीं—सान्निध्य, सामीप्य और सहानुभूति की महत्ता है ।

अभीष्ट प्रकार का यह चुम्बकत्व जिसे भी उपलब्ध होगा वह न केवल शारीरिक वरन् मानसिक दृष्टि से भी परिपुष्ट होता चला जायेगा । रोगी की चिकित्सा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में दवादारू उतना काम नहीं करती जितना चिकित्सक का व्यक्तित्व । चरित्रवान्, सहृदय, उदार और सद्भावना सम्पन्न चिकित्सक अपनी मधुरता बखेर कर ही रोगी का आधा कष्ट दूर कर देते हैं । साधु-सन्त धूनी की राख भस्म देकर कई बार कीमती दवाओं से भी अधिक अच्छी चिकित्सा कर देते हैं यह उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व और सद्भाव सम्पन्न अन्तःकरण का ही प्रभाव होता है ।

अमेरिका की 'फेट' पत्रिका के जुलाई ६४ अंक में जोसेफ एफ गुडवेज का एक लेख छपा है जिसमें चुम्बकीय उपचार में निष्णात डॉ. मेकलीन द्वारा असाध्य रोगों को अच्छा करने के अनेक उदाहरणों का उल्लेख है । चिकित्सक महोदय का परिचय देते हुए लेख में बताया गया है कि डॉ. मेकलीन ६४ वर्ष के होते हुए भी ४५ वर्ष से अधिक के नहीं लगते । वे प्रतिदिन ३६०० गॉस चुम्बकीय शक्ति का लाभ अपने शरीर को देते हैं ।

हॉवर्ड डी. स्टेंगल ने चुम्बकीय शक्ति के शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी सर्वसाधारण तक पहुँचाने पर बहुत बल दिया है । उन्होंने कितने ही लेख लिखकर स्वास्थ्य संवर्धन में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को चुम्बकीय क्षमता से परिचित होने का आह्वान किया है । डॉक्टर फ्रंगनिस विक्टर ब्रोसाइस का अस्पताल यों ऐलोपैथी के आधार पर था पर वे चुम्बक उपचार पर ही अधिक ध्यान देते थे और कहते थे यह पद्धति हानि रहित भी है और शीघ्र फलदायक भी ।

मानसिक रोगों के उपचार में यह पद्धति अभी भी सर्वोत्तम सिद्ध हुई है, पागलों और अर्ध विक्षिप्तों के मस्तिष्क में इलेक्ट्रिक शॉक देने की व्यवस्था प्रायः सभी मस्तिष्कीय अस्पतालों में मौजूद है । हल्के मानसिक रोगों में चुम्बकीय छड़ के दक्षिणी ध्रुव को भूमध्य भाग में रखने से लाभ होते देखा गया है । इससे नींद न आने की व्यथा में भी लाभ होता है । स्मरण शक्ति को तेज करना और एकाग्रता का बढ़ना भी इन प्रयोगों द्वारा सम्भव है । हृदय की धड़कन घटाने-बढ़ाने में भी यह प्रयोग कारगर सिद्ध होते हैं । रक्तचाप भी इन प्रयोगों से न्यूनाधिक किया जा सकता है । इस प्रकार के प्रयोगों से वैज्ञानिक परीक्षण के समक्ष सिद्ध करके डॉक्टर के. हेलाल ने चिकित्सा शास्त्रियों का ध्यान विशेष रूप से उस ओर आकर्षित किया है ।

डॉक्टर मेस्मर अपने मेस्मेरिज्म विज्ञान को एक स्वतन्त्र शास्त्र ही बना गए हैं । उन्होंने प्रतिपादित किया है कि चुम्बकीय शक्ति न केवल शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर कर सकती है बल्कि प्रसुप्त 'अतीन्द्रिय' क्षमता को प्रशस्त करने में भी समर्थ है । उसके आधार पर मनुष्य परोक्षानुभूतियों की दिव्य शक्तियों से सम्पन्न हो सकता है और मानसिक संस्थान को न केवल रोग मुक्त वरन् प्रतिभा सम्पन्न भी बना सकता है । उन्होंने पाषाण अथवा धातुगत चुम्बक की अपेक्षा मानवीय शरीर में विद्यमान विद्युतशक्ति को अधिक स्वच्छ, प्रभावी और अन्तस्तल की गहराई तक प्रवेश कर सकने वाली सिद्ध किया है ।

चुम्बक उपचार की महत्ता शरीर शास्त्री प्रतिपादित कर रहे हैं, वे इस प्रयोजन के लिए बिजली के उपकरणों में आगे बढ़ रहे हैं । इससे रोग निवारण में अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिलने की आशा की जाती है । यह तथ्य सही है । सम्भावना यही है कि अगले दिनों चिकित्सा क्षेत्र में चुम्बक एक नया और प्रभावशाली तत्व बनकर प्रवेश करेगा ।

मानसोपचार की दृष्टि से केवल झटका देने वाली बिजली का ही उपयोग पर्याप्त नहीं उसमें इस सद्भावना सम्पन्न और उच्च व्यक्तित्व के साथ सम्बद्ध सचेतन विद्युत चुम्बक का भी समावेश होना चाहिए । स्नेह और सहानुभूति का विद्युत प्रवाह जब पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होगा और उसकी पर्याप्त मात्रा हर किसी को मिलने लगेगी तब न केवल शारीरिक और मानसिक विकृतियाँ समाप्त होंगी वरन् सामाजिक वातावरण भी ऐसा बनेगा जिसमें सर्वत्र स्नेह और सहयोग की गतिविधियाँ बिखरी पड़ी रहेंगी और हर कोई उल्लास और उत्साह से भरा होगा ।

चुम्बकत्व ग्रह नक्षत्रों को बाँधे हुए है । धरती के सारे क्रिया-कलापों का संचार कर रहा है । आरोग्य का आधार है, यह चुम्बकत्व यदि स्नेह सद्भाव की भावनात्मक परिधि में प्रवेश कर सका तो इसी धरती पर स्वर्गीय परिस्थितियाँ समुत्पन्न होंगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य शरीर की चमत्कारी विद्युत शक्ति

मनुष्य के शरीर में विद्युत शक्ति का भण्डार भरा पड़ा है । उसी के आधार पर मस्तिष्कीय क्रिया-कलाप, पाचन-तन्त्र, रक्ताभिषरण, आकुंचन-प्रकुंचन, मल-विसर्जन, निद्रा, जागरण आदि के विविध क्रिया-कलापों का संचरण होता है । मन और बुद्धि की दौड़ में यही बिजली काम करती है । ओजस्, आत्मबल, मनोबल, साहस एवं प्रतिभा के रूप में इसी विद्युत शक्ति को विशिष्ट प्रयोजन पूरे करते हुए देखा जा सकता है ।

साधारणतया मानवी शरीर में काम करने वाली बिजली चेतना स्तर की होती है । उसे प्राण कहते हैं । उसकी अपनी विशेषताएँ हैं, पर जिस तरह भौतिक बिजली झटका मारती है, चिन्गारियाँ उत्पन्न करती हैं वैसा स्वरूप उसका नहीं होता । जड़-चेतन के अन्तर में इतना फर्क रहना तो स्वाभाविक भी है ।

किन्तु कभी-कभी ऐसे प्रमाण भी सामने आते हैं जिनमें मनुष्य शरीर की बिजली—भौतिक बिजली की तरह काम करती देखी, पायी जाती है । झटका देने और चिन्गारियाँ उत्पन्न करने का काम करते हुए भी कई बार मनुष्य शरीर पाये गए हैं । शरीर-विज्ञान के इतिहास में ऐसे अनेक विवरण उपलब्ध हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि विशेष परिस्थितियों में शरीर की विद्युत शक्ति अपने सूक्ष्म स्वरूप में आगे बढ़कर स्थूल बिजली का भी रूप धारण कर लेती है और जिस प्रकार किसी शक्तिशाली बैटरी, मैगनेट या जनरेटर की समीपता से आघात का अनुभव होता है वैसे ही उन शरीरों का स्पर्श करने से भी अनुभव होता है । ऐसी घटनाएँ इतिहास में थोड़ी सी ही हैं पर हैं अवश्य ।

रूस के प्रमुख समाचार पत्र 'प्रावदा' के सम्वाददाता ने नेल्सा से भेंट की तो उसने अपने चमत्कार दिखाये । कारण और रहस्य बताते हुए उसने इतना ही कहा—यह अत्यधिक एकाग्रता और इच्छा शक्ति के प्रयोग का प्रतिफल है । उसके करतबों की फिल्म ली गई है, ताकि वैज्ञानिक उसका अध्ययन कर सकें । वैज्ञानिकों ने इसे मस्तिष्कीय विद्युत की गुरुत्वाकर्षणता तथा इलैक्ट्रो मैगनेटिक शक्ति की विद्यमानता निरूपित किया है । इस सन्दर्भ में अधिक विचार करने वाले अन्वेषकों का कहना है कि इस प्रकार की विद्युत शक्ति मूलतः हर मनुष्य के पास मौजूद है और वह नेल्सा की तरह देर तक अभ्यास करने के बाद उसे विकसित करने में सफलता प्राप्त कर सकता है ।

फ्रांस के जोलिया क्षेत्र में सोंदरवा कस्बे में जन्मे एक ऐसे बालक की रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग ने नोट की है, जिसके शरीर से बिजली की तरंगें उठती थीं । जब वह मरने लगा तो डॉक्टरों ने प्रकाश की तीव्र किरणें निकलते और अन्ततः मन्द होकर समाप्त होते देखी थी ।

आस्ट्रेलिया से एक बाईस वर्षीय युवक न्यूयार्क में इलाज कराने के लिए लाया गया था । उसके शरीर की स्थिति बिजली की बैटरी जैसी थी । छूते ही उसका चुम्बकीय प्रभाव स्पष्ट अनुभव होता था । जब यह बिजली मन्द पड़ जाती तो वह बेचैनी अनुभव करता । जिन चीजों में फास्फोरस अधिक होता उन मछली सोव आदि पदार्थों को ही वह रुचिपूर्वक खाता था, सामान्य लोगों का आहार तो वह मजबूरी में ही करता था ।

कोलोराडो क्षेत्र के अन्तर्गत लेडबिली निवासी डब्ल्यू. पी. जोन्स नामक व्यक्ति के शरीर में कुछ ऐसी विशेषता थी कि वह जमीन के नीचे की धातुओं को अपने शरीर में उत्पन्न होने वाली सनसनी के आधार पर पहचान लेता । भिन्न प्रकार की धातुओं के कारण उसके शरीर में भिन्न प्रकार की सनसनी होती थी । उस अनुभव के आधार पर वह यह बता देता था कि जहाँ वह खड़ा है उसके नीचे अमुक धातु की खदान इतनी गहराई पर है । पहले तो उसके इस कथन का मजाक उड़ाया जाता रहा । पीछे जब उसकी बात खरी उतरी तो कई भू-स्वामियों ने उसकी सहायता से कीमती खदानें पाईं, जिनमें सोने की खानें भी शामिल थीं । जोन्स को इसमें हिस्सा मिला और उसने प्रसिद्धि के साथ-साथ सम्पत्ति भी कमाई ।

रूस के भौतिक-शास्त्री प्रो. लांखसोव ने मनुष्य-शरीर से निकलते वाले विद्युत स्फुलिंगों को टिमटिमाते दीपकों की तरह अपने विशेष यन्त्र पर अंकित किया है । वैसे खुली आँखों से इस प्रकार का प्रकाश दीख नहीं पड़ता, फिर भी उसका अस्तित्व होता है और मशीनों की सहायता से उसे देखा जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार की घटनाएँ अन्यान्य देशों में भी हुई होंगी, पर वे शोधकर्त्ताओं तथा वैज्ञानिकों की जानकारी में न पहुँचने से अविज्ञात ही बनी रही होंगी । कई बार उन्हें भूत-प्रेत या कोई रोग विशेष समझकर उपेक्षित कर दिया गया होगा । चूँकि इस प्रकार के प्रवाहों का घटना-बढ़ना उस व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक स्थिति पर भी निर्भर रहता है । इसलिए ऐसा भी हो सकता है कि किसी व्यक्ति में यह शक्ति उभरी हो, किन्तु उसे विभिन्न परिस्थितियों में रहने के कारण उस विशेषता से वंचित रहना पड़ा हो ।

दक्षिण पूर्व अमेरिका की नदियों में पायी जाने वाली 'ईल' नामक मछली में डेढ़ सौ अश्व शक्ति तक की बिजली पायी जाती है । यदि इसका ठीक तरह उपयोग किया जा सके तो इतनी ताकत से एक अच्छा-खासा कारखाना चल सकता है । वह अपनी इस शक्ति को आवश्यकतानुसार घटा या बढ़ा लेती है । इस शक्ति का उपयोग वह अपने शिकार पर अथवा शत्रु पर आक्रमण करने के लिए करती है । जब वह झटका खाकर मूर्च्छित हो जाता है तो ईल उसे आसानी से उदरस्थ कर लेती है । इस प्रकार का अद्‌भुत शरीर विद्युत धारण किए हुए अन्य कितने ही पशु-पक्षी तथा छोटे कीड़े-मकोड़े पाये जाते हैं ।

मानवी विद्युत झटका भले ही न मारती हो, पर उसकी चेतना युक्त प्रभावशाली शक्ति असाधारण होती है । किन्हीं-किन्हीं का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक और मोहक होता है, उनकी आँखें और मुखाकृति सहज ही दूसरों का मन अपनी ओर खींचती है । इसमें रंग, रूप की बनावट उतना कारण नहीं होती, जितनी कि व्यक्तित्व से ओत-प्रोत आकर्षण चुम्बकीय शक्ति ।

शरीर में यह मानवी विद्युत, आकर्षक व्यक्तित्व के रूप में देखी जाती है और मन क्षेत्र में उसका उभार साहस, विवेक, सन्तुलन, मुस्कान आदि के गुणों के रूप में देखा जाता है । मनोबल, ओज, शौर्य के रूप में जब वह विकसित होता है तो समीपवर्ती लोगों पर गहरी छाप छोड़ती है । लोग उसका अनुगमन करने और आदेश मानने को बाध्य होते हैं ।

शरीर, मन और अन्तःकरण में काम करने वाली विद्युत शक्ति के अभिवर्धन और सदुपयोग का विधान, प्रक्रिया का नाम ही योग-साधना है । विभिन्न प्रकार के तप साधन इसी प्रयोजन के लिए किए जाते हैं । प्राणवान व्यक्तियों के समीप रहकर उनके विद्युत-प्रवाह का लाभ उसी प्रकार उठाया जा सकता हैं जैसा कि चन्दन वृक्ष के समीप उगे हुए झाड़-झंखाड़ भी सुगन्धि युक्त होने का लाभ उठाते हैं । मौन, एकान्त सेवन और ब्रह्मचर्य जैसी साधनाएँ इसीलिए हैं कि वह विद्युत भण्डार निरर्थक कार्यों में खर्च न होकर संग्रहीत रखा जा सके और उसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों में खर्च किया जा सके । महान व्यक्तियों का सान्निध्य, सम्पर्क अपने आप में एक बड़ा लाभ है । बिना सत्संग और परामर्श के भी ऐसा सम्पर्क स्वल्प प्राण व्यक्तियों के लिए अमृत वर्षा जैसा अति महत्त्वपूर्ण अनुदान प्रस्तुत करता है । स्पष्ट है कि आग और बिजली के सम्पर्क में आने वाली वस्तुओं में यदि ग्रहण करने की शक्ति हो तो वे भी उसी स्तर की बन जाती हैं ।

प्रयत्न करने पर यही चेलन चुम्बकत्व के—आत्मबल के रूप में विकसित हो सकता है और आगे चलकर योग-साधना की सिद्धियों और देव अनुग्रह से मिलने वाली विभूतियों के रूप में सामने आता है । तपश्चर्या, तितीक्षा और कष्टसाध्य साधना पथ पर दूर तक चल सकना, इस आत्मबल के सहारे ही सम्भव होता है । विकसित स्तर का यही आत्म तेजस् सूक्ष्म जगत में काम करने वाली दिव्य शक्तियों को खींच लाता है और उस व्यक्ति की हथेली पर लाकर रख देता है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाँच प्राण : पाँच देव

क्या हम उतने ही हैं जितना स्थूल शरीर

प्रथम महायुद्ध के समय 'डान और वाव' नामक दो अमेरिकी सैनिक युद्ध के एक मोर्चे पर एक साथ ही घायल हो गए । वे दोनों गहरे मित्र भी थे । 'डान' तो तुरन्त मर गया किन्तु 'वाव' उपचार से ठीक हो गया, पर स्वस्थ होने पर 'वाव' के स्वभाव में भारी परिवर्तन देखा गया । वह अपने मित्र 'डान' जैसा व्यवहार करने लगा स्वयं को 'डान' कहता । युद्ध समाप्त होने पर वह घर के लिए रवाना हुआ किन्तु अपने घर न जाकर 'डान' के घर जा पहुँचा । वहाँ डान के माता-पिता से मिलकर उतना ही प्रसन्न हुआ जैसा 'डान' होता था । आचरण और व्यवहार में 'डान' से पूर्ण समानता होने पर भी 'वाव' का शरीर तो पूर्ववत् ही था । 'डान' के माता-पिता ने 'वाव' को अपना पुत्र मानने से इन्कार कर दिया । इस पर वाव रूपी 'डान' को विशेष दुःख हुआ । उसने डान के माता-पिता को अतीत से सम्बन्धित ऐसी-ऐसी प्रामाणिक घटनाएँ बतायीं जो उन्हीं से सम्बन्धित थीं । उस पर उनको विश्वास हो गया कि रूप की भिन्नता होते हुए भी उसके सारे क्रिया-कलाप 'डान' जैसे हैं तथा डान की आत्मा 'वाव' के शरीर में प्रविष्ट हो गई हैं । यह घटना विज्ञान के लिए एक चुनौती जैसी है ।

स्पेन में भी एक आश्चर्यजनक घटना ऐसी ही सामने आयी । दो लड़कियाँ एक बस से जा रही थीं । इनमें एक का नाम 'हाला' तथा दूसरी का नाम 'मितगोल' था । बस रास्ते में ही दुर्घटनाग्रस्त हो गई । 'मितगोल' दुर्घटना में पिस कर मर गई । 'हाला' को चोट तो नहीं लगी किन्तु भय के कारण बेहोश हो गई । कुछ समय बाद उसे होश आया । दुर्घटना की सूचना दोनों लड़कियों के अभिभावकों को मिली । अपनी बच्चियों को देखने दोनों दुर्घटना-स्थल पर पहुँचे । 'हाला' के पिता उसकी ओर बढ़े तथा उसका नाम लेकर पुकारा, पर आश्चर्य वह बोल पड़ी "मैं हाला नहीं मितगोल हूँ ।" यह कहकर 'वह' मितगोल के पिता की ओर बढ़ी । अभिभावकों ने उसे स्मृति भ्रम समझकर उसे दर्पण दिखाया जिससे दर्पण देखकर भ्रम दूर कर सके । परन्तु दर्पण देखकर वह बोली 'मितगोल' (हमारा) रूप कैसे बदल गया ।" 'हाला' के पिता किसान थे । वह अधिक पढ़ भी नहीं पायी थी । 'मितगोल' के पिता प्राचार्य थे । मितगोल कॉलेज में पढ़ती थी तथा विभिन्न विषयों की जानकार थी ।

हाला के पिता समझा-बुझाकर लड़की को अपने साथ ले गए । वह उस विद्यालय में पढ़ने गई जहाँ पहले हाला पढ़ती थी किन्तु वहाँ उसके व्यवहार में पूरी तरह परिवर्तन देखा गया । एक-दिन वह उस विद्यालय में जा पहुँची जहाँ मितगोल पढ़ती थी । वहाँ छात्रों को सम्बोधित करते हुए स्पिनोजा के तत्वज्ञान पर भाषण दिया । ऐसे अनेकों प्रमाणों से 'प्राचार्य' महोदय को यह विश्वास हो चला कि 'हाला' का शरीर होते हुए भी उसमें 'मितगोल' की आत्मा है । जो भी प्रयोग परीक्षण हुए उनसे यह एक ही बात सिद्ध हुई ।

विश्व-विख्यात चित्रकार 'गोया' की आत्मा अमेरिका की एक विधवा हैनरोट के भीतर प्रविष्ट हो गई । यह घटना अमेरिका में प्रसिद्ध है । नये शरीर में 'गोया' ने 'ग्वालन' नामक एक सुन्दर कलाकृति का निर्माण किया । विधवा 'हैनरोट' ने अपने जीवनकाल में कभी चित्र नहीं बनाया था । अमेरिकी विशेषज्ञों को विधवा के व्यवहार में गोया की आत्मा झाँकती दिखाई दी ।

घटना ७ नवम्बर १९१८ की है । तब पहला विश्वयुद्ध चल रहा था । एक फ्रांसीसी लड़का टैड जिसका पिता फ्रांस के मोर्चे पर लड़ रहा था, खेलते-खेलते एक दम चिल्लाया—मेरे पिता का दम घुट रहा है । वे एक तंग कोठरी में बन्द हो गए हैं और उन्हें कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है । घर के लोग कुछ भी नहीं समझ पाये । टैड इतना कहकर बेहोश हो गया था । कुछ देर बेहोश रहने के बाद उसे होश आया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और वह बोला—अब वे ठीक हो जायेंगे । घर के लोगों ने टैड के बेहोश होने से पूर्व कहे गए शब्दों और बाद में होश आने पर कहे शब्दों से इतना ही अन्दाज लगाया कि टैड ने अपने पिता के सम्बन्ध में कोई दुःस्वप्न देखा होगा । बात जहाँ की तहाँ समाप्त हो गई ।

प्रथम विश्व-युद्ध, जब समाप्त हुआ और टैड के पिता घर लौटे तो स्वजनों को उस दिन की घटना याद आ गई, जब टैड के पिता ने बताया कि ७ नवम्बर को मैं मरते-मरते बचा । पूछा गया कि क्या बात हुई थी तो उन्होंने बताया कि मैं उस दिन एक गैस चैम्बर में फँस गया था, जिसमें मेरा दम घुटने लगा था । मुझे दिखाई देना भी बन्द हो गया था । तभी मैंने देखा कि टैड जैसा एक लड़का उस युद्ध की विभीषिका में न जाने कहाँ से आ पहुँचा और उसने चैम्बर का मुँह खोलकर, मुझे हाथ पकड़ कर बाहर खींचा । तभी मेरी यूनिट के सैनिकों की दृष्टि मुझ पर पड़ी और उन्होंने मुझे अस्पताल पहुँचाया । यह विवरण सुनकर ही घरवालों को उस दिन टैड के चीखने, बेहोश होने तथा होश में आने पर आश्वस्त ढंग से बात करने की घटना याद आयी ।

इटली के एक पादरी अलफोन्सेस लिगाडरी के साथ २१ सितम्बर, १९७४ को ऐसी ही घटना घटी । उस दिन वे ऐसी गहरी नींद में सोए कि जगाने की बहुत कोशिशें करने के बाद भी न जगाए जा सके । यह भ्रम हुआ कि कहीं वे मर तो नहीं गए हैं । इस भ्रम की परीक्षा के लिए उनकी जाँच की गई तो पता चला कि वे पूरी तरह जीवित हैं । कई घण्टों तक वे इसी स्थिति में रहे । उन्हें जब होश आया तो देखा कि आसपास लगभग सभी साथी सहयोगी खड़े हुए हैं । उन्होंने अपने साथियों से कहा—"मैं आपको एक बहुत ही दुःखद समाचार सुना रहा हूँ कि हमारे पूजनीय पोप का अभी-अभी देहान्त हो गया है ।" साथियों ने कहा—"आप तो कई घण्टों से अचेत हैं, आपको कैसे यह मालूम हुआ ।"

लिगाडरी ने कहा—मैं इस देह को छोड़कर रोम गया हुआ था और अभी-अभी वहाँ से ही लौटा हूँ । उनके साथियों ने समझाया कि वे कोई सपना देख कर उठे हैं और सपने में ही उन्होंने पोप की मृत्यु देखी होगी । चार दिन बाद ही यह खबर लगी कि पोप का देहान्त हो गया है और वह उसी समय हुआ जबकि लिगाडरी अचेत थे तो उनके मित्र साथी चकित रह गए ।

एक स्थान पर रहते हुए भी मनुष्य अपनी आत्मा की शक्ति द्वारा दूरवर्ती क्षेत्रों में संदेश पहुँचा सकता है । उपर्युक्त घटनाओं में जाने-अनजाने सूक्ष्म शरीर ही सक्रिय रहा है । यदि सूक्ष्म शरीर की शक्ति को जागृत कर लिया जाय तो उससे जब चाहें तब मन चाहे करतब किए जा सकते हैं । १९२९ में अल्जीरिया में कैप्टन दुबो के साथ ऐसी ही घटना घटी, जिससे सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व और उसकी शक्तिमत्ता का प्रमाण मिलता है । कैप्टन दुबो जब अल्जीरिया के एक छोटे से गाँव से कुछ रोगियों को देखकर लौट रहे थे, गाँव का मुखिया अब्दुल उन्हें धन्यवाद देने के लिए उनके साथ-साथ आया, बातों ही बातों में अब्दुल ने कैप्टन से सूक्ष्म शरीर के अनेक चमत्कारों का उल्लेख कर दिया । दुबो ने अब्दुल की बातों में कोई रुचि नहीं दिखाई और उल्टे इसे गप्पबाजी कहा । इस पर अब्दुल ने कहा कि मैं इसे प्रमाणित कर सकता हूँ । कैप्टन ने जब उसकी यह बात सुनकर भी अविश्वास से सिर हिलाया तो अब्दुल कुछ देर के लिए ध्यानस्थ हुआ और फिर आँखें खोलकर बोला—आप अपने पीछे मुड़कर देखिए । जैसे ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो उन्होंने दीवार पर एक ऐसी कलाकृति टँगी पायी जो उन्हें बहुत प्रिय थी और इस समय वहाँ से हजारों मील दूर पेरिस में उनके घर पर थी ।

उसी दिन कैप्टन दुबो के पिता पियरे ने पेरिस की पुलिस में रिपोर्ट लिखायी कि उनके घर से १० लाख रुपए मूल्य की अद्वितीय कलाकृति चोरी चली गई । पुलिस कमिश्नर पियरे के अच्छे मित्र थे, उन्होंने शिकायत मिलते ही अपने सर्वश्रेष्ठ गुप्तचर कलाकृति की खोज में लगा दिए । कई दिन तक लगातार खोज चली, पर कलाकृति की खोज न की जा सकी । जिस कमरे में कलाकृति टंगी थी, उसमें किसी के जबरन प्रवेश करने या उँगलियों के निशान नहीं मिले थे । पियरे ने इस कलाकृति की चोरी की खबर अपने पुत्र को भी दी । तब सारी बात जानकर कैप्टन दुबो, पुलिस कमिश्नर और अन्य अधिकारियों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन सारी घटनाओं का विश्लेषण किया जाय तो उससे प्रेरणाएँ, दिशाएँ तथा मन्तव्य अनेक प्रकार से निकाले जा सकते हैं किन्तु इन सबका निष्कर्ष एक ही निकलता है वह है स्थूल शरीर से परे मनुष्य का एक और भिन्न अस्तित्वस्थूल शरीर की इकाई है— "प्रोटोप्लाजा" । इस सूक्ष्म शरीर की इकाई क्या है यह अन्वेषण का विषय है किन्तु यह तथ्य निर्विवाद है कि शरीर में एक और शरीर जिसे भारतीय तत्व दर्शन सूक्ष्म शरीर कहता है, निवास करता है । यह शरीर स्थूल से कहीं अधिक समर्थ और चमत्कारी है, सच तो यह है कि स्थूल शरीर के सारे क्रिया-कलाप उसी के द्वारा संचालित होते हैं । उसके दुकान बन्द करते ही स्थूल शरीर की तिजारत हमेशा के लिए बन्द हो जाती है ।

यह सूक्ष्म शरीर जिस प्राण स्फुलिंग के समुच्चय से बना है वह अपने आप में अनन्त शक्तियों के स्रोत समाहित किए हुए है इसलिए शरीर पाँच प्राणों को पाँच देवता कहते हैं । एक देवता की सहायता मनुष्य को अजर-अमर बना देती है तो यदि कोई इन पंचदेवों को सिद्ध कर ले तो वह कितना समर्थ हो सकता है । उसे प्रस्तुत घटनाओं से अनुभव भर किया जा सकता है उसका पूरी तरह अनुमान लगा सकना कठिन है ।

सूक्ष्म शरीर का शक्तिशाली व्यक्तित्व

आँखों देखी को ही प्रमाण मानने वालों के समक्ष भी आये दिन ऐसी घटनाएँ घटती रहती हैं जो यह स्पष्ट कर देती हैं कि सामान्यतः जितना विदित है उससे अनेक गुनी क्षमताएँ मनुष्य के भीतर सन्निहित हैं और ये सभी क्षमताएँ उसमें एक व्यापक विराट चैतन्य सत्ता के अंश होने के कारण ही हैं । जब भी कोई व्यक्ति उस अदृश्य सत्ता से गहराई में जुड़ जाता है, उसकी वे विलक्षणताएँ उभर पड़ती हैं, जिनकी व्याख्या अब तक ज्ञात भौतिक-विज्ञान के नियमों के सहारे नहीं हो सकती ।

अपने सामान्य चेतन मस्तिष्क के संकल्प-बल से मनुष्य स्थूल शरीर को तरह-तरह की गतिविधियों में नियोजित करता है । चेतना की गहराई से संचालित सूक्ष्म शरीर की गतिविधियों का क्षेत्र इस इन्द्रिय-जगत के आगे का सूक्ष्म-जगत है । सूक्ष्म शरीर द्वारा इस सूक्ष्म जगत में हलचलें-क्रियाएँ की जा सकती हैं । जिस प्रकार सूक्ष्म जगत की शक्ति स्थूल जगत से कहीं अधिक है, उसी प्रकार सूक्ष्म-शरीर की सामर्थ्य स्थूल शरीर से बहुत अधिक है । वह मानव-मन की तरह तीव्र गति वाला तो है ही, अज्ञात क्षेत्रों का परिचय प्राप्त करने और अनजानी वस्तुओं की भी जानकारी पाने में समर्थ है । अविज्ञात सूक्ष्म जगत से जुड़े सूक्ष्म शरीर की क्षमताएँ अभी पूरी तरह अविज्ञात ही हैं किन्तु उनके जो स्थूल प्रमाण मिले हैं, वे भी कम विलक्षण नहीं हैं । उनसे मनुष्य के भीतर सन्निहित प्रचण्ड सामर्थ्य स्रोत का आभास तो मिलता ही है ।

आयरलैण्ड की एक घटना है । वहाँ बटलर-दम्पत्ति रहते थे । श्रीमती बटलर प्रायः रात्रि में स्वप्न में एक सुन्दर इमारत देखती थीं, जो चारों ओर के उद्यानों के बीच होती । सपने में वे उस मकान के भीतर घूमतीं । यह स्वप्न उन्हें इतनी बार आया कि वे उस मकान के बाहरी ढाँचे से ही नहीं, उसके कमरों की भीतरी बनावट से भी परिचित हो गईं । घर वालों से वे इन स्वप्नों की एक सूत्रता की चर्चा भी करतीं । पर वे लोग इसे एक विनोद-प्रसंग बनाने के सिवाय और क्या सोचते ?

हुआ यह कि एक बार पति-पत्नी को लन्दन जाना पड़ा । वहाँ आवास योग्य मकान की खोज शुरू हुई । एक दिन कार में शहर घूमते समय सहसा, श्रीमती बटलर एक मकान को देखकर चौंक उठी । पति से बोलीं "यही वह मकान है जो मुझे अक्सर स्वप्नों में दीखता था ।"

पति भी उत्सुक हो उठे, कार रोकी । मकान की बावत पूछताछ की, पता चला वह बिक सकता है, खाली पड़ा है । श्रीमती बटलर ने सोचा "यही मकान मिल जाय तो अच्छा हो, खरीद लिया जाय ।"

बटलर-दम्पति एजेण्ट के पास गए और उस मकान की जानकारी दी । एजेन्ट ने समझाया—"आप लोग इस चक्कर में न पड़ें । मैं और अच्छे मकानों के विवरण देता हूँ, देख लें । उनमें जो पसन्द आये, ले लें । यह मकान न लें, यह भुतहा मकान है ।"

पर श्रीमती बटलर के मन में तो उस मकान के प्रति आत्मीयता घर कर गई थी । उन्होंने उसे ही लेने का आग्रह किया । अतः एजेन्ट उन्हें लेकर मकान-मालिक के पास गया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर मकान मालिक ने अपने फाटक के भीतर जैसे ही श्रीमती बटलर को देखा, कुर्सी से उठकर भाग खड़े हुए । "भूत, भूत" चिल्लाते वे भीतर घुस गए ।

एजेन्ट उसी शहर का होने से उनसे परिचित था । अतः उनके पास गया । भीतर वे महाशय भय से काँप रहे थे । घर वाले भी तब तक जमा हो गए थे । वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे । एजेन्ट ने मकान-मालिक को समझाया कि ये लोग मकान खरीदने आये हैं । अमुक विभाग में कार्य करते हैं । कोई भूत नहीं हैं । तब वे सज्जन आये । उन्होंने बताया कि—"वह मकान हमें छोड़कर यहाँ आना पड़ा । यों, हमें वही अधिक पसन्द था । इस वाले मकान को तो हमने किराए में उठा रखा था । पर वहाँ रात को एक औरत जब-तब आ धमकती और घूमने लगती । घरवाले तो रात की उस आहट को सुनते ही डर के मारे मुँह ढक कर दुबके रहते । उन्हें बस यह आभास दूर से दो-एक बार हो गया था कि कोई स्त्री-छाया वहाँ टहलने आयी है । मैंने उसे देखने की कोशिश की । बार-बार देखने के कारण मैं उसे भली-भाँति पहचान गया । वह आप ही थीं । मैंने पहली बार तो आप से बातचीत की कोशिश की, क्योंकि आप में भयावहता जैसी कोई बात नहीं थी । मैं चकित जरूर हुआ था कि रात में आप अन्दर आईं कैसे ? पर सोचा पूछूँ, टोकूँ । लेकिन जब आप पर मेरी बात का कोई असर ही नहीं हुआ, मानो आप सुन ही नहीं रही हैं । तब मैं घबराया । आगे, जब आप बार-बार आ धमकने लगीं, तो हमें वहाँ खतरा महसूस हुआ । इसके पहले कि हमें भूत यानी आप कोई हानि पहुँचाएँ, हमने वह मकान छोड़ देना ही ठीक समझा ।"

सुनकर श्रीमती बटलर चकित हुईं उन्होंने बताया कि मैं स्वप्न में जरूर यह सब देखती थी, पर इसका अर्थ नहीं समझ पाती थी । मकान-मालिक का भूत-भय तो मिट गया, पर एक नया ही रहस्य सामने आया । उसने सोचा कि इस मकान से इस महिला का कोई रहस्यमय सम्बन्ध है । अतः उसने उन्हें काफी सस्ते में वह बेच दिया ।

ऐसी ही एक घटना १८६३ में दो अमेरिकी नागरिकों के साथ घटी । उनमें से एक का नाम था टेट, दूसरे का विल्मोट । दोनों समुद्री जहाज से साथ-साथ यात्रा कर रहे थे । जब उनका जहाज रात में अन्धमहासागर से गुजर रहा था, उस समय तेज तूफान आया । जहाज हिचकोले खाने लगा । विल्मोट उस समय सो रहा था टेट बैठा था ।

सहसा टेट आश्चर्य से भर उठा । दरवाजा बन्द था, पर एक महिला गाउन पहने दरवाजे पर खड़ी थी । टेट अचकचा गया, किन्तु महिला के चेहरे पर शालीनता थी और वह संकोच से भरी थी । अतः वह डरा नहीं, न चीखा, चुपचाप देखता रहा ।

वह गाउन-धारिणी महिला सोते हुए विल्मोट की ओर धीर-धीरे बढ़ी । मानो टेट की उपस्थिति से हिचक रही हो । उसने विल्मोट का माथा सहलाया । कुछ बोली, जो टेट नहीं सुन सका । फिर उसी प्रकार लौट पड़ी दरवाजे पर पहुँचकर गुम हो गई । केबिन का दरवाजा अभी भी बन्द था । टेट आँखें फाड़े यह देख रहा था ।

उधर महिला अदृश्य हुई इधर विल्मोट नींद से जागकर बड़बड़ा कर उठ बैठा । उसने अभी-अभी एक सपना देखा था । सपने में उसकी पत्नी आयी, माथा सहलाया कुछ बोली जो वह समझ नहीं सका । फिर चली गई । विल्मोट उठा, तो टेट उसे ही देख रहा था । उसने बताया कि तुम तो सो रहे थे, पर मैंने अभी-अभी यह दृश्य देखा । उसका विवरण सुनकर विल्मोट ने बताया—"बिल्कुल इसी तरह मैंने स्वप्न में देखा ।" दोनों द्वारा देखे गए दृश्य की समानता से विल्मोट ने सोचा—"इसमें जरूर कोई अर्थ निहित है । शायद मेरी पत्नी अस्वस्थ हो ।"

जब तक वह घर नहीं पहुँच गया, चिन्तातुर बना रहा । घर जाकर देखा कि पत्नी सामान्य रीति से काम कर रही है । समय पाकर उसने उस रात की विचित्र घटना बताई । तब वह बताने लगी—"उस रात मुझे जब रेडियो पर खबर सुनाई पड़ी कि अटलांटिक में तूफान आया है, तब मैं परेशान हो गई । तुम्हारे बारे में सोचती-सोचती मैं सो गई । स्वप्न में मैंने महसूस किया कि मैं पता नहीं कैसे चलकर एक समुद्री जहाज के भीतर पहुँच गई हूँ । तुम उस केबिन में सो रहे हो । वहीं एक और व्यक्ति दिखा । परन्तु वह जाग रहा था । उसे देखकर मैं ठिठकी । फिर, तुम्हारे पास जाकर माथा सहलाया । पूछा कि "तुम्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिक्कत तो नहीं हुई ?" इसके बाद मेरी नींद खुल गई । विल्मोट ने यह सब सुना तो उस रात स्वयं को जहाज में दिखे स्वप्न और टेट के बताए विवरण से पत्नी के विवरण का पूर्ण सादृश्य देखकर विस्मित रह गया ।

स्पष्ट है कि ये घटनाएँ मात्र विचारों के दूर-सम्प्रेषण का मामला नहीं है । यदि मात्र विचार ही उतनी दूर तक फैलकर सम्बद्ध व्यक्ति तक पहुँच गए होते तो यह 'टेलीपैथी' के अन्तर्गत आ सकता था, किन्तु प्रस्तुत घटनाएँ उससे भिन्न हैं । यहाँ विचारों के साथ व्यक्तित्व ने भी सम्बद्ध व्यक्तियों तक देश की परिधि लाँघ कर यात्रा की थी । इसके बाद शब्द-वेधी बाण की तरह वापस लौट आया था । जैसे पक्षी दूर-दूर तक उड़कर लौट आयें वैसे ही ये व्यक्तित्व भी मानो उड़कर अभीप्सित स्थान एवं व्यक्ति तक जा पहुँचे थे और फिर इच्छित कार्य कर लौट आये थे ।

यह कार्य स्थूल-जगत में ज्ञात तथ्यों और विधियों द्वारा सम्भव नहीं । जिस समय विल्मोट की पत्नी दूर अन्ध-महासागर में जहाज पर उसके पास गई थी उस समय उसका स्थूल शरीर अमेरिका के अपने निवास स्थान में ही था । यही स्थिति श्रीमती बटलर के स्थूल शरीर की स्वप्नों के समय होती थी । उन लोगों के स्थूल-शरीर वहीं रहते हुए भी हू-बहू उन्हीं जैसी प्रतिकृति अन्यत्र देखी जाती थी । यह सूक्ष्म शरीर का ही कार्य हो सकता है, जो सूक्ष्म जगत के नियमों से परिचालित होता है ।

भारतीय मनीषियों को प्रत्येक मनुष्य के भीतर सन्निहित इन अद्‌भुत क्षमताओं की हजारों वर्ष पूर्व जानकारी थी और उन्होंने विस्तार से इन सब शक्तियों, सामर्थ्यों की चर्चाएँ की हैं तथा इनके विकास की विधि-व्यवस्थाएँ भी निरूपित-निर्धारित की हैं । कुछ अपवाद व्यक्तियों में पूर्वजन्मों की संग्रहीत सामर्थ्य सहसा इस प्रकार अनायास प्रकट हो जाती है । किसी समर्थ सत्ता के स्नेह-अनुदान से भी ऐसी क्षमताएँ विकसित देखी जा सकती हैं । योगाभ्यास से प्रयत्न पूर्वक प्रत्येक व्यक्तित्व इन्हें विकसित कर सकता है । अनायास प्राप्त सामर्थ्य के बारे में सम्बद्ध व्यक्ति कम जान पाते हैं, उस क्षमता के इच्छानुसार उपयोग की प्रक्रिया उन्हें प्रायः नहीं ज्ञात होती, किन्तु योग-साधक अपनी ऐसी क्षमताओं के इच्छित उपयोग में समर्थ होते हैं, क्योंकि वे उसके पीछे क्रियाशील सूक्ष्मसत्ताओं को जानते होते हैं ।

तन्त्र-विज्ञान में छाया-पुरुष का साधना-विधान है । सूक्ष्म शरीरधारी सजीव छाया-पुरुष अपना ही अंश होता है । उसकी सिद्धि में अपना ही एक और शरीर अपने हाथ में अपने अधिकार में प्रकट होकर आ जाता है जो अपने ही जीवित भूत की तरह होता है और भूतों जैसी अतीन्द्रिय शक्तियों से सम्पन्न होता है । योगी अपने सूक्ष्म-शरीर से और अस्मिता से विनिर्मित निर्माण-चित्रों द्वारा एक ही साथ अनेक कार्य करने में समर्थ होते हैं । यह शक्तिशाली व्यक्तित्व है तो हममें से हर एक के पास, किन्तु उसे जागृत-विकसित करने लायक साधना-प्रयास सब कर नहीं पाते, जो कर लेते हैं वे न केवल इस एक अद्वितीय उपकरण के स्वामी हो जाते हैं, अपितु सूक्ष्म जगत के नियमों के भी ज्ञाता हो जाते हैं और उनकी बौद्धिक-भावनात्मक सीमाएँ बहुत विस्तृत हो जाती हैं । संकीर्णता उनमें नहीं रह जाती ।

स्थूल शरीर से परे मनुष्य के सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व अब विज्ञान द्वारा भी प्रमाणित होने लगा है । सन् १९६३ से अब तक रूस के वैज्ञानिकों ने इस दिशा में कई सफल प्रयोग किए हैं । वहाँ के एक इलेक्ट्रॉन विशेषज्ञ सेमयोन किर्लियान ने अपनी वैज्ञानिक पत्नी वेलिण्टाना के सहयोग से फोटोग्राफी एक विशिष्ट प्रविधि का आविष्कार किया । इस विधि द्वारा सजीव प्राणियों के आस-पास होने वाले सूक्ष्म कम्पनों और देह ऊर्जा के क्रिया-कलापों का छायांकन किया जा सकता है ।

एक दूसरे प्रयोग में किर्लियान दम्पत्ति ने एक रुग्ण पत्नी की फिल्म खींची । इसमें प्रकाश कणों का वह वलय आरम्भ से जीर्ण था और वह शीघ्र ही समाप्त भी हो गया । अगले प्रयोग में किर्लियान दम्पत्ति ने एक मनुष्य के पास से उसके शरीर के चित्र इसी विशेष विधि से लिए । ये छाया चित्र उसके शरीर के विभिन्न भागों के लिए गए थे । गर्दन, हृदय और उदर प्रदेश के अत्यन्त निकट से खींचे गए इन चित्रों में बहुत ही सूक्ष्म धब्बे दिखाई दिए, जो इन अंगों से विसर्जित होने वाली विद्युतीय ऊर्जा के द्योतक थे । इन छाया चित्रों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्रत्येक प्राणी के दो शरीर होते हैं । पहला प्राकृतिक अथवा भौतिक जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आँखों से दिखाई देता है और दूसरा सूक्ष्म शरीर जिसकी सब विशेषताएँ प्राकृतिक शरीर जैसी होती हैं, पर जो दिखाई नहीं देता । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह सूक्ष्म शरीर ऐसे सूक्ष्म पदार्थों का बना होता है । जिनके इलेक्ट्रॉन ठोस शरीर के इलेक्ट्रॉनों की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से चलायमान होते हैं । उनके अनुसार सूक्ष्म शरीर भौतिक शरीर से अलग होकर कहीं भी विचरण कर सकता है ।

रूस के अतिरिक्त अमेरिका में भी इस विषय पर काफी वैज्ञानिक खोजें चल रही हैं । न्यूयार्क राज्य विश्वविद्यालय ने परा-मानसिक तत्वों की खोज के लिए एक स्वतन्त्र विभाग ही खोला है जिसके अध्यक्ष डॉ. रॉबर्ट बेफर हैं । अधिकांश लोगों का दृष्टि केन्द्र चर्मचक्षुओं से दिखाई पड़ने वाला भौतिक शरीर है और वे इसी की सुख-सुविधा के लिए सारे जोड़-तोड़ बिठाते रहते हैं । सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व और उसकी आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया जाय तो काफी उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि जब मनुष्य केवल इस शरीर को ही सुखी बनाने के लिए प्रयत्न नहीं करेगा वरन् वह अपनी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील होगा । भारतीय आध्यात्म इस क्षेत्र में पहले ही काफी आगे बढ़ चुका है । कहना न होगा, प्राचीनकाल में जन-सामान्य का सदाचार निष्ठ और सत्यपरायण होना आध्यात्म के गहन आधारों पर अवलम्बित रहने का सुपरिणाम ही था ।

बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी

अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार जार्ज एलन नॉट ने एक वैज्ञानिक उपन्यास लिखा है—'जर्नीबाय' अनवेज । उपन्यास में एलन नॉट ने एक ऐसे यान की कल्पना की है जिसमें नायक कुछ ही मिनटों में हजारों मील की यात्रा कर लेता है । यान प्रकाश की गति से चलता है और नायक यात्रियों को इच्छित स्थान पर उतार देता है । यह यान न किसी धातु का बना होता है और न ही इसमें कोई यन्त्र लगा होता है । बल्कि कुछ वैज्ञानिक अपनी संकल्प शक्ति से सूक्ष्म अणुओं को इस प्रकार जोड़ते हैं कि उसमें बैठकर यात्री भारहीन हो जाती है । यान चालक संकल्प करता है, अमुक जगह पहुँचना है और यान के सूक्ष्म यन्त्र चलने लगते हैं । चलने लगता है यह कहना भी गलत होगा क्योंकि कुछ ही पल में, इतनी शीघ्र कि लगता है कि तत्काल गन्तव्य स्थान पर खड़ा दिखाई देता है ।

उपन्यास का कथानक कल्पना के ताने-बाने से बुना गया है और लगता है कि कल्पना असम्भव कल्पना है, परन्तु वुडलैण्ड (अमेरिका) के डॉक्टर जियो वर्नहाट ने एक ऐसा ही अनुभव किया जिसमें वे इच्छा मात्र से तुरन्त अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच गए । अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने अमेरिका से प्रकाशित होने वाली परा-मनोविज्ञान की एक प्रसिद्ध पत्रिका में लिखा—"उस समय मेरा पुत्र वियतनाम के मोर्चे पर गया था । सन् १९७१ की घटना है । एक दिन मुझे बैठे-बैठे लगा कि मेरा पुत्र किसी खतरे में है और मुझे पुकार रहा है । इस आभास के साथ ही मुझे यह अनुभव भी हुआ कि मेरा शरीर हवा से भी हल्का हो गया है और मैं तुरन्त वुडलैण्ड से हजारों मील दूर उस अनजान स्थान पर पहुँच गया हूँ जहाँ मेरा लड़का तैनात है ।"

वहाँ जाकर मैंने देखा चारों ओर आग लगी हुई है । जॉन एक तम्बू में फँसा हुआ है और उसके ऊपर लोहे का वजनी ट्रंक गिरा पड़ा है जिसके नीचे वह दबा हुआ है । मैंने तुरन्त उस ट्रंक को जॉन के ऊपर से हटाया और तम्बू के बाहर ले जाकर उसे खड़ा कर दिया ।

इसके बाद मुझे अपना शरीर पूर्ववत् हो गया लगा । आँखें खोलीं तो प्रतीत हुआ कि जैसे तन्द्रा टूट गई हो । पास ही मेरी पत्नी बैठी मेरी नब्ज टटोल रही थी । मैंने पूछा—क्या हुआ ? तो वह बोली मुझे ऐसा लगा जैसे आप एबनार्मल हैं । मैंने उसे अपना अनुभव सुनाया तो वह बोली आपने कोई दुःस्वप्न देखा होगा । परन्तु मुझे न जाने क्यों अपनी पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था । छः महीने बाद जब जॉन छुट्टी पर लौटा तो उसने युद्ध के अनुभव सुनाते समय एक अग्निकाण्ड में फँस जाने और वहाँ से चमत्कारी ढंग से निकल जाने की घटना सुनायी ।

इस घटना के सम्बन्ध में वर्नहाट का विश्वास है कि दूरबोध द्वारा उक्त दुर्घटना की सूचना पाकर उनका सूक्ष्म शरीर ही जॉन को बचाने के लिए गया था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो क्या सूक्ष्म शरीर से हर कहीं तत्क्षण पहुँचा जा सकता है । आध्यात्म विज्ञान इसका उत्तर 'हाँ' में देता है और विज्ञान का ध्यान भी इस तथ्य की ओर आकर्षित होने लगा है । ऐसी कई घटनाओं के विवरण संकलित किए जा चुके हैं, जिनमें सूक्ष्म की शक्ति ही क्रियाशील दिखाई दी है ।

सूक्ष्म देह स्थूल देह से अलग हो सकती है यह तो कई व्यक्तियों के अनुभव में आ चुका है । पिछले दिनों अमेरिका की विश्वविख्यात अभिनेत्री एलिजाबेथ टेलर का अनुभव प्रकाशित हुआ था । उसमें बताया गया था कि टेलर का कोई गम्भीर ऑपरेशन किया जाना था, टेलर को ऑपरेशन टेबिल पर लिटाया गया और बेहोश किया गया । ऑपरेशन काफी समय तक चला और जब पूरा हो गया तो डॉक्टरों का अकस्मात ध्यान गया कि टेलर की काया निष्प्राण हो चुकी है । उसकी साँस भी बन्द हो गई थी नाड़ी डूबती जा रही थी, हृदय भी बहुत धीरे-धीरे धड़क रहा था । काफी प्रयत्नों के बाद वह स्वस्थ हो सकी और जब वह स्वस्थ हुई तो उसने कहा—'मैंने अपना ऑपरेशन अपनी आँखों से देखा है ।'

टेलर तो बेहोश थी । भला अपना ऑपरेशन आप कैसे देख सकती थीं ? डॉक्टरों ने पूछा तो उसने बताया कि—'तब मैं अपने शरीर को भी उसी प्रकार देख सकती थी जैसे कि किसी दूसरे का देख सकती हूँ । सिर, चेहरा, मुँह नाक आदि सब कुछ । मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैं अपने शरीर के बाहर निकल आयी हूँ और अपने शरीर को उस प्रकार देख रही हूँ जैसे वह किसी दूसरे का शरीर हो, उस समय मैं अपने आपको बहुत हल्का-फुल्का अनुभव कर रही थी ।'

एलिजाबेथ टेलर कहीं उस समय स्वप्नों के सागर में तो नहीं खो गई थी यह जाँचने के लिए डॉक्टरों ने कहा अच्छा ऑपरेशन के दौरान क्या-क्या हुआ यह बताइए । टेलर ने ऑपरेशन की प्रत्येक प्रक्रिया बता दी, यही नहीं डॉक्टरों ने कौन-सी वस्तुएँ, ऑपरेशन के कौन से उपकरण, किस क्रम से इस्तेमाल किए यह भी बता दिया । एलिजाबेथ ने यह भी बताया कि अमुक उपकरण यथास्थान उपलब्ध न होने के कारण प्रमुख सर्जन किस प्रकार झल्ला उठे थे और उन्होंने कौन-कौन से शब्द कहे थे ।

इन अनुभूतियों को सुनकर एलिजाबेथ की बातों पर किसी को सन्देह न रहा । भारतीय आध्यात्म-दर्शन से परिचित व्यक्तियों के लिए यह घटना नितान्त सहज हो सकती है क्योंकि यहाँ स्थूल के अतिरिक्त सूक्ष्म और कारण शरीर का अस्तित्व भी सदा से स्वीकारा जाता रहा है परन्तु पश्चिम के लिए यह घटना चौंका देने वाली हो सकती है । ऐसी बात नहीं है कि पश्चिम में शरीर से परे आत्मा के अस्तित्व को कभी स्वीकारा ही नहीं गया हो । वहाँ भी जिन सन्त-महात्माओं ने आध्यात्म विज्ञान की खोज की उन्होंने सूक्ष्म के अस्तित्व को स्वीकारा परन्तु आधुनिक पदार्थ विज्ञान ने उन बातों को अन्धविश्वास का फतबा देकर बुद्धिजीवियों के दिमाग से उन आस्थाओं को पोंछ-सा ही दिया ।

इसके बावजूद भी इस तरह की घटनाएँ घटती रही हैं । जिनके कारण पदार्थ विज्ञानियों को यह सोचने के लिए विवश होना पड़ा कि मनुष्य की चेतना स्थूल शरीर से बँधी हुई नहीं है । वह इच्छानुसार कहीं भी आ जा सकती है । प्रसिद्ध मनश्चिकित्सा विज्ञानी डॉ. थैमला मोस ने सिद्ध कर दिखाया है कि—'कोई भी व्यक्ति अपनी चेतना को शरीर से बाहर निकाल सकता है और पल भर में हजारों मील दूर जा सकता है ।'

शरीर के नियम बन्धनों से मुक्त मानवी चेतना को प्रमाणित करने के लिए डॉ. मोस ने कई घटनाओं का उल्लेख किया है । उनमें से एक घटना सन् १९०८ की है । ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ लार्डस' का अधिवेशन चल रहा था । इस अधिवेशन में विरोधी दल ने सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखा था और उस दिन प्रस्ताव पर मत संग्रह किया जाना था । विरोधी पक्ष तगड़ा था अतः सरकार को बचाने के लिए सत्तारूढ़ दल के सभी सदस्यों का सदन में उपस्थित होना आवश्यक था । इधर सत्तारूढ़ दल के एक प्रतिष्ठित सदस्य सर कॉर्नराश गम्भीर रूप से बीमार पड़े हुए थे । उनकी स्थिति इस लायक भी नहीं थी कि वे शय्या से उठकर चल फिर भी सकें, जबकि उनकी हार्दिक आकांक्षा यह थी कि वे भी मतदान में भाग लें । उन्होंने डॉक्टरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से बहुत कहा कि उन्हें किसी प्रकार मतदान के लिए सदन में ले जाया जाय परन्तु डॉक्टर अपने कर्तव्य से विवश थे । आखिर उनका जाना सम्भव न हो सका । परन्तु सदन में कई सदस्यों ने देखा कि सर कॉर्नराश अपने स्थान पर बैठे मतदान में भाग ले रहे हैं जबकि डॉक्टरों का कहना था कि वे अपने बिस्तर से हिले तक नहीं ।

एक दूसरी घटना का उल्लेख करते हुए डॉ. मोस ने लिखा है—"ब्रिटिश कोलम्बिया विधान सभा का अधिवेशन विक्टोरियासिए में चल रहा था । उस समय एक विधायक चार्ल्सबुड बहुत बीमार थे, डॉक्टरों को उनके बचने की उम्मीद नहीं थी, परन्तु उनकी उत्कृष्ट इच्छा थी कि वे अधिवेशन में भाग लें । डॉक्टरों ने उन्हें बिस्तर से उठने के लिए भी मना कर दिया था और वे अपनी स्थिति से विवश बिस्तर पर लेटे थे । परन्तु सदन में सदस्यों ने देखा कि चार्ल्स विधान सभा में उपस्थित हैं । अधिवेशन की समाप्ति पर सदस्यों का जो चुपचाप फोटो लिया गया, उसमें चार्ल्सबुड भी विधान सभा की कार्यवाही में भाग लेने वाले सदस्यों के साथ उपस्थित थे ।

विश्वविख्यात दार्शनिक, चिन्तक और मनोवैज्ञानिक डॉ. कार्लजुंग ने तो स्वयं एक बार सूक्ष्म शरीर के शरीर से बाहर आने का अनुभव किया था । उन्होंने 'मेमोरीज ड्रीम्स एण्ड रिफ्लेक्शंस' नामक पुस्तक में इस घटना का सविस्तार वर्णन किया है । घटना सन् १९४४ की है । उस वर्ष जुंग को दिल का दौरा पड़ा । दौरा बहुत खतरनाक था और डॉक्टरों के अनुसार जुंग का मौत से आमना-सामना हो रहा था । जुंग ने उस समय के अनुभव को इन शब्दों में लिखा है—"जब मुझे दवा दी जा रही थी और प्राण रक्षा के लिए इन्जेक्शन लगाये जा रहे थे तब मुझे कई विचित्र अनुभव हुए । कहना मुश्किल है, मैं उस समय अचेत था अथवा स्वप्न देख रहा था, पर मुझे यह स्पष्ट अनुभव हो रहा था कि मैं अन्तरिक्ष में लटका हुआ हूँ और धुनी हुई रुई के गोलों की तरह हल्का-फुल्का हूँ । मैं उस समय जहाँ था वहाँ से हजार मील दूर पर स्थित येरूशलम शहर को इस प्रकार देख रहा था कि जैसे मैं विमान में बैठकर आकाश से नीचे झाँक रहा हूँ । इसके बाद मैं एक पूजागृह में प्रविष्ट हुआ । वहाँ मैंने अनुभव किया कि मैं इतिहास का कोई खण्ड हूँ और कहीं भी आने-जाने के लिए स्वतन्त्र हूँ । तभी मेरे ऊपर कोई छाया-सी मण्डराती दिखाई दी, उस छाया ने मुझसे कहा कि तुम्हें अपने भौतिक शरीर में प्रवेश कर जाना चाहिए । जैसे ही मैंने उस छाया के आदेश का पालन किया मैंने अनुभव किया कि मैं अब स्वतन्त्र नहीं हूँ । परन्तु इस अनुभूति ने मुझे जो अन्तर्दृष्टि प्रदान की उसने मेरे सभी सन्देह समाप्त कर दिए तथा मैंने जान लिया कि जीवन की समाप्ति पर क्या होता है।"

भौतिक विज्ञान पदार्थ का विश्लेषण करते-करते इस बिन्दु तक तो पहुँच ही गया है कि जिन्हें हम पदार्थ कहते हैं वह वस्तुतः कोई स्वतन्त्र इकाई नहीं है बल्कि किसी भी पदार्थ का छोटे से छोटा कण भी असंख्य सूक्ष्माति सूक्ष्म कणों का संघटक है । इन घटकों को अणु कहा जाता है । इससे आगे शोध करने पर वैज्ञानिकों ने चेतना के दर्शन आरम्भ किए हैं ।

सन् १९६८ में डॉ. वी. इन्यूशिन, बी. ग्रिस, चेको, एन. नोरोवोव, एन. केरारोवा तथा गुवादुलिन आदि रूसी वैज्ञानिकों ने लम्बे समय तक अनुसंधान और प्रयोग करने के बाद घोषित किया कि जीव-जन्तुओं का शरीर मात्र भौतिक अणु-परमाणुओं से ही नहीं बना है बल्कि इसके अतिरिक्त एक ऊर्जा शरीर भी है ।

वैज्ञानिकों ने इस शरीर को 'द बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी' नाम दिया है । इस शरीर के सम्बन्ध में यह बताया गया है कि यह केवल उत्तेजित विद्युत अणुओं से बने प्रारम्भिक जीवाणुओं के समूह का योग भर नहीं है वरन् एक व्यवस्थित तथा स्वचालित घटक है जो अपना स्वयं का चुम्बकीय क्षेत्र निःसृत करता है ।

आध्यात्म विज्ञान ने चेतना को स्थूल की पकड़ से सर्वथा परे बताया है उसे केवल अनुभव ही किया जा सकता है । फिर भी प्राणियों का शरीर निर्मित करने वाले घटकों का जितना विवेचन, विश्लेषण अभी तक हुआ है, उससे प्रतीत होता है कि आज नहीं तो कल विज्ञान भी इस तथ्य को अनुभव कर सकेगा कि चेतना को स्थूल यन्त्रों से नहीं, विकसित चेतना के माध्यम से ही अनुभव किया जा सकेगा ।

'द बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी' का अध्ययन करते हुए वैज्ञानिकों ने उसके तत्वों का भी विश्लेषण किया । बायोप्लाज्मा की संरचना और कार्यविधि का अध्ययन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए सोवियत वैज्ञानिकों ने कई प्रयोग किए और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बायोप्लाज्मा का मूल स्थान मस्तिष्क है और यह तत्व मस्तिष्क में ही सर्वाधिक सघन अवस्था में पाया जाता है तथा सुषुम्ना नाड़ी और स्नायुविक कोशाओं में सर्वाधिक सक्रिय रहता है ।

शास्त्रकार ने इस शरीर की तुलना एक ऐसे वृक्ष से की है जिसकी जड़ें ऊपर और शाखाएँ नीचे की ओर हैं । जिस प्राण ऊर्जा के अस्तित्व को वैज्ञानिकों ने अनुभव किया वह आत्मचेतना नहीं है बल्कि सूक्ष्म शरीर के स्तर की ही शक्ति है जिसे मनुष्य शरीर की विद्युतीय ऊर्जा भी कहा जाता है यह ऊर्जा प्रत्येक जीवधारी के शरीर में विद्यमान रहती है ।

थेल विश्वविद्यालय में न्यूरो अकादमी के प्रोफेसर डॉ. हेराल्डवर ने सिद्ध किया है कि प्रत्येक जीवित प्राणी चाहे वह कीड़ा ही क्यों न हो 'इलेक्ट्रोडायन मिक' क्षेत्र से आवृत्त रहता है ।

बाद में इसी विश्वविद्यालय के एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. लियोनार्ड राबिन्ज ने इस खोज को आगे बढ़ाया और कहा इस क्षेत्र को मस्तिष्क के द्वारा प्रभावित किया जा सकता है । भारतीय आध्यात्म ने इन शक्तियों के विकास हेतु ध्यान धारणा का मार्ग बताया है ।

अब यह लगभग निश्चित हो चला है कि विज्ञान भी उसी दिशा में आगे बढ़ रहा और सफल हो रहा है जिस सफलता को योग और दर्शन बहुत पहले प्राप्त कर चुका है । पुराणों और धर्मग्रन्थों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिन्हें चमत्कारी घटनाएँ कहा जाता है ।

सूक्ष्म की सत्ता और सामर्थ्य को देखते हुए यह भी असम्भव नहीं लगता कि प्राचीनकाल में ऋषि, महर्षि, देवता, असुर आदि संकल्प बल से या सूक्ष्म माध्यम से सुदूर ग्रह-नक्षत्रों की यात्रा पलक झपकते ही सम्पन्न कर लेते हों । कौन जाने अगले कुछ ही वर्षों में विज्ञान ही ग्रह-नक्षत्रों पर खर्चीले तथा भारी यन्त्रों से लदे यान की अपेक्षा सूक्ष्म के माध्यम से वहाँ पहुँचने की विधि खोज निकाल ले । प्रसिद्ध इलेक्ट्रॉनिक विशेषज्ञ डॉ. निकोलसन ने तो यहाँ तक कहा है कि अगले सौ-पचास वर्षों में इलेक्ट्रोनिकी इतनी विकसित हो जायेगी कि किसी भी वैज्ञानिक को किसी भी ग्रह पर भेजा जा सकेगा । करोड़ों मील दूर स्थित ग्रह पर बैठा कोई वैज्ञानिक किसी गुत्थी के बारे में पूछेगा तो उसे कहा जा सकेगा कि एक मिनट रुकिए अभी पहुँच रहा हूँ और यह सब सूक्ष्म शरीर के द्वारा ही सम्भव हो सकेगा ।

शरीर केवल वह एक ही नहीं है जिसे हम धारण किए हुए हैं और जो दीखता, अनुभव होता है, उसके भीतर दो और शरीर हैं जिन्हें सूक्ष्म और कारण शरीर कहते हैं । इनमें सूक्ष्म शरीर अधिक सक्रिय और प्रभावशाली है । मरण के उपरान्त उसी का अस्तित्व रह जाता है और उसी के सहारे नया जन्म होने तक की समस्त गतिविधियाँ चलती रहती हैं ।

मरने के उपरान्त इन्द्रियाँ, मन, संस्कार तथा पाप-पुण्य साथ जाते हैं । मरण से पूर्व वाले जन्म का स्मरण भी इसी शरीर में बना रहता है इसलिए अपने परिवार वालों को पहचानता और याद भी करता है । अगले जन्म में इस पिछले जन्म के संस्कारों को ढोकर ले जाने में भी यह सूक्ष्म शरीर ही काम करता है । वस्तुतः मरण के पश्चात एक विश्राम जैसी स्थिति आती है उसमें लम्बे जीवन में जो दिन-रात काम करना पड़ता है उसकी थकान दूर होती है । जैसे रात को सो लेने के पश्चात सबेरे ताजगी आती है उसी तरह नये जन्म के लिए इस मध्य काल के विश्राम से फिर कार्यक्षमता प्राप्त हो जाती है । जिनका मृत्यु के उपरान्त तुरन्त पुनर्जन्म हो जाता है विश्राम न मिल पाने से थकान बनी रहती है और शरीर तथा मन में अस्वस्थता देखी जाती है ।

सूक्ष्म शरीर इस जन्म में भी स्थूल शरीर के साथ ही सक्रिय रहता है । रात्रि को सो जाने के उपरान्त जो स्वप्न दीखते हैं वह अनुभूतियाँ सूक्ष्म शरीर की ही हैं । दिव्य दृष्टि, दूरश्रवण, दूरदर्शन, विचार संचालन, भविष्य ज्ञान, देव दर्शन आदि उपलब्धियाँ भी सूक्ष्म शरीर के माध्यम से ही होती हैं । प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की उच्च स्तरीय योग साधना द्वारा इसी शरीर को समर्थ बनाया जाता है । ऋद्धियों और सिद्धियों का स्रोत इस सूक्ष्म शरीर को माना जाता है ।

स्थूल शरीर तो मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाता है । नया शरीर तुरन्त ही नहीं मिलता, उसमें देर लग जाती है । इस मरण और जन्म के बीच की अवधि में प्राणी को सूक्ष्म शरीर का सहारा लेकर ही रहना पड़ता है । शरीर धारण कर लेने के बाद भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उसके अन्तर्गत सूक्ष्म शरीर और कारण शरीरों का अस्तित्व बना रहता है । अतीन्द्रिय ज्ञान उन्हीं के द्वारा होता है और उपासना-साधना द्वारा इन्हीं दो अप्रत्यक्ष शरीरों को परिपुष्ट बनाया जाता है । यह अन्तर शरीर यदि बलवान हो तो बाह्य शरीर में तेज, शौर्य, प्रकाश, बल और ज्ञान की आभा सहज ही प्रस्फुटित दीखती है । उत्साह और उल्लास भी सूक्ष्म शरीर की निरोगता का ही परिणाम हैं ।

स्वर्ग और नरक का जैसा कि वर्णन है उसका उपयोग सूक्ष्म शरीर द्वारा ही सम्भव है । पिछले जन्म के ज्ञान, संस्कार, गुण, रुचि आदि का अगले जन्म में उपलब्ध होने का आधार भी यह सूक्ष्म शरीर है । भूत-प्रेतों का अस्तित्व इसी परोक्ष शरीर पर निर्भर है और दिव्य अनुभूतियाँ, योग की सिद्धियाँ, स्वप्नों पर परिलक्षित सच्चाइयाँ आदि प्रक्रियाएँ सूक्ष्म शरीर से ही सम्भव हो सकती हैं ।

इतिहास, पुराणों में सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व सिद्ध करने वाली अनेक घटनाओं का वर्णन मिलता है । भगवान शंकराचार्य ने राजा अमरूक के मृत शरीर में अपना सूक्ष्म शरीर प्रबद्ध करके ग्रहस्थ जीवन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था । रामकृष्ण परमहंस ने महाप्रयाण के उपरान्त भी विवेकानन्द को कई बार दर्शन तथा परामर्श दिए थे । पुराणों में तो पग-पग पर ऐसे कथानकों का उल्लेख है ।

थियोसोफिकल सोसाइटी की जन्मदात्री मैडम ब्लावटस्की के बारे में कहा जाता है कि वे अपने को कमरे में बन्द करने के उपरान्त भी जनता को सूक्ष्म शरीर से दर्शन और उपदेश देती थीं । कर्नल टाउन शेंड के बारे में भी ऐसे ही प्रसंग कहे जाते हैं । पाश्चात्य योग साधकों में से हैवर्टलमान, लिण्डार्स, एन्ड्र जैक्शन, डॉ. माल्थ, जेल्ट, कारिंगटन, डुरावेल मुलडोन, आलिवर लाज, पावर्स, डॉ. मेस्मर, ऐलेक्जेन्ड्रा, डेविडनीत, ब्रण्टन आदि के अनुभवों और प्रयोगों में सूक्ष्म शरीर की प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले अनेक प्रमाण उपस्थित किए गए हैं । जे. मुलडोन अपने स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को पृथक करने के कितने प्रदर्शन भी कर चुके थे । इन्होंने इस सबकी चर्चा अपनी पुस्तक 'दी प्रोजेक्शन ऑफ आस्टल कॉंडी' में विस्तारपूर्वक की है ।

भारतवर्ष में स्वामी विशुद्धानन्द तथा स्वामी निगमानन्द जी भी अपनी ऐसी अनुभूतियों को प्रमाणित कर चुके हैं 'कहा जाता है कि तैलंग स्वामी को नंगे फिरने के अपराध में काशी के एक अंग्रेज अधिकारी ने जेल में बन्द करा दिया । दूसरे दिन वे जेल से बाहर टहलते हुए पाये गए । नाथ सम्प्रदाय के महीन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालन्धरनाथ, कणप्पा आदि के बारे में भी ऐसे ही वर्णनों का उल्लेख है ।

आत्मा के अस्तित्व और शरीर न रहने पर भी उसका अस्तित्व बने रहने के बारे में पाश्चात्य दार्शनिकों और तत्व वेत्ताओं में से जिन्होंने इस सम्बन्ध में अधिक स्पष्ट समर्थन किया है उनमें राल्फ वाल्डो ट्राइन, मिडनी, फ्लोवर, एलाह्वीलर, बिलकॉक्स, विलयमवाकर, एटकिंसन, जेम्स, केनी आदि का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है । पुराने दार्शनिकों में से कार्लाइल इमर्सन, काण्ट, हेगल, धामस, हिलमीन डायसन आदि का मत भी इसी प्रकार का था ।

जो कार्य हम स्थूल जीवन में करते हैं या मस्तिष्क में जैसे विचार भरे रहते हैं उनकी छाप सूक्ष्म शरीर पर पड़ती रहती है और वह छाप ही संस्कार बन जाती है । मनुष्य का चिन्तन और कर्म जिस दिशा में चलता रहता है कालान्तर में वही स्वभाव बन जाता है और बहुत समय तक जिस स्वभाव को अभ्यास में लाया जाता रहता है उसी तरह के संस्कार बन जाते है । यह संस्कार ही परिपक्व होकर शुभ-अशुभ प्रारब्ध एवं कर्मफल का रूप धारण करते रहते हैं । इस प्रकार कर्मफल प्रदान करने की स्वसंचालित प्रक्रिया भी इसी सूक्ष्म शरीर से सम्पन्न होती रहती है ।

जिस प्रकार अखाद्य खाने, दूषित जलवायु में रहने और असंयम बरतने से बाह्य शरीर दुर्बल एवं रुग्ण हो जाता है उसी प्रकार बुरे कर्म और बुरे चिन्तन से सूक्ष्म शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वह अपनी समर्थता खो बैठता है । कुमार्गगामी का अन्तःकरण सदा दुर्बल और कायर बना रहता है, फलस्वरूप अनेक मानसिक रोग उठ खड़े होते हैं । यों तो सूक्ष्म शरीर दूध में मक्खन की तरह समस्त शरीर में व्याप्त है । पर उसका मुख्य स्थान मस्तिष्क माना गया है । बुरे विचारों मे मन मस्तिष्क और सूक्ष्म शरीर का सामान्य स्वास्थ्य सन्तुलन नष्ट हो जाता है फलस्वरूप मनुष्य का व्यक्तित्व ही लड़खड़ाने लगता है और प्रगति के सारे मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थूल ही नहीं, सूक्ष्म का भी ध्यान रखें

इस विश्व में जो कुछ दृश्यमान होता है वह अदृश्य की परिणति है । इस विश्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ अदृश्य सूक्ष्म द्वारा बिखरा पड़ा है उसका लाख करोड़वाँ हिस्सा भी दृश्यमान नहीं होता है, पर जो कुछ अनुभव में आता है वह अनुभव से अगम्य-इन्द्रियातीत विराट् का एक नगण्य सा अंश मात्र ही होता है । विराट् ब्रह्माण्ड में जितना प्रचुर अग्नि तत्व भरा पड़ा है हमारा सूर्य उसका राई रत्ती जितना अंश ही है । उस सूर्य की भी दसों दिशाओं में जितनी ऊष्मा फैलती है उसका हम लोग पृथ्वी की ओर विकीर्ण होने वाली गर्मी में से भी एक तुच्छ अंश ही अनुभव कर पाते हैं ।

शरीर में प्रत्यक्ष उष्णता के रूप में दिखने वाला बुखार वस्तुतः इन कोटि-कोटि अदृश्य रोग कीटाणुओं के उपद्रव की एक नन्ही सी झलक ही है । वे रोग कीट हजारों तरह के उपद्रवों की पृष्ठभूमि देह के भीतर रच रहे होते हैं पर हमें उनमें से मात्र चमड़ी पर उभरने वाली गर्मी मात्र का ही अनुभव होता है । भीतर के अंगों में जो ताप या विग्रह उन रोग कीटों ने उत्पन्न किया होता है वह तो विदित ही नहीं होता । मनुष्य की काया को ही लीजिए इतना लम्बा-चौड़ा शरीर वस्तुतः एक सूक्ष्म वीर्यकण और उसके भीतर रहने वाले 'जीन्स' न्यूक्लियस आदि अति सूक्ष्म तत्वों की परिणति मात्र होता है । वह अदृश्य सूक्ष्मता की काया के रूप में जितनी प्रकट होती है, उससे भी अधिक गुनी अधिक विशेषताएँ फिर भी अनुभव में न आने पर भी विद्यमान रहती हैं ।

विराट् ब्रह्माण्ड का वास्तविक स्वरूप उसका सूक्ष्म 'शक्ति अंश' ही है । जिसे परा और अपरा प्रकृति के नाम से जाना जाता है । उसके कर्तृत्व का नन्हा-सा अंश ही स्वतः हमारी मनः चेतना की पकड़ में आता है, जो दृश्य है उसके इर्द-गिर्द अदृश्य शक्ति स्रोत की असीम प्रवाह धारा बहती रहती है । ग्रह, नक्षत्रों से लेकर वन, पर्वत, सागर, सरिता तक सब पर यही बात लागू होती है । मानव शरीर और भी अधिक विचित्र है । उसकी संवेदनशीलता-चुम्बक क्षमता इतनी अधिक है कि वह अपनी कोमल ग्रहण शक्ति के कारण इस अदृश्य जगत की किन्हीं भी अद्भुत शक्तियों को अभीष्ट परिमाण में अपने अन्दर खींच सकता है, ग्रहण और धारण कर सकता है ।

शरीर शास्त्री जितना ज्ञान अब तक देह के भीतरी और बाहरी अंगों के सम्बन्ध में प्राप्त कर चुके हैं, उससे कहीं अधिक गम्भीर ज्ञान हमें अपने 'सूक्ष्म' और 'कारण' शरीर के सम्बन्ध में प्राप्त करना चाहिए । जो शोधें प्राचीन काल में हो चुकी हैं उससे आगे का सारा क्रम ही अवरुद्ध हो गया जबकि आवश्यकता उसे निरन्तर जारी रखे जाने की थी । ज्ञान का अन्त नहीं जो प्राचीनकाल में जाना जा चुका वह समग्र नहीं । मानवीय सामर्थ्य और विराट् की अनन्तता की तुलना करते हुए यही उचित है कि उपलब्ध ज्ञान को पूर्ण न माना जाय और अन्वेषण कार्य जारी रखा जाय ।

सूक्ष्म और कारण शरीरों की स्थिति, शक्ति, सम्भावना और उपयोग की प्रक्रिया समझने में भूतकाल के साधन विज्ञानियों की जानकारियों से लाभ उठाया जाना चाहिए और अन्तरिक्ष के सूक्ष्म प्रवाह संचार में पिछले दिनों जो परिवर्तन हुए हैं, मनुष्य कलेवर के स्तर में जो भिन्नता आयी है उसे ध्यान में रखते हुए हमें शोध कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए ।

स्थूल दृश्य शरीर की गतिविधियाँ इस भूलोक तक सीमित हैं । सूक्ष्म शरीर भुवः लोक तक और कारण शरीर स्वः लोक तक अपनी सक्रियता फैलाये हुए हैं । इन भूः भुवः स्वः लोकों को ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र, आदि समझने की आमतौर से भूल की जाती है । लोक और ग्रह सर्वथा भिन्न हैं । ग्रह स्थूल हैं लोक सूक्ष्म । इस दृश्यमान अनुभवगम्य भू-लोक के भीतर अदृश्य स्थिति में दो अन्य लोक समाये हुए हैं । भुवः लोक और स्वः लोक । वहाँ की स्थिति भू-लोक से भिन्न है । यहाँ पदार्थ का प्राधान्य है । जो कुछ भी सुख-दुःख हमें मिलते हैं वे सब अणु पदार्थों के माध्यम से मिलते हैं । यहाँ हम जो कुछ चाहते या उपलब्ध करते हैं वह पदार्थ ही होता है । स्थूल शरीर चूँकि स्वयं पदार्थों का बना है इसलिए उसकी दौड़ या पहुँच पदार्थ तक ही सीमित हो सकती है । भुवः लोक विचार प्रधान होने से उसकी अनुभूतियाँ, शक्तियाँ, क्षमताएँ, सम्भावनाएँ सब कुछ इस बात पर निर्भर करती हैं कि व्यक्ति का बुद्धि संस्थान विचार स्तर क्या था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्व लोक भावना लोक है । यह भावना प्रधान है । भावनाओं में रस है । प्रेम का रस प्रख्यात है । माता और बच्चे के बीच, पति और पत्नी के बीच, मित्र और मित्र के बीच कितनी प्रगाढ़ता, घनिष्ठता, आत्मीयता होती है यह हम प्रत्यक्ष देखते हैं । वे संयोग में कितना सुख और वियोग में कितना दुःख अनुभव करते हैं इसे कोई सहृदय व्यक्ति अपनी अनुभूतियों की तथा उन स्थितियों के ज्वारभाटे से प्रभावित लोगों की अन्तःस्थिति का अनुमान लगाकर वस्तुस्थिति की गहराई जान सकते हैं । यह भाव संवेदना इतनी सघन होती है कि शरीर और मन को किसी विशिष्ट दिशा में घसीटती हुई कहीं से कहीं ले पहुँचती है । श्रद्धा और विश्वास के उपकरणों से देवताओं को विनिर्मित करना और उन पर अपना भावारोपण करके अभीष्ट वरदान प्राप्त कर लेना यह सब भाव संस्थान का चमत्कार है । देवता होते हैं या नहीं । उनमें वरदान देने की सामर्थ्य है या नहीं । इस तथ्य को समझने के लिए हमें मनुष्य की भाव सामर्थ्य की प्रचंडता को समझना पड़ेगा । उसकी श्रद्धा का बल असीम है । जिसकी जितनी श्रद्धा होगी, जिसका जितना गहरा विश्वास होगा, जिसने जितना प्रगाढ़ संकल्प कर रखा होगा और जिसने जितनी गहरी शक्ति भावना को संवेदनात्मक बना रखा होगा देवता उसकी मान्यता के अनुरूप बन कर खड़ा हो जायेगा । वह उतना ही शक्ति सम्पन्न होगा और उतने ही सच्चे वरदान देगा ।

कहना न होगा कि हर चीज सूक्ष्म होने पर अधिक शक्तिशाली बनती चली जाती है । मिट्टी में वह बल नहीं जो उसके अति सूक्ष्म अंश अणु में है । हवा में वह सामर्थ्य नहीं जो ईथर में है । पानी में वह क्षमता नहीं जो भाप में है । स्थूल शरीर के गुण धर्म से हम परिचित हैं । वह सीमित कार्य ही अन्य जीव-जन्तुओं की तरह पूरे कर सकता है । जो अतिरिक्त सामर्थ्य, अतिरिक्त प्रतिभा, अतिरिक्त प्रखरता मनुष्य के अन्दर देखी जाती है वह उसके सूक्ष्म और कारण शरीरों का ही है । बाहर से सब लोग लगभग एक से दीखने पर भी भीतरी स्थिति के कारण उनमें जमीन-आसमान जितना अन्तर पाया जाता है । यह रक्त माँस का फर्क नहीं वरन् सूक्ष्म शरीर की अन्तःचेतना में सन्निहित समर्थता और असमर्थता के कारण ही होता है । पंच भौतिक स्थूल काया को जिस प्रकार आहार, व्यायाम, चिकित्सा आदि उपायों से सामर्थ्यवान बनाया जाता है उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर को भी योग साधना द्वारा परिपुष्ट बनाया जाता है । मनोबल और आत्मबल के कारण जो अद्भुत विशेषताएँ लोगों में देखी जाती हैं उन्हें इन सूक्ष्म शरीरों की बलिष्ठता ही समझना चाहिए । साधना का उद्देश्य उसी बलिष्ठता को सम्पन्न करना है ।

स्थूल शरीर की शोभा, तृप्ति और उन्नति के लिए हमारे प्रयत्न निरन्तर चलते रहते हैं । यदि सूक्ष्म शरीर और कारण शरीरों को उपेक्षित और बुभुक्षित पड़े रहने देने की हानि को हम समझें और उन्हें भी स्थूल शरीर की ही तरह समुन्नत करने का प्रयत्न करें तो ऐसे असाधारण लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जिनके द्वारा जीवन कृतकृत्य हो सके । भूलोक में प्राप्त पदार्थ सम्पदाओं से प्राप्त थोड़े से सुख का हमें ज्ञान है अस्तु उसी की उधेड़बुन में लगे रहते हैं । भुवः और स्वः लोकों की विभूतियों को भी जान सकें तो सच्चे अर्थों में सम्पन्न बन सकते हैं । योग साधना का प्रयोजन मनुष्य को ऐसी ही समग्र सम्पन्नता से लाभान्वित करता है ।

सूक्ष्म शरीर की प्राथमिक ईंटें प्राण-स्फुल्लिंग

मनुष्य शरीर जिन सूक्ष्म कणों से बना है उन्हें कोशिका (सेल) कहते हैं । सारे शरीर को एक कोशिका जाल या भवन कह सकते हैं । इस कोशिका (सेल) को दो भागों में विभाजित किया जाता है—(१) साइटोप्लाज्मा, (२) नाभिक (न्यूक्लियस) । साइटोप्लाज्मा को उस कोशिका का रसायन भाग और नाभिक संस्कार भाग कह सकते हैं । जीवन की प्रमुख चेतना इसी नाभिक में प्रकाश, ताप, चुम्बकत्व, विद्युत, ध्वनि और गति के रूप में विद्यमान रहता है । इस तरह शरीर के स्थूल अणुओं में व्याप्त इस दूसरे जाल की सम्मिलित इकाई का नाम ही सूक्ष्म शरीर है । भारतीय योग विज्ञान में इस तत्व का नाम प्राण और उससे बने सूक्ष्म शरीर को प्राणमय कोश कहा गया है । पूर्व अध्याय में जिस बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी का वर्णन किया गया है वह यह प्राणमय कोश ही है ।

परा प्रकृति की चेतना शक्ति

शरीर में मन की चेतना पंचतत्वों के सम्मिलन की चेतना मानी जाती है । आत्मा में प्रकाश प्राप्त करते हुए भी वह आत्मा का नहीं, शरीर का ही अंश माना जाता है । इसी प्रकार विश्वव्यापी पंच-तत्वों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की, महाभूतों की सम्मिलित चेतना का नाम प्राण है । प्राण को ही जीवनीशक्ति कहते हैं । वह वायु में, आकाश में घुला तो रहता है पर इनसे भिन्न है । जिसे जड़ प्रकृति कहते हैं, वस्तुतः वह भी जड़ नहीं है । उसमें प्राण की एक स्वल्पमात्रा भरी रहती है । पूर्ण निष्प्राण वस्तुतः पूर्णतः निरुपयोगी ही नहीं होती वरन् नष्ट भी हो जाती है । प्राण के अभाव में कोई वस्तु अपना स्वरूप धारण किए नहीं रह सकती, उसके जो स्वाभाविक गुण हैं वे भी स्थिर नहीं रहते ।

प्राण को एक प्रकार की सजीव विद्युत शक्ति कह सकते हैं जो समस्त संसार में वायु, आकाश, गर्मी एवं ईथर की तरह समाई हुई है । यह तत्व जिस प्राणी में जितना अधिक होता है वह उतना ही स्फूर्तिवान, तेजस्वी, साहसी एवं सुदृढ़ दिखाई देता है । शरीर में व्याप्त इसी तत्व को जीवनी शक्ति एवं 'ओज' कहते हैं और मन में व्यक्त होने पर यही तत्व प्रतिभा एवं तेज कहलाता है । वीर्य में यही विद्युत शक्ति अधिक मात्रा में भरी रहने से ब्रह्मचारी लोग मनस्वी एवं तेजस्वी बनते हैं । इसी के अभाव में चमड़ी गोरी-पीली होने पर भी, नख-शिख का ढाँचा सुन्दर दीखने पर भी मनुष्य निस्तेज, उदास, मुरझाया हुआ और लुंज-पुंज सरीखा लगता है । भीतरी तेजस्विता के अभाव में चमड़ी की सुन्दरता निर्जीव जैसी लगती है । मन को लुभाने वाले सौन्दर्य में जो तेजस्विता एवं मृदुलता बिखरी होती है वह और कुछ नहीं प्राण का ही उभार है । वृक्ष, वनस्पतियों, पुष्पों से लेकर शिशु और शावकों, किशोरों-किशोरियों में जो कुछ आह्लाद दीख पड़ता है वह सब प्राण का ही प्रताप है । यह शक्ति कहीं चेहरे के सौन्दर्य में, कहीं वाणी की मृदुलता में, कहीं प्रतिभा में, कहीं बुद्धिमत्ता में, कही कला-कौशलता में, कहीं भक्ति में, कहीं अन्य किसी रूप में देखी जाती है ।

दुर्गा के रूप में आध्यात्म जगत् में इसी तत्व को पूजा जाता है, शक्ति यही है । दुर्गा सप्तशती में "या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण तिष्ठति" आदि श्लोकों में अनेकों रूप से, उसी तत्व के लिए "नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमोनमः" कह कर अभिवन्दन किया गया है । विजय दशमी की शक्ति पूजा के रूप में हम इस प्राण-तत्व का ही आह्वान और अभिनन्दन करते हैं । विश्व सृष्टि में समाया हुआ यह प्राण जब दुर्बल पड़ जाता है तो हीनता का युग आ जाता है, सब जीव-जन्तु दुर्बल काय, अल्पजीवी, मन्दबुद्धि और हीन भावनाओं वाले हो जाते हैं, किन्तु जब इसकी प्रौढ़ता रहती है तो इस सृष्टि में सब कुछ उत्कृष्ट रहता है । सतयुग और कलियुग का भेद इस विश्व-प्राण की प्रौढ़ता और वृद्धता पर निर्भर है । जब सृष्टि में से यह प्राण होते-होते मरण की, परिसमाप्ति की स्थिति में पहुँचता है तो प्रलय की घड़ी प्रस्तुत हो जाती है । परमाणुओं के एक दूसरे के साथ सम्बद्ध रखने वाला चुम्बकत्व-प्राण ही नहीं रहा तो सब बिखर कर धूल की तरह छितरा जाते हैं । जितने स्वरूप बने हुए थे वे सब नष्ट हो जाते हैं इसी का नाम प्रलय है । जब दीर्घकाल के पश्चात् यह प्राण चिर निद्रा में से जगाकर नवजीवन ग्रहण करता है तो सृष्टि उत्पादन की प्रक्रिया पुनः आरम्भ हो जाती है । जीवात्माओं को इस परा और अपरा प्रकृति का आवरण धारण करके कोई स्वरूप ग्रहण करने का अवसर मिलता है और वे पुनः जीव जन्तुओं के रूप में चलते-फिरते दृष्टिगोचर होने लगते हैं ।

यह प्राण तत्व किन्हीं प्राणियों को पूर्व संग्रहीत संस्कार एवं पुण्यों के कारण जन्मजात रूप से अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है । इसे उनका सौभाग्य ही कहना चाहिए, पर जिन्हें वह न्यून मात्रा में प्राप्त है उन्हें निराश होने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है । प्रयत्नों के द्वारा इस तत्व को कोई भी अभीष्ट आकांक्षा के अनुरूप अपने अन्दर धारण कर सकता है । जिसमें कम है वह उसकी पूर्ति इस विश्वव्यापी प्राण-तत्व में से बिना किसी रोक-टोक के चाहे जितनी मात्रा में लेकर कर सकता है । जिनमें पर्याप्त मात्रा है वह और भी अधिक मात्रा में उसे ग्रहण करके अपनी तेजस्विता और प्रतिभा में अभीष्ट अभिवृद्धि कर सकते हैं ।

भारतीय योगियों ने इस सम्बन्ध में अद्भुत प्रयोग किए हैं । योग विज्ञान के सारे चमत्कार इसी इस प्राण-तत्व के ही क्रिया-कलाप हैं । यह सृष्टि परा और अपरा प्रकृति के दो भागों में विभक्त है । एक को जड़ दूसरे को चेतन कहते हैं । जड़ के सूक्ष्म अंश को परमाणु, जिसके संयोग से स्थूल अवयवों का निर्माण होता है चेतन को प्राण कहते हैं जिससे सूक्ष्म शरीर बनता है शरीर में यह प्राण ही सूक्ष्म शरीर के रूप में विद्यमान रहता है इसी से उसमें गति और सक्रियता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न होती है जिससे प्राणि जगत हलचल करता हुआ दिखाई देता है उसके अभाव में इस बौद्धिक चेतना के दर्शन सम्भव नहीं हो सकते हैं प्राण की प्रशस्ति में शास्त्रकारों ने तरह-तरह की व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं ।

प्राण के आग्नेय स्वरूप को इस तरह निरूपित किया है—

एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य एष-पर्जन्यो मघवानष् ।
एष पृथिवी रयिर्देवः सच्चामृतं चयत् ॥

—प्रश्नोपनिषद् २।५

यह प्राण ही शरीर में अग्नि रूप धारण करके तपता है । यही सूर्य, मेघ, इन्द्र, वायु, पृथ्वी तथा भूत समुदाय है सत्, असत् तथा अमृत स्वरूप ब्रह्म भी यही है ।

प्राण सृष्टि से पूर्व भी विद्यमान था । जब दृश्य पदार्थ विनिर्मित हुए तो उनमें प्राण को हलचल करता हुआ देखा गया । यह देखना ही 'व्यक्त' है ।

सृष्टि से पूर्व उसकी सत्ता विद्यमान होने से वह श्रेष्ठ है । श्रेष्ठ इसलिए कि समस्त पदार्थों और शरीरों में, उसी की विभिन्न हलचलें दृष्टिगोचर हो रही हैं । वस्तुतः जीवन के अर्थ में ही प्राण का प्रयोग होता रहा है ।

यस्मात्कस्माच्चाङ्गात्प्राण उत्क्रामति तदेव तच्छुष्यति ।

—वृहदारण्य

जिस किसी अंग से प्राण निकल आता है, वह सूख जाता है ।

दशये पुरुषे प्राणा आत्मैकादश ।

—वृहदारण्य

मनुष्य में रहने वाली दस इन्द्रियाँ और ग्यारहवां मन यह सब प्राण हैं ।

इतने पर भी उसने वायुः इन्द्रियाँ या मन नहीं कहा जा सकता । वस्तुतः वह इस सबके भीतर काम करने वाली जीवनी शक्ति है ।

न वायु क्रिये पृथगुपदेशात् ।

—ब्रह्मसूत्र २-४

यह प्राण वायु या इन्द्रियाँ नहीं हैं । शास्त्रों में उसका उपदेश भिन्न रूप से किया गया है । प्रश्नोपनिषद् में यह तथ्य और भी अधिक स्पष्ट कर दिया है—

तान्वरिष्ठः प्राण उवाच मा मोहमा पद्य था अहमेवै-तत्पंचधात्मानं प्रविभज्यैत द्वाणमवष्टभ्य विधारयामि ।

—प्रश्न. २-३

उस वरिष्ठ प्राण ने मन और इन्द्रियों से कहा—तुम मोह में मत पड़ो । मैं ही पाँच रूप बनाकर इस शरीर को धारण किए हुए हूँ ।

न वायु प्राणो नापि करण व्यापरः ।

—ब्रह्म सूत्र २-४-६

—यह प्राण नहीं, वायु नहीं है और न वह इन्द्रियों का व्यापार ही है ।

एत स्मात्र्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च ।

—मुण्डक २,१,३

यह प्राण मन और इन्द्रियों से भिन्न है ।

वैदिक विवेचना में प्राण के साथ 'वायु' का विश्लेषण भी लगा है । उसे कितने ही स्थानों पर प्राण वायु कहा गया है । इसका तात्पर्य ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि वायु विकारों से नहीं वरन् उस प्रवाह से है जिसकी 'गतिशील विद्युत तरंगों' के रूप में भौतिक विज्ञानी चर्चा करते रहते हैं । अणु विकिरण, ताप, ध्वनि आदि की शक्ति धाराओं के मूल में संव्याप्त सत्ता भी उसे कहा जा सकता है । यदि उसके आध्यात्म स्वरूप का विवेचन किया जाय तो अंग्रेजी के लेटेन्ट लाइट, डिवायन लाइण्ट आदि शब्दों से संगति बैठती है जिसमें उसके दिव्य प्रकाश के समतुल्य होने का संकेत मिलता है ।

स्वामी विवेकानन्द ने प्राण की विवेचना साइकिक फोर्स के रूप में की है । इसका मोटा अर्थ 'मानसिक शक्ति' हुआ । मोटे रूप से तो यह कोई मस्तिष्कीय हलचल हुई । पर प्राण तो विश्व-व्यापी है । यदि समष्टि को मन की शक्ति कहें या सर्वव्यापी चेतना शक्ति का नाम दें तो ही यह अर्थ ठीक बैठ सकता है । व्यक्तिगत मस्तिष्कों की प्रथम मानसिक शक्ति की क्षमता प्राण के रूप में नहीं हो सकती । सम्भवतः स्वामी जी का संकेत समष्टि मन की सर्वव्यापी क्षमता की ओर ही रहा होगा ।

मानसिक एवं शारीरिक क्षमताओं के रूप में प्राण शक्ति के प्रकट होने का, प्रखर होने का परिचय प्राप्त किया जा सकता है, पर वह मूलतः इन सब जाने हुए विवरणों से कहीं अधिक सूक्ष्म है ।

वैदिक साहित्य में प्राण के साथ वायु विशेषण भी लगा है और उसे 'प्राण वायु' कहा गया है । उनका तात्पर्य ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, आदि वायु विकारों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं वरन् उस प्रवाह से है जिसकी गतिशील विद्युत तरंगों के रूप में भौतिक विज्ञानी चर्चा करते हैं । अणु विकिरण, ताप, प्रकाश आदि की शक्ति धाराओं के मूल में संव्याप्त सत्ता से कहा जा सकता है ।

प्राण शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण

मनुष्य शरीर एक प्रकार का चलता-फिरता बिजलीघर है । उसी के आधार पर शरीर के कारखाने में लगे हुए अगणित कलपुर्जे काम करते हैं और मस्तिष्क में जुड़े हुए एक से एक बढ़कर विलक्षण कम्प्यूटरों का सूत्र संचालन होता है । विशालकाय यन्त्रों का क्रिया-कलाप शक्तिशाली इन्जनों या मोटरों पर निर्भर रहता है । मानवी काया का विस्तार भले ही न हो पर उसकी संरचना एवं क्रिया पद्धति असाधारण रूप से जटिल तथा संवेदनशील है । इसे निरन्तर संचालित रखने के लिए स्वभावतः उच्चकोटि की शक्ति का प्रयोग होता है । इसकी पर्याप्त मात्रा जन्मजात रूप से हमें उपलब्ध है और उसी के उपयोग से जीवन की आवश्यक गतिविधियों का स्वसंचालित पद्धति सें गतिशील रहना सम्भव होता है ।

प्राणिज विद्युत शक्ति के उत्पादन के लिए मानवी शरीर में समुचित साधन और आधार विद्यमान हैं । डायनमो, आर्मेचर मैगनेट, क्वायल जैसे सभी उपकरण उसमें अपने ढंग से विद्यमान हैं । अंग-प्रत्यंगों में वे रासायनिक पदार्थ भर पड़े हैं जिनसे बिजली उत्पन्न होती है । रक्तभिषरण की प्रक्रिया इस मोटर को घुमाती है और उस आधार पर यह विद्युत उत्पादन अनवरत रूप से जारी रहता है ।

कोशिकाओं की आन्तरिक संरचना में एक महत्त्वपूर्ण आधार है—माइटोकोण्ड्रिया । इसे दूसरे शब्दों में कोशिका का पावर हाउस या विद्युत भण्डार कह सकते हैं । भोजन, रक्त, माँस, अस्थि आदि से आगे बढ़ते-बढ़ते अन्ततः इसी संस्थान में जाकर ऊर्जा का रूप लेता है । यह ऊर्जा ही कोशिका को सक्रिय रखती है और उनकी सामूहिक सक्रियता जीव-संचालक के रूप में दृष्टिगोचर होती है । इस ऊर्जा को लघुतम प्राणांश कह सकते हैं । काय कलेवर में इसका एकत्रीकरण महाप्राण कहलाता है और उसी की ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना विश्वप्राण या विराट् प्राण के नाम से जानी जाती है । प्राणांश की लघुतम ऊर्जा इकाई कोशिका के अन्तर्गत ठीक उसी रूप में विद्यमान है जिसमें कि विराट् प्राण गतिशील है । बिन्दु, सिन्धु जैसा अन्तर इन दोनों के बीच रहते हुए भी वस्तुतः वे दोनों अन्योन्याश्रित हैं । कोशिका के अन्तर्गत प्राणांश के घटक परस्पर संयुक्त न हों तो महाप्राण का अस्तित्व न बने । इसी प्रकार यदि विराट् प्राण की सत्ता न हो तो भोजन पाचन आदि का आधार न बने और वह लघु प्राण जैसी विद्युतधारा का संचार भी सम्भव न हो ।

बिजली से हीटर, कूलर, पंखे आदि चलते हैं इससे उसकी उपयोगिता समझ में आती है किन्तु कभी-कभी इस प्रक्रिया में व्यतिरेक भी होते देखा जा सकता है । भौतिक बिजली जीव विद्युत तो नहीं बन सकती पर जीव विद्युत के साथ भौतिक बिजली का सम्मिश्रण बन सकता है । ऐसी विचित्र घटनाएँ कई बार देखने में आयी हैं जिनसे मानवी शरीरों को एक छोटे जनरेटर या डायनमों की तरह काम करते देखा गया है ।

कई उदाहरण ऐसे देखे गए हैं जो यह बताते हैं कि इस शरीर में असाधारण विद्युत प्रभाव का संचार हो रहा है । यों यह विद्युत शक्ति हर किसी में होती है पर वह अपनी मर्यादा में रहती है और अभीष्ट प्रयोजन में इस प्रकार निरत रहती है कि अनावश्यक स्तर पर उभर पड़ने के कारण उसका अपव्यय न होने लगे । छूने से किसी शरीर में बिजली जैसे झटके प्रतीत न होते हों तो भी यह नहीं समझना चाहिए कि उस शक्ति का किसी प्रकार अभाव है । हर किसी में पायी जाने वाली मानवी विद्युत जिसे आध्यात्म की भाषा में प्राण कहते हैं । कभी-कभी किसी के प्रतिबन्ध कलेवर भेद कर बाहर निकल आती है तब उसका स्पर्श भी भौतिक बिजली जैसा ही बन जाता है ।

आयरलैण्ड की एक युवती जे. स्मिथ के शरीर में इतनी बिजली थी कि उसे छूते ही झटका लगता था । डॉ. एस. क्राफ्ट के तत्वावधान में इस पर काफी खोज की गई, उसमें कोई छल नहीं था । हर दृष्टि से यह परख लिया गया कि वह शरीरगत बिजली ही है, पर इस अतिरिक्त उपलब्धि का आधार क्या है इसका कारण नहीं समझा जा सका ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बर्लिन (जर्मनी) के निकट एक छोटे से गाँव मिसौरी सिडैलिया में एक लड़की जब १४ वर्ष की हुई तो उसके शरीर में अचानक विद्युत प्रवाह का संचार आरम्भ हो गया । इस लड़की का नाम था—जेनी मार्गन । उसके शरीर की स्थिति एक शक्तिशाली बैटरी जैसी हो गई ।

एक दिन वह हेण्डपम्प चला कर पानी निकालने लगी तो उसके स्पर्श के स्थान पर आग की चिन्गारियाँ छूटने लगीं । लड़की डर गई और घर वालों को सारा विवरण सुनाया । पहले तो समझा गया कि पम्प में कहीं से करेन्ट आ गया होगा पर जब जाँच की गई तो पता चला कि लड़की का शरीर ही बिजली से भरा हुआ है, वह जिसे छूती उसी को झटका लगता । वह एक प्रकार से अस्पृश्य बन गई । चिकित्सकों और वैज्ञानिकों ने इस जंजाल से उसे छुड़ाने के लिए अपने-अपने ढंग से कारण तलाश करने और उपचार ढूँढ़ने में शक्ति भर प्रयत्न किया पर कुछ सफलता न मिली । कई वर्ष यह स्थिति रहने के बाद प्रवाह स्वयं ही घटना शुरू हुआ और तरुणी होने तक वह व्यथा अपने आप टल गई । तब कहीं उसकी जान में जान आई और सामान्य जीवन बिता सकने योग्य बनी ।

सुप्रसिद्ध 'टाइम्स' पत्रिका में कुछ समय पूर्व ओन्टारियो (कनाडा) की एक कैरोलिन क्लेयर नामक महिला का विस्तृत वृत्तान्त छपा था । जिसमें बताया गया था कि उपर्युक्त महिला डेढ़ वर्ष तक बीमार पड़ी रही, पर जब स्थिति कुछ सुधरी तो उसमें एक नया परिवर्तन यह हुआ कि उसके शरीर में बिजली की धारा बहने लगी यदि वह किसी धातु की बनी वस्तु को छूती तो उसी से चिपक जाती । घर वाले उसे बड़ी कठिनाई से छुड़ाते । चुम्बक जैसा यह प्रवाह कैसे उत्पन्न हुआ उसका न तो कुछ कारण जाना जा सका और न उपाय, उपचार किया जा सका ।

मेरीलैण्ड (अमेरिका) के कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी की सोलह वर्षीय छात्रा लुई हैवर्गर, वैज्ञानिकों के लिए अनबूझ पहले बनी रही । इस लड़की की उँगलियों के अग्रभाग में चुम्बकीय गुण था । आधी इंच मोटी और एक फुट लम्बी लोहे की छड़ व उँगलियों के पोरों से छूकर अधर उठा लेती थी और वह छड़ हवा में बिना किसी सहारे के लटकती रहती थी । धातुओं की वस्तुएँ उसके हाथ में चिपक कर रह जाती थीं पर किसी मनुष्य को जब वह छूती तो कोई झटका प्रतीत नहीं होता था ।

इन शोधकर्त्ताओं का कथन है कि स्थान और उपयोग की भिन्नता से प्राणि विद्युत और पदार्थ विद्युत के दो भेद हो जरूर गए हैं, पर तात्विक दृष्टि से उनमें मूलभूत एकता ही पायी जाती है ।

शोधकर्त्ता जोन्स स्वयं भी एक विद्युत मानव थे । उन्होंने नंगे पैरों धरती पर चलकर भू-गर्भ की अनेकों धातु खदानों का पता लगाने में भारी ख्याति प्राप्त की थी । उनके स्पर्श से धातुओं से बनी वस्तुएँ जादूगरों के खिलौनों की तरह उछलने खिसकने की विचित्र हलचलें करने लगती थीं । छूते ही बच्चे झटका खाकर चिल्लाने लगते थे ।

अमेरिका के मोन्टाना राज्य के मेडालिया कस्बे की जेनी मोरन नामक लड़की एक चलती-फिरती बैटरी थी जो उसे छूता वही झटका खाता । अंधेरे में उसका शरीर चमकता था । अपने प्रकाश से वह घोर अन्धेरे में भी मजे के साथ यात्रा कर लेती थी । उसके साथ चलने वाले किसी जीवित लालटेन के साथ चलने का अनुभव करते थे । उसके शरीर के स्पर्श से १०० वाट तक का बल्ब जल उठता था । यह लड़की ३० वर्ष की आयु तक जीवित रही और अस्पृश्य बनी एकान्त कोठरी में दिन गुजारती रही ।

कनाडा के ओन्टोरियो क्षेत्र वोण्डन गाँव में जन्मी एक लड़की १७ वर्ष तक जीवित रही । धातु का सामान उसके शरीर से चिपक जाता था । इसलिए उसके भोजन पात्र तक लकड़ी या काँच के रखे जाते थे ।

टोकियो (जापान) की नेशनल मेडिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट ने इस तरह की घटनाओं पर व्यापक अनुसन्धान किया और कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं इस संस्था के वैज्ञानिकों का कथन है कि आमतौर पर एक बल्ब २५ वोल्ट से ६० वोल्ट का विद्युत बल्ब जलाने जितनी विद्युत की न्यूनाधिक मात्रा प्रत्येक शरीर में पायी जाती है । ट्रान्जिस्टर के "नोव" को हाथ की उँगलियों का स्पर्श देकर बजायें तो ध्वनि की तीव्रता बढ़ जाती है । उँगलियाँ हटाने पर आवाज कुछ क्षीण हो जाती है, यह इसी तथ्य का प्रमाण है । विद्युत चिन्गारियों के कई मामले आये हैं । उनमें भी विद्युत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवेश अधिकांश उँगलियों में तीव्र पाया गया है, पर असीमित शक्ति का कोई कारण खोजा नहीं जा सका ।

भारतवर्ष की तरह जापान भी धार्मिक आस्थाओं, योग साधनाओं का केन्द्र है । सामान्य भारतीय की तरह उनमें भी आध्यात्मिक अभिरुचि स्वाभाविक है । एक घटना के माध्यम से जापानी वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकालने का भी प्रयास किया है कि शरीर में विद्युत की उपस्थिति का कारण तो ज्ञात नहीं किन्तु जिनमें भी यह असामान्य स्थिति पायी गई उनके मनोविश्लेषण से पता चलता है कि ऐसे व्यक्ति या तो जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति के थे या कालान्तर में उनमें विलक्षण अतीन्द्रिय क्षमताओं का भी विकास हो जाता है । इस सन्दर्भ में जेनेवा की एक युवती जेनेट डरनी का उदाहरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है । जेनेट १९४८ में जब वह १६-१७ वर्षीय युवती थी किसी रोग से पीड़ित हुई । उसका वजन बहुत अधिक गिर गया । अब तक उनके शरीर में असाधारण विद्युत भार था वह काफी मन्द पड़ गया था । किसी धातु की वस्तु का स्पर्श करने पर अब भी उनकी उँगलियों से चिन्गारियाँ फूट पड़ती थीं । अब वह अनायास ही ध्यानस्थ हो जाने लगीं । ध्यान की इस अवस्था में उन्हें विलक्षण अनुभूतियाँ होतीं वह ऐसी घटनाओं का पूर्व उल्लेख कर देतीं जो कालान्तर में सचमुच घटित होतीं । व्यक्तियों के बारे में वह जो कुछ बता देतीं वह लगभग वैसा ही सत्य हो जाता । वे सैकड़ों मील दूर की वस्तुओं का विवरण नितान्त सत्य रूप में इस तरह वर्णन कर सकती थीं मानो वह वस्तु प्रत्यक्ष ही उनके सामने है । पता लगाने पर उस स्थान या वस्तु की बतायी हुई सारी बातें सत्य सिद्ध होतीं । काफी समय तक वैज्ञानिकों ने जेनेट की इन क्षमताओं पर अनुसन्धान किए और उन्हें सत्य पाया किन्तु वे कोई वैज्ञानिक निरूपण नहीं कर सके, इस अचानक प्रस्फुटित हो उठने वाली आग या विद्युत का कारण क्या है ?

रासायनिक विश्लेषण से भले ही यह बात सिद्ध न हो पर जो वस्तु अस्तित्व में है वह किसी न किसी रूप में कभी न कभी व्यक्त होती ही रहती है । लन्दन के सुप्रसिद्ध स्नायु रोग विशेषज्ञ डॉ. जान ऐश क्राफ्ट को जब यह बताया गया है कि उनके नगर में ही एक ११ वर्षीय किशोरी कन्या जेनी मार्गन के शरीर में असाधारण विद्युत शक्ति है और कोई व्यक्ति उसका स्पर्श नहीं कर सकता तो उनको एकाएक विश्वास नहीं हुआ । उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हाड़-माँस के शरीर में अग्नि जैसा कोई तेजस् तत्व और विद्युत जैसी क्षमतावान शक्ति भी उपलब्ध हो सकती है उसके परीक्षण का निश्चय कर वे जेनी मार्गन को देखने उसके घर पर जा पहुँचे । बड़े आत्मविश्वास के साथ जेनी से हाथ मिलाने के लिए उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया । जेनी बचना चाहती थी किन्तु डॉक्टर ने स्वयं आगे बढ़ कर उसके हाथ का स्पर्श किया उसके बाद जो घटना घटी वह डॉ. ऐश के लिए बिल्कुल अनहोनी और विलक्षण घटना थी । एक झटके के साथ वे दूर फर्श पर जा गिरे, काफी देर बाद जब होश आया तो उन्होंने अपने आपको एक अन्य डॉक्टर द्वारा उपचार करते हुए पाया । उन्होंने स्वीकार किया कि इस लड़की के शरीर में हजारों वोल्ट विद्युत प्रभार से कम शक्ति नहीं है । सामान्य विद्युतधारा से साधारण झटका लग सकता है किन्तु १५० पौण्ड के आदमी को दूर पटक दे इतनी असामान्य शक्ति इतने से कम विद्युत भार में नहीं हो सकती ।

वास्तव में बात थी भी ऐसी ही । जेनी मार्गन जिस किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आयी, उन सबने यही अनुभव दोहराया । एक दिन जेनी अपने दरवाजे पर खड़ी थी । उधर से एक ताले बेचने वाला निकला । वह जेनी से ताला खरीदने का आग्रह करने लगा । जेनी के मना करते-करते उसने सस्ते ताले का प्रलोभन देकर ताला उसके हाथ में रख दिया । उसी के साथ उसके हाथ का जेनी के हाथ से स्पर्श हो गया, फिर तो जो हालत बनी उसे देखने के लिए भीड़ इकट्ठी हो गई । झटका खाकर ताले वाला पीछे जा गिरा । बड़ी देर में उसे होश आया तो वह अपना सामान समेट कर भागते ही बना । इस तरह की ढेरों घटनाएँ घट चुकने के बाद ही डॉ. ऐश ने जेनी के अध्ययन का निश्चय किया था किन्तु शरीर में उच्च विद्युत वोल्टेज होने के कारण वे भी कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सके ।

बुरी हालत तो बीती एक युवक पर जो जेनी को प्यार की दृष्टि से देखता था । जेनी जो अब तक अपने इस असामान्य व्यक्तित्व से ऊब चुकी थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी भावनात्मक संरक्षण की तलाश में थीं इस युवक को पाकर गद्‌गद हो उठी, किन्तु भयवश स्नेह सूत्र भावनाओं तक ही जुड़े थे । शरीर स्पर्श से दोनों ही कतराते आ रहे थे । एक दिन युवक ने जेनी को एक ओपेरा में कॉफी की दावत दी । कॉफी पीकर जेनी जैसे ही उठी फर्श पर पैर फिसल जाने से वह गिर पड़ी । युवक उसे बचाने दौड़ा किन्तु अभी वह जेनी को समेट भी नहीं पाया था कि स्वयं भी पछाड़ खा कर एक मेज पर जा गिरा इससे वहाँ न केवल हड़कम्प मच गया अपितु उस पर एक साथ कई गर्म प्याले लुढ़क गए जिससे वह जल भी गया । काफी उपचार के बाद बेचारा घर तक जाने योग्य हो पाया । ओपेरा में उपस्थित सैकड़ों लोगों के लिए यह विलक्षण दृश्य था जिससे जेनी की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, पर युवक ने फिर कभी मुड़कर भी उसे नहीं देखा । वैज्ञानिकों ने देखा, पर हुई उनकी भी दुर्गति । इस विद्युत भार का कोई कारण किसी की समझ में नहीं आया । सन् १९५० तक जेनी जीवित बिजलीघर रही उसके बाद अपने आप ही उसकी यह क्षमता विलुप्त हो गई ।

चिकित्सा इतिहास में ऐसी ही एक और घटना अन्तरियो क्षेत्र के बोंडन की है । वहाँ एक १७ वर्षीय लड़की कैरोलिन क्लेअर अचानक बीमार पड़ी । डेढ़ वर्ष तक चारपाई पकड़े रहने के कारण उसका १३० पौंड वजन घटकर ९० पौंड रह गया । जब उस बीमारी से पीछा छूटा तो एक नयी बीमारी और लग गई । उसके शरीर में चुम्बकत्व काफी ऊँचे वोल्टेज की बिजली पैदा हो गई जो छूता वही विद्युत आघात का अनुभव करता । धातु की बनी कोई वस्तु वह छूती तो वह हाथ से चिपक जाती । अन्तरियो मेडीकल ऐसोसिएशन ने इसकी विधिवत् जाँच की पर रिपोर्ट में किसी कारण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया जा सका, केवल अनुमान और सम्भावनाओं के आधार पर ही कुछ चर्चा की गई । कुछ वर्ष बाद उसकी भी यह विलक्षणता घटने लगी और धीरे-धीरे समाप्त हो गई ।

एक तीसरी घटना सोलह वर्षीय लुई हेवर्गर की है । इस लड़के में शक्तिशाली चुम्बक पाया गया । वह जिन धातु पदार्थों को छूता वे उससे चिपक जाते और किसी दूसरे द्वारा बलपूर्वक छुड़ाए जाने पर ही छूटते । मेरीलेण्ड कॉलेज ऑफ फार्मेसी के तत्वावधान में इस लड़के के सम्बन्ध में भी बहुत दिन तक खोजबीन की गई पर निश्चित निष्कर्ष उसके सम्बन्ध में भी व्यक्त न किया जा सका ।

एक और घटना मिसौरी के निकट जापलिन नगर की है । यहाँ एक व्यक्ति था—फ्रैक मैक किस्टी । उसके शरीर में प्रातःकाल तेज बिजली रहती थी पर जैसे-जैसे दिन चढ़ता, वह शक्ति घटती चली जाती । जाड़े के दिनों में तो वह इतनी बढ़ जाती थी कि बेचारे को चलने-फिरने में भी कठिनाई अनुभव होती थी ।

फ्रांस के मेडीकल टाइम्स एण्ड गजट में एक ऐसे बच्चे की डॉक्टरी रिपोर्ट छपी थी, जिसके शरीर से झटका देने जितनी बिजली प्रवाहित होती थी । लियोन्स नगर में उत्पन्न हुआ यह बच्चा १० महीने जीया, उसे इतने दिनों बहुत सावधानी से ही जिन्दा रखा जा सका, क्योंकि उसे छूते ही जमीन पर पटक देने वाला झटका लगता था । लकड़ी के तख्ते पर खड़े होकर तथा बिजली से प्रभावित न होने वाली वस्तुओं के सहारे ही उसके नित्य कर्म कराए जाते थे । उसके स्पर्श में आने वाली सभी उपकरण लकड़ी, काँच आदि के थे और कपड़े रबड़ के पहनाये गए थे । जब वह मरा तो १० सेकण्ड तक उसके शरीर से हल्की नीली प्रकाश किरणें निकलती देखी गईं ।

फ्रांस के जोलिया क्षेत्र में सोंदरवा कस्बे में जन्मे एक ऐसे बालक की रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग ने नोट की है जिसके शरीर से बिजली की तरंगें उठती थीं । जब वह मरने लगा तो डॉक्टरों ने प्रकाश की तीव्र किरणें और अन्ततः मन्द होकर समाप्त होते देखी थीं ।

आस्ट्रेलिया से एक बाईस वर्षीय युवक न्यूयार्क में इलाज कराने के लिए लाया गया था । उसके शरीर की स्थिति बिजली की बैटरी जैसी थी । छूते ही उसका चुम्बकीय प्रभाव अनुभव होता था । जब यह बिजली मन्दी पड़ जाती तो वह बेचैनी अनुभव करता । जिन चीजों में फॉस्फोरस अधिक होता उन मछली, सीप आदि पदार्थों को ही वह रुचिपूर्वक खाता था, सामान्य लोगों का आहार तो वह मजबूरी में ही करता था ।

मास्को निवासी कुमारी माइखेलोवा रूसी वैज्ञानिकों के लिए एक दिलचस्प शोध का विषय रही है । वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने दृष्टिपात से चलती घड़ियाँ बन्द कर देती थी अथवा सुइयाँ आगे पीछे घुमा देती थी । इसके करतबों की फिल्म बना कर कितनी ही प्रयोगशालाओं में भेजी गई ताकि अन्यत्र भी उस विशेषता के सम्बन्ध में अन्वेषण कार्य चलता रह सके । वैज्ञानिकों ने इसे मस्तिष्कीय विद्युत की चुम्बकीय शक्ति इलेक्ट्रो मैगनेटिक-फोर्म की विद्यमानता निरूपित की है । वे कहते हैं यह शक्ति हर मनुष्य में मौजूद है । परिस्थितिवश वह किसी में भी अनायास ही प्रकट हो सकती है और प्रयत्नपूर्वक उसे बढ़ाया भी जा सकता है । रूसी वैज्ञानिक लाखसोव ने हर मनुष्य के शरीर से निकलने वाले विद्युत विकिरणों को अंकित कर सकने वाला एक यन्त्र ही बना डाला है ।

यह उदाहरण इस बात के प्रतीक हैं कि मनुष्य शरीर प्राण विद्युत का खजाना है । हम सामान्य आहार-विहार, साधारण श्वास और निर्बल इच्छा शक्ति के कारण न तो उस शक्ति को जगा पाते हैं न कोई विशिष्ट उपयोग ही कर पाते हैं, पर यह विद्युत ही है जिसे विभिन्न योग साधनाओं द्वारा जागृत और नियन्त्रित करके योगीजन अपने लोक और परलोक दोनों को समर्थ बनाते थे । वह कार्य करने में सफल होते थे जो साधारण व्यक्तियों को कोई प्रताप और चमत्कार जैसा लगता है ।

इस तरह अनायास ही जाग पड़ने वाली शरीर विद्युत की तरह कई शरीरों में प्राण शक्ति अग्नि के रूप में प्रकट होने की भी घटनाएँ घटती हैं । वास्तव में सभी भौतिक शक्तियाँ परस्पर परिवर्तनीय हैं अतएव दोनों तरह की घटनाएँ एक ही परिप्रेक्ष्य में आती हैं ।

कई बार यह विद्युताग्नि इतनी प्रचण्ड रूप में जागृत हुई है कि वह स्वयं धारक को ही लील बैठी । चेम्सफोर्ड इंग्लैण्ड में २० सितम्बर, १९३८ को एक ऐसी ही घटना घटी । एक आलीशान होटल में आर्केस्ट्रा की मधुर ध्वनि गूँज रही थी । नृत्य चल रहा था तभी एक महिला के शरीर से तेज नीली लौ फूटी । लोग भयवश एक ओर खड़े हो गए । लपटें देखते-देखते लाल ज्वाला हो गई और कुछ ही क्षणों में युवती का सुन्दर शरीर राख की ढेरी बन गया । ३१ मार्च, १९३८ को ह्विटले (इंग्लैण्ड) में ही ऐसी एक और घटना घटी थी । जोनहार्ट नामक एक व्यक्ति बैठा कोई पुस्तक पढ़ रहा था, सामने कुर्सी पर उसकी बहिन बैठी थी, एकाएक उसके शरीर से आग की लपटें निकलने लगीं । जोन नें बहिन को तुरन्त एक कम्बल से ढका और दौड़ा डॉक्टर को बुलाने । १० मिनट में ही नीचे स्ट्रीट से डॉक्टर वहाँ पहुँचे किन्तु उसके पहुँचने से पूर्व ही बहिन, कुर्सी और कम्बल सब एक राख की ढेरी में परिणत हो चुके थे ।

अमेरिका में अब तक ऐसी २०० मौतें हो चुकी हैं । फ्लोरिडा का एक व्यक्ति सड़क पर जा रहा था कि एकाएक उसके शरीर से आग की नीली लपटें फूट पड़ीं । सहयात्रियों में से एक ने उसके शरीर पर पानी की बाल्टी उड़ेल दी । आग थोड़ी देर के लिए शान्त हो गई । जब तक डॉक्टर और गुप्तचर विभाग वहाँ पहुँचे तब तक पानी सूख चुका था और सैकड़ों दर्शकों की उपस्थिति में ही आग का भबका फिर उठा और वह व्यक्ति वहीं जल कर ढेर हो गया, फ्लोरिडा के मेडिकल जनरल में छपे एक लेख में वैज्ञानिकों ने हैरानी प्रकट की कि मनुष्य शरीर में ९० प्रतिशत भाग जल होता है, उसे जलाने के लिए ५००० डिग्री फारेनहाइट की अग्नि चाहिए वह एकाएक कैसे पैदा हो जाती है । शरीर के "कोशों" (ऐल्स) में अग्नि स्फुल्लिंग "प्रोटोप्लाज्मा" में सन्निहित रहते हैं, पर वह इतने व्यवस्थित रहते हैं कि शरीर के जल जाने की आशंका नहीं रहती । प्रोटोप्लाज्मा उच्च प्लाज्मा में बदलने पर ही अग्नि बन सकती है यह सब एकाएक कैसे हो जाता है यह वैज्ञानिकों की समझ में अब तक भी नहीं आया ।

इस तरह झटका मारने जैसे स्तर की बिजली तो कभी-कभी किसी-किसी के शरीर में ही देखने को मिलती है, पर सामान्यता वह हर मनुष्य में पायी जाती है और जीवन की विविध गतिविधियों के संचालन में सहायता करती है । इसके सदुपयोग एवं अभिवर्धन का विज्ञान यदि ठीक तरह समझा जा सके तो मनुष्य परम तेजस्वी, मनस्वी एवं आत्मबल सम्पन्न बनकर सुविकसित जीवन जी सकता है ।

सिर और नेत्रों में मानवी विद्युत का सबसे अधिक अनुभव होता है । वाणी की मिठास, कड़क अथवा प्रभावी प्रामाणिकता में भी उसका अनुभव किया जा सकता है । तेजस्वी मनुष्य के विचार ही प्रखर नहीं होते उसकी आँखें भी चमकती हैं और उनकी जीभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के अन्तर में गहराई तक घुस जाने वाला विद्युत प्रवाह उत्पन्न करती है । आत्मबल की साधना को प्रकारान्तर से तेजस्विता की साधना ही कह सकते हैं ।

मानवी विद्युत के दो प्रवाह हैं एक ऊर्ध्वगामी दूसरा अधोगामी । ऊर्ध्वगामी मस्तिष्क में केन्द्रित है । उस मर्मस्थल के प्रभाव से व्यक्तित्व निखरता और प्रतिभाशाली बनता है । बुद्धि कौशल, मनोबल के रूप में शौर्य, साहस और आदर्शवादी उत्कृष्टता के रूप में यही विद्युत काम करती है । योगाभ्यास के, ज्ञान साधना के समस्त प्रयोजन इस ऊर्ध्वगामी केन्द्र द्वारा ही सम्पन्न होते हैं । स्वर्ग और मुक्ति का, ऋद्धियों और सिद्धियों का आधार इसी क्षेत्र की विद्युत के साथ जुड़ा हुआ है । मनुष्य के चेहरे के इर्द-गिर्द छाए हुए तेजोबल को, ओजस् को इस ऊर्ध्वगामी विद्युत का ही प्रतीक समझना चाहिए ।

अधोगामी विद्युत जननेन्द्रिय में केन्द्रित रहती है । रति सुख का आनन्द देती है और सन्तानोत्पादन की उपलब्धि प्रस्तुत करती है । विविध कला विनोदों का, हर्षोल्लासों का उद्भव यहीं होता है । ब्रह्मचर्य पालन करने के जो लाभ गिनाये जाते हैं वे सब जननेन्द्रिय में सन्निहित विद्युत के ही चमत्कार हैं । आगे चलकर मूलाधार चक्र में अवस्थित कुण्डलिनी शक्ति का जागरण करने साधनारत मनुष्य अपने को ज्योतिर्मय तेज पुंज के रूप में परिणत कर सकते हैं ।

ऊर्ध्वगामी और अधोगामी विद्युत प्रवाह यों उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव की तरह भिन्न प्रकृति के हैं और एक-दूसरे से दूर हैं फिर भी वे सघनता पूर्वक मेरुदण्ड के माध्यम से परस्पर जुड़े हुए हैं । जननेन्द्रिय उत्तेजना से मस्तिष्क में संक्षोभ उत्पन्न होता है और उत्कृष्ट चिन्तन से कामविकारों का सहज शयन सम्भव हो जाता है । यदि यह उभय-पक्षीय शक्ति प्रवाह ठीक तरह सँजोया, सँभाला जा सके तो उसका प्रभाव व्यक्तित्व के समान विकास में चमत्कारी स्तर का देखा जा सकता है ।

मानवी तत्व की व्याख्या, विवेचना अनेक आधारों पर की जाती है । आध्यात्म एवं तत्व दर्शन के आधार पर मनुष्य को ईश्वरीय सत्ता का प्रतिनिधि और अगणित दिव्य सम्भावनाओं का भाण्डागार माना गया है, भौतिक विश्लेषण के अनुसार वह रासायनिक पदार्थ और पंचतत्व समन्वय का एक हँसता, बोलता पादप है । विद्युत विज्ञान के अनुसार उसे एक जीवित जागृत बिजलीघर भी कहा जा सकता है । रक्त संचार, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन जैसे क्रिया-कलाप पेन्डुलम गति से स्वसंचालित रहते हैं और जीवनी शक्ति के नाम से पुकारी जाने वाली विद्युत शक्ति की क्षतिपूर्ति करते हैं । मस्तिष्क अपने आप में एक रहस्यपूर्ण बिजलीघर है । जिसमें जड़े हुए तार समस्त काया को कठपुतली की तरह नचाते हैं ।

मनुष्य शरीर की बिजली एक प्रत्यक्ष सच्चाई है । उसे यन्त्रों से भी देखा जा सकता है । वह अपने ढंग की अनौखी है । भौतिक विद्युत से उसका स्तर बहुत ऊँचा है । बल्ब में जलने और चमकने वाली बिजली की तुलना में नेत्रों में चमकने वाली बिजली की गरिमा और जटिलता अत्यन्त ऊँचे स्तर की समझी जानी चाहिए । तारों को छूने पर जैसा झटका लगता है वैसा आमतौर से शरीरों के छूने से नहीं लगता तो भी काया संस्पर्श के दूरगामी कायिक और मानसिक प्रभाव उत्पन्न होते हैं । महामानवों के चरण-स्पर्श जैसे धर्मोपचार इसी दृष्टि से प्रचलित हैं । यह कायिक बिजली कभी-कभी भौतिक बिजली के रूप में देखने में आती है उससे उस रहस्य पर पड़ा हुआ पर्दा और भी स्पष्ट रूप से उघड़ जाता है जिसके अनुसार मनुष्य को चलता-फिरता बिजलीघर ही माना जाना चाहिए ।

यह शक्ति इतनी प्रचण्ड होती है कि उससे संसार की आश्चर्यजनक मशीनरी का काम मनुष्य केवल अपनी इच्छा शक्ति से कर सकता है अर्थात् प्राण विद्युत पर नियन्त्रण इच्छा शक्ति का ही होता है । सामान्य स्थिति में तो अन्न और श्वासों से प्राप्त विद्युत ही काम करती रहती है पर जैसे-जैसे योगाभ्यासी उस सत्ता का आन्तरिक परिचय पाता चला जाता है, वह इस शक्ति का विकास भी इच्छा शक्ति से ही करके कोई भी मनोरथ सफल करने और इच्छित आयु जीने में समर्थ होता है ।

मनुष्य शरीर में बिजली की उपस्थिति न तो स्वल्प है और न महत्त्वहीन । बालों में कंघी करके उतनी भर रगड़ से उत्पन्न चुम्बक को देखा जा सकता है । बालों से घिसने के बाद कंघी को लोहे की पिन से स्पर्श करें तो उसमें चुम्बक के गुण विद्यमान मिलेंगे । निर्जीव बालों में ही नहीं सजीव मस्तिष्क में भी बिजली की महत्त्वपूर्ण मात्रा विद्यमान है । अन्य बिजलीघरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की तरह वहाँ भी बनाव-बिगाड़ का क्रम चलता रहता है । इस मरम्मत में चुम्बकीय चिकित्सा का आशाजनक उपयोग किया जा सकता है ।

हमें शरीर एवं मन को सजीव, स्फूर्तिवान एवं तेजस्वी बनाने के लिए अपनी विद्युत शक्ति को सुरक्षित रखने का ही नहीं इस बात का भी प्रयत्न करना चाहिए कि उसमें निरन्तर वृद्धि भी होती चले । क्षति पूर्ति की व्यवस्था बनी रहे । वह प्रयोजन, प्राणायाम षटचक्र वेधन, कुण्डलिनी योग एवं शक्तिपात जैसी साधनाओं से सम्भव हो सकता है ।

इस मानवी विद्युत का ही यह प्रभाव है जो एक दूसरे को आकर्षित या प्रभावित करता है । उभरती आयु में यह बिजली काय-आकर्षण की भूमिका बनती है पर यदि उसका सदुपयोग किया जाय तो बहुमुखी प्रतिभा, ओजस्विता, प्रभावशीलता के रूप में विकसित होकर कितने ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है । ऊर्ध्व-रेता, संयमी, ब्रह्मचारी लोग अपने ओजस् को मस्तिष्क में केन्द्रित करके उसे ब्रह्मवर्चस के रूप में परिणत करते हैं । विद्वान दार्शनिक, वैज्ञानिक, नेता, वक्ता, योद्धा, योगी, तपस्वी जैसी विशेषताओं से सम्पन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने ओजस का, प्राण-तत्व का अभिवर्धन, नियन्त्रण एवं सदुपयोग किया है । यों यह शक्ति किन्हीं-किन्हीं में अनायास भी उभर पड़ती देखी गई है और उसके द्वारा उन्हें कुछ अद्‌भुत काम करते भी पाया गया है ।

जर्मनी की अधिनायक हिटलर जब रुग्ण होता तो उसे सुयोग डॉक्टरों की अपेक्षा एक 'नीम हकीम' क्रिस्तान का सहारा लेना पड़ता । उसकी उँगलियों में जादू था । दवा-दारू वह कम करता था, हाथ का स्पर्श करके दर्द को भगाने की उसको जादुई क्षमता प्राप्त थी । सन् १८९८ में वह इस्टोनिया में जन्मा, प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वह फिनलेण्ड नागरिक माना पीछे उसने मालिश करके रोगोपचार करने की कला सीखी । अपने कार्य में उसका कौशल इतना बढ़ा कि उसे जादुई चिकित्सक कहा जाने लगा । हिटलर ही नहीं, उसके जिगरी दोस्त हिमलर तक को उसने समय-समय पर अपनी चिकित्सा से चमत्कृत किया और भयंकर रुग्णता के पंजे से छुड़ाया । क्रिस्तान ने अपने परिचय और प्रभाव का उपयोग करके हिटलर के मृत्यु पाश में जकड़े हुए लगभग एक लाख यहूदियों का छुटकारा कराया ।

मनुष्य ही अपवाद नहीं

प्राण विद्युत मनुष्य की उपलब्धि नहीं सृष्टि के छोटे-छोटे जीवों में भी उसी का संचार हो रहा है । सितम्बर १९६६ के नवनीत "अंक" में प्रसिद्ध जीव शास्त्री जेराल्ड ड्यूरल ने "इन्सान से भी पुराने वैज्ञानिक" लेख के अन्तर्गत एक घटना दी है और बताया है कि ब्रिटिश गायना के चिड़ियाघर में एक ईल मछली, जो अपने शरीर से तीव्र विद्युत करेन्ट निकालती है, एक हौज में थी जब उसे खाना खिलाया तो ईल ने अपने शरीर को इस प्रकार कँपाया मानो कोई डायनमो चलाया जा रहा हो । उससे इतनी तेज विद्युत निकली कि खाने के लिए जो मछलियाँ डाली जा रही थीं वह मर गईं । "टारपीडो फिश" की एक घटना भी उन्होंने दी है इसमें एक लड़के ने इस मछली का शिकार करते हुए उसके शरीर की बिजली के झटके के कारण अपने प्राण गवाँ दिए थे ।

कुछ जाति की मछलियाँ चलते फिरते पावर हाउस कहीं जाती हैं । इनके शरीर में इतनी बिजली होती है कि सम्पर्क में आने वाली दूसरे जीवों को झटका देकर पछाड़ती हैं । जिस रास्ते वे गुजरती हैं वहाँ का पानी भी चुम्बकीय बन जाता है और उस क्षेत्र में जल जन्तु उसका प्रभाव अनुभव करते हैं । हिप्पाम, जिम्नोटिस, इलेक्ट्रोफोरस, मेलाप्टोसूरस, मारमाइरस, स्टार गेजर, जाति की मछलियाँ इस किस्म की हैं । दक्षिणी अमेरिका के जलाशयों में पायी जाने वाली इलेक्ट्रोफोरस मछली में तो इतनी बिजली होती है कि पास में पानी पीने के लिए जल में प्रवेश करने वाला मजबूत घोड़ा भी धराशायी हो जाय । अरब क्षेत्र में मेलाप्टोसूरस में भी ऐसी ही विद्युत कड़क होती है इसलिए इसे वहाँ के लोग 'राड' कहते हैं । राड अर्थात् आसमानी बिजली ।

मत्स्य अनुसन्धान में कम वोल्ट वाली बिजली तो कई हैं पर अधिक वोल्ट शक्ति वाली मछलियों में चार जातियाँ प्रमुख हैं । इनमें से रेजे में ४ वोल्ट, टारपडो में ४० वोल्ट, इलेक्ट्रिक ईल में ३५० से ५५० वोल्ट तक और कैट जाति की मछलियों में ३५० से ४५० वोल्ट तक बिजली होती है । इनमें एक विशेष प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की पेशियाँ तथा तन्तु पटिट्याँ होती हैं, जिनके घर्षण से डायनमो की तरह बिजली बनती है । जब वे चाहती हैं तब इन अंगों को इस तरह चलाती हैं कि अभीष्ट मात्रा में बिजली उत्पन्न हो सके और वे मनचाहे प्रयोजन के लिए उसका प्रयोग कर सकें । साधारणतया यह विशेषता सुप्त ही पड़ी रहती है ।

सर्प के नेत्रों की विद्युत प्रख्यात है । सिंह, व्याघ्र आदि हिंस्र जन्तुओं की आँखें भी ऐसी ही बिजली उगलती हैं कि उसके प्रभाव के सामने आने वाले छोटे जीव अपनी सामान्य चेतना खो बैठते हैं । किंकर्तव्यविमूढ़ होकर खड़े रहते हैं अथवा मौत के मुँह में दौड़ते हुए स्वयं ही घुस जाते हैं ।

अफ्रीका के जंगलों में पाये जाने वाले बड़ी जाति के अजगर जलपान के लिए छोटे-छोटे मेढ़क, चूहे, गिलहरी, छिपकली जैसे जीव घर बैठे ही प्राप्त कर लेते हैं । बड़े शिकार पकड़ने के लिए तो वे क्षुधातुर होने पर ही निकलते हैं । इन अजगरों की आँखों में विचित्र प्रकार का चुम्बकत्व होता है । जिस पर उनकी नजर पड़ती है वह उसी जगह ठिठक कर रह जाता है । उड़ने और दौड़ने की शक्ति खो बैठता है । इतना ही नहीं वह स्वयं खिसकता हुआ अजगर के फटे मुँह की तरह बढ़ता आता है और स्वयमेव उसमें प्रवेश कर जाता है । प्रो. एफ. स्नाइडर ने एक बार पाले हुए अजगर के पिंजड़े के कुछ चूहे छोड़े । चूहे पहले तो डर कर भागे और पिंजड़े के एक कोने में जा छिपे, किन्तु जब अजगर ने उन्हें घूर कर देखा तो वे धीरे-धीरे अपने आप बढ़ते चले आये और सर्प के मुँह में घुस गए ।

वेस्टइंडीज में 'ट्रेन इंसेक्ट' या 'रेलगाड़ी-कीड़ा' पाया जाता है उसके मुँह पर एक लाल रंग का और दोनों बाजुओं में दीपकों की ११-११ की पंक्तियाँ पायी जाती हैं । यह हरा प्रकाश उत्पन्न करती हैं । चलते समय यह कीड़ा रात में चलती रेलगाड़ी की तरह लगता है इसी कारण इसको यह नाम दिया गया है । दक्षिणी अमेरिका में भी यह बहुतायत से पाया जाता है । वेस्टइंडीज में ही 'कूकूजी' नामक एक कीड़ा पाया जाता है इसे 'मोटर-कीड़ा' कहते हैं यह जुगनू की ही एक जाति है किन्तु उसके मुँह पर दो-दीपक होते हैं और वह दोनों पीले रंग का प्रकाश निकालते हैं । स्पेन अमेरिका के गृह-युद्ध के समय विलियम गोरगास नामक डॉक्टर ने इन कीड़ों को एक सफेद शीशी में भर कर उनके प्रकाश में सफल ऑपरेशन किए थे ।

वनस्पति जगत की एक काई भी स्व-प्रकाशित होती है । कटल फिश, दुश्मनों के आक्रमण के समय काले रंग का प्रकाश-बादल फैला देते हैं । झींगे मछलियाँ और अन्य कई जल के जीव अपने शरीरों से प्रकाश, उत्सर्जित करते हैं । जुगनू इस प्रकाश का उपयोग प्रजनन क्रिया में संकेत के रूप में करते हैं । मादा जुगनू एक बार संकेत करके शान्त हो जाती है तब नर उसे ढूँढ़ता हुआ उस तक आप पहुँच जाता है इस तरह यह जीव किसी न किसी रूप में इस प्रकाश का उपयोग प्रकृति प्रदत्त विभूति के रूप में करते हैं जबकि मनुष्य को उसके लिए बाह्य साधनों का आश्रय लेना पड़ता है ।

निर्जीव वस्तु से आग की लपटों का या विद्युत का निकाल लेना इस वैज्ञानिक युग में कोई चमत्कार नहीं रह गया, किन्तु जीवन्त चेतना के यह दृश्य निःसन्देह अचम्भे में डालने वाले हैं । जुगनू इस मामले में एक बहुत साधारण जीव है जिसकी चमक से किसी को आश्चर्य नहीं होता । समुद्र में बहुत सारे एककोशीय जीव पाये जाते हैं, जो जुगनू की तरह स्व-प्रकाशित होते हैं । दिन में तो उनकी चमक दृष्टिगोचर नहीं होती किन्तु रात में यह जीव रेत-कणों की तरह ऐसे चमकते हैं जैसे अंधेरे आसमान में तारे चमकते हों । बैंजामिन फ्रैंकलिन जो एक प्रसिद्ध विद्युत-वैज्ञानिक थे, पहले यह समझते थे कि समुद्र की यह चमक समुद्र के पानी और नमक के कणों से उत्पन्न विद्युत कण हैं किन्तु पीछे उन्होंने भी अपनी भूल सुधारी और बताया कि समुद्र ही नहीं धरती पर भी सड़ी-गली वस्तुएँ खाने वाले अनेक जीव हैं जो अपने भीतर से विद्युत पैदा करते हैं । कृत्रिम रूप से विनिर्मित विद्युत की मात्रा में ताप की मात्रा उससे कई गुनी अधिक होती है, किन्तु मनुष्य का मनुष्येतर जीवों में ऐसा क्यों नहीं होता ? इस प्रकाश को बैंजामिन ने 'ठण्डे-प्रकाश' (कोल्ड लाइट) की संज्ञा दी है । दो हजार जुगनू एक साथ चमकें तो उससे एक मोमबत्ती का प्रकाश उत्पन्न हो सकता है, पर उस प्रकाश को यदि एकत्र किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाय तो रुई भी नहीं जल सकती, जबकि मोमबत्ती ईंधन को भी जला देगी ।

१८८६ में प्राणिशास्त्रियों ने एक प्रकाश देने वाली सीप के शरीर से 'लुसिफेरिन' नामक एक रसायन निकाल कर यह सिद्ध किया कि ऐसे जीवों में यही तत्व प्रकाश उत्पन्न करता है । यह तत्व शरीर की विशिष्ट ग्रन्थियों से निकलता है और ऑक्सीजन के सम्पर्क में आकर प्रकाश के रूप में परिणत हो जाता है । जुगनू में मैगनेटिक बेल की तरह यह तत्व रुक-रुक कर निकलता है इसी से वह जलता बुझता रहता है किन्तु यह तत्व किस तरह बनता है इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक अब तक कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सके । सम्भव है जीवन की खोज करते-करते वह रहस्य करतलगत हों जो इन तथ्यों का भी पता लगा सकें और प्राण चेतना की गुत्थियाँ भी सुलझा सकें ।

विश्वव्यापी विद्युत चुम्बक से कौन कितना लाभ उठा ले यह उस प्राणी की शरीर रचना एवं चुम्बकीय क्षमता पर निर्भर है । कितने ही पक्षी ऋतु परिवर्तन के लिए झुण्ड बनाकर सहस्रों मील की लम्बी उड़ानें भरते हैं वे धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा पहुँचते हैं । इनकी उड़ान प्रायः रात को होती हैं । उस समय प्रकाश जैसी कोई सुविधा भी उन्हें नहीं मिलती, यह कार्य उनकी अन्तः चेतना पृथ्वी के इर्द-गिर्द फैले हुए चुम्बकीय घेरे में चल रही हलचलों के आधार पर ही पूरा करती है । इस धारा के सहारे वे इस तरह उड़ते हैं मानो किसी सुनिश्चित सड़क पर चल रहे हों ।

योग साधनाओं का एक उद्देश्य इस चेतना विद्युत शक्ति का अभिवर्धन करना भी है । इसे मनोबल, प्राणबल और आत्मबल भी कहते हैं । संकल्प शक्ति और इच्छा शक्ति के रूप में इसी के चमत्कार देखे जाते हैं ।

आत्म शक्ति सम्पन्न व्यक्ति अपनी जन सम्पर्क गतिविधियों को निर्धारित एवं नियन्त्रित करते हैं । विशेषतया काम सेवन सम्बन्धी सम्पर्क से बचाव इसी आधार पर किया जाता है । अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शक्ति को उपयोगी दिशा में ही नियोजित करने के लिए सुरक्षित रखा जा सके और उसका क्षुद्र मनोरंजन के लिए अपव्यय न होने पाये ।

आध्यात्म शास्त्र में प्राण विद्या का एक स्वतन्त्र प्रकरण एवं विधान है । इसके आधार पर साधनारत होकर मनुष्य इस प्राप्त विद्युत की इतनी अधिक मात्रा अपने में संग्रह कर सकता है कि उस आधार पर अपना ही नहीं अन्य अनेकों का भी उपकार उद्धार कर सके ।

पाँच प्राण, पाँच शक्ति धाराएँ

यों प्राण-तत्व एक है, पर प्राणी के शरीर में उसकी क्रियाशीलता के आधार पर कई भागों में विभक्त किया गया है । शरीर के प्रमुख अवयव माँसपेशियों से बने हैं, पर संगठन की भिन्नता के कारण उनके आकार-प्रकार में भिन्नता पायी जाती है । इसी आधार पर उनका नामकरण एवं विवेचन भी पृथक-पृथक होता है । मानवी-काया में प्राण शक्ति को भी विभिन्न उत्तरदायित्व निवाहने पड़ते हैं उन्हीं के आधार पर उनके नामकरण भी अलग हैं और गुण धर्म की भिन्नता भी बताई जाती है । इस पृथकता के मूल में एकता विद्यमान है । प्राण अनेक नहीं हैं । उसके विभिन्न प्रयोजनों में व्यवहार पद्धति ही पृथक है । बिजली एक है, पर उनके व्यवहार विभिन्न यन्त्रों में भिन्न प्रकार के होते हैं । हीटर, कूलर, पंखा, प्रकाश, पिसाई आदि करते समय उसकी शक्ति एवं प्रकृति भिन्न लगती है । उपयोग और प्रयोजन को देखते हुए भिन्नता अनुभव की जा सकती है तो भी जानने वाले जानते हैं कि यह सब एक ही विद्युत शक्ति के बहुमुखी क्रिया-कलाप हैं । प्राण शक्ति के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है । शास्त्रकारों ने उसे कई भागों में विभाजित किया है, कई नाम दिए हैं और कई तरह से व्याख्या की है । उसका औचित्य होते हुए भी इस भ्रम में पड़ने की आवश्यकता नहीं कि प्राण-तत्व कितने ही प्रकार का है और उन प्रकारों में भिन्नता एवं विसंगति है । इस प्राण विस्तार को भी "एकोऽहं बहुस्याम" का एक स्फुरण कहा जाता है ।

मानव शरीर में प्राण को दस भाग में विभक्त माना गया है । इनमें ५ प्राण और ५ उप प्राण हैं । प्राणमय कोश इन्हीं १० के सम्मिश्रण से बनता है । ५ मुख्य प्राण हैं—(१) अपान, (२) समान, (३) प्राण, (४) उदान, (५) व्यान । उपप्राणों को (१) देवदत्त,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) वृकल, (३) कूर्म, (४) नाग, (५) धनंजय नाम दिया गया है ।

शरीर क्षेत्र में इन प्राणों के क्या-क्या कार्य हैं ? इसका वर्णन आयुर्वेद शास्त्र में इस प्रकार किया गया है—

(१) अपान—अपनयति प्रकर्षेण मलं निस्सारयति अपकर्षाति च शक्तिम् इति अपानः ।

अर्थात्—जो मलों को बाहर फेंकने की शक्ति में सम्पन्न है वह अपान है । मल-मूत्र, स्वेद, कफ, रज, वीर्य आदि का विसर्जन, भ्रूण का प्रसव आदि बाहर फेंकने वाली क्रियाएँ इसी अपान प्राण के बल से सम्पन्न होती हैं ।

(२) समान—रसं समं नयति सम्यक् प्रकारेण नयति इति समानः ।

अर्थात्—जो रसों को ठीक तरह यथास्थान ले जाता और वितरित करता है वह समान है । पाचक रसों का उत्पादन और उनका स्तर उपयुक्त बनाये रहना इसी का काम है ।

पातंजलि योग सूत्र के, पाद ३ सूत्र ४० में कहा गया है—"समान जयात् प्रज्वलम्" अर्थात् समान द्वारा शरीर की ऊर्जा एवं सक्रियता ज्वलन्त रखी जाती है ।

(३) प्राण—प्रकर्षेण अनियति प्रर्केण वा बलं ददाति आकर्षति च शक्तिं स प्राणः ।

अर्थात्—जो श्वास, आहार आदि को खींचता है और शरीर में बल संचार करता है वह प्राण है । शब्दोच्चार में प्रायः इसी की प्रमुखता रहती है ।

(४) उदान—उन्नयति यः उद्आनयति वा तदानः ।

अर्थात्—जो शरीर को उठाए रहे, कड़क रखे, गिरने न दे, वह उदान है । ऊर्ध्वगमन की अनेकों प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष क्रियाएँ इसी के द्वारा सम्पन्न होती हैं ।

(५) व्यान—व्याप्नोति शरीरं यः स ध्यानः ।

अर्थात्—जो सम्पूर्ण शरीर में संव्याप्त है—वह व्यान है । रक्त-संचार, श्वास-प्रश्वास, ज्ञान-तन्तु आदि माध्यमों से यह सारे शरीर पर नियन्त्रण रखता है । अन्तर्मन की स्वसंचालित शारीरिक गतिविधियाँ इसी के द्वारा सम्पन्न होती हैं ।

प्रथम अपान—इसका कार्य शरीर के विभिन्न मार्गों से निकलने वाले मलों का निष्कासन एवं स्थान गुदा है । यह नारंगी रंग की आभा में अनुभव किया है और मूलाधार चक्र को प्रभावित करता है ।

द्वितीय समान—अन्न से लेकर रस-रक्त और सप्त धातुओं का परिपाक करता है और स्थान नाभि है । हरे रंग की आभा वाला और मणिपूर चक्र से सम्बन्धित इसे बताया गया है ।

तृतीय प्राण—इस तरह का कार्य श्वास-प्रश्वास क्रिया का सम्पादन स्थान छाती है । इस तत्व की ध्यानावस्था में अनुभूति पीले रंग की होती है और षटचक्र वेधन की प्रक्रिया में यह अनाहत चक्र को प्रभावित करता पाया जाता है ।

चौथा उदान—इसका कार्य है आकर्षण ग्रहण करना, अन्न-जल, श्वास, शिक्षा आदि जो कुछ बाहर से ग्रहण किया जाता है वह ग्रहण प्रक्रिया इसी के द्वारा सम्पन्न होती है । निद्रावस्था तथा मृत्यु के उपरान्त का विश्राम सम्भव करना भी इसी का काम है । स्थान कण्ठ, रंग बैंगनी तथा चक्र विशुद्धाख्य है ।

पाँचवा व्यान—इसका कार्य रक्त आदि का संचार, स्थानान्तरण । स्थान सम्पूर्ण शरीर । रंग गुलाबी और चक्र स्वाधिष्ठान है ।

पाँच उप प्राण इन्हीं पाँच प्रमुखों के साथ उसी तरह जुड़े हुए हैं जैसे मिनिस्टरों के साथ सेक्रेटरी रहते हैं । प्राण के साथ नाग । अपान के साथ कूर्म । समान के साथ कृकल । उदान के साथ देवदत्त और व्यान के साथ धनंजय का सम्बन्ध है । नाग का कार्य वायु संचार, डकार, हिचकी, गुदा वायु । कूर्म का नेत्रों के क्रिया-कलाप, कृकल का भूख-प्यास, देवदत्त का जँभाई, अँगड़ाई, धनंजय को हर अवयव की सफाई जैसे कार्यों का उत्तरदायी बताया गया है, पर वस्तुतः वे इतने छोटे कार्यों तक ही सीमित नहीं हैं । मुख्य प्राणों की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाये रखने में उनका पूरा योगदान रहता है । इन प्राण और उपप्राणों के भेद को और भी अच्छी तरह समझना हो तो तन्मात्राओं और ज्ञानेन्द्रियों के सम्बन्ध पर गौर करना चाहिए । शब्द तत्व को ग्रहण करने के लिए कान, रूप तत्व की अनुभूति के लिए नेत्र, रस के लिए जिह्वा, गन्ध के लिए नाक और स्पर्श के लिए हाथ । जो कार्य त्वचा करती है, उसी प्रकार प्राण तत्व द्वारा विनिर्मित सूक्ष्म संभूतियों को स्थूल अनुभूतियों में प्रयुक्त करने का कार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह उपप्राण सम्पादित करते हैं । यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि यह वर्गीकरण मात्र वस्तुस्थिति को समझने और समझाने के उद्देश्य से ही किया गया है । अलग-अलग आकृति-प्रकृति के दस व्यक्तियों की तरह इन्हें दस सत्ताएँ नहीं मान बैठना चाहिए । एक ही व्यक्ति को विभिन्न अवसरों पर पिता, पुत्र, भाई, मित्र, शत्रु, सुषुप्त, जागृत, मलीन, स्वच्छ स्थितियों में देखा जा सकता है लगभग उसी प्रकार का यह वर्गीकरण भी समझा जाय ।

प्राण शरीर-शरीरस्थ प्राण संस्थान के न केवल अस्तित्व का बल्कि उसके गुण, धर्मों तथा क्रिया-कलापों, प्रभावों आदि का भी वर्णन विस्तारपूर्वक भारतीय ग्रन्थों में मिलता है । इस मान्यता को स्थूल विज्ञान बहुत दिनों तक झुठलाता रहा, किन्तु शरीर विज्ञान सन्दर्भ में जैसे-जैसे उसकी जानकारियाँ बढ़ रही हैं, प्राण संस्थान के अस्तित्व को एक सुनिश्चित तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है । भौतिक विज्ञान के स्थूल उपकरणों की पकड़ में भी इस सूक्ष्म सत्ता के अनेक प्रमाण आने लगे हैं ।

प्राण-तत्व की सुविस्तृत जानकारी के बाद इस महान तत्व के उपार्जन उपयोग की ओर भारतीय तत्ववेत्ताओं का ध्यान गया अतएव उन्होंने उसके लिए भी अनेक साधनाएँ निश्चित कीं । प्राणायाम उनमें से प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति के लिए एक सुलभ साधन कहा जा सकता है ।

प्राणायाम साधारणतया श्वास-प्रश्वास का एक व्यायाम प्रतीत होता है । स्वास्थ्य सम्वर्धन के क्षेत्र में उसे 'फेफड़ों की कसरत' के रूप में लिया जाता है । आरोग्य शास्त्री उसका लाभ उसी सीमा में बताते हैं । श्वास प्रणाली की गड़बड़ी अथवा फेफड़ों की दुर्बलता, रुग्णता का उपचार करने के लिए कई प्रकार की श्वास-प्रश्वास कसरतें प्रचलित हैं । यह सभी प्रयोग अपनाये जाने योग्य और सराहनीय हैं किन्तु उसे बाल कक्षा मात्र ही माना जाना चाहिए । प्राणायाम का प्रयोजन तो निखिल ब्रह्माण्ड में से प्राण-तत्व की अभीष्ट मात्रा को आकर्षित करने की तथा उस उपलब्धि को अभीष्ट संस्थानों में पहुँचाने की विशिष्ट कला के रूप में ही समझा जाना चाहिए । साँस को प्राण नहीं कह सकते हैं । साँस के साथ प्राण घुला होना, साँस के सहारे प्राण-तत्व को आकर्षित कर सकना एक बात है और मात्र श्वास-प्रश्वास क्रिया करना सर्वथा दूसरी । प्राणायाम में प्रबल संकल्प शक्ति का समावेश करना पड़ता है । उसी के चुम्बकत्व से व्यापक प्राण-तत्व को आकाश से खींच सकने में सफलता मिलती है । फिर उपलब्धि को अभीष्ट स्थान पर भेज सकना और मनोवांच्छित परिणाम प्राप्त करना भी तो प्रबल संकल्प-बल से ही सम्भव है । श्वसन क्रिया के साथ-साथ प्रचण्ड मनोबल का समावेश करने से ही प्राणायाम क्रिया होती है । उसी समन्वय से वे परिणाम मिलते हैं जिनका प्राण-विद्या के अन्तर्गत वर्णन किया गया है ।

प्राणों का क्षय-मृत्यु का भय

प्राण शक्ति का यथास्थान सन्तुलन बना रहे तो जीवन सत्ता के सभी अंग-प्रत्यंग ठीक काम करेंगे । शरीर स्वस्थ रहेगा, मन प्रसन्न रहेगा और अन्तःकरण में सद्भाव, सन्तोष झलकेगा, किन्तु यदि इस क्षेत्र में विसंगति, विकृति उत्पन्न होने लगे तो उसकी प्रतिक्रिया आधि-व्याधियों के रूप में विपत्तियों, विभीषिकाओं के रूप में सामने खड़ी दिखाई देंगी । रक्त दूषित हो जाने पर अनेकों आकार-प्रकार के चर्म रोग, फोड़े-फुन्सी, दर्द, सूजन आदि के विग्रह उत्पन्न होते हैं, इसी प्रकार प्राण-तत्व में असन्तुलन उत्पन्न होने पर शारीरिक अवयवों की क्रियाशीलता लड़खड़ाती है । कई प्रकार की व्यथा, बीमारियाँ उपजती हैं । मनःक्षेत्र में उत्पन्न हुआ प्राण-विग्रह असन्तुलनों, आवेगों और उन्मादों के रूप में दृष्टिगोचर होता है । भावना क्षेत्र में विकृत हुई प्राण-सत्ता मनुष्य को नर-कीटकों के, नर-पिशाचों के घिनौने गर्त में गिरा देती है । पतन के अनेकों आधार प्राण-तत्व की विकृति से सम्बन्धित होते हैं । उनके सुधार के लिए सामान्य उपचार कारगर नहीं होते क्योंकि उनका प्रभाव उथला होता है जबकि समस्या की जड़ें बहुत गहरी प्राण चेतना में घुसी होती हैं । अनुभूत और परीक्षित उपचार भी जब निष्फल सिद्ध हो रहे हों तो समझना चाहिए कि चेतना की गहरी पर्तों में विक्षेप घुस गया है । चमड़ी में काँटा चुभा हो तो उसे नाखूनों की पकड़ में दबाकर बाहर निकाला जा सकता है, किन्तु यदि बन्दूक की गोली आतों में गहरी घुस गई हो तो उसके लिए शल्य-क्रिया का आश्रय लिए बिना और कोई चारा नहीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रीमती जे. सी. ट्रस्ट ने एक ऐसे व्यक्ति को चुना जो छोटी-छोटी बातों में उत्तेजित हो जाता था । वह दिन में कई-कई बार क्रुद्ध हो जाने के कारण बहुत दुबला पड़ चुका था, सर्दी-गर्मी के हल्के परिवर्तन भी उसको कष्टदायक प्रतीत होते, उसे कोई न कोई बीमारी प्रायः बनी रहती थी ।

एक बार जब वह भरे गुस्से में था, तब श्रीमती ट्रस्ट ने उसे लिटा दिया और उसके नंगे शरीर पर बालू की हल्की परत बिछा दी । उनके शिष्य, अनुयायी और कई वैज्ञानिक भी उपस्थित थे । उन सबने बड़े कौतूहल के साथ देखा कि जिस प्रकार पानी से भरी काँसे की थाली को बजाने से पानी की थरथरी काँसे के अणुओं में उत्तेजन और स्पंदन का अभ्यास कराती है, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर से भी प्रकाश अणु निरन्तर निःसृत होते और थरथरी पैदा करते रहते हैं ।

क्रोध जैसे उत्तेजनशील आवेश के समय यह प्रकाश अणु बड़ी तेजी से थरथराते हुए निकलते हैं, इसलिए उस समय तो स्पष्ट आभास हो जाता है पर सामान्य स्थिति में प्रकाश कणों की थरथराहट धीमी होती है । जो व्यक्ति जितना अधिक शान्त, कोमल-चित्त, मधुर स्वभाव, मितभाषी, स्थिर बुद्धि होता है, उसके सूक्ष्म शरीर के प्रकाश अणु बहुत धीरे-धीरे निकलते हैं और बहुत समय तक शरीर में शक्ति, उष्णता और सहनशीलता बनाये रखते हैं । ऋतुओं के आकस्मिक परिवर्तन भी शरीर पर दबाव नहीं डाल पाते ।

नृतत्व विज्ञानियों को यह बात बहुत दिन से मालूम थी कि शरीर में जाल की तरह फैले हुए ज्ञान तन्तु मस्तिष्क तक कायगत जानकारियाँ पहुँचाते हैं और मस्तिष्क, स्थिति को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक निर्देश देता है तदनुसार अवयव अपना-अपना काम करते हैं, पर यह सब होता किस पद्धति से है इस रहस्य पर पर्दा ही पड़ा हुआ था । ज्ञान तन्तु का स्पर्शानुभव क्षण भर में मस्तिष्क तक पहुँचना किस आधार पर सम्भव होता है इसका कुछ पता नहीं चल पा रहा था ।

पिछले ४० साल से इस सन्दर्भ में बहुत प्रयोग चल रहे थे । बीस वर्ष से तो जीव भौतिकी की इस शाखा पर और भी अधिक ध्यान दिया गया । अन्त में बहुत लम्बे प्रयोग परीक्षणों के उपरान्त इस रहस्य पर से पर्दा उठाने में तीन वैज्ञानिक सफल हो गए और उन्हें इस शोध के उपलक्ष्य में चिकित्सा शास्त्र को नोबेल पुरस्कार मिला, इन तीनों के नाम हैं— (१) हाजकिम, (२) हक्सले, (३) एकल्स ।

इस त्रिगुट ने ज्ञान तन्तुओं में एक विद्युत आवेग (इंपल्स) की खोज की है और बताया कि यह बिजली किस तरह तन्तुओं और मस्तिष्कीय कोशों के बीच दौड़ती है और टेलीफोन की तरह स्थिति का संवाद-संकेत पहुँचाती लाती है । ज्ञान तन्तु एक प्रकार के बिजली के तार हैं जिन पर विद्युती आवेगों के साथ सन्देश दौड़ते रहते हैं । एक-एक तन्तु की लम्बाई कई-कई फुट होती है । सब मिलाकर पूरे शरीर में इनकी लम्बाई एक लाख मील से भी अधिक होती है । इनकी मोटाई एक इंच के सौवें भाग से भी कम होती है ।

हमारे मस्तिष्क में लगभग १० अरब नस कोष्ठ (न्यूरॉन) हैं । उनमें से हर एक का सम्पर्क लगभग २५ हजार अन्य नस कोष्ठों के साथ रहता है । इतनी छोटी-सी खोपड़ी में इतना बड़ा कारखाना किस प्रकार संजोया हुआ है इसे देखकर बनाने वाले की कारीगरी पर चकित रह जाना पड़ता है । यदि मनुष्य इतना साधन सम्पन्न इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क बनाकर खड़ा करना चाहे तो प्रस्तुत विद्युत उपकरणों के आधार पर इस कारखाने के लिए इस धरती जितनी जगह घेरने की आवश्यकता पड़ेगी ।

ज्ञान तन्तुओं से प्रवाहित होने वाले विद्युत आवेग एक सेकण्ड में ३०० फुट प्रति सेकण्ड के हिसाब से दौड़ते हैं । यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस मानवी विद्युत की चाल इतनी कम क्यों है ? जबकि टेलीफोन व्यवस्था के अनुसार शुद्ध बिजली प्रति सेकण्ड १७८६,७००० मील के हिसाब से दौड़ती है । इसका उत्तर यह है कि टेलीफोन में विशुद्ध बिजली रहती है जबकि ज्ञान तन्तुओं में एकाकी विद्युत संचार नहीं, उसके साथ रासायनिक क्रिया-कलाप भी जुड़ा होता है ।

आवेग नस सम्पर्क (साइनेप्स) अगले कोष्ठीय भाग के बीच की खाली जगह को लांघ कर सामने के कोष्ठीय भाग तक आवेग उत्तेजन के क्रम से आगे बढ़ता है । इन आवेग अवरोधों को अन्तर्वाधन (इन्हिविशन) कहते हैं । नस रेशों के अन्दर ऋण विद्युत रहती है उसके बाहर योग विद्युत । इनमें सोडियम और पोटेशियम की विद्यमान मात्रा रासायनिक उपयुक्तता बनाये रहती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । इसी प्रक्रिया में सम्बद्ध एक ऐसा रासायनिक पदार्थ है—ट्राँसमिशन सबस्टेन्स । विद्युत कणों और रासायनिक पदार्थों की सम्मिश्रित प्रक्रिया ही इस कायगत संचार व्यवस्था को गतिशील बनाये हुए है । इस तथ्य के रहस्योद्घाटन से वैज्ञानिकों की कैथोड के आसिलोग्राफ, आइसोटोप टेक्निक तथा अन्य कतिपय प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ा । अब ज्ञान तन्तुओं से प्रवाहित विद्युत आवेगों की यथार्थता और उनकी गतिविधियों के बारे में इतनी जानकारी उपलब्ध है जिसे शंका का समाधान कहकर सन्तोष किया जा सके ।

निःसन्देह मनुष्य एक जीता-जागता बिजलीघर है । झटका मारने वाली और बत्ती जलाने वाली स्थूल बिजली की अपेक्षा वह असंख्य गुनी परिष्कृत और संवेदनशील है । जड़ और चेतन की शक्तियों में यह अन्तर तो रहना ही चाहिए । जड़ बिजली का भावनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं । वह कसाई और सन्त का भेद नहीं करती, जो भी उससे काम ले सके, उसकी विधि व्यवस्था पूरी कर सके उसका उत्तेजन पूरा करने लगती है । उचित-अनुचित का भेदभाव कर सकने लायक संवेदना उसमें है ही नहीं ।

मानव शरीर में संव्याप्त विद्युत में चेतना और संवेदना के दोनों तत्व विद्यमान हैं । इसलिए उसे मात्र नाड़ी जाल समुत्पन्न या संव्याप्त ही कहकर सीमित नहीं कर सकते । भले ही वह ज्ञान तन्तुओं के माध्यम से समस्त शरीर पर शासन करती हो, भले ही उसका प्रत्यक्ष केन्द्र मस्तिष्क में अवस्थित प्रतीत होता है पर सही बात यह है कि वह आत्मा की प्राण प्रतिभा है और उसकी भावनात्मक स्थिति से प्रभावित होती है । मनुष्य अन्तरंग जैसा भी कुछ होता है उसके अनुरूप इस चेतन विद्युत की दुर्बलता, सशक्ता दृष्टिगोचर होती है ।

किसी के शरीर को छूने से प्रत्यक्ष झटका लगे इस स्तर का अनुभव इस कायिक विद्युत का नहीं होता, इसलिए मोटे विद्युत उपकरणों से वह देखी समझी नहीं जाती । उसका भौतिक स्वरूप जानना हो तो उन उपकरणों की आवश्यकता पड़ेगी जो नोबेल पुरस्कार विजेता हाजकिन प्रभृति वैज्ञानिकों ने इस सन्दर्भ में प्रयुक्त किए थे, पर भावनात्मक स्पर्श से इसका प्रभाव दूसरे लोग भी अनुभव कर सकते हैं । किसी उच्च मनोभूमि के व्यक्ति के पास बैठने से अपनी मनोभूमि में उसी तरह की हलचल उत्पन्न होती है और दुष्ट दुराचारियों की संगति में मन, बुद्धि तथा इन्द्रिय संवेदनाओं में उसी तरह का उत्तेजन आरम्भ हो जाता है । व्यभिचारियों के सान्निध्य में बैठने से अकारण ही दुराचार का आकर्षण मन में उठने लगता है । सत्संग की महत्ता का जो प्रतिपादन आध्यात्म शास्त्र से किया गया है उसका कारण मात्र शिक्षा प्राप्ति नहीं है, वरन् यह भी है कि उन महापुरुषों के शरीर से निकलने वाले और समीपवर्ती क्षेत्र में फैलने वाले विद्युत प्रवाह की ऊर्जा से लाभ उठाया जाय ।

चरण स्पर्श करने की प्रथा के पीछे यही रहस्य है कि तेजस्वी व्यक्तियों के शरीर का स्पर्श करके उनके विद्युत का एक अंश ग्रहण किया जाय । ताप का मोटा नियम यह है कि अधिक ताप अपने संस्पर्श में आने वाले न्यून ताप उपकरण की ओर दौड़ जाता है । एक गर्म एक ठण्डा लौह खण्ड सटा दिया जाय तो ठण्डा, गर्म होने लगेगा और गर्म, ठण्डा । वे परस्पर अपने शीत ताप का आदान-प्रदान करने लगेंगे ऐसा ही लाभ चरण स्पर्श से होता है । अधिक सामर्थ्यवानों का लाभ स्वल्प सामर्थ्यवानों को मिलने में शरीर स्पर्श की प्रक्रिया बहुत कारगर होती है ।

गुरुजनों का स्नेह से छोटों के सिर पर हाथ फिराना, पीठ थपथपाना जैसा वात्सल्य प्रदर्शन यों भावनात्मक ही दीखता है पर इसमें भी वह विद्युत संचार की क्रिया-प्रक्रिया सम्मिलित है । इस प्रकार बड़े अपने से छोटों को एक महत्त्वपूर्ण अनुदान देते रहते हैं ।

चिड़िया अपने अण्डे को छाती के नीचे रख कर सेती है । उसमें केवल गर्मी पहुँचना ही नहीं, परम्परागत प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करना भी एक प्रयोजन है । चिड़िया की शारीरिक विद्युत, अण्डे-बच्चों में जाकर उन्हें पैतृक संस्कारों से युक्त करती है । मशीन से अण्डे गर्म करके भी उसमें बच्चा निकल सकता है, पर उसमें कितनी ही संस्कारजन्य कमियाँ रह जाती हैं । जिन बच्चों को धाय पालती और दूध पिलाती है, माता का दूध, लाड़, दुलार, गोदी में खिलाना, पास सुलाना जैसा अनुदान नहीं मिलता । वे बालक भी मानसिक दृष्टि से बहुत त्रुटि पूर्ण रह जाते हैं । समर्थ विद्युत भी दुर्बल क्षमता वालों का बहुत कुछ पोषण करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना काल में रह रहे साधक चरण स्पर्श किसी को नहीं करने देते, वे आशीर्वाद रूप से किसी के सिर पर हाथ भी नहीं रखते । इससे उनकी स्वल्प शक्ति का एक अंश दूसरों के पास चले जाने और अपने लिए घाटा पड़ने वाली आशंका ही सन्निहित है ।

ब्रह्मचर्य, पतिव्रत, पत्नीव्रत आदि के पीछे सामाजिक, पारिवारिक कारणों के अतिरिक्त आध्यात्मिक कारण भी हैं । शारीरिक विद्युत आवेग नेत्रों में, वाणी में, हाथ की उँगलियों में अधिक पाया जाता है और वहाँ से वह बाहर फैलता है । सूक्ष्म रूप से मस्तिष्क में और स्थूल रूप से विद्युत जननेन्द्रिय में अत्यधिक मात्रा में पायी जाती है । मस्तिष्क में सन्निहित बिजली तो अध्ययन, चिन्तन, ध्यान आदि मनोयोग सम्बन्धित कार्यों में लगती है, पर जननेन्द्रिय विद्युत तो स्पर्श के माध्यम से बहिर्गमन के लिए व्याकुल रहती है । यही कामोत्तेजना का वैज्ञानिक स्वरूप है ।

महापुरुष ब्रह्मचर्य का अत्यधिक ध्यान इसलिए रखते हैं कि वे कामोपभोग जैसे क्षणिक सुख में अपने महत्त्वपूर्ण उपार्जन को खो न बैठें । इससे दुर्बल पक्ष लाभान्वित हो सकता है, पर सबल पक्ष की हानि तो प्रत्यक्ष है । तपस्या के अनेक विघ्नों में एक बड़ा विघ्न यह है कि मानवी अथवा दैवी 'रयि तत्व' जननेन्द्रिय के माध्यम से उनकी शक्ति का लाभ लेने की चेष्टा करता है । विश्वामित्र, पाराशर, व्यास आदि की तप साधना के बीच कामस्खलन इसी खींच-तान का प्रमाण है । भगवान बुद्ध के चित्रों में ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में अनेक अप्सराएँ उनके समीप नृत्य, परिहास करती दिखाई जाती हैं । इसके पीछे यही संकेत है । आत्म विद्युत सम्पन्न पति-पत्नी अति उच्च कोटि की सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं । भगवान कृष्ण ने रुक्मिणी सहित तीव्र तप बद्रीनारायण में करने के उपरान्त एक ही पुत्र पैदा किया था—प्रद्युम्न जो कृष्ण के समान ही रूप, गुण आदि विशेषताओं से सम्पन्न था । लोग पहचान तक न पाते थे कि इनमें कौन-सा कृष्ण है । तपस्वियों की ऋषि सन्तानें अपने जनक-जननी के सम तुल्य प्रभावशाली होते रहे हैं ।

महापुरुष इस संचित विद्युत भण्डार को काम-कौतुक में खर्च करने की अपेक्षा उस क्षमता को मस्तिष्क तथा अन्य ज्ञानेन्द्रिय द्वारा असंख्य व्यक्तियों की सेवा करने में बुद्धिमत्ता अनुभव करते हैं और ब्रह्मचारी रहते हैं । यही बात महिलाओं के सम्बन्ध में है । तेजस्वी और मनस्वी बनने के लिए उन्हें भी ब्रह्मचर्य द्वारा शक्ति संचय के मार्ग पर चलना होता है ।

कायिक विद्युत दूसरों का हित साधन करती है, अपना भी । प्रश्न सदुपयोग की सूझ-बूझ और योग्यता का है । यह बिजली यों ही शरीर और मन से खर्च होती रहती है और अस्त-व्यस्त बिखरती रहती है । यदि इसे केन्द्रित कर लिया जाय और शारीरिक-मानसिक एवं आत्मिक उत्कर्ष के लिए प्रयुक्त किया जाय तो हर क्षेत्र में आशाजनक प्रगति हो सकती है । बिजली घर में विद्युत उत्पादन का समुचित लाभ उसे किसी प्रयोजन के लिए नियोजित करके ही उठाया जा सकता है । साधारणतया यह कायिक विद्युत भण्डार दैनिक जीवनयापन में ही थोड़ा बहुत काम आता है और शेष ऐसे ही बिखर जाता है । साधना विज्ञान के आधार पर यदि उसका सदुपयोग सीखा जाय और अभीष्ट प्रयोजन के लिए उसे नियोजित करने का क्रिया-कलाप समझा जाय, तो अपने निज की इस सम्पत्ति से मनुष्य सर्वांगीण समृद्धि से सुसम्पन्न हो सकता है । सफल जीवन जी सकता है ।

प्राण साधना योगशास्त्र की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है । इसके लाभों का विस्तार अणिमादि अमणित ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में किया गया है और ब्रह्मतेजस् के रूप में उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों की चर्चा की गई है, प्राणायाम इस दिशा में प्रथम सोपान है । दुर्बल विकृत प्राण को बहिष्कृत कर उसके स्थान पर महाप्राण की स्थापना करना इस साधना का लक्ष्य है । संध्या-वन्दन जैसे नित्यकर्मों का उसे अनिवार्य आधार इसलिए बनाया गया है कि इस प्रकार प्रारम्भिक परिचय तथा अभ्यास करते हुए क्रमशः आगे बढ़ा जाय और प्राणवान् बनते हुए जीवन लक्ष्य को पूर्ण करने की दिशा में अनवरत रूप से गतिशील रहा जाय ।

प्राण-तत्व समस्त भौतिक और आत्मिक सम्पदाओं का उद्गम केन्द्र है । वह सर्वत्र संव्याप्त है । उसमें से जो जितनी अंजलि भरने और देने में समर्थ होता है वह उसी स्तर का महामानव बनता चला जाता है । प्राण शक्ति का पर्यायवाची है । उसकी परिधि में भौतिक सम्पदाएँ और आत्मिक विभूतियाँ दोनो ही आती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शारीरिक परिपुष्टि के रूप में ओजस्वी, मनोबल सम्पन्नता के रूप में मनस्वी, सामाजिक सहयोग, सम्मान के रूप में यशस्वी और आत्मिक उत्कृष्टता रूप में तेजस्वी बन जाता है । यह चतुर्विधि क्षमताएँ जिस मूल स्रोत में उत्पन्न होती हैं उसे प्राण शक्ति कहते हैं । प्राण साधना इन्हीं सिद्धियों का प्राप्त कर सकना सम्भव बनाती है ।

अन्तरंग में उतरें : आत्म बल प्राप्त करें

मनुष्य यों देखने में एक दुर्बल-सा प्राणी मालूम पड़ता है, पर वह प्राणि विद्युत की दृष्टि से स्रष्टा की अद्‌भुत एवं अनुपम संरचना है । विशेषतया मस्तिष्क इतनी विलक्षणताओं का केन्द्र है जिसके आगे अद्यावधि आविष्कृत हुए समस्त मानवकृत यन्त्रों का एकत्रीकरण भी हल्का पड़ेगा । उसमें अगणित चुम्बकीय केन्द्र हैं जो विविध-विधि रिसीवरों, ट्रान्सफार्मरों का कार्य सम्पादित करते हैं । ब्रह्माण्ड में असंख्य प्रकार के एक से एक रहस्यमय प्रवाह स्पन्दन गतिशील रहते हैं । इनमें से मनुष्य को मात्र कुछेक की ही लँगड़ी-लूली जानकारी है । यह जानकारी का क्षेत्र जितना-जितना विस्तृत होता जाता है उसमें असीम शक्ति की, असंख्य धाराओं की हल्की-फुल्की झाँकी मिलती है । कदाचित अब की अपेक्षा मनुष्य के हाथ दूना चौगुना भी और लग गया तो स्रष्टा की प्रतिद्वन्द्वता करने लगेगा । इतना होते हुए भी जो कुछ जानना और पाना शेष रह जायेगा जिसकी कल्पना कर सकना भी कठिन है । ब्रह्माण्ड की भौतिकाएँ और चेतनात्मक सम्भावनाएँ इतनी अधिक हैं कि उन्हें अचिन्त्य, असीम, अनन्त, अनिर्वचनीय आदि कहकर ही सन्तोष किया जा सकता है ।

सर्वविदित है कि पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र एवं सौरमण्डल के अन्य ग्रहों से बहुत कुछ अनुदान प्राप्त करती है और उस उधार की पूँजी से अपनी दुकान चलाती है । सौरमण्डल से बाहर के ग्रह-नक्षत्र भी उसे बहुत कुछ देते हैं । वह हल्का होने के कारण विनिर्मित यन्त्रों की पकड़ में नहीं आता तो भी वह स्वल्प या नगण्य नहीं है । कोई वस्तु हल्की होने के कारण उपहासास्पद नहीं बन जाती वरन् सच तो यह है कि सूक्ष्मता के अनुपात में शक्ति की गरिमा बढ़ती जाती है । होम्योपैथी विज्ञान ने इस सन्दर्भ में अच्छे, गहरे और प्रामाणिक प्रयोग प्रस्तुत किए हैं । ब्रह्माण्ड में बिखरे पड़े कोटि-कोटि ग्रह-नक्षत्र अपनी-अपनी उपलब्धियाँ मिल बाँटकर खाते हैं । तभी तो वे सब एक सूत्र में 'मणिगण एवं पिरोए' हुए हैं । यदि उनमें से प्रत्येक ने अपनी उपलब्धियों को अपने ही सीमित क्षेत्र में समेट-सिकोड़ कर रखा होता तो ब्रह्माण्ड का सारा सीराजा बिखर जाता और यहाँ केवल धूल के बादल इधर-उधर मारे-मारे फिरते दिखाई पड़ते । पृथ्वी की अगणित शक्ति केन्द्रों के छोटे-बड़े उपहार मिलते रहते और वह उन खिलौनों से खेलती हुई अपना विनोद-प्रमोद स्थिर रखे रहती ।

जिस प्रकार पृथ्वी अन्य ग्रहों से लेती है उसी प्रकार वह अपना उपार्जन ब्रह्माण्ड परिवार को बाँटती भी है । 'दो और लो' का विनिमय क्रम ही इस दृष्टि की धुरी बनकर काम कर रहा है । पृथ्वी और ब्रह्माण्ड के बीच जो आदान-प्रदान क्रम चल रहा है वह चेतना के घटाकाश, मनुष्य और महादास, विश्व मानव के बीच भी चल रहा है । पिण्ड शब्द का प्रयोग ग्रह-नक्षत्रों की तरह मानव शरीर के लिए भी होता है । मनुष्य एक पिण्ड है उसका ब्रह्माण्डव्यापी असंख्य चेतना पिण्डों के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा पृथ्वी का सौरमण्डल से, देवयानी नीहारिका से अथवा ब्रह्माण्ड केन्द्र महाध्रुव अनन्त शेष से । मनुष्य की चेतना अपनी उपलब्धियाँ विश्व चेतना को प्रदान करती हैं और वहाँ से अपने लिए उपयोगी अनुदान प्राप्त करती है ।

यों चेतना शरीर के कण-कण में बिखरी पड़ी है पर उसका उद्‌गम निर्झर मस्तिष्क से ही फूटता है । ध्रुवीय चुम्बक शक्ति की तरह मस्तिष्क में भी आकर्षक और विकर्षक केन्द्र हैं । वे ब्रह्माण्ड से बहुत कुछ ग्रहण करते और देते हैं । इन्हीं क्रिया केन्द्रों की रिसीवरों एवं ट्रान्सफार्मरों के रूप में व्याख्या की जाती है ।

मनुष्य की स्वास्थ्य, चरित्र, संस्कार, शिक्षा आदि विशेषताएँ मिलकर समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं और उसी के आधार पर उसकी प्रतिभा निखरती है । प्रतिभा न केवल सामने आने वाले कामों की सफलता के लिए वरन् दूसरों पर प्रभाव डालने की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण होती है । व्यक्तिगत जीवन में यह प्रतिभा धैर्य, सहस्र सन्तुलन, विवेक, दूरदर्शिता एवं शालीनता के रूप में दृष्टिगोचर होती है । सामाजिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन में वह सम्बन्धित लोगों को प्रभावित करती है । उन पर छाप डालती है एवं सहयोग, उद्भाव, सम्मान प्रदान करने के लिए आकर्षित करती है । प्रतिभा प्रयत्नपूर्वक बढ़ाई जा सकती है । इन प्रयत्नों में लौकिक गतिविधियाँ भी शामिल हैं और आध्यात्मिक साधनाएँ भी । साधनारत मनुष्य अपनी संकल्प शक्ति और उपासनात्मक तपश्चर्याओं द्वारा अतीन्द्रिय शक्ति का उद्भव करते हैं । अन्तराल में प्रसुप्त पड़ी क्षमताओं को जगाया जाना और इस विशाल ब्रह्माण्ड में बिखरे हुए शक्तिशाली चेतन तत्वों को खींचकर अपने में धारण करना यह दोनों ही प्रयत्न आध्यात्म साधनाओं द्वारा किए जाते हैं । जिनमें यह उभयपक्षीय विशेषताएँ बढ़ती हैं उन्हें कई दृष्टि से चमत्कारी विशेषताओं से सुसम्पन्न पाया जाता है ।

जिस प्रकार हृदय स्पन्दन की गतिविधियों की जानकारी इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम यन्त्र से होती है । उसी प्रकार मस्तिष्क विद्युत के आधार पर चलने वाली विचार-तरंगों का अंकन इलेक्ट्रो ऐसेफैलोग्राम यन्त्र से होता है । मनः क्षेत्र से चिन्तन स्तर के अनुरूप कितनी ही प्रकार की अल्फा, बीटा, गामा आदि किरणें निकलती हैं । उनके आयाम और दैर्ध्य चिन्तन का, स्थिति का विवरण प्रस्तुत करते हैं ।

किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों की शारीरिक बनावट सामान्य होती है, देखने में उनका व्यक्तित्व सीधा सरल सा लगता है, पर उनमें विशिष्ट विद्युत शक्ति इतनी भरी होती है कि जो भी काम हाथ में लेते हैं उसे सँभालते चले जाते हैं जिसके भी सम्पर्क में आते हैं उन्हें प्रभावित किए बिना नहीं रहते ।

किस व्यक्ति में कितनी अतिमानवी विद्युत शक्ति है उसका परिचय उसके चेहरे के इर्द-गिर्द और शरीर के चारों ओर बिखरे हुए तेजोवलय को देखकर जाना जा सकता है । यह तेजोवलय खुली आँखों से दिखाई नहीं पड़ता, पर उसे सूक्ष्मदर्शी दृष्टि से अनुभव किया जा सकता है । अब ऐसे यन्त्र भी बन गए हैं जो मानव शरीर में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति और उसके एक सीमा तक निकलने वाले विकिरण का विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं । देवी-देवताओं के चेहरे पर एक प्रभा-मण्डल चित्रित किया जाता है यह विशिष्ट मानवी विद्युत शक्ति है । इसका सम्बन्ध भौतिक प्रतिभा और आध्यात्मिक शक्ति धाराओं के साथ जुड़ा रहता है ।

डॉ. चार्ल्स फारे ने अपने ग्रन्थ 'एनल्स डिस साइन्सेज साइकिक्स' नामक ग्रन्थ में अपने कुछ रोगियों के सिरो भाग पर छाये प्रभा-मण्डल का विवरण दिया है और बताया है कि रोगों के कारण इस तेजोवलय में क्यों और क्या अन्तर उत्पन्न होते रहते हैं ।

इटली में पिरानो अस्पताल में अन्नामोनारी नामक महिला के शरीर में डॉक्टरों ने खुली आँखों से झिलमिलाता नील वर्ण प्रभा-मण्डल देखा था । जब वह दीप्ति अधिक तीव्र होती थी तब वह महिला पसीने से लथपथ हो जाती थी, साँसें तेजी से चलती और दिल की धड़कन बढ़ जाती थी । उस महिला की इस विद्युत स्थिति को देखने के लिए विश्व भर के जीव विज्ञानी, भौतिक शास्त्री और पत्रकार पहुँचे थे ।

'फिजीकल फेनामेना ऑफ मिस्टिसिज्म' ग्रन्थ के लेखक हरवर्ट थर्स्टन ने अपनी खोजों में ऐसे ईसाई सन्तों का विवरण छापा है जिनके चेहरे पर लम्बे उपवास के उपरान्त दीप्तिमान, तेजोवलय देखे गए । उन्होंने अन्नामोनारो का विवरण विशेष रूप से लिखा जिनके शरीर में उपवास के उपरान्त सल्फाइडों की असाधारण वृद्धि हो गई थी । अल्ट्रावायलेट तरंगें अधिक बहने लगी थीं जिनका आभास दीप्तिमान चक्र के रूप में होता था । विद्वान थर्स्टन ने भी अपने विवरणों में ऐसे ही कई दीप्तिवान सन्तों की चर्चा की है और उनकी विद्युतीय स्थिति में असामान्यता होने का उल्लेख किया है ।

अमेरिकी वैज्ञानिक मनुष्य शरीर के चारों ओर बिखरे रहने वाले-विशेषतया चेहरे के इर्द-गिर्द अधिक प्रखर पाये जाने वाले तेजोवलय के सम्बन्ध में अपनी शोधें बहुत पहले प्रकाशित कर चुके हैं । अब रूसी वैज्ञानिकों ने भी उस प्रभा-मण्डल के छाया-चित्र उतारने में सफलता प्राप्त कर ली है । 'सोवियत यूनियन' पत्र के १४५वें अंक में इन खोजों का विस्तृत विवरण छपा है । यह प्रभा-मण्डल सदा एक रस नहीं रहता उसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं जिनसे विदित होता है कि व्यक्ति के भीतर क्या-क्या विद्युतीय हलचलें हो रही हैं । यदि इस प्रभा-मण्डल के बारे में अधिक जाना जा सके तो न केवल शारीरिक स्थिति के बारे में वरन्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मस्तिष्कीय हलचलों के बारे में भी किसी व्यक्ति का पूरा, गहरा और विस्तृत परिचय प्राप्त हो सकता है ।

योग-साधना इस मानवी विद्युत भण्डार को असाधारण रूप से उत्तेजित करती और उभारती है । यदि सही ढंग से साधना की जाय तो मनुष्य प्राणवान और ओजस्वी बनता है । उपार्जित प्राण विद्युत की ऊर्जा के सहारे स्वयं कितनी ही अद्‌भुत सफलताएँ प्राप्त करता है और दूसरों को सहारा देकर ऊँचा उठाता है ।

प्राण विद्युत के सम्बन्ध में शरीर विज्ञानी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पेशियों में काम करने वाली स्थिति एक ऊर्जा पोटेंन्शियल का तथा उसके साथ जुड़े रहने वाले आवेश-इन्टेन्सिटी का जीवन संचार में बहुत बड़ा हाथ है । इन विद्युतधाराओं का वर्गीकरण तथा नामकरण—सीफेली ट्राइजमिल न्यूनैलाजिया की व्याख्या चर्चा के साथ प्रस्तुत किया जाता है । ताप विद्युत संयोजन, थर्मोलैरिक कपलिंग के शोधकर्त्ता अब इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मानव शरीर का सारा क्रिया-कलाप इसी विद्युतीय संचार के माध्यम से गतिशील रहता है ।

मनुष्य शरीर में बिजली काम करती है, यह तथ्य सर्वविदित है । इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफी तथा इलेक्ट्रो इनसिफैलोग्राफी द्वारा इस तथ्य को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । हमारी रक्त नलिकाओं में लौह युक्त हीमोग्लोबिन भरा पड़ा है । लौह चूर्ण और चुम्बक जिस प्रकार परस्पर चिपके रहते हैं उसी प्रकार हमारी जीवन सत्ता भी जीव कोशों को परस्पर सम्बद्ध किए रहती है । उनकी सम्मिश्रित चेतना से वे समस्त क्रिया-कलाप चलते हैं जिन्हें हम जीवन संचार व्यवस्था कहते हैं ।

शरीर में जो चमक, स्फूर्ति, ताजगी, उमंग, साहस, उत्साह, निष्ठा, तत्परता जैसी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं—वे प्राण ऊर्जा की ही प्रतिक्रियाएँ हैं । मनस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी, तपस्वी आदि शब्द इसी क्षमता का बाहुल्य करते हैं । ऐतिहासिक महामानवों में यही विशेषता प्रधान रूप से रही है ।

ऊर्जा के सहारे ही यन्त्रों का संचालन होता है । मनुष्य शरीर भी एक यन्त्र है । उसके संचालन में जिस विद्युत की आवश्यकता पड़ती है उसे प्राण कहते हैं । प्राण एक अग्नि है जिसे ज्वलन्त रखने के लिए आहार की आवश्यकता पड़ती है । आधुनिक वैज्ञानिक ने इसे 'जीव विद्युत' नाम दिया है ।

निद्रा मात्र थकान मिटाने की, विश्राम प्रक्रिया मात्र नहीं है । वैज्ञानिक अनुसन्धानों के अनुसार निद्रा में मस्तिष्क का सचेतन भाग अचेतन की स्थिति में इसलिए जाता है कि उस स्थिति एवं अन्तरिक्ष में प्रवाहित रहने वाली विद्युतधाराओं में से अपने उपयोग का अंश संग्रह सम्पादित कर सकने का अवसर मिल जाय 'एरियल' रेडियो तरंगों को पकड़ता है । निद्रावस्था में हमारा अचेतन मस्तिष्क उसी स्थिति का बन जाता है और आकाश से इतनी विद्युतीय खुराक प्राप्त कर लेता है जिससे शारीरिक और मानसिक क्रिया-कलापों का संचालन ठीक प्रकार सम्भव हो सके । निद्रा की पूर्ति न होने पर शारीरिक और मानसिक में जो गड़बड़ी उत्पन्न होती है उसे अभीष्ट मात्रा में विद्युतीय खुराक न मिलने को चेतनात्मक 'बुभुक्षा' कहते हैं । इसके बने रहने पर मनुष्य विक्षिप्त या अर्ध-विक्षिप्त बन जाता है । पागलपन छा जाने से पूर्व प्रायः कुछ दिन पहले से अनिद्रा रोग उत्पन्न होता है । अनिद्रा में इस विद्युतीय आहार की ही कमी पड़ती है ।

ठीक इसके विपरीत इस शक्ति का विकास होने अर्थात् सूक्ष्म शरीर के बलवान होने पर वह सारी क्षमताएँ उपार्जित हो सकती हैं, वह ऋतम्भरा प्रज्ञा जागृत की जा सकती है जिससे बिना किसी भौतिक माध्यम से भी व्यक्ति दूरवर्ती वस्तुओं, सम्बन्धियों का ज्ञान, भविष्यवाणी, ऋतुओं का पूर्वानुमान सच-सच कर सके । यह सारे क्रिया-कलाप चेतना के अति गहन स्तर पर सम्पादित होते हैं । इस बात को तो कोई भी व्यक्ति प्राणायाम के थोड़े समय के अभ्यास से भी ज्ञात कर सकता है कि जैसे-जैसे प्राणायाम का अभ्यास बढ़ता है बुद्धि तीक्ष्ण होती है और गहरी निद्रा आती है । गहन निद्रा का एक गुण शारीरिक हल्कापन और प्रसन्नता भी है, दूसरे इसी स्तर पर भविष्यदर्शी स्वप्न भी दिखाई देते हैं ।

'नोवोत्सी न्यूज एजेन्सी ने सोते समय 'अंग्रेजी पढ़ाने का परीक्षण' शीर्षक से समाचार छापा है । समाचार पीछे, पहले शीर्षक पढ़कर ही पाठक चौंक पड़ेंगे । जागृत अवस्था में कई बार पुस्तकें पढ़ते हैं, अध्यापक पाठ याद कराते हैं तो भी विद्यार्थियों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक ही रोना बना रहता है, पाठ याद नहीं होता । फिर सोते हुए व्यक्ति को पढ़ाना तो असम्भव बात है । इसी बात को हम यह कहते हैं कि आत्मा इतनी संवेदनशील है कि अपने सूक्ष्म प्रकाश-शरीर से वह सोते-जागते किसी भी अवस्था में पढ़ता और ज्ञान सम्पादन करता रह सकता है । कोई सामर्थ्यवान् व्यक्ति अपने विचार, ज्ञान, प्रज्ञाएँ और सन्देश कैसी भी अवस्था में किसी और को भी दे सकता है । तब तो लोग यह बात न मानते पर मास्को के पास दूबना स्थान स्थान पर विज्ञान इस बात को प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध करने में लगा हुआ है, लगभग एक हजार लोगों को सोते समय गहरी निद्रा में अंग्रेजी सिखायी जा रही है । प्रयोगकर्त्ताओं का कहना है कि ये लोग ४० दिन में सोते-सोते ही अंग्रेजी सीख जायेंगे ।

इस प्रणाली के अन्तर्गत गहरी नींद में सोने वाले लोग ही भाषा शिक्षण के लिए छाँटे जाते हैं, उन्हें सोते समय भाषा के टेपरिकॉर्ड सुनाये जाते हैं । वे नींद में ही व्याकरण के नियम और शब्द और उनका प्रयोग सीख लेते हैं । अब तक छुपे परीक्षण बहुत सफल हुए हैं ।

एक ओर यह प्रयोग और दूसरी ओर वैज्ञानिकों की निरन्तर की शोध । दोनों प्रक्रियाओं ने यह सिद्ध करना प्रारम्भ कर दिया है कि स्थूल शरीर में सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व और उस सूक्ष्म शरीर में मन आदि सम्पूर्ण इन्द्रियों व चेष्टाओं को पाया जाना असम्भव नहीं ।

इन घटनाओं के कारण जो अनेक देशों एवं अनेक लोगों के साथ घटी हैं, वैज्ञानिकों का ध्यान भी इस ओर जाने लगा है । विज्ञान भी यह सोचने के लिए विवश हुआ है कि क्या स्थूल शरीर से परे भी मनुष्य का कोई अस्तित्व है, जो उसके संदेशों को सुदूर क्षेत्रों में पहुँचाता है तथा ऐसे-ऐसे काम कर डालता है, जो शरीर द्वारा ही किए जा सकते हैं । बिना किसी स्थूल माध्यम के एक मनुष्य के विचारों और संदेशों को पहुँचाने की इस प्रक्रिया का नाम है, परामानसिक संचार (टैलीपैथी) । रूप के लेनिनग्राड विश्वविद्यालय में फिजियोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. लियोनिद वासिलयेव ने अभी कुछ समय पूर्व एक अनूठा प्रयोग किया है । स्मरणीय रूप का शासनतन्त्र, धर्म ईश्वर और आत्म-तत्व की मान्यता की न केवल अनावश्यक मानता है वरन् उसे अफीम भी बताता है । फिर भी इस तरह की घटनाओं के कारण वास्तविकता की ओर उनका ध्यान गए बिना नहीं रहा । प्रो. वासिलयेव ने टैलीपैथी द्वारा कई मील दूर स्थित एक प्रयोगशाला में कार्यरत अनुसन्धानकर्त्ताओं को सम्मोहित कर दिया और वे लोग जो प्रयोग कर रहे थे, उनसे वह प्रयोग छुड़वा कर किसी दूसरे प्रयोग में लगा दिया । अनुसन्धानकर्त्ता वैज्ञानिक अनजाने ही परवश से होकर वासिलयेव के सन्देशों का पालन करने लगे और उन्हें यह भान तक नहीं हुआ कि वे क्या कर रहे हैं । इस प्रयोग के द्वारा प्रो. वासिलयेव इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को केवल अपने संकल्पों के द्वारा ही प्रभावित कर सकता है और उसे अपना आज्ञानुवर्ती बना लेता है । इसके लिए न किसी भौतिक माध्यम की आवश्यकता होती है तथा न ही किसी और साधन की । यहाँ तक कि स्थान की दूरी भी इस प्रक्रिया में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं करती ।

भावोद्रेक प्राणवान होने के ही लक्षण हैं । ऐसे व्यक्ति शरीर से दुर्बल भी दिखाई दें तो भी उनका आत्मबल सब प्रकार से बढ़ा-चढ़ा हुआ होता है और वे उन मोटे ताजे लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक निरोग और सुखी होते हैं जो माँस की दृष्टि से तो बहुत भारी होते हैं, पर प्राणवान् न होने के कारण न तो निरोग रह पाते हैं न ही दूसरों के भावात्मक स्पर्श का आनन्द ले पाते हैं ।

शरीर बल, बुद्धि बल, धन बल, शस्त्र बल, सत्ता बल आदि कितनी ही सामर्थ्यों के लाभ सर्वविदित हैं । यदि आत्मबल की क्षमता एवं उपयोगिता का भी लोगों को पता होता तो वे जानते कि यह उपलब्धि भी इन सबसे कम नहीं, वरन् कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है । आत्मशक्ति न केवल व्यक्तित्व को तेजस्वी बनाती है वरन् बाह्य जगत में लोगों को प्रभावित करने, उनका सहयोग, सम्पादन करने में समर्थ रहती है । कठिन कामों को सरलतापूर्वक सम्पन्न करने की विशेषता जिनमें देखी जाती है । उनकी प्रमुख विशेषता यही आन्तरिक प्रतिभा होती है, जिसे सर्वतोन्मुखी सफलताओं का आधार कह सकते हैं । हमारे प्रयत्न यदि उस क्षमता को प्राप्त करने की दिशा में चल पड़ें तो सचमुच सच्चे अर्थों में सामर्थ्यवान कहे जा सकने योग्य बन सकते हैं ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणवान बनने की प्रक्रिया

प्राण शक्ति की सर्व समर्थता

सृष्टि में जो चैतन्यता दिखाई पड़ रही है, उसका मूल कारण प्राण है । अनन्त सृष्टि प्रवाह में प्राणतत्व ही हिलोरे ले रहा है । यही संसार की उत्पत्ति का कारण है । समस्त सृष्टि कल्प के आदि और अन्त में, आकाश रूप में परिणत हो जाती है एवं सभी शक्तियाँ प्राण में ही विलीन हो जाती हैं । नयी सृष्टि में प्राणतत्व ही अभिव्यक्त होकर विभिन्न संरचनाओं के रूप में दृष्टिगोचर होता है । पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण एवं अणुओं की चुम्बकीय शक्ति में प्राण शक्ति ही क्रीड़ा कल्लोल कर रही है । चेतन जीवों की हलचलों के वही प्रेरणा भर रही है । उत्पादन, अभिवर्धन का मूल कारण प्राण स्पन्दन ही है ।

यही जीवों को नवीन सृष्टि के लिए परस्पर आबद्ध करता, प्रेरणा भरता तथा सन्तति उत्पादन का अतिरिक्त दायित्व वहन करने को बाध्य करता है । काम की प्रचण्ड शक्ति प्राण का ही एक भाग है । इसका निम्नस्तरीय पक्ष है—काम वासना से सन्तति उत्पादन तथा उच्चस्तरीय स्वरूप है विचारों की उत्कृष्टता, भावनाओं की उदात्तता, ईश्वरीय प्रेम, आदर्शों, सिद्धान्तों के प्रति असीम प्रेम ।

विचारों की प्रखरता एवं वाणी की तेजस्विता प्राण-तत्व की बहुलता का परिचायक है । विचार इसी से सशक्त बनते तथा दूसरों पर प्रभाव छोड़ते हैं । विचारक, मनीषी, सन्त, महापुरुषों के विचार एवं उपदेश निकट के ही नहीं दूरवर्ती व्यक्तियों को भी प्रभावित करते हैं । उन्हें श्रेष्ठता की ओर बढ़ चलने की प्रेरणा देते हैं । यह प्राण शक्ति का ही प्रभाव है, जो अपने विचारों के अनुसार अन्यों को चलने, अनुगमन करने को बाध्य करती है ।

स्थूल एवं सूक्ष्म जगत की समस्त शक्तियाँ प्राण की ही अभिव्यक्ति हैं । प्राणायाम साधना का लक्ष्य इस तत्व को जानना तथा उस पर नियन्त्रण प्राप्त करना है । नियन्त्रित प्राण इतनी बड़ी सम्पदा है । जिसके समक्ष संसार की सभी भौतिक सम्पदाएँ छोड़ी जा सकती हैं । उस महाशक्ति से प्रकृति को भी वशीभूति किया जा सकता है ।

वेदों में एक उपाख्यान आता है, जिसमें जिज्ञासु ऋषि से पूछता है—"कस्मिन्तु भगवो विज्ञाते संर्वमिदं विज्ञातेभवति ?" ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसका ज्ञान होने पर सब कुछ ज्ञात हो जाता है । ऋषि उत्तर देते हुए कहते हैं कि, "यह प्राणतत्व ही है । जिसे जान लेने के बाद कुछ जानना अवशेष नहीं रहता ।"

यदि कोई व्यक्ति सम्पूर्ण प्रकृति के तत्वों को जानने का प्रयास करे तो उसे अनन्त समय लग सकता है । इस कारण श्रुति कहती है कि "प्राणतत्व को समझने, उस पर नियन्त्रण प्राप्त करने से प्रकृति के समस्त रहस्यों को जाना, अनुभव किया जा सकता है । प्राण पर विजय प्राप्त कर लेने का अर्थ है—प्रकृति पर विजय प्राप्त करना । प्रकृति की अन्य शक्तियाँ प्राण सम्पन्न व्यक्ति की अनुगामिनी होती हैं ।

सृष्टि में प्रवाहित अनन्त प्राण प्रवाह का एक क्षुद्र अंश चेतन जीवों में विद्यमान है । अनन्त प्राण समुद्र की यह सबसे निकट की तरंग है । इस पर यदि नियन्त्रण किया जा सके तो, उस प्राण के महासमुद्र से सम्पर्क जोड़ा जा सकता है । संसार के सभी धर्म सम्प्रदायों की साधना प्रणाली में यह प्राण शक्ति अभिवर्धन का लक्ष्य अनिवार्य रूप से जुड़ा है ।

प्राण समस्त प्राणियों में जीवनी शक्ति के रूप में विद्यमान है । वैचारिक प्रखरता उसकी उच्चतम अभिव्यक्ति है तथा कामवासना निम्नतम । इसके अतिरिक्त भी प्राण की वृत्तियाँ हैं, जिन्हें हम जन्मजात प्रवृत्ति अथवा ज्ञान रहित चित्तवृत्ति भी कहते हैं । अचेतन मन द्वारा संचालित प्रवृत्तियों में भी प्राणतत्व की ही अव्यक्त भूमिका होती है । शरीर की समस्त क्रिया प्रणाली—चलना, खाना, पानी, सोना, आदि इसी के द्वारा संचालित हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विश्व में अस्तित्व के प्रत्येक स्तर पर एक अखण्ड वस्तु राशि दिखाई पड़ती है । वही भौतिक संसार के विभिन्न रूपों में व्यक्त हो रही है । प्रत्येक वस्तु इस अनन्त प्राण की एक भंवर है । प्राण-तत्व इन भवरों में प्रविष्ट होकर नाम रूप गढ़ता है । लाखों प्रकार की योनियाँ प्राण की ही विभिन्न स्तर की अभिव्यक्तियाँ हैं । सूक्ष्म जगत में प्रविष्ट करने पर भी यह अखण्डता दिखाई पड़ती है । ईथर को सम्पूर्ण जड़ जगत की सूक्ष्मावस्था माना जाता है । वह प्राण की स्पन्दनशील सूक्ष्म स्थिति है ।

प्राण चेतना के विकास का केन्द्र बिन्दु है । इसकी ऊर्ध्वगति एवं अधोगति पर ही चेतना का उत्थान पतन निर्भर करता है । आत्मा का लक्ष्य है—ब्रह्मानन्द की प्राप्ति । यह दिव्य आनन्द स्नायुतन्त्र में बहने वाले प्राण पर ही आरूढ़ होकर अवतरित होता है । मेरुदण्ड में स्थित सुषुम्ना मार्ग से जैसे-जैसे यह नीचे उतरता है वैसे-वैसे प्रकृति के अनुरूप स्थूलता आती जाती है । ऊपर से नीचे की ओर आने में प्राण तरंगदैर्ध्य में वृद्धि होती है । भौतिकी के अनुसार तरंगदैर्ध्य का बढ़ाना ऊर्जा में ह्रास का परिचायक है । ऊपर की ओर बढ़ने पर तरंगदैर्ध्य घटता है, पर आन्तरिक ऊर्जा में अभिवृद्धि होती है ।

सुषुम्ना में भूमध्य से लेकर रीढ़ के आधार बिन्दु तक छः चक्र अवस्थित हैं । भूमध्य के पीछे कपाल में आज्ञाचक्र, कण्ठ में विशुद्ध चक्र, हृदय के पीछे अनाहत चक्र, नाभि के पीछे मणिपुर चक्र, उपस्थ के पीछे स्वाधिष्ठान चक्र तथा रीढ़ के आधार में मूलाधार चक्र है । सुषुम्ना के ऊपर मस्तक की मूर्धा में चेतना का सर्वोच्च केन्द्र सहस्त्रार है । प्राण की दिव्यता ऊपर से नीचे—सहस्त्रार से मूलाधार की ओर आते हुए घटती है । इन चक्रों, कुण्डलों में होकर प्राण के प्रवाहित होने के कारण ही उसका नाम कुण्डलिनी शक्ति है । शरीर विज्ञान के अनुसार ये चक्र में स्थित स्नायु केन्द्र हैं । सूक्ष्म स्नायु तन्त्र यहीं से निकलकर सम्पूर्ण शरीर में फैले रहते हैं । स्नायविक सम्वेदनाओं के नियन्त्रण का केन्द्र बिन्दु यही है ।

कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया में इसी प्राण शक्ति का आरोहण किया जाता है । इसे ऊर्ध्वदिशा में मोड़ा जाता है । जैसे-जैसे चक्रों का भेदन करती हुई प्राण शक्ति ऊपर की ओर बढ़ती है, चित्त पर चढ़े अज्ञान के आवरण हटने लगते हैं । दिव्यता बढ़ती जाती है । साधक आनन्द के श्रेष्ठ स्वरूप की रसानुभूति करता है । प्राण शक्ति को विषयाशक्ति से मोड़कर परमानन्द में अवस्थित करना ही कुण्डलिनी जागरण का लक्ष्य है । इस दिव्य आनन्द की स्थिति का नाम ही समाधि है जो साधक इसकी अनुभूति कर लेता है, वह पुनः तमसाछन्न तुच्छ विषयों की ओर आकर्षित नहीं होता है ।

सामान्य स्थिति में प्राण विभक्त होकर सुषुम्ना से निकलने वाली नस नाड़ियों से होकर सम्पूर्ण शरीर में फैल जाता है । शरीर की समस्त गतिविधियों का संचालन करता है । काम भावना प्राण के प्रवाह को तीव्र संवेग के साथ अधोप्रेरित करती है । शारीरिक वृत्तियों में व्यवधान इसी कारण होता है । इन्द्रियाँ निर्बल बनतीं तथा जीवन व्यापार में अवरोध खड़ा होता है । प्राण शक्ति कमजोर बनती है । फलतः आत्मा की दिव्यता में कमी आती है, किन्तु इसके विपरीत अधोमुखी संवेग की ऊर्ध्वमुखी दिशा में प्रवाहित कर देने पर वह चक्रों से होकर आगे बढ़ता है । उसकी शक्ति बढ़ती जाती है । शरीर में व्याप्त प्राण के सुषुम्ना में संकर्षित हो जाने के कारण इन्द्रियों का आवेग कम होता जाता है । प्राण के उत्तरोत्तर ऊपर बढ़ने से इनकी चंचलता कम होती जाती है । प्रत्येक चक्र के भेदन के साथ शारीरिक क्रियाएँ, श्वास गति, हृदय स्पन्दन क्षीण होने लगते और अन्ततः शान्त हो जाते हैं । ब्रह्मरन्ध्र में प्राण के प्रवेश एवं अवस्थित हो जाने पर शरीर की प्रत्येक कोशिका निश्चेष्ट पड़ जाती है । यही कारण है कि समाधि अवस्था में पहुँचे साधक की नाड़ी हृदय स्पन्दन की परीक्षा करने पर वैज्ञानिकों को जीवन के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते हैं । जबकि प्राण ब्रह्मरन्ध्र में केन्द्रित होता है । ऊर्ध्वमुखी प्राण की दिव्यता तो बढ़ती है पर उसके तंरगदैर्ध्य में कमी होती है । सहस्त्रार में पहुँचने पर प्राण का तरंगदैर्ध्य शून्य तथा ऊर्जा अनन्त हो जाती है । तंरगदैर्ध्य ही एक मात्रा आधार है, जिसके द्वारा वैज्ञानिक चैतन्यता का पता लगाते हैं । यह शून्य हो जाने पर चैतन्यता के मापदण्ड का उनके पास कोई आधार अवशेष नहीं बचता । सहस्त्रार में प्राण के अवस्थित होने एवं ऊर्जा के अपव्यय के रुक जाने के कारण मनचाही आयु तक जीवित रहा जा सकता है । अब भी हिमालय की गुफाओं में सहस्त्रों वर्ष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयु वाले समाधिस्थ योगी हैं, जिनकी दीर्घ आयु के रहस्य की व्याख्या कर सकना विज्ञान के भौतिक मापदण्ड के आधार पर सम्भव नहीं है ।

प्राण सम्पन्नता ही प्राणायाम साधना का लक्ष्य है, समाज प्राणायाम द्वारा पिण्डगत प्राण को ब्रह्माण्डगत प्राण साधना से जोड़कर साधक अपनी झोली भरता जाता है । प्राण संचय इतनी बड़ी सम्पदा है, जिसके समक्ष अन्य सभी भौतिक वस्तुएँ गौण हैं । क्रिया की दृष्टि से प्राणायाम नाक द्वारा श्वास लेना, रोककर छोड़ना जैसा सामान्य दिखाई तो पड़ता है, पर उपलब्धियों की दृष्टि से वह असामान्यं वैज्ञानिक प्रक्रिया है । चेतना के जागरण को कुण्डलिनी योग जैसी प्रक्रियाओं में प्राण सम्पदा का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है । नियन्त्रण, अभिवर्धन द्वारा प्राण चेतना को इतना समर्थ बनाया जाता है कि समस्त मानसिक व्यापारों का नियमन, नियन्त्रण हो सके ।

प्राण पर विजय कर लेने वाला योगी सर्वसमर्थ बन जाता है । पंचभूत से बनी काया के संचालन के लिए वह प्राण का न्यून अंश प्रयुक्त करता है । शरीर-धारी होते हुए भी वह शरीर से परे होता है । उसकी चेतना में सत्य का प्रकाश द्युतिमान रहता है ।

प्राणायाम के सामान्य अभ्यास द्वारा भी साधक अन्तरिक्ष में संव्याप्त प्राण चेतना से क्रमशः प्राण शक्ति खींचते हुए सामर्थ्यवान बन सकता है । उसकी असामान्य प्रक्रियाओं में चेतना को सर्व समर्थ बनाने के सभी वैज्ञानिक आधार मौजूद हैं ।

मनुष्य की तेजस्विता का अन्तर्निहित स्रोत भण्डार

मानवीय चुम्बकत्व को तेजोवलय के रूप में अनुभव किया जा सकता है । यों समस्त शरीर में उसकी मात्रा रहती है और वह आवाज की तरह दूर क्षेत्र में जाते-जाते हल्का पड़ता जाता है । शरीर से निकलते ही यह विद्युतधारा तीव्र होती है । इसलिए स्पर्श का अधिक प्रभाव पड़ता है । जिनके शरीर में अधिक प्रखर तेजोवलय होता है, उनकी समीपता उतनी ही अधिक प्रभावशाली होती है । यह 'वलय' भला भी हो सकता है और बुरा भी । अपने-अपने ढंग का आकर्षण एवं प्रभाव दोनों में रहता है । इसी के कारण आमतौर से समीपवर्ती व्यक्ति अथवा पदार्थ प्रभावित होते रहते हैं ।

यह तेजोवलय चेहरे पर सबसे अधिक मात्रा में रहता है । देवताओं के चित्रों में उनके चेहरे के आस-पास सूर्य जैसा चमकदार एक घेरा चित्रित किया जाता है । यह इसी अदृश्य तेजोवलय का चित्रण है । आँखों से इसकी लपटें उठती रहती हैं, जीभ भी जब शब्दोच्चार करती है—विशेषतया किसी भावावेश में तब भी इस तेजस् के स्फुल्लिंग उड़ते देखे जा सकते हैं । ज्ञानेन्द्रियों का जमघट तथा मस्तिष्क का विद्युत भण्डार एक ही जगह है, इसलिए चेहरा सबसे अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली रहता है । मोटे तौर पर चेहरे को देखकर दूसरे लोग बहुत कुछ जानने-समझने में सफल होते हैं । आकृति देखकर मनुष्य की पहचान करने वाले सूक्ष्मदर्शी नाक, कान आदि की बनावट को नहीं वरन् चेहरे के इर्द-गिर्द उमड़ते-घुमड़ते तेजोवलय को ही परखते हैं और उसी के आधार पर व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व का प्रभाव परिचय प्राप्त करते हैं ।

चेहरे की ही तरह तेजोवलय का एक केन्द्र जननेन्द्रिय क्षेत्र में छाया रहता है, पर चूँकि उसमें प्रजनन सम्बन्धी आकर्षण अधिक रहता है । इसलिए उस वलय का प्रभाव यौन आकर्षण उत्पन्न करने वाला होता है । भिन्न लिंग की समीपता ही उसे वलय में अधिक उभार करती है । समलिंग की समीपता में वह तेजस् उत्तेजित नहीं होता है । इन अड़चनों को देखते हुए ही कटि क्षेत्र को ढका रखा जाता है । विद्युत प्रवाह की दृष्टि से वहाँ भी चेहरे की अपेक्षा मात्रा कम नहीं होती । पर उपर्युक्त बाधाओं ने उसे सीमित प्रयोजन के लिए ही उपयोगी रहने दिया है । दाम्पत्य स्तर पर भी उसका लाभ मिलता है । इस असुविधा के कारण ही उसे ढका हुआ, केवल प्रणय प्रयोजन के लिए ही सीमित, अवरुद्ध किया गया है । यदि यह दोष न होता तो यह तेजोवलय चेहरे पर छाए रहने वाले तेजोवलय से न्यून नहीं अधिक ही प्रभावशाली सिद्ध होता । चेहरे का तेजोवलय इस प्रकार के बन्धन प्रतिबन्ध से मुक्त है । वह जैसा भी भला-बुरा होगा, अपने निकटवर्ती क्षेत्र को, सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों तथा स्पर्श व्यवहार में आने वाले पदार्थों को प्रभावित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है । जिस प्रकार जीवाणु एक से दूसरे शरीर में प्रवेश करते रहते हैं, उसी प्रकार यह तेजोवलय विद्युत मण्डल समीपवर्ती क्षेत्र में अपनी मानसिक एवं आत्मिक स्थिति का प्रकाश प्रभाव फैलाता रहता है ।

चुम्बक का स्पर्श करने से साधारण लोहे में भी चुम्बक की विशेषता उत्पन्न हो जाती है । प्रचण्ड प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्वों में भी ऐसी ही मानवी विद्युत भरी पड़ी रहती है । उनके परामर्श, ज्ञान, सहयोग का भी समीपवर्ती लोगों को लाभ मिलता है, पर सबसे बड़ा लाभ उस तेजोवलय का होता है जो अपनी शक्तिशाली क्षमता को निरन्तर निःसृत करता रहता है और जो भी उस सम्पर्क, सान्निध्य की लपेट में आता है, उसे देखते-देखते बदलने में, प्रभावित करने में सफल होता है । महामानवों के दर्शन, चरण स्पर्श, आशीर्वचन, दृष्टिपात में जो सत्परिणाम विद्यमान रहते हैं । उसमें उनका प्रकाशपुंज तेजोवलय ही काम करता रहता है । दूसरे शब्दों में इस सूक्ष्म सत्ता को ही अदृश्य व्यक्तित्व कह सकते हैं । दृश्य व्यक्तित्व शरीर के रंग, रूप, सुडौलता, अंगों की बनावट आदि पर निर्भर रहता है, पर अदृश्य व्यक्तित्व पर इस दृश्य स्थिति का कोई प्रभाव नहीं होता है । कोई काला कुरूप, दुर्बल, वृद्ध व्यक्ति भी अत्यन्त तेजस्वी और प्रतिभा का धनी हो सकता है, जबकि यह बाहर से उपहासास्पद ही लगेगा । इसके विपरीत सुन्दर और आकर्षण नव-यौवन सम्पन्न काया का व्यक्ति हेय और हीन स्तर का हो सकता है । आँखों को आरम्भिक दर्शन में काय कलेवर के अनुरूप किसी की वस्तुस्थिति समझने में भ्रम हो सकता है । पर जैसे ही उसकी यथार्थता अनुभव की जायेगी वह भ्रम दूर हो जायेगा और वास्तविक व्यक्तित्व के आधार पर उसका मूल्यांकन किया जाने लगेगा ।

व्यक्तित्व पर तेजोवलय की भारी छाप रहती है । प्रायः यह जन्म-जन्मान्तरों के अभ्यास, प्रयास एवं संस्कार के आधार पर विनिर्मित होता है, पर मनुष्य अपनी स्वतन्त्र चेतना का उपयोग करके उसे बदल भी सकता है । सामान्य स्तर के लोग इस बने बनाये तेजोवलय के अनुसार अपना स्वभाव और कर्म बनाये रहते हैं, पर मनस्वी लोग अपनी सुदृढ़ संकल्प शक्ति से अपनी अभ्यस्त आन्तरिक एवं बाह्य स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन भी कर सकते हैं, तब विनिर्मित तेजोवलय में भी वैसा ही परिवर्तन हो जाता है । उसके रंगों में, कम्पनों की चाल में इस परिवर्तन का हेर-फेर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । सुकरात कहते हैं, प्रकृतितः मैं कुख्यात हत्यारा ही हो सकता था, पर मैंने प्रयत्नपूर्वक अपने को बदलने में सफलता प्राप्त की ।

योग साधना के आत्मविश्वास का अभिवर्धन और तप तितीक्षा द्वारा तेजोवलय के प्रखरीकरण का प्रयोजन पूरा किया जाता है । यह दोनों ही उपलब्धियाँ ऐसी है जिनके आधार पर भौतिक और आत्मिक जीवन की आशातीत तथा आश्चर्यजनक विकास सम्भव हो सकता है ।

काय ऊर्जा के सुनियोजन से प्रखरता का विकास

मानवी शरीर चेतना का एक विशाल भण्डार है । इसी ऊर्जा-प्रवाह से शरीर के सारे आन्तरिक क्रिया-कलाप चलते रहते हैं और वह स्वस्थ-सबल बना रहता है; पर कई बार इस शक्ति-प्रवाह में व्यतिक्रम उत्पन्न हो जाने से विद्युत सभी अंगों को समान रूप में नहीं मिल पाती । ऐसी असन्तुलन की स्थिति में उनमें तरह-तरह के असामान्य लक्षण उभरने लगते हैं, जो अन्ततः व्याधि का रूप धारण कर लेते हैं । इस स्थिति में यदि चेतना-प्रवाह के व्यवधान को किसी बाह्य माध्यम द्वारा ठीक किया जा सके तो शरीर के अंग पुनः स्वस्थता को प्राप्त कर सकते हैं ।

आजकल चिकित्सा-जगत में इसी सिद्धान्त का उपयोग कर कृत्रिम यान्त्रिक विद्युत द्वारा विभिन्न प्रकार के रोगों का उपचार किया जा रहा है । उपचार-जगत में चिकित्सा विज्ञान की इस नव विकसित तकनीकी को "इलेक्ट्रोथेरेपुटिक डिवाइसेज" के नाम से जाना जाता है । इस प्रयोजन हेतु रुग्ण शरीर के भीतर के ऊर्जा केन्द्रों को विकसित किया जाता है और बाह्य विद्युत के हस्तान्तरण का कार्य सम्पन्न भी । जिससे शरीर को अनुभव होने वाले दुःख-दर्दों को आसानी से दूर किया जा सके । इतना ही नहीं गूँगे का बोलना, अन्धे का देखना और अपंग का चल सकना तथा पागलों का ठीक होना भी सम्भव हो सका है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गत दो दशकों की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञों ने विश्वास प्रकट किया है कि बिना किसी औषधि और शल्य-प्रक्रिया के क्षतिग्रस्त तन्त्रिकाओं को आसानी से जोड़ा और सक्रिय बनाया जा सकता है । लगभग २००० वर्ष पूर्व रोमन चिकित्सकों द्वारा ईल मछली पर किए गए परीक्षणों से यह सिद्ध हो गया था कि मछली की टांग कटकर भी कुदकने-फुदकने लगती है, अर्थात् शरीर से अंगों के पृथक हो जाने पर भी उनमें विद्युत प्रवाह अनवरत बना ही रहता है । यदि इस विद्युत प्रवाह को पुनः शरीर में हस्तान्तरित किया जा सके तो टूटी हुई अस्थि पुनः जुड़ सकती है । सन् १८१२ में इसी स्तर के सफल प्रयोग, परीक्षण बहुत बड़ी संख्या में सम्पन्न किए गए । इसके बाद ही फैराडे का "इलेक्ट्रोमेगनेटिक कॉयल" का सिद्धान्त प्रकाश में आया । यदि इस चिकित्सा के विकास का यही क्रम निरन्तर चलता रहा तो इस शताब्दी के आखिर तक जन साधारण भी इसके प्रभावकारी सत्परिणामों से अवगत होकर विभिन्न रोगों से बचाव हेतु इनका लाभ उठा सकेंगे ।

काय-विद्युतीय क्षमता के सिद्धान्त पर ही सन् १९७० में ल्यूगी गैल्वेनी ने एक मेंढ़क की टाँग को एक धातु के टुकड़े से स्पर्श कराया तो उससे जुड़े यन्त्र में विद्युत करेंट जैसे झटके महसूस होने लगे । यानी धातु में विद्युतधारा का संचार हो उठा । यही ऊर्जा प्रवाह माँसपेशियों, कोशिकाओं और त्वचा की क्रियाशीलता बढ़ाने में सक्रिय योगदान देता रहता है ।

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक ऑल सेण्डो वोल्टा ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि विद्युत उद्दीपनों की न्यूनाधिकता के कारण ही माँसपेशियाँ सिकुड़ती-फैलती रहती हैं । शरीर के स्नायु-तन्त्र की संरचना को देखकर यही कहा जा सकता है कि कोशिकाओं का सम्बन्ध विद्युतधारा के साथ स्थापित होने से विद्युत रसायन तरंगों में परिवर्तित हो जाती हैं, जो टूटी हुई अस्थि को फिर से जोड़ देने में सफल होती हैं । इसी विद्युतीय क्षमता के आधार पर हृदय रोगियों को भी स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया जा रहा है । हृदय की धड़कनों में परिवर्तन तथा अन्यान्य प्रकार की दुर्बलताओं में इन्हीं विद्युत रसायन तरंगों का प्रयोग आरोग्य लाभ के लिए किया जाने लगा है । पेसमेकर के आरोपण की प्रक्रिया भी इसी सूत्र के आधार पर सफल हुई है ।

जॉन हॉपकिन्स संसार का सबसे पहला व्यक्ति है, जिसने हृदय रोगियों की पीड़ा को भली-भाँति समझा और उपचार हेतु चिकित्सा के नये आयाम खोज निकाले । "ओटोमैटिक इम्पलान्टेबल डीफ्रिब्रीलेटर" की खोज का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है । इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्युत आघात का ही प्रयोग किया जाता है, जिससे रोगी के हृदय की धड़कन सामान्य एवं लयबद्ध तरीके से सुसंचालित होने लगती है । बाल्टीमोर के सिनाई हॉस्पीटल की कोरोनरी केयर यूनिट के निदेशक डॉ. माइकल मिरोवस्की ने ७०० वोल्ट की ऐसी बैटरी का निर्माण करके दिखाया है, जो हृदय की अत्यधिक अनियन्त्रित एवं असामान्य धड़कनों को सुगमतापूर्वक नियन्त्रित कर सकती है ।

कोलम्बिया यूनीवर्सिटी के डॉ. एन्ड्रयू बैसेट ने अस्थि भंग के पाँच रोगियों को परीक्षण हेतु चुना, जिनकी चिकित्सा असम्भव-सी दीखती थी । विद्युत प्रवाह को शरीर में पहुँचाने से उनमें से चार लोगों की टूटी हड्डी पाँच माह के अन्दर ही पुनः पूर्ववत् हो गई । उनके कथनानुसार विद्युत प्रवाह अस्थियों की जीवित कोशिकाओं को सीधा प्रभावित करता है और कैल्सियम आयन्स एकत्रित होने की प्रक्रिया को प्रभाव हीन बना कर छोड़ता है । यह ऊर्जा प्रवाह शरीर में पहुँचते ही कोशिकाओं में समाविष्ट ऑक्सीजन की मात्रा कम करता और क्षारीयता को बढ़ाता है, जिससे हड्डियाँ जुड़ने की प्रक्रिया सम्पन्न होती है ।

मस्तिष्क को ऊर्जा शक्ति का मूल स्रोत माना जाता है । शरीर तन्त्र के कुशल संचालन में इसी क्षमता की आवश्यकता पड़ती है । यह देखने में भले ही छोटी हो किन्तु इसकी प्रभावी क्षमता देखते ही बनती है । छोटे से परमाणु को जब अपनी शक्ति प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, तो वह धरती-आसमान हिला कर रख देता है । मानव शरीर की ऊर्जा में चेतन तत्व घुले रहने के कारण इसकी सामर्थ्य और भी अधिक बढ़ जाती है । मस्तिष्क के मध्य अर्थात् पेरीएक्वेडक्टल ग्रे मैटर में ऊर्जा प्रवाह पहुँचाने से प्रतिक्रिया स्वरूप इनडोर्फिन नाम का एक प्राकृतिक रस द्रव्य निःसृत होने लगता है, जो दर्द के प्रभाव को तुरन्त समाप्त कर देता है । कैलीफोर्निया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यूनीवर्सिटी के डॉ. योशियो होसोबुची ने इस तरह के परीक्षण कैंसर रोगियों पर किए, जिनमें अप्रत्याशित सफलता मिली है । अलवर्ट आइंस्टीन कॉलेज आफ मेडीसिन के डॉ. स्टीफन वेज के अनुसार आज कई चिकित्सा केन्द्रों में इस स्तर के प्रयोग ७५ प्रतिशत रोगियों पर किए जाने लगे हैं, जिसके आशातीत सत्परिणाम सामने हैं ।

ट्यूलेन यूनीवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडीसिन के डॉ. राबर्ट हीथ के अनुसार यह ऊर्जा प्रवाह शरीर में पहुँच कर न केवल दर्द को ही मिटाता है, वरन् चेतन तत्व मिले रहने के फलस्वरूप विचारों की शृंखला को भी पूरी तरह प्रभावित करता है । योग साधना के द्वारा इसी काय-ऊर्जा को सन्तुलित, नियन्त्रित करके मस्तिष्क के 'प्लैजर सेंटर्स' को सरलता से उकसाया जाता है, जिससे व्यक्ति का जीवन सदा स्वस्थ एवं सुखद बना रहता है । स्पेन के सुप्रसिद्ध चिकित्सक जोस डलगाडो द्वारा किए गए परीक्षणों से पता चला है कि, यदि मस्तिष्क को विद्युत द्वारा उत्तेजित कर उसकी आन्तरिक ऊर्जा को सुदिकसित कर लिया जाय और उसे उपयुक्त दिशा धारा दी जा सके, तो व्यक्ति के चिन्तन-प्रवाह को विधेयात्मक मोड़ दिया जा सकता है । उसे परिमार्जित किया जा सकता है और व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है । योग साधनाओं द्वारा योगीजन इसी प्रक्रिया को सम्पन्न करते हैं । विभिन्न प्रकार के योगाभ्यासों द्वारा शरीर विद्युत को नियन्त्रित-सुनियोजित कर वे न सिर्फ शरीर, मन से स्वस्थ बने रहते हैं, वरन् अपनी मलीनता को हटा कर प्रखरता उभारने में भी सफल होते हैं । यह प्रखरता वस्तुतः काय-ऊर्जा के सुनियोजन से ही सफल, सम्भव बन पाती है । श्रेष्ठ प्रखर व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति सम्भवतः अगले दिनों इसी आधार पर बनाये जायेंगे ।

यह प्राण विद्या ही हमें समर्थ बनायेगी

गायत्री मन्त्र के द्वारा जिस प्राण विद्या की साधना की जाती है, वह ब्रह्म विद्या ही है । जप, अनुष्ठान, और पुरश्चरणों के द्वारा मनोभूमि को शुद्ध किया जाता है, जिस प्रकार किसान अपनी कृषि भूमि को हल चलाकर जोतता है और उसे इस योग्य बनाता है कि बीज भली प्रकार उगे वैसे ही आत्म-कल्याण का पथिक भी अपनी मनोभूमि को माला रूपी हल के आधार पर कुसंस्कारों से परिमार्जित करके इस योग्य बनाता है, कि उसमें उपासना के बीज भली प्रकार उग सकें । प्राण ही वह बीज है जो आगे चलकर साधना के सामने शक्ति एवं सिद्धि के रूप में प्रकट होता है, गायत्री उपासक के लिए, जप की प्रथम कक्षा पूर्ण कर लेने के बाद दूसरी कक्षा प्राण-साधना की ही है । गायत्री शब्द का अर्थ ही 'प्राण' का उत्कर्ष करने वाली प्रक्रिया है ।

गायत्री उपासक जिस प्राण विद्या का साधन करता है, वह परब्रह्म सत्ता की प्रचण्ड आध्यात्मिक शक्ति है इसे ब्रह्म ऊष्मा (लेटेन्ट हीट) भी कहते हैं । उपासना के द्वारा साधक अपनी अन्तरात्मा में इस शक्ति को जितनी अधिक मात्रा में अपने अन्दर धारणा कर लेता है, उतना ही वह प्राणवान् आत्म बल सम्पन्न बनता जाता है ।

श्रुति में प्राण को प्रत्यक्ष ब्रह्म मानकर उसका अभिनन्दन किया गया है—

वायोत्वं प्रत्यक्ष ब्रह्मासि ।

—ऋग्वेद

—हे प्राण वायु ! आप प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं ।

उपनिषदों में भी ऐसे ही वर्णन मिलते हैं—

प्राणोभवेत् परब्रह्म, जयत्कास्मव्यम् ।
प्राणोभवेत् तथा मन्त्र ज्ञानकोश गतोऽपि वा ॥

—ब्रह्मोपनिषद्

—प्राण ही जगत का कारण परब्रह्म है, मन्त्र ज्ञान तथा पंचकोश प्राण पर आधारित है ।

'अमृतम् वै प्राणः ।'

—शतपथ ६/१/२/३१

—प्राण ही निश्चित रूप से अमृत है ।

सात प्राण ही सात ऋषि हैं । सप्त ऋषियों को ज्ञान, तप और आध्यात्म बल का प्रतीक माना जाता है । ये ऋषि सदा प्राणों के रूप में हमारे अन्दर मौजूद हैं, गायत्री उपासना के द्वारा इन्हें अपने अन्तस् में जागृत करके साधक ऋषितत्व की धारणा का अधिकारी बनता है ।

ऐतरेय ब्राह्मण में आता है कि हिरण्यदन नामक ऋषि ने प्राण के स्वरूप को जाना और उसकी उपासना की, फलस्वरूप उन्हें विपुल परिणाम प्राप्त हुए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण को ही ऋषि माना गया है । मन्त्र दृष्टा ऋषियों का ऋषित्व उनके शरीर पर नहीं, वरन् प्राण पर अवलम्बित है । इसलिए विभिन्न ऋषियों के नाम से उसका ही उल्लेख हुआ है । इन्द्रियों के नियन्त्रण को कहते हैं 'गृत्स' और कामदेव को कहते हैं 'मद' । यह दोनों ही कार्य प्राण शक्ति के द्वारा सम्पन्न होते हैं, इसलिए उसे 'गृत्समद' कहते हैं । 'विश्वं मित्रं यस्य असौ विश्वामित्रः ।' प्राण का यह समस्त विश्व अवलम्बन होने से मित्र है, इसलिए उसे विश्वामित्र कहा गया है ।

मननीय, भजनीय, सेवनीय और श्रेष्ठ होने के कारण उसे वामदेव कहा गया है । 'सर्वम् पापमनोऽवायत् इति अत्रिः' सबको पाप से बचाता है, इसलिए वही अत्रि है । इस बाज रूप शरीर का मरण करने से भरद्वाज भी वही है ।

विश्व में सबसे श्रेष्ठ, विशिष्ट होने से वशिष्ठ भी हुआ । इसी प्रकार प्राण के अनेक नाम ऋषि बोधक हैं ।

गायत्री के द्वारा जिस प्राण शक्ति की उपासना की जाती है, वह ही देव तत्व का केन्द्र है, उसे उपलब्ध करके मनुष्य देवत्व का, देवसत्ता का प्रत्यक्ष दर्शन अपने भीतर करता है । सिर में सहस्त्र दल कमल के स्थान पर जो सहस्त्र देवताओं का कोश है, वह प्राण मन और अन्न के द्वारा ही आवृत हो रहा है । अभक्ष्य अन्न का त्यागकर, मन का संयम करते हुए जो प्राण साधना की जाती है उससे वे सहस्त्र दल वाले देव तत्व जागृत होते हैं और साधक पर शान्ति का वरदान बरसाते हैं ।

मनुष्य की काया में जो कुछ है, वह प्राण का ही खेल है, प्राण निकल जाने पर यह देह तुरन्त सड़ने-गलने लगती है, तब उसे प्रियजन भी अपने पास नहीं रहने देते, जल्दी से जल्दी अन्त्येष्टि करने का प्रयत्न करते हैं । प्राण के बिना यह कंचन-सी काया भूत-सी डरावनी दीखती है । इस प्राण को शरीर का राजा और सर्वस्व माना गया है । इस विश्व में जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, सब प्राण की ही विभूति है ।

शास्त्र ने कहा है—

"काया नगर मध्ये तु मारुतः क्षिति पालकः ।"

—काया नगरी में प्राण वायु ही राजा है ।

"प्राणं देवा अनुप्राणन्ति । मनुष्य पराश्चमे । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात्सर्वायुषमुच्यते । सर्वमेवत आयुर्यन्ति मे प्राणं ब्रह्मोपासते । प्राणो हि भूतानामायुः तस्मात् सर्वायुषमुच्यते ।"

—तैत्तिरीय २।३

—देवता, मनुष्य, पशु और समस्त प्राणी प्राण से ही अनुप्राणित हैं, प्राण ही जीवन है, इसी से उसे आयु कहते हैं । यह जानकर जो प्राण स्वरूप ब्रह्म की उपासना करता है, वह निश्चय ही सम्पूर्ण आयु को प्राप्त कर लेता है ।

"सर्वाणि हवा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति प्राणमभ्युज्जिहते ।"

—छान्दोग्य. १।११।५

—यह सब प्राणी प्राण में से ही उत्पन्न होते हैं और प्राण में लीन हो जाते हैं ।

"प्राणाद्धि खल्विमानि भूतानि जायन्ते,
प्राणेन जातानि जीवन्ति ।"

—तैत्तिरीय

—"प्राण से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं और जन्मने के बाद प्राण से ही जीवित रहते हैं ।"

'यावद्धयस्मिन् शरीरे प्राणोवसति तावदायुः ।'

—कौषीतकी उपनिषद्

—'जब तक इस शरीर में प्राण है, तब तक जीवन है ।'

इस प्राण शक्ति का एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण विज्ञान है । योग साधना से इस विज्ञान को प्रत्यक्ष किया जाता है । गायत्री की साधना से इस प्राण को ही जगाया जाता है । जिसने अपने सोते हुए प्राण को जगा लिया, उसके लिए चारों ओर जागृति ही जागृति है । सब दिशाओं में प्रकाश ही प्रकाश है । सोता वही है, जिसमें प्राण सोता है । जिसकी प्राण शक्ति जाग गई, इस संसार में उसे ही जागृत माना जाता है । उसी के सामने इस विश्व का वह रहस्य प्रकट होता है, जो सर्व साधारण के लिए छिपा हुआ ही है ।

"तदाहुः को स्वजुर्भहति यद्वावै प्राणो,
जागार तदेव जागरितम् इति ।"

—ताण्ड्य. १०।४।४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

—कौन सोता है ? कौन जागता है ? जिसका प्राण जागता है, वस्तुतः वही जागता है ।

'य एवं विद्वान्प्राण वेद रहस्यं प्रजा ।
हीयतेऽमृतोभवति तत्येव श्लोकः ।"

—प्रश्नोपनिषद् ३/११

—जो विद्वान इस प्राण के रहस्य को जानता है, उसकी सन्तति कभी नष्ट नहीं होती । वह अमर हो जाता है । इस रहस्यमय प्राण विद्या को जानना प्रत्येक आध्यात्म प्रेमी का कर्तव्य है, क्योंकि इसी से उसकी परम्परा अविच्छिन्न रहती है । सन्तति नष्ट होती है और उसी विद्या के कारण वह अमर पद प्राप्त करता है ।

कैसे जगायें प्रसुप्त प्राणाग्नि को

मानवी काय सत्ता में शक्ति का अजस्र भाण्डागार बीज रूप में प्रसुप्त स्थिति में दबा भरा पड़ा है, जिसे योगाग्नि, प्राण ऊर्जा, जीवनी शक्ति, कुण्डलिनी आदि नामों से जाना जाता है । परमाणु के नाभिक में प्रचण्ड शक्ति भरी पड़ी रहती है, पर वह दिखाई पड़ती और उपयोग में तभी आती है, जब एक सुनिश्चित वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाकर नाभिकीय विखण्डन कराया जाता है । यह प्रक्रिया अत्यन्त जटिल है और खर्चीली भी । कुण्डलिनी महाशक्ति भी हर मनुष्य में सुषुप्तावस्था में पड़ी रहती है । सामान्य मनुष्य कामोल्लास के अतिरिक्त उस भाण्डागार से और कोई विशेष लाभ नहीं उठा पाता । प्राणायाम की विशिष्ट प्रक्रिया उस महाशक्ति के जागरण उर्ध्वगमन में विशेष भूमिका निभाती है । कुण्डलिनी जागरण के लिए प्राण शक्ति का प्रचण्ड आघात आवश्यक होता है । इसके लिए निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राणतत्व को आकर्षित करना तथा अपने भीतर भरना पड़ता है । सूर्य भेदन प्राणायाम इस प्रयोजन के लिए सर्वाधिक सहायक सिद्ध होता है । प्राणाग्नि का उद्दीपन, उन्नयन एवं सुनियोजन ही भौतिक सिद्धियों एवं आध्यात्मिक ऋद्धियों का मूलाधार है ।

प्राण के प्रहार से प्रसुप्त ऊर्जा के उद्दीपन, प्रज्ज्वलन का उल्लेख करते हुए साधना ग्रन्थों, योगशास्त्रों में कहा गया है कि कुण्डलिनी प्राणाग्नि है । उसमें सजातीय तत्वों का ईंधन डालने से ही उद्दीपन होता है । सूर्य वेधन प्राणायाम द्वारा सूर्य से प्राण शक्ति आकर्षित करके उसे इड़ा-पिंगला के माध्यम से मूलाधार अवस्थित चिन्गारी जैसी प्रसुप्त अग्नि तक पहुँचाया जाता है, तो वह धधकती है और जाज्वल्यमान लपटों के रूप में सारी सत्ता को अग्निमय बनाती है । प्राण का मूलाधार स्थित जीवनी शक्ति पर प्रहार तथा उद्दीपन-यही है सूर्य वेधन प्राणायाम का लक्ष्य इसकी सफलता पूरी तरह इच्छा, भावना एवं संकल्प की दृढ़ता के ऊपर निर्भर करती है । विधि इस प्रकार है—

किसी शान्त एकान्त स्थान में प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह करके स्थिर चित्त होकर बैठना चाहिए । आसन सहज हो, मेरुदण्ड, सिर और ग्रीवा सीधी हों, नेत्र अधखुले, घुटने पर दोनों हाथ । सूर्य वेधन प्राणायाम के लिए इसी मुद्रा में बैठना चाहिए ।

दाएँ नासिका का छिद्र बन्द करके बाएँ से धीरे-धीरे साँस खींचनी चाहिए । भावना यह हो कि वायु के साथ सूर्यस्थ प्राण ऊर्जा की प्रचुर मात्रा भी आकर्षित हो रही है । यह प्राण ऊर्जा सुषुम्ना मार्ग से ऋण विद्युत प्रवाह 'इड़ा' नाड़ी द्वारा मूलाधार तक पहुँचाती और वहाँ अवस्थित प्रसुप्त चिन्गारी को झकझोरती, थपथपाती और जागृत करती है । यह सूर्य वेधन प्राणायाम का पूर्वार्द्ध-पूरक है । उत्तरार्द्ध में प्राण को सुषुम्ना स्थित धन विद्युत प्रवाह वाली पिंगला नाड़ी में से होकर वापस लाया जाता है । प्रवेश करते समय अन्तरिक्ष स्थित प्राण शीतल होता है—ऋणधारा भी शीतल मानी जाती है । इसीलिए "इड़ा" को चन्द्रनाड़ी कहते हैं । श्वास को बाएँ नथुने से अन्तर्कुम्भक के बाद लौटाया जाता है । वापस लौटते समय अग्नि उद्दीपन—प्राण प्रहार की संघर्ष प्रक्रिया से ऊष्मा बढ़ती है और प्राण में सम्मिलित होती है । लौटने का पिंगला मार्ग धनविद्युत का क्षेत्र होने से उष्ण माना गया है । दोनों ही कारणों से प्राणवायु उष्ण बनी रहती है । इसलिए उसे सूर्य की उपमा दी गई है । इड़ा चन्द्र और पिंगला सूर्य है ।

इस प्राणायाम की विशेषता यह है कि इसमें पुनः सूर्य नाड़ी (दाएँ नथुने) से पूरक एवं चन्द्र नाड़ी (बाएँ नथुने) से रेचक किया जाता है । मूलाधार पर प्राण प्रहार तथा प्राणोद्दीपन की भावना सतत करनी पड़ती है । इस प्रकार यह प्राणायाम यौगिक चक्रों को जगाने वाला एक सशक्त प्राणायाम है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग साधना में क्रिया-कृत्यों की तुलना में भावना, आस्था एवं संकल्प का महत्त्व अधिक है । साधक को इसके अनुरूप ही लाभ मिलता है । श्वास द्वारा खींचे हुए प्राण को मेरुदण्ड मार्ग से मूलाधार तक पहुँचाने का संकल्प दृढ़तापूर्वक करना पड़ता है । यह मान्यता परिपक्व करनी पड़ती है कि निश्चित रूप से सूर्य मण्डल या अन्तरिक्ष से खींचा गया और श्वास द्वारा मेरुदण्ड-सुषुम्ना मार्ग से प्रेरित किया गया, प्राण मूलाधार तक पहुँचता है और वहाँ प्रसुप्त कुण्डलिनी शक्ति को, प्राणाग्नि को अपने प्रचण्ड आघातों से जगा रहा है ।

सूर्य वेधन प्राणायाम का योगशास्त्रों में असाधारण महत्त्व बताया गया है । कुण्डलिनी महाशक्ति के जागरण के लिए जिस प्राण ऊर्जा की प्रचुर परिमाण में आवश्यकता पड़ती है, वह प्रयोजन सूर्य वेधन द्वारा ही पूरा होता है । प्रक्रिया सामान्य है किन्तु परिणाम असाधारण एवं चमत्कारी हैं ।

प्राणतत्व के उभार की चमत्कारी परिणति

प्रश्नोपनिषद् में एक सूत्र आता है—"प्राणाग्नय एवास्मिन ब्राह्मपुरे जागृति" अर्थात्—"इस ब्रह्मपुरी माने शरीर में प्राण ही कई तरह की अग्नियों के रूप में जलता है ।" यह अग्नि जठराग्नि हो सकती है । यज्ञ में वर्णित तीन दिव्य अग्नियाँ, आयुर्वेद वर्णित प्राकृत अग्नि विज्ञान की तेरह अग्नियाँ अथवा योगाग्नि के रूप में प्राण शक्ति का समुच्चय कुण्डलिनी हो सकती है । अपने भिन्न-भिन्न रूप में यह बहिरंग में प्रकट होती रहती है एवं कभी आँखों से, कभी भावभंगिमा द्वारा कभी वाक्शक्ति के माध्यम से एवं कभी-कभी बल पराक्रम-साहसिकता के रूप में इसकी स्थूल अभिव्यक्ति देखी जा सकती है ।

वस्तुतः प्राण को एक प्रकार की सजीव विद्युत शक्ति कह सकते हैं, जो समस्त संसार में वायु एवं आकाश तत्व, ताप, चुम्बकत्व, क्वाण्टा तरंगों अथवा ईथर के रूप में समाई हुई है । यह समष्टि प्राण जिस प्राणी में, जिस अनुपात में होता है, व्यक्ति उतना ही स्फूर्तिवान, तेजस्वी एवं साहस का धनी होता है । शरीर-रथ में संव्याप्त इसी तत्व को मनीषी जीवनी शक्ति, "ओजस्" रूप में जानते हैं । मन में अभिव्यक्त होने पर यही तत्व प्रतिभा, मेधा अथवा "तेजस्" कहलाने लगता है । शास्त्रकारों का मत है कि संयम साधना द्वारा ब्रह्मचारी इसी विद्युत शक्ति का अधिकाधिक मात्रा में संचय कर वीर्यवान मनस्वी, तेजस्वी कहलाते हैं । जब भी कभी इसका अभाव हो जाता है, शरीर स्वस्थ-गोरा दीखते हुए, बहिरंग ढाँचा सुन्दर होते हुए भी मनुष्य निस्तेज, उदास, मुरझाये फूला-सा लुंज-पुंज, वीर्यहीन नजर आता है । तेजस् न होने से बाह्य सौन्दर्य भी निर्जीव प्रतीत होता है । व्याधिग्रस्त होने अथवा मनोबल गिरने, मनोविकारग्रस्त हो जाने पर व्यक्ति वस्तुतः निस्तेज हो जाता है ।

मन को लुभाने वाले समुदाय को आकर्षित करने वाले सौन्दर्य में जो तेजस्विता एवं सौम्यता बिखरी होती है, वह और कुछ नहीं प्राणों का उभार है । वृक्ष-वनस्पति पुष्पों से लेकर पहाड़, नदी-सरोवर, शिशु-शावक, किशोर-किशोरियों में जो कुछ भी आह्लादकारी सौन्दर्य दिखाई पड़ता है, वह सब प्राण का ही प्रताप है । अभिव्यक्ति के रूप भिन्न-भिन्न घटकों में भिन्न हो सकते हैं, पर मूल प्राणतत्व एक ही होता है । एक ही स्रोत इस समष्टिगत प्राण का है ।

मानवी काया का जो स्थूल बहिरंग है, उसका सूक्ष्म शरीर जिन प्राण स्फुल्लिंगों के समुच्चय से बना है, वह अपने आप में अनन्त अपरिमित शक्तियों का पुंज है । यही कारण है कि इस शरीर को देव मन्दिर कहा गया है, जिसमें पाँच प्राण रूपी पंच देव प्रतिष्ठापित हैं । जब एक देवता की सहायता ही मनुष्य को अजर-अमर बना देती है तो, इन पंच देवों की सिद्धि कर लेने वाला कितना समर्थ, सशक्त हो सकता है, उसकी कल्पना भर से रोमांच हो उठता है ।

जर्मन विद्वान डॉ. हैकल की पुस्तक "रिडल ऑफ यूनीवर्स" में एक उद्धरण आता है कि "समष्टि में मैटर पदार्थ एवं शक्ति का अभाव कभी नहीं होता । किसी न किसी रूप में वह बना ही रहता है ।" इसे हैकल "फण्डामेण्टल ला ऑफ यूनीवर्स" बताते हुए लिखते हैं कि "इसी प्रकार प्राण-तत्व, मनस तत्व एवं चेतना भी समष्टि में संव्याप्त शक्तियाँ हैं । यद्यपि विज्ञान इनके अस्तित्व को प्रत्यक्ष न दीखने के कारण नकारता है, किन्तु यह अनुभूति का विषय है कि प्राण अतरिक्ष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में संव्याप्त है, मन उसकी उच्चतर विकसित स्थिति में एवं चेतन अवस्था में बने रहकर, ये तीनों पदार्थ जगत का पूर्णरूपेण नियन्त्रण करते हैं ।"

जिनके प्राण समर्थ है, वे एक ही शरीर से कई स्थानों पर कार्य करते रह सकते हैं । ऐसी अनेक घटनाएँ प्राणवान, संकल्पवान व्यक्तियों के साथ घटती देखी गई हैं ।

प्राण शक्ति की बहुलता ही मनुष्य की तेजस्विता है । इसे जितना बढ़ाया जा सके, बढ़ाना चाहिए ।

प्राण विद्युत का परिमार्जन एवं उन्नयन

जीवन का आधार प्राण ऊर्जा है । उपनिषदों में इसे अग्नि और तेज की संज्ञा दी गई है और उसके सम्वर्धन एवं सदुपयोग का वर्णन किया गया है । इसका बाहुल्य मनुष्य के दुर्बल शरीर को भी ओजस्, तेजस्, वर्चस्, से भर देता है और क्षीण काय-कलेवर से भी आश्चर्यजनक कार्य करा लेता है । प्राण शक्ति की मात्रा बढ़ी-चढ़ी हो तो व्यक्ति साहसी, पराक्रमी एवं निर्भय स्वभाव का होगा । उसकी इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति स्फूर्ति एवं क्रिया शक्ति बढ़ी-चढ़ी होगी । अतीन्द्रिय सामर्थ्य इसी की देन है । जीवन की समस्त हलचलों का मूल भी प्राण चेतना ही है । इसके साथ छोड़ देने पर काया का कोई मूल्य नहीं रह जाता और उसे तत्परतापूर्वक ठिकाने लगाने की बात सोची जाती है । विज्ञान वेत्ताओं ने भी अब इस तथ्य की पुष्टि कर दी है कि जीवन का प्रादुर्भाव इसी शक्ति की देन है । वे इसे 'बायोइलेक्ट्रो मैगनेटिक फोर्स, 'लाइफ फील्ड' आदि नामों से सम्बोधित करते हैं और कहते हैं कि, यही सर्वव्यापी शक्ति प्रवाह मनुष्य सहित सभी छोटे-बड़े जीवों में से प्रवाहित हो रहा है । शरीर निर्माण से लेकर जीवन की समस्त क्रिया-कलापों में यही चुम्बकीय प्रवाह कार्यरत है ।

मनुष्य शरीर में विद्युत चुम्बकीय शक्ति का प्राण विद्युत का कितना भण्डार है, विश्व में इसके कितने ही उदाहरण भरे पड़े हैं जो बताते हैं कि जैवकोश एवं आन्तरिक स्रोतों से शक्ति प्रवाह निरन्तर फूटता रहता है । पिछले दिनों न्यूयार्क स्थिति डोनेमारा जेल में एक ऐसी ही अद्भुत घटना घटित हुई । ३४ कैदियों को एक समान भोजन दिया गया, जिसे खा लेने पर सबके सब बीमार पड़ गए । उनमें से मृत्यु तो एक की भी नहीं हुई, परन्तु वे सभी एक विशेष प्रकार के विद्युत चुम्बकीय आवेश से भर गए । घने अँधेरे में उनके शरीर से एक प्रकार का हल्का प्रकाश निकलता दिखाई देता था । प्रत्येक व्यक्ति एक जीवन्त शक्तिशाली चुम्बक बन गया था । इसका पता तब चला जब उनमें से एक ने पास खड़े जंग लगे टुकड़े को उठाकर बाहर फेंकना चाहा । लोहे का वह टुकड़ा हाथ से ही चिपका रह गया ।

वास्तविकता का पता लगाने की दृष्टि से जेल चिकित्सक डॉ. जूलियस बी. रैन्सम ने इस विलक्षण परिवर्तन का तत्काल परीक्षण किया । पाया गया सभी ने अपनी उपस्थिति से कम्पास सुई को परिचालित कर दिया । उनके छूने मात्र से अधातु वस्तुएँ भी विद्युत्मय हो जाती थीं । लटकती हुई स्टीलटेप इधर-उधर हिलने लगती थी । उन्होंने अलग-अलग व्यक्तियों में उनकी रुग्णता की गम्भीरता के अनुपात से उस क्षमता में भिन्नता को भी नोट किया । देखा गया कि पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर उनकी विलक्षण क्षमता भी गायब हो गई ।

परामनोविज्ञानियों ने इस घटना को साइकोकाइवोसिस से सम्बन्धित बताया । विज्ञानवेत्ता एम. आर. क्रो. ने इस सम्बन्ध में अपना मत प्रस्तुत, करते हुए कहा कि खाद्य पदार्थ में मिले विषैले तत्वों के शरीर में प्रविष्ट हो जाने के कारण उनके सम्पर्क में आने वाली कोशिकाओं के क्षतिग्रस्त हो जाने से उनमें सन्निहित प्राण विद्युत लीक होने लगी और अपने प्रभाव से शरीर को आवेशित बना दिया । जैवविद्युतीय चुम्बकत्व की विवेचना करते हुए वे कहते हैं कि, चुम्बक और विद्युत दो पृथक-पृथक शक्तियाँ होने पर भी अविच्छिन्न रूप से सम्बन्धित हैं और समयानुसार एक धारा का दूसरी में परिवर्तन होता रहता है । यदि किसी 'सर्किट' का चुम्बकीय क्षेत्र लगातार बदलते रहा जाय तो, बिजली पैदा होने लगेगी । इसी प्रकार लोहे के टुकड़े पर लपेटे हुए तार में विद्युतधारा प्रवाहित की जाय तो वह चुम्बकीय शक्ति सम्पन्न बन जायेगा । इसी प्रकार शरीर में जैव कोशिकाओं का क्रिया-कलाप चलता है और उनके अन्दर क्रोमोसोम इसी सिद्धान्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अनुसार कार्य करते हैं । व्यवधान पड़ने पर यही शक्तिप्रवाह प्रचण्ड विकिरण के रूप में बाहर की ओर फूट पड़ता है ।

उक्त तथ्य की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए श्री क्रो ने स्वयं में विद्युत चुम्बकीय प्रवाह पैदा करने का निश्चय किया । वे वर्षों योगाभ्यासपरक आसन, प्राणायाम, ध्यान एवं उपवास आदि का दृढ़तापूर्वक नियमित अभ्यास करते रहे । इसमें उन्हें सफलता भी मिली । ८ फुट की दूरी से ही किसी भी वस्तु को अपनी ओर अकर्षित कर लेने, उनमें स्थान परिवर्तन कर देने के कितने ही सफल प्रयोग उन्होंने किये । उनका मत है कि अभ्यास द्वारा हर कोई, इस तरह की क्षमतायें अर्जित कर सकता है । भारतीय आध्यात्मवेत्ताओं, ऋषि-मनीषियों द्वारा वर्णित प्राण शक्ति की क्षमता को उन्होंने "होमो इलेक्ट्रोमैगनेटिक्स" नाम से सम्बोधित किया है और कहा है कि, अभी पाश्चात्य जगत के विज्ञानियों को इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जानना शेष है ।

आध्यात्मशास्त्रों के अनुसार प्राण विद्युत ही वह शक्ति है, जिसमें मानवी विकास प्रक्रिया को गति मिलती है । शारीरिक बलिष्ठता, सुन्दरता, एवं मानसिक प्रखरता का आधार खड़ा करती है । आध्यात्म का सम्पूर्ण कलेवर प्राणोत्थान प्रक्रिया पर निर्भर है । पाश्चात्य जगत के प्रख्यात चिकित्सा विज्ञानी पैरा सेल्सस ने भी इस रहस्य को जान लिया था कि, मानवी काया में प्राण चुम्बकत्व भरा पड़ा है जो जीवन-विकास प्रक्रिया से लेकर प्रतिभा उन्नयन एवं उच्च स्तरीय व्यक्तित्व के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । भारतीय ऋषियों की भाँति प्राण चेतना के आदान-प्रदान एवं इस शक्ति से चिकित्सा प्रयोजनों की पूर्ति की कल्पना सर्वप्रथम उन्होंने ही की थी । उन्नीसवीं सदी के विख्यात चिकित्सक फ्रैन्ज मेस्मर ने इस सिद्धान्त को प्रायोगिक स्वरूप प्रदान किया और जैव चुम्बकत्व के माध्यम से कितने ही असाध्य रोगियों का उपचार किया । इस सम्बन्ध में उन्होंने गहन अनुसन्धान किया था और अपनी खोजों को "द इन्फ्लुएन्स ऑफ द प्लैनेट ऑन दि ह्यूमन बॉडी" नामक शोध प्रबन्ध में प्रकाशित किया था । उनके अनुसार ब्रह्माण्ड में विपुल परिमाण में एक प्रकार का साइकिक फ्लूइड या ईथर विद्यमान है । मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार उसमें से प्राण-तत्व को आकर्षित एवं अवधारित कर सकता है । इससे न केवल स्वयं लाभान्वित हुआ जा सकता है, वरन् दूसरे जरूरतमन्दों की सहायता की जा सकती है । आध्यात्मवेत्ता इसे ही आभामण्डल का परिमार्जन कहते हैं ।

मानवी प्राण विद्युत में घट-बढ़ होने पर शारीरिक और मानसिक सन्तुलन गड़बड़ा जाता है और व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है । योग विद्या के ज्ञाता इसकी पूर्ति प्राणाकर्षण प्राणायाम जैसी विधाओं द्वारा करने का मार्ग सुझाते हैं, तो चिकित्सा विज्ञानी अपने ढंग से करते हैं । इलेक्ट्रोबायोलॉजी के आरम्भिक दिनों में इलेक्ट्रिकल हेल्मेट, डॉक्टर ओवेन की बॉडी बैटरी एवं मेटल, क्राउन, एलिसा पर्किन्स का मेटैलिक ट्रैक्टर जैसी विधाएँ प्रयुक्त होती रही हैं । डॉक्टर अर्सोनेवल का विद्युतचुम्बकीय केज भी चयापचय सम्बन्धी रोगों में प्रयुक्त होता था । पिछले दिनों डेन्मार्क के कोपेनहेगन रिग्स हॉस्पिटल में चिकित्सा विज्ञानी डॉ. के. एम. हेन्सन ने मेस्मर की चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति का कई वर्षों तक अपने मरीजों पर सफल प्रयोग किया और पाया कि इससे प्राण शक्ति के सम्वर्द्धन में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है । उनके अनुसार प्राणतत्व की कमी ही सब प्रकार रोगों का मूल है ।

"द साइकल्स ऑफ हेवन" नामक अपनी कृति में जी. एल. प्लेफेयर ने मानवी काया को एक जीवन्त रेडियो ट्रांसमीटर की संज्ञा दी है, जिसके अन्दर से विभिन्न तरह के संकेत विद्युत चुम्बकीय तरंगों के रूप में बाह्य वातावरण में विकिरित होते रहते हैं । कम आवृत्ति की होने पर भी ये तरंगें अपने प्रभाव क्षमता में अत्यधिक समर्थ होती हैं । इनके अनुसार हमारा हृदय सतत स्पन्दित होता रहता है और एक से तीन चक्र प्रति सेकण्ड की दर से रेडियो सिंगनल बाहर भेजता रहता है, जिसे ई. ई. जी. द्वारा स्पष्ट रूप से देखा और उसका ग्राफांकन किया जा सकता है । इस विद्युतीय सक्रियता के साथ जुड़े चुम्बकीय प्रभाव की अपनी महत्ता है । इसे मैगनेटोकार्डियोग्राफ द्वारा मापा जा सकता है ।

कनाडा के मूर्धन्य वैज्ञानिक जे. बिगू ने अपनी पुस्तक—"ऑन द बायोलॉजिकल बेसिस ऑफ ह्यूमेन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऑरा'' में बताया है कि मानव शरीर से बीटा एवं गामा स्तर की नाभिकीय किरणें सतत निःसृत होती रहती हैं, जो यह सिद्ध करती हैं कि स्थूल काया में कोई अति सामर्थ्यवान सूक्ष्म शक्ति विद्यमान है । आभा मण्डल का निर्माण इसी के द्वारा होता है । पवित्र अन्तःकरण वाले सम्वेदनशील व्यक्तियों में इसकी मात्रा अधिक पायी जाती है । अभ्यास द्वारा इसी सूक्ष्म शक्ति को बढ़ाया और दूसरों में हस्तान्तरित किया जा सकता है । अदृश्य प्राण ऊर्जा की चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि यदि इस भण्डार को किसी प्रकार सशक्त बनाया जा सके तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस आधार पर प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा शिष्यों में शक्तिपात करने की तरह ही परस्पर आदान-प्रदान का एक नया आयाम खुल सकता है ।

प्राण एक जीवन्त विद्युत है, जो शरीर से भी अधिक मनःक्षेत्र को प्रभावित करती है । मनुष्य को साहसी, पराक्रमी एवं ओजस्वी-तेजस्वी बनाती है । ब्रह्माण्ड में सर्वत्र संव्याप्त प्राण ऊर्जा का समुचित मात्रा में आकर्षण-अवधारण किया जा सके तो, सामान्य दीखने वाला मनुष्य भी अपनी असाधारण विशिष्टता का परिचय दे सकता है ।

प्राण शक्ति का उदात्तीकरण

सामान्यतया चेतना हर जीवधारी में होती है, पर उनमें उसका स्तर इतना निम्न होता है, कि वे बस अपना जीवन संकट ही किसी प्रकार खींचते चलाते रह पाते हैं । सामान्य स्थिति में मनुष्यों में भी इसका स्तर कोई बहुत ऊँचा नहीं होता । उतना ही होता है, जिससे कि वह जीवन की आवयकताओं, समस्याओं व कठिनाइयों का किसी प्रकार हल निकाल सकें । इस स्थिति में इससे अधिक वह और कुछ नहीं कर पाता, किन्तु इसी चेतना को जब परिष्कृत और परिमार्जित कर लिया जाता है, तो स्वयं वह इतना सशक्त और समर्थ बन जाती है, जिसे बन्दूक में भरी बारूद कहा जा सके । फिर उसे जिस दिशा में भी लक्ष्य कर छोड़ा जाता है, वही सफलता हस्तगत करती है ।

वस्तुतः चेतना है क्या ? बोलचाल की भाषा, दर्शन एवं मनोविज्ञान में इसका प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है । अंग्रेज दार्शनिक लॉक ने मानवी सूझबूझ नामक निबन्ध में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए मानवी मस्तिष्क से गुजरने वाली घटनाओं के बोध को चेतना नाम दिया है और कहा है कि, बोधगम्यता, विचारणा, आकांक्षा, विवेकशीलता, जैसी मानसिक अवस्थाओं को समयानुरूप अनुभव करने की क्षमता चेतन सत्ता ही रखती है ।

वेब्स्टर ने इसे इन्द्रियों का बोध और मस्तिष्क की कार्य प्रणाली को समझने की क्षमता रखने वाले तन्त्र बताया है । हैकेलक का कहना है कि चेतना की कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती और न इसे किसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला में ही सिद्ध किया जा सकता है । जबकि मौड्सले की अवधारणा है कि मनःसंस्थान की क्रिया प्रणाली पूर्णतः स्वतन्त्र नहीं है । इसमें १० प्रतिशत हस्तक्षेप चेतना का रहता है । सर थामस रीड ने तो इसे मनोदशा की भाँति ही अनुभवशील बताया है और कहा है कि उसी की तरह यह परिवर्तनशील भी होती है ।

शरीर विज्ञानियों द्वारा किए गए परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि मनुष्य की स्वादेन्द्रिय इतनी अधिक सम्वेदनशील होती है कि कुचला सत्व (स्ट्रिक्नीन) का एक भाग यदि १० लाख भाग पानी के साथ मिला दिया जाय, तो भी वह उसका स्वाद सुगमतापूर्वक अनुभव कर लेती है । इसी प्रकार कान की श्रवण सीमा २० से २० हजार हर्ट्ज होती है । जबकि दृष्टि सीमा का निम्न स्तर ४५० खरब और उच्चतम स्तर ७५० खरब सेकण्ड है । स्थूल अंगों की क्षमता के रूप में यह तो चेतना के एक छोटे से स्वरूप की दर्शन-झाँकी हुई । इसकी सीमा भी अपरिमित होती है । जहाँ पर स्थूल इन्द्रियाँ काम करना बन्द कर देती हैं, वहीं से चेतना के परिष्कृत-विकसित स्वरूप का प्रारम्भ होता है । इसे परिमार्जित कैसे किया जाय ? इसके लिए आध्यात्म विज्ञान में योग साधनाओं का निर्धारण है जिनके माध्यम से व्यष्टि चेतना को प्रखर परिष्कृत बनाया जाता है ।

जर्मनी के जीव विज्ञानी अर्नेस्ट हैनरिक हैकेल ने चेतना को दो स्तरों में विभक्त किया है—एक पाशविक और दूसरी मानवी । दोनों में अन्तर स्पष्ट करते हुए हैकेल ने बताया कि, पाशविक चेतना को अन्य किसी दूसरे प्राणी में हस्तान्तरित करने की बात तो दूर जानवर भी उसे समझने में सक्षम नहीं है । पाशविक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेतना शरीर प्रधान होती है । अतः उसे इन्सिटंक्ट कहते हैं, जबकि मानवी चेतना मन प्रधान होने के कारण रीजन (विवेक) कहलाती है ।

मूर्धन्य शरीर शास्त्री प्रो. एल्म गेट्स के अनुसार सामान्य मनुष्य मस्तिष्क की ९० प्रतिशत चेतन शक्ति अवचेतन रूप में दबी पड़ी रहती है । मात्र १० प्रतिशत से ही जीवन व्यापार चलता है । यदि चेतना के इस बड़े भाग का भी किसी प्रकार उन्नयन-जागरण सम्भव हो सका, तो बहुत सारे ऐसे कार्य किए जा सकेंगे, जो समाज और संसार के लिए प्रगति का द्वार खोल सकें ।

प्रख्यात गणितज्ञ डब्ल्यू. आर. हेमिल्टन एक बार अपनी पत्नी के साथ डबलिंग वेधशाला घूमने को गए । इस बीच अचानक उनके मस्तिष्क में एक ऐसी स्फुरणा हुई जिसके फलस्वरूप क्वाटर-नियन का प्रसिद्ध सिद्धान्त संसार को मिला, जिसे आज गणित क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है । वस्तुतः यह चेतना की परिष्कृति का ही परिणाम है । जब यह सिलसिला चल पड़ता है, तो मस्तिष्क में ऐसे नये-नये तथ्य अनायास कौंध पड़ते हैं । जिनकी पहले कल्पना तक नहीं की गई थी । प्रखर प्राण चेतना एक दिव्य अनुदान है, जिसकी प्राप्ति हेतु किया गया पुरुषार्थ निश्चित ही फलित होता है ।

चुम्बकत्व का असाधारण प्रभाव

अमेरिका के डॉक्टर मेडलेनी वार्नेथी ने अपनी पुस्तक "बायोलॉजीकल इफेक्ट्स ऑफ मेगनेटिक फील्ड" पुस्तक में विस्तारपूर्वक यह सिद्ध किया है कि, ब्रह्माण्ड के अगणित ग्रह घटक परस्पर चुम्बकीय शक्ति के आधार पर एक दूसरे के साथ जकड़े हुए हैं और अपनी-अपनी नियनी कक्षा में परिभ्रमण करते हैं । पृथ्वी भी एक प्रकार का चुम्बक है । उसके दो सिरे उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव के रूप में जाने जाते हैं । ऊपर निवास करने वाले प्राणी और पाये जाने वाले पदार्थ भी चुम्बकीय शक्ति से अनुप्राणित होते हैं और अपने हिस्से की गतिविधियों को संचालित करते एवं अन्यान्यों की क्षमता को खींचकर अपने में धारण करते हैं । इसी प्रकार अनेक प्रकार की गतिविधियों का क्रमबद्ध सुसंचालन होता रहता है । वस्तुओं के बीच जकड़न, पकड़ एवं स्थिरता में चुम्बकत्व का बहुत बड़ा योगदान रहता है ।

रक्त संचार में जीवकोशों के पारस्परिक योगदान में शरीर में संव्याप्त चुम्बकत्व का अपने-अपने ढंग का योगदान होता है ।

मेस्मेरिज्म विज्ञान में एक शरीर का बिजली का कुछ अंश दूसरे में प्रवेश करके रोगोपचार का निमित्त कारण बनता है । पुराने समय के चिकित्सक चुम्बक पत्थर को जादुई पाषाण कहते थे और उसे रोगियों के पीड़ित अंगों पर फिराकर उपचार करते थे । इस तथ्य को उन्होंने इस आधार पर जाना और माना था कि शरीर के विभिन्न अवयव किसी विशेष चुम्बकीय विधा से परस्पर बँधे और जकड़े हैं । साथ ही उनका तारतम्य एवं सामंजस्य भी बना रहता है । यदि उसमें किसी कारण अन्तर पड़ जाता है तो माँसपेशियाँ तथा जोड़ों की जकड़न में शिथिलता आ जाती है और कई प्रकार के रोग उठ खड़े होते हैं ।

चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति का आविष्कार सोलहवीं शताब्दी के रसायनशास्त्री फिलिप्स पेरासेल्स ने किया था । उन्होंने उस सन्दर्भ में अनेकों खोजें भी की थीं और मनुष्य शरीर में काम करने वाली अनेक क्षमताओं का सन्तुलन बिठाने और उनकी विकृतियों को सुधारने में अनेकों प्रयोग किए और सफल पाये थे । वे चुम्बक को पीड़ित स्थानों पर फिराकर जकड़न, अकड़न, सूजन में कमी करते और पीड़ित, स्थानों को राहत पहुँचाते थे । पीछे इस पद्धति का विधिवत् शास्त्र बना । जिसे समस्त यूरोप में मान मिला और अनेक चिकित्सकों ने अपनी उपचार पद्धति में उसे सम्मिलित किया । उसे 'मैगनेटोथ्रेपी' के नाम से जाना जाने लगा । दर्द दूर करने में उसकी विशेष उपयोगिता सिद्ध हुई, चुम्बक प्रभावित पानी से कुल्ले करने पर दाँत दर्द से राहत मिलने की जानकारी सर्वसाधारण में प्रचलित हो गई और वह घरेलू चिकित्सा की तरह अपनाई जाने लगी । सूजन दूर करने के लिए चुम्बक घिसकर उसका लेप किया जाने लगा ।

स्विट्जरलैण्ड के डॉक्टर मेस्मर ने तो इस पद्धति को वैज्ञानिक स्वरूप दिया और उपचार पद्धति को मेस्मेरिज्म नाम ही दे डाला । वे खनिज चुम्बक के स्थान पर मनुष्य के शरीर में रहने वाली चुम्बकीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति को दूसरे के शरीर में स्थानान्तरित करने की विधा अपनाते और अनेक रोगियों को कष्टमुक्त करते थे । होम्योपैथी के आविष्कर्ता हैनीमैन ने भी उस पद्धति की वैज्ञानिकता और क्षमता पर अपनी मुहर लगायी थी ।

मालिश की विधि पहलवानों में प्रयुक्त होती है । सिर दर्द में सिर दबाया एवं मसला जाता है । थकान दूर करने के लिए हाथ पैरों की मालिश की जाती है । जन्मजात शिशुओं एवं प्रसूताओं को लाभ देने का अभी भी प्रचलन है । दाम्पत्य जीवन में कामोत्तेजना एवं नपुंसकता में इसी विद्युत शक्ति की बढ़ोत्तरी एवं कमी देखी गई है ।

मनुष्य के चेहरे पर प्रभावोत्पादक शक्ति जिसे ओजस् तेजस्, सौन्दर्य प्रतिभा आदि के रूप में देखा और जाना जाता है । वस्तुतः जैव चुम्बकत्व का ही उभार है ।

तेजोवलय अथवा बायोप्लाज्मा

मनुष्य की सत्ता का अन्त उसकी मृत्यु के साथ ही हो जाता है । यह बात विज्ञान ने उन दिनों कही थी, जब वह नितान्त बचपन की स्थिति में था और अपनी बात मनवाने के लिए जिद्दी बच्चों की तरह मचलता था । तब उसने मनुष्य को एक चलता-फिरता पौधा भर कहा था, जिसकी हस्ती मरने के साथ ही समाप्त हो जाती है । उसने कहा था यह शरीर कुछ रसायनों के समन्वय से उत्पन्न प्रतिक्रिया भर है, जो विघटन होते ही समाप्त भी हो जाता है ।

पर अब वैसी बात नहीं रही । अब उसका स्थायित्व माना जाने लगा है और समझा जा रहा है कि मृत्यु के उपरान्त भी मनुष्य का कुछ अवशेष रह जाता है । जिसमें अवसर मिलने पर एक स्वतन्त्र इकाई बन सकने की क्षमता है ।

शरीर की ऊर्जा विद्युत मापक यन्त्रों से आँकी जाने लगी है । इसके अतिरिक्त एक सचेतन ऊर्जा का दूसरा प्रकार भी सामने आया है, जिसे 'औरा' या तेजोवलय कहते हैं । यह खुली आँख से तो किन्हीं विशेष व्यक्तियों को ही दीख पड़ता है । पर उसे स्पष्ट और प्रत्यक्ष देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी यन्त्र-उपकरण बन गए हैं, जो बताते हैं कि, शरीर के इर्द-गिर्द एक प्रकाश का घेरा फैला रहता है ।

इस प्रकाश में चुम्बकत्व भी रहता है, जो दूसरे समर्थ की ओर खिंचता है और दुर्बल को अपनी ओर खींचता है । यहाँ दुर्बलता और समर्थता शारीरिक नहीं वरन् मानसिक कही जा रही है । प्रतिभावान, सुन्दर, किशोर, कलाकार, हँसोड़, प्रसन्न चित्त प्रकृति के मनुष्य मनोबल की दृष्टि से अधिक आकर्षक होते हैं, जबकि विद्वान, वयस्क, व्यस्त, उदास प्रकृति के मनुष्यों में आकर्षण शक्ति अधिक होती है । मित्रता को जल्दी बनाने और घनिष्ठ करने में यह तेजोवलय अधिक काम करता है । नर-नारी के बीच पाये जाने वाले आकर्षणों में इस चुम्बकत्व का पूरक स्तर ही विशेष रूप से काम करता है । वह खिन्नता की स्थिति में साहस भी बढ़ाता है. और सहायक भी सिद्ध होता है ।

व्यक्तित्व के उत्कृष्ट, मध्यम या निकृष्ट होने की स्थिति में यह प्रकाश तेजस् रंग भी बदलता रहता है । इसमें कई प्रकार के रंगों का मिश्रण भी पाया जाता है । इसका आधार विज्ञानी अल्फा, अल्ट्रा, गामा, बीटा आदि किरणों की न्यूनाधिकता बताते हैं और अनुमान लगाते हैं कि इस व्यक्ति की प्रतिभा किस स्तर की होनी चाहिए । आध्यात्मवादी इस हेर-फेर को चिन्तन और चरित्र की ऊँचाई का अनुमान लगाते हैं ।

सूक्ष्म शरीर की व्याख्या आध्यात्म तत्व ज्ञान में दूसरे ढंग से की जाती है पर विज्ञानी इसे शरीर बिजली एवं ऊर्जा कहते हैं, जो एक स्थान पर रहने के उपरान्त उस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य कर लेती है और प्रभाव बनाये रहती है । यह भी एक प्रकार का सूक्ष्म शरीर ही है, जो असली व्यक्ति के अन्यत्र चले जाने या मर जाने पर भी अपना अस्तित्व बनाये रहता है । मिस्र के पिरामिडों में हजारों वर्ष पूर्व मरे मृतकों की आत्मा का परिचय उन भवनों में मिलता है । यह आत्मा नहीं, वह तेजोवलय है जो लम्बी अवधि तक बना रहता है । प्राणी के अन्यत्र जन्म ले लेने पर भी यह तेजोवलय अपने अभ्यस्त एवं प्रभाव क्षेत्र में बना रहता है । भूत-प्रेत की वैज्ञानिक व्याख्या इन दिनों इसी रूप में की जा रही है ।

तेजस्वी प्रतिभावान व्यक्तित्वों का तेजोवलय अधिक प्रभावी, प्रचण्ड एवं स्थिर होता है । जबकि दुर्बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणों का वलय कुहरे की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है ।

जिन स्थानों में चौंकाने वाली, अद्‌भुत मार्मिक घटनाएँ घटित हुई होती हैं, वहाँ पर उसी वातावरण की अनुभूतियाँ लम्बे समय तक होती रहती हैं । भले ही सम्बद्ध व्यक्ति बहुत पहले ही वहाँ से चले गए हों । व्यभिचार, अत्याचार, अहंकार के केन्द्र बने हुए स्थान प्रायः बहुत समय तक उसी प्रकार का प्रभाव बनाये रहते हैं । उधर से गुजरने वाले मनुष्यों के मनों में उसी प्रकार के उभार उठते हैं ।

महामानवों का यह सूक्ष्म प्राण भी उन स्थानों को प्रभावशाली बनाये रहता है । ऐसे ही स्थान तीर्थ स्वरूप, प्रेरणाप्रद बने रहते हैं और वहाँ आने वालों के मनों पर अपनी छाप छोड़ते हैं ।

मार्कोनी कहते थे कि कई बार सूक्ष्म शब्द भी चिरकाल तक अपना अस्तित्व बनाये रहते हैं । वे कहते थे, कि ईसा द्वारा अन्तिम समय पर कहे गए शब्द अभी भी प्रयत्न करने पर उसी रूप में सुने जा सकते हैं । कृष्ण के मुख से कहा गया गीता प्रसंग भी ।

वैज्ञानिक एडीसन कहते थे कि, जीवित और दिवंगत मनुष्यों के बीच आदान-प्रदान का आधार बनी रहने वाली शक्ति जो जीवित स्थिति में तेजोवलय कही जाती है और मरने के उपरान्त अदृश्य महाप्राण ।

ग्रीक दार्शनिक पाइथागोरस कहते थे, कि जिस प्रकार परमात्मा का एक अंश जीव है । उसी प्रकार ब्रह्माण्डीय चेतना का महाप्राण व्यक्तियों के साथ तेजोवलय के रूप में लिपटा रहता है ।

गहराई में जाकर खोजने वालों ने इसे 'सबकान्शियस माइण्ड ऑफ दि ऑपरेटर' कहा है और भूतों के उपद्रवों तथा अनुदानों को इसी के साथ जोड़ा है ।

सेन्ट थामस अस्पताल लन्दन के जैव विज्ञानी वाल्टर जोकिलयर ने पुस्तक लिखी है—'दि ह्यूमन एटमोस्फियर' इसमें उन्होंने ह्यूमन औरा के आधार पर रोगियों की जीवनी शक्ति का सुविस्तृत वर्णन किया है ।

स्वीडन के वेलैटिना किर्लियन ने तीस वर्ष खोज के उपरान्त एक पुस्तक अंग्रजी में प्रकाशित कराई—"साइकिक डिस्कवरी बिहाइन्ड आइरन कर्टेन" । इसमें उन्होंने मनुष्य के मस्तिष्क को नहीं वरन् तेजोवलय को ही अतीन्द्रिय क्षमताओं का आधार बताया है और असाधारण क्रिया कर्तृत्व दिखा सकने वाले लोगों में एक अतिरिक्त क्षमता सम्पन्न तेजोवलय पाया है ।

लांस एन्जिल के विज्ञानी डॉ. थैल्यामौस ने 'औरा' को प्रत्यक्ष करने वाली एक विशेष फोटोग्राफी का आविष्कार किया है और इस शक्ति को "बायोप्लाज्मा" नाम से सम्बोधित किया है ।

तेजोवलय कई बार अतिरिक्त प्रतिभा के रूप में जन्मजात रूप से भी आता है, किन्तु मरने के उपरान्त वह पूरी तरह चला नहीं जाता । वह अपने मित्र शत्रुओं के साथ, विशिष्ट भावनाओं के साथ उत्तेजित होता है और साधारण स्तर के सरल हृदय लोगों को भी अपनी स्मृति दिलाने वाले परिचय देता है ।

इस प्रकार सूक्ष्म शरीर की व्याख्या तेजोवलय के रूप में होने लगी है और आत्मा का परिचय "कॉस्मिक एनर्जी" के रूप में दिया जा रहा है तो भी तत्व ज्ञान और विज्ञान की व्याख्याओं में काफी अन्तर शेष सम्भव है, इसका निराकरण भविष्य में हो सके ।

प्राणाग्नि : अणु शक्ति से भी बृहत्तर

मनुष्य का ही क्यों, सृष्टि के प्रत्येक कण का अस्तित्व सन्तुलन पर टिका है । वह सन्तुलन भंग होते ही अस्तित्व बिखरने लगता है ।

प्रश्नोपनिषद् में कहा है—

"प्राणाग्नयएवास्मिन् ब्रह्मपुरे जागृति ।"

अर्थात्—इस ब्रह्मपुरी यानी शरीर में प्राण ही कई तरह की अग्नियों के रूप में जलता है ।

प्राण और प्राणाग्नि में वही अन्तर है, जो अंगारे और धधकती लपटों में होता है । जीवधारी मात्र को प्राणी कहते हैं । प्राण मूलतः संस्कृत शब्द है ।

'अन्' (प्राणाने) धातु जीवन चेतना की द्योतक है । इसी 'अन्' धातु से 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'प्राण' शब्द की व्युत्पत्ति होती है । इस अर्थ में प्राण जीवन सत्ता का, 'एक्जिस्टेंस' का पर्याय है । जो है (दैट एक्जिस्टस) वह प्राण है । यही प्राण जड़ जगत में शक्ति-तरंगों के रूप में और चेतन जगत में विचारणा एवं सम्वेदना के रूप में संव्याप्त है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब यह प्राण विशेष प्रखरता के साथ सक्रिय होता है, तब उसकी इस प्रज्ज्वलित सक्रियता, प्रखरता को प्राणाग्नि कहते हैं । इसे ही प्राणों की चमक कह सकते हैं । क्रिया क्षेत्र में यही प्राणाग्नि ओजस्विता, शौर्य, पराक्रम, साहसिकता के रूप में प्रकट होती है । यही बौद्धिक क्षेत्र में चिन्तन की प्रखरता, तेजस्विता, मनस्विता के रूप में सामने आती है । वृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है—

"प्राणो वै यशो बलम्" अर्थात् प्राण ही यश और बल है । इसका भी यही तात्पर्य है कि प्राणों की सक्रियता ही बल के रूप में सामने आती है, वही चतुर्दिक यश, विस्तार का कारण बनती है ।

प्राण रहा भी, पर यह प्रखर न रहा तो विशेष कार्य नहीं हो पाते । सघन गतिविधियाँ, विशिष्ट हलचलें प्राणाग्नि द्वारा ही सम्भव होती हैं । मन्द प्राण तो जैसे-तैसे जीवन का संकट खींचता भर रहता है । उसमें आवेग, गति, त्वरा प्राणाग्नि के ही कारण देखी जाती है ।

यही प्राणाग्नि मन में संकल्प, बुद्धि, विवेक, चित्त की धारणा शक्ति और अहंता के रूप में सक्रिय है । संकल्प की प्रखरता, विवेक की जागरूकता, समर्थ धारणा शक्ति और "सुपरइगो····प्राणाग्नि" के ही रूप हैं । शरीर में यही प्राणाग्नि प्राण-विद्युत के रूप में सक्रिय है । इस प्रकार प्राण जहाँ मात्र 'है' यानी 'एक्जिस्टेन्स' भर है, वही प्राणाग्नि शरीर की विद्युत और मन, बुद्धि की चेतन-ऊर्जा है । स्वामी विवेकानन्द ने इसे ही "लेटेन्ट लाइट" कहा है । 'डिवाइन लाइट' भी इसे ही कहा जाता है । प्राणों की यह चेतन-ऊर्जा ही व्यक्तित्व को आलोकित करती है । पुरुषार्थ शक्ति यही है । साहस और उत्साह इसी के प्रकाश हैं । संकल्प शक्ति, तत्परता और दृढ़ता के रूप में यह व्यक्तित्व को गतिशील रखती है । इसकी कमी से जीवन-उत्साह शिथिल हो जाता है, हताशा-अवसाद व्यक्ति को दबोचे रहते हैं ।

प्राणाग्नि विकृत अनियन्त्रित हो उठने पर व्यक्ति को जीवित रखने के स्थान पर उसे जलाकर राख कर देती है । प्राणाग्नि की विकृति या दिशाहीनता ही आवेश, उद्विग्नता, दर्पातिरेक हठधर्मिता या कुटिलता, अधोगामिता के रूप में सामने आती है । दुराचरण, क्रोधावेग, कटुवचन, कलह-दुर्भाव प्राणाग्नि के दुरुपयोग का ही नाम है, जो शक्ति सदाचार-सत्प्रवृत्तियों में लगाई जा सकती है, जिससे बल, बुद्धि और यश-विस्तार हो सकता है ।

शरीर विद्युत का असन्तुलन भी अनेक विग्रह खड़े कर देता है । सत्रहवीं सदी में एसेक्स की एक वृद्धा की प्राण-विद्युत सहसा धधक उठी और वह अपनी झोंपड़ी में झुलस कर जल मरी । 'डेली टेलिग्राफ' लन्दन ने एक बार एक ट्रक ड्राइवर के ट्रक के भीतर ही अपनी सीट पर जल जाने की खबर छापी थी । इसी प्रकार 'रेनाल्ड न्यूज' ने पश्चिमी लन्दन की एक खबर छापी कि एक व्यक्ति वहाँ सड़क से जा रहा था, तभी सहसा उसके भीतर से लपट निकली और वह वहीं झुलस कर सिमट गया ।

मनुष्य के भीतर की आग के तेजी से धधक उठने की इन घटनाओं की पुष्टि वैज्ञानिक भी कर चुके हैं । यद्यपि वे अभी तक इसका समाधान कारक हल नहीं खोज सके हैं ।

मनुष्य शरीर में स्थित प्राण-विद्युत के इन आकस्मिक विस्फोटों के कारणों का और उन्हें रोक सकने के उपायों का पता तो वैज्ञानिक ही लगा सकते हैं और वे लगा भी लेंगे । परन्तु ऐसे विस्फोट तो विरल ही होते हैं । वे मानव जाति की उतनी बड़ी समस्या नहीं है, जितनी कि भीतरी प्राणाग्नि के दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याएँ हैं ।

शरीर, मन, बुद्धि अन्तःकरण में क्रियाशील इस प्राणाग्नि के दुरुपयोग से व्यक्ति आकस्मिक विस्फोटों की तरह पूरे तौर पर भले ही न जले, किन्तु भीतर ही भीतर वह दग्ध, क्षत-विक्षत होता रहता है । शरीर शक्ति का दुरुपयोग, आहार-बिहार के नियमों की अवज्ञा, बहुमूल्य जीवनी शक्ति को काम-विकार की नालियों में बहाना । ये प्राणाग्नि के वे दुरुपयोग हैं जिनसे व्यक्ति का बल बढ़ जाता और ओजस् घटता है । कटुवचन, परनिन्दा, असत्य-कथन, वाग्घल वाणी द्वारा प्राणाग्नि को गलत ढंग से खर्च करने के उदाहरण हैं । जितसे व्यक्ति स्वयं भी जलता है, दूसरों को भी जलाता है । दहकते अंगारों जैसे, तपी हुई छड़ जैसे, जलाने और दाग छोड़ने वाले शब्द बोलने वाले को भी उत्तप्त करते हैं और जिसके लिए कहे जाते हैं, उसे भी जलाते हैं । शरीर शक्ति का अवांछित उपयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वयं का बल घटाता है और पास-पड़ौस में भी विकृति-विक्षोभ बढ़ाता है ।

बड़े पैमाने पर स्पष्ट दिखाई दे सकने वाली हानियाँ तो शरीर की आग से जल उठने की घटनाओं जैसी ही विरल होती हैं । भीषण दुष्परिणाम तो कभी-कभी ही सामने आते हैं, किन्तु प्राण विद्युत के असन्तुलन से, उसके 'लीक' करने-लगने से स्वयं को तथा सम्पर्क क्षेत्र के लोगों को तेज झटके लगने के वैसे उदाहरण नित्य ही देखे जा सकते हैं, जैसे लन्दन की ही किशोरी जेनीमार्गन के शरीर में विद्युत शक्ति के 'लीक' होने पर देखे गए थे ।

ऐसी घटनाओं की जाँच करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर के 'सेल्स' के नाभिकों का आवरण थोड़ा ढीला हो जाने पर उसमें निहित शरीर विद्युत 'लीक' करने लगती है और तब वह अनियन्त्रित मात्रा में शरीर में दौड़ने लगती है । शरीर के कोशों की ऐसी ढील और विद्युत शक्ति के 'लीक' होने की घटनाएँ भले यदाकदा ही सामने आयें, पर जिनकी मन, बुद्धि, अन्तःकरण में क्रियाशील प्राण-विद्युत निरन्तर 'लीक' होती रहती है, ऐसे ढीले-पोले व्यक्तित्वों की समाज में कमी नहीं, भरमार ही दिखाई पड़ती है । उनके सम्पर्क में जो भी आता है, वह उनके कटुवचनों, कुचालों, दुर्भावनाओं और दुर्व्यवहार के रूप में 'लीक' हो रही प्राण-विद्युत के झटकों से आहत हो जाता है ।

दूसरी ओर जो लोग इस प्राण-विद्युत का सदुपयोग करते हैं, वे कोलराडो के डब्ल्यू. जोन्स की तरह स्वयं भी सुख-शान्ति पाते हैं, दूसरों को भी लाभ पहुँचाते हैं । जोन्स अपनी इसी विद्युत क्षमता से धरती पर नंगे चलकर भू-गर्भ की अनेक धातुओं के भण्डार की सही-सही जानकारी दे देते हैं । ऐसी क्षमताओं से सम्पन्न अनेक लोग आये दिन देखे जाते हैं और उनकी चारों ओर प्रसिद्धि फैलते देर नहीं लगती । उन्हें स्वयं भी इस परोपकार से प्रसन्नता होती है, दूसरों को भी वे उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण लगते हैं ।

आन्तरिक क्षेत्र में क्रियाशील प्राण शक्ति के सदुपयोग से मिलने वाले लाभ तो और भी कई गुने अधिक हैं । साहस, शौर्य, बौद्धिक प्रखरता, सत्संकल्प और सक्रियता सही दिशाधारा में नियोजित किए जाने पर प्रगति, उत्कर्ष सफलता, सन्तोष और शान्ति के शतमुखी अनुदानों की वर्षा करती है । शांखायन-सूत्र में कहा गया है—

"प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्मा"

अर्थात्—प्राण रूप प्रज्ञा मैं हूँ । इस प्राण-प्रज्ञा के द्वारा सत्संकल्प, सत्कर्म, सद्ज्ञान और सद्भाव के आधार पर जीवन के सदुद्देश्यों की प्राप्ति ही प्राणाग्नि का अभिवर्धन एवं सदुपयोग है ।

जीवन में उत्कृष्टताओं की उपलब्धि इसी जीवन्त प्राण शक्ति द्वारा होती है । इसे ही प्रतिभा कहा जाता है । जीवट, प्रखरता और जोखिम उठा सकने की साहसिकता, प्राणी की इसी लपट का परिणाम है । उसे सन्तुलित, नियन्त्रित एवं सही दिशाधारा में सुनियोजित करना ही जीवन की सार्थकता है ।

प्राण ऊर्जा का सम्वर्धन, चेतना का उदात्तीकरण

चेतन आत्मा को क्रियाशील बनाये रहने और अभीष्ट लक्ष्य की दिशा में द्रुत गति से बढ़ने की सामर्थ्य प्रदान करने का आधार प्राण ऊर्जा को ही माना जाता है । व्यक्तित्व के असाधारण विकास में उसी का चमत्कार देखा जा सकता है ।

प्राणतत्व की न्यूनाधिकता ही मनुष्य की दुर्बलता-बलिष्ठता का परिचायक है । इसकी न्यूनता से व्यक्ति हर दृष्टि से लड़खड़ाने लगता है और जब वह समुचित मात्रा में रहता है, तो समस्त क्रिया-कलाप ठीक तरह चलते हैं । जब वह बढ़ता है तो उस अभिवृद्धि को सामर्थ्य, प्रतिभा, सतर्कता, तेजस्विता, मनस्विता आदि के रूप में देखा जा सकता है । भौतिक क्षेत्र में उसे गर्मी, रोशनी, बिजली आदि के नाम से जाना जाता है और अन्तःक्षेत्र में उसी को प्रखरता कहते हैं । प्राण-तत्व, जीवन तत्व यही है । इसी को "निरपेक्ष ऊर्जा" भी कहा जाता है, जो प्राणि जगत को समान रूप से प्रभावित करती है । शरीर और मन को दिशा एवं क्षमता प्रदान करने वाली अति उत्कृष्ट एवं अति सूक्ष्म सत्ता "वाइटल फोर्स" यही है । इस सम्पदा को जो जितनी अधिक मात्रा में उपार्जित अभिवर्धित कर लेता है, वह उतना ही बड़ा शक्तिशाली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध होता है । ऐसे व्यक्ति ही महाप्राण कहलाने, मार्गदर्शन करने में समर्थ होते हैं ।

वैज्ञानिक क्षेत्र में भी अब इस प्राण शक्ति की खोजबीन की जाने लगी है । जैव विद्युत शास्त्र के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. एच. ए. बट के अनुसार जीवन का प्रमुख आधार प्राण ऊर्जा ही है, जिसमें इच्छा और बुद्धि भी सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहती है । इसके द्वारा मनुष्य अपने क्षेत्र में विशिष्ट परिस्थितियों एवं साधनों की संरचना कर सकता है । प्रो. हडसन ने उसे सार्वभौमिक जीवन त्तत्व कहा है और लिखा है कि यदि इसे कामाचार के आकर्षण से बचाकर मस्तिष्कीय अथवा भावनात्मक प्रयोजनों में लगाया जा सके तो सस्ता विनोद करने की अपेक्षा कहीं अधिक सत्परिणाम उत्पन्न करेगा ।

नोबेल पुरस्कार विजेता प्रख्यात चिकित्साशास्त्री जे. ज्योगी ने एक्टीन और मायोसीन नामक दो प्रोटीन तत्वों को मनुष्य शरीर में से खोज निकाला है । यह तत्व माँसपेशियों की सक्रियता बढ़ाते हैं । इनकी उत्पत्ति का प्रमुख कारण उन्होंने प्राण शक्ति को माना है । उनका कहना है कि शरीर के चारों ओर जो प्रकाश छाया रहता है, वस्तुतः वह ऊर्जा के समस्त शरीर में संव्याप्त होने के कारण ही दिखाई देता है । इसके निर्माण में भाग लेने वाले सूक्ष्म परमाणु शक्तिशाली, प्रकाशवान और प्रज्ज्वलनशील होते हैं । इनमें घट-बढ़ होने पर शारीरिक और मानसिक उथल-पुथल होने लगती है । फ्रान्सीसी वैज्ञानिक दुरावेल प्राणमय शरीर की स्वतन्त्र सत्ता मानते हैं और कहते हैं कि वह जितना ही प्रबल होकर फिजिकल बॉडी में समाविष्ट होगा उतना ही मनुष्य प्रतिभाशाली पाया जायेगा ।

डॉ. राखाल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "रीजनल एक्सपोजीशन ऑफ भारतीय योगा" में लिखा है कि योग विद्या का उच्चस्तरीय आधार प्राण शरीर पर ही अवलम्बित रहता है । वे प्राण सत्ता को शरीर में समाई हुई होने पर भी पृथक मानते हैं । डॉ. मैकडूगल ने तो प्रत्यक्ष शरीर और प्राण शरीर का पृथक-पृथक भार तौलने में भी सफलता पायी है । डॉ. माल्थ की शोधों में ऐसे प्रमाण पाये जाते हैं जिनमें मनुष्य के न रहने पर भी उसका प्राण चिर अभ्यस्त स्थान पर विद्यमान रहता है । सिलवान जे. मुलडोल की पुस्तक "दि प्रोजेक्शन ऑफ एस्ट्रल बॉडी" में ऐसी अनेकानेक घटनाओं का वर्णन है, जिसमें प्राण शरीर अपने अभ्यस्त स्थान पर चिरकाल तक अपना अधिकार जमाये रहता है । भले ही उसे दिवंगत हुए लम्बी अवधि क्यों न बीत गई हो । 'सुपर नेचर' नामक अपनी पुस्तक में लायल वाटसन ने लिखा है कि किसी व्यक्ति के हाथ-पैर कट जाने पर भी उसे उसकी उपस्थिति की अनुभूति होना शरीर में समाविष्ट प्राण शक्ति का ही एक खेल है ।

कितने ही वैज्ञानिकों ने मानवी प्राण ऊर्जा की वैज्ञानिकता एवं उसकी प्रयोग प्रक्रिया के पक्ष में अनेकों आधार एवं प्रमाण प्रस्तुत किए हैं । प्रो. विलियम क्रुक्स वेलिस इस सन्दर्भ में सबसे आगे रहे । जर्मन रसायनज्ञ बैरोन कार्ल वान रीचेन बैक ने काया में समाहित प्रचण्ड प्राण ऊर्जा भण्डार की मौजूदगी की पुष्टि की है और कहा है इसे न केवल देखा जा सकता है, वरन् मापा भी जा सकता है । उन्होंने इसमें अनेक भौतिक गुणों के उपस्थित होने की पुष्टि की है, जिसमें से ध्रुवत्व भी एक गुण है । रूस के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एलेक्जेण्डर गुरुविच ने इसे छोटी तरंग लम्बाई वाली किरणों-अल्ट्रावायलेट के एक हिस्से के रूप में पाया और माइटोजेनटिक किरणों के नाम से सम्बोधित किया है । रोम के प्रो. ग्यूडो क्रीमोनेसा ने इसके फोटोग्राफ भी लिए हैं । उन्होंने "आरोस्कोप" नामक एक ऐसे उपकरण का विकास किया है, जिसके माध्यम से किसी भी व्यक्ति के प्राण शरीर को चर्म चक्षुओं से देखा जा सकता है ।

"फील्ड्स ऑफ फोर्स" नामक अपनी कृति में विन्फ्रेड डंकन ने कहा है कि, यह प्राण ही है जो शारीरिक अंग अवयवों की नियमित एवं नियन्त्रित वृद्धि के लिए जिम्मेदार है । मुख्य रूप से यह आँख, मस्तिष्क, स्पाइन, जननांग एवं चक्र संस्थानों में केन्द्रित रहता है । प्राणायाम की विविध साधनाओं द्वारा इसे उभारा और शरीर से बाहर निकाला जा सकता है तथा जड़-चेतन को प्रभावित भी किया जा सकता है । विद्वान लेखक ए. ई. पावेल ने अपनी पुस्तक "दि ईथरिक डबल" में उक्त कार्यों के अतिरिक्त प्राण ऊर्जा को सुपर चेतन से सम्पर्क सूत्र जोड़ने वाला बताया है । उनके अनुसार प्राण वस्तुतः चेतन ऊर्जा का प्रवाह है । जब उसका सम्बन्ध ब्रह्माण्ड व्यापी महाप्राण से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो जाता है, तो वही प्राण शक्ति अपनी प्रचण्डता और उत्कृष्टता के आधार पर स्तर-भेद एवं रूप भेद से विभिन्न सिद्धियों-समृद्धियों तथा विभूतियों की उद्‌गाता और प्रदाता सिद्ध होती है । शारिरिक इन्द्रियों की क्रियाशीलता, मन की सजगता और संकल्पशीलता, बुद्धि की प्रखरता तथा अन्तःकरण की उदात्त-चेतना का आधार प्राण ऊर्जा ही है । आकांक्षा को ललक से उठाकर संकल्प स्तर तक पहुँचा देना प्राण की प्रखरता पर ही निर्भर रहता है ।

प्राण ऊर्जा की वैज्ञानिकता का प्रतिपादन करने के लिय मेस्मेरिज्म, एलेक्ट्रोबायलॉजी, साइकोथिरेपी आदि के अनेकों वैज्ञानिक प्रयोग-परीक्षण चल रहे हैं और शोध निष्कर्षों के अनेक ग्रन्थ छप रहे हैं । यह प्राणाग्नि आमतौर से अविज्ञात ही रहती है । शरीरगत तापमान और विद्युत प्रवाह की यन्त्रों से नापतौल की जा सकती है, पर प्राणाग्नि वैसी नहीं होती जैसी चूल्हे में अग्नि जलती है । इतने पर भी देखा गया है कि जब यह प्राणाग्नि शरीर से फूट निकली तो अपने अस्तित्व का प्रमाण ऐसे देने लगी मानो वह भौतिक अग्नि का रूप धारण कर सकने में समर्थ हो ।

वस्तुतः यह प्राण ऊर्जा ही जीव चेतना की सर्वोच्च शक्ति, जीवन का सार एवं आत्मोत्थान का आधार है । इसका सम्पादन सम्वर्धन कर हर साधक चेतना के उच्चतर आयामों तक पहुँच सकता है ।

ओजस् और ब्रह्मवर्चस का भी महत्त्व समझें

प्रकृति के अन्तराल में छिपी विद्युत शक्ति का परिचय शताब्दियों पूर्व लगा लिया गया है और अब उसका उपयोग मनुष्य जीवन की घनिष्ठ सहचरों के रूप में किया जा रहा है । कभी अग्नि की, पशु शक्ति की क्षमता को हस्तगत करके मनुष्य को बड़ा सन्तोष हुआ था । सचमुच उसकी प्रगति में इन दोनों ने बड़ा योगदान दिया । इन शताब्दियों में बिजली की शक्ति ने संसार के भौतिक विकास में असाधारण सहायता की है । भाप, तेल, गैस की सहायता से शक्ति प्राप्त करने की बात अब पिछले जमाने की बात हो गई । अगले दिनों अणु शक्ति और लेसर किरणों के प्रयोग को प्रधानता मिलने वाली है ।

इन समस्त शक्ति स्रोतों से भी अद्‌भुत एक और शक्ति है, जिसकी ओर न जाने क्यों हमारा ध्यान गया ही नहीं । वह है मानवी विद्युत । यह अधिक गहराई के साथ समझा जाना चाहिए कि प्राणियों के शरीर में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति ही उनके शरीर संस्थान एवं मनःसंस्थान को अधिक समर्थ एवं सुविकसित बना सकती है । कहना न होगा कि सुविकसित व्यक्तित्व संसार की समस्त शक्ति सम्प्रदाओं से हमारे लिए बढ़-चढ़कर उपयोगी सिद्ध हो सकता है । भौतिक जगत में अग्नि, भाप, गैस, तेल, बिजली, अणु, विस्फोट, लेसर आदि का जो महत्त्व है, उससे कहीं अधिक उपयोगिता सजीव प्राणियों के लिए उस बिजली की है जो उनके शरीर में पायी जाती है । मनुष्य में भी इस विद्युत शक्ति का अजस्र भण्डार भरा पड़ा है ।

शरीर की संचार प्रणाली का मूल आधार क्या है ? इसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म कारण ढूँढ़ने पर वे शरीर विज्ञानी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पेशियों में काम करने वाली स्थिति तक ऊर्जा 'पोटेन्शियल' का तथा उसके साथ जुड़े रहने वाले आवेश इन्टेन्सिटी का जीवन संचार में बहुत बड़ा हाथ है । इन विद्युतधाराओं का वर्गीकरण तथा नामकरण सीफेलीट्राइजेमिल न्यूरैलाजिया की व्याख्या-चर्चा के साथ प्रस्तुत किया जाता है । ताप विद्युतीय संयोजन—थर्मोलैरिक कपलिंग के शोधकर्त्ता अब इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मानव शरीर का सारा क्रिया-कलाप इसी विद्युतीय संचार के माध्यम से गतिशील रहता है ।

पृथ्वी के इर्द-गिर्द एक चुम्बकीय वातावरण फैला हुआ है । अकेला गुरुत्वाकर्षण कार्य ही नहीं, उससे और भी कितने ही प्रयोजन पूरे होते हैं । यह चुम्बकत्व आखिर आता कहाँ से है, उसका उद्‌गम स्रोत कहाँ है ? यह पता लगाने वाले इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह कोई बाहरी अनुदान नहीं, वरन् पृथ्वी के गहन अन्तराल से निकलने वाला शक्ति प्रवाह है ।

लोहे की सुई यदि धागे में बाँधकर अधर लटकाई जाय तो उसका एक सिरा उत्तर की ओर दूसरा दक्षिण की ओर होगा । दिशा निर्देशक यन्त्र (कम्पास) इसी आधार पर बनते हैं । कितने ही जीव-जन्तु अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वपूर्ण कार्य इसी चुम्बकीय प्रवाह के आधार पर पूरे करते रहते हैं । कितने ही पक्षी ऋतु परिवर्तन के लिए झुण्ड बनाकर सहस्रों मील लम्बी उड़ानें भरते हैं । वे धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा पहुँचते हैं । इनकी उड़ानें प्रायः रात में होती हैं । उस समय प्रकाश जैसी कोई इस प्रकार की सुविधा भी उन्हें नहीं मिलती, जिससे वे यात्रा लक्ष्य की दिशा जान सकें । यह कार्य उनकी अन्तःचेतना पृथ्वी के इर्द-गिर्द फैले हुए चुम्बकीय घेरे में चल रही हलचलों के आधार पर ही पूरा करती हैं । इस धारा के सहारे वे इस तरह उड़ते हैं, मानो किसी सुनिश्चित सड़क पर चल रहे हों ।

टरमाइट कीड़ा अपने घरों का निर्माण तथा उनका प्रवेश द्वार सदा निर्धारित दिशा में ही बनाते हैं । इसके पीछे ही उनकी आन्तरिक सम्वेदना द्वारा पृथ्वी के चुम्बकीय प्रवाह को पहचानने की सफलता ही काम करती है ।

जैव सैलों का सूत्र विभाजन कार्य उसके मध्य बिन्दु में चलता है, उसमें यही दिशा ज्ञान काम करता है । क्रोमोसोम की गति 'सैल' के मध्यवर्ती ध्रुव की दिशा की ओर रहती है । उसे दिशा ज्ञान कैसे रहता है ? इस प्रश्न का उत्तर भी यही रहता है, कि पृथ्वी के चुम्बकीय प्रवाह को हमारे जीव सैल की आन्तरिक सत्ता अनुभव कर सकती है और उसी आधार पर अपनी गतिविधि का निर्धारण कर सकती है ।

चुम्बक और विद्युत यों प्रत्यक्षतः दो पृथक-पृथक सत्ताएँ हैं, पर वे परस्पर अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध हैं और समयानुसार एक धारा का दूसरी में परिवर्तन होता रहता है । यदि किसी 'सर्किट' का चुम्बकीय क्षेत्र लगातार बदलते रहा जाय तो बिजली पैदा हो जायेगी । इसी प्रकार लोहे के टुकड़े पर लपेटे हुए तार में से विद्युतधारा प्रवाहित की जाय तो वह चुम्बकीय शक्ति सम्पन्न बन जायेगा ।

मनुष्य शरीर में बिजली काम करती है, यह सर्वविदित है । इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफी तथा इलेक्ट्रो इनसिफैलोग्राफी के द्वारा इस तथ्य को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । हमारी रक्त नलिकाओं में लौहयुक्त 'हीमोग्लोबिन' भरा पड़ा है । लौह चूर्ण और चुम्बक जिस प्रकार परस्पर चिपके रहते हैं, उसी प्रकार हमारी जीव सत्ता सभी जीव कोषों को परस्पर सम्बद्ध किए रहती है और उनकी सम्मिश्रित चेतना से वे समस्त क्रिया-कलाप चलते हैं, जिन्हें हम जीवन संचार व्यवस्था कहते हैं ।

शरीर में चमक, स्फूर्ति, श्रम, रुचि, ताजगी, उमंग, उत्साह, शौर्य, साहस जैसी जो प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं, उनके पीछे मानवी विद्युत की अभीष्ट मात्रा का होना ही आँका जा सकता है । मनस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी, तपस्वी जैसे शब्दों से ऐसे ही लोगों को सम्बोधित किया जाता है । ऐतिहासिक व्यक्तियों की पंक्ति में ऐसे ही लोग खड़े होते हैं । भौतिक उपलब्धियाँ भी उन्हीं के पल्ले पड़ती हैं । यहाँ तक कि आतंकवादी खलनायक भी इसी शक्ति के सहारे अपने भयानक दुष्कर्मों में सफलता प्राप्त करते हैं । ऐतिहासिक महामानवों में से प्रत्येक को इसी अन्तःशक्ति का सहारा मिलता है और वे महान कार्यों में साहसपूर्वक आगे बढ़ते चले जाते हैं ।

मानवी शरीर के शोध इतिहास में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख है, जिनसे यह सिद्ध होता है कि किसी-किसी शरीर में इतनी अधिक बिजली होती है कि उसे दूसरे लोग भी आसानी से अनुभव कर सकें । यों हमारा नाड़ी संस्थान पूर्णतया विद्युतधारा से ही संचालित होता है । मस्तिष्क को जादुई बिजलीघर कह सकते हैं । जहाँ से शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंगों की गतिविधियों का नियन्त्रण एवं संचालन होता है । पर वह बिजली 'जीव विद्युत' वर्ग की होती है और इस तरह अनुभव में नहीं आती, जैसी कि बत्ती जलाने या मशीनें चलाने वाली बिजली । शरीर में काम करने वाली गर्मी से विभिन्न अवयवों की सक्रियता रहती है और वे अपना-अपना काम करते हैं । यह कायिक ऊष्मा वस्तुतः एक विशेष प्रकार की बिजली ही है । इसे मानवी विद्युत कह सकते हैं । इतने पर भी वह यान्त्रिक बिजली से भिन्न ही मानी जायेगी । वह अपना प्रभाव शरीर संचालन तक ही सीमित रखती है । इससे बाहर उसका प्रभाव अनुभव नहीं किया जाता, किन्तु कुछ अपवाद ऐसे भी देखने को मिले हैं, जिनमें शरीरगत ऊष्मा ने यान्त्रिक बिजली की भूमिका निबाही है और उस व्यक्ति को एक चलता-फिरता बिजलीघर सिद्ध किया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी शरीर की विलक्षणताओं की चर्चा करते हुए उन प्रामाणिक घटनाओं का उल्लेख अक्सर किया जाता रहता है, जिनकी यथार्थता सुविज्ञ लोगों ने पूरी जाँच-पड़ताल के बाद घोषित की है । मनुष्य शरीर में भी यान्त्रिक बिजली की आश्चर्यजनक मात्रा हो सकती है, इसके कितने ही उदाहरण सर्वविदित हैं । कोलोराडी प्रान्त के लेडीवली नगर में के. डब्ल्यू. पी. जोन्स नाम का एक ऐसा व्यक्ति हुआ है, जो जमीन पर चलकर यह बता देता था कि जिस भूमि पर वह चल रहा है उसके बीच किस धातु की, कितनी गहरी तथा कितनी बड़ी खदान है । उसे जमीन में दबी भिन्न धातुओं का प्रभाव अपने शरीर पर विभिन्न प्रकार के स्पन्दनों से होता था । अनुभव ने उसे यह सिखा दिया था कि किस धातु का स्पन्दन कैसा होता है ? अपनी इस विशेषता का उसने भरपूर लाभ उठाया । कइयों को खदानें बता कर उनसे हिस्सा लिया और कुछ खदानें उसने अपने धन से खरीदीं और चलाईं । अमेरिका का यह बहुत धन-सम्पन्न व्यक्ति अपनी इसी विशेषता के कारण बना था ।

आयरलैण्ड के प्रो. वैरेट इस बात के लिए प्रख्यात थे कि वे भूमिगत जलस्रोतों तथा धातु खदानों का पता अपनी अन्तःचेतना से देखकर बता देते थे । इस विशिष्टता से उन्होंने अपने देशवासियों को बहुत लाभ पहुँचाया था । आस्ट्रेलिया का एक किसान भी पिछली शताब्दी में इस विद्या के लिए प्रसिद्धि पा चुका है । वह दो शंकु वाली टहनी हाथ में लेकर खेतों में घूमता फिरता था और जहाँ उसे जलस्रोत दिखाई पड़ता था वहाँ रुक जाता था । उस स्थान पर खोदे गए कुओं में प्रायः पानी निकल ही आता था । भारत के राजस्थान प्रान्त में एक पानी वाले महाराज जिन्हें माधवनन्द जी कहते थे, अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर कितने ही सफल कुएँ बनवा चुके थे ।

भूमिगत अदृश्य वस्तुओं को देख सकने की विद्या को रेब्डोमेन्सी कहते हैं । इस विज्ञान की परिधि में जमीन में दबे खनिज, रसायन, जल, तेल आदि सभी वस्तुओं को जाना जा सकता है, किन्तु यदि केवल जल तलाश तक ही वह सीमित हो तो उसे 'वाटर डाउनिंग' कहेंगे ।

आयरलैण्ड के विकलो पहाड़ी क्षेत्र में दूर-दूर तक कहीं पानी का नाम निशान नहीं था । जमीन कड़ी, पथरीली थी । प्रो. वेनेट ने खदान विशेषज्ञों के सामने अपना प्रयोग किया । वे कई घण्टे उस क्षेत्र में घूमे अन्ततः वे एक स्थान पर रुके और कहा—केवल १४ फुट गहराई पर यहाँ एक अच्छा जलस्रोत है । खुदाई आरम्भ हुई और पूर्व कथन बिल्कुल सच निकला । १५ फुट जमीन खोदने पर पानी की एक जोरदार धारा वहाँ से निकल पड़ी ।

मनुष्येतर अन्य प्राणियों में भी यह विद्युत शक्ति पायी जाती है । उनके शरीर में, मस्तिष्क में ऐसे विशिष्ट अवयव पाये जाते हैं, जिनमें शरीरगत विद्युत अपना काम करती है और वे आश्चर्यजनक जीवन पद्धति अपनाये रहते हैं । वैज्ञानिकों ने इसी अद्‌भुत संरचना को देख-परख कर उसकी नकल के सहारे कुछ ऐसे आविष्कार किए हैं, जो अपनी उपयोगिता के लिए प्रख्यात हैं ।

मधुमक्खियों की नेत्र रचना देखकर विज्ञानवेत्ता 'पोलारॉयड ओरिसन्टेशन इण्डीकेटर' नामक यन्त्र बनाने में समर्थ हुए हैं । यह ध्रुव प्रदेश में दिशा ज्ञान का सही माध्यम है । उस क्षेत्र में साधारण कुतुबनुमा अपनी उत्तर, दक्षिण दिशा बताने वाली विशेषता खो बैठते हैं, तब इसी यन्त्र के सहारे उस क्षेत्र के यात्री अपना काम चलाते हैं ।

समुद्री तूफान आने से बहुत पहले ही समुद्री बतखें आकाश में उड़ जाती हैं और तूफान की परिधि के क्षेत्र से बाहर निकल जाती हैं । डालफिन मछलियाँ चट्टानों में जा छिपती हैं, तारा मछली गहरी डुबकी लगा लेती है और ह्वेल उस दिशा में भाग जाती है, जिसमें तूफान न पहुँचे । यह पूर्व ज्ञान इन जल-जन्तुओं का जितना सही होता है, उतना ऋतु विशेषज्ञों के बहुमूल्य उपकरणों को भी नहीं होता । मास्को विश्व-विद्यालय ने इन्हीं जन्तुओं के अत्यन्त सूक्ष्म सूचना ग्राहक कानों की नकल पर ऐसे यन्त्र बनाये हैं, जो अन्तरिक्ष में होने वाली अविज्ञात हलचलों की पूर्व सूचना संग्रह कर सकें । ऐसा अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनि प्रवाहों को सुन समझ लेने से ही सम्भव होता है ।

जीव-जन्तुओं की विशिष्ट क्षमताओं का आधार उनकी ऐसी संरचना में सन्निहित है, जो मनुष्य के हिस्से में नहीं आयी है । अब विज्ञान मनुष्येत्तर विभिन्न प्राणियों की शारीरिक एवं मानसिक संरचना में जुड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई अद्‌भुत विशेषताओं को खोजने में संलग्न है । इसका एक स्वतन्त्र शास्त्र ही बन गया है, जिसका नाम है—'वायोनिक्स' । इसे स्पेशल पर्पस मैकेनिज्म—'विशेषोद्देश्य व्यवस्थाएँ' भी कहा जाता है ।

किसी अँधेरे कमरे में बहुत पतले ढेरों तार बँधे हों उसमें चमगादड़ छोड़ दी जाय तो वह बिना तारों से टकराए रात भर उड़ती रहेंगी । ऐसा इसलिए होता है कि उसके शरीर से निकलने वाले कम्पन तारों से टकरा कर जो ध्वनि उत्पन्न करते हैं, उन्हें उसके सम्वेदनशील कान सुन लेते हैं और यह बता देते हैं कि तार कहाँ बिखरे पड़े हैं । बिना आँखों के ही उसे इस ध्वनि माध्यम से अपने क्षेत्र में बिखरी पड़ी वस्तुएँ दीखती रहती हैं ।

मेढ़क केवल जिन्दा कीड़े खाता है । उसके सामने मरी और जिन्दी मक्खियों का ढेर लगा दिया जाय तो उनमें से वह चुन-चुनकर केवल जिन्दा मक्खियाँ ही खायेगा । इसका कारण मृतक या जीवित माँस का अन्तर नहीं, वरन् यह है कि उसकी विचित्र संरचना केवल हलचल करती वस्तुएँ ही देख पाती है । स्थिर वस्तुएँ उसे दीखती ही नहीं । मरी मक्खी को किसी तार से लटका कर हिलाया जाय तो वह उसे खाने के लिए सहज ही तैयार हो जायेगा ।

उल्लू की ध्वनि सम्वेदना उसके शिकार का आभास ही नहीं कराती, ठीक दिशा दूरी और स्थिति भी बता देती है । फलतः वह पत्तों के ढेर के नीचे हलचल करते चूहों पर टूटता है और एक ही झपट्टे में उसे ले उड़ता है ।

गहरी डूबी हुई पनडुब्बियों में रेडियो सम्पर्क निरन्तर कायम रखना कई बार बड़ा कठिन होता है, क्योंकि प्रेषित रेडियो तरंगों का बहुत बड़ा भाग समुद्र का जल ही सोख लेता है । इस कठिनाई को दूर करने के लिए मछली में सन्निहित उन विशेषताओं को तलाश किया जा रहा है, जिसके आधार पर वह जलराशि में होने वाली जीव जन्तुओं की छोटी-छोटी हलचलों को जान लेती हैं और आत्मरक्षा तथा भोजन व्यवस्था के प्रयोजन पूरे करती हैं ।

रैटल साँप तापमान के अत्यन्त न्यून अन्तर को जान लेता है । चूहे, चिड़िया आदि के रक्त का तापमान अत्यन्त नगण्य मात्रा में ही भिन्न होता है, पर यह साँप उस तापमान के अन्तर को जानकर अपना प्रिय आहार चुनता है । यह कार्य वह गन्ध के आधार पर नहीं, अपने ताप मापक शरीरी अवयवों द्वारा पूरा करता है । वैज्ञानिकों ने इसी संरचना को ध्यान में रखते हुए इन्फ्रा रेड किरणों का उपयोग करके तापमान के उतार चढ़ावों का सही मूल्यांकन कर सकने में सफलता प्राप्त की है ।

पनडुब्बियों को पानी के भीतर देर तक ठहरने के लिए ऑक्सीजन की अधिक मात्रा अभीष्ट होती है और बनने वाली कार्बन डाई-ऑक्साइड को बाहर फेंकने की जरूरत पड़ती है । यह दोनों कार्य पानी के भीतर ही होते रहें, तभी उसका अधिक समय समुद्र में रह सकना सम्भव हो सकता है । मछली पानी से ही ऑक्सीजन खींचती है और उसी में अपने शरीर की कार्बन गैस खपा देती है । यह पनडुब्बियों के लिए भी सम्भव हो सके, इसका रास्ता मछलियों की संरचना का गहन अध्ययन करने के उपरान्त ही प्राप्त किया जा सकता है ।

हवाई जहाजों की बनावट में पिछले चालीस वर्षों में अनेकों उपयोगी सुधार किए गए हैं । उसके लिए विभिन्न पक्षियों की संरचना और क्षमता का गहरा अध्ययन करने में विशेषज्ञों को संलग्न रहना पड़ा है । भुनगों की शरीर रचना के आधार पर वायुयानों में दूरदर्शन के लिए प्रयुक्त होने वाला विशेष यन्त्र 'ग्राउण्ड स्पीड मीटर' बनाया गया है । भुनगों के आँखें नहीं होतीं वे अपना काम विशेष फोटो सैलों से चलाते हैं । वही प्रयोग इस यन्त्र में हुआ है ।

अटलान्टिक सागर के आर-पार रेडियो प्रसारणों को ठीक तरह पहुँचाने का रास्ता बतलाने में जिन कम्प्यूटरों का प्रयोग होता है, वे कई बार असफल हो जाते हैं, क्योंकि मौसम की प्रतिकूलता रेडियो तंरगों में व्यवधान उत्पन्न करती है । अस्तु, ध्वनि प्रवाह के लिए नये रास्ते ढूँढ़ने पड़ते हैं । इस कार्य के लिए चींटी की मस्तिष्कीय संरचना अधिक उपयुक्त समझी गई है । वैज्ञानिकों का कहना है कि, चींटी के मस्तिष्क की तुलना में हमारे वर्तमान कम्प्यूटर अनपढ़ बालकों की तरह पिछड़े हुए हैं ।

मानवी विद्युत को आध्यात्म विज्ञान में ओजस्, तेजस् एवं ब्रह्मवर्चस कहा गया है । इसे विकसित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने की प्रक्रिया योग साधना एवं तपश्चर्या के नाम से प्रसिद्ध है । ब्रह्मविद्या में इसी 'चित् शक्ति' के विकास पर जोर दिया गया है और कहा गया है कि मनुष्य शरीर में सन्निहित प्रकट और अप्रकट रहस्यमय शक्ति संस्थानों को जागृत करके मनुष्य देवस्तर की विशेषताओं से सम्पन्न हो सकता है । भौतिक जगत के विकास प्रयोजनों में बिजली का जो उपयोग है उससे कहीं अधिक उपयोगता व्यक्तित्व के समग्र विकास में मानवी विद्युत की है । उसका स्वरूप, आधार और उपयोग जानने के लिए हमें विशेष उत्साहपूर्वक प्रयत्न करने चाहिए ।

प्राण ऊर्जा बनाम अतीन्द्रिय क्षमता

घर में हीटर, कूलर, पंखा, बल्ब, रेडियो, टेलीविजन आदि कितने ही उपयोगी यन्त्र लगे हैं, पर उनकी सार्थकता तभी है जब उनमें विद्युतधारा का समुचित स्तर प्रवाहित हो रहा है । करेन्ट ही न हो, अथवा नगण्य जितनी मात्रा में हो, तो फिर वे उपकरण किसी काम न आयेंगे । व्यर्थ ही जगह घेरे पड़े रहेंगे । मनुष्य शरीर में एक से एक महत्त्वपूर्ण एवं चमत्कारी उपकरण सृष्टा ने फिट करके रखे हैं । उनके लिए समुचित मात्रा में बिजली जुटाना उनका काम है, जो उसकी उपयोगिता जानते हैं तथा प्रयुक्त होने पर जो सत्परिणाम उत्पन्न होते हैं, उनसे परिचित हैं ।

सूक्ष्म शरीर की संरचना प्राण ऊर्जा से हुई है । उसके अवयव ही उसी स्तर के प्राण गुच्छकों से बने हैं । चक्र उपत्यिका इसी प्रकार के भँवरों का नाम है । उन्हें साधना द्वारा उत्तेजित किया जाता है तो ये चक्रवातों की तरह उछलने लगते हैं । बुद्धिमत्ता इसमें है कि उन्हें उभारने और सही प्रयोजन में लगाने की कला का ज्ञान, अनुभव उपलब्ध हो ।

कभी अदृश्य होने और इन्द्रिय यन्त्रों की पकड़ में न आने के कारण उस क्षेत्र पर विश्वास करना और प्रयोग के लिए कदम बढ़ाना कठिन प्रतीत होता था, पर अब वैसी बात नहीं रही । विज्ञान ने स्थूल तक सीमित न रहकर सूक्ष्म में प्रवेश करने का संकल्प किया है । फलतः उसे इन्द्रियातीत क्षेत्र की न केवल जानकारी मिली है, वरन् उपयोगिता समझ में आने पर श्रद्धा भी बढ़ी है ।

न्यूयार्क विश्वविद्यालय के डॉ. राबर्ट बेकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, कि ब्रह्माण्डव्यापी विद्युत चुम्बकीय शक्ति विश्व के प्रत्येक पदार्थ को, जड़-चेतन को अपने साथ जकड़े हुए हैं । विश्व की प्रत्येक इकाई उसी समष्टि की एक घटक है । अस्तु पृथकता के बीच सघन एकता विद्यमान है और उस एकता के कारण ही पदार्थों और प्राणियों में दृश्य-अदृश्य आदान-प्रदान होता है जो क्रम आयेदिन अनुभव में आता रहता है । वह सामान्य और जो यदा-कदा दीख पड़ता है, वह असामान्य अतीन्द्रिय या चमत्कारी कहा जाता है ।

कुछ ही वर्षों पूर्व की बात है कि प्रकाश विज्ञानी 'एर्नेस्ट एटो' और उनके सहयोगी वैज्ञानिक डी. गैवर ने होलोग्राफ के एक नये सिद्धान्त का आविष्कार किया, जिसके आधार पर त्रिआयामीय स्तर का छाया चित्रण आँखों से देखे जा सकने की परिकल्पना साकार हुई । भूतकालीन दृश्यों को इन्हीं आँखों से इस प्रकार देखा जा सकने की भी कल्पना की जाने लगी । मानों वह घटनाक्रम अभी-अभी ही बिल्कुल सामने घटित हो रहा हो ।

विज्ञानी ट्रेवर जेम्स का कहना है—"हमारी आँखें वर्णक्रम की अल्प मात्रा देख पाने में ही समर्थ है । हमारी आँख वर्णक्रम के सिर्फ सात रंगों को ही पकड़ पाती है, किन्तु इसमें लाल से लेकर बैंगनी तक केवल सात ही रंग नहीं होते, वरन् ऐसे लगभग दस अरब अदृश्य रंग होते हैं, जो आँखों को दिखाई नहीं पड़ते इनकी 'वेव लैंग्थ' (आवृत्ति) हमारी आँखों की पकड़ से बाहर होती है ।"

"सूक्ष्म जीवाणु हम नंगी आँखों से नहीं देख सकते, किन्तु माइक्रोस्कोप के सहारे उन्हें देखा जा सकता है । उसी प्रकार इन्फ्रारेड और अल्ट्रावायलेट फोटोग्राफी की सहायता से एक ऐसे अदृश्य-चेतनात्मक जगत में पहुँचा जा सकता है, जो देश और काल की सीमा से बाहर है ।"

आज वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं परावैज्ञानिक इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि 'प्रेत' एक कल्पना ही नहीं मानव के अभौतिक जीवन के दीर्घकरण की ही अभिव्यक्ति है और अल्ट्रावायलेट तकनीकी द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ली गई प्रेतों की तस्वीर, अदृश्यता की वैज्ञानिक सम्भावना की ओर इंगित करती है ।

विज्ञान इस सम्बन्ध में अपनी दलील देते हुए कहता है कि धूप की अदृश्य तरंगें हमारे शरीर, हमारे जीवन एवं नियति तक को प्रभावित करती है । हमारे शरीर के विद्युत क्षेत्र से उनका सम्पर्क अपवर्तनांक को जन्म दे सकता है । सम्भवतः यही अदृश्यता का कारण है ।

"प्रापगेशन ऑफ शार्ट रेडियो वेव्ज' नामक अपने शोध प्रबन्ध में हर्बट गोल्टस्टीन ने कहा है—"वायुमण्डल में संव्याप्त इस विद्युतमय जगत की तह के पीछे जो कुछ भी है, वह अदृश्य प्राणियों की दुनिया है, जिन्हें आँखों अथवा अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक सूक्ष्मदर्शियों के सहारे भी नहीं देखा जा सकता है ।"

सुप्रसिद्ध विज्ञान कथा लेखक एच. जी. वेल्स ने अपनी एक पुस्तक 'द इनविजिवल मेन' में उन सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला है, जिनके अनुसार कोई दृश्य पदार्थ या प्राणी अदृश्य हो सकता है और अदृश्य वस्तुएँ दृष्टिगोचर होने लगती हैं । इस विज्ञान को उन्होंने 'अपवर्तनांक रिफ्लेक्टिव इन्डिसेम' नाम देकर उसके स्वरूप एवं क्षेत्र का विस्तृत वर्णन किया है । निश्चित ही एक ऐसे सूक्ष्म जगत का अस्तित्व भी है जो अपने इस ज्ञात जगत की तुलना में न केवल अधिक विस्तृत वरन् अधिक शक्तिशाली भी है ।

पहली घटना के तथ्य मनीला की यू. पी. आई. नामक प्रामाणिक समाचार ऐजेन्सी ने जुटाये थे । इस ऐजेन्सी ने पूरी खोजबीन के पश्चात एक समाचार प्रकाशित कराया था, कि कार्नेलियो क्लोजा नामक एक बारह वर्षीय छात्र जब तब अनायास ही अदृश्य हो जाता है । स्कूल के क्लास से गायब हो जाना और दो-दो तीन-तीन घण्टे बाद वापस लौटना । आरम्भ में लड़के की चकमेबाजी समझी गई, किन्तु पीछे उसके दिये गए विवरण पर ध्यान देना पड़ा । वह कहता था कि कोई सम वयस्क परी जैसी लड़की उसे अपने पास बुलाती है और वह रुई की तरह हल्का होकर उसके साथ खेलने व उड़ने लगता है । पुलिस ने बहुत खोज की । उस लड़के पर विशेष पहरा भी बिठाया गया । यहाँ तक कि उसे एक कमरे में बन्द भी कर दिया गया, परन्तु उसका गायब होना नहीं रुका । पीछे तान्त्रिकों द्वारा मन्त्रोपचार किए जाने से उसका गायब होना बन्द हुआ ।

दूसरी घटना का उल्लेख फ्रांसीसी वैज्ञानिक सेलारियर द्वारा किया गया है । उनकी प्रामाणिकता पर या विश्वसंनीयता पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता । घटना पैरिस की एक प्राचीन प्रतिमा से सम्बन्धित है । वैज्ञानिकों का एक दल जब इस प्रतिमा की परीक्षा कर रहा था, तब देखते ही देखते प्रतिमा गायब हो गई और उसके स्थान पर एक दूसरी-विशालकाय मूर्ति आ विराजी, जो पहले की तुलना में बड़ी थी ।

सन् १९२० में लन्दन के युवा सांसद पिक्टर ग्रेसर एक दुकान से बाहर निकलते ही सहसा विलुप्त हो गए । इसी प्रकार पोलैण्ड निवासी पादरी बोनिस्की १३ जुलाई, १९५० को एक मित्र के पास जाने के लिए अपने घर से निकले । लगभग ८० मीटर दूर जाकर वे भी हवा में विलीन हो गए । खोज-ढूँढ़ के बहुतेरे प्रयास किए गए, किन्तु सब निष्फल रहे ।

इन घटनाओं से प्रतीत होता है कि, दृश्य जगत के अति निकट कोई अदृश्य लोक है । इन दोनों के बीच आदान-प्रदान चलता रहता है कोई दृश्यमान वस्तु या काया अदृश्य लोक में प्रवेश पाकर अदृश्य हो सकती है । साथ ही यह भी सम्भव है कि अदृश्य लोक के पदार्थ या प्राणी यकायक प्रकट होकर अपना आकस्मिक प्रकटीकरण करते हुए दर्शकों को चमत्कृत कर सकें ।

२३ सितम्बर, १९०८ को टेनेसी (अमेरिका) निवासी एक किसान 'डेविड लाग' अपने दो मित्रों के साथ शाम को हवाखोरी करने निकले और मित्रों के देखते ही देखते हवा में गायब हो गए । मित्रों ने उस स्थान की काफी छान-बीन की । परन्तु वहाँ जाड़-झंखाड़ और गड्ढे तो क्या कोई छोटी-सी-सूराख भी नजर नहीं आयी । साथ घूम रहे मित्रों में से एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश थे । उन्होंने लाग को खोजने के लिए भरपूर सरकारी प्रयास किए किन्तु सफलता नहीं मिली । आखिरकार हार कर उन्होंने अपनी टिप्पणी में लिखा—"यह एक अविश्वसनीय सत्य घटना है जिसका समाधान खोजने पर भी नहीं मिलता ।"

अचानक गायब होने की ऐसी घटनाएँ एक-एक व्यक्ति पर ही नहीं घटीं, अपितु ऐसी घटनाएँ भी हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनमें एक साथ सैकड़ों लोग अचानक अदृश्य हो गए और उनका कोई पता न चल सका ।

श्री एलन और श्रीमती क्रिस्टीन १९७५ की गर्मी की छुट्टियाँ मनाने उत्तरी ध्रुव की यात्रा पर निकले थे । लैपलैण्ड के एक गिरजाघर के पास से गुजरते हुए श्रीमती क्रिस्टीन चलते हुए श्री एलन से दो-तीन कदम आगे निकल गईं । फिर ज्यों ही उन्होंने मुड़कर देखा उनके पति लापता दिखाई दिए । न केवल उन्होंने स्वयं खोजबीन की, अपितु स्थानीय लोगों ने उनकी सहायता के लिए अपने कुत्तों का प्रयोग भी किया परन्तु कुत्ते उस स्थान पर पहुँचकर रुक जाते और भौंकने लगते थे, जहाँ से श्री एलन अदृश्य हुए थे । पास ही सेना का कैम्प था । उन लोगों ने भी श्रीमती क्रिस्टीन के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए उनके पति की शोध में विशेषज्ञों की मदद ली । पर सारे प्रयास विफल रहे । वे चार साल तक अपने पति की प्रतीक्षा करती रहीं । अन्ततः १९७९ में उनके अपने पति के यकायक हवा में गायब हो जाने की घटना का हवाला देते हुए लन्दन की अदालत में तलाक का मुकदमा दायर किया । अदालत ने तथ्यों का अवलोकन करते हुए श्री एलन को मृत घोषित करके उनकी पत्नी के विवाह-सम्बन्ध विच्छेद की याचिका को स्वीकृति दे दी ।

इन दिनों कितने ही विश्वविद्यालयों में परा मनोविज्ञान सम्बन्धी शोध कार्य बड़े उत्साहपूर्वक चल रहे हैं । केलीफोर्निया की स्टेनफोर्ड यूनीवर्सिटी, नीदरलैण्ड की ग्रोनिंगन यूनिवर्सिटी, हारवर्ड यूनिवर्सिटी, शिकागो यूनिवर्सिटी, ड्यूक यूनिवर्सिटी आदि में चल रहे शोध प्रयत्नों ने इस विज्ञान के नये अध्याय आरम्भ किए हैं और ऐसे प्रमाण एकत्रित किए हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि मनुष्य में काम चलाऊ व्यवहार बुद्धि के अतिरिक्त और ऐसा भी बहुत कुछ है, जिसे असामान्य एवं अद्‌भुत कहा जा सके । ऐसा क्यों होता है ? अचेतन और उपचेतन मन को विलक्षण क्षमताओं का स्वरूप और कारण समझने में इन शोध प्रयत्नों से बहुत सहायता मिली है और भविष्य में अधिक जान सकने की सम्भावना का पथ-प्रशस्त हुआ है ।

अदृश्य-जगत की चर्चा कई रूपों में होती है । भूत-प्रेत, देवी-देवता तो अपने अस्तित्व का प्रमाण और प्रभाव का परिचय तो देते हैं, किन्तु शरीरधारी प्राणियों की तरह दृष्टिगोचर नहीं होते । इसके अतिरिक्त उनका अस्तित्व काया के अनेक केन्द्रों में शक्ति गुच्छकों की तरह पाया जाता है । वे शरीर से ऋषियों की और मनःसंस्थान से सिद्धियों की दिव्य-विभूतियों का परिचय देते हैं । अतीन्द्रिय क्षमताएँ यही हैं । इनकी अलौकिकता के प्रमाण मिलते तो पहले भी थे, पर तब उन्हें भूत की करतूत कह कर जादुई रहस्यवाद की गर्त में धकेल दिया जाता था । पर अब वैसी बात नहीं रही । मनुष्य में पायी जाने वाली अतीन्द्रिय क्षमता अब इतनी स्पष्ट है उसे विज्ञान क्षेत्र ने अपने अनुसन्धानों में मूर्धन्य मानना आरम्भ कर दिया है क्योंकि पदार्थ की तुलना में व्यक्ति की सत्ता निश्चित रूप से वरिष्ठ है ।

मनुष्य की विभिन्न शरीर क्रिया विज्ञान परक एवं मनोवैज्ञानिक अवस्था की जाँच की गई तो देखा गया है कि सुषुम्ना नाड़ी का केन्द्र, अनेक स्नायुविक कोशिकाओं के गुच्छों के साथ जुड़ा एक जैवप्लाज्मीय सक्रियता का केन्द्र है । बायोप्लाज्मिक-सक्रियता "मूड" पर निर्भर देखी गई । उदाहरणार्थ कलाकार किसी कलाकृति के बारे में सोचते समय उच्चस्तरीय चेतना की स्थिति में थे तब उनका "कोरोना" अत्यन्त प्रकाशवान था । जबकि कुण्ठित और तनाव की अवस्था में बहुत क्षीण तथा मन्द उसमें काले धब्बे भी थे ।

एक अन्य प्रख्यात वैज्ञानिक जर्मनी के प्रो. विलहेम राइख भी 'प्राण शरीर' के अस्तित्व में भारतीय सिद्धान्त का मानवीय देह की एक प्रतिकृति के अस्तित्व के रूप में समर्थन करते हैं । वे इसे 'आर्गोन' कहते हैं । यानी "एक जैव विद्युतीय शक्ति-जो नीले रंग की है ।"

अब सभी जानते हैं कि प्राण विद्युत पर अनुसंधानरत रूस के विज्ञानवेत्ता ऐमयोन किर्लियान ने एक ऐसी फोटोग्राफी का आविष्कार कर लिया है, जो मानव के इर्द-गिर्द होने वाली विद्युतीय हलचलों का भी छायांकन करती है । इससे प्रतीत होता है कि, स्थूल शरीर के साथ-साथ सूक्ष्म शरीर की भी सत्ता विद्यमान है और वह ऐसे पदार्थों से बनी है, जो इलेक्ट्रॉनों से बने ठोस पदार्थ की अपेक्षा भिन्न स्तर की है और अधिक गतिशील भी ।

प्रो. एलीशाग्रे ने अपनी पुस्तक 'मिरेकल्स ऑफ नेचर' में लिखा है—प्रकाश की तुलना में विचार विद्युत प्रवाह गति कहीं अधिक है । अभी यन्त्रों के द्वारा उसे नापा और देखा नहीं जा सका, तो यह भी एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथ्य है कि विचार मात्र कल्पनाओं का उभार न होकर एक शक्तिशाली पदार्थ है । उसकी गति तथा क्षमता ज्ञात भौतिक शक्तियों में सबसे अधिक है ।

पदार्थ वैज्ञानिकों का कथन है कि पृथ्वी अपनी चुम्बकीय शक्ति के सहारे समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड में संव्याप्त अनेकानेक विशेषताओं को आकर्षित करती रहती है । उसकी अपनी सम्पदा तो नगण्य ही है । मनुष्य की अतीन्द्रिय क्षमता में वह चुम्बकत्व है जिसके द्वारा वह दुःसाध्य एवं सामान्यतः असम्भव दीखने वाले कार्यों को भी कर सकता है । वह दूरस्थ घटित घटनाओं का सचित्र आँखों देखा जैसा वर्णन कर सकता है । 'दूर की श्रवणातीत ध्वनियों को भी समीप की ही भाँति स्पष्ट सुन सकता है ।'

ध्रुवों के क्षेत्र में चुम्बकीय तूफान उठते रहते हैं, जिनका प्रकाश 'अरोरा बोरीएलिस' तेजोवलय (ध्रुव प्रभा) के रूप में छाया रहता है । इसे पृथ्वी के साथ अन्य ग्रहों की सूक्ष्म हलचलों के मिलन-स्पन्दन की प्रतिक्रिया कह सकते हैं । ठीक इसी प्रकार शरीरगत जीवाणु भी ईथर एवं वायु मण्डल में भरे विद्युत प्रवाह से टकराते रहते हैं और विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं । जीव कोशों में उन धातुओं तथा रसायनों की समुचित मात्रा रहती है, जो आघातों से उत्तेजित होकर विद्युत प्रवाह उत्पन्न कर सके ।

मानवी-चुम्बक अन्तरिक्ष से बरसने वाले अनेक भले-बुरे अनुदानों को अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप स्वीकार-अस्वीकार करता रहता है । वह अपने चुम्बकत्व के आधार पर इस विश्व-ब्रह्माण्ड में से अपनी जैसी सूक्ष्म धारा को एकत्रित कर उपयोग करता रहता है ।

प्राण चुम्बकत्व पदार्थ में से अपने उपयोगी भाग को खींचता है । उसे अपने ढाँचे में ढालता है और इस योग्य बनाता है कि चेतना के स्वर में अपनी भी ताल बजा सके । किस प्राणी के डिम्ब से किस आकृति-प्रकृति का जीव उत्पन्न हो, इसका निर्धारण मात्र रासायनिक संरचना के आधार पर नहीं हो जाता, वरन् यह निर्धारण रज, शुक्र कीटों के अन्दर भरी हुई चेतना के द्वारा होता है । इसी चुम्बकत्व से भ्रूण में विशिष्ट स्तर के प्राणियों की आकृति एवं प्रकृति ढलनी शुरू हो जाती है । यदि ऐसा न होता तो संसार में पाये जाने वाले समस्त प्राणी प्रायः एक ही जैसी आकृति-प्रकृति के उत्पन्न होते क्योंकि अणुओं का स्तर प्रायः एक ही प्रकार का है ।

शरीर की सामान्य क्षमता तनिक-सी प्रतीत होती है, किन्तु उसकी दृढ़ता, और जीवन को देखा जाय तो प्रतीत होगा कि उसका प्रत्येक छोटा-बड़ा अवयव असाधारण रूप से सामर्थ्यवान है । इसे प्राण शक्ति का ही चमत्कार जानना चाहिए ।

एक व्यक्ति ७० वर्ष का होते-होते १०० टन भोजन खा लेता है । अपने वजन की तुलना में यह १,२५० गुना अधिक है । कहा जाता है कि अधिकतर लोगों को तीन दिनों के उपवास की आवश्यकता है । इन्सान वगैर भोजन किए बहुत दिनों तक जिन्दा रह सकता है । रूसी शोधकर्त्ताओं का कहना है कि एक आदमी के बारे में कहा गया है कि उसने ५२ दिनों तक उपवास किया ।

७० वर्ष के समय तक एक औसत आदमी १३ वर्ष सोता है ६ वर्ष खाता है और इतना चलता है जो चाँद तक पहुँचने और इस दुनिया का ६ बार चक्कर लगाने तक हैं । साफ त्वचा रोगाणुओं को नष्ट करती है । मानवीय त्वचा में ३ करोड़ रोगाणु पाये जाते हैं । इनमें से ७,२०,००० एक घण्टे तक और ७००० दो घण्टों तक जीवित रहते हैं ।

शरीर की ही भाँति मनःसंस्थान भी विशिष्ट सामर्थ्यों से भरा-पड़ा है । प्रश्न केवल जागृति और सुषुप्ति का है, जो अपने मनःसंस्थान के अन्धेरे की गर्त में पड़े केन्द्रों को जला लेता है, वह अविज्ञात विलक्षण क्षमताओं से सम्पन्न बनता है । बहिरंग की दृष्टि में ये सभी असम्भव अद्भुत जान पड़े, परन्तु यह सब प्रकृतिगत नियमों पर आधारित गूढ़ विज्ञान जिसे ऋषियों ने जाना, व्यवहार में उतारा तथा योगाभ्यास प्रकिया द्वारा क्रियान्वित कर स्वयं को प्राण ऊर्जा से सम्पन्न अतीन्द्रिय सामर्थ्यों से भरा-पूरा बनाया था । यह राजमार्ग सबके लिए खुला पड़ा है ।

जैव चुम्बकत्व की चमत्कारी शक्ति

मानव को मिली अनेकानेक विभूतियों में एक है—चुम्बकत्व । चुम्बक का गुण है—"आकर्षण ।" इसकी यह अदृश्य शक्ति वस्तुओं को अनायास अपनी ओर खींचती रहती है । यदि चुम्बक से उसकी इस क्षमता को पृथक कर दिया जाय, तो वह मात्र धातु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खण्ड बनकर रह जायेगा । तात्पर्य यह कि उसमें जो कुछ भी विलक्षणता नजर आती है, यह उसी अदृश्य शक्ति के कारण है । यह चुम्बकत्व सिर्फ लौह-खण्डों में ही नहीं पाया जाता, वरन् सम्पूर्ण जीव-जगत में इसकी विद्यमानता होती है । इसी के कारण जीव-जन्तुओं के शरीरगत क्रिया-कलाप सुचारु रूप से चलते रहते हैं । मनुष्यों में भी इसका एक अंश पाया जाता है । असीम सम्भावनाओं के रूप में जो क्षमता उसमें निहित है, वह इसी शरीर चुम्बकत्व के कारण है । व्यक्तित्व सम्पन्न लोग अपने अन्दर ओजस्, तेजस् वर्चस् इसी के द्वारा पैदा कर पाते हैं ।

इतना ही नहीं, प्रयोग-परीक्षणों से अब यह भी ज्ञात हो चुका है कि यह काय-चुम्बकत्व दिशा-ज्ञान में भी सहायक होता है । वैज्ञानिकों का कहना है कि अन्धे लोग इसी चुम्बकत्व के कारण मार्ग निर्धारण में सफलता पाते और कुशलतापूर्वक गन्तव्य तक पहुँचते हैं ।

वैज्ञानिकों ने इस क्षमता को 'चुम्बकीय इन्द्रिय' बताते हुए कहा है कि पृथ्वी का चुम्बकत्व मानवी चुम्बकत्व पर प्रभाव डाले, इसमें दूसरे प्रयोग में रखी छड़ ने व्यवधान डाला ।' मानवी चुम्बकत्व अपनी क्षमता के सहारे अपनी दिशा स्वयं ढूँढ़ने में मनुष्य की सहायता करता है । वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपनी इस चुम्बकीय क्षमता का सुनियोजन करता है । इस प्रकार छठी इन्द्रिय (अर्थात् चुम्बकीय इन्द्रिय) कोरी कल्पना नहीं है ।

यह चुम्बकत्व यदा-कदा जब अधिक परिमाण में उत्पन्न हो जाता है और शरीर द्वारा उसका सदुपयोग नहीं हो पाता, तो बाहर लीक करने लगता है और विभिन्न प्रकार के क्रिया-कौतुक पैदा करता है ।

अभी तक जीव विज्ञानी और मनोवैज्ञानिक यह नहीं समझ पा रहे थे कि किसी को देखकर अनायास अपनापन महसूस होना, उसकी ओर आकर्षित हो जाना एवं किसी की सूरत देखते ही डर या घृणा का अनुभव होना, ऐसा क्यों होता है ? पर अब इस गुत्थी का हल उन रूसी वैज्ञानिकों ने ढूँढ़ निकाला है, जो सतत परामनोविज्ञान की शोध में निरत रहते हैं । उन्होंने जैव चुम्बकत्व से सम्बन्धित कुछ दिलचस्प निष्कर्ष अभी पिछले दिनों विभिन्न वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित किए हैं । जिनसे इस विषय पर प्रकाश पड़ता है । प्रोफेसर बी. वी. येफिमोव का कहना है कि इस सारी क्रिया का कारण जीव जगत में, जिसमें वनस्पतियाँ भी शामिल हैं, एक प्रकार के चुम्बकत्व का होना है । उनके अनुसार पक्षियों का पंक्तिबद्ध होना या अलग-अलग उड़ना उत्तर की ओर बोये जाने वाले बीजों में अन्य दिशाओं की अपेक्षा कम समय में अंकुर फूटना आदि विलक्षणताएँ पृथ्वी तथा जीव-वनस्पतियों के चुम्बकीय तत्वों के कारण ही देखने को मिलती हैं ।

शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि चुम्बक का उत्तरी ध्रुव जीवाणु क्रिया को नियन्त्रित करता है और दक्षिणी ध्रुव शक्ति पोषण की आवश्यकता पूरी करता है । अस्वस्थता को इन दो वर्गों में वर्गीकृत करके यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चुम्बक की दोनों धाराओं में से किसका, कहाँ और कितना उपयोग किया जाय ? इस सिद्धान्त का प्रयोग अब चिकित्सा जगत में भी सफलतापूर्वक किया जा रहा है । स्विट्जरलैण्ड के डॉक्टर फिलिप्स आरोलस परासेल्सस ने कितनी ही बीमारियों का कारण शरीरगत चुम्बकत्व की विकृति एवं विशृंखलता को सिद्ध किया है । ऐसे रोग जिनका कारण ठीक से वे समझ नहीं पा रहे थे और चिकित्सा के अनेक प्रयोग असफल रहे थे । डॉ. फिलिप्स ने रुग्ण केन्द्र मूलों में चुम्बक की आवश्यक मात्रा पहुँचा कर उन्हें उन रोगों से मुक्ति दिलाई । जर्मनी के वानहेलमाण्ट इसी शक्ति का उपयोग करके शारीरिक और मानसिक रोगियों को कष्ट मुक्त करने में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं । भारत में भी चुम्बकोपचार के विभिन्न केन्द्र सफलतापूर्वक चल रहे हैं ।

महामानव महापुरुषों में भी यही चुम्बकत्व काम करता है । वे इसे इस स्तर तक विकसित कर लेते हैं, कि जहाँ भी, जिस भी क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, वहीं अपने प्रभाव क्षेत्र से अनेकों को लाभ देते देखे जाते हैं ।

ईसा मसीह, मुहम्मद जरथुस्त्र आदि धार्मिक क्षेत्र के मनस्वी ही थे, जिन्होंने लोगों को अभीष्ट पथ पर चलने के लिए विवश किया । उपदेशक लोग आकर्षक प्रवचन देते रहते हैं, पर उनकी कला की प्रशंसा करने वाले भी उस उपदेश पर चलने के लिए तैयार नहीं होते । इसमें उनके प्रतिपाद्य विषय का दोष नहीं, उस मनोबल की कमी ही कारण है । जिसके बिना सुनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले के मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न किया जा सकना सम्भव न हो सका । नारदजी जैसे मनस्वी ही अपने स्वल्प पुरुषार्थ से लोगों की जीवनधारा बदल सकते थे । वाल्मीकि, ध्रुव, प्रह्लाद, सुकन्या आदि कितने ही आदर्शवादी उन्हीं की प्रेरणा भरी प्रकाश किरण पाकर आगे बढ़े थे ।

समर्थगुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, गुरुगोविन्द सिंह, दयानन्द, कबीर आदि मनस्वी महामानवों ने अपने समय के लोगों को उपयोगी प्रेरणाएँ दी थीं और अभीष्ट पथ पर चलने के लिए साहस उत्पन्न किया था । गाँधी जी की प्रेरणा से स्वतन्त्रता संग्राम में अगणित व्यक्ति त्याग-बलिदान करने के लिए जिस उत्साह के साथ आगे आये, यह अभी पिछले ही दिनों की घटना है । वस्तुतः ऐसे चमत्कार महामानवों में व्यक्तित्व में घनीभूत काय-चुम्बकत्व के कारण ही सम्भव हो पाते हैं ।

हम में से प्रत्येक में इस तत्व का समावेश स्रष्टा ने किया है, जिससे कि हम उसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की सफलताएँ अर्जित करने में कर सकें पर इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि हममें से अधिकांश उस शक्ति का दुरुपयोग कर छूँछ जैसी स्थिति में आ जाते और जीवन को दीन-दयनीय बना लेते हैं । यदि इस स्थिति से बचा जा सके, उस अमूल्य निधि का सदुपयोग किया जा सके तो हम भी अपना व्यक्तित्व वैसा ही उत्कृष्ट और आकर्षक बना सकते हैं जैसे कि हमारे पूर्वज, ऋषि व देव मानते थे ।

आभामण्डल की प्रभाव-क्षमता अब सन्देह से परे !

स्थूल शरीर को सतत स्पन्दन देने वाली उसकी सत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने वाली ऊर्जा शक्ति एक ही है, किन्तु उसके नाम अनेक रूपों में जाने जाते हैं, चीन व जापान में इसे "साय" या "की' एनर्जी, रेड इण्डियन्स में "आरेण्डा" रूस में "बायोप्लाज्मा" तथा आधुनिक पाश्चात्य जगत में इसे "ऑरगॉन एनर्जी" नाम से पुकारा जाता है । भारतीय दर्शन इसी शक्ति को प्राण ऊर्जा कहता है ।

चिकित्सा जगत के पितामह माने जाने वाले पैरासेल्सस की यही मान्यता थी कि मानवी काया बड़ी विलक्षण है । इसके भीतर निहित ऊर्जा पुंज काया के बाहर भी एक प्रकाश पुंज के रूप में प्रतिभासित होता रहता है । इसे हम चाहें तो प्राण शरीर कह लें अथवा प्राणमय कोष अथवा थियोसॉफी की भाषा में 'इथरीक डबल', है यह प्राण ऊर्जा का एक रूप ही । "बैक थ्रू टू क्रिएटीविटी" नामक ग्रन्थ में विद्वान लेखक आर्नल्ड जेन्सन ने बताया है कि हमारे शरीर के इर्द-गिर्द ही नहीं, अपितु आर-पार फोटॉन्स के माध्यम से निकलने वाले तीव्र प्रकाश का एक विद्युत चुम्बकीय परिकर होता है, जो काया के अंग-प्रत्यंग को ही नहीं समूचे परिकर को प्रभावित करता है । जो इसका क्षरण रोक कर उसे संग्रहीत करता है, वह प्राण शक्ति सम्पन्न बनता है, ऋद्धि-सिद्धियाँ उस पर बरसती हैं ।

यह चर्चा मानवी चुम्बकत्व से उपजे प्रभामण्डल के सन्दर्भ में चल रही है । इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध मनःचिकित्सक-लेखक 'जेफ्री मिशलोव' ने अपने ग्रन्थ "रूट्स ऑफ कॉउन्सियशनैस" में पाश्चात्य जगत में हुए प्रयोगों, जिनका मूल आधार भारतीय धर्म ग्रन्थ हैं, का उल्लेख किया है । उन्होंने ऑरा खण्ड में बताया है कि डॉ. किल्नर ने मनुष्य के हृदय से नीला, हाथ के अग्रभाग से नीला-हरा एवं जाँघ जननेन्द्रियों के क्षेत्र से हरा रंग निःभृत होते देखा व फोटोग्राफी द्वारा उसे रिकॉर्ड भी किया । विभिन्न व्यक्तियों पर प्रयोग कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इन रंगों में भिन्नता, मनुष्य की भावना, विचारणा अन्तःकरण की उत्कृष्टता-निकृष्टता के आधार पर निर्धारित होती है । वस्तुतः प्रभामण्डल सूक्ष्म मनोवेगों से बना एक आयन मण्डल है, जिससे चारों ओर एक उच्च स्तरीय ऊर्जा क्षेत्र बनता है । रूस के ऑरासायकिएट्री इंस्टीट्यूट की प्रमुख थेल्मामॉस ने भी इस दिशा में काफी प्रयोग किए हैं ।

ईसाई धर्म के पवित्र ग्रन्थ बाइबिल में इस शक्ति को "ऑरेओला" नाम दिया गया है । अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न मनीषी स्वीडन बोर्ग ने अपनी स्प्रीचुअल डायरी में लिखा है कि प्रत्येक जीवधारी का शरीर आध्यात्मिक प्रकाश से घिरा रहता है । इसका रंग मानवी स्वभाव, स्वास्थ्य, भावनाएँ जीवनचर्या के संयम, नियम-अनुशासन, आत्म-विश्वास के आधार पर बदलता रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डॉ. किल्नर से पूर्व रिचेन बेच ने मनुष्य की अंगुलियों के सम्वेदनात्मक चित्र खींच कर इसे "ओडिस फोर्स" नाम दिया था । रिचेन बेच के अनुसार "ओजस् एवं तेजस्" का दूसरा नाम ही तेजोवलय है । यह शरीर के चारों ओर छह इंच की दूरी तक फैला रहता है । चेहरे पर उसकी मात्रा, सघनता की परिधि अधिक होती है एवं इसे एक प्रकार की भाप ऊष्मा समझा जा सकता है । यह भाप निकट क्षेत्र में तो खुली आँखों से देखी जा सकती है, पर कुछ ऊँचा उठने के बाद वह विरल एवं अदृश्य हो जाती है, फिर भी उसका अस्तित्व बना रहता है । रात्रि में शीतलता का सम्पर्क होने पर जिस प्रकार सूर्य ऊष्मा घास-पात पर ओस बिन्दु बनकर जमा हो जाती है, ठीक उसी प्रकार स्थूल शरीर एवं उसमें समाई हुई प्राण चेतना का समन्वय जब क्रियाशील होता है तो, उस ऊर्जा की सक्रियता अन्तरंग में बढ़ने के अलावा त्वचा के बाहर भी उसका फैलाव होने लगता है । यही ओजस् या तेजोवलय है ।

"द ओरीजीन एण्ड प्रोपर्टीज ऑफ ह्यूमन ऑरा" के लेखक डॉ. किल्नर ने स्पष्ट किया है कि पाशविक प्रवृत्तियाँ, निद्रा, भूख, प्यास, क्रोध, वासना, विषय लोलुपता आदि प्रभामण्डल को काले रंगों से भर देते हैं । वे मस्तिष्क की विकृति का मूल कारण मस्तिष्क के अणुओं का रोगी होना मानते हैं ।

तान्त्रिक एवं थियोसोफिस्ट इसे हिन्दू दर्शन द्वारा निर्धारित काया के षट्चक्रों से जोड़ते हैं, जो आध्यात्मिक प्रगति के साथ जागृत होते चले जाते हैं । अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न व्यक्तियों ने इसे विभिन्न आकार एवं रंगों में देखा है । कुछ वैज्ञानिक इसे मानव की जैव-विद्युत का उत्पादन ही मानते हैं, जो व्यक्ति की भिन्न-भिन्न प्रकृति के अनुसार चारों ओर फैला रहता है ।

"मैन विजीबल इन विजीबल" के लेखक डॉ. लेडबीटर का मत है, कि तेजोवलय वस्तुतः अन्तरंग में समाहित प्राण शक्ति का बाहर झाँकता हुआ, मँडराता हुआ स्वरूप है । वह उच्च स्तरीय भी होता है और निकृष्टतम भी । रूप सौन्दर्य वाले व्यभिचारियों में, वेश्याओं में, ठगों में, क्रूर आक्रान्ताओं में एवं निकृष्ट चिन्तन वाले लोगों में यह अत्यन्त निम्न स्तर का होता है । इसे असुरता का परिचायक कह सकते हैं । इसका सघन होना धारणकर्त्ता के पतन का द्वार खोलता है । जिस पर ऐसा प्रभामण्डल प्रभाव छोड़ता है, उसे अशक्त, असहाय बनाकर निर्जीव, पराधीन की स्थिति में ला पटकता है । इस आसुरी तेजोवलय का रंग कालिख लिए होता है, ऐसा दिव्यदर्शियों का मत है ।

मनीषियों का मत है कि कामोत्तेजना के कारण यदि व्यक्ति रोगी हो तो मस्तिष्क के अणुओं की आभा काले व गहरे लाल रंग की होगी एवं द्वेष से पीड़ित अणुओं की आभा हरे रंग की होगी । इसी प्रकार विभिन्न दुर्गुणों से पीड़ित होने पर अणु आभा अलग-अलग रंग की होती है एवं इस आधार पर व्यक्ति के अन्तरंग को पहचाना जा सकता है ।

सन्त सज्जन एवं देव प्रवृत्ति के लोगों का तेजोवलय पीली आभा लिए हुए होता है । वे समीपवर्ती लोगों को स्नेह, अनुग्रह, अनुदान अनायास ही देते रहते हैं । ऐसे व्यक्ति के समीप बैठने वाले एक विधेयात्मक आकर्षण, आन्तरिक आनन्द की, उल्लास की अनुभूति करते हैं । उनसे सतत सम्पर्क बनाये रखने से उनका आशीर्वाद पाने की आकांक्षा बनी रहती है । महामानवों, देव-दूतों, देव मानवों के रूप में जो भी सिद्ध पुरुष जन्मे हैं, उनके चहुँ ओर सदैव श्रेष्ठ लोगों का बाहुल्य इसी कारण पाया जाता रहा है ।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मनीषी डॉ. कोलीन विल्सन और स्टार्ट हालराइड ने अपनी किताब "मिस्ट्रीज ऑफ द माइण्ड" में लिखा है कि देवताओं, अवतारों के चेहरे के चारों ओर जो प्रभामण्डल चित्रित किया जाता है, वह वस्तुतः प्राण ऊर्जा का ही प्रतीक है । यह उनकी आध्यात्मिक विशिष्टता का परिचय देता है । यों इसे खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता, किन्तु जिनका अतीन्द्रिय ज्ञान जागृत है, उन्हें बहिरंग को देखकर ही व्यक्ति की मानसिक आन्तरिक स्थिति का परिचय मिल जाता है ।

इसी प्रभामण्डल का वैज्ञानिक विश्लेषण करने की दृष्टि से रूस के वैज्ञानिकों सीमेन, वेलेन्टाइना एवं किर्लियन ने जब हाइवोल्टेज विद्युत प्रवाहित की, तो पाया कि जीव, प्राणियों, वनस्पतियों के चारों ओर प्रकाश किरण का प्रवाह बिखरा पड़ा है, तब उसे उन्होंने बायोप्लाज्मिक बॉडी नाम दिया । इन वैज्ञानिकों ने बताया कि प्रत्येक जीव इस बायोप्लाज्मिक बॉडी से घिरा रहता है । किर्लियन फोटोग्राफी में पौधों के पत्तों से निकलने वाली प्रकाश किरणों को दिखाया गया । उन्होंने आगे स्पष्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया कि एक ही जाति के पत्तों में भिन्न-भिन्न रंग प्राप्त हुए जो पत्तों में जीवनी शक्ति एवं रोगों की स्थिति की जानकारी देते हैं । विभिन्न बैक्टीरिया के प्रभाव से पूर्व इन रंगों में परिवर्तन होते भी देखा गया ।

यह बायोप्लाज्मा मनुष्यों में सम्भावित रोगों के बारे में भी जानकारी देते हैं । बैम्नेल (लन्दन) एवं रिगस (अमेरिका) वैज्ञानिकों के मतानुसार ऑरा का पूर्व मापन करके बताया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति किस मनोविकार का शिकार है एवं भविष्य में इसे कौन-सा रोग हो सकता है ? मस्तिष्क में रक्तस्राव, दमा, उदयाघात, कैंसर सम्भावित रोगों में पूर्व से ही निदान की इस विधि में ६० से ८० प्रतिशत सफलता उन्हें मिली है । उन्होंने निषेधात्मक एवं विधेयात्मक चिन्तन के ऑरा का भी गहरा विश्लेषण किया है ।

पाश्चात्य परामनोवैज्ञानिकों "बायोप्लाज्मिक बॉडी" के प्रभाव को पूर्वार्त्त मनोविज्ञानियों की तरह ही स्वीकारा है । डॉ. मान्टेग्यू अलमेन ने "सायकिक मेगेजिन" में लिखा है कि, ये प्रकाश पुंज मनुष्य के मन एवं अन्तःकरण से सम्बन्धित हैं, जिससे सारा वातावरण प्रभावित होता है । श्वेत एवं तेजस्वी वलय शरीर एवं मनोगत समर्थता का परिचायक है । इनमें सन्निहित रंगों की आभा मानसिक विशेषता को प्रदर्शित करती है । जबकि दिव्यता विहीन धुंधले कुहरे जैसा वलय मानसिक दृष्टि से गए-बीते एवं निकृष्ट चिन्तन की ओर इंगित करता है । इस लेख में उन्होंने आगे लिखा है कि यह "बायोप्लाज्मिक बॉडी" अपने आसपास के वातावरण के घूमते कणों को अपनी शक्ति से चार्ज कर देती है । इस प्रक्रिया को उन्होंने "आयोनाइजेशन" कहा है । जिस स्तर के प्राण प्रवाह होते हैं, परिष्कृत अन्तःकरण होता है, चिन्तन का स्तर होता है, उसी के अनुरूप ऑरा का निर्माण होता है एवं सारा वातावरण इन आयन्स से चार्ज हो जाता है ।

डॉ. जार्जमिक ने मानवी प्रभामण्डल को तीन भागों में बाँटा है । "पहला शरीर तक सीमित विद्युत विभव, दूसरा शरीर के बाहर तक निकला तेजोवलय एवं तीसरा शरीर को कवच की तरह चारों ओर से लपेटे ६ से ८ इंच तथा साधनात्मक प्रगति पर कई फीट तक का विस्तार वाला क्षेत्र ।" तीसरे प्रभावशाली आभा परिकर को उन्होंने "जोन ऑफ एनर्जी" कहा है । पहले में बिन्दु होते हैं, दूसरी में रेखाएँ और तीसरे में सघन आयनों का समुच्चय । पहले को स्थूल शरीर या बायोप्लाज्मा, दूसरे को प्लाज्मा एवं तीसरे को आयन विकिरण कहा गया है । जिसमें वास्तव में हीलिंग (चिकित्सा) की क्षमता होती है । प्राण प्रत्यावर्तन में इसी की प्रधान भूमिका होती है । हाथ सिर पर या रुग्ण अंग पर रखकर चिकित्सा करने वाले आयन विकिरण प्रक्रिया द्वारा ही यह सायकिक हीलिंग करते हैं ।

मात्र स्थूल शरीर तक सीमित विद्युत विभव जो बिन्दु रूप में क्रियाशील है, विशेष आभा रूप में निकलता है, इसमें उपचार की शीघ्रगामी क्षमता है । प. जर्मनी के अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न वैज्ञानिक जार्ज मिचेल ने "थियो-सोफिका प्रेक्टिका" में लिखा है कि इन बिन्दुओं से प्रकाश किरणें निःसृत होती रहती हैं । इसका सम्बन्ध उन्होंने चीन में चल रहे एक्यूपंचर चिकित्सा विधि से जोड़ा है । एक्यूपंचर एवं जार्ज मिचेल द्वारा बताये गए बिन्दुओं में विलक्षण समानता पायी गई है । एक्यूपंचर विशेषज्ञों का कहना है कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जीवनी शक्ति एक विशेष अदृश्य रेखाओं से आती है, जिनका सम्बन्ध सम्पूर्ण शरीर से है । उन बिन्दुओं पर सुई का स्पर्श या थोड़ा-सा दबाव (एक्यूप्रेशर) दर्द या रोग को तुरन्त समाप्त कर देता है । विशेषज्ञों के अनुसार इन बिन्दुओं को उत्तेजित करने पर उन विशेष बिन्दुओं से विशेष आभा निकलती है, जिसके द्वारा स्थूल शरीर में दृष्टिगोचर होने वाले रोगों का उपचार किया जा सकता है । दर्द को समाप्त कर व्यक्ति को कष्ट मुक्त किया जा सकता है ।

एक्यूपंचर के बिन्दु, बायोप्लाज्मिक बॉडी, आयनीकरण इत्यादि सभी एक ही तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यदि अपने सूक्ष्म व कारण शरीर की संरचना को सुदृढ़ बनाया जा सके, प्रसुप्त केन्द्रों को उत्तेजित किया जा सके तो, जागृत प्राण ऊर्जा के प्रभाव से न केवल स्वयं रोग मुक्त रहा जा सकता है, अन्यान्यों को भी लाभान्वित किया जा सकता है । प्रभामण्डल एक प्रकार का छाया पुरुष है । इसकी सिद्धि जो कर लेता है, वह न केवल सामने वाले के गुण, कर्म, स्वभाव को जाँचने-परखने में सिद्धहस्त हो जाता है, वरन् उसे यह मार्ग दर्शन दे सकने में भी समर्थ हो जाता है कि कैसे उसे अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को सशक्त बनाना चाहिए ? इसके लिए क्या उपचार, किस प्रकार किए जाने चाहिए ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आभामण्डल की जानकारी अब मात्र रोग निदान-उपचार तक ही नहीं सीमित रही है । इसका उपयोग आध्यात्मिक उपचार, शक्ति सम्वर्धन मनोबल व संकल्प शक्ति के उछालने में भी किया जा सकता है । वह क्रमशः स्पष्ट होता जा रहा है । भावी आत्मबल सम्पन्न व्यक्तियों की पीढ़ी इसी आधार पर विनिर्मित होगी ।

प्राण शक्ति का आकर्षण

अवधारणा

योग का प्रमुख उद्देश्य प्राण को नियमित पाना है । इसके लिए पहले मानसिक संवेगों को नियमित किया जाता है । यही प्राण शक्ति हमारे अन्तःकरण को शक्ति देती है । हठ योग से हम अपने शरीर और शक्तियों को संयमित रख सकते हैं । हठ योग, पाँच हजार वर्षों से चले आ रहे योगियों के अनुभवों का सार है और विज्ञान भी इसको मानता है । प्राणायाम मनुष्य के शरीर में प्राण को नियमित करने का योगिक-विज्ञान है । शरीर की समस्त शक्तियाँ प्राण से मिलती हैं । शरीरिक, मानसिक और आन्तरिक शक्तियों को बढ़ाने का उत्कृष्ट साधन योग और प्राणायाम है ।

अपने अंगों के द्वारा हम लगातार ब्रह्माण्ड से प्राण ग्रहण करते हैं । योगियों के अनुसार ये अंग निम्न चार हैं—(१) नाक के भीतर स्नायुओं के अन्तिम भाग (२) फेफड़ों में वायु कोश (३) जीभ और (४) चमड़ी (त्वचा) । पाश्चात्य दर्शन के अनुसार त्वचा से हम लगातार प्राण को खींचते हैं । योगियों के अनुसार योग से हम इस प्राण शक्ति का आकर्षण, पाचन और नियमन अधिक सुगमता से और अधिक मात्रा में करते हैं । त्वचा के छिद्र प्राण शक्ति को पाने एवं अवशिष्ट वस्तुओं को शरीर से निकालने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं । त्वचा को धूप में खुले रखने से हम अधिक प्राण पाते हैं । सूर्य स्नान इसी कारण बहुत लाभदायक है । अन्न, फल, शाक आदि सौर शक्ति से भरपूर हैं, इसलिए प्राणदायक कहलाते हैं ।

पूर्वार्त और पाश्चात्य दर्शन, दोनों के अनुसार हम भोजन से बहुत अधिक प्राण शक्ति पाते हैं । इस जीभ द्वारा जो हम पाते हैं, अन्य अंग (पेट आदि) प्राण नहीं ग्रहण करते । भोजन का स्वाद ही उसका प्राण है । योगी भोजन को तब तक चबाते हैं, जब तक उसका स्वाद समाप्त नहीं हो जाता । अन्न के सारे प्राण जीभ द्वारा सोखे जाते हैं । इसके बाद यह प्राण भोजन का कोई भी पाचन अंग ग्रहण नहीं कर सकता । थकावट और सुस्ती होने पर कुछ खाने से वह तुरन्त दूर हो जाती है । इसका कारण जीभ द्वारा उस अन्न के प्राण को ग्रहण करना ही है । अन्न का पाचन तो अनेक घण्टों के बाद होता है । तब वह मात्र अंगों को पोषण देता है, प्राण नहीं दे सकता । यह पाचन उन अंगों के ७० प्रतिशत प्राण शक्ति को खर्च कर देता है । प्राण की प्राप्ति इन अंगों (पेट, आंत्र, लिवर) से नहीं होती है । होम्योपैथी पद्धति इसका ज्वलन्त उदाहरण है । जिसमें दवा की सूक्ष्म मात्रा को जीभ पर रखना भर पड़ता है ।

योगियों और पश्चिमी विज्ञानियों के अनुसार नाक, प्राण ग्रहण करने का एक और मुख्य अंग है । इस हवा के बिना हम क्षण भर जीवित नहीं रह सकते और रोगों एवं मृत्यु से ग्रस्त हो जाते हैं । मनुष्य प्रति मिनट १८ श्वास में एक लिटर हवा ग्रहण करता है और २४ घण्टे में १३००० लिटर । इसके समक्ष २ लिटर पानी और एक किलो अन्न से प्राप्त शक्ति मनुष्य के लिए नगण्य है । हवा शरीर का मुख्य पोषक तत्व है । अतः नाक के भीतर हवा ग्रहण करने के लिए असीम मात्रा में अल्ट्रा सेन्सिटिव नर्वस् रिसेप्टर्स होते हैं, जो हवा के समस्त गुणों को ग्रहण करते हैं ।

नाक हवा को ग्रहण योग्य बनाती है । धूल, गर्मी और नमी से मुक्त करती है और दुर्गन्ध को न ग्रहण करने की सूचना देती है । प्राकृतिक सुगन्ध में बहुत प्राण होता है, जिसे नाक ग्रहण करती है । सेन्ट पौधों और फूलों का प्राण-तत्व है । जो अनेक प्रकार की मक्खियों को आकर्षित करता है । इससे इनके पराग इन मक्खियों द्वारा दूसरे पौधों में फूलों की उत्पत्ति के कारण बनते हैं । यह गन्ध अनेक प्रकार की मक्खियों को दूर भी भगाती हैं और कुछ को नष्ट भी करती हैं । फूलों की सुगन्ध को गहरे श्वासों से खींचने पर हम अधिक प्राण पाते हैं । एरोमाथिरेपी में सुगन्ध को सुँघाकर कई रोगों की चिकित्सा करते हैं । सुगन्ध की मालिश से भी कुछ कष्ट दूर होते हैं।

प्राकृतिक सुगन्ध ही लाभदायक है, कृत्रिम से लाभ नहीं होता, क्योंकि उसमें प्राण नहीं होता । सुगन्ध के ये आयन्स रक्त प्रवाह में पहुँचकर रोगग्रस्त सैल्स

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अंगों को शक्ति देते हैं एवं अवांछित तत्वों को घोलकर रक्त द्वारा विसर्जन अंगों तक पहुँचाते हैं और सेल्स को पुष्ट करते हैं । ये शक्तिशाली आयन्स सैल्स में स्वस्थ कम्पन्न फिर से पैदा करते हैं और उनमें इलेक्ट्रो सैंगुइन (लाल कण) पैदा करते हैं । नासिका के नर्वस् का सम्बन्ध स्पाइनल कॉर्ड और आबलांगेटा से है । अतः गन्ध से प्राप्त आयन्स की प्राण शक्ति शरीर की समस्त क्रियाओं पर गहरा एवं तुरन्त प्रभाव डालती है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बेहोश मनुष्य को स्मेलिंग साल्ट सुँघाने से उसका तुरन्त होश में आ जाना है अथवा एनेस्थेसिया द्वारा बेहोश कर देना है ।

नासिका के स्नायु तन्तुओं द्वारा गन्ध ग्रहण करने से उसका रिफ्लेक्स प्रभाव आमाशय, लिवर, किडनीज, प्लीहा आदि समस्त शारीरिक अंगों में स्नायु मण्डल के द्वारा पड़ता है । इससे एक अलग रिफ्लेक्स थिरेपी नये रोगों को दूर करने के लिए प्रचलित है । नासिका के स्नायु तन्तुओं का जाल अँगूठे के प्रिण्ट के समान निश्चित एवं विश्वसनीय है । फेफड़ों के वायु सेल्स से ऑक्सीजन का रक्त में मिलना रक्त की बायो-इलेक्ट्रिक शक्ति पर निर्भर है । इस तरह फेफड़े भी प्राण ग्रहण की क्रिया करते हैं ।

जैव भौतिकी (बायोफिजिक्स) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रत्येक सेल का जीवन उसमें प्रवाहित विद्युत तरंगें (प्राण) हैं । इसे समझने के लिए आजकल पाश्चात्य वैज्ञानिक आधुनिक साधनों से यौगिक क्रियाओं का समर्थन किस तरह करते हैं, इस पर हम विचार करें । इससे चीनी 'एक्यूपंचर' पद्धति से प्राण का शरीर में संचालन भी समझ सकते हैं । योगियों के अनुसार ब्रह्माण्ड में जो कुछ है, वे सब हमारे शरीर के विभिन्न अंगों के प्रत्येक सेल में सूक्ष्म रूप में हैं । यह प्राण जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक निरन्तर बना रहता है ? विज्ञान इसका सम्बन्ध रोगों और स्वास्थ्य से भी उतना ही घनिष्ठ मानता है, जिसे योगी लोग भी मानते हैं ।

डॉ. वैलेस के अनुसार हमारा शरीर ब्रह्माण्डीय शक्ति को ग्रहण करके अपनी समस्त आन्तरिक क्रियाओं को करता है । वर्लिन के फ्रेक्रॉउस के अनुसार हमारे भीतरी भागों में लगातार ब्रह्माण्डीय प्राण ऊँचे अंगों से निम्नांगों की ओर प्रवाहित रहता है और यह प्राण स्नायु संस्थानों के अलावा समस्त झिल्लियों एवं द्रवों में होता है । योगियों के अनुसार हमारा सम्पूर्ण शरीर प्राण से भरा है और हमारी जीवनी शक्ति प्रचुर मात्रा में इस प्राण शक्ति के उपयुक्त पाचन पर ही निर्भर है । इसके समर्थन में पाश्चात्य वैज्ञानिक डॉ. बियांसिनी का कथन है—

पोषण की प्रत्येक क्रिया एवं संचालन से बायोजैव-विद्युत उत्पन्न होती है और इस पर ही विद्युत का उत्पादन निर्भर है जो रेस्ट करैण्ट कहलाता है । अंगों का संचालन एक्शन करैण्ट (इन्टरमिटेण्ट) द्वारा होता है । रेस्टकरेण्ट्स की उत्पत्ति शरीर के प्रोटोप्लाज्म की रासायनिक क्रिया द्वारा होती है । इस तरह जीवित टिस्यूज अनन्त महीन बैटरियों की तरह निरन्तर विद्युत देते रहते हैं । शरीर की पेशियों, स्नायुओं, ग्रन्थियों एवं चमड़ी के स्तरों पर उनमें विद्युत प्रवाह एवं कैपिलरीज के कार्यों के सम्बन्ध में हम एक्शन करैण्ट को समझ सकते हैं ।

डॉ. डिमिर ने शक्तिशाली गेल्वेनोमीटर द्वारा इस विद्युत के मापन से पाया है कि अच्छे स्वास्थ्य के लोगों में यह विद्युत आठ माइक्रो-एम्पीयर्स थी, कमजोर और थके लोगों में एक से दो माइक्रो-एम्पियर थी और तनावग्रस्त लोगों में १५ माइक्रो-एम्पियर्स तक बढ़ी थी ।

उनका निष्कर्ष था कि यही विद्युत जीवनी शक्ति कहलाती है, जो थकने पर कम हो जाती है । जीवनी शक्ति एवं अच्छा स्वास्थ्य प्रचुर बायो विद्युत आयन्स के ग्रहण करने, विद्युत शक्ति में तनाव और समस्त कार्यों में सामंजस्य पर निर्भर है । इसका अर्थ यह हुआ कि उत्तम स्वास्थ्य इन करेण्ट्स के परस्पर विभाजन एवं सामंजस्य पर निर्भर है । ध्यानयोग एवं क्रियायोग के विभिन्न सोपान पूर्वार्त दर्शन द्वारा दूरदर्शितापूर्वक निर्धारित ऐसे चरण हैं, जिनका अवलम्बन लेकर अपनी सूक्ष्म शक्तियों को जगाया एवं इसी निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राण ऊर्जा से स्वयं को ओत-प्रोत कर कृत-कृत्य हुआ जा सकता है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति के अभिवर्धन द्वारा स्वास्थ्य-सम्वर्धन

महान प्राण-तत्व

विश्व-व्यापी प्राण शक्ति एक महान तत्व है । जो भिन्न-भिन्न मात्राओं में संसार की समस्त सजीव और निर्जीव वस्तुओं में पायी जाती है । मनुष्य के शरीर में जो विद्युत प्रवाह बहता है, वह इसी महान प्राण-तत्व का एक अंश है । हम लोग श्वास, अग्नि, जल और विचारों द्वारा इसे अपने अन्दर खींचते हैं । जो शरीर उस प्राण शक्ति को उचित मात्रा में खींच लेता है वह प्रसन्न, उत्साहित, तेजपूर्ण और जीवटदार दिखाई देता है, किन्तु जो उस शक्ति को पर्याप्त मात्रा में ग्रहण नहीं कर सकता वह मोटा होने पर भी आलसी, उदास और निस्तेज देखा जाता है ।

मानवीय प्राण में एक प्रबल रोग निवारक शक्ति है । इसका पता मनुष्य ने सृष्टि के आदि से ही लगा रखा है । बालक को जब कोई चोट लगती है तो वह दौड़ा हुआ माता के पास जाता है । माता उस पीड़ित स्थान को फूँकती है और कुछ ही देर में अच्छा हो जाता है । रोता हुआ बच्चा यदि गोदी में उठा लिया जाय तो चुप हो जाता है, क्योंकि उसका कष्ट चाहे वह किसी प्रकार का क्यों न हो दूसरों के शरीर की बिजली से बहुत कम हो जाता है । बीमार या दुःखी के सिर पर हाथ फेरा जाय तो वह सुख का अनुभव करता है । चुम्बन, आलिंगन, हाथ मिलाने, चरण छूने आदि क्रिया से जो असाधारण प्रसन्नता होती है उसका वैज्ञानिक कारण यह है कि एक प्राण शक्ति दूसरे में प्रवेश करके उसे मदद और आनन्द देती है ।

इच्छा करते ही हमारे अंग चल उठते हैं । खुजली का विचार आते ही हाथ उस स्थान पर पहुँचता है और खुजाने लगता है । यह प्राण शक्ति का कार्य है । डॉक्टर लोग इसे नाड़ी का बल मानते हैं । वे कहते हैं कि शरीर का परिचालन नाड़ी-शक्ति से होता है किन्तु योगियों का मत है कि जैसे बिना तार के तार द्वारा समाचार भेजे जाते हैं उसी प्रकार बिना नाड़ियों की सहायता के भी महान प्राण-तत्व एक मनुष्य के शरीर से दूसरे के शरीर में और अखिल ब्रह्माण्ड में गति कर सकता है ।

जिन लोगों ने योगाभ्यास किया है और थोड़ी बहुत सफलता प्राप्त की है वह अपने अन्तःनेत्रों से नाड़ी-जाल में बहती हुई प्राण शक्ति को प्रत्यक्ष देख सकते हैं । शरीर से निकलने वाले प्राण-तेज (ऑरा) को भी वे अच्छी तरह देखते हैं । यह तेज हल्के गुलाबी रंग का प्रकाश विद्युत स्फुल्लिंगों या किरणों के रूप में दिखाई देता है । अभ्यासी यह भी देखते हैं कि जब कोई चिकित्सक मार्जन करके हाथ झाड़ता है तो उसकी उँगलियों के सिरों में से चिनगारियाँ सी झड़ती हैं । जो लोग अभ्यासी नहीं है वह भी इस शक्ति को गर्म चूल्हे में से निकलती हुई हवा, भाप या काँपती हुई किसी वस्तु की तरह अनुभव कर सकते हैं ।

हल्के विचार मस्तिष्क में से हर समय बहते रहते हैं और वे पानी की लहरों की तरह आकाश में गति करते रहते हैं । यदि इन विचारों के साथ प्राण शक्ति भी सम्मिलित हो तो आश्चर्यजनक बलशाली हो जाते हैं । यदि प्रबल भावना और दृढ़ इच्छा शक्ति की सहायता से कोई विचार प्रेरित किए जायें तो वह निशाने पर गोली की तरह बैठते हैं । प्रबल प्राण शक्ति वाले विचारकों की इच्छाएँ विश्व में हलचल मचा देती हैं । मार्क्स मर गया पर उसकी विचारधारा अब भी संसार के कोने-कोने में असर पैदा कर रही है । क्या तुम नहीं देखते कि एक सद्वक्ता हजारों आदमियों की सभा को क्षण भर में हँसा या रुला देता है । एक प्रबल मनस्वी सेनापति अपने प्राण फूँककर सेना में नवीन बल भर देता है । प्राण चिकित्सा इन बातों का महत्त्व समझते हुए चिकित्सा करते समय अपने स्वास्थ्यदायक प्रबल विचार रोगी के लिए प्रेरित करता है । वह जानता है कि इसके बिना मार्जन, श्वासोच्छ्वास आदि की कोई भी क्रिया निष्फल होगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्राण बल कोई काल्पनिक ख्याल या मन के लड्डू नहीं है और न स्वप्न की तरह यह कोई मन गढन्त हैं । मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस विषय में कठोर परीक्षाएँ कर ली गई हैं और जब इसकी आशातीत सफलता आँखों से देख ली गई है तभी इसे वैज्ञानिक स्वरूप मिल सका है । प्राण बल को दूसरे के शरीर में प्रवेश करके उसके अन्दर असाधारण परिवर्तन किया जा सकता है । किसी स्थान विशेष से वहाँ का दूषित या स्वच्छ या दोनों तरह का प्राण थोड़ी या पूरी मात्रा में हटा कर अलग किया जा सकता है । कलकत्ता के प्रेसीडेंसी सर्जन डॉक्टर एसलेड ने सन् १८४२ में अपने प्राण बल से रोगियों के स्थान विशेष या सम्पूर्ण मस्तिष्क को सत्ता शून्य करके कितने ही सफल ऑपरेशन किए थे और रोगियों को इस बात का पता भी नहीं चला कि कब हमारा ऑपरेशन किया गया । उस समय तक सुँघाकर बेहोश करने की दवा क्लोरोफार्म का आविष्कार भी नहीं हुआ था । लन्दन में डॉक्टर ईलिर ने भी इसी प्रकार के अनेक ऑपरेशन किए थे । अब भी जिन्हें मेस्मेरिज्म द्वारा प्रगाढ़ निद्रा में डाल दिया जाता है । वे सुई चुभोने या इसी प्रकार की और छोटी-मोटी पीड़ाओं का कुछ भी अनुभव नहीं करते ।

प्राण की प्रबल शक्ति का इच्छानुसार उपयोग किया जा सकता है । एक इंच जगह में कितनी सूर्य शक्ति व्याप्त है इसका अनुमान आतिशी शीशे द्वारा किया जा सकता है । उतनी जगह पर फैली हुई सूर्य किरणों को जब एक बिन्दु पर एकत्रित किया जाता है तो अग्नि जल उठती है और वह अग्नि बड़े-बड़े जंगलों को नष्ट कर सकती है । इसी प्रकार मनुष्य शरीर की प्राण विद्युत का विधिपूर्वक जब एकत्रीकरण किया जाता है तो अद्‌भुत शक्ति सम्पन्न हो जाती है । यह प्राण विद्युत रोगी के जिस अंग पर फेंकी जाती है वहाँ एक विचित्र हलचल पैदा हो जाती है । जमा हुआ घी गर्मी पाकर जिस प्रकार पिघलने लगता है उसी तरह रोगों के बीजाणु भी उस स्थान से हटने लगते हैं । सिर में रक्त इकट्ठा हो जाने कें कारण जब मस्तक में दर्द होने लगता है तब मार्जन द्वारा वह पीड़ा थोड़ी ही देर में अच्छी हो जाती है । कारण यह है कि प्राण शक्ति का प्रभाव उस स्थान पर तुरन्त ही होता है और वहाँ इकट्ठा हुआ रक्त कुछ ही देर में वहाँ से हटकर बह जाता है ।

पागलपन से मिलती-जुलती बहुत-सी बीमारियाँ सूक्ष्म शरीर में कोई खराबी आ जाने के कारण होती हैं । डॉक्टर लोग जानते हैं कि यदि कोई माँसपेशी निकम्मी पड़ जाय तो वहाँ रक्त जमा होने लगेगा । इस प्रकार सूक्ष्म शरीर के किसी अंश में कुछ गड़बड़ी हो जाय तो उसकी पोल में शरीर के रोग कीट जमा होने लगेंगे । जब सूक्ष्म देह निर्बल हो जाती है और बाहर के जरा से भी झटके को सहने की शक्ति नहीं रखती तो परिस्थितियों का हल्का सा झटका भी मस्तिष्क को उद्विग्न कर देता है, फलस्वरूप चिढ़चिढ़ापन, घबराहट, आत्मग्लानि, निराशा आदि का आक्रमण होने लगता है । पेशियों और नाड़ियों की बीमारियों से तो मस्तिष्क का खास सम्बन्ध है । इन्हीं सब बातों को देखते हुए पश्चिमी देशों में प्राण विज्ञान को चिकित्सा शास्त्र में प्रमुख स्थान दिया गया है ।

कई डॉक्टर मस्तिष्क की शक्ति को ही प्राण मानते हैं । उनका यह कथन ठीक नहीं । अब अनेक वैज्ञानिक यह सिद्ध करने लगे हैं कि मानवीय विद्युत प्राण शक्ति है और वह किसी एक स्थान में न रहकर समस्त शरीर में रहती है । डॉक्टर अलबर्ट का कथन है कि मस्तिष्क केवल तर्क और बुद्धि का स्थान है अन्य शक्तियाँ इस स्थान में नहीं रहतीं । डॉक्टर मोडस्ले ने लिखा है कि स्मरण शक्ति नाड़ी चक्रों में रहती है इसी कारण हमारे शारीरिक अवयव अपना दैनिक कार्य करते हैं । डॉक्टर हेमण्ड कहते हैं प्रेरणा शक्ति का मस्तिष्क से कोई सम्बन्ध नहीं है । प्रो. इनजेलो बताते हैं कि निद्रावस्था में मनुष्य का दिमाग सोता रहता है और प्राण-तत्व द्वारा शरीर की रक्षा होती रहती है । प्रयोगशालाओं में इस बात का सफल परीक्षण हो चुका है कि छोटे जानवरों का मस्तिष्क निकाल दिया जाय तो भी पूर्ववत् सब काम करते रहते हैं । छोटे जन्तुओं में दिमाग होता ही नहीं पर वे प्राण शक्ति के बल से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं । तात्पर्य यह है कि मनुष्य के सारे काम करने का केन्द्र खोपड़ी के अन्दर बन्द नहीं है वरन् समस्त शरीर व्यापी उसी मानवी विद्युत के अन्दर है जिसके प्रत्येक परमाणु में २,४२,२५० मन (१ मन = ३७.३२४२ किलोग्राम) वजन उठाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की शक्ति है और जो ताँबे के तारों में चलने वाली बिजली की अपेक्षा हजारों गुनी सूक्ष्म और शक्ति सम्पन्न है । प्रो. एलिशाग्रे के शब्दों में यह शक्ति अद्‌भुत है । वे कहते हैं कि प्रकाश की रफ्तार प्रति सेकण्ड एक लाख छियासी हजार मील है किन्तु विचार शक्ति चार हजार से लगाकर ८ पद्‌म मील प्रति सेकण्ड की रफ्तार से चल सकती हैं । दिन में सूर्य की किरणें उसकी चाल को कुछ रोकती हैं परन्तु रात के समय उसका वेग बहुत तेज होता है ।

विदेशों में प्राण चिकित्सा प्रणाली का बहुत सफलतापूर्वक प्रयोग हो रहा है । यूरोप, अमेरिका के अनेक देशों में यह प्रणाली प्रचलन में आ रही है और अनेक बड़े-बड़े अस्पताल इन विधियों से हजारों रोगियों को अच्छा करते हैं । प्राण-तत्व को सब मानसिक चिकित्सक स्वीकार करते हैं और उसको मेन्टल हीलिंग, किश्चिन साइंस, न्यूथाट, मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म, इलेक्ट्रिक बायलॉजी, साइकोऐनेलेसिस, साइकोथिरेपी आदि नामों से पुकारते हैं । नामों की भिन्नता के कारण ये अलग-अलग वस्तुएँ नहीं हो सकतीं वास्तव में यह एक ही पदार्थ है ।

प्राण चिकित्सा की विशेषता

आध्यात्मिक चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थी यह बहुत पहले जान चुके होंगे कि स्थूल शरीर की भाँति एक सूक्ष्म शरीर भी मनुष्य का होता है । वह आँखों से देखा नहीं जाता फिर भी उसमें शरीर के गुण होते हैं । उसकी शक्ति स्थूल शरीर की अपेक्षा कई गुनी बढ़ी होती है । सच तो यह है कि स्थूल शरीर का बल शूक्ष्म शरीर से ही प्राप्त होता है । बीमारियाँ स्थूल शरीर से नीचे उतर कर सूक्ष्म शरीर पर भी जब अपना कब्जा जमाने लगती हैं तो वह कष्टसाध्य या असाध्य हो जाती हैं । कई जन्मों तक और कई पीढ़ियों तक पीछा न छोड़ने वाली कण्ठमाला, उपदंश, कुष्ट, क्षय आदि पुरानी पड़ने पर सूक्ष्म शरीर में घुस जाती हैं । वैद्य, डॉक्टरों की दवाइयाँ स्थूल होती हैं उनका प्रभाव स्थूल शरीर तक ही होता है । पीड़ी दर पीड़ी चलने वाले या जन्म-जन्मान्तरों से आने वाले रोगों को देखकर हकीम बेवश हो जाते हैं, उनसे कुछ करते-धरते नहीं बनता असाध्य कहकर पीछा छुड़ा लेते हैं ।

कुछ रोग एक प्राण से दूसरे प्राण मे घुसकर विकृत हो जाने के कारण होते हैं, भूतोन्माद, साँप-बिच्छू का काटना ऐसे ही रोग हैं । मन, बुद्धि और अन्तःकरण के विकारों से मृगी, योषापस्मार, स्नायुतन्तुओं की निर्बलता, पागलपन, निराशा, बुद्धिहीनता, क्रोध, चिन्ता, निद्रा की कमी, उदासीनता, भ्रम, बुरी आदतें आदि रोग होते हैं । मिथ्या धारणा करने के कारण भी कई प्राणघातक कष्ट उठ खड़े होते हैं । इन सब रोगों की जड़ सूक्ष्म शरीर तक पहुँच जाती है । प्राण चिकित्सा ऐसे रोगों की अमोघ औषधि है । सूक्ष्म शरीर में प्राण शक्ति को प्रवेश करके उन गहरी जड़ों को खोदने का काम प्राण शक्ति से ही हो सकता है ।

शरीर के साधारण रोग प्राण चिकित्सा विधि से बहुत जल्द अच्छे हो जाते हैं । उनकी जड़ को उखाड़ लेते हैं, जिससे औषधि उपचार के परिणाम की तरह एक के बाद दूसरा नया रोग खड़ा नहीं होता ।

प्राण शक्ति से टूटी हुई हड्डी नहीं जोड़ी जा सकती, शरीर में घुसा हुआ शस्त्र नहीं निकाला जा सकता और न वह रोग अच्छे किए जा सकते हैं जिनमें ऑपरेशन की अनिवार्य आवश्यकता है, किन्तु निश्चय ही डॉक्टर के द्वारा एक बार हड्डी जोड़ देने, घुसा हुआ शस्त्र निकाल देने या ऑपरेशन कर देने के पश्चात् घायल स्थान को प्राण शक्ति से बहुत जल्दी अच्छा किया ज़ा सकता है ।

ऐसे दुर्बल शरीर जो अनेकानेक बहुमूल्य और पौष्टिक आहार खाने पर भी बलवान, सतेज और निरोग नहीं हो सके थे प्राण शक्ति के प्रयोग से अद्‌भुत उन्नति करते हैं । कई के वजन में असाधारण वृद्धि होते हमने देखी है और कई जो अपने को मृत्यु के मुँह में पड़ा हुआ समझ रहे थे, जादू की तरह नवीन जीवन धारण करते हुए हमारे अनुभव में आये हैं ।

प्राण चिकित्सा का इतिहास

प्राण शक्ति से रोग मोचन की क्रिया भारत के ऋषि-मुनि ही करते हों सो बात नहीं । संसार के समस्त भागों में अति प्राचीन काल से इसका प्रचलन रहा है । ईसा की छठवीं शताब्दी में ग्रीस देश के एक पण्डित सोलन ने ऐसे बहुत से रोगी प्राण शक्ति से अच्छे किए थे जो औषधि से ठीक नहीं हो सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाँचवीं शताब्दी में नील नदी के तट पर रहने वाले जीयस नामक योगी ने इस चिकित्सा में बड़ी ख्याति प्राप्त की थी । ईसा से ४६१ वर्ष पूर्व एक डॉक्टर हिपोक्रेटस इस विद्या के पण्डित थे । एक दूसरा ग्रीक विद्वान एसक्लिपियेडिस मार्जन उन्माद रोग को ठीक करने के लिए बहुत प्रसिद्ध था । ईसाई धर्म के प्रवर्तक यीशु और उनके साथी मोजेस दोनों ने यह विद्या मिस्र देश के पुरोहितों से सीखी थी । इंजील से प्रकट होता है कि यीशु ने इस विद्या के बल से असंख्य पीड़ितों को अच्छा किया था । सन् १७०० में आयरलैण्ड के ग्रीटेक्स नामक एक न्यायाधीश में प्राण विद्युत अद्भुत परिमाण में थी । उन्होंने देश-विदेश में घूम-घूमकर अनेक असाध्य रोगियों को अच्छा किया था । थियोसोफीकल सोसाइटी के नेता कर्नल आलकट अपनी इस शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे । डॉक्टर मेस्मर ने तो इस विज्ञान की खोज में अपना जीवन ही लगा दिया और उसने मेस्मेरिज्म नामक एक व्यवस्थित चिकित्सा शास्त्र ही तैयार कर दिया । ईसा से ५०० वर्ष पूर्व यूनान के योगी पिथागोरस हाथ के इशारे से बड़े-बड़े भयंकर वन्य-जन्तुओं को इच्छानुवर्ती बना लेने और पीड़ितों को चंगा कर देने के लिए प्रख्यात थे । भारतवर्ष के योगी इस विद्या में चिरकाल से निपुण रहे हैं । इपीरस का राजा पिन्हस लोगों को छूकर उनकी आँत और तिल्ली की बीमारियों को दूर करता था । क्रेस्पेसियन का बादशाह हाथ फिराकर सिर की पीड़ा, पंगुता, अंधापन आदि अच्छा करता था । हेडरियन मृगी के रोगियों को छूकर अच्छा कर देता था । ओलफ राजा भी इस विद्या का पण्डित था । पुराने जमाने में इंग्लैण्ड और फ्रांस के बादशाह गले के रोगों को स्पर्श द्वारा अच्छा करते थे । इंग्लैण्ड में 'राजशूक' नामक एक रोग था जो राजा के स्पर्श से ही अच्छा होता था । सत्रहवीं शताब्दी में लन्दन का एक माली लेन्हर्ट और सन् १८१७ में सिलिसिया का रिचर नामक चौकीदार अपने स्पर्श द्वारा बहुत से बीमारों को अच्छा कर चुके हैं । इसी प्रकार पण्डित इस्कुलेपियस, इंग्लैण्ड का पुजारी डरूउड, हवानहेमण्ट, स्काटलैण्ड निवासी मेक्सवेल, पादरी हेहल आदि असंख्य माननीय सज्जनों ने इस विधि का उपयोग किया है ।

प्राणाकर्षण क्रिया

प्राण शक्ति को अधिक मात्रा में अपने अन्दर धारण करना अपनी शारीरिक, मानसिक उन्नति के लिए आवश्यक है । अपने रोगों को दूर करने के लिए जरूरी है तथा उन लोगों की तो अनिवार्य आवश्यकता है जिनको प्राण-तत्व से दूसरों का इलाज करना पड़ता है । यह प्राण-तत्व संसार में प्रचुर मात्रा में भरा पड़ा है । यह न सोचना चाहिए कि यह प्राण कहाँ से आयेगा और किस प्रकार किया जा सकेगा । इसका प्राप्त करना कुछ भी कठिन नहीं है क्योंकि हमारे चारों ओर प्राण का महासागर लहलहा रहा है । हम हर घड़ी इस शक्ति सागर में से काम चलाऊ पदार्थ लेते हैं और उसी के बल पर जीवित एवं क्रियाशील रहते हैं । जिस प्रकार नदी में रहने वाली मछली के लिए यह सुगम है कि वह चाहे जितना पानी बिना किसी रोक-टोक और कठिनाई के ले ले । उसी प्रकार हर आदमी के लिए यह आसान है कि वह जितना चाहे उतना प्राण, उस महाप्राण में से खींच कर अपने अन्दर भर ले ।

बहुत से लोग सरल और साधारण अभ्यासों को तुच्छ एवं हीन मानते हैं और उन्हें हीन दृष्टि से देखते हैं । उनको यह पसन्द होता है कि शब्दाडम्बर और कई पेचीदा तरीकों से क्रियाएँ बताई जायें । जितना ही जिस क्रिया में आडम्बर हो वह उतनी ही महत्त्वपूर्ण होगी, यह धारणा वास्तव में ही गलत है । प्रकृति ने मनुष्य के लिए सभी वस्तुएँ सरल कर दी हैं । जो चीज जितनी आवश्यक है उतनी ही उसकी प्रचुरता है और प्राप्त करना सरल है । हमारे लिए हवा सबसे जरूरी है वह भी थोड़े ही प्रयत्न से मिल जाती है । इसके बाद जिन वस्तुओं की आवश्यकता का नम्बर जितना नीचा है वह उतनी ही महँगी और कष्ट साध्य होती जाती हैं । प्राण हवा से अधिक जरूरी है क्योंकि हवा के बिना तो कोई शायद कुछ दिन जी भी जाय पर प्राण के बिना तो जीवन हो ही नहीं सकता यदि इसे प्राप्त करना उन पेचीदे तरीकों के साथ हो जिन्हें बड़े शब्दाडम्बर के साथ वर्णन किया जाता है तो हमारा विचार है कि वह धोखा है । साँस लेने, पानी पीने, भोजन करने के तरीके बहुत आसान हैं, इसी प्रकार प्राणोत्पादन की विधि भी सरल है । हाँ जिस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भोजन करने में खूब बारीक चबा-चबा कर खाने, बीच में अधिक पानी न पीने आदि नियमों का पालन करके उसे महत्त्वपूर्ण बनाया जा सकता है । उसी प्रकार प्राणोत्पादन की क्रिया को कुछ विशिष्ट रीतियों के साथ करने से उसमें विशेषता पैदा हो जाती है और इच्छित लाभ प्राप्त होता है ।

प्राण अत्यन्त सूक्ष्म तत्व है । जो वस्तु जितनी सूक्ष्म होती है उतने ही हल्के तरीके से प्राप्त होती है । भोजन करते समय उसके रूप को पूरी तरह अनुभव करते हैं । भोजन के टुकड़े-टुकड़े के स्वाद को जिस प्रकार मालूम कर लेते हैं उस तरह पानी के जर्रे-जर्रे का स्वाद मालूम करना कठिन है । भोजन को तुम बता सकते हो कि इसमें नमक, मिर्च, खटाई-मिठाई या अमुक पदार्थ मिले हुए हैं, पर पानी को उतनी आसानी से नहीं जान सकते कि इसमें नदी, कुएँ, तालाब या किस का किस मात्रा में पानी मिला हुआ है । हवा की बात तो इससे भी सूक्ष्म है । विशेष ध्यान दिए बिना यह मालूम भी नहीं होता कि हम साँस ले रहे हैं और इस बात का आमतौर से ध्यान नहीं रखा जाता । प्राण-तत्व इन सब पदार्थों से बहुत अधिक सूक्ष्म है इसलिए इसका लेना, छोड़ना इन्द्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता है । गर्म लोहा कुछ देर खुली जगह में छोड़ दिया जाय तो वह ठण्डा हो जाता है, कारण यह है कि आस-पास की ठण्डी हवा उसे छूती हुई बहती है और उसे अपना गुण दे देती है । हवा ने लोहे का कौन-सा हिस्सा छुआ ? कहाँ होकर आयी ? कहाँ हो कर गई ? इस प्रश्न का तुम बारीक उत्तर नहीं दे सकते । इसी प्रकार यह नहीं मालूम होता कि प्राण-तत्व किस छेद में होकर किस प्रकार घुस जाता है और कहाँ होकर निकलता है । हवा को ही लीजिए वह नाक या मुँह द्वारा ही शरीर में नहीं पहुँचती वरन् समस्त शरीर के रोम कूपों में होकर भी आती-जाती है । जिस प्रकार एक्सरेज ठोस पदार्थों में भीतर भी घुस जाती है, जैसे साफ काँच को हमारी दृष्टि पार कर जाती है, उसी प्रकार शरीर के हाड़-माँस का कोई प्रतिबन्ध प्राण शक्ति के आने-जाने में कुछ भी बाधक नहीं होता । नदी समतल भूमि पर बहती रहती है, कहीं कोई विशेषता नहीं होती किन्तु यदि उसके तल में गड्ढा बना दिया जाय तो अन्य स्थानों की अपेक्षा उस स्थान पर बहुत-सा पानी एकत्रित हो जायेगा । प्राण की गति हर आदमी में एक-सी गति से बहती रहती है किन्तु उथली और गहरी जमीनों में जैसे कम ज्यादा पानी रहता है उसी तरह उस शक्ति का सदुपयोग-दुरुपयोग करने वालों में वह ज्यादा कम मात्रा में भी होती है और हो सकती है ।

दृढ़ इच्छा शक्ति और जोरदार विचार बल के आकर्षण से प्राण अपने अन्दर अधिक मात्रा में जमा हो सकता है और इस जमा की हुई पूँजी को जिस काम में खर्च किया जायेगा उसी में आनन्द आयेगा ।

रोगों का निदान

रोगी को पेट के बल नीचे की ओर मुँह करके किसी मुलायम बिछौने पर लिटा दो, छाती के नीचे एक तकिया लगाओ जिससे उसकी ठोड़ी और मुँह जमीन पर न घिसें । हाथों को दोनों बगलों के साथ लम्बा सटाकर आराम से रख दो ।

तुम्हें जानना चाहिए कि शरीर की स्नायविक शक्ति मेरुदण्ड के साथ सम्बन्धित है । मूल में खराबी आने से उसकी शाखाएँ भी गड़बड़ाती हैं । विभिन्न कारणों का असर मेरुदण्ड पर पड़ता है और उसमें बहुत-सी छोटी गाँठें पड़ जाती हैं । कहीं-कहीं माँसपेशियाँ सिकुड़ जाने के कारण कुछ कड़ापन-सा आ जाता है । किसी जगह स्नायु तन्तु अकड़ कर इठ से जाते हैं । इन विकृतियों को रोगों की जड़ मानते हुए उनका निदान बड़ी सावधानी से करना चाहिए ।

पट लेटे हुए रोगी की गर्दन के नीचे जिस स्थान से कि रीढ़ की हड्डी उभरी हुई मालूम पड़ती है अपने दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उँगलियाँ इस प्रकार रखो कि रीड़ की हड्डी उन दोनों के बीच आ जाय । अब धीरे-धीरे इन उँगलियों को नीचे सरकाओ और बहुत ध्यानपूर्वक देखते चलो कि कहीं (१) कड़ापन, (२) गाँठ, (३) नसों की ऐंठन तो नहीं है । इन तीनों में से एक भी जहाँ प्रतीत हो उस स्थान को नोट कर लो । उस स्थान को याद न रख सको तो खड़िया की रंगीन बत्तियों से निशान लगा दो । तीनों बातों के लिए तुम इच्छानुसार अलग-अलग रंग चुन सकते हो । जैसे कड़ेपन के लिए सफेद, गाँठों के लिए गुलाबी, ऐंठन के लिए पीला । इन रंगों का कोई नियम नहीं है । यह अपने सुभीते की बात है जो चिकित्सिक उन स्थानों को याद रख सकें उन्हें तो इसकी बिल्कुल जरूरत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नहीं है । इस प्रकार इन तीनों बातों को अच्छी तरह अपने मन में रख लो ।

अभी दो बातें तुम्हें और भी जाननी हैं । वह हैं 'अनावश्यक सर्दी और गर्मी ।' उँगलियों को उल्टा करो और उसके पृष्ठ भाग को चौड़ा करके धीरे-धीरे रीढ़ के आरम्भिक स्थान से लेकर अन्तिम भाग तक लाओ । चारों उँगलियाँ आपस में सटी हुई इस प्रकार तिरछी रहनी चाहिए मानो मेरुदण्ड कोई चाकू है और उससे चारों उँगलियों को एक साथ काटा जा रहा है । कई व्यक्तियों के उँगलियों के पृष्ठ भाग के ज्ञानतन्तु पूर्ण सचेत नहीं होते और वे सर्दी-गर्मी का ठीक अनुमान नहीं कर सकते । ऐसी दशा में हथेली की पीठ से यह काम लिया जा सकता है । साधारणतः पूरे मेरुदण्ड में एक समान गर्मी रहती है, पर जहाँ कहीं वह कम ज्यादा हो उस स्थान को भी मालूम कर लो ।

अब तुमने रोग की इन पाँच मूल बातों को जान लिया । यह ऐंठन, सूजन, गाँठ, सर्दी, गर्मी रोग के कारण हुई या इनकी वजह से रोग हुआ, इस बहस में पड़ने की तुम्हें जरूरत नहीं है । असल में साधारण तर्क या मामूली उपकरणों से यह बात जानी नहीं जा सकती । किसी के शरीर की यदि दिन-रात हर घड़ी मनोवैज्ञानिक यन्त्रों द्वारा परीक्षा होती रहे तभी यह बात मालूम हो सकती है । मोटे अनुमान इस मामले में सही नहीं बैठ सकते । जब तक हर चिकित्सक हर मरीज के लिए एक बढ़िया प्रयोगशाला का प्रबन्ध न कर सके इन बाल की खालों को उधेड़ना छोड़ देना पड़ेगा, शुरूआत चाहे जिधर से हुई हो, पर अब रोग का मूल स्थान यह है । इन छोटी-छोटी विकृतियों में सुधार होते ही बीमारी अपने आप अच्छी हो जायेगी । पीड़ित अंगों के स्थानीय उपचार भी करने चाहिए परन्तु मूल स्थान को न भूलना चाहिए । रक्त विकार के कारण उठे हुए फोड़ों को कोई मलहम लगाकर अच्छा किया जा सकता है, सिर के दर्द को 'एस्प्रिन' खिलाकर तुरन्त बन्द किया जा सकता है, परन्तु यदि उसके मूल कारणों को भी दूर न किया जाय तो बीमारी कुछ समय बाद उसी रूप में या किसी दूसरे रूप में फिर पैदा हो सकती है । इसी प्रकार पेट, छाती, सिर आदि का स्थानीय प्राण उपचार करते समय मेरुदण्ड स्थित रोगों की मूल को खोदना भूल न जाना चाहिए ।

अनुभव में आया है कि कड़ापन-'सूजन' के लिए श्वासोच्छ्वास, गाँठों के लिए स्पर्श, ऐंठन के लिए कम्प, सर्दी के लिए मालिश और गर्मी के लिए मार्जन अच्छा उपचार है । जहाँ जिस प्रकार की जैसी आवश्यकता प्रतीत हो उसका निर्णय चिकित्सक को अपनी सूक्ष्म बुद्धि के अनुसार करते हुए रीढ़ का उपचार करना चाहिए । रोग का स्थानीय उपचार करने से पहले रीढ़ की परीक्षा और उसकी चिकित्सा करना आवश्यक है, तदुपरान्त पीड़ित अंगों पर प्रयोग करना चाहिए ।

रोगी का उपचार

रोगी का उपचार करने के समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है । जब उसके पास जाओ अपना अजनबीपन प्रकट मत करो । उससे इस प्रकार बातचीत करो मानो वह तुम्हारा बहुत दिनों का परिचित है । अपनी आवाज धीमी, दृढ़ और स्पष्ट रखो । बड़ी सहानुभूति के साथ बातचीत करो । बीमार को जो कठिनाइयाँ होती हैं उनके बारे में थोड़ा प्रकाश डाल दो । चारपाई पर पड़े-पड़े पीठ दुख पड़ती होगी, घूमने-फिरने को जी चाहता होगा, खाने को तो बेस्वाद चीजें ही मिलती होंगी । इस प्रकार उसके छोटे-मोटे कष्टों को अपने मुँह कह देने पर रोगी का मन हल्का हो जाता है । वह इन बातों को तुम्हारी सहानुभूति के रूप में स्वीकार करता है, परन्तु खबरदार उसकी बीमारी बढ़ा-चढ़ाकर मत कहो । पिछले समय में बहुत कष्ट पा चुके हो पर 'अभी हालत खराब है' और 'आगे मुश्किल से अच्छे होंगे' इस प्रकार की बातें करने से बुरा असर पड़ेगा । उससे कहना चाहिए कि अब तुम्हारी बीमारी अच्छी होने की दशा में है और शीघ्र ही अच्छे हो जाओगे । बीमार यदि पूछे कि कितने दिन में अच्छा हो जाऊँगा तो गोल शब्दों में उत्तर दो 'बहुत जल्द अच्छे हो जाओगे' । कोई समय नियत कर देना ठीक नहीं क्योंकि यदि उतने दिन में लाभ नहीं हुआ तो सब को अश्रद्धा और निराशा होती है । अपना कष्ट रोगी को स्वयं कहने दो, यदि वह व्यर्थ बातें कर रहा हो तो भी उसे झिड़को मत । उसकी बातों की ओर पूरा ध्यान दो और किसी तरह यह विदित मत होने दो कि तुम उसकी बीमारी को साधारण समझ कर उपेक्षा कर रहे हो । कुछ अत्युक्ति कह रहा हो तो खण्डन मत करो । उसे न तो झूठा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साबित करो और न चिढ़ाओ । आश्वासन दो कि आगे से तुम्हारी कठिनाई दूर हो जायेगी । वह कोई असम्भव माँग कर रहा हो तो बहुत ही प्रेमपूर्वक शब्दों में उस वस्तु को तुच्छ और उपेक्षणीय करते हुए वर्तमान समय की लाचारी प्रकट करो और उसकी बुद्धि की प्रशंसा करते हुए समझा दो कि तुम बहुत बहादुर हो । इस छोटे से अभाव को बर्दास्त कर सकते हो ।

अपनी दृष्टि रोगी के चेहरे पर रखो उसकी आँखों से आँखें मिलाओ । जरूरत समझो तो उसके ललाट पर हाथ फिराओ या हल्की चपत जैसी थपकियाँ दो । इससे उसके ऊपर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा ।

रोगी को और उसके पास बैठने वालों को कुछ ऐसे उदाहरण सुनाओ जिनमें तुमने उस तरह के रोगियों को अच्छा किया हो । इस विवरण में थोड़ी नमक-मिर्च भी मिली रह सकती है । इस वर्णन को बातों ही बातों में इस चतुराई के साथ करो कि अपनी शेखी मारने जैसा कुछ प्रतीत न होने पाये । नम्र शब्दों में "मैं" शब्द का बिना बार-बार उपयोग किए उस घटना को मनोरंजक ढंग से आसानी से कहा जा सकता है । कोई दूसरा व्यक्ति इस कार्य को कर सके तो और भी अच्छा है । तुम यह खयाल मत करो कि ऐसा वर्णन करने में दोष है । नहीं, यह तो रोगी के मन को स्थिर करके उस पर श्रद्धा का बीज उगाकर, अविश्वास और सन्देह दूर करने का एक बहुत अच्छा उपाय है । इसमें बुराई की कोई बात नहीं । तुम्हारी अनुपस्थिति में कोई इस प्रकार का वर्णन करे तो सबसे अच्छा होगा । अक्सर लोग रोगी के भोजन और रहन-सहन के बारे में कुछ भी ध्यान नहीं देते । बहुत-सी ऐसी मूर्खतापूर्ण धारणाएँ लोगों में फैली हुई हैं जिनसे रोगी साधारण सुविधाओं मे भी वंचित हो जाता है । "उपवास करोगे तो भूख मारी जायेगी", "दूध लोगे तो खाँसी हो जायेगी", "कमरे की खिड़कियाँ खुली रखोगे तो हवा लग जायेगी", "फल खाओगे तो ठण्ड सता जायेगी" । इस प्रकार की भ्रान्तियों के आगे तुम्हें सिर नहीं झुकाना चाहिए और तर्क एवं प्रमाणों के साथ उन भ्रमों को दूर करते हुए रोगी को साफ हवादार कमरे में रखवाने, बिस्तर स्वच्छ रखने, हैजा आदि को छोड़कर पानी पर्याप्त मात्रा में पीने देने, बिना भूख के भोजन न करने की व्यवस्था करा देनी चाहिए । पेट में मल इकट्ठा हो रहा हो तो किसी सुगम उपचार से एक-दो दस्त करा देने चाहिए । रोगी को क्या आहार देना चाहिए ? इसके सम्बन्ध में आजकल बड़ी हानिकारक रूढ़ियाँ फैली हुई हैं, उनसे रोगी को उल्टी हानि होती है, तुम्हें आहार शास्त्र का गहरा अध्ययन करके यह जानना चाहिए कि किस प्रकार के रोगी के लिए कैसा आहार उचित है । सुपाच्य, सरस, सुस्वादु यह तीन गुण भोजन में अवश्य होने चाहिए ।

प्राण चिकित्सा विज्ञान यद्यपि सबसे प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है पर उसका वर्तमान स्वरूप पश्चिमी पण्डितों के अनुभवों के आधार पर ही बन सका हैं । लोगों के लिए यह नई चीज हो सकती है । इसलिए तुम्हारे लिए यह आवश्यक है कि 'प्राण शक्ति क्या है ? उसका दूसरों पर किस प्रकार प्रयोग हो सकता है ? और उससे रोग कैसे दूर किए जा सकते हैं ?' इस विज्ञान को संक्षेप में या विस्तारपूर्वक जब जैसा अवसर देखो लोगों को समझाते रहो । जिससे उन्हें वास्तविक सत्य का परिचय हो जाय और वे तुम्हें भी दूसरे ढोंगी और धूर्तों की श्रेणी में न गिनने लगें ।

कहते हैं कि बीमारियों की जड़ पेट में रहती है । इसलिए बीमार का सर्वप्रथम उपाय जो चिकित्सक को करना है वह यह है कि पेट की सफाई करें । यदि पेट में पुराना मल जमा हो तो ऐनीमा की सहायता से, गुदा में साबुन की बत्ती लगाकर या अन्य किसी सीधे सादे उपचार से एक-दो दस्त करा देने चाहिए । पेट हल्का होने पर रोगी को बड़ी मदद मिलती है । यदि मेदा थक गया हो और आराम चाहता हो तो रोगी को उपवास कराने चाहिए । जब तक भूख न लगे रोगी को भोजन न दिया जाय । पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाते रहने से कुछ हानि नहीं होती और उपवास समाप्त होने पर दूना फायदा पहुँचता है । जरूरत के वक्त पानी के साथ दूध या फलों का रस पिलाया जा सकता है । यदि पेट में कोई खरावी नहीं है तो रोगी के भोजन में पतली और हल्की चीजें होनी चाहिए । दूध, फल या उबली हुई सब्जियों पर रहा जा सके तो बहुत ही अच्छा अन्यथा दलिया, साबूदाना, जैसी पतली और सुपाच्य वस्तुएँ देनी चाहिए । कड़ा, सूखा और नीरस भोजन बीमार के लिए एक प्रकार का भार होता है और पेट में पहुँच कर वह उल्टा रोगी को खाता है । पेट में कुछ भी डालते समय उसमें पर्याप्त मात्रा में लार मिलाने के लिए रोगी को अच्छी तरह समझा देना चाहिए । उसे पानी पीना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो तो धीरे-धीरे चूस कर पिये । एक गिलास पानी पीने में कम से कम दस मिनट लगाने चाहिए । इसी प्रकार भोजन को जितना हो सके चबा कर खाना चाहिए । दाँतों से भोजन इतना पिस जाय और थूक से इतना पतला हो जाय कि निगलते समय गले को जरा-सी भी कठिनाई मालूम न पड़े, रोगी को पानी यथेच्छ मात्रा में पीने देना चाहिए ।

किस रोग में क्या उपचार ?

इस पुस्तक में प्राणोपचार की अनेक क्रियाओं का वर्णन है । जिनका विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है—

(१) **मार्जन**—(अ) सम्पूर्ण मार्जन, (ब) तिर्यक मार्जन, (स) बेधक मार्जन, (द) वृत्त मार्जन, (य) स्पर्श मार्जन, (र) प्रगाढ़ स्पर्श मार्जन, (ल) थपकी मार्जन, (व) अंगुलि प्रसारण ।

(२) **श्वासोच्छ्वास**—(अ) उष्ण श्वास, (ब) शीतल श्वास, (स) जल मन्त्रित करना, (द) तेल मन्त्रित करना, (य) अमृत श्वास ।

(३) **स्पर्श क्रिया**—यह दस प्रकार की है ।

(४) **कम्प उपचार**—यह एक ही प्रकार का है ।

(५) **वस्तुएँ मन्त्रित करना**—(अ) फलालेन, (ब) कागज, (स) द्रव पदार्थ, (द) औषधियाँ, (य) अन्य उपचार ।

(६) **मानसिक चिकित्सा**—यह भी एक ही प्रकार की है ।

इस प्रकार कुल मिलाकर तीस प्रकार की चिकित्सा विधियाँ बतायी गई हैं । इनका उपयोग करने से पूर्व तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि प्राण चिकित्सा और चिकित्साओं की भाँति नहीं है । इसलिए इन तीस प्रणालियों को दवाओं की भाँति हर एक रोग के लिए अलग-अलग नहीं बाँटा जा सकता । जैसे ज्वर, खाँसी, दस्त आदि रोगों की वैद्य डॉक्टरों के पास अलग-अलग दवाएँ रहती हैं वैसी इस चिकित्सा में नहीं हो सकतीं । यह तीस उपचार तो तीस तेज हथियार हैं जो हर एक रोग पर स्थिति भेद से चलाए जा सकते हैं । कोई शत्रु बहुत दूर हो तो उसके लिए बन्दूक की आवश्यकता होती है । नजदीक हो तो भाला-बरछी काम देता है और बिल्कुल ही नजदीक आ जाय तो छुरी चलाने की आवश्यकता होती है । जैसे हर शत्रु के लिए अलग-अलग हथियार रखने की जरूरत नहीं उसी प्रकार प्राण चिकित्सा में हर मर्ज की अलग-अलग दवाइयाँ नहीं हैं । रोग किस स्थिति में है ? कहाँ है ? और क्या उपद्रव कर रहा है । इन बातों पर ध्यान रखते हुए इलाज आरम्भ करना चाहिए ।

अब तक जितने रोग जाने जा सके हैं उनकी संख्या सात हजार से ऊपर है फिर भी यह संख्या पूर्ण नहीं है । अभी और भी अनेक किस्मों का पता लगाया जा रहा है । हमारी समझ में यह अनन्त हैं । रोग इतने हो सकते हैं जिनकी गिनती करना असम्भव है । ऐसी दशा में उन सबके नाम याद करना, लक्षण रटना व्यर्थ है । प्राण चिकित्सक के पास इतना फालतू वक्त नहीं कि वह हर पेड़ के पत्ते गिनता फिरे । उसे मूल स्थान का पता लगाना है और उसी का इलाज करना है । शरीर में दूषित पदार्थों का भर जाना ही रोग है । मिथ्या आहार-विहार के कारण यह दूषित पदार्थ अपने अन्दर से भी उत्पन्न हो सकता है और बाहर से भी आ सकता है । यह विजातीय द्रव्य शरीर की स्वस्थ जीवन शैली को दबाकर समस्त देह या उसके किसी अंग को पीड़ित कर देता है । इस उत्पीड़न से स्वस्थ अंग दुःख पाते हैं और आँसू बहाते हैं साथ ही अपना काम पूरा करने से लाचार हो जाते हैं । यही रोग का बाहरी लक्षण है । पिसने की उस पीड़ा को दर्द, आँसू बहाने को मलों का-दस्त, कफ, कीचड़, रक्त, मूत्र, वमन, स्वेद आदि का अधिक बहना और असमर्थता को लंघन, लकवा, कमजोरी आदि नामों से पुकारते हैं । अब तुम समझ गए होगे समस्त रोगों का कारण एक ही है और उन सब के लक्षण एक से ही हैं चाहे वे अलग परिस्थितियों के कारण अलग-अलग सूरतों में भले ही दिखाई देते हों । इन सब रोगों का इलाज भी एक ही है अर्थात् दूषित पदार्थों को खींचकर बाहर फेंकना और स्वस्थ प्राण को रोगी की मदद के लिए प्रेषित करना । इन दो संज्ञाओं के अन्दर ही यह तीसों उपचार आ जाते हैं ।

समस्त शरीर के नाड़ी जाल का सम्बन्ध मेरुदण्ड से है । देह में कभी भी विकार हो उसकी प्रतिच्छाया मेरुदण्ड में जमा होने लगती है । पैर में फोड़ा होने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर जाँघों के जोड़ पर गिल्टियाँ उठ आती हैं उसी तरह देह में कहीं भी विकार होने पर रीढ़ के आस-पास गाँठ, कड़ापन, शीतलता, उष्णता, पिलपिलापन आदि चिन्ह प्रकट हो आते हैं । बिजली के तार को बीच में, सिरे पर, इधर-उधर या कहीं भी छुओ एक ही असर होगा । उसी प्रकार रीढ़ का उपचार करने पर भी पीड़ित स्थान पर असर होगा । पिछले पृष्ठों पर बताया जा चुका है कि कड़ेपन, सूजन के लिए श्वासोच्छ्वास, गाँठों के लिए स्पर्श, ऐंठन के लिए कम्प, सर्दी के लिए मालिश और गर्मी के लिए मार्जन अच्छा उपचार है । कौन-सा कम्प ? कौन-सा मार्जन ? कौन-सा श्वास ? इस प्रश्न का उत्तर किसी निश्चयात्मक रूप से नहीं दिया जा सकता । यह हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकते हैं । जिस स्थान में रोग है वहाँ भी उपचार करना आवश्यकीय है । किस प्रयोग को कब करें यह जानने के लिए इन उपचारों के गुण और शक्ति की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए । उसी के अनुसार समस्त रोगों का उनकी विभिन्न स्थितियाँ देखते हुए उपचार करना चाहिए ।

निवारण वाले उपचार—वृत्त मार्जन, थपकी मार्जन, सम्पूर्ण मार्जन, तिर्यक मार्जन, शीतल श्वास, कम्प उपचार, वर्तुल स्पर्श, चिकोटी स्पर्श, खोखला स्पर्श यह नौ उपचार शरीर की नौ वस्तुओं को खींच कर बाहर करने वाले हैं ।

हर रोगी की तीन स्थितियाँ होती हैं—(१) रोग का आरम्भ, (२) मध्यम, (३) बढ़ा हुआ रूप, उसी अनुसार इसमें में उपचार भी चुन लेने चाहिए । रोग यदि शुरू हो रहा हो तो—(१) सम्पूर्ण मार्जन, (२) शीतल श्वास, (३) वर्तुल श्वास का उपयोग करना चाहिए । बीमारी बढ़ गई हो और आरम्भ के दिनों में प्रकट रूप से दिखाई देने लग गई हो तो (१) तिर्यक मार्जन, (२) शीतल श्वास, (३) चिकोटी स्पर्श और खोखला स्पर्श काम में लाना चाहिए । यदि बीमारी पूरे जोर पर हो और पुरानी हो चली हो तो (१) तिर्यक मार्जन, (२) कम्प उपचार, (३) वर्तुल स्पर्श का प्रयोग करना चाहिए । इन विधियों से शरीर के दूषित मेदा बाहर निकलते हैं ।

प्राण प्रेरित करने वाले उपचार—बेधक, मार्जन, स्पर्श मार्जन, प्रगाढ़ मार्जन, थपकी मार्जन, अंगुलियाँ प्रसारण, उष्ण श्वास, अमृत श्वास हथेलियाँ रगड़ने का स्पर्श (नं. १), झुकी उँगलियों का स्पर्श (नं. २), पूरे हाथ का स्पर्श (नं. ३), गूँदने का स्पर्श (नं. ५), घिसने का स्पर्श (नं. ७), कूटने का स्पर्श (नं. ८), थपकी स्पर्श (नं. ९), यह चौदह उपचार प्राण प्रेरक हैं । आरम्भ की अवस्था में (१) बेधक मार्जन, (२) अमृत श्वास, (३) झुकी उँगलियों का स्पर्श, (४) थपकी स्पर्श काम में लाने चाहिए । मध्यम अवस्था में (१) स्पर्श मार्जन, (२) थपकी मार्जन, (३) उष्ण श्वास, (४) झटके का स्पर्श, (५) गूँदने का स्पर्श काम में लाना उचित है । बढ़ी हुई दशा में (१) प्रगाढ़ स्पर्श मार्जन, (२) अंगुलि-प्रसारण, (३) पूरे हाथ का स्पर्श, (४) हथेलियाँ रगड़ने का स्पर्श, (४) घिसने का स्पर्श प्रयोग करना चाहिए ।

दोनों प्रकार के उपचार—कुछ उपचार ऐसे होते हैं । जो मन्त्र बल के अनुसार निवारण और प्राण प्रेरक दोनों प्रकार के काम कर सकते हैं । फलालेन, कागज, जल, तेल, घृत, दूध, औषधि आदि को जिस प्रकार जिस शक्ति के अनुसार मन्त्रित किया जायेगा वह उसी प्रकार का गुण देगी । "अन्य उपचार" हैडिंग के नीचे जिन क्रियाओं का वर्णन है वे तथा "मानसिक उपचार" यह भी इसी प्रकार दोनों तरह का काम कर सकती है ।

मन्त्रित दूध निर्बल रोगियों और बालकों के लिए दिया जाता है । तेल को आवश्यकतानुसार सिर, जोड़, कमर या समस्त शरीर में लगाते हैं । घृत या मक्खन मरहम की तरह जले या कटे अंगों पर लगाया जाता है । जल औषधि की तरह दिन में दो-दो तोले की मात्रा में अथवा आवश्यकतानुसार ज्यादा कम मात्रा में देना चाहिए । फलालेन या कागज एक बार में आध घण्टे से अधिक शरीर पर नहीं रखनी चाहिए और दुबारा रखने के लिए बीच-बीच में एक-एक घण्टे का अवकाश अवश्य होना चाहिए । औषधियाँ लोहे के खरल में कदापि न बनायी जायें । पत्थर के खरल में कूट-पीस कर उन्हें छाया में सुखाना चाहिए । इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि मन्त्रित कर देने के बाद वह वस्तु हाथ या धातु की बनी किसी वस्तु से न छुएँ । मानसिक चिकित्सा में सूचनाओं, मन्त्रों के अनुसार असर भी पड़ता है, परन्तु इस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के शब्द न कहने चाहिए कि "तुम्हारा रोग दूर हो रहा है ।" वरन् उसे इस प्रकार कहना चाहिए कि "तुम अच्छे हो रहे हो" । सूचना में (मन्त्रों में) निषेधात्मक शब्द काम में न आयें ।

हर एक मर्ज में चाहे वह कोई और किसी प्रकार का हो रीढ़ का और स्थानीय पीड़ित स्थान का उपचार करो । आवश्यकता हो तो समस्त शरीर का उपचार करो । बीमारी को देखें कि वह अभी-अभी प्रकट हो रही है ? मध्यम दशा में है ? या पूरे वेग पर है ? उसी के अनुसार उपचार करो । पुस्तक के आधार पर कोई चिकित्सा पूरी नहीं हो सकती । उसमें अपनी विशेष बुद्धि को काम में लेना चाहिए और आवश्यकतानुसार इनमें से या कोई नया प्रयोग बनाकर काम में लाना चाहिए । अपने अनुभव और विशेष बुद्धिबल से तैयार की गई चिकित्सा से, सदैव सफलता ही प्राप्त होती है ।

प्राण चिकित्सा के प्रमुख उपचार

(१) मार्जन

प्राण शक्ति द्वारा चिकित्सा करने वालों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि बीमारियाँ जब शरीर में प्रवेश करती हैं तो उनकी गति बाहर से भीतर की ओर तथा नीचे से ऊपर की ओर होती है । लेकिन जब वह अच्छी होने को होती हैं तो उनकी चाल अन्दर से बाहर की ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर हो जाती है । डॉक्टरों ने इस बात को बहुत खोज और प्रमाणों के साथ सिद्ध किया है । रोगी के कीटाणुओं की चाल किस तरफ है इस बात की परीक्षा करके यह जान लिया जाता है कि इस समय बीमारी का प्रकोप हो रहा है या वह अच्छी होने जा रही है ।

यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि शरीर में रहने वाली प्रकृति-दत्त जीवनी शक्ति ही सम्पूर्ण रोगों को दूर करती है । कोई और उस जीवनी शक्ति को थोड़ी सी मदद पहुँचाकर उसे इस योग्य बनाता है कि वह बीमारी से लड़ सके और दुश्मन को अपने घर से निकाल कर बाहर करे । यह समझना गलत है कि कोई दवा केवल अपनी शक्ति से ही रोग को दूर कर सकती है । जिस आदमी की जीवनी शक्ति निर्बल हो जाती है उसे बहुत बढ़िया दवाएँ देने पर भी बहुत दिनों में और मुश्किल से लाभ होता है । कुष्ठ, दमा, तपैदिक, आतिशक आदि कष्ट साध्य या असाध्य रोगों में सर्वोत्तम और कीमती से कीमती इलाज भी बेकार साबित होते हैं ।

प्राण चिकित्सक अपनी प्राण शक्ति को रोगी की जीवनी शक्ति की मदद के लिए भेजता है । पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है कि प्राण शक्ति भी एक प्रकार की बिजली है और उसमें बिजली के दोनों गुण मौजूद हैं । वह अपने विकर्षण (Positive) गुण के अनुसार फेंकने की क्रिया करती है और आकर्षण (Negative) गुण के अनुसार खींचती है । चिकित्सक को रोगों की स्थिति के अनुसार इन दोनों ही क्रियाओं को अलग-अलग अवसरों पर काम में लाना पड़ता है । रोगों को खींचकर बाहर फेंकने के लिए आकर्षण शक्ति और रोगी की जीवनी शक्ति को मदद देने के लिए विकर्षण शक्ति का उपयोग होता है ।

मार्जन क्रिया (Pass) उपरोक्त दोनों प्रकार के होते हैं । खींचने की शक्ति वाले निवर्तक मार्जन (De-Mesmerising Pass) और प्रवेश करने की शक्ति वाले प्रवर्तक मार्जन (Masmerising Pass) कहे जाते हैं । इन पासों के द्वारा चिकित्सक की प्राण शक्ति वैसा ही असर करती है जैसा हाथ-पांवों द्वारा उसकी सहायता की जा सकती है ।

मार्जन हाथों द्वारा होते हैं । मनुष्य की हथेली में विकर्षण और हथेली की पीठ में आकर्षण शक्ति प्रचुर परिमाण में रहती है । इसलिए प्रवर्तक मार्जन करने के लिए हथेली का और निर्वतन मार्जन करने के लिए हथेली की पीठ का उपयोग किया जाता है । प्रवर्तक मार्जन नीचे से ऊपर की ओर तथा निवर्तक मार्जन ऊपर से नीचे की ओर दिए जाते हैं ।

मार्जन की तैयारी

रोगी को बिठाकर, लिटाकर या जैसी स्थिति में रखकर मार्जन करना है उस स्थिति में उसे कर लो । तुम सीधे खड़े हो जाओ और अपने हाथों को बिल्कुल ढीला करके लटका दो । अब उन्हें ढीला करके आगे-पीछे झुलाओ । पहले धीरे-धीरे फिर क्रमशः तेजी बढ़ाते हुए जल्दी-जल्दी झुलाना चाहिए । ऐसा करने से थोड़ी ही देर में तुम्हारी उँगलियों के छोर झनझनाने लगेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनमें कुछ गुदगुदी सी पैदा होगी और गर्मी बढ़ जायेगी । अब तुम्हारे हाथ इस दशा में मार्जन करने लायक हो गए । समयानुसार जैसा भी मार्जन तुम्हें करना है इन हाथों से कर सकते हो । इस प्रकार की तैयारी एक ही रोगी के उपचार करने योग्य होती है । यदि दूसरे रोगी का इलाज करना हो तो दुबारा फिर इसी प्रकार तैयारी करनी चाहिए ।

मार्जनों के अनेक भेद हैं । ऊपर प्रवर्तक और निवर्तक दो भेद बताए जा चुके हैं । इनमें से हर एक के कई-कई भेद हैं । आगे उन्हीं पर प्रकाश डाला जाता है ।

पास शुरू करते समय यूँ ही सीधे-साधे ढंग से हाथ नहीं ले पहुँचना चाहिए वरन् मुट्ठी बाँधकर हाथ ले जाना चाहिए और उसे उस समय खोलना चाहिए जब पास की क्रिया आरम्भ करनी हो । एक पास समाप्त करके दूसरा पास करने के लिए जब हाथ ले जाया जाय तब उस बीच के समय में भी मुट्ठी बाँध लेनी चाहिए । पास पूरा होने पर हर बार हाथ उसी तरह झाड़ देना चाहिए जैसे गन्दे पानी से भीग जाने पर हाथ को झाड़ देते हैं । इसमें भूल नहीं होनी चाहिए वरना रोगी की पीड़ा चिकित्सक को लग सकती है । धीरे से हाथ झाड़ देना चाहिए, इतना जोर लगाना जिससे हाथ को तकलीफ हो, उचित नहीं । तुम्हारे नाखून अच्छी तरह कटे हुए साफ होने चाहिए । मार्जनों में विद्युत प्रवाह के निकलने का मुख्य मार्ग उँगलियों के छोर हैं यदि नाखून बढ़े हुए हों तो वह प्रवाह रुकेगा और रोगी पर पूरा असर न होगा ।

हर एक मार्जन के पश्चात् रोगी के शरीर में से आकाश तत्व (ईथरिक मैटर) बाहर निकला करता है । इसे पूरी तरह बाहर न फेंका जाय तो चिकित्सक की उँगलियों में वह लगा रह जायेगा और उसे भी वह बीमारी पैदा कर सकता है । असावधान चिकित्सक अक्सर असावधानी के कारण रोगी का रुग्ण द्रव्य अपने ऊपर डाल लेते हैं और खुद उस बीमारी को भोगते हैं ।

किसी समतल स्थान पर फैली हुई वस्तु को यदि तुम उँगलियों के सहारे आगे को घसीटो तो उँगलियों को झुकाकर टेढ़ा सा कर लेना पड़ेगा । पास करते समय भी इस प्रकार उँगलियों को जरा सा झुका लेना पड़ता है । यदि रोग कठिन हो और रोगी बड़ी उम्र का हो तो सब उँगलियों को आपस में सटा लेना चाहिए, इससे सब उँगलियों की शक्ति सम्मिलित होकर बहुत प्रबल हो जाती है, किन्तु यदि किसी साधारण रोग या बालक के लिए पास देना हो तो उँगलियों को थोड़ा खुला रहने देना चाहिए इससे उपचार मध्यम श्रेणी का या हल्का रहेगा । अँगूठों को मोड़कर हथेली से सटा लेना चाहिए, किन्तु यदि दोनों हाथों की शक्ति को सम्मिलित करके बहुत प्रबल बनाना हो तो दोनों अँगूठों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर आपस में सटा देना उचित है । उँगलियों को रोगी के कुछ फासले पर रखना चाहिए । यह फासला आवश्यकतानुसार आधा इंच से लेकर दो इंच तक का हो सकता है ।

मार्जन करते समय रोगी का समस्त शरीर या पीड़ित स्थान को नंगा रखना चाहिए । कपड़े से ढके रहने पर असर कम होता है, किन्तु कई बार इसका अपवाद भी होता है । स्त्रियों के पवित्र अंगों को वस्त्र रहित नहीं किया जा सकता । बहुत निर्बल रोगियों को खराब मौसम में नंगा नहीं करना चाहिए । ऐसी दशा में एक हल्के वस्त्र से शरीर को ढँक देना चाहिए किन्तु बटन, घुण्डी, पेटी या धोती की गाँठ लगी रहना उचित नहीं । रेशमी या ऊनी वस्त्र को प्रयोग के समय शरीर पर कदापि न रखना चाहिए । उन्हें रखने से प्राण उपचार नहीं हो सकता ।

सम्पूर्ण मार्जन (Longitudinal or Long Pass)—यह पास बहुत प्रयोग होता है । रोगी को मेज, तख्त या किसी ऊँची जमीन पर पीठ के बल चित्त लिटा कर सिर से पाँव तक यह पास दिया जाता है । प्रयोक्ता बगल में खड़ा हो जाता है और जितनी देर जरूरत समझता है मार्जन करता रहता है । हथेली रोगी की तरफ होती है ।

तिर्यक मार्जन (Transures Pass)—यह तिरछे पास केवल छाती, पीठ और पेट पर दिए जाते हैं । दाहिनी तरफ से शुरू करके बायीं ओर से हाथ ले जाते हैं । हथेली नीचे की ओर रखते हैं । ऊपर से नीचे की ओर हाथों को उठाना चाहिए ।

बेधक मार्जन—दाहिने हाथ की तर्जनी या आवश्यकतानुसार दो-तीन उँगलियों को रोगी के शरीर से छः इंच दूर रखकर बर्मे की तरह घुमाओ मानो तुम बीमारी की देह में छेद कर रहे हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निवर्तक मार्जन—निवर्तक पास में हथेली ऊपर को अर्थात् अपनी ओर रखते हैं । रोगी की ओर हथेली की पीठ रहती है और हाथों को प्रवृत्तक पासों की अपेक्षा उल्टी दिशा में ले जाना चाहिए ।

स्पर्श मार्जन (Frictions or Magnetic Frictions)—यह छूता हुआ पास है । रोगी के शरीर को उँगलियों से छूते हुए यह पास किया जाता है ।

प्रगाढ़ स्पर्श मार्जन (Kneading Pass)—यह पास किसी स्थान विशेष पर किया जाता है । उस जगह को उँगलियों के पोरों से आटे की तरह गूँथते रहो ।

थपकी मार्जन (Strocking Pass)—किसी खास स्थान को केवल तर्जनी या अधिक उँगलियों से थपथपाया जाता है । धीरे-धीरे पीड़ित स्थान पर हथौड़ी की तरह उँगलियों की चोट लगाते हैं ।

इससे बहुत उत्तेजना होती है, चैतन्यता आती है और वह स्थान उष्ण हो जाता है ।

अंगुलि प्रसारण—दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को फैला दो । हर उँगली के बीच में थोड़ा फासला रहे । उँगलियों के छोरों को पीड़ित स्थान की तरफ छः इंच के फासले पर रखो । कुछ मिनटों तक इस प्रकार उँगली के छोरों द्वारा प्राप्त बल प्रेरित करने से बड़ा लाभ होता है ।

(२) प्राणमय श्वासोच्छ्वास

श्वासोच्छ्वास का प्रभावशाली प्राणोपचार संसार में चिरकाल से प्रचलित है । अर्नोव का कथन है—मिस्र वासी इस विधि को अन्य सभी उपचार पद्धतियों से श्रेष्ठ समझते थे । मार्कलिन ने एक कथा में लिखा है—एक मरणासन्न बालक में एक स्त्री ने अपनी श्वास फूँकी फलस्वरूप वह तुरन्त ही स्वस्थ हो गया । सन् १६५० ई. में बोरेल नामक सज्जन ने भारत तथा अन्य स्थानों में श्वासोच्छ्वास द्वारा असाध्य रोगियों को अच्छा किया जाते देखा । स्पेन निवासी इंसा मेडोर, रोगियों को श्वास और लार के उपचार से अच्छा करते थे । भारत की झाड़-फूँक अब भी प्रसिद्ध है । जगह-जगह अब भी ऐसे तान्त्रिक पाये जाते हैं जो फूँक मारकर जहरीले जानवरों के विष उतारने तथा रोगियों को ठीक (अच्छा) करने के चमत्कार करते हैं ।

संसार का जर्रा काँप रहा है । विज्ञान बतलाता है कि प्रकृति के अत्यन्त सूक्ष्म परमाणु बराबर काँपते रहते हैं । उनकी यह कम्पन क्रिया ताल रूप से होती है । विश्व की समस्त हलचलों का मूल स्रोत यह 'ताल' ही है । इधर से उधर उड़ते फिरने वाले और क्षणभर भी स्थिर न रहने वाले अणु इस तालयुक्त कम्पन के प्रभाव से इतने शक्तियुक्त होते हैं कि वह प्रकृति के क्रीड़ा क्षेत्र में नित नये अद्‌भुत रूपों में प्रकट और लय होते रहते हैं ।

एक क्रिया का एक ठीक नियमानुसार बार-बार दुहराया जाना ही 'ताल' है । समुद्र में ज्वारभाटा उठना, ग्रहों का घूमना, दिन के बाद रात का आना, साँस का लेना-छोड़ना, दिल का धड़काना, रक्त का दौरा यह सब बातें ताल स्वरूप हैं । यह ताल बन्द हो जाय तो विश्व की लीला ही समाप्त हो जायेगी ।

विज्ञान द्वारा सिद्ध हो चुका है कि किसी बाजे को बहुत देर तक एक ही ताल पर बजाया जाय तो उसका परिणाम भयंकर हो सकता है । फौजी परेड के समय सिपाही 'लैफ्ट'' ''राइट'' की ध्वनि पर कदम मिलाते हुए चलते हैं । इसका अद्‌भुत परिणाम होता है । यह ध्वनि सिपाहियों में एक तरह की उत्तेजक बिजली पैदा करके उनमें जोश भरे रहती है । किन्हीं नदी आदि के पुलों पर जब पैदल पल्टन निकलती है तो समध्वनि से तालयुक्त कदम मिलाकर चलना बन्द कर देते हैं और बिखरी हुई चाल से सिपाहियों को चलना होता है, क्योंकि कदम मिलाकर चलने से कम्पन इतने भारी हो सकते हैं कि उस पुल और पल्टन दोनों को ही ले बैठें ।

इतना जान लेने के बाद तुम्हें मान लेना चाहिए कि संसार की शक्ति 'ताल' के अन्तर्गत है । तुम उस ताल की सहायता से अपना जीवनक्रम चला रहे हो । यदि उस तालशक्ति का उपयोग कर सको तो उसके द्वारा बहुत काम कर सकते हो । योगी लोगों ने प्राणायाम को इतना ऊँचा महत्त्व इसीलिए दिया है । ''साँस की साधारण कसरत से क्या हो सकता है ?'' यह कहकर स्थूल बुद्धि के लोग प्राणायाम का मजाक उड़ाते हैं किन्तु सच्चा योगी जानता है कि इसी महान क्रिया के अवलम्ब पर प्रकृतिशक्ति के अनन्त प्रवाह से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना सम्बन्ध स्थापित करता है और जो चाहता है, भरपूर प्राप्त करता है ।

इस अध्याय में तुम्हें यह सीखना है कि तालयुक्त श्वास-प्रश्वास क्रिया करके कैसे वह प्राण शक्ति प्राप्त की जा सकती है ? जो रोगों का निवारण करने योग्य हो । आगे ऐसा ही एक अभ्यास बताया जाता है जिसका कुछ दिन अभ्यास करके उस रोग परिहारक शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है ।

अखिल विश्व में असंख्य ताल ध्वनियाँ व्याप्त हैं और उनकी शक्तियों की सीमा एवं सम्भावनाएँ भिन्न-भिन्न हैं । तुम्हारे काम के लिए अपने हृदय की धड़कन की ताल बहुत उपयुक्त है क्योंकि तुम्हारा समस्त शरीर इसी ध्वनि से गूँज रहा है और आसानी के साथ इससे लाभ उठाया जा सकता है ।

अपनी दाहिने हाथ की नाड़ी पर बाँये हाथ की तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उँगलियाँ इस प्रकार रखो मानो तुम कोई वैद्य हो और अपनी नाड़ी परीक्षा कर रहे हो । नाड़ी की चाल को ध्यानपूर्वक उँगलियों पर अनुभव करो और १, २, ३, ४, ५, ६ का क्रम बाँधकर उसकी चाल को बराबर गिनो ।

यह बतला चुके हैं कि शब्द को नियत कम से बार-बार दुहराया जाय तो एक ताल या ध्वनि उत्पन्न हो जाती है यदि तुम तीन या चार और अधिक कम-बढ़ में 'न' संख्या में 'न' या किसी शब्द को बार-बार कहो तो एक ध्वनि बँध जायेगी । 'न' 'न' 'न' 'न' 'न' 'न' 'न' 'न' । इन्हीं शब्दों को कुछ अधिक बार एक क्रम से उच्चारण करो एक गीत सा बन जायेगा । यही बात नाड़ी के बारे में होगी । उँगलियों को नाड़ी पर रखकर ध्यानपूर्वक उस पर चित्त जमाने से १, २, ३, ४, ५, ६, । १, २, ३, ४, ५, ६ का समा बँध जायेगा और एक विशेष प्रकार की ताल अपने अन्दर उत्पन्न होने का अनुभव होगा ।

साधारणतः लोग ६ बार नाड़ी धड़कने के समय में एक साँस लेते हैं । अभ्यास द्वारा यह संख्या बढ़ाई जा सकती है तुम्हारा अभ्यास इस प्रकार का होना चाहिए कि श्वास खींचने (पूरक) और श्वास छोड़ने (रेचक) में नाड़ी की धड़कन बराबर हो । श्वास भर रखने और छोड़ देने के बाद पेट खाली रखने (कुम्भक) की संख्या उससे आधी हो । जब श्वास का क्रम बढ़ाओ तब कुम्भक की मात्रा में भी इसी अनुमान से वृद्धि होनी चाहिए ।

साधारणतः एक सप्ताह तक दिन में कई बार १,२, ३, ४, ५, ६ की नाड़ी धड़कन का अनुभव करने से भीतर एक ताल सी बँधने लगती है । तब यह प्राणायाम शुरू कर देना चाहिए ।

(१) प्रातःकाल किसी एकान्त स्थान में पूर्व की ओर मुँह करके आसन पर आराम से बैठ जाओ । मेरुदण्ड बिल्कुल सीधा रखो ।

(२) नाड़ी की धड़कन छः बार गिनते हुए धीरे-धीरे साँस को भीतर खींचो ।

(३) तीन धड़कन तक साँस को रोक रखो ।

(४) छः धड़कनों में साँस को धीरे-धीरे बाहर निकाल दो ।

(५) तीन धड़कनों तक बिना साँस के रहो ।

आरम्भ में कुछ ही मिनट इसे करो । आसानी से जब तक करते रह सको करो । जब थकान आने लगे या कुछ घबराहट सी प्रतीत होने लगे, बन्द कर दो । धीरे-धीर अभ्यास बढ़ाकर एक साँस के लिए १५ धड़कन तक की संख्या बढ़ाई जाती है । साथ ही कुम्भक की संख्या में उसी अनुपात में वृद्धि करते चलना चाहिए । आरम्भ में साँस को लम्बी करने का प्रयत्न मत करो । छः बार से अधिक तब बढ़ो जब ताल का अनुभव बहुत स्पष्ट होने लगे । यह ताल ही शक्ति का केन्द्र है ।

जब ताल का अनुभव होने लगे तभी समझ लेना चाहिए कि हमारी श्वासोच्छ्वास क्रिया रोग निवारक शक्ति से संयुक्त हो गई । उस शक्ति का परिणाम ताल की स्पष्टता के ऊपर निर्भर है ।

कुछ रोग निवारक श्वास क्रियाएँ

बीमारों को प्राण युक्त श्वासोच्छ्वास से प्रभावित करने की कई विधियाँ हैं । नीचे उसमें से कुछ का वर्णन किया जाता है ।

उष्ण श्वास—बीमार के पीड़ित अंग पर एक नया और बहुत हल्का कपड़ा फैला दो । नाक से साँस खींचो और मुँह से उस कपड़े पर फूँक मारो । फूँक मारते समय मुँह ऐसे कर लेना चाहिए जैसी सीटी या वंशी बजाते समय कर लिया जाता है । पीड़ित स्थान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से मुँह को छः इंच से लेकर एक फुट तक दूर रखना चाहिए ।

शीतल श्वास—उष्ण श्वास की तरह यह क्रिया भी की जाती है । अन्तर केवल इतना होता है कि फूँक मारते समय जीभ को उल्टी करके तालू से सटा लेते हैं ।

जल मन्त्रित करना—उपरोक्त शीतल और उष्ण श्वास क्रियाएँ चिकित्सक की उपस्थिति में ही हो सकती हैं, किन्तु बहुत से समय ऐसे होते हैं जब हर वक्त रोगी और चिकित्सक एक साथ नहीं रह सकते । तब मन्त्रित जल ही सबसे सरल उपाय सिद्ध होता है । इसकी कई विधियाँ हैं—

(१) एक काँच के गिलास में स्वच्छ जल भरकर उसे बायें हाथ की हथेली पर रखो और उसी हाथ के अंगूठे, उँगलियों को ऊँचा उठा कर गिलास को पकड़ लो । उनके दाहिने हाथ की उँगलियों को गिलास के मुँह के पास एक इंच के फासले पर बायीं ओर लाओ । जिस रोग को जिस तरह अच्छा हुआ देखना चाहते हो उसकी दृढ़ भावना करते हुए उँगलियों को पानी के ऊपर पाँच सात बार झड़क दो ।

(२) बायें हाथ में जल का भरा हुआ काँच का गिलास पकड़ो । उसे मुँह से छः इंच की दूरी पर रखो और उष्ण श्वास या शीतल श्वास जो देना चाहते हो उसी क्रिया के अनुसार सीटी की तरह मुँह बनाकर पानी में फूँक मारो ।

(३) बायें हाथ में गिलास लो और दाहिने हाथ को मुट्ठी बन्द करके कन्धों पर ले जाओ । वहाँ से मुट्ठी को लाओ और पानी के ऊपर चार इंच दूरी पर मुट्ठी को इस प्रकार झड़कते हुए खोलो मानो उसमें कोई डेला रखा हुआ था । जिसे तुमने पानी में फेंक दिया, ऐसा पाँच से दस बार करना चाहिए । यदि जल को उष्ण स्वभाव का बनाना है तो यह मुट्ठी फेंकने की क्रिया दाहिने हाथ से करो और शीतल करना है तो बायें हाथ से करो ।

(४) बोतल या शीशी में जल भरा हो तो गेहूँ या जौ की पोली डण्ठल उसके पेंदे में डालकर ऊपर से फूँक मारनी चाहिए जिससे पानी में बुलबुले उठने लगें ।

(५) जल पात्र को किसी लकड़ी की वस्तु पर रखकर उसके ऊपर निवर्तक या प्रवर्तक पास देकर उसे उसी गुण का बनाया जा सकता है ।

डॉक्टर विलियम डेवी का कथन है कि इन अनेक क्रियाओं में यह क्रिया अधिक उपयुक्त है कि पाँच-सात मिनट तक जल को शीतल या उष्ण श्वास से मन्त्रित कर दिया जाय ।

इन मन्त्रित जलों के सम्बन्ध में यह याद रखना चाहिए कि वह किसी धातु या ऐसी वस्तु से न छू जाय जिसमें बिजली पार हो जाती है । हाथ से या किसी धातु से यदि मन्त्रित जल छू जाय तो वह बेकार हो जाता है । ४८ घण्टे तक जल में मन्त्रित शक्ति रहती है इससे अधिक समय बाद भी जल गुणहीन हो जाता है ।

तेल को मन्त्रित करना—पीड़ित स्थानों पर लगाने के लिए कई बार तेलों की आवश्यकता होती है । साधारणतः शुद्ध तिली का तेल इस कार्य के योग्य होता है । परन्तु सिर पर लगाने के लिए सरसों, ब्राह्मी या आँवले का तेल भी काम में लाया जा सकता है । योरोपीय देशों में प्राण चिकित्सक इन तेलों में मुँह की लार मिलाते हैं, परन्तु भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए यह विधि उचित प्रतीत नहीं होती । पश्चिमी पण्डितों का कहना है कि तेल अधिक स्थूल वस्तु है इसलिए यह साधारण श्वास क्रिया से प्रभावित नहीं होता । डॉक्टर ल्यूविस इस बात को नहीं मानते उन्होंने सिद्ध किया है कि तेल में रबड़ या किसी के डण्ठल की नली डालकर उसमें फूँक द्वारा दस मिनट बुलबुले उठाकर उसे पूरी तरह प्रभावित किया जा सकता है और उससे भी उतना ही लाभ होता है जितना थूक मिलाकर तैयार किए तेल से होता है । इस देश की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर ज्यूविस की विधि ही अधिक उचित प्रतीत हुई है ।

अमृत श्वास—इस प्रणाली में कई प्रकार के साधारण उपचार भी किए जाते हैं, जिनसे हर प्रकार के रोगों में लाभ होता है । जो साधक श्वासोच्छ्वास की बारीकियों को नहीं जानते वे इन क्रियाओं में से किसी को खुशी-खुशी कर सकते हैं ।

(१) एक स्वच्छ सूती रूमाल रखकर उसे पीड़ित भाग में डाल देते हैं और उस पर ऊपर से फूँक मारने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की क्रिया करते हैं । इससे रूमाल पर थूक आदि वे पदार्थ रह जाते हैं जो श्वास के साथ मुँह से निकल गए थे । कपड़े में छनकर निर्मल प्राण-तत्व रोगी तक पहुँच जाता है ।

(२) पीड़ित स्थान से अपने मुँह को एक फुट दूर रखो और दोनों हाथों की कुण्डली मुँह के आस-पास इस प्रकार बनालो जैसे किसी को बहुत दूर आवाज देने या दीपक बुझाने के लिए कर लेते हैं । हाथों को इस प्रकार कर लेने से फूँक इधर-उधर न उड़कर सीधी रुग्ण अंग तक पहुँचेगी । इस रीति से रोगी को बहुत शान्ति एवं शीतलता अनुभव होती है कभी-कभी तो उसे निद्रा आने लगती है ।

रोगी के शरीर से कम से कम छः इंच के फासले से नाक द्वारा साँस खींचो और रुग्ण अंग के पास मुँह ले जाकर साँस छोड़ दो । साँस छोड़ते समय मुँह पूरा खोल देना चाहिए जैसे कि जम्हाई लेते समय खोलते हैं ।

(३) स्पर्श क्रिया

रोगी के शरीर को छूकर जो स्पर्श क्रिया की जाती है उसका भी विचित्र प्रभाव होता है । इस प्रणाली को मनुष्य जाति चिरकाल से जानती आ रही है । प्रमुख लेखक अल्पिनी ने लिखा है कि मिस्र के पुरोहित लोग एक विशेष प्रकार की रहस्यमय मालिश करके कठिन रोगों को दूर कर देते थे । प्राचीनकाल के ख्यातिनामा चिकित्सक हिप्रोक्रेट ने मालिश द्वारा ही अनेक रोग अच्छे किए थे । क्रेशस नामक एक उपचारक इस क्रिया को बहुत महत्त्व देता था । उसने अपनी पुस्तक में तर्क और प्रमाणों सहित मालिश की उपयोगिता सिद्ध की है । ट्रालिस का अलक्षेन्द्र नामक एक यूनानी चिकित्सक रहस्यमय मालिश करने में कुशल था और सब बीमारियों में इसका उपयोग करता था । फ्रांस के तेरहवें लुई के राज वैद्य पिटर बोकेले ने राज्य सभा में ही खड़े-खड़े कुछ भयंकर रोगियों को अच्छा कर दिया था । आजकल भी पैरों को दबाना, सिर की मालिश करवाना, देह में तेल लगवाना, तलवों की मालिश आदि का सब जगह प्रचार है । इन्हें करवाने के बाद लोग महसूस करते हैं हमें आराम मिल रहा है । पेट के दर्द में उदर पर हाथ फिराने और सिर दर्द होने पर सिर दबाने का महत्त्व गाँवों के अशिक्षित स्त्री-पुरुष भी जानते हैं ।

मालिश द्वारा संजीवन बल प्रेरित करने के लिए जोर-जोर से दबाने की जरूरत नहीं है, बल्कि हाथ हल्का, सुखकर और कम्पन के साथ चलना चाहिए । औपचारिक मालिशों में हथेली का पिछला भाग और उँगलियों का ही अधिक प्रयोग होना चाहिए ।

(१) दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में रगड़ कर गर्म करते हैं और एक या दोनों को पीड़ित स्थान पर रख देते हैं और तीन मिनट बाद फिर उन्हें रगड़ते और उसी प्रकार रखते हैं । इस तरह कई बार करने पर बहुत लाभ होता है । सिर दर्द और आँखें दूखने की दशा में यह प्रयोग विशेष उपकारी है ।

(२) चारों उँगिलयों के छोर एक सीध में करो । चूँकि उँगलियाँ छोटी-बड़ी होती हैं इसलिए बड़ी को कुछ झुकाकर और छोटी को सीधी रखकर उनके छोर एक सीध में लाये जा सकते हैं । इस प्रकार चारों उँगलियों को एक सीध में लेकर उन्हें रोगी के दुःखी अंग या सम्पूर्ण शरीर पर बहुत हल्का स्पर्श करते हुए फिराना चाहिए, यदि उन्हें समस्त शरीर पर यह स्पर्श करना है तो एक साथ ही पूरे शरीर पर मत करो वरन् एक बार सिर से पेट तक और दूसरी बार पेट से पाँवों तक करो । छाती और पेट का विशेष रूप से ध्यान रखो क्योंकि पोषक रस यहीं से पैदा होते हैं ।

(३) पूरे हाथ से पीड़ित अंगों को लगातार और क्रम के अनुसार स्पर्श करना एक प्रकार की मालिश है । इससे चुम्बक प्रवाह एक शरीर से दूसरे शरीर में जाकर मदद करता है ।

(४) कई चिकित्सकों के मत से 'वर्तल-स्पर्श' नामक एक और भी विधि बहुत उपयुक्त है । इसमें पीड़ित स्थानों पर हाथ और उँगलियों को गोलाकार घुमाते हैं । घड़ी की सुई की तरह हाथ दाहिनी ओर से फेरना चाहिए बायीं ओर से कदापि नहीं ।

(५) माँसपेशियों और नाड़ियों के जकड़ जाने की दशा में गूँदने की मालिश बहुत लाभदायक रहती है । आटे को जिस तरह गूँदते हैं उसी तरह रुग्ण भाग को उँगलियों से क्रमबद्ध गति से दबाते हैं ।

(६) चिकोटी काटना उत्तेजक उपाय है । यह रक्त संचार को बढ़ा देता है । तर्जनी और अँगूठे से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आध इंच चमड़ी की चिकोटी भरनी चाहिए और फिर उसे छोड़कर दूसरे स्थान को ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार दोनों हाथों से जल्दी-जल्दी पीड़ित भाग को गोलाकर चिकोटियाना चाहिए ।

(७) रगड़ने या घिसने की मालिश उन अंगों पर की जाती है जो बहुत ही निर्बल और क्षीण हो गये हों । चारों उँगलियों का निचला भाग दुःखी अंग पर तब तक रगड़ते हैं जब तक कि वह खूब गर्म न हो जाय ।

(८) बार-बार पीटना प्रहार की पद्धति है । हाथ को गड़ासे की तरह का बनाओ । कुट्टी कूटने में गड़ासे की धार को जिस प्रकार मारते हैं उसी तरह हाथ के निचले भाग से लम्बी-लम्बी थपकी मारो । तलवार या छुरी जिस प्रकार किसी को काटते हैं उसी तरह हाथ के निचले भाग की क्रिया होती है । उँगलियाँ मिला कर हाथ खुला रखा जाता है और कनिष्ठका (छोटी उँगली) की ओर से प्रहार किया जाता है ।

(९) थप्पड़ और चाँटा मारना सब जानते हैं । तुमने किसी में कभी चाँटा जरूर मारा होगा । ठीक उसी तरह यह क्रिया भी होती है फर्क इतना ही है कि यह चाँटे हल्के सुखकर होते हैं और एक नियत गति से एक ही स्थान पर बहुत देर तक लगाये जाते हैं ।

(१०) खोखली ताली बजाने का अभ्यास हर कोई थोड़े अभ्यास के बाद आसानी से कर सकता है । नाटक, सर्कसों में नट लोग मनोरंजन के लिए जिस प्रकार पोले हाथ से चाँटा मार कर खोखली आवाज चटकाते हैं, उसी तरह यह थपकियाँ होती हैं । हथेली का बीच का भाग उठा हुआ और पोला रखते हैं । उँगलियों और हथेली की जड़ का ही प्रयोग होता है । इस प्रकार की थपकियाँ भी बीमार को दी जाती हैं ।

(४) कम्प उपचार

कम्प क्रिया प्राण उपचार का प्रमुख साधन है । इसका प्रभाव आरम्भ में कुछ कठिन मालूम होता है, पर कुछ दिन के प्रयत्न से सफलता मिल जाती है । हाथ को कुछ देर तक लगातार इस प्रकार कँपाते रहते हैं मानो विद्युत गति या किसी यन्त्र से उसे थरथराया जा रहा हो । यह कम्प उपचार है । किसी पतले बेंत को एक बार जोर से फटकार दो तो वह कुछ देर तक कँपकँपाता रहता है । घड़ियाल में हथौड़ी लगने पर घण्टा शब्द होता है और तदुपरान्त वह कुछ क्षण काँपती रहती है । यही क्रिया हाथ में होनी चाहिए । कलाई से लेकर कोहनी तक की पेशियों को कड़ी करके थरथराहट पैदा करने से यह कम्पन आ सकता है । उपचार करने से पूर्व एक-सी गति से बिना थके हुए हाथ को कुछ देर कँपाते रहने का अभ्यास करना चाहिए ।

एक छोटी मेज पर काँच का रखा हुआ गिलास रखो और हाथ को मेज पर रखकर उसे थरथराओ । इससे मेज और गिलास में कम्पन पैदा होंगे । पानी भी हिलेगा । हाथ का ठीक कम्पन वह है जिसके आघात से पानी के ठीक बीच में कम्पन का एक गड्ढा सा पड़ेगा, इधर-उधर नहीं । काम चलाऊ कम्पन भी उसी समय समझा जा सकता है जब हाथ बिना थके कुछ देर तक एक सी गति से कँपता रहे ।

जिस अंग पर कम्पन देना है उसे अधिक मत दबाओ । हथेली और उँगलियों का इतना स्पर्श रोगी के शरीर पर होना चाहिए कि हाथ को किसी प्रकार की बाधा या रुकावट न मालूम हो और रोगी को ऐसा अनुभव होता रहे मानो विद्युत प्रवाह के कम्पन मेरे शरीर पर हो रहे हैं । यह हल्के कम्पन एक स्थान पर देने से भी समस्त शरीर में भिद जाते हैं । जिस समय रोगी के किसी अंग पर कम्पन दिया जा रहा है उसी समय यदि कोई व्यक्ति उसके दूसरे किसी अंग को छुए तो वहाँ भी कम्प का अनुभव करेगा ।

यह कम्पन केवल एक हाथ की हथेली तथा उँगलियों से और दोनों हाथ की हथेलियों तथा उँगलियों से दिए जाते हैं । यदि थोड़ा भाग पीड़ित है तो एक हाथ का उपचार काफी है । यदि सारे धड़ या मस्तिष्क पर उपचार करना है तो दोनों हाथों का उपयोग करना चाहिए । साधारणतः दो से पाँच तक के कम्पन पर्याप्त समझे जाते हैं ।

(५) मन्त्रित वस्तुओं द्वारा उपचार

मनुष्य शरीर का विद्युत प्रवाह उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन्हें वह प्रयोग में लाता और स्पर्श करता है । पहना हुआ कपड़ा, जूठा अन्न-जल, छुए हुए कागज-पत्र आदि अपने प्रयोक्ता के "ऑरा" से प्रभावित हो जाते हैं । भारतीय तत्वदर्शियों ने इसी विज्ञान को ध्यान में रखते हुए छूत-छात का भेद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्माण किया है । जो धातुएँ विद्युत प्रवाह से प्रभावित हो जाती हैं उनके काँसे, पीतल आदि के पात्रों में अपने से भिन्न प्रकृति के लोगों को भोजन न देने का विधान इसी दृष्टि से किया गया है । सूत की अपेक्षा ऊनी, रेशम आदि के बने वस्त्र दूसरों का असर कम ग्रहण करते हैं इसीलिए उन्हें पवित्र माना जाता है । पुराने ख्याल के भारतीय ही नहीं नये ख्याल के अंग्रेज भी छूत का विचार करते हैं । दूषित वस्तु को छूकर वे तुरन्त ही साबुन से हाथ धोते हैं । खाज, उपदंश, प्लेग, तपेदिक आदि के मरीजों से सब लोग बचते हैं कि कहीं हमें भी छूत न लग जाय । बुरे लोगों के साथ रहने पर बुरा बनने और अच्छे लोगों के साथ से सुधरने की बात दर्पण की तरह स्पष्ट है और उसे सब लोग मानते हैं ।

इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर प्राण चिकित्सक कुछ वस्तुओं को मन्त्रित करके अपने प्राण बल से भर सकता है । यह वस्तुएँ उस अवस्था में भी काम दे सकती हैं । जब रोगी दूर हो या चिकित्सक के लिए रोगी को बार-बार देखना या अधिक समय तक उपचार करना सम्भव न हो । जिन चिकित्सकों के पास अधिक संख्या में मरीज आते हैं वे हर एक के लिए आध-आध घण्टा समय नहीं दे सकते । यद्यपि एक से रोगों के कई मरीजों को एक साथ बिठाकर उनका मानसिक उपचार और मार्जन किया जा सकता है । रोगियों की संख्या कुछ अधिक बढ़ जाने पर एक चिकित्सक प्रबन्ध नहीं कर सकता । यदि अधिक रोगियों का इलाज करने का अवसर आये तो मन्त्रित वस्तुएँ देकर चिकित्सा की जा सकती है किन्तु साथ ही अपने अन्दर अधिकाधिक मात्रा में प्राण संचित करना चाहिए । अन्यथा थोड़ी पूँजी को अधिक लोगों में बाँट देने पर हर एक को जरूरत से कम मिलता है उसी प्रकार का वह इलाज भी होगा ।

फलालेन को मन्त्रित करना

श्वास द्वारा प्रभावित करने के लिए रोयेंदार फलालेन का कपड़ा बहुत अच्छा है । यदि चौबीस घण्टे तक ही प्रयोग करना हो तो सूती फलालेन ठीक है किन्तु यदि दो सप्ताह तक प्रभाव कायम रखना हो तो ऊनी फलालेन लेनी चाहिए । सूती फलालेन साधारण उपचार से प्रभावित हो जाती है किन्तु वह प्रायः एक दिन रात में अपनी प्रबल शक्ति खो देती है । पीछे तो उसमें एक हल्का सा असर बाकी रह जाता है । ऊनी फलालेन देर में प्रभावित होती है । करीब आधा घण्टा उसे शक्ति सम्पन्न करने में लग जाता है किन्तु वह असर देर तक ठहरता है और आसानी से दो सप्ताह काम दे जाती है ।

रोगी को ठण्डा या गर्म जिस श्वास की आवश्यकता है वही इस फलालेन के टुकड़े पर देनी चाहिए । टुकड़ा पीड़ित भाग को देखकर काटना चाहिए । यदि आँख, कान आदि किसी छोटे अंग में पीड़ा है तो उतना ही बड़ा टुकड़ा काफी है, किन्तु यदि समस्त शरीर में रोग है तो पेट और छाती को ढक सकने योग्य कपड़ा लेना चाहिए । सारे रोगों की जड़ पेट में होती है । इसलिए सारे शरीर को ढकने की आवश्यकता नहीं केवल पेट और छाती को प्रभावित करने से ही काम चल सकता है । उपयुक्त टुकड़ा लेकर उसे आध घण्टे तेज धूप में सुखा लो । यदि उस समय धूप की व्यवस्था न हो तो आग पर अच्छी तरह से जिससे अब तक वह जिन विचारों से प्रभावित रहा हो तो दूर हो जाय । यदि तुम प्राण चिकित्सा करते हो तब तो इस प्रकार निर्मल की हुई फलालेन पहले से ही तैयार रखनी चाहिए जिससे आवश्यकता पड़ने पर व्यर्थ ही बिलम्ब न हो । इस विशुद्ध टुकड़े को अच्छी तरह धोये हुए दाहिने हाथ की हथेली पर रखो, हाथ को पसार कर सीधा कर दो, कहीं टेड़ा या गड्ढेदार न रहे, उँगलियाँ आपस में मिली हुई हों । हाथ पर रखे हुए उस टुकड़े को मुँह से छः इंच के फासले पर रखो और उस साँस को डालना प्रारम्भ करो जिसके अनुसार रोगी की चिकित्सा करना चाहते हो । जवान आदमी के लिए सूती कपड़ा दस मिनट और ऊनी आधा घण्टा तक प्रभावित करना चाहिए । स्त्रियों के लिए इस समय का तीन-चौथाई और बच्चों के लिए आधा समय काफी है । इस प्रभावित कपड़े को कागज में लपेट देना चाहिए । प्रयोग करते समय कोई दूसरा व्यक्ति उसे न छुए । उचित समय पर रोगी अपने आप उसे अपने अंगों पर डालने योग्य स्थिति में न हो तो दूसरा आदमी हाथ से न छूकर लकड़ियों की सहायता से उसे पीड़ित अंग पर डाले और जब उठाना हो तो लकड़ियों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहायता से उठाकर कागज में लपेटकर रख दे । इस कपड़े को धूप नहीं लगानी चाहिए ।

कागज में शक्ति भरना

एक सफेद सादा और नया ब्लाटिंग पेपर (स्याही सोख कागज) का टुकड़ा लो । साधारणतः यह पोस्टकार्ड साइज का काफी है । कागज के दोनों ओर शुद्ध जल या गंगाजल के थोड़े छींटे डाल लो । अब अपने दोनों हाथों को रगड़कर गर्म कर लो और उनके बीच में उस कागज को दबा लो । एकाग्रतापूर्वक अपने संकल्प बल से निरोगता के विचार उसमें प्रेरित करो और पाँच मिनट तक इसे अपनी भावनाओं से भरते रहो ।

मन्त्रित औषधियाँ

कई प्राण चिकित्सक मन्त्रित औषधियों का भी विभिन्न रोगों पर उपचार करते हैं । हमारे मत से यह प्रणाली प्राण चिकित्सा की नहीं है फिर भी जब बहुत से चिकित्सक जो इसका प्रयोग करते हैं । वह लाभदायक बताते हैं । वे केवल एक ही वनस्पति द्वारा चूर्ण, गोली, टिकिया, अर्क आदि बनाते हैं । उनके मत, से 'दो-तीन वस्तुएँ मिला कर बनाई हुई, रसादि, विषों द्वारा निर्मित, किसी वस्तु का उपयोग करना तो सर्वथा निषिद्ध है । काली मिर्च, सोंठ, तुलसी पत्र, ब्राह्मी, बच आदि किसी वनस्पति औषधियों को अकेली ही लेकर चूर्ण या गोली आदि बनाई जा सकती हैं और निघण्टु ग्रन्थों में वर्णित उसके गुणों के अनुसार रोगों पर प्रयोग किया जा सकता है । औषधि तैयार होने के उपरान्त उसे श्वासोच्छ्वास क्रिया से मन्त्रित करके शीशियों में बन्द कर देना चाहिए । केवल शकर या दूध शक्कर मिलाकर बनाई हुई गोलियाँ मन्त्रित करके सब रोगों में अनुपान भेद से काम लेने के लिए रखी जा सकती हैं ।

अन्य उपचार

मन्त्रित यज्ञ की भस्म उन रोगियों को मस्तक, छाती, हृदय और कलेजे पर लगानी चाहिए जो अपने को किसी दूसरे के द्वारा प्रभावित हुआ समझते हैं । किसी को मन्त्र चलाकर रोगी किया हुआ समझा जाता हो, नजर लग गई हो या भूत-प्रेत आदि का आक्रमण बताया जाता हो तो यज्ञ की भस्म उसे लगा देनी चाहिए ।

कई लोगों को ताबीजों पर विश्वास होता है । केशर, कपूर और चन्दन घिस कर अनार की लकड़ी से शुद्ध कागज पर गायत्री मन्त्र लिखकर ताबीज में भरा जा सकता है । जिस प्रकार फलालेन या ब्लाटिंग पेपर मन्त्रित किए जाते हैं उसी तरह हाथ के कते और कई बार बटे हुए सूत को मन्त्रित करके उसमें ठीक बीचोबीच बराबर-बराबर पाँच-सात गाँठे लगा देनी चाहिए । यह रक्षा सूत्र आशीर्वाद के रूप में रोगियों की मानसिक उन्नति कर सकता है । हाथ से मार्जन करने की अपेक्षा कई लोग मोर के पंख या नीम के लहरे से मार्जन करते हैं उनका कहना है कि इन वस्तुओं को वायु में घुमाने से एक विषनाशक वातावरण पैदा होता है । चिकित्सक इन बातों का स्वयं तजुर्बा करें और देखें कि इसमें कहाँ तक सफलता मिलती है ।

द्रव्य पदार्थों को अभिमन्त्रित करना

पानी, तेल या मक्खन को भी इसी प्रकार अभिमन्त्रित किया जा सकता है । श्वासोच्छ्वास के प्रकरण में पानी और तेल को मन्त्रित करने की विधि बताई जा चुकी है । स्वच्छ जल एक काँच के गिलास में लेकर पूर्वोक्त विधि से इच्छा शक्ति एवं श्वास प्रेरित करने पर पाँच-सात मिनट में अभिमन्त्रित हो जाता है । तेल के लिए फूँस की पोली नली तेल के पेंदे तक पहुँचा कर उसका दूसरा सिरा मुँह में रखते हुए फूँक मारनी चाहिए । जिससे तेल में बुलबुले उठने लगें । दूध को पानी की तरह मन्त्रित किया जाना चाहिए और घी या मक्खन में तर्जनी उँगली पाँच मिनट तक इस प्रकार घुमानी चाहिए जैसे दही को मथने के लिए रई घुमाई जाती है । यह कहने की तो आवश्यकता ही नहीं कि हर प्रयोग में तीव्र इच्छा शक्ति का समन्वय होना चाहिए ।

प्राण चिकित्सकों को निजी सलाह

तुम प्राण-तत्व द्वारा रोगियों की चिकित्सा करना चाहते हो । प्राण-तत्व एक दैवी पदार्थ है । इसलिए इसे प्राप्त करने और सुरक्षित रखने के लिए तुम्हें विशेष रूप से अपने अन्दर दैवी गुण धारण करने पड़ेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधारण वैद्यों की तरह चाहे जैसा जीवन बिताकर तुम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते ।

तुम चिकित्सक हो इस बात का कभी अभिमान मत करो । अपने को सिद्ध मत समझो, केवल यही अनुभव करो कि मैं जनता जनार्दन का एक तुच्छ सेवक हूँ । अपनी छोटी-मोटी शक्ति के अनुसार जितना भी किसी का भला कर सकता हूँ, करता हूँ । किसी को अभिमान में भरी हुई बात मत कहो । 'मैं यह कर दूँगा ।' 'मुझमें इतनी शक्ति है ।' घमण्ड के साथ इस प्रकार की शेखी मत मारो, क्योंकि असल में तुम्हारी एक सीमा है और उस सीमा के अन्तर्गत रहकर ही तुम दूसरों को अपनी सहायता दे सकते हो । इस बात को गाँठ बाँध लो कि बीमार चंगा करना रोगी की अपनी जीवनी शक्ति के ऊपर निर्भर है । तुम अपने प्राण उसकी मदद के लिए भेज सकते हो । थके हुए आदमी को विश्राम देकर, मालिश करके, स्नान कराकर, दूध आदि पौष्टिक भोजन कराकर, उत्साह प्रद वाक्य कहकर, जिस प्रकार अपने कार्य पर जुटने और सफलता प्राप्त करने के लिए लगाया जाता है वही काम अपनी चिकित्सा द्वारा तुम करते हो । यदि कोई आदमी बिल्कुल ही हतवीर्य हो गया हो और मरणासन्न दशा में हो तो रबड़ी और मालपुए भी उसे विशेष लाभ न पहुँचा सकेंगे । जिसकी अपनी जीवनी शक्ति मर रही है वह बाहर की थोड़ी बहुत सहायता से जी भी नहीं सकता । निर्बल प्राण वालों को ठीक करने में कुछ देर लगती है और सतेज रक्त वाले रोगी बहुत शीघ्र अच्छे हो जाते हैं । एक बीमार मामूली दवा से थोड़े ही समय में अच्छा हो जाता है, पर दूसरा मामूली रोग के लिए महीनों बढ़िया से बढ़िया दवाएँ खाने पर कुछ लाभ प्राप्त नहीं करता । इसमें दवा का दोष नहीं है । लोगों की समझ भ्रमपूर्ण है यदि वह ऐसी दशा में ठीक इलाज को कोसें । निश्चय ही कोई इलाज किसी बीमारी को अपनी शक्ति से अच्छा नहीं कर सकता । वह इतना ही करता है कि रोगी की जीवनी शक्ति की मदद करे । प्राण चिकित्सा भी एक इलाज है । वह निरापद और सर्वश्रेष्ठ उपचार है, इसके द्वारा दूसरे इलाजों की अपेक्षा रोगी बहुत जल्द अच्छे होते हैं । यह शरीर शास्त्र और मानव शास्त्र के गूढ़ सिद्धान्तों के आधार पर बना हुआ एक वैज्ञानिक उपचार ही है । कोई जादू-टोना या देवताओं के बल से होने वाला चमत्कार नहीं है । जो इसे चमत्कार मानते हैं, वह भूल करते हैं, इसलिये सदैव निरभिमान रहो । सबके प्रति नम्रता का व्यवहार करो । अपनी पद्धति के सिद्धान्त लोगों के सामने रखो और उन्हें स्वतन्त्रापूर्वक विचार करने दो । यदि वे इस प्रणाली पर विश्वास करें तो उपचार करो । नया कार्य देखकर उपेक्षा करें तो चिढ़ो मत और न बुराई मानो । जो लोग दूसरी पद्धतियों से इलाज करते हैं उनसे द्वेष न करो और न उन्हें गलत काम करने वाला समझो । थके हुए आदमी को एक व्यक्ति पैर दाब कर ठीक करना चाहता है, दूसरा दूध पिलाकर । प्रकृति के सम्पूर्ण रहस्यों को अभी कोई नहीं जानता । जिसे जितना ज्ञान है उतना अपनी बुद्धि के अनुसार करता है । किसी भी पद्धति से सही तरीके से इलाज करने पर लाभ होता है । परिणाम में कमी-वेशी की बात दूसरी है ।

अपने विचार पवित्र रखो । तुम चिकित्सक बनने जा रहे हो इसलिए तुम्हारा दर्जा पिता के समान है । रोगियों को अपने पुत्र की जैसी ममता और सहानुभूति की दृष्टि से देखो । कई दुष्ट वैद्य अपने पास आने वाली स्त्रियों को कुदृष्टि से देखते हैं और बीमारों से अधिक से अधिक धन खींचने की सोचते रहते हैं । तुम भी यदि इन घातों को अपनाओगे तो हम इन पंक्तियों को मध्यस्थ बनाकर अपने हृदय की वाणी में तुम्हारे अन्तःस्थल से कहते हैं कि प्रियवर ! घाटे में रहोगे और तुम्हें बहुत पछताना पड़ेगा । सबके मन एक ही महामन के अंश हैं । दिल से दिल को राहत होती है । आन्तरिक भावों का गुप्त रूप से तुरन्त ही दूसरे पर प्रभाव पड़ता है । बुरे विचार रोगी के मन पर एक प्रकार का आघात करते हैं, जिससे उसे कष्ट होता है और उसके इलाज से वह लाभ नहीं लेता । तुम सदैव रोगियों पर प्रेम और वात्सल्य की किरणें छोड़ते रहो । सहानुभूति और हित कामना की वर्षा करके उसे बहलाते रहो । अपने को निःस्वार्थ, निष्कपट और दूध की तरह स्वच्छ रखो । जब तुम्हारी मानसिक भावनाएँ ऐसी बन जायेंगी तो देखोगे कि चारों ओर का वातावरण कितना शीतल हो गया है । छटपटाता हुआ रोगी तुम्हारे निकट आते ही एक शान्ति और सुख का अनुभव करता है, देखते ही उसकी तबियत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हरी हो जाती है और थोड़ी देर के व्यवहार करने पर उसे लगेगा कि मेरा रोग आधा हो गया ।

केवल इस पुस्तक को पढ़कर ही तुम पूरे चिकित्सक नहीं बन जाते । श्वासोपचार, मार्जन, कम्प आदि क्रियाओं को सीखकर ही तुम्हारा कर्तव्य समाप्त नहीं हो जाता वरन् आरम्भ होता है । कुछ खास तरह के हाथ हिला देने, फूँक मार देने आदि से ही बीमारी अच्छी नहीं हो जाती । इसके लिए वह वस्तु उपार्जन करनी पड़ती है जिसके द्वारा दूसरों को सहायता मिलती है । यह प्राण शक्ति का उपार्जन है । इसके लिए एक स्वतन्त्र अध्याय दूसरी जगह दिया हुआ है । प्रतिदिन या जैसे सुविधा हो उन क्रियाओं को करने से भरपूर प्राण शक्ति उत्पन्न होती है । यदि तुम अपने लिए अधिक मात्रा में प्राण उपार्जन न करोगे तो रोगियों को अपना रस चूसने दोगे । पानी में डूबता हुआ व्यक्ति पास वाले को पकड़ कर उस पर अपना भार डालता है । ताकि वह जल्द से जल्द पूरी ताकत के साथ उसे उभार ले । यही बात रोगों की है । रोगी की शारीरिक विद्युत बहुत ऋण (Negative) हो जाती है । वह चिकित्सक का प्राण पीकर पुष्ट होना चाहता है । यदि तुम स्वतन्त्रतापूर्वक उसे पीने दो और नई कमाई न करोगे तो याद रखो दिवालिया बन जाओगे और अपने को स्वयं एक बीमार की दशा में पाओगे । जल्दी और तेजी से किसी का स्वास्थ्य सँभालने योग्य जितना अधिक प्राण तुम्हारे पास होगा रोगी को उतनी ही सफलता के साथ चंगा कर सकोगे ।

अपना मार्ग खुद निकालो । इस पुस्तक में बहुत-सी क्रियाएँ और अनुभूतियाँ लिखी गई हैं पर वह सबके लिए एक-सी नहीं हो सकतीं । एक से नियम जड़ पदार्थों के लिए बन सकते हैं । सब जीवित प्राणी आपस में एक समान नहीं होते । उनमें बहुत भिन्नता होती है । किसी को बैंगन फायदा करता है तो किसी को नुकसान । कोई पदार्थ एक को सुखकर है तो दूसरे को दुःखकर । मनुष्यों की रुचि भिन्नता इसका प्रमाण है । वैद्य लोग कहते हैं "अपने-अपने कोठे की बात है किसी को कोई चीज माफिक आती है किसी को कोई ।" सब के शरीरों में प्राण शक्ति भी अलग-अलग मात्रा में होती है और उसके गुणों में भी बहुत फर्क पाया जाता है । प्राण चिकित्सक एक क्षण के अन्दर रोगी में जितना जीवन भर देता है दूसरा उतना बहुत देर में कर पाता है । किसी के मार्जन प्रभावशाली होते हैं तो किसी के श्वास । इसलिए अपनी शक्ति, योग्यता और उपचार क्रिया के बारे में स्वयं अनुभव करो । एक सच्चे खोजी की तरह हर एक रोगी के उपचार को सूक्ष्म दृष्टि से देखो और उसके द्वारा जो कुछ अनुभव हो उसके आधार पर अपनी परिपाटी निश्चित कर लो । दूसरों के अनुभव से तुम लाभ उठा सकते हो, पर यह जरूरी नहीं कि किसी परम्परा का अन्धानुकरण किया जाय । हर चिकित्सक को अपने लिए अलग-अलग उपचार, विधान तैयार करने की प्राणशास्त्र इजाजत देता है बशर्ते वह मूल सिद्धान्तों के विपरीत न हो ।

अपना इलाज

कोई पूछे तुम्हारे शरीर में क्या वस्तुएँ हैं तो यही उत्तर दोगे कि हड्डी, माँस, चमड़ी, रक्त आदि । यह ठीक भी है, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर और ही कुछ मालूम पड़ेगा । अपने एक बूँद खून को सूक्ष्म दर्शक यन्त्र के आगे रखकर देखो । उसमें असंख्य सजीव परमाणु चलते-फिरते दिखायी देंगे । इनके अन्दर एक चैतन्य शक्ति है यह छोटे परमाणु देखने में अलग-अलग शक्ल के मालूम पड़ते हैं तो भी इनके अन्दर एक ही प्रकार का जीवन तत्व है । इस एकता के कारण ही शरीरधारी जीव का निर्माण हुआ है । इसी प्रकार अनेक प्रकार के जीव-जन्तु तथा वनस्पति आदि में एक जीवन तत्व रहता है और सब जगहों पर उसकी एकता के कारण संसार में क्रियाशीलता है । यदि वह महाशक्ति न होती तो कोई भी जीव हरकत न करता । सब ज्यों के त्यों पड़े रहते । इस महान जीवन तत्व का नाम 'प्राण' है । कोई-कोई इसे 'मानवी विद्युत', 'आकर्षण शक्ति', 'क्रिया शक्ति' आदि नाम भी देते हैं ।

यह प्राण शक्ति जीवन को आगे बढ़ाती है और उसकी त्रुटियों को पूरा करती है घाव होने पर उस स्थान की त्वचा नष्ट हो जाती है, परन्तु वह शक्ति इस अभाव को दूर कर देती है । पिछले अध्यायों में प्राण बल से दूसरों के रोग दूर करना बताया गया है । उसके द्वारा अपनी दुर्बलता और बीमारी भी मिटाई जा सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्बलता आधी बीमारी समझी जाती है । कमजोरी के इतने उपद्रव होते हैं कि वे छोटे-छोटे स्वतन्त्र रोगों के रूप में दिखाई देने लगते हैं । भूख कम लगना, भोजन ठीक तरह न पचना, अरुचि, भारीपन, आलस्य, पैरों का भड़कना, सिर, कमर का दुखना, थोड़ा काम करने पर बहुत थकान आना, गला सूखना, आँखें, तिलमिलाना आदि अनेक विकार कमजोरी के साथ आते हैं । इसके लिए कुछ उपाय बताये जाते हैं जिनके द्वारा तुम पर्याप्त मात्रा में अपने अन्दर प्राण संचित करके बलवान बन सकते हो ।

(१) जब तुम पानी पीयो तो एकदम गटागट मत पी जाओ, उसे इस प्रकार पियो जैसे दूध या चाय को एक-एक घूँट करके पीते हैं । पीते समय मन में भावना करो कि पानी का जीवन तत्व मेरे सम्पूर्ण शरीर में भरा जा रहा है । मैं इसमें से प्राण प्राप्त करके अपने अन्दर धारण करता हूँ । हर घूँट के साथ मन ही मन ओ३म् का उच्चारण करो । भोजन करते समय भी ऐसी भावना करो । हर ग्रास को खूब चबाओ और उसे निगलते समय मन ही मन 'ओ३म्' का उच्चारण करो ।

(२) दर्पण के सामने खड़े होओ और अपने चेहरे को उसमें देखो प्रत्येक अंग पर गहरी दृष्टि डालो । भावना करो कि तुम्हारे गालों पर तेज झलक रहा है । आँखों में ज्योति है । होठों पर मुस्कान है । नाक शुद्ध वायु ग्रहण करती है । कान ठीक तरह सुनते हैं । मुँह खोलो और उसके अन्दर का भाग दर्पण में देखो । जीभ के ऊपर भावना करो कि वह लाभदायक पदार्थों की इच्छा करती है और मधुर वचन बोलती है । इसी प्रकार कण्ठ, तालु, दाँत, जबड़े, मसूड़े रस वाहिनी गिल्टियों के बारे में मानसिक भावना करो कि यह सब सतेज और जागृत हैं । अपनी-अपनी ड्यूटी को ठीक तरह पूरा करते हैं तथा आगे करेंगे ।

(३) किसी एकान्त स्थान में जाओ जहाँ न अधिक सर्दी हो और न अधिक गर्मी । लज्जा निवारक वस्त्रों के अलावा सब कपड़े उतार दो और अपने हाथ, पाँव, छाती, पेट, कमर, पेड़ू आदि को स्वस्थता और सफलता की भावना से देखो और उस पर विश्वास करो । शरीर पर तेल लगाना हो तो अनुभव करते जाओ कि तेल की प्राण शक्ति शरीर में प्रविष्ट होकर इसे सतेज बना रही है ।

(४) किसी निर्जन स्थान में जाकर आराम कुर्सी या पलंग पर चित्त लेट जाओ या जमीन पर चटायी बिछाकर सीधे पड़े रहो । पैरों को कुछ ऊँचा रखने के लिए उनके नीचे एक तकिया लगा लो । देह को रुई की तरह ढीली छोड़ दो । इतनी ढीली मानो निर्जीव हो गई है । अब भावना करो कि संसार महान नीला आकाश है और उसमें अत्यन्त प्राण शक्ति भरी हुई है । इस समय और किसी वस्तु का ध्यान न आना चाहिए । यह अभ्यास कुछ दिन लगातार करने पर पूरा होता है, पर जब मन इतना शान्त हो जाय कि विश्वव्यापी प्राण के अतिरिक्त किसी पेड़, पहाड़, महल, मन्दिर, जीव-जन्तु आदि का ध्यान न आये तो अद्भुत लाभ होता है । दस-पन्द्रह मिनट इस प्रकार पड़े रहने पर सारी थकावट चली जाती है और शरीर बल से भर जाता है । मनोरंजन की व्यवस्था करो कि एक-दो बार खूब जी खोल कर हँस लो ।

इन क्रियाओं को नियमित रूप से कुछ दिन करने पर अद्भुत लाभ होता है । अच्छे-अच्छे बहुमूल्य पदार्थों का सेवन जो लाभ नहीं पहुँचा सकता वह इनके द्वारा प्राप्त होता है । अपनी भावनाओं में जितनी दृढ़ता और अधिक विश्वास होगा उतनी ही मात्रा में जल्दी और अधिक लाभ प्राप्त होता है ।

किसी खास रोग का उपचार

किसी खास स्थान पर पीड़ा हो तो उपरोक्त उपायों के साथ कुछ अन्य उपचार भी करने चाहिए ।

(१) शरीर को शिथिल करके पड़े रहो और जिस अंग में पीड़ा है केवल उसी अंग का ध्यान करो । जैसे यदि पेट में दर्द हो रहा हो तो ऐसी भावना करो कि तुम्हारे शरीर में केवल पेट ही एक मात्र अंग है । अपना सारा ध्यान पेट के ऊपर ही लगा दो । उसी की कल्पना करो । ऐसा करने से शरीर की समस्त शक्तियाँ उस स्थान पर केन्द्रित हो जायेंगी और जिस प्रकार से आतिशी शीशे में सूर्य की किरणें इकट्ठी हो जाती हैं उसी प्रकार समस्त शक्तियाँ वहाँ इकट्ठी होकर उस अंग में इतना बल भर देंगी कि वह रोग मुक्त हो सके ।

(२) पीड़ित स्थान पर हाथ फिराओ और अनुभव करो कि अब यह अपनी निर्बलता त्याग कर सचेत हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहा है और ठीक प्रकार कार्य करने की सामर्थ्य प्राप्त करता जा रहा है ।

(३) नाक द्वारा श्वास खींचो और अनुभव करो कि यह वायु पीड़ित स्थान पर पहुँच कर वहाँ नवीन प्राण भर रही है । साँस मुँह से धीरे-धीरे छोड़ो और कल्पना करते जाओ कि उस अंग के विकार इस वायु के साथ मिलकर बाहर निकल रहे हैं ।

(४) अपनी पीड़ा को बढ़ी-चढ़ी मत मानो । सदैव उसे तुच्छ और थोड़ी देर ठहरने वाली समझो । साहस मत खोओ । यही समझते रहो कि यह साधारण सा रोग थोड़े ही समय में अच्छा हो जायेगा । रोग की ही हर समय कल्पना मत करते रहो । दूसरे कामों में अपना चित्त बटाओ और हर घड़ी अपने को पहले से अच्छा अनुभव करो ।

इन विधियों से कष्ट साध्य और भयंकर व्याधियाँ बहुत जल्द अच्छी हो जाती हैं । कुछ देर होती दीखे तो भी अश्रद्धा मत करो, क्योंकि देरी का कारण अपनी क्रियाशीलता है । प्राण-तत्व का यह अटल नियम है कि जितनी दृढ़ता के साथ उसे आकर्षित किया जायेगा उसी प्रकार लाभ पहुँचेगा ।

मानसिक चिकित्सा

रोगों का एक और भी कारण है । वह है—बुरे विचार । नीच और हीन विचार करने से मनुष्य का स्वास्थ्य गिरने लगता है और वह शरीर के अन्दर असाधारण परिवर्तन करता हुआ एक दिन रोग के रूप में प्रकट होता है । आदमी को सदैव हँसमुख रहना चाहिए । उसके चेहरे पर मुस्कराहट नाचती रहे तो गिरा हुआ स्वास्थ्य भी सुधर सकता है, किन्तु इस प्रकार की प्रसन्नता, परोपकार, प्रेम, सहानुभूति, उदारता और सच्चाई आदि गुणों के कारण प्राप्त होती है । हर घड़ी स्वार्थ, भय, चिन्ता, अनुदारता और लोभ के विचार जिसके मस्तिष्क में भरे रहेंगे वह जरूर बीमार होगा और समय से पूर्व कुत्तों की मौत मर जायेगा ।

प्राण चिकित्सक सबसे अधिक ध्यान रोगी के मस्तिष्क और उसकी भावनाओं पर देता है क्योंकि समस्त शरीर पर मन का शासन है, उसके ऊपर कोई प्रभाव पड़ने से समस्त शरीर प्रभावित होता है शरीर के समस्त ज्ञान तन्तु मस्तिष्क से सम्बन्धित हैं और वहीं से प्रेरणा प्राप्त होती है । मन में जो क्रियाएँ होती हैं उनका असर रस उत्पन्न करने वाली विभिन्न स्थानों की ग्रन्थियों, पाचन अवयवों और शरीर के अन्य अंगों पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है । देह के हर भागों के बाल में बाल से भी पतले ज्ञान तन्तु फैले हुए हैं और इन ज्ञानतन्तुओं को मस्तिष्क की अधीनता में रहकर सारा काम करना पड़ता है । मस्तिष्क में अच्छे विचार होने पर स्वास्थ्य सुधरता है और निराशा और भय के बुरे-भाव होने पर दिन-दिन गिरता जाता है इसलिए रोगी में प्राण शक्ति भरने के साथ-साथ उसका मानसिक उपचार भी करना चाहिए ।

बुरे विचार अपने साथ चिन्ता, भय, क्रोध, कलह आदि लाते हैं और यह ऐसी अग्नियाँ हैं जो थोड़े ही दिनों में सारा भाग जलाकर आदमी को खोखला कर देती हैं । इस सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध शरीर शास्त्रियों की सम्मतियाँ नीचे दी जाती हैं ।

डॉ. आल्टन लिखते हैं—भय, ईर्ष्या, घृणा, निराशा, अविश्वास और मानसिक विकार शरीर की स्वाभाविक क्रियाओं को मन्द करके खून को सुखा देते हैं । डॉ. वेन लिखते हैं—सन्ताप और मनोव्यथा के कारण कई लोगों की मृत्यु हो गई और अनेकों का मस्तिष्क खराब हो गया । इस प्रकार का परिणाम स्वाभाविक ही है । डारबिन साहब कहते हैं—चिरकालीन चिन्ता से रक्त की गति धीमी हो जाती है और चेहरे पर पीलापन, माँसपेशियों में शुष्कता आ जाती है । पलकें झूल पड़ती हैं, छाती बैठ जाती हैं, गर्दन झुक जाती है एवं होठ, सिर, जबड़ा आदि गिर जाते हैं । हँसते आदमी पर घोर उदासी छा जाती है । मनोविज्ञान शास्त्री अल्फम मेरियम कहते हैं—क्षोभ के कारण कई व्यक्ति अचानक मर गए । मानसिक क्षुब्धता शरीर पर ऐसे अनिष्टकर परिणाम उपस्थित करती है, जिससे वह मुर्दा कहा जा सके । सर रिचार्डसन का अनुभव है कि—मानसिक कष्ट से होने वाला प्रमेह ठीक शारीरिक कारणों से होने वाले प्रमेह के समान होता है । सर जार्ज पैगोट बताते हैं कि—असंख्य रोगियों को देखने के बाद मुझे यह पक्का विश्वास हो गया है कि फोड़े होने का कारण चिरकालीन चिन्ता होती है । डॉ. मुर्चीसन का एक कथन है कि—कई रोगियों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाँच करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि जिगर के फोड़े का कारण पुरानी चिन्ता या मानसिक दुःख होता है । डॉ. मैडरले बताते हैं—निश्चय ही मानसिक क्षोभ के कारण शरीर की वृद्धि में रुकावट आती है और धमनियाँ अपना काम ठीक प्रकार से करने से इन्कार कर देती हैं । डॉ. एमर गेटस का दावा है कि—क्रोध, निराशा और क्षोभ शरीर में भयंकर विष उत्पन्न करते हैं, जिससे भारी हानि होती है । डॉ. मसोका का अनुभव है कि—कम्प, अपस्मार, मसूड़ों के रोग और धनुर्वात भय से ही उत्पन्न होते हैं । डॉ. तुकेने का कथन है कि—पागलपन, लकवा, हैजा, यकृत रोग, बालों का जल्दी सफेद होना, गंजापन, रक्त की कमी, गर्भपात, मूत्र रोग, चर्मरोग, फोड़े, पसीने की अधिकता, दांत जल्दी गिरना आदि रोगों की जड़ में भय या सन्ताप छिपा होता है । हैजा या प्लेग से मरने वालों में बीमारी से मरने की अपेक्षा भय से मरने वालों की संख्या अधिक होती है ।

इन महत्त्वपूर्ण सम्मतियों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मन में बुरे विचार लाने से शरीर का बड़ा अनिष्ट होता है । स्वस्थ्य रहने की इच्छा रखने वाले को चाहिए कि सदैव प्रसन्न रहें और बुरे विचारों को अपने पास न फटकने दें ।

जिन रोगियों को बुरे विचार घेरे हुए हों उन्हें धर्मोपदेश एवं सत्य मार्ग के सम्बन्ध में शिक्षा देनी चाहिए, यदि वह तात्कालिक कोई उदारता एवं त्याग का कार्य कर सकता हो तो वैसा कराना चाहिए । व्रत, अनुष्ठान, जप, गोदान, अन्नदान आदि कार्य बीमारी दूर करने के लिए कराने का हिन्दू धर्मशास्त्र में विधान है और उसका पालन निष्ठापूर्वक होता है । इन कार्यों में रहस्य यह है कि रोगी में त्याग और उदारता की भावनाएँ पनप जायें और वे कठिन कष्ट को दूर कर दें । जिन रोगियों को आर्थिक सुविधा न हो उन्हें 'राम नाम' गायत्री या अन्य मन्त्र की सलाह देनी चाहिए और इससे रोग मुक्त हो जाने का उसे तर्क एवं उदाहरण सहित विश्वास करा देना चाहिए ।

विचारों का स्वास्थ्य पर अद्‌भुत प्रभाव पड़ता है । कई बार तो निरोग लोग भ्रम पूर्ण कल्पना कर लेते हैं उसके अनुसार बीमार पड़ जाते हैं और मर तक जाते हैं और कई बार मरणासन्न रोगी अपनी इच्छा शक्ति के बल पर उठ बैठते हैं और नयी जिन्दगी प्राप्त कर लेते हैं ।

एक बार एक स्कूल के खिलाड़ी लड़के छुट्टी पाने के प्रयत्न में सफल हुए । कुछ लड़के चाहते थे कि उन्हें पढ़ने से छुट्टी मिल जाय । उन्होंने एक तरकीब सोच ली । जब मास्टर साहब आये तो एक लड़के ने उनसे जाकर पूछा आपका चेहरा उदास क्यों है ? अध्यापक को उदासी का कुछ पता न था । उन्होंने एक बार अपनी ओर देखा और गम्भीरतापूर्वक कहा, भाई मुझे तो ऐसी कोई बात मालूम नहीं पड़ती । थोड़ी देर बाद दूसरा लड़का आया और उसने कुछ चिन्तित सा मुँह बनाकर कहा, आपको आज ज्वर आ गया सा मालूम पड़ता है । अब मास्टर साहब का सन्देह बढ़ा और उन्होंने अपनी नब्ज टटोलना शुरू किया । सन्देह के कारण भ्रम बढ़ा और सोचने लगे यह लड़के झूठ थोड़े ही बोलते होंगे । शायद मैं अपने मर्ज को ठीक तरह पहचान नहीं रहा हूँ । इतने ही में तीसरा लड़का आ पहुँचा उसने आग्रहपूर्वक कहा, बुखार की हालत में आपको आराम करना चाहिए, पहले निश्चय के अनुसार और लड़के भी आ पहुँचे और उन सबने मास्टर साहब को ज्वर आ जाने की बात का समर्थन किया । तो अध्यापक का भ्रम इतना बढ़ा कि उन्हें सचमुच बुखार आ गया और मदरसे की छुट्टी करके घर को चले गए ।

अमेरिका के एक होटल में एक पुराना और बहुत ही दुर्बलकाय मरीज ठहरा हुआ था । वह अच्छी तरह चल-फिर भी नहीं सकता था । अचानक उस होटल में आग लग गई, मरीज इस विपत्ति को देखकर घबराया और अपने प्राण तथा सामान बचाने के लिए आवेश में आ गया । वह कई मंजिल ऊँचे होटल से कुछ सामान लेकर उतरा और अवसर पाकर अधिक सामान बचा लेने के लिए सात बार ऊपर चढ़ा और उतरा । उसी दिन से उसका पुराना रोग भी चला गया । इसी प्रकार लकवे से पीड़ित एक स्त्री का रोग दूर हुआ । उस नगर में जब जोरदार भूकम्प आया तो सब लोग अपने प्राण बचाने के लिए भागे । इस अपाहिज स्त्री की किसी ने खबर भी न ली, किन्तु वह स्त्री भी चली और घिसटते-घिसटते कई मील का रास्ता पार करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुरक्षित स्थान पर पहुँची और साथ ही रोग से भी मुक्त हो गई ।

डॉ. स्काफिल्ड ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मेरे इलाज में एक विषम ज्वर की रोगिणी आयी । उसे सन्देह होने लगा था कि कदाचित यह रोग मेरा प्राण घातक होगा । उसने एक दिन डॉ. स्काफिल्ड से कहा— 'क्या मैं इस रोग से मर जाऊँगी ?' उन्होंने कहा—'जरूर, निश्चय ही' अब उसने मेरी ओर बड़ी कातर दृष्टि से देखा और कहा 'क्या आप मुझे बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते ?' मैंने उत्तर दिया—जब तुम सोचती हो कि 'मैं मर जाऊँगी' तो फिर तुम जरूर ही मर जाओगी । ऐसी दशा में तुम्हारे लिए कुछ प्रयत्न करना बेकार है । वह घबराई और पूछने लगी । "क्या मेरे विचारों पर ही मेरा जीना निर्भर है ।" मैंने कहा—बेशक, तुम यदि मजबूती के साथ विश्वास कर लो कि मैं अच्छी हो जाऊँगी तो निश्चय ही तुम्हें बचाया जा सकता है । उसने वैसा ही विश्वास करने का वायदा किया और बहुत जल्द अच्छी हो गई ।

एक बार यूरोप के एक नगर में किसी अपराधी को मृत्यु की सजा दी गई । डॉक्टरों ने उस अपराधी को अपनी क्रिया द्वारा मार डालने की अदालत से स्वीकृत ले ली । अपराधी को एक मेज पर लिटाकर उसकी आँखों से पट्टी बाँध दी गई और गले के पास एक छोटी पिन चुभो दी गई । जिससे एक-दो बूँद खून निकल आया उसी जगह पर ऊपर से एक पतली नली द्वारा पानी बहाया गया जो उसकी गर्दन पर होता हुआ मेज से नीचे टप-टप गिरने लगा । अपराधी को विश्वास कराया गया कि उसकी नस काट दी गई है जिसमें होकर खून बह रहा है । थोड़ी देर में उसके सारे शरीर का खून बह जायेगा और उसकी मृत्यु हो जायेगी । उसने इन बातों पर विश्वास कर लिया और केवल दस-पाँच बूँद खून निकलने पर ही भय के कारण कुछ ही देर में मर गया ।

स्विट्जरलैण्ड के बड़े अस्पताल की रिपोर्ट में ऐसे कई विचित्र उदाहरण हैं । साँप के काटने पर एक मरीज अस्पताल में दाखिल हुआ और बहुत कोशिश करने के बाद भी मर गया । डॉक्टरों ने लाश की परीक्षा की किन्तु उसमें एक रत्ती भर भी विष न था । जिस स्थान को साँप का काटा हुआ समझा जाता था वह मामूली खुरसट साबित हुई । इसी प्रकार एक मरीज ऐसा मरा जो यह कहता था कि गल्ती से दवा के बदले जहर पी गया हूँ । उसके मरने पर सब तरह की तहकीकात कर ली गई, कि उसने दवा को ही पिया था गल्ती से 'जहर का लेबल' लग गया था । एक व्यक्ति अस्पताल में ऐसा दाखिल हुआ जो यह कहता था कि मैं अपने मुँह में लगे हुए चार नकली दाँतों को निगल गया हूँ और उनकी पीड़ा से छटपटा रहा हूँ । डॉक्टर हैरान थे कि इसके पेट में तो कुछ भी नहीं । इतने में ही उसकी स्त्री आयी और उन चारों दाँतों को दिखाती हुई बताने लगी कि यह तो तुम्हारे कोट की जेब में रखे हुए थे । रोगी अपनी गल्ती पर शरमाया और चुपचाप अस्पताल से उठ गया । प्लेग, हैजा, एन्फ्लुऐंजा आदि बीमारियों में जितने आदमी मरते हैं उससे बहुत अधिक डर के मारे मर जाते हैं ।

इन सब बातों पर विचार करने से यह आवश्यक प्रतीत होता है कि प्राण चिकित्सा के साथ-साथ रोगी का मानसिक इलाज भी किया जाय । मानसिक परिवर्तन की शक्तिशाली क्षमता प्राप्त करने के लिए और दूसरों को दृढ़तापूर्वक अपना इच्छानुवर्ती बना लेने का एक अलग विज्ञान है, जिसकी पूर्ण जानकारी हमारी ही पुस्तक "पर-काया प्रवेश" में है । यदि वह विधियाँ न मालूम हों तो भी इस विषय में कुछ संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर लेना चिकित्सकों के लिए आवश्यक है ।

तुम्हें यह जानना चाहिए कि मन के दो भाग हैं । एक प्रकट मन (Objective Mind या Conscious Mind) दूसरा गुप्त मन (Subjective Mind या Unconscious Mind या Subliminal self) होता है । साधारण सोचने-विचारने, तर्क करने आदि का काम प्रकट मन या स्थूल दिमाग से होता है, किन्तु जीवन के अधिकांश गुप्त और महत्त्वपूर्ण काम गुप्त मन द्वारा होते हैं । जो बातें हमारी पुरानी स्मृति में पड़ जाती हैं, वह गुप्त मन में जमा होती हैं । आदतों के बीज गुप्त मन में जमते हैं । बाहरी मन किसी व्यसन को बुरा समझता है और उसे छोड़ना चाहता है, पर भीतर ही भीतर कोई जबर्दस्ती उस काम को करने की प्रेरणा करता है, यह कार्य गुप्त मन का है । एक आदमी के मरने पर तुम्हें कुछ भी दुःख नहीं होता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किन्तु यदि कोई सगा-सम्बन्धी मर जाय तो दुःख में विकल हो जाते हो । बहुत से आदमियों को देखते हो कोई विशेष बात नहीं होती किन्तु किसी खास आदमी की ओर ऐसे आकर्षित हो जाते हो जो उससे मिले बिना और देखे बिना चैन नहीं पड़ता । प्रकट मन पर घटनाओं का कोई खास असर नहीं पड़ता किन्तु यदि वह बात इतनी तीव्र हो कि गुप्त मन तक उतर जाय तो उसका असाधारण असर पड़ता है । यह गुप्त मन अधिक तर्क-वितर्क करना नहीं जानता किन्तु उसमें जो बात एक बार भर दी जाय उसे बहुत समय तक ग्रहण किए रहता है । चूँकि हृदय की धड़कन, रक्त संचार, श्वासोच्छ्वास, पाचन क्रिया, निद्रा, जागृति आदि शरीर की समस्त अनैच्छिक क्रियाएँ उसी मन द्वारा की जाती हैं । इसलिए जिन धारणाओं को गुप्त मन ग्रहण कर लेता है उनका निश्चयपूर्वक शरीर पर असर पड़ता है ।

एक बार एक शिकारी पर एक शेर ने आक्रमण किया उसके साथियों ने शेर को बन्दूक से मार दिया, शिकारी को खरोंच ही लगी थी, पर उसने अपने को बुरी तरह आहत हुआ समझा और डर के मारे मर गया । कई बार नए डॉक्टर उन रोगों के शिकार हो जाते हैं जिन कष्ट साध्य रोगों से पीड़ितों का इलाज करना पड़ता है । लकवा के मरीज का इलाज करते-करते एक डॉक्टर स्वयं लकवा का पीड़ित हो गया । कई अपराधी फाँसी के तख्ते पर चढ़ने से पहले ही दम तोड़ देते हैं । होता यह है कि किसी कारण गुप्त मन किसी बात को स्वीकार कर ले तो तुरन्त ही शरीर उसका अनुवर्ती बन जाता है ।

इसी गुप्त मन पर प्रभाव डालकर तुम रोगी को अच्छा कर सकते हो । प्रकट के नीचे गुप्त मन है । साधारणतः प्रकट मन में होती हुई सूचनाएँ गुप्त मन तक जाती रहती हैं, पर दूसरों द्वारा दी हुई सूचनाओं को बिना तर्क-वितर्क के और बहुत कुछ उछले-कूदे बिना बाहरी मन किसी की बात को नहीं मानता और मान भी ले तो इतनी श्रद्धा और विश्वास के साथ ग्रहण नहीं करता कि उसका असर गुप्त मन तक ज्यों का त्यों रास्ते में बिना छने पहुँच जाय । धीरे-धीरे बहुत समय तक प्रयत्न करने पर तो यह भी हो सकता है पर बीमारी की दशा में इतना अवकाश नहीं होता । उस समय तो ऐसे उपचार की आवश्यकता होती है जो जल्द से जल्द कोई आश्चर्यजनक परिणाम दिखा सके । ऐसी दशा में इस बात की जरूरत होती है कि प्रकट मन को एक तरफ लटकता छोड़ दिया जाय और सीधा गुप्त मन में सम्बन्ध स्थापित कर लिया जाय । मेस्मेरिज्म की क्रिया द्वारा यही होता है । बेधक विद्युत द्वारा प्रकट मन को निद्रित कर देते हैं और गुप्त मन से सीधा सम्बन्ध स्थापित कर अद्भुत तमाशे कराते हैं । प्रकट मन को निद्रित करने या दूसरे तरीकों से सीधे गुप्त मन तक पहुँच जाने की विस्तृत और सर्वसुलभ विधियाँ तो "परकाया प्रवेश" पुस्तक में बतायी गई हैं, पर यहाँ शिथिलीकरण का एक साधारण सा विधान बताया जा रहा है जिसके अनुसार बिना किसी विशेष अभ्यास के भी रोगी के गुप्त मन तक थोड़ा बहुत सन्देश पहुँचाया जा सके ।

तुम बिना "परकाया प्रवेश" को पढ़े रोगी के प्रकट मन को अपनी शक्ति से निद्रित नहीं कर सकते इसलिए रोगी को स्वयं निद्रित हो जाने का आदेश करो । यदि वह बहुत कृश हो गया हो तो बिस्तर पर ही पड़ा रहने दो । सिर कुछ ऊँचा उठा हुआ रहे । रोगी से कहो कि वह अपने अंगों को सीधा कर ले और शरीर जितना ढीला छोड़ सके छोड़ दे, उसे अपना शरीर लकड़ी की तरह जड़ ख्याल करना चाहिए और किसी अंग से कुछ भी काम न लेकर सारी देह को स्वतन्त्र, बिल्कुल ढीली छोड़ देनी चाहिए । वह मस्तिष्क को भी खाली कर दे और उसमें जो भी भले-बुरे विचार चल रहे हों, उन्हें छोड़ दे । रोगी को हिदायत करो कि वह तुम्हारे चेहरे को अधखुले नेत्रों से देखे और भावना करे कि समस्त संसार शून्य है और उसमें केवल यही एक सिर है । थोड़ी देर में उसके पलक झपकने लगेंगे । वह चाहे तो आँखें बन्द भी कर सकता है, पर आँखें मूँद लेने पर भी सिर के मानस को देखना न भूलें । इस प्रकार पाँच से लेकर दस मिनट के भीतर वह अर्धतन्द्रित हो जायेगा और उसका बाहरी मन शान्त होकर तन्द्रा से गिरने लगेगा । यदि इस प्रकार की झपकी न आये तो भी कुछ हर्ज नहीं । शरीर का शिथिल हो जाना भी पर्याप्त है ।

अब तुम अपने मुँह को रोगी के कानों के निकट ले जाओ । एक फुट से अधिक का फासला न हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो मन्त्र तुम्हें रोगी के गुप्त मन तक पहुँचाना है उसके लिए पहले से ही तैयार होना चाहिए । मन्त्र ठीक तरह से याद हो । उच्चारण धीमा, मधुर, स्पष्ट और दृढ़ हो । बीच-बीच में मन्त्र की शृंखला टूट जाने या कुछ का कुछ कहने लगने से एवं कर्कश वाणी में कहने से रोगी पर अच्छा असर नहीं पड़ेगा । मन्त्र का उच्चारण करते समय प्रेम, प्रसन्नता, विश्वास और दृढ़ता के भाव तुम्हारे अन्दर होंगे तो वह बहुत प्रभावशाली हो जायेगा । आरम्भ में उच्चारण बहुत ही धीमा हो, जिससे रोगी एकदम चौंक न उठे, बाद को स्वर कुछ ऊँचा किया जा सकता है ।

रोगी के दाहिने कान की ओर मुँह ले जाकर कहो "अब तुम शान्त, आनन्दित होकर विश्राम ले रहे हो । तुम्हारे शरीर की प्रत्येक माँसपेशी शिथिल होकर विश्राम कर रही है । तुम्हारा श्रद्धालु मन हमारी सूचनाओं को श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर रहा है । यह सूचनाएँ उपजाऊ भूमि पर बोए बीज की तरह उगेंगी और तुम्हारे स्वास्थ्य को सुन्दर एवं हरा-भरा कर देंगी ।

"तुम्हारा आमाशय, बलिष्ठ-बलिष्ठ-बलिष्ठ और आवश्यक भोजन को पचाने में समर्थ, इच्छुक एवं उद्यत है । वह आज, ठीक अभी से काम करने में तत्पर हो गया है । तुम्हारा रक्त सजीव-सतेज और गर्म होकर समस्त नाड़ी तन्तुओं में जोर से भ्रमण करने लगा है और हर जर्रे में बल चेतनता और निरोगता उत्पन्न कर रहा है ।"

"मैं तुम्हारे थके हुए अंगों में स्फूर्ति भेज रहा हूँ और उन्हें नवीन स्वास्थ्य, बल, पौरुष और तेज से भर रहा हूँ । अब तुम्हें तुरन्त ही सुधार, उन्नति और शान्ति का अनुभव होगा । जो आनन्द और निरोगता के विचार तुम्हारे अन्दर डाले जा रहे हैं वह सारे कष्टों को हटाकर दूर कर देंगे । अब आनन्द, सुख, शान्ति, प्रसन्नता, स्वास्थ्य और सुन्दरता को अच्छी तरह याद कर लो, इन्हें बार-बार दुहराते रहो, क्योंकि इन्हीं का वातावरण चारों ओर भर दिया गया है ।"

यह मन्त्र या इसी भावार्थ का कोई और मन्त्र भी तुम बना सकते हो । शब्द ऐसे हों जिन्हें रोगी अच्छी तरह समझता हो । रोगी की परिचित भाषा में इनका अनुवाद भी किया जा सकता है और आवश्यकतानुसार घट-बढ़ भी की जा सकती है, परन्तु याद रखो सूचना में उन्नति सूचक शब्दों का ही प्रयोग करो । "तुम्हारा रोग, पीड़ा, कष्ट आदि दूर हो जायेंगे" ऐसा कहने से इन शब्दों का भी चित्र रोगी के गुप्त मन पर जम सकता है । इससे हानि की सम्भावना है । उपरोक्त मन्त्र को कई बार दुहराना चाहिए । साधारणतः तीन बार काफी है । उच्चारण के समय हर शब्द धीरे-धीरे और अपने विश्वासों के साथ कहना चाहिए ।

मन्त्र देने के बाद रोगी की धार्मिक भावना को आघात न पहुँचे तो "ॐ आनन्दम्" की मधुर ध्वनि करो । ये दोनों पद मधुर स्वर में गाकर एक प्रकार का गुँजन उत्पन्न किया जा सकता है जिससे रोगी की नसों में संगीत की सी प्रवाह धारा बहने लगे । इसका अद्भुत असर होता है ।

अब रोगी की शिथिलता टूट चुकी होगी । उसके सिर पर हल्का हाथ फिराओ और मुस्कराते हुए हल्की थपकियाँ दो । 'तुम अब अच्छे हो रहे हो, शीघ्र ही अच्छे हो जाओगे, अब तो कुछ शान्ति है न ? पहले से तो कहीं अच्छे हो ।' इस प्रकार के वाक्यों से रोगी को बार-बार सन्तोष देना चाहिए । यदि शिथिलता टूटी न हो तो तब तक रोगी के निकट बैठना चाहिए जब तक वह पूरी तरह सचेत न हो जाय । अन्त में सन्तोषप्रद वाक्य कहते हुए उसे उत्साहित करना चाहिए ।

यह या इसी प्रकार की कोई विधि रोगी की मानसिक चिकित्सा के लिए काम में लाई जा सकती है । रोगी यदि पापपूर्ण भावनाओं से दब रहा हो, किसी बुरे काम की प्रतिक्रिया से बीमार पड़ गया हो, बीमारी की दिशा में उसे पिछली दुःखद घटनाएँ याद आ रही हों तो कोई दान-पुण्य का कार्य रोगी के हाथों से कराना चाहिए, जिससे उसका मन हल्का हो जाय । यदि रोगी बहुत कंजूस हो और धन जाने पर उल्टा असर होने की सम्भावना हो तो उसके हाथों से ऐसा दान कराना चाहिए जिससे खर्च कम हो और दान का फल अधिक जीवों को मिलता मालूम पड़े जैसे चींटियों के लिए थोड़ा आटा या शक्कर उनके बिलों पर डलवाना । बन्दरों को चने आदि डलवाना । मानसिक चिकित्सा की और भी अनेक विधियाँ रोगी और उसकी स्थिति को देखकर बनायी जा सकती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति का चिकित्सा उपचार में प्रयोग

मनुष्य मात्र रासायनिक पदार्थों का ही बना नहीं है, उसमें विद्युत प्रवाह की भी स्वसंचालित व्यवस्था है । इसी आधार पर अवयवों की बहुमुखी कार्यपद्धति गतिशील रहती है ।

मशीनों को चलाने के लिए भाप, तेल, बिजली आदि के माध्यम से ऊर्जा जुटानी पड़ती है । यदि उसका प्रबन्ध न हो सके तो कीमती मशीनें भी जाम हो जायें । इसी प्रकार काया की रासायनिक संरचना हर दृष्टि से उपयुक्त होते हुए भी अपनी निर्धारित गतिविधियों को चलाने के लिए ऊर्जा की उपेक्षा करती है । सृष्टा ने इसकी समुचित व्यवस्था भी जीवन प्रदान करने के साथ-साथ ही की है ।

शरीर एक अच्छाखासा बिजलीघर भी है । मस्तिष्क उसका केन्द्र है । मेरुदण्ड में होते हुए अगणित तार समस्त अवयवों में कला पूर्ण ढंग से गुँथे हुए हैं । इन्हें ज्ञान तन्तु कहते हैं । समझा जाता है कि वे शरीर और मस्तिष्क के बीच जानकारियों का आदान-प्रदान करते रहते हैं । यह आंशिक सत्य है । बात उससे भी आगे बढ़ी-चढ़ी है । शरीर बिजली से चलने वाला यन्त्र है । अवयवों का अपने घटकों को सजीव एवं सूक्ष्म बनाये रहने के लिए रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है और वह आहार के माध्यम से उपलब्ध होती है । इतने पर भी इस जटिल तन्त्र को गतिशील रखने के लिए एक विशिष्ट मात्रा में विशिष्ट स्तर की ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है और वह पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त एवं उत्पन्न भी होती रहती है । इस ऊर्जा का नाम है—"प्राण विद्युत" ।

विद्युत दो ध्रुवों के पारस्परिक सहयोग से उत्पन्न होती है । इन्हें ऋण और धन कहते हैं । काया की विद्युत व्यवस्था में मूलाधार को ऋण और सहस्रार को धन विद्युत का केन्द्र माना गया है । मेरुदण्ड के माध्यम से उनके मध्यवर्ती प्रवाह गतिशील रहते हैं । इसके उपरान्त ज्ञान तन्तुओं के माध्यम से शरीर में उस प्राण ऊर्जा का वितरण होता रहता है । इसके आधार पर काया की चेतन और अचेतन गतिविधियाँ तो चलती ही हैं । साथ ही स्फूर्ति, प्रतिभा, मेधा, जीवट जैसी रहस्यमयी विभूतियाँ भी उसी आधार पर जगतीं और बढ़ती रहती हैं । पंच तत्वों से बने शरीर को चलाने में पंच प्राणों की सामर्थ्य ही काम करती है । इस ऊर्जा की उपयुक्त मात्रा होने से ही मनुष्य प्राणवान बनता है । अन्यथा स्वल्प प्राण वाला मात्र प्राणी बन कर रह जाता है ।

प्राण शक्ति की उपयोगिता जीवनचर्या की गतिशीलता रखने तथा विभिन्न प्रकार के पुरुषार्थ करने में तो है उसका अब नया उपयोग चिकित्सा प्रयोजन में भी होने लगा है । समर्थ व्यक्ति की प्राण शक्ति दुर्बल को उसी प्रकार दी जा सकती है जैसे कि सम्पन्न लोग अपने वैभव से निर्धनों की सहायता करते हैं ।

प्राण विद्युत का सामान्य आदान-प्रदान तो अनायास ही चलता रहता है । मस्तिष्कीय तरंगे, दृष्टिपात, मुख मुद्रा, हस्त संचालन जैसे माध्यमों से एक की प्राण क्षमता का दूसरे के लिए सहज ही उपयोग होता है । शरीर को अति निकट लाने—सटा देने पर यह ऊर्जा सबल से निर्बल पक्ष में दौड़ती है । युवा-नारियों के बीच तो यह विद्युत अत्यन्त उद्धत हो उठती है ।

इस प्राण शक्ति को स्वस्थ समर्थ व्यक्ति दुर्बल पक्ष को अनुदान के रूप में देकर उनके अभाव एवं कष्टों में भारी सहायता कर सकते हैं । इसे एक दूसरे प्रकार का रक्तदान कहा जा सकता है । रक्तदानी कुछ बहुत घाटे में नहीं रहते । अनुदान की क्षतिपूर्ति प्रकृति थोड़े ही समय में कर देती है । फलतः उदारचेता प्रत्यक्ष रूप में भी घाटा नहीं उठाते । परोक्ष रूप में तो उन्हें जो सन्तोष मिलता है उसका मूल्य किसी भी भौतिक लाभ की तुलना में अधिक होता है ।

प्राचीन काल में प्राणदान, शक्तिपात आदि के अनेक अनुदानों का वर्णन मिलता है । गुरुजन अपने शिष्यों को उत्तराधिकार में बहुत कुछ देते रहे हैं । दुर्बलों और पीड़ितों की सहायता के लिए भी अपनी इस पूँजी में बहुत कुछ बाँटने की उदारता उन्होंने दिखाई है । यह गहरे अनुदान थे जिनमें अन्तःकरण में संचित पूँजी का भी आदान-प्रदान सम्भव होता है ।

इन दिनों उस प्रक्रिया का उपयोग हल्के रूप में होने लगा है । मेस्मेरिज्म सिद्धान्तों के आधार पर की जाने वाली प्राण चिकित्सा को इसी स्तर का माना जा सकता है । उसमें मात्र शरीरगत विद्युत प्रवाह का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदान-प्रदान होता है । उसमें ग्रहणकर्त्ता को अधिक लाभ होता है, पर प्रदाता को कोई अधिक घाटा नहीं सहना पड़ता, क्योंकि दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों में इस विद्युत का निरन्तर खर्च होता ही रहता है । चिकित्सा प्रयोजन में इतना ही करना पड़ता है कि प्राण विद्युत का कुछ समय तक बिखराव रोकना पड़ता है और एकाग्रता तथा संकल्प शक्ति के सहारे उसे दुर्बल पथ को देना पड़ता है । इसे शारीरिक स्तर का मोटा अनुदान कह सकते हैं । अतएव इस उपयोग के लिए किसी बड़े असमंजस की आवश्यकता नहीं पड़ती । उसे उपचार में सहज ही प्रयुक्त किया जा सकता है । जो कर रहे हैं उन प्रयोक्ताओं को कहीं कोई बड़ा घाटा नहीं उठाना पड़ा । जो राई रत्ती क्षति हुई भी वह सेवा साधना में उपलब्ध होने वाली प्रसन्नता के आधार पर सहज ही पूर्ण होती रही ।

सभी जानते हैं कि प्राणियों के जीवन का आधार सूक्ष्म प्राण शक्ति है । मनुष्य में यह प्राण शक्ति विशेष होती है और विभिन्न साधनात्मक उपायों से सम्वर्धन करके बढ़ा भी सकता है । शरीर और मन दोनों प्राण पर अवलम्बित हैं । प्राण शक्ति के द्वारा रोगों की चिकित्सा के सम्बन्ध में योग व तन्त्र में बहुत वर्णन मिलता है ।

अमेरिका के कुछ व्यक्तियों के समक्ष फिलीस्तीनियों ने तो प्राण शक्ति के द्वारा शल्य-प्रयोग की सफलतापूर्वक करके दिखाए हैं । डॉ. हिरोशी मोटोयामा ने अपनी "साइकिक सर्जरी इन द फिलीपिन्स" नामक पुस्तक में ऐसे अनेकों रोगियों का विवरण प्रस्तुत किया है जिनका उपचार इस विधि से किया गया और वे पूर्ण रूप से अच्छे हो गए । इन रोगियों में हृदय रोगी, मृगी, आँतों के फोड़े वाले रोगी भी थे । इन रोगों की सत्यता की जाँच वैज्ञानिक ढंग से कर ली गई । खून, कफ, टट्टी, पेशाब की जाँच रिपोर्ट, एक्सरे व ई. ई. जी., ई. सी. जी. आदि रिपोर्ट पहले ही तैयार कर ली गईं । प्राण चिकित्सा बाद में की गई । वैज्ञानिक रिपोर्टों सहित होने के कारण इस जादुई-शल्य चिकित्सा की सत्यता की प्रामाणिकता में कोई सन्देह नहीं रह जाता । डॉक्टर हिरोशी मोटोयामा ने यहाँ तक परीक्षण करके देखा कि प्राण शक्ति का प्रभाव दूसरे कमरे में बैठे रोगी व्यक्ति पर भी उसी प्रकार पड़ता है जैसे कोई अवरोध बीच में न हो ।

यह चिकित्सा प्रणाली सामान्य प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखायी जा सकती है । इसमें शक्ति का प्रचण्ड रूप प्रदर्शित होता है । नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का दृढ़ होना इसके लिए बहुत आवश्यक है । अच्छे योगी या गुरु, अधिकारी सुपात्र को ही इस विद्या को सिखाते हैं । इस शक्ति का अपव्यय होने पर यह शक्ति धीरे-धीरे नष्ट भी हो जाती है और चिकित्सक शक्ति हीन हो जाता है ।

आस्ट्रेलिया में किर्लियन फोटो विधि के विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जान मूर्री और डॉ. ग्रेडेन रिक्सेन ने पत्तों और अंगुलियों की छाप पर अनुसन्धान कार्य किया है । उनका कहना है कि किर्लियन-फोटो पद्धति में यदि शरीर के किसी भाग का फोटोग्राफ लिया जाय तो उसके चारों ओर किसी शक्ति के अस्तित्व या उत्सर्जन का क्षेत्र स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । इसे केवल जीवित प्राणियों में ही देखा जा सकता है, इसी क्षेत्र को 'ऑरा' कहा जाता है और शक्ति को प्राण शक्ति अथवा शारीरिक विद्युत ।

उनका कहना है कि वह दिन तो अभी दूर है जब मस्तिष्क की कार्य-पद्धति को किर्लियन उपकरणों के द्वारा दिखाया जा सकेगा, परन्तु पत्ती को मरते हुए देखा जा सकता है । उन्होंने अपने प्रयोगों के आधार पर कहा है कि पत्ती के मरते समय उसके बाहर का किनारा पहले अन्दर की ओर मुड़ता है और प्राण शक्ति अन्दर की ओर प्रयाण करने लगती है ।

किर्लियन फोटो प्रणाली के द्वारा मैक्सिको एवं रूस में किए गए प्रयोगों के अनुसार जीवित पत्ती का ऊपरी कोना तोड़ देने पर भी फोटोग्राफ में स्पष्ट आ जाता है जैसे कि वह तोड़ा ही न गया हो । सरजॉन मूर्री एवं डॉ. रिक्सेन का कहना है कि यद्यपि वे अभी वास्तविक ऑरा नहीं देख पाए हैं किन्तु उनके यन्त्रों में स्पार्क्स आते हैं जो प्राण शक्ति के प्रमाण में बदले हुए होते हैं । उन्होंने दुःखी, सुखी, शराबी आदि के ऊपर प्रयोग करके सिद्ध किया है कि पीड़ित, प्रफुल्लित, दवा पिए हुए, शराब पिए हुए, उद्विग्न व्यक्ति का ऑरा अवश्य प्रभावित होता है । इस प्रभाव का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्ययन उन्होंने एक निश्चित परिमाण का कृत्रिम ऑरा उत्पन्न करके किया है ।

अमेरिका के कुछ भौतिकीविद् तथा वैज्ञानिक विलियम टीलर एवं थेलमा मास ने यह भी सिद्ध किया है कि दो विभिन्न शरीरों से निकलने वाला ऑरा (उत्सर्जन) अलग-अलग प्रकृति का होता है तथा किर्लियन फोटोग्राफ्स से यह भी बताया जा सकता है कि एक व्यक्ति की मानसिक अवस्था या भावनाएँ दूसरे व्यक्ति से मिलती हैं अथवा नहीं । डॉ. रिक्सेन एवं जॉन मूर्री ने भावातीत ध्यान करते हुए व्यक्तियों का उपरोक्त प्रणाली से फोटोग्राफ्स लेकर देखा कि उँगुलियों के चारों ओर हल्के नीले रंग के स्पष्ट गोले से हो जाते हैं । उन्होंने कहा है कि यदि स्वेच्छा से इस अवस्था को प्राप्त किया जा सके तो विश्व का वातावरण अकल्पनीय शान्तिमय हो जायेगा ।

प्राण शक्ति एक ब्रह्माण्ड के कण-कण में प्रवाहित हो रही है । यही शक्ति प्राणियों में संचरित होकर जीवन प्रदान करती है । शरीर के अस्वस्थ एवं अविकसित कोषों को प्राण शक्ति ही नव-जीवन देती है । गायत्री उपासना—सविता ध्यान के द्वारा प्राण शक्ति का आकर्षण एवं सम्वर्द्धन होता है । विभिन्न यौगिक क्रियाओं आसन, प्राणायाम, मुद्रा, बन्ध और ध्यान आदि के द्वारा प्राण का संचार सुचारु रूप से होने लगता है ।

हाथों की उँगलियों से प्राण शक्ति अन्य अंगों की अपेक्षा अधिक मात्रा में निःसृत होती है । इस सन्दर्भ में न्यूयार्क विश्वविद्यालय की नर्सों की प्रशिक्षण संस्था के डॉ. डोलारेस क्रीगर ने कुछ रोगियों दो समूहों में विभक्त करके प्रयोग किया । एक समूह के रोगियों पर स्पर्श-चिकित्सा प्रारम्भ की तथा दूसरे समूह के रोगियों की नित्य की भाँति परिचर्या की गई तथा औषधियाँ दी जाती रहीं ।

पहले समूह के रोगियों पर दिन में दो बार नर्सें अपने हाथों के स्पर्श से विचारों द्वारा मानसिक शक्ति संचरित करतीं । एक ही दिन में डॉ. क्रीगर ने देखा कि पहले समूह के रोगियों के रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ गई जबकि औषधि प्रयोग करने वाले दूसरे समूह के रोगियों के खून में कोई परिवर्तन नहीं आया ।

फेनिक्स के डॉ. विलियम मेगोरी ने डॉ. क्रीगर की खोज की सत्यता का समर्थन करते हुए कहा है कि स्पर्श द्वारा प्राण शक्ति के संचार से रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ जाती है और यह कोई मनोवैज्ञानिक परिवर्तन नहीं है ।

जिस प्रकार मानवी काया एक चलता-फिरता बिजलीघर है, उसी प्रकार उसे एक साधन सम्पन्न अस्पताल भी कहा जा सकता है । अपने और दूसरों के काम में जिस तरह श्रम और समय का उपयोग होता रहता है । उसी प्रकार प्राण विद्युत को भी एक सम्पदा मानकर अपने आत्म-विकास तथा लोक-कल्याण में समुचित विनियोग किया जा सकता है । इस दिशा में होने वाली शोधें तथा उपलब्धियाँ यह आशा बँधाती हैं कि मानवी सुख-शान्ति में प्राण विद्युत का उत्साहवर्धक उपयोग होने लगेगा ।

प्राण शक्ति द्वारा कठिन रोगों का उपचार

वैज्ञानिक अन्वेषण जैसे-जैसे स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ रहा है, यह तथ्य सप्रमाण पुष्ट हो रहा है कि सूक्ष्म की सामर्थ्य स्थूल की तुलना में कई गुना अधिक है । अब दृश्य की तुलना में अदृश्य की शक्ति को ढूँढ़ने, करतलगत एवं प्रयोग करने की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान अधिक केन्द्रित है । कभी बड़े विशालकाय अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण को शक्ति संचय का केन्द्र माना जाता है । कालान्तर में यह मान्यता बदली और परमाणु जैसे नगण्य सूक्ष्म घटक प्रचण्ड शक्ति के स्रोत के रूप में ढूँढ़ निकाले गए । पदार्थ का क्षुद्र घटक जब इतना भयंकर-संहारक हो सकता है तो उसकी सामर्थ्य को ही क्यों न संचित करने की कोशिश की जाय । व्यर्थ में विशालकाय अस्त्रों के बनाने का झंझट क्यों मोल लिया जाय ? यह विचारधारा प्रत्येक देश के राजनायकों, शासन का दायित्व सम्भालने वालों के मन में बैठती जा रही है ।

ध्वंश ही नहीं सृजन की दिशा में भी सूक्ष्म की सत्ता को ढूँढ़ने-सामर्थ्य को नियोजित करने का सत्प्रयास चल पड़ा है । फलतः आशातीत सफलता भी मिली है । चिकित्सा जगत में प्रचलित अनेकों पद्धतियाँ एलोपैथी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथी बीमारियों के निदान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में एक सीमा तक ही सफल हो रही है । गम्भीर एवं असाध्य समझी जाने वाली बीमारियाँ में इनकी पहुँच नहीं के बराबर है । शरीर के सूक्ष्मतम संस्थानों तक पहुँचकर उपचार कर पाना इनके द्वारा सम्भव नहीं रहा । बीमारियों के उपचार के लिए नयी पद्धति ढूँढ़ी गई है—रेडियो विकिरण चिकित्सा की । चिकित्सा जगत में विगत वर्षों की महानतम उपलब्धियों में से इसे एक कहा जा सकता है । इसके लिए रेडियो समस्थानिकों (आयसोटोप्स) का प्रयोग किया जाता है । रोगी के निदान एवं उपचार में रेडियो सक्रिय अनुसारक (ट्रेसर) विशेष रूप में सफल सिद्ध हुए हैं ।

हायपर थायराडिज्म, पालीसायथेभिया, कैन्सर जैसे असाध्य रोगों में भी यह चिकित्सा पद्धति कारगर सिद्ध हुई है । विश्व भर में रेडियो समस्थानिकों से युक्त औषधियों का प्रयोग होने लगा है । गोलियों अथवा इन्जेक्शनों को रेडियो विकिरण से युक्त कर रोगी के रोगग्रस्त भाग में प्रविष्ट कराकर कैंसर जैसी बीमारियों पर भी नियन्त्रण पाने में सफलता मिली है ।

लगभग ५० से भी अधिक ऐसी रेडियो औषधियों की खोज हो चुकी है जो विभिन्न रोगों के उपचार के लिए उपयोगी है । इनमें आयोडीन १३१, फास्फोरस, ३१, क्रोमियम ५१ स्वर्ण-१९८, सोडियम-२८, पोटेशियम-४२ तथा लौह-५९ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इस प्रकार की औषिधियों का निर्माण भारत में भी भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र ट्राम्बे, बम्बई में होने लगा है ।

हृदय विकार, थायरॉयड ग्रन्थि की—अव्यवस्था को आयोडीन चिकित्सा द्वारा जाना और ठीक किया जा सकता है । रक्त विकारों का ज्ञान एवं उपचार सोडियम २४ के द्वारा सम्भव है । अनेकों विटामिनों को रेडियो कोबाल्ट, रेडियो आयोडीन आदि से अंकित कर रोगी को देने से रोगी के अन्दर हुई क्रियाओं का अध्ययन बाह्य संयमों द्वारा तथा यकृत, वृक्क, पित्ताशय और मस्तिष्क ग्रन्थियों के गुप्त रोगों का उपचार किया जा सकता है । कैंसर जैसे रोग के उपचार में कोबाल्ट-६०, विकिरण द्वारा कैंसर कोशिकाओं को जलाने में विशेष सहयोग मिला है । इसके प्रयोग के लिए रेडियम सुइयों का प्रयोग किया जाता था, किन्तु अब नलियों का प्रयोग अधिक लाभकारी माना गया है ।

रेडियो विकिरण चिकित्सा में पूरी सतर्कता रखनी होती है ताकि विकिरण का प्रभाव स्वस्थ अंगों के ऊपर न हो । कोबाल्ट-६०, इस्पात या जस्ते के कैप्सूल में इस प्रकार रखा जाता है कि विकिरण एक निश्चित दिशा में कैप्सूल में बने मार्ग से ही बाहर निकले ताकि कैंसर ग्रस्त भाग पर ही उसका प्रभाव डाला जा सके । गहरे ट्यूमर के इलाज के लिए इन इकाइयों में व्यवस्था यह रहती है कि विकिरण स्रोत को इस प्रकार घुमाया जा सके कि उसका विकिरण प्रभाव ट्यूमर पर ही केन्द्रित रहे ।

पदार्थ सत्ता की सूक्ष्म सामर्थ्य रेडियो विकिरण का प्रयोग करने से चिकित्सा जगत में चमत्कारी परिणाम निकले हैं । जड़ की तुलना में मानवी चेतना कहीं अधिक सामर्थ्यवान, रहस्यमय है । काया में सन्निहित प्राण की असाधारण महिमा गायी गई है । प्राण को जीवन का केन्द्र माना गया है । पुरातन ऋषियों ने इसकी सत्ता एवं महत्ता को न केवल अनुभव किया वरन् इस तथ्य का प्रतिपादन भी किया कि कायिक स्वास्थ्य एवं मानसिक सन्तुलन का आधार प्राण है । प्राण की न्यूनता अथवा अधिकता ही, रोग अथवा आरोग्य का कारण है । बहु प्रचलित वर्तमान अनेकों चिकित्सा प्रणालियों की तरह पुरातन काल में प्राण चिकित्सा का प्रचलन था । सबल प्राण सम्पन्न व्यक्ति—रोगी असमर्थ को, अपने प्राणों से अनुप्राणित करके आरोग्य एवं स्वास्थ्य प्रदान करते थे

भारत ही नहीं अन्य देशों में भी प्राण चिकित्सा से लोग परिचित थे । रोगी के रोगग्रस्त अंगों पर प्राण सम्पन्न चिकित्सक अपने हाथों को फेरता था । इतिहास में उसके अनेकों प्रमाण मिलते हैं । मिस्र के प्राचीन शिलालेख चित्रों में रोगियों के पेट पर एक हाथ तथा पीठ पर दूसरा हाथ रखे हुए चिकित्सक दर्शाए गए हैं । वहाँ के साहित्य में भी प्राण चिकित्सा का उल्लेख मिलता है कि सन्त पैट्रिक ने आयरलैण्ड के एक अन्धे की आँख पर हाथ रखकर उसे नेत्र-ज्योति दी थी । सन्त-वर्नाड के विषय में भी कहा जाता है कि उन्होंने एक दिन में ही १० अन्धों और १२ अपाहिजों को अच्छा कर दिया था । ईसाई धर्मग्रन्थ के पन्ने ऐसी अनेकों घटनाओं से भरे पड़े हैं । हिन्दू-मुस्लिम, धर्म-ग्रन्थों, पुराणों में तो ऐसे असंख्यों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उदाहरण मिलते हैं । पिछली कुछ सदियों के इतिहास में प्राण-चिकित्सा के अनेकों ऐतिहासिक प्रमाण हैं ।

सत्रहवी सदी में लन्दन के लेन्हर्ट नामक एक माली को अंगुलियों से छूकर रोग विमुक्त करने में अद्‌भुत ख्याति मिली । उन्नीसवीं सदी के आरम्भ से सिलिपिया के रिचर नामक चौकीदार ने हजारों रोगियों को अपने स्पर्श मात्र से आरोग्य प्रदान करने में सफलता पायी । प्राचीन यूनानी वैद्य प्राण चिकित्सा के लिए प्रख्यात रहे हैं ।

इस्कुलेपियस नामक एवं 'यूरोपीय' रुग्ण अवयवों पर श्वास छोड़कर और अपने हाथों की थपकियाँ देकर रोगों की चिकित्सा करने में पारंगत था । इंग्लैण्ड के ड्इड नामक पादरी को इस क्षेत्र में असाधारण सफलता मिली । अनेकों विद्वानों ने अपने साहित्यों में उसकी चमत्कारी शक्ति का उल्लेख किया है । स्कॉटलैण्ड के 'मैक्सवेल' नामक विद्वान ने प्राण चिकित्सा प्रशिक्षण के लिए केन्द्र खोल रखा था । वह विश्वव्यापी प्राण-तत्व में विश्वास करता था ।

महामनीषी हिपेक्रेट को प्राण-तत्व के प्रति असाधारण श्रद्धा थी । वे लिखते हैं कि "शरीर आत्मा की शक्ति में संचालित एवं नियन्त्रित होता है तो उसकी प्रचण्ड शक्ति से रोगों का निवारण भी हो सकता है । प्राचीनकाल के वैद्य, अपनी आत्म शक्ति से रोगों का अनुभव कर लेते थे । वे निदान एवं उपचार में रोगी के अन्दर प्राण का संचार करते थे । पिछले दिनों 'मेस्मर' ने चिकित्सा जगत में चमत्कारी सफलता प्राप्त करने के उपरान्त विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिकों का ध्यान प्राण-तत्व की ओर आकर्षित किया है ।

पदार्थ की रेडियो विकिरण क्षमता रोगों के उपचार में इतनी समर्थ एवं सफल हो सकती है तो कोई कारण नहीं कि प्राण शक्ति द्वारा रोगी को रोग मुक्त न किया जा सके । आवश्यकता इस सूक्ष्म सामर्थ्य को समझने की है । मनोवैज्ञानिक उपचारों में इसका एक छोटा प्रयोग आरम्भ हो चुका है किन्तु बड़ा भाग अब भी अविज्ञात बना हुआ है । सूक्ष्म की सामर्थ्य विज्ञान जगत में इन दिनों चर्चा की विषय बनी हुई है । प्राण-तत्व को उभारने के लिए साधना विज्ञान का आश्रय लिया जा सके तो रोगोपचार ही नहीं कितनी ही सूक्ष्म शक्तियों को करतलगत किया जा सकता है और असाधारण क्षमता सम्पन्न बना जा सकता है ।

प्राण शक्ति से शारीरिक और मानसिक उपचार

प्राणवायु में ऑक्जीसन अंश का कितना महत्त्व है इसे सभी जानते हैं, पर साथ में यह समझना विस्मृत ही बना रहता है कि उसमें विश्वव्यापी चेतना का एक बड़ा अंश भी घुला रहता है जो शरीर में जीवनीशक्ति एवं मस्तिष्क में प्रतिभा के रूप में उभरती हैं । यह शक्ति साँस के साथ इतनी सूक्ष्मता में घुली रहती है कि उसे संकल्प शक्ति की प्रखरता के सहारे ही पकड़ा और आत्मसात किया जा सकता है ।

यहाँ हमें संकल्पशक्ति के महत्त्व को समझना चाहिए । विचारणा की क्षमता इतनी प्रबल है कि वह मनुष्य को हेय, हीन एवं वरिष्ठ भी बना सकती है । जैसे पानी को भगवान के चरणामृत रूप में लिया जाय, शक्कर के थोड़े से दानों को प्रसाद भावना का आरोपण करते हुए सेवन किया जाय तो उसका प्रभाव तत्काल मन की शान्ति के रूप में मिलता है और भक्ति भावना बढ़ाता है । उसी को उपेक्षा या अनखपूर्वक लिया जाय तो लाभ मिलमा तो दूर उल्टी हानि भी हो सकती है । किसी युवा नारी को पुत्री और बहिन की भावना से देखा जाय तो पवित्रता उमड़ेगी और यदि उसी को कामुकता की कुदृष्टि से देखा जाय तो मन में अश्लील कुविचारों के भरते भी देर न लगेगी । संसार को भवबन्धन समझा जाय तो उससे छुटकारा पाने को मन करेगा और उसे भगवान का विराट् रूप माना जाय तो उसकी सेवा, साधना करने और सम्पर्क जोड़ने, सद्‌व्यवहार करने के लिए मन करेगा ।

विश्वव्यापी चेतना एक तथ्य है पर अविश्वास करने से यह पदार्थ पिण्डों का जमघट मात्र है । यह विश्व चेतना प्रचण्ड जीवनीशक्ति के रूप में भी अपने ऊपर उतर सकती है और ओजस्-तेजस्-वर्चस् के रूप में अपने चमत्कारी प्रभाव दिखा सकती है । अविश्वास उपेक्षा की मनःस्थिति में वह जहाँ की तहाँ बनी रहती है । यदि फेफड़े फैलने-सिकुड़ने की क्रिया बन्द कर दें तो साँस का आवागमन भी रुक जायेगा । इसी प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

संकल्प शक्ति का उपयोग न किया जाय तो उच्चस्तरीय उपलब्धियों का द्वार बन्द हो जायेगा । मात्र खाने-सोने भर का ढर्रा लुढ़कता रहेगा ।

ब्रह्माण्डव्यापी प्राणचेतना के अस्तित्व पर हमारा विश्वास सुदृढ़ होना चाहिए । यह यथार्थता भी है । क्रियाशीलता के रूप में अणु से लेकर विभु तक की सुनियोजित हलचलें चल रही हैं । वे विचारयुक्त भी हैं और नियमबद्ध भी । इसी क्रियाशक्ति को चेतन ब्रह्म कहा गया है । वह हमारी साँसों के साथ शरीर और मन में भी आता-जाता रहता है, पर उपेक्षा बरतने पर उसका लाभ नहीं उठाया जा सकता । उस तत्व को आकर्षित तो हमारा संकल्प चुम्बक ही करता है । यदि वह खिंचाव न हो तो साँस हवा मात्र बनी रहेगी । उसमें गैसों का प्रभाव सम्मिलित रहेगा, किन्तु यदि संकल्पपूर्वक साँस खींची जाय तो उसमें घुला रहने वाला प्राण-तत्व हमारी पकड़ में आ जायेगा, व्यक्तित्व को प्राणवान बनाने में सहायता करेगा । इसके लिए प्राणाकर्षण प्राणायाम करना पड़ता है । सीधा स्थिर शरीर रखकर लम्बी साँस खींचते हुए भावना करनी पड़ती है कि साँस के साथ मिलकर प्राण भी शरीर में प्रवेश कर गया । साँस रोकते समय विश्वास किया जाय कि साँस में जो प्राण-तत्व था वह शरीर के प्रत्येक घटक द्वारा सोख लिया गया है । साँस छोड़ते समय भावना की जाय कि भीतर भरी हुई दुर्बलताएँ-दुष्प्रवृत्तियाँ साँस के साथ मिलकर बाहर निकल गईं । इसी क्रिया को पन्द्रह मिनट से आरम्भ करके आधा घण्टा तक पहुँचा देने की प्रक्रिया को बार-बार करते रहने की प्रक्रिया प्राणाकर्षण प्राणायाम बन जाती है ।

उपरोक्त प्रारम्भिक अभ्यास पूरा होने पर दूसरा चरण यह हो सकता है कि प्राण-तत्व को शरीर के किसी अंग या मस्तिष्क के किसी केन्द्र में विशेष रूप से भण्डार कर लिया जाय ।

शरीर का कोई अवयव दुख रहा हो या गड़बड़ा रहा हो तो भावना करनी चाहिए कि प्राणसत्ता संकल्प बल से खिंच कर इस स्थान पर केन्द्रित हो रही है और अपनी ऊर्जा में वहाँ से संचार संचालन को, प्रवाह को तीव्रगामी बना रही है । जमा हुआ विजातीय द्रव्य उस स्थान से बिखर कर चारों ओर छितरा रहा है और उसके लघु कण साँस के सहारे निकल कर बाहर हवा में उड़े जा रहे हैं । इस विधि से किसी भी पीड़ित दुर्बल अंग की अशक्तता को सशक्तता में बदला जा सकता है । साथ ही रोग से छुटकारा पाया जा सकता है । चिकित्सा उपचार की तरह यह प्राण उपचार भी कुछ दिनों लगातार अभ्यास में उतारना पड़ता है ।

मस्तिष्क में प्रतिभा के अनेक केन्द्र हैं । मनःशास्त्र के विशेषज्ञों ने उनके नियत स्थान भी खोज लिए हैं । उन स्थानों पर प्राण केन्द्रित करने और वह विशिष्टता बढ़ाने का भी ध्यान किया जा सकता है ।

दूसरा सिद्धान्त यह है कि मस्तिष्क के हर क्षेत्र में हर शक्ति का व्यापक विस्तार है । अस्तु किसी स्थान विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा समूचे मस्तिष्क यन्त्र को कल्पना क्षेत्र में प्रतिष्ठापित करते हुए यह संकल्प करते रहा जा सकता है कि अमुक विशिष्टता हमारे मस्तिष्क क्षेत्र में विशेष रूप से उग उभर रही है ।

खेत एक ही होता है । उसी में किसान मनमर्जी की फसल उगा सकता है और समुचित लाभ उठा सकता है । उसी प्रकार मस्तिष्क रूपी खेत में जो विशेषता अतिरिक्त रूप से बढ़ानी हो उसके लिए स्तर का संकल्प करना चाहिए कि प्राण ऊर्जा उस विशिष्टता को उभार रही है । उसकी कमी पूरी कर रही है । वर्षा होने पर जिस प्रकार पौधों में नयी हरियाली दौड़ जाती है उसी प्रकार यह भाव संकल्प भी इसी क्रिया के साथ जोड़ा जा सकता है कि अमुक मानसिक विशेषता की फसल लहलहाने लगी और ऊँची उठने लगी । इस प्रकार साँस में घुले हुए प्राण-तत्व को संकल्प-शक्ति में आकर्षित करके मस्तिष्कीय दुर्बलताओं को दूर किया जा सकता है उन्हें पिछड़ेपन के अभिशाप से छुड़ाकर घुड़दौड़ के विजयी घोड़े की तरह अग्रिम पंक्ति में खड़ा किया जा सकता है ।

प्राण शक्ति द्वारा शरीर और मन को दुर्बलताओं, व्यथा, विकृतियों से छुड़ाया और परिपुष्ट भी बनाया जा सकता है ।

चेहरे का सौन्दर्य, आँखों की चमक, होठों की मुस्कान, त्वचा की कोमलता आदि को भी इसी प्रक्रिया के सहारे बढ़ाया जा सकता है । मन की कल्पना और स्वभाव की गरिमा पर यदि ध्यान आकर्षण के सहारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणऊर्जा को एकत्रित किया जाता रहे तो उसका प्रभाव अपना चमत्कार दिखाए बिना न रहेगा । यह आधार अभीष्ट दिशा में अपनी अभीष्ट आवश्यकताओं को बढ़ाने में सहायक हो सकता है ।

प्राण-तत्व भौतिक बिजली के समान है । बिजली का झटका लगाकर किसी अवयव को उत्तेजित और रोगमुक्त करने की एक सुनियोजित प्रणाली है । चुम्बक चिकित्सा भी प्रख्यात है । प्राण-चिकित्सा उनमें किसी से कम क्षमता सम्पन्न नहीं, क्योंकि उनमें जीवन तत्व की वह मात्रा भी सम्मिलित है जो अन्य उपचार पद्धतियों में नहीं है । सबसे बड़ी बात यह है कि कोई भी व्यक्ति इस आधार पर स्व-चिकित्सा भी कर सकता है ।

प्राण ऊर्जा से उपचार का विज्ञान सम्मत आधार

अणु में विभु, लघु में महान की व्याख्या करने वाले उपनिषद्कार मानवी सामर्थ्य की सम्भावनाओं का वर्णन करते कभी नहीं थकते । वे कहते हैं मनुष्य की शारीरिक संरचना रसायन शास्त्र, दृश्य तन्तु जाल आदि सभी स्थूल परिकर हैं । इस सारे संयन्त्र को चलाने के लिए जिस ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है, उसे आध्यात्म की भाषा में प्राण शक्ति कहा जा सकता है । यह न्यूनाधिक मात्रा में सभी में विद्यमान होती है । सर जूलियन हक्सले ने अपनी पुस्तक "द यूनिकनेस ऑफ मैन" में लिखा है शारीरिक स्नायुतन्त्र एक-सा होते हुए भी एक ऐसी परोक्ष सामर्थ्य किसी मनुष्य के अन्दर होती है कि वह अपने चारों ओर के वातावरण को ही नहीं, एक व्यापक परिकर को प्रभावित करता है ।

इसे गीताकार ने सात्विक संकल्प-शक्ति नाम देते हुए कहा है—

धृत्या यया धारयते मनः प्राणेन्द्रिय क्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्विकी ॥

अर्थात् वह संकल्प-शक्ति जो मन, प्राण व इन्द्रियों की क्रियाओं पर नियन्त्रण करती है और उनकी शक्तियों को अन्तःस्थिति दिव्य आत्मा की ओर मोड़ देती है, हे पार्थ ! वह सात्विक इच्छा शक्ति या धृति है ।

यह इच्छा शक्ति किस रूप में होती है ? इसका उत्तर देते हुए गुह्य विज्ञानी कहते हैं कि काया की विद्युत व्यवस्था में मूलाधार को ऋण और सहस्रार को धन विद्युत का केन्द्र माना गया है । मेरुदण्ड के माध्यम से उनके मध्यवर्ती प्रवाह गतिशील रहते हैं इसके उपरान्त ज्ञान तन्तुओं के माध्यम से समस्त शरीर में उस प्राण ऊर्जा का वितरण होता रहता है । इसके आधार पर काया की चेतना और अचेतन गतिविधियाँ तो चलती ही हैं, साथ ही स्फूर्ति, प्रतिभा, मेधा, जीवट जैसी रहस्यमयी विभूतियाँ भी उसी आधार पर जगती और बढ़ती रहती हैं । पंचतत्वों से बने शरीर को चलाने में पंच प्राणों की सामर्थ्य ही काम करती है । इस ऊर्जा की उपयुक्त मात्रा होने से ही मनुष्य प्राणवान बनता है । अन्यथा स्वल्प प्राण वाला मात्र सामान्य प्राणी बनकर रह जाता है । इच्छा शक्ति का प्रभाव इसी रूप में देखा जा सकता है ।

प्राण शक्ति की उपयोगिता जीवनचर्या को गतिशील रखने तथा विभिन्न प्रकार के पुरुषार्थ करने में तो है ही । उसका अब नया उपयोग चिकित्सा प्रयोजन में भी होने लगा है । समर्थ व्यक्ति की प्राण शक्ति दुर्बल को उसी प्रकार दी जा सकती है जैसे कि सम्पन्न लोग अपने वैभव से निर्धनों, अभावग्रस्तों की सहायता करते हैं ।

प्राचीनकाल में प्राणदान, शक्तिपात आदि अनेक अनुदानों का वर्णन मिलता है । गुरुजन अपने शिष्यों को उत्तराधिकार में बहुत कुछ देते रहते हैं । दुर्बलों और पीड़ितों की सहायता के लिए भी अपनी इस पूँजी में से बहुत कुछ बाँटने की उदारता उन्होंने दिखाई है । यह वे अनुदान हैं, जिनमें अन्तःकरण में पूँजी का भी आदान-प्रदान सम्भव होता था ।

इन दिनों उस प्रक्रिया का उपयोग हल्के रूप में होने लगा है । मेस्मेरिज्म सिद्धान्त के आधार पर की जाने वाली प्राण चिकित्सा को इसी स्तर का माना जा सकता है । उसमें मात्र शरीरगत विद्युत प्रवाह का आदान-प्रदान होता है । उसमें ग्रहणकर्त्ता को अधिक लाभ होता है पर प्रदाता को कोई अधिक घाटा भी नहीं सहना पड़ता, क्योंकि दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों में इस विद्युत का निरन्तर व्यय होता ही रहता है । चिकित्सा प्रयोजन में इतना ही करना पड़ता है कि प्राण विद्युत का कुछ समय तक बिखराव रोकना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ता है और एकाग्रता तथा संकल्प शक्ति के सहारे उसे दुर्बल व्यक्ति को देना पड़ता है । इसे शारीरिक स्तर पर मोटा अनुदान कह सकते हैं ।

सम्मोहन विद्या का वशीकरण, मूर्च्छा प्रयोग आदि के रूप में प्रचलन तो पहले भी था । योग एवं तन्त्र ग्रन्थों में इसका विशद् वर्णन भी मिलता है, पर उसे व्यवस्थित चिकित्सा के रूप में प्रचलित करने का श्रेय आस्ट्रिया निवासी डॉक्टर फ्रासिस्कम् एण्टोनियर्स मेस्मर को है । उन्होंने मानवी विद्युत का अस्तित्व, स्वरूप और उपयोग सिद्ध करने में घोर परिश्रम किया और उसके आधार पर कठिन रोगों के उपचार में बहुत ख्याति कमाई । वे अपने शरीर की प्राण ऊर्जा का रोगियों पर आघात करते, साथ ही लौह चुम्बक भी आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाते । इस दुहरे प्रयोग से न केवल शारीरिक वरन् मानसिक रोगों के उपचार में भी उन्होंने आशातीत सफलता प्राप्त की । इसे उन्होंने "मेस्मेरिज्म" नाम दिया है । आगे चलकर मि. कॉस्टेट युसिगर ने उसमें सम्मोहन विज्ञान की नयी कड़ी जोड़ी और कृत्रिम निद्रा लाने की विधि को "हिप्नोटिज्म" नाम दिया । फ्रांस के अन्य विद्वान भी इस दिशा में नयी खोजें करते रहे । चिकित्सक लाफान्टेन एवं डॉ. ब्रेड ने इन अन्वेषणों को और आगे बढ़ाकर इस योग्य बनाया कि चिकित्सा उपचार में उसका प्रामाणिक उपयोग सम्भव हो सके ।

पिछले दिनों अमेरिका में न्यू आर्लीयन्स तो ऐसे प्रयोगों का केन्द्र ही बना रहा है जहाँ इस विभाग को अमेरिकी वैज्ञानिक डारलिंग और फ्रांसीसी वैज्ञानिक डॉ. दुराण्ड डे ग्रास की खोजों ने विज्ञान जगत को यह विश्वास दिलाया कि प्राण शक्ति का उपयोग अन्य महत्त्वपूर्ण उपचारों से किसी भी प्रकार कम लाभदायक नहीं है । इस प्रक्रिया को "इलेक्ट्रो बायोलॉजिकल साइंस" नाम दिया गया है । 'दिस्कूल ऑफ नेन्सी', 'दि स्कूल ऑफ चारकोट', 'दि स्कूल ऑफ मेस्मेरिस्ट नामक संस्थाओं ने इस सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण शोध कार्य किए हैं । इनके अतिरिक्त भी छोटे-बड़े अन्य शोध संस्थान सम्मोहन चिकित्सा पर अनुसन्धानरत रहे हैं ।

मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. एम. ओ. माल तथा जे. एम वैम्ब्रेल ने अपनी पुस्तक "हिप्नोटिज्म" में सम्मोहन चिकित्सा की अनेक प्रामाणिक घटनाओं का वर्णन किया है । इमोशन्स एण्ड बॉडिली चेन्जेज नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लेखिका एच. एफ. डनवार ने कहा है कि इस विद्या द्वारा हर प्रकार की हिस्टीरिया, फोबिया, स्नायुविक बीमारियाँ, वाणी का असन्तुलन—हकलाना आदि का सफल उपचार सम्भव है । डॉ. विन के अनुसार मानसिक रोगों के उपचार में वैज्ञानिक हिप्नोटिज्म का सफल स्तर पर प्रयोग हुआ है ।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. आर्नोल्ड फ्रॉस्ट ने सम्मोहन विधि से निद्रित करके कई रोगियों के छोटे ऑपरेशन किए थे । पीछे डैन्टल सर्जनों ने यह विधि अपनायी और उन्होंने दाँत उखाड़ने में सुन्न करने के प्रयोग बन्द करके सम्मोहन विधि प्रयोग को सुविधाजनक पाया । दक्षिण अफ्रीका-जोहन्सवर्ग के टारा अस्पताल में डॉ. वर्नर्ड लेविन्सन ने बिना एनेस्थीसिया के इसी विधि से कितने ही कष्ट रहित ऑपरेशन करके यह सिद्ध किया कि यह विधि कोई जादू-मन्तर नहीं वरन् विशुद्धतः वैज्ञानिक है । वैज्ञानिक जेम्स ब्राइड ने भी नाड़ी संस्थान में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति की क्षमता को मात्र शरीर निर्वाह तक सीमित न रहने देकर उससे अन्य उपयोगी कार्य सम्भव हो सकने का प्रतिपादन किया है ।

प्रसूति में भी हिप्नोटिज्म का प्रयोग सफल रहा है । इस दिशा में अनेक मेडिकल अधिकारियों का नाम उल्लेखनीय है । इसमें डॉ. वान ओटीजर, डॉ. जे. रैफ्लर, शूल्ज तथा डॉ. मार अति प्रसिद्ध हैं । इन चिकित्सा विशेषज्ञों ने बिना वेदना के प्रसव कराने में आशातीत सफलता पायी । कई महिलाएँ, जिनकी प्रसूति पहले ऑपरेशन से हुई थी, इस विधि द्वारा सहज रूप से सम्पन्न हो गई । डॉ. विन के अनुसार जिस परिमाण में सम्मोहन कर्त्ता के प्रति सम्मान तथा विश्वास रोगी का होगा, उसी मात्र में वह लाभान्वित हो पायेगा ।

प्रख्यात वैज्ञानिक मीडाट्रियूज तथा काउण्ट पुलीगर ने अपने अनुसन्धानों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्राण शक्ति द्वारा रोग उपचार तो एक हल्का सा प्रयोग मात्र है । वस्तुतः उसके उपयोग बहुत ही उच्चस्तर के हो सकते हैं । उसके आधार पर मनुष्य अपने निज के व्यक्तित्व में बहुमुखी प्रखरता उत्पन्न कर सकता है । प्रतिभाशाली बन सकता है । आत्म-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकास की अनेक मंजिलें पार कर सकता है, पदार्थों को प्रभावित करके अधिक उपयोगी बनाने तथा इस प्रभाव से जीवित प्राणियों की प्रकृति बदलने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है । जर्मन विद्युत विज्ञानी रीकन बेक इसे एक विशेष प्रकार की "अग्नि" मानते हैं । उसका बाहुल्य वे चेहरे के इर्द-गिर्द मानते हैं और "हीलिंगऑरा" नाम देते हैं । प्रजनन अंगों में उन्होंने इस अग्नि की मात्रा चेहरे से भी अधिक परिमाण में पायी है । दूसरे शोधकर्त्ताओं ने नेत्रों तथा उँगलियों के पोरुओं में उसका अधिक प्रभाव माना है ।

प्राण शक्ति के वैज्ञानिक अनुसन्धान के क्षेत्र में अभी प्राथमिक जानकारियाँ ही उपलब्ध हो सकी हैं । उसके थोड़े से सूत्र निर्धारित किए गए हैं और यत्किंचित उपयोग उपचार जाने गए हैं । आत्मविज्ञानी मानवी चेतना में सन्निहित संकल्प शक्ति, इच्छा शक्ति, वेधक दृष्टि सम्मोहन रूपी इस अद्‌भुत सामर्थ्य की गरिमा आरम्भ से ही गाते रहे हैं और कहते रहे हैं कि जो प्राण विद्या को जान लेता है, उसके लिए इस संसार में ऐसा कुछ भी अनुपलब्ध नहीं रह जाता जो समृद्धि, प्रगति और सुख-शान्ति के लिए आवश्यक है ।

चुम्बकत्व की सामर्थ्य और उसका उच्चस्तरीय उपयोग

ऊर्जा की अन्यान्य शक्ति-धाराओं में चुम्बक का अपना स्थान है । उसके द्वारा पदार्थ और प्राणी किस प्रकार प्रभावित होते हैं, इसकी जानकारी मनुष्य की ज्ञान सम्पदा में अभी इतना स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है, जितना की उसे करना चाहिए था । साधारणतया लौह चुम्बक का खेल साँप-न्यौले की लड़ाई की तरह एक कौतुक-कौतूहल के रूप में देखा जाता है ।

बहुत हुआ तो यान्त्रिक तकनीकी में उसका जब-तब जहाँ-तहाँ उपयोग होता है । ग्रह-नक्षत्र परस्पर चुम्बकत्व से बँधे हैं । मनुष्य शरीर में स्नायुसंस्थान में बहने वाले विद्युत प्रवाह में चुम्बकत्व की मात्रा रहती है । इतना तो बहुत हल्की-फुल्की जानकारी की तरह माना जाता रहा है, फिर भी इस ओर कम ही ध्यान गया है कि भौतिक एवं प्राणि स्तर के चुम्बकत्व का अधिक महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों के लिए किस प्रकार कितनी मात्रा में उपयोग सम्भव हो सकता है ।

नवीनतम शोध निष्कर्षों ने यह प्रकाश दिया है कि शारीरिक नहीं मानसिक रोगों की निवृत्ति में भी चुम्बक उपचार का सफल उपयोग हो सकता है । स्वस्थता सम्वर्धन एवं रुग्णता निराकरण के अन्य उपचार जितना काम करते हैं, उससे कहीं अधिक उपयोग चुम्बकत्व का हो सकता है । इसके अतिरिक्त अन्य प्राणियों को तथा वनस्पतियों को भी उससे प्रभावित तथा लाभान्वित करने का भी उद्देश्य पूरा किया जा सकता है ।

एक बार कुछ गड़रिए चट्टान पर बैठकर भोजन कर रहे थे । जब वे चलने लगे तो देखा उनकी लाठियाँ चट्टान से चिपक गई थीं । घबराहट के कारण उनके मुँह से चीख निकल गई । 'भूत-भूत' कह कर वे भागे । झाड़फूँक करने वाला ओझा आया । बाद में एक सयाने ने अक्ल लगायी और पता चला कि चट्टान में चुम्बक है और उसने लाठियों में लगे लोहे को चिपका रखा है ।

चुम्बक के बारे में जबसे इसकी खोज हुई है । कई कहानियाँ प्रचलित हैं । जैवचुम्बकत्व से सम्बन्धित खोजें काफी दिलचस्प परिणाम हमारे समक्ष रख चुकी हैं । उनमें एक और अध्याय जुड़ता है—चुम्बकीय चिकित्सा या मैगनेटथेरेपी के रूप में ।

किसी व्यक्ति को देखकर अपनापन-सा महसूस होना, उसकी ओर आकर्षित हो जाना एवं किसी की सूरत देखते ही डर या घृणा का अनुभव होना मनोवैज्ञानिकों व जैव वैज्ञानिकों के लिए उलझन का विषय रहा है । रूसी वैज्ञानिकों ने जैव-चुम्बकत्व से सम्बन्धित कुछ दिलचस्प निष्कर्ष अभी पिछले दिनों प्रकाशित किए हैं, जिनसे इस विषय पर प्रकाश पड़ता है ।

प्रोफेसर वी. वी. येफिमोव का कहना है कि इस सारी क्रिया का कारण जीव-जगत में, जिसमें वनस्पतियाँ भी शामिल हैं एक प्रकार के चुम्बकत्व का होना है । उनके अनुसार पक्षियों का एक पंक्ति या फिर अलग-अलग प्रकार से उड़ना । उत्तर की तरफ बोए जाने वाले बीजों में अन्य दिशाओं की अपेक्षा कम समय में अंकुर फूटना आदि पृथ्वी तथा जीव वनस्पतियों के चुम्बकीय तत्वों के कारण हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक इस बात को मानने लगे हैं कि भू-चुम्बकीय क्षेत्र जीव कोशिका की जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं व जैव तरंगों में परिवर्तन कर देता है तथा अनेक पशुओं के स्नायुविक तन्त्र को प्रभावित कर देता है ।

माइकेल फैराडे ने वर्षों पहले कहा था कि सभी पदार्थों में चुम्बकीयता की क्षमता हो सकती है । लेकिन इसकी अभिव्यक्ति अलग-अलग पदार्थों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है । लेकिन अभी हाल ही तक चुम्बक की जीव-जगत में उपस्थिति को किसी ने स्वीकार नहीं किया था । डच वैज्ञानिक मैग्नस ने कुत्ते पर परीक्षण कर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि अनुमस्तिष्क के आस-पास कुछ ऐसी कोशिकाएँ अवश्य हैं, जिनसे चुम्बक नियन्त्रण होता है । कुत्ते के अनुमस्तिष्क को निकालने के बाद यह देखा गया कि जब उसके शरीर पर उँगली रखी गई तब उँगली को कुत्ते के शरीर से उठाने में कठिनाई हुई ।

यदि यह बात सही है कि शरीर और वनस्पतियों में कोई न कोई चुम्बकत्व अवश्य होता है तो आगे चल कर मनुष्य के जीवन में बहुत से क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे, जिनमें से एक चुम्बक की सहायता से मनन तथा चिन्तन को प्रभावित करना भी होगा । चुम्बक से चिकित्सा की बातें अभी तक विज्ञान की कसौटी पर कसी नहीं गई हैं, लेकिन इस दिशा में वैज्ञानिक प्रयत्नशील हैं । विज्ञान सतत रूप से यह सिद्ध करने की दिशा में अग्रसर हो रहा है कि चुम्बक जीवन में भलाई के लिए परिवर्तन करेगा ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर के किसी भी अंग में दर्द, जोड़ों की जकड़न, दाँत के दर्द, विशेष कर आधा सीसी के दर्द को चुम्बक की सहायता से ठीक किया जा सकता है । काफी हद तक यह मोटापा दूर करने की मदद कर सकता है । इन दिनों अमेरिका, रूस, जापान, कनाडा, भारत आदि अनेक देशों में चुम्बकीय चिकित्सा तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है ।

आज विज्ञान का पुट मिल जाने की वजह से यह पद्धति नयी भले ही लगती हो, लेकिन ऐसे प्रामाणिक उद्धरण वेदों में भी मिलते हैं कि लोगों को इस चिकित्सा पद्धति की जानकारी थी । अथर्ववेद में रेत द्वारा रक्तस्राव रोकने एवं पत्थर द्वारा स्त्री रोगों के उपचार का वर्णन आता है । चुम्बक में भी रेत, बेरियम और आयरन ऑक्साइड होता है । यही तीनों मिलकर चुम्बक में मानव शरीर की चिकित्सा के गुण उत्पन्न करते हैं । मिस्र की सुन्दरी क्लियोपेट्रा के बारे में प्रसिद्ध है कि वह अपनी सुन्दरता बनाये रखने लिए माथे पर छोटा चुम्बक लगाए रखती थी ।

सोलहवीं शताब्दी में भी स्विस चिकित्सक फिलिप्स पेरासेल्सस ने चुम्बक की महत्ता की ओर संकेत किया था । उसका कहना था कि चुम्बक मानव शरीर के बाहरी एवं भीतरी दोनों तरह के रोगों का उपचार करने में सक्षम है । इस सिद्धान्त को मेस्मर ने बहुत प्रचारित किया । स्विट्जरलैण्ड के डॉ. फैंस ऐंटन मेस्मर ने भीषण सरदर्द से परेशान एक महिला फ्रेंज ऑस्टरलीन का चुम्बक से इलाज कर एक आश्चर्यजनक उदाहरण प्रस्तुत किया । बाद में डॉ. मेस्मर ने इसी चुम्बकीय प्रवाह के सिद्धान्त पर उँगलियों से वैसा ही प्रभाव उत्पन्न करने की क्रिया आरम्भ की जो मेस्मेरिज्म के नाम से विख्यात हुई । उन्हीं के समकालीन डॉ. सेम्युएल हैनीमेन ने भी चुम्बक के प्रभावों को स्वीकार कर इस चिकित्सा विधि की महत्ता प्रतिपादित की ।

माइकेल फैराडे द्वारा बताए गए जैविक चुम्बक के सिद्धान्त पर विश्व के अनेक देशों के वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान किए व तदनन्तर वर्तमान आधुनिक चुम्बक चिकित्सा पद्धति का आरम्भ हुआ ।

चुम्बक की तरंगों का मानव शरीर पर प्रभाव पड़ता है । यदि किसी शक्तिशाली पर हथेली रखें और फिर हाथ पर आलपिन रखें तो चुम्बकीय प्रभाव की वजह से वह खड़ी रहेगी । विज्ञान यह भी सिद्ध कर चुका है कि पृथ्वी एक विशाल चुम्बक है । इसी तरह सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह भी अपने चुम्बकीय गुणों द्वारा मानव शरीर को प्रभावित करते हैं । पृथ्वी के दो ध्रुव, चुम्बक के उत्तर व दक्षिणी ध्रुव हैं । मानव शरीर को यदि उत्तर की ओर सिर और दक्षिण की ओर पैर करके लिटा दिया जाय तो उसका सिर और पैर उत्तर-दक्षिण ध्रुव माने जा सकते हैं । उसके शरीर में उत्तर तथा दक्षिण ध्रुवों के चुम्बकीय प्रभावों का सन्तुलन कायम हो जाता है । स्वस्थ शरीर में लगातार चुम्बकीय सन्तुलन होने से शरीर के विभिन्न रोग हो सकते हैं इसलिए शास्त्रीय मान्यता यही है कि लगातार इस स्थिति में कभी नहीं सोना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामान्यतः शरीर को जैवचुम्बकत्व विज्ञान के अनुसार दो भागों में बाँटा जा सकता है । कमर से ऊपर का भाग उत्तर ध्रुव का क्षेत्र तथा नीचे का दक्षिण ध्रुव का क्षेत्र और लम्बवत स्थिति में दायाँ भाग उत्तर ध्रुव का क्षेत्र तथा बायाँ भाग दक्षिण ध्रुव का क्षेत्र माना जाता है । आज विश्व के सभी वैज्ञानिक इस बात से सहमत हो गए हैं कि मानव शरीर पर चुम्बक का बहुत तीव्र प्रभाव पड़ता है और इसके सही उपभोगों द्वारा अनेक रोगों का उपचार किया जा सकता है ।

मानव शरीर में रक्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । रक्त में होने वाले परिवर्तन ही हमें रोगी या निरोगी बनाते हैं । हमारे शरीर पर जब चुम्बकीय तरंगों का प्रभाव पड़ता है तो इससे रक्तवाहिनी नलियों में हल्की-सी विद्युत तरंग उत्पन्न होती है । इससे रक्त प्रवाह तेज होता है, आयन की मात्रा उसमें बढ़ जाती है, और यह आयनयुक्त रक्त पूरे शरीर में अपना प्रवाह ले जाता है । इससे लाल रक्तकणों की संख्या काफी बढ़ जाती है और सफेद रक्तकणों के साथ सन्तुलन बिगाड़े बिना रक्त प्रवाह की प्रक्रिया अच्छी हो जाती है ।

बायोमैग्नेटिक थेरेपी के अनुसार शरीर की सभी कोशिकाओं में जैविक विद्युत प्रवाहित होती है । पोटेशियम और सोडियम आयन सभी कोशिकाओं में धनात्मक और ऋणात्मक आयन में पृथक हो जाते हैं । चुम्बक का प्रभाव इन दोनों आयनों का सन्तुलन बैठाना है । चुम्बक का उत्तर ध्रुव चोट से होने वाले रक्तस्राव को कम करता है । जले हुए भाग पर जलन कम करना व अति अम्लता को रोकना भी उत्तर ध्रुव का काम है ।

कैल्शियम की अधिकता को कम करने में, रक्त-धमनियों में जमे कोलेस्टेरॉल की पर्तों को कम करने में एवं नाड़ियों एवं पुट्ठों के दर्द को कम करने में यह सहायक होता है तथा सूजन आदि कम कर देता है ।

चिकित्सा प्रयोजन के लिए, पदार्थों की चुम्बक शक्ति का उपयोग किस तरह हो सकता है ? इस सन्दर्भ में शोध कार्य का जो सिलसिला इन दिनों चला है; उसमें सफलता मिलती जायेगी, उतना ही दुर्बलता और रुग्णता से छुटकारा पाने का एक सस्ता एवं प्रभावी सूत्र मनुष्य को हस्तगत हो जायेगा ।

उच्चस्तरीय वर्ग के जीवन्त चुम्बकत्व मनुष्य के अपने शरीर में विद्यमान है और उसे प्रयत्नपूर्वक अधिक समर्थ बनाया जा सकता है । तत्वदर्शी इस प्रवाह को 'प्राण' कहते रहे हैं और उसकी न्यूनाधिकता को मनुष्य की आन्तरिक समर्थता का आधार बताते रहे हैं । साहस और संकल्प के, पराक्रम और पुरुषार्थ के रूप में उसी के द्वारा कई प्रकार की असाधारण उपलब्धियाँ हस्तगत होती हैं । सौन्दर्य एवं प्रतिभा का आकर्षण इसी क्षमता पर निर्भर है । ओजस्वी, मनस्वी, तेजस्वी कहे जाने वाले व्यक्ति वस्तुतः प्राणवान ही होते हैं, उनकी प्राण प्रखरता ही अनेकों विशिष्टताओं एवं विभूतियों के रूप में परिलक्षित होती है ।

प्राण सम्वर्धन के लिए प्राणायाम जैसे व्यायाम-उपचार एवं अनुष्ठान, तप-साधना जैसे आध्यात्म योगाभ्यासों का अवलम्बन किया जाता रहा है, पर उसे उतना महत्त्व नहीं मिला, जितना मिलना चाहिए था । व्यक्तित्व में प्राण ऊर्जा का चुम्बकत्व इतनी मात्रा में भरा जा सकता है जिसे मनुष्य अपने को हर दृष्टि से अधिक प्रभावशाली बना सके, अधिक पुरुषार्थ कर सके एवं अधिक सहयोग सम्पादित कर सके, अधिक सफलता सम्पादित करने में समर्थ हो सके ।

कुसंग और सत्संग का जो चमत्कारी परिणाम देखा जाता है, उसमें विचार विनिमय, परामर्श, अनुकरण जैसे सामान्य कारण उतने प्रभावी नहीं होते जितना कि व्यक्ति विशेष का चुम्बकत्व । उसकी उत्कृष्टता, निकृष्टता का समीपवर्ती लोगों पर भले-बुरे अनुदान उँड़ेल देना भी सम्भव होता है । चिकित्सा-प्रयोजनों में चुम्बकत्व की सामर्थ्य का उपयोग होने लगे तो यह अच्छी परम्परा चलेगी । इससे भी बड़ी बात इस सन्दर्भ में यह हो सकती है कि वैयक्तिक चुम्बकत्व का महत्त्व समझा जाय, प्राण साधना द्वारा उस क्षमता को बढ़ाया जाय और ऐसे उच्चस्तरीय प्रयोजनों के लिए उसका उपयोग किया जाय जिससे न केवल रुग्णता का निवारण सम्भव हो वरन् उत्कृष्टता का समग्र सम्वर्धन भी इस माध्यम से सम्भव हो सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी विद्युत इस जगत की प्रचण्डतम ऊर्जा

आग जिस कमरे में जलती है वह पूरा का पूरा गर्म हो जाता है । आग रहती तो ईंधन की सीमा में ही है पर उसकी गर्मी और रोशनी दूर-दूर तक फैलती है । सूरज बहुत दूर होते हुए भी धरती तक अपना प्रकाश और ताप पहुँचाता है । बादलों की गरजना दूर-दूर तक सुनाई पड़ती है । प्राणवान व्यक्ति अपने प्रचण्ड व्यक्तित्व का प्रभाव सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाते हैं और व्यक्तित्वों को ही नहीं परिस्थितियों को भी बदलते हैं । वातावरण उनसे प्रभावित होता है । यह प्रभाव उत्पन्न करने वाली क्षमता प्राण शक्ति ही है भले ही वह किसी रूप में काम कर रही हो । यह देव और दैत्य दोनों स्तर की हो सकती है । उसके अनुचित प्रयोग से वैसा ही विनाश भी होता है जैसे कि उचित प्रक्रिया से सत्परिणाम उत्पन्न होते हैं । दैवी, आसुरी शक्तियों के बीच संघर्ष होते रहने के सूक्ष्म कारणों में यह प्राण प्रक्रिया का टकराव ही मुख्य कारण होता है ।

ताप का मोटा नियम यह है कि अधिक ताप अपने संस्पर्श में आने वाले न्यून ताप उपकरण की ओर दौड़ जाता है । एक गर्म दूसरा ठण्डा लोह-खण्ड सटाकर रखे जायें तो ठण्डा, गर्म होने लगेगा और गर्म, ठण्डा । वे परस्पर अपने शीत-ताप का आदान-प्रदान करेंगे और समान स्थिति में पहुँचने का प्रयत्न करेंगे ।

बिजली की भी यही गति है । प्रवाह वाले तार को स्पर्श करते ही सारे सम्बद्ध क्षेत्र में बिजली दौड़ जायेगी । उसकी सामर्थ्य उस क्षेत्र में बँटती जायेगी । प्राण विद्युत का प्रभाव भी शीत-ताप के सान्निध्य जैसा ही होता है । प्राणवान व्यक्ति दुर्बल प्राणों को अपना बल ही नहीं स्तर भी प्रदान करते हैं । ऋषियों के आश्रमों में सिंह और गाय के प्रेमपूर्वक निवास करने का तथ्य इसीलिए देखा जाता था कि प्राणवान अपनी सद्भावना से उन पशुओं को भी प्रभावित कर देते थे । बिजली लोहे-सोने में, सन्त-कसाई में कोई भेद नहीं करती । वह सब पर अपना प्रभाव समान दिखाती है, जो भी उससे जैसा भी काम लेना चाहे वैसा करने में उसकी सहायता करती है, पर मानव शरीर में संव्याप्त विद्युत की स्थिति भिन्न है । उसमें चेतना और सम्वेदना के दोनों तत्व विद्यमान हैं । वह समस्त शरीर पर शासन करती है—मस्तिष्क उसका केन्द्र संस्थान है । इतने पर भी उसे शरीर शक्ति नहीं कह सकते । बल्ब में जलने वाली बिजली उसी में से उत्पन्न नहीं होती, वरन् अन्यत्र से आती है, वहाँ तो वह चमकती भर है । मानव शरीर में पायी जाने वाली बिजली वस्तुतः चेतनात्मक है । उसे प्राण प्रतिभा कहा गया है, वह शक्ति ही नहीं सम्वेदना भी है । विचारशीलता उसका विशेष गुण है । वह नैतिक और अनैतिक तथ्यों को अनुभव करती है और उस आधार पर भौतिक बिजली की तरह समस्वर नहीं रहती वरन् अपना प्रवाह औचित्य के पक्ष में और अनौचित्य के विरोध में प्रस्तुत करती है ।

इतनी छोटी-सी खोपड़ी में इतना बड़ा कारखाना किस प्रकार सँजोया, जमाया हुआ है, इसे देखकर बनाने वाले की कारीगरी पर चकित रह जाना पड़ता है । यदि इतना साधन सम्पन्न इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क बना कर खड़ा करना हो तो संसार भर के समस्त विद्युत उपकरणों के लिए बनाये गए कारखानों जितनी जगह घेरनी पड़ेगी ।

निःसन्देह मनुष्य एक जीता जागता बिजलीघर है, किन्तु झटका मारने वाली बत्ती जलाने वाली सामान्य बिजली की तुलना उससे नहीं हो सकती । जड़ की तुलना में चेतन की जितनी श्रेष्ठता है उतना ही भौतिक और जीवन विद्युत में अन्तर है । प्राण विद्युत असंख्य गुनी परिष्कृत और सम्वेदनशील है ।

जीव भौतिकी के नोबेल पुरस्कार प्राप्त विज्ञानी हाजक्रिन हक्सले और एकल्सने मानवी ज्ञान तंन्तुओं में काम करने वाले विद्युत आवेग इंपल्स की खोज की है । इनके प्रतिपादनों के अनुसार ज्ञान तन्तु एक प्रकार के विद्युत प्रवाही तार हैं जिनमें निरन्तर बिजली दौड़ती रहती है । पूरे शरीर से इन धागों को समेट कर एक लाइन में रखा जाय तो लम्बाई एक लाख मील से भी अधिक बैठेगी । विचारणीय है कि इतने बड़े तन्त्र को विभिन्न दिशाओं में गतिशील रखने वाले यन्त्र को कितनी अधिक बिजली की आवश्यकता पड़ेगी ।

शरीर के एक अवयव मस्तिष्क का स्वतन्त्र रूप से विश्लेषण करें तो उसमें १० अरब नम कोष्ट—न्यूरॉन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । उनमें से हर एक का सम्पर्क लगभग २५ हजार अन्य नस कोष्ठों के साथ रहता है ।

मानव शरीर के इर्द-गिर्द छाये रहने वाले प्रभा-मण्डल के सम्बन्ध में परा मनोविज्ञानी महिला एलीन गैरेट की पुस्तक 'अवेयर नेस' में अनेकों शोध विवरण छपे हैं, जिसमें उन्होंने शरीर के इर्द-गिर्द एक विद्युतीय कुहरे का चित्रांकन किया है । वे इस कुहरे के रंगों एवं उभारों में होते रहने वाले परिवर्तनों को विचारों के उतार-चढ़ाव का परिणाम मानती हैं । इस प्रभा-मण्डल के चित्र सोवियत विज्ञानी किर्लियन ने भी उतारे हैं और उनमें परिवर्तन होते रहने की बात कही है । इन प्रभा परिवर्तनों को मात्र विचारों का ही नहीं, शारीरिक स्वास्थ्य का प्रतीक भी माना गया और उनके आधार पर शरीर के अन्तराल में छिपे हुए रोगों के कारण भी परखे गए । इस प्रकार के परीक्षणों में मास्को मेडीकल इन्स्टीट्यूट के अध्यक्ष पावलेन कोव ने विशेष ख्याति प्राप्त की है और उन्होंने रोग निदान के लिए प्रभा-मण्डल के अध्ययन को बहुत उपयोगी माना है ।

इस प्रभा-मण्डल को प्रत्यक्ष सूक्ष्म शरीर की संज्ञा दी गई है । उसका वैज्ञानिक नामकरण 'दि बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी' किया गया है । कजाकिस्तान के किरोव विश्वविद्यालय की शोधों में कहा गया है कि इस प्रभा-मण्डल के ऊर्जा शरीर को उत्तेजित विद्युत अणुओं का समूह मानने में हर्ज नहीं, पर उसमें इतना और जोड़ा जाना चाहिए कि उसमें जीवाणुओं का भी होना आवश्यक है साथ ही उसकी सत्ता मिश्रित होने पर एक व्यवस्थित एवं स्वसंचालित इकाई है । उसमें अपनी उत्पादन, परिग्रहण एवं परिप्रेषण क्षमता मौजूद है ।

येल विश्वविद्यालय की न्यूरो एकेडेमी के प्रो. हेराल्डवर ने प्रमाणित किया है कि प्रत्येक प्राणी एक 'इलेक्ट्रो डायनेमिक' आवरण से घिरा है । उसकी चेतनात्मक क्षमता को इसी क्षेत्र के कारण बाहर भगाने और दूसरे प्रभावों को पकड़ने की सुविधा होती है । इस विद्युतीय आवरण की शोध में आगे चलकर विज्ञानी लियोनाई रोविन्स ने यह प्रमाणित किया कि वह लोह कवच नहीं है वरन् मस्तिष्क के प्रभाव से उसे हल्का, भारी, उथला और गहरा किया जा सकता है । उसकी कार्यक्षमता घटाई या बढ़ाई जा सकती है ।

विश्व ज्ञान की असीम सम्पदा को 'यूनिवर्सल मेमोरी ऑफ नेचर' कहा जाता है । इसी की चर्चा 'बुक ऑफ लाइफ' के नाम से भी होती है । इस पुस्तक में विश्व चेतना का आरम्भ से अब तक का इतिहास अंकित है । माइक्रोफिल्मों की विशालकाय लाइब्रेरी की तरह इसे समझा जा सकता है । मोटे रूप में तो पता नहीं चलता कि कहाँ क्या-क्या अभिलेख अंकित हैं, पर विशेषज्ञ यह तलाश कर सकते हैं कि इस संग्रहालय की अलमारी के किस खाने में किस स्थान पर क्या रखा हुआ है ? इस कला में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए मस्तिष्कीय विद्या की साधना की जाती है । इस प्रक्रिया को पदार्थ वैज्ञानिक अपने ढंग से और आत्म-विज्ञानी अपने ढंग से विकसित कर सकते हैं । ध्यान धारणा एवं तप साधना से भी यह सम्भव है और उन परा मनोविज्ञानी प्रयोगों से भी जो इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा इन्हीं दिनों अपनाये जा रहे हैं ।

भौतिक क्षेत्र में विद्युत की अनेकानेक विदित एवं अविदित धाराओं की महत्ता को समझा जा रहा है । उसके प्रभाव से जो लाभ उठाया जा रहा है उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ अगले दिनों मिलने की अपेक्षा की जाती है । ठीक इसी प्रकार मानवी विद्युत के अनेकानेक उपयोग सूझ पड़ने की सम्भावना सामने है । विज्ञान इस क्षेत्र में तत्परतापूर्वक संलग्न है और विश्वासपूर्वक कई उपलब्धियाँ प्राप्त करने की स्थिति में है ।

चैकोस्लाविया, पोलेण्ड, बुल्गारिया के जीवशास्त्री मनुष्य की अतीन्द्रिय क्षमताओं के बारे में विशेष रूप से दिलचस्पी ले रहे हैं । उन्होंने पिछले तीस वर्षों में आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त की हैं । दूर-दर्शन विचार संग्रहण—भविष्य कथन अब शोध के पुराने विषय हो गए । उनमें नई कड़ी 'सायकोकिनेसिस' की जुड़ी हैं । इस लम्बे शब्द का संक्षिप्त संकेत है (पी. के.) इसका अर्थ है विचार शक्ति से वस्तुओं को प्रभावित एवं परिचालित करने की सामर्थ्य । जिस प्रकार आग या बिजली के सहारे वस्तुओं का स्वरूप एवं उपयोग बदला जा सकता है, उन्हें स्थानान्तरित किया जा सकता है वैसी ही सम्भावना इस बात की भी है कि मानव शरीर में पायी जाने वाली विशिष्ट स्तर की विद्युत धारा से चेतना स्तर को प्रभावित किया जा सकेगा । इससे न केवल अतीन्द्रिय क्षमता के विकसित होने से मिलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले लाभ मिलेंगे वरन् शारीरिक और मानसिक रोग निवारण में भी बहुत सहायता प्राप्त होगी ।

एक रूसी परामनोविज्ञानी कामेंस्की और कार्ल निकोलायेव ने अपनी शोधों के अनेक विवरणों का हवाला देते हुए बताया है कि दूरस्थ अनुभूतियाँ यों यदा-कदा लोगों को अनायास भी होती रहती हैं किन्तु उसके लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित करने पर इस अनुभूति को और भी अधिक स्पष्ट एवं विकसित किया जा सकता है । इस सन्दर्भ में हुए परीक्षणों का विस्तृत विवरण 'कोन्सोमोल्स काया' प्रावदा पत्र में प्रकाशित हुआ था ।

मनुष्य की शारीरिक संरचना अन्य प्राणियों की तुलना में विचित्र और अद्‌भुत है । कर्मेन्द्रियों में हाथों की बनावट ऐसी है जिसके सहारे अनेकों शिल्प कौशलों में प्रवीणता प्राप्त हो सके । आँखें मात्र देखने के ही काम नहीं आतीं वरन् उनसे निकलने वाला तेजस् दूसरों को प्रभावित, आकर्षित करने के भी काम आता है ।

मस्तिष्क तो अपने आप में असाधारण विद्युत संस्थान है । अब तक बुद्धि बल, मनोबल की ही प्रशंसा थी । अब उन प्रवाहों का भी पता चल रहा है जो व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करने और उसकी खोज खबर लाने में समर्थ हैं । आत्म-सत्ता की गरिमा को यदि समझा जा सके और उसकी खोजबीन में, उत्पादन, अभिवर्धन में लग जाया जाय तो इतना कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो अब तक की भौतिक उपलब्धियों की तुलना में हल्का नहीं भारी ही बैठेगा ।

मनुष्य शरीर की अद्‌भुत बिजली और उसके चमत्कार

मनुष्य शक्तियों का केन्द्र है । उसमें भौतिक शक्तियाँ भी प्रचुर मात्रा में है और आध्यात्मिक शक्तियाँ भी । सर्कस में अद्‌भुत खेल दिखाते हुए नटों को, बाजीगरों को, साहसिक कार्य करने वाले बहादुरों के करतबों को देखकर यह पता चलता है कि मनुष्य अपने शरीर को साधले तो एक से एक अनौखे काम कर सकता है । मानवीय बुद्धि द्वारा दर्शन, साहित्य, रसायन विज्ञान, ज्योतिष, चिकित्सा, कृषि, शिल्प, संगीत आदि के जो नाना विधि आविष्कार हुए हैं उनकी महिमा का वर्णन ही क्या हो सकता है । आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा ही अष्ट सिद्धि, नवनिद्धि, देवसिद्धि, आत्म-दर्शन, ईश्वर प्राप्ति आदि महान पुरुषार्थ उपलब्ध किए जाते हैं ।

मनुष्य देखने में बड़ा दुर्बल और साधारण सा प्राणी है पर उसके कण-कण में एक से एक अद्‌भुत शक्तियाँ भरी हुई हैं जो उनको जान लेता है और उनको जागृत करके सशक्त बना लेता है एवं उनसे काम लेना सीख जाता है वह दूसरों के सामने अद्‌भुत शक्ति सम्पन्न की तरह प्रकट होता है ।

वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता से यह देखा जा सकता है कि मनुष्य शरीर एक अच्छा खासा बिजलीघर, शक्ति केन्द्र है । बिजलीघर के इंजन की तरह मनुष्य का हृदय हर घड़ी काम करता है और वहाँ से असंख्यों तार निकल कर सम्पूर्ण शरीर साम्राज्य में फैलते हैं । बिजली के उपयोग एवं वितरण को व्यवस्थित रखने का मन्त्र भवन जिस प्रकार होता है वैसा ही मानवीय मस्तिष्क है । मस्तिष्क से असंख्यों ज्ञानतन्तु निकलते हैं और वे बारीक जाल की तरह सारे शरीर में फैल जाते हैं । यह बिजलीघर ऐसे सुरक्षित रूप से बना है कि इसकी शक्तियों का प्रदर्शन एवं व्यय बाहर नहीं होता इसलिए शरीर को छूने से कोई विशेषता मालूम नहीं देती, पर यान्त्रिक परीक्षा से प्रकट है कि करीब २६० वाट बिजली हर घड़ी काम करती रहती है । उसकी, उष्णता, शक्ति तथा गतिशीलता से देह के विविध कल पुर्जे काम करते रहते हैं ।

मशीनों से बनने वाली बिजली की अपेक्षा, मनुष्य शरीर की बिजली अनेक गुनी सूक्ष्म, उच्चकोटि की तथा प्रकृति के सूक्ष्मतम परमाणुओं को प्रभावित करने वाली है । हमारे पूजनीय पूर्वज इस रहस्य को जानते थे । इसलिए उन्होंने शरीरगत विद्युत शक्ति का प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं से सम्बन्ध स्थापित करने का सफल आविष्कार किया था । आज के पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने लाखों, करोड़ों रुपयों की कीमत से बनने वाले और पेट्रोल आदि खर्चीले दुष्प्राप्य साधनों से चलने वाले यन्त्र बनाये हैं । वे एक नियत स्थान पर रखे रहते हैं, एक जगह से दूसरी जगह उन्हें उठा ले जाना बड़ा कष्ट साध्य है । यह कठिनाई भारतीय योग विज्ञान में तनिक भी न थी । आज रेडियो से खबर भेजनी हो तो कीमती ट्रान्समीटर यन्त्र होना चाहिए । फिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका नियमित सम्बन्ध किया जाना चाहिए तब कहीं संवादों का आदान-प्रदान हो सकता है । योग विज्ञान के आधार पर इस झंझट की तनिक भी जरूरत न थी । मस्तिष्क की अमुक ग्रन्थियों को जागृत करके आत्म-विद्युत की चेतना से उसे क्रियाशील बनाया जाता था और उस माध्यम से विचार तरंगें सुदूर स्थानों को भेज कर जहाँ संवाद भेजना होता था वहाँ तत्काल भेज दिया जाता था । लंका में बैठा हुआ रावण, अमेरिका में बैठे हुए अहिरावण से इसी आधार पर वार्त्तालाप करता रहता था । आज 'रेडार' नामक रेडियोशक्ति से संचालित बम निर्दिष्ट स्थान पर जाकर गिरता है । इस बम को बनाने और चलाने में बहुत ही खर्चीले यन्त्रों तथा पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है । प्राचीनकाल में मन्त्र शक्ति से ही 'कृत्या-घात' चलायी जाती थी और शत्रु जहाँ कहीं भी होता था वहीं ढूँढ़ कर वह उसके ऊपर गिरती थी । अनेक प्रकार के योगिक चमत्कारों का वर्णन प्राचीन पुस्तकों में मिलता है । यह चमत्कार वैज्ञानिक आधार पर निर्भर थे । प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं को अपने शरीर की विद्युत शक्ति द्वारा यथेच्छित दिशा में मोड़ लेने की विद्या हमारे पूर्वजों को ज्ञात थी और वे इच्छानुसार प्रकृति के अपार भण्डार में से अपना आवश्यक प्रयोजन सिद्ध कर लेते थे । शाप और वरदान, अभीष्ट पदार्थ की अनायास प्राप्ति, असम्भव दिखाई पड़ने वाले कार्यों को सम्भव बना देना, यह सब अंचरज भरे कार्य करने की उस जमाने में साधारण लोगों में भी क्षमता थी । कारण यही था कि शारीरिक विद्युत का प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं के साथ सम्बन्ध मिला कर उन्हें अभीष्ट दिशा में परिवर्तित कर लेने का ज्ञान उन्हें था । इस युग के वैज्ञानिक भी जब उस ज्ञान को प्राप्त कर लेंगे तो आज की खर्चीली मशीनरी की उन्हें कुछ भी आवश्यकता न रहेगी । बोझ उठाने के लिए बड़ी-बड़ी क्रेन मशीनें तब निरुपयोगी हो जायेंगी और वायु विद्या के आधार पर मामूली वानर बड़े-बड़े पर्वतों को उठा ले जाया करेंगे ।

उपरोक्त पंक्तियों में प्राचीन विज्ञान की चर्चा करना हमारा उद्देश्य नहीं है । यहाँ तो केवल यह बताया है कि मनुष्य शरीर केवल हाड़-माँस का पुतला ही नहीं है उसमें बड़ी-बड़ी विलक्षण सूक्ष्म विद्युत शक्तियाँ भरी हुई हैं वे अपना भला भी करती रहती हैं । यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से उनसे काम लेना न जानता हो तो वह बिजली अपने समीपवर्ती क्षेत्र में काम करती रहती है । सत्संग और कुसंग का भला-बुरा फल प्रसिद्ध है । अधिक विद्युत शक्ति वाले व्यक्ति का प्रभाव कम शक्ति वाले पर पड़ता है । यदि कमजोर तबियत का भला आदमी, बलवान प्रकृति के बुरे आदमियों की संगति में रहे तो वह बुरा बन जायेगा । इसी प्रकार न्यून शक्ति वाला बुरी प्रकृति का मनुष्य यदि तेजस्वी सत्पुरुषों में रहे तो उसका भला बन जाना स्वाभाविक है । ऋषि मुनियों के आश्रमों में सिंह भी कुत्ते की तरह बैठे रहते हैं । वे अपनी हिंसा वृत्ति को भूल जाते हैं । ऋषियों के शरीर से निकलते रहने वाले अहिंसक तेज का ही यह प्रभाव है ।

नजर लगने से बच्चों का बीमार हो जाना या हसरत भरी निगाह से देखे जाने पर मकान, पशुओं का दूध तथा अन्य अनौखी चीजों का पदभ्रंश हो जाना इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य की भावनाएँ दूसरों पर क्या प्रभाव डाल सकती हैं । सताए हुए की 'हाय' सताने वाले को ले बैठती है । सत्पुरुषों के आशीर्वाद से लोग फलते-फूलते, उन्नति करते और कठिनाइयों से पार हो जाते हैं । अकर्मों के आयोजन में साक्षी रहे मकान, वस्त्र, पदार्थ का उपयोग करने से वैसे ही कुविचार उस उपयोग करने वाले पर आक्रमण करते हैं । निकट रहने वाले के ऊपर एक बीमार की बीमारी दूसरे स्वस्थ व्यक्ति पर हमला कर देती है । इस प्रकार की बातों से पता चलता है कि मनुष्य के शरीर में रहने वाली बिजली प्रायः अपने निकटवर्ती क्षेत्रों में प्रभाव डालती रहती है । मेस्मेरिज्म विद्या जानने वाले मनुष्य इस बिजली के द्वारा दूसरों को बेहोश कर देते हैं, उन्हें अपना वशवर्ती बना लेते हैं, उनके मस्तिष्क पर अपना अधिकार कर लेते हैं तथा अनेक आश्चर्यजनक कौतुक दिखाते हैं ।

इसी शारीरिक विद्युत का चतुर प्रयोक्ता, उससे अनेक कष्ट साध्य रोगियों को अच्छा कर सकता है । अपनी स्वस्थ शक्ति को रोगी के शरीर में प्रवेश करके उसे उसी प्रकार नव-जीवन दे सकता है जैसे स्वस्थ मनुष्य का खून पिचकारी द्वारा निर्बल या रोगी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर में पहुँचा दिया जाय तो वह शीघ्र स्वस्थ हो जाता है । कई बार ऐसा भी हुआ कि किसी आत्मविद्या जानने वाले ने अपनी आयु का एक भाग किसी मृत्यु मुख में पहुँचे हुए रोगी को दान किया है और वह स्वयं उतने वर्ष कम जीकर, उस मृत्यु मुख में जाने वाले व्यक्ति को उतने वर्ष अधिक जीवन धारण कराने में समर्थ किया है । इसी प्रकार अपना तप, तेज एवं आत्मबल किन्हीं विशेष प्रिय शिष्यों के शरीर में प्रवेश करके उसकी आत्मिक शक्तियों का जागरण करा देने में कई गुरु समर्थ होते हैं । कुण्डलिनी जागरण की साधना अत्यन्त कष्ट साध्य और समय साध्य है पर ऐसे कई गुरु होते हैं जो शिष्य के सिर पर हाथ रख कर कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करा देते हैं । वे अपनी शक्ति को उसके शरीर में प्रवेश कर देते हैं और उस शक्ति के द्वारा षट्चक्रों का, सूक्ष्म ग्रन्थियों का तथा कुण्डलिनी का जागरण हो जाता है । ऐसे जागरणों में तत्काल तो पूर्ण सफलता प्रतीत हो जाती है पर यदि शिष्य की मनोभूमि बलवान एवं स्थिर हुई तो ही वह सफलता टिकती है, अन्यथा वह धीरे-धीरे स्वल्प काल में ही समाप्त हो जाती है । जो, हो गुरु की शक्ति अपना चमत्कार तो दिखा ही देती है ।

पतिव्रत और पत्नीव्रत का भारतीय समाज में इतना अधिक महत्त्व इसी विज्ञान के आधार पर दिया गया है । पाश्चात्य सभ्यता के प्रभावित व्यक्ति अक्सर ऐसा कहते सुने जाते हैं कि—"काम सेवन स्वेच्छा सहयोग है ।" जैसे दो व्यक्ति आपस में शरीर की तेल मालिश करके या थके अंगों को दबा-दबाकर दूसरे को प्रसन्न करते हैं और उसमें किसी प्रकार का पाप नहीं होता इसी प्रकार मूत्रेन्द्रियों की खुजली को स्त्री-पुरुष आपसी सहयोग से मिटाकर प्रसन्नता लाभ करें तो इसमें क्या दोष है । स्त्री-पुरुष का जोड़ा कोई जन्म से तो होता नहीं, इसलिए वह ईश्वर दत्त तो है नहीं । जब एक साथी को मैथुन के लिए नियुक्त कर लेने का अपने को अधिकार है तो अनेकों को नियुक्त कर लेने का अधिकार क्यों नहीं होना चाहिए ? जब अनेक सुन्दर-सुन्दर फल-फूल, वाहन, वस्त्र, खाद्य, वाद्य, मनोरंजन आदि का उपयोग करके स्वाद परिवर्तन का लाभ उठाया जाना निन्दनीय नहीं है तो अनेक साथियों के सहयोग से काम तृप्ति के स्वाद परिवर्तन करते रहने में क्या हर्ज है ?"

उपरोक्त दलील स्थूल दृष्टि से चाहे कैसी ही आकर्षक प्रतीत क्यों न हो पर उसका थोथापन शरीर विद्युत विद्या के आधार पर स्पष्ट प्रकट हो जाता है । जननेन्द्रियाँ शरीर का सबसे अधिक सक्षम, सम्वेदनशील एवं प्राण पूर्ण भाग है, एक नया प्राणी उत्पन्न कर देने तक की जीवनी शक्ति उनमें निवास करती है । मस्तिष्क और जननेन्द्रिय यह दो ही प्राण केन्द्र हैं । इनके आधार पर दो प्राणी आपस में इतने घनिष्ठ हो जाते हैं कि उनका सम्बन्ध छुड़ाये नहीं छूटता । पति-पत्नी में जैसा आतुर, जैसा उल्लास पूर्ण, जैसा सजीव प्रेम होता है वैसा अन्य सम्बन्धियों में नहीं होता, कारण यह है कि जननेन्द्रियों के संस्पर्श के आधार पर उन दोनों में प्राण शक्ति का आपसी आदान-प्रदान ऐसा महत्त्वपूर्ण हुआ है कि एक-दूसरे की आत्मा के साथ लिपट जाते हैं । यह आत्मिक सम्मेलन एक ही साथी के साथ उचित रूप से हो सकता है । यदि यह अनेकों के साथ हो तो अनेकों की विद्युत शक्तियों का सम्मिश्रण होगा यही कारण है कि व्यभिचारी स्त्री-पुरुष अपने जोड़े के प्रति वफादार नहीं रह सकते । वेश्याएँ किसी की सगी नहीं होतीं, क्योंकि अनेकों दिशाओं में उनकी वफादारी बँटी रहती है । दूसरी बात यह है कि शारीरिक विद्युत शक्तियों का व्यभिचार केन्द्र द्वारा, व्यभिचारियों में आदान-प्रदान होता रहता है । रोगी, कुबुद्धि, दुष्ट प्रकृति के व्यभिचारियों की शारीरिक और मानसिक छूत अन्य सहवास करने वालों को लगे बिना रह नहीं सकती ।

द्रोपदी का उदाहरण एक नयी समस्या है, उस पर दूसरे पहलू से विचार करना होगा । उत्तरीय भारत के पर्वतीय प्रदेशों में भी बहुपति प्रथा प्रचलित है और वह सहस्रों वर्ष से चली आ रही है । वहाँ सब भाइयों की एक सम्मिलित पत्नी होती है । सन्तानें बड़े पिताजी, मँझले पिताजी, छोटे पिताजी आदि कह कर सम्बोधित करती हैं । सहस्रों वर्षों के परीक्षण के पश्चात् भी यह प्रथा कोई अशान्ति, द्वेष, मनोमालिन्य पर्व दाम्पत्य वफादारी में कमी का कारण सिद्ध नहीं हुई । इसका कारण यही है कि एक कुटुम्ब के, एक प्रकृति अथवा स्वार्थ के भाई एक समान गुण, कर्म, स्वभाव के होते हैं और दुराव का भाव लेशमात्र भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न रख कर प्रकट रूप से, शुद्ध से, बहुपति प्रथा को निर्दोष एवं स्वाभाविक मानते हैं उनके पारस्परिक स्वार्थ आपस में टकराते नहीं, पत्नी की वफादारी विभाजित नहीं होती । इन कारणों से बहुपति प्रथा पतिव्रत एवं सतीधर्म का एक भाग रही है पर यह उदाहरण सबके लिए लागू नहीं हो सकता । इस प्रथा का उदाहरण देकर व्यभिचार का समर्थन करना ठीक नहीं । यह तो विभिन्न परिवारों की विशेष परम्परा है । साधारण व्यभिचार शरीर विद्युत विद्या के आधार पर हानिकर और निन्दनीय ही ठहराता है ।

उपरोक्त पंक्तियों से पाठक मनुष्य शरीर द्वारा बिजली से होने वाले हानि-लाभों के सम्बन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे । भारतीय समाज में छुआछूत की, चौके में एकान्तता, स्वच्छता पूर्वक भोजन करने की, उच्च वर्ण के लोगों से भोजन बनवाने की प्रथाएँ इसी आधार पर चली हैं ताकि अवांछनीय लोगों की शारीरिक विद्युत अपने ऊपर कोई बुरे प्रभाव न डाल सके । सत्संगति का महत्त्व भी इसीलिए है कि उससे अच्छे लोगों का तेज अपने ऊपर अधिक प्रभाव डालता है । सत्संग एक हल्का शक्तिपात है । योग मार्ग में रुचि रखने वाले जानते हैं कि अधिक आत्म शक्ति सम्पन्न व्यक्ति अपनी शक्ति का थोड़ा-सा भाग किसी प्रिय शिष्य के शरीर में प्रवेश करते हैं तो उस समय शिष्य को बिजली के तार छूने के समान हल्का-या भारी झटका लगता है और कई बार वह मूर्च्छित भी हो जाता है । यह विशिष्ट शक्तिपात की बात हुई । प्रभावशाली व्यक्तियों के संसर्ग में हल्का-हल्का शक्तिपात प्रतिक्षण होता रहता है और उसका आत्मोन्नति का मार्ग बड़ा सरल हो जाता है । मनुष्य शरीर की विद्युत, असाधारण शक्तिशाली है । अपने पूर्वजों की भाँति जब हम उसका उपयोग जान लेंगे तो उससे भारी लाभ उठा सकेंगे ।

मनुष्य का प्रचण्ड चुम्बकत्व और तेजोवलय

कभी-कभी जलयानों पर समुद्र और जलयान के सम्मिलत प्रभाव से एक शीतल अग्नि उत्पन्न होती है और वह जहाज के मस्तूल, रस्से तथा प्रत्येक भाग पर चमकती दिखाई देती है । यों यह एक प्रकार से विद्युत ही है पर हानि रहित है । इससे किसी वस्तु या व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचती । पुराने लोग इसे 'सन्त' एल्यो की अग्नि' कहते थे और समझते थे कि जहाज पर कोई सृजनात्मक वरदान बरस रहा है । अब उसे 'जलयान का प्रेत' कहा जाता है । वैज्ञानिक विश्लेषण यह है कि समुद्रीय रासायनिक पदार्थ, लहरों की तरंगें तथा जहाज की हलचलें सब मिलाकर इस ज्योति का सृजन करते हैं और उस सूक्ष्म उत्पादन से सब मिलाकर जलयान की मजबूती को बल ही मिलता है ।

कोहरे भरी रातों में आकाशस्थ तारागणों के इर्द-गिर्द एक धुँधली नीली झलक लिए हुए सफेद रोशनी का तेज मण्डल छाया रहता है । कभी-कभी वर्षा ऋतु में चन्द्रमा के चारों ओर भी प्रकाश का एक गोल घेरा दिखाई पड़ता है । इंजीनियर की भाषा में इसे 'कोरोना' कहते हैं । इसका कारण उन प्रकाश पुंज तारकों के उच्च तनाव का विकिरण अवरोध है । जलबिन्दु जब उनके प्रकाश ऊर्जा के क्रमबद्ध विस्तार में अवरोध उत्पन्न करते हैं तो इस प्रकार का चमकदार घेरा बन जाता है ।

ठीक इसी प्रकार मनुष्य के चारों ओर एक तेजोवलय छाया रहता है । इसमें विद्युत कण, चुम्बकत्व, रेडियो विकिरण, चेतनायुक्त ऊर्जा भरी रहती है । इसे यन्त्रों से भी जाना व नापा जा सकता है और समीपवर्ती लोग इसे अपने शरीर और मन पर पड़ने वाले अदृश्य प्रभाव के आधार पर अनुभव कर सकते हैं । कई व्यक्तियों की समीपता अनायास ही बड़ी सुखद, प्रेरणाप्रद और हितकर होती है, कइयों का सान्निध्य अरुचिकर और कष्टकर प्रतीत होता है इसका वैज्ञानिक कारण व्यक्तियों के शरीर से निकलने वाली इस ऊर्जा का पारस्परिक आकर्षण विकर्षण ही होता है । समान प्रकृति के लोगों की ऊर्जा घुलती-मिलती और सहयोग, प्रोत्साहन प्रदान करती है, पर यदि समीपवर्ती व्यक्तियों की प्रकृति में प्रतिकूलता हो तो वह ऊर्जा टकराकर वापिस लौटेगी और घृणा, अरुचि, अप्रसन्नता, खीझ जैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगी ।

मरघट में तान्त्रिक साधनाएँ करने, कापालिकों के मृतकों की खोपड़ी को साफ करने, उससे जल पीने जैसी अघोर क्रियाओं के पीछे मृतकों की अवशिष्ट वलय ऊर्जा का उपयोग करने का सिद्धान्त ही कार्यान्वित होता है । तन्त्र साधना में साधक न केवल अपने ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मनोबल का उपयोग करते हैं वरन् किन्हीं अन्यों के शरीरों की ऊर्जा का दोहन भी करते हैं । पशुबल जैसे घृणित कर्म इसी स्तर का लाभ उठाने के लिए किए जाते हैं ।

मनुष्य की अन्तरंग प्राण शक्ति का बाह्य परिचय उसके तेजोवलय के आकार, विस्तार एवं सघनता एवं चुम्बकीय प्रखरता के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है । सम्वेदनशील व्यक्ति दूसरों के इस बाहर फैले हुए अन्तरंग व्यक्तित्व को आसानी से परख सकते हैं और उसके स्तर का पता लगा सकते हैं । कई बार यह वलय इतना तेजस्वी होता है कि समीपवर्ती क्षेत्र को अपने प्रभाव से भर देता है, इस सीमा में प्रवेश करने वाले व्यक्ति इसी प्रवाह में बहने लगते हैं ।

तपस्वियों के आश्रमों में हिंसक और अहिंसक प्राणी बैर-भाव भूलकर प्रेम-भाव से रहते देखे गए हैं । नेताओं में इस प्रकार की विशेषता प्रायः पायी जाती है । उनका आकर्षण लोगों को प्रभावित, सहमत करता है और अनुयायी बनने के लिए विवश करता है । यदि यह प्रभाव उथला है तो सम्मोहित व्यक्ति थोड़े ही समय में उस प्रभाव से मुक्त होकर पूर्व स्थिति में आ जाते हैं पर यदि उसमें सघनता हुई तो प्रभाव भी स्थायी बना रहता है । यह प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हर क्षेत्र में पाये जाते हैं और साथियों को प्रभावित करते हैं । डाकुओं तक को साथी मिल जाते हैं और सामने आने पर प्रतिरोध करने वालों की घिग्घी बँध जाती है । रूप और सौन्दर्य में शरीर की गति सुकोमल ऊँची रहती है, रुचिर लगती है और उस आकर्षण पर दूसरे अनायास ही मोहित होते हैं । नर्तकियाँ, बार बन्धुओं से लेकर छोटे बालकों की सुकोमलता में ऐसा आकर्षण पाया जाता है जो सम्पर्क में आने वालों का मन बरवस अपनी ओर खीचें । इस आकर्षण के पीछे कोई गहरा कारण नहीं है मात्र तेजोवलय की वह प्रभावशाली शक्ति ही काम करती है जिसके आगे दूसरे अनायास ही झुकते, खिंचते चले जाते हैं । इस मानवी चुम्बकत्व को वैज्ञानिकों की भाषा में 'क्लेयर वाएन्स' कहते हैं ।

तेजोवलय सम्पूर्ण शरीर के इर्द-गिर्द छाया रहता है । पैरों की ओर उसका घेरा कम होता है, क्रमशः वह अधिक चौड़ा होता जाता है और मस्तिष्क तक पहुँचते-पहुँचते उसकी चौड़ाई प्रायः ड्योढ़ी हो जाती है । बेर का फल जैसे नीचे पतला नोंकदार होता है और उसका सिरा मोटा होता है लगभग इसी प्रकार से आस-पास यह प्रकाश पुंज फैला रहता है । इसकी चौड़ाई शरीर से बाहर ३ से ७ फुट तक् की पायी जाती है ।

खगोलवेत्ता जानते हैं कि आकाश में अनेकों तारे ऐसे हैं; जिनका प्रकाश पृथ्वी तक आने में हजारों वर्ष लग जाते हैं । हो सकता है कोई तारा हजारों वर्ष पूर्व मर गया हो पर उसका प्रकाश अपनी चाल से चलता हुआ अब पृथ्वी पर आना आरम्भ हुआ हो और आगे हजारों वर्ष तक चमकता रहे । जबकि उसकी मृत्यु चिरकाल पूर्व ही हों चुकी है । प्रकाश की गति प्रति सेकण्ड १ लाख ८६ हजार मील है । इस चाल से अधिक उसकी दौड़ नहीं पर मनुष्य मन इससे भी अधिक द्रुतगामी है । राकेटों को चन्द्रमा तक पहुँचने में कई दिन लग जाते हैं पर मन तो वहाँ एक क्षण में पहुँच सकता है । यह ध्यान रखने की बात है कि मन मात्र कल्पना ही नहीं है; वरन् इसके साथ चेतनात्मक ऊर्जा जुड़ी हुई हो तो वह प्रकाश की तरह ही एक सशक्त तथ्य बन जाती है और वही कार्य करती है जो अन्तरिक्षव्यापी ताप, चुम्बकत्व जैसी शक्तियाँ काम करती हैं ।

यदि प्रकाश की गति उल्लंघन करके अपनी चेतनात्मक ऊर्जा आगे निकल जाय और वहाँ जा पहुँचे जहाँ अभी हजार वर्ष पूर्व निःसृत हुई प्रकाश तरंगें नहीं पहुँच पायी हैं तो निःसन्देह इस समय की समस्त घटनाएँ इस प्रकार प्रत्यक्ष देखी जा सकती हैं मानो अभी-अभी ही वे घटित हो रही हैं । यदि हमारा शक्तिशाली अचेतन विद्युत संस्थान ध्यान चेतना को इतना सक्षम बनाये कि प्रकाश की गति पिछड़ जाय तो कोई कारण नहीं कि हम चिर अतीत की घटनाओं, व्यक्तियों को देख, समझ न सकें । इतना ही नहीं जो महामानव हजारों लाखों वर्ष पूर्व दिवंगत हो गए उनके अन्तरिक्ष में उड़ते हुए तेजोवलय के साथ सम्बन्ध बना सकते हैं और वह लाभ ले सकते हैं जो उनके पास बैठने या उनका प्रभाव ग्रहण करने से सम्भव हो सकता है । उपरोक्त सफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति श्रीकृष्ण जी के मुख से निकली हुई गीता उसी तरह सुन सकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है जिस तरह अर्जुन ने समीप बैठकर सुनी थी । शुकदेव जी द्वारा परीक्षित को सुनायी गई भागवत को ज्यों का त्यों सुना जा सकता है । वशिष्ठ जी द्वारा राम को सुनायी गई योग वशिष्ठ को अभी भी इसी रूप में श्रवण कर सकना कठिन न रहेगा । राम चरित्र और कृष्ण चरित्र की सारी घटनाएँ यथाक्रम देखी जा सकेंगी । त्रिकालदर्शी ऋषि इस विद्या में पारंगत हो चुके थे और उनके हाथ में बहुत कुछ-सब कुछ जानने की शक्ति थी । इतना ही नहीं वे भावी घटना क्रम की सम्भावनाओं को मोड़ बदल भी सकते थे । इसके प्रमाणों से अनेक शास्त्र पुराण भरे पड़े हैं । वे उपलब्धियाँ भविष्य में भी प्राप्त की जा सकती हैं ।

वर्तमान में विभिन्न स्थानों में घटित हो रहे घटना क्रमों को दिव्यदर्शी व्यक्ति देख या जान सकता है । परस्पर सम्वादों और सन्देशों का विनिमय कर सकता है । इतना ही नहीं अपनी यदि उसके पास कोई प्रेरक एवं उपयोगी क्षमता होगी तो उसे किसी दूसरे के लिए प्रेरित करके उसे लाभान्वित भी कर सकता है, किन्तु इसके लिए तप साधना द्वारा उपार्जित आत्मबल का सम्पादन नितान्त आवश्यक है । हम चाहें तो शरीर, बुद्धि और धन जैसी सम्पदाओं की तरह आत्म-शक्ति की विभूतियाँ भी सम्पादित कर सकते हैं और इसके आधार पर हमारा मानवी चुम्बकत्व-तेजोवलय इतना प्रचण्ड हो सकता है कि व्यक्तियों तथा वस्तुओं को अभीष्ट मात्रा में प्रभावित किया जा सके और अपने आपको हर क्षेत्र में समर्थ सफल सिद्ध किया जा सके ।

मनुष्य में संव्याप्त जैव विद्युत

इस विश्व ब्रह्माण्ड में दो शक्तियाँ संव्याप्त हैं । एक परब्रह्म ब्रह्माण्डीय—चेतना । दूसरी पराशक्ति प्रकृति पदार्थ क्रिया । इन दोनों के ही संयोग से जड़-चेतन जगत की गतिविधियाँ चल रही हैं । सृजन, अभिवर्धन, परिवर्तन की त्रिविध हलचलें इन दोनों के ही सुयोग सम्वर्धन से चलती रहती हैं । इन्हें ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहते हैं ।

प्रकृति और पुरुष के समन्वय से जीव सत्ता उत्पन्न होती है । शरीर प्रकृति है, आत्मा पुरुष । दोनों के समन्वय से जीव बन जाता है । जीव का जीवन प्राण है । प्राण वह चेतना है जो सृष्टि के आरम्भ में प्रकृति पुरुष के समन्वय से उत्पन्न हुई । जीवधारियों में इच्छा के रूप में और पदार्थों की क्रिया-शक्ति के रूप में अपनी गतिविधियाँ सुसंचालित रखने लगीं । प्राण को एक प्रकार की सचेतन विद्युत कहा जा सकता है ।

अचेतन विद्युत पावर, एनर्जी, ताप, प्रकाश, शब्द के रूप में काम करती है और समुद्र की लहरों जैसी हलचलें करती हुई एक से दूसरे को प्रभावित करती हैं । ब्रह्माण्ड में विद्यमान ग्रह-नक्षत्र इसी बल के सहारे अपनी-अपनी कक्षा और धुरी में घूमते हैं । उसी के द्वारा एक-दूसरे से बँधे हुए अधर में लटक रहे हैं । इसे पदार्थगत प्राण कह सकते हैं । यही शरीर की कोशिकाओं और तन्तुओं को परस्पर सम्बद्ध रखता और निरन्तर क्रियाशील बनाये रहता है ।

चेतना का प्राण मन के रूप में है । मन निरन्तर हलचलों से भरा रहता है । उसकी कल्पनाएँ ज्वार-भाटों की तरह उठती रहती हैं । शरीर संचालन में भी उसका भारी योगदान है । मन उदास, खिन्न, उद्विग्न हो तो शरीर की पाचन शक्ति से लेकर निद्रा तक में अस्त-व्यस्तता आ जाती है । कोई प्रसन्नता भरा समाचार मिले तो उत्साह में जरा-जीर्ण शरीर भी उठ खड़ा होता है और आवेश में ऐसा कुछ करने लगता है जैसा शरीर की रुग्णता या जीर्णता की स्थिति में सम्भव नहीं था ।

शरीर का मोटा, मजबूत होना एक बात है और प्राणवान होना दूसरी । मोटे व्यक्ति में प्राण शक्ति की कमी रहे तो वह निष्क्रिय, डरपोक, निराश और शंकाशील रहेगा, किन्तु उसमें प्राण की मात्रा बढ़ी-चढ़ी हो तो साहसी, पराक्रमी, शूरवीर, निर्भय स्वभाव का होगा । उसकी इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति, स्फूर्ति, क्रिया शक्ति बढ़ी-चढ़ी होगी । जो ठानेगा उसमें जुट पड़ेगा और अनेक व्यवधानों को पार करता हुआ सफलता के लक्ष्य तक जा पहुँचेगा ।

प्राण शक्ति मनुष्य के दुर्बल शरीर को भी ओजस्-तेजस्-वर्चस् से भर देती है और क्षीण काय-कलेवर से भी आश्चर्यजनक कार्य करा लेती है । गाँधी जी ९२ पौण्ड के और पाँच फुट दो इंच ऊँचे थे । देखने और तोलने में वे चौदह वर्ष के लड़के जैसे लगते थे, पर उनके प्राण का प्रवाह ऐसा था जिससे ब्रिटिश सरकार जैसी समर्थ सत्ता काँपती थी । जिसकी उँगली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के इशारे पर हजारों सत्याग्रही जान निछावर करते थे ।

प्राण इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र संव्याप्त है । वह मनुष्य के साथ संकल्प बल के सहारे जुड़ता है । शरीर में उसका प्रवेश वायु के साथ होता है । विज्ञानी ऑक्सीजन को प्राण कहते थे और सोचते थे कि रक्त उसी के कारण शुद्ध रहता है और वही जीवनी शक्ति है, पर जब यह सोचा गया कि साँस में ऑक्सीजन घुली रहने और फेफड़े ठीक काम करने पर भी मनुष्य मर क्यों जाता है तो समझ में आया कि प्राण और ऑक्सीजन दो पृथक वस्तुएँ हैं । प्राण के निकल जाने पर शरीर में ऑक्सीजन सिलेण्डरों के माध्यम से साँस पहुँचाई जाती रहे तो भी उसे जीवित नहीं किया जा सकता ।

इतने पर भी गहरी साँस का अपना महत्त्व है । ऑक्सीजन जीवनी शक्ति बढ़ाती है, रक्त को शुद्ध करती है, तापमान बनाये रखती है आदि बातें सही हैं । इसलिए यह भी सही है कि मनुष्य को गहरी साँस लेने की आदत डालनी चाहिए । फेफड़ों को पूरी तरह हवा से भरना चाहिए और उन्हें पूरी तरह खाली करना चाहिए । इस प्रकार फेफड़ों में एक बार में २०० सी. सी. तक हवा शरीर में भरी जा सकती है और उसमें समाविष्ट ऑक्सीजन का लाभ उठाया जा सकता है, किन्तु देखा गया है कि लोग आलस्य वश उथली साँस लेते हैं और एक बार में प्रायः ५०० सी. सी. ही हवा भीतर ले जा पाते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि फेफड़ों का मध्य भाग ही क्रियाशील रहता है और इर्द-गिर्द के कोष्ठक निष्क्रिय पड़े रहते हैं, जिसमें क्षय आदि के जीवाणु-विषाणु आसानी से टिक जाते हैं और वंश वृद्धि करते हुए जीवन के लिए संकट बन जाते हैं ।

कुछ दिन पूर्व तक भारतीय योग पद्धति के महत्त्वपूर्ण अंश प्राणायाम का लाभ 'डीप ब्रीदिंग' के आधार पर माना जाता था और जो लाभ मिलते थे उन्हें गहरी साँस लेने का प्रतिफल माना जाता था ।

पर अब समझा जाने लगा है कि प्राण एक जीवन्त विद्युत है, जो शरीर से भी अधिक मनःक्षेत्र को प्रभावित करती है । मनुष्य को साहसी, पराक्रमी, तेजस्वी और स्फूर्तिवान बनाती है । इस उपलब्धि को यदि समुचित मात्रा में हस्तगत किया जा सके तो सामान्य दीखने वाला मनुष्य भी अपनी असाधारण विशिष्टता का परिचय दे सकता है ।

शरीर और मस्तिष्क में बिजली के असाधारण आवेश पाये गए हैं । वे ही मस्तिष्कीय घटकों और शारीरिक जीवकोशों में अभिनव ऊर्जा का संचार करते और मनुष्य को उत्साहित रखते हैं । उत्साहित ही नहीं, प्रसन्न और क्रियाशील भी, साहसी एवं उमंगों से भरा हुआ भी ।

यह विद्युत शक्ति ऑक्सीजन से सर्वथा भिन्न है । वह अनन्त आकाश से मस्तिष्कीय केन्द्र संस्थानों द्वारा अवतरित, आकर्षित होती है । इसे खींचने में मन को गंगावतरण के लिए किए गए भागीरथी तप की भाँति निरत होना पड़ता है ।

प्राणायाम माध्यम सही है पर यदि उसके साथ श्रद्धा विश्वास का पुट न होगा तो साँस भर का लाभ मिलेगा । प्राण का अभिनव आविर्भाव न हो सकेगा ।

मनुष्य शरीर में बिजली का कितना भण्डार है इसकी नाप-तोल अब होने लगी है । देखा गया है कि उससे ६० वाट का बल्ब तक जल सकता है । समस्त शरीर में संव्याप्त और कार्यरत बिजली का यदि पूरा आंकलन किया जा सके तो प्रतीत होगा कि व्यक्ति चलते-फिरते जनरेटर के रूप में गतिशील रहता है । अभी अमेरिका में ऐसे २० से अधिक मनुष्य जीवित हैं, जिनका शरीर झटके देता है । वस्तुओं को इधर-उधर उठक-पटक कर देता है । कई व्यक्ति इस भीतरी विद्युत के उबल पड़ने पर अकारण ही जलकर भस्म हो चुके हैं । इससे हर मनुष्य में जैव विद्युत की एक अच्छी खासी मात्रा होने की सम्भावना देखी जा रही है और यह सोचा जा रहा है कि उसको बढ़ाने या लाभ उठाने का तरीका क्या हो सकता है ?

मनुष्य की सशक्त प्राण-ऊर्जा

आर्थिक आदान-प्रदान—शरीरगत सेवा सहयोग के सहारे परस्पर एक-दूसरे की सहायता करने, मैत्री विकसित करने एवं सद्भावना उपलब्ध करने के अनेकानेक प्रमाण सामान्य जीवन में आये दिने मिलते रहते हैं । छोटे और बड़ों में, मित्र-मित्र में, कई कारणों से, कई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार के आदान-प्रदानों का सिलसिला चलता रहता है ।

ऊँचे स्तर पर मनुष्य की एक विशेष क्षमता है—प्राण । यह एक प्रकार की जीवन्त विद्युत है । जीवन एवं व्यक्तित्व इसी की न्यूनाधिकता में गिरता-उठता रहता है । प्राण की सीमित मात्रा सभी प्राणधारियों को समान रूप से उपलब्ध है । वे शरीर यात्रा के आवश्यक साधन इसी के सहारे जुटाते हैं और यथोचित पुरुषार्थ एवं कौशल विकसित करने में सफल रहते हैं । प्राण ऐसा तत्व है जो हवा की तरह भीतर भी भरा है और समस्त ब्रह्माण्ड में भी संव्याप्त है । उसकी अतिरिक्त मात्रा प्राणायाम प्राणाकर्षण विधान जैसे उपायों के सहारे अर्जित भी की जा सकती है ।

प्राण अपनी सर्वतोन्मुखी समर्थता के लिए तो आवश्यक है । उसका प्रयोग उपचार दूसरों के हित अनहित के लिए भी किया जा सकता है । योग माध्यम से प्राणोचार का प्रयोग प्रायः सदुद्देश्यों के लिए ही होता है, किन्तु तान्त्रिक अभिचार से इसे दूसरों को परास्त करने के लिए प्रहार रूप मे भी किया जाता है । शक्ति, शक्ति ही रहेगी । उसका उपयोग किसने, किस प्रकार किया यह दूसरी बात है । प्राण मानवी सत्ता की सबसे बड़ी शक्ति है । उसका उपयोग पग-पग पर होता है । जीवन-मरण के लिए, समर्थता-दुर्बलता के लिए, कायरता-साहसिकता के लिए अवसाद और पराक्रम के लिए प्राण शक्ति की न्यूनाधिकता एवं उत्कृष्टता-निकृष्टता ही आधारभूत कारण होता है । बाहरी उपचारों से तो तनिक-सा ही सुधार परिवर्तन सम्भव होता है ।

विचार दूर-दूर तक जा सकते हैं । उन्हें पत्रों, लेखों तथा टेप, टेलीफोन आदि के माध्यम से अन्यत्र भी भेजा जा सकता है, किन्तु प्राण में यह कमी है कि वह एक सीमित क्षेत्र में ही रहता है । उनका कहने लायक प्रयोग समीपवर्ती परिधि में ही हो सकता है । जैसे-जैसे दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे ही प्राण प्रभाव का क्षेत्र झीना होता जाता है । किन्हीं महाप्राणों की बात दूसरी है जो अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र को, उसमें रहने वाले समुदाय को अनुप्राणित करें, किन्तु सामान्यतया यह सचेतन ऊर्जा जलती आग की तरह निकटवर्ती को ही अधिक प्रभावित करती है । आग से दूर हटते जाने पर उसकी रोशनी भले ही दीखे पर गर्मी में तो निश्चित रूप से कमी ही होती जायेगी । प्राण की प्रकृति भी यही है ।

ऋषि आश्रमों में गाय और सिंह निर्भय होकर एक घाट पानी पीते थे, किन्तु उस प्रभाव परिधि से बाहर निकल जाने पर फिर वे 'आक्रामक आक्रान्त' की रीति-नीति अपनाने लगते हैं । इसे प्राण शक्ति का सम्मोहन ही कहना चाहिए ।

सान्निध्य का प्रभाव क्या पड़ता है इसका सामान्य परिणाम सत्संग और कुसंग के भले-बुरे रूप में देखा जाता है । समर्थों की निकटता, असमर्थों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती । चोर, जुआरी, लम्पट, मद्य-व्यसनी, दुर्गुणी सम्पर्क में आने वालों को अपना छूत लगा देते हैं । यह कुसंग हुआ । सज्जनों की, प्राणवान महामानवों की निकटता भर के सहचरों से उन गुणों का एक महत्त्वपूर्ण अंश अनायास ही हस्तान्तरित होता है । इसलिए अधिक समय के लिए सम्भव न होने पर भी महामानवों के निकट तक पहुँचाने का किसी न किसी बहाने कुछ न कुछ प्रयत्न करते रहते हैं ।

दर्शन, प्रणाम, चरण स्पर्श, पैर दबाना आदि से महाप्राणों को भले ही कोई लाभ न मिले पर दुर्बल प्राण उस तनिक से सुयोग तक का लाभ उठा लेते हैं । अधिक घनिष्ठता की तो बात ही क्या ? जो पक्ष प्रबल होगा वह दूसरों को अपनी भली-बुरी विशेषताओं से प्रभावित करेगा ।

दाम्पत्य जीवन में यह चमत्कार विशेष रूप से दृष्टिगोचर होते हैं । महात्मा गाँधी का इसी स्तर का अनुदान उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा को मिला था । रामकृष्ण परमहंस की पत्नी माता शारदामणि जो निजी स्तर पर उतनी ऊँची नहीं थीं पर उन्हें अपने पति का न केवल यश, श्रेय वरन् प्राण भी समुचित मात्रा में उपलब्ध हुआ था । ऋषियों की तरह ऋषिकाएँ भी प्रायः उसी स्तर की प्रखरता अपने में धारण किए होती थीं, भले ही उनकी विद्या, तपश्चर्या या प्रतिभा निजी रूप से उतनी बढ़ी-चढ़ी न रही हो । सप्त ऋषि मण्डली में वशिष्ठ के समान ही अरुन्धता को भी समतुल्य पद मिला था । नारी और नर के मध्य विद्युत संचार की एक प्रकृति प्रदत्त विशेष आकर्षण शक्ति काम करती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । आवश्यक नहीं कि पति-पत्नी के रूप में ही हस्तान्तरित हो, वह अन्य रिश्तों से सरलतापूर्वक अग्रगामी होती है । योगी अरविन्द और प्रातः स्मरणीय माताजी की घनिष्ठता लौकिक नहीं आध्यात्म स्तर की ही थी । विवेकानन्द और निवेदिता के रिश्ते भी ऐसे ही थे । मनु की पुत्री इला उन दिनों अपने पिता के दाहिने हाथ का काम करती थी । इनके मध्य भी नेहरू और इन्द्रा जैसी निकटवर्ती आत्मीयता थी । इन उदाहरण में सरदार पटेल और उनकी पुत्री मणिवेन का नाम भी गिनाया जा सकता है । गाँधीजी के आश्रम में उनकी साज-सँभाल करने वाली महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक नफे में रही थीं ।

नर और नारी की प्रकृति संरचना का ही ऊपर की पंक्तियों में उल्लेख हुआ तो इसका अर्थ यह नहीं कि नर और नर के, नारी और नारी के बीच, वैध प्रत्यावर्त्तन हो नहीं सकता या उसमें कुछ विशेष अड़चन पड़ती है । रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द, विरजा और दयानन्द, कृष्ण और अर्जुन जैसों की निकटवर्ती घनिष्ठता अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी सिद्ध हुई थी । इस विचार प्रभाव को भी अधिक प्राण प्रत्यावर्त्तन कहना चाहिए ।

इस प्राण प्रवाह को ही कुण्डलिनी के नाम से जाना जाता है । उसे प्रचण्ड बनाने का विशेष उपक्रम एवं विधान है । शक्तिपात द्वारा बड़े रूप में और चिकित्सा उपचार की तरह छोटे रूप में इस क्षमता का लाभ एक के द्वारा दूसरे को दिए जाने का प्रावधान है ।

स्थूल शरीर से परे मनुष्य के सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व अब विज्ञान द्वारा भी प्रामाणित होने लगा है । सन् १९६३ से अब तक रूस के वैज्ञानिकों ने इस दिशा में कई सफल प्रयोग किए हैं । वहाँ के एक इलेक्ट्रॉन विशेषज्ञ सेमयोन किर्लियान ने अपनी वैज्ञानिक पत्नी बैलिण्टाना के सहयोग से फोटोग्राफी की एक विशिष्ट प्रविधि का आविष्कार किया । इस विधि द्वारा सजीव प्राणियों के आस-पास होने वाले सूक्ष्म कम्पनों और देह-ऊर्जा के क्रिया-कलापों का छायांकन किया जा सकता है ।

इन छायाचित्रों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्रत्येक प्राणी के दो शरीर होते हैं । पहला प्राकृतिक अथवा भौतिक जो आँखों से दिखाई देता है और दूसरा सूक्ष्म शरीर जिसकी सब विशेषताएँ प्राकृतिक शरीर जैसी होती हैं, पर जो दिखाई नहीं देता । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह सूक्ष्म शरीर ऐसे पदार्थों का बना होता है जिनके इलेक्ट्रॉन ठोस शरीर के इलेक्ट्रॉनों की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से चलायमान होते हैं । उनके अनुसार सूक्ष्म शरीर भौतिक शरीर से अलग होकर कहीं भी विचरण कर सकता है ।

'द बायोलॉजिकल प्लाज्मा बॉडी' का अध्ययन करते हुए वैज्ञानिकों ने उसके तत्वों का भी विश्लेषण किया है । बायोप्लाज्मा की संरचना और कार्य विधि का अध्ययन करने के लिए सोवियत वैज्ञानिकों ने कई प्रयोग किए और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बायोप्लाज्मा का मूल स्थान मस्तिष्क है और यह तत्व मस्तिष्क में ही सर्वाधिक सघन अवस्था में पाया जाता है तथा सुषुम्ना नाड़ी और स्नायुविक कोशाओं में सर्वाधिक सक्रिय रहता है ।

शास्त्रकार ने इस शरीर की तुलना एक ऐसे वृक्ष से की है जिसकी जड़ें ऊपर और शाखाएँ नीचे की ओर हैं । जिस प्राण ऊर्जा के अस्तित्व को वैज्ञानिकों ने अनुभव किया वह आत्मचेतना नहीं है बल्कि सूक्ष्म शरीर के स्तर की ही शक्ति है जिसे मनुष्य शरीर की विद्युतीय ऊर्जा भी कहा जाता है । यह ऊर्जा प्रत्येक जीवधारी के शरीर में विद्यमान रहती है ।

मनुष्य शरीर पदार्थ का समुच्चय है उसका मूल स्वरूप ऊर्जामय है । शरीर के इर्द-गिर्द फैला रहने वाला तेजोवलय तथा विचार तरंगों के रूप में आकाश को आच्छादित किए रहने वाला चेतन प्रवाह अपने-अपने स्तर की ऊर्जा का परिचय देते हैं । चूँकि पदार्थ कभी मरता नहीं इसलिए यह मनुष्य की आत्मा न सही, शरीर या पदार्थ भर माना जाय तो भी यह कहा जा सकता है कि मृत्यु के उपरान्त भी ऊर्जा बनी रहती है जिसे आध्यात्म की भाषा में प्राण कहा जाता है ।

विश्व प्रसिद्ध अमेरिकी डॉ. पेनफील्ड ने मस्तिष्क के अग्रभाग में लगभग ढाई वर्ग इंच लम्बे १/१० इंच मोटे एक ऐसे क्षेत्र का पता आज से वर्षों पूर्व लगाया था जहाँ दो काली पट्टियाँ हैं जिन्हें टेम्पोरल कारटेक्स कहा जाता है । ये कनपटी के नीचे मस्तिष्क को चारों ओर छल्लानुमा घेरे हुए हैं । यही वे पट्टियाँ हैं जहाँ मानसिक विद्युत का प्रवेश होते ही अच्छी-बुरी स्मृतियाँ उभरती हैं । इसी में स्मृतियों के भण्डार भरे पड़े हैं, यदि इनमें विद्युत आवेश प्रवाहित किया जाय तो इतनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सी पट्टी ही उस व्यक्ति के ज्ञात-अज्ञात सारे रहस्यों को उगल सकती है । जिसे भयवश, लोक-लज्जा अथवा संकोचवश मनुष्य व्यक्त नहीं कर पाता, जो जन्म-जन्मान्तरों से संस्कार रूप में मनुष्य के साथ संचित बने रहते हैं ।

यह पट्टियाँ किसी केन्द्रक तत्व (न्यूक्लिक एलीमेंट) से बनी होती हैं । जब इनमें लहरें उठती हैं तो इनसे प्रभावित नलिका विहीन अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से एक प्रकार के हार्मोन्स निकलते हैं जो क्रोध, घृणा, कामवासना, भय, ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम, दया, करुणा, उदारता, सहिष्णुता आदि भावों के जनक कहे जाते हैं । हार्मोन्स के कारण ही मनुष्य स्वस्थ या रोगी बनता है । यदि अच्छे गुण होते हैं तो अच्छे हार्मोन्स और बुरे गुण बुरे हार्मोन्स का द्योतक है । अच्छे हार्मोन्स का निःश्त्रवण, स्निग्धता, हल्कापन, प्रसन्नता, प्रफुल्लता अच्छे विचार उत्पन्न करता है । बुरे हार्मोन्स ठीक इसके विपरीत प्रभाव दिखाते हैं ।

उदाहरण के लिए डॉ. पेनफील्ड ने एक व्यक्ति की इस काली पट्टी में विद्युत प्रवाहित की तो वह एक गीत गुनगुनाने लगा जो न तो अमेरिकन था न जर्मनी, उपस्थित कोई भी व्यक्ति उसे समझ न सका । उस गीत को टेप कर लिया गया और भाषा शास्त्रियों की मदद ली गई तो पता चला कि वह भाषा किसी आदिवासी क्षेत्र की थी और वह गाना सचमुच ही उस क्षेत्र के लोग गाया करते हैं ।

इस प्राण ऊर्जा को सम्वर्धन किया जाय, उसे खिलवाड़ में न बखेरा जाय अभी उससे कोई महत्त्वपूर्ण काम लिया जाय इसी में बुद्धिमत्ता है ।

वर्चस की सिद्धि एवं युग समस्याओं का समाधान

मनुष्य समाज में विविध प्रकार के मनुष्यों के बीच रहता है और पारस्परिक सम्पर्क से उसकी जीवन यात्रा सहज रूप में चलती रहती है । सान्निध्य सम्पर्क में कभी-कभी ऐसे व्यक्ति आ जाते हैं जिनके प्रति अत्यधिक आकर्षण की अनुभूति होती है । कभी-कभी कुछ व्यक्तियों के समीप आकर लगता है, इनसे जितना दूर रहा जा सके, उतना ही हित साधन होगा । एक ही प्रजाति के, पर भिन्न रंग, रूपों, बनावट वाले व्यक्तियों के प्रति ये द्विधर्मी प्रतिक्रियाएँ क्यों होती हैं, इस सन्दर्भ में वैज्ञानिकों का कहना है कि पदार्थों की तरह चेतना का भी अपना प्रभाव क्षेत्र होता है । यह आभा-मण्डल के रूप में सूक्ष्मीकृत कणों से विनिर्मित कवच की तरह काया के चारों ओर संव्याप्त रहंता है । विचारणा एवं भावना के स्तर के अनुरूप इस आभा-मण्डल में आकर्षण-विकर्षण के गुण धर्म आ जाते हैं । मनःस्थिति का, अन्तरंग का जो छायाचित्र मानवी काया के आस-पास बनता है, उसे सूक्ष्मदर्शी ब्रह्मवेत्ता समझ पाने में भली-भाँति सक्षम होते हैं ।

आध्यात्मविदों का मत है कि चेतना का सूक्ष्मीकरण प्रत्यक्षतः यदि देखना हो तो उसे मानवी जैव चुम्बकत्व के कारण बनने वाले आभा-मण्डल में देखा जा सकता है । जिस स्तर की जीव चेतना होगी, जितना ही उसमें श्रेष्ठता, उच्चस्तरीय भाव सम्वेदनाओं का समावेश होगा, उतना ही प्रकाशवान, विस्तृत किरण मण्डल, ऑरा या तेजोवलय के रूप में मनुष्य के चारों ओर संव्याप्त देखा जा सकेगा ।

देवताओं के चित्रों के चारों ओर प्रकाश-मण्डल चित्रित किया जाता है । विशेषतः चेहरे के आस-पास एक गोला प्रतीक रूप में बनाया जाता है जो बताता है कि देव-स्तर जो भी प्राप्त कर लेता है, इसका जैव-चुम्बकत्व उतना ही प्रबल-सघन होता है । ज्ञानेन्द्रियों का जमघट तथा मस्तिष्क का विद्युत भण्डार एक ही जगह है इसीलिए प्रतीक रूप में चेहरे को ही तेजोवलय के प्रत्यक्षीकरण हेतु प्रधानता दी जाती रही है । जो बात देवताओं पर लागू होती है, वही मनुष्यों पर भी लागू होती है । जो नर, पशु स्तर त्यागकर देव मानवों जैसे गुणों से अभिपूरित होता है, उसकी प्रभाव सामर्थ्य भी वैसी हो जाती है ।

मानव का यह जैव चुम्बकत्व जो सूक्ष्म प्रकाश मण्डल के रूप में अव्यवस्थित होता है, साधना क्षेत्र में तेजोवलय—ओजस के रूप में जाना जाता है । थियॉसाफी वाले इसे "ईथरीक डबल" कहते हैं एवं प्लाज्मा से विनिर्मित मानते हैं । शरीर की विद्युत सम्पदा यों तो पूरे शरीर से निःसृत होती रहती है, परन्तु चेहरे, आँखों, उँगलियों एवं जननेन्द्रियों के आस-पास इसकी मात्रा सर्वाधिक होती है । मानव की सूक्ष्मकृत ऊर्जा की यह एक महत्त्वपूर्ण झाँकी है जिसके माध्यम से साधक की मनःस्थिति, रोगी होने की भावी सम्भावनाओं एवं भाव सम्वेदनाओं की गहराई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को पढ़ा जा सकता है । समीपवर्ती वातावरण एवं साथी सहचर तेजोवलय के स्तर के अनुरूप ही प्रभावित होते देखे जाते हैं । कई बार यह वलय इतना प्रखर तेजस्वी होता है कि समीपवर्ती क्षेत्र को अपने प्रभाव से अनुप्राणित कर देता है । उस परिधि में प्रवेश करने वाले व्यक्ति भी उस प्रवाह में बहते देखे जाते हैं । ऋषि-तपस्वियों के आश्रम में सिंह-गाय का एक साथ पानी पीने का सतयुगी उदाहरण इसी तथ्य की पुष्टि करता है ।

विज्ञान क्षेत्र में पिछले दिनों 'ह्यूमन ऑरा' के माप हेतु किर्लियन एवं शेर्लियन फोटोग्राफी के प्रयोगों के उपरान्त सूक्ष्म आभा-मण्डल सम्बन्धी एक नयी विद्या विकसित हो गई है, जिसे 'एरोबायोलॉजी' नाम दिया गया है । वैज्ञानिकों के अनुसार सामान्य अवस्था में मनुष्य के कन्धे से ६ फुट ऊपर तक चारों ओर घेरे एक अण्डाकार गोला होता है जिसे "प्लम" कहते हैं । विशेष फिल्टर्स युक्त कैमरों के माध्यम से इन आँखों से न देखे जा सकने वाले इस प्रकाश मण्डल का अंकन किया जा सकता है एवं इसका विश्लेषण कर यह जाना जा सकता है कि उस समय विशेष में व्यक्ति की मनःस्थिति कैसी है एवं भावनाओं का स्तर क्या है ? शरीर की ऊष्मा के इस विकिरण का मापन वैज्ञानिक तो रोग निदान, शल्य क्रिया में सफलता की सम्भावनाएँ एवं मनोशारीरिक विश्लेषण हेतु करते हैं किन्तु आध्यात्म वेत्ता इसका विश्लेषण कर अन्तः की भाषा पढ़ लेते हैं एवं व्यक्ति के विधेयात्मक, निषेधात्मक प्रवाहों के अनुरूप परामर्श-साधना मार्गदर्शन दे पाने में भी समर्थ होते हैं ।

एकोबायोलॉजी की इस विद्या को सबसे पहले ब्रिटिश दार्शनिक डॉ. हैरोल्ड लेविस ने खोजा । एक एकोनॉटिक रिसर्च सेण्टर में हवाई जहाज के आर-पार बहने वाली हवा का शेर्लियन फोटोग्राफी के माध्यम से विश्लेषण चल रहा था । संयोग से वे भी वहीं उपस्थित थे । प्रदर्शन के दौरान एक कर्मचारी का हाथ कैमरे के सामने आने से फिल्म में हाथ की काली छाया के चारों ओर धुएँ के समान भूरे रंग के छल्ले दिखाई दिए । चूँकि इस फोटोग्राफी में उच्च वोल्टेज के ऊर्जा स्रोत का प्रयोग नहीं किया जाता । अतः हानि की प्रत्यक्ष सम्भावना न देख उन्होंने चेहरे व शरीर का भी इस माध्यम से फोटोग्राफ लिया । तभी से उनके शोध प्रयास इस दिशा में आगे बढ़ते चले गए एवं अन्ततः वे आभा-मण्डल का छायांकन कर उसका विश्लेषण करने में सफल हो गए ।

वैसे आज से साठ वर्ष पूर्व एशिया के उतक मनोनिक एलेक्जेण्डर गुरविच ने यह मत व्यक्त किया था कि सभी जीवित कोशिकाएँ एक अदृश्य विकिरण ऊर्जा अपने चारों ओर छोड़ती हैं । इसे उन्होंने माइटोजेनिक रेडिएशन नाम दिया था । रूस में ही नोवोसी वर्स्क की साइबेरियन साइन्स सिटी के तीन वैज्ञानिकों ने १९६८-६९ में गुरविच के प्रयोगों को दुहराकर इस सिद्धान्त को पुनर्जीवित किया एवं कुछ तथ्य प्रतिपादित किए । ब्लायल काज्नाचेयेव, साइमन शूरीन एवं लुडमिला मिखाइलोवा नामक इन तीनों वैज्ञानिकों ने कहा कि हर जीवकोश विद्युत चुम्बकीय धाराओं के रूप में सिग्नल्स बाहर भेजने में समर्थ होता है जो अल्ट्रा वायलेट तरंग दैर्ध्य स्तर की होती हैं । कुछ वर्षों बाद मास्को यूनिवर्सिटी के बायोफिजिक्स विभाग के प्रमुख डॉ. बोरिस तार्सोव ने अपने प्रयोगों में पाया कि शरीर की चयापचयिक गतिविधियों के अतिरिक्त जैव रासायनिक परिवर्तनों को भी इस विधि से मापा जा सकता है ।

जीवन के इलेक्ट्रो डायनेमिक सिद्धान्त के प्रवर्त्तक माने जाने वाले येल यूनिवर्सिटी के डॉ. हैरॉल्ड बर एवं लियोनार्ड रैबिट्ज ने १९७० के दशक में एक महत्त्वपूर्ण खोज इस दिशा में की । उन्होंने शरीर के चारों ओर के विकिरण को एल. फील्ड (लाइफ फील्ड) नाम दिया है और कहा है कि यह न केवल अर्न्तस्थिति के मीटर के रूप में काम करती है अपितु जीवित प्रोटोप्लाज्म की वृद्धि एवं रोगी कोशिकाओं की मरम्मत आदि में भी अपनी भूमिका निभाती है । उन्होंने कहा है कि मनुष्य के चारों ओर की यह एल. फील्ड पृथ्वी के जैव चुम्बकत्व, ग्रह-नक्षत्रों के आकर्षण-विकर्षण, बल एवं सौर स्फोट गतिविधियों से भी प्रभावित होती है । मनोरोगियों में, अपराधी वृत्ति वालों में एवं श्रेष्ठ कार्य करने वाले सदा व्यस्त व्यक्तियों में यह एल. फील्ड भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है । इसके माध्यम से व्यक्ति के अन्तःक्षेत्र को बहिरंग जीवन में खोलकर देखा जा सकता है एवं वास्तविकता की जानकारी ली जा सकती है । इसके अलावा हाई वोल्टेज फोटोग्राफी का प्रयोग कर विकिरण का खतरा उठाते हुए प्रभा-मण्डल का मापन सम्भव है । इसमें किर्लियन फोटोग्राफी, इलेक्ट्रोग्राफी, रेडिएशन फील्ड फोटोग्राफी एवं कोरोना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डिस्चार्ज फोटोग्राफी आते हैं । इनके प्रवक्ताओं का मत है कि बीमारी होने से काफी पूर्व इस फोटोग्राफी द्वारा यह जाना जा सकता है कि इसकी सम्भावनाएँ कितने प्रतिशत हैं । मद्धिम, धुँधले, प्रकाशवान ऑरा के मापन द्वारा उनका वर्गीकरण भी भली-भाँति सम्भव है । कौन निषेधात्मक प्रवृत्ति का है एवं नैराश्य का शिकार होकर आत्महन्ता स्थिति का रोगी बनेगा एवं कौन विधेयात्मक चिन्तन के सहारे अपनी जीवनी शक्ति का आश्रय लेते हुए मनोबल के सहारे अपनी नाव खे ले जायेगा, यह पूर्वानुमान भी ऑरा के इस विश्लेषण द्वारा सम्भव है।

वैज्ञानिकों द्वारा कायिक ऊर्जा—"आर्गेन एनर्जी" सम्बन्धी किया गया यह सारा शोध जंजाल एक बिन्दु विशेष पर तथ्यान्वेषियों को ले जाता है । वह यह है कि हर व्यक्ति ऊर्जा का अक्षय भाण्डागार है । वह निरर्थक चिन्तन अथवा कामोपभोग में नष्ट होती रहती है, किन्तु जब इसका रूपान्तरण किया जाता है तो कायिक आण्विक संरचना विघटन के स्थान पर नियोजन में परिवर्तित हो व्यक्ति को ओजस्-वर्चस सम्पन्न बना देती है । विद्युत्शरीर सक्रिय हो जाता है एवं जैव चुम्बकत्व का विकिरण शरीर के चारों ओर प्रखर तेजयुक्त घेरा बनाकर एक आभा-मण्डल बना देता है जिसकी चेतना जितनी सूक्ष्म होती है, वलयाकार में बना घेरा उतना ही प्रकाशवान होता है । अन्तः का भाव-मण्डल ही आभा-मण्डल का निर्माण करता है । साधना पराक्रम द्वारा इस भाव-मण्डल को ही प्रखर शक्तिशाली बनाया जाता है । इस माध्यम से वे सभी मानवेतर पुरुषार्थ सम्पन्न किए जा सकते हैं जो सामान्य व्यक्ति के लिए असम्भव माने जाते हैं । जैन मत के प्रतिपादक, तीर्थंकर महावीर ने इसी आधार पर लेश्या के सिद्धान्त को जन्म दिया था जिसका पूरा ढाँचा ही पुद्गल (सूक्ष्माणु), प्राण ऊर्जा एवं भाव-मण्डल पर आधारित है ।

वैज्ञानिकों के प्रयास कायिक ऊर्जा के स्रोतों का पता लगाने एवं उसे मापने की दिशा में रुके नहीं हैं । नार्वे के डॉ. लेड रीच ने पहली बार अपने "आयन एकुमुलेटर" यन्त्र में मात्र दो-तीन छोटे उपकरण जुटाकर जब मानवी काया से निःसृत पीले रंग की तेज रोशनी को पकड़ा, अंकित किया, तभी से उनके प्रयास इस दिशा में सतत चल रहे हैं । रूस के युवा वैज्ञानिक, विक्टर इन्युशिन ने इस "आर्गेन एनर्जी" को टोबी स्कोप यन्त्र के द्वारा पहली बार मापा था एवं त्वचा प्रतिरोध तथा शेर्लियन फोटोग्राफी के माध्यम से बायोप्लाज्मा के विकिरण को ही अंकित कर यह प्रतिपादित किया था कि जीवकोशों की विद्युत का समुच्चय ही बाहर प्रतिबिम्बित होता है । जापान के इन्स्टीट्यूट ऑफ रिलीजीयस फिलॉसाफी एवं साइकोलॉजी के निदेशक डॉ. हिरोशी मोटीयामा ने एक्यूपक्चर सिद्धान्त पर ही 'साय' एवं 'की' एनर्जी का प्रतिपादन किया तथा एक विशेष यन्त्र इलेक्ट्रोमीटर के माध्यम से उँगलियों के पोरों, चेहरे तथा होठों पर विशिष्ट विद्युत्प्रवाह को मापा है । इसी की अल्पाधिक मात्रा के आधार पर वे ओजस् का शरीर में संचय एवं काया से उसका निःसृत होना मानते हैं । उन्होंने पाया कि शरीर में विभिन्न मेरीडियन से प्रवाहित धारा प्रवाह भिन्न-भिन्न होता है । जब भी इसमें व्यतिरेक आता है, रुग्णता की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं । वे कहते हैं कि बायोप्लाज्मा के रूप में आर्गेन एनर्जी ही प्रवाहित होती है एवं यही विशेष फोटोग्राफी द्वारा 'ऑरा' के रूप में तथा अन्य विशेष यन्त्रों से विद्युत उद्भव के रूप में मापी जाती है ।

विद्युत्प्रवाह के अतिरिक्त एरोबायोलॉजी में वैज्ञानिकों ने थर्मोविजन कैमरे के माध्यम से शरीर से निःसृत ऊष्मा को भी मापा है एवं पाया है कि ताप ऊर्जा भी चमकदार रंग मिश्रित प्रवाह के रूप में काया के ऊर्ध्व केन्द्र मस्तिष्क से निःसृत होती है । "मेडीकल फिजिक्स" पुस्तक में बायोफिजीसिस्ट डॉ. क्लार्क ने थर्मोग्राफी के माध्यम से ऊष्मा विकिरण को मापने का एक सफल प्रयास किया है । इस पद्धति के आधार पर शरीर में विद्यमान ऊर्जा, किसी प्रकार की न्यूनता एवं बायोफीड बैक द्वारा उसकी पूर्ति की व्यवस्था का एक समग्र तन्त्र स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में बनाया गया है ।

व्यवहार विज्ञान के विशारद ऊष्मा मापन एवं जैव चुम्बकत्व मापन का विश्लेषण कुछ अलग ढंग से करते हैं । वे कहते हैं कि जैसे लोहे का चुम्बक या विद्युत द्वारा उत्पन्न किया गया चुम्बकीय बल आकर्षण-विकर्षण करता है वैसे ही ये आकर्षण-विकर्षण की प्रतिक्रियाएँ होती हों, ऐसी बात नहीं है । यह तो मात्र एकांगी स्थूल पक्ष है जो भौतिकी का प्राथमिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी जानता है । उनके अनुसार मानवी तेजोवलय का विद्युत्मण्डल अति सूक्ष्म स्तर का होता है एवं इसका प्रभाव क्षेत्र समीपस्थ एवं सम्बन्धित व्यक्तियों पर ही नहीं, एक व्यापक क्षेत्र पर पड़ता है । जितना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी कुछ मापा जा सका है वह तो उसकी एक झलक झाँकी भर है । जो शेष है, वह असीम सामर्थ्य सम्पन्न है, प्रसुप्त स्थिति में पड़ा रहता है ।

आध्यात्म वेत्ता इस मत से सम्मति व्यक्त करते हुए कहते हैं कि साधना की, सूक्ष्मीकरण की तप साधना की प्रतिक्रिया ओजस्, तेजस, वर्चस की वृद्धि के रूप में होती है । ऐसे ऋषि कल्प महामानव गिने-चुने होते हैं लेकिन उनके मौन होते हुए भी दृष्टिपात का, वाणी के द्वारा सत्परामर्श सत्संग का लाभ एक विशाल समुदाय को मिलता है । ओजस् के क्षेत्र को रोकने के लिए वे तप-पुरुषार्थ हेतु एकाकी मौन साधना का अवलम्बन लेते हैं । जो भी इस सम्पर्क सान्निध्य की लपेट में आता है, उसे यह तेजोवलय बदलने, प्रभावित करने में सफल होता है । महामानवों के आश्रमों में, सिद्ध पीठों में जो प्रभाव सामर्थ्य रहती है, उसके मूल में यह प्रकाश पुंज—तेजोवलय ही काम करती है जो उनके वहाँ प्रत्यक्ष रूप में न रहने पर भी बनी रहती है । प्रत्यक्षतः आशीर्वचन-दर्शन, चरण स्पर्श में छिपे सत्परिणामों के पीछे भी इस आभा-मण्डल की ही भूमिका होती है । ऐसे तेजस् सम्पन्न व्यक्ति चिरायु होते हैं क्योंकि उनका छोड़ा हुआ प्रभाव चिरस्थायी होता है । विद्वत्जन कहते हैं—'तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते' अर्थात्—"तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती, वे अमर होते हैं ।"

प्रसंग सूक्ष्मीकरण साधना के सन्दर्भ में यह चल रहा है कि युग समस्याओं के समाधान हेतु जिस तप-सामर्थ्य की आवश्यकता है, वह कैसे उपलब्ध हो ? निरन्तर बढ़ते विग्रहों, पारस्परिक विलगाव, ईर्ष्या-द्वेष के दावानल से जूझती मानव-जाति को उबारने हेतु जिस स्तर का पुरुषार्थ अभीष्ट है, वह कैसे सम्पन्न हो ? उत्तर एक ही है—बहिर्मुखी पक्ष को तिलांजलि देकर युग ऋषि द्वारा यह भूमिका निभाने हेतु स्वयं को अन्तर्मुखी साधना में नियोजित किया जाना एवं सीमित समुदाय से ऊँचा उठकर सारी वसुधा के हित साधन हेतु खपा देना । आज की परिस्थितियों में जो अनिवार्य था वही गुरुदेव ने किया है । उनकी एकाकी सूक्ष्मीकरण साधना का स्तर बहुत ऊँचा है । प्रत्यक्ष दर्शन न हो पाने का अभाव खलता तो है पर जो फलदायी परिस्थितियाँ उस तप साधना की होंगी, उसकी तुलना में वह तुच्छ है । आभा-मण्डल के बहुलीकरण की समष्टि में संव्याप्त होने की यह युग साधना ऋषि तन्त्र की विधि-व्यवस्था का ही एक अंग है । जो उनके जीवन कृत्य से भली-भाँति अवगत है, वे जानते हैं कि पूर्व में भी वे ऐसा एकाकी साधनाक्रम वे एक-एक वर्ष लिए चार बार सम्पन्न कर चुके हैं । प्रस्तुत संकल्प बड़ी विकट घड़ियों में युग सन्धि की विषम बेला में लिया गया है । सभी परिजन इस युग साधना में सहभागी हैं । हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल होगा । उनकी भविष्यवाणियाँ समय की कसौटी पर खरी उतरेंगी ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण ऊर्जा का ज्वालमाल रूप में प्रकटीकरण

क्यों धधक उठते हैं अग्नि के ये शोले

विद्युत शक्ति की सामर्थ्य से सभी भली-भाँति परिचित हैं । बीसवीं सदी के इस अनुसंधान ने मानव जीवन को प्रगतिशील मोड़ देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । अधिक से अधिक क्षमता की विद्युत का प्रयोग कर असम्भव से दीख पड़ने वाले कृत्य भी अब किए जाने लगे हैं । न्यूनतम विद्युत विभव से परिचालित इलेक्ट्रॉनिक्स के सर्किट्स, माइक्रोचिट्स आदि ने गत दो दशक में विज्ञान में क्रांति ला दी है । अभी-अभी पिछले दिनों सुपर कण्डक्टर के अनुसंधान ने इस दिशा में अपरिमित सम्भावनाएँ जगा दी हैं, किन्तु यह वह पक्ष है जो हमें ज्ञात है । जिस काया से हम दैनन्दिन जीवन के क्रिया-कलाप चलाते हैं, वह अपने आप में एक परिपूर्ण शक्ति सम्पन्न बिजलीघर है, यह बहुतों को मालूम नहीं । हम तो इसे एक पुतला भर मानते हैं, जिसे भोग-विलास में लगा कर इस शक्ति को निरन्तर नष्ट करते रहते हैं । यदि इस शक्ति भण्डार का सदुपयोग, सुनियोजन किया जा सके तो महत्त्वपूर्ण चमत्कारी विभूतियाँ हस्तगत कर सकना सम्भव है ।

शास्त्रकार ही नहीं, वैज्ञानिक भी अब कहते हैं कि मानवी सत्ता की गहराई में उतरने पर ऊर्जा निर्झर उछलते देखे जा सकते हैं । गहराई में दबे पड़े रहने पर दो खदानों की बहुमूल्य खनिज राशि का भी पता नहीं चल पाता । वह अन्दर अविज्ञात स्थिति में पड़ी रहती है । भू-गर्भ में बहने वाले महानदों की जल-सम्पदा को ऊपरी सतह पर ढूँढ़ने वाले कहाँ पा पाते हैं । लाभ तो उन्हें मिलता है जो गहरी डुबकी लगाकर इनका पता लगा लाते हैं । बहुमूल्य मोती कमा लाने का लाभ व श्रेय गोताखोरों को ही मिलता है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि यह प्रचण्ड प्राण ऊर्जा शोलों के रूप में, बाहर स्वतः धधकने लगती है । अपनी उपस्थिति का परिचय यह भिन्न-भिन्न रूपों में देती देखी जाती है यद्यपि ऐसा अपवाद रूप में होता है, फिर भी यह इस तथ्य को तो प्रमाणित करता ही है कि मानवी सत्ता विद्युत ऊर्जा से अभिपूरित है ।

फ्रान्सिस हिचिंग की पुस्तक "दि वर्ल्ड एटलस ऑफ मिस्ट्रीज" में सन् १९३८ की एक अमेरिकी घटना का उल्लेख है कि गर्मी के मौसम में एक दिन नारफॉक ब्राइस नामक स्थान पर नौका विहार कर रही एक महिला के शरीर से अग्नि की लपटें स्वतः फूट पड़ीं । साथ में उसके पति बच्चे भी थे । पानी से आग बुझाने का प्रयास किया गया । पर उस भभकती अग्नि पर काबू नहीं पाया जा सका । वह मेरी कारपेण्टर नामक उस महिला के शरीर को भस्मीभूत करके अपने आप बुझ गई ।

"स्पान्टेनियस ह्यूमन कम्बशन" की इन घटनाओं की शृंखला में बिहार के भागलपुर जिले की पाँच वर्ष पूर्व १९८२ के सूर्य ग्रहण के अवसर पर घटी एक घटना का उल्लेख यहाँ करना समीचीन होगा । एक युवक अपने घर के आँगन में मौन बैठा था । बारम्बार घरवालों के पूछने पर उसने बताया कि आज उसके जीवन का अन्तिम दिन है । घर के सदस्यों ने उसके कथन की ओर ध्यान नहीं दिया । थोड़ी देर तक, वह सूर्य की ओर मुँह किए ताकता रहा । अचानक उसके शरीर से अग्नि की नीली ज्वालाएँ फूटने लगीं । घर के सदस्यों ने शरीर पर पानी फेंका तथा कम्बल से ढँक दिया पर शरीर उस तीव्र ज्वाला में बुरी तरह झुलस गया । आग तो बुझ गई पर उसे बचाया न जा सका । अस्पताल पहुँचने पर उसने दम तोड़ दिया ।

आँखों की विद्युत-शक्ति को त्राटक साधना में घनीभूत कर उपयोगी बनाया जाता है । हिप्नोटिज्म में इसी विद्युत शक्ति को प्रखर और वशीभूत बनाने की साधना की जाती है ।

सत्रहवीं सदी का एक प्रसंग है । ससेक्स की एक वृद्धा की प्राण विद्युत सहसा धधक उठी और वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपनी झोंपड़ी में झुलस कर जल मरी । इसी प्रकार 'रेनाल्ड न्यूज' ने पश्चिमी लन्दन की एक खबर छापी थी कि एक व्यक्ति वहाँ सड़क से जा रहा था, तभी सहसा उसके भीतर से लपट निकली और वह वहीं झुलस कर सिमट गया ।

७ दिसम्बर, १९५३ की प्रातः जब होनोलूलू (हवाई द्वीप) में घरों में काम करने वाली मार्गरिट क्रामेट नामक एक महिला अपने मालिकों के यहाँ बर्तन साफ करने नहीं पहुँची तो उनमें से कई के घर से बुलावा आया। उसके घर पहुँचने पर उन्होंने पाया कि क्रामेट के शरीर से नीले रंग की लपटें निकल रही हैं जिनसे वह शनैः-शनैः भस्म होती जा रही है । वह अर्धचेतनावस्था में थी, पर उसे किसी प्रकार की पीड़ा हो रही थी, ऐसा अनुभव नहीं हो रहा था । आग बुझाने के सारे प्रयास निरर्थक रहे व कुछ ही क्षणों में वह आग का ढेर मात्र रह गई ।

३१ जनवरी, १९५९ का प्रसंग है । सान फ्रांसिस्को का एक वृद्ध जैक लार्चर दूध लेने के लिए पंक्तिबद्ध खड़ा था । उसके आस-पास वालों ने अचानक उसके शरीर से लपटें निकलती देखीं । आग बुझाने के लिए उसका शरीर कम्बलों से लपेट दिया गया किन्तु ६० किलोग्राम की वह काया कुछ ग्राम राख का ढेर बनकर कुछ ही सेकण्डों में भस्मीभूत हो गई ।

सन् १८३५ में नेशविली विश्वविद्यालय के गणित विभाग के प्रोफेसर जेम्स हेमिल्टन के साथ भी इसी तरह स्वतः दहन की घटना घटी, किन्तु जेम्स हेमिल्टन उन दुर्लभ व्यक्तियों में से एक प्रतीत होते हैं जिन्होंने स्वतः उत्पन्न आग को बुझा दिया । उनके बाएँ पैर में उन्हें जैसे ही जलने जैसा दर्द अनुभव हुआ उन्होंने नीचे देखा । उन्होंने देखा कि एक शक्तिशाली सिगरेट लाइटर की लौ के समान एक १० सेन्टी मीटर लम्बी चमकदार लौ उनके पैर से फूट कर निकल रही है । उन्होंने उसे थप्पड़ मारा, कोई प्रभाव नहीं हुआ । फिर जब उन्होंने उसे हाथ से दबाए रखा ताकि उसे ऑक्सीजन मिलना बन्द हो जाय, तो वह धीरे-धीरे बुझ गई ।

यू. सी. एल. ए. (अमेरिका) के जॉन डेक ने ऐसे कई व्यक्तियों की जाँच की है जो स्वतः दहन के आंशिक रूप से शिकार हुए । वे अपने शोध ग्रन्थ "ए ट्रिटाइज ऑन स्पान्टेनियस ह्यूमन कम्बशन" में लिखते हैं कि "यह समझ में नहीं आता कि इन आंशिक दहन वाले व्यक्तियों में ऐसा क्यों होता है कि थोड़ा-सा हिस्सा ही जलकर रह जाता है ।" डॉ. बेन्टले के प्रकरण का वे विशेष रूप से हवाला देते हैं जिसमें उनके सहित दो और व्यक्ति कार में बैठे-बैठे जल कर भस्म हो गए । फलस्वरूप कार में भी आग लग गई । किसी की भी पास जाने की हिम्मत न पड़ी । जब पूर्णाहुति हो चुकी एवं आग के शोलों की गर्मी ठण्डी पड़ी, तो अस्थि पिंजर, खोपड़ी, दाँत व अन्दर के कई अवयव सुरक्षित बच गए थे । आग के बीच रह कर भी कुछ अंगों का न जलना आश्चर्य का विषय था ।

वैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य शरीर में उसके भार का ६५ प्रतिशत (लगभग ४५ लीटर) जल होता है । इसे वाष्पीभूत कर काय अवयवों को जलाने के लिए लगभग पाँच हजार डिग्री फारेनहाइट की अग्नि चाहिए । यह कहाँ से पैदा हो जाती है ? शरीर के जीवकोशों (लगभग ६० खरब) में से प्रत्येक में अग्नितत्व प्रोटोप्लाज्मा में सन्निहित होता है पर वह इतना सुव्यवस्थित व सूत्रबद्ध होता है कि उससे शरीर जले, यह सम्भावना दूर-दूर तक नहीं सोची जा सकती । जब तक प्रोटोप्लाज्मा को विखण्डन प्रक्रिया द्वारा उच्च प्लाज्मा में नहीं बदला जाता, तब तक अग्नि का स्वतः दहक उठना समझ से परे है । पर ऐसा होता है । दहकने के अतिरिक्त यह जैव विद्युत शरीर के अंग विशेषों से निःसृत होकर दूसरों को प्रभावित करती भी पायी गई है । उच्च स्तर को प्राप्त योगीजनों, महापुरुषों को चरण स्पर्श करने पर, सिर पर हाथ फेरे जाने, वात्सल्य, थपथपाने, अनुदान, शक्तिपात आदि में इसी स्तर की विद्युत प्रयुक्त होती है । किसी उच्च मनोभूमि के महायोगी के समीप बैठने से भी मन व अन्तःकरण में हलचल मचा देने वाली यही प्राण-विद्युत है । यह सामान्य विद्युत से भिन्न स्तर की, उपकरणों की पकड़ से बाहर की शक्ति है एवं मूलतः अनुभूति का विषय है । मात्र भावनात्मक माध्यम से इसे सम्प्रेषित किया जा सकता है ।

एक पाश्चात्य वैज्ञानिक का मत है कि यदि सम्पूर्ण शरीरगत द्रव्य को विद्युत ऊर्जा में बदला जा सके तो १२० पौण्ड वाले शरीर से इतनी शक्ति प्राप्त की जा सकती है कि उससे उत्तरी अमेरिका जैसे विशाल देश

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को लगातार दस वर्ष तक विद्युत सप्लाई की जा सके । कितनी प्रचण्ड शक्ति सम्पन्न है यह काया ? यह अनुमान हमें सहज ही नहीं हो पाता, किन्तु इस तथ्य को गीताकार ने काफी पहले ही प्रकट कर दिया है । वे कहते हैं—

आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेनम्
आश्चर्यवत् वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवत् चैनम् अन्यः श्रणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥

—अध्याय २/२६

अर्थात् कोई इसे आश्चर्य से देखता है, कोई इसके विषय में आश्चर्य से बात करता है, कोई इसे आश्चर्य से सुनता है; किन्तु फिर भी थोड़े ही लोग हैं जो इस सत्य को अर्थात् मानवी सत्ता के इस शाश्वत महत्त्व को जानते हैं ।

इसी प्रकार वृहदारण्यक में उपनिषद्कार कहता है—इदं महद्भूतमनन्तमपारं विज्ञान घन एव (२/४/१२) अर्थात्—"यह महद्भूत, महानसत्ता (व्यष्टिगत ब्रह्मी सत्ता) अनन्त और अपार है । वह केवल विज्ञान या चित् का घनत्व है ।" वेदों में जिस शक्ति को "ज्योतिषां ज्योतिः" कहा गया है, वह यही विद्युत्तत्व है जो अपना परिचय कभी संकल्प बल के रूप में कभी प्रचण्ड जिजीविषा के रूप में, कभी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने वाले अग्नि के दहकते शोलों के रूप में देता रहता है । इस महाशक्ति का यदि सुनियोजन सोचा जा सके एवं नष्ट होने से बचा कर प्रसुप्त पड़ी सामर्थ्य को जगाने में उसका सदुपयोग हो सके तो मनुष्य अपरिमित शक्ति का स्वामी हो सकता है । अपनी जागृत सामर्थ्य से वह ऋद्धि-सिद्धियों को करतलगत कर अपनी आत्मिक प्रगति का तथा समष्टि के कल्याण का पथ प्रशस्त करता रह सकता है ।

भाग रे भाग !
..... शरीर में आग !

"यह शरीर माटी का पुतला" अब यह कहावत पुरानी पड़ गई है । वैज्ञानिक भी अब धीरे-धीरे इस भारतीय तत्वदर्शन की मान्यता के समीप आते जा रहे हैं जिसमें मनुष्य की अन्तर्चेतना या उसके प्राण-शरीर की भूरि-भूरि महत्ता प्रतिपादित की और उसके विकास को ही मनुष्य जीवन की सर्वोपरि उपलब्धि माना है । भारतीय तत्व विज्ञान की मान्यता यह है कि शरीर के स्थूल पार्थिव तत्वों का समावेश होने पर भी शरीर के सूक्ष्म आग्नेय स्फुल्लिंग जिनसे अन्तरंग आत्म-चेतना बनती है अधिक महत्त्वपूर्ण हैं ।

भारतवर्ष की तरह जापान भी धार्मिक आस्थाओं योग साधनाओं का केन्द्र है । सामान्य भारतीय की तरह उनमें भी आध्यात्मिक अभिरुचि स्वाभाविक है । एक घटना के माध्यम से जापानी वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकालने का भी प्रयास किया है कि शरीर में विद्युत की उपस्थिति का कारण तो ज्ञात नहीं किन्तु जिनमें भी यह असामान्य स्थिति पायी गई उनके मनोविश्लेषण से पता चलता है कि ऐसे व्यक्ति या तो जन्म-जात आध्यात्मिक प्रकृति के थे या कालान्तर में उनमें विलक्षण अतीन्द्रिय क्षमताओं का भी विकास हो जाता है ।

रहस्य तब और गहरा हो जाता जब जीव-जगत इस आश्चर्य से अछूता रह जाता, पर इसे प्रकृति का उपकार ही कहना चाहिए कि मनुष्य जैसी जटिल रचना से जो तथ्य प्रकट नहीं हो पाये वह कुछ-कुछ जीव-जगत में पायी जाने वाली इन्हीं क्षमताओं के विश्लेषण से सामने आने लगे हैं मनुष्यों में तो इस तरह की घटनाएँ कभी-कभी अनायास दिखाई देती हैं, किन्तु जीव-जगत और वनस्पति-जगत में भी ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो इस गुत्थी को सुलझाने में सहायक होने लगे हैं ।

सम्भव है भारतीय योग-विद्या का प्राण विज्ञान इस दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाल सके । सामान्य मनुष्य के लिए जो प्राणों की मात्रा को इस तरह आश्चर्यजनक रूप में बढ़ा पाना सम्भव नहीं किन्तु "प्राणायाम" आदि के अभ्यास से प्राण की मात्रा को इतना विकसित किया जा सकता है कि शरीर में डिजनरेशन क्रिया को भी नियन्त्रित किया जा सके । अदृश्य रूप से निवास करने वाली इस प्राण शक्ति को शरीर की ऊर्जा के रूप में भारतीय योगी प्रयुक्त कर उस तरह के विलक्षण कार्य करते रहे हैं । अभी कुछ समय पूर्व भौतिक शास्त्रियों ने एक ऐसे कैमरे का विकास किया है जिसके द्वारा प्राणों की किरणों को स्पष्ट देखा और उनका फोटो लिया जा सकता है । इसे "किर्लियन फोटोग्राफी" कहते हैं । यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान की नितान्त प्रारम्भिक गति है । भारतीय तत्वदर्शियों की जानकारियाँ इस सन्दर्भ में बहुत उच्चकोटि की रही हैं ।

प्रश्नोपनिषद् (४-६) तथा छान्दोग्य उपनिषद् (८-६-३) में प्राण को ही अग्नि अथवा तेजस् कहा है । लय की स्थिति का वर्णन करते हुए छान्दोग्य (६-८-६) में बताया गया है—प्राण की द्रुत चालित अवस्था में ही तेज या अग्नि प्रकट होती है । वृहदारण्यक में महर्षि उद्दालक के प्रश्नों का उत्तर देते हुए याज्ञवल्क्य ने प्राण को वायु में घुला हुआ तत्व बताया है । 'वायुः प्राणोभूत्वा' द्वारा एतरेय ने भी उसकी पुष्ट की है जो वैज्ञानिकों की जीवों के प्रकाश सम्बन्धी व्याख्या से मेल खाती है । 'प्राण-विद्या' की शक्ति सामर्थ्य और सम्भावनाएँ अपने आप में एक इतना बड़ा चमत्कार है । जिसकी तुलना में पूर्ण वर्णित घटनाएँ नितान्त साधारण और तुच्छ हैं, पर उसकी अनुभूति और विकास तो 'प्राणमय कोष' की उच्चस्तरीय साधनाओं से ही सम्भव हो सकती है । प्राणों का स्वरूप, स्थिति और विज्ञान जान लेने के बाद, आत्मा-परमात्मा और प्रकृति में से जानने के लिए कुछ भी शेष नहीं रह जाता ।

शरीर एक विद्युत संस्थान

स्थूल दृष्टि से केवल हाथ, पैर, कान, नाक, मुँह और शरीर के अन्दर माँस के लोथड़े दिखाई देने पर भी शरीर पूर्णतया स्थूल नहीं है । इसमें चेतन शक्तियों का स्थान मुख्य है, और वही शक्तियाँ ही शारीरिक गतिविधियों का संचालन करती हैं । यह शक्ति अन्य शक्तियों यथा ताप-ध्वनि विद्युत, प्रकाश की भाँति परस्पर एक-दूसरे में बदली जा सकती हैं । सिद्धियाँ इन्हीं शक्तियों के प्रयोग का ज्ञान मात्र है ।

यह एक सैद्धान्तिक बात हुई आमतौर पर प्रत्यक्ष प्रमाण पाये बिना बहुत कम इस तथ्य पर विश्वास करेंगे कि शरीर में वस्तुतः ऐसी कोई जबर्दस्त शक्ति है । यहाँ एक घटना प्रस्तुत की जा रही है जो उपर्युक्त सत्य का सम्पादन और समर्थन करती है । घटना आबू नगर जिला सिरोही (राज) के एक होटल मालिक श्री अनन्तराय नान जी भाई मेहता से सम्बन्ध में रखती है ।

एक दिन श्री मेहता जी ने बड़े स्नेह से एक बच्चे को छूने का प्रयत्न किया तभी बच्चे के शरीर में जोरदार झटका लगा बच्चा ढाई फुट परे जा गिरा । मेंहता जी परेशान हुए आखिर बात क्या है ? तभी उनकी धर्मपत्नी एक बर्तन में उन्हें पीने का पानी देने आयी अभी गिलास उनके हाथ में ही था कि मेहता जी ने लेने के लिए उसे पकड़ा और बस गजब हो गया । धर्मपत्नी के हाथ को १२० वोल्ट बिजली का जोरदार करंट लगा । बेचारी गिरते-गिरते बचीं । उन्होंने ही बताया देखो जी तुम्हारे शरीर में बिजली है ।

बात आगे बढ़ी, मुहल्ले-पड़ोस के लोग आये किन्हीं ने उनके शरीर को छूकर अनुभव किया, किसी ने उनके हाथ में धातु का कोई टुकड़ा देकर । धातुएँ पकड़ते ही उससे चिन्गारियाँ (Sparking) प्रारम्भ हो जाती हैं । लोग हैरतअंगेज रह गए आखिर मेहता जी के शरीर में बिजली कहाँ से आ गई ।

विज्ञान के विद्यार्थी और अध्यापकों ने भी जाँच की और माना कि शरीर में कोई ऐसी शक्ति है जो शरीर की किसी विशेष परिस्थिति में अर्थात् विद्युत वाहिनी नाड़ियों में कोई अव्यवस्था उत्पन्न हो जाने के कारण वह शक्ति विद्युत शक्ति में बदल जाती है ।

मेहता जी के शरीर में दिन में बारह बार विद्युत आवेश उभरता है और हर दूसरे दिन उभरता है । यह करेन्ट १२० वोल्ट ताकत के बराबर होता है । यह अनुभूति उन्हें पिछले दिनों लगातार डेढ़ माह तक होती रही तब भुंज से निकलने वाले 'कच्छ मित्र' के संवाददाता ने स्वयं जाकर उनका परीक्षण किया और सत्य पाया । यह विवरण १७ अप्रैल सन् १९७१ के कच्छ मित्र में छपा भी था । अन्य स्थानीय डॉक्टरों ने भी उनकी जाँच की पर वे बिजली कहाँ उत्पन्न होती है यह जान नहीं पाये । श्री मेहता जी का कथन है कि उनके शरीर में जब-जब करेन्ट आता है उन्हें कोई परेशानी महसूस नहीं होती वरन् स्फूर्ति और चैतन्यता भी अनुभूति होती है ।

श्री मेहता जामखभ्यालिया के रहने वाले हैं । १९६४ से पूर्व वे पूर्व अफ्रीका में रहे हैं । अपने इस अजूबे का कारण वे स्वयं नहीं जानते पर वे इतना अवश्य मानते हैं कि विद्युत का कारण कोई बाह्य उपकरण या कारण न होकर मेरे शरीर के अन्दर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं है । क्या इस उदाहरण से लोग शरीर में छिपी अदृश्य शक्तियों की बात मानेंगे और उनकी शोध के लिए तत्पर होंगे यह देखने वाली बात है ।

मनुष्य भी ज्वालामुखी की तरह फूटता है

पृथ्वी पर जो हलचलें होती रहती हैं उन्हें हम आँखों से, दूरबीन से देख लेते हैं । ताप, शब्द और रेडियो तरंगों से भी पृथ्वी की ऊपरी पर्त एवं कुछ दूर तक ऊँचाई की भी हलचल विदित होती रहती है । पर यह नहीं सोचना चाहिए कि अपनी धरती नितान्त ठोस है और उसके भीतर कोई हलचल नहीं होती । भीतर भी गरम हाँड़ी पकती रहती है ।

पृथ्वी पर ७१ प्रतिशत पानी है । शेष को थल कह सकते हैं । अन्तरिक्ष में गैसों का भण्डार है । उनकी कई चित्र-विचित्र पर्तें भी हैं । उनकी सघनता भी कम नहीं । ब्रह्माण्ड से बरसने वाली उल्काएँ उन्हीं सघन पर्तों से टकराती और जलकर खाक होती रहती हैं । उनकी खाक पृथ्वी की पर्त तक आ पहुँचती है । कुछ अधजले उल्का खण्ड भी । इस प्रकार प्रतिदिन पृथ्वी में बोझ प्रायः ३०० टन अधिक बढ़ता जाता है । यह बोझ तथा प्राणियों की बढ़ोत्तरी मिलकर इस बोझ को और भी अधिक बढ़ा देती है । परिणाम यह होता है कि धरती का भीतरी दबाव दिन-दिन बढ़ता जाता है ।

पृथ्वी की ऊपरी पर्त ठण्डी है । वह धूप के तापमान से गरम ठण्डी भी होती रहती है । पर उसके गर्भ में पिघले हुए लोहे जैसी स्थिति है । जितने हम भीतर उतरते हैं उतना ही उसे गरम पाते हैं । इस गरमी को नियन्त्रण में रखने के लिए समुद्री पानी पहुँच कर कुछ सहायता करता रहता है तो भी अस्थिरता बनी ही रहती है और उसके गर्भ में आश्चर्यजनक हलचलें चलती रहती हैं । वे कभी-कभी अनियन्त्रित भी हो जाती हैं और अपने सीमा बन्धनों को तोड़कर फब्बारे की तरह उछल पड़ती हैं । इसी स्थिति में ज्वालामुखी फटते हैं, भूकम्प आते हैं और चक्रवात, तूफान मचलने लगते हैं ।

पृथ्वी की ऊपरी सतह मिट्टी, रेत, चट्टान, पहाड़ आदि की बनी है पर उसके साथ ही खनिज भी मिले हुए हैं । लोहा, ताँबा आदि धातुएँ मनुष्य द्वारा निरन्तर खोदी जाती हैं, तेल भी निकाला जाता है । इस कारण ठोसपन घटता और पोल बढ़ती है । मिट्टी में मिले हुए क्षार भी नदियों तथा वर्षा के जल के साथ समुद्र में पहुँचते रहते हैं । इसलिए भी पृथ्वी की मजबूती घटती और पोलापन बढ़ता है । भीतर आग और समुद्र का भारीपन बढ़ने से दबाव का अनुपात बढ़ता ही जाता है । पिलपिले आम पर यदि दबाव पड़े तो उसका रस छिलका फाड़ कर ऊपर उछल जाता है और जिस ओर भी जगह मिलती है उसी ओर छितराता है । यही हाल पृथ्वी का भी है । चारों ओर से बढ़ता दबाव और भीतर का खोखलापन मिलकर ऐसी स्थिति उत्पन्न करते हैं, जिससे ज्वालामुखी, भूकम्प, तूफान जैसी कितने ही उपद्रव उठ खड़े होते हैं । फलतः न केवल धरती का सामान्य स्वरूप ही ऊबड़-खाबड़ होता है । वरन् प्राणियों के लिए असाधारण असुविधाएँ भी सामने आ खड़ी होती हैं ।

इण्डोनेशिया के काका डोडग क्षेत्र में एक भयानक ज्वालामुखी सन् १८८३ में फटा । उसका धमाका ३०००० मील तक सुना गया । द्वीप समूल नष्ट हो गया । इस विस्फोट ने जावा, सुमात्रा के समुद्र में १३५ फुट ऊँची लहरें उठाईं और उनकी चपेट में जो भी तटवर्ती नगर एवं समुद्री टापू आये वे सभी उदरस्थ होते चले गए । इन लहरों ने जापान से लेकर आस्ट्रेलिया तक को बुरी तरह प्रभावित किया । तूफानों ने समस्त संसार को प्रभावित किया । सन् १९६० के तूफान ने बंगाल की खाड़ी को कोई आठ बार झकझोरा । जिसमें चार लक्ष मनुष्य मारे गए । चटगाँव में नवम्बर १९७४ में जो तूफान आया उसमें तीन लाख आदमी मरे ।

१९६७ में महाराष्ट्र का अंधड़ तूफान भी ऐसा भयंकर था । असम में १८९० और १९५० में दो ऐसे भूकम्प आये जिनमें लाखों की जान गईं और अरबों की सम्पदा नष्ट हुई ।

ज्वालामुखियों, भूकम्पों, तूफानी चक्रवातों का इतिहास बड़ा विलक्षण है । वे कब, कहाँ फट पड़ें इसका कुछ पूर्व अनुमान नहीं होता है ? पर मोटा कारण यह समझा जाता है कि ऊपरी परत पर दबाव बढ़ता और भीतरी खोखलेपन की स्थिति बनते जाना ही इसका प्रधान कारण है । पृथ्वी पर जनसंख्या न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़े और उसके कारण भूमिगत सम्पदाओं का इतना दोहन न करना पड़े तो सम्भवतः जल्दी-जल्दी इतने भारी और इतने भयंकर विस्फोटों का सिलसिला न चले और कमाने की तुलना में कहीं अधिक गवाँने का संकट सामने खड़ा न हो ।

मनुष्य शरीर और जीवन में भी ऐसे छोटे-बड़े संकट आते रहते हैं । इसका कारण सांसारिक बोझों से लद जाना और भीतरी विशेषताओं को खोते चले जाना है । क्षय रोग प्रायः इसी कारण से उपजता और बढ़ता है । शरीर को अतिशय श्रम करना पड़े । मस्तिष्क पर चिन्ताओं तथा उद्वेगों का भार लदा रहे तो दुहरे दबाव से फेफड़ों या आँतों में जख्म हो जाते हैं और उनमें होकर जीवन तत्व बाहर निकलने लगता है । समझना चाहिए कि भूकम्प से पड़ने वाली दरारें भीतर से फूटती और बाहर उनका उपद्रव कई प्रकार के कहर ढाता दीखता है ।

भीतरी ऊर्जा को सन्तुलित बने रहने की स्थिति जब तक सही बनी रहती है, तब तक व्यक्तित्व सामान्य रहता है, पर जब सन्तुलन में अवांछनीय क्षति पहुँचती या चोट लगती है तो उसी घुटन को बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ना पड़ता है । यह कभी-कभी उद्दण्डता का रूप धारण कर लेती है और भयंकर उत्पात मचाती है । इसे ज्वालामुखी के समतुल्य समझा जा सकता है ।

व्यक्ति गड़बड़ाते हैं तो अपने आपको क्षति पहुँचाने तक सीमित नहीं रहता वरन् दूर-दूर तक के वातावरण को बिगाड़ता है । क्रिया की प्रतिक्रिया होती है और ज्वार-भाटे एक-दूसरे को धकेलते हुए उस शृंखला को लम्बी घसीट ले जाते हैं । यही तूफान है जो पृथ्वी के अन्तराल से उफनते हैं । वातावरण पर छा जाते हैं और चक्रवात बनकर अन्तरिक्ष में ऊँचाई तक उफनते चले जाते हैं ।

ज्वालामुखी विस्फोटों से गरम और जहरीला लावा निकलता है । वह समीपवर्ती भूमि को जलाता है और आकाश धुएँ से भर देता है । धुआँ जब नीचे उतरता है तो उसकी पर्त जमीन पर जम जाती है और उगी हुई वनस्पतियों को भारी हानि पहुँचाती है । क्रोध जब भीतर से उबलता है तो उसका प्रत्यक्ष स्वरूप विस्फोट से कम नहीं होता । मुँह से असंस्कृत शब्द निकलते हैं और ऐसा व्यवहार बन पड़ता है, जिसे आक्रमण भी कहा जाता है और आत्मघात भी । मुँह ज्वाला उगलता है और उससे समूचे वातावरण में विक्षोभ भर जाता है ।

सामान्य सन्तुलित स्थिति ही श्रेयस्कर है । उसे सही बनाए रहने के लिए संयम बरतने की आवश्यकता है । संयम की शीतलता, शान्ति और स्थिरता में बनी रहती है । उद्धत आचरणों की प्रतिक्रिया न चैन से बैठती है और न बैठने देती है । दबा हुआ आक्रोश और असंयम देर-सवेर में विस्फोट बनकर फूटता है और ज्वालामुखी, भूकम्प और तूफान जैसे उपद्रव खड़े करता है ।

प्राण ऊर्जा का ज्वाला रूप में प्रकटीकरण

मानवी काया की संरचना पंचतत्वों से हुई है और उसकी चेतना में पाँच प्राणों का समावेश है । तत्वों से विनिर्मित रासायनिक पदार्थों द्वारा रक्त, माँस, अस्थि, चर्म आदि की संरचना हुई है । पंच प्राणों में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और उनकी तन्मात्राएँ काम करती हैं । इन्हीं का समुच्चय पंच देवों के नाम से जाना और उपासना उपक्रम द्वारा समर्थ समुन्नत किया जाता है ।

प्राण को अग्नि भी कहा गया है । यज्ञाग्नि की तरह उसकी भी अपनी महत्ता है । यज्ञ में यों देखने में तो वैसी ही लपट आती है, जैसी कि चूल्हे या चिता में, तो भी उसमें विशेष अन्तर रहता है । पवित्र समिधा, शाकल्प, विधान एवं मन्त्रोच्चारण के सहारे उसे उस स्तर की बनाया जाता है जो चेतना के साथ घुल सके, उसके साथ तारतम्य बैठाने एवं प्रभावित करने में समर्थ हो सके । इस स्तर तक पहुँचाने के उपरान्त ही साधारण आग को यज्ञाग्नि कहलाने का श्रेय मिलता है और उसका पूजन देवता के समतुल्य किया जाता है ।

प्राणाग्नि को जीवन तत्व, जीवनी शक्ति भी कहा जाता है । उसका परिचय नस-नाड़ियों में विद्युत की तरह काम करता देखा जाता है । ज्ञान तन्तु इसी के माध्यम से मस्तिष्क एवं शरीर के साथ सम्बन्ध स्थापित किए रहते हैं । त्वचा के इर्द-गिर्द उसे तेजोवलय के रूप में देखा जाता है । कायिक स्फूर्ति और मानसिक सूझ-बूझ एवं हिम्मत बनकर वही काम करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पराक्रम दोनों के संयोग को कहते हैं । शूरवीरों में मात्र कायिक बलिष्ठता ही नहीं, साहसिकता का भी बाहुल्य होता है । इस आधार पर किसी में प्राणाधिक्य होने का परिचय मिलता है । इसी को शरीरगत ओजस्, मनोगत तेजस् एवं भाव क्षेत्र का वर्चस् कहते हैं । तपश्चर्या में मनोनिग्रह और इन्द्रिय संयम का काय कष्ट तो होता है, किन्तु साथ-साथ तपस् का उत्पादन भी होता है जिसे ब्रह्मतेज या ब्रह्मवर्चस कहते हैं । यह सब प्राणाग्नि के ही विभिन्न स्वरूप या भेद उपभेद है ।

यह ऊर्जा शरीर और मनःक्षेत्र में तो काम करती रहती है किन्तु चर्म चक्षुओं से दृष्टिगोचर नहीं होती । सम्वेदनशील यन्त्र उपकरणों के माध्यम से इसे जाँचा तो जा सकता है पर आँखों से बल्ब की तरह जलता हुआ नहीं देखा जा सकता । प्राण विद्युत की चर्चा शक्तिपात से लेकर मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म आदि के रूप में होती रहती है । इतने पर भी उसे चूल्हे में जलने वाली आग की तरह प्रकट होते नहीं देखा जाता है ।

कई बार इसके अपवाद भी होते हैं । यह प्राणाग्नि कभी-कभी अनायास भी प्रकट होती देखी गई है । उससे वह शरीर जलने लगता है जिसमें से वह प्रकट होती है कई बार तो यह समीपवर्ती वस्तुओं को भी जला देती है, किन्तु कई बार ऐसा भी देखने में आया है कि जिस शरीर में से आग प्रकट हुई मात्र वही जला और पहने हुए कपड़े तथा सटे हुए सामान तक को कोई क्षति न पहुँची । इस प्रकार के विवरणों में कुछ पंजीकृत उल्लेख इस प्रकार हैं—

सेसना, इटली की काउन्टेस डि बैन्डी नामक ६२ वर्षीय महिला ४ अप्रैल, १७३१ को अपने कमरे में मृतक पायी गईं । शाम को वह अपनी नौकरानी से देर रात्रि तक वार्तालाप करती रही और प्रार्थना करके सो गई । सुबह समय पर मालकिन को जगे हुए न पाकर नौकरानी ने खिड़की से झाँककर देखा तो देखकर हैरान रह गई । कमरे में बिस्तर से चार फुट की दूरी पर घुटने के नीचे पैर का हिस्सा, झुलसी हुई उँगलियों के टुकड़े और सिर का आधा भाग एवं इसके अतिरिक्त राख का ढेर देखकर नौकरानी हतप्रभ रह गई ।

एकत्रित लोगों ने दरवाजे को तोड़ा और कमरे के अन्दर प्रविष्ट हुए । कमरे से एक विशेष प्रकार की गन्ध निकल रही थी । राख को हाथे से छूने पर चिकनी, बदबूदार एवं नम प्रतीत हुई । कमरे के सभी बर्तनों, कपड़ों, फर्नीचर तथा दीवार पर इस राख की हल्की-सी परत देखने को मिली ।

निरीक्षण करने पर पाया गया कि काउन्टेस दि बैन्डी बिस्तर पर से उठकर जैसे ही कुछ दूर चली होंगी वैसे ही उनके शरीर की प्राणाग्नि ने दावानल का रूप धारण कर लिया होगा और उसे भस्मीभूत बना दिया । सभी कमरों में विचित्र बदबू फैल रही थी । कमरे में रखे एक बर्तन में रोटियों के कुछ टुकड़े पड़े थे जिन्हें कुत्तों को खाने के लिए दिया गया परन्तु किसी कुत्ते ने मुँह तक न लगाया । उसे गड्ढे में बन्द कर दफना दिया गया ।

सन् १६७३ में पेरिस में स्वतः जल जाने वाली एक गरीब महिला का वर्णन करते हुए थामस बार्थोलिन ने लिखा था कि यह महिला "स्ट्रांग स्प्रिट" की अतिशय आदी थी । अपनी इस आदत के कारण इस महिला ने तीन वर्षों तक बिना किसी भोजन के ही दिन गुजारे । एक शाम को वह महिला पुलाव से बनी तृण शय्या पर सो रही थी । रात्रि में अचानक उसके शरीर से आग की लपटें निकलने लगीं और कुछ ही क्षणों में वह बिस्तर सहित जलकर राख हो गई । सुबह देखने पर लोगों को उसका सिर तथा उँगलियों के कुछ हिस्सों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला ।

पेरे ऐमे लेमर ने इस घटना का पुनर्मूल्यांकन किया और उपर्युक्त तथ्य को सही पाया जिसे बाद में उन्होंने एक लेख विशेष में प्रकाशित भी किया ।

डॉ. दि जस ने 'एडिन बर्ग मेडिकल एण्ड सर्जिकल जनरल' के मार्च में एक रहस्यमय अग्निकाण्ड का वर्णन किया था । एक व्यक्ति के शरीर से नीली लपटें निकल रही थीं और वह छटपटा रहा था । शरीर पर पहने कपड़े जल रहे थे समीप खड़े छोटे भाई ने सहायता करनी चाही परन्तु उसके भी हाथ झुलस गए । यह आग कई घण्टों तक लगातार निकलती रही और हाथों तक फैल गई । जब उस व्यक्ति को घण्टों पानी में डुबोकर रखा गया तब कहीं जाकर अग्नि शान्त हुई । घाव शीघ्र भर गए । फिर कभी इस घटना की पुनरावृत्ति नहीं हुई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुप्रसिद्ध लेखक चार्ल्स फोर्ट ने अपनी पुस्तक "दी कम्प्लीट बुक ऑफ चार्ल्स" में एक ऐसी महिला का वर्णन उद्धत किया है जो अपने ही शरीर स्थित अग्नि से कई बार ग्रसित हो चुकी थी । लन्दन निवासी जॉन राइट की माँ को ५ जनवरी १८२० को अस्पताल में भर्ती होना पड़ा । उनका शरीर कई स्थानों पर शरीर से निकलती ज्वाला से झुलस गया था । ७ जुलाई को श्री राइट अपने रसोईघर में नौकरानी लड़की से बात कर रहे थे तभी एकाएक राइट की माँ के कपड़े जलने लगे । लड़की उठकर बाहर चली गई और अग्निकाण्ड समाप्त हो गया । १२ जनवरी को फिर से उपर्युक्त घटना घटित हुई उस समय भी वही लड़की उपस्थित थी ।

राइट ने अपनी माँ की देखभाल के लिए अपनी बहिन को बुला लिया । एक दिन उनकी बहिन रसोईघर में उसी नौकरानी लड़की के समीप बैठी थी कि एकाएक उसके कपड़ों में भी आग लग गई और भयंकर रूप से जल गई । यह घटनाक्रम कई बार घटित हुआ । अतः नौकरानी लड़की को अपराधी ठहराकर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया । जाँच करने पर मजिस्ट्रेट ने पाया कि उस लड़की का प्रत्यक्षतः कोई अपराध नहीं था । यह एक ऐसी सुपर नेचुरल प्रक्रिया थी जिसका उत्तर किसी के पास नहीं था, कानून के पास भी नहीं । ऐसे में किस दण्ड विधान के अन्तर्गत उसे दण्ड दिया जाता ? अन्त तक मामला अनुत्तरित ही रहा ।

ये सभी घटनाएँ जन श्रुतियाँ नहीं हैं । इनका उल्लेख सरकारी कागजातों और विज्ञान क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किए गए पर्यवेक्षणों में है । ऐसी घटनाओं में यह आशंका रहती है कि किन्हीं अनाड़ियों द्वारा किए गए कुकृत्यों पर पर्दा डालने के लिए उन्हें अविज्ञात कारणों से घटित हुई घटना कहा जाय किन्तु उपर्युक्त परीक्षित अभिलेखों में ऐसी बात प्रतीत नहीं हुई, क्योंकि जो लोग जले उनमें से कोई ऐसा नहीं था जिनकी किसी से शत्रुता रही हो अथवा धन के लिए इस प्रकार का कुकृत्य किया गया हो ।

ऐसी स्थिति में इस अग्नि प्राकट्य को मानवी प्राण ऊर्जा का आकस्मिक उभार ही कहा जा सकता है साथ ही यह उत्साह भी उभरता है कि इस सामर्थ्य का सामान्य जीवन यापन में प्रयुक्त होने भर से सन्तोष न कर किन्हीं बड़े प्रयोजनों में नियोजित करने का मार्ग खोजा जाय ।

उनके शरीर से शोले फूटते हैं

न्यूयार्क के एक दोनों आँखों से अन्धे एन्थोनी एलिबर्टी नामक व्यक्ति को अपने अंधत्व पर कोई दुःख नहीं है क्योंकि वह आँखों का काम कानों के सहारे चलाता है । वह नित्य लांग आइलैण्ड से वॉयस तक भारी भीड़-भाड़ वाला रास्ता इस होशियारी से पार करता है कि कोई उसके अन्धे होने का अनुमान नहीं लगा सकता । कोई साथी तो क्या लाठी का सहारा तक वह अपनी दैनिक यात्रा में नहीं लेता ।

एन्थोनी कुश्ती लड़ने, गोला फेंकने, छलांग लगाने जैसे खेलों में भाग लेता है । वह बढ़ई का भी काम कर लेता है, साथ ही लोहा मशीन पर पुर्जे भी खरादता है । साइकिल चलाता है, पियानो बजाता है और अच्छी आमदनी करके परिवार का गुजारा करता है । इन कामों में उसे अभी तक किसी चोट या दुर्घटना का शिकार नहीं होना पड़ा । दृष्टि क्षमता न होने की बात डॉक्टरों द्वारा अनेक बार जांची जा चुकी है । पत्रकारों को वह बताता है कि कोई भी अन्धा व्यक्ति अपनी दिव्य दृष्टि को अभ्यास द्वारा विकसित कर सकता है । मात्र मनोबल की प्रचण्डता इसके लिए चाहिए ।

जापान के टोक्यो नगर की बारह वर्षीय बालिका सयूरी तनाका ने भी इसी तरह अतीन्द्रिय क्षमता विकसित कर ली है और वह आँखों का काम नासिका के अग्रभाग से लेती है । सामान्य आखों पर मोटी पट्टी बांध देने पर भी वह पुस्तकों को उसी तरह पढ़ लेती है जैसे कि नेत्रों से । वह न केवल टेलीविजन पर चल रहे कार्यक्रमों को देख लेती और अक्षरशः वर्णन कर देती है, वरन् उसने इस क्षमता को इतना अधिक विकसित कर लिया है जिसके द्वारा सामान्य नेत्रों से सम्पन्न होने वाले सभी कार्यों को करने में वह सक्षम बन गई है । तृतीय नेत्रों की तरह ही उसकी नासा दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रहता । दो वर्ष की छोटी उम्र से ही वह अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए खोज का विषय बनी हुई है । विशेषज्ञों ने उसकी इस विलक्षणता को कितनी ही बार जाँचा-परखा है और पाया है कि नासाग्र को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढक देने पर तनाका छटपटाहट-सी महसूस करती है । वे मात्र इतना ही जान पाये हैं कि यह सामर्थ्य मानसिक चेतना के एक जगह पर केन्द्रीभूत होने के कारण उद्‌भूत हुई है । यह सम्भावना हर किसी में विद्यमान है ।

चीन के लेनज्होन शहर के निकट रहने वाले वेल रुओयांग नामक एक किशोर की आँखें एक्सरे की तरह पारदर्शी हैं । दीवारों के उस पार क्या हो रहा है व पृथ्वी के गर्भ में कहाँ क्या छिपा हुआ है ? उसकी आँखें उन्हें स्पष्ट देख लेती हैं । मानवी काया की भीतरी संरचना, उसमें उत्पन्न विकार, ट्यूमर आदि की स्पष्ट जानकारी उसकी सूक्ष्म दृष्टि एक्सरे की तरह रोगी के सामने उजागर कर देती है । बेल ने अपने कानों को भी पारदर्शी एवं अति सम्वेदनशील बना लिया है और उनसे पढ़ने का काम लेता है । परीक्षणकर्त्ता, वैज्ञानिकों एवं मूर्धन्य पत्रकारों ने इस तथ्य की पुष्टि की है कि उसकी यह प्रतिभा जन्मजात है जिसको अभ्यास द्वारा विकसित करके उसने इस स्तर तक पहुँचा दिया है कि लोग उसे दिव्य दृष्टा की संज्ञा देने लगे हैं ।

कितने ही लोग जन्मजात विलक्षणता लिए होते हैं, पर कई बार ऐसा भी होता है कि किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में किसी दुर्घटना के कारण भी ऐसी दिव्य क्षमताएँ उभर आती हैं । पिछले दिनों सोवियत संघ के यूक्रेन प्रान्त की एक खान में कार्यरत ३६ वर्षीय महिला जुलिया वोरोवियेव के साथ कुछ ऐसा ही घटित हुआ । उच्च धारा वाले बिजली के तार से छू जाने के कारण उसे ६ महीने अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा । इसी मध्य एक दिन उसने अनुभव किया कि उसकी आँखें एक्सरे की भाँति किसी भी वस्तु या व्यक्ति के आर-पार एवं उसके भीतर झाँक सकती हैं । सूर्य की अति सूक्ष्म अल्ट्रावायलेट किरणों तक को वह देख लेती है । धरती के गर्भ में छिपी खनिज सम्पदा, जल स्रोत, विवर आदि कुछ भी उसकी आँख से बच नहीं पाते और अपना रहस्य उगल देते हैं । मौसम-परिवर्तन एवं तूफानों के आगमन की पूर्व जानकारी उसे बहुत पहले ही हो जाती है । डोनेटुक अस्पताल के चिकित्सा विज्ञानी जुलिया की इस अतीन्द्रिय क्षमता के माध्यम से उन जटिल रोगों का पता लगाते हैं जिन्हें वे स्वयं महँगे वैज्ञानिक उपकरणों से भी ज्ञात नहीं कर पाते । जबकि वह जटिल से जटिल रोगों की जानकारी ५ से १० सेकण्ड के अन्दर प्राप्त कर लेती है ।

इटली के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल फामिया में रहने वाले ११वीं कक्षा के छात्र बेनेदेत्तो सुपीनों की आँखों से चिन्गारियों का फब्बारा छूटता है । जब कभी वह किसी वस्तु पर देर तक नजरें टिका देता है, उसमें आग लग जाती है । अब न तो वह नेत्रों पर जोर देकर पुस्तकें पढ़ सकता है और न ही कुछ लिख सकता है । परिवार के सदस्यों की तरफ भी वह एकटक नहीं देख सकता, अन्यथा किसी के चेहरे पर नजर टिकी कि वह झुलसने लगता है । परीक्षणकर्त्ता वैज्ञानिकों ने इसे प्राण शक्ति का चमत्कार बताया है, जो किन्हीं कारणों से बेनेदेत्तो में जागृत हो गई है, पर उसके सुनियोजन की कला ज्ञात न होने से वह मात्र तमाशा दिखाने या हानि पहुँचाने जैसे कौतूहल ही प्रस्तुत कर सकती है ।

इसी तरह रूस के यूक्रेन का शशा नामक एक किशोर छात्र जिस किसी वस्तु का स्पर्श कर लेता है, वह जलने लगती है । अब तक वह अपने तन ढकने के वस्त्रों से लेकर घर की प्रायः सभी वस्तुओं को भस्मसात कर चुका है । अपनी इस विलक्षण शक्ति के कारण उसे कितनी ही बार स्थान परिवर्तन के लिए रिश्तेदारों के यहाँ भेजा गया, किन्तु वहाँ से भी इस प्रक्रिया के कारण उसे भागना पड़ा । शशा की असाधारण क्षमता का अध्ययन कर रहे सुप्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. वाल्दीमिर कोरचिन्कोव का कहना है कि उसकी पूरी काया डायनमो की भाँति वैद्युतीय आवेश से भरी रहती है और जब तब उसमें उफान सा उठता है और सम्पर्क में आने वाली वस्तु में आग लग जाती है । इसी तरह का निष्कर्ष यूक्रेनियन एकेडमी ऑफ साइन्सेस के प्रमुख रसायन विज्ञानी डॉ. ए. नातोली पोपोव का है । उन्होंने इसे प्राणाग्नि का एक स्थान पर अधिक परिणाम में संचय बताया है और माना है कि मनुष्य का शरीर भी सूर्य की तरह ही एक आग का गोला है । इस छोटे से पिण्ड में अगणित शक्तियाँ समाहित हैं जिनमें से प्राण एक है । यह सारा खेल उसी का है ।

मेनचेस्टर की श्रीमती पालिन शा नामक एक अधेड़ महिला चलते-फिरते जीवान्त बिजलीघर के रूप में प्रसिद्ध है । जिस किसी वस्तु को वह स्पर्श कर लेती है, धमाके की आवाज के साथ उसमें से शार्ट सर्किट की तरह चिन्गारी निकलने लगती है । हाथ मिलाने वाले झटके खाकर दूर जा गिरते हैं । जाँचकर्त्ता वैज्ञानिकों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने पाया है कि पालिन के शरीर से दो हजार वोल्ट तक का वैद्युतीय प्रवाह निकलता है । इससे बचने के लिए डॉक्टरों ने उसे विद्युतरोधी दस्ताने पहनने और दिन में कई बार नहाने की सलाह दी है । अपने बाएँ टखने में वह सदा एक अर्थ वायर बांधे रखती है जिससे शरीर में उत्पन्न होने वाली अतिरिक्त विद्युतीय तरंगें धरती में समा जायें ।

पालिन शा पहले एक कम्प्यूटर कम्पनी में क्लर्क के पद पर कार्यरत थी, पर कुछ दिनों पश्चात् उसके अन्दर कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि उसकी उपस्थिति मात्र से कम्प्यूटरों ने सही ढंग से काम करना ही बन्द कर दिया । फलतः राशियाँ और परिणाम गलत निकलने लगे । उसका स्थानान्तरण अन्य जगह कर देने पर मालिक को दूसरी तरह की परेशानियाँ सुनने को मिलने लगीं कि जो भी उसके सम्पर्क में आता है, वैद्युतीय झटके का शिकार बन जाता है । अंततः उसे नौकरी छोड़नी पड़ी । अपनी वैद्युतीय क्षमता का परिचय सबसे पहले उसे तब मिला, जब एक दिन मछलियों से भरे एक्वैरियन्स को छूने मात्र से उसके काय विद्युतीय न्यू प्रवाह का प्रभाव सह न पाने के कारण वे सबकी सब मछलियाँ छटपटा कर मर गईं ।

उपर्युक्त घटनाएँ महर्षि वशिष्ठ के उस कथन की पुष्टि करती हैं जिसमें कहा गया है कि मानवी काया से श्रेष्ठ और अद्‌भुत संरचना इस सृष्टि में और कोई दूसरी नहीं है । समस्त ऋद्धि-सिद्धियों के भाण्डागार इसी देह में प्रसुप्त अवस्था में भरे पड़े हैं । आवश्यकता मात्र उन्हें पहचानने, जागृत और विकसित करने तथा सदुपयोग में लाने भर की है । आन्तरिक विभूतियाँ कितनी बहुमूल्य हैं, इसे अनुभव से ही जाना जा सकता है ।

उपर्युक्त वृत्तान्त चाहे वे अतीन्द्रिय क्षमता के जागरण के हों अथवा प्राण शक्ति के एक स्थान पर केन्द्रीकरण से चमत्कारी परिणति दिखाने वाले, एक ही तथ्य प्रमाणित करते हैं कि ऋद्धि-सिद्धियों का समुच्चय मनुष्य में अन्दर प्रसुप्त पड़ा है । यदि प्रयासपूर्वक उन्हें जगाया, उभारा जा सके तो अपनी सामान्य क्षमताओं के अतिरिक्त इन सामर्थ्यों से वही लाभ लिया जा सकता है जो प्राचीनकाल में ऋषिगण अपनी काया रूपी प्रयोगशाला में तपश्चर्या द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाते थे । भौतिक उपलब्धियों की तुलना में आत्मिक विभूतियाँ निश्चित ही बहुमूल्य हैं, इस तथ्य पर किसी प्रकार विवाद नहीं है ।

प्राणाग्नि के जब-तब फूटने वाले शोले

घटना २ जुलाई, १०५१ की है । अमेरिका के सेण्ट पीटर्स वर्ग (फ्लोरिडा) के एक मुहल्ले मेरी स्ट्रीट में रहने वाली श्रीमती मेरी हार्डी रोजर अपने मकान में विचित्र ढंग से जली हुई मरी पायी गई । २ जुलाई की पूर्व सन्ध्या को हार्डी रोजर ने अपने मित्रों को एक पार्टी दी थी और उसका घर आधी रात तक चहल-पहल से भरा रहा था । मित्रों के ठहाके गूँज रहे थे । देर रात गए पार्टी समाप्त हुई और हार्डी रोजर अपने मित्रों को विदा कर हल्के चित्त से आकर अपने बिस्तर पर लेट गई । सुबह देर तक उसके मकान का दरवाजा बन्द रहा । मकान मालकिन पी. कार्पेण्टर ने सोचा कि रात में देर तक जागने के कारण रोजर अभी तक सो रही है । उसके काम पर जाने का समय हो गया, इसलिए उसे जगा देना चाहिए ।

यह सोचकर श्रीमती कार्पेण्टर ने रोजर के घर का दरवाजा खटखटाया किन्तु अन्दर से कोई उत्तर नहीं मिला । दो-तीन बार दरवाजा खटखटाने के बाद जब कोई उत्तर नहीं मिला तो श्रीमती कार्पेण्टर ने सोचा कि रोजर को ज्यादा ही गहरी नींद आ गई होगी इसलिए स्वयं ही दरवाजा खोलकर उसे जगा देना चाहिए । यह सोचकर दरवाजा खोलने के लिए मकान मालकिन ने पीतल की बनी हुई कुण्डी पर जैसे ही हाथ रखा, उसके मुँह से चीख निकल गई । पीतल की कुण्डी इतनी गरम हो गई थी जैसे उसे घण्टों आग से तपाया गया हो । उसी से मिसेज कार्पेण्टर का हाथ जल गया था ।

उसकी चीख सुनकर पास ही रहने वाले दोनों पड़ोसी निकल आये । मिसेज कार्पेण्टर ने उन्हें सारी बात बताई और कहा कि शायद फ्लैट में कोई दुर्घटना घट गई है । दुर्घटना की सम्भावना का अनुमान लगाकर दोनों पड़ोसियों ने दरवाजे को कन्धे से धक्का देना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुरू किया । दो-चार धक्कों में ही कुण्डी निकलकर अलग हो गई और तीन व्यक्ति अन्दर प्रविष्ट हुए ।

फ्लैट के भीतर कमरे की दोनों खिड़कियाँ खुली हुई थीं और कमरे की छत तथा दीवारें कालिख से इस तरह पुती हुई थीं जैसे किसी ने वहाँ आग लगाई हो । कमरे का तापक्रम भी असाधारण रूप से गर्म था और वहाँ रखा हुआ आदमकद शीशा इतनी अधिक आँच के कारण टूटकर पिघल गया था एवं बुरी तरह टुकड़े-टुकड़े हो गया था, किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि कमरे में धुएँ या जलने की गन्ध का कहीं नामो-निशान तक नहीं था ।

उन लोगों ने मेरी हार्डी को आवाज दी । पर कोई उत्तर नहीं मिला । मेरी हार्डी वहां हों तो उत्तर भी दें, उसके अवशेष तो राख की एक ढेरी के रूप में कमरे की ही एक खिड़की के पास पड़े थे । मिसेज कार्पेण्टर और दोनों पड़ोसियों ने उन अवशेषों को देखा तो दंग रह गए और तत्काल इस घटना की सूचना पुलिस को दी । पुलिस आयी, उमने जाँच की परन्तु रहस्य सुलझने का कोई सूत्र हाथ में नहीं आ रहा था । पहले तो जाँच अधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मामला असाधारण रूप से की गई आत्म-हत्या का है परन्तु शीघ्र ही उन्हें अपना विचार बदलना पड़ा क्योंकि आत्महत्या के लिए अपने शरीर को किसी भी प्रकार आग लगाई जाय किन्तु वह उस ढंग से राख में परिवर्तित नहीं हो सकता, जिस प्रकार मिसेज हार्डी का शरीर राख में परिणत हो गया था । आग लगने के बाद आखिर कोई भी व्यक्ति छटपटाता तो है ही और उस छटपटाहट के कारण मरणांतक स्थिति में पहुँचने तक भी आग निश्चित रूप से बुझ सकती है । फिर मानवी काया एवं उस पर भी अस्थियों की भस्मीभूत करने के लिए जितना ऊँचा भट्टी के स्तर का तापमान चाहिए, इतना तापमान आग के किसी प्रचण्ड भयंकर स्रोत से ही उत्पन्न हो सकता था । वहाँ पर कमरे की जो स्थिति थी और कमरे के सामान को जो क्षति पहुँची थी उसके आधार पर किसी भी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि कमरे में इतना उच्च तापमान पैदा हुआ हो ।

जाँच अधिकारियों को जिस बात ने सबसे अधिक उलझन में डाला वह यह थी कि मेरी हार्डी की देह जिस स्थान पर राख हुई थी, वहाँ फर्श पर बिछे कालीन पर आग लगने के बहुत ही सामान्य निशान थे । उसके पास ही रखी मेज पर पड़े हुए अखबार और कपड़ों को तो आग ने छुआ तक नहीं था । जाँच अधिकारी एडवर्ड डेविस इन विचित्र विरोधाभासों के कारण जब किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके तो उन्होंने प्रसिद्ध शरीर विज्ञानी डॉ. विंस्टन क्रागमैन की सहायता ली ।

डॉ. विंस्टन क्रागमैन इस दुर्घटना के विभिन्न कारणों की सम्भावना पर विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मिसेज हार्डी रोजर उस रहस्यमयी आग की शिकार हुई हैं, जिसे विज्ञान की भाषा में "स्पांटेनियस ह्यूमन कम्बशन" (स्वतः दहन) कहते हैं । स्पांटेनियस ह्यूमन कम्बशन अथवा अनायास अपने आप जलने की यह प्रक्रिया ऐसी है जो पिछले दसियों वर्षों से वैज्ञानिकों को उलझन में डाले हुए है । इस रहस्यमयी आग के उत्पत्ति के कारणों को जानने के लिए विभिन्न प्रयोगों और अब तक इस तरह की घटी सैकड़ों घटनाओं में से करीब १०० घटनाओं का अध्ययन करने के बाद भी वैज्ञानिक यह पता नहीं लगा पाये हैं कि यह रहस्यमयी आग किस प्रकार और किन कारणों से उत्पन्न होती है ? इसका स्रोत क्या है ?

अपने आप शरीर में आग उत्पन्न होना और उस आग में जलकर शरीर का भस्मीभूत हो जाना ऐसा विचित्र रहस्य है कि सामान्य अग्निकाण्डों से उसकी तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि जिस किसी के भी साथ इस प्रकार की घटना घटती है पहले तो उसे इसका कोई लक्षण ही पता नहीं चलता । अचानक हार्ट अटैक की तरह बिना किसी पूर्व सूचना के अग्नि स्फोट होता है और जो व्यक्ति इस रहस्यमयी अग्नि का शिकार होता है उसे सम्भवतः इसकी कोई यन्त्रणा भी अनुभव नहीं होती ।

उपर्युक्त घटना के पहले और बाद में भी इस तरह के ढेरों अग्निकाण्ड हुए हैं इनमें ७ दिसम्बर, १९५६ को होनोलूलू द्वीप में ऐसा ही अग्निकाण्ड घटित हुआ । उस द्वीप की एक साधारण-सी बस्ती में रहने वाली पिचहत्तर वर्षीय महिला यग सिककिम इस घटना की प्रत्यक्ष साक्षी रहीं । उस दिन दोपहर को वृद्धा किस किसी घरेलू काम में व्यस्त थी अचानक उसे किसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम से अपनी पड़ोसिन वर्जीनिया कॉगटे की याद आयी । किम दयालु, व्यवहार कुशल और परदुःखकातर महिला थी । उसके स्वभाव से सभी खुश रहते थे और कॉगेट तो उसकी विशेष रूप से आभारी थी क्योंकि वक्त-बेवक्त उसे किम से सहायता मिल जाया करती थी इसलिए वह किम के कई छोटे-बड़े काम कर दिया करती थी ।

किम को किसी काम के सिलसिले में कॉगेट की याद आयी तो उसके घर पहुँची । वहाँ पहुँचकर उसने जो कुछ देखा उससे किम की भय के मारे चीख निकल गई । किम ने देखा कि कॉगेट का शरीर नीली लपटें छोड़ता हुआ जल रहा है । उसकी चीख सुनकर आस-पास रहने वाले लोग दौड़े आये । उन्होंने भी वह दृश्य देखा । वे कॉगेट को बचाने का कोई उपाय करने की बात सोच ही रहे थे कि देखते ही देखते उसका शरीर मुट्ठी भर राख में बदल गया । आश्चर्य की बात यह थी कि कॉगेट न तो अचेत हुई थीं और न ही चीखी-चिल्लाई ही थीं ।

सैन फ्रांसिस्को के लागूना होम में भी ३१ जनवरी, १६५६ को ऐसी ही घटना घटी जिसका प्रत्यक्षदर्शी वहाँ का एक चपरासी था । लागूना होम में बूढ़े व्यक्तियों की देखभाल की जाती थी । सरकार की ओर से चलाया जाने वाला वह एक ऐसा संस्थान है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति ही रहते थे । उस घटना का प्रत्यक्षदर्शी चपरासी सिलेवेस्टर एलिस ३१ जनवरी की शाम को चार बजे के लगभग जैव लार्वर को दूध का गिलास देने गया था, जो वृद्ध व्यक्तियों को होम की ओर से वितरित किया जाता था । जैक लार्वर ने दूध का गिलास ले लिया और पीने लगा । इसके बाद एलिस रसोई में चला आया ।

कोई पन्द्रह मिनट के बाद एलिस लार्वर के कमरे में दूध का खाली गिलास वापस लेने के लिए पहुँचा जब वह लार्वर के कमरे में पहुँचा तो वहाँ उसने जो कुछ देखा वह बेहद भयावह दृश्य था । उसने देखा कि जैक लार्वर नीले रंग की लपटों में बुरी तरह जल रहा है । यह दृश्य देखकर उसने एक कम्बल लार्वर के शरीर पर लपेट देना चाहा परन्तु जैसे ही कमरे के कोने में रखा कम्बल लेकर उसके पास दौड़ता हुआ-सा जाने लगा, एलिस को कुछ फीट की दूरी पर आग की तेज असह्य आँच अनुभव हुई । उसे लगा कि वह भी आँच में झुलसने लगा है ।

अपने को बचाते हुए एलिस ने कम्बल लार्वर पर फेंका और दौड़कर कमरे के बाहर आया तथा मदद के लिए चीखने-पुकारने लगा । लोग मदद के लिए दौड़े आये । इसमें मुश्किल से पाँच सात मिनट लगे होंगे । सहायता के लिए आये संस्था के कर्मचारी तथा अन्य व्यक्ति लार्वर के कमरे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ राख का एक ढेर मात्र पड़ा है और कमरे के भीतर झुलसा देने वाली गर्मी व्याप रही है । आश्चर्य की बात तो यह थी कि एलिस ने जो कम्बल लार्वर के ऊपर फेंका था, उस पर कहीं-कहीं ही आग ने अपना प्रभाव दिखाया था । कमरे की सभी वस्तुएँ यथावत् सुरक्षित थीं । वहाँ न तो किसी प्रकार का धुआँ फैला हुआ था और न ही कोई चीज जलने की गन्ध आ रही थी ।

इस घटना की रिपोर्ट पुलिस में की गई । जाँच अधिकारियों ने पहले तो उसे आत्महत्या का असाधारण प्रयास माना परन्तु इस विचार की कहीं से भी पुष्टि नहीं होती थी । कमरे में ऐसी कोई वस्तु नहीं पायी गई जो ज्वलनशील हो फिर यदि लार्वर ने आत्मदाह ही किया था तो आग से आस-पास की वस्तुएँ कैसे अप्रभावित रह गई थीं ? यहाँ तक कि उसके ऊपर को कम्बल फेंका गया था, वही बिना जले कैसे बच गया था ? अन्त में जाँच अधिकारियों को अपना निष्कर्ष बदलना पड़ा और इस केस को फाइल कर दिया गया ।

इस तरह की जितनी भी घटनाएँ अब तक प्रकाश में आयी हैं और जिनका विश्लेषण किया गया है उनमें यह तथ्य आश्चर्यजनक रूप से सामने आया है कि यह आग केवल शरीर को ही जलाती है । धातुओं पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, अलबत्ता वह उन पर कुछ निशान जरूर छोड़ जाती है ।

आध्यात्म विज्ञान में भौतिक अग्नियों की चर्चा आग, बिजली, आदि के अतिरिक्त शरीर में विद्यमान प्राणाग्नि का वर्णन किया गया है और उनमें से पाँच को प्रमुख और पाँच को गौण बताते हुए उनकी संख्या दस में गिनाई गई है । उन सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं यह जीवन्त स्तर की अग्नियाँ हैं जो ऊर्जा तो निःसृत करती हैं किन्तु पदार्थ को कम और काया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं मनःसंस्थान को अधिक प्रभावित करती हैं इसी के माध्यम से तांत्रिक प्रयोगों से आग्नेयास्त्र जैसा काम लिया जाता है । उस माध्यम से अग्निकाण्ड कराने से लेकर मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, वशीकरण जैसा कई प्रकार का छोटा बड़ा आक्रमण हो सकता है ।

योग साधना से शरीर का माँस मज्जा वाला स्थूल भाग तो घट जाता है पर नये प्रकार की ऊर्जा का उत्पादन होता है, जिसे योगाग्नि कहते हैं । इसे शक्ति-पुंज कह सकते हैं । दधीचि की हड्डियों में यही विशेषता थी जिसके कारण उनके द्वारा वज्र, वृत्रासुर जैसे दुर्धर्ष दानव का हनन कर सकने में समर्थ हुआ ।

मनुष्य शरीर को बिजली के अनेकों चमत्कार पारस्परिक सान्निध्य में होते देखे जाते हैं । बलिष्ठों का प्रभाव दुर्बलों पर पड़ता है । इस प्रभाव के पीछे यह प्राण विद्युत ही काम करती है । मनुष्यों में से हर एक को एक हार्स पावर की मोटर माना जाय तो योगाभ्यास द्वारा बढ़ाई गई प्राण विद्युत शक्ति भण्डार हजार हार्स पावर की मोटर जितना भी हो सकता है । इस आधार पर उनकी निजी समर्थता दूसरों को प्रभावित करने वाली विशिष्टता तथा वातावरण को बदल देने की क्षमता का अभिवर्धन होता है ।

यह प्राणाग्नि या योगाग्नि का संक्षिप्त परिचय हुआ । इसी के माध्यम से दक्ष गृह में सती ने अपने शरीर से योगाग्नि प्रकट करके आत्मदाह किया था । योगीजनों में से मूर्धन्य व्यक्ति अपने शरीर त्यागते समय इसी योगाग्नि को उत्पन्न करके अपनी अन्त्येष्टि स्वयंमेव कर लेते हैं । प्रयत्नपूर्वक इस जीवन्त ऊर्जा को बढ़ाने और उसे चमत्कारों में नहीं महान् प्रयोजनों में खर्च करके अति महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए जा सकते हैं । यह ऊर्जा कभी-कभी प्राकृतिक कारणों से अनायास भी उबल पड़ती है और ऐसे विलक्षण परिचय देती है जैसा कि उपर्युक्त घटनाओं से विदित होता है ।

कायाग्नि के भड़कते शोले

भौतिक जगत में शक्ति स्रोत के साधनों में अग्नि, ताप, गैस, तेल, विद्युत, परमाणु और लेसर आदि का जितना महत्त्व है, उससे कहीं अधिक उपयोगिता प्राणियों के लिए उस प्राण ऊर्जा का है, जो उनके शरीरों में पायी जाती है । मानवी काया तो इस विद्युत-शक्ति का अजस्र भाण्डागार है । शरीर का सारा क्रिया-कलाप इसी ऊर्जा संचार के माध्यम से गतिशील रहता है । हमारा नाड़ी संस्थान पूर्णतया जैव विद्युतधारा से ही सुसंचालित होता है । मस्तिष्क ही वह बिजलीघर है जहाँ से शरीर के समस्त अंग अवयवों को विद्युतधाराएँ पहुँच कर सारा क्रिया-कलाप नियंत्रित करती हैं । इस विद्युत-प्रवाह को ई. ई. जी. तथा ई. सी. जी. जैसे यन्त्र उपकरणों पर देखा मापा जा सकता है । लौह चूर्ण और चुम्बक जिस प्रकार परस्पर चिपके रहते हैं उसी प्रकार हमारी जीवसत्ता काया के समस्त जीवकोशों को इस माध्यम से परस्पर संघटित किए रहती है । उनकी सम्मिश्रित चेतना से जीव संचार व्यवस्था कायम रहती है ।

शरीर में कार्यरत प्राण विद्युत की गर्मी से ही विभिन्न अंग अवयव सक्रिय बनते और अपना-अपना काम करते रहते हैं । इस ऊर्जा का प्रभाव शरीर संचालन तक सीमित रहता है, किन्तु कुछ अपवाद ऐसे भी मिले हैं जिनमें शरीरगत ऊष्मा ने यांत्रिक बिजली की भूमिका निबाही और उस जैसे ही स्पर्शकर्त्ता को झटके महसूस हुए । सोसाइटी ऑफ फिजिकल रिसर्च के अनुसंधानकर्त्ता वैज्ञानिकों ने विश्व में ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों को खोज निकाला है जिन्हें विद्युत-आवेशधारी कहा जा सके । उनके अनुसार यह सामान्य सा शारीरिक व्यतिक्रम है जिसमें जीवकोशों के आवरण ढीले पड़ जाते हैं और उनमें निहित विद्युत आवेश 'लीक' करने लगते हैं । अकारण भी किसी में यह अनायास प्रकट हो जाते हैं । प्रयत्नपूर्वक इसे उभारा भी जा सकता है ।

कितनी ही बार यह विद्युत इतना भयावह रूप धारण कर लेती है कि स्वयं को ही जलाकर भस्म कर देती है । विज्ञान की भाषा में इसे "ऑटोकम्बशन" स्वतः दहन कहा जाता है । जिसके कारणों को विज्ञानवेत्ता अभी तक नहीं जान पाये हैं । चेम्सफोर्ड, इंग्लैण्ड में सन् १९३८ में एक ऐसी ही घटना घटित हुई जिसमें नृत्य करती हुई एक महिला के शरीर से अनायास आग के शोले फूट पड़े । दर्शक भय के कारण इधर-उधर भागने लगे । उसे बचाने के सभी रक्षात्मक उपाय उपचार व्यर्थ गए । देखते-देखते वह युवती राख के ढेर में बदल गई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इंग्लैण्ड के ही बर्मिंघम प्रांत में पिछले दिनों दो शिशु स्वतः दहन के शिकार हो गए । इनके अचानक रहस्यमय आग से जल जाने की घटना को वहाँ के प्रमुख पत्रों ने प्रकाशित किया था । १९७३ में हुई एक घटना के अनुसार सात महीने की परमिंदर कौर अपने पिता के कमरे में झूले में बैठी थी । एकाएक उसके शरीर से अग्नि-ज्वाला फूट निकली और नीली लपटों ने उसे चारों ओर से घेर लिया । पिता को किसी तरह अग्नि बुझाने में सफलता मिली और उसे बर्मिंघम के अस्पताल में भर्ती कराया । अग्निकाण्ड का कारण अज्ञात ही बना रहा । इसी तरह की एक अन्य घटना का विवरण बर्मिंघम से प्रकाशित पत्रिका—"ईवनिंग मेल" के २६ अगस्त १९७४ के अंक में प्रकाशित हुआ था, जिसके अनुसार ६ माह कि लिसा टिप्टन अपने ही शरीर की ज्वाला से जलकर भस्म हो गई थी । पर आश्चर्यपूर्वक शरीर से लिपटे कपड़ों में से अधिकांश बच गए थे ।

मनुष्यों के स्वतः जल जाने की प्रक्रिया पर अनुसंधान कर रहे वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले ४०० वर्षों के भीतर संसार भर में स्वतः मानव दहन की घटनाएँ २०० से भी अधिक संख्या में प्रकाश में आयी हैं । इस तरह से मरने वालों की आयु ४ माह से लेकर ११४ वर्ष तक थी, जिसमें नर-नारी दोनों ही वर्गों की संख्या लगभग समान थी । सिद्ध योगियों के बारे में प्रचलित है कि इच्छानुसार अपनी पंचभौतिक काया को वे योगाग्नि को समर्पित कर देते थे । सती का योगाग्नि में दहन एक पौराणिक सत्य है । यह मान्यता आज भी सही हो सकती है, किन्तु जब जन-सामान्य चलते-फिरते, नाचते-गाते, मोटरगाड़ी चलाते हुए अपने ही शरीर से फूट पड़ी अज्ञात ज्वाला से भस्मीभूत हो जाते हैं तो उसका कोई कारण समझ में नहीं आता ।

सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता चार्ल्स फोर्ट ने इस संदर्भ में गहरी छानबीन की है और सन् १८६१ के पश्चात् हुए आकस्मिक अग्नि प्राकट्य से जल जाने वालों का विस्तृत विवरण अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया है । इनमें से बहुचर्चित एवं सर्वाधिक रहस्यमय घटना पैनसिलवानिया के वेस्ट फिलेडिल्फिया की १८ वर्षीय एक विधवा का है । १८ मई, १९५७ को अन्ना मार्टिन नामक यह महिला अपने एक कमरे में जली हुई अवस्था में पायी गई थी जहाँ अग्नि का कोई स्रोत भी नहीं था । उसके मात्र जूते ही शेष बचे थे । समीप पड़ा अखबार आग से अछूता था ।

इसी तरह की एक अद्भुत घटना का विवरण विख्यात नृवंशवेत्ता डॉ. विल्टन क्रागमैन ने "द जनरल मैगजीन एण्ड हिस्टोरिकल क्रोनिकल" में प्रकाशित किया है । उसके अनुसार १ जुलाई, १९५१ को फ्लोरिडा के सेंटपीटर्सबर्ग में मेरी हार्डी रीसर नामक ६७ वर्षीय वृद्धा बैठे-बैठे जल कर राख हो गई थी । अवशेष के रूप में मात्र कुर्सी के स्प्रिंग और उसकी खोपड़ी बची थी जो सिकुड़ कर छोटी सी गेंद की शक्ल में बदल गई थी । निरीक्षणकर्त्ता डॉ. क्रागमैन का कहना है कि किसी भी व्यक्ति के अस्थिपंजर को जलाने गलाने के लिए ३ हजार डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक की गर्मी चाहिए । फिर भी कपाल का इस स्थिति में मिलना और इतने उच्च ताप पर समीप पड़े समाचार-पत्र तथा रेशमी चादर का न जलना अपने आप में रहस्यमय पहेली थी ।

दिसम्बर १९६६ की ठिठुरन भरी एक रात को उत्तरी पैनसिलवानिया के काउडस्पार्ट नगर में वहाँ के जाने माने ६२ वर्षीय चिकित्सक डॉ. जे. इरिविंग बेंटली अपने घर में एकाएक कायाग्नि के भड़क उठने से राख में परिवर्तित हो गए थे । मात्र उनके दायें पैर का घुटने से नीचे वाला हिस्सा ही खोजने पर मिल सका था । इसका पता तब चला जब उनके एक सहयोगी डॉ. गॉसनेल उस कमरे में प्रविष्ट हुए जहाँ से हल्के-मीठे गंधयुक्त नीला धुआँ निकल रहा था । अस्वाभाविक मौतों के कारणों का अन्वेषण करने वाले चिकित्साशास्त्री डॉ. ग्रेनोबल के कथनानुसार किसी लाश को जलाने के लिए कम से कम २२०० डिग्री फारेनहाइट का तापक्रम की आवश्यकता पड़ती है, किन्तु डॉक्टर बेंटली अत्यधिक ठंड में जिस तरह जलकर मृत्यु को प्राप्त हुए वह अपने आप में विचित्र घटना है ।

"एक्टा मैडिका एण्ड फिलोसोफिका हैपनैशिया" नामक प्रसिद्ध पुस्तक में एक शराबी व्यक्ति के अचानक अपनी देह की ज्वाला से जलकर मर जाने का उल्लेख है । पेरिस का रहने वाला यह व्यक्ति बेहद पियक्कड़ था । एक रात चटाई पर पड़े-पड़े ही स्वतः दहन का शिकार बन गया । चटाई भी आधी झुलस गई थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फ्लोरिडा से प्रकाशित मेडीकल जनरल के अनुसार अमेरिका में अब तक इस तरह की सौ से अधिक मृत्युएँ हो चुकी हैं । इसमें वैज्ञानिकों ने हैरानी प्रकट की है कि मनुष्य शरीर में ७३ प्रतिशत भाग जल होता है । उसे जलाने के लिए ५००० डिग्री फारेनहाइट की ऊर्जा चाहिए । वह अचानक शरीर में कैसे पैदा हो जाती है । शरीर कोशों में अग्नि स्फुल्लिंग "प्रोटोप्लाज्म" में सन्निहित तो रहते हैं किन्तु वे इतने व्यवस्थित रहते हैं कि शरीर के जल जाने की कोई गुंजाइश नहीं रहती । प्रोटोप्लाज्म उच्च प्लाज्मा में बदलने पर अग्नि बन सकती है । यह सब एकाएक कैसे घटित हो जाता है और इतनी तीव्र आग की लपटें फूट पड़ती हैं कि जलांश अधिक मात्रा में रहने पर भी काया भस्मीभूत बन जाती है । इस रहस्य को वैज्ञानिक अभी तक नहीं समझ सके हैं ।

मानवी काया रहस्यमय तो है ही, अपनी जटिल संरचना के कारण विलक्षण अद्‌भुत है । सूक्ष्म संरचना का जाल जो साधना विज्ञान में नाड़ी गुच्छकों, चक्र उपत्यिकाओं, प्राणाग्नि, योगाग्नि, कुण्डलिनी आदि के नाम से जाना जाता है, सम्भव है स्वतः दहन की इन घटनाओं से जुड़ा हो । अभी शरीर के इस सूक्ष्म विद्युत संस्थान पर शोध की काफी गुंजाइश है, ऐसी चुनौती अपवाद स्वरूप होते रहने वाले ये घटनाक्रम देते हैं ।

मनुष्य है, जीता-जागता एक बिजलीघर

मनुष्य ब्रह्माण्ड का ही प्रतीक-प्रतिनिधि है । उसके अन्दर वह समस्त शक्तियाँ विद्यमान हैं, जो हमें इस विराट् विश्व में दिखाई पड़ती हैं । इसी विशेषता के कारण ऋषियों ने मानवी काया को "माइक्रो कॉस्म" कह कर अभिहित किया है । यदि प्रयासपूर्वक इस सूक्ष्म ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर प्रकट किया जा सके, तो मनुष्य सचमुच देवता के समतुल्य अलौकिक और असाधारण बन जाय । यदा-कदा उसकी यही असाधारणता अद्‌भुत विद्युत शक्ति के रूप में प्रकट और प्रत्यक्ष होती रहती है ।

घटना सन् १८४६ की है । नोरमैण्डी, फ्रांस की एक १४ वर्षीय लड़की एंगेलिक कोटिन एक दिन अपनी फैक्ट्री में काम कर रही थी कि अकस्मात् उसने देखा कि उसके संसर्ग में आने वाली वस्तुएँ उछल-उछल कर दूर छिटक जाती हैं । उसे इस पर आश्चर्य तो हुआ; पर सहसा विश्वास न हो सका कि ऐसा उसके स्पर्श के कारण ही हो रहा है । पुष्टि के लिए दस्ताने सिलने वाली मेज के ऊपर रखी एक कील को उसने छूने का प्रयास किया । उसकी उँगलियाँ ज्यों ही उसके निकट पहुँची, कील उसकी पकड़ से दूर छिटक गई । दस सप्ताह तक यह सिलसिला जारी रहा, उसके बाद ही सब कुछ सामान्य हुआ । इस बीच कोटिन एकदम असहाय बनी हुई थी । उसका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । वह जिस भी चीज के नजदीक पहुँचती अथवा स्पर्श करती, उसमें विचित्र हलचल होने लगती । कुर्सी में बैठने का उपक्रम करते ही वह खिसक कर आगे बढ़ जाती, बिस्तर बुरी तरह काँपने लगते, रसोईघर में प्रवेश करते ही बर्तन खनकने लगते और समीप पहुँचते ही इधर-उधर उछलकर गिरने लगते । पुस्तक, भोजन, वस्त्र आदि हर वस्तु के साथ यह विचित्रता दिखाई पड़ती ।

बाद में पेरिस के "अकादमी ऑफ साइन्स" के विशेषज्ञों द्वारा सूक्ष्मता से उस लड़की का अध्ययन किया गया; पर विशेषज्ञ दल यह बताने में बिल्कुल असमर्थ रहे कि ऐसा क्यों कर होता है । उन्होंने इस बात से भी इन्कार किया कि यह विद्युत चुम्बकीयता से सम्बन्धित कोई घटना है । उनका तर्क था कि इसमें वस्तुएँ व्यक्ति से चिपकती हैं, विकर्षित नहीं होतीं । उनके अनुसार यह शरीर-शक्ति का ही कोई परिवर्तित रूप था ।

दूसरी घटना १८६० की है और इसकी प्रकृति पहली से कुछ भिन्न है । मामला तब प्रकाश में आया, जब लुईस हैम्बर्गर नामक एक युवक एक दिन अपने वर्कशाप में काम करने गया । उसने देखा कि उसकी उपस्थिति से धात्विक पुर्जों में कुछ अनूठी हलचल हो रही है । अब उनमें से एक पुर्जे को उठाने की कोशिश की, तो पकड़ने से पूर्व ही वह उसकी उँगलियों में आ चिपका । जब उसके सामने आलपिनों से भरा एक डिब्बा रखा गया, तो पिन डिब्बे से कूद-कूद कर उसकी खुली हथेली से चिपकने लगीं । बाद में परस्पर चिपकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हुई पिनों की एक लम्बी शृंखला बन गई । यह कौतुक "मेरीलैण्ड कॉलेज ऑफ फार्मेसी, बाल्टीमोर" के वैज्ञानिकों के सम्मुख हो रहा था, जो बाल्टीमोर के इस अद्भुत युवक की जाँच करने के विचार से उपस्थित हुए थे । लम्बी पड़ताल के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में वे इतना ही कहते पाये गए कि घटना की व्याख्या विज्ञान द्वारा सम्भव नहीं; कदाचित् यह कोई रहस्यमय प्रसंग है, जिसमें शरीर की सूक्ष्म शक्ति किसी कारणवश अकस्मात् फूट पड़ती हो । इसकी भलीभाँति व्याख्या रहस्यवाद ही करने में सक्षम है ।

एक प्रसंग १९३८ का है । न्यूयार्क की " यूनिवर्सल काउंसिल फोर साइकिक रिसर्च" नामक संस्था ने एक पुरस्कार की घोषणा करते हुए कहा कि जो कोई वस्तुओं को अपनी मानसिक शक्ति द्वारा आकर्षित अथवा विकर्षित करने का कौशल प्रदर्शित कर अपनी दक्षता सिद्ध करेगा, उसे १० हजार डालर इनाम दिया जायेगा । इसके उपरान्त न्यूयार्क की एक महिला एण्ट्वायन टिमर आगे आयी और चुनौती स्वीकार की । एक प्रदर्शन के दौरान लोगों ने देखा कि रसोईघर के बर्तन उसके हाथों से इस बुरी तरह चिपक गए कि मुश्किल से ही उन्हें अलग किया जा सका ।

कई बार इस क्रम में लोगों के जमीन से चिपकने का भी प्रकरण सामने आते देखा गया है । ऐसा ही एक मामला जोपलिन, मिसूरी में तब देखने में आया, जब फ्रेंक मैककिन्स्ट्री नामक एक युवक प्रातः भ्रमण के लिए निकला । कुछ देर चलने के पश्चात् रास्ते में उसका मित्र जान ड्यूक मिल गया । वह मित्र से बातें करने लगा । जब पुनः चलना चाहा तो उसने अनुभव किया कि किसी शक्ति ने उसके पैरों को जमीन से जकड़ रखा है । बहुत कोशिश के पश्चात् भी वह आगे बढ़ने में सफल न हो सका, तो अन्ततः आगे बढ़ गए दोस्त को आवाज दी । ड्यूक ने बलपूर्वक उसे उस स्थिति से मुक्त किया । फिर जब कभी फ्रेंक को इस दशा का आभास मिलता, वह चलते हुए बाहर कभी नहीं रुकता ।

यदा-कदा इस प्रकार की विद्युत चुम्बकीय सक्रियता अस्वस्थता की स्थिति में देखी जाती है । घटना जनवरी १८३७ की है । ऑक्सफोर्ड, न्यूहेम्पशायर की एक महिला जेनी बीमार पड़ी तो उसकी उँगलियों से करीब डेढ़ इंच लम्बी विद्युत किरणें निकलने लगीं । डॉक्टरों को इसका कारण किसी प्रकार समझ में न आया कई प्रकार के उपचार इन्हें रोकने के लिए किए गए, पर सब निष्फल साबित हुए । अन्त में छः सप्ताह बाद वह स्वयं रुक गई ।

ऐसा ही एक प्रकरण उस समय सामने आया, जब १८७६ की गर्मियों में ओण्टेरियो, लंदन की एक १६ वर्षीय लड़की कैरोलीन क्लेयर सांघातिक तंत्रिका रोग से मुक्त हो रही थी । उसने देखा कि धात्विक वस्तुओं के समीप पहुँचते ही वह उछल-उछल कर उसके हाथ-पैरों से चिपकने लगती है । चिपकाव इतना मजबूत होता कि प्रयासपूर्वक ही उसे समाप्त कर पाना शक्य होता । कुछ दिनों बाद वह सामान्य बन गई ।

सन् १९२० में न्यूयार्क की एक जेल में विषाक्त भोजन की एक घटना के उपरांत इसी तरह का मामला घटित हुआ । जिन लोगों ने इस भोजन को ग्रहण किया, उनमें से आधे से अधिक लोगों में विद्युत चुम्बकीयता दिखाई पड़ी । कागज के टुकड़े, आलपिन, हेयरपिन आदि उनकी ओर स्वतः आकर्षित होते देखे गए । वे कम्पास सुई को भी हाथ की हलचल से इच्छानुवर्ती दिशा में घुमा सकते थे ।

सन् १९६० के दशक में लन्दन, इंग्लैण्ड में विद्युत चुम्बकीयता की एक बड़ी ही अजीबोगरीब घटना देखने को मिली । ग्रेस चार्ल्सवर्थ अपने लन्दन स्थित मकान में विगत चालीस वर्षों से रह रही थी । सब कुछ सामान्य था; पर पिछले दो वर्षों से उसे एक विचित्र अनुभूति हो रही थी । चार्ल्सवर्थ जब भी अपने कमरे की कोई वस्तु छूती, उसे गहरा विद्युतीय आघात अनुभव होता; बिस्तर पर पड़ते ही वह तीव्र कम्पन महसूस करने लगती; कभी-कभी उसे दीवारों पर विद्युत चिन्गारियाँ चमकती दिखाई पड़तीं । जब वैज्ञानिकों ने उसके मकान की जाँच की, तो वहाँ कुछ भी असामान्यता नजर नहीं आया । विशेषज्ञों का कहना था कि बिजली के जो झटके चार्ल्सवर्थ अनुभव करती हैं वह कहीं बाहर के न होकर स्वयं उसके शरीर के हैं ।

शरीर-विद्युत के हाल की घटनाओं में सबसे प्रमुख दो हैं । दोनों ही इंग्लैण्ड की हैं । प्रथम घटना १९७३ की है । लन्दन की सोफिया नामक महिला को तब कुछ आश्चर्य हुआ, जब वह चालू टेलीविजन के निकट आयी और उसके आते ही टेलीविजन गड़बड़ा गया । उस समय

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसने इसे संयोग मान लिया; पर कुछ घंटे उपरान्त जब वह बजते रेडियो के नजदीक आयी, तो अकस्मात् उसमें भी खराबी आ गई । इसी समय उसे टेलीविजन की बात याद आयी । वह रेडियो को यथावत् छोड़कर थोड़ा पीछे खिसक गई । ट्रांजिस्टर फिर से बजने लगा । अब उसे इसका रहस्य समझ में आया कि ऐसा उसके स्वयं के कारण होता है । पुष्टि के लिए उसने एकबार टेलीविजन फिर से खोला । टी.वी. किसी खराबी का संकेत दे रहा था । वह पाँच-छः फुट पीछे आ गई । उसके पीछे हटते ही टी. वी. सामान्य हो गया और उसमें कार्यक्रम आने लगा । इस प्रकार कई बार आगे-पीछे होकर उसने यह सुनिश्चित कर लिया कि यन्त्र में सामयिक खराबी की निमित्त वह स्वयं है । दूसरी घटना जैकलीन प्रीस्टमैन नामक मैनचेस्टर, इंग्लैण्ड की एक नारी से सम्बन्धित है । जब जैकलीन अपने वैक्यूम क्लीनर, स्वचालित टिकट मशीन, टी. वी. सेट, रेडियोसेट के पास पहुँचती, तो वे अनायास चल पड़ते । उसके वहाँ से दूर जाते ही यन्त्र पुनः पूर्ववत् हो जाते । महिला की जाँच करने पर उसमें उच्च वोल्टेज की काय-विद्युत पायी गई ।

प्रस्तुत प्रकरणों से यही निष्कर्ष सामने आता है कि मनुष्य एक चलता-फिरता चुम्बक एवं बिजलीघर है और उसमें वैसी ही विद्युत विद्यमान है, जो यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा उपलब्ध होती है । किसी आंतरिक गड़बड़ी के कारण जब वह बाहर आती है, तो वैसा ही प्रमाण-परिचय देने लगती है, जैसा बाह्य विद्युत । पर यह उस विशाल शक्ति-भण्डार की अगणित विभूतियों का एक प्रमाण मात्र हुआ । यदि उस भण्डागार को सम्पूर्ण रूप से जागृत किया जा सके, तो इस प्रकार की अनेकानेक शक्तिधाराओं को हस्तगत किया जा सकता है । तब मनुष्य साधारण न रह कर असाधारण शक्तिसम्पन्न देवमानव-महामानव बन सकता है । हम सबको इसी दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास-अभ्यास करना चाहिए ।

काय बिन्दु में समाया सिन्धु

स्थूल दृष्टि से हमारा शरीर रक्त, माँस का बना कायकलेवर भर प्रतीत होता है । इसीलिए जन-सामान्य इसका उपयोग खाने-कमाने के तुच्छ प्रयोजनों तक ही सीमित रखता है, पर वस्तु-स्थिति ऐसी है नहीं । इसका दृश्यमान स्वरूप जितना कुछ दीखता है, वही सब कुछ नहीं । इसमें इतनी असीम क्षमताएँ और ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में ऐसी निधियाँ छिपी पड़ी हैं, जो काय-बिन्दु में सिन्धु के समाये होने का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं । आये दिन विलक्षण इन्द्रियातीत सामर्थ्य के रूप में इस बात के उदाहरण मिलते ही रहते हैं । इटली में इस सदी के प्रारम्भ में एक ऐसी अंधी लड़की पायी गई थी जो अपने नासाग्र और कर्ण के पिन्ना (बाह्य कर्ण) से देख सकती थी । जब कोई अचानक तेज रोशनी उसकी नाक अथवा कान पर डाली जाती तो वह चौंक उठती थी । सन् १९५६ में स्काटलैण्ड में एक अंधा छात्र शोधकर्त्ताओं ने ढूँढ़ निकाला जो विभिन्न प्रकार के रंगीन-प्रकाशों में विभेद कर सकने में सक्षम था । कुछ फुट दूरी पर रखी हुई अनेक वस्तुओं में से सबसे चमकीली वस्तु के बारे में बताने की क्षमता उसमें थी ।

ये जो क्षमताएँ चक्षु विहिन व्यक्तियों में अनायास ही विकसित हो जाती हैं, उन्हें अन्यान्य इन्द्रियों के माध्यम से वे लाभ देती हैं जो उन्हें दुर्भाग्यवश सामान्य क्रमानुसार नहीं मिला ।

सन् १९६० में वर्जीनिया की एक लड़की जो अतीन्द्रिय क्षमताओं से सम्पन्न समझी जाती थी, उस पर वहाँ के एक मेडिकल बोर्ड के विशेषज्ञों ने सच्चाई जानने के लिए अनेक प्रयोग किए । उसकी आँखों पर मोटी पट्टी बाँध दी गई, किन्तु फिर भी वह देखने में सक्षम थी और किताबों को पढ़ सकती थी । इसी प्रकार का एक प्रयोग न्यूयार्क के बर्नार्ड कॉलेज के मनोविज्ञानी डॉ. रिचार्ड ने सम्पन्न किया । उन्होंने अमेरिका की एक महिला की आँखों पर पट्टी बाँधकर विभिन्न रंगों की जाँच करने को कहा । उक्त महिला ने उँगलियों के सहारे सभी रंगों की यथावत् जाँच कर सही बताया । डॉ. रिचार्ड का कहना है कि प्रत्येक रंग से अलग-अलग ताप तरंगें निकलती हैं । किसी-किसी की त्वचा इन्द्रियों में उन तरंगों के अन्तर को समझने की क्षमता भी विकसित हो सकती है । उसी आधार पर रंगों की विविधता पहचानना उनके द्वारा सम्भव होता है । ब्रेल लिपि का आविष्कार तो बाद में हुआ किन्तु यह विभूति मानव की चिर पुरातन अमूल्य थाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फ्रांस में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद डॉ. जूल्स रोमैन ने सैकड़ों अंधे व्यक्तियों पर दृष्टि सम्बन्धी प्रयोग, परीक्षण किए और पाया कि उनमें से कुछ प्रकाश और अन्धकार की उपस्थिति को अत्यन्त दक्षतापूर्वक बता सकने में समर्थ थे ।

आखिर मनुष्य इस क्षमता को कैसे अर्जित कर लेता है ? इस सन्दर्भ में अनेकानेक प्रयोग-परीक्षणों के उपरान्त वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मनुष्य की त्वचा में असंख्य "कीट नेत्र" होते हैं, जो अतिसम्वेदनशील होते हैं और नेत्रों से अधिक जानकारी देते हैं । जब प्रयास पूर्वक व्यक्ति इन्हें विकसित कर लेता है तो वह अन्य अंग-अवयवों से भी देखने में सक्षम हो जाता है ।

'जर्नल ऑफ मेडीकल हिप्नोटिज्म, ने पचासवें दशक में एक ऐसा ही समाचार छापकर बताया था कि बैंकाक में तो एक संस्था ही काम करती है जो अन्धों को गालों से देखने का प्रशिक्षण देती है । उसके संचालकों का दावा है कि मनुष्य के गाल शरीर भर के समस्त अंगों की अपेक्षा अतिसम्वेदनशील हैं और उनमें सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्तियों का प्रचुर प्रवाह विद्यमान रहता है ।

शरीर के अन्यान्य अवयवों से देखने और पुस्तकें पढ़ने की घटनाएँ तो सामने आती ही रहती हैं पर कई बार देखा यह जाता है कि व्यक्ति अपने दूसरे अंगों से सुनने में भी समर्थ होता है । इसी प्रकार का एक प्रसंग सन् १८८४ में प्रकाश में आया । न्यूयार्क में ऐजेशेल नामक एक व्यापारी था उसके कानों के सूराख पूर्णतया बन्द थे, फिर भी वह कान वाले व्यक्तियों से सुनने में किसी भी प्रकार कमजोर नहीं था । इतना अवश्य था कि सुनने के प्रयास में उसे अपना मुँह खोलना पड़ता था । मुँह ही उसके कान थे ।

मनुष्य की इस क्षमता की सच्चाई जानने के लिए वैज्ञानिकों और मनोवैज्ञानिकों ने भी अनेक प्रकार के प्रयोग-परीक्षण किए ।

ऐसा ही एक प्रयोग लन्दन यूनिवर्सिटी में सन् १९३७ में किया गया । प्रयोगकर्त्ता थे, विश्वविद्यालय के मूर्धन्य गणितज्ञ एस. जी. सोल तथा जिस पर परीक्षण किया गया, वह थे जाने-माने अतीन्द्रिय सम्पन्न फ्रेडरिक मैरियन ।

प्रयोग के आरम्भ में मैरियन को एक रूमाल दिया गया । कुछ क्षण तक वह इसे निहारते रहे । फिर रूमाल को एक प्रयोगकर्त्ता को देकर वह सोल के साथ कमरे से बाहर आ गए । तत्पश्चात् कमरे को अन्दर से बन्द कर लिया गया और कमरे में स्थित टीन के छः बक्सों में से एक में रूमाल को रखा गया । अब मैरियन को पुनः कमरे में बुलाया गया और रूमाल ढूँढ़ने को कहा गया । कुछ क्षण तक मैरियन उन बक्सों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहे फिर एक बक्से के नजदीक आकर रुक गए । बक्से को खोलने पर रूमाल उसी के अन्दर पाया गया ।

प्रयोग प्रामाणिक लोगों के मध्य किया गया था और किसी प्रकार की धोखाधड़ी से बचने के लिए पूरी सावधानी बरती गई थी । प्रयोग के अन्त में उपस्थित लोगों को उनकी अतीन्द्रिय सामर्थ्य को स्वीकारना पड़ा । एक अन्य प्रकार के प्रयोग में डॉ. जे. जी. प्राट प्रयोगकर्त्ता थे और हर्बर्ट पियर्स सब्जेक्ट । दोनों सौ गज के फासले पर स्थित दो पृथक इमारतों में चले गए । प्रयोग का समय पूर्व निर्धारित था । जब निश्चित समय हुआ तो प्राट ने विभिन्न प्रकार की आकृतियों के कार्डों का गठ्ठर उठाया और कार्डों को एक-एक कर बिना उसके चित्रों को देखे पृथक रखने लगा । जब यह प्रक्रिया समाप्त हो गई तो उन्होंने कार्डों के नम्बरों को उसी क्रम में नोट कर लिया । उधर दूसरे मकान में बैठा पियर्स भी अनुमानित चित्रों की आकृतियाँ उसी क्रम में एक कागज पर बनाता गया । प्रयोग के अन्त में दोनों ने अपने-अपने रिकॉर्ड को सील-बन्द कर तत्कालीन ई. एस. पी. शोधकर्त्ता डॉ. जे. बी. राइन जो स्वयं भी इस प्रयोग में भाग ले रहे थे, को सुपुर्द कर दिया । राइन ने उनकी लिस्टों का परस्पर मिलान किया, तो चकित रह गए । दोनों की सूची असाधारण रूप से मिल रही थी ।

सन् १९३३ की इस शृंखला में डॉ. जे. जी. प्राट और हर्बर्ट पियर्स ने अनेकानेक प्रयोग किए । हर प्रयोग से मनुष्य में विद्यमान इस असाधारण क्षमता की पुष्टि ही हुई । पेरिस में फेकल्टी ऑफ मेडीसन में फिजियोलॉजी विभाग के प्रवक्ता डॉ. चार्ल्स रिचैट तथा ट्यूरिन यूनीवर्सिटी में कार्यरत पैथालॉजीकल एनॉटामी के प्रवक्ता डॉ. एण्डरसन ने भी वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर मनुष्य में पाये जाने वाली विलक्षण क्षमताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेकोस्लोवाकिया के परामनोविज्ञानवेत्ता मेलिनरिज्ल और लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक बेसिलियेव इस विलक्षणता के कायल हैं और वे इसे मनुष्य के भीतर रहने वाली विशिष्टता ही मानते हैं, जो एक प्रकृति प्रदत्त गुण है । उनका कहना है कि हमारी काया देखने में भले ही सामान्य प्रतीत होती हो, पर वस्तुतः यह असामान्य शक्तियों से भरी पड़ी है । इस दिशा में यदि थोड़ा प्रयास भर किया जाय, तो हर व्यक्ति इस प्रसुप्त सामर्थ्य को अपने अन्दर विकसित कर उससे लाभान्वित हो सकता है ।

सम्भवतः इसी तथ्य को दृष्टिगत रख उपनिषद्कार ने इन्द्रिजन्य ज्ञान व उससे परे के इन्द्रियातीत ज्ञान का रहस्योद्घाटन करते हुए लिखा है—

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं
सऽड प्राणस्य प्राणः ।
चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्या
स्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

—केनोपनिषद्

अर्थात् "यह श्रोत्र का श्रोत्र है, मन का मन है वाणी की वाणी है, प्राण का प्राण है तथा चक्षु का चक्षु है । धीर पुरुष (मनीषी) इनमें से (इन्द्रिय कार्यों में से) आत्म तत्व को पृथक करके इन्द्रियबद्ध जीवन से ऊपर उठकर अमृतत्व को प्राप्त करते हैं ।"

काया में समाया ऊर्जा का जखीरा

मानवी चेतना के विकास में विद्युत चुम्बकीय शक्ति प्राण ऊर्जा की जीवन्त भूमिका होती है । इसमें घट-बढ़ होने पर शारीरिक और मानसिक सन्तुलन गड़बड़ा जाता है और व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है । परामनोविज्ञानियों के अनुसार विश्व ब्रह्माण्ड के निर्माण में भाग लेने वाले तत्वों के सूक्ष्म एवं दिव्य परमाणुओं से मनुष्य का शरीर विनिर्मित होता है । सृष्टि का हर कण विद्युत आवेशित अणु-परमाणुओं से बना होता है जिनमें सतत प्रकम्पन होता रहता है । परमशून्य तापमान से ऊपर की अवस्था में एक प्रकार की विद्युत चुम्बकीय तरंगें निकलती रहती हैं जिसे रेडिएण्ट-एनर्जी कहते हैं । इस ऊर्जा की तरंग लम्बाई ०.०००१ से लेकर ३ × $१०^{१४}$ एंग्स्टार्म और इनकी आवृत्तियाँ १ × $१०^{११}$ से लेकर अनन्त तक होती हैं । मनुष्य का शरीर भी इन आवेशित तरंगों को छोड़ता और ग्रहण करता रहता है ।

"इलेक्ट्रोमैगनेटिक थ्योरी ऑफ लाइफ" के पुरोगामी मूर्धन्य शरीर शास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो. एस. बर्र एवं मनःचिकित्साशास्त्री लियोनार्ड जे. राविज के अनुसार इलेक्ट्रोमैगनेटिक फील्ड मनुष्य के विकास की गति को तेज करती है और जीवित प्रोटोप्लाज्म के टूट-फूट की मरम्मत का दिशानिर्देशन करती है । वैज्ञानिक द्वय ने इस प्राण विद्युत को 'लाइफ-फील्ड' नाम से सम्बोधित किया है । इनका कहना है कि यही वह तत्व है जिसका अपने में अधिकाधिक विकास करके विश्व समाज की दिशाधारा को श्रेष्ठता की ओर मोड़ देने वाले महामानवों ने अपने जीवनकाल में प्रत्यक्ष चमत्कार कर दिखाया । हिटलर नेपोलियन एवं सिकन्दर जैसे व्यक्तियों ने प्राण ऊर्जा का दुरुपयोग अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में किया और विनष्ट हुए ।

मूर्धन्य वैज्ञानिक ग्लिफोरो सी. फर्नास ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "नेक्स्ट हण्ड्रेड ईयर्स" में लिखा है कि मनुष्य शरीर का निर्माण जटिल प्रोटीन अणुओं से बने एक निषेचित अंडे से आरम्भ होता है जिसके विभाजन और विकास से विभिन्न ऊतकों का निर्माण होता है । ऊतकों से अंग अवयवों एवं शरीरिक ढाँचे का निर्माण होता है । प्रत्येक कोशिका की संरचना में कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, सल्फर जैसे अनेकों तत्व भाग लेते हैं । प्रत्येक कोशिका की उत्पत्ति विद्युत इकाई—वेव पॉकेट के रूप में होती है । एक स्वस्थ युवा मनुष्य का शरीर १० शंख कोशिकाओं से मिलकर बना होता है । इस प्रकार हर व्यक्ति का शरीर १० × $१०^{२८}$ वेव पैकेट्स विद्युत ऊर्जा का समूह होता है । शरीर के समस्त अंग अवयवों एवं क्रिया-कलापों का संचालन तथा नियन्त्रण तंत्रिका तन्त्र के केन्द्र संस्थान मस्तिष्क द्वारा होता है जिसके निर्माण में लगभग १० अरब न्यूरॉन्स भाग लेते हैं । प्रत्येक न्यूरॉन का अपना विद्युत आवेश होता है और प्रत्येक कोशिका अपने आप में पूर्णतया चार्ज की हुई एक छोटी विद्युत बैटरी होती है । तंत्रिका तन्त्र विशेषज्ञ डॉ. एस. क्लोज के अनुसार केन्द्रिय तंत्रिका तन्त्र की तुलना डायनमो से की जा सकती है जिससे विद्युत का उत्पादन होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न्यूयार्क सिटी के बेल टेलीफोन लैबोरेटरी में अनुसंधानरत वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि मनुष्य के शरीर के निर्माण में भाग लेने वाले घटक सतत प्रकम्पित होते रहते हैं और उनसे ८० अरब साइकल्स प्रति सेकण्ड की दर से प्राण विद्युत—विद्युत चुम्बकीय तरंगों का विकिरण होता रहता है ।

सुविख्यात चिकित्सक डॉ. मार्टन ह्वाइटले ने अपनी पुस्तक "थ्योरी ऑफ लाइफ डिजीज एण्ड हेल्थ" में कहा है कि मनुष्य का जीवन तभी तक दिखाई देता और क्रियाशील रहता है जब तक शरीर के समस्त ऊतकों की समष्टिगत ऊर्जा वैद्युतीय ऊर्जा के रूप में विद्यमान रहती है । यही ऊर्जा विद्युत तरंगों के रूप में शरीर के नस-नस में दौड़ती है जिसे वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से मापा जा सकता है ।

ग्लासगो के प्रख्यात चिकित्सा विज्ञानी डॉ. विलियम ई. ब्यायड ने मानव मस्तिष्क और शरीर के अंतः सम्बन्धों पर कई वर्षों तक गहन अनुसंधान किया और पाया कि प्रत्येक व्यक्ति का शरीर एक प्रकार की इलेक्ट्रिकल फील्ड द्वारा घिरा रहता है । त्वचा में अन्तर्निहित विद्युतीय ऊर्जा को मापा जा सकता है । मस्तिष्क की कार्यक्षमता विद्युतीय शक्ति पर निर्भर करती है । इसमें कमी आने पर मनुष्य अनेक बीमारियों से घिर जाता है । मस्तिष्कीय विद्युत ऊर्जा को इनसे फैलोग्राफी (ई. ई. जी.) के माध्यम से जाना और मापा जाता है । शरीर से निसृत होने वाली वैद्युतीय तरंगों के मापन के लिए ब्यायड ने 'इमैनोमीटर' नामक एक विशेष उपकरण का आविष्कार किया और उसके माध्यम से शरीर में रोगों की उपस्थिति से निकलने वाले विकिरणों और दवाइयों के प्रयोग के बाद के विकिरणों का अध्ययन किया । विभिन्न रोगियों के मस्तिष्क और शरीर के मध्य चलने वाले परिसंवादों का अध्ययन भी उन्होंने कैथोड रे ओसिलोग्राफ उपकरण के माध्यम से किया और पाया कि मनुष्य का शरीर उसकी इच्छाओं, भावनाओं और विचारणाओं द्वारा संचालित है । इनकी ऊर्ध्वगामिता होने पर मस्तिष्कीय एवं शारीरिक विद्युत ऊर्जा के भण्डार में अभिवृद्धि होती है । इच्छा, विचारणा और भावना की निम्नगामिता पर प्राण ऊर्जा की संचित पूँजी भी समाप्त हो जाती है और मनुष्य दीन-हीन, दयनीय एवं रुग्णावस्था में जा पहुँचता है ।

चिकित्सा विज्ञानियों ने अपना ध्यान अब मनुष्य शरीर से विसर्जित होने वाली विद्युत ऊर्जा की ओर केन्द्रित किया है और इसका उपयोग रोग निवारण में करने लगे हैं । सुविख्यात वैज्ञानिक श्री एल. ई. ईमान ने अनेक रोगियों को इस विधि से रोगमुक्त कराया है । अपनी पुस्तक "कोऑपरेटिव हीलिंग-द क्यूरेटिव प्रापर्टीज ऑफ ह्यूमन रेडिएशन" में श्री ईमान ने बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति का सिर तथा दायाँ हाथ और दायाँ पैर वाला शरीर का आधा भाग विद्युत चुम्बकीय धनात्मक होता है तथा मेरुदण्ड एवं बायें हाथ और पैर की ओर ऋणात्मक आवेश होता है । विशेष प्रकार के ताम्र तार और कॉपर गॉज से शरीर के विपरीत ध्रुवों को जोड़ देने से एक पूर्ण विद्युत सर्किट बन जाता है । एक व्यक्ति के शरीर पर अथवा सामूहिक रूप से कई व्यक्तियों के शरीरों के मध्य विद्युत सर्किट कायम करके एक-दूसरे को लाभ पहुँचाया जा सकता है । काया के विपरीत ध्रुवों को विद्युत सुचालक तारों से किसी भी सर्किट में जोड़ने पर लाभकारी परिणाम न केवल स्वास्थ्य संवर्धन के रूप में अपितु बायोफीड बैक द्वारा प्रसुप्त के जागरण के रूप में मिल सकते हैं ।

काया की विद्युतीय क्षमता का विश्लेषण और विवेचन तभी सार्थक हैं जब उस ऊर्जा का सदुपयोग सुनियोजन किया जाय । अपार सम्पदा में से थोड़ा-सा भाग काम में आता है तो विलक्षण मेधा, वैज्ञानिक गवेषणात्मक बुद्धि एवं असीम जिजीविषा के रूप में दिखाई देता है । यदि शेष बची सम्पदा जो हिमखण्ड की तरह जल के नीचे छिपी पड़ी है, को योग साधनाओं आध्यात्म उपचारों द्वारा प्रभावित किया जा सके तो मानव उन अगणित विभूतियों से सम्पन्न हो सकता है, जिन्हें हम सिद्धियों के रूप में जानते हैं ।

मानवी काया में सन्निहित ऊर्जा भण्डार

प्राण विद्या को पंचाग्नि साधना का वर्णन एवं विधान वस्तुतः चेतना क्षेत्र की ऊर्जा का ही प्रयोग परिचय है । प्राणायाम के अनेकानेक विधानों में उसी क्षमता के अनेक रूपों का उत्पादन एवं प्रयोग की रीति-नीति का विवरण बताया एवं विस्तार सिखाया जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेहरे पर आँखों में इसी की चमक होती है । वाणी में मिठास भी इसी की होती है और सिंह जैसी गर्जन भी । दूसरों पर प्रभाव डालना इसी के माध्यम से बन पड़ता है । प्राण विद्युत सम्पर्क में आने वालों को चुम्बक की तरह खींचती और अपनी विशेषताओं से प्रभावित करती है । ऋषि आश्रमों के इर्द-गिर्द उनमें निवासियों का प्राण छाया रहता है और उसका प्रभाव हिंस्र पशुओं तक पर पड़ता है । सिंह, गाय एक घाट पर पानी पीने की घटनाएँ ऐसे ही क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होती हैं । नारद के प्रभाव से वाल्मीकि और बुद्ध के सान्निध्य में अंगुलिमाल का काया-कल्प हो जाना ऐसे ही प्रचण्ड प्राण प्रहार का प्रतिफल है । कुसंग और सत्संग में यही प्राण ऊर्जा विशेष रूप से काम करती है ।

यह प्राणाग्नि होती तो हर किसी में है किन्तु उसकी न्यूनाधिकता प्राणि विशेष की स्थिति पर निर्भर है । आचरणों और साधनों से उसे घटाया-बढ़ाया भी जाता है । अनाचारी असंयमी उसे घटाते-घटाते जीवित रहते हुए निष्प्राण स्तर के दीन-दुर्बल बनते चले जाते हैं जबकि संयमी ब्रह्मचारी तपस्वी उसे बढ़ाते चलते हैं और अभिवृद्धि का परिचय बढ़ी-चढ़ी प्रतिभा प्रखरता के रूप में देते हैं ।

यह प्राणाग्नि कई बार प्रयत्नपूर्वक प्रकट की जा सकती है और कई बार अनायास ही अप्रत्याशित रूप से उभरती है । पौराणिक गाथा के अनुसार शिव-पत्नी सती ने पितृगृह में अपने शरीर से ही योगाग्नि प्रकट करके शरीर दाह किया था । अन्य योगियों के बारे में भी ऐसी ही गाथाएँ मिलती हैं जिन्होंने शरीरान्त के समय अन्य किसी के द्वारा अन्त्येष्टि किए जाने की प्रतीक्षा न करके अपने भीतर से ही अग्नि प्रकट की थी और काया को भस्मसात कर लिया था । शाप देकर दूसरों को भस्म कर देने के तो कितने ही कथानक हैं । शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था और दमयन्ती के शाप से व्याध जलकर भस्म हो गया था । भस्मासुर ने तो इस विशिष्टता को अपनी तपस्या के सहारे एक सिद्धि के रूप में ही प्राप्त कर लिया था वह किसी पर भी हाथ रखकर उसे भस्म कर सकता था ।

यह प्राणाग्नि के प्रत्यनपूर्वक किए गए प्रयोग हुए । इसके पीछे कुछ उद्देश्य और प्रयोग भी हैं पर आश्चर्य तब होता है जब कायिक ऊर्जा अनायास ही किसी-किसी के शरीर से फूट पड़ती है और अपनी काया को ही नहीं समीपवर्ती सामान को भी जलाने लगती है । ऐसे प्रमाणों के सरकारी अभिलेखों में कितने ही विवरण उपलब्ध हैं जिनमें बिना किसी दूसरे द्वारा वैसा कुछ किए जाने या स्वयं भी आत्मघात जैसा प्रयत्न न करने पर भी अनायास ही व्यक्ति विशेष के शरीर से अग्नि प्रकट हुई और उसने अग्निकाण्ड जैसा दृश्य उपस्थित कर दिया । कड़ी जाँच-पड़ताल से भी यह प्रमाणित न हो सका कि यह दुर्घटना बाहर से जलाई गई किसी अग्नि के द्वारा हो सकी ।

स्वतः किसी शरीर में से प्राणाग्नि प्रकट होने की घटनाओं का विवरण सत्रहवीं सदी के बाद में खोजा और पंजीकृत किया गया है । उनमें कितनी ही घटनाएँ प्रकाशित पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं । जहाँ इस प्रकार की जाँच-पड़ताल की व्यवस्था नहीं है वहाँ भी कुछ ऐसा ही होता रहता होगा, पर उसका प्रामाणिक उल्लेख न होने से ऐसी चर्चा का विषय नहीं बनाया जा सकता जिसके सहारे किसी तथ्य तक पहुँचने का प्रयास किया जा सके ।

प्रामाणिक घटनाओं में से कुछ उल्लेख उपलब्ध हैं—

१३ जनवरी, १९४३ को ५२ वर्षीय एलन एम. स्माल का जला हुआ शरीर डियर इस्ले, मेन स्थित उनके मकान से बरामद किया गया । शरीर के नीचे बिछा हुआ कार्पेट झुलस गया था । इसके अतिरिक्त कमरे की किसी भी वस्तु पर आग का कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

२९ जुलाई १९३८ को श्रीमती मेरी कार्पेण्टर अपने पति एवं बच्चे के साथ नाव पर सवार होकर नारफाक, इंग्लैण्ड में छुट्टियाँ व्यतीत करने जा रही थीं । नाव पर ही अचानक उनका शरीर चारों तरफ से अग्नि ज्वाला से घिर गया और कुछ ही मिनटों के अन्दर जीता जागता शरीर जले हुए शव में परिणत हो गया । नाव पर बैठे किसी अन्य व्यक्ति को आँच तक नहीं लगी और नाव की भी कोई क्षति नहीं हुई । निरीक्षण करने वाले ऑफिसर ने कहा—"माना उसके कपड़े से आग लगी परन्तु मेरी समझ में नहीं आता यह सब कैसे घटित हुआ ।"

सन् १९०४ के अन्त में इंग्लैण्ड के लिंकन शायर प्रान्त में स्थित बिन ब्रूक पुरोहिताश्रम में दिसम्बर महीने में एक अजीबो-गरीब घटना घटित हुई । पुरोहिताश्रम के इस विशाल भवन में अचानक तीन बार आग लगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिससे भवन का बहुत-सा हिस्सा जलकर नष्ट हो गया । आग लगने के कारणों का पता अज्ञात ही बना रहा । एक महीने बाद बिन ब्रूक का एक किसान अपने रसोई घर में गया जहाँ नौकरानी लड़की झाड़ू लगा रही थी । उसके पीठ से लम्बी-लम्बी लपटें निकल रही थीं । किसान ने आवाज लगाई और तुरन्त ही उस लड़की पर झपट पड़ा । आग निकलने वाले स्थान पर हाथ से ढक दिया और आग बुझ गई । परन्तु तब तक लड़की बुरी तरह से जल चुकी थी ।

प्रोफेसर जेम्स हैमिल्टन 'टेनेसी' प्रान्त के नशेवाइल विश्वविद्यालय में कार्यरत थे । ५ जनवरी, १८३५ को विश्वविद्यालय से वापस घर आये जो तीन-चौथाई मील की दूरी पर था । घर के बाहर दीवाल पर टँगे हुए हाइग्रोमीटर को देखा उस समय शून्य से भी ८ डिग्री तापमान कम था ।

अचानक हैमिल्टन को बायें जंघे पर बिच्छू के डंक मारने जैसी वेदना महसूस हुई । उस स्थान पर गर्मी भी अत्यधिक लग रही थी । नजर पड़ते ही उन्होंने देखा कि उस स्थान से कई इंच लम्बी चमकीली लपटें निकल रही थीं । हैमिल्टन को उपाय सूझा और उस स्थान को हाथ से ढककर ऑक्सीजन की सप्लाई को रोक दिया । थोड़ी देर बाद ज्वाला शान्त हो गई ।

घर जाकर कपड़े उतारे और घाव का निरीक्षण किया । तीन-चौथाई चौड़ा और तीन इंच गहरा घाव था । घाव वाले स्थान पर पैंट के जल जाने से उसमें एक छोटा-सा छिद्र हो गया था । घाव की मरहम पट्टी टेनेसी के प्रख्यात डॉ. जान ओवर्टन एम. डी. की देख-रेख में सम्पन्न हुआ । इस छिद्र को भरने में ३२ दिन लगे ।

सन् १८४७ में फ्रांस में एक ७१ वर्षीय बूढ़े की मृत्यु स्वतः प्रवर्तित अग्नि में जल जाने के कारण हुई । कोर्ट ने इसे हत्या का मामला मानकर मृतक के पुत्र और जमाई को गिरफ्तार कर लिया । दोनों पर वृद्ध को मार डालने और जला देने का संगीन अपराध थोपा गया ।

लड़के और जमाई का कहना था कि उसके पिता रात्रि के समय अपने बिस्तर पर सो रहे थे । अचानक उनका शरीर अग्नि की सफेद लपटों से घिर गया और चन्द मिनटों में ही राख के ढेर में परिणत हो गया । हाथ और पैरों के निचले हिस्से को छोड़कर शेष कुछ नहीं बचा । अवशिष्ट राख भी बहुत थोड़ी थी । सम्पूर्ण कमरा गहरे धुएँ से भर गया था ।

लड़कों के इस कथन की पुष्टि के लिए कोर्ट ने डॉ. मैसन के एक दलीय आयोग को नियुक्त किया । डॉ. मैसन ने छान-बीन करने पर पाया कि लड़के और जमाई का कथन सत्य है । कोर्ट ने स्वतः प्रवर्तित अग्निकाण्ड का मामला मानकर दोनों अभियुक्तों को बरी कर दिया ।

१६ फरवरी, १८८८ को रविवार के दिन कोलचेस्टर इंग्लैण्ड में एक बूढ़ा सिपाही शराब पीकर सूखी घास के गट्ठरों पर सोने के लिए चढ़ गया । लेटते ही उसके शरीर के चारों तरफ उठती ज्वाला की लपटों ने शरीर को भस्मीभूत बना दिया । आश्चर्य यह था कि सूखी घास का एक तिनका भी नहीं जला ।

इंग्लैण्ड में साउथम्पटन शहर के पास बुटलाक्स हीथ गाँव में श्रीमान जॉन किले नामक दम्पत्ति निवास कर रहे थे । २६ फरवरी, १६०५ को सुबह जॉन के मकान से खड़खड़ाहट की आवाज सुनकर पड़ोसियों ने उनके मकान के अन्दर प्रविष्ट किया । अन्दर आग की लपटें फैली हुई थीं । मि. किले फर्श पर पडे राख के ढेर में परिणत हो गए थे । श्रीमती किले उसी कमरे में कुर्सी पर बैठी बुरी तरह जलकर कोयले में बदल गई थीं । परन्तु जिस कुर्सी पर श्रीमती किले बैठी थीं उस पर आँच तक नहीं लगी थी । थोड़ी दूर फर्श पर तेल का लैम्प लुढ़का पड़ा था जिसे देखकर पुलिस को आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए कहा गया । लैम्प से आग लगाने का अर्थ था कमरे में फर्नीचर, कपड़े आदि सभी जल जाने चाहिए थे, किन्तु ऐसा नहीं हुआ था । अतः दम्पत्ति को "एक्सीडेन्टल डेथ" का प्रकरण मानकर जाँच-पड़ताल को वहीं समाप्त कर दिया गया ।

सन् १६३२ में जनवरी के ठंडक के दिनों में नार्थ कैरोलिना के ब्लैडेनबोरो शहर में निवास करने वाली महिला श्रीमती चार्ल्स विलियक्सन के रुई के कपड़े में अचानक आग धधकने लगी । उनके आस-पास कहीं कोई आग नहीं थी और न ही उनका ड्रेस किसी ज्वलनशील पदार्थ के सम्पर्क में ही था । उनके पति और लड़की ने जलते हुए कपड़ों को उतारकर उनकी प्राण रक्षा की । इस तरह की घटना उनके भीतर तीन-बार घट चुकी थी । इसके बाद श्रीमान विलियम्सन का एक जोड़ी पेन्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक आलमारी में टंगा था उसमें भी आग लग गई और जल कर भस्म हो गया । इसके बाद बिस्तर और पर्दे में आग लग गई । कमरे के बहुत से सामान न नीली लौ में जलते देखे गए परन्तु उनके समीप पड़े किसी अन्य वस्तु को आग की लपटों ने छुआ तक नहीं । इस ज्वाला में न तो कोई गन्ध थी और न ही किसी प्रकार का धुआँ था । जिस वस्तु को आग लगी वह पूर्णतया भस्मीभूत हो गया ।

विभिन्न हस्तियाँ—आर्सेन एक्सपर्ट, पुलिस दस्ते, गैस और विद्युत कम्पनी के विशेषज्ञ सभी बुलाये गए । परन्तु आग लगने का कारण रहस्यमय ही बना रहा । चार दिनों तक यह अग्निकाण्ड चलता रहा और पाँचवें दिन अचानक अपने आप समाप्त हो गया । अदृश्य हाथों द्वारा संचालित इस अग्निकाण्ड का उत्तर किसी के पास नहीं था ।

सन् १९०७ में भारतवर्ष के दीनापुर जिले के मनेर गांव से एक जली हुई महिला का शव ले जाते हुए दो व्यक्तियों को दो पुलिस वालों ने पकड़ लिया । महिला का शव जिला मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया गया । कपड़े के अन्दर शरीर से तब भी लपटें निकल रही थीं । महिला के कमरे का निरीक्षण किया गया । वहाँ बाहरी आग लगने के कोई चिन्ह नहीं मिले ।

ये घटनाएँ बताती हैं कि मानवी सत्ता मात्र रासायनिक पदार्थों की बनी नहीं है उसमें प्राण ऊर्जा की प्रचण्डता भी विद्यमान है । यह विद्युत भण्डार सामान्यतया शरीर निर्वाह भर के काम आता है । इसका बहुत बड़ा अंश प्रसुप्त स्थिति में निरर्थक पड़ा रहता है । पाणाग्नि के ऐसे असंख्य उपयोग हो सकते हैं जिनके सहारे मनुष्य अबकी अपेक्षा कहीं अधिक समर्थ वरिष्ठ सिद्ध हो सके ।

मानवी काया : एक उच्चस्तरीय विद्युत्भाण्डागार

विद्युत ऊर्जा के सहारे यन्त्र उपकरणों के संचालन की बात सर्वविदित है, पर प्रायः यह कम लोग ही जानते हैं कि मानवी शरीर एक शक्तिशाली यन्त्र है और उसके सुसंचालन में जिस ऊर्जा की आवश्यकता होती है वह एक प्रकार की विशिष्ट विद्युत ही है अध्यात्म की भाषा में इसे "प्राण" कहते हैं । यह एक अग्नि है । जिसे ज्वलन्त रखने के लिए ईंधन की आवश्यकता पड़ती है । प्राण रूपी शरीराग्नि आहार से ज्वलन्त बनी रहती है । प्राणियों में संव्याप्त इस ऊर्जा को वैज्ञानिकों ने "जैव विद्युत" नाम दिया है । शरीर संचार की समस्त गतिविधियाँ मस्तिष्कीय हलचलें रक्त, माँस जैसे साधनों से नहीं, शरीर में संव्याप्त विद्युत प्रवाह द्वारा परिचालित होती हैं । यही जीवन तत्व बनकर रोम-रोम में व्याप्त है । उसमें चेतना और सम्वेदना के दोनों तत्व विद्यमान हैं । विचारशीलता उसका विशेष गुण है । मानवी विद्युत की यह मात्रा जिसमें जितनी अधिक होगी वह उतना ही ओजस्वी, तेजस्वी और मनस्वी होगा । प्रतिभाशाली, प्रगतिशील, शूरवीर, साहसी लोगों में इसी क्षमता की बहुलता होती है । काय कलेवर में इसकी न्यूनता होने पर विभिन्न प्रकार के रोगी शीघ्र ही आ दबोचते हैं । मनः संस्थान में इसकी कमी होने से अनेकों प्रकार के मनोरोग परिलक्षित होने लगते हैं ।

"जैव विद्युत" उस भौतिक बिजली से सर्वथा भिन्न है जो विद्युत यन्त्रों को चालित करने के लिए प्रयुक्त होती है । मानवी प्राण विद्युत का सामान्य उपयोग शरीर को गतिशील तथा मन, मस्तिष्क को सक्रिय रखने में होता है । असामान्य पक्ष मनोबल, संकल्पबल, आत्मबल के रूप में परिलक्षित होता है जिसके सहारे असम्भव प्रतीत होने वाले काम भी पूरे होते देखे जाते हैं । "ट्रांस फॉर्मेशन ऑफ एनर्जी" सिद्धान्त के अनुसार मानवी विद्युत सूक्ष्मीभूत होकर प्राण ऊर्जा और आत्मिक ऊर्जा के रूप में संग्रहीत और परिशोधित-परिवर्तित हो सकती है । इस ट्रांसफॉर्मेशन के लिए ही प्राणानुसन्धान करना और प्राण साधना का अवलम्बन लेना पड़ता है ।

जैव भौतिकी के नोबुल पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात वैज्ञानिक हाजकिन और एक्लीस ने मानवी ज्ञान तन्तुओं में काम करने वाले विद्युत आवेगों की खोज की है । इनके प्रतिपादनों के अनुसार ज्ञान तन्तु एक प्रकार के विद्युत सम्वाही तार हैं जिनमें निरन्तर बिजली दौड़ती रहती है । पूरे शरीर में इन धागों को समेटकर एक लाइन में रखा जाय तो उनकी लम्बाई एक लाख मील से भी अधिक बैठेगी । इस प्रकार इतने बड़े तन्त्र को विभिन्न दिशाओं में गतिशील रखने वाले यन्त्र को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कितनी अधिक बिजली की आवश्यकता पड़ेगी, यह विचारणीय है ।

मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. मेटुची वैनबर्ग ने अपने अनुसन्धान निष्कर्ष में कहा है कि मानवी काया के आन्तरिक संस्थानों में विद्युत शक्ति रूपी खजाने छिपे हैं । इनकी प्रकट क्षमता की जानकारी माँसपेशियों के सिकुड़ने-फैलने से उत्पन्न विद्युत धाराओं से होती है । इस सन्दर्भ में अंग्रेज वैज्ञानिक वाल्टर ने भी बहुत खोजें कीं और उन खोजों का लाभ चिकित्सा जगत को प्रदान किया है ।

तन्त्रिका विशेषज्ञों के अनुसार प्रत्येक न्यूरॉन एक छोटा डायनमो है । काय विद्युत का उत्पादन मुख्यतया यही वर्ग करता है । इसका केन्द्र संस्थान मस्तिष्क है । एक सामान्य स्वस्थ युवा व्यक्ति का मस्तिष्क २० वाट विद्युत उत्पन्न करता है जिससे उसके शरीर की समस्त गतिविधियाँ संचालित होती हैं । सामान्य जाँच प्रक्रिया में हृदय कोशिकाओं में विद्यमान इस बिजली का प्रयोग ई. सी. जी. में, माँसपेशियों की विद्युत का ई. एम. जी. में तथा ब्रेन सेल्स की विद्युत का ई. ई. जी. में प्रयोग किया जाता है ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि मानवी काया एक उच्चस्तरीय परमाणु बिजलीघर है । इससे प्राण विद्युत तरंगों का निरन्तर कम या अधिक मात्रा में विकिरण होता रहता है । येल विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री हेराल्ड बर्र ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया है कि प्रत्येक जीवधारी अपने-अपने स्तर के अनुरूप कम या अधिक विभव वाली विद्युत उत्पन्न करता है । मनुष्यों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में इसकी मात्रा अधिक होती है । इस मानवीय विद्युत शक्ति को उन्होंने "लाइफ फील्ड" के नाम से सम्बोधित किया है । उनके अनुसार व्यक्तित्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग लाइफ फील्ड होता है । जैव क्रियाओं से सम्बन्धित होने के कारण उसमें परिवर्तन होता रहता है । आवेशग्रस्त होने अथवा घृणा, ईर्ष्या की स्थिति में मनुष्य शरीर से बिजली की सर्वाधिक क्षति होती है ।

मूर्धन्य परामनोविज्ञानियों ने भी अपने विभिन्न अनुसन्धानों के आधार पर पाया है कि सामान्य मनुष्य के सूक्ष्म शरीर से निःसृत होने वाली वैद्युतीय तरंगें उसके स्थूल शरीर से छः इंच बाहर तक फैली रहती है । पूर्ण स्वस्थ एवं पवित्र अन्तःकरण वाले व्यक्ति के शरीर से निकलने वाली इन तरंगों का विकिरण तीन फुट दूर तक फैला रहता है । इसे इन्होंने मानवी तेजोवलय की संज्ञा दी है और कहा है कि मनुष्य जिस स्थान पर निवास करता या साधना-उपासना करता है, काया से निःसृत प्राण विद्युत का अदृश्य कम्पन वहाँ स्थित जड़ पदार्थों के परमाणुओं में तीव्र प्रकम्पन पैदा कर देता है । मनुष्य शरीर से निकली विद्युत तंरगें आस-पास के वातावरण में छा जाती हैं और जड, चेतन दोनों को प्रभावित आकर्षित करती हैं ।

प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. ब्राउन के मतानुसार एक स्वस्थ नवयुवक के शरीर और मस्तिष्क में व्याप्त विद्युत शक्ति से एक बड़ी मिल को संचालित किया जा सकता है जबकि छोटे बच्चे के शरीर में सन्निहित विद्युत ऊर्जा से एक रेलगाड़ी का इंजन चल सकता है । इस विद्युत शक्ति को उन्होंने "बायोलॉजिकल इलेक्ट्रिसिटी" कहा है । उनके अनुसार यह जैव विद्युत मनुष्य के सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न होती है और स्थूल काया समेत समस्त गतिविधियों का नियन्त्रण नियमन करती है । मस्तिष्क से लेकर अंगुलियों पर्यन्त इसी का आधिपत्य होता है । नेत्र सहित सभी इन्द्रियाँ इस शक्ति के प्रमुख विकिरण केन्द्र हैं । सर जान वुडरफ ने भी अपनी पुस्तक "सर्पेण्टाइन पावर" में बताया है कि नेत्र और हाथ पैरों की अंगुलियों के पोरों पर प्राण विद्युत की विकिरण विशेष अनुपात में पाया जा सकता है ।

शरीर में काम करने वाली जैव विद्युत में कभी-कभी व्यतिरेक होने से गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ता है । भौतिक बिजली का जैव विद्युत में परिवर्तन असम्भव है, पर जैव विद्युत के साथ भौतिक बिजली का सम्मिश्रण बन सकता है । कई बार ऐसी विचित्र घटनाएँ देखने में आयी हैं जिनमें मानवी शरीरों को एक जनरेटर डायनमो के रूप में काम करते पाया गया ।

सन् १९३४ इटली के पिरानी अस्पताल में एक ऐसी ही घटना घटित हुई । अन्ना मोनारी नामक एक महिला के शारीरिक कोशिकाओं से बिजली रिसने लगी । शरीर को छूते ही बिजली के नंगे तारों की भाँति तेज झटका लगता था । बिजली का यह उत्पादन सीने के एक वृत्ताकार भाग में विशेष रूप से अधिक होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था । गहन निद्रा के समय सीने पर एक वृत्ताकार गैलेक्सी भी कुछ समय तक छायी रहती थी । यह प्रकाश पुंज कुछ सप्ताह तक बना रहा । इस घटना की जाँच पड़ताल विभिन्न वैज्ञानिकों, चिकित्सा शास्त्रियों एवं भौतिकविदों द्वारा की गई, पर रहस्य पर से पर्दा नहीं उठ सका । अन्नामोनारी की जाँच कर रहे मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. के. सेग के कथनानुसार इस प्रकार की घटनाएँ शरीर में इलेक्ट्रोमैगनेटिक इन्डक्शन के कारण होती है । अन्य वैज्ञानिकों का अभिमत था कि त्वचा में कुछ रासायनिक प्रक्रियाएँ इसके लिए जिम्मेदार हैं । किसी ने इसे "हाईवोल्टेज सिण्ड्रोम" कहा तो किसी ने इसे "साइको काइनेटिक शक्ति" के नाम से सम्बोधित किया ।

फ्रांसीसी भौतिकविद् फ्रैन्क्वाइसर रैंगों ने अपने देश के "ला पेरियर" शहर की एन्जोलिक कोटिन नामक विद्युत महिला का तथा डॉ. एफ. काफ्ट ने आयरलैण्ड की जे. स्मिथ का अध्ययन किया था और घटना को प्रामाणिक बताया था । कोलोरेडो के मूर्धन्य वैज्ञानिक डब्ल्यू. पीजोन्स एवं उनके सहयोगी नार्मन लॉग ने भी इस सन्दर्भ में गहन अनुसन्धान किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वस्तुतः घटनाएँ शारीरिक व्यतिरेक के परिणामस्वरूप घटित होती हैं । कोशिकाओं में अधिक विद्युत उत्पादन होने पर वह शरीर से बाहर निकलने लगती हैं । यदि इस बढ़ी हुई विद्युत शक्ति के सुनियोजन की कला ज्ञात हो सके तो मनुष्य अतीन्द्रिय क्षमताओं का धनी बन सकता है ।

विभिन्न प्रयोग-परीक्षणों के आधार पर यह प्रमाणित किया जा चुका है कि काया के सूक्ष्म केन्द्रों के इर्द-गिर्द प्रवाहमान विद्युतधारा ही सुखानुभूति का निमित्त कारण है । वैज्ञानिकों का कहना है कि वैद्युतीय प्रकम्पनों के बिना किसी प्रकार की सुख सम्वेदना का अनुभव नहीं किया जा सकता । पदार्थों के संयोग से उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाएँ एवं अनुभूतियाँ उनके अभाव में विद्युत कम्पनों से भी पैदा की जा सकती हैं । परामनोविज्ञानियों की भी यही मान्यता है कि सुख-दुःख की अनुभूतियाँ जैव विद्युत तंरगों पर निर्भर करती हैं ' शारीरिक परिपुष्टता और मानसिक उत्कृष्टता का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । एक के पूर्ण स्वस्थ होने पर दूसरे का स्वस्थ होना सुनिश्चित है । गुण, कर्म स्वभाव में उच्चस्तरीय उत्कृष्टता जीवन में समस्वरता पैदा करती है, फलतः प्राण विद्युत की सशक्तता बढ़ती है, जिससे मनुष्य को असीम सुख शान्ति की अनुभूति होती हैं ।

मानवी विद्युत प्रवाह ही एक दूसरे को आकर्षित करता है । सिर और नेत्रों में यह विशेष रूप से सक्रिय पाया जाता है । वाणी की मिठास, कड़ा होना अथवा प्रामाणिकता में उसका अनुभव किया जा सकता है । तेजस्वी मनुष्य के विचार ही प्रखर नहीं होते , उनकी आँखें भी चमकती हैं और उनकी वाणी अन्तर की गहराई तक घुस जाने वाला विद्युत प्रवाह उत्पन्न करती है । उभरती आयु में यही प्राण विद्युत काय आकर्षण की भूमिका निभाती है । सदुपयोग होने पर प्रतिभा, प्रखरता, प्रभावशीलता के रूप में विकसित होकर कितने ही महत्त्वपूर्ण कार्य करती है और दुरुपयोग होने पर मनुष्य निस्तेज, छूँछ एवं अवसादग्रस्त रहने लगता है । ऊर्ध्वरिता संयमी, विद्वान, वैज्ञानिक, दार्शनिक, योगी, तपस्वी, जैसी विशेषताओं से सम्पन्न व्यक्तियों के बारे में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी प्राण विद्युत का अभिवर्धन नियन्त्रण एवं सदुपयोग किया है ।

किस व्यक्ति में कितनी मानवी विद्युत शक्ति विद्यमान है, इसका परिचय उसके चेहरे के इर्द-गिर्द और शरीर के चारों ओर बिखरे हुए तेजोवलय को देखकर प्राप्त किया जा सकता है । यह आभामण्डल खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता वरन् सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति ही इसे अनुभव कर पाते हैं । अब ऐसे यन्त्र भी विकसित कर लिए गए हैं जो मानव शरीर में पायी जाने वाली विद्युत शक्ति और उसके विकिरण का विवरण प्रस्तुत करते हैं । किर्लियन फोटोग्राफी तथा आर्गान एनर्जी के मापन को इस सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है ।

निःसन्देह मनुष्य एक जीता जागता बिजलीघर है, किन्तु झटका मारने वाली-बत्ती जलाने वाली सामान्य बिजली की तुलना उससे नहीं की जा सकती । जड़ की तुलना में चेतन की जितनी श्रेष्ठता है उतना ही भौतिक और जीवन विद्युत में अन्तर है । प्राण विद्युत असंख्यगुनी परिष्कृत और सम्वेदनशील है । उसके सदुपयोग एवं दुरुपयोग के भले-बुरे परिणामों को ध्यान में रखते हुए यदि प्राण विद्युत पर नियन्त्रण, परिशोधन, उसका संचय-अभिवर्धन किया जा सके तो मनुष्य असामान्य शक्ति का स्वामी बन सकता है । अभी तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक स्थूल विद्युत के चमत्कार जानकर ही हतप्रभ हैं । यदि कायपिण्ड में विद्यमान इस जखीरे को विस्तार से जाना-समझाया जा सके तो अविज्ञात के रहस्योद्घाटन के क्षेत्र में एक नया आयाम खुलता है ।

विलक्षणताओं की विभूतियों का भण्डार : मनुष्य

मनुष्य प्रकृति की मर्यादा से बँधा तो है, पर वे सीमा बन्धन ऐसे नहीं हैं । जो चेतना की प्रखरता को किसी भी दिशा में बढ़ चलने से अवरुद्ध कर सकें । चेतना, प्रकृति से बड़ी है । वह चाहे तो उसके नियम प्रतिबन्धों का व्यतिक्रम भी कर सकती है । सामान्य स्थिति और सामान्य मनोबल के व्यक्ति सामान्य पुरुषार्थ ही कर पाते हैं, इसलिए उनकी गतिविधियों को भी नियति क्रम के सामान्य नियम प्रतिबन्ध पालन करने पड़ते हैं । इससे अगली स्थिति वह है जिसमें चेतना अपनी विशिष्टताओं को जागृत करती है और उस प्रखरता को उपलब्ध कर लेती है, जिसमें स्तर के अनुरूप वैसा कुछ कर दिखाना सम्भव हो जाता है, जिसे चमत्कार कहा जा सके । चमत्कारों के पीछे भी सृष्टि का वह विशेष नियम लागू होता है, जिसमें चेतना की सत्ता को सर्वोपरि कहा गया है । प्रकृति उसकी सुविधा के लिए है । साथ ही इतनी लचकदार भी है कि चेतना की प्रखरता का वर्चस्व स्वीकार करके उसका अनुगमन करने लगे । भले ही इसमें उसके सामान्य नियम-क्रम का उल्लंघन ही क्यों न होता हो । सिद्धियों और चमत्कारों के पीछे एक ही तथ्य काम करता है कि सृष्टि का व्यवस्था क्रम उपयुक्त होते हुए भी अनिवार्य नहीं है । मनुष्य उससे एक सीमा तक ही बंधा है । बन्धनों से मुक्त होने की स्थिति की प्रतिक्रिया में जहाँ लोभ, मोह के भव-बन्धनों से छुटकारा पाने की बाते है । वहाँ एक तथ्य यह भी है कि इस स्थिति में पहुँचा हुआ मनुष्य प्रकृति का अनुयायी न रहकर उसे अपनी अनुगामिनी बना लेता है ।

'सर बाइबल ऑफ बाडीली डेप' पुस्तक के लेखक ने जर्मनी की एक ऐसी घटना का उल्लेख किया जिससे भविष्य में घटने वाली घटना का पूर्वाभास मिलता है । कैप्टन 'कोल्ट' नामक सेना के कैप्टन का छोटा भाई सेवसटोपन स्थान पर कमाण्डर था । उस समय युद्ध चल रहा था । रात्रि के समय कैप्टन कोल्ट ने जागृतावस्था में अपने भाई की छाया देखी । उसके चारों ओर पीला कोहरा था । वह छाया कैप्टन के सिर के चारों ओर घूमी तथा पलंग के पास उसने घुटने टेक दिए । उसके दाहिनी कनपटी पर एक बड़ा घाव था जिससे रक्त स्राव हो रहा था । दूसरे दिन कैप्टन को सूचना मिली की उसके भाई की मृत्यु हो गई है । पहुँच कर देखने पर पाया कि भाई का शब घुटने टेकती अवस्था में है तथा दाहिनी कनपटी पर गोली का घाव था ।

कलकत्ता प्रेसीडेंसी कॉलेज में योग प्रदर्शन की व्यवस्था बनाई गई । व्यवस्था का भार विश्वविद्यालय ने उठाया । प्रदर्शन स्थल पर वैज्ञानिकों, डॉक्टरों एवं बुद्धिजीवियों की बड़ी भीड़ जमा हो गई । इनमें भारत के भूतपूर्व नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक सर सी. वी. रमन भी उपस्थित थे । योगी नरसिंह स्थायी प्रदर्शन कक्ष के मध्य में खड़े थे । भयंकर विष पहले से ही प्रयोगशाला से मँगाकर रख लिया गया था । योगी ने सर्वप्रथम गंधक का तेजाब (सल्फ्यूरिक एसिड) जिसकी परख वैज्ञानिकों ने पहले कर ली थी, हाथ में लिया तथा जीभ से चाट गए । इसके उपरान्त कार्बोलिक एसिड को भी पी गए । वैज्ञानिक तथा अन्य उपस्थित व्यक्ति यह देखकर हैरत में पड़ गए । अब बारी थी विज्ञान जगत में सबसे भयंकर विष पोटेशियम सायनाइड के परीक्षण की । पोटेशियम सायनाइड विष की भयंकरता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि मात्र इसके स्वाद चखने के प्रयास में तीन व्यक्तियों की मृत्यु कुछ मिनट में हो गई । सभी व्यक्ति कौतूहल से योगी नरसिंह की ओर देख रहे थे । सभी के मन में एक ही प्रश्न उत्पन्न हो रहा था कि इस विष को खाकर भी बचना क्या सम्भव है ? यह देखकर दंग रह गए कि स्वामी नरसिंह विष को सामान्य चीज जैसे फाँकने के बाद भी मुस्करा रहे हैं । सी. वी. रमन के मुँह से यह निकल पड़ा कि "यह अद्भुत प्रदर्शन विज्ञान को चुनौती दे रहा है ।" पोटेशियम सायनाइड को खाने के अतिरिक्त भी योगी ने एक अन्य प्रदर्शन किया । मोटी कांच की बोतल का चूर्ण बनाकर उनको दिया गया । वे चूर्ण को प्रसाद के समान खा गए । वैज्ञानिक हतप्रभ रह गए कि इन भयंकर विषों के सेवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का योगी के ऊपर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा । एक डॉक्टर ने यन्त्र की सहायता से बाद में पेट से सारे विष बाहर निकाले जो बिना पचे, ज्यों के त्यों इस तरह रखे मानो उन्हें बाहर से भीतर हस्तान्तरित भर किया गया हो ।

२४ फरवरी, १९७८ को उदयपुर (राजस्थान) में भारतीय लोक कला मण्डल का समारोह था । उसमें एक हठयोगी ने जलती आग में प्रवेश करके नृत्य किया । पैट्रोल छिड़क-छिड़क कर कई बार आग भड़काई जाती रही और योगी का नृत्य चलता रहा । इस प्रदर्शन से पूर्व योगी के शरीर पर कोई विशेष लेप आदि न होने की आशंका का भली प्रकार निराकरण कर लिया गया था । उपस्थितों और परीक्षकों में दूर-दूर के ऐसे मूर्धन्य लोग बुलाये गए थे जो यदि बाजीगरी चल रही हो तो तुरन्त जाँचें और पकड़ सकें ।

'ए सर्च इन सीक्रेट इजिप्ट' के लेखक ने अपनी इस पुस्तक में विभिन्न योगियों के चमत्कारों का वर्णन किया है । इसमें टर्की के कुस्तुनतुनिया के प्रसिद्ध फकीर डॉ. ताहा का उल्लेख भी किया गया । विद्यालय से विधिवत् डॉक्टरी परीक्षा पास करने के उपरान्त इनकी अभिरुचि यौगिक क्रियाओं में उत्पन्न हुई । हठयोग की क्रियाओं में लम्बी साधना से दक्षता प्राप्त कर ली और अन्वेषक, परीक्षकों की उपस्थिति में ऐसी क्रियाएँ कर दिखाईं जो सामान्य शरीरधारी के लिए किसी भी प्रकार सम्भव नहीं हो सकतीं ।

डेनमार्क के एक व्यक्ति के शरीर से नोकदार कांटे उभरते थे और उन्हें बार-बार ऑपरेशन करके निकालना पड़ता था । यह क्रम जीवन भर चलता रहा । २४८ बार कई-कई स्थानों के ऑपरेशन हुए और कुल मिलाकर ३२१३१ काँटे निकाले । यह काँटे क्यों उगते थे ? इसका रहस्य अभी भी उतना ही बना हुआ है जितना कि आज से दस वर्ष पूर्व रोगी के जीवित रहने तक बना रहा ।

मानवी काया में न जाने क्या-क्या चित्र-विचित्र भरा हुआ है । साधारणतया उतने भर की जानकारी सर्व साधारण को रहती है जितनी अधिकांश लोगों में दृष्टिगोचर होती है, किन्तु यह मानकर नहीं चल जा सकता कि जो है वह उतना ही जितना जाना गया ।

यह घटनाएँ बताती हैं कि मनुष्य सामान्य भर दीखता अवश्य है वस्तुतः वह वैसा है नहीं । उसके अन्तराल में एक से एक बढ़कर विचित्रताएँ, विभूतियाँ और सम्भावनाएँ भरी पड़ी हैं, जो उन्हें जगाते और क्रियान्वित होते हैं, वे सिद्ध पुरुष अथवा प्रखरता सम्पन्न कहलाते हैं । प्रकृति उनके कार्य में बाधक नहीं बनती, वरन् अपनी नियम क्रमों को भी चेतना के अनुरूप ढालने, बदलने में संकोच नहीं करती ।

मनुष्य शरीर एक अच्छा खासा बिजलीघर

शरीर एक ऐसे बहुत बड़े उद्योग नगर की भाँति हैं जिसमें अगणित छोटी बड़ी मशीनों वाले कल-कारखाने लगे हैं । यह सभी यन्त्र बिजली के शक्ति से चलते हैं । यदि उसका प्रबन्ध न हो तो सभी कलपुर्जे ठप्प हो जायें और शरीर की स्थिति निष्प्राण जैसी बन जाय ।

इस विशालकाय फैक्ट्री को चालू रखने में प्रायः एक लाख वोल्ट बिजली की आवश्यकता पड़ती है । इसका उत्पादन हृदय के बायलर द्वारा होता है । उत्पादन के साथ ही वह ७० खरब कोशिकाओं रूपी पुर्जों से बने कारखाने के कोने-कोने में भेज दी जाती हैं और सभी को गतिशील बनाये रहने में काम आती रहती हैं । आमतौर से इतनी ऊर्जा शरीर संचालन, मस्तिष्कीय चिन्तन एवं विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किए जाने वाले क्रिया-कलापों में खप जाती है । कम पड़ती है तो शरीर ढीला-पोला पड़ जाता है । थका-हारा, आलस्य-सुस्ती से ग्रसित उदास-परास्त जैसा दीख पड़ता है । यदि वह पर्याप्त मात्रा में हो तो चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है और हँसती-हँसाती जिन्दगी कटती है, किन्तु यदि उत्पादन खपत से अधिक हो तो मनुष्य कुछ अतिरिक्त करने के लिए उमंगता रहता है । उत्साह देखते ही बनता है । नयी योजनाएँ बनाते, नये उत्तरदायित्व ओढ़ते और नये खतरे उठाते देखा जाता है । यह मानवीय विद्युत का चमत्कार है । वह पर्याप्त मात्रा में हो तो चहरे पर आकर्षण शक्ति के रूप में फैली-फैली फिरती है । जो समीप आता है खिंचता चला आता है, प्रभावित होता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहयोगी बनता है । यह विद्युत प्रवाह शरीर के चारों ओर एक तेजोवलय के रूप में छाया रहता है । उसकी तरंगों, नेत्रों से, उँगलियों के पोरों से तथा प्रचलन केन्द्रों से चुम्बकत्व की अतिरिक्त मात्रा का परिचय देती है ।

पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव पर एक चुम्बकीय अन्धड़ प्रकाशवान देखा जा सकता है । इसे "अरोरा बेरिएलिस' कहते हैं । काया एक पृथ्वी है, उसके चेहरे को उत्तरी ध्रुव की संज्ञा दी जा सकती है । दक्षिण ध्रुव प्रजनन केन्द्र के इर्द-गिर्द बिखरा हुआ है । इन दोनों संस्थानों में तेजोवलय की मात्रा अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है । प्रतभावान लोगों में यही क्षमता उनके व्यक्तित्व को चमकाती है । अनेकों को मित्र सहयोगी बनाती है तथा हाथ में लिए हुए कन्धों पर ओढ़े गए उत्तरदायित्वों को निभाने में पराक्रम, पुरुषार्थ, साहस, संकल्प, उत्साह, परिश्रम के रूप में काम करती दृष्टिगोचर होती है ।

मानवी प्रयोजनों में काम वाली बिजली का चुम्बकीय पक्ष हृदय तथा ब्रह्मरंध से उत्पन्न होता है । यह चुम्बकत्व विश्वव्यापी विद्युत प्रवाह से अपने लिए आवश्यक क्षमता खींच लाता है और उपार्जन की तुलना में कई गुनी अनुदान सम्पदा का भण्डार जमा कर उसे आवश्यक प्रयोजनों में काम लाता है । पेड़ की बहुत कुछ खुराक जड़ों से प्राप्त होती है यह ठीक है, पर यह भी गलत नहीं कि पत्ते भी साँस लेते हैं और आकाश में हवा, गर्मी, नमी आदि को उससे भी बड़ी मात्रा में खींचते रहते हैं जितनी कि जड़ों से प्राप्त होती है । शारीरिक उत्पादन अधिक से अधिक इतना ही कर सकता है कि मनुष्य भी अन्य प्राणियों की भाँति जिन्दा रह सके और पेट प्रजनन के लिए आवश्यक क्षमता जुटाता रहे । यदि कोई बड़ी महत्त्वाकांक्षा या जिम्मेदारी सिर पर लदी हो तो उसे वहन करने के लिए ब्रह्माण्डीय चेतना के विपुल भाण्डागार में आवश्यक ऊर्जा उपलब्ध करने के लिए योग साधना, तपश्चर्या स्तर के विशेष प्रयोग पुरुषार्थ करने पड़ते हैं ।

प्रश्नोपनिषद् में एक मन्त्र आता है—"प्राणाग्नय एवैतस्मिन्पुरे जागृति" अर्थात् मनुष्य काया रूप पुरी में पाँच प्रकार की प्राणाग्नियाँ जागती रहती हैं ।

यह लोहा गलाने वाले विशालकाय कारखानों में लगी हुई प्रचण्ड अग्नि वाली 'फरनिशों' की तरह है जिनमें प्राणाग्नि जलती ही नहीं वरन् बिजली की विपुल मात्रा भी उत्पन्न करती है । कहा जा चुका है कि शरीर में एक लाख वोल्ट प्रति सेन्टीमीटर का दबाव होता है । यह प्राण विद्युत झटका मारने वाली या प्राण लेने वाली नहीं है । उसकी प्रकृति दूसरे प्रकार की है फिर भी वह है बिजली ही । नियन्ता ने इस विद्युत को चक्रों, ग्रन्थियों, उपत्यिकाओं, जीवकोश ऊतकों में कैद कर रखा है ताकि वह अनावश्यक रूप से बाहर निकलने और बर्बाद न होने लगे । कभी इन्सुलेशन हट जाय, या हटा लिया जाय तो ही चौक होने पर वह व्यक्तियों एवं पदार्थों को अनावश्यक रूप से प्रभावित करने लगती है ।

फ्रांस की स्ट्रासबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रेड ब्लेज का मानवी विद्युत सम्बन्धी शोध प्रबन्ध "दी बायोलॉजिकल कन्डीसन्स क्रिएटेड वाय दि इलेक्ट्रिकल प्रापर्टीज ऑफ दि एटमॉसफियर" ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । इसमें वे अपना निष्कर्ष व्यक्त करते हुए मनुष्य शरीर को चलता-फिरता बिजलीघर बताते हैं । साथ ही यह भी कहते हैं कि यदि इस उत्पादन को अन्य कार्यों में लगाया जा सके तो उसे भी किसी सशक्त हाइडल पावर स्टेशन की तरह, बड़े टर्वाइन्स की तरह महत्त्वपूर्ण भौतिक प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त भीतरी प्रयोजनों में उसे अति मानवी सामर्थ्यों को जगाकर मनुष्य को दिव्य पुरुष बनाने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है ।

मनःशास्त्री विक्टर ई. क्रोमर मानवी विद्युत की चर्चा करते हुए कहते हैं यह ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के साथ सम्बन्ध जोड़ने वाली ऐसी चाबी है जिसका सही उपयोग करने पर भौतिक जगत में भारी उथल-पुथल उत्पन्न की जा सकती है और अपनी निजी क्षमता में विशिष्ट स्तर की अभिवृद्धि भारी मात्रा में की जा सकती है ।

संसार में ऐसे अगणित प्रमाण, उदाहरण समय-समय पर मिलते रहे हैं कि मनुष्य की विद्युत शक्ति का उभार यदि किसी विशेष दिशा में मोड़ा जा सका तो उसका प्रभाव ऐसा देखने में आया कि लोग दाँतों तले उँगली दाबे रह गए । देव-दानवों की चित्र-विचित्र क्षमताओं का कथा-पुराणों में उल्लेख मिलता है । उन वर्णनों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किंवदन्ती भी हो सकती है किन्तु तथ्यतः यह सिद्धान्त सही है कि मनुष्य असाधारण है । इस असाधारणता के बल पर वह वैसा कुछ कर सकता है जैसा कि किसी दैत्य के सम्बन्ध में कहा या सुना जाता है ।

सौन्दर्य, कला-कौशल, बल-पराक्रम आदि का अपना महत्त्व और आकर्षण है । अस्त्र-शस्त्र, पद, धन आदि के बलबूते भी मनुष्य बहुत कुछ करने में सफल होते हैं किन्तु जिन क्षमताओं के बलबूते महामानव स्तर के काम बन पड़ते हैं उन्हें आत्म शक्ति के ऊपर आधारित माना जा सकता है यह आत्म शक्ति और कुछ नहीं मानवी विद्युत का दिव्य संस्थानों के साथ जोड़ा गया सम्बन्ध अथवा किया गया आदान-प्रदान ही है ।

मनुष्य का मैगनेट घटता-बढ़ता रहता है । घटने से उसे विस्मृति, भ्रान्ति, उदासी, थकान जैसी अनुभूति होती है । बढ़ने से प्रतिभा, स्मृति, स्फूर्ति जैसी उत्साहवर्धक विशेषताएँ उभरी हुई प्रतीत होती हैं । बढ़े हुए चुम्बकत्व वाला अपने से हल्के वालों को प्रभावित करने में सफल रहता है ।

जहाँ शरीर को कई प्रकार के खाद्य-पदार्थ एवं पोषण चाहिए वहाँ उसे वातावरण में संव्याप्त चुम्बकीय ऊर्जा की मात्रा भी उसी प्रकार चाहिए जैसे कि साँस के लिए हवा की जरूरत पड़ती है । इसी प्रकार मस्तिष्क को भी अपनी बैटरी चार्ज करने वाला 'चार्जर' चाहिए । अन्यथा यह डाउन होता चला जायेगा और मनुष्य अपनी प्रखरता गवाँ बैठेगा ।

शरीर का प्रत्येक कोशाणु एक विद्युत इकाई है । उनके कम्पन और दोलन क्रम उसी शक्ति के आधार पर संचालित होते हैं ।

स्विटजरलैंड के डॉक्टर फिलिप्स आरोलस पैरा सेलसस ने अनेकों बीमारियों का कारण शारीरिक चुम्बर्कत्व की विकृति एवं विशृंखलता को सिद्ध किया है ।

कुछ वर्ष पूर्व 'मेडीकल वर्ल्डन्यूज' पत्रिका में शिकागो की 'बायोमैगनेटिक रिसर्च फाउन्डेशन' द्वारा किए गए शारीरिक चुम्बकत्व सम्बन्धी अनुसन्धानों का विस्तृत विवरण छपा था । हंगरी के डॉ. जीन बारगेथी ने विषाणुओं से निपटने और कोशाणुओं की अशक्तता को दूर करने में आश्चर्यजनक सफलता पायी । इस चिकित्सा पद्धति को ''बायोमैगनेटिक्स'' के स्वतन्त्र नाम से भी जाना जाता है ।

डॉ. के. हिलाल ने मस्तिष्कीय मूढ़ता और विकार ग्रस्तता के लिए चुम्बकीय चिकित्सा को बहुत उपयोगी बताया है ।

कुछ वर्ष पूर्व 'फेट' पत्रिका में डॉक्टर के. ई. मेकलीन निजी प्रयोगों की चर्चा करते हुए जी. सी. एफ. गुडवेज ने उल्लेख किया है कि वे प्रतिदिन ३६०० गॉस शक्ति के चुम्बकीय क्षेत्र का अपने शरीर पर प्रयोग करने के कारण अपने स्वास्थ को अक्षुण्ण रखने में सफल रहे हैं । वे ६४ वर्ष की आयु में भी ४५ वर्ष जैसे लगते हैं ।

डॉ. मेस्मर फ्रेडरिक का प्रतिपादन है कि मनुष्य के शरीर में चुम्बकत्व भरा पड़ा है जो आँखों से एवं उँगलियों के पोरुओं से बाहर निकलता रहता है । इस प्रवाह से अपने निज के लिए तथा दूसरों के लिए उपयोगी लाभ उठाया जा सकता है । मोडाञ्यूज तथा काउण्ड पुलीगर ने इस सन्दर्भ में गहरी खोजें कीं और सिद्ध किया कि यह सामान्य समझे जाने वाली उपेक्षित मानवी विद्युत शक्ति बड़े काम की है और इसके प्रयोग से महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं ।

जर्मनी के अधिनायक हिटलर का उसकी रुग्णावस्था में उपचार एक 'क्रिस्टन' नामक व्यक्ति करता था । उसकी उँगलियों में दर्द को भगाने की जादुई क्षमता थी, जिनके स्पर्श मात्र से वह रोगियों को चंगा कर देता था । दवा-दारू तो वह नाम मात्र की करता था ।

उसका जन्म इस्टोनिया में सन् १८९८ में हुआ था । मालिश करके रोगोपचार के कौशल को सीख कर उसने ऐसी जादुई क्षमता प्राप्त की थी । हिटलर के अन्तरंग मित्र हिमलर तक को कई बार उसने अपनी चिकित्सा से चमत्कृत कर दिया और भयंकर रुग्णता के पंजे से मुक्त किया । क्रिस्टन ने अपने प्रभाव एवं परिचय का उपयोग करके हिटलर की मृत्युपाश में जकड़े हुए लगभग एक लाख व्यक्तियों को छुटकारा दिलाया ।

यूनानी चिकित्सा के आविष्कारकर्त्ता पैपिरस ने सिर पर हाथ फिराकर रोग चिकित्सा करने की पद्धति को शास्त्रीय रूप दिया है । बादशाह पाइरस और वैंस पैसियन को कठिन रोगों से मुक्ति ऐसे ही प्रयोगों से मिली थी । फ्रांस के सम्राटों में फ्रांसिस प्रथम से लेकर चार्ल्स दशम तक की चिकित्सा में जैव चुम्बक का प्रयोग शक्तिशाली प्रयोक्ताओं द्वारा होता रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रो. फोन्टान ने एक फ्रांसीसी नाविक का ऐसा ही उल्लेख किया है । वह अन्धा व्यक्ति उँगलियों से छूकर ऐसे विवरण बताता था जो साधारणतया आँखों के बिना नहीं बनाये जा सकते । कनाडा की एक अन्धी लड़की हाथ की कुहनियों के माध्यम से ऐसा ही अदृश्य दर्शन कर सकने में समर्थ थी ऐसे प्रमाण मिले हैं ।

फ्रांसीसी कवि-जूल्स रोमेन्स की उन दिनों परोक्ष दृष्टि विज्ञान में बड़ी दिलचस्पी थी उसने अपने साहित्य कार्यों के साथ-साथ इस विषय में भी शोध की थी और बताया है कि त्वचा में अगणित 'कीट नेत्र' विद्यमान हैं जो स्पर्श सम्वेदना के द्वारा निकटवर्ती वस्तुओं के बारे में निरन्तर जानकारी संग्रहीत करते रहते हैं । आँखों की तरह ये छोटे नेत्र वस्तुओं की आकृति भले ही स्पष्ट रूप से न जान सकें पर उनकी प्रकृति के सम्बन्ध में नेत्र गोलकों से भी अधिक प्राप्त करते हैं ।

स्टाकहोम (स्वीडन) के निकट मोस्टेरीज नामक कस्बे की एक तेरह वर्षीय लड़की ल्कोरो फाइन को एक दिन ऐसी गहरी नींद आयी कि वह फिर अनेक प्रयत्न करने पर खुली ही नहीं । डॉक्टरों की सहायता से उसके शरीर में पतला आहार पहुँचाने और मल-मूत्र विसर्जन का प्रबन्ध तो कर दिया गया पर नींद खोलने में तनिक भी सफलता न मिली । यह क्रम विशेषज्ञों के शोध का विषय बना और वे उसकी सुरक्षा तथा प्रतीक्षा में अपनी पूरी शक्ति लगाते रहे । पूरे २३ वर्ष बाद नींद खुली तब वह ३९ वर्ष की थी, जगते ही उसने अपनी वे पुस्तकें माँगी जहाँ से पढ़ाई छोड़ी थी । शिक्षा का क्रम फिर वहीं से आरम्भ हुआ जहाँ से कि छूटा था ।

आरमण्ड जैक्विस लुहरवेट नामक एक फ्रांसीसी वकील एक ऐसा अद्‌भुत व्यक्ति था जो लगातार ७१ वर्ष तक एक क्षण भी नहीं सोया ।

अरमाण्ड का जन्म सन् १७९१ ई. में पेरिस हुआ में हुआ था । २१ जनवरी १७९३ को जब उनकी माँ उन्हें लेकर सम्राट लुई सोलहवें का मृत्युदण्ड देखने गईं । वहाँ का वीभत्स दृश्य देखकर बच्चा ऐसा सहमा कि उसकी नींद सदा के लिए गायब हो गई ।

ट्रेन्कुलाइजर्स से लेकर मालिश तक के विभिन्न उपचारों का कोई प्रभाव न पड़ा । विचित्रता यह रही कि आरमण्ड के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव न पड़ा । उनकी मृत्यु १८६४ में ७३ वर्ष की आयु में हुई ।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि शरीर में विद्युत तन्त्र की समर्थता विद्यमान है और वह यदा-कदा अपनी प्रखरता का परिचय भी देता रहता है । सामान्य जीवनक्रम उसी पर निर्भर है । प्रगति के विभिन्न पक्षों में प्रायः इस बिजली की ही खपत विशेष रूप से होती है जो उसके उत्पादन की उपेक्षा करते हैं तथा अपव्यय की रोकथाम में सतर्कता नहीं बरतते वे पौष्टिक आहार लेते हुए भी दुर्बलता, रुग्णता, थकान और जराजीर्ण स्थिति की ओर तेजी से घिसटते जाते हैं ।

बुढ़ापा क्यों आता है ? इसका उत्तर आमतौर से रक्त संचार में शिथिलता, माँसपेशियों में दुर्बलता, अवयवों का वजन घट जाना आदि माना जाता है, पर यह दुर्बलता क्यों आती है ? इसका विश्लेषण नहीं किया जाता । वस्तुतः हमारी विद्युत उत्पादन और संचार प्रणाली लडखड़ाती है और अवयवों को यथा समय पोषण मिलने का काम ढीला पड़ जाता है । इसके लिए वे उपाय ढूँढ़े जाने चाहिए थे जो शरीर की विद्युतीय व्यवस्था को समर्थ बनाए रहें । यह कार्य योग साधनों में अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह हो सकता है और बुढ़ापा रोकने में हर व्यक्ति उस आधार पर एक बड़ी सीमा तक सफल हो सकता है ।

कुछ समय पूर्व बम्बई के एक विद्वान बी. जे. रेले ने एक पुस्तक लिखी थी—दी वैदिक गार्डस एज. फिगर्स ऑफ बायोलॉजी । उसमें उन्होंने सिद्ध किया था कि वेदों में वर्णित आदित्य, वरुण, अग्नि, मरुत, मित्र, अश्नि, रुद्र आदि मस्तिष्क के स्थान विशेष में सन्निहित दिव्य शक्तियाँ हैं जिन्हें जागृत करके विशिष्ट क्षमता सम्पन्न बनाया जा सकता है ।

शरीरगत ऊर्जा एक प्रचण्ड शक्ति : भाण्डागार

यों शरीर को हाड़-माँस का पुतला-मिट्टी का खिलौना और पंचतत्वों का बे-मेल खेल कहा जाता है । पानी के बबूले से उपमा देकर क्षण भंगुर बताया जाता है । इस कथन में इतना ही सार है कि यह विपत्ति टूट पड़ने पर नष्ट भी हो सकती है, पर जैसी भी कुछ इसकी सत्ता है उस पर दृष्टिपात करने से वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमाणु भट्टियों जैसा शक्तिशाली संयन्त्र सिद्ध होता है । उसकी सम्भावनाएँ अनन्त हैं । ब्रह्माण्ड का बीज इस पिण्ड को सही ही बताया गया है । जो शक्तियाँ ब्रह्माण्ड में देखी गई हैं या भविष्य में देखी जायेंगी उनका बीज इस पिण्ड में इस प्रकार मौजूद है कि यदि कोई उसे खींच सके तो देखते-देखते विशालकाय वृक्ष के रूप में परिणत हो सकता है ।

माँसपेशियों में भरी हुई कोशिकाओं में छलकती हुई त्वचा में चमकती हुई ऊर्जा दियासलाई की तरह छोटी है पर यदि ठीक तरह जला दिया जाय और अभीष्ट आधार के साथ नियोजित कर दिया जाय तो उसे प्रचण्ड दावानल के रूप में संव्याप्त भी देखा जा सकता है । नन्हे से परमाणु को जब अपनी शक्ति प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है तो वह धरती को हिला देता है और आसमान को कँपा देता है । मानव शरीर की ऊर्जा में भौतिक जगत में काम करने वाली ऊर्जा के अतिरिक्त चेतन्य तेजस् भी विद्यमान है अस्तु इसकी सामर्थ्य और भी अधिक बढ़ जाती है । यदि उसका प्रकटीकरण एवं प्रस्फुरण किया जा सके तो उसका चमत्कार देखते ही बने । मनुष्य में ऋद्धि-सिद्धियो का भण्डार भरा-पूरा परिलक्षित हो ।

शरीर पर लिपटे हुए सीधे-साधे त्वचा परिधान को ही गम्भीरतापूर्वक देखिए । उसकी रचना और प्रक्रिया कितनी सम्वेदनशील, सूक्ष्म, जटिल और मशक्त है । एक वर्ग फुट त्वचा में लगभग ७२ फुट लम्बी तन्त्रिकाएँ जाल की तरह बिछी हुई हैं । इतनी ही जगह में रक्त नलिकाओं की लम्बाई लगभग १२ फुट बैठती है । शरीर की गर्मी को जब बाहर निकलना आवश्यक होता है तो वे फैल जाती है और जब ठंड लगती है तो भीतर की गर्मी बाहर न निकलने देने से शरीर को गरम बनाए रखने के लिए वे सिकुड़ जाती हैं ।

सम्पूर्ण शरीर की त्वचा में लगभग दो लाख स्वेद ग्रन्थियाँ हैं इनमें पसीने के रूप में शरीर के हानिकारक पदार्थ बराबर बाहर निकलते रहते हैं । यदि स्नान करने में आलस्य बरता जाय तो चमड़ी पर पसीना सूख कर एक परत जैसा बन जाता है और उसके विषैलेपन से बदबू ही नहीं आती वरन् खुजली, दाद, फुन्सियाँ जैसी बीमारियाँ भी पैदा हो जाती हैं । चमड़ी की बीमारियों में कोढ़ मुख्य है । संसार में एक करोड़ पाँच लाख कोढ़ी हैं जिनमें से २६ लाख तो केवल भारत मे ही हैं ।

यों चमड़ी सीधी-साधी सफाचट दीखती है पर उसमें इतने छोटे-छोटे भेद-प्रभेद भरे होते हैं कि आश्चर्य करना पड़ता है कि किस प्रकार उसमें इतनी चीजें भरी हुई हैं । एक वर्ग सेन्टीमीटर चमड़ी में १५ तेल ग्रन्थियाँ, १० रोंए, ३० लाख कोशिकाएँ, ४ ताप सूचक तन्त्र, २०० दर्द सूचक स्नायु छोर, २५ स्पर्शानुभूति तन्त्र, ४ गंज स्नायु, ३ हजार सम्वेदना ग्राहक कोशिकाएँ, १०० स्वेद ग्रन्थि, ३ फुट रक्त वाहिनियाँ । इन सबका अपना-अपना अनौखा कर्तृत्व है, और वह ऐसा अद्‌भुत है कि मानव कृत संयन्त्रों को इस त्वचा प्रक्रिया के सम्मुख तुच्छ ठहराया जा सकता है ।

त्वचा के भीतर भरी हुई माँसपेशियों को देखिए । यों वे घिनौनी लगती हैं पर उनका प्रत्येक कण कितनी ऊर्जा सम्पन्न है, इसे देखते हुए अवाक रह जाना पड़ता है । ताकत का लेखा-जोखा लिया जाता है, खेलों में, युद्धों में, प्रतियोगिताओं में, काम के मूल्यांकन में, ताकत की परख होती है । कौन कितना ताकतवर है, कौन कितना कमजोर इस बात का लेखा-जोखा लिया जाता है । यह ताकत कहाँ रहती है ? कहाँ से आती है ?

शारीरिक शक्ति का स्रोत हमारी माँसपेशियाँ, लचक, स्फूर्ति आकुंचन-प्रकुंचन सब कुछ उन्हीं के ऊपर निर्भर रहती है । जब उनमें समर्थता भरी रहती है तो मनुष्य को वज्र अंगी, लौह पुरुष आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है । कुश्ती, दौड़, भारोत्तोलन, छलांग, दबाव आदि के अवसरों पर जो करामात शरीर दिखाता है उसे स्वस्थ माँसपेशियों का चमत्कार ही कहना चाहिए । यदि वे ढीली पड़ जायें, क्षमता खो बैठें तो फिर चलना, खड़ा होना और भोजन पचाना तक कठिन हो जाय ।

माँसपेशियों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—(१) बहुत बारीक तन्तुओं से बनी हुई—जो गति पैदा करती हैं—चलने, खाने, हँसने आदि में इन्हीं का उपयोग होता है । मस्तिष्क की आज्ञा, इच्छा होने पर ही इनमें सक्रियता आती है (२) जो स्वतः निरन्तर कार्य करती हैं । पाचन क्रिया, श्वास-प्रश्वास, रक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संचालन, पलक झपकना, पसीना निकलता आदि कार्य वे स्वतः सम्पन्न करती रहती हैं (३) वे जिनमें दोनों विशेषताएँ हैं और शरीर के भीतर की रासायनिक क्रिया से प्रभावित रहती हैं । इन तीनों का ही अपना महत्त्वपूर्ण उपयोग है । इन्हीं के सम्मिश्रित प्रयत्नों के फलस्वरूप हम स्वस्थ और बलिष्ठ दिखाई पड़ते हैं । यदि इनमें कमजोरी आने लगे तो दर्द होने लगेगा । पैरों की भड़कन, पीठ दर्द और कमर का दर्द, जैसी शिकायतें, माँसपेशियों में अकड़न, कठोरता बढ़ने के कारण ही इस तरह के दर्द होते हैं ।

माँसपेशियों का काम देखने में सरल-सा लगता है, पर वस्तुतः उनकी संरचना और कार्य पद्धति इतनी अधिक जटिल है कि अन्वेषक चकित रह जाते हैं । अणु विज्ञान को, उसके क्रिया-कलाप को, अणु यन्त्रों को जटिल माना जाता है । माँसपेशियों को इच्छित या अनिच्छित क्रिया-कलाप करने में जितनी जटिल क्रिया पद्धति का सहारा लेना पड़ता है उसका विश्लेषण करते हुए कारीगर की अद्‌भुत कारीगरी को चकित रहकर ही देखना पड़ता है ।

हाथ-पैर सबके पास हैं । फिर किसी में क्षमता कम किसी में अधिक क्यों होती है ? समझा जाता है यह अभ्यास से घटती बढ़ती हैं । बेशक इच्छा शक्ति और अभ्यास भी सहायक होता है पर मूल बात माँसपेशियों की सशक्तता ही मनुष्य की बलिष्ठता और कोमलता का मुख्य कारण है ।

भोजनालय में जो कार्य चूल्हे का है—कारखानों में जो कार्य वायलर या इलेक्ट्रिक मोटर का है वही कार्य माँसपेशियाँ करती हैं । गर्मी पैदा करना उन्हीं का काम है । इस गर्मी के बल पर ही अन्य सब अंग गतिशील रहने में समर्थ होते हैं । माँसपेशियाँ सारे शरीर को गर्म रखती हैं और स्वयं गर्म रहती हैं, उन्हें एक प्रकार के हीटर भी कह सकते हैं । शरीर और मन का सम्बध बनाये रखने में इनकी भूमिका अद्‌भुत है । ज्ञान तन्तु समूह इन्हीं में ओतप्रोत होता है । हंसने से लेकर रोने, नृत्य से लेकर भाग खड़े होने तक, सोने से लेकर जगने के समस्त मनोभावों का प्रकटीकरण शरीर द्वारा तभी सम्भव होता है जब यह माँसपेशियाँ ठीक से काम करें । रक्तचाप, हृदय रोग जैसे जटिल रोगों में वस्तुतः उन स्थानों की माँसपेशियाँ ही दुर्बल हो जाती हैं । यह दुर्बलता जितनी बढ़ेगी रुग्णता और मृत्यु का प्रकोप उसी अनुपात से होता चला जायेगा ।

नोबेल पुरस्कार विजेता आकार जे-ज्योगी ने माँसपेशियों की सक्रियता के पीछे दो रासायनिक तत्व खोजे हैं—(१) प्रोटोन सार्क्टन (२) मायोसिन । वे कहते हैं कि इन दोनों का संयोग माँसपेशियों में सक्रियता उत्पन्न करता है । यह दोनों प्रोटीन कहीं बाहर से नहीं आते । स्वतः ही पैदा होते हैं और उनके उत्पादन में इच्छा शक्ति का बहुत योगदान रहता है ।

आहार शास्त्र की दृष्टि और कार्बोहाइड्रेट की उपयुक्त मात्रा माँसपेशियों के पोषण के लिए आवश्यक है, पर साथ-साथ इस खुराक को ग्रहण करने और आत्मसात करने की मौलिक क्षमता तो पहले से ही माँसपेशियों में होनी चाहिए यदि वह न हो तो ऐसी खुराक भी कुछ विशेष कारगर नहीं होती ।

अधिक काम करने से यह माँसपेशियाँ ही थक जाती हैं । उन्हें समुचित विश्राम न मिले तो अधिक दौड़ाने पर थक कर गिर पड़ने वाले घोड़े की तरह वे भी गड़बड़ाने लगती हैं और अधिक काम करने की उतावली, सोने का अण्डा रोज देने वाली मुर्गी का पेट चीर कर सारे अण्डे एक साथ निकाल लेने वाले लालची की तरह घाटे में ही रहता है । काम करने और विश्राम देने के संतुलन का ध्यान रखकर ही पेशियों को स्वस्थ और सक्रिय रखा जा सकता है ।

कुछ पेशियाँ कभी भी विश्राम नहीं लेतीं । हृदय, मस्तिष्क, पाचन तंत्र, फुफ्फुस आदि का काम दिन-रात निरन्तर चलता रहता है । जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कभी भी इनको छुट्टी नहीं मिलती । यह थकान भी मौत का कारण है । यदि बीच-बीच में उन्हें विश्राम मिल जाया करे तो आयुष्य बढ़ाने में माँसपेशियों का वह पुनः शक्ति संचय बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।

गहराई में क्यों जाया जाय, शक्ति के चेतना स्तर को अभी क्यों छुआ जाय । त्वचा और माँसपेशियों की सम्मिलित शक्ति का ही विवेचन किया जाय तो प्रतीत होगा कि इनका सम्मिलित स्वरूप ही किसी बड़े बिजलीघर से कम नहीं है ।

शक्ति का मूल स्रोत है ऊर्जा । बिजली का उत्पादन ऊर्जा से ही होता है । भाप द्वारा, कोयला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जला कर, तेल, पैट्रोल से, पानी को ऊँचे से गिरा कर उसके वेग द्वारा और अब अणु शक्ति से बिजली पैदा की जाती है । यह ऊर्जा की ही विविध प्रतिक्रिया है ।

विद्युत उत्पादन का एक आधार रासायनिक क्रिया भी है । बैटरी इसी आधार पर बनती है । वोल्टा, एम्पीयर, ऑरस्टेड, फैराडे प्रभृति वैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध में नये आविष्कार किए हैं ।

किसी तन्त्र का कार्य करने की क्षमता ऊर्जा कहलाती है । ऊर्जा के अनेक स्तर हैं । पदार्थों की गति के कारण उत्पन्न होने वाली, गतिजऊर्जा, रासायनिक सम्मिश्रण में उत्पन्न होने वाली रासायनिक ऊर्जा, वस्तुओं की स्थिति के कारण उत्पन्न स्थितिज ऊर्जा कही जा सकती है । कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं जिनमें अधिक मात्रा में ऊर्जा तत्व विद्यमान रहते हैं उन्हें ईंधन कहते हैं । ऊर्जा एक से दूसरे रूप में रूपान्तरित तो होती रहती है पर उसका नाश कभी नहीं होता । यह रूपान्तरण प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । रासायनिक पदार्थ जलते हैं और बैटरी की विद्युत उत्पन्न होती है । पैरों द्वारा घुमाए जाने पर साइकिल चलती है यह पैरों की ऊर्जा का साइकिल की गति में रूपान्तरण है । परमाणु ईंधन विखण्डित होकर ही परमाणु शक्ति उत्पन्न होती है । वायलर के नीचे कोयला जला और ज्वलनशीलता ने ताप के रूप में ऊर्जा उत्पन्न की, भाप बनी उससे रेल चली । गैस बनी उससे प्रकाश की बत्तियाँ जलीं । भाप टरबाइन, फोरेसेन्ट लैम्प, हीटर, रासायनिक मिश्रण, विद्युत जनरेटरी की प्रक्रिया में ऊर्जा की शक्ति क्षमता को विविध प्रयोजनों के लिए विविध रूपों में कार्यान्वित किया जाता है । आजकल प्रोपेज गैस से चलने वाले ताप विद्युत उत्पन्न करने वाले हल्के जनरेटर, टेलीविजन आदि छोटे कामों के लिए खूब प्रयोग होते हैं ।

दो विभिन्न प्रकार के धातुओं अथवा धातु मिश्रणों के तारों के सिरे यदि पिघला कर जोड़ दिए जायें और उनके सिरों को विभिन्न तापमानों पर रखा जाय तो उनमें विद्युत धारा प्रवाहित होने लगेगी यह तार विद्युत है ।

कुछ धातुएँ गर्म होने पर अपनी सतह में इलेक्ट्रॉन उभारती हैं । पास में कोई ठण्डी वस्तु हो तो यह उत्सर्जित इलेक्ट्रोन उस पर जमा हो जाते हैं । इस स्थानान्तरण से विद्युत प्रवाह आरम्भ हो जाता है । स्थानान्तरण के मध्य भाग में धनावेश युक्त कणों वाली कोई गैस भर दी जाती है इस प्रकार प्लाज्मा बनता है । प्लाज्मा की उपस्थिति इलेक्ट्रोनों के आवेश को संतुलित करने के लिए आवश्यक है ।

इन दिनों मैग्नेटो हाइड्रो डायमिक-चुम्बकीय द्रव गतिज पद्धति विद्युत निर्माण में सबसे अधिक प्रयुक्त होती है । इसका आधार यह है कि धात्विक चालकों के चुम्बकीय क्षेत्र में घुमा कर विद्युत वाहक बल इलेक्ट्रोमोटिव फोर्स पैदा की जाय । इसके स्थान पर यदि दूसरा प्रयोग किया जाय तो भी यही फोर्स पैदा होगी । धात्विक चालकों के स्थान पर यदि गैसीय चालक 'प्लाज्मा' का प्रयोग किया जाय और उस गैस को चुम्बकीय क्षेत्र में होकर निकाला जाय तो विद्युत उत्पादन का वही प्रयोजन पूरा होगा ।

एक जस्ते की छड़ और एक ताँबे की छड़ यदि नीबू के रस में डाली जाय तो उनके बीच एक विभवान्तर पैदा होता है और उससे उपकरणों में विद्युत प्रवाह चल पड़ता है । रासायनिक बैटरियाँ इसी पद्धति से बनती हैं ।

ईंधन सैल की पद्धति को न समाप्त होने वाली बैटरी पद्धति कहा जा सकता है । प्रयुक्त रसायनों की शक्ति जब समाप्त हो जाती है तब बैटरी अपना काम बन्द कर देती है । पर ईंधन सैल का प्रवाह क्रम बन्द नहीं होता । हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मेल से पानी की उत्पत्ति होती है । यदि वे दोनों गैसें लगातार मिलती रहें तो पानी का निर्माण अनवरत रूप से होता रहेगा । इसमें बाहरी और किसी ईंधन की जरूरत नहीं पड़ेगी । इसी आधार पर यह शोध चल रही है कि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के सम्मिश्रण की भाँति या कोयला, हवा अथवा पैट्रोलियम हवा के सम्मिश्रण से क्या ईंधन सैल बन सकते हैं ।

अन्तरिक्ष यात्रा में यह ईंधन सैल ही काम आता है । भारी चीजों की बड़ी मात्रा में लम्बी दूरी तक उड़ान सम्भव ही नहीं है । ईंधन सैल का एक और स्रोत ढूँढ़ा जा रहा है वह है सूर्यताप । साधारण तथा सूर्य से गर्मी और रोशनी प्राप्त की जाती है । यों साधारणतया वह भी काम की चीज है, पर उसमें जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अगली सम्भावनाएँ विद्यमान हैं उन्हें देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अणु भट्टियाँ और अणु रसायन बनाने के महँगे और खतरनाक झंझट में पड़ने की अपेक्षा, सूर्य से शक्ति प्राप्त करके बिजली की आवश्यकता पूरा कर सकना शक्य हो जायेगा । सूर्य की ऊर्जा पृथ्वी पर एक वर्ग मीटर जगह में १४०० वाट के करीब बिजली बिखेरती है । इस शक्ति का उपयोग जिस दिन मनुष्य के हाथ में होगा उस दिन ऊर्जा का विपुल भण्डार उसकी मुट्ठी में आ जायेगा ।

बैटरी क्षेत्र में एक नया प्रयोग न्यूक्लीय बैटरियों का अब जल्दी ही बड़े पैमाने पर प्रयुक्त होने लगेगा । एक खोखला बेलन चारों ओर रहेगा । बीच में छड़ रहेगी । उस छड़ पर बीटा किरणों का उत्सर्जन करने वाले रेडियो आइसोटोप चढ़ा दिए जायेंगे । बेलन की सतह पर इलेक्ट्रोन जमा होंगे । छड़ और बेलन को तार में जोड़ दिया जायेगा और विद्युतधारा प्रवाहित होने लगेगी ।

लौह विद्युत का रूपान्तर और ताप चुम्बकीय विद्युत का रूपान्तरण सैद्धान्तिक रूप से सम्भव मान लिया गया है । अब उसके सरलीकरण के प्रयोग चल रहे हैं । बेरियम टाइटेनेट के रबे को यदि १२०° से. से अधिक गर्म किया जाय तो उसकी आन्तरिक संरचना में परिवर्तन उपस्थित होता है । इस परिवर्तन की प्रक्रिया को यन्त्रों द्वारा विद्युत में रूपान्तरण किया जा सकता है । चुम्बक रूपान्तरण का भी यही आधार है ।

शरीर में रासायनिक आधार पर विनिर्मित होने वाली बैटरी के समकक्ष रखा जा सकता है । इसके घटक ईंधन सैल कहे जा सकते हैं जो मरण पर्यन्त सूक्ष्म बने रहते हैं । जब तक जीवन है तब तक इस बैटरी की क्षमता समाप्त नहीं हो सकती । अन्तरिक्ष यात्रियों के लिये यही ईंधन उपयुक्त समझा गया है । मनुष्य भी एक अन्तरिक्ष यात्री है । वह अपने पिता के घर से इस मर्त्य लोक में महत्त्वपूर्ण शोध अथवा प्रयोजन पूरे करने आया है उसे अपनी जीवन यात्रा के लिए ईंधन चाहिए वह त्वचा और माँसपेशियों के रूप में स्पष्टतः मिला हुआ है । इतना ही नहीं उसके पास और भी अधिक गहरे शक्ति स्रोत हैं पर ऊर्जा से स्थूल रूप में इस माँस, त्वचा मिश्रित कलेवर को भी अति महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है ।

इस शरीरगत ऊर्जा का चैतन्य प्राणियों पर प्रत्यावर्तन करके उन्हें लाभान्वित किया जा सकता है । इसका एक छोटा-सा प्रयोग जर्मन के डॉक्टर मैस्मर ने किया और उसे मेस्मेरिज्म नाम दिया ।

मेस्मेरिज्म के आविष्कर्त्ता हैं—जर्मनी के डॉक्टर फ्रांसिस्कस एन्टोनियस मैस्मर । वियना में उन्होंने चिकित्सा शास्त्र पढ़ा और उपाधि प्राप्त की । उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण शोध निबन्ध प्रस्तुत किया था जिसमें बताया गया था कि अविज्ञात नक्षत्रों में एक तरल चुम्बकीय पदार्थ इस धरती पर आता है और उससे हम सब प्रभावित होते हैं । इस पदार्थ का सन्तुलन यदि शरीर में गड़बड़ाने लगे तो शारीरिक और मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं । यदि किसी प्रकार यह चुम्बकीय सन्तुलन ठीक कर दिया जाय तो बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य फिर ठीक हो सकता है ।

इसका प्रयोग भी उन्होंने रोगियों पर किया और सफलता तथा ख्याति भी अर्जित की वे लौह चुम्बक को अपने शरीर की विद्युत से प्रभावित करते थे और फिर उस चुम्बक को रोगी के शरीर से स्पर्श कराके उस अभाव की पूर्ति करते थे जो रोग का कारण थी । इसके लिए वे अपनी संकल्प शक्ति की साधना द्वारा अपना मनोबल तथा और आवश्यक चुम्बकीय विद्युत की मात्रा बढ़ाते थे । उनकी चिकित्सा प्राणाली में दूर से आने वाली मधुर और मादक संगीत का प्रयोग किया जाता था ताकि रोगी को मानसिक एकाग्रता और भाव सान्त्वना का लाभ मिले । अपने में शारीरिक विद्युत की मात्रा बढ़ाना और उस लौह चुम्बक के माध्यम से रुग्ण व्यक्तियों को लाभान्वित करना यही उनका चिकित्सा क्रम था । लाभान्वित रोगियों के मुँह से प्रशंसा सुनकर कष्ट पीड़ितों की संख्या दिन-दिन बढ़ने लगी और वह हर रोज सैकड़ों तक पहुँचती ।

अमेरिका में इन दिनों १७ चोटी के शल्य चिकित्सक इस प्रणाली का प्रयोग कर रहे हैं और सम्मोहन विज्ञान के आधार पर रोगियों को सेवा, सहायता पहुँचा रहे हैं । महिलाओं की प्रसव पीड़ा कम करने में तो इन प्रयोगों को शत-प्रतिशत सफलता मिली है । दर्द न होने के इंजेक्शन लगाने की अपेक्षा सम्मोहन प्रक्रिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा उन्हें कष्ट मुक्त स्थिति का लाभ देना उचित और हितकर समझा गया है । प्रसूताओं को भी यही उपचार अधिक उपयुक्त लगा है ।

डॉ. हार्थसेन बेहोशी की आवश्यकता की आधी मात्रा दवा की देकर और आधा सम्मोहन का उपयोग करके अपना काम चलाता है । शल्य चिकित्सा के समय आवश्यक एनेस्थिशिया की मात्रा उन्होंने ५० प्रतिशत घटा दी है । इससे रोगी अर्ध-मूर्छित भर रहता है । सम्मोहन के प्रभाव से उसे कष्ट बिल्कुल नहीं होता ।

कैडर्स अस्पताल में एक १४ वर्षीय लड़की का कान का ऑपरेशन होना था उसमें ५ घण्टे लगने थे । इतने लम्बे समय तक दवाओं की बेहोशी पीछे घातक सिद्ध हो सकती थी इसलिए सम्मोहन के आधार पर ऑपरेशन करने का निश्चय किया गया । यह ऑपरेशन सफल रहा इतनी देर तक इतना गहरा ऑपरेशन करने की इस सफलता ने इस विज्ञान की महत्ता को अब असंदिग्ध रूप से स्वीकार कर लिया है ।

केन्सर की असहनीय पीड़ा किसी दवा से काबू में नहीं आती । केन्सर से कोशिकाएँ अनियन्त्रित रूप से बढ़ती हैं, जो नयी बनती हैं वे अन्य कोशिकाओं के साथ फिट नहीं बैठतीं । उसका उपचार शल्य चिकित्सा, रेडियो विकिरण आदि से किया जाता है, पर दर्द घटाने का उपचार उपलब्ध न होने से अब उस अभाव की पूर्ति सम्मोहन विज्ञान द्वारा की जाने लगी है और इससे रोगियों को बड़ी राहत मिली है ।

मस्तिष्कीय चोट, अबुन्द सूजन, रक्तचाप, हृदयशूल, उन्माद जैसे कष्टों में सम्मोहन का उपयोग निरापद समझा गया है । कमजोर हृदय वालों पर क्लोरोफार्म जैसी दवाओं की हानिकारक प्रतिक्रिया होती है, इसीलिए उनके ऑपरेशनों में भी सम्मोहन ही ठीक समझा गया है ।

डॉ. हार्थमैन ने इस उपचार से न केवल रोगी अच्छे किए हैं वरन् व्यसनी और बुरी आदत वालों की कुटेवें भी छुड़ा दी हैं । नशेबाज जो अपने को आदत से लाचार मानते थे इस व्यसन से छुटकारा पा सके । बिस्तर में पेशाब कर देने वाले बड़ी उम्र के बच्चे भी इस व्यथा से छूटे ।

हृदय के संकुचन के समय यदि रक्तचाप १६० एम. एम. से अधिक हो और प्रकुंचन के समय वह ९० एम. एम. से अधिक हो तो रक्तचाप बढ़ जाता है । ऐसी स्थिति में बाएँ क्षेमककोष्ट पर अधिक दबाव पड़ता है—रक्त संचार से अधिक शक्ति लगानी पड़ती है । यह क्रम कैसे रोका जाय, इसके लिए अन्य चिकित्सा इतनी उपयोगी सिद्ध नहीं हुई जितना कि सम्मोहन सफल रहा ।

माँसपेशियों द्वारा उत्पादित और त्वचा तन्तुओं द्वारा संचारित शरीरगत ऊर्जा को संकल्प शक्ति द्वारा एकत्रित करना और उसे किसी दूसरे के कष्ट निवारण का साधन बनाना, यही मेस्मेरिज्म का प्रचलित प्रयोग है । पर यह आरम्भ है अन्त नहीं । यह एक छोटा-सा उपचार मात्र है । योग की तन्त्र शाखा में इस शरीरगत ऊर्जा का उच्चस्तरीय उत्पादन और प्रयोग का विधान विज्ञान भरा है । यदि इस आधार पर इस शक्ति स्रोत से लाभ उठाया जा सके तो मनुष्य अपना और दूसरों का असीम हित साधन कर सकता है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण-तत्व के सदुपयोग को समझें और लाभ उठायें

मनुष्य की विद्युत शक्ति का उभार एवं सुनियोजन

मनुष्य के शरीर में विद्युत शक्ति का भाण्डागार छिपा होने की बात सर्वविदित है । उसी की क्षमता से हृदय के फेफड़े, आमाशय, जिगर, गुर्दे आदि अपना-अपना काम करते हैं । प्रतीत यह होता है कि रक्त, माँस तथा स्रवित होने वाले रसायन ही जीवन शकट को खींचते हैं, पर वस्तुस्थिति यह है कि जिस प्रकार बिजली की मोटर कारखाने की विभिन्न मशीनों को चलाती और खींचती है, उसी प्रकार शरीर में संव्याप्त बिजली भी अगणित जीव कोशों, स्नायु तन्तुओं तथा अन्यान्य छोटे-बड़े घटकों का संचालन करती है ।

विभिन्न अंग अवयवों को हम काम करते तो देखते हैं । उनमें रक्त प्रवाह और वायु पोषण भी होते देखते हैं, पर यह प्रत्यक्ष समझ नहीं पाते कि इस सबके मूल में कौन शक्ति काम करती है । उसका उद्गम स्रोत कहाँ है ? यह सूत्र संचालन कैसे और कहाँ से होता है ।

आध्यात्म शास्त्र में इस जीवनी शक्ति को प्राण कहा गया है । प्राण क्या है ? इसे ऑक्सीजन नहीं समझा जाना चाहिए । इस सन्दर्भ में इतना जान लेना ही पर्याप्त है कि ऑक्सीजन में भी प्राण मिला होता है, पर वह मात्र ऑक्सीजन ही नहीं है ।

ब्रह्माण्ड-व्यापी चेतन तत्व से यह समस्त संसार अनुप्राणित होता है । वह जड़ पदार्थों में क्रिया शक्ति के रूप में काम करती है । परमाणु घटकों का विस्फोट करके यह सहज ही जाना जा सकता है कि पदार्थ के अन्तराल में कितनी प्रचण्ड क्षमता भरी हुई है । इसी प्रकार वही शक्ति जीवधारियों में उनकी इच्छा शक्ति के रूप में काम करती देखी जाती है । मनोविज्ञानियों के अनुसार उसका भण्डार अचेतन मन में है । इसका स्थान मस्तिष्क का मध्यभाग माना गया है जिसे ब्रह्मरन्ध्र या सहस्रार चक्र कहते हैं । अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के हारमोन स्रावों की स्थिति को यही केन्द्र प्रभावित करता है । ज्ञान तन्तुओं की, ज्ञानेन्द्रियों की दौड़ मस्तिष्क तक ही रही है । वहीं वे अपने अनुभव पहुँचाते और स्थिति के अनुरूप सन्देश लेकर वापस लौटते हैं । यह घुड़दौड़ निरन्तर चलती रहती है । इसी के साथ प्राण विद्युत का समग्र तन्त्र जुड़ा होता है । मृत्यु के समय अन्य सभी अवयव या रसायन प्रायः यथावत् बने रहते हैं । केवल यह विद्युत प्रवाह की मस्तिष्क में अवस्थित उद्गम केन्द्र से निःसृत होना बन्द हो जाता है ।

प्राण विद्युत मनुष्य की मानसिक विशिष्टताओं को भी प्रभावित करती है । प्रतिभा उसी का उभार है । स्फूर्ति, दृढ़ता, साहसिकता का सीधा सम्बन्ध भी उसी से है । ओजस्, तेजस्, वर्चस के रूप में उसी को प्रकाशित होते देखा जाता है, योगी इसी को शक्तिपात के रूप में प्रयुक्त करके अल्पप्राण वालों को महाप्राण बनाते हैं । तान्त्रिकों के अभिचारों में भी उसी का प्रयोग हेय प्रयोजनों के लिए होता है ।

सत्संग, कुसंग से पड़ने वाले प्रभावों में भी यही ऊर्जा काम करती है और अल्पप्राण वालों को अपनी दिशा में आकर्षित करती है । हिप्नोटिज्म, मेस्मेरिज्म जैसे छुट-पुट प्रयोग भी इसी आधार पर होते हैं । परकाया प्रवेश का क्रम उच्चस्तरीय तो नहीं, पर साधारण उपक्रम इसी आधार पर चलता देखा गया है ।

यह बिजली कभी-कभी अनायास, कभी-कभी प्रयत्न-पूर्वक बाहर की ओर फूट पड़ने की स्थिति में उभरती देखी गई है । ईल नामक मछली जब चाहती है तभी अपने शिकार पर आक्रमण करने के लिए अपने शरीर से इतनी तीव्र विद्युतधारा का प्रवाह फेंकती हैं कि उसे मरणासन्न स्थिति में पहुँचा देती है और फिर उसे सरलतापूर्वक उदरस्थ कर लेती है । अन्य कई जल-जन्तुओं में भी ऐसी ही विशिष्टता पायी गई है ।

ऐसा मनुष्य के सम्बन्ध में भी कई बार देखा जाता है । उनके शरीर से चुम्बक या चिन्गारी के रूप में यह प्रवाह निकलने लगता है । पर वे उसे इच्छापूर्वक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न तो फेंकते ही हैं और न रोक ही सकते हैं । यह उनकी इच्छा शक्ति के आधार पर नहीं होता, जिस प्रकार नहर फूट जाती है तो उसका पानी तेजी के साथ समीपवर्ती क्षेत्र को जल मग्न कर देता है । यह सरल है । एक चूहा भी बिल बनाकर या एक कुदाल भी तोड़फोड़ कर सकता है, पर छिद्र से बहते हुए पानी को रोकना सरल नहीं पड़ता उसके लिए विशेष शक्तिशाली प्रयत्न करने पड़ते हैं, तभी स्थिति काबू में आती है ।

बाघ पेड़ के नीचे बैठा रहता है और ऊपर चढ़े बन्दर आदि को नजर भर कर देखता है । आँख से आँख मिलते ही बन्दर होश हवाश गवाँ बैठता है और नीचे पके फल की तरह टपक कर उसका शिकार बन जाता है । इसी प्रकार अजगर अपनी दृष्टि द्वारा किए गए विद्युत प्रहार से पेड़ पर बैठे पक्षियों को गिरा लेता है । शेर को देखकर बकरी जैसे दुर्बल मनोबल के पशु हक्का, बक्का रह जाते हैं और अपने स्थान पर खड़े हुए ही शिकार बन जाते हैं ।

मनुष्य के शरीर में से निकलने वाली बिजली छूने पर ही आघात मारती है । दूर बैठे पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता।

ब्राजील में एक चौदह वर्ष की लड़की को यह व्यथा लगी । वह अपना शरीर ठण्डे टब-बाथ में डालती तो थोड़ी ही देर में पानी उबलने लगता । ऐसा लगता था मानो उसका हाथ हीटिंग रॉड हो ।

अमेरिका की कुमारी रिको डी फेल जब १५ वर्ष की थी तब इसके शरीर में भी इसी प्रकार की विद्युत धारा बहने लगी उसका गोरा शरीर काला होता चला गया । वह अधिक दिन जी न सकी ।

ऐसी घटनाएँ भी हुई हैं कि किसी व्यक्ति के शरीर पर कुर्सी पर बैठे-बैठे ही आग की लपटें निकलना आरम्भ हुई ? उसके शरीर के कपड़े और अंग तो जल गए पर कुर्सी को कोई नुकसान न हुआ । आयरलैण्ड की इस घटना के प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि लपटें नीले रंग की थीं और बुझाने के सभी प्रयत्नों को निष्फल बनाती हुई वह उसके प्राण लेकर ही शान्त हुई । इस प्रक्रिया को "स्पान्टेनियस कम्बशन" कहा जाता है ।

यह आकस्मिक उपद्रव है । इस प्रकार की अन्यान्य घटनाएँ केवल यही बताती हैं कि उनके शरीर की बिजली किसी प्रकार ऊपर उछल आयी थी और स्पर्श करने पर व्यक्तियों तथा पदार्थों को इस प्रकार प्रभावित करती थी कि वह खतरा बन जाती थी, या तो वह प्रभाव अपने आप घटते हुए समाप्त हो जाता था या फिर उसके प्राणों पर बन आती थी ।

यह दुर्घटनाओं की चर्चा हुई किन्तु साधनात्मक प्रयत्नों से ऐसा भी हो सकता है कि नियन्त्रित मात्रा में सुनियोजित करके नियन्त्रित प्रकार की विद्युतधारा उभरे और बिना स्पर्श के भी इच्छित व्यक्ति को भले या बुरे स्तर पर प्रभावित करे । यह शक्ति अपने शरीर का तो संचालन करती ही है, पर ऐसा ही हो सकता है कि बढ़ी हुई या बढ़ाई गई ऊर्जा अन्यान्यों पर भी भला या बुरा प्रभाव छोड़ सके । इसी को शाप-वरदान के नाम से जाना जाता है ।

सदुपयोग और दुरुपयोग प्राणाग्नि का भी समझें

द्वितीय महायुद्ध के समय लोगों के मन में छिपे हुए रहस्य उगलवा लेने के लिए प्राण विद्युत के प्रयोग की रहस्यमयी विधियाँ खोजी गई थीं । मनोविज्ञानी जे. एच. एट्स ब्रुक ने इस सन्दर्भ में कई नये सिद्धान्त खोज निकाले थे और उनका प्रयोग जासूसी विभाग के अफसरों को सिखाया था । इसके लिए तव जर्मनी में एक 'हिप्नोटाइज्ड इण्टेलिजेन्स' विभाग ही अलग से बनाया गया था । उसके माध्यम से कितनी ही अद्‌भुत सफलताएँ भी मिली थीं ।

मनीषियों का मत है कि प्रकृति कभी-कभी विलक्षण घटनाओं के सहारे इस तथ्य का बोध कराती है कि मानवी काया में इतनी प्रचण्ड विद्युत भरी पड़ी है कि यदि वह फूट पड़े तो वह शरीर को ही भस्मीभूत कर सकती है । ऐसी रहस्यमय घटनाओं के उदाहरण आये दिन मिलते रहते हैं ।

काउडर स्पोर्ट पेन्सिलवानिया में डान. ई. गास्नेल मीटर रीडिंग का काम करता था । इसी क्षेत्र में एक वृद्ध फिजिशियन डॉ. जॉन इर्विन वेण्टले रहते थे । वृद्ध होते हुए भी वे पूर्णतया स्वस्थ थे । ५ दिसम्बर,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९६६ को नित्य की तरह डान गास्नेल मीटर रीडिंग के लिए निकला डॉ. जॉन इर्विन वेण्टले के दरवाजे पर उसने दस्तक दी । प्रत्युत्तर न मिलने पर उसने आवाज लगाई । फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला । वह मकान के ही एक पाइप के सहारे ऊपर के कमरे में पहुँचा । कारण यह था कि ऊपर कमरे की ओर से एक विचित्र प्रकार की जलने की गन्ध आ रही थी । कमरे में पहुँच कर देखा तो वहाँ से हल्का नीला धुआँ उठ रहा था । कमरे की सतह पर राख की ढेर पड़ी हुई थी । अन्दर कमरे का दृश्य अत्यन्त वीभत्स था । डॉ. वेण्टले का दाहिना पैर जूते सहित मात्र अधजली स्थिति में पड़ा था । अवशेष शरीर के सभी अंग जलकर राख हो गए थे । विशेषज्ञों ने भली-भाँति घटना का अध्ययन किया और अन्ततः स्वतः जलने की संज्ञा दी । ऐसा कोई सुराग नहीं मिला जो किसी अन्य प्रकार से आग लगने की पुष्टि कर सके । सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि कमरे से निकलने वाली दुर्गन्ध माँस के जलने जैसी न होकर मीठी महक से युक्त थी ।

इसी तरह की एक घटना जुलाई १९५१ के एक दिन प्रातः सेण्ट पीटर्स वर्ग फ्लोरिडा में घटी । मेरीरिजर नामक एक अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट महिला अपनी कुर्सी पर ही बैठे-बैठे जल गई । इस कायिक दहन की विशेषता यह थी कि भयंकर अग्नि शरीर से निकली उसे जलाती रही पर मात्र एक मीटर के घेरे तक ही सीमित रही । मेरी का ८० किलो वजनी शरीर पूर्णतया भस्मीभूत होकर चार किलो राख में परिवर्तित हो गया । वेण्टले की भाँति उसका भी एक पैर अधजला उस घेरे में बच गया था । खोपड़ी सिकुड़ कर सन्तरे के आकार में बदल गई थी ।

अवशेषों की जाँच के लिए पेन्सिलवानिया स्कूल ऑफ मेडिसिन के फिजिकल एन्थ्रोपोलॉजी के प्रोफेसर डॉ. विल्टन क्रोगमॅन के पास भेजा गया तो खोपड़ी की आकृति देखकर वे आश्यर्यचकित रह गए । वह एक ख्याति प्राप्त फोरेंसिक वैज्ञानिक थे तथा वर्षों का अनुभव था । अब तक की घटनाओं में ऐसी कोई घटना उनके पास नहीं आयी थी कि जलने के उपरान्त खोपड़ी सिकुड़कर छोटी हो गई हो, क्योंकि विज्ञान के नियमानुसार जलने के बाद खोपड़ी को या तो फूल जाना चाहिए अथवा टुकड़े-टुकड़े हो जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि इस विचित्र अग्निकाण्ड में खोपड़ी का सिकुड़कर छोटा हो जाना निःसन्देह एक आश्चर्यजनक बात है । अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने यह बताया कि बारह घण्टे तक लगातार तीन हजार डिग्री फारेनहाइट तापक्रम पर रहने पर भी शरीर की सम्पूर्ण हड्डियाँ जलकर भस्मसात हो गई हों ऐसा अब तक देखा-सुना नहीं गया था, पर यह घटना अपने में सबसे विलक्षण है जिसकी यथार्थता पर बिल्कुल ही सन्देह करने की गुंजाइश नहीं है ।

नैशविल यूनिवर्सिटी के गणित विभाग के प्रो. जेम्स हैमिल्टन ने आप बीती एक घटना का उल्लेख किया है । १८३५ में वे उक्त विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर थे, अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि "एकाएक मुझे अपने बाएँ पैर के निचले हिस्से में तीव्र जलन महसूस हुई । झुककर उस भाग को देखा तो स्तम्भित रह गया । जलन वाले भाग से लगभग १० सेमी. लम्बी लौ निकल रही थी । यह लौ ठीक उसी प्रकार की थी जैसी कि लाइटर आदि जलाने से निकलती है, पर कुछ ही क्षणों बाद वह अपने आप बुझ गई । आग किन कारणों से लगी यह आज भी हमारे लिए अविज्ञात है ।"

पेरिस की १८५१ में घटी एक घटना और भी अधिक आश्चर्यजनक है । "ग्रेट मिस्ट्रीज" पुस्तक के लेखक हैं इलेनार वान जाण्ड्ट तथा राय स्टेमन । पुस्तक में वर्णित घटना के अनुसार एक व्यक्ति ने अपने एक मित्र से शर्त लगाई कि वह जलती मोमबत्ती को निगल सकता है । सत्यता को परखने के लिए दूसरे मित्र ने उसकी ओर तुरन्त एक जलती मोमबत्ती बढ़ा दी । जैसे ही उस व्यक्ति ने निगलने के लिए मोमबत्ती को अपने मुँह की ओर बढ़ाया वह जोर से ही चिल्लाया । मोमबत्ती की लौ से उसके होठों पर नीली लौ दीखने लगी । आधे घण्टे के भीतर ही पूरे शरीर में आग फैल गई और कुछ ही समय में उसके शरीर के अंगों, माँसपेशियों त्वचा एवं हड्डियों को जलाकर राख कर दिया ।

अग्नि के भौतिक जगत में गणित प्रयोग हैं । प्राणाग्नि का स्तर उसमें कुछ ऊँचा ही है नीचा नहीं । यदि उसका स्वरूप और प्रयोग जाना जा सकता है तो हानियों से बचना और लाभों को उठाना यह दोनों ही प्रयोजन भली प्रकार पूर्ण हो सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण विद्युत के भले-बुरे उपयोग

यह विश्व-ब्रह्माण्ड शक्तियों का भण्डार है । इसमें प्रकृति परक और चेतना परक शक्तियों के भण्डार भरे पड़े हैं । वे अपने ढंग से अपना काम करते रहते हैं और उन्हीं के आधार पर सृष्टि-सन्तुलन बना रहता है । एक ओर जहाँ सर्दी में पतझड़ होता है वहीं वसन्त से उसकी पूर्ति हो जाती है । ग्रीष्म से घास-पात और कुएँ, तालाब सूख जाते हैं, तो वर्षा के आगमन पर उस क्षति की पूर्ति भी भली-भाँति हो जाती है । दिन की तपन को रात्रि शान्ति कर देती है और रात्रि की निस्तब्धता को दिनमान मिटा कर रहता है । पापी अपनी दुष्प्रवृत्तियों का दण्ड भोगते हैं और पुण्यात्माओं के लिए सुख-शान्ति का मार्ग खुला रहता है । आलसी, अनगढ़ स्थिति में पड़े रहते हैं और पुरुषार्थ प्रगति-पथ पर आगे बढ़ते हैं । जन्म दर की बढ़ोत्तरी को मृत्यु की कैंची काट-छाँट करती और धरती पर उतना ही बोझ रहने देती है, जितनी कि उसमें वहन करने की क्षमता है ।

यह प्रकृति का सामान्य क्रम हुआ, जिसे भौतिक विज्ञान के सहारे जाना जा सकता है और समझा जा सकता है कि प्रत्यक्ष पदार्थों के पीछे सूक्ष्म शक्तियों का कितना बड़ा हाथ है । अनन्त अन्तरिक्ष में अधर लटके हुए, घूमते और चलते ग्रह-तारकों को उनकी धुरी और कक्षा में बिना कुछ सेकण्डों की भूल-चूक हुए कौन सँभालता है ? इस आश्चर्य का समाधान उनकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति के प्रवाह और पकड़ स्तर को समझने से मिलता है । यदि ऐसा न होता, तो ब्रह्माण्ड के सदस्य परस्पर टकरा जाते और किसी ऐसे गर्त में जा गिरते जहाँ से उनका वापस लौटना सम्भव न होता । जल, थल और वायु का त्रिवर्ग अपने को घुलाता-मिलाता अठखेलियाँ करता और इस धरती की सुन्दरता तथा सजीवता को अक्षुण्ण रखता है । जहाँ अड़चन आ जाती है, वहाँ उसे तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी आदि अपने आघातों से ठीक कर देते हैं । नेत्रों से दीख पड़ने वाले तथा अन्य इन्द्रियों, उपकरणों से अनुभव में आने वाले प्रायः सभी पदार्थ ताप, शब्द और ध्वनि की सूक्ष्मता के स्थूल परिचय हैं । यह प्रकृति कौतुक है, जिसे हम पदार्थ विज्ञान के आधार पर समझते और उसमें जितना हस्तगत हो सकता है, उसका लाभ उठाते हैं ।

दूसरा अदृश्य जगत चेतना का है । जिस प्रकार दृश्यमान शरीर और अदृश्य प्राण के समन्वय से मानवी सत्ता कार्यरत रहती है । ठीक उसी प्रकार इस निखिल ब्रह्माण्ड में दृश्यमान अनुभव गम्य पदार्थ सत्ता है । उसकी पूरक आत्म चेतना है, जो प्राण रूप में जीवधारियों को कठपुतली की तरह नचाती है । शरीर में से प्राण निकल जाय, तो वह तेजी से सड़ने लगेगा । उसी प्रकार यदि इस दृश्य चेतना न रहे, या गड़बड़ा जाय, या व्यतिक्रम करने लगे, तो समझना चाहिए कि महा-प्रलय, खण्ड-प्रलय, भयंकर उथल-पुथल का कोई विग्रह खड़ा हुआ है । विश्व-चेतना न स्वयं गड़बड़ाती है और न सम्बद्ध क्षेत्र को गड़बड़ाने देती है । जहाँ भी व्यतिक्रम खड़ा होता है, वहीं उसे ठोक-पीटकर व्यवस्थित करती है ।

प्राण चेतना का अपना स्वतन्त्र विज्ञान है । उसका स्वरूप स्वभाव एवं वर्चस्व आत्मविज्ञान द्वारा जाना जा सकता है । उस प्रवाह में से जो उपयोगी है, उसे पकड़ा और खींचा जा सकता है । परब्रह्म इसी सत्ता को कहते हैं । वह स्वयं में क्रमबद्ध है और सृष्टि क्रम का भी तारतम्य बिठाये रहती है । उसका अनुनय विनय से सम्बन्ध नहीं है । नियमों को समझने और उनके अनुकूल से ही ब्राह्मी सत्ता का अनुग्रह-अनुदान प्राप्त किया जा सकता है । उसकी न्यूनाधिकता व्यक्ति की पात्रता एवं प्रतिभा पर निर्भर है । ब्रह्म चेतना का भी एक चुम्बकीय क्षेत्र है । ठीक वैसा ही, जैसा कि ग्रह-नक्षत्रों का चुम्बकत्व होता है । पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की सुस्थिरता ही अपनी दुनिया को सुव्यवस्थित और सुनियोजित बनाये हुए है । आवश्यकता इस बात की है कि हम उसके क्रम स्वरूप और नियम को समझें, उसके उपयोगी अंश को ग्रहण कर सकने योग्य अपने को बनावें । यह प्रयोजन ज्ञान, कर्म और भक्ति की तात्विक प्रक्रिया का अवलम्बन करके पूरा किया जा सकता है ।

परम सत्ता की ब्रह्माण्डीय चेतना को समझने और पकड़ने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है । उसे अपने ही कायकलेवर के अन्तर्गत ओत-प्रोत पाया जा सकता है और उस महासागर में से अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयोग का वैभव हथियाया जा सकता है । परमात्मा अत्यन्त विशाल है, परब्रह्म की परिधि अत्यन्त विस्तृत है । बुद्धि के लिए अगम्य भी, पर छोटा मॉडल आत्म चेतना के रूप में अपेक्षाकृत अधिक सरलता से समझा जा सकता है ।

ब्रह्माण्ड की, उसके एक घटक सौर मण्डल की विधा को छोटे परमाणु में भी उसी रूप में काम करते हुए देखा जा सकता है । परमाणु सामान्यतः अदृश्य धूल कण हैं, पर उसकी एक छोटी-सी इकाई का विस्फोट कर सकने पर इतनी प्रचण्ड ऊर्जा प्रकट होते देख सकते हैं, कि उसकी विभीषिका का अनुमान लगाने भर से रोमांच होने लगे । विराट् ब्रह्म का लघुतम घटक परमाणु है । इसी प्रकार परब्रह्म परमात्मा का प्रतिनिधित्व कायकलेवर में समाहित आत्मा करती है । आत्मा पूर्ण भी है और अपूर्ण भी । अपूर्ण इस अर्थ में कि उस जैसी अगणित कोशाओं से यह निखिल ब्रह्माण्ड भरा पड़ा है । उसका अंशधर तो अपूर्ण ही माना जायेगा । पूर्ण इस अर्थ में कि उसमें बीज रूप से वह सब कुछ विद्यमान है, जो इस विराट् में है । छोटे-से बीज में विशालकाय वृक्ष की समूची सत्ता भरी रहती है । वीर्य कण में एक मनुष्य की समूची सत्ता विद्यमान पायी जाती है । एक आत्मा में भी परमात्मा का समूचा वैभव विद्यमान रहता है । आवश्यकता उस प्रसुप्त को जागृत करने भर की है । तप और योग का साधनाभ्यास इसी उद्देश्य के लिए किया जाता है । इसका उद्देश्य आत्मोत्कर्ष भी हो सकता है और भौतिक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता का, विभूति-वैभव का चमत्कारी परिचय देना भी । आत्मोत्कर्ष क्षेत्र में स्वर्ग और मुक्ति का समावेश है । सांसारिक चमत्कार प्रस्तुत कर सकने की क्षमता को ऋद्धि-सिद्धि कहते हैं ।

चेतना का ऊर्ध्वलोक भी है, मध्यम भी और कनिष्ठ भी । इसी को स्वः लोक, भुवः लोक और भूः लोक कहते हैं । ऊर्ध्व चेता अपनी चेतना को परब्रह्म के साथ घुला लेते हैं । ईंधन आग के साथ लिपटकर स्वयं भी अग्निरूप हो जाता है । लकड़ी के साधारण टुकड़े में अग्नि तत्व के सारे गुणों का समावेश हो जाता है और वह स्थिति के अनुरूप दावानल-बड़वानल का रूप धारण कर सकता है । ऐसी ही चेतनाएँ देवर्षि, ब्रह्मर्षि, महर्षि आदि नामों से जानी जाती हैं । वे प्रायः वही प्रयोजन पूरा करती हैं, जो परमासत्ता को अभीष्ट है । इन्हें पार्षद् या जीवन मुक्त भी कह सकते हैं ।

जिन्हें दृश्यमान साकार विराट् ब्रह्म से प्रीति है, वे लोक-मंगल में, जन-कल्याण में निरत रहते हैं । इसमें उन्हें दुहरा लाभ मिलता है । प्रथम—अन्तराल में सत् प्रवृत्तियों का सम्वर्धन, कषाय-कल्मषों का निराकरण । दूसरा—पुण्य परमार्थ के पराक्रम से अनेकानेकों का विदित और अविदित हित-साधन । पुण्य फल से सुख-शान्ति की अभिवृद्धि और प्रगति की सुनिश्चित सम्भावना का शास्त्रकारों ने वर्णन किया है । लोक सेवी पुण्यात्मा अपने कर्तृत्व का, प्रतिफल हाथों-हाथ प्राप्त करते हैं । आत्म-सन्तोष, लोक-सम्मान और कठिन प्रयोजनों को सरल बनाने वाला दैवी अनुग्रह उन्हें मिलता है । इन्हीं आधारों को अपना कर लोग महापुरुष, देवमानव बनते हैं । लोकनायक और अनुकरणीय अभिनन्दनीय अग्रगामी ऐसे ही लोगों को कहा जाता है । इतिहासकार उनकी गुण-गाथाएँ, गाते-लिखते नहीं थकते । यह दोनों ही उच्चकोटि की भूमिकाएँ हैं, जिनमें से प्रथम को दैवी और दूसरी को मानवी कहते हैं । इन्हीं को निराकार, साकार उपासना भी कहा गया है ।

तीसरी—भूमिका वह है, जिसे नियमन, निरोध एवं प्रतिरोध कह सकते हैं । यही है—प्रताड़ना भी । इसे वाम मार्ग या तन्त्र मार्ग कहते हैं । इसमें किन्हीं अनाचारों को रोका जा सकता है, अनाचारी प्रवाह को रोका जा सकता है । तन्त्र का सारा विधान-विज्ञान इसी उपक्रम से भरा पड़ा है । यों कई अविवेकी इसका लोभ एवं द्वेष वश दुरुपयोग भी करते हैं और निर्दोषों को सताकर अपनी दुष्टता का परिचय भी देते हैं, पर इसमें विज्ञान का कोई दोष नहीं । दोष व्यक्ति का है । लाठी के सहारे चलने में सुगमता भी होती है और दुरुपयोग करके किसी का सिर भी फोड़ा जा सकता है । तन्त्र का पिछले दिनों अनर्थ मूलक उपयोग ही अधिक हुआ है, इसलिए वह बदनाम भी अधिक है ।

तन्त्र में मानवी चेतना की विद्युत शक्ति ही काम करती है । शरीर और प्राण का सम्मिलित उत्पादन वैसा ही शक्तिशाली होता है, जैसा कारतूस में भरी हुई बारूद और गोली का तालमेल । तन्त्र का प्रयोग हर कोई नहीं कर सकता और न वह हर किसी पर सफल हो सकता है । बिजली धातुओं में होकर प्रवाहित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती है । जनरेटर द्वारा उत्पन्न की जाती है । उसी प्रकार तन्त्र शक्ति का उत्पादन और प्रयोग कठिन तो है, किन्तु असाध्य या असम्भव नहीं ।

आमतौर से तान्त्रिक प्रयोग अनाचार या अनाचारियों के विरुद्ध किए जाते हैं । यह भी राज-दण्ड की तरह आत्म-दण्ड की एक प्रक्रिया है, जिसमें दोषी ही प्रताड़ित होने चाहिए, द्वेष, या लोभ के लिए इस शक्ति का प्रयोग तो सर्वथा अनुचित है, पर जिनकी दाढ़ में खून का चस्का लग जाता है, वे आतंकवादियों की तरह इस प्रकार के प्रयोग अपना प्रत्यक्ष लाभ और अहंकार का पोषण हुआ अनुभव करते हैं ।

मानवी काय-कलेवर में विद्युत शक्ति की उपस्थिति सर्वमान्य है । बिजली अनेक उत्तम उपयोगों में भी काम आती है और उसके झटके भर से किसी का प्राण हरण भी हो सकता है । सामान्य हानि पहुँचाना तो और भी सरल है । विशेषतया व्यक्तिगत प्रयोजनों में तो उसकी परिधि सीमित होती है, इसलिए आघात भी जल्दी लगता है । मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन आदि के प्रयोग व्यक्तियों द्वारा व्यक्तियों पर ही किए जाते हैं, पर वे बन तभी पड़ते हैं, जब योगाभ्यास की भाँति तन्त्र शक्ति के उपार्जन में प्रचण्ड परिश्रम कर लिया जाय, अन्यथा डराने-धमकाने का छद्म तो लोक-व्यवहार में भी प्रयुक्त होता रहता है । तन्त्र के लिए इससे बढ़ा-चढ़ा आधार चाहिए ।

योगी योगाग्नि में अपना शरीर स्वयं जला लेते हैं और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों को भी शाप देकर भस्म या अहित कर सकते हैं । यह विद्युत शक्ति जीवितों में तो होती ही है, वह मृतकों में भी भूत-पिशाच के रूप में बनी रहती है और ब्रह्मराक्षस बन कर पीछा करती है । इस प्रकार के आक्रमण उसे तोड़-मरोड़कर रख सकते हैं जिस पर कि उसका प्रहार हुआ है ।

मिस्र के पिरामिडों में से एक तूतन खामन की कब्र को खोदने वाले अनेक अनुसन्धानकर्त्ताओं में से प्रायः सभी बेमौत मरे थे । दुर्वासा की क्षमता शाप प्रधान थी । भस्मासुर ने भी यह कौशल प्राप्त कर लिया था । सुरसा, ताड़का, सूर्पनखाँ, पूतना आदि नारियों को भी यह शक्ति प्राप्त थी । दमयन्ती ने व्याघ्र को भस्म किया था और शृंगी के शाप-प्रहार से परीक्षित को तक्षक ने डसा था ।

विज्ञान सदा एक रस रहता है । उसके सिद्धान्त और प्रभावों का प्रतिपादन सदा अविच्छिन्न बना रहता है । आदिम विज्ञान भी अपनी मौलिक गरिमा सदा बनाये रहता है । उसके द्वारा जहाँ अपना और दूसरों का हित साधन होता है, वहाँ तन्त्र पक्ष को अपना कर भयंकर कृत्य भी हो सकते हैं । इसकी चपेट में व्यक्ति भी आ सकते हैं और प्रयास भी । किसी के शरीर को अपंग-अल्पजीवी बना देने की तरह उसके व्यवसाय, कारोबार, परिवार में भी ऐसा व्यवधान डाला जा सकता है, जिससे लाभ के लिए किए गए प्रयास हानिकारक सिद्ध होते चलें ।

व्यक्तिगत तान्त्रिक प्रयोगों में प्रतिपक्षी की बुद्धि भ्रमित होती और हिम्मत टूटती है । सही सोचने और सही कदम उठाने की प्रक्रिया भी गड़बड़ा जाती है । अनिद्रा जैसे रोग घेरते हैं । तनाव की उत्तेजना छायी रहती है । ऐंठन होती है और डरावने स्वप्न आते हैं, यह प्रारम्भिक लक्षण हैं । तन्त्र प्रयोगों से आहत व्यक्ति की चोटें यदि हल्की हैं, तो वह बहुत समय तक उस पीड़ा को सहता और धीरे-धीरे गलता-घुलता रहता है, किन्तु यदि आक्रमण तीव्र हुआ, तो वह समग्र अनिष्ट कर सकता है ।

सत्संग और कुसंग का जैसा प्रभाव होता है, वैसा ही मानवी विद्युत से उच्चस्तरीय एवं अनिष्टतम हो सकता है । कालिदास, वरदराज की तरह उसे विद्वान, भीम घटोत्कच की तरह बलवान, कर्ण-सुदामा की तरह धनवान भी बनाया जा सकता है, किन्तु प्रयोग यदि अनिष्ट के निमित्त हुआ है तो उसका प्रभाव ऐसा हो सकता है जिससे अच्छा-खासा व्यक्ति अपंग, असहाय की तरह कष्ट भोगे और यत्र-तत्र ठोकरें खाता फिरे । यह शक्ति की प्रकृति का परिचय है । चाकू साग काट सकने के भी काम आ सकता है और गला काटने के लिए भी, सदुपयोग और दुरुपयोग कर्त्ता के अधीन है । इसमें शक्ति माध्यमों पर दोषारोपण नहीं किया जा सकता ।

प्राचीनकाल में महाभारत जैसे युद्धों में जिन दिव्य अस्त्रों का प्रयोग हुआ था, वे धातु विनिर्मित ही नहीं वरन् मानवी विद्युतधारा विनिर्मित दिव्य आयुध ही थे जो वर्तमान मृत्यु किरण, लेसर किरणों की तरह प्रतिपक्षी पर छोड़े जाते थे और निष्णातों द्वारा उन्हें मन्त्र बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से निरस्त भी किया जाता था । उनकी समता लौहकारों द्वारा विनिर्मित अस्त्र-शस्त्र नहीं कर सकते थे । कालपाश, नागपाश आदि ऐसे ही दिव्य आग्नेयास्त्र थे जो प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर न होते हुए भी लक्ष्य को वेधकर हटते थे ।

यह प्रयोग व्यक्तिगत लक्ष्य को रखकर नहीं अपितु किसी योजना को असफल बनाने के लिए भी हो सकते हैं । इन्हीं दिनों अमेरिका के चार अन्तरिक्ष यान लगातार ब्रह्माण्ड में प्रवेश करने में असफल रहे हैं । हो सकता है कि इन असफलताओं के पीछे कहीं कोई मानवी विद्युत एवं तन्त्रधारा काम कर रही हो । कुछ वर्ष पूर्व "स्काइलैब" उपग्रह का गिरना भी ऐसा ही अनिष्ट विधा में सम्मिलित किया जा सकता है ।

अमेरिका के अन्तरिक्ष यानों के चैलेन्जर अन्तरिक्ष शटल के दुर्घटनाग्रस्त होकर सभी सात व्यक्तियों के वायुमण्डल में जलने के बाद नासा के दो अन्तरिक्षीय अभियान भी ऐसी ही ट्रेजडी के शिकार हुए हैं । नासा की क्षमता व कार्य-प्रणाली पर एक प्रश्न चिन्ह लग गया है । सम्भव है कोई दैवी शक्ति नहीं चाहती हो कि अणु-आयुधों की दौड़, अन्तरिक्ष में मनुष्य का संहार प्रयोजनों हेतु आवागमन बन्द हो । चेरनोबिल रिएक्टर (रूस) में विगत २८ अप्रैल को हुई दुर्घटना जिसमें हजारों व्यक्तियों के मरने के साथ रेडियोधर्मिता के सारे वातावरण में संव्याप्त होने की सम्भावना ने विश्व को दहला दिया है । उस रेडियोधर्मिता के दूरगामी परिणाम हिरोशिमा काण्ड से भी भयंकर होने की सम्भावना है, किन्तु यह चेरनोबिल अकेला नहीं है । यदि स्वतः दहन की नौबत आ ही जाय तो अमेरिका में १०१, कनाडा में १५, अफ्रीका में ५१, भारत में ६, ब्रिटेन में ३७, फ्रांस में ४४, प. जर्मनी में २०, चीन में २ एवं जापान में ऐसे ३२ रिएक्टर हैं जो सारी पृथ्वी को क्षण भर में नष्ट कर सकते हैं । परोक्ष सत्ता नहीं चाहती कि विक्षिप्त मनुष्य के हाथों यह आत्मघाती तलवार सौंपी जाय । यह इस खबर से स्पष्ट होता है जो अभी-अभी अमेरिका से आयी हैं, जिसमें वहाँ के ६५०० उच्च पदस्थ वैज्ञानिकों, जिनमें पन्द्रह नोबेल पुरस्कार विजेता भी शामिल है, ने रोनाल्ड रीगन की स्टार वार योजना (एस. डी. आय.) से अपने हाथ खींचकर असहयोग करने तथा विश्व भर के वैज्ञानिकों से साथ देने की अपील की है । हो सकता है कि यह भी दैवी चेतना का परोक्ष कार्य हो जो वैज्ञानिकों की बदलती मनःस्थिति के रूप में सामने आयी है ।

अगले दिनों व्यक्तित्वों और प्रयासों की वर्तमान स्थिति को मोड़ने-मरोड़ने में सम्भव है । आध्यात्म प्रयोगों की कोई बड़ी भूमिका हो । विनाशकारी और लाभदायक प्रयोजनों में आत्म-शक्ति उतना बड़ा काम कर सकती है जो प्रत्यक्ष उपायों और उपकरणों से सम्भव नहीं ।

प्राणे सर्व प्रतिष्ठतम्

प्राण के महत्त्व और सामर्थ्य पर प्रश्नोपनिषद् में एक सुन्दर अख्यायिका आती है । अथर्ववेद के पिप्पलाद शाखीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत आये इस उपनिषद् में सुकेशा, सत्यकाम, सौर्यायिणी, आश्वलायन, भार्गव और कबन्धी आदि छः ऋषि महर्षि पिप्पलाद के पास पहुँचते हैं और उनसे भिन्न-भिन्न प्रश्न पूछते हैं । महर्षि सबके प्रश्नों का अलग-अलग उत्तर देते हैं । इसमें भार्गव ऋषि का प्रश्न है कि कुल कितने देवता प्रजा को धारण करते हैं ? उनमें से कौन-कौन इसे प्रकाशित करते हैं ? और यह भी बतलाइए कि इनमें सर्वश्रेष्ठ कौन हैं ?

इस प्रश्न के उत्तर में पिप्पलाद ऋषि कहते हैं कि सबका आधार तो वैसे आकाश रूप देवता ही हैं, परन्तु उससे उत्पन्न होने वाले वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी ये चारों महा भूत भी शरीर को धारण किए रहते हैं । यह स्थूल शरीर इन्हीं पांच महाभूतों से बना है, इसलिए ये धारक देवता हैं । पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और अन्तःकरण चतुष्टय ये चौदह देवता शरीर के प्रकाशक हैं । इस प्रकार उन्नीस देह को धारण और प्रकाशित करते हैं । यही पिप्पलादि एक एक संक्षिप्त आख्यायिका के माध्यम से इन सभी देवताओं से परे और ऊपर अधिष्ठाता देव का प्रतिपादन करते हैं । आख्यायिका में कहा गया है कि—

ते प्रकाश्यामि वदंति वयमेवद् वाणमवष्टभ्य विद्यारयाम ॥

तान्वरिष्ठः प्राण उवाच । मामोहमापद्यथाहमेवै तत्पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविमज्यैतद् वाणमवष्टभ्य विद्या रथामिति ते ऽश्रद्ध धाना वभूवुः

—प्रश्नोपनिषद् २/२/३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्—वे सब उन्नीसों देवता अपनी शक्ति प्रकाशित करके आपस में कहने लगे कि हमने इस शरीर को आश्रय देकर धारण कर रखा है । इस पर विवाद उत्पन्न हुआ । सम्पूर्ण महाभूत, इन्द्रियाँ और अन्तःकरण रूपी देवता परस्पर विवाद करने लगे तो तब सर्वश्रेष्ठ प्राण ने उनसे कहा, तुम लोग अज्ञानवश विवाद मत करो । तुममें से किसी की भी इस शरीर को धारण करने की या सुरक्षित रखने की शक्ति नहीं है । इसे तो मैंने ही अपने को पाँच भागों में विभक्त करके (प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान रूप में) धारण कर रखा है । प्राण की यह बात सुनकर भी उन देवताओं को विश्वास नहीं हुआ और वे सन्देह की दृष्टि से देखते रहे ।

प्राण ने इन देवताओं का अभिमान दूर करने के लिए शरीर से बाहर निकलने का उपक्रम किया—

सोऽभिमाना दूर्ध्व मुत्क्रमत इव तस्मिन्नुत्क्रामत्य थेतरे सर्व एवोत्क्रामंते तस्मि श्च प्रतिष्ठ माने सर्व एव प्रतिष्ठन्ते । तद्यथा मक्षिका मधुकर राजानमुत्क्रामंतम् सर्वा एवोत्क्रामन्ते तस्मि श्च प्रतिष्ठ माने सर्वा एवे प्रतिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्रं च ते प्रीता प्राणं स्तुन्वन्ति ॥

—प्रश्नोपनिषद् २।४

उन देवताओं के अभिमान को दूर करने के लिए वर सर्वश्रेष्ठ प्राण इस शरीर से बाहर निकलने के लिए ऊपर की ओर उठने लगा । फिर तो सबके सब देवता विवश होकर उसी के साथ बाहर निकलने लगे । कोई भी अपने स्थान पर स्थिर नहीं रह सका । यह अनुभव कराकर प्राण देवता अपने स्थान पर स्थित हो गया, तो अन्य सब देवता भी उसी प्रकार अपने स्थान पर वापस बैठ गए जैसे मधुमक्खियों की रानी जब अपने स्थान से उड़ती है तो अन्य सब मधुमक्खियाँ भी उड़ जाती हैं और जब वह बैठ जाती हैं तो अन्य सब भी बैठ जाती हैं । यह देखकर वाणी, चक्षु, श्रोत्र आदि दसों इन्द्रियाँ और मन आदि अन्तःकरण की वृत्तियों को यह विश्वास हो गया कि हम सबमें प्राण ही श्रेष्ठ है और वे सब प्राण की स्तुति करने लगे ।

जीवन और शरीर की क्रियाशीलता का मुख्य आधार 'प्राण' चेतन विद्युत कहा जा सकता है । शरीर विद्युत के सम्बन्ध में तो वैज्ञानिकों ने पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कर ली है । शरीर में असंख्य-नस नाड़ियाँ, नदी-नालों की तरह बहती हैं और श्वास-प्रश्वास के अनेकानेक ज्वारभाटे उठते रहते हैं । मस्तिष्क इन गतिविधियों को नियन्त्रण करने वाली देह विद्युत का उत्पादन केन्द्र, जनरेटर कहा जाता है । मस्तिष्क का जनरेटर और हृदय का पम्पिंग स्टेशन मिलजुल कर जिस स्तर की ऊर्जा उत्पन्न करते हैं उसे मानवी विद्युत कहा जा सकता है । इस बिजली से शरीर और मन मस्तिष्क की अगणित हलचलों का क्रम चलता है ।

प्राण शक्ति इस मानवी, विद्युत से भिन्न है । उसे चेतन विद्युत कहा जा सकता है । ब्रह्म के अंशधर जीव का चिन्तन परक एवं सम्वेदनात्मक गतिविधियों का उभार एवं अवसाद इसी प्राण शक्ति की प्रखरता पर निर्भर करता है । इस प्राण शक्ति की प्रखरता ही शरीर में संव्याप्त होकर उसे ओजस्वी बनाती है । मनः संस्थान में उभरती है तो मनुष्य मनस्वी दीखता है और अन्तःकरण में उसका समुचित समावेश होने पर मनुष्य तेजस्वी बनकर अपने आत्मतेज से समीपवर्ती वातावरण को प्रकाशित और प्रभावित करता है ।

गायत्री साधना का उद्देश्य इसी प्राण शक्ति का, आत्मतेज का, ब्रह्मवर्चस का अभिवर्धन करना है । इसी शक्ति का अर्जित कर मनुष्य सामान्य स्थिति से उठ कर महर्षि, राजर्षि, देवर्षि और ब्रह्मर्षि स्तर तक पहुँचता है । जीवात्मा को क्रमशः महात्मा, देवात्मा और परमात्मा स्तर तक ऊँचा उठा ले जाने वाले प्रचण्ड ईंधन के रूप में इसी प्राण शक्ति का उपयोग और संचय करना पड़ता है । यों प्राण शक्ति सभी मनुष्यों और प्राणियों में रहती है । बिना धन के जिस प्रकार निर्वाह चला पाना कठिन है उसी प्रकार बिना प्राण शक्ति के जीवन क्रम का चल पाना असम्भव है । धन की आवश्यकता सभी को रहती है और थोड़ी बहुत मात्रा में वह प्रत्येक मनुष्य के पास रहता भी है । इतने पर भी एक अन्तर देखा जाता है कि कई व्यक्ति निर्धन, साधन हीन और दरिद्र दिखाई देते हैं तो कई धनवान, सम्पन्न और समृद्ध, यह धन की न्यूनाधिक्य मात्रा के कारण ही है । जिसके पास आवश्यकताएँ पूरी करने योग्य धन सम्पदा नहीं होती वे निर्धन कहे जाते हैं और प्रचुर मात्रा में धन सम्पन्न व्यक्ति धनवान होते हैं । उसी प्रकार प्राण शक्ति की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न्यूनाधिकता भी व्यक्ति को निष्प्राण, असहाय अथवा प्राणवान और आत्म तेज सम्पन्न बनाती है ।

साधना क्षेत्र में इसी प्राण-ऊर्जा के अभिवर्धन पर मुख्य रूप से जोर दिया जाता है । साधक को अपना स्तर ऊँचा उठाने और आत्मा का विकास करने के लिए आत्म विद्युत का, प्राण चुम्बक का प्रयोग करना पड़ता है । इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए संयम, ब्रह्मचर्य, मनोनिग्रह, मौन, उपवास, ध्यान, धारणा आदि अनेक सरल और कठोर विधिविधानों से इस या उस प्रकार से साधना मार्ग के पथिकों को इन विधि व्यवस्थाओं से अवगत कराया जाता है ।

वैज्ञानिक क्षेत्र में भी एक स्तर पर इस प्राण शक्ति की खोजबीन की जाने लगी है । जैविक विद्युत शास्त्र के प्रवर्तक डॉ. एच. ए. बट के अनुसार प्राणिज विद्युत का आधार भी भौतिक विद्युत से भिन्न होता है और उसका क्रिया-कलाप भी अलग प्रकार का होता है । डॉ. बट के अनुसार प्राणिज विद्युत में इच्छा और बुद्धि भी सूक्ष्म रूप में होती है । इसी सूक्ष्म रूप द्वारा प्राणी अपने क्षेत्र में विशिष्ट परिस्थितियों एवं साधनों की संरचना करता है । किस प्राणी के डिम्ब से किस आकृति-प्रकृति का जीव उत्पन्न हो यह मात्र उस प्राणी की रासायनिक संरचना पर ही निर्भर नहीं है, अपितु रज और शुक्र कीटों के भीतर भरी हुई चेतना ही इसका मुख्य निर्धारक तत्व है । यदि ऐसा न होता तो केवल रासायनिक अन्तर के आधार पर ही कोटि-कोटि वर्ग के प्राणियों की उत्पत्ति और उनकी वंश परम्परा का निर्वाह नहीं होता अपितु जीव जातियों की संख्या सीमित ही रहती ।

मनुष्यों में दिखाई देने वाली अतीन्द्रिय सामर्थ्य का आधार भी यह प्राण ऊर्जा ही है । विकसित प्राण शक्ति से मानवी चेतना में एक शक्तिशाली चुम्बकत्व उत्पन्न होता है और उसके द्वारा असम्भव लगने वाले कार्य भी सहज सम्भव हो जाते हैं । आँखों से न दिखाई देने वाले, दूरवर्ती स्थानों पर वर्तमान में घट रही घटनाओं को स्पष्ट देख पाना और उनका सटीक अक्षरशः वर्णन कर देना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर बिना किसी माध्यम के विचारों और संवादों का आदान-प्रदान, सूक्ष्म जगत में पक रही भावी घटनाओं की सूक्ष्म क्रियाओं के संकेतों को समझ कर भविष्य कथन, जो कि स्थिति को देखते हुए अप्रत्याशित लगे किन्तु परिवर्तन की दशा में अक्षरशः सही सिद्ध हो, जिनका सही होना पूर्णतया सुनिश्चित हो आदि सभी सामर्थ्य इसी विकसित प्राण शक्ति से उद्भूत होती हैं । तप साधना द्वारा इस शक्ति को अर्जित किया जा सकता है और इस शक्ति के द्वारा स्वयं को तथा दूसरों को उपयोगी व सार्थक प्रेरणाएँ देकर उन्हें लाभान्वित किया जा सकता है ।

प्राण शक्ति का अभिवर्धन करने में गायत्री साधना को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, क्योंकि एक तो यह बहुत सरल भी है, हर कोई व्यक्ति इसे बड़ी सरलतापूर्वक कर सकता है । दूसरे गायत्री द्वारा विराट् ब्रह्म से, विराट् प्राण से सीधा सम्पर्क स्थापित होता है । गायत्री की इसी सामर्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए कहा है, 'गय' कहते हैं प्राण को, जो प्राणों का त्राण, उद्धार करती है, प्राण चेतना को परिमार्जित और अभिवर्धित करती है उसे गायत्री कहते हैं ।

प्राण का महत्त्व बताते हुए ऋषि ने गाया है—

अरा इव रथनाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
ऋचो यजू पि सममानि यज्ञ क्षत्रं ब्रह्म च ॥

अर्थात्—रथ के पहियों की नाभि में लगे हुए अरों की भाँति सम्पूर्ण ऋचाएँ वेदमूर्ति यज्ञ और ब्राह्मण क्षत्रीय आदि सबके सब प्राण में प्रतिष्ठित हैं ।

प्राण प्रवाह के सुनियोजन से चिरयौवन

शरीर की स्वस्थता लम्बे समय तक बनाये रखकर लम्बी आयु प्राप्त कर सकना सम्भव है क्या ? यह प्रश्न इन दिनों विज्ञान जगत में चुनौतीपूर्ण बना हुआ है । विज्ञानवेत्ता विविध विधि द्वारा इसी एक गुत्थी को सुलझाने में प्रयत्नशील हैं । हिमालयवासी दीर्घजीवी योगियों का उदाहरण हमारे समक्ष है, पर देखना यह है कि सर्वसाधारण के लिए भी यह सम्भव है क्या ?

वैज्ञानिक इस सन्दर्भ में पूर्ण आशावादी हैं, पर उनका एक ही असमंजस है कि भौतिकवाद का समर्थन करने वाला विज्ञान क्या कोई ऐसी प्रणाली ढूँढ़ पाने में सफल हो सकेगा, जो सक्रिय जीवन जीते हुए दीर्घायु प्रदान कर सके । निष्क्रिय बनकर लम्बी आयु प्राप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने का कोई तुक नहीं । यों इस सम्बन्ध में विज्ञान का सुनिश्चित दावा है कि इसके माध्यम से मनुष्य को वर्षों जीवित रखा जा सकता है । जीव जगत में इसके कई उदाहरण भी देखने को मिलते हैं । ध्रुवीय भालू प्रतिकूल मौसम आने पर स्वयं को बर्फ में धँसा लेते हैं और महीनों बिना खाये-पिये उस स्थिति में पड़े रहते हैं । परिस्थिति जब अनुकूल बनती है, तो वे अपनी निष्क्रियता त्यागकर बाहर निकल आते हैं । ऐसा ही एक अन्य प्राणी है—"स्लोथ" । पेड़ में निवास करने वाला भालू के आकार का यह जन्तु इतना आलसी होता है कि भोजन ढूँढ़ने के कष्ट से बचने के लिए लम्बे समय तक वृक्ष की शाखों पर उल्टा टँगा रहता है । अनेक बार यह अवधि इतनी लम्बी होती है कि उस पर काई जम जाती है और पूरा शरीर उससे ढँक जाता है । उसके इसी स्वभाव के कारण अंग्रेजी साहित्य में 'स्लोथ' शब्द आलस्य का पर्याय बन गया है । इसी प्रकार के कितने ही ऐसे जन्तु हैं, जो निष्क्रिय रहते हुए लम्बे समय तक जीवित बने रहते हैं । इसी आधार पर वैज्ञानिकों ने यह दावा प्रस्तुत किया है कि यदि मनुष्य को बर्फ में अति न्यून तापमान पर जमा दिया जाय, तो उसे भी वर्षों जिन्दा रखा जा सकता है । लम्बी निद्रा के बाद जब भी जगाना अभीष्ट हो, तो तापक्रम बढ़ा देने मात्र से उसके अंग-अवयव सक्रिय हो उठेंगे और व्यक्ति जीवित हो उठेगा । आजकल इस विधि का प्रयोग मानवी अंगों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिए बहुतायत से किया जा रहा है । मनुष्य को चिरायु बनाने के लिए यदि विज्ञान के पास यही एकमात्र उपाय है, तो फिर इसे निरर्थक ही समझना चाहिए, क्योंकि जीवन का उद्देश्य मात्र वर्ष गिनाना अथवा पूरे करना नहीं है, वरन् उसे समर्थ-सशक्त बनाये रखना भी है । विज्ञान यदि इस प्रयोजन में सहायक नहीं हो सकता, तो फिर उसके द्वारा प्रदत्त दीर्घ जीवन बेकार है ।

यों शरीरशास्त्रियों ने आयुष्य की "एजींग" प्रक्रिया रोकने के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण अनुसंधान भी किए हैं और इस तथ्य का पता लगाया है कि असमय ही मरण क्यों आ धमकता है ? इस सम्बन्ध में जैव रसायनज्ञों का कहना है कि आयु बढ़ने के साथ-साथ शरीर में ऑक्सीजन की खपत कम होती जाती है, जिससे शरीर कोशाएँ मरने और अक्षम होने लगती हैं । समय बीतने के साथ-साथ यह क्रिया तेज होती जाती है, जिससे वार्धक्य और अकाल मरण आ उपस्थित होते हैं । इसका कारण बताते हुए वैज्ञानिक कहते हैं कि इसमें प्रमुख भूमिका पिट्यूटरी ग्रन्थि के स्राव की है । इन दिनों इसके स्राव में एक विशेष प्रकार के रसायन की अधिकता पायी जाती है, जिसकी मात्रा बढ़ते पर्यावरण-प्रदूषण से उत्पन्न मानसिक विक्षोभ से और अधिक बढ़ जाती है । स्थिति तब और गम्भीर हो जाती है, जब व्यक्ति स्वयं भी मानसिक अस्थिरता की अवस्था से गुजर रहा हो । इन दोनों का संयुक्त प्रभाव इतना घातक होता है कि व्यक्ति देखते-देखते बूढ़ा हो जाता है और फिर मौत भी अपनी दस्तक देने लगती है । मूर्धन्य जैव रसायनवेत्ता एलन पोलॉक का कहना है कि यदि अन्तःस्रावी तन्त्र पर नियन्त्रण किया जा सके, तो न केवल एण्डोक्राइन रस नियमित नियन्त्रित बने रहते हैं, वरन् शरीर प्रतिरक्षा तन्त्र भी समर्थ-सशक्त बना रहता है । उनके अनुसार वय बढ़ाने की प्रक्रिया में थायमस ग्रन्थि का भी महत्त्वपूर्ण हाथ है । वे कहते हैं कि इन दिनों अचिंत्य चिन्तन की बढ़ती मात्रा के कारण इस ग्लैण्ड पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है, फलतः धीरे-धीरे वह सिकुड़ने लगती है और अन्त में अपने वास्तविक आकार का १/१० वाँ हिस्सा ही रह जाती है । आकार घटने के साथ-साथ उसकी सक्रियता भी कम होने लगती है, जिससे सम्पूर्ण प्रतिरक्षा प्रणाली प्रभावित होती है और कमजोर पड़ जाती है । कमजोर अवयव "बायोलॉजिकल एज" को बढ़ा देते हैं, जबकि यथार्थ में "क्रोनोलॉजिकल एज" उतनी होती नहीं । दूसरे शब्दों में कहें, तो यही बुढ़ापा है ।

इसके अतिरिक्त वार्धक्य के कितने ही अन्य कारण भी विशेषज्ञों ने गिनाये हैं । फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के शरीर विज्ञानी लियोनार्ड हेफ्लिक के मतानुसार प्रत्येक शरीर-कोष का अपना एक 'जेनेटिक क्लाक' होता है और हर कोशिका का विभाजन अधिकतम ५० बार होता है । बुढ़ापे की दशा में कोशिका-विभाजन के बीच का अन्तराल घट जाता है, और जो क्रिया न्यूनतम सौ वर्ष में सम्पूर्ण होनी चाहिए, वह आधी आयु आते-आते पूरी हो जाती है । इसके उपरान्त कोशिकाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के विभाजन और नवीनीकरण की गुंजाइश बिल्कुल समाप्त हो जाने के कारण देह अक्षम बनती और ऐसा होते-होते मर जाती है । वे कहते हैं कि यदि कोशा-विभाजन के बीच की अवधि को लम्बा किया जा सके, तो जिस अनुपात में वह अवधि बढ़ेगी, उसी अनुपात में उम्र को बढ़ा पाना सम्भव हो सकेगा । योगियों में दीर्घायुष्य की जो घटना घटती देखी जाती है, उसके पीछे यही रहस्य है । सर्वसाधारण में जो प्रक्रिया ५० वर्ष में पूरी हो जाती है, उसके पूर्ण होने में योगियों में सैकड़ों वर्ष का समय लग जाता है ।

एक अन्य कारण का उल्लेख करते हुए विशेषज्ञ कहते हैं कि मुक्त मूलकों का भी वृद्धावस्था उपस्थित करने में बहुत बड़ा योगदान होता है । इतने पर भी यह निमित्त गौण है ।

शरीरवेत्ताओं ने असामयिक जरा-मरण के तीन प्रमुख कारण बताये हैं । ये हैं—मस्तिष्क अन्तःस्रावी प्रणाली और प्रतिरक्षा तन्त्र । इनमें से मस्तिष्क सम्पूर्ण शरीर तन्त्र का केन्द्रीय संस्थान है । इससे काया और उसकी विभिन्न गतिविधियाँ नियन्त्रित होती हैं । बहुमूल्य रसों का उत्पादन करना एण्डोक्राइन सिस्टम का काम है, जबकि शरीर स्वस्थता की देख-रेख इम्यून सिस्टम (जीवनी शक्ति) के लिए उत्तरदायी संस्थान के जिम्मे है । इनमें से किसी के भी असंतुलित होने पर अस्वस्थता और जीर्णता देखते-देखते पैर जमा लेती एवं व्यक्ति को मौत के मुँह में धकेल देती है । इनसे कुछ अधिक गहराई में उतरने पर ज्ञात होता है कि उपर्युक्त संस्थान वस्तुतः स्थूल निमित्त मात्र हैं । सूक्ष्म कारण तो इनके मूल में निवास करने वाले "जीन्स" हैं, जो सम्पूर्ण शरीर-प्रक्रिया को संचालित करते हैं । वैज्ञानिकों का विश्वास है कि किसी प्रकार यदि इन्हें नियन्त्रित कर लिया जाय, तो काया की समस्त गतिविधियाँ स्वतः नियमित हो जायेंगी । पिछले दिनों इस दिशा में अनेक प्रयास हुए हैं और "जेनेटिक इंजीनियरिंग" नामक विज्ञान की एक अभिनव शाखा का विकास भी हुआ है, किन्तु इस विज्ञान की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि कायागत प्रत्येक गड़बड़ी को मिटाने के लिए उससे सम्बद्ध हर एक जीन की मरम्मत करनी पड़ती है । यदि किसी शरीर में पचास प्रकार की गड़बड़ियाँ हों, तो लगभग उतने ही जीन्स में सुधार की प्रक्रिया सम्पन्न करनी पड़ेगी । व्यावहारिक दृष्टि से यह अत्यन्त दुरूह कार्य है । ऐसी दशा में वैज्ञानिकों को अब यह स्पष्ट भासने लगा है कि जीन्स भी किसी वृहद् वृक्ष के सूक्ष्म शाखा-पल्लव मात्र हैं । जड़ कहीं अन्यत्र है, वह जड़ जिसके सींचने भर से सम्पूर्ण तरुवर स्वस्थ-समुन्नत होकर लहलहाने लगे । अब वे इसी मूल की तलाश में हैं ।

आध्यात्म विज्ञानी तो बहुत पहले से ही इस बात का प्रतिपादन करते रहे हैं कि शरीर-स्वस्थता के मूल में प्राण-चेतना की भूमिका प्रमुख है । देह जब अकाल जराग्रस्त होती है, तब इसी का अस्त-व्यस्त प्रवाह कारणभूत होता है । विज्ञजन जानते हैं कि शरीर में ७२ हजार सूक्ष्म नाड़ियाँ हैं । इनमें से ७२ प्रमुख हैं । इसमें भी दस विशेष महत्त्व की हैं । उक्त नाड़ियों में जब भी प्राण-प्रवाह में व्यतिक्रम पैदा होता है, तो रोग-शोकों का जन्म होता है । तत्वज्ञ इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि इन नाड़ियों में से अधिकांश का सम्बन्ध पैर के तलवों और हाथ की हथेलियों से है । शारीरिक श्रम के दौरान इनके बार-बार दबने से नाड़ियों में प्राण का आवागमन अप्रतिहत रूप से जारी रहता है, जिससे स्वास्थ्य भी अक्षुण्ण बना रहता है । पुराने जमाने में लोग इस विज्ञान से परिचित थे, इसलिए परिश्रम करने से जी नहीं चुराते थे और अपना काम स्वयं अपने हाथों से करने में रुचि रखते थे ।

आज जबकि सुविधा-सम्वर्धन की प्रवृत्ति समाज में बढ़ी है, लोग अपना काम दूसरों के द्वारा कराने में रुचि रखते हैं । बढ़ती दौलत के कारण व्यक्ति "श्रम के बदले पैसा" की नीति अपना कर श्रम खरीदते और स्वयं आराम तलब बनते जाते हैं । इन दिनों यह नीति समाज में अत्यधिक परिमाण मे बढ़ी है । लोग इसके कारण अधिकाधिक आरामतलबी की ओर उन्मुख हुए हैं । श्रम का माद्दा घटने से शरीर में जो प्राण-प्रवाह पहले आसानी से होता रहता था, अब उसमें व्यवधान पैदा होने लगा है । अवयवों को उपयुक्त मात्रा में आवश्यक प्राण न मिले, तो उनका दुर्बल होना स्वाभाविक है । आजकल के जर्जर मनुष्य की जर्जर काया का यही प्रधान कारण है ।

इसके लिए श्रम की महत्ता समझी जानी चाहिए और प्रत्येक को प्रतिदिन उपयुक्त परिमाण में इतना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिश्रम करना चाहिए, ताकि प्राण-प्रवाह सन्तुलित बना रहे । इसके अतिरिक्त सात्विक आहार भी इसके प्रवाह को संतुलित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है । "अन्नौ वै मनः" कहकर आप्तजनों ने इसी तथ्य को प्रतिपादित किया है । अन्न से मन बनता है । अन्न यदि सात्विक और नीतिपूर्वक उपार्जित हो, तो उससे विनिर्मित होने वाला मन भी उदात्त और उत्कृष्ट स्तर का होता है । मन यदि श्रेष्ठ हो, तो शरीर के स्वस्थ बनने में भी कोई अड़चन पैदा नहीं होती । इसके अलावा जप, तप, व्रत ध्यान भी प्राण के संचार में सहयोगी साबित होते हैं । प्राण-प्रवाह से सम्बन्धित इन तथ्यों को ध्यान में रखा जाय, तो कोई कारण नहीं कि हम स्वस्थ और दीर्घायु जीवन न जी सकें । शरीरशास्त्रियों की खोज अपने स्तर पर सही है, पर वह अपूर्ण है । हम सम्पूर्ण सत्य को समझें । जड़ की जगह पत्र-पल्लवों को न सींचें । ऐसा यदि हो सका, तो अक्षुण्ण स्वास्थ्य और चिरायुष्य निःसन्देह प्राप्त होकर रहेगा, इसमें दो मत नहीं ।

प्राण शक्ति का अपव्यय मूर्खतापूर्ण अनाचरण

अपनी प्राण शक्ति को यदि हम मितव्ययिता पूर्वक खर्च करें तो जीवन को लम्बा और निरोग बनाने में उसका उपयोग कर सकते हैं और इस बचत से कुछ महत्त्वपूर्ण उपार्जन कर सकते हैं ।

प्राण शक्ति का सबसे अधिक अपव्यय अनावश्यक भोजन भार वहन करने से होता है । शरीर रक्षा के लिए सरल और स्वल्प भोजन की आवश्यकता होती है किन्तु हम दुष्पाच रूप में अधिक मात्रा में उसे ग्रहण करते हैं । सोचते हैं, कीमती, स्वादिष्ट और अधिक भोजन करने से बलिष्ठ बनेंगे पर होता ठीक उल्टा हैं । गरिष्ठ और प्रचुर भोजन जितनी शक्ति उत्पन्न करता है उससे कहीं अधिक अपने पचाने में खर्च करा लेता है । अस्तु हम प्रतिदिन घाटे में रहते हैं और अन्ततः दिवालिया बनकर असमय में ही जीवनलीला समाप्त कर देते हैं ।

प्राण कहाँ से आता है ? उसके उपलब्धि स्रोत कहाँ हैं ? यह तलाश करने पर इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि यह बहुमूल्य सम्पदा हमें शुद्ध वायु, निर्मल जल, सात्विक आहार, सूर्य सम्पर्क, गहरी नींद सन्तुष्ट मनःस्थिति से प्राप्त होता है । इन शक्ति स्रोतों की जितनी उपेक्षा करेंगे, उनसे जितने दूर रहेंगे उतने ही क्षीण होते चले जायेंगे । कमाई कम और खर्च अधिक करने पर कोई व्यवसाय ठीक तरह नहीं चलता फिर जीवन व्यवसाय ही कैसे चलेगा ?

हर काम की सीमा है । मर्यादा में रहकर ही स्थिरता प्राप्त हो सकती है । सामर्थ्य से अधिक काम करना, साधनों से असम्बद्ध महत्त्वाकांक्षाएँ गढ़ना, भोगसक्ति में निमग्न होकर इन्द्रियों से अधिक काम लेना, दिनचर्या की नियमितता का ध्यान न रखना आदि बातें देखने, सुनने में कोई बहुत बड़ी गल्तियाँ नहीं मालूम पड़तीं, पर वे छोटी होने पर भी चिन्गारी की तरह हमारे हँसते-खेलते जीवनोद्यान में आग लगा देने के लिए पर्याप्त हैं । नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला अपनी प्रामाणिकता खो बैठता है और जनसहयोग से वंचित होता चला जाता है । व्यक्तिगत जीवनचर्या में मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला उस बहुमूल्य सम्पदा को खोता चला जाता है जिसके आधार पर सर्वतोन्मुखी प्रगति की सम्भावनाओं की पृष्ठभूमि बनती है ।

विषपान से आत्महत्या करने वाले की रक्षा कौन कब तक करेगा ? जिन्होंने नशे पीकर अपने पैरों कुल्हाड़ी मारने पर कमर कस ली है उनकी प्राण शक्ति कब तक स्थिर रहेगी । उत्तेजक मसाले भी एक प्रकार के विष ही हैं । वासनात्मक उत्तेजनाओं से मन को निरन्तर उद्विग्न करते रहने से हम अपनी ही सुसंचित जीवन सम्पदा का क्षरण करते चले जाते हैं और अपने ही पापों का फल भोगने के लिए रुग्णता, अशक्तता एवं अकाल मृत्यु के नरक में जा गिरते हैं ।

दार्शनिक कन्फ्यूशियस ठीक ही कहते थे—जो मितव्ययिता के नियम को भंग करेगा वह अन्त में दुसह:दुख सहता हुआ मरेगा । उनकी यह उक्ति प्राण शक्ति के अपव्यय के सम्बन्ध में सोलह आने सच उतरती है । हम अपनी ही जीवन सामर्थ्य से खिलवाड़ करते हैं—उसे अनावश्यक रूप से बर्बाद करते हैं ऐसी दशा में पग-पग पर ठोकर खाने और अशान्त, असफल रहने का दुष्परिणाम भोगें तो आश्चर्य ही क्या है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरंग ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण उपयोग

शरीर में काम करने वाली विद्युत शक्ति से ही दैनिक जीवन के विभिन्न क्रिया-कलाप पूरे होते हैं । इस संयन्त्र के विभिन्न कलपुर्जे इसी शक्ति से प्रेरित होकर अपने-अपने काम करते हैं । इसकी अधिक मात्रा उत्पन्न की जा सके तो उसका लाभ दूसरों को भी दिया जा सकता है । धन-दान, रक्त-दान, अंग-दान आदि के द्वारा एक मनुष्य को लाभान्वित कर सकता है । ठीक इसी प्रकार प्राण-दान भी सम्भव हो सकता है । अपनी जीवनी शक्ति का एक अंश दूसरों को देकर उनमें नव-जीवन का संचार अमुक मात्रा में किया जा सकता है । मेस्मेरिज्म विद्या द्वारा शारीरिक और मानसिक चिकित्सा की जाती है और उसका लाभ औषधि उपचार से कम नहीं, वरन् अधिक ही मिलता है ।

मनुष्य शरीर में रहने वाली विद्युत शक्ति का परिचय अब साधारण यन्त्र उपकरणों से जाँचा-परखा जा सकता है । वह एक अच्छा-खासा जनरेटर है । किसी-किसी में तो अनायास ही वह विद्युत प्रवाह बढ़ी-चढ़ी मात्रा में होता है । कई उसे प्रयत्नपूर्वक बढ़ा सकते हैं । बिजली से अनेकों प्रकार के प्रयोजन पूरे होते हैं । उसका उपयोग करके कई तरह के उपकरण क्रियाशील होते और लाभ उत्पन्न करते हैं । शरीरगत विद्युत से सम्पर्क क्षेत्र को किसी विशेष दिशा में उत्तेजित किया जा सकता है । किन्हीं व्यक्तियों को प्रभावित करके उनके चिन्तन एवं चरित्र को मोड़ा जा सकता है । इतना ही नहीं उन्हें स्वास्थ्य, बल, ज्ञान, पराक्रम जैसी विभूतियों से लाभान्वित किया जा सकता है ।

सूक्ष्म जगत में काम कर रही शक्तियाँ स्थूल पदार्थों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं इसके उदाहरण आये दिन दीखते हैं । आकाश में उष्णता बढ़ते ही हमारे बर्तन गरम और ठण्डक का मौसम आते ही वे ठण्डे रहने लगते हैं । वर्षा ऋतु में हवा की नमी मात्र से घास-पात में हरियाली दौड़ जाती है । रेडियो और टेलीविजन के उपकरण अन्तरिक्ष में चल रहे सूक्ष्म प्रवाहों से प्रभावित होते और अपने काम करते देखे जाते हैं । इसी सिद्धान्त के आधार पर मनोबल की शक्ति तरंगें आकाश में उड़ाई जा सकती हैं और उससे निकटवर्ती एवं दूरवर्ती व्यक्तियों तथा पदार्थों को प्रभावित किया जा सकता है ।

मनुष्यों एवं प्राणियों की तरह ही मनोबल के द्वारा पदार्थों को भी प्रभावित किया जा सकता है । उन्हें हटाया, उठाया, हिलाया, गिराया जा सकता है । उनमें अन्य प्रकार की हलचलें एवं विशेषताएँ पैदा की जा सकती हैं । उनका स्वरूप तक बदला जा सकता है और गुण भी । आग और बिजली की सहायता से पदार्थों के आकार-प्रकार में परिवर्तन हो सकता है, ऐसा मनोबल के उपयोग से भी सम्भव है । कई चमत्कार प्रदर्शनों में ऐसी घटनाएँ प्रयत्नपूर्वक प्रत्यक्ष की जाती हैं, जिनमें मनोबल ने जड़-पदार्थों में अस्वाभाविक हलचलें पैदा कर दीं अथवा उनके सामान्य क्रिया-कलाप को अवरुद्ध कर दिया । बिना प्रदर्शन के भी ऐसे घटना-क्रम सामान्य जीवन-क्रम में भी घटित होते रहते हैं, जिनमें व्यक्ति विशेष के सम्पर्क अथवा संकल्प के कारण वस्तुओं के स्वरूप एवं क्रिया-कलाप में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया । विद्युत प्रवाह की तरह ही यदि मनोबल को भी एक शक्ति धारा माना जा सके तो फिर उसके द्वारा सम्पन्न होने वाले क्रिया-कलापों को भी आश्चर्यजनक नहीं, वरन् सामान्य ही माना जायेगा ।

आग और गर्मी का अन्तर स्पष्ट है । आग प्रत्यक्ष है, स्थूल है । इसलिए उसे आँखों से देखा जा सकता है और इधर से उधर हटाया, जलाया, बुझाया जा सकता है । गर्मी सूक्ष्म है, व्यापक है । इसलिए उसे अनुभव तो किया जा सकता है, पर देखा नहीं जा सकता । उसे हम पकड़ भी नहीं सकते और न धकेल सकते हैं । अधिक से अधिक कूलर आदि के द्वारा अपना कमरा ठण्डा रख सकते हैं, पर गर्मी की ऋतु ही बदल देना सम्भव नहीं । आग स्थूल है, इसलिए उसे जलाया भी जा सकता है और बुझाया भी । बिजली, भाप एवं ईंधन आदि के माध्यम से उत्पन्न होने वाली शक्ति का प्रत्यक्ष प्रयोग रोज ही होता है । इसलिए उसे हम सहज ही पहचानते हैं । मनोबल का समान्य प्रयोग एक-दूसरे को प्रभावित करने भर से होता है, पर यदि उसे विकसित एवं व्यवस्थित स्थिति में किसी विशेष लक्ष्य के लिए प्रयुक्त किया जा सके तो प्रतीत होगा कि वह भी कितना शक्तिशाली है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके आधार पर व्यक्ति को ही नहीं पदार्थों और परिस्थितियों को भी प्रभावित किया जा सकता है ।

एलेग्जेडिर रात्फ ने 'द पावर ऑफ माइन्ड' नामक पुस्तक में विभिन्न प्रमाण देते हुए लिखा है कि—"प्रगाढ़ ध्यान-शक्ति द्वारा एकाग्र मानव-मन शरीर के बाहर स्थित सजीव एवं निर्जीव पदार्थों पर भी इच्छानुकूल प्रभाव डाल सकता है ।" रात्फ का कहना है कि यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इच्छा-शक्ति द्वारा स्थूल जगत पर नियन्त्रण सम्भव है ।

इलेक्ट्रॉनिक ब्रेन के निर्माण की प्रक्रिया में ज्ञात तथ्यों द्वारा वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अवचेतन मन एक सशक्त कम्प्यूटर की तरह कार्य करता है और जिस तरह एक कम्प्यूटर की गई 'फीडिंग' के अनुसार ही क्रियाशील होता है, उसी तरह अवचेतन भी अपना आहार हमारे विचारों तथा संकल्पों से प्राप्त करता है । इस तरह अवचेतन की दिशा मनुष्य की इच्छाओं से ही प्रभावित होती है । स्पष्ट है कि इस अवचेतन पर व्यक्ति प्रयास द्वारा पूर्ण नियन्त्रण पा सकता है और तब अभी अलौकिक लगने वाले काम कर सकता है ।

व्यक्ति स्वयं अपना विद्युत-चुम्बकीय बल-क्षेत्र या गुरुत्वाकर्षण-क्षेत्र विकसित कर सकता है, ऐसा वैज्ञानिक मानने लगे हैं, पर उसका आधार एवं प्रक्रिया अभी तक वे नहीं जान पाये हैं । मनुष्य चलता-फिरता बिजलीघर है । उसका भीतरी समस्त क्रिया-कलाप स्नायु जाल में निरन्तर बहते रहने वाला विद्युत प्रवाह से ही सम्पादित होता है । बाह्य जीवन में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों द्वारा जो विभिन्न प्रकार की हलचलें होती हैं उनमें खर्च होने वाली ऊर्जा वस्तुतः मानव विद्युत-शक्ति ही होती है । रक्त जैसे रासायनिक पदार्थ तो मात्र उसके निर्माण में ईंधन भर का काम देते हैं ।

रूसी सेना की सार्जेण्ट नेल्या मिरवाइलोवा अपनी इच्छा-शक्ति से स्थिर रखे जड़-पात्रों को गतिशील कर देती हैं, चलती घड़ी को रोक सकती है और पुनः चला सकती है । उसके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले इन चमत्कारों को वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा प्रामाणिक ठहराया जा चुका है ।

शक्ति के बिजली, भाप, तेल जैसे साधनों में ही अब विचार-शक्ति को भी स्थान मिलने जा रहा है । आध्यात्म शास्त्र में तो आरम्भ से ही विचारों को ऐसा समर्थ तत्व माना है जो न केवल अपने उद्गमकर्त्ता को वरन् पूरे सम्पर्क क्षेत्र को भी प्रभावित करता है । इतना ही नहीं उससे दूरवर्ती एवं अपरिचित प्राणियों तथा पदार्थों तक को प्रभावित किया जा सकता है ।

टैलीपेथी के एक प्रयोगकर्त्ता इंग्लैण्ड के ए. एन. क्रीरी ने बहुत समय तक यह प्रयोग चलाया कि बन्द कमरे में क्या हो रहा है इसकी जानकारी प्राप्त की जाय । इस प्रयोग में एक महिला अधिक दिव्यदृष्टि सम्पन्न सिद्ध हुई ।

क्रीरी ने अपने प्रयोगों की सच्चाई जाँचने के लिए अनेक प्रामाणिक व्यक्तियों से अनुरोध किया । जाँचने वालों में डवलिन विश्व-विद्यालय के प्रो. सर विलियम वैरट इंग्लैण्ड की सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च के प्रधान प्रो. सिजविग जैसे मूर्धन्य लोग थे । उन्होंने कई तरह से उलट-पलटकर इन प्रयोगों को देखा और उन प्रयोगों के पीछे निहित सच्चाई को स्वीकारा । इन प्रयोगों की जाँच का विवरण 'विचार सम्प्रेषण समिति' ने प्रकाशित किया है ।

दूरवर्ती लोगों के मस्तिष्कों को प्रभावित करने और उनमें अभीष्ट परिवर्तन लाने की दिशा में आस्तिकों और नास्तिकों को समान रूप से सफलता मिली है । इन प्रयोगों में रूसी वैज्ञानिक भी योग-साधकों के पद-चिन्हों पर चल रहे हैं । लेनिन ग्राड विश्वविद्यालय के शरीर विज्ञानी प्रो. लियोनिद वासिलयेव ने दूर संचार क्षमता का प्रयोग एक शोध कार्यों में निरत मण्डली पर किया । उसने अपने प्रयोगों द्वारा चालू शोध के प्रति धीरे-धीरे उदासीन होने और उसे छोड़कर अन्य शोध में लाने का प्रयोग चालू रखा और उसके सफल परिणाम पर सभी को आश्चर्य हुआ । लियोनिद ने अपना अभिप्राय गुप्त कागजों में नोट करके साथियों को बता दिया था कि वे अमुक शोध मण्डली की मनःस्थिति में उच्चाटन उत्पन्न करके अन्य कार्य में रुचि बदल देंगे । कुछ समय में वस्तुतः वैसा ही परिवर्तन हो गया और उस मण्डली ने बड़ी सीमा तक पूरा किया गया अपना कार्य रद्द करके नया कार्य हाथ में ले लिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इतिहास, पुराणों की बात छोड़ दें तो भी प्रत्यक्ष-दर्शियों की प्रामाणिक साक्षियों के आधार पर यह विश्वास किया जा सकता है कि विचार और शब्द के मिश्रण से बनने वाले मन्त्र प्रवाह का प्रयोग करके वातावरण तक में हेर-फेर करने की सफलता मिल सकती है ।

अफ्रीकी जन-जातियों की तरह ही मलाया में भी मन्त्र विद्या के प्रयोग और चमत्कार बहुत प्रस्तुत होते रहते हैं । वहाँ के मान्त्रिक ऋतु परिवर्तन को भी प्रभावित करते देखे गए हैं ।

मलाया के राजा 'परमेसुरी अगोंग, की पुत्री राजकुमारी शरीफा साल्वा के विवाह की तैयारियाँ बहुत धूमधाम से की गईं । उत्सव बहुत शानदार मनाया जाना था, किन्तु विवाह के दिन घनघोर वर्षा आरम्भ हो गई और सर्वत्र पानी ही पानी भरा नजर आने लगा । अब उत्सव का क्या हो ? निदान रहमान नामक एक तान्त्रिक महिला राजकीय सम्मान के साथ बुलाई गई और उससे वर्षा रोकने के लिए कुछ उपाय, उपचार करने के लिए कहा गया । फलतः एक आश्चर्यचकित करने वाला प्रतिफल यह देखा गया कि पानी तो उस सारे क्षेत्र में बरसता रहा, पर समारोह के लिए जितनी जगह नियत थी उस पर एक बूँद पानी भी नहीं गिरा और उत्सव अपने निर्धारित क्रम के अनुसार ठीक तरह सम्पन्न हो गया । ठीक ऐसी ही एक और भी घटना उस देश में सन् १९६४ में हुई थी । उन दिनों राष्ट्र मण्डलीय क्रिकेट दल खेलने आया था और उसे देखने के लिए भारी भीड़ उपस्थित थी । दुर्भाग्य से नियत समय पर भारी वर्षा आरम्भ हो गई । कुआलालम्पुर नगर पर घनघोर घटाएँ बरस रही थीं । अब खेल का क्या हो ? मैदान पानी से भर जाने पर तो सूखना बहुत दिनों तक सम्भव नहीं हो सकता था । इस विपत्ति से बचने का उपाय वहाँ के मन्त्रिकों की सहायता लेना उचित समझा गया । अस्तु मलाया क्रिकेट ऐसोसिएशन के अध्यक्ष ने आग्रह पूर्वक रैम्बाऊ के जाने-माने मान्त्रिक को बुलाया । उसका प्रयोग भी चकित करने वाला रहा । क्रिकेट के मैदान पर एक अदृश्य छतरी तन गई और वहाँ एक बूँद भी न गिरी जबकि चारों ओर भयंकर वर्षा के दृश्य दिखाई देते रहे ।

एक और तीसरी घटना भी अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनी रही है । 'दि इयर ऑफ दि ड्रेगन' फिल्म की शूटिंग वहाँ चल रही थी जिस दिन प्रधान शूटिंग होनी थी उसी दिन वर्षा उमड़ पड़ी, इस अवसर पर भी अब्दुला विन उमर नाम के तान्त्रिक की सहायता ली गई और शूटिंग क्षेत्र पूरे समय वर्षा से बचा रहा ।

'द रायल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी' के तत्कालीन अध्यक्ष तथा अन्य प्रमुख लोगों ने श्री डेनियल डगलस होम की विलक्षण कलाबाजियों का आँखों देखा विवरण लिखा है । प्रख्यात वैज्ञानिक, रेडियो मीटर के निर्माता, थीलियम व गोलियम के अन्वेषक सर विलियम क्रुक्स ने भी श्री डेनियल डगलस होम का बारीकी से अध्ययन कर उन्हें चालाकी से रहित पाया था ।

इन करिश्मों में हवा में ऊँचे उठ जाना, हवा में चलना और तैरना, जलते हुए अंगारे हाथ में रखना, आदि हैं । सर विलियम क्रुक्स अपने समय के शीर्षस्थ रसायन शास्त्री थे उन्होंने भली-भाँति निरीक्षण कर श्री. डी. डी. होम की हथेलियों की जाँच की, उनमें कुछ भी लगा नहीं था । हाथ मुलायम और नाजुक थे, फिर श्री क्रुक्स के देखते-देखते श्री डी. डी. होम ने धधकती अँगीठी से सर्वाधिक लाल चमकदार कोयला उठाकर अपनी हथेली में रखा और रखे रहे । उनके हाथ में छाले, फफोले कुछ भी नहीं पड़े ।

'रिपोर्ट ऑफ द डायलेक्टिकल सोसाइटीज कमेटी ऑफ स्पिरिचुअलिज्म' में लार्ड अडारे ने भी श्री होम का विवरण दिया है । आपने बताया कि एक 'सियान्स' में वे आठ व्यक्तियों के साथ उपस्थित थे । श्री डी. डी. होम ने दहकते अँगारे न केवल अपनी हथेलियों पर रखे, बल्कि उन्हें अन्य व्यक्तियों के भी हाथों में रखाया । सात ने तो तनिक भी जलन या तकलीफ के बिना उन्हें अपने हाथ में रखा । इनमें से ४ महिलाएँ थीं । दो अन्य व्यक्ति उसे सहन नहीं कर सके । लार्ड अडारे ने ऐसे अन्य अनेक अनुभव भी लिखे हैं, जो श्री होम की अति मानसिक क्षमताओं तथा अदृश्य शक्तियों से उनके सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हैं । इनमें अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति में कमरे की सभी वस्तुओं का होम की इच्छा मात्र से थरथराने लगाना, किसी एक पदार्थ (जैसे टेबिल या कुर्सी आदि) का हवा में चार-छः फुट ऊपर उठ जाना और होम की इच्छित समय तक वहाँ उनका लटके रहना,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

टेबिल के उलटने-पलटने के बाद भी उस पर सामान्य रीति से रखा संगमरमर का पत्थर और कागज़, पेन्सिल का यथावत् बने रहना आदि है ।

सर विलियम क्रुक्स ने भी एक सुन्दर हाथ के सहसा प्रकट होने, होम के बटन में लगे फूल की पत्ती को उस हाथ द्वारा तोड़े जाने, किसी वस्तु के हिलने, उसके इर्द-गिर्द चमकीले बादल बनने और फिर उस बादल को स्पष्ट हाथ में परिवर्तित होने तथा उस हाथ को स्पर्श करने पर कभी बेहद सर्द, कभी उष्ण और जीवत लगने आदि के विवरण लिखे हैं ।

विचारों की शक्ति का सामान्य जीवन में भी महत्त्वपूर्ण उपयोग होता रहता है । उन्हीं के आधार पर क्रिया-कलाप बनते हैं और तद्नुरूप परिणाम सामने आते हैं । बहिरंग व्यक्तित्व वस्तुतः मनुष्य के अन्तरंग की प्रतिक्रिया भर ही होता है । विचारों से समीपवर्ती लोग सहयोगी विरोधी बनते हैं । निन्दा और प्रशंसा के आधारों की जड़ें अन्तः क्षेत्र में ही गहराई तक धँसी होती हैं । सामान्य स्तर की विचार-शक्ति भी जीवन का क्रम बनाती है, तो फिर विशेष स्तर की विचार-शक्ति जो योगाभ्यास के साधना विज्ञान के आधार पर तैयार की जाती है, चमत्कारी परिणाम उत्पन्न कर सके इसे अबुद्धिसम्मत नहीं कहा जा सकता । मन्त्र शक्ति के प्रयोगों में जहाँ दम्भ और बहकावे की भी भरमार रहती है वहाँ ऐसे प्रामाणिक प्रसंगों की भी कमी नहीं होती है जिनके आधार पर इस अलौकिकता का आधार समझ में न आने पर भी उसे अविश्वस्त नहीं कहा जा सकता ।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि किन्हीं व्यक्तियों में वस्तुओं को विचार-शक्ति से प्रभावित करने की क्षमता अनायास ही पायी जाती है । उन्होंने कोई योगाभ्यास नहीं किया तो भी वे अदृश्य को देख सकने, अविज्ञात को जान सकने में समर्थ रहे । ऐसी विलक्षणता हर मनुष्य के अचेतन मन में मौजूद है । मानवी विद्युत सामान्यतया दैनिक क्रिया-कलापों में ही खर्च होती रहती है, पर यदि उसे बढ़ाया जा सके तो कितने ही विलक्षण कर्म भी हो सकते हैं । साधना से दिव्य क्षमता बढ़ती है और उससे कितने ही प्रकार के असामान्य कार्य कर सकना सम्भव होता है । यह आध्यात्मिक उपलब्धियाँ अगले जन्मों तक साथ चली जाती हैं । ऐसे लोग बिना साधना के भी पूर्व संचित सम्पदा के आधार पर चमत्कारी आचरण प्रस्तुत करते देखे गए हैं । ऐसे ही लोगों में एक नाम 'यूरीगेलर' का भी है ।

अंग्रेजी भाषा की वैज्ञानिक पत्रिकाएँ 'नेचर' और 'न्यू साइन्टिस्ट' विश्व विख्यात हैं । उनका सम्पादन और प्रकाशन विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिकों द्वारा होता है और उसमें प्रकाशित विवरणों को खोज युक्त एवं तथ्यपूर्ण माना जाता है । इन्हीं पत्रिकाओं में 'यूरीगेलर' के शरीर में पायी गई अतीन्द्रिय शक्ति के प्रामाणिक विवरण विस्तारपूर्वक छपे हैं ।

यूरीगेलर अभी मात्र ३० वर्ष का था । उसका जन्म २० दिसम्बर, १९४६ में तेलअवीव में हुआ था । उसकी माता जर्मन थीं । जब यह युवक साइप्रस में पढ़ता था तभी उसने अपने में कुछ विचित्रताएँ पायीं और उन्हें बिना किसी संकोच या छिपाव के अपने परिचितों को बताया, दिखाया । वह जब घड़ियों के निकट जाता तो सुइयाँ अकारण ही अपना स्थान छोड़कर आगे-पीछे हिलने लगतीं । स्कूल के छात्रों के सामने उसने अपनी दृष्टि मात्र से धातुओं की बनी चीजों को मोड़कर ही नहीं तोड़कर भी दिखाया ।

उसने खुले मैदान में बिना किसी पर्दे या जादुई लाग-लपेट के, हर प्रकार के सन्देहों का, निवारण का अवसर देते हुए अनेक प्रदर्शन किए हैं । किसी को किसी चालाकी की आशंका हो तो वह यह अवसर देता है कि तथ्य किसी भी कसौटी पर जाँच लिया जाय । उसे जादूगरों जैसे करिश्मे दिखाने का न तो अभ्यास है न अनुभव । 'सम्मोहन' कला उसे नहीं आती । जो भी वह करता है स्पष्टतः प्रत्यक्ष होता है । स्टैनफोर्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित परीक्षण गोष्ठियों में मूर्धन्य वैज्ञानिकों के सम्मुख वह अपनी कड़ी परीक्षा में पूर्णतया सफल होता रहा है । जर्मनी और इंग्लैण्ड के प्रतिष्ठित पत्रकारों के सम्मुख उसने अपनी विशेषता प्रदर्शित की है और टेलीविजन पर उसके प्रदर्शनों को दिखाया गया है ।

यूरीगेलर दूर तक अपनी चेतना को फेंक सकता है । वहाँ की स्थिति जान सकता है । इतना ही नहीं प्रमाण स्वरूप वहाँ की वस्तुओं को भी लाकर दिखा सकता है । उससे जब ब्राजील जाने और वहाँ की कोई वस्तु लाने के लिए कहा गया तो उसने वैसा है किया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वहाँ का विवरण सुनाने के साथ-साथ ब्राजील में चलने वाले नोटों का एक बण्डल भी सामने लाकर रख दिया ।

फिलाइलफिया के दो वैज्ञानिकों के कक्ष में गैलर को मुलाकात देनी थी । उन प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के नाम हैं—आर्थर यंग और टेडबास्टिन इन । दोनों के सम्मुख भेंट देकर जब वे जीने से उतर कर नीचे की मंजिल में आये तो ऊपर के कमरे में रखी भारी मूर्ति भी नीचे उतर आयी और कन्धे पर बैठ गई । सन् १९७१ में वे ओसीनिंग न्यूयार्क निवासी एक सज्जन पुहरिख के साथ सिनाई रेगिस्तान की सैर पर गए थे । उन सज्जन के मूवी कैमरे का खोल अमेरिका ही रह गया था । फलतः फोटो खींचते समय लेंस के इर्द-गिर्द धूल जमती और कठिनाई उत्पन्न होती थी । गैलर ने ढक्कन रखे होने का स्थान पूछा और देखते-देखते अमेरिका से कैमरे का खोल वहीं मँगा दिया ।

पूछने पर गैलर ने बताया है कि यह क्षमता उन्हें बिना किसी प्रयास के अनायास ही मिली है । इन प्रदर्शनों में उन्हें तन्त्र-मन्त्र आदि कुछ नहीं करना पड़ता । अदृश्य दर्शन के समय वे अपनी दृष्टि सीमित रखने के लिए एक साधारण-सा पर्दा खड़ा कर लेते हैं और उसी पर उतरते चित्रों को टेलीविजन की तरह देखते रहते हैं ।

वह मेज पर रखे हुए धातुओं के बने मोटे उपकरणों को दृष्टि मात्र से मोड़ देने, तोड़ देने की विद्या में विशेष रूप से निष्णात् है । ऐसे प्रदर्शन वह घण्टों करता रह सकता है । सन् १९६९ में उसने आँखों से मजबूत पट्टी बँधवा कर और ऊपर से सील कराकर इसराइल की सड़कों पर मोटर चलाई थी ।

उसकी अदृश्य दर्शन की शक्ति भी अद्‌भुत है । उसकी माता को जुए का चस्का था । जब वह धर लौटती तो गैलर अपने आप ही बता देता कि वह कितना पैसा जीती या हारी है ।

इसकी अतीन्द्रिय विशेषताओं का परीक्षण वैज्ञानिकों और अन्वेषकों की मण्डलियों के समक्ष कितनी ही बार हुआ है और वह निभ्रान्त सिद्ध हुआ है ।

२५ मार्च सन् १९०९ की घटना है । मनोविज्ञान शास्त्र के पितामह फ्रायड से मिलने के लिए उनके समकालीन मनःशास्त्री जुंग गए । चर्चा का विषय परा मानसिक शक्ति का प्रभाव था । फ्रायड इस तरह की किसी विशेष मानसिक क्षमता पर विश्वास नहीं करते हैं । जुंग ने क्षमता के पक्ष समर्थन में अपनी क्षमता का एक विशेष प्रदर्शन किया । फ्रायड के कमरे में रखी वस्तुएँ इस तरह थरथराने लगीं मानो कोई तूफान उनकी उठक-पटक कर रहा हो । पुस्तकों की आलमारी में पटाखा फूटने जैसा धमाका हुआ । इससे फ्रायड चकित रह गए और उन्होंने अपनी असहमति का तुरन्त परित्याग कर दिया ।

उपर्युक्त घटना का उल्लेख डॉ. नन्डोर फोदोर ने अपने ग्रन्थ 'बिटविन टू वर्ल्डस' पुस्तक में किया है ।

प्रत्यक्ष क्षमता और सम्पदा का प्रभाव सभी को विदित है, पर बहुत कम लोग यह जानते हैं कि विचारों की सामर्थ्य का मूल्य महत्त्व भी किसी से कम नहीं है । उसे बढ़ाने के लाभों को समझा जा सके तो प्रतीत होगा कि साधना प्रयोजनों में लगने वाली शक्ति मनुष्य को सूक्ष्म विभूतियाँ और स्थूल सफलताओं से परिपूर्ण बना सकने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होती हैं । अस्तु उस उपार्जन में संलग्न होना भी दूरदर्शी का चिन्ह है ।

प्राण-सत्ता का कलेवर यह कायपिंजर

जिस काय-कलेवर में प्राणाग्नि के समुच्चय के रूप में कुण्डलिनी शक्ति साढ़े तीन कुण्डली का घेरा बनाये विराजमान है, वह स्वयं में कम विलक्षण नहीं । हाड़-माँस के इस पिण्ड को सिरजनहार की अनुपम कलाकृति कहा जा सकता है, जिसमें अनन्त अलौकिक शक्तियों का भण्डार प्रसुप्त स्थिति में पड़ा है । स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीरों के रूप में इसमें सक्रियता, विचारणा एवं भावना, निष्ठा-प्रज्ञा एवं श्रद्धा जैसी विभूतियाँ विद्यमान हैं । इन्हें जागृत, विकसित कर मनुष्य क्षुद्र से महान और नर से नारायण बन सकता है ।

पंचतत्वों से बनी यह काया विश्व-ब्रह्माण्ड का सबसे विलक्षण-शक्तिशाली पावर हाउस है। वैज्ञानिक मनीषी आइंस्टीन ने अपने शक्ति सिद्धान्त ई. एम. सी. एक्वेयर (E Mc) के प्रतिपादन में बताया है कि पदार्थ के एक परमाणु से कुल तीन लाख पचास हजार कैलोरी ऊर्जा उत्पन्न होती है, फिर मनुष्य का शरीर तो विश्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माण्ड में पाये जाने वाले समस्त स्थूल, सूक्ष्म एवं अदृश्य कणों के समुच्चय से विनिर्मित हुआ है । औसत साठ किलोग्राम की स्थूलकाया में प्रत्यक्ष रूप में एवं दिव्य तत्वों से बने सूक्ष्म व कारण शरीर में कितना अधिक शक्ति भण्डार छिपा पड़ा है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता । शक्ति पुंज होने के कारण ही उसे "ज्योतिषां: ज्योति" कहा गया है । "शरीर मद्य खलु धर्म साधनम्" कहते हुए ऋषियों ने इसी काया को साधने, जगाने एवं सुनियोजन लोक-मंगल हेतु करने का निर्देश दिया है ।

मानवी काया के जिस भी अंग अवयव पर दृष्टि डाली जाय उसी का क्रिया-कलाप देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है । हृदय को ही लें । उसका रक्त प्रवाह नदी-नाले की तरह नहीं वरन् किसी शक्तिशाली पम्प की तरह झटका देकर बहने वाले पानी की तरह प्रवाहित होता है । एक धड़कन एक मिनट में औसत ७२ बार अर्थात् एक सेकण्ड के $\frac{५}{६}$ भाग में सम्पन्न होती है । उस धड़कन से असंख्यों विद्युत तरंगें निकलती हैं, जिन्हें इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम हिज बण्डल कार्डियोग्राम द्वारा मापा जाता है । यही ०.८३ सेकण्ड की अवधि वाला अत्यन्त अल्प समय हृदय को विश्राम के लिए भी मिल जाता है ।

हृदय के समान ही फेफड़े भी आजीवन कभी विश्राम नहीं लेते । वे २० से ३० घन इंच हवा बराबर भरते निकालते रहते हैं । श्वास की गति एक मिनट में प्रायः १८ से २० बार होती है । वे शरीर को ऑक्सीजन प्रदान करते और दूषित वायु निकालते रहते हैं । वायु कोष्ठकों की संख्या हजारों में गिनी जाती है । इन्हें सीधी रेखा में रखा जाय तो शरीर से ५५ गुनी बैठती है ।

गुर्दे भूरे कत्थई रंग के सेम के बीज जैसी आकृति के लगभग १५० ग्राम भारी हैं । प्रत्येक गुर्दा प्रायः ४ इंच लम्बा, $२\frac{१}{२}$ इंच चौड़ा एवं २ इंच मोटा होता है, जिस प्रकार फेफड़े वायु साफ करते हैं, उसी प्रकार जल अंश की सफाई गुर्दों के जिम्मे हैं । वे अनावश्यक तत्वों को मूत्र द्वारा निकाल कर बाहर करते रहते हैं । उनमें १० लाख से भी अधिक नलिकाएँ हैं । इन सब की लम्बाई कतार में रखी जाय तो वह विषुवत रेखा के चारों ओर एक चक्कर लगा सकती है । एक घण्टे में गुर्दे इतना रक्त छानते हैं जिसका भार समूचे शरीर की तुलना में दूना होता है ।

आमाशय का मोटा काम भोजन हजम करना है, पर यह क्रिया अत्यन्त जटिल और विलक्षण है । इस छोटी-सी थैली को एक अनोखी रसायनशाला कहा जा सकता है । कहाँ रक्त? इस परिवर्तन में इतने प्रकार के रासायनिक पदार्थों और क्रिया-कलापों का समन्वय होता है कि उसे बाजीगर जैसा कौतुक ही कह सकते हैं । इसी प्रकार आँख जैसा कैमरा एवं कान की तरह शक्तिशाली ट्रांसड्यूसर-साउण्ड फिल्टर अपने में आश्चर्यजनक है ।

त्वचा शरीर के सुरक्षात्मक कवच का निर्माण करती और ढाल की तरह उसकी रक्षा करती है । मनुष्य के शरीर की त्वचा को यदि फैलाया जाय तो वह लगभग २५० वर्गफुट जगह घेरती है । इसका कुल वजन पौने तीन किलोग्राम के लगभग होता है । एक वर्ग इंच त्वचा में ७२ फुट लम्बा तन्त्रिका जाल और १२ फुट लम्बी रक्त नलिकाएँ बिछी बिखरी रहती हैं । रोमकूप प्रायः एक पौण्ड पसीना रोज बाहर निकालते हैं साथ ही यह श्वसन की जिम्मेदारी भी सँभालते हैं । साँस व्यक्ति न केवल फेफड़ों से बल्कि त्वचा के माध्यम से भी लेता है । त्वचा के भीतर बिखरे ज्ञान तन्तुओं को एक लाइन में रखा जाय तो उनकी लम्बाई ४५० मील होगी । त्वचा का "मेलेनीन" रसायन चमड़ी को गोरे, काले, पीले आदि रंगों से रंगता रहता है ।

सामान्यतया त्वचा की मोटाई ०.३ से ३ मिली-मीटर होती है, परन्तु कार्य व्यवहार एवं उपयोगिता के आधार पर इसकी मोटाई विभिन्न अंग अवयवों में अलग-अलग होती है । सबसे पतली तह लगभग ०.५ मिलीमीटर आँखों पर होती है और सर्वाधिक मोटी परत पैर के तलवों में लगभग ६ मिलीमीटर होती है । त्वचा में अगणित छोटे-छोटे रोमकूप होते हैं, जिनकी संख्या रोमों के आधार पर साढ़े तीन करोड़ बताई गई है । ऐनाटॉनी के आधार पर मनुष्य शरीर की त्वचा में ६ परतें होती हैं जिनके कार्यों में भिन्नता होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुविख्यात वैज्ञानिकों डॉ. लोगन क्लेनडेनिंग ने इसे एक रोचक और रहस्यमय संरचना बताया है । उन्होंने कहा है कि त्वचा शरीर के चारों ओर कोई निष्क्रिय आच्छादन मात्र नहीं वरन् यह एक सक्रिय अवयव है । त्वचा का प्रमुख कार्य स्पर्श है । इसके अतिरिक्त इस पतले से आवरण में इतनी विलक्षण क्षमताएँ भरी पड़ी हैं कि यदि उन्हें कुरेदा और विकसित किया जा सके तो वह अन्य इन्द्रियों का काम बखूबी कर सकती है । विकसित और प्रशिक्षित त्वचा स्वादेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय श्रवण और दर्शन आदि का कार्य कर सकती हैं और अपनी अतीन्द्रिय क्षमता का परिचय दे सकती है । समय-समय पर आये दिन त्वचा की विलक्षण सामर्थ्य के उदाहरण सामने आते रहते हैं, जिनमें त्वचा से सूँघने, देखने, सुनने और स्वाद लेने का काम लिया जाता है चक्षुहीन व्यक्तियों की त्वचा इस सीमा तक सम्वेदनशील विकसित हो जाती है कि उन्हें आँखों का अभाव अनुभव तक नहीं होता ।

मानव मस्तिष्क की संरचना और भी विलक्षण है । २६ वर्ग इंच वाली छोटी पिटारी में बन्द ३ पौण्ड वजनी मस्तिष्क भूत, भविष्य और वर्तमान का समस्त ज्ञान अपने अन्दर समेटे प्रसुप्त स्थिति में पड़ा रहता है । इसमें सम्पूर्ण ईश्वरीय क्षमता बीज रूप में विद्यमान है । मनुष्य के मस्तिष्क में १४ करोड़ कोशिका तन्त्र तथा १४ अरब ५ लाख तन्तु होते हैं जो ग्रे मैटर और ह्वाइट मैटर नामक पीले एवं सफेद रंग के द्रव में तैरते रहते हैं । यह मस्तिष्क की सभी शारीरिक क्रिया-प्रक्रियाओं का संचालक, माँसपेशियों तथा श्वास-प्रश्वास, भोजन पचाने जैसे स्वयं संचालित प्रक्रियाओं का नियन्त्रक है । इसके अतिरिक्त रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, और ध्वनियों का महासागर सदैव मनुष्य के चारों ओर लहराता रहता है तथा उसमें उठने वाले तूफान मस्तिष्क से टकराते रहते हैं । मस्तिष्क इन सबको जानता, पहचानता, विश्लेषण करता और अपना निर्णय सुनाता है । इसके अलावा भी नवीनतम और पुरातन स्मृतियाँ, अर्जित ज्ञान सम्पदा, वर्तमान जन्म और पूर्व जन्मों के संस्कार, सुखद-दुःखद अनुभूतियाँ आदि सभी मस्तिष्कीय पिटारी में संचित रहते हैं । इसके प्रमाण भी वैज्ञानिकों ने जुटा लिए हैं ।

अन्तःस्रावी ग्रन्थियों और बहिस्रावी ग्रन्थियों की संरचना और कार्यप्रणाली को देखते हुए शोधकर्त्ताओं ने इन्हें जादुई पिटारियाँ माना है । यह ग्रन्थियाँ न केवल मनुष्यों की शारीरिक बनावट में योगदान देती हैं, वरन् उनके चेतन और अचेतन मस्तिष्कों को रहस्यमय ढंग से प्रभावित करती हैं ।

शरीरगत जीव कोशों को काया की सबसे छोटी इकाई के रूप में देखा जाता है । देखा जाय तो मनुष्य के शरीर में इन जीव-कोशिकाओं का महासमुद्र ही भरा पड़ा है, जिनका ६५ प्रतिशत भाग जलीय होता है और उसमें साइटोप्लाज्म, प्रोटोप्लाज्म, नाभिक जैसे जैविक तत्व तैरते रहते हैं । इन तत्वों के निर्माण में कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस आदि तत्व भाग लेते हैं । शरीर शास्त्रियों के अनुसार मानवी काया में ६ नील (६,००,००,००,०००,००,०००) कोशिकाएँ होती हैं । वैज्ञानिकों के अनुसार इनके निर्माण में भाग लेने वाले तत्वों की तथा निर्मित कोशिकाओं की सम्मिलित संयुक्त ऊर्जा का मापन भौतिक उपकरणों के माध्यम से किया जाना सम्भव नहीं है ।

जीवकोशों के साइटोप्लाज्मा के मध्य में उसका भी एक मध्यवर्ती नाभिक होता है । एक नाभिक में २३ या २४ जोड़े गुण सूत्रों (क्रोमोसोम्स) के होते हैं, जिनकी इकाई को जीन्स कहते हैं । वैसे प्रत्येक जीवकोश में कुल जीन्स की संख्या पाँच हजार से एक लाख बीस हजार जोड़े गिनी गई है । उनकी संरचना भी डी. एन. ए. और आर. एन. ए. जैसे रसायनों से हुई है । यह सूक्ष्मता की चरम सीमा है । वंशानुक्रम का सारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढाँचा इन्हीं पर खड़ा हुआ है । पूर्वजों की अनेक पीढ़ियों की विशेषताएँ इन्हीं जीन्स में भरी रहती हैं और वे समयानुसार विभिन्न रूपों में प्रकट होती है ।

दृश्य रूप में यही प्रतीत होता है कि माता, पिता ही बालक को जन्म देते हैं, तो सन्तान को उन्हीं के अनुरूप होना चाहिए, पर इस मान्यता को 'जीन्स' में संग्रहीत अनेकों माता-पिता की पीढ़ियों का उत्तराधिकार जब पीछे-पीछे चलता है, तो उस मोटी मान्यता में कई बार असाधारण व्यवधान भी उत्पन्न होते हैं, और संतति की विलक्षणताएँ अजीब ढंग की दृष्टिगोचर होती हैं । इन्हें आध्यात्म की भाषा में पूर्वजन्मों के संग्रहीत संस्कार भी कह सकते हैं ।

मनुष्य जिस जीव सत्ता से बना है । उसकी सामर्थ्य देखते हुए दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है । बीज से अँकुर, अँकुर से पौधा और पेड़ बन जाना जिस प्रकार आश्चर्यजनक है, उससे भी अनन्त गुना पुरुषार्थ जीव को अपने आरम्भिक मुहूर्त में ही करना पड़ता है ।

शुक्राणु इतना छोटा होता है कि सुई की नोंक पर उसके हजारों भाई बैठ सकते हैं । रतिक्रिया के समय योनि में विद्युत स्पन्दन उठने लगते हैं, उन्हीं की उत्तेजना से शुक्राणु अपने सहयोगी डिम्ब की तलाश में चल पड़ते हैं । इस प्रयास में उन्हें इतनी तेज दौड़ लगानी पड़ती है कि चीते की दौड़ भी उससे कम पड़ती है । शुक्राणु को डिम्बाणु तक पहुँचने में अपने आकार के अनुपात से इतनी लम्बी दौड़ लगानी पड़ती है जिसे एक मनुष्य द्वारा समूची पृथ्वी की परिक्रमा के समतुल्य माना जा सके ।

शरीरगत अनेकों रहस्य ऐसे हैं जिनके ऊपर से पर्दा अभी तक उठ ही नहीं सका है । हारमोन, वंशानुक्रम, जीव-कोशों की अद्‌भुत क्षमता, अचेतन मन, भाव-सम्वेदना, अतीन्द्रिय क्षमता, स्वसंचालित जीवन-पद्धति, प्रभावी तेजोवलय, रासायनिक पदार्थ एवं प्राणाग्नि रूपी दैवी शक्ति पुंज क्या काम करते हैं ? इसका अभी थोड़ा-सा पता चला है, पर वे विनिर्मित किस आधार पर होते हैं ? इसकी मनुष्य को कोई जानकारी नहीं है । इन रहस्यों का सूत्र संचालक सूक्ष्म शरीर द्वारा होने की बात कहकर हमें मौन होना पड़ता है ।

मानवी काया के सन्दर्भ में वैज्ञानिक लॉर्ड हर्बर्ट ने कहा है "हू सो एवर कन्सीडर्स द स्टडी ऑफ एनॉटॉमी, कैन नेवर बी. एन. एथिस्ट" अर्थात् जो काय संरचना को जानता समझता है, उसे कभी नास्तिक नहीं होना चाहिए । उसे परब्रह्म की सत्ता को एक कुशल चित्रकार, सृजनात्मक सत्ता के रूप में स्वीकार कर मानवीकाया के स्थूल व सूक्ष्म दोनों ही घटकों का समुचित सदुपयोग कर जीवन सफल बनाना चाहिए ।

मनुष्य शरीर की बिजली और उसके चमत्कार

मनुष्य एक प्रकार का अण्डा है जिसके भीतरी केन्द्र में जर्दी रहती है और चारों ओर सफेद माँसल पदार्थ । मनुष्य के शरीर को जर्दी कह सकते हैं और उसके चारों ओर फैले हुए तेजोवलय को सफेदी कह सकते हैं । इस दृश्य और अदृश्य दोनों को मिलाकर एक पूर्ण व्यक्तित्व बनता है । असल में यह व्याख्या भी त्रुटिपूर्ण है । मनुष्य जितने क्षेत्र में अपना प्रभाव फेंक सकता है और जितने क्षेत्र से प्रभाव ग्रहण कर सकता है उतने को मनुष्य का सम्बन्ध क्षेत्र ही कहा जायेगा । यह परिधि असीम है इसलिए मनुष्य को भी असीम या अनन्त ही माना गया है ।

पृथ्वी का दृश्य पिण्ड छोटा है पर उसका वायुमण्डल चुम्बकत्व रेडियो क्षेत्र, अन्तर्ग्रही आदान-प्रदान की परिधि को मिलाकर देखा जाय तो लगेगा कि ब्रह्माण्ड परिवार की विशालकाय मशीन का वह एक सुसम्बद्ध पुर्जा मात्र है । विश्व परिवार से पृथक होकर पृथ्वी का कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता । ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी विश्व चेतना की शृंखला की एक कड़ी मात्र ही है । घड़ी का छोटा पुर्जा तभी तक उपयोगी है जब तक वह घड़ी के साथ जुड़ा है, अलग रहकर वह कूड़ा-कचरा मात्र है । मनुष्य अपने को एकाकी मानता भले ही रहे पर तथ्य यह है कि उसका वैभव, सुख एवं प्रगति प्रयास विश्व चेतना पर ही पूर्णतया निर्भर हैं । आत्मा, उसका कलेवर शरीर, शरीर के इर्द-गिर्द छाया हुआ तेजोवलय, तेजोवलय में सन्निहित सूक्ष्म शक्तियों की हल-चलों की अकल्पनीय परिधि यह सब मिलकर ही मनुष्य की विशालता समझी जानी चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काय-कलेवर की ससीमता और विश्व ब्रह्माण्ड की असीमता के बीच की कड़ी यह तेजोवलय ही है जो मनुष्य के चारों ओर छाया रहता है । आँखों से दीखते हुए भी उसकी भूमिका इतनी आश्चर्यजनक है कि उसे दृश्य काया से भी अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए । शरीर मर जाता है पर यह तेजोवलय फिर भी विद्यमान रहता है । भूत-प्रेतों के रूप में उसी की हलचलें देखी जाती हैं । हो सकता है कि कोई व्यक्ति कहीं जन्म ले चुका हो और तेजोवलय स्वतन्त्र रूप से काम कर रहा हो प्रेतात्मा की भूमिका निवाह रहा हो ।

धरती और आकाश में काम करने वाली दृश्य एवं अदृश्य शक्तियाँ अपने आप में एकाकी अथवा पूर्ण नहीं है । वे दूसरों के अनुदान, संयोग, समन्वय से बनी हैं । अणु की सत्ता जिस रूप में सामने आती है वह उसकी आपकी एकाकी कमाई नहीं है, उसमें भूतल ही नहीं अन्य-अन्य लोकों का भी अद्‌भुत अनुदान जुड़ा होता है अन्यथा आणविक गतिविधियाँ मात्र हलचल बनकर रह जायें, उनके द्वारा कोई उत्साहवर्धक प्रयोजन पूरा न हो सके ।

यही बात मानवी व्यक्तित्व के बारे में भी है । जीव कोशों से विनिर्मित यह घटक यदि अनेकों दूरवर्ती सत्ताओं का कृपा पात्र न हो तो सम्भवतः वह क्षुद्र जीवधारी से अधिक कुछ भी न बन पाता ।

जड़ अणुओं की गति एक प्रकार की विद्युत उत्पन्न करती है, उसमें जब चेतन सत्ता का समावेश होता है तो जीवन का, जीवधारियों का आविर्भाव होता है । ध्रुवों के क्षेत्र में चुम्बकीय तूफान उठते रहते हैं, जिनका प्रकाश 'अरोरा बोरीलिस, तेजोवलय के रूप में छाया रहता है । इसे पृथ्वी के साथ अन्य ग्रहों की सूक्ष्म हलचलों का मिलन स्पंदन कह सकते हैं । यही है वह पृथ्वी का ग्रहों के साथ प्रणय परिणय जिसके फलस्वरूप कुन्ती के पाँच पुत्रों की तरह पाँच विविध विध हलचलें जन्म लेती हैं और उनके क्रिया-कलाप एक से एक बढ़कर अद्‌भुत और शक्तिशाली बने हुए सामने आते रहते हैं ।

समुद्र का खारा जल जब धातु विनिमित नौकाओं तथा जलयानों से टकराता है तो उससे विद्युत तरंगें उत्पन्न होती हैं । नौका विज्ञानी इस अनायास होते रहने वाले विद्युत उत्पादन से परिचित रहते हैं और उसकी हानिकारक, लाभदायक प्रतिक्रिया से सतर्क रहते हैं ।

ठीक 'इसी प्रकार शरीर गत जीवाणु भी ईथर एवं वायुमण्डल में भरे विद्युत प्रवाह से टकराते हैं और विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं । जीव कोशों में उन धातुओं तथा रसायनों की समुचित मात्रा रहती है जो आघातों से उत्तेजित होकर विद्युत प्रवाह उत्पन्न कर सके । यही कारण है कि हर मनुष्य में गर्मी ही नहीं रहती वरन् विद्युत प्रवाह के अनेक स्तरों की धाराएँ भी बहती रहती है । इन्हें यन्त्रों द्वारा भली प्रकार परखा जाना जा सकता है ।

मानवी चुम्बकत्व विश्वव्यापी ब्रह्मसत्ता के साथ एक तन्तुनाल द्वारा जुड़ा रहता है । विष्णु की नाभि में कमल का उत्पन्न होना और उसके पुष्प पर ब्रह्मा जी का अवतरण परमात्मा और आत्मा के बीच सम्बन्ध सूत्र की इसी शृंखला का अलंकारिक चित्रण है । गर्भस्थ बालक माता के साथ इसी नालतन्तु द्वारा जुड़ा रहता है । नाभि को मध्य केन्द्र माना गया है । नवजात शिशु का नाभि नाल प्रसव के उपरान्त ही बाहर आता है और उसे काट कर दोनों को पृथक करना पड़ता है ।

मनुष्य के कान सीमित स्तर के ध्वनि प्रवाह को ही सुनते हैं किन्तु पशुओं में ऐसी चेतना पायी जाती है जिसके आधार पर वे उन ध्वनियों को भी सुन सकें जिन्हें सुनने में मनुष्य असमर्थ रहता है । यन्त्रों द्वारा ऐसी सीटी बजाई जा सकती है जिसे मनुष्य तो अनुभव न करें पर कुत्ता आसानी से सुन सके और उसकी बुलाहट पर दौड़ा आये । मालिक की आवाज को वह इतनी दूर से सुन सकता है जितना कि सामान्य मनुष्यों के लिए सुनना सर्वथा असम्भव है ।

मेज पर एक कोरा कागज बिछाइए । उसके ऊपर एक चुम्बक रखिए । एक फुट ऊँचाई से लोहे का बुरादा धीरे-धीरे बरसाइये देखा जायेगा कि लोहकण एक विशिष्ट क्रम के अनुसार गिर रहे हैं । यह क्रम चुम्बक की बल रेखाओं के अनुरूप होगा । कागज पर चुम्बक की अन्तःस्थिति कागज पर गिरे लोहे के बुरादे से भली प्रकार स्पष्ट हो रही होगी ।

मनुष्य भी एक प्रकार का चुम्बक है वह अन्तरिक्ष से बरसने वाले अनेक भले-बुरे अनुदानों को अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप स्वीकार, अस्वीकार करता है । वह जैसा कुछ स्वयं है उसी का चुम्बकत्व उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस विश्व ब्रह्माण्ड में अपनी जैसी सूक्ष्म धारा प्रवाह से अनायास ही सम्पन्न, सज्जित करता रहता है ।

मस्तिष्क के मध्यभाग से प्रकाश कणों का एक फव्वारा सा फूटता रहता है । उसकी उछलती हुई तरंगें एक वृत्त बनाती हैं और फिर अपने मूल उद्गम में लौट जाती हैं । यह रेडियो प्रसारण और संग्रहण जैसी प्रक्रिया है । ब्रह्मरन्ध्र से छूटने वाली ऊर्जा अपने भीतर छिपी हुई भाव स्थिति को विश्व ब्रह्माण्ड में ईथर कम्पनों द्वारा प्रवाहित करती रहती है इस प्रकार मनुष्य अपनी चेतना का परिचय और प्रभाव समस्त संसार में फेंकता रहता है । फुहारे की लौटती हुई धाराएँ अपने साथ विश्वव्यापी असीम ज्ञान की नवीनतम घटनात्मक तथा भावनात्मक जानकारियाँ लेकर लौटती हैं यदि उन्हें ठीक तरह समझा जा सके, ग्रहण किया जा सके तो कोई भी व्यक्ति भूतकालीन और वर्तमान काल की अत्यन्त सुविस्तृत और महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कर सकता है । व्यक्ति में प्रवाह ग्रहण करने की और प्रसारित करने की जो क्षमता है उसका माध्यम यह ब्रह्मरन्ध्र अवस्थित ध्रुव संस्थान ही है । पृथ्वी पर अन्य ग्रहों का प्रचुर अनुदान आता है तथा उसकी विशेषताएँ अन्यत्र चली जाती हैं । यह आदान-प्रदान का कार्य ध्रुव केन्द्रों द्वारा सम्पन्न होता है । शरीर के भी दो ध्रुव हैं एक मस्तिष्क, दूसरा जनन गह्वर । चेतनात्मक विकिरण मस्तिष्क से और शक्ति परक ऊर्जा प्रवाह जनन गह्वर से सम्बन्धित है । सूक्ष्म आदान-प्रदान की अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया इन्हीं केन्द्र के माध्यम से संचालित होती है ।

शारीरिक और मानसिक स्थिति के अनुरूप तेजोवलय की स्थिरता बनती है । यदि स्थिति बदलने लगें तो प्रकाश पुंज की स्थिति भी बदल जायेगी । इतनी ही नहीं समय-समय पर मनुष्य के बदलते हुए स्वभाव तथा चिन्तनस्तर के अनुरूप उसमें सामयिक परिवर्तन होते रहते हैं । सूक्ष्मदर्शी उसकी भिन्नताओं को रंग बदलते हुए परिवर्तनों के रूप में देख सकते हैं । शान्ति और सज्जनता की मनःस्थिति हल्के नीले रंग में देखी जायेगी । विनोदी, कामुक सत्तावान, वैभवशाली, विशुद्ध व्यवहार कुशल स्तर की मनोभूमि पीले रंग की होती है । क्रोधी, अहंकारी क्रूर, निष्ठुर, स्वार्थी, हठी और मूर्ख मनुष्य लाल वर्ण के तेजोवलय से घिरे रहते हैं हरा रंग सृजनात्मक एवं कलात्मक प्रवृत्ति का द्योतक है । गहरा बैंगनी चंचलता और अस्थिर मति का प्रतीक है । धार्मिक ईश्वर भक्त और सदाचारी व्यक्तियों की आभा केशरिया रंग की होती है । इसी प्रकार विभिन्न रंगों का मिश्रण मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के परिवर्तनों के अनुसार बदलता रहता है । यह तेजोवलय सदा स्थिर नहीं रहता । बदलती हुई मनोवृत्ति प्रकाश पुंज के रंगों में परिवर्तन कर देती है । यह रंग स्वतन्त्र रूप से कुछ नहीं । मनोभूमि में होने वाले परिवर्तन शरीर से निःसृत होते रहने वाले ऊर्जा कम्पनों की घटती-बढ़ती संख्या के आधार पर आँखों को अनुभव होते हैं । वैज्ञानिक इन्हें 'फ्रीक्वेन्सी ऑफ दी वेव्स' कहते हैं ।

दिव्य दर्शन (क्लेयर वाइन्स), दिव्य अनुभव (साइको-मैन्ट्री), प्रभाव प्रेषण (टैलि पैथी), संकल्प प्रयोग (सजैशन) जैसे प्रयोग थोड़ी आत्मशक्ति विकसित होते ही आसानी से किए जा सकते हैं । इन विद्याओं पर पिछले दिनों से काफी शोध कार्य होता चला आ रहा है और उन प्रयासों के फलस्वरूप उपयोगी निष्कर्ष सामने आये हैं । परा मनोविज्ञान, अतीन्द्रिय विज्ञान, मैटाफिजिक्स जैसी चेतनात्मक विद्याएँ भी अब रेडियो विज्ञान तथा इलेक्ट्रोनिक्स की ही तरह विकसित हो रही हैं । अचेतन मन की सामर्थ्य के सम्बन्ध में जैसे-जैसे रहस्यमय जानकारियों के पर्त खुलते जाते हैं वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता जाता है कि नरपशु लगने वाला मनुष्य वस्तुतः असीम और अनन्त क्षमताओं का भण्डार है कठिनाई इतनी भर है कि उसकी अधिकांश विकृतियाँ प्रसुप्त, अविज्ञात—स्थिति में पड़ी हैं । यदि उन्हें खोजा जायेगा और परिपुष्ट किया जा सके तो पेट और प्रजनन में संलग्न नर कीटक एक प्रचण्ड शक्ति केन्द्र की तरह अपनी सत्ता और महत्ता का परिचय दे सकता है ।

इच्छाशक्ति बनाम प्राण शक्ति

मनुष्य के द्वारा जो भी कृत्य होते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में इच्छाशक्ति को ही कार्यरत देखा जा सकता है । चेतना की यह शक्ति असीम, अप्रत्याशित एवं विलक्षण है । इस पर यदि नियन्त्रण साधा जा सके तो मनुष्य न केवल अपनी शारीरिक गतिविधियों को नियन्त्रित कर सकता है वरन् शक्ति, पदार्थ एवं वातावरण पर भी वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना प्रभाव डाल सकता है और उन्हें बदलने तक में आश्चर्यजनक रूप से समर्थ हो सकता है ।

फ्राँस के प्रख्यात परामनोविज्ञान वेत्ता डॉ. पाल गोल्डीन के कथनानुसार मनुष्य के पास असीम सामर्थ्य के रूप में इच्छाशक्ति विद्यमान है जो सभी इन्द्रियों से अधिक शक्तिशाली एवं अद्‌भुत है । यह अकेले ही समस्त इन्द्रियों एवं शक्तियों के कार्य कर सकती है । इसी प्रकार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. ह्वाटले कैरिंगटन ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति में इच्छाशक्ति होती है पर प्रायः यह क्षीण एवं अस्त-व्यस्त होती है, जो लोग इसे प्रबल एवं व्यवस्थित बना लेते हैं वह अद्‌भुत शक्ति सामर्थ्य युक्त हो जाते हैं । कुछ लोगों में यह अपने आप विकसित हो जाती है और कुछ लोग प्रयत्नपूर्वक अभ्यास से इसे विकसित करते, प्रचण्ड बनाते हैं । ऐसे अनेकानेक उदाहरण विद्यमान हैं जिसमें व्यक्तियों ने अपनी प्रबल इच्छाशक्ति से जड़ वस्तुओं में हलचल पैदा करने, बादलों को हटाने, वर्षा कराने अथवा वर्षा रोकने के सफल प्रदर्शन किए हैं । अमेरिका के मनोवैज्ञानिक डॉ. रॉल्फ एलेक्जैण्डर ने सन् १९५१ में बादलों को इच्छाशक्ति से एकत्र कर बूँदाबाँदी करने तथा फिर हटाने में ख्याति प्राप्त की थी, इसका विवरण तो बहुत समाचार-पत्रों में मिलता है, पर एक व्यक्ति इस सदी में ऐसा भी हुआ है, जिसे "कमाण्डर ऑफ नेचर", "किंग ऑफ क्लाउड कम्पेलर्स" की उपाधि मिली व जिसने शर्त लगाकर सानडियागो कैलिफोर्निया में मूसलाधार बरसात करके दिखाई । इस व्यक्ति का नाम था चार्ल्स हैटफील्ड । कहते हैं कि ग्वाटे माला में वह तीस वर्ष तक आदिवासियों से सीखी विद्या के आधार पर झीलों को भरने, फसल बचाने के चमत्कार दिखाता रहा । पर वैज्ञानिकों को उस पर कोई विश्वास नहीं था । उसने लन्दन शहर पर छाये कुहासे को हटाकर उसे सहारा के रेगिस्तान पर बरसाकर हरियाली लाने का भी दावा किया, पर इसे मजाक समझकर किसी ने उसे गम्भीरता से नहीं लिया ।

२८ दिसम्बर, १९१५ को वह सानडियागो के मेयर के पास पहुँचा व पेशकश रखी कि दस हजार डॉलर के बदले वह मोरेना डैम नामक शहर की पूर्ति करने वाले जलाशय को भर देगा । यदि वर्षा न हुई तो उसे कुछ नहीं चाहिए, यदि जलाशय भर गया तो वे उसे वांछित राशि देंगे । १५ अरब गैलन क्षमता वाला जलाशय इच्छा शक्ति से भरा जा सकता है, यह किसी के लिए भी हँसी का विषय बन सकता था । मेयर ने हँसी-हँसी में यह सौदा कर लिया क्योंकि पहले पूरी वर्षा होने पर भी वह जलाशय निर्माण की तिथि से अब तक कभी भी एक तिहाई से अधिक नहीं भरा था । चूँकि तीन वर्ष से वर्षा हो भी नहीं रही थी, जल संकट था ही, ऐसी शर्त बदने में नुकसान क्या है ? यही सोचकर मेयर महोदय ने मौखिक सौदा कर लिया ।

एक जनवरी १९१६ को हैट फील्ड सानडियागो से ६० मील पूर्व स्थिति मोरेना डैम के समीप जा पहुँचा । पहले उसने बीस फीट ऊँचा एक लकड़ी का टॉवर बनाया इसके ऊपर बड़ी गैल्वेनाइजिंग ट्रे रखी जिनमें उसका विशिष्ट आर्द्रता आमन्त्रक द्रव्य उसने फैला रखा था । फिर उसने अपनी गुप्त प्रक्रिया द्वारा उस पर ध्यान केन्द्रित कर उस सम्मिश्रण को जो वनौषधि से बना था, वाष्पीकृत करना चालू किया, साथ ही कुछ मन्त्र बुदबुदाना भी । यह क्रम बिना विश्राम के ५ जनवरी तक चलता रहा । उसी शाम से बादल घुमड़ आये, पहले बूँदा-बाँदी हुई, क्रमशः दस जनवरी तक यह मूसलाधार बरसात में बदल गई जो दस वर्ग मील के घेरे मात्र में थी । बीस जनवरी तक पानी इतना बरसा कि सानडियागो के नागरिक प्रार्थना करने लगे किसी तरह पानी रुक जाय । सारा व्यापार ठप्प हो गया । सड़कों पर नदियों के रेले बहने लगे । कई मकान बह गए । कुछ दिन पानी रुका, सूर्य देवता बादलों से झाँकी देकर चले गए । काम-काज चालू हुआ ही था कि २६ जनवरी को एक बार फिर भयंकर गर्जना के साथ तूफान आया, पानी बरसने लगा एवं मोरेना डैम में २ फीट प्रति घण्टे की दर से पानी बढ़ने लगा । जब तक कि वह ऊपरी तल से ५ इंच नीचे नहीं रह गया, तब तक पानी बरसना रुका नहीं ।

इसमें पचास व्यक्तियों की जान चली गई । २०० पुल बह गए । बत्तीस दिन तक न गाड़ियाँ चलीं, न रेलें । जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया, दैनन्दिन व्यापार चलने लगे तो हैटफील्ड अपनी फीस लेने पहुँचा । किंतु उल्टे उस पर आरोप लगाकर कि उसने शहर व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आस-पास के क्षेत्र का नुक्सान किया है, हर्जाना भरने तक सिटी कौंसिल द्वारा जेल में बंद कर दिया गया । लोगों के अनुरोध पर उसे छुड़ाया गया पर उसे वह फीस नहीं मिली क्योंकि सबने इसे मानवी इच्छाशक्ति का चमत्कार नहीं "एक्ट ऑफ गॉड" स्रष्टा का क्रिया-कलाप कहकर उसे भगा दिया । फिर भी उसे लोग भूले नहीं । १९४७ में उसकी मृत्यु तक उसे उसके इस चमत्कार के कारण बराबर याद किया जाता रहा । सम्भवतः वह अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग बाढ़ की विभीषका रोकने में नहीं कर सका, नहीं तो वह इतिहास में अमर हो जाता । अन्त तक उसने अपने विशिष्ट सम्मिश्रण का फार्मूला किसी को नहीं बताया ।

सन् १९६४ की कुआलालम्पूर मलेशिया की उस घटना से सभी अवगत हैं जिसमें वहाँ की सरकार द्वारा घनघोर वर्षा को रोकने के लिए प्रसिद्ध तांत्रिक रैम्बो को बुलाया गया था ताकि राष्ट्र मण्डलीय हॉकी मैच सम्पन्न हो सके । ध्यान एकाग्र कर रैम्बो ने वर्षा के बादलों को स्टेडियम से दूर हटा दिया, जब तक कि मैच पूरा न हो गया ।

लुन्का में प्रवाहित होने वाली ओसर नदी में जबर्दस्त बाढ़ आयी हुई थी । सारा नगर कुछ ही क्षणों में जलमग्न हो जाने वाला था । इन्जीनियरों के सारे प्रयास विफल हो गए थे । सभी नगर निवासी जल समाधि की प्रतीक्षा कर रहे थे । उसी समय कुछ व्यक्तियों ने फ्रीडियन नामक प्रख्यात संत से जाकर प्रार्थना की—महात्मन् ! इस दैवी आपदा से बचाव का कुछ उपाय आप ही कीजिए । कहते हैं कि महात्मा फ्रीडियन ने ओसर नदी की प्रचण्ड धारा को अपनी इच्छाशक्ति से दूसरी ओर मोड़ दिया और नगर को डूबने से बचा लिया ।

यह सत्य है कि मानव मन शरीर के बाहर स्थित सजीव एवं निर्जीव पदार्थों पर भी व्यक्ति की क्षमतानुसार इच्छानुरूप प्रभाव डाल सकता है । मनीषियों का कहना है कि यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इच्छाशक्ति द्वारा स्थूल जगत पर नियन्त्रण सम्भव है ।

बहुचर्चित पुस्तकें "स्ट्रेंज हैपनिंग्स" एवं "बिटवीन टू वर्ल्डस्" में इच्छाशक्ति के प्रदर्शन की कई घटनाओं का वर्णन किया गया है । प्रख्यात मनोविज्ञानी फ्रायड इस तरह की शक्तियों में विश्वास नहीं करते थे, किन्तु २५ मार्च १९०९ की एक घटना ने इच्छाशक्ति की महत्ता को मानने के लिए उन्हें बाध्य कर दिया । हुआ यों कि उनके समकालीन प्रसिद्ध मनः चिकित्सक कार्ल जुंग उस दिन उनके घर पर उपस्थित थे । उन्होंने अपनी मानवी एकाग्रता की क्षमता का प्रदर्शन करके फ्रायड के कमरे में रखी वस्तुओं में हलचल पैदा कर दी । वस्तुएँ इस तरह थरथराने लगीं मानों कोई तूफान या भूकम्प आ गया हो । इस दृश्य को देखकर फ्रायड आश्चर्य चकित रह गए ।

मानवी काय पिण्ड में अनन्त असीम सामर्थ्य विद्यमान है । मनस् तत्व की एकाग्रता द्वारा जड़, चेतन को प्रभावित कर असम्भव को भी सम्भव कर दिखाना सम्भव है, यह उपर्युक्त घटनाक्रमों से प्रमाणित होता है । यदि मनुष्य इस संकल्प शक्ति को अपने अन्तःकरण को जगाने, परमतत्व को जानने व उससे अपना सम्बन्ध जोड़ने में सुनियोजित कर सके तो उससे बड़ा सौभाग्यशाली कोई और नहीं ।

विचार सम्प्रेषण बिना माध्यम के भी सम्भव

अब यह निर्विवाद रूप से प्रमाणित होता जा रहा है कि मानव-मानव के बीच कोई ऐसी प्रक्रिया अवश्य काम करती है, जिसके द्वारा सूचनाओं का सूक्ष्म स्तर पर आदान-प्रदान सम्भव हो पाता है । आध्यात्म क्षेत्र में दूरवर्ती लोगों को प्रभावित करने, विचारों को सम्प्रेषित करने का यह माध्यम काफी फलितार्थों के साथ ग्रन्थों में वर्णित है, पर इसे अब विज्ञान जगत से भी मान्यता मिल गई है । इस दिशा में अनेकानेक प्रयोग परीक्षण हुए हैं, जिनसे टेलीपैथी, थॉट ट्रांसफर एवं थॉट रीडिंग जैसी मान्यताओं की यथार्थता पर वैज्ञानिकों ने भी अपनी मोहर लगा दी है ।

इन सामर्थ्यों के अस्तित्व में होने का प्रथम वैज्ञानिक परीक्षण व उसकी पुष्टि सर्वप्रथम कम्युनिस्ट देश रूस में हुई । वहाँ पर "पोपोव-ग्रुप" नामक मूर्धन्य वैज्ञानिकों के एक दल ने इस परीक्षण के लिए पहला प्रयास आरम्भ किया । इसके लिए कैमेन्स्की एवं निकोलाई नामक दो सब्जेक्ट चुने गए । कैमेन्स्की को मास्को में रखा गया एवं निकोलाई को चार सौ मील दूर लेनिनग्राद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की एक साउण्ड प्रूफ प्रयोगशाला में । कुछ समय पश्चात निकोलाई ने संदेश ग्रहण करने के लिए जब स्वयं को मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार कर लिया तो उससे सम्बद्ध ई. ई. जी. मशीन ने अल्फा मस्तिष्कीय तरंगें प्रदर्शित करनी शुरू कीं । निकोलाई को इस बात की तनिक भी जानकारी नहीं थी कि दूसरी ओर से विचार सम्प्रेषण प्रक्रिया कब प्रारम्भ होगी । थोड़ी देर उपरान्त जब मास्को से संदेश सम्प्रेषण की क्रिया आरम्भ हुई तो निकोलाई की ब्रेन वेव्स में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन परिलक्षित हुआ, जो इस बात का संकेत था कि इस ओर संदेश सफलतापूर्वक ग्रहण किए जा रहे हैं । टेलीपैथी सम्बन्धी यह विज्ञान सम्मत प्रथम प्रमाण था । इस प्रयोग के द्वारा जो एक महत्त्वपूर्ण बात सामने आई वह यह थी कि प्रयोग की सफलता के लिए ग्राही व्यक्ति की मनोदशा एक विशिष्ट स्तर की व भावनाएँ उच्चस्तरीय होनी चाहिए, तभी वह सूचना ग्रहण करने योग्य बनता देखा गया । रिसेप्टर के मस्तिष्क से निकलने वाली अल्फा तरंगें इसी बात की द्योतक थीं । इसके प्रमाण स्वरूप जब ग्रहीता के स्थान पर निकोलाई की जगह एक ऐसे व्यक्ति को रखा गया जो आक्रामक प्रवृत्ति का व निषेधात्मक चिन्तन का था, तो वह उन विचारों को पकड़ने में सर्वथा विफल रहा, जो दूसरी ओर से उसके लिए भेजे जा रहे थे ।

वस्तुतः विचार के रूप में सम्प्रेषित यह और कुछ नहीं वरन् विशेष स्तर की विशिष्ट वेवलेंग्थ वाली मस्तिष्कीय विद्युतीय तरंगें ही होती हैं । ग्रहण करने वाले व्यक्ति से भी जब इस स्तर की तरंगें निकलती हैं तभी वह उन्हें आकर्षित कर पाती हैं, अन्यथा नहीं । रेडियो कार्यक्रम में प्रसारण केन्द्र से संगीत को एक विशेष आवृत्ति पर भेजा जाता है और उस आवृत्ति को जब हम अपने ट्रांजिस्टर में मिलाते हैं तभी हम उसे सुन पाते हैं । मनुष्य में उसकी भिन्न-भिन्न मानसिक तरंगों के लिए उसका चिन्तन तन्त्र जिम्मेदार है । व्यक्ति यदि सात्विक प्रकृति का रहा है तो उसकी विचारणा-भावना भी सौम्य-सात्विक होती है, जो अपनी ही प्रकृति की सतोगुणी व उच्चस्तरीय मस्तिष्कीय रिद्म उत्सर्जित करती है । ऐसे ही व्यक्ति सूक्ष्म संदेशों को पकड़ने में सफल होते पाये गए हैं ।

प्रयोगों के दौरान यह भी देखा गया है कि ग्रहीता और प्रेषक जब उच्चस्तरीय भाव धारा से जुड़े होते हैं, तो उनमें से एक की दिमागी तरंग में परिवर्तन से वही बदलाव दूसरे में भी संचारित होता है । रूसी शोधकर्त्ताओं द्वारा सम्पन्न किए गए एक ऐसे ही प्रयोग का उल्लेख एम. रिजल ने "इण्टरनेशनल जनरल ऑफ पैरासाइक्लॉजी" नामक पत्रिका के एक लेख में किया है । इस प्रयोग में कैमेन्स्की के समक्ष जलने-बुझने वाली एक प्रकाश ट्यूब (स्ट्रोबोस्कोप) रखी गई, जिसकी जलने-बुझने की आवृत्ति अल्फा रेन्ज में थी । दूसरी ओर जब निकोलाई ने स्वयं को संदेश प्राप्त करने के अनुकूल बनाया, तो थोड़ी देर पश्चात देखा गया कि उसकी तरंगों की आवृत्ति भी बिल्कुल वही हो गई जो सम्प्रेषक की थी । ऐसा ही निष्कर्ष जैफरसन मेडीकल कॉलेज, फिलाडेल्फिया के दो नेत्र विशेषज्ञों द्वारा दो जुड़वाँ भाइयों पर किए गए प्रयोग से मिला, जिसका वर्णन न्यूयार्क के "हेराल्ड ट्रिब्यून" पत्र के "ट्वीन प्रूव एलेन्ट्रोनिक ई. एस. पी." नामक निबन्ध में जे. हिक्सन द्वारा किया गया है ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि शब्द शक्ति कभी नष्ट नहीं होती । हम जो कुछ सोचते-विचारते हैं वह विचार तरंगों के रूप में अन्तरिक्ष में घूमता रहता है । वैज्ञानिकों ने इस परिधि को "आईडियोस्फीयर" नाम दिया है । उनका कहना है कि भाव तरंगें इसी क्षेत्र में मंडराती रहती हैं । यदि हम अपनी चेतना विचारणा को उस स्तर तक परिष्कृत कर सकें तो ऊपर चक्कर काटती उदात्त विचारणाएँ सहज ही हम तक आकर्षित होकर हमारे कार्य में सहयोग दे सकती हैं । अमेरिकी शरीर शास्त्री डब्ल्यू. पेनफील्ड एवं एच. एच. जास्फर अपनी पुस्तक "एपीलेप्सी एण्ड दि फन्क्शनल एनाटॉमी ऑफ दि ह्यूमन ब्रेन" में लिखते हैं कि सापेक्षवाद के जनक विज्ञान जगत के मूर्धन्य भौतिकीविद् अल्वर्ट आइन्स्टीन की एवं मस्तिष्कीय तरंगों की जाँच से पता चला था कि उनके मस्तिष्क से अनवरत अल्फा तरंगें निकलती थीं, चाहे वह जटिल से जटिल गणितीय गणना में ही क्यों न उलझे हों । यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि अल्फा तरंगें मस्तिष्क की समग्र सक्रियता की स्थिति में निकलती हैं । उनके अनुसार आइन्स्टीन की अधिकांश समस्याओं के हल दिमाग में अकस्मात आते थे और इस प्रकार वे अपनी गणितीय जटिलताओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को बड़ी आसानी से सुलझा लेते थे । उनका कहना है कि सापेक्षवाद का प्रसिद्ध सिद्धान्त भी ऐसी ही एक चिन्तन प्रक्रिया के दौरान उनके मस्तिष्क में अनायास कौंधा था, जो बाद में भौतिकी का आधार स्तम्भ बना ।

स्पष्ट है—आइन्स्टीन का मस्तिष्क सदा सम्वेदनशील अनुकूल रिसेप्टर की दशा में बना रहता था । सम्भव है उनकी यह स्थिति आइडियोस्फीयर की उच्चस्तरीय विचारणाओं की फ्रीक्वेंसी से ट्यूण्ड हो, जिसके कारण हर वक्त उन्हें वहाँ से मार्ग-दर्शन मिलता रहता था । यदि उनके व अन्यान्य आविष्कारकों, चिन्तकों के साथ सचमुच ही ऐसा होता था तो इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं होनी चाहिए ।

सामान्य व्यक्ति के जीवन में भी यदा-कदा ऐसा घटित हो जाता है । हम किसी विषय पर सोचते होते हैं, गम्भीर चिन्तन की स्थिति में होते हैं पर तभी कोई ऐसा विचार यकायक कौंध उठता है जिससे हल आसान हो जाता है । यह शक्य है कि ऐसे समय हमारा सम्पर्क सूत्र कुछ क्षण के लिए आइडियोस्फीयर से जुड़ जाता हो पर अधिक देर तक यह अवस्था न बनाये रख पाने के कारण सम्पर्क टूट जाता हो और कोई अन्य जानकारी न मिल पाती हो ।

अब प्रश्न यह है कि यदि ऐसा ही होता है तो वह कौन-सा माध्यम है जिसके कारण अन्तरिक्ष में विद्यमान स्वतन्त्र विचार तरंगें किसी व्यक्ति में संचारित होती हैं अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक द्रुतगति से पहुँचती हैं ?

ज्ञातव्य है कि हम प्राण ऊर्जा के अनन्त सागर में रह रहे हैं । समस्त जीव जगत में उसी का क्रीड़ा कल्लोल संव्याप्त है । अपनी व्यष्टि सत्ता भी उसी की अभिव्यक्ति है, जो प्राण हममें हैं वही अन्यों में और इस शून्याकाश में भी है । इस प्रकार देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सब में एक ही प्राण प्रवाह संचारित हो रहा है और परोक्ष रूप से हम सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

स्वामी अभदानन्द ने अपने ग्रन्थों में लिखा है कि आध्यात्मिक पुरुष अथवा योगीजन दूसरों के मनोभावों को इसलिए जान लेते हैं क्योंकि हमारे प्राण-परमाणु निकल कर वातावरण में आते-जाते रहते हैं । इसी माध्यम से वे सामने वाले के विचारों को समझ पाते हैं ।

सर्वविदित है समानधर्मा विचार आपस में मिलते और घनीभूत होते रहते हैं । बुरे व्यक्ति सदा अपनी ही प्रकृति के लोगों की ओर आकर्षित होते हैं और सर्वदा औंधे-सीधे कृत्य में संलग्न रहते हैं, जबकि सदाचारियों का सम्पर्क भले व्यक्तियों से होता है । इस सन्दर्भ में जीव विज्ञानी डॉ. जैम्बीस मोनाड का कथन अधिक युक्ति संगत जान पड़ता है कि दुराचारी व्यक्ति अपनी ही प्रकृति के विचारों को अनजाने में अन्तरिक्ष से खींचते रह कर कुमार्ग के दलदल में इस प्रकार फँस जाते हैं कि उससे बाहर आ पाना स्वयं के बलबूते असम्भव-सा हो जाता है । इस आधार पर यदि व्यक्ति अपनी विचारणा को सुव्यवस्थित और भावनाओं को परिष्कृत-सुविकसित कर सके तो न सिर्फ विचार सम्प्रेषण-ग्रहण और वातावरण से बहुमूल्य अनुदान ग्रहण करने में ही वह सफल होगा, वरन् ब्राह्मी चेतना से भी तब सम्पर्क साधना सम्भव बन पड़ेगा ।

आइए ! देखें विचारों के रंग एवं रूप को

विचारों को कभी चिन्तन क्षेत्र में घुमड़ते रहने वाले और मस्तिष्क को कुछ काम देते रहने वाली प्रक्रिया भर समझा जाता रहा है, किन्तु अब स्पष्ट हो गया है कि चिन्तन की यह एक महत्त्वपूर्ण शक्ति है । इस शक्ति का उपयोग करके ही विचारशील महत्त्वपूर्ण योजनाएँ बनाते, महत्त्वपूर्ण कार्य करते और सफल महापुरुष कहलाते हैं । भाग्य निर्माण का आधार भी यही है । उत्कृष्ट विचारणाओं-संकल्पों का महत्त्व समझने और जीवन व्यवहार में उतारने की कला जिन्हें आती है, धवल चरित्र वाले वही व्यक्ति अपनी यश गाथा शरीर न रहने पर भी अक्षुण्ण बनाये रखते हैं । विविध रंग-रूपों वाले सशक्त विचार प्रवाह अदृश्य रूप में अपनी विद्यमानता से समानधर्मी व्यक्तित्वों का सतत पोषण करते और अमर बने रहते हैं ।

वस्तुतः स्थूल वस्तुओं की भाँति विचारों के भी अपने रूप और रंग होते हैं, जिनकी सुन्दरता-असुन्दरता उनकी भली-बुरी प्रकृति पर निर्भर करती है । व्यक्तित्व का वजन भी तदनुरूप ही होता है । आध्यात्मवेत्ताओं के अनुसार चूँकि विचार सूक्ष्म होते हैं अतः उनके वर्ण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और आकार चर्मचक्षुओं से दिखाई नहीं पड़ते, पर अन्तः नेत्रों द्वारा उन्हें अवश्य पहचाना जा सकता है और तदनुरूप उनमें काट-छाँट कर व्यक्तित्व का गठन किया जा सकता है ।

आध्यात्मवेत्ताओं की इस मान्यता पर अब विज्ञानवेत्ताओं, परामनोविज्ञानियों ने भी अपनी मुहर लगा दी है । फ्राँस के मूर्धन्य भौतिकशास्त्री डॉ. वेरडुक ने अतिसम्वेदनाशील कैमरे के माध्यम से विचारों के अनेक चित्र लेकर यह प्रमाणित कर दिया है कि इनके भी निश्चित आकार और वर्ण होते हैं जिनका व्यक्तित्व की गहराई से सीधा सम्बन्ध होता है ।

विचार आकार कैसे ग्रहण करते हैं, इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि चूँकि वह एक प्रकार की शक्ति है, अतः जब शक्तिशाली प्रवाह के रूप में वे मानवी मस्तिष्क से निकलते हैं तो अपने आस-पास आकाशीय परमाणुओं में भी हलचल उत्पन्न कर देते हैं । इस हलचल से परमाणुओं की गति प्रभावित होती है और वहाँ एक आकार उभर आता है । इसका रूप ठीक उस वस्तु की अनुकृति होता है जिसकी मन में कल्पना की जा रही होती है । कैमरा इसी की तस्वीर खींचता है । फोटोग्राफी की इस परोक्ष प्रक्रिया को "थॉट फोटोग्राफी" कहते हैं ।

परामनोवेत्ताओं का कहना है कि चूँकि मानव मन में सदैव किसी न किसी प्रकार के विचार उठते रहते हैं, अतः इनके द्वारा वाह्य वातावरण में नित नाना प्रकार के रूप बनते और बिगड़ते रहते हैं । इन संकल्प प्रवाहों के बाह्य रूप कभी स्पष्ट तो कभी अस्पष्ट होते हैं, जो यह प्रकट करते हैं कि संकल्प कितने बलवान हैं । चिंतन की उत्कृष्टता एवं संकल्प की प्रबलता जितनी अधिक सुदृढ़ होगी उतना ही अधिक स्पष्ट उनका रूप उभर कर आयेगा । यदि संकल्प विशृंखलित या कमजोर हुए विचारों में अस्त-व्यस्तता हुई तो उसके प्रकम्पन भी कमजोर होंगे और स्पष्ट आकार न ग्रहण कर सकेंगे ।

साधना विज्ञान में इसी सिद्धान्त का उपयोग कर छाया पुरुष की सिद्धि की जाती है । यह और कुछ नहीं संकल्पों द्वारा गढ़ी अपनी ही काया की, छाया की साधना है । साधना के दौरान जब इस दृढ़ संकल्प को आरोपित किया जाता है तो धीरे-धीरे यह जीवन्त, जागृत और सशक्त बनने लगती है और अन्ततः एक पृथक सत्ता का रूप धारण कर लेती है । अस्थिर पद कमजोर संकल्पवालों का छाया पुरुष भी निर्बल होता है और यदा-कदा अपनी हल्की झलक-झाँकी दिखाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाता । संकल्प की दृढ़ता न केवल व्यक्तित्व को सामर्थ्यवान बनाती है, वरन् इसके साधक अपने छाया पुरुष को भी बलिष्ठ बनाकर उससे कोई भी दुरूह कार्य सम्पन्न करा लेते हैं ।

साधना विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि मात्र विचार परिवर्तन से उनके आकारों में परिवर्तन आता हो, ऐसी बात नहीं है, वरन् भाव परिवर्तन से भी आकृतियों में बदलाव आता है । उनके अनुसार स्नेहसिक्त भाव आकर्षक फूलों की भाँति होते हैं और अनायास ही हर किसी को अपनी ओर खींच लेते हैं । इसी तरह भगवद् भक्तियुक्त भावना प्रवाह के आकार गुम्बदनुमा होते हैं तो ईर्ष्या, द्वेष और हिंसायुक्त विचार आयुध की आकृति लिए होते हैं । शाप और वरदान इसी आधार पर कार्य करते एवं भले-बुरे परिणाम प्रस्तुत करते हैं । शाप में चूँकि अहितकार भावों का समावेश होता है, अतः वह जिस व्यक्ति को लक्ष्य कर दिए जाते हैं, उस तक पहुँच कर विचारों के यही अस्त्र अमंगलकारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं । इसके विपरीत वरदान में जीवन की सफलता और सुख-समृद्धि का संकल्प जुड़ा होता है, फलतः वह निर्दिष्ट व्यक्ति के लिए वैसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं ।

विचारों की आकृतियों के अस्तित्व के सम्बन्ध में विशेषज्ञों का कहना है कि उनकी दृढ़ता और लघुता की प्रकृति के आधार पर ही उनकी समयावधि का निर्धारण होता है । उद्देश्यपूर्ण विचारों पर बारम्बार किया गया चिन्तन, मनन उनके आकार को स्थायित्व प्रदान करने के साथ ही उन्हें चिरकालिक बनाता है । निरुद्देश्य एवं अस्थिर मनःस्थिति में किए गए संकल्प भी क्षणिक होते हैं । छोटे-मोटे प्रभाव छोड़कर वे थोड़े दिनों में समाप्त हो जाते हैं ।

आकारों की भाँति विचारों के भी अपने पृथक-पृथक रंग होते हैं । भक्तिमय विचारों का रंग साधना विज्ञान में आसमानी बताया गया है और कहा गया है कि इस रंग की ध्यान साधना द्वारा इन्हें परिपुष्ट बनाया जा सकता है । रक्ताभवर्ण कामुकताजन्य विचारों की अभिव्यक्ति करता है । सात्विक लोगों के विचार पीत रंग, वर्ण के बताये जाते हैं, जबकि स्वार्थ परायण व्यक्ति हरे रंग के विचार उत्पन्न करते हैं । भावनाओं में क्रोध का समावेश हो तो रंग लाल मिश्रित काला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है । इस तरह विचारों में जो जो भाव समाविष्ट होते जाते हैं, तदनुरूप उनकी आकृतियाँ भी उन वर्णों का सम्मिलित स्वरूप प्रकट करती हैं ।

धर्मशास्त्रों में उपास्य देवों के वर्ण रूप, अलंकार, आयुध आदि की मर्यादाएँ इसी कारण निर्धारित की गई हैं कि विचारों को अनुकूल रंग और आकार प्रदान किया जा सके । इससे साधना की सफलता सुगम बन जाती है । मन्त्रशास्त्रों में इसी हेतु विभिन्न प्रयोजनों के लिए इष्टदेव के भिन्न-भिन्न रूप-रंग, छंद, ऋषि आदि निश्चित किए गए हैं । मन्त्र सिद्धि के लिए इस सन्दर्भ में ऋषियों द्वारा निर्देशित नियमों-विधानों का पालन करना आवश्यक होता है, पर प्रायः लोग अनभिज्ञता या अज्ञानतावश इन निर्धारणाओं को मात्र मस्तिष्क की कोरी कल्पना मान लेते हैं और लकीर पीटते रहने भर से खाली हाथ रह जाते हैं । इसी तरह तामसिक पूजा विधान तथा हेय विचार भी सत्परिणाम के स्थान पर उल्टे दुखदायी संकट ही खड़े करते हैं । उनसे मात्र अरुचि और घृणा ही उत्पन्न होगी और विचार एवं उसकी आकृति की अनुकूलता न बन पाने के कारण सिद्धि भी प्रायः संदिग्ध ही बनी रहेगी । तमसाछन्न विचार लक्ष्यवेध में सदैव विफल ही रहते हैं ।

विचारों का मूल रूप शब्द-तरंग है, तो इसका सूक्ष्म रूप प्रकाश तरंग की तरह लेसर स्तर का कार्य करता है । अपनी इसी सूक्ष्मता के कारण विचार अत्यधिक सामर्थ्यवान होते हैं, जिसकी शक्ति इनके विशेष आकार और रंग पर निर्भर करती है । भले-बुरे प्रभाव इसी के प्रतिफल होते हैं । स्वाध्याय, मनन-चिन्तन, सज्जनों का संग आदि कुछ ऐसे उपाय हैं जिनके द्वारा अपनी विचारशक्ति की प्रभावोत्पादकता को बढ़ाया और स्वयं के उज्ज्वल भविष्य की सँभावना को सुनिश्चित किया जा सकता है ।

विचारों का रंग-रुचि से सम्बन्ध

जो मनुष्य जिस प्रकृति का होता है वह उस प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाले रंगों को पसन्द करता है । पवित्रात्मा व्यक्ति पीले रंग को पसन्द करता है । शुद्ध हृदय वाला व्यक्ति स्वच्छ धवल रंग के वस्त्र पसन्द करता है । उदार हृदय व्यक्ति नीले रंग के वस्त्र पसन्द करता है । क्रोधी पुरुष, लाल रंग के, हिंसक प्रकृति का पुरुष काले रंग के और स्वार्थी पुरुष खाकी रंग के वस्त्र पसन्द करता है । मनुष्य अनेकों रंग के वस्त्र पसन्द करता है किन्तु उसका रुझान जिस रंग की ओर अधिक हो उसे उस रंग से सम्बन्ध रखने वाले स्वभाव वाला व्यक्ति ही समझना चाहिए । उसके चरित्र में तत्सम्बन्धी विचारों की ही प्रधानता रहती है ।

कुछ व्यक्ति काले के साथ सफेद अथवा लाल के साथ सफेद रंग के कपड़े पसन्द करते हैं । ऐसे पुरुषों में कोई भारी विशेषता होती है जो साधारण पुरुषों में नहीं पायी जाती । सफेद कमीज के ऊपर काला अथवा लाल कोट पहनना अथवा इसी ढंग से अन्य वस्त्र पहनना उन्हें बहुत रुचता है ।

यदि कोई पुरुष ऐसे वस्त्र अधिक पसन्द करे जिसका रंग ऐसा हो जो दो मूल रंगों के मिश्रण से बनता हो तो उसमें मिश्रित भावों की प्रधानता होगी । बैंगनी रंग, लाल और नीले के मिश्रण से बनता है अतएव बैंगनी रंग अधिक पसन्द करने वाले व्यक्ति में क्रोध और उदारता का मिश्रण होगा ।

जिस तरह हमारे विचारों का हमारी रुचि पर प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार हमारे वातावरण के रंग का हमारे विचारों पर भी प्रभाव पड़ता है । ऐसे वातावरण में रहने वाले व्यक्ति का मन जहाँ वृक्ष और पौधे सदा हरे भरे रहते हैं प्रसन्न और शुद्ध होता है । उसके विचार दिव्य तथा उदारता लिए हुए ही होते हैं । इस बात का पता लगाया गया है कि जब कोयले की खानों में बिजली के लाल बल्बों का प्रयोग किया जाता है तब मजदूर लोग अधिक लड़ाके हो जाते हैं । हरे नीले बल्बों का उपयोग करने पर वे शान्त और परस्पर सहयोग करने वाले होते हैं । स्वच्छ श्वेत वस्त्रों की घर में बाहुल्यता रखने से विचारों में भी स्वच्छता एवं शुद्धता प्रवेश करती है ।

हिन्दुओं ने विष्णु की वेश-भूषा की जो कल्पना की है वह अत्यन्त भव्य है । वे गगन सदृश मेघ वर्ण हैं और वे पीताम्बर धारी है । हिन्दू उन्हें "सपीत वस्त्र सरसीरुहेक्षणम्" जानकर अपने हृदय कमल मध्य स्थापित करता है और इस तरह एक भव्य एवं शान्त मूर्ति की कल्पना उसके हृदय को भृंगी-कीट-न्याय के मुताबिक वैसा ही बनाती है । शान्तमूर्ति को देखकर किसका हृदय शान्त एवं उत्फुल्ल न होगा । महात्मा पातंजलि ने "वीतराग विषय वा-चित्तम्" कहकर वीतराग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं शान्तमूर्ति के ध्यान द्वारा चित्त का शान्त होना तो बताया ही है और षड्गुणैश्वर्य सम्पन्न भगवान विष्णु तो वैराग्य और ऐश्वर्य दोनों गुणों से सम्पन्न हैं ।

भगवान के शरीर का मेघवर्ण उनकी उदारता शरणागतवत्सलता, सुहृदयता एवं परमाश्रयता का सूचक है । वे विश्व के पालन करने वाले, सबकी गति, सबके भर्त्ता, प्रभु एवं निवास स्थल हैं और इन गुणों का प्रतीक उनकी दिव्य देह का मेघवर्ण है । उनका पीताम्बर उनकी परमोच्च आध्यात्मिकता का द्योतक है । इस तरह हिन्दुओं में पीताम्बरधारी विष्णु की कल्पना वैज्ञानिक ढंग से की गई जान पड़ती है ।

राम अपनी बाल्यावस्था में कैसे थे इसका वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं "नव नील कलेवर पीत झगा, झलकें-पुलकें नृप गोद लिए" । भगवान कृष्ण की भी हम पीताम्बर-युक्त छवि का ही वर्णन करते हैं । भगवान की वह छवि हमारे हृदय में तदनुकूल विचारों की प्रेरणा करती है ।

शरीरगत विद्युतशक्ति को सुरक्षित रखें, बढ़ायें

विद्युत वैज्ञानिकों की दृष्टि से पृथ्वी एक चुम्बकीय शक्ति से भरा-पूरा गोला है । रासायनिक पदार्थों का अस्तित्व अवश्य है पर उनकी क्षमता, कार्य प्रणाली, परिवर्तन पद्धति, सम्मिश्रण से रूपान्तरण की प्रक्रिया जैसी हलचलों के पीछे वह विद्युतशक्ति ही काम करती है जिसे प्रत्येक पदार्थ का प्राण कहना चाहिए । यदि इसका अपहरण कर लिया जाय तो वस्तु अपनी मौलिक विशेषताएँ खो बैठेगी और मृत तुल्य बन जायेगी ।

यह तथ्य न केवल वस्तुओं के सम्बन्ध में है अपितु जीवित प्राणियों के सम्बन्ध में भी है । जीवन और मृत्यु के बीच अन्तर करने वाले तत्व को आध्यात्म की भाषा में 'प्राण' कहा जाता है । भौतिक विज्ञानी उसे बिजली की ही एक किस्म मानते हैं ।

यह शरीर विद्युत जिसके शरीर में जितनी अधिक मात्रा में संचित होती है वह उतना ही अधिक तेजस्वी, सुन्दर, सक्रिय, स्फूर्तिवान, ओजस्वी, प्रतिभावान दिखाई पड़ता है । शरीर की रोग निरोधक शक्ति एवं मस्तिष्क की सूक्ष्मदर्शिता, दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता इसी विद्युत पर निर्भर है ।

स्वभाव के मिठास को आमतौर से आकर्षण कहा जाता है । अंगों की कोमलता में भी जिस सौन्दर्य की झाँकी होती है, उसमें भी शरीर शास्त्रीय दृष्टि से विद्युत कम्पन की ही विशेष थिरकन समाई रहती है । किसी की आँखों में, किसी के होठों में, किसी की ठोड़ी आदि में विशेष मनमोहकता रहती है, इसका तात्विक विश्लेषण करने पर मानवी शरीर की बिजली ही लहराती सिद्ध होती है । इसमें जब कमी होने लगती है तो शरीर रूखा, नीरस, कुरूप, शिथिल, निस्तेज, दिखाई पड़ने लगता है । आँखों में दीनता, चेहरे पर उदासी छाई रहती है, इस विघटन को देखकर इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि तेजस्विता की तरंगें शिथिल हो गईं और अभीष्ट ऊर्जा का अभाव हो गया ।

शरीर में रक्त माँस की वृद्धि के लिए उपाय किए जाते हैं, पर इस तथ्य पर पहुँचने में भूल की जाती है कि आग मन्दी पड़ जाने पर पकने और पचने की क्रिया ही नहीं, उमंग और उत्कर्ष का प्रत्येक पक्ष शिथिल पड़ जाता है । यह अभाव समस्त शरीर की दुर्बलता अथवा अंग विशेष की अशक्तता के रूप में प्रकट होकर मनुष्य को रुग्ण बनाता है । बीमारों में रोग कीटाणुओं की खोज की जाती है । इनकी उपस्थिति कारण नहीं लक्षण मात्र है । जिस तरह निर्जीव प्राण रहित माँस में कीड़े पड़ जाते हैं उसी प्रकार देह में विद्युत की अभीष्ट मात्रा में जहाँ कमी आयी वहाँ उस अर्धमृत काया पर तुच्छ से कीटाणु अपना अड्डा जमाते और वंश बढ़ाते चले जाते हैं । यदि शरीर में गर्मी की, बिजली की आवश्यक मात्रा विद्यमान हो तो उसके प्रचण्ड तेज में किसी विजातीय द्रव को, रोग कीटक को जीवित रहने का अवसर नहीं रहता । बाहर के आक्रमणकारी कीटाणु उसमें प्रवेश करते ही जल-भुनकर नष्ट हो जाते हैं ।

पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति से जड़-चेतन जगत भर पूरा लाभ उठाता है । मनुष्य ही नहीं अन्य प्राणी भी उससे लाभान्वित होते हैं । पक्षी ऋतु परिवर्तन के अनुरूप सुविधाजनक स्थानों में आते-जाते रहते हैं । इसके लिए उन्हें हजारों मील लम्बी, महासागरों को पार करती हुई लम्बी उड़नी पड़ती हैं । बहुधा यह उड़ानें रात्रि में होती है । यह पक्षी किस प्रकार दिशा ज्ञान प्राप्त करते हैं और कैसे अभीष्ट स्थानों तक पहुँचते हैं ? इनका मार्ग-दर्शन कौन करता है ? इसका उत्तर पृथ्वी की ध्रुवीय आकर्षण शक्ति से ही मिलता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह पक्षी ग्रीष्मान्त में उत्तर से दक्षिण की ओर और वसन्त में दक्षिण से उत्तर की ओर उड़ते हैं । अपनी अतीन्द्रिय चेतना के आधार पर यह पक्षी पृथ्वी की चुम्बकीय रेखाओं का ही सहारा लेते हैं और बिना भूले भटके अपने अभीष्ट लक्ष्य तक जा पहुँचते हैं ।

अपने भीतर देवत्व का आकर्षण तत्व भरे हुए महामानव धरती की तरह ही अदृश्य रूप से असंख्य मनुष्यों का सूक्ष्म मार्ग-दर्शन करते रहते हैं । प्रत्यक्ष में भले ही उनकी यह क्रिया दीख नहीं पड़ती पर अतीन्द्रिय चेतना के आधार पर असंख्य मानवों को उस अदृश्य प्रेरक से ऐसा प्रकाश प्रोत्साहन और साहस मिलता रहता है जिसके सहारे वे लक्ष्य तक सफलतापूर्वक पहुँच सकें ।

पक्षी ही क्यों ? अति क्षुद्र जीव भी धरती की उस चुम्बकीय क्षमता से अनायास ही प्रेरणा ग्रहण करते और प्रभावित होते रहते हैं । 'टरमाइट' नामक एक कीड़ा अपने घर सदा पृथ्वी की चुम्बकीय रेखाओं के समानान्तर ही बनता है ।

मनुष्य शरीर की गतिविधियाँ इसी व्यापक चुम्बकीय प्रेरणा से प्रभावित हैं । जीव कोषों के सूत्र विभाजन की आरम्भिक और मध्यावस्था का चुम्बकीय शक्ति रेखाओं के साथ आश्चर्यजनक ताल-मेल है । कोषों का विभाजन में क्रोमोसोम निरन्तर सैलों के ध्रुवों की ओर ही चलता है ।

विद्युत और चुम्बक में परस्पर अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है । डायनमो की रचना स्पष्ट करती है कि चुम्बकीय क्षेत्र का परिवर्तन विद्युतधारा उत्पन्न करता है । इसी प्रकार यदि विद्युतधारा किसी लौह खण्ड में प्रवाहित की जाय तो वह भी चुम्बक बन जाता है । यह तथ्य बताते हैं कि, ऊर्जा क्षमता ही चुम्बक के रूप में परिणत होती है और चुम्बकत्व शक्ति के रूप में परिणत होता है । आत्मबल सम्पन्न व्यक्ति ही अपने में प्रभावात्मक आकर्षण पैदा करते हैं और आकर्षक स्वभाव वाले शक्ति सम्पन्न बनते हैं । उसे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध ही मानना चाहिए । एक को प्राप्त करने के उपरान्त दूसरी विशेषता अनायास ही उत्पन्न होती है ।

रक्त नलिकाओं में लौह युक्त हीमोग्लोबिन भरा पड़ा है । यह लौह ही विश्वव्यापी चुम्बकत्व को अपनी ओर आकर्षित करता है और उस संचय के आधार पर शरीर का क्रिया-कलाप चलाते रहने योग्य बिजली प्राप्त होती है । यदि यह लौह तत्व शरीर में कम पड़ जाय तो मनुष्य निर्जीव और अनाकर्षक बनता चला जायेगा और जीवित न रह सकेगा ।

हिन्दू शास्त्रों में, हिन्दू धर्म ग्रन्थों में, जापानी परम्पराओं में इस बात का प्रतिपादन है कि सिर उत्तर की ओर और पैर दक्षिण की ओर करके सोना चाहिए । इसके औचित्य की रीचेन बैक, डूरविले, क्लोरिक, अब्राक्स, रेगनाल्ट, लिंप्रिस, मुलर प्रभृति अनेक मनः शास्त्रियों ने लम्बी खोज की और उसे सही बताया । उन्होंने यही निष्कर्ष निकाला है कि सही और गहरी नींद के लिए उत्तर की ओर, उत्तरी ध्रुव की ओर मस्तिष्कीय चुम्बक का रुख रहना चाहिए । उत्तर को सिर करके सोना ही ठीक है ।

डॉक्टर मौरिनेस्को ने अपने प्रयोगों में चुम्बकीय उपकरण द्वारा तीसरी वोट्रकिल को धन ध्रुवीय करके कृत्रिम निद्रा उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है । मस्तिष्क को अचेत करने वाले इन्जेक्शनों की तरह ही इस प्रयोग को प्रभाव सम्भव पाया गया । लोहे के पलंगों की अपेक्षा लकड़ी की चारपाई की, लोहे की छड़ी या टीन की चादर से बने मकानों की अपेक्षा लकड़ी, मिट्टी या फूँस के पटाव की अधिक उपयोगिता पायी गई । स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्हें अधिक उपयुक्त इसलिए पाया गया कि ध्रुवीय विद्युत संचार का, आकाशीय विद्युत, फेराडेन्डेज का, अनावश्यक संग्रह शरीर में न होने पावे । अनावश्यक संग्रह हर चीज का अहित कर होता है । चुम्बकत्व की अनावश्यक मात्रा शरीर और मस्तिष्क में ठूँसने वाले लौह उपकरण इस दृष्टि से यदि अनुपयुक्त माने गए हैं तो यह तर्क संगत ही है।

पृथ्वी दृश्य रूप से मिट्टी, पानी, खनिज, वनस्पति आदि का समन्वय दीखती है या सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर वह एक विशाल चुम्बक ही प्रतीत होती है । मानव शरीर भी यों रक्त, माँस, अस्थि, त्वचा आदि का समूह दीखता है पर तात्विक दृष्टि से उसे भी एक चलता-फिरता सजीव चुम्बक ही कहना चाहिए ।

शरीर का प्रत्येक कोषाणु एक विद्युत इकाई है । जिस तरह पौधे अपने पत्तों द्वारा आकाश से साँस वायु ग्रहण करते हैं उसी प्रकार यह कोषाणु आकाशीय वायु-मण्डल से 'फ्रीक्वेन्सी आवृत्ति' खींचते हैं । उन्हीं के आधार पर वे अपना वाइब्रेट (कम्पन) एवं आसीलेट (दोलन) क्रम चलाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्विटजरलैण्ड के डॉक्टर फिलिटस आरोलस पेरा सेलसंस ने कितनी ही बीमारियों का कारण शरीरगत चुम्बकत्व की विकृति एवं विशृंखलता को सिद्ध किया है । ऐसे रोग जिनका कारण डॉक्टर ठीक से समझ नहीं पा रहे थे और चिकित्सा के अनेक प्रयोगों में असफल रह रहे थे डॉक्टर फिलिप्स ने रुग्ण केन्द्र मूलों में चुम्बकत्व की आवश्यक मात्रा पहुँचा कर उन रोगों से मुक्ति दिलाई ।

चुम्बकत्व का उत्तरी ध्रुव जीवाणु क्रिया को नियन्त्रित करता है और दक्षिणी ध्रुव शक्ति पोषण की आवश्यकता पूरी करता है । अस्वस्थता को इन दो वर्गों में वर्गीकृत करके यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चुम्बक की दोनों धाराओं में से किसका, कहाँ और कितना उपयोग किया जाय ?

'मेडीकल वर्ल्ड न्यूज' पत्रिका में शिकागो की बायो मैगनेटिक रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा किए गए इस सन्दर्भ के अनुसंधानों का विस्तृत विवरण छपा है । हंगरी निवासी डॉ. जीन बारगेथी के प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकला है कि विषाणुओं से निपटने और कोषाणुओं की अशक्तता को दूर करने में चुम्बक के प्रयोग आश्चर्यजनक रीति से सफल हो रहे हैं । इस चिकित्सा पद्धति का स्वतन्त्र नामकरण किया गया है— 'बायोमैगनेटिक्स' ।

'फेट' पत्रिका में जी सेफ एफ. गुडवेज का एक लेख छपा है उसमें उन्होंने चुम्बकत्व के प्रभाव परिणामों पर विस्तृत प्रकाश डाला है । इसी विवरण में उन्होंने डॉक्टर के. ई. मेकलीन के निजी प्रयोग की चर्चा की है और कहा है कि वे प्रतिदिन ३६०० ग्रास चुम्बकीय क्षेत्र का अपने शरीर पर प्रयोग करने के कारण स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने में सफल रहे हैं । वे ६४ वर्ष की आयु में भी ४५ वर्ष जैसे लगते हैं ।

प्रख्यात चिकित्सा विज्ञानी फ्रांसिस विक्टर ब्रोसाइस और डॉक्टर हावर्ड डी. स्टेंगल ने चुम्बक चिकित्सा के अनेक उदाहरणों का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया है कि उसकी उपयोगिता और सम्भावनाएँ विश्व की किसी भी चिकित्सा प्रणाली से कम नहीं है ।

मस्तिष्कीय विकृतियों में साधारणतया औषधियों का उपचार कुछ विशेष कारगर सिद्ध नहीं हुआ है । मूढ़ता, मन्द-बुद्धि, आवेश, आदतों की जकड़न से लेकर मृगी और उन्माद तक के औषधि उपचार यों होते तो रहते हैं पर उनका प्रभाव अति स्वल्प ही देखा जाता है । इस क्षेत्र में जो थोड़ी बहुत सफलता मिली है उसका श्रेय विद्युत चिकित्सा को ही है । बिजली के झटके देकर अक्सर सनक और उन्माद का इलाज मानसिक अस्पतालों में किया जाता है और उनमें सफलता भी मिलती है । डॉ. के. हिलाल ने मस्तिष्कीय मूढ़ता और विकारग्रस्तता के लिए चुम्बक का प्रयोग करके यह पाया कि इस माध्यम से उन कोषों को अधिक सुविधापूर्वक स्पर्श किया जा सकता है जो इस प्रकार की रुग्णता के लिए उत्तरदायी हैं ।

मनुष्य शरीर में बिजली की उपस्थिति न तो स्वल्प है और न महत्त्वहीन । बालों में कंघी करके उतनी भर रगड़ से उत्पन्न चुम्बक को देखा जा सकता है बालों से घिसने के बाद कंघी को लोहे की पिन से स्पर्श करें तो उसमें चुम्बक के गुण विद्यमान मिलेंगे । निर्जीव बालों में ही नहीं सजीव मस्तिष्क में भी बिजली की महत्त्वपूर्ण मात्रा विद्यमान है । अन्य बिजलीघरों की तरह यहाँ भी बनाव बिगाड़ का क्रम चलता रहता है । इस मरम्मत में चुम्बकीय चिकित्सा का आशाजनक उपयोग किया जा सकता है ।

हमें शरीर एवं मन को सजीव स्फूर्तिवान एवं तेजस्वी बनाने के लिए अपनी विद्युत शक्ति को सुरक्षित रखने का ही नहीं इस बात का भी प्रयत्न करना चाहिए कि उसमें निरन्तर वृद्धि भी होती चले । क्षति पूर्ति की व्यवस्था बनी रहे । यह प्रयोजन, प्राणायाम, षटचक्र वेधन, कुण्डलिनी योग एवं शक्तिपात जैसी साधनाओं से सम्भव हो सकता है ।

मुट्ठी में मौत और जेब में जीवन

विन्डसर स्टेट (अमेरिका) की विधान सभा के सम्मानित सदस्य क्लेरेंस एडम, राजकीय पुस्तकालय के निर्देशक भी थे । यह पद उन्होंने बड़े यत्न से प्राप्त किया था सो भी केवल स्वाध्याय का शौक पूरा करने के लिए एडम की दिनचर्या में सर्वाधिक घण्टे पढ़ाई के थे, स्वाध्याय से हर विभूति खरीदी जा सकती है यह उनकी मान्यता थी और कहते हैं अपने इस विश्वास से उसने एक दिन अपनी मृत्यु को भी वश में करके दिखा दिया ।

दुर्भाग्य कहें या सौभाग्य एक दिन क्लेरेंस एडम के हाथ आगस्टाइन एडम की पुस्तक मेस्मेरिज्म पर पच्चीस रहस्यमय पाठ (ट्वेन्टीफाइव सीक्रेट लेसन्स इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेस्मेरिज्म) और डॉक्टर बर्नहम की हिप्नोटिज्म का इतिहास (हिस्ट्री ऑफ हिप्नोटिज्म) हाथ लग गईं । पुस्तकें अभी तक पूरी नहीं पढ़ी जा सकी थीं कि एडम के मन में इस विद्या के प्रयोग की तीव्र इच्छा उठ खड़ी हुई । एडम मानवीय चेतना की अद्‌भुत शक्तियों के प्रमाण थे यद्यपि उन्होंने अपराधी जीवन प्रारम्भ कर दिया किन्तु इस बात के प्रमाणीकरण में कोई त्रुटि नहीं आयी कि मनुष्य की प्राण-चेतना सचमुच ही एक आश्चर्यजनक शक्ति है । प्राण शक्ति के प्रयोग से व्यक्ति अदभुत कार्य कर सकता है । सिद्धियाँ प्राण शक्ति के ही नियन्त्रण का अद्‌भुत परिणाम होती हैं ।

एडम ने पहला प्रयोग वाटरमैन फ्लावरा मिल में किया । एक दिन घनी रात के अन्धकार में एडम उस मील के फाटक में जा घुसे । न तो सेंध काटी और न ही संतरी को जबरन क्लोरोफार्म सुँघाया । जड़ चेतन किसी को भी प्रभावित कर मनमर्जी काम ले लेना तो अब मात्र उनकी दृष्टि का काम था; हिप्नोटिज्म और मेस्मेरिज्म का उन्होंने कुछ इस तरह अभ्यास किया । फ्लावरा मील खजाने का चौकीदार हाथ में रायफल लिए खड़ा था । एडम ने कोई मार-पीट नहीं की । भरपूर दृष्टि डाली चौकीदार के चेहरे पर । नजरें चार हुईं, न जानें कौन-सा मन्त्र फूँका एडम ने कि चौकीदार जहाँ था वहीं खड़े का खड़ा रह गया । मानो उसे खड़े-खड़े सोने की बीमारी हो गई हो । एडम अब तिजोरी के पास पहुँचा, ताला खोला बिना किसी चाभी क जड़ पदार्थ भी अब उनकी दृष्टि प्रखरता के दास बन गए थे । तिजोरी से १५ हजार डालर निकाले । ताला उसी तरह बन्द कर दिया और बड़े मजे से वहाँ से चले आये, मानो डॉलर चुराये नहीं हों वरन् अपनी ही सम्पत्ति लेकर निकले हों । चौकीदार अभी तक यन्त्रवत् खड़ा था । एडम के जाने के बाद उसे पता चला कि कोई आया था और तिजोरी की चोरी हो गई । प्रातःकाल पुलिस के सामने उसने बयान दिया—एक आदमी आया उसने मेरी ओर देखा तो मैं संज्ञाहीन-सा खड़ा रह गया उसने सारा काम किया पर मुझे पता नहीं वह कौन था, क्यों मैं न तो बोल सका और न ही हिल-डुल सका । चोरी उसने मेरे देखते की पर मुझे ऐसा लगता था कि मेरे ऊपर हल्का-सा धुयें का पर्दा पड़ा हुआ है और मैं उसमें बन्दी हूँ, कुछ कर नहीं सकता था मैं, जब तक वह व्यक्ति यहाँ रहा ।

इस घटना के कुछ ही दिन बाद विन्डसर के एक जौहरी की दुकान में एक आदमी आया, उसने अपनी विलक्षण दृष्टि से जौहरी को देखा । जौहरी इस तरह निस्तब्ध रह गया मानो वह काष्ठ विनिर्मित हों, उस आगन्तुक ने अच्छे-अच्छे जवाहरात, जौहरी और बाजार की भारी भीड़ के बीच अपनी जेब में भरे और वहाँ से चला गया । देखा सबने, पर किसी ने न पहचाना, न प्रतिरोध किया, कौन आया, कहाँ गया यह भी किसी को पता नहीं था । पीछे जौहरी से पुलिस ने बयान लिए तो उसने भी वही शब्द दोहराये जो पहले चौकीदार ने कहे थे ।

एक दिन समुद्र की हवा खाने के लिए विन्डसर के एक करोड़पति अपनी धर्मपत्नी के साथ कार पर आ रहे थे उनकी भेंट अनायास ही इस जादूगर से हो गई । उसने उनके सारे जेवर और घड़ियाँ उतरवा लीं और उन्होंने ऐसे दे दिया मानो उपहार दे रहे हों । पीछे जो बयान दिए उन्होंने, वह पहले वाले पीड़ितों के बयानों से अक्षरशः मिलते-जुलते थे ।

इन खबरों ने एकबार तो विन्डसर राज्य में तहलका मचा दिया । कुबेरों की नींद हराम हो गई । एक मिल मालिक ने तो अपने बँगले के सभी निकासों पर स्वचालित बन्दूकें लगवा दीं । इन्हीं बन्दूकों के बल पर क्लेरेंस एडम पकड़े जा सके । एक रात वे जब इस बँगले के दरवाजे पर पहुँचे और अन्दर प्रवेश करने का प्रयत्न करने लगे तो बन्दूक ने उन्हें घायल कर दिया । धड़ाके की आवाज सुनकर लोग दौड़े-दौड़े आये । एडम को पहचानकर लोग आश्चर्यचकित रह गए । अदालत में एडम ने अपने ऊपर लगाये गए वह सारे अभियोग स्वीकार कर लिए और यह भी मान लिया कि यह सब उन्होंने सम्मोहन विद्या (हिप्नोटिज्म) के द्वारा किया है ।

यद्यपि उन्होंने अपराध जगत में शौकिया प्रवेश किया था किन्तु अपराध तो अपराध ही ठहरा—उन्हें दस वर्ष सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया और वे शहर की अपेक्षा विन्डसर की पहाड़ी जेल में भेज दिए गए । जेलर उनकी भद्र वेश-भूषा और सांस्कृतिक रहन-सहन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ सो वह एडम के लिए अनायास ही उदार बन गया । इस उदारता का लाभ एक बार फिर एडम को मिला । उसने जेलर की सहायता से अपने लिए कुछ पुस्तकें पढ़ने के लिए प्राप्त कर लीं इन्हीं पुस्तकों में उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह दोनों मनचाही पुस्तकें भी थीं । दरअसल अन्य पुस्तकें तो साथ में एडम ने केवल इसलिए मँगाई थीं कि किसी को उस पर शक न हो जाय । यह पुस्तकें उसने अपनी विद्या को आगे बढ़ाने के लिए मँगाई थीं सो एकबार फिर से जेल में ही उसका साधना अनुष्ठान चल पड़ा और दूसरे लोगों को इस बात की कानोंकान खबर न हुई ।

एक दिन दैवयोग से जब एडम अपने कमरे की चीजों पर हिप्नोटिज्म का अभ्यास कर रहे थे तब उन्हें जेल के एक अन्य डॉक्टर कैदी ने देख लिया, उसका भी हिप्नोटिज्म सीखने का मन था । धीरे-धीरे दोनों में बातचीत होने लगी और यही बातचीत एक दिन प्रगाढ़ मैत्री में बदल गई ।

किन्तु इन्हीं दिनों एडम बीमार पड़ गए उनका इलाज हुआ पर वे अच्छे हुए ही नहीं । एक दिन अपने डॉक्टर मित्र के कमरे में प्राण त्याग दिए । जेल के डॉक्टर ब्राउस्टर ने उनकी अन्त्य परीक्षा की और उन्हें मृत घोषित कर मृत्यु का प्रमाण-पत्र भी दे दिया । एडम के भतीजे विलियम डॉन को वह शव भी सौंप दिया गया । शव ले जाकर विलियम डॉन ने विन्डसर के कब्रगाह के संरक्षक को सौंप दिया ताकि अगले दिन उसे एक सुरक्षित कब्र में दफनाया जा सके । एडम का शव एक सन्दूक में कफन लपेट कर रख दिया गया ।

जाड़े के दिन थे, उस दिन तो और भी भयंकर शीत थी, हिमपात हो रहा था ऐसे समय तीन-चार व्यक्ति उस कब्रिस्तान में प्रविष्ट हुए और जिस पेटी में एडम का शव था उसके पास गए । सन्दूक खोलकर उनका शव निकाला और उसके स्थान पर उन्होंने अपने साथ लाये शव को लिटा दिया । ताला जैसे का तैसा बन्द कर वह लोग बाहर आ गए और घनघोर अन्धकार में न जाने कहाँ खो गए । इस बार कब्रिस्तान के संरक्षक के साथ भी वही सम्मोहन हुआ । वह सब कुछ देखते हुए भी कुछ कर न सका पर उसने जो रिपोर्ट दी, उससे यह पता चल गया कि लाश बदली गई और जिसने यह सारा काम किया उसका हुलिया डॉ. मार्टिन जैसा था । दूसरे दिन एलियास से खबर मिली कि यहाँ से एक शव की चोरी गई है लोगों ने जाकर बदले हुए शव को खुलवा कर देखा पर उसका चेहरा कुछ इस तरह विकृत था कि पहचान में ही नहीं आया जबकि एडम के शव में किसी प्रकार के दाग धब्बे नहीं थे । तो भी यह रहस्य ही बना रह गया ।

कुछ दिन बीते विन्डसर का एक नागरिक कनाडा आया । वहाँ वह एक होटल में खाना खाने पहुँचा तो यह देखकर अवाक् रह गया कि वहाँ एडम और डॉ. मार्टिन दोनों साथ-साथ बैठे भोजन कर रहे हैं । वह बहुत घबराया, जब तक सँभल कर पुलिस को सूचना दे तब तक वह दोनों व्यक्ति वहाँ से जा चुके थे । घटना अखबारों में छपी तो एकबार फिर से विन्डसर के धन कुबेर काँप गए । इस बीच कई स्थानों पर उसके देखे जाने की खबरें मिलीं । सभी खबरें विश्वस्त व्यक्तियों द्वारा दी गई थीं फलस्वरूप एकबार फिर से पुलिस और सी. आई. डी. विभाग सतर्क किया गया, पर एडम पकड़ा नहीं जा सका । कहते हैं उसने ओझल और अन्तर्धान होने की विद्या जान ली थी । यही नहीं उसने अपने शरीर की हर अनैच्छिक क्रिया पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया था । एक क्षण में मर जाना और दूसरे ही क्षण जीकर काम में लग जाना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल था ।

आखिरी भेंट एक सी. आई. डी. ऑफिसर से अमेरिका के ही टोरेन्टो नगर में हुई । एडम ने अधिकारी से काफी देर तक बातचीत की । जैसे ही पुलिस के सिपाही गिरफ्तार करने के लिए सी. आई. डी. ऑफिसर का संकेत पाकर आगे बढ़े और उसे चारों ओर से घेरे में ले लिया, एडम एकाएक अन्तर्धान हो गया । सी. आई. डी. अधिकारी तथा सिपाही एक दूसरे का मुँह ताकते खड़े रह गए । इसके बाद एडवर्ड स्मिथ ने उसका विस्तृत परिचय छापा और स्वीकार किया कि उसके पास कोई अद्भुत योग शक्ति थी जो किसी भी भौतिक शक्ति से कहीं अधिक समर्थ थी किन्तु उसके बाद से आज तक एडम के बारे में कुछ भी पता नहीं चल पाया कि वह कहाँ गया है, है भी या नहीं और है तो लोगों को दीखता क्यों नहीं ?

यह घटना भारतीय योगियों की सी सिद्धि और प्राण नियन्त्रण की जैसी घटना है । उससे जीवनी शक्ति की विलक्षणता, विलगता और समर्थता का ही प्रतिपादन होता है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवीय विद्युत के चमत्कार

आत्म तेज का परिचय

मनुष्य का शरीर एक अच्छा खासा बिजलीघर है । जैसे बिजलीघर में से सारे शहर के लिए तार लगे होते हैं, उसी प्रकार मस्तिष्क में से निकल कर जो पतले-पतले तार समस्त शरीर में जाल की तरह फैल गए हैं, उन्हें ज्ञान-तन्तु कहा जाता है । यह टेलीफोन का काम करते हैं । देह को जरा-सा भी कहीं छू दो तो यह तार फौरन मस्तिष्क को सूचना देंगे और वहाँ बैठा हुआ अधिकारी क्षणभर में फैसला करेगा कि अब क्या करना चाहिए । पाँव में चींटी काट खाये तो तुरन्त ही ज्ञान-तन्तु इसकी रिपोर्ट मस्तिष्क में पहुँचायेंगे और मस्तिष्क बिना एक क्षण का विलम्ब लगाये उस चींटी को हटाने और घायल जगह को अच्छा करने का उपाय करेगा । देखा जाता है कि चींटी के काटते ही हम अपना पैर फटकारते हैं, जिससे चींटी छूटकर गिर पड़े या हाथ को उस स्थान पर ले जाकर वहाँ खुजलाने लगते हैं, जिससे चींटी छूट जाय और काटे हुए स्थान का विष खुजलाने से निकल जाय एवं रगड़ से वहाँ खून का दौरा विशेष रूप से होने लगे, जिससे घाव भरने में शीघ्रता हो । यह ज्ञान-तन्तु सर्दी, गर्मी, हवा, नमी आदि की भी सूचना पहुँचाते हैं, जिसके आधार पर उनसे शरीर की रक्षा का कपड़े, छाते आदि से प्रबन्ध किया जाता है । कुछ तार इनसे मोटे हैं, जिन्हें नसें कहते हैं । कहने को तो यह खून बहाने वाली नालियाँ कही जाती हैं, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह विद्युत बहाने वाले तार हैं । जब इन नसों की बिजली मन्द पड़ जाती है, तो खून बहता रहता है पर शरीर में बड़ी जड़ता या अकड़न आ जाती है, उसमें दर्द होने लगता है । गठिया की बीमारी में या अन्य नसों सम्बन्धी रोगों में कहीं खून का बहना बन्द नहीं होता (क्योंकि खून न पहुँचने पर तो वह स्थान मर ही जायेगा) वरन् नसों की बिजली मन्द पड़ जाने के कारण वे निर्बल और कठोर हो जाती हैं, जब उन पर रक्त का या अन्य कार्यों का दबाव पड़ता है तो उन्हें बर्दाश्त नहीं होता और दर्द, दाह या उत्तेजना का अनुभव करने लगती हैं । रक्त या माँस में जो जीवनी शक्ति या सजीव तत्व है, वह एक प्रकार की बिजली है । शरीर से बाहर निकाल लेने पर जब रक्त की बिजली हवा में उड़ जाती है तो वही वस्तु जो एक क्षण पूर्व बड़ी सक्रिय थी, दूसरे ही क्षण निर्जीव, मृत होकर सड़ने एवं दुर्गन्ध फैलाने लगती है । प्राणान्त होने के उपरान्त शरीर की सब धातुएँ मिट्टी हो जाती हैं । किसी प्राणी का बध किया जाय तो उसके शरीर की बिजली तुरन्त ही समाप्त नहीं हो जाती, वरन् धीरे-धीरे घटती है । जिस अनुपात से वह घटती जाती है, उसी प्रकार माँस निर्जीव होता जाता है । अधिक समय तक रखा हुआ माँस जब दूषित; विद्युतहीन हो जाता है, तब वह बेकार हो जाता है । खाने के काम नहीं आ सकता ।

आत्मा इस विद्युत शक्ति का आद्य बीज है । छोटे से शरीर की थोड़ी-सी शक्ति पर दृष्टिपात करने से आत्मा एक बहुत छोटी वस्तु प्रतीत होती है, क्योंकि उसके चलने-फिरने, बोझ उठाने, काम करने, सोचने आदि की शक्तियाँ बहुत सीमित मालूम पड़ती हैं । कई बातों में तो मनुष्य की अपेक्षा अन्य जीव-जन्तु अधिक शक्ति रखते हैं । मोटी दृष्टि से देखने में प्राणी चाहे जितना तुच्छ प्रतीत क्यों न हो, पर उसमें एक बड़ा ही अद्‌भुत गुण है, वह उसकी उत्पादन शक्ति । बरगद का छोटा-सा बीज अपने पेट में एक बड़ा भारी विशाल वृक्ष छिपाये रहता है और जब भी उसे अवसर मिलता है, अपनी उस छिपी हुई सम्पत्ति को प्रगट कर देता है । जीव चैतन्य है और अपना पोषण अनन्त चेतना से प्राप्त करता है, इसलिए उसके अन्दर वह शक्ति है कि अपनी आकर्षण शक्ति को चाहे जितनी बढ़ा ले और फिर उसके जरिये जिस वस्तु को जितनी मात्रा में चाहे अपने पास खींचकर इकट्ठी कर ले । बरगद के बीज में महान वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति है, इसे सब जानते हैं, परन्तु कई बार बीज निरर्थक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नष्ट हो जाते हैं, उनका अंकुर निकलते ही झुलस जाता है या कुछ ही बढ़ने पर उनका पौधा मुरझा कर बर्बाद हो जाता है । इसका कारण बीज की अयोग्यता नहीं, वरन् उत्पादन क्रिया की त्रुटि है । असंख्य मनुष्य अपना जीवन बड़ी निकृष्टता के साथ बिताते हैं, उनका जीवन ऐसा दुःखमय और नारकीय होता है कि यह मानने में सन्देह उठता है कि मनुष्य की आत्मा, क्या परमात्मा के दिव्य गुणों से भरी हुई है ?

वेदान्त कहता है कि जीव और ईश्वर एक है । परन्तु हम मनुष्य में परमात्मा के गुणों का अभाव देखते हैं और उपर्युक्त शास्त्र वचन पर अविश्वास करते हैं । हमें जानना चाहिए कि वर्तमान स्थिति में मनुष्य बीज है और परमात्मा वृक्ष । मोटे तौर से वृक्ष और बीज की बराबरी की तुलना नहीं हो सकती, परन्तु तत्वतः यह भेद सत्य नहीं है । अपनी उत्पादन शक्ति का ठीक तरह प्रयोग न करने से ही मनुष्य मलीन अवस्था में पड़ा रहता है और अपना विकास नहीं कर पाता । उसे इस बात की पूरी आजादी है कि अपनी उत्पादन शक्ति को बढ़ाये, चाहे जितनी और चाहे जिस दिशा में बढ़ाये । मन, आत्मा की एक इन्द्रिय है । मन का धर्म इच्छाएँ उत्पन्न करना है । मन में इच्छा हुई कि दिल्ली का किला देखें, तुरन्त ही उसकी सेविका कल्पना शक्ति ने उस किले का एक कल्पना चित्र सामने खड़ा कर दिया । अब यदि मन की इच्छा निर्बल थी तो वह चित्र कुछ क्षण बाद विलीन हो जायेगा और यह इच्छा बलवान थी तो किले के उस मानसिक चित्र को पोषण मिलेगा । इच्छा शक्ति की खाद खुराक से यह चित्र कुछ ही समय में परिपुष्ट हो जायेगा और दिल्ली के किले की वास्तविक प्रतिमा के साथ अपनी घनिष्ठता स्थापित करने लगेगा । बुद्धि को अनेक बातें अपने आप ऐसी सूझ पड़ने लगेंगी जो उस किले से सम्बन्ध रखती हैं, बुद्धि की स्वच्छता के अनुपात में इनमें से अधिकांश सत्य होंगी । यदि उस मानसिक चित्र को इच्छा का पोषण बराबर मिलता रहे, तो बाहर की परिस्थितियाँ कितनी ही विपरीत हों, धीरे-धीरे वह आकर्षक चित्र अपना काम करता रहेगा और परिस्थितियों को अनुकूल करके एक दिन दिल्ली के किले का दर्शन करा देगा । इच्छा उठने के क्षण से लेकर वह कार्य पूरा होने तक मार्ग की करोड़ों छोटी-मोटी बाधाओं को साफ करने में वह आकर्षण कितने-कितने संघर्ष करता है, इसे हम नहीं जान पाते । यदि हमारी आँखें इच्छा के आकर्षण से सफलता मिलने में कितने मानसिक कार्य होते हैं, मानसिक विद्युत असंख्य प्रकार की शारीरिक, मानसिक तथा बाहरी परिस्थितियों की कितने बलपूर्वक चीर-चीर कर अपना रास्ता साफ करती हैं, इसे देख पातीं तो हम समझते कि बेशक हमारे अपने अन्दर अत्यन्त ही प्रभावशाली चुम्बक शक्ति भरी हुई है ।

शरीर की सारी हलचलें उसी बिजली का एक बहुत छोटा कार्य है । हर शरीर में इतनी गर्मी देखी जाती है, कि उससे १ घण्टे में करीब १ मन (१ मन = ३७.३२४२ किलोग्राम) बर्फ घुल सके । यह गर्मी कहाँ से आती है ? उन्हें जानना चाहिए कि भीतर जो बिजलीघर चल रहा है, यह उसका धुआँ-धप्पड़ और गर्द-गुबार है । भीतर तो इतनी गर्मी है, जितनी में पृथ्वी पर पैदा होने वाला कोई जीव जिंदा नहीं रह सकता । कई मनुष्यों के चेहरे पर ऐसा तेज होता है, जिसके आगे तलवार और बन्दूकें कुंठित हो जाती हैं, यह तेज सफेदी या चमक नहीं है, वरन् प्रचण्ड विद्युत-धारा है । जब एक मनुष्य हजारों विरोधियों के बीच सफलता प्राप्त करके निकलता है, तो यह कार्य उसके हाड़-माँस का नहीं, वरन् आत्मतेज का होता है । अगले अध्याय में हम बतायेंगे कि इस आत्म विद्युत को सूक्ष्म इन्द्रियों से ही नहीं, वरन् इन मोटी इन्द्रियों आँख, नाक, त्वचा आदि से भी अनुभव किया जा सकता है । यहाँ तो हमारा अभिप्राय यह बताने का है कि शरीर की सारी हरकतें उस विद्युत के द्वारा हो रही हैं, जो मन की महान विद्युत का एक अंश है । एक डॉक्टर ने हिसाब लगाकर बताया है, कि हमारे शारीरिक और मानसिक कार्यों को चलाने में जितनी विद्युत शक्ति खर्च होती है, उतनी से एक बड़ा मिल चल सकता है । छोटे बच्चे में भी इतनी बिजली काम करती है, जितनी से रेल का इन्जन दौड़ सके । शरीर के कामों में मन की एक तिहाई से भी कम बिजली खर्च होती है । शेष भाग में से अधिकांश हमारी मानसिक इच्छाओं को पूरा करने के प्रयत्न में लगा रहता है ।

'जो जैसा बनना चाहता है, वैसा बन जाता है ।' इसका रहस्य यह है कि मन जैसी इच्छा करता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कल्पना वैसे मानसिक चित्र रचती है और लगातार की इच्छा से इन चित्रों में ऐसा चुम्बक पैदा हो जाता है, कि वैसे ही भौतिक पदार्थों को अपने निकट खींचते हैं । किसी वस्तु को लाने, उठाने, ले जाने, प्राप्त करने में सदैव कुछ प्रयत्न करना पड़ता है । इच्छा को तीव्रता के अनुसार मन की विद्युत-धारा चारों ओर उड़-उड़ कर अनुकूल वातावरण तैयार करती है । शरीर में वैसी क्रिया उत्पन्न करती है, बुद्धि में तरकीबें उठाती है, संकटों का मुकाबला करने योग्य साहस देती है और ऐसी-ऐसी गुप्त सुविधाएँ उपस्थित करती हैं, जिन्हें हम जान भी नहीं पाते । कहते हैं, अमुक मनुष्य ने ऐसे-ऐसे प्रयत्न करके अमुक कार्य पूरा किया । तत्वदर्शी जानता है कि यह प्रयत्न उसके शरीर ने नहीं किए, वरन् मन ने किए हैं । यदि उसकी तीव्र इच्छा न होती तो शायद ही वह पूरा होता । देखते हैं, कि कई आदमी मामूली से कामों को भी ठीक तरह नहीं कर पाते, उन्हें छोटा-सा काम करने में घण्टों लग जाते हैं, करने के बाद थकान अनुभव करते हैं या झुंझलाते हैं, समझना चाहिए कि इनके मन को इच्छा शक्ति ने इस कार्य को पूरा करने में सहयोग नहीं दिया, इन्होंने केवल शरीर को घसीटा है, वह जैसा कुछ कर सकता था, किया है । देह के पास तो अपना भीतर का काम ही करने को काफी है, उसी से बाहर के काम भी लिए जायें तो जरूर थकान या झुँझलाहट आयेगी इसलिए याद रखना चाहिए कि किसी कार्य का सफलता-पूर्वक होना, प्रसन्नतापूर्वक होना, जल्द होना, इस बात पर निर्भर करता है कि उसके लिए अधिक से अधिक मन के इच्छा-आकर्षण का उपयोग किया जाय, क्योंकि यही तो उत्पादन का मूल स्रोत है । इच्छा की तीव्रता से क्रिया उत्पन्न होती है और यदि क्रिया का बुद्धिमत्ता-पूर्वक उपयोग किया जाय तो कोई कारण नहीं कि कठिन बाधायें मार्ग में से न हट जायें । नेपोलियन कहा करता था कि 'असम्भव शब्द मूर्खों के कोश में है ।' चाहे उक्त कथन में कुछ अत्युक्ति भले ही हो, पर सत्य का अंश अधिक है ।

आत्मा को सर्व शक्तिमान इसलिए कहा गया है कि इच्छा के द्वारा वह शक्ति उत्पन्न करती है और बुद्धि के द्वारा उसका ठीक उपयोग कर लेती है । यदि बीज में उत्पन्न करने की शक्ति हो और उसका उत्पादन ठीक प्रकार से हो, तो महान बरगद का वृक्ष उत्पन्न हो जायेगा । वृक्ष की अपेक्षा आत्मा अधिक चैतन्य और स्वतन्त्र है, इसलिए उसकी कार्य क्षमता भी दुरूह दिशाओं तक हो सकती है । संसार में मनुष्यों ने ही अनेक वैज्ञानिक आविष्कार किए हैं, ज्ञान की खोज की है और प्रकृति पर विजय प्राप्त की है, इसका कारण कोई आकस्मिक घटना नहीं है, वरन् यह उनकी इच्छा और बुद्धि के सामंजस्य का फल है और यह दोनों ही वस्तुएँ आत्मा की प्रचण्ड विद्युत के उपकरण हैं । इसलिए पाठको ! अपनी विद्युत शक्ति का ज्ञान प्राप्त करो, उसका अनुसंधान करो, उस पर विचार करो और कार्य में लाने का अभ्यास करो । तुम जैसे बनना चाहते हो, अपने जीवन में जो वस्तुएँ प्राप्त करना चाहते हो, उन्हें सच्चे दिल से चाहो, सच्ची इच्छा करो, लगन के साथ उसमें मन को प्रवृत्त करो, तो तुम्हारी क्रियाएँ उसी के अनुसार बनने लगेंगी और बुद्धि उन क्रियाओं की अशुद्धता को सँभालती रहेगी, तदनुसार सफल होकर रहोगे । मनुष्य जीवन का वास्तविक लाभ प्राप्त करने के इच्छुको ! अपनी आत्म-विद्युत को समझो, उससे ठीक प्रकार काम लेना सीखो ।

मनुष्य की शारीरिक-विद्युत !

मनुष्य के शरीर में निरन्तर एक प्रकार की बिजली का प्रवाह जारी रहता है । शरीर और मन के दैनिक कार्य संचालन होने के अतिरिक्त यह मानुषिक विद्युत प्रवाह और भी कामों में उपयोग होता है और हो सकता है । इसकी सहायता से कठिन काम पूरे किए जाते हैं, क्योंकि यह एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करके उसे प्रभावित करती और इच्छानुवर्ती बनाती है । विज्ञान द्वारा इस शक्ति का अनेक प्रकार परीक्षण हो रहा है । अलग-अलग मनुष्यों के शरीरों में जो अलग-अलग आकृतियों के तेजोवलय (Aura) देखे जाते हैं, उसके आधार पर कई योगाभ्यासी बिना असली मनुष्य को देखे उसके निकटवर्ती वातावरण का अनुभव करके ही उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ बातें जान लेते हैं । साइन्स के अनुसार साइकोमेटरी (Psychometry) नामक एक स्वतन्त्र विद्या का आविष्कार हुआ है, जिसके अनुसार आँखें बन्द करके दिव्य चक्षुओं के बल से बहुत-सी गुप्त और प्रकट बातें बताई जाती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह मानवीय विद्युत कोई कल्पना का विषय या वैज्ञानिक यन्त्र से ही देखने की चीज नहीं है, वरन् यदि तुम चाहो तो खुद अपनी इन्द्रियों से अनुभव कर सकते हो और आँखों से देख सकते हो । बहुत से जिज्ञासु इस अनुभव के लिए उत्सुक रहते होंगे, इसलिए इस लेख में कुछ ऐसे ही उपाय बताये जायेंगे, जिनके द्वारा उस बिजली को प्रत्यक्ष रूप में अनुभव में लाया जा सके ।

(१) काले पर्दे की सहायता से

एक अँधेरी कोठरी इस कार्य के लिए चुनो । उसमें एक कुर्सी रखकर उसकी पीठ पर गहरे काले रंग का कपड़ा लटका दो । एक बहुत क्षीण प्रकाश का दीपक कुर्सी के आगे की तरफ जरा दूर रख दो ताकि कुर्सी की पीठ पर लटके हुए कपड़े पर प्रकाश न पड़ने पाये अँधेरा बना रहे । इस कपड़े के पीछे अपने लिए एक चौकी या कुर्सी बिछाओ और उस पर बैठ जाओ । अब अपने दोनों हाथों को इस प्रकार मिलाओ जैसे नमस्कार करने के लिए हाथ जोड़ते हैं । काले कपड़े और तुम्हारे हाथों के बीच एक फुट का फासला रहना चाहिए । कुर्सी के ऊपरी सिरे की सीध से एक इंच नीचे हाथों को रख कर उन्हें आपस में धीरे-धीरे रगड़ना आरम्भ करो और फिर इस क्रिया को उत्तरोत्तर तेज करते जाओ । ध्यानपूर्वक देखने से पता चलेगा कि झाड़ते समय एक सफेद भाप जैसा पदार्थ उनमें से निकल रहा है । कभी-कभी हथेलियों की चमड़ी चमकती मालूम पड़ेगी और कभी एक दो हल्की चिन्गारी-सी इधर-उधर बिखरती मालूम देंगी । नाखूनों के छोरों में चमक विशेष रूप से देखी जाती है । सूक्ष्म चीजों को अच्छी तरह देख सकने की इन स्थूल आँखों में अच्छी योग्यता नहीं होती और कभी-कभी आँखों की रोशनी कम होने से इस प्रवाह को पूरी तरह देखने में बाधा पड़ती है, फिर भी उस विद्युत प्रकाश को इतना तो देखा ही जा सकता है कि हमें उसके अस्तित्व में विश्वास हो जाय ।

(२) आकर्षक प्रभाव

पालथी मार कर लकड़ी की चौकी पर बैठो । कुर्सी पर बैठना हो तो पाँवों को लकड़ी के तख्ते पर रखो । जिस कुर्सी या चौकी पर बैठे हो उसमें धातु की कोई ऐसी कील न लगी हो जो तुम्हारे शरीर को छूती हुई जमीन तक पहुँचती हो । इन बातों का ध्यान रखना इसलिए आवश्यक है कि तुम्हारा शरीर जमीन को छू रहा होगा या धातु को कोई वस्तु शरीर को छूती हुई पृथ्वी तक पहुँच रही होगी तो शारीरिक विद्युत का प्रभाव जमीन में खिंचने लगेगा और जिस वस्तु की परीक्षा करना चाहते हो उसे देखने में सफलता न मिलेगी ।

चौकी या कुर्सी पर पाँव ऊँचे करके बैठना चाहिए । दोनों हाथों को आपस में इस प्रकार मिलाओ कि हथेलियों और उँगलियों के सिरे आपस में मिल जायें । हथेली के बीच का भाग जरा-सा खुला रह सकता है । एक मिनट तक हथेली और उँगलियों के सिरों को आपस में खूब चिपकाने का प्रयत्न करो । तदुपरान्त हथेलियों को कस कर मिलाये रहते हुए उँगलियों को अलग करने का प्रयत्न करो । ऐसा करने पर चारों उँगलियों में कँपकपी मच जायेगी । वे एक-दूसरे से अलग न होना चाहेंगी, किन्तु जब तुम उनका चुम्बकत्व भंग करके उन्हें अलग-अलग करना चाहते हो, तो मानवीय चुम्बक विद्युत के आकर्षण के कारण वे काँपने लगती हैं । यह अनुभव बहुत सरलता से किया जा सकता है ।

(३) जल का स्वाद परिवर्तन

एक मेज पर काँच के गिलासों में पानी भर कर रखो । उनमें से एक में अपनी उँगलियों का अग्रभाग ४-५ मिनट डुबाये रहो और इच्छा करते रहो कि तुम्हारी विद्युत शक्ति इस पानी में उतर जाय । इसके बाद किसी कुशाग्र बुद्धि के मनुष्य को उन दोनों जल पात्रों को दिखाओ या उन जलों में से थोड़ा-थोड़ा पिलाओ । वह व्यक्ति तुरन्त ही बता देगा कि इस पानी के स्वादों में और चमक में कितना अन्तर है ।

(४) चक्र में झनझनाहट

एक गोल मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगा कर कम से कम तीन और अधिक से अधिक से सात व्यक्ति बैठें । स्थान शान्त और क्षीण प्रकाश का हो, एक प्रहर रात्रि बीत जाने के बाद का समय इसके लिए उत्तम है । सब लोग शान्त चित्त होकर बैठें और पाँव लकड़ी के तख्ते पर रखें । मेज के बीचों-बीच एक काला बिन्दु बनाकर सब लोग अपनी दृष्टि उस पर एकत्रित करें और दोनों हाथों के पंजे अपने पड़ोसी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पंजे में मिला-मिलाकर मेज के किनारों पर रखें । सब लोगों के हाथ आपस में मिलकर एक चक्र बन जाना चाहिए । बिन्दु पर शान्त चित्त से दृष्टि की एकाग्रता करने पर एक विद्युत की धारा बहने लगेगी और चक्र में बैठने वालों को हाथों में तथा शरीर के अन्य स्थानों में हल्की झनझनाहट मालूम होने लगेगी ।

(५) मृत वस्तुओं को जीवित रखना

एक समय के टूटे हुए दो फल या फूल या किसी मृत प्राणी के शरीर लो । एक को परीक्षा के तौर पर किसी दूसरे व्यक्ति के पास छोड़दो और दूसरे को अपने पास रखो । दूसरा व्यक्ति उसे जहाँ चाहे वहाँ रखे, तुम उस वस्तु को अपने पास रखो और थोड़ी-थोड़ी देर बाद उस पर जीवन रक्षा की भावना से दृष्टिपात करते रहो । इस प्रकार तुम देखोगे कि साथी की वस्तु सड़ने लगी है, किन्तु तुम्हारी वस्तु में सड़ने का जरा भी प्रभाव न होगा, हाँ यदि दृष्टिपात में अधिक तेजी हुई तो सूखने लगेगी ।

फ्रांस के बोर्डो नगर में इस सम्बन्ध में बहुत अन्वेषण हुआ है । वहाँ एक स्त्री ने अपने अन्दर विशेष रूप से विद्युत आकर्षण पैदा कर लिया था, जिस वस्तु पर दृष्टि डालती वह कदापि न सड़ती । केवल फल-फूलों पर ही नहीं, वरन् मरे हुए मेढक, खरगोश, मछली, सुअर आदि की लाशों पर भी यह परीक्षण किया गया । सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से हफ्तों उन लाशों की परीक्षा होती रही, पर सड़ने का एक भी चिह्न उनमें न देखा गया । कई ऐसी सड़ी हुई वस्तुएँ उस स्त्री के सामने उपस्थित की गईं जिनमें असंख्य जन्तु उत्पन्न हो गए थे । स्त्री ने जब उन पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि डाली तो वे कृमि कुछ ही देर में मर गए ।

(६) लटकती हुई वस्तु को झुलाना

सुई के छेद में धागा पिरो कर ऊपर छत में उसे इस तरह बाँध दो, कि सुई बीच में लटकती रहे । उस कमरे में हवा के झोंके न आने पायें, इसका प्रबन्ध रखो, उस सुई से तीन फुट के फासले पर तुम बैठो और उस पर दृष्टि जमाओ, कुछ ही देर में उसमें हरकत होने लगेगी और जिस तरह चाहोगे, उसी तरह वह हटने व हिलने-डुलने लगेगी । जलती हुई मोमबत्ती या दीपक की लौ को भी इसी प्रकार मानवीय विद्युत के आधार पर हिलाया डुलाया जा सकता है ।

(७) जीव-जन्तुओं पर प्रतिबन्ध

रामायण में ऐसा उल्लेख है कि लक्ष्मण जी एक रक्षित रेखा खींच कर चले जाते थे और उसके अन्दर सीता जी अकेली निर्भय होकर बैठी रहती थीं । जब रावण सीता को चुराने पहुँचा तो उसका इतना साहस न हुआ कि उस रेखा के अन्दर प्रवेश कर सके, अतएव उसे भिक्षुक का रूप बना कर छल से सीता को रेखा के बाहर बुलाने का षड्यन्त्र रचना पड़ा । इस प्रकार की विद्युतमयी रेखाएँ हर कोई खींच सकता है, परन्तु उनमें असर अपने प्रयोक्ता के बल के अनुसार ही होगा । भूमि पर एक कोयले से कहीं छोटा-सा एक गोल घेरा चक्र की तरह खींच दो । खींचते समय उस रेखा में अपनी विद्युतमयी इच्छा का समन्वय कर दो और बैठकर तमाशा देखो । उधर से जो चीटियाँ या इसी प्रकार के छोटे कीड़े निकलेंगे, उनके लिए यह रेखा जलती हुई बालू की तरह होगी । वे रेखा के समीप तक जायेंगे, किन्तु उल्टे पाँवों लौट आयेंगे, उसे पार करते उनसे न बन पड़ेगा । यदि किसी छोटे कीड़े के आस-पास ऐसी रेखा खींच दी जाय तो उससे बाहर न निकला जायेगा और उसके अन्दर ही घुमड़ाता रहेगा । जब उसे कोई मार्ग न मिलेगा और अपनी जान को हथेली पर रख लेगा, तब उस रेखा को पार करने को उद्यत होगा । जब वह पार करेगा, तो उसे बड़ा कष्ट होगा और निकलने के बाद ध्यानपूर्वक देखने से वह पीड़ित या पागल की तरह बेचैन दिखाई देगा ।

(८) फोटो खींचना

फोटो खींचने के जो अच्छे प्लेट आते हैं, वे आँखों की अपेक्षा प्रकाश को अधिक स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं, किसी ऐसे अँधेरे कमरे में जाओ, जिसमें बाहर का प्रकाश बिल्कुल न पहुँचता हो और जिसमें प्लेट पर बाहरी प्रकाश लग जाने की आशंका न हो । उस कमरे में जाकर एक फोटो का प्लेट खोलो और दो मिनट तक उस पर अपने हाथ का पंजा रखे रहो, बाद में प्लेट को सावधानी से ढक कर फोटोग्राफर से धुलवा लो । उस पर हाथ के प्रकाश का चित्र बन जायेगा ।

(९) चौंका देना

कोई व्यक्ति किसी कार्य में व्यस्त हो, तो चुपके से उसके पीछे कुछ दूरी पर जाकर खड़े हो जाओ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और रीढ़ की हड्डी या गर्दन का पिछला भाग जो खुला हुआ हो, उस पर दृष्टि जमाओ और उसे चौंका देने की भावना करते रहो । वह व्यक्ति कितने ही जरूरी काम में क्यों न लग रहा हो, अपना ध्यान हटाने को बाध्य होगा । उस स्थान को खुजलायेगा और मुड़कर तुम्हारी ओर देखने लगेगा ।

(१०) विचार उत्पन्न करना

किसी व्यक्ति को ढीला शरीर करके शान्त चित्त से आराम के साथ बिठा दो और उसके सामने तुम बैठो । जिस प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में उत्पन्न करना चाहते हो, उसी प्रकार की भावनाओं का प्रवाह उसके मस्तिष्क को लक्ष्य करके जारी करो । तुम्हारी विद्युत उसके मन में प्रवेश पाकर वैसे ही विचारों को उत्पन्न करेगी । किसी का मन यदि बहुत चंचल और कठोर होता है, तो वह उन भावों को पूरी तरह ग्रहण नहीं कर पाता, फिर भी अधिकांश सफलता मिलती है । पूछने पर वह व्यक्ति उसी प्रकार के विचार उत्पन्न हुए स्वीकार करेगा, जैसे कि तुमने उसके लिए प्रेरित किए थे ।

यह साधारण विद्युत की बात हुई । इतने अनुभव के लिए किसी विशेष अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती । हाँ, यदि स्वभावतः तुम्हारी विद्युत प्रबल है, तो अधिक स्पष्ट अनुभव आयेंगे और निर्बल होने पर उतनी ही त्रुटि रहेगी । अभ्यास से तो इस शक्ति को बहुत अधिक बढ़ाया जा सकता है । यह शक्ति समुन्नत होने पर जीवन को प्रकाश का पुंज बना देती है ।

भोजन की आन्तरिक पवित्रता

हिन्दू धर्म में खान-पान सम्बन्धी छूत-छात का विशेष विचार रखा जाता है । पवित्र व्यक्तियों के हाथ का बना हुआ भोजन चौके में बैठकर ग्रहण करने की शास्त्रीय प्रथा का आज उपहास किया जाता है और जूता पहन कर कुर्सी, मेज पर बैठे हुए हीन स्वभाव के लोगों के हाथ का भोजन करना सभ्यता का चिह्न समझा जाता है । इस प्रकार के भोजन का गुप्त रूप से शरीर और मन पर जो तामसी प्रभाव पड़ता है, उसका दुःखद परिणाम पीछे से मनुष्यों को भोगना पड़ता है ।

थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रसिद्ध नेता महात्मा लेड बीटर ने "वस्तु की आन्तरिक दशा" (Hidden Side of Things) नामक एक बहुत ही विवेकपूर्ण पुस्तक लिखी है, उसमें वे एक स्थल पर कहते हैं, जो कुछ भोजन हम खाते हैं, वह पाचन के उपरान्त शरीर का एक भाग बन जाता है । उस भोजन पर जिस प्रकार के सूक्ष्म प्रभाव अंकित होते हैं, वे भी हमारे शरीर में बस जाते हैं । लोग खाद्य वस्तुओं की केवल बाहरी सफाई पर ध्यान देते हैं, किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि बाहरी सफाई पर ध्यान देना जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक उसकी आन्तरिक स्वच्छता पर ध्यान देना है । भारतवर्ष में भोजन की आन्तरिक स्वच्छता को अधिक महत्त्व दिया जाता है । हिन्दू लोग अपने से नीच विचार के लोगों के हाथ का बना हुआ या उनके साथ बैठकर खाना इसलिए ना-पसन्द करते हैं कि उनके हीन विचारों से प्रभावित होने से भोजन की पवित्रता जाती रहेगी । विलायत में लोग बाहरी सफाई को ही पर्याप्त समझते हैं, वे नहीं जानते कि केवल इतने से ही भोज्य पदार्थ उत्तम गुण वाले नहीं बन जाते ।

भोजन पर, उसके बनाने वाले का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है । विज्ञान बताता है कि मानवीय विद्युत का सबसे अधिक प्रवाह उँगली के पोरुओं में से प्रभावित होता है । जिस भोजन को बनाते समय बार-बार हाथ से छुआ गया है, वह उसके अच्छे या बुरे असर से अवश्य ही प्रभावान्वित होगा । यह सच है कि अग्नि पर पकने से उसके बहुत से दोष जल जाते हैं, तो भी वह सम्पूर्ण प्रभाव से रहित नहीं हो जाता । केवल छूने से ही भोजन पर वैयक्तिक विद्युत असर नहीं पड़ा वरन् पास बैठने वालों से भी वह आकर्षित होता है, क्योंकि भोजन मनुष्य की प्रिय वस्तु है और एक व्यक्ति जब दूसरे की थाली पर विशेष दिलचस्पी के साथ दृष्टि डालता है तो उस पर उसकी दृष्टि का असर पड़ता है । यदि कोई दुःखी होकर किसी को भोजन दे तो उसे खाने वाला जरूर रोगी हो जायेगा, ऐसा देखा जाता है । किसी के हाथ से छीनकर या समाज में बैठकर दूसरों के दिए बिना जो खाता है वह भी उन खाद्य पदार्थों के साथ एक प्रकार की ऐसी विद्युत ले जाता है जो करीब-करीब विष का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम करती है और उससे वमन तक हो सकती है । एकान्त स्थान में या चौके में बैठकर भोजन करना इस दृष्टि से बहुत ही अच्छा है कि उस पर भीड़-भाड़ की दृष्टि नहीं पड़ती । हाँ, एक ही घर के या एक ही प्रकार के विचारों वाले लोग पास-पास बैठकर भोजन कर सकते हैं, क्योंकि उनमें एक-दूसरे के प्रति पूर्ण सहानुभूति होती है और जातीय शील स्वभाव बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, किन्तु दूसरे लोगों में ऐसा नहीं हो सकता । बनाने वाले या परोसने वाले के शारीरिक और मानसिक गुण, हाथों का प्रभाव, अनिवार्यतः भोजन पर पड़ता है ।

माता, बहिन या पत्नी के हाथ का परोसा हुआ रूखा-सूखा भोजन बजार के हलुवे से अधिक गुणकारक होता है, क्योंकि उनकी प्रेम भावनाएँ भी उनमें लिपट आती हैं, शबरी के बेरों की श्रीरामचन्द्र जी ने और विदुर के शाक की भगवान कृष्ण ने बड़ी प्रशंसा की है । यह प्रशंसा उनका मन बढ़ाने के लिए ही न थीं, वरन् सत्य भी थीं । प्रेम की सद्भावनाओं में इतने रुचिकर तत्व होते हैं कि उनसे साधारण भोजन भी बहुत उच्च कोटि का बन जाता है ।

होटलों में खाने वाले व्यक्ति हमेशा पेट की शिकायत करते हैं । कहते रहते हैं, होटलों में रोटी कच्ची मिलती है, शाक खराब मिलता है, इसलिए वह हमें हजम नहीं होती, किन्तु वास्तविक कारण दूसरा ही है । होटल वालों की नीयत यह रहती है कि ग्राहक कम भोजन खाये जिससे हमें अधिक लाभ हो यह भावनाएँ भोजन के साथ पेट में पहुँचती हैं और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करती हैं कि खाने वाले की भूख घट जाय । बाजारों में बिकने वाली मिठाइयाँ या अन्य दूसरी खाद्य वस्तुएँ प्रदर्शनार्थ रखी जाती हैं । रास्ता निकलने वाले अधिकांश लोगों का मन उन्हें देख कर ललचाता है, परन्तु वे कारणवश उन्हें खरीद नहीं सकते । कई बार छोटे बच्चे और गरीब लोग उनकी ओर बड़ी ललचाई हुई दृष्टि से देखते हैं परन्तु अपनी बेवशी के कारण मन मारकर दुःखी होते हुए, देखते हुए चले जाते हैं । ऐसे व्यक्तियों की यह बेवशी भरी इच्छाएँ उन मिठाई आदि में प्रचुर मात्रा में लिपट जाती हैं । अनेक मनुष्यों की ऐसी भावनाओं को वह बाजारू भोजन अपने में इकट्ठा करता रहता है और कुछ समय उपरान्त उनका एक बोझ जमा हो जाता है और उसे पूर्णतः अखाद्य बना देता है । 'बाजारू भोजन से बीमार पड़ते हैं' यह अनुभव बिल्कुल सत्य है । इसका कारण और कुछ नहीं हो सकता । घृत, मिष्ठान्न जैसी बलवर्द्धक वस्तुओं से बने हुए पदार्थ भी हानि पहुँचायें तो इसका भला और क्या कारण होगा ?

एक साथ, एक थाली में या खाने में शेष बचा हुआ झूठा भोजन करना तो बहुत ही घृणित है, लार का कुछ अंश जिसमें सम्मिलित हो जाय ऐसा भोजन देखते ही मन को घृणा उत्पन्न होती है । कहते हैं कि इससे प्रेम उत्पन्न होता है, इस कथन में कुछ सच्चाई तो है, पर वह लाभ-हानि की तुलना में न कुछ के बराबर है । एक व्यक्ति का शारीरिक अंश (थूक लार) आदि दूसरे के शरीर में पहुँच जाता है, तो उसे अपनी जाति के शरीर को अपनी ओर आकर्षित करता है, परन्तु जब तक गुण-स्वभाव आदि भी एक से न हों तब तक वह प्रेम स्थायी नहीं हो सकता । जैसे पिचकारी से शरीर में पहुँचाए हुए दूसरे व्यक्ति के खून की ताकत एक नियत समय में जाकर समाप्त हो जाती है, उसी तरह एक थाली में भोजन करने से जो थूक आदि दूसरे के शरीर में पहुँचता है, बहुत थोड़े समय में ही समाप्त हो जाता है । यह प्रेम बहुत ही हल्का उत्पन्न होता है । साथ ही दूसरे के भले-बुरे विचार भी प्रवेश कर जाते हैं । बुरे विचार अधिक तीव्र होते हैं, इसलिए सबसे प्रथम उन्हीं का असर होता है । कई बार इससे छूत वाले संक्रामक रोगों का एक-दूसरे पर आक्रमण होने का अन्देशा रहता है । इसलिए हर व्यक्ति को सदैव अलग-अलग पात्रों में भोजन करना चाहिए ।

यदि अन्य व्यक्तियों के यहाँ या अपने से भिन्न प्रकृति के लोगों के यहाँ भोजन करने का अवसर आये तो अच्छा है कि उनके यहाँ प्रयोग होने वाले धातुओं के बर्तन प्रयोग में न लाये जायें । धातुएँ अपने प्रयोगकर्त्ता के दोषों को बहुत ही शीघ्रता से प्रचुर मात्रा में अपने अन्दर धारण कर लेती हैं और जब तक अग्नि में न तपाया जाय तब तक शुद्ध नहीं होती । कई बार अपने से बहुत ही भिन्न स्वभाव के मनुष्यों के द्वारा बहुत काल तक प्रयोग किए हुए पात्र उनकी भावनाओं को इतना अधिक ग्रहण कर लेते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि बार-बार तपाने पर भी अपना असर नहीं छोड़ते हैं । इसलिए दूसरे ऐसे लोगों के यहाँ, जहाँ अपने विचारों का सामंजस्य नहीं होता यदि थाली-गिलास लेने की अपेक्षा पत्तों की पत्तल एवं मिट्टी के गिलास, कुल्लड़, (मटकन्ने), काम में लाये जायें तो बहुत ही अच्छा है, क्यों यह एक बार ही प्रयोग होते हैं ।

मुँह और हाथ धोकर भोजन करना चाहिए, जिससे उनमें आये हुए दुर्भाव छूट जायें । चूल्हे के पास चौके में भोजन करने से वहाँ का उष्ण वातावरण बुरे प्रभावों को बहुत कुछ दूर कर सकता है । कपड़ों की अशुद्धि भोजन तक उड़ कर न पहुँचे, इसलिए जितने कम हो सकें उतने कम कपड़े खाते समय पहनने चाहिए । बैठने का स्थान पवित्र हो । परोसने वाले जहाँ तक हो सके भोजन को कम से कम हाथ से छूएँ, जल आदि प्रवाही पदार्थों को बार-बार छूना, उनमें हाथ या उँगली डालना तो बहुत ही बुरा है, क्योंकि सूखे पदार्थों की अपेक्षा प्रवाही पदार्थ बहुत जल्द विद्युत प्रवाह को अपने अन्दर धारण कर लेते हैं । स्वयं अपने हाथ से तैयार किए हुए खाद्य पदार्थ सर्वोत्तम हैं इसके बाद अपने प्रिय परिजनों या समान विचार वालों के हाथ का बना हुआ । भिन्न स्वभाव के मनुष्यों के यहाँ भोजन का अवसर आये तो सूखा भोजन लेना चाहिए, क्योंकि उनमें बाहरी प्रभावों का समावेश देर में और कम होता है । दूध या उससे बने हुए प्रवाही पदार्थ प्रतिकूल विचार वालों से कदापि न लेने चाहिए । क्योंकि दूध, जल से भी अधिक सजीव होने के कारण अत्यधिक प्रभाव को ग्रहण कर लेता है ।

वस्तुओं पर गुप्त रूप से बहुत दूर तक के संस्कारों का प्रभाव बना रहता है । छूत-छात के प्रभाव अग्नि पर पकने से नष्ट हो सकते हैं, किन्तु बलात् अपहरण किया हुआ या भिक्षा द्वारा प्राप्त हुआ जो अन्न होगा वह अपने उन सम्बन्धियों की भावनाओं को अग्नि पर पक जाने के उपरान्त भी न छोड़ेगा । पशु को वध करके निकाले गए चमड़े को चाहे कितना ही पकाया जाय, चाहे उस पर कितना ही रंग-रोगन किया जाय, वह उस प्रभाव का कदापि परित्याग न करेगा, जो मरते समय पशु को भयंकर यन्त्रणा के कारण उस पर पड़ा था । हत्या करके किसी पशु के शरीर से निकाला गया माँस या चमड़ा उसके उपयोग करने वाले को यन्त्रणा दिए बिना छोड़ नहीं सकता । इसलिए जो कुछ हम खायें उसमें यह भी देख ले कि यह पदार्थ कहीं वेदनामय भावों से भरा हुआ तो नहीं है । फूँका प्रथा से या पीट-पीट कर निकाला गया पशु-दुग्ध पीकर भला कौन लाभ की आशा कर सकता है ?

बहुत से विद्वान और साधुजन भोजन के समय छूत-छात का विशेष ध्यान रखते हैं । मैडम ब्लावटस्की की सम्मति है कि अपना भोजन और जल पात्र अधिक लोगों की छूत में मत आने दो । भोजन बनाने वाले या परोसने वाले को पहले भोजन करा देना चाहिए, ताकि वह कुड़कुड़ाते हुए पेट की इच्छाओं को उस पर न डाले । उससे यह भी कह दो कि जहाँ तक हो सके हाथ से कम छुए और जहाँ जरूरत हो वहाँ चिमटा या चम्मच का प्रयोग कर ले । यहाँ बाहरी सफाई का खण्डन नहीं किया जा रहा है, जरूरी वह भी है, परन्तु भोजन की आन्तरिक सफाई तो बहुत ही आवश्यक है ।

भोजन के कई प्रकार के प्रभावों को हम अपनी इच्छा शक्ति द्वारा भी दूर कर सकते हैं । जब थाली सामने आये तो थोड़सा जल लेकर उसके चारों तरफ फेर दो और एक मिनट तक आँखें बन्द करके इस सामग्री को परमात्मा के समर्पण करते हुए मन ही मन प्रार्थना करो कि—"हे प्रभो ! यह भोजन आपको समर्पित है । इसे पवित्र और अमृतमय बना दीजिए ।" जब नेत्र खोलो तो विश्वास करो कि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है और उसमें अब केवल लाभकारी तत्व ही रह गए हैं । सच्चे हृदय से प्रभु की प्रार्थना करके और उसमें पवित्रता एवं अमृतत्व की भावना के उपरान्त जो भोजन किया जाता है, वह बहुत से हानिकारक प्रभावों से मुक्त हो सकता है और स्वास्थ्य की उन्नति में सहायक हो सकता है ।

जड़ वस्तुओं पर प्रभाव

मनुष्य की नस-नस में व्याप्त यह विद्युत शक्ति केवल शरीरधारी चैतन्य प्राणियों पर ही असर नहीं डालती, वरन् निर्जीव और जड़ कहे जाने वाले पदार्थों पर भी असर करती है । इटावा जिले के कलक्टर डॉक्टर एस. एस. नेहरू ने 'इलेक्ट्रिक कल्चर' पद्धति से एक विशाल पैमाने पर परीक्षण करके सिद्ध किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि चुम्बक की विद्युतधारा का वृक्षों और पौधों पर बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रभाव होता है । उन्होंने लोहे की जाली द्वारा वृक्षों के और पानी के साथ खेती की फसल को बिजली की सहायता पहुँचाई, तो पाया कि वे पौधे, दूसरे अन्य पौधों की अपेक्षा बहुत अधिक उन्नति कर गए और उनका विस्तार एवं फलने-फूलने का परिणाम बहुत ही सन्तोषजनक रहा । उक्त डॉक्टर साहब ने केवल यहीं तक अपना काम सीमित नहीं रखा, वरन् पर्याप्त प्रमाणों सहित यह भी साबित किया कि चुम्बक शक्ति का पानी पिलाकर या अन्य प्रकार से बिजली की सहायता पहुँचा कर कठिन से कठिन रोगों को अच्छा किया जा सकता है । उन्होंने बच्चों के गले में ताँबे के तार अथवा ताबीज विद्युतान्वित करके पहनाये, फलस्वरूप दाँत निकलने के कष्ट तथा अन्य प्रकार की उनकी बीमारियाँ अच्छी हो गईं । यह प्रयोग उन्होंने उस मामूली 'मैगनेट' यन्त्र की सहायता से किए थे, जो हल्की-सी ताकत का होता है और मोटरें आदि में लगा होता है । मनुष्य की शारीरिक चुम्बक शक्ति उसकी अपेक्षा बहुत ही सूक्ष्म और गुणकारी प्रभाव रखती है । देखा गया है कि जिन वृक्षों के नीचे मनुष्यों या पशुओं का रहना होता है, वे बहुत बढ़ते और फलते-फूलते हैं । बाग के फलदार पेड़ों में जैसे खाद, पानी आवश्यक है, उसी तरह मनुष्य में शरीर की गर्मी भी आवश्यक है अन्यथा उनकी फसल बहुत कमजोर हो जाती है । जिन खेतों पर किसानों के झोंपड़े होते हैं और वे कभी-कभी बैठते हैं, उसके आस-पास खेती की हालत बहुत अच्छी होती है । देखा गया है कि कुछ वृक्ष जो मुरझाई हुई हालत में थे और सूखना ही चाहते थे, उनके नीचे जब मनुष्य और पशुओं का निवास हुआ तो वे कुछ ही दिनों में नवीन पल्लवों से लद गए । हर किसान जानता है कि जंगलों में सुनसान पड़े रहने वाले खेतों की अपेक्षा गाँव के निकटवर्ती खेतों में अच्छी पैदावार होती है, कारण यही है कि उन तक मनुष्य शरीर की बिजली अधिक मात्रा में पहुँचती है । चने के पौधों की कोंपल साग के लिए तोड़ ली जाती हैं, तो इससे उसकी फसल को नुकसान नहीं होता, क्योंकि हाथ के स्पर्श से उतना लाभ पहुँच जाता है जितनी हानि उन कोंपलों के काटने से नहीं होती । इसके विपरीत यदि किसी हाँसिए से उसे काटा जाय तो अवश्य ही पौधे फिर उतने न बढ़ेंगे ।

मकानों पर मनुष्य के रहने का प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता । एक मकान में कोई मनुष्य न रहे और वह खाली पड़ा रहे, तो बहुत जल्द उसकी दशा खराब हो जायेगी और कम समय में रद्द हो जायेगा, किन्तु दूसरा मकान जिसमें मनुष्य रहते हैं, इतनी जल्दी खराब नहीं हो सकता । मौटे तौर से देखने में वह मकान जल्द खराब होना चाहिए, जिसमें लोग रहते हैं, क्योंकि प्रयोग करने से हर चीज जल्द टूटती है और जो चीज काम में नहीं आती, वह ज्यादा दिन चलती है, परन्तु यहाँ उल्टा ही उदाहरण दृष्टिगोचर होता है, इसका कारण मानवीय विद्युत का चमत्कार है । मनुष्य की बिजली जड़ पदार्थों में भी बल का संचार करती है । मकानों में दीर्घ जीवन के साथ-साथ उसके मालिकों के विचारों का वातावरण भी गूँज जाता है । जिस घर में जैसी प्रकृति के लोग रहते हैं, उनके विचारों की शृंखला उस स्थान में गुंजित हो जाती है । ये लोग चले जायें तो भी बहुत काल तक उनके गुण, स्वभाव वहाँ डेरा डाले रहते हैं । जिसे आध्यात्म तत्व की थोड़ी भी जानकारी है, वह किसी भी मकान में प्रवेश करते ही बता सकता है कि यहाँ पर कैसे स्वभाव के लोगों का रहना होता है या हुआ था । भले विचारों से परिपूर्ण मकान में प्रवेश करते ही एक शान्ति, शीतलता का अनुभव होता है । जिन स्थानों में बुरे विचारों के लोग रहे हैं, वहाँ अपने मन में भी उस तरह की तरंगों का प्रादुर्भाव होने लगता है । जिस घर में दुराचारी लोग रहे हैं तुम उस स्थान पर कुछ समय रह कर देखो तो तुम्हारे मन में जिस प्रकार के भाव कभी नहीं उठते थे, उस तरह के वहाँ उठेंगे । जिस स्थान पर कोई वीभत्स या भयंकर कार्य हुए हैं, उन जगहों का वातावरण मुद्दतों तक नहीं बदलता । जिन मकानों में अग्निकाण्ड, भ्रूण हत्या, कतल या ऐसे ही अन्य जघन्य कार्य हुए हैं, उन घरों की ईंटें रोती हैं और उन स्थानों पर सताए गए प्राणी की करुणा कभी-कभी जागृत होकर बड़े डरावने दृश्य या स्वप्न उपस्थित करती है । किन्हीं घरों का अभागा या भुतहा होना प्रसिद्ध होता है, उनमें जो कोई रहता है, उन्हें कष्ट होता है, डर लगता है या अन्य उपद्रव होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसे स्थानों के सम्बन्ध में उनका कुछ आगे का इतिहास ढूँढ़ा जाय तो जरूर कोई खटकने वाली घटना उस घर में हुई होगी, कोई मनुष्य अत्यन्त ही शारीरिक या मानसिक कष्टों से कराहता हुआ उसमें पड़ा रहा होगा, या उस स्थान पर किसी की 'हाय' पड़ी रही होगी । उग्र मानसिक अनुभूतियाँ जिन स्थानों में मँडराती रहती हैं, उनमें रहने वाले सुख से नहीं रह सकते । प्रबल मनस्वियों को छोड़कर साधारण कोटि के मनुष्यों को कलेजा उनमें काँपता रहता है ।

बहुत दिनों तक खाली पड़े रहने वाले मकानों में उसमें किसी समय मनोयोग से रहे हुए व्यक्तियों के विद्युत कण जागृत हो उठते हैं । चूँकि मनुष्य शरीर के एक-एक कण में एक स्वतन्त्र सृष्टि रच डालने की शक्ति भरी हुई है, जब उसके लिए किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं होती तो वे अवसर पाकर अपने पूर्वरूप की भूमिका में एक स्वतन्त्र अव्यक्त व्यक्ति की रचना करने लगते हैं । एक कण का एक अव्यक्त स्वरूप बन सकता है । कोई मृत व्यक्ति, चाहे वह अन्यत्र जन्म ले चुका हो, फिर भी उसके पिछले कण यदि जागृत होने की स्थिति में आ जायें, तो वे प्रकट हो सकते हैं । मृतात्माएँ, प्रेत, पिशाच, बेताल अक्सर किसी भूतपूर्व व्यक्ति के थोड़े से विद्युत परमाणुओं की एक स्वतन्त्र सृष्टि होती है । बहुत-सी बातें उनमें अपने पूर्व से मिलती-जुलती हैं और बहुत-सी बिल्कुल स्वतन्त्र होती हैं । इस प्रकार से बने हुए भूत प्रेतों के लिए यह आवश्यक नहीं कि उनके सारे स्वभाव और सारा ज्ञान पूर्व शरीर की ही भाँति हो ।

यह बताया जा चुका है कि बहुत दिनों से खाली पड़े हुए सुनसान मकानों में ऐसे विद्युत कण अक्सर मूर्तिमान होते हैं । यह जरूरी नहीं है कि यह अव्यक्त प्रतिमाएँ उसी मनुष्य की हों जो उसमें रहा हो । इधर-उधर वायुमण्डल में उड़ते उड़ाते कोई बीज कण वहाँ ठहर जाय और उपयुक्त अवसर पा जाय तो उस स्थिति तक विकास कर सकता है, जिसे लोग कभी-कभी भूत-प्रेत के रूप में देखने या मानने लगते हैं । यह प्रतिमाएँ कई बार अपने पूर्व स्मरण की भूमिका की जाग पड़ती हैं, तो वैसी ही क्रिया को दुहराने लगती हैं, जैसे उसे पूर्व काल में गाने का शौक रहा हो तो इस समय भी गाने लगे । खाली पड़े हुए मकान में थोड़े से व्यक्ति यदि आकर रहें तो उनके शरीर की भाप उन प्रतिमाओं को गर्मी देती है, फलस्वरूप वे अधिक सक्रिय हो जाती हैं और अपने कार्यों को अधिक वेग से दुहराने लगती हैं किन्तु यदि अधिक मनुष्य वहाँ जाकर रहें तो उनकी बढ़ी हुई गर्मी उन प्रतिमाओं को खदेड़ बाहर करती है । जब ऐसी घटनाएँ उपस्थित हों कि अमुक स्थान में भूत दीखा या उसकी अमुक हरकत हुई हो तो समझना चाहिए कि किसी जीवित या मृत व्यक्ति का कोई विद्युत कण चैतन्य प्रतिमा के रूप तक विकास कर चुका है । यह प्रतिमाएँ यदि बहुत ही कठोर न हों तो आसानी से हटाई जा सकती है । घर की पूरी सफाई, अग्नि की गर्मी, अधिक लोगों का निवास उन्हें हटने को मजबूर कर सकता है ।

सर्वत्र स्त्रियाँ जेवर पहनना पसन्द करती हैं और उससे सौन्दर्य में वृद्धि भी होती है । विज्ञान बतलाता है कि वायु के साथ आकाशीय विद्युत की एक धारा भी बहती रहती है । इसमें मनुष्य शरीर को पोषण करने का बड़ा गुण है । धातुओं में बिजली को खींचने का गुण है । स्थूल और सूक्ष्म का भेद इस आकाशीय विद्युत में भी है । लोहे, पीतल या ऐसी ही सस्ती धातुओं का सस्तापन उनके रंग-रूप के कारण नहीं, वरन्, सूक्ष्म और उपयोगी विद्युत प्रवाह को ग्रहण करने की दृष्टि है । अन्यथा यदि यह बात न होती तो चाँदी की अपेक्षा लोहा महँगा होता, क्योंकि उसकी भौतिक उपयोगिता चाँदी से अधिक है, इसी प्रकार सोने से निकिल धातु महँगी होती, क्योंकि उसकी चमक सोने से भी अच्छी होती है । चाँदी और सोना आकाश की सूक्ष्म बिजलियों को आकर्षित करते हैं । चाँदी द्वारा शीतलता, गम्भीरता और मन्दता उत्पन्न होती है । स्त्रियों की बढ़ी हुई कामशक्ति को घटाने के लिए चाँदी के जेवर पहनाने चाहिए । पैरों में चाँदी के भारी कड़े पहन कर विधवाएँ अपने सतीत्व की रक्षा आसानी से कर सकती हैं । जिनके पति परदेश में हों, ऐसी स्त्रियों को भी चाँदी के कुछ जेवर जरूर पहनने चाहिए, जिससे उनका मन शान्त रहे । सोना; उत्साह, तेज और चमक प्रदान करता है । चेहरे पर तेज या चमक होना स्त्रियाँ विशेष रूप से पसन्द करती हैं, इस दृष्टि से नाक और कान में सोने के जेवर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पहनना अच्छा है । कान के निचले भागों में ही सोना पहनना चाहिए, जिससे कनपटी और गालों में सम्बन्ध रखने वाली माँसपेशियों से छूता रहे । कान के ऊपरी भाग में सोना पहनने से उसका सम्पर्क मस्तिष्क की ऊपर पेशियों से होता है, जिससे चित्त में चंचलता उत्पन्न होती है । धातुएँ अपने आकर्षण में आकाश की उपयोगी बिजली को खींचकर पहने हुए शरीर में देती हैं । इससे न केवल सौन्दर्य की वरन् स्वास्थ्य की भी वृद्धि होती है । ताँबा भी सोने जैसा ही गुणकारी है, परन्तु न जाने उसके जेवर क्यों नहीं पहने जाते । शायद सस्तेपन के कारण ही उसकी उपेक्षा की गई है । सोने के पीले जेवर जिनके अन्दर लाख आदि भरवाई जाती है, यदि ताँबा भरवा दिया जाय तो गुणों में वह सोने के समान ही रहेगा । सोने में थोड़ा ताँबा मिलाकर 'गिन्नी गोल्ड' जैसी मिश्रित धातु के जेवर और भी उत्तम होंगे । छाती, हृदय, कंठ के आस-पास कोई जेवर पहनना हृदय को बल देता है । पुरुष, जो खुद जेवर पहनना ठीक नहीं समझते यदि सोने या ताँबे की एक अँगूठी पहने रहें तो अच्छा है । ताँबे और चाँदी के तारों से गुथी हुई अँगूठी सात्विक विचारों को आकर्षित करती है । उचित मात्रा में अष्ट धातुओं के मिश्रण से बने हुए जेवर एक प्रकार से जीवित मैगनेट हैं । अष्ट धातुओं के जेवरों में बहुत ही ऊँची आकर्षण धारा होती है, परन्तु स्मरण रहे अष्ट धातु का कोई बहुत बड़ा जेवर न पहना जाय अन्यथा निद्रा, नाश, रक्त पित्त, उन्माद जैसे रोग हो सकते हैं । उनका लाभ अँगूठी जैसे छोटे जेवर पहनने में ही है ।

रुपये-पैसे अनेक हाथों में चलते रहते हैं, हर आदमी उन्हें प्यार करता है और साथ ही अपनी लालसाएँ उन पर लपेट देता है । कई बार तो वह ऐसे दुःखी लोगों के हाथ में होकर निकलते हैं, जो उसे छोड़ना नहीं चाहते पर मजबूरन छोड़ना पड़ा । उनकी बेवशी पैसों पर चिपक जाती है । निर्दयतापूर्वक यदि अपहरण किया गया हो, तो वह धन अपने पूर्व रक्षक की करुणा से परिप्लावित हो जाता है । ऐसी विचित्र और विभिन्न प्रकार की अन्तर्भावनाओं की एक मोटी-ताजी गठरी हर एक सिक्के की पीठ पर जमा रहती है । कहते हैं कि एक रुपए में एक सेर गर्मी होती है । यह बात विनोद या उपहास की दृष्टि से ही नहीं कही गई है इसमें कुछ सच्चाई भी है । उन अनेक प्रकार के विचारों का जमघट हर क्षण कुछ न कुछ काम करता रहता है । जब जेब भरी होगी तो बीस शैतानियाँ सूझेंगी, किन्तु खाली हाथ होने पर मन की दूसरी ही दशा हो जाती है । यदि तुम कोई गम्भीर मनन कार्य करना चाहते हो, किसी समस्या पर विचार करना चाहते हो या भजन पूजन करना चाहते हो तो आवश्यक है कि अपने शरीर के आस-पास रुपया पैसा न रखो, अन्यथा मन उछलता रहेगा और एक स्थान पर स्थिर न रहेगा और बुद्धि द्वारा किसी गहन समस्या पर ठीक निर्णय न कर सकोगे । जरूरत भर पैसे जेब में रख कर शेष पैसा अन्यत्र रख देना चाहिए, रात को सोते समय शरीर पर पहने हुए किसी वस्त्र की जेब में रुपया-पैसा मत रखो और न चारपाई पर ही उन्हें रखकर सोओ, अन्यथा अच्छी नींद न आयेगी और बुरे स्वप्न दिखाई देंगे । रत्नों में तो यह ग्राहक शक्ति और भी अधिक होती है । जो वस्तु जितनी मूल्यवान होगी, उस पर उतना ही मनुष्य का लालच होगा । इसलिए पैसों की अपेक्षा रुपया और रुपया की अपेक्षा रत्न अधिक बोझ लादे होते हैं । रत्न धनवानों के पास रहते हैं, और देखा जाता है कि धनवानों का निकटवर्ती वातावरण अधिक पापमय रहता है । इस वातावरण से वे रत्न भर जाते हैं । कभी किसी अधिक पापी या क्रूर कर्मा के पास कोई रत्न रहे या किसी कृपण से बलात् छीना गया हो तो वह उन्हीं भावनाओं से भर जाता है और फिर जिन-जिनके पास जाता है, उन पर अपने मालिक की भावनाओं के अनुसार भला-बुरा असर करता है । इसलिए रत्नों का शुभ-अशुभ होना प्रसिद्ध है । कोई रत्न शुभ होते हैं, उनके पास रखने से सुख सम्पत्ति बढ़ती है, और कोई बहुत ही अशुभ होते हैं । इसलिए लोग रत्नों की परीक्षा करके ही उन्हें अपने यहाँ रखते हैं । शुभ-अशुभ तो रुपया पैसा भी होते हैं, पर वे अधिक देर ठहरते नहीं, जल्दी-जल्दी एक हाथ से दूसरे हाथ में चलते रहते हैं, इसलिए न तो उनका परीक्षण ही हो पाता है और न असर ही मालूम पड़ता है, दूसरे इन सिक्कों के मूल्य के अनुसार उनमें प्रभाव भी कम होता है, जो जितना कीमती सिक्का या रत्न होगा और जितने अधिक समय तक एक स्थान पर रहेगा, उसका उतना ही अधिक प्रभाव भी होगा । इस शुभ-अशुभ का कारण उनके पूर्व रक्षकों के विचार ही हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुराने लोग जेवर गिरवी रखने का व्यवसाय बुरा बताते हैं । ऐसे असंख्य उदाहरण पाये जाते हैं, कि जेवर गिरवी रखने का व्यवसाय करने वाले फलते-फूलते नहीं और सदा किसी न किसी कष्ट से दुःखी रहते हैं । कारण यह है अधिकांश जेवर स्त्रियों के पहनने के होते हैं, और वे उन्हें अत्यधिक प्यार करती हैं । जब वह गिरवी के लिए माँगे जाते हैं तो वे बहुत दुःखी होकर देती हैं, और भविष्य में भी जब तक वे उन्हें वापस न मिलें दुःखी बनी रहती हैं । यह दुःख भरी इच्छाएँ अपनी इष्ट वस्तु के पास पहुँचती हैं, और उस पर लगातार लदती रहती हैं । धातुओं में विद्युत शक्ति को अधिक मात्रा में ग्रहण करने का गुण होने के कारण वे इन इच्छाओं को पूरी तरह अपनाए रहती हैं । इस प्रकार वे दुःख भरे विचार जिस व्यक्ति की अधीनता में रहेंगे वे उसे अपने प्रभाव से प्रभावित किए बिना कदापि न छोड़ेंगे । इसी कारण जेवर या थाली बर्तन आदि घर-गृहस्थी के काम आने वाली चीजें जो लोग गिरवी रखते हैं, देखा गया है, कि वे दुःखी रहते हैं और किसी न किसी प्रकार की आपत्ति में फँसे रहते हैं ।

खोटे सिक्के जिस आदमी के पास पहुँचते हैं उसे ही झुँझलाहट आती है, उन्हें चलने के लिए वह कपट पूर्ण युक्ति सोचता है, देने वालों के प्रति क्रोध करता है, अपनी बेवकूफी पर पछताता है, आर्थिक क्षति के कारण दुःखी होता है, यह सब भावनाएँ उन खोटे सिक्कों पर जमा होती हैं । चूँकि वे जल्दी नहीं चलते, बड़े प्रयत्न के बाद किसी को दिए जाते हैं । साधारणतः कई दिन एक आदमी के पास रहते हैं और वह उसकी बनावट को बार-बार विशेष दृष्टिपात के साथ देखता है, इसलिए वह दुःख की भावनाएँ और भी अधिक जमती हैं । इस प्रकार यह खोटे सिक्के बहुत ही अशुभ और दुःखदायी हो जाते हैं । सहृदय व्यक्तियों को उचित है कि उनके पास कोई खराब सिक्का आ जाय तो स्वयं हानि उठाकर उसे नष्ट कर दें, आगे न चलने दें, क्योंकि वह जितना ही अधिक जीयेगा, उतना ही जन समाज को हानि पहुँचायेगा ।

कपड़े शरीर के सबसे अधिक निकट सम्पर्क में रहते हैं, इसलिए जड़ होते हुए भी वे पूरी तरह प्रभावित हो जाते हैं । किसी का पहना हुआ कपड़ा पहनना ऐसा ही है, जैसा उसका झूठा भोजन खाना । एक पौराणिक कथा है, कि देव गुरु वृहस्पति की कन्या देवयानी ने एक दूसरी लड़की शर्मिष्ठा के कपड़े पहन लिए थे, इसलिए उसे जीवन भर उसका गुलाम बनकर रहना पड़ा था । पुरानी चीजें बेचने वालों की दुकान से उतरे हुए बढ़िया कपड़े सस्ते दामों में खरीद कर लोग पहनते हैं, और अपनी बुद्धिमानी पर प्रसन्न होते हैं । उन्हें जानना चाहिए कि यह कार्य उनकी शारीरिक और मानसिक तन्दुरुस्ती के लिए बहुत ही बुरा है । जिस आदमी के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में आप नहीं जानते, उसके विचार और स्वभावों से लदे हुए कपड़े को क्यों पहनते हैं ? आपके मन के ऊपर यदि किसी के बुरे स्वभाव की छाप पड़ी तो यह उससे भी बुरा होगा, कि शरीर से बीमार पड़ जाते, क्योंकि शरीर की बीमारी तो थोड़े दिनों में ठीक हो जाती है, किन्तु मन के ऊपर पड़े हुए अनिष्टकर प्रभाव जन्म भर दुःख देते हैं और आगामी जन्मों के लिए विरासत में मिलते चले जाते हैं । चाहे फटे कपड़े पहनिये, कम कपड़े पहनिये, परन्तु दूसरों के उतरे कपड़े मत पहनिये । यह तर्क भी ठीक नहीं कि अच्छे स्वभाव के लोगों के कपड़े तो पहन लें । हो सकता है कि तुम्हें इससे कुछ लाभ पहुँचे, परन्तु इसकी ही क्या गारण्टी है, कि जिसे तुम अच्छा समझते हो उसके मन में बुरे भाव नहीं हैं या उसे कोई गुप्त रोग नहीं है ? फिर मनुष्य का स्वाभिमान कहता है, कि कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, क्यों उसका झूठा खाया जाय क्यों उसका उतरा पहना जाय ।

रेशमी और ऊनी वस्त्र बहुत कम प्रभाव ग्रहण करते हैं, इसीलिए उन्हें पूजा आदि पवित्र कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है । कहीं अशुद्ध स्थानों में जाना हो और कपड़े बदलने की सुविधा न हो, तो रेशमी या ऊनी कपड़े पहन सकते हैं । जैसा कि लोग अक्सर मृतक दाह के बाद रेशमी कपड़ा पहनते हैं । कपड़ों को धूप में खूब तपाने से और गर्म पानी में उबालने से उनका मैल और मोटे दोष दूर हो जाते हैं । जिन लोगों को हम नित्य छूते हैं । उनके प्रभावों को भी कपड़े थोड़ा बहुत ग्रहण कर लेते हैं, इसलिए अपने वस्त्रों को नित्य धोकर स्वच्छ कीजिए और धूप में तपाकर तब पहनिये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारों की बिजली

हमारी मानसिक विद्युत में से प्रति क्षण जो लहरें उठती रहती हैं, उन्हें विचार नाम से पुकारते हैं । विचार केवल एक शब्द नहीं है, वरन् एक मूर्तिमान पदार्थ है । जिसे वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता से प्रत्यक्ष देखा जाने लगा है । अमेरिका में ऐसे फोटो खींचने के कैमरे बना लिए गए हैं, जो विचारों की तस्वीरें साफ-साफ खींच लेते हैं । तुम जिस वस्तु का चिन्तन कर रहे हो, उसी वस्तु के समान मानस चित्र बनने लगते हैं । उन यन्त्रों की सहायता से स्थूल वस्तुओं की भाँति उन मानस चित्रों का भी फोटो खिंच जाता है । विचार हर घड़ी मस्तिष्क में से निकल कर बाहर की ओर उड़ते रहते हैं, उन उड़ते हुए विचारों की तस्वीर ठीक वैसी ही आती है, जैसी कि मनुष्य की कल्पना हो ।

तुमने पानी में लहरें उठती हुई देखी होंगी, यह चाहे किसी जगह से उठी हों पर समाप्त वहीं जाकर होंगी जहाँ पानी का अन्त होता होगा, पानी का अन्त चाहे कितनी ही दूर हो और लहर चाहे कितनी ही छोटी हों वह, बराबर बहती रहेंगी और जब किनारे पर पहुँच जायेंगी तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसके वेग को अपने अन्दर खींच लेगी । विचार भी मानसिक विद्युत की लहरें हैं और यह विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त आकाश (ईथर) तत्व में उठती हैं । आकाश अनन्त है, उसका कहीं अन्त न होने के कारण उन लहरों का भी कहीं अन्त नहीं होता और वे निरन्तर बहती ही रहती हैं । विचार विभिन्न प्रकार के होते हैं, उस भिन्नता के कारण उनके रंग-रूप में भी फर्क पड़ जाता है, इसलिए वे सब आपस में मिल-जुलकर एक नहीं हो जाते वरन् अलग-अलग बने रहते हैं । हाँ, एक समान विचार दूर-दूर से इकट्ठे होकर घने होते रहते हैं, जैसे अलग-अलग स्थानों से उड़ी हुई भाप एक जगह जमा होते-होते बादल बन जाती है । बिजली में आकर्षण शक्ति भी होती है, इसलिए यह विचार एक-दूसरे को खींचते रहते हैं । तुम जैसे विचार करते हो, मस्तिष्क में उसी जाति की आकर्षण शक्ति पैदा होती है और वह उसी प्रकार आकाश में उड़ने वाले विचारों को पकड़ कर अपने अन्दर खींच लेती है । इसलिए जो बात तुम सोचते हो उसके सम्बन्ध में बहुत-सी नई बातें मालूम कर लेते हो, इसका कारण है यह कि उस प्रकार का विचार कभी किन्हीं व्यक्तियों ने किया होगा और उनका अनुभव जो उड़ता फिर रहा था, तुम्हें मिल गया । परोपकार और भलाई के विचार करने से वैसे ही विचारों का जमाव होता है और हृदय बड़ी शान्ति तथा शीतलता का अनुभव करता है, इसके विपरीत क्रोध, घृणा, पाप, कपट, के विचार करने पर वे भी अपनी जाति वालों को बुला लेते हैं और वे अपने दाहक गुणों के कारण मन को बेचैन बना देते हैं । कई महापुरुष प्रत्यक्षतः संसार की भलाई का कोई अधिक काम नहीं करते, परन्तु वे उच्चकोटि की पवित्र विचारधारा संसार में प्रभावित करते रहते हैं, तदनुसार जनता को इतना लाभ पहुँचता है, जितना हजार आदमियों के शारीरिक कार्यों से नहीं हो सकता । अनेक महात्मा पर्वतों की कंदराओं में तप करते रहते हैं, यह न समझना चाहिए कि वे अपनी मुक्त या स्वर्ग कामना के लिए परिश्रम कर रहे हैं । असल में तप द्वारा वे अपनी आत्म विद्युत को बहुत तीव्र करते रहते हैं और उसके द्वारा अपने पवित्र विचारों का ब्रोडकॉस्ट करते रहते हैं, जिन्हें सांसारिक मनुष्य अपने मानस रेडियो यन्त्रों पर भली प्रकार सुन सकें । महात्मा गाँधी सत्याग्रह के लिए ज्यादा तादाद में स्वयं सेवक नहीं चाहते, वे कहते हैं कि यदि पर्याप्त आत्मिक शक्ति वाले थोड़े से आदमी हों तो भी सफलता मिल सकती है, जो आदमी चाहे जैसे उल्टे-सीधे विचार करते रहते हैं, उन्हें जानना चाहिए कि बुरे विचार अपनी जाति वालों को बुलाकर तुम्हारे ऊपर लाद देंगे और जीवन को बड़ा दुःखमय बना देंगे । पाप पूर्ण इच्छा करने से उनका असर दूसरों के लिए उत्पन्न होता है । इसलिए संसार में बुराई बढ़ती है, अतएव सदा सावधान रहना चाहिए कि पापमय विचार मन में न घुसने पायें । जब उनका उदय हो उसी क्षण धकेल कर बाहर निकाल देना चाहिए । अपनी और संसार की सर्वोत्तम सेवा इसी में है, कि तुम सदा पवित्र विचार करो । प्रेम, दया, परोपकार, सहानुभूति के विचार, अपनी उन्नति और दूसरों की सच्ची सेवा करने का निश्चित मार्ग है ।

साधारण रीति के किए जाने वाले विचार हल्के होते हैं, और उनका असर भी हल्का होता है, किन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब यह गहरे अन्तराल तक पहुँच कर विश्वास का रूप धारण कर लेते हैं, तो इनका बड़ा अद्‌भुत असर दिखाई पड़ता है । कहा गया है कि "विश्वासो फलदायकः" दृढ़ विश्वास इतना प्रबल होता है कि इसके द्वारा उपस्थित होने वाले फल भी आश्चर्यजनक होते हैं । एक चिकित्सक, चिकित्साशास्त्र में बड़ा कुशल है, रोग विज्ञान का वह बड़ा भारी पंडित है, औषधियाँ एक से एक बढ़िया रखता है, किन्तु रोगी को उसके इलाज से कुछ भी फायदा नहीं पहुँचता, किन्तु दूसरा वैद्य जो बीमारी के बारे में बहुत ही कम जानता है, और यहाँ मामूली-सा चूरन-चटनी दे देता है, तो बीमार को फौरन ही फायदा होता है । उसका कारण विश्वास है । रोगी को उस विद्वान् चिकित्सक पर विश्वास न था, किन्तु उस अनाड़ी वैद्य पर उसे भरोसा था, इसलिए वे कीमती दवाएँ बेकार हो गईं, और घास-फूस संजीवन साबित हुआ । डॉक्टर लोग अब इस बात को स्वीकार करते हैं कि विश्वास से बढ़कर और कोई दवा नहीं है । सच्ची बात तो यह है कि इलाज तो एक बहाना है । उसका असर १० प्रतिशत और विश्वास का असर ९० प्रतिशत होता है । लोग अपने विश्वास के आधार पर अच्छे होते हैं, किन्तु समझते यह हैं कि हमें दवा ने अच्छा कर दिया ।

हम देखते हैं, नदी, पर्वत, मूर्ति, मठ, मन्दिर, देवी, देवता आदि को पूजने वालों को ये ही वस्तुएँ उनकी इच्छित कामना पूरी करती हैं, और मनचाहा फल देती हैं । वैसे इन जड़ वस्तुओं में अपनी निज की कुछ भी शक्ति नहीं है । कोई कुत्ता उन पर मूत दे, तो भी अपनी रक्षा नहीं कर सकती, फिर भक्तों को इष्ट फल कैसे देती हैं ? एक तत्वदर्शी ने इस सम्बन्ध में गहरा अनुसन्धान करके बताया है, कि गहरे विश्वास के साथ की हुई आराधना जिस पर समर्पित की जाती है, उससे टकराकर वापस लौट आती है । रबड़ की गेंद को जितने जोर से खींच कर दीवार पर मारा जायेगा, वह उतने ही अधिक वेग के साथ लौटकर तुम्हारे पास आ जायेगी । श्रद्धा और भक्ति की भावना में आत्म शक्ति का बाहुल्य रहता है, और वह इष्ट देव से टकराकर जब वापस लौटती है, तो उसमें पूरा बल होता है । देवता में जितना कम विश्वास होगा, उतना ही कम वह फल देगा । असल में मूर्ति आदि जड़ दस्तुओं में अपना निजी बल कुछ नहीं है, उनमें पूजा के योग्य बस एक ही गुण है, कि जिससे जो कुछ लेते हैं, उसमें बिना रत्ती भर घटाये-बढ़ाये उसे ज्यों की त्यों लौटा देते हैं । महाभारत में एक कथा है कि एकलव्य नामक भील ने गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या सीखनी चाही, जब उन्होंने सिखाने से मना कर दिया, तो एकलव्य ने जंगल में जाकर उस द्रोणाचार्य की मूर्ति स्थापित की और उसी को गुरु मानकर धनुर्विद्या सीखने लगा । फलस्वरूप वह इतना कुशल हो गया, जितना कि प्रत्यक्ष द्रोणाचार्य के शिष्यों में से एक भी न था । इस प्रसंग में यह न सोचना चाहिए कि द्रोणाचार्य की मूर्ति में कुछ चमत्कार था, विद्या देने वाली वस्तु तो उसकी आत्मिक भावना थी जो उस मूर्ति से टकराकर लौटी थी और सन्तोषजनक परिणाम उपस्थित किया था ।

धर्मशास्त्र और योगशास्त्र दोनों ने एक स्वर होकर गुरु की बड़ी महिमा गाई है । कितने ही बड़े-बड़े ग्रन्थ गुरु की महिमा में लिखे गए हैं, यहाँ तक कि गोविन्द से भी गुरु को बड़ा बताया गया है । इस विवेचन का रहस्य यह है कि उस पर जितनी श्रद्धा होगी वह लौटकर उतनी ही मात्रा में तुम्हारी उन्नति करेगी । गुरु कहलाने वाला भी आखिर मनुष्य ही है और जब तक वह शरीर धारण किए हुए है, तब तक शरीरधारी से होनी वाली त्रुटियाँ उससे भी होती रहती हैं । फिर साधारण या थोड़े बहुत उन्नत मनुष्य को उतनी बड़ी महिमा जो प्रदान की गई है, उसका वास्तविक रहस्य यही है, जो ऊपर कहा गया है । महर्षि दत्तात्रेय ने २४ गुरु बनाये थे, जिनमें कई तो अज्ञ मनुष्य और पशु-पक्षी तक थे, वे दत्तात्रेय की अपेक्षा बहुत ही कम ज्ञान रखते होंगे और यहाँ तक कि यह भी न जानते होंगे कि गुरु किसे कहते हैं, या हम किसके गुरु हैं ? फिर भी उन अज्ञानी गुरुओं द्वारा दत्तात्रेय ने उतना ही लाभ उठाया, जितना एक पहुँचे हुए सिद्ध गुरु से उठाया जा सकता है । इस युग में भक्ति का उपहास उड़ाया जाता है, पूजनीय वस्तुओं में दोष ढूँढ़े जाते हैं और श्रद्धा-विश्वास को भ्रम जाल कहा जाता है । कहने वालों को हम झूठा नहीं कहते, क्योंकि पंच तत्वों के बने हुए इस प्रपंच में भ्रम या त्रुटियों के अतिरिक्त और भला हो ही क्या सकता है ? सत्य तो केवल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमात्मा है । उसके अतिरिक्त और जो दिखाई पड़ता है भ्रम है, मिथ्या है । कौन कहता है कि पत्थर की प्रतिमा ईश्वर है या हाड़-माँस का मनुष्य किसी का गुरु है । जो खुद भी चल फिर न सके वह कैसा ईश्वर है, जो अपने विकार भी दूर न कर सके वह कैसा गुरु ? तत्वज्ञानी जानते हैं कि यह वस्तुएँ साध्य नहीं साधन हैं । आत्मा अपने आप अपना विकास या पतन करती है, बाहरी वस्तुएँ तो सहायता मात्र हैं । परन्तु स्मरण रखिये मनुष्य को इन साधनों की अनिवार्य आवश्यकता है । बिना साधनों के साध्य तक पहुँच जाना असम्भव है ।

विश्वास जब अधिक दृढ़ होते हैं, तो वे भी मूर्तिमान हो जाते हैं । भूत-प्रेतों को हम असत्य नहीं कहते । वे होते हैं और कई बार अपने प्रत्यक्ष अनुभव देते हैं, परन्तु अनेक बार हमारे विश्वासों की प्रतिमाएँ ही भूत रूप से दृष्टिगोचर होती हैं । यदि तुम विश्वास कर लो कि अमुक बरगद पर भूत रहता है और अन्धकार के समय वहाँ जाओ तो पेड़ की कोई टहनी ही भूत बन जायेगी और उसमें हाथ, पाँव, मुँह आदि सारे अंग भूत जैसे उग आयेंगे । हो सकता है कि वह चले-फिरे भी और कुछ बातचीत भी करे । असल में वह बरगद का भूत नहीं था, वरन् विश्वास का भूत था । जैसे कि मूर्तिपूजकों को मूर्तियाँ अपना प्रभाव दिखाती हैं । देखा गया है कि अधिकांश भूत उन्हीं लोगों पर असर करते हैं, जो उन पर विश्वास करते हैं । हाँ, उन थोड़ी-सी घटनाओं की बात अलग है, जिनमें वास्तविक प्रेतों का समावेश होता है । तान्त्रिक अनुष्ठानों के द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्थम्भन तथा अन्य प्रकार के भले-बुरे काम होते हैं । इन क्रियाओं में कितने ही बार ऐसा देखा जाता है कि कुछ चमत्कारिक कार्य ऐसे होते हैं, मानो कोई दूसरा अप्रत्यक्ष व्यक्ति हाथ-पाँव से इन कामों को कर रहा है । यह कार्य किसी भूत-प्रेत के नहीं, वरन् तान्त्रिक की भावना प्रतिभा के द्वारा होते हैं । छाया पुरुष कई व्यक्तियों को सिद्ध होता है, यह कोई और चीज नहीं है, केवल अपने विद्युत परमाणुओं के द्वारा विश्वास के आधार पर रची गई एक सजीव मूर्ति है, जो सूक्ष्म तत्वों से बनी हुई होने के कारण सूक्ष्म ज्ञान रखती है और कितने ही काम शरीरधारी की भाँति या उससे भी अच्छी तरह कर सकती है, यद्यपि उसकी स्थूल देह नहीं होती । कर्ण पिशाचिनी, यक्षिणी, भैरवी, दिव्यस्वप्ना आदि की सिद्धियों में भी आत्म तेज के कुछ प्रबल चित्र बन जाते हैं, जो उग्र साधन द्वारा गहरे जमाये गए विश्वास की मात्रा के अनुसार कार्य करते हैं । देवताओं का या ईश्वर का दर्शन होना, दिव्यवाणी सुनाई पड़ना, या किन्हीं व्यक्तियों में कुछ विशेष चमत्कारिक शक्तियाँ होना यह सब मानवीय विद्युत के मूर्तिमान और जीते-जागते चमत्कार हैं ।

स्त्री पुरुष का आकर्षण

स्त्री और पुरुष के शरीरों में अलग-अलग प्रकार की विद्युतधाराओं का विशेष प्रवाह होता है । स्त्री के शरीर में निगेटिव (आकर्षण) और पुरुष के शरीर में पोजेटिव (विकर्षण) विद्युत अधिक मात्रा में होती हैं । युवावस्था में नवीन रक्त होने के कारण यह धारायें भी अधिक मात्रा में होती हैं, किन्तु दोनों ही एकांगी होती हैं । दोनों के मिलने पर दोनों शरीरों का लाभ होता है । युवा स्त्री और पुरुषों के शरीर जब आपस में मिलते हैं, तो दोनों को लाभ होता है और शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास में मदद मिलती है । दोनों की अपूर्णता दूर होती है । संसार की जनगणना बताती है कि विश्व भर में विवाहितों की अपेक्षा अविवाहित लोग अधिक बीमार पड़ते और अधिक मरते हैं । आप विधवा व विधरों में शारीरिक कान्ति और अच्छा स्वास्थ्य नहीं देख सकते, वे सदा किसी न किसी रोग का रोना रोते रहेंगे । इस सच्चाई को सुनकर चौंकने की जरूरत नहीं है । हम अखण्ड ब्रह्मचर्य या दीर्घकालीन ब्रह्मचर्य के विरोधी नहीं हैं, और न यह शरीर शास्त्र का सत्य सिद्धान्त ही उसके विपक्ष में है । जो लोग योग की विशिष्ट क्रियाओं द्वारा वीर्य की प्रचण्ड शक्ति को अपने काबू में करके पूरी तरह रोककर उसे दूसरी तरफ व्यायाम या ज्ञानोपार्जन में खर्च कर सकें वे वैसा करें । वे दीर्घकाल तक ब्रह्मचारी रह सकते हैं । परन्तु उन कुछ अपवादों के कारण शरीर शास्त्र की सच्चाई में परिवर्तन नहीं किया जा सकता । मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए यह आवश्यक है कि वे विवाहित जीवन व्यतीत करें और स्त्री-पुरुष आपस में मिलकर अपने शरीरों के अभाव की पूर्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हुए स्वाभाविक जीवन व्यतीत करें । आयुर्वेद तथा पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र इस बात में एक मत हैं कि साधारण विचारों के लोग यदि बहुत काल तक अपनी काम वासना को मारते रहें तो उन्हें प्रमेह, नपुंसकता या इसी प्रकार के अन्य रोग हो जाते हैं । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण विधवा और विधुरों की अस्वस्थता हम घर-घर में देख सकते हैं । अनुभव बतलाता है कि गृहस्थ धर्म पालन करने पर दोनों ही पक्षों को लाभ होता है । हानि केवल गर्भाधान क्रिया की मर्यादा को भंग करने में है, जो भोजन बनाने की क्रिया में गल्ती करता है, वह परिणाम में कड़वी रोटी खायेगा, किन्तु इस दोष के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि रोटी का स्वाद कड़वा होता है ।

सम वय के स्त्री-पुरुषों को विवाहित होना चाहिए, क्योंकि मनुष्य जितनी अधिक आयु का होता जाता है, उतनी ही उसकी शोषक शक्ति बढ़ती जाती है । छोटा पौधा अपने आस-पास की जमीन से थोड़ी-सी खुराक खींचता है किन्तु बड़ा पेड़ बहुत दूर-दूर से जमीन में बहुत गहराई से खुराक खींच लाता है । इसी प्रकार जोड़े में जो अधिक आयु का होगा, वह छोटी उम्र वाले को चूसेगा । आयुर्वेद बतलाता है, कि छोटी उम्र की स्त्री के सहवास से बल बढ़ता है, समान से सम रहता है, और अधिक आयु वाली से बल क्षीण होता है । ठीक यही बात स्त्री के सम्बन्ध में है, यदि उसका पति छोटी आयु का है तो पुष्ट होगी, बराबर का है तो समान बल रहेगा और अधिक आयु का है, तो क्षीण हो जायेगी । पुरुष जाति इस सिद्धान्त को बहुत प्राचीन काल से जानती आ रही है, और उसे अच्छी तरह व्यवहार में लाती है, किन्तु इस व्यापक सत्य को उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ छिपाये रखा है, ताकि स्त्रियों में असन्तोष पैदा न होने पाये । हम में से कोई अपने लड़के का विवाह उससे बड़ी लड़की के साथ नहीं करता । एकाध वर्ष स्त्री बड़ी हो तो वह सम ही गिनी जायेगी । इस पर भी समाज में इसे ठीक नहीं समझा जाता कि बहू वर की बराबर उम्र की हो । परन्तु ऐसा तो कहीं भी नहीं देखा जाता कि २५ वर्ष की लड़की की शादी १४ वर्ष के लड़के के साथ हो, क्योंकि इसमें लड़के को हानि अधिक है । यही बात लड़की पर लागू होती है । उसका पति उससे जितना ही उम्र में अधिक होगा, उतनी ही उसे हानि है । अधिक आयु का पति कम उम्र की स्त्री का निश्चय ही शोषण करता है । बड़ी उम्र के पुरुष जब दूसरी तीसरी शादी करके छोटी बहू लाते हैं, तो उनके शरीर उसके जीवन तत्वों का शोषण करने लगते हैं, जैसे अमरबेल जिस पेड़ पर छा जाती है, उसका रस खींचकर स्वयं बलवान होती रहती है । वृद्धावस्था में विवाह करने वाले पुरुषों की आयु बढ़ जाती है । इनका स्वास्थ्य भी सँभल जाता है, किन्तु स्त्री बहुत ही अल्प समय में निस्तेज और बुड्ढी हो जाती है, जो पिता धन के लोभ से अपनी लड़कियों की शादी वृद्ध पुरुषों के साथ कर देते हैं, वे उसे तिल-तिल करके अपना जीवन दूसरे को चटाने के लिए असहाय छोड़ देते हैं । आपने देखा होगा कि वयस्क पुरुषों की अल्पायु स्त्रियाँ अक्सर बीमार पड़ी रहती हैं और उनका मन सदा दुःखी और निराश बना रहता है, वे नहीं जानतीं कि इसका वास्तविक कारण क्या है ? यदि जान भी लें तो बेचारी कर भी क्या सकती हैं ? जिस प्रकार किसी गरीब की गहरी कमाई को जबरदस्ती छीनकर खाना पाप कर्म है, उसी प्रकार वृद्ध विवाह भी है । दुःख की बात है कि पुरुष जाति अपने स्वार्थ पर न्याय का बलिदान कर रही है ।

सहवास के समय शारीरिक अंग उत्तेजित होते हैं और उनकी उष्णता बढ़ती है, यह बढ़ी हुई उष्णता एक-दूसरे के अंगों में प्रविष्ट होती है । शरीर की सबसे प्रबल और सजीव श्लेष्मा वीर्य है । स्खलन के समय दोनों की आन्तरिक शक्ति का पात होता है । इस विद्युतधारा को गुप्त अंगों द्वारा ग्रहण करके अपने अन्दर धारण कर लेते हैं । इस प्रकार दोनों के गुण, कर्म, स्वभावों का एक-दूसरे में परिवर्तन होने लगता है । एक समान वस्तुएँ आपस में आकर्षित होती हैं, यह विज्ञान का आद्य नियम है । स्त्री के विद्युत कण पुरुष के शरीर में और पुरुष के विद्युत कण स्त्री के शरीर में व्याप्त हो जाते हैं, वे अपने मूल जन्म स्थान की याद करके बार-बार उसी ओर खिंचते हैं, जैसे कोई परदेशी बार-बार अपने घर का स्मरण करता है । इसी प्रकार दोनों के विद्युत कण एक-दूसरे की ओर खिंचते रहते हैं । इसी विद्युत क्रिया को दम्पत्ति प्रेम कहते हैं । दोनों में बड़ी ममता बढ़ जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्य प्रियजनों से उतना प्रेम नहीं होता, जितना दम्पत्ति में होता है । विद्युतकणों के दूसरे शरीर में जाने पर प्रेम बढ़ता है, इसका दूसरा प्रमाण सन्तान प्रेम है । माता-पिता के शरीर के कुछ भाग से सन्तान का शरीर बनता है, इसलिए वह भाग अपने मूल स्थान की ओर खिंचते और खींचते रहते हैं । सन्तान के शरीर में पिता की अपेक्षा, माता का भाग अधिक लगा होता है, इसलिए बच्चों में पिता की अपेक्षा माता की ममता अधिक होती है ।

स्त्री-पुरुष के साथ-साथ रहने से एक-दूसरे को प्रोत्साहन मिलता है और प्रसन्नता होती है । यह बुरी प्रथा है कि स्त्रियाँ बाहर के पुरुषों से तो बातचीत करें, परन्तु घर में पति के आने पर घूँघट निकाल लें या उनसे बात न करें । यह प्रथा मनोविज्ञान की दृष्टि से बहुत ही खराब है और उसे जितनी जल्दी हो सके छोड़ना चाहिए । भारत में स्त्रियाँ पतियों के साथ बाहरी काम-काजों में साथ-साथ काम नहीं कर सकतीं, तो भी इतना तो होना ही चाहिए कि जब वे घर आयें तो स्वतन्त्रतापूर्वक बोल-चाल सकें । सात्विक सहवास यही है कि स्त्री-पुरुषों को आपस में अधिक सम्भाषण की पूरी सुविधा और स्वतन्त्रता प्राप्त हो । कभी-कभी विशेष अवसरों पर आलिंगन आदि भी । गर्भाधान क्रिया मर्यादा से बाहर कदापि न जानी चाहिए । जब निद्रा लेने का समय हो जाय उसके उपरान्त तो स्त्री-पुरुष को एक शय्या पर कदापि न सोना चाहिए, क्योंकि दोनों के शरीर एक-दूसरे को खींचने वाले चुम्बक से भरपूर होते हैं, इसलिए सोते समय भी एक-दूसरे को खींचकर अनावश्यक काम जागृत करते हैं और निद्रा को भंग करते हैं । आवश्यकता से अधिक इन्द्रियोत्तेजना और पूरी निद्रा का न आना यह दोनों ही बातें स्वास्थ्य के लिए अहितकर हैं । इसलिए यह स्मरण रखना चाहिए कि जब सोने का समय हो तो दोनों अलग-अलग बिस्तरों पर आराम करें ।

वेश्या गमन ऐसा है जैसे दावत में सैकड़ों आदमियों की बची-खुची, थूक, लार लगी हुई गन्दी जूठन चाटना । इससे गर्मी, सुजाक आदि शारीरिक कष्ट होते हैं, सो तो होते ही हैं, मानसिक क्षति कई गुनी अधिक है । वेश्याएँ अपने काम को पाप कर्म जानती हैं, जो व्यक्ति जान-बूझकर पाप कर्म करता रहता है, उसका शारीरिक वातावरण बड़ा ही दुष्ट और घातक हो जाता है । ऐसे वातावरण के प्रभाव से बचे रहना कठिन है । वेश्या के पास जो लोग आते हैं वे सभी प्रायः पाप कर्मी होते हैं, वे अपनी-अपनी सौगात वेश्या के मन पर छोड़ते जाते हैं, ऐसे असंख्य दुराचारियों की विचारधारा वेश्या के शरीर में भरी होती है, उसके निकट आने वाला व्यक्ति उसके काले रंग की छाप लिए बिना बच नहीं सकता । वेश्या के शरीर और मन जिन पापमय कृत्यों में दिन भर डूबा रहता है उनका एक वायुमण्डल तैयार हो जाता है, उस वायुमण्डल में एक बार फँसकर फिर पीछा छुड़ाना बहुत ही मुश्किल है । वेश्यालय, मदिरालय, द्यूतग्रह या अन्य ऐसे ही स्थानों में व्याप्त, असंख्य लोगों की दुर्वासनाएँ नये आदमी के पीछे डाकिनी की तरह चिपट जाती हैं और उसे खींच-खींचकर उसी नारकीय रंग में अधिकाधिक रंगने को बाध्य करती हैं, फलस्वरूप इनके चक्कर में पड़ जाने वाला आदमी उच्च जीवन से पतित होकर पाप और नरक की ज्वाला में जलने लगता है । पर स्त्री गमन में भय और सामाजिक दण्ड की आशंका भरी रहती है । यह आशंका और भय प्रथम तो समागम को निरोमन्द बना देते हैं, दूसरे वे भय के विचार मन में जमा कर अन्य शारीरिक और मानसिक उपद्रव उत्पन्न करते हैं, अतएव इससे भी वेश्या गमन की ही भाँति बचना चाहिए ।

सत्संग

मनुष्य दूसरों की विद्युत शक्ति को भी खींचकर अपने अन्दर धारण कर सकता है । संगति का भला-बुरा असर होना प्रसिद्ध है । दुष्टों के संग से मनुष्य वैसा ही बनने लगता है और सत्संगति में रहकर सुधर जाता है । कारण यह है कि जिस प्रकार पुष्प अपनी गन्ध के परमाणु हर घड़ी वायु में फेंकता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य शरीर भी अपनी शारीरिक विद्युत के परमाणु हर घड़ी इधर-उधर उड़ते रहते हैं । जिस प्रकार बगीचे का वायुमण्डल सुगन्ध से भर जाता है उसी तरह मनुष्य की शारीरिक विद्युत के परमाणु अपने आस-पास वैसा ही घेरा बना लेते हैं, जैसे कि उसके विचार या शारीरिक स्थिति होती है । डॉक्टर लोग कहते हैं कि बीमार के पास उसकी बीमारी के कीड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उड़ते रहते हैं, इसलिए स्वस्थ मनुष्यों को उनसे दूर रहना चाहिए, नहीं तो वे कीड़े उन पर भी आक्रमण करेंगे । डॉक्टर लोग खुद बहुत सावधान रहते हैं, रोगी को छूकर वे फौरन हाथ धोते हैं, जो औजार रोगी के शरीर को स्पर्श करता है उसकी भी सफाई करते हैं, वे जानते हैं कि ऐसा न करेंगे तो बीमारी के कीड़े दूसरों पर भी हमला करेंगे । हम नित्य देखते हैं कि एक मनुष्य की छूत दूसरे मनुष्यों को लगती है और कई बार वह भी उसी बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं । यहाँ शब्दों के फेर के कारण लोग समझने में कुछ भ्रम करते हैं । कीड़े या जर्म्स शब्द से यह न समझ लेना चाहिए कि यह घुन, चींटी या दीमक जैसे कीड़े होते हैं । यदि यह इसी प्रकार के होते, तो केवल उन्हीं लोगों पर असर करते जो उन्हें छूते, परन्तु यह तो पास जाने पर बिना छुए भी असर करते हैं । तब क्या यह मक्खी, पतंग या तितली की तरह पंखों से उड़ने वाले होते हैं ? नहीं, यह इस तरह के भी नहीं होते, वास्तव में यह किसी तरह के नहीं होते, इनका रंग-रूप दुनिया के किसी भी कीड़े से नहीं मिलता । जीव का प्रधान चिह्न उसके हाथ, पाँव, नाक, आँख, मुँह आदि इन्द्रियाँ हैं, ऐसी कोई भी इन्द्रिय इनमें नहीं देखी जाती, फिर यह जीव या कीड़े किस प्रकार हुए ? असल में यह जर्म्स मनुष्य शरीर में से हर घड़ी निकलने वाली बिजली के परमाणु मात्र हैं । सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से देखने पर यह परमाणुओं की शक्ल में देखे जाते हैं और उनके दोनों सिरों पर निगेटिव और पोजेटिव धाराओं के अंश अनुभव किए जाते हैं । हमारे मत की पुष्टि उस बात से भी होती है कि यह हर व्यक्ति पर असर नहीं करते । जैसे कि बिजली हर चीज पर असर नहीं करती । अस्पतालों में परिचायक छूत के रोगियों की परिचर्या करते हैं, पर वे बीमार नहीं पड़ते । घरों में भी छूत की बीमारी सब को नहीं लगती, जो लोग निर्भय रहते हैं, परवाह नहीं करते, अपना मन मजबूत रखते हैं, उनके ऊपर असर नहीं होता, किन्तु जो डरते हैं, घबड़ाते हैं वही बीमार पड़ते हैं । डरने का अर्थ उन विद्युत परमाणुओं को आकर्षित करना और निर्भय रहने का अर्थ उन्हें दुतकार देना है । यह जर्म्स बिना बुलाये किसी पर नहीं जाते, जैसे कि बिजली की प्रचण्ड शक्ति भी विरोधी वस्तुओं पर असर नहीं करती । यदि यह कीड़े मामूली कीड़ों की तरह होते तो किसी के बुलाने न बुलाने की परवाह न करते और जैसे चींटी हर दीवार पर चढ़ जाती है, वैसे ही यह रोग कीट भी हर एक मनुष्य पर चढ़ दौड़ते, परन्तु ऐसा नहीं होता ।

यह न समझना चाहिए कि यह जर्म्स बीमार आदमियों के शरीर में से ही निकलते हैं । यह तो हर मनुष्य के शरीर से हमेशा हर हालत में निकलते रहते हैं, जैसे कि पानी में से भाप । मामूली तौर से हमें पानी में से भाप उठती हुई दिखाई नहीं देती परन्तु बर्तन में रखा हुआ पानी धीरे-धीरे घटने लगता है और कुछ समय में सूख जाता है । इससे सिद्ध होता है कि यद्यपि हमें दिखाई नहीं देता तो भी सदैव पानी धीरे-धीरे उड़ता रहता है । रोगी और निरोग सभी मनुष्यों के शरीर में से विद्युत परमाणु उड़ते रहते हैं और जैसे वह होते हैं अपना असर दूसरों पर डालते रहते हैं ।

अन्य जीव-जन्तुओं में निरोधक शक्ति नहीं होती इसलिए उन पर इन परमाणुओं का विशेष असर होता ही है, ऋषियों के आश्रम के निकट पहुँचते-पहुँचते सिंह आदि हिंसक पशु तक अपना स्वभाव भूल कर प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु मनुष्य दूसरे ही प्रकार का प्राणी है, इसमें परमात्मा ने निरोधक शक्ति प्रबल मात्रा में दी है । उसकी इच्छा बिना कोई असर उस पर प्रायः नहीं पड़ता । साधारणतः लोगों में यह निरोधक शक्ति बहुत कम मात्रा में पायी जाती है । इसलिए वे किसी नई बात को देखने पर आमतौर से उससे प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु यदि कोई व्यक्ति उस विषय से बिल्कुल अपरिचित हो या दृढ़तापूर्वक उसका प्रतिरोध करता हो तो उस पर कुछ भी प्रभाव न होगा । अक्सर लोगों को अँधेरे में डर लगता है, किन्तु जंगली लोग जिन्हें अँधेरे में ही काम करना पड़ता है, इस बात को नहीं जानते कि अँधेरे में कोई डर की बात है । इसी प्रकार एक मनस्वी व्यक्ति विश्वास करता है कि मुझे कोई भय नहीं डरा सकता, अतएव वह भी अँधेरे में निर्भय विचर सकता है । महान पुरुषों के निकट वातावरण में आने पर असंख्य मनुष्यों पर असर पड़ता है । गाँधी जी के विचारों से असंख्य मनुष्यों की जीवन दिशा बदल गई, उनके अन्दर मानसिक क्रान्ति हो गई, किन्तु उनका झोंपड़ा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाने वाले मजूर या अन्य ऐसे ही अज्ञानी मनुष्यों पर उनका कुछ भी असर नहीं हुआ, यद्यपि वे उनके साथ रहते रहे । इसी प्रकार एक दृढ़ विरोधी व्यक्ति पर भी उनका कुछ असर नहीं होता, यद्यपि वह उस महापुरुष की तुलना में सब प्रकार नगण्य है । गाँधी जी के एक पुत्र पर उनका रत्ती भर भी असर नहीं है, यद्यपि वह उनके निकट सम्पर्क में आता है ।

उपर्युक्त पंक्तियों में हमारा यह बताने का अभिप्राय है कि दूसरों के शारीरिक और मानसिक शक्ति सम्पन्न विद्युत परमाणुओं को मनुष्य चाहे तो गहरे अज्ञान या प्रबल मनस्विता के द्वारा रोक भी सकता है । शेष दशाओं में उनका असर दूसरों पर अवश्य होता है । उपर्युक्त अपवाद हजारों घटनाओं में कहीं एकाध बार देखे जाते हैं अन्यथा साधारणतः मनुष्यों की मानसिक स्थिति ऐसी ही रहती है कि वे नये प्रभावों को ग्रहण करें । बालकों में न तो गहरा अज्ञान होता है । (क्योंकि इस समय उनके पूर्व संस्कार पूर्णतः सुप्त होकर नये साँचे में नहीं ढल गए होते) और न निरोधक शक्ति का विकास होता है, इसलिए वे जैसे लोगों के साथ रखे जायेंगे निश्चय ही वैसे बन जायेंगे । इसमें भी कुछ अपवाद पाये जाते हैं, कुछ बालक माता-पिता से विरुद्ध गुण-स्वभाव के होते हैं, इसका कारण उनके प्राचीन अत्यन्त प्रबल संस्कार समझने चाहिए । उपर्युक्त कुछ अपवादों को छोड़कर शेष निन्यानवे प्रतिशत लोगों पर संगति का असर होता है । किसका असर, किस पर, कितना होगा ? यह एक प्रकार की कुश्ती है जिसकी धारणा, योग्यता और आकर्षण शक्ति जितनी अधिक होगी वह दूसरों को उतना ही अधिक अपनी ओर आकर्षित, प्रभावित कर लेगा । रोज हम लोग बहुत से लोगों से मिलते-जुलते हैं, पर कोई खास असर हमारे ऊपर नहीं होता, क्योंकि उनके विद्युत परमाणु साधारण दर्जे के होते हैं, और हमारे मन से टकराकर लौट जाते हैं, किन्तु विशेष शक्ति रखने वालों का असर अवश्य ही हमारे ऊपर होता है । विशेष रूप से भले या विशेष रूप से बुरे लोग ही किसी को प्रभावित कर सकते हैं, हमारे मन में जिस प्रकार के विचारों के बीज होते हैं, उसी तरह के लोगों की ओर आकर्षित होते हैं और उनके सहवास से अपने उन बीजों को वृक्ष रूप में बढ़ा लेते हैं, तब कहा जाता है कि अमुक मनुष्य का अमुक प्रकार का असर इस पर हुआ है । जब तक सांसारिक अनुभव परिपक्व दशा में नहीं होता तब तक दोनों तरफ झुक सकने का अंदेशा रहता है, नवयुवकों में हर हवा का विरोध कर सकने की क्षमता नहीं होती और वे जैसा देखें उसी तरफ बह सकते हैं । कई अधिक उम्र के व्यक्ति भी ऐसा ही मुलायम मन लिए होते हैं और वे दूसरों से बहुत जल्द प्रभावित होते हैं किन्तु जीवन की एक दिशा निर्धारित हो जाने, कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लेने पर अपने विषय का ही प्रभाव पड़ता है, अन्य प्रकार के असर व्यर्थ हो जाते हैं ।

आपको अपना जीवन जिस ढाँचे में ढालना हो उस प्रकार के प्रतिभाशाली लोगों का सत्संग कीजिए और उनके निकट श्रद्धा के साथ, आदरपूर्वक, विनम्र होकर जाइये । नम्र होने का तात्पर्य अपने अन्दर अधिक ग्राहक शक्ति उत्पन्न करना है—"तद्विद्धि प्रणपातेन परिप्रश्नेन सेवया" अर्थात् प्रणाम करके, सेवा करने और प्रश्न करके ज्ञान को प्राप्त करो । अहंकार युक्त उद्धत स्वभाव के साथ सत्संग करने का अर्थ अपने अन्दर निरोधक शक्ति को भर लेता है, इससे उसको कुछ भी लाभ न मिलेगा । जिससे कुछ प्राप्त करना हो उस पर श्रद्धा करते हुए नम्रतापूर्वक निकट जाओ, ऐसा करने से तुम्हारी आकर्षण शक्ति बढ़ जायेगी और उन महानुभाव के आस-पास उड़ते हुए परमाणुओं को अपने अन्दर खींच सकोगे, पवित्र लोगों के निवास स्थानों पर बैठने से ही अपने अन्दर बड़ी शान्ति प्राप्ति होती है और बुद्धि का विकास होता हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

दो व्यक्ति जब एक-दूसरे को कुछ देने-लेने की दृष्टि से एकाग्र होकर सत्संग करते हैं, तो उसका फल बहुत ही चमत्कारिक होता है । दोनों की एकाग्रता हो जाने से दोनों आपस में सम्बद्ध हो जाते हैं, एक व्यक्ति अपना ज्ञान दूसरे पर फेंकता है और दूसरा उसे पूरी तरह पकड़ता है, वह ज्ञान ग्राहक के अन्तःकरण में बहुत गहरा उतर जाता है, मामूली काम-काज का ज्ञान, लोक व्यवहार की शिक्षा, मन और बुद्धि तक ही सीमित है, इसलिए यह इतने प्रभावशाली और आनन्ददायी नहीं होते । कारण ? देने वाले के भौतिक ज्ञान और लेने वाले की भौतिक बुद्धि में ही यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदान-प्रदान होकर ऊपर-उथला ही रह जाता है, फिर भी मनोयोगपूर्वक सिखाया या सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है, किन्तु आध्यात्मिक शिक्षा के साथ केवल वाचक ज्ञान नहीं होता अपितु उसके साथ आत्मिक अनुभूति भी होती है । इसलिए वह वाचक ज्ञान की अपेक्षा हजारों गुना अधिक प्रतिभा सम्पन्न होता है और उसमें ऐसी प्रजनन शक्ति होती है, कि उसके परमाणु को भी कोई व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा में ग्रहण कर ले तो वह बीज अपने आप अपना वंश विस्तार करता है और गुरु के अन्दर जितना ज्ञान था वह अनायास ही अपने अन्दर उग पड़ता है । दीक्षा का आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है, इसमें समर्थ गुरु अत्यन्त मनोयोगपूर्वक शिष्य को गहरी आध्यात्मिक भूमिका तक नीचा उतरकर अपने कुछ बीजाणुओं को इंजेक्शन भी भाँति वहाँ पनपने के लिए छोड़ देता है । यह बीज अमर होकर उसके अन्तराल में पड़े रहते हैं और यदि सिंचन हुआ तो बहुत जल्द फलित हो उठते हैं अन्यथा किसी भी दशा में मरते नहीं और जब भी कभी अवसर पाते हैं हरे हो जाते हैं । आज दंभी और अयोग्य व्यक्ति गुरु दीक्षा जैसे अत्यन्त दुरूह संस्कार को करने का साहस कर डालते हैं । वे धन के लालच से इस उच्च कोटि की योगिक क्रिया को भी तमाशा बनाते हैं और इसका उपहास कराते हैं यह कितने दुःख और लज्जा की बात है । उच्च आत्माओं द्वारा दी हुई दीक्षा निष्फल नहीं जा सकती, उसकी प्रतिक्रिया बहुत ही जल्द दिखाई देने लगती है । शक्तिपात की गुह्य दीक्षा तो मनुष्य को दूसरे ही रूप में बदल सकती है । कई योगी सिर पर हाथ रखकर शिष्य की कुंडलिनी शक्ति जागृति कर देने की क्षमता रखते हैं । हमारे अपने अनुभव में कई ऐसे महात्मा आये हैं, कि वे जल अपना आत्मिक तेज उग्र करते हैं तो उनके शरीर में बिल्कुल बिजली जैसी धारा चल उठती है, उनके शरीर को उस समय छूने पर बिल्कुल बिजली से भरे हुए तारों को छूने के धक्के का अनुभव होता है ।

यहाँ हम बहुत आगे की बात कह गए । पाठकों को इतना आगे जाने की जरूरत नहीं । उन्हें तो इतना ही जानना चाहिए कि सत्संग का लाभ विनम्र बनकर उठाया जा सकता है । उत्तम विचार वाले प्रबल मनस्वियों के निकट जाने का अवसर ढूँढ़ते रहना चाहिए और जब-जब ऐसे प्रसंग आयें लाभ उठाना चाहिए । यदि तुम्हारा काम-काज करने का या रहने-सहने का प्रबन्ध उत्तम विचारवान लोगों के साथ हो सके तो अन्य प्रकार का कष्ट उठा कर भी वैसा करना चाहिए, क्योंकि उसके द्वारा जो लाभ होता है, वह अकथनीय है । सत्संग की महिमा को वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर की बात है । पारस के सत्संग में लोहा सोना बन जाता है, किन्तु आत्मा के सत्संग से जीव परमात्मा बन जाता है ।

शरीर से निकट बैठकर सत्संग करना सबसे उत्तम है । परन्तु जहाँ ऐसी सुविधा न हो वहाँ अन्य प्रकार से भी यह हो सकता है । अपने जिन विचारों को तुम पुष्ट करना चाहते हो, उसके लिए मानवीय व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार करो, उनके हाथ के लिखे हुए पत्र औषधि की तरह बड़ी प्रेरणा भरे हुए होते हैं । पत्र का कागज उनके हाथ में आता है, और उनके विचारों से लद जाता है । पानी में बिजली को पकड़ने की बड़ी ताकत है । स्याही के साथ वे विचार कागज से चिपक जाते हैं । यह पत्र आधे मिलन का काम देता है । प्राचीन महापुरुषों की हस्तलिपियों को बहुत अधिक मूल्य में लोग खरीदते हैं क्योंकि उन कागजों में उन महानुभावों के जीवित विचार चिपके हुए हैं । तुम्हें जब अपने किसी मित्र का पत्र मिलता है, तो निश्चय ही उससे आधे मिलन का अनुभव करते होंगे । सत्संग का यह दूसरा उपाय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

छपी हुई पुस्तकें भी अपने लेखक की भावनाओं को धारण किए रहती हैं । यद्यपि छापेखाने की स्याही के साथ उन विचारों का कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु उन व्यक्तियों को पढ़ते ही ठीक उसी प्रकार के विचार अपने मन में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि उस पुस्तक को लिखते समय लेखक के मन में उत्पन्न हुए थे । 'परकाया प्रवेश' पुस्तक में बताया जा चुका है, कि विचारों का कभी नाश नहीं होता, जो विचार मस्तिष्क से निकलते हैं, वे अनन्त काल तक ईथर तत्व में मंडराते रहते हैं और कोई जब उनके समान विचार करता है, तो दौड़कर वहीं पहुँच जाते हैं । यदि किसी प्रबल मनस्वी व्यक्ति के वे विचार हैं, तो सशक्त होंगे और अधिक असर करेंगे । पुस्तक के अक्षर पढ़ते ही जो विचार हमारे मन में उत्पन्न होते हैं, वे ही लेखक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के विचार वायुमण्डल में घूम रहे हैं, इस अवसर पर वे अविलम्ब दौड़ पड़ते हैं, और पढ़ने वाले के विचारों के साथ सम्मिलित हो जाते हैं, और लेखक सत्संग का आनन्द अनुभव करने लगता है । विचारों के परमाणुओं की गति इतनी तीव्र है, कि एक सेकण्ड में तीन बार पृथ्वी की परिक्रमा कर सकते हैं । इसलिए चाहे वह लेखक कितनी ही दूर रहा हो, उसके विचारों को तुम्हारे पास तक पहुँचने में तनिक भी विलम्ब न होगा । लेखक ने जितने मनोयोग के साथ उन विचारों को लिखा होगा, उतना ही उसका अधिक असर होगा । हल्के तौर से या इधर-उधर की यों ही जो पुस्तकें लिखी जाती हैं, उनका पाठकों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होता । यहाँ तक कि वे अच्छी तरह उसे समझ भी नहीं पाते, चाहे भाषा कैसी ही साधारण क्यों न हो । उत्तम विचारों की और अधिकारी लेखकों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें पढ़नी चाहिए, और यदि उनसे विशेष लाभ उठाना है तो लेखक का चित्र ध्यान में रखते हुए यह समझते जाना चाहिए कि यह लेखक मेरे सामने बैठकर ही इन बातों को समझा रहा है । इस दृष्टि से पुस्तकों में लेखक का चित्र होना जरूरी है । उत्तम पुस्तकों के सत्संग से भी हम पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं ।

विचारों का गम्भीर मनन और खोज सम्बन्धी बारीक काम तो एकान्त और शान्त वातावरण में होता है परन्तु दबी हुई आत्मशक्ति को उभारने के लिए सामूहिक सत्संग में बड़ा बल मिलता है । जब बहुत से लोगों के मन एक बात पर एकत्रित होते हैं, तो उनकी सम्मिलित शक्ति बड़ी जोरदार हो जाती है, और वह लौट कर जब उपस्थित लोगों के पास जाती है, तो उनमें उत्साह और स्फूर्ति भर देती है । सभा, जुलूस, कमेटी, दरबार, पंचायत में शामिल होने पर तत्सम्बन्धी विचारों का अधिक प्रभाव होता है । सामूहिक प्रार्थना, सत्संग या संकीर्तन द्वारा भी उन विचारों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है । यदि कई आदमी साथ-साथ अभ्यास करें, संघ बनाकर सत्संग किया करें, तो उन्हें एकान्त की अपेक्षा अधिक स्फूर्ति मिलेगी । परन्तु स्मरण रहे इसका फल शक्ति का उदय करने तक ही है । किसी वस्तु का अन्वेषण या तत्व प्राप्ति तो एकान्त में ही हो सकती है ।

बिना किसी वस्तु की सहायता के एक नियमित समय पर यदि दो व्यक्ति एकाग्र होकर बैठें और अपने विचार एक-दूसरे को भेजने का प्रयत्न करें, तो थोड़े दिनों के अभ्यास से ही उन्हें आशातीत सफलता मिल सकती है । प्रारम्भिक दशा में भी उन्हें जो संदेश प्राप्त होंगे, उनमें बहुत से सत्य होंगे । आत्मा निर्मल होगी और एकाग्रता बढ़ती जायेगी, तो उसी अनुपात से वे संदेश अधिक स्पष्ट और ठीक सुनाई देने लगेंगे, आध्यात्मिक बिजली द्वारा यह बेतार का तार बड़ी सफलतापूर्वक चल सकता है, प्राचीन काल के ऐसे असंख्य उदाहरणों से इतिहास भरे हुए हैं, आज भी जो इसकी परीक्षा करना चाहे उन्हें सन्तोष हो सकता है । यहाँ तक कि दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो सकती है । वैज्ञानिक लोग ईश्वर तत्व की सहायता से टेलीविजन यन्त्रों द्वारा एक स्थान के चित्र दूसरे स्थानों को भेजते हैं । आध्यात्मिक पवित्रता, एकाग्रता और अभ्यास द्वारा दूर देशों की घटनाएँ अपने दिव्य चक्षुओं से देखी जा सकती हैं । तुम भी प्रयत्न करो तो सफलता प्राप्त कर सकते हो । थोड़ा-सा 'दिव्य दर्शन' तो प्रथम प्रयत्न में भी हो सकता है । एकान्त स्थान में एकाग्रतापूर्वक अपनी दिव्य दृष्टि को किसी स्थान पर भेजोगे, तो वहाँ के दृश्यों का तुम्हें अनुभव होगा । आरम्भ में यह चित्र धुंधले और अशुद्ध भी होंगे, परन्तु आत्मिक उन्नति के साथ इनकी स्पष्टता और सत्यता बढ़ती जायेगी । यह सब मानवीय विद्युत के चमत्कार हैं । हम सत्संग के सद्गुणों को अपने अन्दर धारण करके इस शक्ति का पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं ।

रोगों का निवारण

रोगों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के इलाज चालू हैं, इलाज करने वाले बीमारियों को अच्छा करने के लिए बहुत तरह की दवाएँ बनाते हैं । कई दवाएँ तो सोने, चाँदी या रत्न, जवाहरात से भी अधिक महँगी होती हैं, उन बहुमूल्य दवाओं के गुणगान करने में बड़े-बड़े प्रमाण दिए जाते हैं, परन्तु उन औषधियों को अपनी मनमर्जी से चाहे कोई चाहे जितनी मात्रा में नहीं खा सकता है, यदि उनके सेवन करने या कराने में जरा-सी असावधानी हो जाय, तो लेने के देने पड़ सकते हैं । दूसरे उन्हें गरीब आदमी पैसे की कमी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण खरीद नहीं सकते । तीसरे बनाने में त्रुटि हुई या रोग का निदान न हो सका तो उसका कुछ अच्छा असर नहीं आता । इन कीमती दवाओं की अपेक्षा इस अध्याय में हर एक ऐसी दवा बतायेंगे, जो गुण में हर एक बहुमूल्य दवा से बढ़ कर है, कीमत में सबसे सस्ती है, सेवन करने में कुछ भी कठिनाई नहीं, हर आदमी के पास हर समय रह सकती है और शर्तिया फायदा पहुँचाती है । इस दवा का प्रयोग किसी भी दशा में व्यर्थ नहीं जा सकता । सच तो यह है कि जब तक इस दवा का थोड़ा बहुत मिश्रण न हो, तब तक अन्य दवा-दारू कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकतीं । क्या तुम उस दवा को जानते हो ? यदि नहीं जानते तो हम बताये देते हैं ।

यह दवा है 'मानवीय विद्युत' । रोगी कीटाणुओं के प्रसंग में हमने बताया था कि छूत के रोगों में मनुष्य की विषैली बिजली दूसरों पर असर कर जाती है । तुम्हें जानना चाहिए, जब खराब बिजली में असर करने की ताकत है, खराब बिजली खराब असर करती है, तो अच्छी जरूर अच्छा असर करेगी । अपनी 'प्राण चिकित्सा विज्ञान' नामक पुस्तक में हम सविस्तार आत्म विद्युत द्वारा विभिन्न रोगों को दूर करने की विभिन्न क्रियाएँ बता चुके हैं । उन बातों को पूरे ब्यौरे के साथ यहाँ दुहराना हमें अभीष्ट नहीं है । यहाँ तो उस सम्बन्ध की थोड़ी-सी जानकारी भर दुहरा देना पर्याप्त होगा । हथेली या उँगलियों के पोरूओं (अन्तिम छोरों) में रोग निवारण शक्ति अधिक मात्रा में पायी जाती है । पीड़ित स्थान पर इनका स्पर्श करना चाहिए । जब तुम्हारे पेट में कोई शिकायत हो, दर्द हो रहा हो या कुछ और गड़बड़ हो, तो अपनी हथेलियों को गोलाकार में उस स्थान पर घुमाओ, कुछ देर यह क्रिया दाहिनी ओर से बायीं ओर करो और फिर इसके विपरीत हथेलियों को बायीं ओर से दाहिनी ओर गोलाकार में घुमाने लगो । बीच-बीच में थोड़ी ही देर में देखोगे, पेट में उमड़ने वाली वायु घट गई है और दर्द अच्छा हो रहा है । हथेलियाँ जब किसी अंग की त्वचा से रगड़ती हैं तो वहाँ गर्मी पैदा होती है, यह शारीरिक तेज जिस स्थान पर अधिक उत्पन्न होगा, वहाँ रक्त की चाल बढ़ जायेगी, तदनुसार बीमारी को हटना पड़ेगा । यदि सिर में दर्द हो रहा हो, तो वहाँ भी एक हाथ या दोनों हाथों से स्पर्श करना चाहिए । जहाँ फुन्सी, चसक, दर्द, अकड़न, तनाव, खुजली या भारीपन मालूम पड़े, वहाँ उँगलियों के अग्र भाग से या हथेली से धीरे-धीरे सहलाना चाहिए ऐसा करने से उस स्थान के स्वस्थ जीवाणुओं को बल मिलता है और वे अपने आस-पास भरे हुए विजातीय द्रव को बाहर निकाल देने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

हमारे देश में आत्म विद्युत द्वारा रोगों की चिकित्सा करने का घर-घर में प्रचार है । जब कोई आदमी थक जाता है, तो उसके पैर दबाये जाते हैं, ताकि उसके निर्बल तन्तुओं के दबाने वाला अपनी बिजली भर दे । देखते हैं कि पैर दबाने के बाद थका हुआ आदमी प्रफुल्लित हो जाता है । मालिश का भी ऐसा ही असर होता है । पहलवान लोग शरीर की मालिश कराने का महत्त्व जानते हैं । घटी हुई गर्मी को बढ़ाने के लिए वैद्य लोग मालिश कराने का आदेश करते हैं । थक कर चकनाचूर हुए घोड़े मालिश के बाद अपना सारा श्रम उतार देते हैं । सिर को मालिश करने में कुछ नाई आदि ऐसे चतुर होते हैं कि भारीपन और खुश्की मालिश की विशेष क्रियाओं द्वारा बिल्कुल दूर कर देते हैं । गठिया, चोट, अशक्तता या दुर्बलता में तेजी के साथ मालिश कराई जाती है, सिर जब भारी हो जाता है या बुद्धि ठीक प्रकार काम नहीं करती, तो लोग माथे पर हाथ रख कर बैठ जाते हैं या सिर खुजाने लगते हैं, ऐसा करने से उनका मस्तिष्क फिर से तरोताजा हो जाता है और जो प्रश्न हल नहीं हो रहा था, उसका निराकरण हो जाता है । पलकों पर कभी-कभी एक फुन्सी उठती है जिसे मथुरा के आस-पास 'गुहेरी' कहा जाता है । पलक के ऊपर फोड़े को अच्छा करने वाली किसी तेज दवा का लगाना खतरे से भरा हुआ होता है, इसलिए हथेली पर उँगली घिस कर उस उँगली को पलक पर लगाते हैं और देखते हैं कि वह फुड़िया जल्द अच्छी हो जाती है । आँख में अकस्मात कुछ आघात लग जाने पर तत्काल का उपचार यह किया जाता है कि किसी कपड़े को मुँह की भाप से गरम करके आँख पर लगाया जाय, आँख में कैसा ही दर्द हो रहा हो, इस क्रिया से तुरन्त ही लाभ होता है । उँगली या अन्य स्थान पर कुछ चोट लग जाने पर स्वभावतः हम उसे फूँकते हैं । बच्चे अपने आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी उँगली को फूँक कर अच्छा कर लेने का ज्ञान रखते हैं, कई अवसरों पर फूँक द्वारा किसी अंग पर शारीरिक विद्युत का प्रवाह डालने से सन्तोषजनक फल निकलता है ।

बढ़ी हुई गर्मी को घटाने के लिए मार्जन (Pass) बहुत उपयोगी है । पंखा झलना प्राचीन मार्जन क्रिया की नकल है । जब बुखार चढ़ रहा हो, लू सता गई हो, फोड़े में दर्द हो रहा हो, मादक द्रव्यों के कारण गर्मी चढ़ गई हो या अन्य किसी प्रकार से उष्णता बढ़ जाय, तो दोनों हाथों की उँगलियों को इस तरह रोगी की ओर पसारना चाहिए, जिसमें नाखूनों के अन्तिम सिरे बीमार के पीड़ित अंग की ओर रहे । अब हाथों को नीचे की ओर इस तरह खींचो, मानो उस स्थान की बढ़ी हुई गर्मी को उँगलियों से चिपका कर पीछे की ओर खींच रहे हैं । यथा अवसर कुछ दूर हाथों को खिसकाने के बाद उन्हें पीछे की ओर खींच लो और एक तरफ इस प्रकार झटकार दो, मानो तुम्हारे हाथ पानी में भीग गए थे और उनकी बूँदों को अलग झटकार दिया हो । इस क्रिया को कुछ देर बार-बार करते रहो, तुम देखोगे कि इससे कैसी जल्दी गर्मी घट जाती है और बीमार को शान्ति मिलती है । इस प्रकार की क्रियाओं में इच्छा शक्ति का जितना अधिक समन्वय होता है, उतनी ही शीघ्र और अधिक सफलता मिलेगी ।

पीड़ित स्थान पर शारीरिक विद्युत को पहुँचा कर पाठक अपनी और दूसरों की बीमारी में पर्याप्त सहायता कर सकते हैं । बार-बार का नया प्रयत्न उन्हें अधिकाधिक सन्तोष के निकट पहुँचाता जायेगा ।

बच्चों की सावधानी

बच्चों को 'नजर लगना' मानवीय विद्युत का अहितकर प्रभाव है । कोई व्यक्ति जब एकाग्र होकर या अधिक आकर्षित होकर किसी की ओर देखता है, तो उसकी दृष्टि प्रभावशाली हो जाती है । लालायित होकर देखने पर भी ऐसा ही प्रभाव होता है । कोई बच्चा अधिक हँसता खेलता है, प्यारी-प्यारी बातें करता है, तो लोगों का ध्यान उसकी ओर अधिक आकर्षित होता है, यदि इस समय अधिक ध्यानपूर्वक उन्हें खिलायें या प्रशंसा करें, तो बच्चों को नजर लग जाती है । मुग्ध होकर अधिक ध्यानपूर्वक उनकी ओर दृष्टिपात किया जाय तो भी नजर का असर हो जाता है । किसी-किसी व्यक्ति में स्वभावतः एक खास प्रकार की बेधक दृष्टि होती है, यदि वे साधारणतः किसी बच्चे को ओर विशेष ध्यानपूर्वक देखें, तो असर हो जाता है । ऐसे लोग जिनके बाल-बच्चे नहीं होते और बच्चों के लिए तरसते हैं, वे जब दूसरों के बच्चों को हसरत भरी निगाह से देखते हैं तो यह असर अधिक होता है, क्योंकि लालायित होकर देखने से दूसरी चीजों का अपनी ओर आकर्षण होता है । पति जब परदेशों को जाते हैं, और स्त्री लालायित होकर उसकी ओर देखती है, तो रास्ते भर पति का चित्त बेचैन बना रहता है, कभी-कभी तो उन्हें वापस तक लौटना पड़ता है या कुछ ठहर जाना पड़ता है । इसीलिए प्राचीनकाल में क्षत्राणियाँ पतियों को युद्ध में भेजते हुए प्रोत्साहन देकर, तिलक लगाकर भेजती थीं, कि यदि हम आकर्षण-विद्युत इनकी ओर फैंकेंगी तो वे पीछे की ओर खिंचे रहेंगे, युद्ध से लौट आयेंगे या असफल रहेंगे । इसी प्रकार जब वयस्क मनुष्य लालायित होकर बच्चों की ओर देखते हैं, तो उन बच्चों की शक्ति खिंचती है, और वे उनके झटके को बर्दाश्त न करके बीमार पड़ जाते हैं । बिना किसी पूर्व रूप के जब अचानक बच्चा बीमार पड़ जाता है, तब समझा जाता है कि उसे नजर लग गई ।

हमारे यहाँ की स्त्रियों को इसकी जानकारी बहुत पहले से है । नजर से बचाने और लग जाने पर उपचार की क्रिया से भी वे परिचित हैं । ताँबे का ताबीज, शेर का नाखून, मूझ, नीलकंठ का पर आदि चीजें गले में पहनायी जाती हैं । यह चीजें बाहरी बिजली को अपने में ग्रहण करके या उसके प्रभाव को रोककर बच्चों पर असर नहीं होने देतीं । गरम लोहे का टुकड़ा पानी या दूध में बुझाने से वह जल या दूध उस असर को दूर करने वाला हो जाता है । कहते हैं कि आकाश की बिजली अक्सर काले साँप, काले आदमी, काले जानवर या अन्य काली चीजों पर पड़ती है । काले कपड़े जाड़े के दिनों में इसलिए पहने जाते हैं कि गर्मी की बिजली को इकट्ठी करके अपने अन्दर रख लें और अधिक गरम रहें । इसी नियम के आधार पर नजर बचाने के लिए काली चीजों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयोग होता है । मस्तक पर काला टीका लगाया जाता है । हाथ या गले में काला डोरा बाँधा जाता है । काली बकरी का दूध पिलाया जाता है । काली भस्म चटाई जाती है । जिस प्रकार बड़े-बड़े मकानों के गुम्बजों की चोटी पर एक लोहे की छड़ इसलिए लगायी जाती है, कि वह स्वयं बिजली का असर ग्रहण करके पृथ्वी में भेज दें और मकान को नुकसान न पहुँचने दें, इसी प्रकार काला टीका, डोरा आदि नजर के असर को अपने में ग्रहण कर लेता है, और बच्चों को नुकसान नहीं पहुँचने देता ।

हम नहीं चाहते कि हँसते-खेलते बच्चों को नजर लगने के भय से घरों में छिपा कर रखा जाय और उन्हें लोगों के सामने अपनी अमृतमयी वाणी बोलने से रोका जाय । बच्चे जीते-जागते अमूल्य खिलौने हैं इनके साथ खेलने की सब कोई इच्छा करते हैं, फिर इस स्वर्गीय सम्मेलन में खाई उपस्थित करना किसी प्रकार उचित न होगा । यदि इस भय से मनुष्य के सात्विक आनन्द को रोका जाय तो परमात्मा की पवित्र सृष्टि में अंगारे बोना होगा । परन्तु अपने मनोरंजन के लिए बच्चों की हत्या कर डालना भी न्यायसंगत न ठहराया जायेगा । उसमें चौंकने, बड़बड़ाने या हमें भ्रम प्रचारक कहने की जरूरत नहीं है । कड़वी सच्चाई की ओर से आँखें बन्द कर लेना ठीक न होगा । खतरा इसको प्रकट करने में नहीं, वरन् छिपाये रहने में है । यदि वास्तविक बात सर्वसाधारण पर प्रकट हो जाय और उससे होने वाली हानि को लोग समझ जायें तो खतरा बहुत ही कम हो जाय ।

साधारण रीति से बच्चों के साथ हँसते-खेलते रहिए, कुछ हर्ज न होगा । नजर उन्हें तभी लगेगी जब आप हसरत भरी निगाह से देखेंगे । इस प्रकार की दृष्टि के अन्तर्गत ऐसी भावनाएँ होती हैं कि—"काश, यह बच्चा हमें मिला होता ! मैं इसे पाकर कितना प्रसन्न होऊँगा ! इसकी सुन्दरता कितनी मनोमुग्धकारी है ! भगवान ऐसा बच्चा किसी प्रकार मुझे मिले ।" यह बातें आदमी जबान से नहीं कहता और जान-बूझकर यह सोचता भी नहीं, पर उसके मन के भीतर ही भीतर ऐसी गुप्त इच्छा उठती है । कभी-कभी तो यह इच्छा इतनी सूक्ष्म होती है कि सोचने वाला यह समझ भी नहीं सकता कि मैंने ऐसी भावना की थी । देखा जाता है कि अजगर अपनी दृष्टि के आकर्षण से पक्षियों को अपनी ओर खींच लेता है । भेड़िये की दृष्टि से भेड़ और बिल्ली की दृष्टि से कबूतर इतने अशक्त हो जाते हैं कि वे भाग तक नहीं सकते । उनमें यह आकर्षण शक्ति अधिक तीव्र होती है, जिनके मन में वर्षों से बच्चे प्राप्त करने की लालसा लगी होती है । चिरकालीन लालसा धीरे-धीरे अपना पोषण करती रहती है और कुछ दिनों बाद बहुत बलवान हो जाती है । ऐसे लोगों की नजर का झटका लात मारने से भी अधिक गहरा लगता है । साधु-संन्यासी या जिन्हें बच्चों की कोई चाह नहीं होती, उन्हें नजर नहीं लगती । बहुत से लोग अपने कई-कई बच्चे होने पर भी सन्तुष्ट नहीं होते और दूसरों के सुन्दर बच्चों को देखकर मन में ललचाते हैं, उनकी भी नजर लग सकती है ।

बच्चों को खिलाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके साथ सात्विक रीति से हँसा-खेला जाय । विशेष ममता न जोड़ी जाय । खिलाते समय तो खासतौर से यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमें ममता के आकर्षक विचार न रखे जायें । ईश्वर का निर्विकार पुत्र, प्रकृति का सुन्दर पुष्प, कर्तव्य का स्मरण दिलाने वाला सुन्दर एवं जीवित खिलौना ही उन्हें समझना चाहिए । बच्चों को बार-बार छाती से लगाना, चूमना, पुचकारना, मेरा प्राण, मेरा जीवनाधार आदि अत्यन्त ममता पूर्ण शब्द कहना, यह हरकतें बहुत ही खतरनाक हैं, इनसे बच्चे का जीवन रस सूखता है और वह अल्पायु हो सकता है ।

बच्चों को साफ-सुथरा तो रखा जाय, पर ऐसे तड़क-भड़क के कपड़े और जेवर न पहनाए जायें, जिससे रास्ते में चलते लोगों का ध्यान उनकी ओर खिंचे । सुरक्षा के अन्य नियम भी माताएँ जानती हैं । आकाश की बिजली जब जोरों से कड़कती है तो शरीर की बिजली का भी ह्रास होता है, उस समय माताएँ बालकों को घरों में ले जाती हैं । मेलों में जहाँ भारी भीड़ रहती है वहाँ मुण्डन संस्कार से पूर्व नहीं ले जातीं । एक दो महीने की आयु का होने तक बालकों को सब लोगों के सामने नहीं लाया जाता । हाथ-पाँव में चाँदी आदि धातुओं के कड़े पहनाए जाते हैं, यह सब बाह्य विद्युत से रक्षा करने के उपाय हैं । गर्भ काल के नौ मास पूरे होने से पूर्व ही जिन बच्चों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म हो जाता है उनकी और भी अधिक सुरक्षा करनी पड़ती है, क्योंकि गर्भ के सातवें आठवें मास में बच्चे के अंग तो पूरे बन जाते हैं, पर उसमें विद्युत का उचित मात्रा में समावेश नहीं हो पाता । सातवें मास में इतनी कम बिजली होती है कि उस पर कोई अधिक आघात नहीं पहुँचता । इसीलिए सातवें मास में पैदा हुए बच्चे अक्सर जीते हैं । ऐसे बच्चे माता की बिजली से अपना काम चलाते हैं, किन्तु आठ मास के बच्चे में बहुत कुछ अपनी बिजली होती है, इसीलिए बाहरी विद्युत के धक्के उसे झँकोर डालते हैं और वह बेचारा अक्सर इस दुनिया से कूच कर जाता है । माताएँ इन अधूरे बच्चों को बाहर के लोगों की दृष्टि से बचाती हैं । यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि माता-पिता की नजर नहीं लगती क्योंकि उन्हीं की शक्ति से तो वह उत्पन्न हुआ है, वह एक प्रकार से उन्हीं का तो शरीर है । इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा जब तक एक वर्ष का न हो जाय तो तब तक उसे अयोग्य व्यक्तियों के हाथ में न देना चाहिए और न उसे किसी को चूमने देना चाहिए ।

बुरे संस्कार, स्वभाव या स्वास्थ्य वाली धायों द्वारा जब बालकों को दूध पिलाया जाता है, तो निश्चय ही बालक उसके दोषों को भी दूध के साथ पीता है और अपने गुप्त मन में उन्हें धारण करता जाता है । ऐसे बालकों के वे दूषित संस्कार यदि अन्य प्रकार से न हटाए जायें तो वे बड़े होकर अपने मूल बीजों की भूमिका में विकास करते हैं और बुद्धि, स्वभाव तथा विचारों को अपना कर क्रूर कर्मा बन जाते हैं । माताओं को जानना चाहिए कि यदि वह स्वयं दूध पिला सकने में असमर्थ हों, तो गौ या बकरी का दूध जरा-सा गरम करके ठंडा होने के उपरान्त पिलायें ।

बालकों की देखभाल रखनी चाहिए और कभी-कभी गोद में भी लेना चाहिए । रात को पास सुलाना चाहिए । परन्तु यह बहुत ही बुरी बात है कि उन्हें दिन भर गोदी में लादे रखा जाय । इसका परिणाम ठीक वैसा ही होता है जैसा दिन भर हर घड़ी भोजन कराते रहने का । बच्चों की सहायता के लिए गोदी में लेकर उन्हें अपने शरीर की थोड़ी विद्युत देना चाहिए, परन्तु यदि दिन भर गोद में रखा जायेगा तो अजीर्ण हो जायेगा और वे वैसे ही कुम्हला जायेंगे जैसे अधिक गर्मी से पौधे मुरझा जाते हैं ।

माता के पास जब कई बच्चे हो जाते हैं तो वे बड़े बच्चों को दादी, नानी, बुआ, ताई या किसी बुढ़ढे के साथ सोने के लिए भेज देती हैं । अधिक आयु के मनुष्य अपने से छोटी आयु वालों की विद्युत शक्ति का किस प्रकार शोषण करते हैं, यह पिछले पृष्ठों पर हम बता चुके हैं । उसी नियम के अनुसार बालकों का शोषण शुरू हो जाता है । बच्चे दिन पर दिन कमजोर होने लगते हैं । घर वाले इसका वास्तविक कारण नहीं समझ पाते और अन्यान्य उपचारों में भटकते रहते हैं । विपरीत योनि वालों में विपरीत प्रकार की बिजली होती है, यह भी हम पहले कह चुके हैं । वह भी अपना असर बालकों पर करती है । स्त्रियों के पास लड़कों को और पुरुषों के पास लड़कियों को न सुलाना चाहिए अन्यथा यह शोषण और भी अधिक होने लगेगा । बच्चे अपनी छोटी-सी शक्ति से माता के अलावा अन्य किसी शरीर से विद्युतांश नहीं खींच सकते, वरन् दूसरे लोग उन्हें ही झँझोड़ सकते हैं । नर से मादा में बिल्कुल उल्टी बिजली की प्रधानता होती है, अतएव दोनों एक-दूसरे को खींचते हैं । इस छीन झपट में बेचारे बच्चे ही घाटे में रहते हैं, और उन्हें क्षीण होना पड़ता है । इसलिए ध्यान रखना चाहिए कि अधिक उम्र के लोगों के पास बच्चों को न सुलाया जाय और विपरीत योनि के साथ तो कदापि न सुलाया जाय । यदि माता के पास कई बच्चे हों तो बड़े बच्चों को अलग-अलग सुलाने की आदत डालनी चाहिए । हाँ, दो लड़के या दो लड़कियाँ एक साथ सो सकती हैं । भाई और बहिन का एक साथ सोना भी हानिकारक है, क्योंकि इससे उनकी काम वासना अल्पायु में ही जागृत हो सकती है । बालकों को किसी दुष्ट स्वभाव के मनुष्य के साथ न खेलने देना चाहिए और उन्हें मृत्यु, युद्ध, शोक, रोदन, प्राणियों के वध आदि के स्थान पर न जाने देना चाहिए क्योंकि उनके कोमल मन पर उग्र घटनाओं का एक आघात लगता है, जिसके कारण भावी जीवन में उन्हें किसी मानसिक अपूर्णता का सामना करना पड़ सकता है ।

कई बार माता-पिता बच्चे को साथ रखते हुए एक शय्या पर सो जाते हैं, और काम चेष्टाएँ करने लगते हैं । वे समझते हैं कि बच्चा बहुत छोटा है या सोया हुआ है, यह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होगा । इसलिए यदि यह भी इस चारपाई पर सोता रहे तो कोई हर्ज नहीं, किन्तु इस अज्ञान का बड़ा बुरा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है । असल में बच्चा मिट्टी का टुकड़ा नहीं है, वह प्रबुद्ध मस्तिष्क धारण किए हुए है और डॉक्टर फ्रायड के मतानुसार अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में इतनी तेजी से ज्ञान प्राप्त करता है, जितना अन्य किसी आयु में नहीं करता । बच्चा चाहे कितना ही छोटा हो और वह सो रहा हो या जाग रहा हो, उस पर माता-पिता की काम चेष्टाओं का असर पड़ता है और वह उन बातों को बहुत ही छोटी उम्र में सीख लेता है । देखा गया है कि तीन-चार वर्ष के बच्चे आपस में काम चेष्टाएँ करते हैं । दस ग्यारह वर्ष की लड़कियों में विकार जागृत होने लगता है, छोटी उम्र के लड़के अनेक प्रकार की लज्जाजनक आदतों में फँस जाते हैं । इतनी छोटी उम्र में उन्हें काम सम्बन्धी शिक्षा कहीं बाहर से नहीं मिलती । माता-पिता ही अज्ञान वश उनमें असाधारण उत्तेजना का बीज बो देते हैं, परिणामस्वरूप बालक को बाहर से कुछ सीखना नहीं पड़ता, वह अपने आप ही उस शिक्षा को मन में धारण करके पुष्ट करता रहता है और जरा-सा होश सँभालते ही उनको क्रिया रूप में प्रकट करने लगता है । छोटे बच्चों में जो प्रवृत्तियाँ जाग उठती हैं, उनके कारण उनको पतन के मार्ग में बलात् प्रवृत्त होना पड़ता है । बड़े-बूढ़े कहते हैं कि अब से कुछ समय पूर्व सोलह अठारह वर्ष की उम्र के लड़के धोती बाँधना भी न जानते थे, उन्हें काम वासना सम्बन्धी बिल्कुल ज्ञान न होता था पर अब तो इस उम्र के लड़के या तो पिता बन जाते हैं या प्रमेह, स्वप्न दोष आदि की बीमारियाँ लेकर वैद्य जी के दरवाजे की धूल चाटते हैं । क्या ही अच्छा हो यदि माता-पिता बच्चों से दूर रह कर गुप्त इच्छाएँ पूर्ण करें । ऐसा करने पर वे अपने बालकों का बहुमूल्य जीवन नष्ट होने से बचा लेंगे ।

आत्म तेज बढ़ाने के उपाय

दैनिक जीवन में दूसरों पर प्रभाव डालने की क्षण-क्षण पर आवश्यकता पड़ती है । यह कार्य आत्म तेज के बिना अन्य किसी प्रकार नहीं हो सकता । चेहरे पर मुर्दापन, नेत्रों में हीनता और वाणी में दीनता लादे हुए, मनुष्य जहाँ जाता है, वहीं दुतकारा जाता है । अशक्ति में याचना का भाव है, जो दुनिया की रुचि के प्रतिकूल है । संसार देने की अपेक्षा लेना पसन्द करता है । तुम्हारे चेहरे पर प्रकाश है तो उसकी छाया दूसरों को कुछ देगी और वे प्रसन्न होकर तुम्हारी सहायता करेंगे, किन्तु मलीन चेहरा औरों को खाने दौड़ता है, उससे सब लोग बचकर भाग निकलना चाहते हैं । तेजस्वी पुरुष जहाँ जाता है उसका आदर होता है, लोग उसे प्रणाम करते हैं, उसकी बात मानते हैं, विरोधियों की बोलती बन्द हो जाती है और जनता उनकी इच्छानुसार अपना मत बना लेती है । ऐसे ही व्यक्ति कुशल व्यापारी, सफल वकील, धनी किसान, पंच या प्रभावशाली उपदेष्टा बनते हैं । निस्तेज मनुष्य चाहे बड़े बाप का ही बेटा क्यों न हो, रोता हुआ जाता है, और मृत्यु का संदेश लेकर आता है ।

आत्म शक्ति, आत्म विद्युत बढ़ाने का सबसे प्रथम उपाय आत्म विश्वास है । अपने को तुच्छ, निर्बल अयोग्य या नीच समझना एक प्रकार की आत्म-हत्या है । अखण्ड ज्योति बार-बार घोषणा करती है कि मनुष्यो ! तुम क्षुद्र जीव नहीं हो, सम्राटों के सम्राट परमात्मा के तुम अमर पुत्र-राजकुमार हो । उसने तुम्हारे ऊपर इतना श्रम इसलिए नहीं किया है कि कीड़ों की तरह जिन्दगी बिताओ और कुत्तों की मौत मर जाओ । अहंकार या घमण्ड दूसरी बात है । भौतिक वस्तुओं को अपनी समझ कर उन पर गरूर करना अज्ञान है, परन्तु आत्मा को दिव्य स्वरूप की झाँकी कराना आत्म दर्शन है, पुण्य है, कर्तव्य है, आत्म सम्मान है । अहंकार और आत्म सम्मान की तुलना करना मूर्खता है । अपने अन्दर परमात्मा का पवित्र अंश होने का विश्वास कर लेने पर कोई व्यक्ति आत्म तिरस्कार नहीं कर सकता । अपने को नाचीज समझने का अर्थ है, अपने को परमात्मा से बहुत दूर समझना । "हम परमात्मा के अंश हैं" इस मन्त्र में अद्‌भुत शक्ति भरी हुई है । वेदान्त का प्रमुख मन्त्र 'सोऽहम्' प्रसिद्ध है, 'मैं' वह (परमात्मा) हूँ, इन भावनाओं को जो जितना दृढ़ करता जायेगा, उसके अन्दर से उतना ही आत्म तेज जागृत होने लगेगा । अपनी 'मैं क्या हूँ" पुस्तक में हमने विस्तार सहित इस सम्बन्ध में एक अभ्यास बताया है कि अपनी पसलियों के जुड़ाव पर जहाँ आमाशय है, उस स्थान पर आत्मा के सूर्य समान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेजस्वी बिन्दु की भावना करनी चाहिए और उसके आस-पास समस्त विश्व घूमते हुए अनुभव करना चाहिए ।

विचारों की पवित्रता ऐसा अमोघ उपाय है, जिससे निश्चय ही आत्म शक्ति का विकास होता है । 'स्वस्थ्य और सुन्दर बनने की अद्‌भुत विद्या' नामक पुस्तक में हम सिद्ध कर चुके हैं कि आत्मा का दिव्य तेज कुविचारों के आवरणों से ढका रहता है, यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, पाखंड के विचारों को हटाकर मनुष्य प्रेम, पवित्रता, दया और उदारता की भावनाओं को अपना लें तो आत्मा का प्रकाश इन्द्रियों की खिड़कियों में होकर जगमगाने लगेगा और वह पुण्यात्मा व्यक्ति असाधारण तेजस्वी बन जायेगा ।

किसी से मिलने जाओ तो उसका आदर करो; परन्तु अपने को उसकी अपेक्षा हीन मत समझो । नम्रता से बातचीत करो, पर गिड़गिड़ाओ मत । जो तुम्हारे लिए उचित आसन हो सकता है उस पर बैठो, पीछे की ओर या नीचे स्थानों पर खिसक कर बैठना बुरा है, किसी को अन्नदाता, प्रतिपालक, हुजूर, प्रभु, महाराजाधिराज आदि शब्दों से सम्बोधन मत करो, क्योंकि कि इनमें अपनी हीनता का भाव छिपा हुआ है । सम्बोधन के लिए भगवान, महोदय, महानुभाव, श्रीमान्, पण्डित जी आदि शब्द उपयुक्त हैं । इनमें दूसरों को प्रोत्साहन तो है, पर अपना अपमान नहीं है । प्रसन्न चित्त होकर बातचीत करना, थोड़ा मुस्कराते जाना, प्रभाव डालने का बहुत अच्छा तरीका है । थोड़ा मुस्कराने में चेहरे के आस-पास की नसें कुछ इस प्रकार से तनती हैं कि उनमें मस्तिष्क की प्रभावशाली विद्युतधारा खिंच आती है । यह केवल उन नसों में होकर होठ या गालों पर ही प्रदर्शित नहीं होती; वरन् नेत्रों में भी उसका एक बड़ा भाग पहुँच जाता है और वे भी चमकने लगते हैं । वैज्ञानिक अभी पूरी तरह से यह खोज नहीं कर पाये हैं कि हँसने या मुस्कराने के समय चेहरे पर जो असाधारण विद्युत तेज प्रकट होता है, वह कहाँ-कहाँ से किस प्रकार इकट्ठा होता है; परन्तु यह बात यन्त्रों द्वारा निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि हँसते हुए चेहरे में साधारण दशा की अपेक्षा करीब पाँच गुनी विद्युत अधिक होती है । यह दूसरों पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालती है और जब लौट कर शरीर में वापस जाती है, तो रक्त संचार एवं स्नायु मण्डल पर बड़ा हितकर प्रभाव करती है । जब तुम किसी के पास अपना अभिप्राय लेकर आओ, तो रोनी सूरत मत बनाओ, वरन् अपने को प्रसन्न चित्त बनाये रहो । समता से बात-चीत करने के लिए यह आवश्यक है कि झेंपते हुए न बैठो । दूसरे व्यक्ति की आँखों की ओर दृढ़ता और मृदुलता के साथ देखो । अकड़ कर उद्दीपन के साथ किसी की आँखों से आँखें लड़ाना बुरा प्रभाव डालता है; परन्तु प्रेम और सरलता की भावनाओं के साथ सामने वाले व्यक्ति से बात करने का अर्थ उसे अपने पक्ष में कर लेना, उस पर पर्याप्त प्रभाव डाल लेना है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेस्मेरिज्म क्या है ?

मेस्मेरिज्म और योग

मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म एक ही विद्या के दो नाम हैं ? किन्तु इनके अर्थ और क्रिया में पूर्णतः भिन्नत्व परिलक्षित होता है । मेस्मेरिज्म को हिन्दी में 'प्राण प्रयोग' और हिप्नोटिज्म को 'मोहिनी विद्या' कहते हैं । मेस्मेरिज्म के प्रयोग में हाथ की क्रिया को स्थिर और दृष्टि को शान्त रखना पड़ता है, तब निद्रा लायी जा सकती है । जबकि हिप्नोटिज्म में सूचना मात्र से रोगी को निद्रा-वश किया जाता है । इस विद्या का संसार में कुल १५० वर्ष से प्रचार हुआ है, परन्तु यथार्थ में इसका आधार प्राचीन भारत की योग विद्या ही है, जो संसार की यावतीय आश्चर्यमय विद्याओं की जननी है । आर्य और उनके वंशज योग विद्या के पूर्ण जानकार थे । अतः योग का मूल स्थान भारतवर्ष ही हो सकता है । भारत से यह विद्या पहले अरबस्तान और बाद में ईरान, यूनान, मिस्र और रोम आदि में प्रचलित हुई और कालान्तर में संसार के कोने-कोने में प्रचारित हो गई ।

विषय की तह तक पहुँचने के लिए यदि यह कहा जाय कि आज के सुधरे हुए नाम मेस्मेरिज्म को हमारे पूर्वज अपने समय में योग के रूप में जानते थे तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म देखा जाय तो योग विद्या के ही अंग हैं । संसार के धर्म शास्त्रों में सन्त, महात्मा, समर्थ पुरुष और पैगम्बर आदि के जो चमत्कार हम पढ़ा करते हैं, वह एक मात्र योगिक चमत्कार के ही द्योतक हैं । देखने और अनुभव करने वालों ने कभी उन्हें जादू, कभी योग और कभी मेस्मेरिज्म कहकर प्रसिद्ध किया है । हमारे अनेकानेक सन्त, महात्मा, योग रूपी मेस्मेरिज्म जानते आये हैं और इसकी सहायता से समय-समय पर हाथ के स्पर्श द्वारा उन्होंने कठिन से कठिन रोग के रोगियों को रोग मुक्त किया है । आज भी ऐसी घटनाएँ बराबर होती रहती हैं और हिन्दू धर्म शास्त्र तथा धार्मिक इतिहास में तो इसके असंख्य उदाहरण भरे पड़े हैं । बाइबिल में क्राइस्ट के हाथ से सैकड़ों रोगियों के रोग मुक्त होने और अन्धचक्षु को पुनः आँखें प्राप्त होने के जो दृष्टान्त आये हैं, वे भी इसी विद्या का समर्थन करते हैं । पारसी समाज के पैगम्बर जरथुस्त भी इस विद्या से भलीभाँति परिचित थे । हिन्दू इतिहास तो सैकड़ों उदाहरणों में भस्मासुर के एक उदाहरण को ही हम लें तो उस पर से योग और मेस्मेरिज्म का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध सिद्ध होने में कोई शंका नहीं रह जाती । भस्मासुर ने तपस्यापूर्वक शिवजी से यह वरदान प्राप्त किया था कि वह जिस पर हाथ रखे वह तत्काल भस्म हो जाय । फलतः हजारों निर्दोष मनुष्य भस्मासुर के इस उत्पात से भस्मीभूत हो गए और दैवी शक्ति सम्पन्न देवता तक त्राहि-त्राहि पुकारने लगे । तब विष्णु भगवान ने देवों को अभय वचन देकर भस्मासुर संहार के लिए मोहिनी रूप धारण किया और अपने हाथ पावों की कलामय क्रिया से नृत्य करने लगे । इधर भस्मासुर ने भी मोहिनी रूपधारी विष्णु की नृत्य क्रिया का अनुकरण किया और ज्योंही उसने अपने सिर पर हाथ रखा कि वह खुद सदैव के लिए भस्म हो गया । इस से यह स्पष्ट है कि मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म योग साधना के ही अंग हैं और उनका मूल स्थान भारतवर्ष ही है । हिमालय के अनेक सिद्ध महात्माओं और तिब्बत के लामाओं की विचित्र बातें तो आज भी देखी सुनी जा रही हैं । इस तरह साधक और अभ्यासार्थी के पक्ष में क्या योग, क्या जादू, क्या मेस्मेरिज्म ये सब विद्याएँ प्राप्त करना कोई असम्भव नहीं है । कुछ समय पहले लन्दन के एक भारतीय मुस्लिम योगी ने आग पर चलकर वहाँ के विज्ञानाचार्यों को आश्चर्य विमुग्ध कर दिया था । इसी एक योगी द्वारा आँख में पट्टी बाँधकर क्रिकेट आदि के खेल-खेलने को भारतीय करामातों का भी प्रदर्शन हुआ था । भारतीय बाजीगरी के अद्‌भुत खेलों के सम्बन्ध में पश्चिमी देशों के निवासी पूर्ण विश्वास रखते हैं और इसके लिए उनके यहाँ नाना प्रकार की खोजें जारी हैं । कहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का तात्पर्य यह कि मेस्मेरिज्म या हिप्नोटिज्म किसी भी अवस्था में नवीन विद्या नहीं कही जा सकती, जबकि संसार प्रसिद्ध आश्चर्यमयी विद्याओं की जननी योग-साधना का पहले से ही अस्तित्व कायम है ।

जो लोग इस प्रकार के चमत्कारों का प्रदर्शन करते हैं, उनके प्रति दर्शकों में और संशय उत्पन्न हो आता है । महात्मा गौतम बुद्ध के ज्ञान के अनुसार ये चमत्कार तीन प्रकार के होते हैं—(१) गुप्त चमत्कार, (२) प्रकट चमत्कार और (३) ज्ञान शक्ति से उत्पन्न (बौद्धिक चमत्कार) गुप्त चमत्कारों में एक व्यक्ति सिद्धि द्वारा गुप्त शक्तिओं का धारी होता है । उदाहरण स्वरूप एक से अनेक हो जाना, अनेक से एक हो जाना, अदृश्य हो जाना, दीवाल, दुर्ग किवाँ पर्वतों में वायु वेग से प्रवेश करना और लौटना, इसी तरह जल में प्रवेश करना और जमीन पर निकलना, हवा में उड़ना, सूर्य, चन्द्र की सीमा को स्पर्श करना इत्यादि । ये सब प्रथम श्रेणी के योगिक चमत्कारों में आते हैं और इस भाँति के सैकड़ों दृष्टान्त हमारे इतिहास तथा धर्म ग्रन्थों में मौजूद हैं । दूसरे प्रकार के प्रकट चमत्कारों में एक व्यक्ति दूसरों के अन्तःकरण में प्रवेश करके उनकी विचार-धारा जान सकता है और यह चमत्कारी सिद्धि हम आज भी कई साधु सन्तों में पाते हैं, परन्तु ब्रह्मीभूत महात्मा बुद्ध ने इसे महान चमत्कार की आख्या नहीं दी । उन्होंने तीसरे बौद्धिक चमत्कार को ही विशेष रूप से माना है । यह तीसरा चमत्कार मेस्मेरिज्म विद्या से समानता रखता है और इसकी सिद्धि वही लोग प्राप्त करने में समर्थ हैं जो अपनी लगन और विचारों पर पूरा-पूरा अधिकार रखते हैं । हमारे योग शास्त्र में यह महान शक्ति प्राप्त करने का जो मार्ग बताया है, वह यह कि मन को स्वार्थमय जगत के आकर्षण से निकाल कर विचार, वचन और कार्य की दृष्टि से शुद्ध किया जाय । ऐसे साधक योगाभ्यास में अंवश्य ही फलीभूत होते हैं । कहने की आवश्यकता नहीं है कि मेस्मेरिज्म विद्या उपर्युक्त बौद्धिक चमत्कार से मिलती-जुलती हुई विद्या है ।

मेस्मेरिज्म को जादू नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह शुद्ध अर्थ में योग क्रिया सिद्धि है । जादू दो प्रकार का होता है—(१) सफेद जादू, (२) काला जादू । सफेद जादू में योग की क्रिया है, पर काले जादू में कोपक दुष्टात्मा की शक्ति विद्यमान है । अतएव, जादू और मेस्मेरिज्म एक अर्थ में नहीं लिए जा सकते । मेस्मेरिज्म में कठिन रोगों के रोगियों को रोग मुक्त करने की विधि मुख्य है और इस विधि को क्रमशः तीन भागों में विभाजित किया गया है—(१) औषधि (Medicine), (२) शल्य क्रिया (Surgery), (३) पवित्र मन्त्र (Occultsecret) इसमें पवित्र मन्त्रों के प्रयोग को प्राचीन योगिक प्रयोग ही कहा जा सकता है । मेस्मेरिज्म में उपर्युक्त विधि के अनुसार नाना प्रकार के रोग और व्याधियाँ दूर होती हैं जबकि हिप्नोटिज्म चित्त को भ्रम में डाल कर सूचनाओं के अनुसार मनुष्य की चित् शक्ति को अपने लिंग शरीर में घुमाया करता है । इसकी मुख्य ६ अवस्थाएँ हैं—(१) तन्द्रा, (२) निद्रा, (३) प्रगाढ़ सुषुप्ति, (४) अनुवृत्ति, (५) दिव्य दृष्टि, (६) प्रत्यंग दृष्टि । इन छह अवस्थाओं में पहली तीन प्रकार की अवस्थाएँ स्वाभाविक रूप से सर्वत्र दिखाई देती हैं । इसके बाद की पाँचवीं और छठी अवस्थाओं में भूत, भविष्य और वर्तमान सम्बन्धी हर एक बात का पूरा-पूरा उत्तर मिल सकता है । अमेरिका में लोग अपराधी को पकड़ने के लिए आज इसी मेस्मेरिज्म का प्रयोग कर रहे हैं । अन्तिम अवस्था को समाधि रूप में जाना जा सकता है और यह अवस्था केवल पवित्र से पवित्र शरीर को ही प्राप्त होती है । विचारों की पवित्रता और उच्च भावना से यह शक्ति उत्पन्न होकर पीत रंग की छाया रूप से प्रकाशित हो उठती है । यह छाया मनुष्य के चारित्र्य गुण पर आधारित है अनेक धर्म शास्त्र और विज्ञान भी इसका समर्थन करते हैं । फ्रांस के विज्ञान विशारदों की शोध के अनुसार मनुष्य में से एक रसदार पदार्थ रूपी विद्युत प्रवाह होता रहता है और दुष्ट हृदयों से यह दुर्गन्ध रूप तथा सज्जनों के शरीर से सुगन्ध रूप होकर वह रहा है । यह प्रवाह एक शरीर से दूसरे शरीर में भी प्रवेश कर सकता है । कहना नहीं होगा कि एक मात्र इस शक्ति के ऊपर ही मेस्मेरिज्म की आधारशिला रखी गई है । इस शक्ति के प्रयोग से कोई भी व्यक्ति वायु में उड़ सकता है, रोगों का निवारण कर सकता है आदि-आदि । इस प्रकार के मानसिक प्रवाह को हमारे शास्त्रों में 'तेजस्' और अंग्रेजी में "Aura" कह कर घोषित किया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आश्चर्यजनक विद्या किसी को अल्पाभ्यास से क्षण में प्राप्त नहीं हो सकती । इसको जीतने के लिए आत्म-विश्वास, दृढ़ इच्छा शक्ति, दृढ़ संकल्प, परमार्थ-बुद्धि, बेधक दृष्टि, स्वस्थ्य शरीर, अखण्ड धैर्य, शुद्ध आहार-विहार और शान्त चित्त होना आवश्यक है । इसके बाद आध्यात्म क्षेत्र में प्रवेश करने और सफलता पाने के लिए यह भी प्रयोजनीय है कि नित्य ब्रह्म मुहूर्त्त में उठो । शान्त कमरे में प्रविष्ट होकर एकाग्रता से ध्यान करो । किसी वस्तु विशेष पर एकाग्र दृष्टि डालने का साधन करो, सूर्यदेव को एक दृष्टि से देखो, इससे ही आँखों में-कुर्स मकनातीसी पैदा होती है । किसी पवित्र मूर्ति का ध्यान करो यदि इसमें चित्त-वृत्ति स्थिर न हो. तो एक सफेद कागज लेकर उसमें पेन्सिल से गोल और काले चिन्ह बनाकर उन्हें गिनने का अभ्यास करो । इस रीति से नित्य ५ मिनट, १० मिनट और बाद में इस नियम के लिए ज्यादा समय देने का अभ्यास करो । साथ-साथ मन को सन्तोष देते रहो कि मेरी आँखों में पवित्र बल है, ज्ञान तन्तु सबल और दृढ़ हैं और मेरी आँखों में दूसरों को काबू में रखने का विलक्षण प्रभाव है । मैं सर्वथा निर्भय हूँ दूसरों पर सत्ता कायम करने के लिए मुझमें मानसिक और शारीरिक बल की पूर्णता है । ऐसी नियमित भावना और अभ्यास करने से एक न एक दिन हम अपने आप मेस्मेरिज्म के तत्व को पा सकते हैं । इसके अतिरिक्त एक दूसरा मार्ग भी है और इसे दीर्घ श्वास खींचने की क्रिया कहते हैं । यह हमारे प्राणायाम से मिलता-जुलता मार्ग है यह प्रयोग गृह की अपेक्षा एकान्त-स्थल में करने से शीघ्र और अधिक सफलतादायी सिद्ध होता है, क्योंकि यहाँ आकर्षण शक्ति और एकाग्रता सरलता से स्फुरित हो जाती हैं, परन्तु आज के मेस्मेरिज्म जानने वाले सब के सब योग सिद्ध पुरुष नहीं हो सकते, क्योंकि उनमें उपर्युक्त गुणों का सर्वथा अभाव रहता है । बहुत से तो लालचवश मेस्मेरिज्म को धन पैदा करने का साधन बनाने में लगे हुए हैं और बहुत से इसके द्वारा दूसरों को कष्ट पहुँचाने और नीचा दिखाने का उपाय करते पाये जाते हैं । कई एक इसके अधकचरे ज्ञान के बल पर भीख कमाने में लगे हुए हैं । अतः इन लोगों से इस विद्या की जानकारी प्राप्त करने का स्वप्न देखना सर्वथा भ्रम पूर्ण है । इस विषय के ज्ञान की हर भाषा में एक से एक बढ़कर अलग-अलग पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । अतः इसके अभ्यासार्थियों को पहले उन पुस्तकों का अध्ययन करके मूल विषय की सम्पूर्ण अभिज्ञता प्राप्त करना चाहिए ।

मेस्मेरिज्म का इतिहास

इस समय यूरोप और अमेरिका के विद्वानों ने भौतिक साइन्स में बड़ा नाम किया है । उन्होंने प्रत्येक पदार्थ के मूलतत्वों का पता लगाकर उनके गुण और दोषों की अलग-अलग जानकारी प्राप्त कर ली है । अब वे उन मूलतत्वों को अलग-अलग तादाद में और नए-नए तरीके से मिलाकर ऐसे आश्चर्यजनक पदार्थ और यन्त्र बना रहें हैं कि उनके द्वारा दुनिया की कायापलट होती चली जा रही है । आरम्भ में तो वैज्ञानिक लोग सिवाय प्रत्यक्ष पदार्थों या शक्तियों के और किसी चीज पर विश्वास ही नहीं करते, पर धीरे-धीरे वे मानसिक शक्तियों का परिचय प्राप्त करने लगे और इस बात को स्वीकार करने लगे कि इन सूक्ष्म शक्तियों द्वारा भी अनेक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं । मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म, साइकोमैट्री आदि विद्याओं की उत्पत्ति और विकास इन सूक्ष्म शक्तियों का अध्ययन, प्रश्न और अभ्यास करने से ही हुआ है ।

मेस्मेरिज्म का आविष्कार और प्रयोग करने वाले सबसे पहले व्यक्ति डॉ. मेस्मर साहब थे, जो आस्ट्रिया के निवासी थे और जिन्होंने यहाँ की राजधानी 'बीना' में डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त की थी । वहाँ पर इनकी मुलाकात "फादरहिल" नामक पादरी से हुई जो "एनीमैल मेग्नेटिज्म" (प्राणियों की आकर्षण) शक्ति के सिद्धान्त के जानकार थे । इन्होंने पादरी से इस सम्बन्ध में कुछ बातें सीखीं और जब उनमें कुछ सच्चाई मालूम होने लगी तो स्वयं खोज करने लगे । इससे उनको बिना किसी तरह की दवा के अनेक प्रकार के रोगों को दूर करने में सफलता मिलने लगी । उनका उत्साह बहुत बढ़ा और उन्होंने रूस, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, पेरिस आदि देशों में जाकर वहाँ बादशाहों को अपनी विद्या का परिचय दिया और ऐसे अस्पताल खुलवाए जहाँ इस विधि से इलाज किया जाने लगा । यद्यपि आरम्भ में वैज्ञानिकों ने मेस्मर का बहुत विरोध किया और उनके काम को ठगी, जालसाजी, हाथ की चालाकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि बतलाया, पर धीरे-धीरे इस शक्ति का ज्ञान अन्य लोगों को भी होने लगा और कुछ समय में "मानसिक शक्ति द्वारा अन्य मनुष्यों को प्रभावित करना" विज्ञानी की एक शाखा मान ली गई । इस सम्बन्ध में डॉ. मेस्मर साहब इस विद्या में जहाँ तक पहुँच पाये थे वह यह था कि 'हर बड़े प्राणी में एक प्रकार की चुम्बकीय शक्ति होती है जिसके द्वारा वह दूसरों को प्रभावित कर सकता है और उनके कष्टों को दूर कर सकता है, अथवा उनको नुकसान भी पहुँचा सकता है । इसका नाम उन्होंने "एनीमल मेगनेटिज्म" (हैवानी आकर्षण) रखा था, परन्तु बाद में दूसरे वैज्ञानिक इस विषय में और भी आगे बढ़ गए । मशहूर हिप्नोटिस्ट "लेबाल्ट" ने यह खोज की कि हर बड़े जानवर में ही नहीं, वरन् छोटे से छोटे प्रत्येक प्राणी में यह शक्ति रहती है और इसे वे 'जूमेगनेटिज्म' के नाम से पुकारने लगे । इसके पश्चात् "पारीश्यिन" साहब अपनी खोज में इस नतीजे पर पहुँचे कि यह चुम्बकीय शक्ति एक प्रकार का पतला और ऐसा सूक्ष्म द्रव्य है कि जो बहुत शीघ्र एक स्थान से निकल कर दूसरे स्थान को चला जाता है और यह जानकारों में ही नहीं वरन् संसार के हर एक पदार्थ में मौजूद है । इसलिए वे इसे "मेगनेटिक फ्लूड" कहने लगे । इसी प्रकार श्री जेन वेक और श्री बार्डिक इत्यादि ने भी इस सम्बन्ध में कुछ नई-नई बातें मालूम कीं । मि. बार्डिक ने जो नई बात वैज्ञानिक जगत को बतलाई वह यह थी कि जिन वस्तुओं के परमाणु अधिक घने होते हैं वह अपने अन्दर से इस प्रकार की किरणें फेंकती हैं जो मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्थिति के लिए लाभदायक होती हैं । उनमें एक ऐसी आकर्षण शक्ति होती है कि जिसका बहुत कुछ सम्बन्ध शरीर और मन में रहता है । जवाहरात में हीरा सबसे अधिक गुणकारी है क्योंकि उसके परमाणु इतने अधिक घने होते हैं कि उसे हथौड़े से भी नहीं तोड़ा जा सकता । धातुओं में सुवर्ण सबसे भारी है और इसलिए उसका धारण करना प्राचीनकाल से शुभ व लाभदायक माना जाता है ।'

सम्मोहन अथवा हिप्नोटिज्म

जब यूरोप में मेस्मेरिज्म का काफी प्रचार हो गया और अनेक विद्वानों ने उस पर ग्रन्थ भी लिख डाले तो अन्य लोग इस सम्बन्ध में नवीन शक्तियों की खोज और परीक्षा करने लगे । उनमें से मैनचेस्टर के एक डाक्टर ब्रेड ने सन् १६४१ में हिप्नोटिज्म के सिद्धान्त का पता लगाया । उन्होंने बतलाया कि मेस्मर साहब ने जो प्राणियों की आकर्षण शक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व माना है और उसका एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रवाह होना बतलाया है, वह मत ठीक नहीं है । "मेस्मेरिज्म" के प्रयोग में किसी व्यक्ति को स्ववश करने और उसे आदेश देकर इच्छानुसार कार्य कराने का रहस्य "मानसिक संकल्प" के सिवाय और कुछ नहीं । किसी मनुष्य से प्रभावशाली ढंग से कोई बात कह कर जब उसे विश्वास करा दिया जाता है तो वह तदनुसार आचरण करने लगता है । सम्मोहन विद्या का मूल तत्व यह संकल्प शक्ति ही है जिसे अंग्रेजी में "सजेशन" कहते हैं । हाथ फेरना, नाक की नोक पर निगाह का जमाना, किसी चमकीली वस्तु को निगाह गढ़ा कर देखना आदि क्रियाएँ इस "संकल्प प्रकाश" क्रिया की सहायक हैं । इस सम्बन्ध में इस विद्या के विशेषज्ञों की सम्मति इस प्रकार है—

"किस प्रक्रिया को करने से किस शरीर-यन्त्र को अवसन्न किया जा सकता है, इस बात का ज्ञान सम्मोहनकारी को प्राप्त कर लेना आवश्यक है । यदि हम किसी व्यक्ति की आँखों के ऊपर तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर उसके नेत्रों में अवसन्नता ला सकेंगे, तो उसके शरीर में भी अवसाद का भाव उत्पन्न हो जायेगा । इसके बाद "सो जाओ" कहकर 'संकल्प' का प्रयोग करने से उसमें निद्रा का भाव उत्पन्न हो जायेगा ।" मेस्मेरिज्म वाले तो रोगों को दूर करने, बन्द चिट्ठियों को पढ़ने, दूर देश में रहने वाले व्यक्तियों के पास सन्देश भेजने, चोरी गई या छुपी हुई वस्तुओं का हाल जान लेने आदि के चमत्कारी कार्य करते हैं । इसको सांसारिक सफलता कह सकते हैं । इसके विपरीत योग विद्या का उद्देश्य सांसारिक बन्धनों से निवृत्त होना है जो मेस्मेरिज्म से उच्चकोटि का है ।

अपने प्रियजनों को सदा से ही हम यह बताते रहे हैं कि मेस्मेरिज्म में कोई अनोखी बात नहीं है, यह योग साधना का एक बहुत ही छोटे दर्जे का तुच्छ सा खेल है । ऐसे खेल करने पर भारतीय योगी उतरते तो हजारों तरह की मेस्मेरिज्मों की रचना हो जाती और वे सब एक से एक अद्भुत होतीं । मनुष्य का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन जादू का पिटारा है, इसकी हर एक लहर आश्चर्यमयी है । एकाग्रता के द्वारा जो दिव्य शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं उनका पारावार नहीं मिल सकता । श्रीमती ओ. हण्णुहारा ने अपने ग्रन्थ ''Concentration and the Acquirement of Personal Magnetism'' में विशद वैज्ञानिक विवेचना करते हुए यह साबित कर दिया है कि मनुष्य का मन अद्‌भुत शक्तियों का भण्डार है और मानसिक एकाग्रता द्वारा आश्चर्यजनक शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं और हो सकती हैं । मेस्मेरिज्म इसी का आरम्भिक प्रयोग और प्रयास है ।

मेस्मेरिज्म सम्बन्धी शोधें

पिछले पृष्ठों पर मेस्मेरिज्म के आविष्कर्त्ता डॉक्टर मेस्मेर की संक्षिप्त जीवनी दी गई । उसे पढ़कर पाठक यह समझ सकेंगे कि उस महापुरुष ने कितने प्रबल प्रयत्नों के साथ इस विद्या को सुव्यवस्थित रूप में बनाकर सर्व साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया । निःसन्देह इस विद्या को ठीक-ठीक रूप देने में डॉक्टर मेस्मर को श्रेय है । परन्तु यह न समझना चाहिए कि इस विद्या का आदि और अन्त भी उन्हीं के साथ था । बहुत प्राचीन काल से इस दिशा में प्रयत्न हो रहे थे और उनके पीछे भी बहुत कुछ हुआ है । ईसा की छठवीं शताब्दी में ग्रीक देश के पंडित सोलन ने बहुत से ऐसे रोगी प्राण शक्ति से अच्छे किए थे जो औषधि से ठीक नहीं हो सके । पाँचवीं शताब्दी में नील नदी के तट पर रहने वाले जीयस नामक योगी इस विधि में प्रसिद्ध थे । ईसा के ४३१ पूर्व डॉक्टर हिमोक्लेटस इस विद्या के पंडित थे । एक दूसरा ग्रीक विद्वान एसक्लिपिएडिस, मार्जन द्वारा बीमारों को अच्छा करता था । ईसाई धर्म के प्रवर्तक यीशु और उनके साथी मोजेस दोनों ने यह विद्या मिस्र देश के पुरोहितों से सीखी थी । इन्जील से प्रकट है कि यीशु ने इस विद्या के बल से असंख्य पीड़ितों को अच्छा किया था । सन् १७०० में आयरलैण्ड के ग्रीट्रेक्स नामक न्यायाधीश ने देश-विदेश में घूम-घूम कर शारीरिक बिजली के द्वारा अनेक लोगों के कष्ट दूर किए थे । सन् १५०१ में कार्डेनस नामक एक व्यक्ति ने मेस्मेरिज्म के प्रयोग किए थे । सन् १६४६ में विलियम मैक्सवेल नामक अंग्रेज ने इस विद्या के मूल तत्व लिखे थे । ईसा से ५०० वर्ष पूर्व यूनान का योगी पिथागोरस हाथ के इशारे से बड़े-बड़े भयंकर जंगली जीवों की इच्छानुवर्ती बना लेने के लिए प्रख्यात था । इपीरस का राजा पिन्हस, क्रेस्पेसियन का राजा हेडरियन अपनी उँगलियों से छूकर पीड़ित स्थान को अच्छा कर देते थे । इंग्लैण्ड और फ्रान्स के कई राजा इस विद्या के अच्छे अभ्यासी हो चुके हैं । इस प्रकार पंडित इस्कुलेपियस, इंग्लैण्ड का पुजारी उरूइड, ह्वान हेमंह, स्कॉटलैण्ड निवासी मेक्सवेल, पादरी हेडल आदि अनेक माननीय पाश्चात्य सज्जनों ने इस विद्या द्वारा लाभ उठाया है । मिस्र देश के अलफराद नामक एक विचित्र आध्यात्म शक्ति सम्पन्न योगी की अद्‌भुत कथाएँ सुनी जाती हैं । तिब्बत के लामा योगियों का थोड़ा बहुत परिचय जिन्हें है वे उनकी अद्‌भुत शक्तियों का वर्णन करते-करते नहीं थकते ।

डॉक्टर मेस्मर के पश्चात् यूरोप तथा अमेरिका में इस विद्या की पर्याप्त शोधें हुई हैं और हो रही हैं । डॉक्टर ग्रेगरी और रायकेन बक यह दोनों ही समकालीन प्रयोक्ता रहे हैं । यूरोप में एक समय इनकी धाक थी । ल्यूविस नामक नीग्रा ने ऐसी सफलता प्राप्त की थी कि जब वह मन को एकाग्र करता था चेहरा प्रकाशवान हो उठता था, एक साथ बीस-पच्चीस आदमियों को बेहोश कर देने की शक्ति उसमें थी । डॉक्टर डार्लिंग और डॉक्टर ब्रेड ने चमकती हुई चीज पर दृष्टि रखवा कर मनुष्यों को निद्रित करने की एक अलग विधि का प्रचार किया । डॉक्टर एसडेल नामक सिविल सर्जन अपने बीमारों को मेस्मेरिज्म से बेहोश करके ऑपरेशन किया करते थे । क्लोरोफॉर्म का प्रयोग करने की उन्हें जरूरत न पड़ती थी । लीवस नामक एक विद्वान ने संगीत की एक ऐसी विधि निकाली थी जिससे वह अपने बीमारों को निद्रित कर देते थे, डॉक्टर विलियम डेवी श्वास-प्रश्वास क्रिया द्वारा जल को ऐसा अभिमन्त्रित कर देते थे कि उसके सेवन करते ही मनुष्यों पर असाधारण प्रभाव पड़ता था, कप्तान जेम्स कुर्सी या चौकी पर किसी व्यक्ति को बिठाते थे और उस पर मार्जन क्रिया द्वारा प्रभाव डालते थे । रूस के बादशाह जार को एक मेस्मेरिज्म ज्ञाता ने अपने हाथ की कठपुतली बना रखा था, वह जो चाहता था सो उससे कराता था । इस ग्रेगरी को 'रूस का राहु' की इतिहास लेखकों ने उपाधि दी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यूरोप में आजम ब्रोका और बरन्युस इस विद्या के दो बड़े आचार्य हुए हैं । दुमोन्ट पेलियर पेट्रिस, बिनसुएन्जर, चारकोट, लुटसन इनके प्रयोग बहुत सफल रहा करते थे । लायवोल्ट को अपने प्रयोगों में ९२ फीसदी और बर्हम को ८० फीसदी सफलता मिली थी । स्वीडनवासी बेटर्स ब्राड, एमस्टर्डम निवासी वान रेन्टर घम और बान ईडन की सफलताएँ चारों ओर प्रसिद्ध हो चुकी थीं । जेम्स कोट ने इस विद्वान के सूक्ष्म तत्वों को सर्व साधारण पर भली प्रकार प्रकट किया था । मार्जन क्रिया में डी ल्युज ने अनेक नए आविष्कार किए । वर्न्हीम ने बिना निद्रित किए ही पात्र को प्रभावित करने का विज्ञान रच डाला । डॉक्टर अलफ्रॉयड में ऐसी शक्ति थी कि उनके द्वारा निद्रित किए हुए लोग दूर स्थानों के दृश्यों को ठीक-ठीक देख लेते थे डॉक्टर अलफ्रॉयड ने एक पात्र को निद्रित करके उससे पूछा कि अमेरिका के प्रेसीडेण्ट इस समय क्या कर रहे हैं ? पात्र ने बताया कि प्रेसीडण्ट विल्सन इस समय ह्वाइट हाउस में कुर्सी पर बैठे हुए एक तार पढ़ रहे हैं । तार का मजबून भी उसने बता दिया । इस तार में सुलह कॉन्फ्रेन्स की ऐसी गुप्त राजनैतिक बातें थीं जिनका किसी को कानों कान पता नहीं हो सकता था । डॉक्टर अलफ्रॉयड तुरन्त ही प्रेसीडेण्ट के पास गए और उस तार की बात मालूम होने का भेद प्रकट किया । विल्सन आश्चर्य से सन्न रह गए कि इतनी गुप्त बात इस प्रकार इन्होंने जान ली । उन्होंने डॉक्टर साहब के प्रयोग की सच्चाई को स्वीकार किया, साथ ही उस तार का भेद किसी पर प्रकट न करने का कठोर आदेश कर दिया । डॉक्टर डब्ल्यू ब्राउन ने गत महायुद्ध के समय मेस्मेरिज्म विद्या से ६० फीसदी ऐसे बीमार सैनिक अच्छे किए थे जिन्हें उन्माद, निद्रानाश आदि रोग हो गए थे ।

जर्मनी के डॉक्टर अलबर्ट मेस्मेरिज्म में 'संकल्प प्रकाश' की विशेष शक्ति मानते थे । उनके प्रयोगों का यही आधार था । प्रोफेसर फ्रॉयड के मत से 'अन्तः चेतना' को प्रभावित करने से व्यक्तियों को प्रभावित किया जाता है । काउण्ट पुसीगर ने मानवीय विद्युत के सम्बन्ध में चमत्कारिक शोधें प्रकट कीं । प्रो. विलियम क्रुक्स जो पहले इस विद्या के कट्टर विरोधी थे, अन्त में इसकी सत्यता से प्रभावित होकर पूर्ण भक्त बन गए । लन्दन में डॉ. ईलिरसन ने इसी विद्या से निद्रित करके अनेक रोगियों के ऑपरेशन किए थे । फ्रान्स के मनोविज्ञान वेत्ता आचार्य ऐमिली क्यू 'आदेश' द्वारा कठिन रोगों की चिकित्सा करते हैं ।

शोधें करते-करते अन्वेषकों में मतभेद भी हुआ है । जेम्स कोट और ब्राइउ के सिद्धान्तों में प्रत्यक्ष मतभेद है । यूरोप में अब (१) मैस्मेर का सिद्धान्त, (२) नेन्सी का सिद्धान्त, (३) चारकोट का सिद्धान्त यह तीन प्रथक सम्प्रदाय हो गये है । मेस्मर के मत वाले ओज शक्ति और एकाग्रता को प्रधान मानते हैं । नेन्सी का मत है कि केवल मार्जन (पास) और आदेश (सजेशन) से भी यह सब हो सकता है । चारकोट के मत से चमकदार चिकनी वस्तुओं पर एकाग्रता करने से निद्रा आ सकती है । तीनों ने ही अपने-अपने मत की पुष्टि में सप्रमाणों सहित बड़े-बड़े ग्रन्थों की रचना की है ।

अब तक मेस्मेरिज्म सम्बन्धी अनेक अच्छी पुस्तकें निकल चुकी हैं । उनमें डॉक्टर विलियम्स की Text book of Mesmerism, डॉक्टर ग्रेगरी की Animal Magnetism, डॉ. विलियम डेवी की The Illas Tractcd Practical Mesmerist, प्रो. एलिस ग्रे की Miracles of Nature, डॉ. ब्राइड की Hypnotism, जेम्स वर्न्स की Mesmerism, डॉक्टर एसडेल की Mesmerism, एलिन पुटमेन की Works on Spritualism, डॉक्टर डब्ल्यू. ई फोरेस्ट की Hydien, ओ. हण्णुहारा की Practical Hypnotism, डुएन्ट डी ग्रोस की Electrodyne misme vital, सी. डब्ल्यू. लेडवीटर की Dreams, एफ. एच. मायर्स की Human Personality, सर ओलिवर लाज की Survival of Man, प्रोफेसर बैरेट की Psychical Research, मोडान्यूज की History of Megnetism, त्रिश्नन डी. लारसन की Your forces and how to use them आदि पुस्तकें विशेष महत्त्व की हैं । इस प्रकार की पुस्तकें M/s L. N. Fowler and Co. 7 Imperial Arcade, Ludgate Circus London E. C. 4 की मार्फत मँगाई जा सकती हैं ।

प्रकृति के रहस्य बड़े गूढ़ हैं । मनुष्य जाति जितना कुछ जान सकी है वह अल्प है, उससे असंख्य गुना जानना अभी बाकी है । स्वतन्त्र मस्तिष्क के लोग इसी दृष्टिकोण से विचार करते हैं । किसी लकीर के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति : एक दिव्य विभूति ६.७

फकीर बन बैठने से उस विद्या की सजीवता नष्ट हो जाती है । हर्ष की बात है कि मेस्मेरिज्म विद्या डॉक्टर मेस्मर का सम्प्रदाय बनकर नहीं रह गई, वरन् इसके सम्बन्ध में अधिक गहरी महत्त्वपूर्ण शोधें हुई हैं और हो रहीं हैं । यह वैज्ञानिक अन्वेषण जारी रहे तो हमारा विश्वास है कि भारतीय योग शास्त्र एवं आध्यात्म शास्त्र का ही आदर्श स्वीकार करना पड़ेगा और नवीन पीढ़ी को उन्हीं सिद्धान्तों का अनुगमन करते हुए आगे बढ़ना पड़ेगा ।

मेस्मेरिज्म का तत्व ज्ञान

मेस्मेरिज्म विद्या के अनुसार जो शक्ति उत्पन्न होती है उसके तीन स्रोत हैं—(१) इच्छा (Will), (२) आदेश (Suggestion), (३) मार्जन (Passes) । इन तीन साधना द्वारा शक्ति का उत्पादन और प्रयोग करके प्रयोक्ता लोग आश्चर्यजनक कार्यों का सम्पादन करते हैं । अब हम इन तीनों तथ्यों पर कुछ प्रकाश डालते हैं—

(१) इच्छा शक्ति—ईश्वर ने इच्छा की कि "मैं एक अनेक होजाऊँ" फलस्वरूप इस सारे जगत की रचना हो गई । इच्छा के कारण ही मनुष्य स्वर्ग-नरक, बन्ध-मोक्ष, जन्म-मरण के चक्र में घूमता है । संसार की सारी हलचल संकल्प के आधार पर है । जहाँ कहीं जो कुछ कार्य हो रहा है इच्छा के कारण ही हो रहा है । चैतन्य प्राणियों की चेतना इच्छा से परिपूर्ण है, कुछ न कुछ इच्छा उन्हें बनी ही रहती है और उसी की प्रेरणा से शारीरिक एवं मानसिक यन्त्र चलते रहते हैं । इच्छा और चेतना दो ऐसे तत्व हैं जिनको एक-दूसरे से प्रथक नहीं किया जा सकता । निखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो चेतना काम कर रही है वह संकल्पमय है । संकल्प के शान्त होते ही चेतना भी समाप्त हो जाती है ।

वैज्ञानिक टी. डी. ब्रेनो ने सिद्ध किया है कि जड़ प्रकृति का एक सूक्ष्म परमाणु इलेक्ट्रोन—इतनी शक्ति रखता है कि उसके विस्फोट से लन्दन जैसा महानगर क्षणभर में भस्मात् हो सकता है । जड़ प्रकृति के परमाणुओं की इतनी महान शक्ति आंकी गई है । परन्तु चैतन्य जगत् के एक परमाणु का जब अन्वेषण किया जायेगा जब पता चलेगा कि उसके अन्तर्गत जड़ परमाणुओं की अपेक्षा सहस्रों गुनी शक्ति छिपी पड़ी है । जड़ पदार्थों पर पूरा-पूरा शासन चैतन्य का है । जो चैतन्य है वह अपनी क्षमता के कारण जड़ पदार्थों का मनमाना उपयोग करता है । इससे प्रकट है कि चैतन्य में जड़ की अपेक्षा कहीं अधिक और उच्चकोटि की शक्ति है ।

मनुष्य चैतन्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है । उसमें अन्य जीवधारियों की भाँति साधारण चेतना तो है ही साथ ही विकास के उच्च शिखर पर पहुँची हुई आत्मिक चेतना भी है । इस चेतना में अकूत ताकत है । विकासवाद के आचार्य डार्विन महोदय ने प्रमाणों सहित साबित किया है कि मक्का की भुटिया ने अपनी रक्षा के कारण अपने ऊपर पर्तदार खोल उत्पन्न किया । माँसाहारी चिड़ियों की पहचान में न आने की इच्छा से तितली ने अपना रंग फूलों जैसा बनाया । पेड़ों के नीचे खड़े होने पर धूप-छाया से दीखें और पहचाने न जा सकें इस इच्छा के कारण कितने ही जीवों ने अपने शरीर चितकबरे बना लिए, कुछ घास में छिपने वाले घास के रंग के हो गए । इन सब बातों से पता चलता है कि इच्छा के कारण छोटे दर्जे के जीव बड़े-बड़े परिवर्तन करने में सफल हुए हैं । फिर मनुष्य का तो कहना ही क्या ? उसकी इच्छा शक्ति ने निर्जन, सुनसान, ऊबड़-खाबड़ जमीन को कैसी रंगभूमि बना दिया है, तरह-तरह के अद्भुत आविष्कारों और कला-कौशलों से पृथ्वी को कैसा चित्र-सा बना दिया है । किसी उजाड़ नक्षत्र का इस सरसब्ज पृथ्वी से यदि कोई मुकाबला कर सके तो वह समझेगा कि मनुष्य के संकल्प में कितनी रचना शक्ति है । जितनी वह अब तक प्रकट हुई उससे अनेकों गुनी अभी अप्रकट पड़ी हुई है ।

निःसन्देह संकल्प की शक्ति महान है । यों कहना चाहिए कि वह सर्वोपरि है । इच्छा के बल से जीव महानतम कार्य कर सकता है । मेस्मेरिज्म जैसी साधारण योग्यता का उसके द्वारा प्राप्त कर लेना बिल्कुल ही साधारण और सरल है । 'चाहना' और 'इच्छा करना' दो पृथक बात हैं । केवल चाहना 'शेखचिल्ली की सी कल्पनाएँ करना' कुछ विशेष महत्त्व की बात नहीं है । इससे शक्ति उत्पन्न नहीं होती किन्तु ऐसी इच्छा जिसके पीछे एकाग्रता, गम्भीरता, दृढ़ता, तत्परता, तीव्रता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण शक्ति : एक दिव्य विभूति ६.८

प्रयत्नशीलता भी हो अवश्य ही फलवती होती है उसके असफल होने की सम्भावना नहीं रहती ।

श्रीमती. ओ. हण्णुहारा ने मानसिक शक्तियों की विवेचना करते हुए सिद्ध किया है कि मस्तिष्क में तीव्र इच्छा के साथ जो भावना की जाती है उसकी बड़ी शक्तिशाली विद्युत लहरें उत्पन्न होती हैं । यह लहरें ईथर तत्व में दौड़ पड़ती हैं और चाही हुई बात को पूरा करने के लिए परिस्थितियाँ जुटाने में लग जाती हैं । उनका यह भी मत है कि जिस वस्तु या कार्य के लिए तीव्र इच्छा की जाती हैं वे विद्युत लहरें नियत स्थान पर पहुँचकर, अनुकूलता पैदा करने लगती हैं । मनोविज्ञान के सिद्धान्तानुसार तीव्र इच्छा में दूसरों को प्रभावित करने की पर्याप्त शक्ति है । श्रद्धा और विश्वास को तुलसीदास जी ने भवानी और शंकर की उपमा दी है । भगवान उमाशंकर सर्व शक्तिवान हैं, श्रद्धा और विश्वास की प्रचण्ड सत्ता से कौन इन्कार कर सकता है ।

विज्ञ पाठकों में से एक भी ऐसा न होगा जो संकल्प की शक्ति से अपरिचित हो । भावना से भगवान प्रकट होते हैं, फिर मेस्मेरिज्म की योग्यता प्रकट होने में तो सन्देह ही क्या है । आतिशी शीशे द्वारा जब थोड़ी सी परिधि की सूर्य किरणें एक स्थान पर एकत्रित कर दी जाती हैं तो अग्नि उत्पन्न हो जाती है । सारे शरीर में व्याप्त शक्तियों को एक स्थान पर एकत्रित करके यदि किसी जगह उसे फेंका जाय तो उसका प्रहार और प्रभाव असाधारण होगा । मेस्मेरिज्म के प्रयोक्ता अपनी मानसिक शक्तियों का तीव्र इच्छा के द्वारा एकीकरण करके किसी व्यक्ति पर फेंकते हैं, यह प्रहार व्यर्थ नहीं जाता वरन् सनसनीखेज असर दिखाता है इसी असर को लोग "मेस्मेरिज्म का चमत्कार कहकर पुकारा करते हैं ।

(२) आदेश—मनुष्य स्वतः गीली मिट्टी के समान है । उसे चाहे जैसा ढाला जा सकता है । छोटा बच्चा जिन लोगों के द्वारा पाला-पोषा जाता है उन्हीं की भाषा सीखता है, वैसे ही आचरण, विचार, व्यवहार ग्रहण करता है । महतर का लड़का गन्दगी से घृणा नहीं करता पर उच्च वर्ण का बालक वैसे स्वभाव का न होगा । यह अन्तर क्यों है ? इसकी खोज करने पर पता चलता है कि महतर के बालक के ऊपर जिन लोगों का प्रभाव पड़ा है वे गंदगी से घृणा नहीं करते इसलिए उसने अपने पथ-प्रदर्शकों का प्रभाव ग्रहण किया । इसी प्रकार उच्चवर्ण के बालक ने भी अपने अभिभावकों का प्रभाव ग्रहण करके तदनुसार आचरण करना सीखा ।

गीली मिट्टी को जैसे सांचे में ढाला जाता है वैसा ही बर्तन या खिलौना बनकर तैयार हो जाता है । मनुष्य का निर्माण, आदेशों (Suggestion) के सांचे मे होता है, जो जैसे वातावरण, विचार और परिस्थितियों में बढ़ा है वह उसी प्रकार का ढल जायेगा । अफ्रीका में एक बार एक भेड़िया दो मनुष्य बालकों को उठा ले गया । कुछ ऐसी अद्भुत बात हुई कि उसने उन बालकों को खाया नहीं वरन् पाल लिया । बहुत दिन बाद शिकारियों का एक दल उधर से निकला तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि मनुष्य बालक भेड़ियों के साथ रहते हैं, वैसे ही चार पैर से चलते हैं, उसी तरह गुर्राते हैं, शिकार पकड़ते हैं और कच्चा माँस खाते हैं । इन बालकों को पकड़कर मानव तत्व की खोज करने वालों की अन्वेषण शाला में भेज दिया गया ।

वैज्ञानिकों की एक प्रसिद्ध सभा अब इस निष्कर्ष पर पहुँच गई है कि "मनुष्य स्वयं एक कोरे कागज की तरह होता है, उस पर जैसा कुछ अंकन होता है वैसा ही वह बन जाता है ।" अब वे लोग कई बालकों को अलग-अलग एकान्त कमरों में रखकर परीक्षण कर रहे हैं । इनका पालन-पोषण करने के लिए सुविज्ञ वैज्ञानिक नियुक्त हैं । इनके अतिरिक्त और कोई उन बालकों के पास नहीं जा सकता । इस प्रयोग द्वारा उन बालकों को वर्तमान मनुष्यों से सर्वथा भिन्न विचार, विश्वास, शक्ति और सम्भावनाओं वाला बनाया जा रहा है । इसमें सफल होने की वैज्ञानिकों को पूरी आशा है ।

'संगति का प्रभाव' इस सत्य को सब कोई स्वीकार करते हैं । इसी संगति का असर पड़ता है जिसका कि प्रभाव मनुष्य ग्रहण करे । यदि प्रभाव ग्रहण न करे तो महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष के साथ रहकर भी दुष्टात्मा लोग पहले जैसे दुष्ट ही बने रहते हैं । यदि प्रभाव ग्रहण करें तो दूरस्थ व्यक्ति का असर भी अपने में धारण कर सकता है । 'एकलव्य भील' ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूरस्थ गुरु की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसी से बाण विद्या सीख ली थी । 'संगति' का तात्पर्य 'पास रहना' नहीं, वरन् 'प्रभाव ग्रहण करना' है । पास-पास रहना तो संगति का एक छोटा सा साधन है । यह हो सकता है कि पास रहते हुए भी प्रभाव न हो और दूरस्थ व्यक्ति का असर पड़ जाय । कारण स्पष्ट है सच्चे अर्थों में 'सत्संग' वही है जिसमें प्रभाव ग्रहण किया जाता है ।

'प्रभाव' की शक्ति अद्‌भुत है । इसके द्वारा मनुष्य कुछ का कुछ बन जाता है । मेस्मेरिज्म विद्या में 'इच्छा शक्ति' के उपरान्त 'प्रभाव शक्ति' का स्थान है । इसे ही आदेश या सजेशन कहते हैं । प्रभाव डालने में विचार प्रकाशन मुख्य है । बिना मुँह से बोले आचरण दिखाकर भी प्रभाव डाला जाता है और वाणी से विचारों का प्रकाशन करके भी । आचरण का प्रभाव गहरा पड़ता क्योंकि फिर उसमें कुछ सन्देह नहीं रहता, वाणी में सन्देह की गुंजाइश रहती है । इसलिए केवल विचार प्रकाशन से मेस्मेरिज्म करने वालों का काम नहीं चलता । उन्हें दूसरों को प्रभावित करने के लिए वाणी और आचरण दोनों की सहायता लेनी पड़ती है ।

तर्क, सन्देह या अविश्वास यदि मन में काम कर रहे हों तो दूसरे का फेंका हुआ प्रभाव प्रायः निरर्थक चला जाता है । अखिल ईथर तत्व में रेडियो की वाणी गूँजती रहती है पर सुनाई सिर्फ वहीं पड़ती है जहाँ रेडियो यन्त्र लगा हो । इसी प्रकार एक व्यक्ति का प्रभाव सदा एक-सा होते हुए भी उसे ग्रहण वही करते हैं जिनका मन उसे ग्रहण करने के अनुकूल है । अविश्वास तर्क, सन्देह के स्थान पर श्रद्धा विश्वास या स्वीकारोक्ति मौजूद है ।

मेस्मेरिज्म करने वाले जानते हैं कि बाह्य मन (Objective mind) में तर्क और सन्देह की शक्ति है और अन्तर्मन (Subjective mind) में श्रद्धा तथा विश्वास का निवास है । इसलिए वे अपना प्रभाव डालने के लिए एक अद्‌भुत उपाय काम में लाते हैं । वे एक विशेष आध्यात्मिक क्रिया द्वारा बाह्य मन को निद्रा ग्रस्त कर देते हैं जिससे तर्क और सन्देह की शक्ति शिथिल हो जाय । दरवाजा खुल जाने पर घर में भीतर घुस जाना आसान है । इसी प्रकार तर्क, सन्देह और विवेचना के सो जाने पर अन्तर्मन के ऊपर सुगमता पूर्वक प्रभाव स्थापित किया जा सकता है । साधारण जीवन में तर्क और सन्देह की चलनी में भले-बुरे प्रभावों को छानता रहता है, विवेचना की कसौटी पर उन्हें कसता रहता है तब फिर जो उपयोगी और ठीक जँचते हैं उन्हें स्वीकार करता है और अरुचिकर प्रभावों को अस्वीकार करके बाहर हटा देता है किन्तु मेस्मेरिज्म क्रिया द्वारा तार्किक मन के निद्रित हो जाने पर फिर यह बात नहीं रहती । प्रयोक्ता अपने प्रभाव को सीधा अन्तःमन पर स्थापित कर देता है । यह बात प्रत्यक्ष है कि अन्तर्मन के विश्वासों के आधार पर शारीरिक एवं मस्तिष्कीय क्रियाएँ चलती हैं । मेस्मेरिज्म द्वारा निद्रित मनुष्य की सारी क्रियाएँ भी उसी प्रभाव के द्वारा होने लगती हैं जो उस पर डाला गया है । जब तक मेस्मरिक निद्रा है तब तक तो वह प्रभाव पूर्ण रूप से रहता ही है । बाद में भी जग जाने पर भी वह संस्कार बीज रूप से मन पर बने रहते हैं । इस विज्ञान के अनुसार ही आदेश शक्ति का प्रयोग किया जाता है । वाणी द्वारा सूचनाएँ, आज्ञाएँ, देकर दूसरे व्यक्ति से इच्छित कार्य कराया जाता है । यही 'आदेश' मेस्मेरिज्म विज्ञान का दूसरा तथ्य है ।

(३) मार्जन—अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों के उपरान्त यह सिद्ध हो चुका है कि मानव शरीर में एक विद्युत प्रवाह निरन्तर जारी रहता है । कोई इसे जैव विद्युत, कोई 'ऑरा' (Aura) कहते हैं । भारतीय शास्त्रों में इसे 'ओज' कहा गया है । डॉक्टर मेस्मर ने इसे 'एनीमल मेगनेटिज्म' नाम दिया है । विशेष यन्त्रों की सहायता से मनुष्य शरीर के चारों ओर करीब ६ इंच तक एक प्रकाश दिखाई पड़ता है इसे अंग्रेजी भाषा में 'ऑरा' कहा जाता है । देवी-देवताओं की तस्वीरों में उनके मुखमण्डल के आस-पास सूर्य जैसा तेजमण्डल दिखाया जाता है । इससे प्रतीत होता है कि भारतीय वैज्ञानिक बहुत प्राचीन काल से इस विद्युत तेज के सम्बन्ध में जानकारी रखते रहे हैं । शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा चेहरे पर यह तेज अधिक मात्रा में होता है और अधिक दूरी तक फैला रहता है ।

डॉक्टर मेस्मर ने इस दिशा में एक और खोज की । इन्होंने साबित किया कि यह तेज हाथों की उँगलियों के पोरों में भी काफी रहता है । पहले एक प्रसिद्ध नक्षद्ध नक्षत्र विद्या के विज्ञ पुरुष मि. जेसवीट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फादर, लोह चुम्बक की सहायता से कठिन रोगों की चिकित्सा करते थे । डॉक्टर मेस्मर उनसे मिले और प्रमाणित किया कि इस चिकित्सा पद्धति में लोह चुम्बक का कुछ महत्त्व नहीं, हाथों की उँगलियों से जो मानवीय विद्युत का प्रवाह निकलता है उसी के प्रभाव से बीमारियाँ अच्छी होती हैं । विशेष कैमरों द्वारा फोटो लेकर भी यह देखा गया कि उँगलियों के आस-पास 'ऑरा' बहुत दूर तथा घना और पर्याप्त मात्रा में फैला रहता है । लोहे की सुई उँगलियों से नहीं चिपकती तो भी उँगलियों में लोह चुम्बक के गुण पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहते हैं ।

बिजली स्वभावतः हलचल उत्पन्न करने वाली, प्रभाव डालने वाली शक्ति है । मनुष्य के शरीर की बिजली का किस प्रकार चमत्कारिक प्रभाव होता है इसका सविस्तार वर्णन हम अपनी "मानवीय विद्युत के चमत्कार" और 'परकाया प्रवेश' पुस्तकों में कर चुके हैं । उन बातों को यहाँ फिर से दुहराने की आवश्यकता नहीं । यहाँ तो हम संक्षेप में अपने पाठकों को यह बताना चाहते हैं कि इस बिजली की सहायता से कठिन रोगों की चिकित्सा हो सकती है । जिन्होंने हमारी 'प्राण चिकित्सा विज्ञान' पुस्तक पढ़ी है वे इस विधि की भली प्रकार जानते होंगे । मेस्मेरिज्म विद्या में उँगली के छोरों से मार्जन करने, पास देने का तीसरा विधान है । इस क्रिया द्वारा प्रयोग करने वाला अपने शरीर की बिजली को दूसरे के शरीर में प्रवेश कराता है । डॉक्टर द्वारा पेट में पहुँचाई गई औषधियाँ विभिन्न प्रभाव उत्पन्न करती हैं किसी से दस्त होते हैं, किसी से निद्रा आती है, किसी से खून साफ होता है, किसी से कफ छँटता है । इसी प्रकार दूसरे के शरीर में डाला गया विद्युत प्रवाह भी इच्छित परिणाम उपस्थित करता है । किन्हीं मार्जनों (Passes) से रोग अच्छे होते हैं, किन्हीं से निद्रा, किन्हीं से चैतन्यता, किन्हीं से मानसिक उथल-पुथल, किन्हीं से शारीरिक हलचल होती है । इन सब बारीकियों को मेस्मेरिज्म का प्रयोक्ता जानता है और अपनी विद्युत शक्ति का विधि व्यवस्था के अनुसार दूसरों पर प्रयोग करके इच्छित फल उत्पन्न करता है । मेस्मेरिज्म का तीसरा तथ्य यही है । मार्जन क्रियाओं का यह आधार है ।

उपरोक्त पंक्तियों में मेस्मेरिज्म के तीन आधार-भूत तथ्यों पर—इच्छा, आदेश, मार्जन पर कुछ प्रकाश डाला गया है । इससे पाठकों को यह समझने में सरलता होगी कि मेस्मेरिज्म द्वारा दूसरों पर प्रभाव किस प्रकार डाला जाता है । भौतिक बिजली के ए. सी. करेण्ट और डी. सी. करेण्ट सिर्फ ताँबे और जस्ते के दो तारों के मिलने से उत्पन्न होते हैं परन्तु आत्मिक बिजली में तीन तारों का समन्वय है । इच्छा, आदेश, मार्जन यह तीनों तार महत्त्वपूर्ण विद्युत प्रवाहों से भरे हुए हैं । जब ये एक स्थान पर एकत्रित होते हैं, आपस में एक दूसरे को छूते हैं तो तुरन्त ही हलचल पैदा करने वाली बिजली उत्पन्न हो जाती है । इसके 'नेगेटिव' और 'पोजेटिव' भागों का ठीक प्रकार विज्ञान सम्मत उपयोग करके चतुर मैस्मराइजर अपने करतब दिखाया करते हैं । संक्षेप में यही मेस्मेरिज्म का तत्व ज्ञान है ।

मेस्मेरिज्म का अभ्यास

अपने आत्मिक विद्युत प्रवाह में वृद्धि करना मेस्मेरिज्म के अभ्यासियों के लिए आवश्यक है । अपनी प्रभावशालिनी योग्यताओं को विकसित करने, बढ़ाने और दूसरों पर असर डालने योग्य बनाने के लिए कुछ अभ्यास करने पड़ते हैं । यही मेस्मेरिज्म की साधना है ।

पिछले लेखों में बताया जा चुका है कि इच्छा, आदेश और मार्जन यह तीन क्रियाएँ मेस्मेरिज्म में होती हैं । इन तीनों का संचालन करने के लिए शारीरिक और मानसिक विद्युत शक्ति की मात्रा बढ़ाने की आवश्यकता है । इसके लिए दो साधन बताये जाते हैं—(१) मानसिक विद्युत बढ़ाने के लिए—प्राणाकर्षण, प्राणायाम (२) शारीरिक विद्युत बढ़ाने के लिए—त्राटक । दोनों अभ्यास नीचे बताये जाते हैं ।

प्राणाकर्षण-प्राणायाम—कहीं एकान्त स्थान में जाओ । समतल भूमि पर नरम बिछौना बिछाकर पीठ के बल लेट जाओ । मुँह ऊपर को रहे । पैर, कमर, छाती, सिर सब एक सीध में रहें । दोनों हाथ सूर्य चक्र पर (आमाशय का वह स्थान जहाँ पसलियाँ और पेट मिलता है) रख लो । मुँह बन्द रखो । शरीर को बिल्कुल ढीला छोड़ दो मानो वह कोई निर्जीव वस्तु है और उससे तुम्हारा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है । कुछ देर शिथिलता की भावना करने पर शरीर बिल्कल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढीला पड़ जायेगा । अब धीरे-धीरे नाक द्वारा साँस खींचना आरम्भ करो और दृढ़ शक्ति के साथ भावना करो कि विश्वव्यापी महान प्राण भण्डार में से मैं स्वच्छ प्राण, साँस के साथ खींच रहा हूँ और वह प्राण मेरे रक्त प्रवाह तथा समस्त नाड़ी तन्तुओं में प्रवाहित होता हुआ सूर्य चक्र में इकट्ठा हो रहा है । इस भावना को कल्पना लोक में इतनी दृढ़ता के साथ उतारो कि प्राण शक्ति की बिजली जैसी किरणें नासिका द्वारा देह में घुसती हुई चित्रवत् दीखने लगे और अपने रक्त का दौरा एवं नाड़ी समूह तस्वीर की तरह दीखें तथा उसमें प्राण प्रवाह बहता हुआ नजर आये । भावना की जितनी अधिकता होगी उतनी ही अधिक मात्रा में तुम प्राण खींच सकोगे । फेफड़ों को वायु से अच्छी तरह भर लो और पाँच से दस सेकण्ड तक उसे भीतर रोके रहो । आरम्भ में पाँच सेकण्ड काफी हैं इसके पश्चात् अभ्यास बढ़ने पर दस सेकण्ड तक रोक सकते हैं । साँस रोके रहने के समय अपने अन्दर प्रचुर परिमाण में प्राण भरा हुआ अनुभव करना चाहिए । अब वायु को मुँह द्वारा धीरे-धीरे बाहर निकालो । निकालते समय ऐसा अनुभव करो कि शरीर के सारे दोष, रोग और विष इसके द्वारा निकाल बाहर किए जा रहे हैं । दस सेकण्ड तक बिना हवा के रहो और फिर पूर्ववत् प्राणाकर्षण प्राणायाम करना आरम्भ कर दो । स्मरण रखो कि प्राण आकर्षण का मूल तत्व साँस खींचने, छोड़ने में नहीं वरन् आकर्षण की उस भावना में है जिसके अनुसार अपने शरीर में प्राण का प्रवेश होता हुआ चित्रवत् दिखाई देने लगता है ।

इस प्रकार की श्वास-प्रश्वास क्रियाएँ दस मिनट से लेकर धीरे-धीरे आध घण्टे तक बढ़ा लेनी चाहिए । श्वास द्वारा खींचा हुआ प्राण सूर्य चक्र में जमा होता जा रहा है इसकी विशेष रूप से भावना करो । यदि मुँह द्वारा साँस छोड़ते समय आकर्षित प्राण को छोड़ने की भी कल्पना करने लगे तो यह सारी क्रिया व्यर्थ हो जायेगी और कुछ भी लाभ न मिलेगा । ठीक तरह से प्राणाकर्षण करने पर सूर्यचक्र जाग्रत होने लगता है । ऐसा प्रतीत होता है कि पसलियों के जोड़ का आमाशय के स्थान पर जो गड्ढा है, वहाँ सूर्य के समान एक छोटा सा प्रकाश बिन्दु मानस नेत्रों से दीखने लगा है । यह गोला आरम्भ में छोटा, थोड़े प्रकाश का और धुँधला मालूम देता है किन्तु जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ने लगता है वैसे-वैसे वह साफ, स्वच्छ, बड़ा और प्रकाशवान् होता जाता है । जिनका अभ्यास बढ़ा-चढ़ा है उन्हें आँखें बन्द करते ही अपना सूर्य चक्र साक्षात् सूर्य की तरह तेज पूर्ण दिखाई देने लगता है । यह प्रकाशित तत्व सचमुच प्राण शक्ति है । इसकी शक्ति से कठिन कार्यों में अद्भुत सफलता प्राप्त होती है ।

अभ्यास पूरा करके उठ बैठो । तुम्हें मालूम पड़ेगा कि रक्त का दौरा तेजी से हो रहा है और सारे शरीर में एक बिजली सी दौड़ रही है । अभ्यास के उपरान्त कुछ देर शान्ति-मय स्थान में बैठना चाहिए और हो सके तो किसी सात्विक वस्तु का जलपान कर लेना चाहिए । अभ्यास से उठकर एकदम किसी कठिन काम में जुट जाना, स्नान, भोजन या मैथुन करना निषिद्ध है । अभ्यास के लिए प्रातःकाल का समय सर्वोत्तम है ।

दृष्टिपात का अभ्यास (त्राटक)—पूर्व ही यह बताया जा चुका है कि शरीर की विद्युत शक्ति कई भागों में विभक्त होकर अलग-अलग दिशाओं में काम कर रही है । इस क्रिया में ऐसे साधन की जरूरत है, जिससे शरीर और मन की विद्युत शक्तियाँ अधिक से अधिक मात्रा में एकत्रित होकर एक स्थान पर लग जायें । त्राटक हठयोग का एक साधन हैं । इसके द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में बहने वाली बिजली को सब ओर से खींच कर एक स्थान पर लाने का प्रयत्न किया जाता है । त्राटक का अभ्यास जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, वैसे ही वैसे नेत्रों की प्रभावकारिणी शक्ति बढ़ती जाती है ।

एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा, एक चौकोर कागज या पट्टा लेकर उसके बीच में रुपये के बराबर एक काला गोल निशान बनाओ । स्याही एक सी, कहीं कम ज्यादा न हो । इसके बीच में सरसों के बराबर सफेद निशान छोड़ दो और उस सफेदी में पीला रंग भर दो । इस कागज को किसी दीवार पर टांग दो और तुम उससे चार फीट दूरी पर इस प्रकार बैठो कि वह काला गोला तुम्हारी आँखों के बिल्कुल सामने सीध में रहे । यह साधना का कमरा ऐसा होना चाहिए, जिसमें न अधिक प्रकाश रहे न अन्धेरा । न अधिक सर्दी हो न गर्मी । पाल्थी मार कर मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए बैठो और काले गोले के बीच में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो पीला निशान है, उस पर दृष्टि जमाओ । चित्त की सारी भावनाएँ एकत्रित करके उस बिन्दु को इस प्रकार देखो मानो तुम अपनी सारी शक्ति नेत्रों द्वारा उसमें प्रवेश कर देना चाहते हो । ऐसा सोचते रहो कि मेरी तीक्ष्ण दृष्टि से इस बिन्दु में छेद हुआ जा रहा है । कुछ देर इस प्रकार देखने से आँखों में दर्द होने लगेगा और पानी बहने लगेगा, तब अभ्यास को बन्द कर दो ।

अभ्यास के लिए प्रातःकाल का समय ठीक है । नित्यकर्म से निवृत्त होकर नियत स्थान पर बैठना चाहिए और चित्त एकाग्र करके साधना आरम्भ करनी चाहिए । पहले दिन देखो कि कितनी देर में आँखें थक जाती हैं और पानी आ जाता है, पहले दिन जितनी देर अभ्यास किया है, प्रतिदिन उसमें एक या आधी मिनट बढ़ाते जाओ । इस प्रकार दृष्टि को स्थिर करने पर तुम देखोगे कि उस काले गोले में तरह-तरह की आकृतियाँ पैदा होती हैं । कभी वह सफेद रंग का हो जायेगा, तो कभी सुनहरा । कभी छोटा मालूम पड़ेगा, तो कभी बड़ा । कभी चिन्गारियाँ सी उड़ती दिखाई देंगी, तो कभी बादल से छाये हुए प्रतीत होंगे । इस प्रकार वह गोला अपनी आकृति बदलता रहेगा, किन्तु जैसे-जैसे दृष्टि स्थिर होना शुरू होगी, वैसे ही वैसे यह गोला भी स्थिर होता जायेगा और उसमें दीखने वाली विभिन्न आकृतियाँ बन्द हो जायेंगी और बहुत देर देखते रहने पर भी गोला ज्यों का त्यों बना रहेगा ।

त्राटक करने का चित्र और भी कई प्रकार से बनाया जाता है । एक-एक फुट लम्बे चौड़े चौकोर दर्पण के बीचों-बीच चाँदी का चवन्नी भर काले रंग के कागज का गोल टुकड़ा काटकर चिपका दिया जाता है । उस कागज के मध्य में सरसों के बराबर एक पीला बिन्दु बनाते हैं । इस अभ्यास को एक मिनट से शुरू करते हैं और प्रतिदिन एक-एक मिनट बढ़ाते जाते हैं । जब इस तरह दृष्टि स्थिर हो जाती है, तब और भी आगे का अभ्यास शुरू किया जाता है । दर्पण पर चिपके हुए कागज को छुड़ा देते हैं और उसमें अपना मुँह देखते हुए अपनी बायीं आँख की पुतली पर दृष्टि जमा लेते हैं और उस पुतली में बड़े ध्यानपूर्वक अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं ।

तीसरी विधि मोमबत्ती या दीपक की ज्योति पर दृष्टि जमाने की है । दीपक घृत का या शुद्ध सरसों के तेल का होना चाहिए । मोमबत्ती की रोशनी भी ठण्डी समझी जाती है ।

चौथी विधि प्रातःकाल के सूर्य पर दृष्टि जमाने की है और पाँचवीं चन्द्रमा पर त्राटक करने की है । इनमें से इच्छानुसार चाहे जिसे किया जा सकता है, पर हमें अनुभव से पहला साधन ही सुलभ और निरापद प्रतीत हुआ है ।

अभ्यास पर से जब उठो, तो गुलाब जल से आँखें धो डालो । आँख धोने के लिए एक काँच की प्याली बाजार में मिलती है, उसमें गुलाब जल भरकर आँखों से लगाना चाहिए और उस पानी में आँख खोलकर उन्हें स्नान कराना चाहिए, जिससे उनकी उष्णता शान्त हो जाय और शीतलता प्राप्त हो । अभ्यास से उठने के बाद कोई पौष्टिक, शीतल वस्तु खा लेना भी आवश्यक है । दूध या दही की लस्सी मक्खन, मिश्री, फल शरबत आदि कुछ सेवन कर लेने से शरीर की बढ़ी हुई गर्मी शान्त हो जाती है ।

अभ्यासी की आयु कम से कम १८ वर्ष होनी चाहिए । शरीर और मन से निरोग तथा दुर्व्यसनों से मुक्त होना चाहिए । उसे सदाचारी, आत्म-विश्वासी, आशावादी, दृढ़ निश्चयी और धैर्यवान होना चाहिए । जब तक यह योग्यताएँ न हों तब तक साधना करने के लिए ठहर जाना चाहिए । अभ्यास के दिनों में सात्विक आहार-विहार रखना, ब्रह्मचर्य पालन करना और उत्तम भावनाएँ रखनी चाहिए ।

पहले प्राणायाम फिर त्राटक यह क्रम रखना ठीक है । आरम्भ में प्राणायाम के लिए पन्द्रह मिनट और त्राटक के लिए पाँच मिनट देने चाहिए । फिर इसी अनुपात में समय बढ़ाते हुए आध घण्टा कर लेना चाहिए । देखा गया है कि ६ से ८ सप्ताह में साधारण श्रेणी के लोगों को मेस्मेरिज्म की योग्यता हो जाती है । किसी-किसी को न्यूनाधिक समय भी लग जाता है । साधन सफल हो जाने के बाद अभ्यास को छोड़ न देना चाहिए वरन् आध घण्टा प्रतिदिन अथवा कुछ कम प्रतिदिन अभ्यास करते रहना चाहिए जिससे अपनी साधना सुरक्षित बनी रहे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोगकर्ता को अपने आचरण, चरित्र, विचार, रहन-सहन, पहनाव-उढ़ाव, बातचीत का ढंग, मुख-मुद्रा आदि इस प्रकार के रखने चाहिए जिसका दूसरों पर प्रभाव पड़े । यदि प्रयोक्ता का रंग-ढंग भद्दा और छिछोरा होगा और दूसरे उससे प्रभावित न होंगे ऐसी दशा में अपनी विद्युत शक्ति पर्याप्त होते हुए भी प्रयोगों में सफलता न मिलेगी । इस बात को भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि यदि कोई दूसरे का प्रभाव स्वयं ग्रहण न करे तो उस पर किसी भी प्रयोग का असर नहीं हो सकता, यदि पात्र का प्रयोक्ता पर अविश्वास हो और उसकी योग्यता को स्वीकार न करे तो फिर सभी प्रयोग निष्फल रहेंगे । चतुर प्रयोक्ता इस मर्म को भली-भाँति समझते हैं, इसलिए वे आपका रंग-ढंग ऐसा रखते हैं जिससे प्रभाव उत्पन्न हो । प्रयोग से पहले ही अपने पात्र को जो आधा प्रभावित कर लेता है वही सफल प्रयोक्ता है । मेस्मेरिज्म करने वाले की पोशाक, मुखमुद्रा तथा वाणी की ओजस्विता अधिकाधिक प्रभावशाली होनी चाहिए ।

निद्रित करने की कुछ विधियाँ

मेस्मेरिज्म का प्रयोग जिस व्यक्ति के ऊपर किया जाता है उसे एक प्रकार की निद्रा आती है, इसे योग निद्रा या सम्मोहन तन्द्रा कह सकते हैं । रात को गहरी निद्रा में सुधि-बुधि भूल कर सो जाते हैं उस तरह की निद्रा यह नहीं होती, इसमें शरीर जागता है या अर्द्ध जागृत अवस्था में रहता है । शारीरिक दृष्टि से यह अर्द्ध निद्रा है, नेत्र झपक जाते हैं, अंग शिथिल हो जाते हैं, देहाभ्यास कम हो जाता है, फिर भी होश बना रहता है, चेतनता में कमी आ जाती है पर वह नष्ट नहीं होती । मन की दृष्टि से भी वह अर्द्ध निद्रा ही है । बाह्य मन सो जाता है तर्क, सन्देह, छानबीन, परीक्षण की शक्ति चली जाती है पर विश्वास स्वीकृत के अवयव जागते रहते हैं । स्वप्न में अन्तर्मन सो जाता है और बाह्य मन सैर करता रहता है, योग निद्रा में इससे उल्टा होता है अर्थात् बाह्यमन सो जाता है और अन्तर्मन जागता रहता है । इस प्रकार यह योग निद्रा शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से आधी निद्रा है इसमें मनुष्य आधा सोता रहता है और आधा जागता रहता है ।

जिस व्यक्ति के ऊपर प्रयोग करना हो उसे प्रयोग के लिए पहले रजामन्द कर लेना चाहिए । उसे बता देना चाहिए कि इससे उसे कुछ भी हानि या तकलीफ न होगी । वरन् मस्तिष्क का विकास होगा, अनेक मानसिक शक्तियाँ जग उठेंगी तथा जो शुभ संकल्प इस प्रयोग के द्वारा स्थापित किए जायेंगे वे उसके सद्गुणों की वृद्धि करेंगे और दुर्गुणों तथा मानसिक रोगों को हटा देगें । फूलों के बगीचे के समीप रहने वाले को सुगन्ध का लाभ होता है इसी प्रकार योगाभ्यास जैसे परम पुनीत और उपयोगी तत्व के सम्पर्क में आने से कुछ न कुछ लाभ ही प्राप्त होगा । जो व्यक्ति रजामन्द हो उसी को निद्रित करना चाहिए, जोर जबर्दस्ती या दबाव का परिणाम अच्छा नहीं होता ।

निद्रित करने से पहले पात्र को शिथिल होने का आदेश करना चाहिए, हमारी "आसन और प्राणायाम" पुस्तक में शिथिलासन की विस्तृत विधि बताई गई है । संक्षेप में पात्र को यह बताना चाहिए कि वह किसी आराम कुर्सी या मुलायम मसनद का सहारा लेकर अपने शरीर को बिल्कुल निर्जीव की तरह ढीला छोड़ दे, ऐसा अनुभव करे कि शरीर के अंगों में से प्राण निकल गया है और वे बिल्कुल निर्जीव पड़े हुए हैं । मन को "अथाह नीले समुद्र में तैरने" का ध्यान करने पर लगा दे और शरीर को पूर्णरूपेण शिथिल कर दे । पन्द्रह- बीस मिनट नित्य अभ्यास किया जाय तो एक सप्ताह के अन्दर शिथिलासन में बहुत कुछ सफलता मिल जाती है । सबसे अच्छा तो यही है कि पात्र को एक सप्ताह शिथिलासन का अभ्यास कराया जाय तत्पश्चात् उसे निद्रित करने के लिए लिया जाय । यदि ऐसा सम्भव न हो तो एक दिन में कई बार शिथिलासन का अभ्यास करके फिर दूसरे दिन प्रयोग के लिए उसे लेना चाहिए । यदि यह भी सम्भव न हो तो प्रयोग से पहले दस-पन्द्रह मिनट तक हर एक पात्र को शिथिलासन का अभ्यास करना चाहिए । इससे उसका चित्त शान्त और एकाग्र हो जायेगा ऐसी मनोदशा होने पर प्रयोग करना सरल हो जाता है ।

प्रयोग के लिए पात्र को आराम कुर्सी पर मसनद के सहारे गद्दी पर बिठाना चाहिए । पीठ और सिर के पीछे कुछ सहारा होना जरूरी है जिससे तन्द्रा आने पर इधर-उधर लुढ़क कर गिर जाने का अन्देशा न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहे । स्थान एकान्त, खुला हुआ, स्वच्छ और शोरगुल से रहित होना चाहिए । समय प्रातःकाल का सबसे अच्छा है पर आवश्यकता होने पर सन्ध्याकाल भी रखा जा सकता है । आमतौर से मेस्मेरिज्म प्रयोग के लिए कुर्सियाँ ही काम में लायी जाती हैं । पात्र के लिए आराम कुर्सी और प्रयोक्ता के लिए हत्थेदार कुर्सी ठीक रहती है । यह लकड़ी की ही होनी चाहिए, धातु की बनी कुर्सियाँ त्याज्य हैं क्योंकि प्रयोग की विद्युत शक्ति का अधिकांश भाग धातु में चला जाने के कारण इच्छित फल प्राप्त नहीं होता । पात्र का मुँह उत्तर या पूर्व की ओर रखना चाहिए । प्रयोक्ता अपनी कुर्सी उसके सामने करीब एक हाथ फासले पर डालकर बैठे ।

आरम्भ में दोनों को अपना चित्त शान्त और एकाग्र करना चाहिए । प्रयोक्ता, पात्र के चेहरे पर एक गम्भीर दृष्टि डाले, तत्पश्चात् उसके बाएँ नेत्र की पुतली पर अपनी दृष्टि जमाये । आरम्भ में यह दृष्टिपात हल्का होना चाहिए, फिर धीरे-धीरे तीव्रता बढ़ाई जाय, जिस प्रकार काले रंग के गोले पर त्राटक किया जाता था, उसी प्रकार पात्र के बायें नेत्र की पुतली पर त्राटक करना चाहिए और सम्पूर्ण एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति के साथ ऐसी भावना करनी चाहिए कि मेरी विद्युत शक्ति का प्रवाह बड़े जोरों से पात्र के नेत्र मार्ग से उसके मस्तिष्क में प्रवेश कर रहा है और वह बहुत शीघ्र निद्रित होने वाला है । यह प्रयोग करने से पाँच से लेकर पन्द्रह मिनट के अन्दर पात्र की आँखें झपकने लगती हैं, पलक भारी होने लगते हैं और तन्द्रा जैसी खुमारी आने लगती है । पात्र को पहले से ही बता देना चाहिए कि जब पलक भारी होने लगें, खुमारी लगे तो वह बलपूर्वक जागने की कोशिश न करे वरन् ढीला होकर आराम से पड़ जाय ।

इच्छा शक्ति और एकाग्रता द्वारा प्रयोक्ता की विद्युत शक्ति जब पात्र के शरीर में बलपूर्वक प्रवेश करती है तो उसे स्थान देने के लिए किसी दूसरी शक्ति को अपना स्थान खाली करना पड़ता है । पात्र का बाह्य मन अपने स्थान से हट जाता है इसलिए निद्रा आ जाती है । इस अवस्था में प्रयोक्ता की इच्छा शक्ति का पात्र के भीतरी मस्तिष्क पर कब्जा हो जाता है और वह उससे इच्छानुसार काम लेता है । मेस्मेरिज्म द्वारा सारे परिणाम इसी आधार पर उत्पन्न किए जाते हैं ।

पात्र को निद्रित कर देने के उपरान्त उसके ऊपर 'मार्जन' और आदेश का प्रयोग करने के लिए अपनी कुर्सी को छोड़कर खड़ा हो जाना चाहिए । दोनों हाथों की उँगलियाँ सीधी पसार देनी चाहिए, उनमें कड़ाई रखने की जरूरत नहीं है, सीधे-सादे ढंग से उन्हें आगे की ओर जरा झुका हुआ सा रखना चाहिए । यदि मानसिक दोषों को दूर करने के लिए प्रयोग किया गया है तो मस्तिष्क पर मार्जन होना चाहिए यदि सारे शरीर व्यापी दोष को दूर करना है तो सारे शरीर पर मार्जन करना होगा, यदि किसी स्थान विशेष की पीड़ा दूर करनी है तो उसी स्थान पर मार्जन करना ठीक है । दोनों हाथों की उँगलियाँ बराबर-बराबर एक सीध में रखनी चाहिए और उन्हें पात्र के शरीर से आधे इंच के फासले पर रखते हुए आगे बढ़ाना चाहिए । किसी स्थान में भरा हुआ घी आदि गाढ़ा द्रव पदार्थ जिस प्रकार उँगलियों से खींचते हैं उसी प्रकार नियत अंग पर ऊपर से नीचे की ओर उँगलियों को ले जाना चाहिए और फिर उन्हें एक तरफ हल्के से झटकार देना चाहिए इस प्रकार आवश्यकतानुसार दस से लेकर बीस तक 'पास' देने चाहिए । इस क्रिया को करते समय यह भावना करते जाना चाहिए कि दूषित तत्वों को अपनी आकर्षण शक्ति द्वारा खींच-खींच कर बाहर फेंक रहा हूँ और इस स्थान को निर्दोष बना रहा हूँ । ऐसी भावनाएँ, दृढ़ इच्छा और श्रद्धा विश्वास के साथ की जानी चाहिए और ध्यानपूर्वक पीड़ित स्थान को स्वस्थता की कामना से देखते जाना चाहिए । क्रिया विश्वास के साथ की जानी चाहिए । मार्जन समाप्त करते हुए अन्त में हाथों को तीन बार जरा जोर से एक तरफ झटकार देना चाहिए । जिससे वे इथित तत्व अपने शरीर में चिपटे न रह जायें ।

मार्जन करने से पात्र को अधिक शान्ति मिलती है जिससे वह कुछ और गहरी निद्रा में चला जाता है । अब आदेश की बारी आती है । निद्रित पात्र के पीठ पीछे खड़े होकर गम्भीर, स्थिर, निश्चित, स्पष्ट और मध्यम स्वर में उसे निरोगता, स्वस्थता एवं उन्नति का अनुभव कराना चाहिए । दाहिना हाथ पीड़ित स्थान पर हल्के से रख लेना चाहिए । नकारात्मक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं वरन् स्वीकारात्मक ही आदेश देना चाहिए । "तुम बीमार नहीं हो" यह कहने की अपेक्षा "तुम स्वस्थ हो" कहना चाहिए । रोगी के लिए इस प्रकार आदेश दिया जा सकता है "तुम्हारी पीड़ा को नाश करती हुई स्वस्थता बढ़ रही है" विश्वास करो तुम्हें अवश्य आराम होगा, शीघ्र आराम होगा, स्वस्थता बढ़ रही है, अब तुम निरोग होकर रहोगे, निरोगता प्रतिक्षण बढ़ती चली जा रही है । मैं तुम्हारे रोग को निकाल रहा हूँ, खींच कर बाहर फेंक रहा हूँ, जब तुम जागोगे तो बहुत कुछ स्वस्थ्य होओगे ।

अपनी प्राण शक्ति तुम्हारे शरीर में प्रवेश करके नवीन बल की, स्वस्थता की, ताजगी की दे रहा हूँ, इससे तुम अपने में चैतन्यता और शक्ति अनुभव करोगे ।

बुद्धि बढ़ाने के लिए निद्रित पात्र के सिर पर हाथ रखकर इस प्रकार का आदेश दिया जा सकता है कि "मैं अपने हाथ की उँगलियों में से तुम्हारे मस्तिष्क में बुद्धि शक्ति की लहरें डाल रहा हूँ । ये बुद्धि की लहरें तुम्हारे मस्तिष्क में जड़ जमा रही हैं । अब तुम्हारी बुद्धि में पर्याप्त उन्नति होगी, वह बराबर बढ़ती ही जायेगी, हर एक विषय को अब तुम बहुत अच्छी तरह समझ सकोगे और स्मरण रख सकोगे । अब से ही, इसी क्षण से तुम्हारी बुद्धिमत्ता बढ़ेगी और तुम भली प्रकार उसका अनुभव करोगे ।"

इस प्रकार के आदेश शारीरिक रोगों के लिए, मानसिक रोगों के लिए, चरित्र सम्बन्धी दोषों के लिए, बनाये जा सकते हैं । सद्गुणों का बीजारोपण करने के लिए भी ऐसे भी आदेश बनाये जा सकते हैं । इनके रटने की आवश्यकता नहीं है, समयानुसार, परिस्थिति के अनुकूल आदेशों की रचना करने की योग्यता प्रयोग करने वाले में स्वयं होनी चाहिए ।

आदेशों को कई बार दुहराना चाहिए । इसके पश्चात् प्रयोग समाप्त करके अलग हट जाना चाहिए यदि पात्र गहरी नींद में हो तो उसे उसी दशा में सोते रहने देना चाहिए और थोड़ी-थोड़ी देर बाद यह देखते रहना चाहिए कि निद्रा हल्की हुई या नहीं, जब निद्रा टूटने के लक्षण दीखने लगें, अंगों में चैतन्यता और हलचल प्रतीत होने लगे तो मस्तिष्क से उदर तक चार पाँच 'पास' देकर हल्के सम्बोधन के साथ पात्र को जगा देना चाहिए ।

निद्रित करने के उपरान्त पात्र से खेल-तमाशे की, अव्यक्त बातों के सम्बन्ध में पूछताछ करने का, उसको किसी मार्ग पर ले जाने का या कुछ और काम कराना हो उसी भावना से आदेश और मार्जन करने चाहिए । जैसी इच्छा का प्रयोग किया जायेगा वैसा ही फल होगा ।

निद्रित करने की कुछ और विधियाँ भी हैं जो यहाँ लिखी जाती हैं—

(१) दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली पात्र की दोनों भवों के बीच, त्रिकुटी स्थान पर हल्के से लगाओ और उससे "धीरे-धीरे मुझे निद्रा घेरती आ रही है" इस संकल्प की भावना करने को कहो, थोड़ी देर में निद्रा आ जायेगी ।

(२) बिल्लौरी काँच की चमकदार अँगूठी को प्रकाश के सम्मुख इस प्रकार रखो कि उसकी चमक पात्र के नेत्रों पर पड़े । इस अँगूठी के नग पर दृष्टि जमाने से निद्रा आ जाती है ।

(३) अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों में पात्र के दोनों हाथों के अँगूठे पकड़ लो । उसके अंगूठे की जड़ों में अपने अँगूठों का नख जरा सा घिसो और उससे चेहरे की तरफ निद्रित करने की इच्छा के साथ घूरते रहो, निद्रा आ जायेगी ।

(४) सादा चौकोर काँच लेकर उसकी पीठ पर काला पक्का रंग पोत दो और चौखटा लगा दो । यह "त्रिकालदर्शी दर्पण" हो गया, जिसकी लोग पाँच-पाँच रुपया कीमत वसूल करते हैं । इस काले दर्पण के बीचों-बीच एक रुपये बराबर स्थान में गोलाकार तेल लगा दो । शीशे के सामने कुछ फासले पर दीपक इस प्रकार रखो कि तेल लगे हुए स्थान के बीचों-बीच प्रकाश चमके । इस चमक पर पात्र को दृष्टि जमाने के लिए कहो और निद्रा आने के आदेश करते रहो । थोड़ी देर में वह निद्रित हो जायेगा ।

अपने ऊपर मेस्मेरिज्म करना

मेस्मेरिज्म विधान के अनुसार दूसरों को निद्रित करना एवं उनकी मनोभूमि का संशोधन, परिमार्जन करना पिछले पाठ में बताया जा चुका है । अब यह बतायेंगे कि इस साधना से अपना क्या हित साधन किया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार विश्वास और संकल्प शक्ति के आधार पर दूसरों को निद्रित किया जा सकता है एवं कुसंस्कारों का परिमार्जन तथा शुभ संस्कारों का बीजारोपण किया जा सकता है उसी प्रकार का प्रयोग अपने ऊपर अपने आप भी किया जा सकता है । पीछे बताया जा चुका है कि विश्वास हो जाने पर झाड़ी का भूत दिखाई देने लगता है । यह अपने आप अपने पर अनजाने में मेस्मेरिज्म प्रयोग है । जैसे हिप्नोटाइज्ड व्यक्ति को कुछ का कुछ दिखाई पड़ने लगता है वैसे ही अपने निजी संकल्प से भी तन्द्रावस्था प्राप्त होती है और उसमें संकल्पों का ही मूर्त रूप दिखाई पड़ने लगता है ।

कहते हैं कि एक ग्रामीण व्यक्ति किसी साधु के पास गया और कहने लगा कि मुझे योग साधना सिखा दीजिए । साधु ने सरल स्वभाव से उसे श्रीकृष्ण की मूर्ति का ध्यान करने को कहा, ग्रामीण ने प्रयत्न किया पर उससे वह ध्यान न हुआ । तब साधु ने उसे दूसरा ध्यान बताया । वह भी उससे नहीं हुआ, इस प्रकार हर बार वह विफल होता गया । अन्त में साधु ने उसे बताया कि जो वस्तु तुझे सबसे प्रिय हो उसी का ध्यान कर । ग्रामीण को अपनी भैंस सबसे प्रिय थी, वह भैंस का ध्यान एकान्त कुटी में बैठकर करने लगा । कुछ समय बाद साधु ने उससे पूछा कि—बच्चा क्या होता है, कुटी से बाहर निकल कर अपना हाल बताओ । ग्रामीण ने कहा—महाराज अब तो मैं भैंस ही हो गया हूँ, बड़े-बड़े सींग उपज आये हैं, कुटी से बाहर नहीं निकला जाता । साधु उसकी सफलता देखकर प्रसन्न हुआ और उसे बाहर निकाल कर सच्चे ध्यान में लगा दिया । यह स्वयं सम्मोहन क्रिया है । दूसरे को हिप्नोटिज्म करके उसे यह अनुभव कराया जा सकता है कि वह मनुष्य नहीं हाथी है, इसी प्रकार अपने आप अपने ऊपर हिप्नोटिज्म करके भी लोग कुछ का कुछ अनुभव कर सकते हैं । सच पूछा जाय तो दुनियाँ के अधिकांश लोग स्वसम्मोहन क्रिया द्वारा अर्धमूर्च्छा में डूबे रहते हैं और कुछ का कुछ अनुभव करते रहते हैं । मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य और शरीर कर्तव्य क्या है ? इसे करीब-करीब सभी लोग जानते हैं पर सांसारिक चकाचौंध से अपने आपको अर्ध निद्रित करके भ्रम पूर्ण विश्वास और विचारों को अपने अन्दर भरे रहते हैं और अर्ध पगलों जैसा आचरण करते हुए निरर्थक एवं हानिकर कार्यों में अपनी जीवन सम्पत्ति को नष्ट कर डालते हैं ।

'मन' ही मनुष्य तत्व का सार है । यह जिधर चल पड़ता है, जीवन की धारा उसी ओर प्रवाहित होने लगती है । इसलिए हम अपने को जिधर ले जाना चाहते हैं वैसे ही संस्कार मन के ऊपर जमाने की आवश्यकता है । यह कार्य मेस्मेरिज्म के 'स्वसम्मोहन' सिद्धान्त द्वारा हो सकता है । आत्मोन्नति की योगिक साधनाओं को मेस्मेरिज्म विज्ञान की भाषा में 'स्वसम्मोहन' कहा जायेगा । साधक लोग मन्त्रों का जप करके, पुस्तकों का पाठ करके, ध्यान करके, अमुक अनुष्ठान, कर्म काण्ड करके अपने ऊपर अमुक प्रकार के संस्कार ऊपर जमाते हैं । यह संस्कार जितने मजबूत होते जाते हैं, बाह्य जीवन में वैसी ही परिस्थितियाँ इकट्ठी होती जाती हैं ।

अपनी जिस दिशा में उन्नति करनी हो । तदनुकूल संस्कारों को मनोभूमि पर जमाने का अभ्यास करना चाहिए । वास्तविक संपत्ति यह संस्कार ही है । एक बार एक बड़े व्यापारी की कोठी में आग लग गई, कर्मचारी भागे हुए आये और उन्होंने व्यापारी को सब हाल सुनाया कि करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हो गई, अब कारोबार करने के लिए फूटी कौड़ी भी नहीं बची है । व्यापारी के चेहरे पर इस समाचार से जरा भी उदासी नहीं आई उसने कहा—तुम समझते हो कि कोठी या सम्पत्ति के कारण मैं अमीर था, यह तुम्हारी भूल है । मैं धन के कारण नहीं अपनी आदतों और मानसिक सम्पदाओं के कारण अमीर हूँ, तुम लोग देखोगे कि कुछ ही दिनों में फिर वैसी ही कोठियाँ खड़ी हो जायेंगी । व्यापारी का कहना सत्य हुआ, सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी उसने प्रयत्न किया और थोड़े ही दिनों में फिर पहले जैसा अमीर हो गया । लोग बड़ी भूल करते हैं जब यह कहते हैं कि हम परिस्थितियों के गुलाम हैं । वास्तव में हर मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करता है । जिसकी जैसी मनोदशा है उसे तदनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त होकर रहती हैं ।

नीचे कुछ ऐसे अभ्यास बताए जाते हैं जिनको करते रहने से स्वसम्मोहन सिद्धान्त के अनुसार अपने मन के ऊपर स्वयं प्रभाव डालकर उसे नियत दिशा में चलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, और तदनुसार इच्छित परिस्थितियाँ तथा वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(१) आरोग्य प्राप्ति के लिए

एकान्त कमरे पद्मासन से बैठो या आराम कुर्सी पर पड़े रहो चित्त की चंचलता छोड़ दो और सारी माँसपेशियों तथा नाड़ियों को ढीली करके शरीर को शिथिल हो जाने दो । शिथिल हो जाने पर धीरे-धीरे एक लम्बी साँस खींचो और फिर उसी प्रकार धीरे-धीरे छोड़ते हुए साँस बिल्कुल निकाल दो, साँस खींचते समय भावना करो कि आरोग्यतावर्द्धक तत्वों को साँस द्वारा खींच कर अपने अन्दर भर रहा हूँ । जब साँस छोड़ो तो ध्यान करो कि मेरी बीमारियाँ तथा दुर्बलताएँ साँस के साथ निकल कर बाहर जा रही हैं, दस-पन्द्रह मिनट तक इसी प्रकार श्वास-प्रश्वास क्रिया करते रहो । इससे बड़ी शान्ति मिलेगी और शरीर में हल्कापन, फुर्ती तथा चैतन्यता नजर आयेगी । अब मन ही मन इस मन्त्र का जप करो—"ॐ मैं अपने शरीर का स्वामी हूँ । मैं बलवान हूँ । निरोग हूँ । मेरे सारे अंग ठीक-ठीक काम करते हैं । सबलता, स्वस्थता और सुन्दरता निरन्तर मुझमें बढ़ती जा रही है । धमनियों में शुद्ध रक्त प्रवाहित हो रहा है । दिन-दिन स्वास्थ्य उन्नत हो रहा है । बहुत तेजी से मैं स्वस्थता प्राप्त कर रहा हूँ ।" इस मन्त्र को मन ही मन अनेक बार जपो और कल्पना शक्ति द्वारा वैसा ही अपने को अनुभव करो । इस अभ्यास को प्रतिदिन प्रातःकाल करने से आश्चर्यजनक तीव्रता से आरोग्य की प्राप्ति होती है ।

(२) ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए

एकान्त स्थान में चित्त को शान्त और शरीर को शिथिल करके, आराम से बैठ जाओ । नेत्रों को बन्द कर लो । ध्यान द्वारा सर्वत्र हरा रंग देखो । आकाश, भूमि, सूर्य, नक्षत्र, मकान, पेड़, पहाड़, नदी, जीव-जन्तु सबको हरे रंग का देखो । चारों ओर हरा ही हरा अनुभव करो । यह हरे रंग की भावना जितनी अधिक देर तक जितनी दृढ़तापूर्वक जमाए रहोगे उतना ही अच्छा है । मनोविज्ञान शास्त्रियों का मत है कि हरा रंग धन, वैभव और सफलता का प्रतिनिधि है । शुभ कर्मो में हरे रंग को प्रधानता दी जाती है । हरे रंग के बंदनवार और तोरण विवाह शादियों में बांधे जाते हैं । चूने में हरा रंग डालकर कमरे पुतवाए जाते हैं, इसमें वैभव वृद्धि का रहस्य छिपा हुआ है ।

हरे रंग का ध्यान करते हुए शिथिल मन और मस्तिष्क से इस मन्त्र का भावनापूर्वक मन ही मन जप किया कीजिए "मेरी सत्ता में अमित ऋद्धि-सिद्धियाँ समाई हुई हैं । अब मैं अपनी प्रबल इच्छा शक्ति द्वारा वैभव की कामना करता हूँ, और विश्वास करता हूँ कि अत्यन्त शीघ्र मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि होगी, मुझे, इच्छित वस्तुएँ तथा परिस्थितियाँ प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होगी । मैं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ वैभव प्राप्त करने में लगा हूँ इसीलिए यह निर्विवाद निश्चित है कि मेरी मनोकामना पूर्ण होकर रहेगी । इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन जपना चाहिए ।

(३) मानसिक शक्तियों की उन्नति के लिए

उपरोक्त रीति से एकान्त स्थान में बैठ कर दोनों भ्रकुटियों के मध्य त्रिकुटी स्थान में नेत्र बन्द करके ध्यान जमाना चाहिए और चन्द्रमा के समान सुनहरी तथा शीत प्रकाश ज्योति का ध्यान करना चाहिए और मन ही मन इस मन्त्र का जप करना चाहिए मेरा मस्तिष्क स्वस्थ तथा सबल है, मेरी बुद्धि तीव्र होती जा रही है, विचार शक्ति, निर्णय शक्ति, परीक्षण शक्ति, कल्पना शक्ति आदि अनेक मानसिक शक्तियाँ बढ़ रही हैं, विकसित हो रही हैं । मैं धीरे-धीरे बुद्धिमान बनता जा रहा हूँ बहुत शीघ्रता से मेरा मानसिक विकास हो रहा है । इस ध्यान और जप से मानसिक शक्तियों का बड़ी तीव्र गति से विकास होता देखा गया है ।

(४) आत्मिक बल बढ़ाने के लिए

उपरोक्त रीति से एकान्त स्थान में शिथिल होकर बैठिए । दोनों पसलियों के जोड़ पर आमाशय के स्थान पर—सूर्य चक्र-में सूर्य के समान तेजस्वी ज्योति का ध्यान कीजिए, साथ ही निम्न मन्त्र जपते जाइए—"मैं आत्म बल से परिपूर्ण हूँ, मेरे अन्दर अपार आत्म-शक्ति है, इस सोई हुई महान् शक्ति को अब मैं प्रयत्न पूर्वक जागृत कर रहा हूँ । सारे दुर्गुण एवं कुसंस्कारों को मैं ठोकर मार-मार कर भगाए दे रहा हूँ और उनके स्थान पर सात्विक सद्गुणों को प्रतिष्ठित कर रहा हूँ । मैं दृढ़ हूँ, निर्भय हूँ, पुरुषार्थी हूँ, सदाचारी हूँ और सत्यनिष्ठ हूँ । मैं आत्मा हूँ और अपनी महान आत्मिक शक्तियों को दृढ़तापूर्वक धारण किए हुए हूँ ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(५) किसी सांसारिक वस्तु को प्राप्त करने के लिए

पूर्वोक्त प्रकार से शान्तिपूर्वक बैठकर पीले रंग का ध्यान करना चाहिए और इस प्रकार का मानसिक जप करना चाहिए कि—"अमुक वस्तु को मैं चाहता हूँ, उसे प्राप्त करते की दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ । सम्पूर्ण शक्ति के साथ उसे प्राप्त करने के लिए जी-जान से कोशिश करूँगा, यह निश्चित सिद्धान्त है "जो चाहता है उसे मिलता है । मैं सच्चे दिल से अमुक वस्तु को चाहता हूँ, इसलिए उसे प्राप्त करके रहूँगा ।" इस संकल्प के अतिरिक्त इस चौपाई को बार-बार गुन-गुनाते रहना चाहिए । "जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलत न कछु संदेहू ।"

(६) प्रार्थना द्वारा इच्छा पूर्ति

ईश्वर से, या किसी देवता से, अमुक वस्तु के लिए प्रार्थना करने की पद्धति भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है । वेदों का आधे से अधिक भाग ऐसे मन्त्रों से भरा हुआ है जिसमें, धन, वैभव, पुत्र, यश, आरोग्य, बुद्धि, विद्या, सुख आदि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना है । ऐसी प्रार्थनाएँ करना मेस्मेरिज्म सिद्धान्त के सर्वथा अनुकूल हैं । प्रार्थना से दो बातें होती हैं—(१) अपनी आवश्यकता का बार-बार स्मरण आता है जिससे उधर रुचि तथा लगन बढ़ती है (२) ईश्वर या देवता द्वारा सहायता मिलने की सम्भावना से आशा की किरणें दिखाई पड़ती हैं तथा उत्साह उत्पन्न होता है । यह दोनों ही बातें इच्छा-पूर्ति में बहुत सहायक होती हैं । अनेक बार तो प्रार्थना बहुत अंशों में तथा कभी-कभी पूर्णरूपेण सफल हो जाती हैं । प्रार्थना के साथ-साथ यदि पौरुष और प्रयत्न भी हो वह बहुत ही फलवती होती है । अकर्मण्यों की प्रार्थना ईश्वर के दरबार में सुनी नहीं जाती, मेस्मेरिज्म सिद्धान्त के अनुसार भी वह निष्फल ही ठहरती है ।

मेस्मेरिज्म की सिद्धियाँ

मेस्मेरिज्म का अभ्यासी त्राटक और प्राणायाम द्वारा अपनी आत्मिक शक्तियों को विकसित करके कुछ और भी दिव्य लाभ प्राप्त कर सकता है । उनका संक्षिप्त उल्लेख नीचे किया जाता है ।

(१) दूरस्थ व्यक्ति पर प्रभाव-प्रेरणा

किसी को सामने बिठा कर उस पर मेस्मेरिज्म प्रयोग करने की विधि पीछे बताई जा चुकी है । यह प्रयोग दूर रहने वाले व्यक्ति पर भी हो सकता है । सूक्ष्म शक्ति के लिए दूरी का कोई प्रश्न नहीं है । प्रकाश एक सेकण्ड में जितने मील चलता है किन्तु विचारों की गति तो उससे भी अनेक गुनी तीव्र है । इसलिए दो व्यक्तियों के दूर होते हुए भी आत्म-शक्ति का प्रयोग सम्भव है ।

जिस व्यक्ति पर प्रभाव प्रेरणा करनी हो उसकी कोई ऐसी वस्तु लेनी चाहिए जो उसके शरीर से बहुत काल तक सम्बन्धित रही हो । यूरोपीय प्रयोक्ता इस कार्य के लिए रूमाल मँगाया करते हैं, क्योंकि वह छोटा वस्त्र होते भी शरीर के स्पर्श में बार-बार आता है । भारतीय तान्त्रिक नख या बालों को अधिक काम की वस्तु मानते हैं । फोटो, वस्त्र, आभूषण उसी के हाथ का लिखा हुआ कागज आदि भी काम दे सकते हैं जिन वस्तुओं का मनुष्य के शरीर से बार-बार स्पर्श होता है उनमें उसके कुछ शारीरिक विद्युत कण चिपके रह जाते हैं, यह कण पूर्णरूप से सम्बन्ध विछिन्न नहीं होते । माता के शरीर का कुछ भाग पुत्र में होता है, दूरस्थ पुत्र पर विपत्ति आने पर माता का दिल धड़कने लगता है, कारण यह है कि पुत्र शरीर में जो विक्षोभ उत्पन्न होता है उसकी अनुभूति पूर्व सम्बन्धित माता के शरीर तक पहुँचती है । इस प्रकार नख, केश, वस्त्र, आदि में चिपके हुए कणों पर जो प्रयोग किया जाता है उसका प्रभाव पूर्व सम्बन्धित शरीर पर उस व्यक्ति पर भी होता है ।

एकान्त स्थान में प्राणाकर्षण क्रिया करके अपने आत्मबल को सतेज कर लीजिए । जिस व्यक्ति के ऊपर प्रभाव प्रेरणा करनी है उसके नख, केश, वस्त्र या लिखा हुआ पत्र आदि सामने रखिए और उस पर ऐसी दृष्टि जमाइए मानो नाटक का अभ्यास कर रहे हों । मन में भावना कीजिए कि यह वस्तु जो रखी हुई है मानो साक्षात यह मनुष्य ही बैठा हुआ है । जिस प्रकार सामने बैठे हुए मनुष्य के ऊपर दृष्टिपात, आदेश एवं मार्जन द्वारा प्रयोग किया जाता है वैसे ही उस वस्तु पर कीजिए । स्मरण रखिए यह प्रयोग कल्याण के लिए उचित ढंग का होना चाहिए । हानिकारक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

या अनुचित मार्ग पर ले जाने वाला प्रयोग करने के लिए हम अपने पाठकों को कड़ी मनाही करते हैं ।

इस प्रकार किए हुए प्रयोग दूर करने वाले व्यक्ति पर असाधारण प्रभाव डालते हैं और उसे इच्छानुकूल कार्य करने के लिए विवश करते हैं । प्रतिदिन एक बार प्रातःकाल प्रयोग करना चाहिए । अधिक से अधिक दो बार संध्या को भी किया जा सकता है । कुछ दिनों लगातार जारी रखने से इच्छित फल प्राप्त होता है ।

(२) दूसरों के कुप्रयोग से बचाव

ऐसा भी होता है कि कोई दुष्टात्मा जीवित या मृत व्यक्ति दूसरों को हानि पहुँचाने के अदृश्य प्रयत्न करते हैं, इससे बीमारी, पीड़ा, कलह, मतिभ्रम, चित्त उचटना, भय आदि उत्पन्न होकर मनुष्य की कार्य शक्ति, बुद्धिमता को नष्ट कर डालते हैं ।

इस प्रकार के कुप्रभाव को दूर करने के लिए अपने चारों ओर एक प्रकार का घेरा डालने की आवश्यकता होती है । रामचन्द्रजी और लक्ष्मण जी जब वन में सीता को अकेली छोड़ कर जाया करते थे तो कुटी के चारों ओर एक रेखा खींच कर घेरा बना जाते थे, इस घेरे के अन्दर ऐसा आत्मिक प्रभाव रहता था कि अन्दर किसी हानिकारक तत्व का प्रवेश नहीं हो सकता है । रावण जब सीता को चुराने गया तो वह घेरे के अन्दर न घुस सका, किसी प्रकार बहका कर उसने सीता को रेखा से बाहर बुलाया तब उन्हें हरण कर सका ।

योग शास्त्र की भाषा में इस घेरे को 'कवच' कहते हैं । कवच एक ऐसा धातु मिश्रित कपड़ा होता है जिसे पहन कर योद्धा लोग लड़ने जाते हैं, उस कपड़े पर शत्रु के हथियारों का प्रभाव नहीं होता । आत्म शक्ति युक्त कवच का भी ऐसा ही प्रभाव है । जब सम्भावना हो कि कोई अनिष्ट प्रभाव अपने ऊपर किया जा रहा है तो निम्न उपाय करके कवच धारण कर लेना चाहिए ।

(१) एकान्त स्थान में स्वस्थचित्त होकर मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए पद्मासन से पूर्व को मुँह करके बैठिए । फेफड़ों में भरी हुई साँस को धीरे-धीरे बाहर निकालिए और भावना करते जाइए कि दूसरे के अनिष्टकर प्रभाव साँस के साथ बाहर निकल रहे हैं जब साँस पूरी तरह बाहर निकल जाय तो साँस खींचना आरम्भ कीजिए और भावना कीजिए कि पवन देवता अपने पुत्र हनुमान जी के साथ शरीर में प्रवेश कर रहे हैं । साँस को पूरी तरह खींच लेने पर कुछ देर उसे भीतर ही रोकिए और भावना कीजिए कि बजरंगी पवन पुत्र मेरे शरीर में भरे हुए हैं उनके प्रभाव से सारे कुप्रभाव भागे जा रहे हैं । इस भावना से कई बार प्राणायाम कीजिए ।

(२) प्राणायाम के बाद नेत्र बन्द कर लीजिए और अपने तेजोवलय (Aura) का ध्यान कीजिए । शरीर के चारों ओर कुछ दर तक एक प्रकाश फैला रहता है इसे तेजोवलय कहते हैं । भावना कीजिए कि "आप सूर्य के समान तेजस्वी हैं और आपकी किरणें दूर-दूर तक घेरे के रूप में फैली हुई हैं । इस घेरे में बहुत तेज है, कोई भी बाह्य कुप्रभाव इसके अन्दर प्रवेश नहीं कर सकता ।" इस ध्यान को श्रद्धापूर्वक अधिक समय तक कीजिए ।

(३) यदि कोई आशंका हो तो यह कर्म करा डालिए, तेल लगाकर गरम पानी से स्नान कीजिए यज्ञोपवीत बदलिए सारे कपड़े उतार कर धो डालिए और धुले हुए कपड़े तुरन्त पहन लीजिए, उपवास रखिए और एक हजार गायत्री मन्त्र जप कीजिए । देव दर्शन कीजिए और यथाशक्ति कुछ दान कीजिए ।

(४) किसी आध्यात्मिक पुरुष से अभिमन्त्रित जल ग्रहण करिए, विभूति, रक्षा सूत्र एवं कवच (ताबीज) धारण करिए ।

(५) यदि किसी दूसरे को कुप्रभाव से बचाना हो तो उसे उपरोक्त तीन उपाय करने का आदेश करना चाहिए और इच्छा शक्तिपूर्वक गायत्री मन्त्र से जल या भस्म मन्त्रित करके उसे देना चाहिए । बीसा यन्त्र या ॐ का अक्षर रक्षा भावना से पवित्रतापूर्वक लिखकर उसे धारण करा देना चाहिए ।

इन उपायों से दूसरों द्वारा अपने ऊपर किए हुए कुप्रयोगों का शमन होता है, और वे कुकर्म लौट कर प्रयोग करने वाले के ऊपर ही पड़ते हैं ।

(३) दूरदर्शन

कौरव पाण्डव युद्ध का सारा दृश्य राज महल में बैठे हुए संजय देखा करते थे, और उसे धृतराष्ट्र को सुनाया करते थे । ऐसी पूर्णावस्था तो विशेष प्रयत्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साध्य है परन्तु इस दिशा में थोड़ी बहुत सफलता मेस्मेरिज्म अभ्यासी भी कर सकते हैं । दूर स्थानों पर होने वाली हलचलों का बहुत हद तक आभास प्राप्त कर सकते हैं ।

(१) बिल्कुल शान्त, कोलाहल रहित एकान्त स्नान में नेत्र बन्द करके बैठिए । मन को एकोएक संकल्पों से रहित कर दीजिए, सारी चंचलता हटाइए और अपनी निज की बातों को बिल्कुल भुला दीजिए । मानो हमें कुछ विचार या कार्य है ही नहीं । इस संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त करने में दस पन्द्रह मिनट लगाइए ।

(२) जब चित्त शान्त हो जाय तो उस स्थान का ध्यान कीजिए जहाँ के दृश्य आप देखना चाहते हैं, उस स्थान को ठीक-ठाक कीजिए, हर वस्तु को गौर से देखिए । उस समय वहाँ जो कुछ कार्य हो रहे होंगे दृष्टिगोचर होंगे । आरम्भ में कुछ त्रुटि रहती हैं परन्तु धीरे-धीरे जब एकाग्रता बढ़ती है और मन इधर-उधर नहीं उछलता तो यह त्रुटियाँ घटने लगती हैं और 'दूरदर्शन' की सिद्धि प्राप्त होती जाती है ।

(४) भविष्य-ज्ञान

(१) अपने आपको पूर्णतया शिथिल कर दीजिए । शरीर में से अपने को प्रथक अनुभव कीजिए । अंगूठे के बराबर आत्मा की ज्योति का ध्यान कीजिए । निर्विकार, निर्लिप्त, शुद्ध बुद्ध, मुक्त, गुणों से युक्त आत्मा अपने को अनुभव कीजिए ।

(२) इस तेज स्वरूप आत्मा को ऊँचा, ऊपर आकाश में अवस्थित कीजिए । वहाँ से अमुक व्यक्ति, देश या कार्य के ऊपर दृष्टिपात कीजिए, दिखाई देगा कि उसके आगे और पीछे एक विशेष वर्ण का धुआँ-सा उड़ता चलता है । यह धुआँ किस रंग का है इसे बारीकी के साथ पहचानिए ।

(३) जिसके आस-पास काला, घना, भयानक कुहरा सा उड़ता दिखाई दे उसका भविष्य अन्धकारमय, अनिष्ट सूचक समझना चाहिए, जिसको चारों ओर श्वेत, स्वच्छ, हल्का, कुहरा सा छाया हो उसका भविष्य उज्ज्वल समझना चाहिए ।

(४) अधिक दिनों के अभ्यास से ध्यान करने पर भविष्य में होने वाली घटनाओं के दृश्य भी दृष्टिगोचर होते हैं जिनसे जाना जा सकता है कि इस व्यक्ति या कार्य का भविष्य कैसा होगा ।

(५) व्यक्तित्व की पहचान

कौन व्यक्ति कैसे आचरण और विचार का है इसकी जानकारी भी आत्मिक अभ्यास द्वारा प्राप्त की जा सकती है । वह इस प्रकार है—

(१) जिस मनुष्य का व्यक्तित्व जानना है दस सेकण्ड तक उसकी बाईं आँख की पुतली पर त्राटक कीजिए । इसके पश्चात् दस सेकण्ड के लिए आँखें बन्द कर लीजिए ।

(२) आँखें बन्द करके सामने वाले व्यक्ति के चेहरे का ध्यान कीजिए । आपको किन्हीं खास रंग की धज्जियाँ-सी उसके चहरे के आस-पास उड़ती हुई दृष्टिगोचर होंगी ।

(३) इन रंगों के द्वारा इस प्रकार का परिणाम निकाला जा सकता है । सफेद रंग—सच्चा ईमानदार । मटीला—चालाक । खाकी—वचन का पालन करने वाला । गुलाबी—पेट का साफ । लाल—क्रोधी । हरा—शान्त, स्थिर । पीला—पुरुषार्थी, बहादुर । नारंगी—अभिमानी । नीला—अस्थिर । बैंगनी—स्वार्थी । काला—निर्दय, धोखेबाज । सुनहरी—दिव्य स्वभाव । मिश्रित रंग—कूट नीतिज्ञ । यदि एक साथ कई रंग मिश्रित हों तो मिश्रित गुण समझने चाहिए ।

(४) सामने वाले व्यक्ति के चेहरे पर गम्भीरता पूर्वक जमाइए और देखिए कि इससे आपके मन पर किस प्रकार की छाप पड़ती है । स्वच्छ मन में जैसी श्रद्धा या आशंका उत्पन्न होती है प्रायः वैसा ही सामने वाले का चरित्र तथा स्वभाव निकलता है ।

(६) सन्देश पहुँचाना

बिना टेलीफोन या रेडियो के भी एक मनुष्य दूसरे तक अपने विचार पहुँचा सकता है । इस विद्या को यूरोपीय योगी 'टैलीपैथी' कहते हैं । इस विद्या का अभ्यास इस प्रकार करना चाहिए ।

(१) एक समान विचार के मनुष्य एक ही समय नियत करके अपने-अपने स्थान पर एकान्त स्थान में शान्त चित्त से बैठा करें ।

(२) आरम्भ में पाँच मिनट पहला व्यक्ति अपना सन्देश भेजेगा और दूसरा सुनेगा । बाद में दूसरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति पाँच मिनट सन्देश देगा और पहला सुनेगा । पहला कौन, दूसरा कौन यह क्रम पहले ही स्नाश्वेत कर लेना चाहिए ।

(३) सन्देश देने वाला नेत्र बन्द करके दूसरे मनुष्य का ध्यान करे और उसे सामने बैठा हुआ अनुभव करते हुए मन ही मन अपनी बात कहे । जो बात कही जाय उसका एक-एक शब्द स्पष्टता और गम्भीरता युक्त होना चाहिए । शब्दों को मुख से उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं है । मौन भाव से ही यह सब होना चाहिए ।

(४) दूसरा व्यक्ति आरम्भ के नियत समय में पहले व्यक्ति का नेत्र बन्द करके ध्यान करे और मुख की तरफ गम्भीरता पूर्वक देखे कि वह क्या भाव प्रकट कर रहा है । जो भाव उसकी मुख मुद्रा से समझ में आयें उन्हें हृदयंगम कर ले ।

(५) इसी प्रकार पाँच मिनट बाद दूसरा व्यक्ति सन्देश भेजे और पहला उसे ग्रहण करे ।

यह अभ्यास ब्राह्म मुहूर्त में अच्छा होता है । दोनों अभ्यासी, अपने अभ्यासों से निवृत्त होकर आपस में मिला करें और विचार किया करें कि कितने अंशों में सफलता मिली । आरम्भ में दस प्रतिशत सफलता मिलती है, फिर धीरे-धीरे उन्नति होने लगती है । आधी बातें ठीक निकलें तो इसे अच्छी सफलता समझना चाहिए, फिर बिना समय नियत किए भी सन्देश भेजे जा सकते हैं और सतत प्रयत्न से पूर्ण सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है ।

(७) दूसरों के मन की बात जानना

(१) ध्यानस्थ होकर अपनी मनोभूमि को बिल्कुल खाली, नीले आकाश की तरह शून्य देखो । जिस व्यक्ति के मन की बात जाननी है उसकी अकेली मूर्ति उस अखिल नीले आकाश में स्थित देखो अर्थात् ऐसा अनुभव करो कि सारा विश्व नीला आकाश मात्र है और उस आकाश में अमुक व्यक्ति के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं है ।

(२) एक टक होकर उस व्यक्ति की प्रतिमा की ओर ध्यान लगाकर देखो । कुछ क्षण में वह व्यक्ति अपने भाव और विचार संकेतों द्वारा तथा मुँह खोलकर बताता हुआ दृष्टिगोचर होगा ।

(३) इस प्राप्त हुए सन्देश द्वारा दूसरों के मन की बात जानी जा सकती है ।

(८) पीड़ा दूर करना

दाँत, सिर, पसली, जोड़ आदि के दर्द, बिच्छू, ततैया, साँप आदि जहरीले जानवरों के काट लेने का दर्द, उन्माद, आवेश, भूतबाधा, भय, आदि की मानसिक पीड़ा के लिए दुःख निवारण की दृढ़ इच्छा करते हुए, गायत्री मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करके पिलाना चाहिए । शुद्ध भस्म को मन्त्रित करके उस स्थान से लगा देना चाहिए और पीड़ित स्थान पर हाथ फेरना तथा मार्जन करना चाहिए । ऐसा करने से पीड़ा को बहुत शीघ्र आराम होता है ।

(९) शक्ति-पात

आध्यात्म विद्या के ऊँचे अभ्यासी अपनी शक्ति को सामने वाले व्यक्ति पर असाधारण रूप से एकदम गिरा सकते हैं । इससे उसका भीतरी जीवन बिल्कुल उलट-पुलट हो जाता है, स्वभाव, विचार और संस्कार दूसरे ही ढांचे में ढल जाते हैं । यह मेस्मेरिज्म का ऊँचे दर्जे का प्रयोग है । साधारण प्रयोग का विशेष असर तो सिर्फ उतनी ही देर रहता है जब तक कि तन्द्रा रहती है । जागृत होने पर प्रभाव कम हो जाता है किन्तु शक्तिपात का प्रभाव स्थायी पड़ता है और एक ही बार में प्रयोग से मनुष्य की मानसिक स्थिति बदल जाती है । इस प्रयोग को ग्रहण करते समय कँपकँपी आ जाती है, झटके से लगते हैं और अवर्णनीय विचित्र मनोदशा हो जाती है । सच्चे, सदाचारी, तपस्वी और खरे साधक ही शक्तिपात कर सकते हैं ।

उपरोक्त पंक्तियों में जिन ९ सिद्धियों का वर्णन किया है वे आरम्भ में ही किसी को पूर्ण रीति से प्राप्त नहीं हो जातीं । बहुत समय तक निरन्तर अभ्यास करते रहने से सफलता की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और एक दिन साधक आशातीत सिद्धि प्राप्त कर लेता है ।

हिप्नोटिज्म के तीन खेल

विश्वास की शक्ति का उपयोग करते हुए मनोविज्ञान शास्त्र के आधार पर डॉक्टर मैस्मर के पश्चात अन्य लोगों ने कुछ खेल-तमाशे आविष्कृत किए । जिनसे जनता में बड़ा कौतूहल हुआ । कुछ लोग तो इन्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केवल खेल-तमाशे ही समझते थे, कुछ सीधे-साधे, अल्पज्ञ, अन्धश्रद्धालु लोग इनको सत्य समझने लगे, कुछ लोगों ने इन शोधों को अपना धन्धा बना लिया और उनके साथ विज्ञापनी तौर-तरीके जोड़कर एक अच्छा खासा खेल खड़ा कर दिया । यह खेल-तमाशे यद्यपि डॉक्टर मैस्मर के विज्ञान से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते तो भी हमारे देश की जनता पूरी जानकारी न होने के कारण उन्हें मेस्मेरिज्म का ही भेद समझती है । यह खेल-तमाशे हिप्नोटिज्म की मर्यादा के अन्तर्गत आ सकते हैं ।

मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म का अन्तर पाठकों को भली प्रकार समझ लेना चाहिए । मानवीय विद्युति शक्ति का दूसरे के ऊपर उपयोग करके इच्छित फल उत्पन्न मेस्मेरिज्म है । हिप्नोटिज्म में इस शक्ति की कुछ भी आवश्यकता नहीं है । उसमें किसी प्रकार डांट-डपट से, धौंस से, बहकावा देकर, भूल में डाल कर, डरा कर, फुसला कर कुछ विश्वास उत्पन्न कराया जाता है । हिप्नोटिज्म करने वाला तरह-तरह की तरकीबों से यह कोशिश करता है कि पात्र मेरी बात का पूरा भरोसा कर ले, गहरा विश्वास जमा ले । जितना ही विश्वास पक्का होगा उतना ही खेल अच्छा होगा । यदि विश्वास हल्का रहा या न रहा तो खेल भी गड़बड़ हो जाता है । अब हम हिप्नोटिज्म के कुछ खेल नीचे देते हैं ।

(१) दृष्टि बन्ध (Sightism)

किसी काली, गोल चमकदार चीज पर एकाग्रता पूर्वक दृष्टि जमाने से बाह्यमन शिथिल होने लगता है इस सिद्धान्त के आधार पर दृष्टि बन्ध के खेल होते हैं ।

दस से बाहर वर्ष की आयु के बीच का एक लड़का चुनिए । सामने जो लड़के खड़े हों उन पर निगाह फेंक कर यह पहचानिए कि इनमें सीधा, दब्बू, डरपोक, लड़का कौन-सा है, उसे ही तमाशे के लिए बाहर बुला लीजिए । चंचल, ताकत, हेकड़ लड़के इस कांम के लिए अच्छे साबित नहीं होते । लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ और भी अच्छी रहती हैं ।

बालक को आराम से कुर्सी, चौकी या आसन पर बिठा दीजिए । उसके दाहिने हाथ के अंग के नाखून पर बीचों-बीच गोलाकार गीली स्याही लगा दीजिए । उस हाथ की मुट्ठी बँधवाकर स्याही लगे हुए अँगूठे को दोनों आँखों के बीच की सीध में एक बालिश्त फासले पर रखवाइए और उस बालक से कहिए कि—अँगूठे पर लगी हुई काली स्याही के बीच में चमक है उस पर ध्यानपूर्वक दृष्टि जमाए रहो । जब तीन-चार मिनट हो जायें तो कहिए कि—"इसके अन्दर तुम्हें एक बाग दिखाई पड़ेगा, जब दिखाई पड़ने लगे तब हमें कह देना ।" थोड़ी देर में बालक कहेगा—अब मुझे बाग दिखाई पड़ने लगा । फिर उससे कहिए ध्यान से देखते रहो—इस बगीचे में एक मैदान दिखाई देगा । थोड़ी देर में लड़का कहेगा मैदान भी दीखने लगा । अब लड़के से कहलवाइए कि—कहो-कि इस मैदान को साफ करने के लिए एक महतर आये । लड़का आपकी बताई बात कहेगा और थोड़ी देर में बतायेगा कि महतर आ गया, झाड़ू से मैदान साफ कर रहा है । उससे कहलवाइए—कहो—'एक भिश्ती पानी छिड़कने आये । लड़का कहेगा और थोड़ी देर में बतायेगा कि भिश्ती आ गया, छिड़कवा कर एक आदमी बुला कर फर्श बिछवाइए, दरी, गलीचे, कालीन, कुर्सी, मेज जो चाहें सो मँगवाइए ।

ढीले स्वभाव के लड़के कुछ देर-दार करते हैं । जैसी भिश्ती के आने में देर-दार हो लड़का कहे कि अभी नहीं आया, तो जरा हल्के से गम्भीर स्वर में कहिए ध्यान से देखो किसी कोने की तरफ से आ रहा होगा । बालक कहने लगेगा, हाँ उधर से आता तो मालूम पड़ता है—आ रहा है—आ गया । इसी प्रकार अन्य वस्तुएँ मँगाने के समय ढील-ढाल हो तो ऐसे ही उससे कहिए कुछ देर-दार में वह चीज आ जायेगी ।

पूछने वाले किसी देवी-देवता को—बालक में कहलवा कर बुलवाते हैं । उनके लिए प्रणाम कहलवाते हैं और चोरी में गई वस्तु, भूत-भविष्य की बात, गढ़ा धन, बीमारी, जन्म-मृत्यु, भाग्योदय, हानि-लाभ, तेजी-मन्दी, मुकदमा, भूत-बांधा, पास-फेल, विवाह-शादी आदि की बातें लड़के द्वारा पुछवाते हैं । वे देवता बोर्ड पर लिखकर इशारे से या मुँह से बोलकर उन बातों का उत्तर देते हैं, मनोकांक्षा पूरी होने का उपाय बताते हैं, और कुछ शर्तों पर सहायता करने के लिए तैयार हो जाते हैं । अन्त में उन देवता को प्रणाम करके विदा कर दिया जाता है और पूर्ववत् नौकर को बुलाकर कुर्सी फर्श आदि उठवा दिए जाते हैं, तत्पश्चात्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खेल खत्म हो जाता है । इस क्रिया को 'हजारत' के नाम से भी पुकारते हैं ।

आप देवी-देवता न बुलाना चाहें तो किसी महापुरष को बुला सकते हैं और उनसे किन्हीं समस्याओं के बारे में पूछताछ कर सकते हैं । बराबर जबावं मिलेगा । अंगूठे पर स्याही लगाने की अपेक्षा "करामाती अंगूठी" या "त्रिकालदर्शी दर्पण" से भी काम लिया जा सकता है । यह दर्पण या अगूँठी बनाना बहुत आसान है । काले नग की अंगूठी ही 'करामाती अंगूठी' है और पीठ पर काला रंग पुता हुआ दर्पण ही 'त्रिकालदर्शी दर्पण' है । प्रयोग करते समय इन पर गोल घेरे में जरा सा तेल चुपड़ देना चाहिए जिससे चमक आ जाय ।

इस करामात का रहस्य यह है कि चमकदार स्याही पर दृष्टि जमाने से बालक का बाह्य मन निद्रित हो जाता है देखने में जागता मालूम पड़ने पर भी उसकी मनोदशा तन्द्रा या अर्ध स्वप्न की सी हो जाती है । इस दशा में आप जो कुछ उसे आदेश करेंगे बिना तर्क के स्वीकार कर लेगा, आपका संकल्प उसके विश्वास में जम जायेगा और विश्वास के आधार पर स्याही में सब वस्तुएँ वैसे ही दिखाई पड़ेगीं, जैसे झाड़ी का स्वरूप भूत जैसा बन जाता है । वास्तव में कोई भिस्ती, महतर या देवता वहाँ नहीं है, यह केवल मात्र बालक का जागृत स्वप्न है । प्रश्नों के जो उत्तर मिलते हैं वे बालक के अपने विचार हैं । यह स्वप्न हर किसी को नहीं दिखाए जा सकते आसानी से तो दब्बू और सीधे स्वभाव के बालक ही देख सकते हैं । स्त्रियों पर भी यह प्रयोग सफल हो जाते हैं । कभी-कभी कोई बड़ी उम्र के पुरुष भी यह सब देख लेते हैं ।

(२) प्रेत-विद्या (Spiritualism)

(१) एक हल्की तीन पाए की गोल मेज लीजिए । इसके पाए किनारों से लगे हुए न हों वरन् छः इन्च अन्दर की तरफ हों । यदि गोल न मिले तो साधारण हल्की मेज से भी काम लिया जा सकता है । उसके एक पाये के नीचे कंकड़ी लगा देनी चाहिए जिससे थोड़े संकेत से हिल डुल सके ।

पायों का नीचे का सिरा गोल घुण्डीदार ठीक रहता है । मेज के चारों ओर एक हाथ के फासले पर कुर्सियाँ रख दी जायें, इन पर प्रेतों को आवाहन करने वाले बैठें और अपनी हथेलियाँ मेज के तख्ते से सटा लें । हाथ इस प्रकार सीध में रखे जायें कि गोल चक्र से मालूम पड़ें । इन बैठने वालों में से एक नेतृत्व करे । सब लोग दस मिनट तक शान्त चित्त होकर मेज के मध्य बिन्दु में एकाग्रता करते रहें और भावना करते रहें कि कोई या अमुक प्रेतात्मा इस मेज पर पधार कर हम लोगों से वार्तालाप करे ।

इस स्थिति में कुछ देर रहने के उपरान्त मेज में एक कँपकँपी सी उत्पन्न होगी और एक पाया खट-खट करने लगेगा । यह खट-खट प्रेतात्मा के आगमन की सूचना समझी जायेगी । उसे प्रणाम करने के उपरान्त नेतृत्व करने वाला आत्मा से कुछ प्रश्न करे और स्वयं ही उन प्रश्नों के दो, तीन या चार पाँच उत्तर एक कागज पर लिख ले । फिर मेज के पायों के जितने खटके हों उसी नम्बर के उत्तर को प्रेतात्मा का उत्तर समझे । जैसे प्रश्न किया गया कि आयी हुई प्रेतात्मा किस वर्ण की है ? इसका उत्तर क्रमशः लिख लिया गया—(१) ब्राह्मण, (२) क्षत्रिय, (३) वैश्य, (४) शूद्र । यदि मेज के पाए एक बार खटकें तो ब्राह्मण वर्ण की दो बार खटके तो क्षत्रिय वर्ण की समझना चाहिए । इसी प्रकार अन्य प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं । एक बार खटकने को अ, दो बार खटकने को इ, तीन बार को उ, इस प्रकार वर्णमाला बनाकर भी उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं । जब प्रेतात्मा विदा होना चाहती है तो एक बार जोर से मेज हिला कर विदा हो जाती है । इस प्रकार प्रेतात्माओं से वार्तालाप हो जाता है ।

(२) दूसरा तरीका प्लेनचिट (Planchet) का है । यह पान के आकार का लकड़ी का टुकड़ा है । इसमें पीछे की ओर सब तरफ घूमने वाले दो छोटे-छोटे पहिए लगे रहते हैं । नोंक की ओर एक छेद होता है जिसमें पेन्सिल लगा दी जाती है । मेज या चौकी पर कोरा कागज रख कर उस पर इस प्लेनचिट यन्त्र को रखते हैं । प्रयोग करने वाले दो आदमी अपनी उँगलियों के छोर उस पर रखकर बैठते हैं और एकाग्रता तथा ध्यान करते हैं । थोड़ी देर में हाथों में हरकत सी होती है और प्लेनचिट आगे चलने लगता है और पेन्सिल द्वारा प्रश्नों के उत्तर कागज पर लिखे जाते हैं ।

(३) तीसरा तरीका स्वयं लेखन-ओटोमेटिक राइटिंग का है । एक व्यक्ति अपने हाथ में पेन्सिल लेकर और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेज पर कागज रख कर बैठता है । अमुक या किसी भी प्रेतात्मा का ध्यान करता हुआ उसे आवाहन करता है । शरीर में रोमांच होता है और हाथ में लगी हुई पेन्सिल द्वारा उत्तर लिखे जाने लगते हैं । स्वयं ही प्रश्न कर सकता है और कुछ देर ध्यान करके आवेश आने पर स्वयं ही उत्तर लिख सकता है । ऐसा भी हो सकता है । एक व्यक्ति प्रश्न पूछे और दूसरा आत्मा के आवेश में उत्तर लिखता रहे ।

साधारणतः इन्हीं तीन तरीकों से प्रेतात्माओं का आवाहन किया जाता है । आत्माओं का खींचना, प्रत्यक्ष दर्शन करना, ट्रान्स द्वारा बोली सुनना, स्पर्श करना आदि अन्य पद्धतियाँ भी प्रचलित हुई हैं पर वे अपने देश में अभी उतनी प्रचलित नहीं हैं । उपरोक्त तीन तरीके ही यहाँ अधिक प्रचलित हैं । यह प्रेतात्मावाद भी मैस्मेरिज्म के अन्तर्गत शामिल समझा जाता है, इसलिए इस पर भी इन पंक्तियों में कुछ प्रकाश डालना पड़ा है ।

सम्भव है कोई विशेष अनुभवी महानुभाव वास्तविक प्रेतों को बुलाने में समर्थ होते हों, पर आमतौर से ऐसा नहीं होता, । अधिकांश प्रयोगों में मानसिक आवेश ही काम करता है । ध्यान, एकाग्रता और विश्वासपूर्वक चिन्तन करने से एक आवेश पैदा हो जाता है और इस मानसिक आवेश का प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है, तदनुसार मेज, प्लेनचिट तथा पेन्सिल की हरकतें होने लगती हैं । जो उत्तर प्राप्त होते हैं वे प्रयोग करने वालों के मस्तिष्क के उत्पन्न हुए होते हैं । जैसे 'हाजरात' में बालक को भंगी, भिस्ती, देवता दिखाई पड़ते हैं वैसे ही प्रेतात्माओं के आवेश में उत्तर लिखे जाते हैं । बाहरी रूप रेखा दो हैं पर सिद्धान्त एक ही है । प्रेतात्मा आवाहन विधि की कलई तब खुल जाती है भुलावे में डालने वाले, परीक्षा दृष्टि से प्रश्न पूछे जाते हैं । जिन्दे आदमियों की आत्माएँ भी आती हैं, बिल्कुल झूँठे उत्तर देती हैं, जिन्हें देखकर यही मानना पड़ता है कि यह उत्तर प्रयोग करने वाले के मस्तिष्क में उत्पन्न हुए हैं । श्री प्रियरत्न जी आर्य तो बिजली, वायु आदि जड़ तत्वों का आदेश कराने में सफल हुए हैं, उनके प्रयोगों में बिजली, वायु आदि के प्रयोग के उत्तर भी दिए हैं ।

(३) सम्मोहन (Hypnotism)

एक लाइन में कई सीधे स्वभाव के आदमी खड़े कर लीजिए । इनमें कौन व्यक्ति आपके तमाशे के लिए उपयुक्त हो सकता है, इसका वर्णन इन विधियों से कीजिए ।

(अ) अपने अंगूठे पर स्याही लगा कर बारी-बारी हर एक को दो-दो मिनट दिखाइए और कहिए इनमें एक सोने का मन्दिर जिसे दिखाई पड़े हमें बता दे । जो-जो यह कहे कि हमें 'सोने का मन्दिर' दिखाई पड़ता है, समझिए कि यह प्रयोग के योग्य हैं ।

(२) लाइन में खड़े हुए व्यक्तियों के सामने तीन फीट के फासले पर अपने हाथ का पंजा खोल दीजिए और कहिए मैं इस हाथ की आकर्षण शक्ति से आप में से कई लोगों के सिर नीचे झुक जायेंगे । ऐसा कहकर पंजे को इस प्रकार पीछे खींचिए मानो पंजे में पकड़ कर उन लोगों को खींच रहे हैं । इस प्रकार दस पाँच बार कीजिए, जिनके सिर झुक जायें उन्हें प्रयोग के योग्य समझिए ।

(३) साधारण पानी एक गिलास में लेकर उस पर तीन बार हाथ फिराइए और फिर उसमें से एक-एक चम्मच सब को पीने के लिए दीजिए और कहिए यह अभिमन्त्रित जल जिसको जरा मीठा मालूम पड़े वह बता दे इन लोगों में से जो कहें कि जल हमें मीठा लगा उन्हें प्रयोग के लिए ठीक समझिए ।

जो व्यक्ति प्रयोग के योग्य ठहरें उनमें से सबसे श्रद्धालु और सीधा एक व्यक्ति चुन लीजिए । इसे साधारण कुर्सी पर बिठा लीजिए । आप उसके सामने खड़े होकर सिर से छाती तक मार्जन दस-बारह कीजिए और सुनिश्चित स्वर में आदेश दीजिए कि "अब तुम पूर्ण रूप से हमारे आज्ञानुवर्ती हो गए हो । जो हम कहेंगे, जैसा हम चाहेंगे उसी के अनुसार तुम्हारी सारी क्रियाएँ होंगी, हमने मेस्मेरिज्म का प्रयोग करके तुम्हें पूर्ण रूप से अपने वश में कर लिया है ।" यह शब्द कहकर दो-तीन मिनट एकटक दृष्टि से उसके चेहरे को घूरते रहिए और देखते रहिए कि उसके चेहरे के भाव आज्ञानुवर्ती जैसे हो गए या नहीं, यदि न हुए हों तो एक-दो बार वही आदेश फिर जरा दृढ़ शब्दों में दीजिए ।

जब पात्र का चेहरा ढीला पड़ जाय । आज्ञानुवर्तीपन झलकने लगे तब कहिए—"तुम्हारे हाथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारी-बहुत भारी—बहुत ज्यादा भारी कर दिए गए हैं, अब तुम उन्हें उठा न सकोगे । कितना ही प्रयत्न करो तो तुमसे उठेंगे नहीं । वह व्यक्ति हाथ उठाने की कोशिश करेगा पर उठ न सकेगा । जब आप कहेंगे हमने हाथ हल्के कर दिए तब वह हाथ उठा लेगा । जब आप कहेंगे बड़ी सर्दी पड़ रही है तो वह जाड़े के मारे काँपने लगेगा, गर्मी लगने का आदेश करेंगे तो गर्मी से बेचैन हो जायेगा, कपड़े उतारेगा और पंखा झलेगा । मिट्टी का टुकड़ा देकर उसे मीठा बतायेंगे तो मिठाई की तरह रुचिपूर्वक खाने लगेगा । मिठाई को कड़वी बतायेंगे तो उसे चखते ही थूक देगा । लकड़ी को सर्प बतायेंगे तो उससे डर कर भागेगा, किसी मनुष्य को पशु बतायेंगे तो वह उससे पशु जैसा व्यवहार करेगा । फूल को कोयला बतायेंगे तो उसे वह कोयला ही नजर आयेगा । आपके आदेशानुसार एक ही रुमाल में कभी इत्र की, कभी मिट्टी के तेल की, कभी हींग की गंध बतायेगा । कानों से भी अनेक संगीत सुनेगा । नेत्र बन्द कराके सुलादें और कहें कि तुम्हें बम्बई भेजते हैं तो बम्बई की सैर करो वहाँ की बातें सुनाओ, लड़ाई के मोर्चे पर भेज दीजिए तो युद्ध का वर्णन करेगा । अफ्रीका के जंगलों में भेजिए तो वहाँ का हाल बतायेगा, स्वर्ग में, नरक में, आकाश में, पाताल में कहीं भी भेज दीजिए वहीं पहुँचेगा और वहीं के समाचार सुनायेगा ।

एक अच्छे भले आदमी को इस तरह अद्‌भुत आचरण करते देखकर लोग अचम्भे में दंग रह जाते हैं, परन्तु उसमें अचम्भे की कुछ बात नहीं है, विश्वास में ऐसी ही शक्ति है, इससे भी अनेक गुनी अधिक शक्ति हैं । हिप्नोटिज्म करने वाले अपनी आदेश शक्ति से पात्र का विश्वास अपनी ओर खींचते हैं और उसका मन भी अपने कब्जे में कर लेते हैं । इन्द्रियाँ मन की आज्ञानुवर्ती हैं, अतएव पात्र की इन्द्रियों पर भी प्रयोक्ता का कब्जा हो जाता है । आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा यह सब भी प्रयोक्ता के आदेशानुसार ही शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श का अनुभव करती हैं । गर्मी के दिनों में धूप का रंगीन चश्मा लगाने से मन को भ्रम हो जाता है कि धूप अधिक नहीं है, इसी भ्रम के आधार पर आदमी चिलचिलाती हुई दोपहरी में फिरता रहता है और गर्मी अनुभव नहीं करता । यही विश्वास हिप्नोटिज्म में अपनी करामात दिखाता है । चतुर और ऊँचे चढ़े हुई प्रयोग करने वाले अपनी इच्छा शक्ति से एक साथ हजारों मनुष्यों को हिप्नोटाइज्ड कर सकते हैं और सारी जनता को भी बड़े-बड़े आश्चर्यजनक खेल दिखाते रहते हैं । फोटो लेने पर मालूम हुआ है कि वे लोग खेल कुछ नहीं करते सिर्फ बातें बनाते रहते हैं और देखने वाले बुद्धि विमूढ़ होकर उन बातों का साक्षात अनुभव करते रहते हैं ।

हिप्नोटिज्म के तीन खेलों का यहाँ उल्लेख किया गया है । यह कौतुक मात्र हैं । मिथ्या हैं । इनसे किसी का कुछ लाभ नहीं उपरोक्त तीन खेलों के अलावा मन शक्ति के और भी अनेक कौतुक हैं तथा हो सकते हैं । हम अपने पाठकों से इन खेल तमाशों में अपनी और दूसरों की शक्ति बर्बाद करने को मना करते हैं । इसमें कौतुक के अलावा लाभ कुछ नहीं, हानि दोनों की है । हाँ, इनसे एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त जरूर साबित होता है । वह यह कि विश्वास में प्रबल शक्ति है । जो जैसा विश्वास करता है उसे बाहरी वस्तुएँ वैसी ही दिखाई पड़ती हैं । "हर मनुष्य अपनी दुनिया आप बनाता है" इस उक्ति का प्रमाण हिप्नोटिज्म के खेलों से पाया जा सकता है और यह शिक्षा ग्रहण की जा सकती है कि हम संसार को जैसा देखना चाहते हैं अपने विश्वासों को उसी साँचे में ढालें ।

नकली मेस्मेरिज्म

आपने देखा होगा कि बाजीगर लोग एक लड़के को पास देकर बेहोश करते हैं, उसे कपड़े से ढक देते हैं, ऊपर से उसकी छाती पर एक-ताबीज रख देते हैं । लड़के की आँखों से पट्टी बाँध दी जाती है । बाजीगर कोई सवाल पूछता है । लड़का उसका उत्तर देता है । इस खेल को देखकर लोग बड़े अचम्भे में रह जाते हैं । इसे ताबीज की करामात समझते हैं । बाजीगर के ताबीज धड़ा-धड़ बिकने लगते हैं । पैसों का ढेर लग जाता है ।

रहस्य यह है कि बाजीगर अपने ही लड़के को बेहोश करके प्रश्न पूछता है । यह लड़का पहले से ही सिखाया पढ़ाया होता है । अगर आप अपना लड़का पेश करें कि इसे बेहोश करके प्रश्न पूछो तो उनकी सारी कलई खुल सकती है । तमाशा करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाला कुछ प्रश्न और उत्तर पहले से ही तय करता है और उसे लड़के को भली-भाँति कंठस्थ करा देता है। तमाशा करते वक्त उपस्थित लोगों की चीजों को बाजीगर छूता है और उसका नाम कपड़े से ढके हुए लड़के से पूछता है । इस पूछने में प्रश्न की भाषा पूर्व निश्चित होती है । लड़का ध्यान से उसे सुनता है और कंठस्थ उत्तर कह देता है ।

एक छोटी सी प्रश्नोत्तरी नीचे दी जाती है । ऐसी ही और भी बनाई जा सकती हैं । तमाशे में कैसे लोग उपस्थित होंगे और उनके पास क्या-क्या चीजें होंगी, इस बात का ध्यान रखते हुए बाजीगर समय-समय पर नये-नये प्रश्नोत्तर बनाया करते हैं ।

(१) यह कौन है ? इन्सान

(१) कौन ?—मर्द, (२) कौन है ?—औरत, (३) ये कौन है ?—लड़की, (४) यह कौन है ?—लड़का, (५) क्या उम्र ?—नौजवान, (६) क्या उम्र है ?—खसती उम्र, (७) उनकी क्या उम्र है ?—बुड्ढा, (८) कौन जात है ?—मुसलमान, (९) कौन लोग हैं ?—हिन्दू (१०) कौन कौम है ?—ईसाई ।

(२) पेशा

(१) क्या करता है ?—नौकरी, (२) ये क्या करते हैं ?—तिजारत, (३) यह क्या करते हैं ?—खौमचा, (४) क्या करता है ?—हजामत बनाता है, (५) ये क्या करता है ?—मेहनत मजदूरी, (६) यह क्या करता है ?—खेती ।

(३) इसे बताओगे ?—कपड़ा ।

(१) क्या है ?—कोट, (२) ये क्या है ?—रूमाल (३) यह क्या है ?—जॅकिट, (४) वह क्या है ?—दुपट्टा, (५) अच्छा ये क्या है ?-कुर्ता, (६) अच्छा यह क्या है ? कमीज, (७) और ये क्या हैं ?—धोती, (८) और यह क्या है ?—पजामा, (९) देखो यह क्या है ?—टोपी, (१०) देखो यह क्या है ?—टोप, (११) देखो यह क्या है ?—पगड़ी ।

(४) इसे बताओ ?—कोई रंगीन चीज ।

(१) कैसी ?—सफेद, (२) कैसी है ?—काली, (३) ये कैसी है ?—पीली, (४) यह कैसी है ?—नीली, (५) अच्छा ये कैसी है ?—हरी, (६) अच्छा यह कैसी है ?—लाल, (७) और ये कैसी है ?—गुलाबी, (८) और यह कैसी है ?—खाकी ।

(५) इसे बता सकते हो ?—कागज ।

(१) किसमें लिखा ?—हिन्दी, (२) किसमें लिखा है ?—उर्दू, (३) ये किसमें लिखा है ?—गुजराती, (४) यह किसमें लिखा है ?—अंग्रेजी, (५) अच्छा ये किसमें लिखा है ?—बंगला, (६) अच्छा यह किसमें लिखा है ?—मराठी, (७) और यह किसमें लिखा है ?—पढ़ नहीं सकता ।

(६) यह बताओगे ?—सिक्के ।

(१) कौन ?—पैसा, (२) कौन-सा ?—इकन्नी, (३) कौन सा है, ?—दुअन्नी, (४) ये कौन सा है ? —चवन्नी, (५) यह कौन सा है ?—अठन्नी; (६) और यह कौन सा है ?—रुपया, (७) कौन छाप ?— विक्टोरिया, (८) किसकी छाप ?—एडवर्ड, (९) किसकी छाप है ?—पंचम जार्ज, (१०) ये किसकी छाप है ? — छठवें जार्ज, (११) यह किसकी छाप है ?—देशी रियासत ।

(७) यह बताओगे ?—संख्या ।

(१) कै ?—एक, (२) कै हैं ?—दो, (३) कितने ?—तीन, (४) कितने हैं ?—चार, (५) ये कितने हैं ?—पाँच, (६) यह कितने हैं ?—छः, (७) और ये कितने हैं ?—सात, (८) और यह कितने हैं ?—आठ, (९) अच्छा ये कितने हैं ?—नौ, (१०) अच्छा यह कितने हैं ?—दस ।

(८) यह बता सकते हो ?—एक चीज ।

(१) क्या ?—अंगूठी, (२) क्या है ?—छड़ी, (३) क्या है ?—छाता, (४) यह क्या है ?—घड़ी, (५) क्या चीज ?—बेग, (६) क्या चीज ?—डिब्बा, (७) ये क्या चीज है ?—गठरी, (८) यह क्या है ? —कलम, (९) अच्छा ये क्या है ?—माचिस, (१०) अच्छा यह क्या चीज है ?—सिगरेट, (११) जलती हुई या बुझी ?—जलती, (१२) बुझी हुई या जलती ?—बुझी ।

(९) मैं क्या पकड़े हूँ ?—कोई जिस्म ।

(१) कौन सा ?—कान, (२) कौन सा जिस्म ?—नाक, (३) ये कौन सा जिस्म ?—हाथ, (४) यह कौन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सा जिस्म ?—गर्दन, (५) ये कौन सा जिस्म है ?—ठोड़ी, (६) यह कौनसा जिस्म है ?—कंधा ।

जो बात बाजीगर को दिखाई देती है या मालूम है, तथा पहले से जिस बात के प्रश्नोत्तर तैयार किए हुए हैं उसी बात को वह अपने ढके हुए लड़के से पूछ सकता है । जो बात बाजीगर को मालूम नहीं या दिखाई नहीं देती उसे वह लड़के से नहीं कहलवा सकता ।

इस खेल को कई लोग पैसे की दृष्टि से नहीं कौतुक एवं शान बढ़ाने के लिए करते हैं उन्हें ताबीज रखने की जरूरत नहीं होती । एक सीखे पढ़े साथी की सहायता से चाहे कोई इसे कर सकता है । साथी झूठ-मूठ बेहोश होने का बहाना करके लेट जाता है ।

दो साधक-सिद्ध मिल कर झूठ-मूठ हिप्नोटिज्म का तमाशा भी इसी तरह गढ़ लेते हैं । मिली भगत से और कई तरह के खेल किए जाते हैं ।

मेस्मेरिज्म का प्रयोजन

मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म का संक्षिप्त परिचय पिछले पृष्ठों पर पाठक प्राप्त कर चुके होंगे । इच्छा शक्ति की प्रबलता और मानसिक शक्तियों की एकाग्रता के द्वारा एक असाधारण विद्युत शक्ति उत्पन्न होती है, उसका उपयोग दूसरों पर करने की कला में जो प्रवीणता प्राप्त कर लेते हैं उनके लिए अचरज भरे काम कर दिखाना बायें हाथ का खेल हो जाता है । पिछले पृष्ठों में जो आरम्भिक साधना बताई गई है उसका अभ्यास करने से छोटी-मोटी कई सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं जैसे—(१) कठिन साध्य और असाध्य रोगों को दूर किया जा सकता है, इनकी विधि हम अपनी 'प्राणचिकित्सा, विज्ञान पुस्तक में सविस्तार बता चुके हैं । (२) निकटस्थ या दूरस्थ व्यक्तियों के मन में किन्हीं संस्कारों को जमाया जा सकता है जिसकी विधि हमारी परकाया प्रवेश पुस्तक में है । (३) दूसरों के मन की बातें जानी जा सकती हैं । (४) अपने कुसंस्कारों और रोगों को हटाया जा सकता है । (५) अपनी मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है । इन लाभों का तात्पर्य अपना और दूसरों का सच्चा हित साधन करना है ।

हम अपने साधारण पाठकों को इसी सीमा तक शिक्षा देना चाहते हैं इसलिए इतना ही प्रकाशन करना उचित है, परन्तु ऐसा न समझना चाहिए कि इस विद्या का अन्त यहीं हो जाता है । डॉक्टर मेस्मर का विज्ञान साधारण तथा इसी सीमा तक है उसकी पहुँच इससे बहुत आगे तक नहीं है, परन्तु भारतीय योगवेत्ता इससे बहुत आगे की जानकारी, अनुभव तथा सफलता प्राप्त कर चुके हैं । कुण्डलिनी जागृत करना, शक्तिपात करके आध्यात्मिक कायाकल्प कर देना, षड्चक्र वेधन करके अदृश्य बातों का पता मालूम करना, यह सब सफलताएँ इसी मार्ग पर आगे चलने से मिलती हैं । डॉक्टर मेस्मर यह नहीं जानते थे पर भारतीय योगी मुद्दतों पहले इसका आविष्कार कर चुके थे ।

जादू के बहुत से खेलों को दिखाते हुए बाजीगर लोग अपने कार्य को मैस्मेरिज्म बताया करते हैं । हम स्वयं कई वर्षों इसी चक्कर में फँसे रहे हैं, विद्यार्थी जीवन के अमूल्य तीन साल इसी जंजाल में भटकते हुए हमने बिताए हैं । भारत के इस कोने से उस कोने तक फिरे हैं, और घर से ढेरों रुपया लोगों को खिलाते रहे हैं । सैकड़ों एक से एक चमत्कारी खेल सीखने के बाद अन्त में हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कोई धूर्त व्यक्ति इनको काम में लाकर पैसा बटोर सकता है, पर आत्मोन्नति कुछ नहीं कर सकता निरन्तर छल, झूठ, फरेब का अभ्यास करने से और उल्टा नीचे को ही गिरेगा । इसलिए झूठी जादूगरी के पीछे न पड़कर सच्ची आत्म-साधना करनी चाहिए ।

अचेतन का अनावरण सम्मोहन द्वारा सम्भव

पूर्वार्त्त मानसशास्त्र में सम्मोहन का वर्णन मारण, वशीकरण, आकर्षण आदि ६ प्रमुख अंगों के साथ मोहन के रूप में प्रमुखता से किया गया है । यही वह सम्मोहन विद्या है जिसे ग्रीक भाषा में हिप्नोज और अंग्रेजी में हिप्नोटिज्म के नाम से जाना जाता है । पिछले दिनों इसका प्रमुख उद्देश्य निद्राकर्षण करने के पश्चात् कौतुक-कौतूहल दिखाने भर का रहा है । प्रयोक्ता इसका दुरुपयोग भी करते रहे हैं । उन्नीसवीं सदी के अन्त तक लोग इसे काला जादू 'कबाला' आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कह कर पुकारते और कपोल-कल्पनाओं की विडम्बना भर समझकर सन्देहास्पद दृष्टि से देखते रहे, किन्तु अब इसे चिकित्सा-उपचार से सम्बद्ध करके वैज्ञानिकों ने चिकित्सा क्षेत्र में एक नये अध्याय की शुरूआत की है । इण्टरनेशनल काँग्रेस ऑफ हिप्नोटिज्म के वैज्ञानिकों ने इस विद्या की चिकित्सा सम्बन्धी उपयोगिता पर प्रकाश डाला और उसके सत्परिणामों से समूची पीड़ित मानव जाति को अवगत कराया है ।

प्रख्यात् चिकित्सा शास्त्री डॉ. विलियम ब्राउन के अनुसार साइको-पैथोलॉजिकल डिस आर्डर्स जैसे मनोविकारों के उपचार में सम्मोहन विद्या अपनी अहम् भूमिका निभा सकती है । उन्होंने इसका प्रयोग करके हजारों सैनिकों एवं अन्यान्य लोगों को स्वस्थ किया और उन्हें आनन्दमय जीवन जीने के लिए प्रेरित किया । प्रथम विश्व युद्ध के समय सैनिकों में पनपी मनोविकृति और स्नायु रोगों को दूर करने के लिए उन्हें हिप्नोसिस का ही आश्रय लेना पड़ा था । उस समय न्यूरोसिस का एक मात्र उपचार ही था हिप्नोसिस । तब से इसका प्रयोग रोगोपचार में तीव्रता के साथ चल पड़ा ।

सम्मोहन चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के शरीर को स्पर्श किए बिना ही उसे कृत्रिम निद्रा का आभास कराया जाता है । मनुष्य को मोह निद्रा में निमग्न करने का यह एक श्रेष्ठ तरीका चिकित्सा विज्ञानियों ने खोज निकाला है । सम्मोहनकर्त्ता रोगी की मनःस्थिति को निरख-परख कर ही अपनी इच्छा शक्ति के माध्यम से संकेत सूचनाओं की संप्रेषण प्रक्रिया को पूरा करते हैं । पाश्चात्य देशों के चिकित्सा क्षेत्र में अब इसका प्रयोग द्रुतगति के साथ बढ़ता जा रहा है । अमेरिका के एडगर केसी के बारे में यही कहा जाता है कि इक्कीस वर्ष की आयु तक वह लैरिंजाइटिस नामक बीमारी के कारण कुछ भी बोलने में असमर्थ था, किन्तु सम्मोहन चिकित्सा से वह न केवल पूर्णतः स्वस्थ बना, वरन् अपनी अतीन्द्रिय क्षमताओं को भी इतना विकसित कर दिखाया कि लोग उसे आज भी 'स्लीपिंग डॉक्टर' के प्रख्यात् नाम से अपनी स्मृतियों में बिठाये हुए हैं । सम्मोहन के द्वारा उसने अपने जीवनकाल में ३० हजार से अधिक रोगियों को जीवन प्रदान किया है । फ्रांस के सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानी एवं तन्त्रिका विशेषज्ञ रिचेट को सम्मोहन विद्या का निष्णात तथा मूर्धन्य चिकित्सक समझा जाता है । पेरिस में उन्होंने एक चिकित्सालय बनाया है जिसमें रोगियों का उपचार सम्मोहन प्रक्रिया द्वारा किया जाता है । चिकित्सा की इस प्रणाली को उन्होंने 'साइकिक एक्सकर्सन' नाम दिया है ।

वाशिंगटन के वाल्टर रीड आर्मी मेडिकल सेन्टर के प्रमुख चिकित्सक डॉ. हेरॉल्ड वेन के अनुसार सम्मोहन विधि का रोगियों पर सफलतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है । इससे रोगी पर किसी प्रकार का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता । लॉस एंजिल्स स्थित कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के मूर्धन्य चिकित्सा विशेषज्ञ जोजेफ बोरबर का कहना है कि यह प्रक्रिया दर्द नियन्त्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है । विशेषकर जले हुए व्यक्तियों एवं फैन्टम लिम्ब पेन से ग्रस्त व्यक्तियों को इस विधि द्वारा प्रभावित करके पीड़ा को कम किया जा सकता है । सम्मोहित अवस्था में कष्टों का भान नहीं रहता । फैन्टम लिम्ब पेन में इतनी असह्य पीड़ा होती है जिससे छुटकारा पाने के लिए कई बार लोग आत्म-हत्या तक कर बैठते हैं । सम्मोहन प्रक्रिया इनके लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई है । दन्त चिकित्सकों ने भी जबड़ों के दर्द निवारण में इस विधि द्वारा सफलता पायी है । वेस्ट वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध चिकित्सक के. थाम्पसन ने इस विधि द्वारा सामूहिक रूप से दन्त रोगियों पर प्रयोग किया और आशातीत सफलता पाई है । मूर्धन्य चिकित्सा शास्त्री हेनरी बेनैट भी रक्ताल्पता वाले रोगियों को सम्मोहन प्रक्रिया द्वारा स्वास्थ्य प्रदान करने में सफल हुए हैं । खिलाड़ियों की एकाग्रता में इस विधि से अभिवृद्धि होती देखी गई है ।

बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. जोस्फीन तथा सैमुअल लावेरन ने कैंसर ग्रस्त बालकों की पीड़ा निवारण के लिए सम्मोहन चिकित्सा को अति महत्त्वपूर्ण बताया है । इससे न केवल उनकी श्वसन प्रक्रिया सामान्य हो जाती है, वरन् वे दर्द में आश्चर्यजनक कमी का भी अनुभव करते हैं । कैंसर का उपचार तो नहीं, किन्तु उसके लक्षणों में कमी इससे आ जाती है । वमन और मितली में इसका दीर्घकालिक उपयोग रोग को निर्मूल कर देता है । अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, एलर्जी, चर्मरोग आदि में भी इसके अच्छे प्रभाव देखे गए हैं । मानसिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तनाव दूर करने एवं उच्च रक्तचाप के नियन्त्रण में सम्मोहन प्रक्रिया बहुत लाभकारी सिद्ध हुई है ।

सम्मोहन विद्या को चिकित्सा क्षेत्र में उपयोगी बनाने का श्रेय एफ. ए. मेस्मर को दिया जाता है । आस्ट्रिया के वियना शहर में निवास करने वाला यह व्यक्ति अपने समय का प्रख्यात चिकित्सा शास्त्री था ।

उसने मनुष्य की विलक्षण मानसिक क्षमता को विरलित द्रव-रेअरीफाइड फ्लूड अर्थात् चुम्बकीय तरल पदार्थ का स्वरूप प्रदान किया तथा अपने प्रतिपादन में कहा कि इस अलौकिक द्रव को सम्मोहन शक्ति से उत्पन्न करके रोगोपचार का उपक्रम बिठाया जा सकता है । इस तरह के उन्होंने कई प्रयोग भी किए और सफल रहे । मेस्मर के अनुसार मानवी काया में एक प्रकार का विद्युत चुम्बकीय प्रवाह सतत प्रवाहित होता रहता है जिसकी मात्रा अंगुलियों के अग्रभाग में ज्यादा होती है । मनःशक्ति का प्रयोग करके इसे उत्तेजित, अभिवर्धित किया और रोगी के शरीर में प्रविष्ट कराया जा सकता है । इससे रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है । इस शक्ति प्रवाह को उन्होंने जैव-चुम्बक या चुम्बकीय तरल नाम दिया । कालान्तर में उपरोक्त सिद्धान्त को, प्रतिपादनकर्त्ता के नाम पर मेस्मेरिज्म भी कहा जाने लगा । सम्मोहन वस्तुतः मानवी जैव चुम्बक की आकर्षण शक्ति का परिणाम है जो प्रभावित व्यक्ति के दिल दिमाग पर हावी हो जाती है और उसे प्रयोक्ता के सूचना निर्देशों का पालन-अनुसरण करने के लिए बाध्य करती है ।

प्रख्यात मनोविज्ञानी अलेक्जेण्डर रात्फ ने अपनी कृति 'द पावर ऑफ माइण्ड' में लिखा है कि मानव मन सम्मोहन प्रक्रिया द्वारा सजीव एवं निर्जीव-दोनों पर अपने इच्छानुकूल प्रभाव डाल सकता है । इस शक्ति का उपयोग रोगोपचार में सरलता से किया जा सकता है । किसी समय यूनान में इस विद्या का बहुत प्रचलन था । वहाँ के विख्यात चिकित्सा विज्ञानी पेपिरस ने रोगों की उपचार प्रक्रिया में चिकित्सक द्वारा मरीज के सिर पर हाथ फिराकर अच्छा करने की विद्या को शास्त्रीय रूप दिया था । सम्राट पाइरस और वैसेपसीयन को ऐसे ही उपचार प्रक्रिया के कष्ट साध्य रोगों से मुक्ति मिली थी । फ्रांस के शासक फ्रांसिस प्रथम से लेकर चार्ल्स दशम तक की चिकित्सा में 'जैव चुम्बक' का प्रयोग प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा होता रहा है । हाथ का स्पर्श और विशिष्ट दृष्टिपात इस प्रक्रिया में विशेष रूप से प्रयुक्त हुआ है । सम्भवतः सन्त, महात्मा इसी प्रक्रिया द्वारा पीड़ितों की पीड़ा हरते रहे हैं । मार्किस डी. पुसीगर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द मैग्नेटाइज्ड एनीमल' में विभिन्न प्रमाण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि ऐसे कई व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अपनी अतीन्द्रिय दृष्टि के बल पर लोगों को सम्मोहित करके उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करने में सफलता पायी । इस विधा में चिकित्सक 'एक्सटरनलाइजेशन ऑफ सेंसीबिलिटी' के सिद्धान्त को अपनाते हैं । मन में घुसे दुरावों और दुराग्रहों को निकाल बाहर फेंकते और उसमें नवीन विवेक संगत विचारणाएँ भरते हैं ।

मानवी मस्तिष्क की संरचना इतनी जटिल और विलक्षण है कि उसे कोई सूक्ष्मदर्शी ही समझ सकता है । मानस शास्त्र के विशेषज्ञों का कथन है कि मनःसंस्थान की गतिविधियों के संचालन में जागृति, स्मृति और धृति तीन प्रकार की अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होती हैं । जागृत अवस्था में मन ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूतियाँ उपलब्ध करता है । जन्म-जन्मान्तरों के चिर संचित ज्ञान सम्पदा के भण्डार का बोध स्मृति के माध्यम से होता है । धृति मन की सूक्ष्मतर अवस्था है जिसमें विचार सम्प्रेषण की क्षमता होती है । उसका प्रयोग करके दूसरे व्यक्ति की मनःस्थितियों और परिस्थितियों से अवगत हुआ जा सकता है । सम्मोहन चिकित्सा में मनुष्य की विद्युतीय प्रतिरोधक क्षमता (जी. एस. आर.) पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता । सोते समय यह १० गुनी अधिक बढ़ जाती है, चिकित्सा विशेषज्ञों ने मस्तिष्कीय तरंगों को ई. ई. जी. मशीन पर रिकॉर्ड करके इस तरह के प्रमाण प्रस्तुत किए हैं । चिकित्सक इच्छा शक्ति में अभिवृद्धि करके सहानुभूतिपूर्ण भावनात्मक मुद्रा से अपने में इस चुम्बकीय द्रव को उत्पन्न करता है । रोगी की दृष्टि एक प्रकाश बिन्दु पर केन्द्रित करके घड़ी के पेण्डुलम की तरह उसे लयबद्ध और क्रमबद्ध ध्वनियाँ सुनाई जाती हैं । मैट्रोनोम-तालमापी उपकरण के द्वारा ध्वनि और प्रकाश का समन्वयात्मक स्वरूप रोगी के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है । दन्त चिकित्सा में तो सम्मोहन को अप्रत्याशित सफलता मिल चुकी है । एनेस्थेसिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की बेहोश करने वाली दवाओं की खोज से पूर्व प्रायः सम्मोहन का ही आश्रय लिया जाता था ।

मनःचिकित्सकों के अनुसार समस्त आधि-व्याधियों का एकमात्र कारण मानसिक विकृतियों को ही समझा जा सकता है । सम्मोहन चिकित्सा में सर्वप्रथम रोगी को कृत्रिम ढंग से निद्रा का आभास कराया जाता है । तदुपरान्त उसके अन्तर्मन में संकेत सूचनाएँ पहुँचाई जाती हैं । निद्रावस्था में शरीर प्रायः निष्क्रिय पड़ जाता है पर मनःसंस्थान सक्रिय रहता है । मन को अन्यान्य सांसारिक विषयों से हटाकर विचार शून्य बनाया जाता है तब कहीं जाकर मस्तिष्क में सत्प्रवृत्तियों को समाविष्ट होने का सुअवसर मिलता है । रोगी में आत्म-विश्वास जगाकर उसकी मानसिक दुर्बलताओं को हटाने-मिटाने की यह सर्वोत्तम चिकित्सा समझी गई है । लेनिनग्राड यूनीवर्सिटी के मूर्धन्य शरीर विज्ञानी डॉ. लियोविवैसिलेव ने अपने अनुसन्धान निष्कर्ष में कहा है कि सम्मोहनकर्त्ता अपनी मानसिक रेडियो तरंगों को रोगी के मन मस्तिष्क में सम्प्रेषित करके उसमें छिपी विकृतियों को ढूँढ़ निकालने एवं उन्हें उखाड़ फेंकने में सफल हो सकता है—एक स्थान पर बैठकर भी किसी दूरवर्ती रोगी की इस विधि से चिकित्सा की जा सकती है ।

मानसिक ग्रन्थियों का निराकरण मनोविश्लेषण द्वारा ही सम्भव है । कुछ ग्रन्थियाँ इतनी जटिल और कठिन होती हैं कि रोगी उन्हें जागृत अवस्था में नहीं बता सकता, क्योंकि उसका चेतन मन इस प्रकार के अप्रिय प्रसंगों को स्मृति पटल में प्रवेश नहीं पाने देता है । ऐसी स्थिति में सम्मोहन विधा ही उपयुक्त सिद्ध होती है । पुनर्जन्म के प्रसंगों को भी रोगी के सम्मुख प्रस्तुत करके रोगोपचार के सत्परिणाम सामने आये हैं ।

सम्मोहन प्रक्रिया मात्र कौतुकवर्धक नहीं अपितु एक विज्ञान सम्मत चिकित्सा प्रणाली के रूप में पिछले दिनों उभर कर आयी है । आज मनोशारीरिक व्याधियाँ परिमाण में बढ़ती चली जा रही हैं । इनका निदान व उपचार अचेतन के अनावरण के बिना असम्भव है । मनोग्रन्थियाँ, तनाव, अनिद्रा, असाध्य साइकिएट्रिक व्याधियाँ इस उपचार के द्वारा पूर्णरूपेण ठीक की जा सकती हैं । प्रायश्चित उपचार में भी इस विधा का एक सुपात्र आध्यात्म प्रधान चिन्तन वाले चिकित्सक द्वारा प्रयोग सफलतापूर्वक हो सकता है । पूर्वार्त्त मनोविज्ञानी की इस चिर पुरातन विधा के पुनर्जीवन की अनिवार्यता अनुभव की जानी चाहिए एवं इस दिशा में निरन्तर शोध चलनी चाहिए ।

सम्मोहन विद्या के चमत्कार

ईसा और बुद्ध के लिए कहा जाता है कि उनके कर स्पर्श से ही रोगी भला चंगा हो जाता था । सुकरात पर अभियोग लगाया गया था कि वह युवकों पर जादू चलाकर वशीभूत करके उन्हें अपने मत में परिवर्तित कर लेता था । ऐसे महापुरुषों का उल्लेख रास्पुटिन और मेस्मर जैसे व्यक्तियों के साथ करना नितान्त अनुचित है, पर इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार का सम्मोहन इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति रास्पुटिन के नेत्रों में था । दृष्टि डालते ही व्यक्ति किसी भी नर-नारी को वशीभूत कर लेता था ।

ऐसे व्यक्तियों को किसी भी देश में कोई अभाव नहीं है जो किसी की मृत्यु तिथि तक बता देते हैं और जब ये भविष्यवाणियाँ सच निकल जाती हैं तब हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रह जाता । मेस्मर और रास्पुटिन जैसे लोग आज भी पहेली से बने हुए हैं । राज्यक्रांति के पहले जब मेस्मर ने अपने अलौकिक चमत्कार दिखाने शुरू किए तब सभी ने उनकी कटु आलोचना ही नहीं, निन्तात भर्त्सना भी की । लेकिन कितने ही लोगों ने यह स्वीकार किया कि उसके स्पर्श से ही वे नीरोग हुए । ऐसी रहस्यमयी शक्तियों के प्रति अच्छे लोगों की सदा ही इसलिए शंकापूर्ण दृष्टि रही, कि कहीं इस प्रकार की दैवी शक्ति का उपयोग शैतानी शक्ति के ही रूप में न होने लगे ऐसी आशंका के कारण भी यथेष्ट थे । कितने ही पतित वृत्ति वालों ने ऐसी शक्ति का अपने स्वार्थ साधन के लिए उपयोग किया और कितनों ने सम्पत्ति और प्रभुता के लिए ही नहीं, नारियों की मान मर्यादा लूटने के लिए भी इसका दुरुपयोग किया । बात यहाँ मेस्मर की नहीं है । बात ऐसे लोगों की है जो मेस्मर की प्रणाली का दुरुपयोग अपने स्वार्थों के लिए करें । रास्पुटिन की शक्ति को कोई इन्कार नहीं कर सकता । उसका प्रभाव आधुनिक युग में सबसे अद्‌भुत कहा जायेगा । रूस के जार और उसके समस्त परिवार पर राजकुमारी की बीमारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के पश्चात् ही रास्पुटिन का सिक्का जमा और तब से उसने ऐसे-ऐसे करिश्मे दिखाये कि लोगों को चकित रह जाना पड़ता है । किन्तु उसकी इस शक्ति की सराहना करते हुए भी इसके दुरुपयोग और इसके उपयोग के साधन और साध्य की सराहना कौन कर सकता है ? रास्पुटिन आज निन्दा का विषय ही बना हुआ है । इसी प्रकार शैतानी की लीलाओं के अभियोग में कितने ही सम्मोहक दण्डनीय ठहराये जा चुके हैं और कितने ही फाँसी पर लटकाये और कितने ही जीते जी जलाये जा चुके हैं ।

इसलिए वैज्ञानिकों ने सम्मोहन विद्या के जानकारों के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह रखा है कि वस्तुतः इसकी कोई उपयोगिता है या नहीं । इसके अस्तित्व के सम्बन्ध में प्रश्न गौण हो चला है, प्रधान प्रश्न अब इसकी उपयोगिता का है । सम्मोहकों ने अब अपनी विद्या पर वैज्ञानिक दृष्टि डाली है । एक समय था, जब लम्बे-लम्बे लबादों में घूरती हुई अपलक आँखों द्वारा सम्मोहक किसी को अचेत करके अथवा स्वेच्छापूर्वक अपनी इच्छा शक्ति द्वारा सम्मोहित को संचालित करके ही अपने चमत्कारों की इतिश्री समझ लेते थे, लेकिन आज जब नैतिकता का मूल्य भी सामाजिक और मानवीय कल्याण साधन की कसौटी पर कसा जाने लगा है तब सम्मोहन विद्या की उपयोगिता भी सम्मोहक को प्रमाणित करनी पड़ेगी और सम्मोहक इस स्थिति से अवगत हो चला है ।

लन्दन के अलेज्ड्रा पैलेस में उस दिन एक नये सम्मोहक कैसन ने अपने चमत्कार से सबको चकित कर दिया और अखबारों में उसकी कहानियों को पढ़ लोग दाँतों तल अंगुली दबाने लगे । २४ वर्ष के इस युवक की वेश-भूषा बिल्कुल साधारण—हमारी आपकी-सी, किन्तु अपनी तीक्ष्ण अन्तर्भेदनी दृष्टि से, अपने स्पर्श से कैसन अलौकिक चमत्कार कर दिखाता है । जिस समय यह युवक आपसे जो कुछ भी करने के लिए कहेगा । आप इन्कार नहीं कर सकते, स्वेच्छापूर्वक यह आपको चेतनाहीन करके विभिन्न लोकों का सफर करायेगा, लेकिन इसे सर्वथा चेतनाहीन स्थिति में ही नहीं कह सकते । एक ३३ वर्षीय महिला को इसने विभिन्न वर्षों में ले जाकर उससे एक बार पाँच वर्ष की अवस्था के अक्षरों में, फिर ६, १४ और अन्त में वर्तमान अवस्था के अक्षरों में हस्ताक्षर कराये और बाद को तुलना करके देखा गया कि हस्ताक्षर वास्तविक वय के असली हस्ताक्षरों के समान ही हैं ।

आधुनिक दृष्टि से कैसन ने सम्मोहन विद्या का अध्ययन किया है । उसका दावा है कि कितने ही रोगो में सम्मोहन का उपयोग किया जा सकता है । चीर-फाड़ की अवस्था में सम्मोहन द्वारा रोगी को अचेत किया जा सकता है और इस स्थिति में चीर-फाड़ रोगी महसूस नहीं कर सकता । अनिद्रा के रोग का इलाज भी इससे सहज साध्य हो सकता है । आगस्ट फोरेल नामक एक दूसरे सम्मोहक ने तो म्यूरिच के पागलखाने में काम करने वालों पर इसके प्रयोग कर भी दिखाये हैं । पागलखाने के शोरगुल से परेशान कर्मचारियों पर वह सोने के समय ऐसा सम्मोहन डाल दिया करता है कि उसके प्रभाव में वे गाढ़ी निद्रा में निमग्न हो जाते हैं और फिर चाहे जितना शोरगुल हो, निर्धारित समय से पहले उनकी नींद में बाधा नहीं पड़ती ।

ऑपरेशन के लिए सम्मोहन का उपयोग १८४० से ही किया जाने लगा था, किन्तु क्लोरोफॉर्म के आविष्कार के पश्चात् इसका त्याग किया जाने लगा । इसके बाद पुनः प्रथम महायुद्ध के पश्चात इसका प्रयोग होने लगा । सम्मोहन द्वारा चिकित्सा प्रणाली का एक बड़ा दोष यह है कि इससे रोग का निराकरण तो कभी-कभी अद्भुत ढंग से हो जाता है किन्तु रोग की न तो वास्तविक जानकारी हो पाती है न इस बात का ही विश्वास हो पाता है कि रोग का आमूल निराकरण हो सका या नहीं । फिर भी स्नायु सम्बन्धी रोगों के इलाज के लिए सम्मोहन प्रभावशाली प्रमाणित हुआ है ।

सम्मोहन विद्या की वास्तविकता के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है, किन्तु इसका आधार मनोवैज्ञानिक है और मानव की इच्छा शक्ति को प्रभावित करके स्वेच्छानुसार उसका संचालन करने की क्रिया मनोविज्ञान और मनस्तत्व के सिद्धान्तों के प्रतिकूल नहीं बतायी जा सकती । इसकी उपयोगिता अथवा अवांछनीयता का प्रश्न भिन्न है । विष मारात्मक है किन्तु 'विषस्य विषमौषधम्' के सिद्धान्तानुसार अनेक घातक रोगों की चिकित्सा विषौधियों द्वारा ही होती है । इसलिए सम्मोहन विद्या का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों ही सम्भव है । इतना निश्चित है कि सम्मोहन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्या कोरी विडम्बना नहीं है । इसका आधार मनोवैज्ञानिक है, इसका केन्द्र इच्छा शक्ति है और इसका साधन स्नायुविक प्रणाली है ।

सम्मोहन से मानसोपचार

तांत्रिकी के अंतर्गत गुहा विज्ञान के प्रायः छः प्रमुख अंग हैं—मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण और स्तम्भन । इनमें से पाश्चात्य जगत में जिस शाखा को इन दिनों सबसे अधिक प्रयोग में लाया जा रहा है, वह है मोहिनी विद्या । मोहन अर्थात् सम्मोहन । अंग्रेजी में इसे "हिप्नोटिज्म" के नाम से जाना जाता है । ग्रीक भाषा में इसे ही "हिप्नोज" कहा गया है, आखिर यह है क्या ? व इसका लाभकारी प्रयोग क्या हो सकता है ? इस दिशा में काफी कार्य पाश्चात्य देशों में हुआ है ।

सम्मोहन विद्या के अन्तर्गत व्यक्ति के शरीर को स्पर्श किए बिना ही कृत्रिम निद्रा का आभास कराया जाता है । मनुष्य को मोह-निद्रा में निमग्न करने का यह एक सर्वश्रेष्ठ तरीका वैज्ञानिकों की समझ में आने लगा है । सम्मोहनकर्त्ता, व्यक्ति की मनःस्थिति को निरख-परख कर ही अपनी इच्छा शक्ति के माध्यम से संकेत, सूचनाएँ, सम्प्रेषण की क्रिया पूरी करता है ।

न्यूयार्क की रूटजर्स यूनिवर्सिटी के चिकित्सा विज्ञानी डॉ. ग्रिफिथ विलियम ने अपनी पुस्तक "एक्सपेरीमेण्टल हिप्नोसिस" में इस तथ्य को उजागर किया है कि क्यों कोई व्यक्ति किसी समय भाव-विभोर हो उठता है ? एवं धार्मिक उत्सवों, कथा-कीर्तनों अथवा मधुर संगीत को सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठता है और सम्मोहन जैसी स्थिति में आ जाता है ? इसका कारण बताते हुए वे कहते हैं कि ऐसे समय उसकी प्राण-चेतना निर्दिष्ट और अभीष्ट व्यक्ति अथवा वस्तु की ओर प्रेरित आकर्षित होने लगती है । इस सम्मोहित अवस्था को उन्होंने 'सोमनोबुलिज्म' के नाम से सम्बोधित किया है । उनके कथनानुसार कोई व्यक्ति जब अपनी चेतन अवस्था को विस्मृत करके अचेतन स्थिति में जा पहुँचता है तो मनोविज्ञान की भाषा में इसे 'हिप्नोगौजिक' कहा गया है और जागृति की अवस्था को 'हिप्नोपौम्पिक । दोनों ही प्रकार की अवस्था के सम्मिश्रित स्वरूप को 'हिप्नोइडल ट्रांस' के नाम से पुकारा जाता है । कृष्ण मूर्ति ने इसी को 'च्वाइसलैस अवेयरनेस' की संज्ञा दी है । जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अनिश्चय की स्थिति में हो जाता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं ? यही अवस्था है जिसमें व्यक्ति के पिछले जन्मों के इतिहास को सुगमतापूर्वक जान सकना सम्भव हो पाता है ।

भारतीय मनःशास्त्र के विशेषज्ञों का कथन है कि व्यक्ति के मनःसंस्थान की गतिविधियों के संचालन में जागृति स्मृति और धृति तीन प्रकार की अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होती हैं । जागृतावस्था में मन प्रत्यक्षतः ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूतियाँ उपलब्ध करता है । जन्म जन्मान्तरों की चिरसंचित ज्ञान-सम्पदा का बोध "स्मृति के माध्यम से होता है । जबकि "धृति" मन की सूक्ष्मतर अवस्था है, जिसमें विचार-सम्प्रेषण की विधि-व्यवस्था बिठाकर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की मनःस्थिति एवं परिस्थितियों से अवगत हो सकता है । हठयोग प्रदीपिका में लिखा है कि एकाग्रचित होकर मनुष्य किसी सूक्ष्म वस्तु को सामने रखकर तब तक देखे जब तक आँखों में आँसू न आ जायें । योग विद्या के निष्णातों ने इसे त्राटक साधना कहा है जिससे नेत्र रोग, तंद्रा और आलस्य दूर होते हैं । दूसरे के मन की बातें जान लेना, प्रभावित करना, मूर्छित करना इसी के द्वारा सम्भव है । योग-ग्रन्थों में वर्णित ध्यान बिन्दु साधना इसी को कहा गया है, जिसमें बिना आँख बंद किए दोनों भौंहों के बीच ध्यान किया जाता है । पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञानी इसी को "सेल्फ हिप्नोटिज्म" और "ओटोहिप्नोटिज्म" के नाम से पुकारने लगे हैं ।

कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के चिकित्सा विज्ञानी डॉ. हरवर्ट स्पेगल ने सम्मोहन विद्या के ऊपर लम्बे समय तक शोध कार्य किया है । तदुपरान्त वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सम्मोहन विद्या की चिकित्सा सम्बन्धी सफलता सम्मोहनकर्त्ता की योग्यता एवं कुशलता पर निर्भर करती है । सम्मोहन विद्या के निष्णात का सर्वप्रथम कार्य तो रोगी को कृत्रिम ढंग से निद्रा का आभास कराना होता है और फिर उसके अन्तर्मन में संकेत सूचनाएँ पहुँचाना, निद्रावस्था में शरीर तो प्रायः निष्क्रिय पड़ जाता है, पर मन की गति अविरल बनी रहती है । अतः मन को सांसारिक विषयों से हटा कर विचार शून्य बनाया जाता है । फिर उसके मस्तिष्क में सत्प्रवृत्तियों के प्रविष्ट होने का अवसर मिलता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति में आत्म-विश्वास उत्पन्न करके उसकी मानसिक दुर्बलताओं को हटाने, मिटाने की यह सर्वोत्तम चिकित्सा समझी गई है ।

मौन्टीफायोर हॉस्पीटल न्यूयार्क के मनःचिकित्सक एवं शारीरिक गठान विकृति रोग विशेषज्ञ (औनकोलोजिस्ट) डॉ. पॉलसेसरडोट के अनुसार समस्त आधि-व्याधियों का एक मात्र कारण मानसिक विकृति ही है । सम्मोहन-चिकित्सा का मूल प्रयोजन मनःसंस्थान के धृति क्षेत्र की इसी विकृति को परिष्कृत एवं परिमार्जित करना होता है, जिसके फलस्वरूप रोगी अपने किए हुए दुष्कृत्यों पर आगे खेद प्रकट न करने का संकल्प बल उभारता और आरोग्य लाभ प्राप्त करता है । उन्होंने अपने प्रयोग परीक्षणों से यह सिद्ध कर दिखाया है कि सम्मोहन के द्वारा लम्बे समय से चली आ रही मानसिक आँधियों में २० प्रतिशत तक पूर्णतः कमी आयी और ६० प्रतिशत तक आंशिक । इस विद्या का प्रयोग शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोगों में सफलतापूर्वक किया जा सकता है । दमा, आँतों की सूजन, दुर्बलता, नंपुसकता, अधशीशी और उच्च रक्तचाप जैसे रोगों के उपचार में इससे काफी सफलता मिल चुकी है । इतना ही नहीं, मानसिक तनाव से मुक्ति पाना भी इस उपचार पद्धति के माध्यम से सरल हो गया है ।

हारवर्ड मेडिकल स्कूल के सम्मोहन विद्या विशेषज्ञ एवं मनःचिकित्सक डॉ. फ्रेड फ्रैंकल ने सम्मोहन चिकित्सा में ध्यानमुद्रा को अधिक प्रभावशाली बताया है, जिसके अन्तर्गत सर्व प्रथम माँसपेशियों को तनाव मुक्त किया जाता है । तदुपरान्त रोगी अपने निषेधात्मक विचार-प्रवाह को पलट कर उसमें विधेयात्मक दृष्टिकोण समाविष्ट करने का उपक्रम करता है । रोगोपचार की इस विधिःव्यवस्था को उन्होंने "सेल्फ-सजेशन" अर्थात् "आत्म-निर्देशन" की संज्ञा दी है । उन्होंने इस उपचार पद्धति के चार स्वरूप बताये हैं, जो इस प्रकार हैं— (१) इनडक्शन, (२) डीपनिंग, (३) सजेशन, (४) कमिंग आउट इत्यादि । इनडक्शन के अन्तर्गत रोगी व्यक्ति स्वयं को सबसे पहले शिथलीकरण मुद्रा में लाता है, जिससे उसका शारीरिक एवं मानसिक तनाव कम हो । सम्मोहन की "डीपनिंग" प्रणाली में मनःक्षेत्र की गहराई में उतरा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी मूलसत्ता को समझ सके । भारतीय योग विद्या में जिस तरह मानसिक परिष्कार के लिए जप का विधान है, पाश्चात्य जगत में इसी प्रयोजन के लिए 'डीपनिंग' का निर्धारण है । सजेशन की प्रणाली को क्रियान्वित करने के लिए व्यक्ति अपने अचेतन मन को विधेयात्मक पोषण देता है । इस नियमित पोषण के कारण मन धीरे-धीरे उसे स्वीकार कर लेता है और स्वयं को उसी रूप में अनुभव करने लगता है । "कमिंग आउट" समग्र प्रक्रिया का अन्तिम और चौथा चरण है । इसके द्वारा क्रिया की समाप्ति की जाती है ।

सुप्रसिद्ध सम्मोहन चिकित्सक एवं "सेल्फ हिप्नोसिस" पुस्तक के लेखक विलियम जे. ओसकी ने भारतीय योगशास्त्र का बड़ी गहनता से अध्ययन किया है । उसमें वर्णित ध्यान बिन्दु योग के बारे में उनका कहना है कि यह "हिप्नोसिस" का ही एक प्रकार है और इसके माध्यम से भी वही लाभ हस्तगत किए जा सकते हैं, जो सम्मोहन द्वारा । इसी कारण उन्होंने इसका नाम "सेल्फ हिप्नोटिकट्रांस" रखा है ।

भारत की इस प्राचीन विद्या की प्रशंसा करते हुए प्रमुख अमेरिकी पत्रिका "नोर्थवेस्ट मेडिसिन" में सैनफ्रांसिस्को के सुप्रसिद्ध स्त्रीरोग विज्ञानी डॉ. डेविड चीक कहती हैं कि यह खुशी की बात है कि आज इस पौर्वात्य विद्या का लाभ समस्त संसार उठा रहा है । अकेले कैलिफोर्निया में इसके ६३० चिकित्सक हैं, जो विभिन्न प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोगों में अब तक अच्छी सफलता प्राप्त कर चुके हैं । उनका कहना है कि यदि इस विद्या का सही ढंग से उपयोग किया जा सके, तो लम्बी और क्रॉनिक मानी जाने वाली मानसिक व्याधियों व मनोविकारों से छुटकारा पाया जा सकता है । यही आज सबसे अधिक संख्या में जनमानस में घर किए बैठी हैं । यदि यह उपचार व्यावहारिक स्तर पर जन सुलभ बनाया जा सके तो मानव जाति की अच्छी सेवा की जा सकती है ।

सम्मोहन और उसकी क्षमता

मनुष्य का मन एक अबूझ पहेली है । उसमें अगणित चमत्कारी क्षमताएँ विद्यमान हैं और आश्चर्य की बात यह है कि वे सब क्षमताएँ अपने भीतर विद्यमान होने के उपरान्त भी उन सबका जान पाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और उपयोग कर पाना असम्भव नहीं, तो असम्भव जैसा अवश्य है । मन की विलक्षण और चमत्कारी शक्ति के प्रमाण आये दिन यत्र-तत्र मिलते ही रहते हैं । इसके प्रमाण और घटनाओं से प्राप्त होने वाले निष्कर्ष के रूप में इन दिनों हडसन द्वारा रचित 'ला ऑफ साइकिक फिनोमिना' पुस्तक बहुत चर्चित है ।

पुस्तक में लेखक ने अपनी एक निजी अनुभव लिखते उए बताया है—

"वाशिंगटन के प्रो. कार्पेण्टर ने मेरे सामने एक युवा आदमी को मोह निद्रित किया उस समय जितने लोग एकत्र हुए थे सब विद्वान थे और जिस युवक पर प्रयोग किया गया था वह भी किसी विख्यात कॉलेज का पदवीधर था । साथ ही उसका दर्शनशास्त्र का अध्ययन भी अच्छा-खासा था, उसके विचार उदार थे और भूत पुरुषों की आत्माओं को किसी साधन से बुलवा कर उनसे सम्भाषण करने की बात को वह बिल्कुल असम्भव मानता था । वह युवक ग्रीक दार्शनिकों के प्रति बहुत आदर और प्रेम रखता था । प्रो. कार्पेण्टर को यह बात मालूम थी इसलिए उक्त युवक को मोह निद्रित करने के पश्चात् उन्होंने उससे पूछा—

"क्या मैं सुकरात से तुम्हारी भेंट करा दूँ ।"

उसने कहा, "हाँ यदि सुकरात जीवित हों और उनसे मेरी यहाँ भेंट हो जाय तो मैं अपना अहोभाग्य समझूँगा । इस पर कार्पेण्टर ने कहा सुकरात मर चुके हैं, परन्तु उनकी आत्मा से मैं तुहारी भेंट करा सकता हूँ । देखो तुम्हारे सामने ही सुकरात की आत्मा मौजूद है ।

यह सुनते ही वह युवक उस ओर देखने लगा जिस ओर कार्पेण्टर ने उँगली का इशारा किया था । उक्त युवक ने किंचित भय के साथ कुछ प्रश्न किए । कुछ समय पश्चात् जब उसका साहस बढ़ा तब लगभग दो घण्टे तक उसने सुकरात की आत्मा से अनेक गहन प्रश्नों पर चर्चा की और सुकरात की आत्मा से मिलने वाले सभी जवाब उसने प्रो. कार्पेण्टर को समझाकर कहे । उनके सम्भाषण में नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, ईश्वर स्वरूप, विश्वोव्यति आदि अनेक विषयों की चर्चा हुई और उस सम्भाषण में सुकरात जैसे श्रेष्ठ दार्शनिक के अनुरूप विचार तथा वैसी ही गम्भीर भाषा भी सुनाई दी । वह समस्त सम्भाषण इतना रस युक्त एवं विचारपूर्ण था कि समस्त श्रोताओं को यही भासित हुआ मानो सुकरात ही उनके सम्मुख भाषण दे रहा हो ।

इस पर कदाचित कोई यह कहे कि सम्भव है । इसके समाधान हेतु एक और बात मि. हडसन के ग्रन्थ से नीचे दी जाती है—

प्रो. कार्पेण्टर ने उक्त युवक से कहा कि एक बहुभाषी विद्वान एकं दर्शन पारंगत सुअर से मैं तुम्हारी भेंट करा रहा हूँ यह सुअर पूर्व जन्म में हिन्दू पण्डित था और अपने कर्मों के अनुसार उसे यह योनि प्राप्त हुई है अपने पूर्व जन्म के संस्कारों तथा प्राप्त किए हुए ज्ञान की इसे पूर्ण स्मृति है । प्रो. कार्पेण्टर की इस सूचना को पाकर उक्त युवक का सम्भाषण उस कल्पनाजन्य सुअर से होने लगा और हिन्दू-धर्म तथा पुनर्जन्म सम्बन्धी सिद्धान्तों पर उस सुअर ने लम्बा एवं विद्वतापूर्ण भाषण दिया ।

हडसन ने अपनी पुस्तक में इस तरह के ढेरों प्रसंग व उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि प्रयत्नपूर्वक मन की विलक्षण क्षमताओं को जागृत किया जा सकता है और उनसे लाभ उठा कर चमत्कारी व सिद्ध सन्त स्तर का बना जा सकता है ।

समूचे व्यक्तित्व को ही सम्मोहन बनायें

२५ अगस्त, १९७९ की घटना है । आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध शहर म्यूनिख के एक बड़े हाल में सैकड़ों डॉक्टर, पत्रकार और बुद्धिजीवी एकत्रित थे । वातावरण बिल्कुल शान्त था । डॉक्टरों के एक दल ने उस महिला का शारीरिक-परीक्षण किया और पाया कि उसे कोई दवा नहीं दी गई है तथा वह सामान्य रूप से स्वस्थ्य है । इसके बाद सम्मोहन-विद्या विशेषज्ञ रानरिको ने उसे निर्देश दिए । धीरे-धीरे महिला गहरी नींद में सो गई । इसके बाद डॉक्टर ने वह यन्त्र लगा दिए, जिससे निद्रावस्था में मस्तिष्क के भीतर चलने वाली विपुल तरंगों का पता चलता है ।

रानरिको ने घोषित किया कि यह महिला ३ सितम्बर को सुबह के समय जागेगी । सामान्य अवस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में किसी भी व्यक्ति को आठ-दस घण्टे से अधिक की नींद नहीं आती । बहुत हुआ तो बारह-चौदह घण्टे, किन्तु वह महिला ठीक ३ सितम्बर को घोषित समय पर जागी । डॉक्टर इस बीच बराबर यह जाँचते रहे कि वह स्त्री सो रही है अथवा नहीं ? दो सौ घण्टे बीतने पर रानरिको ने जब उसे जागने और नींद में उठने का निर्देश दिया तो वह बिल्कुल ताजा दम होकर उठी । डॉक्टरों ने जाँच कर बताया कि इस बीच उसके शरीर में कोई अस्वाभाविक परिवर्तन नहीं आया था ।

पश्चिमी-देशों में सम्मोहन के इस प्रकार अनेकों प्रयोग किए जा रहे हैं और मनुष्य की इच्छा-शक्ति की प्रचण्डता को मापने के अनेकानेक प्रयास किए जा रहे हैं, इन प्रयोगों की विद्या को अंग्रेजी में 'हिप्नोटिज्म' कहा जाता है, पहले इसे बाजीगरी और हाथ की सफाई से अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था, किन्तु इस दिशा में जैसे-जैसे वैज्ञानिक प्रयोग किए गए और उनसे जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनके अनुसार हिप्नोटिज्म को एक विशेष प्रकार की सुझाई हुई 'नर्वस निद्रा' कहा जाता है । साधारण नींद में मनुष्य अपनी सुध-बुध खोकर लगभग अचेत-सा हो जाता है । प्रायः उसका सचेतन मस्तिष्क पूरी तरह सो जाता है, किन्तु सम्मोहन द्वारा सुझाई गई नींद में मनुष्य का आधा सचेतन मस्तिष्क भर सोता है और उसके स्थान पर अचेतन मन अपेक्षाकृत अधिक जागृत हो जाता है तथा आदेश-कर्त्ता के निर्देशों के प्रति पूर्ण सजगता का परिचय देता है । इसे चेतना की सामान्य स्थिति का असामान्य परिवर्तन, जागरण कहा जा सकता है ।

अब तो इस विद्या को इतनी मान्यता मिल गई है कि चिकित्सा-क्षेत्र में भी इसका प्रयोग होने लगा है । शरीर को सुन्न करने में सम्मोहन प्रयोग बहुत सफल हुए हैं । प्रथम महायुद्ध के दिनों रूसी डॉक्टर पोडियो पोलेरकी ने ३० घायल व्यक्तियों के शरीर बिना क्लोरोफॉर्म दिए ही सुन्न करके दिखाए थे और उनके पीड़ा रहित ऑपरेशन सम्पन्न किए थे । ब्रिटिश-डॉक्टर एस्टल ने इस प्रयोग के आधार पर लगभग २०० ऑपरेशन सफलता पूर्वक किए । कई यूरोपीय-देशों में दन्त-चिकित्सक इस पद्धति को जरा भी कष्ट या पीड़ा उत्पन्न किए बिना दाँत उखाड़ने के लिए काम में लाते हैं । प्रसूति-गृहों में भी बिना कष्ट उठाए प्रसव करने के लिए सम्मोहन-विद्या का प्रयोग बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है । सन् १९५८ में अमेरिका की मेडीकल एसोसियेशन ने सम्मोहन को एक प्रामाणिक चिकित्सा-विज्ञान के रूप में मान्यता प्रदान की है । इसी प्रकार 'ब्रिटिश एण्ड अमेरिका मेडीकल एसोसियेशन' ने भी उसे उपयोगी चिकिसा-विधि के रूप में मान्यता दे रखी है ।

कहा जा चुका है कि किसी समय सम्मोहन को जादुई करिश्मे से अधिक नहीं समझा जाता था । इसके समर्थक और विरोधी अपने पक्ष में इतनी जोर-शोर से बातें करते और तर्क देते थे कि सर्वसाधारण के लिए उस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट अभिमत बना पाना सम्भव ही नहीं होता था, परन्तु अब यह बात नहीं है उसे विज्ञान की प्रमाणों पर आधारित एक तथ्यपूर्ण धारा के रूप में स्वीकार किया जा चुका है तथा सम्मोहन को अब कोई कला नहीं, अपितु विज्ञान के रूप में मान्यता मिल चुकी है । इसे आश्चर्यजनक प्रदर्शनों के रूप में नहीं अपितु मनुष्य के लिए उपयोगी और चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत करने वाली विद्या के रूप में मान लिया गया है ।

रूसी मनोविज्ञानवेत्ता पावलोव के अनुसार सम्मोहन में जादू की कोई बात नहीं है । वह मनोविज्ञान सम्मत सहज प्रक्रिया है, जिसमें कुछ मस्तिष्कीय-कणों की अन्तः क्षमता को कृत्रिम रूप से सुला देने और जगा देने की प्रक्रिया को संकल्प-शक्ति के आधार पर सम्पन्न किया जाता है । पावलोव का यह भी कहना है कि सम्मोहन द्वारा शरीर की सामान्य स्थिति में भी परिवर्तन किया जा सकता है । यह अन्तर उन्होंने कई प्रयोगों द्वारा भी स्पष्ट किया । अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी इस तरह के प्रयोग परीक्षण हुए तो पाया गया कि हृदय गति ८२ से बढ़कर १४३, रक्त का दबाव १०५ से उठकर १३६ और तापमान ९९ डिग्री फारनेहाइट से बढ़कर १०१ डिग्री तक बढ़ जाता है । इतना होने पर भी शरीर के भीतर कोई मौलिक परिवर्तन नहीं होते । उदाहरण के लिए रक्त में जिन तत्वों का समावेश है, उनके अनुपात में कोई अन्तर नहीं पाया गया । लवण, शर्करा आदि की जो मात्रा शरीर में विद्यमान थी, उनका परिमाण नहीं बदला जा सका, लेकिन सम्मोहन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा रोग के कारण होने वाली शारीरिक-पीड़ा पर अवश्य नियन्त्रण किया जा सकता है और बीमारियों के कारण होने वाले कष्ट में भी रोगी अपने को अच्छा अनुभव कर सकता है, बीमारी का जड़-मूल से कट जाना तो सम्मोहन द्वारा तत्काल सम्भव नहीं देखा गया, पर इतना अवश्य पाया गया कि सुधार का धीमा सिलसिला चल पड़ा है ।

सम्मोहन द्वारा पूर्व निर्धारित नैतिक मान्यताओं को भी धीरे-धीरे बदल पाना सम्भव हो गया है और इस तरह के अनेक प्रयोग सफल हुए हैं । लड़ाइयों में पकड़े गए शत्रु-पक्ष के सैनिकों को पहले की अपेक्षा भिन्न मत का बनाने के लिए सम्मोहन विज्ञान के आधार पर प्रयोग चलते रहे हैं । इन्हें 'ब्रेन वाशिंग' कहा जाता है । इन प्रयासों में आंशिक-सफलता ही मिली है, क्योंकि यह उनकी परिपक्व और पुष्ट देश-भक्ति की मूल धारा को बदल देने के लिए अति कठिन कार्य थे । इनकी तुलना में किसी अनाचारी व्यक्ति को उसके अनाचार कुकर्मों से छुड़वा कर सदाचार सत्कर्मों में प्रवृत्त करने की दिशा में अधिक सफलता मिली है । इसका कारण है—व्यक्ति के लाख अनाचार लिप्त होते हुए भी उसके भीतर आत्मा में सत् तत्वों के बीज रहते हैं और वे समय पाकर अंकुरित फलित होने की बाट जोहते रहते हैं ।

सम्मोहन में इच्छा और संकल्प-शक्ति ही प्रधान रहती है । प्रयोग-कर्ता की इच्छा और संकल्प-शक्ति जिस पर प्रयोग किया जा रहा है, उससे बढ़ी-चढ़ी ही होती है । फिर भी सम्मोहित-व्यक्ति में उसके विनिर्मित-व्यक्तित्व की सीमा के अन्तर्गत ही कार्य कराये जा सकते हैं । अचेतन की गहरी पर्तें, अपने भीतर कुछ नैतिक और आत्मिक-मान्यताएँ अत्यन्त सघन होकर जमाए रहती हैं । उन्हें सम्मोहित प्रयोग से नहीं छुआ जाता । सामान्य कामकाजी बातों को ही शरीर और मस्तिष्क द्वारा पूरा कराया जा सकता है । किसी व्यक्ति की आन्तरिक-आस्था यदि जीव-दया पर आधारित है और उसे सम्मोहित-स्थिति में माँस खाने के लिए कहा जाय तो मन की गहरी पर्तें उसका विरोध करेंगी और वह व्यक्ति उसका आदेश पालन करने से इन्कार कर देगा । इसी प्रकार किसी का शील या धन हरण करने, हत्या कराने जैसे कुकृत्यों के लिए यदि सम्मोहनकर्त्ता कोई प्रयोग करे तो अन्तःकरण की अस्वीकृति होने पर वे प्रयोग सफल नहीं हो सकते । कहा जा सकता है कि दूसरे को सम्मोहित कर उससे कोई काम कराने में उतनी ही सफलता प्राप्त की जा सकती है, जितनी कि आमतौर पर उसे सामान्य अवस्था में सहमत कर-कराई जा सकती थी ।

इच्छा और संकल्प-शक्ति द्वारा दूसरों को सम्मोहित करने की अपेक्षा आत्म-सम्मोहन का स्तर अधिक ऊँचा है और उस आधार पर आत्म-समर्पण के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में मनवांछित परिवर्तन कर सकता है । इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति के माध्यम से ही अपने चेतन-मस्तिष्क को अर्धतन्द्रा में धकेल देता है और अचेतन को सामान्य जीवन-संचार की व्यवस्था जुटाते रहने के लिए सीमित कर दिया जाता है । इसे योग-निद्रा या समाधि भी कह सकते हैं । इस स्थिति में अहिर्निश श्रम करते रहने पर भी बाह्य-मस्तिष्क की कृत्रिम क्रिया-शक्ति के साथ ही दिव्य-निद्रा का आनन्द मिलता है । इस विश्रान्ति के उपरान्त एक नई स्फूर्ति का लाभ मिलता है, साथ ही चेतना की अनावश्यक पर्तों को दुर्बल एवं आवश्यक पर्तों को सबल बनाने का अवसर मिलता है । योगीजन इस योग-निद्रा द्वारा आत्मोत्कर्ष के अन्यान्य लाभ भी प्राप्त करते हैं ।

सामान्य स्थिति में आत्म-संकेत द्वारा, आत्म-सम्मोहन भी अपना मनोबल बढ़ाने, बुरी आदतें छुड़ाने और उपयोगी निष्ठाएँ जागृत करने के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध हो रहा है । इससे उच्च स्तर का आत्म-सम्मोहन, जिससे योग-निद्रा को प्राप्त किया जा सके कठिन है । वह स्थिति आत्म-बल को प्रखर बनाने के उपरान्त ही प्राप्त होती है । उस स्थिति में इतनी अधिक क्षमता उत्पन्न होती है कि जागृत-मस्तिष्क को शिथिल बनाया जा सके और उस स्थिति का लाभ लेकर अनावश्यक को हटाने एवं आवश्यक को जमाने का कार्य सम्पन्न किया जा सके । सामान्यतया जागृत-मस्तिष्क ही सबल होता है और वह अपनी सर्वोपरिता को चुनौती दी जाना स्वीकार नहीं करता । तर्क और सन्देह के अस्त्रों से वह अपने ऊपर होने वाले आक्रमणों को रोकने की पूरी चेष्टा करता है । इस कारण आत्म-सम्मोहन द्वारा अभीष्ट गहराई उत्पन्न होने में भारी कठिनाई उत्पन्न होती है । इतने पर भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान्ति-चित्त और एकाग्र मन से श्रद्धापूर्वक किन्हीं विचारों को यदि बार-बार दुहराया जाय तो उससे भी कुछ प्रभाव पड़ता ही है तथा उपयोगी मानसिक-परिवर्तन के लिए किये गये प्रयोगों से काफी सफलताएँ मिलती हैं ।

फ्रांस के प्रसिद्ध मनःशास्त्री प्रो. इमाहलक ने अपनी पुस्तक 'कॉन्शस ऑटोसजेशन' में इस तरह के अनेक उदाहरण देते हुए बताया है कि किस प्रकार इच्छा शक्ति का प्रयोग करके अपने आप में तथा दूसरों में असाधारण परिवर्तन किए जा सकते हैं । ये प्रयोग शारीरिक और मानसिक रुग्णता को दूर करने में भी बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुए ।

बढ़े-चढ़े और प्रखर आत्म-बल सम्पन्न व्यक्ति न केवल अपने व्यक्तित्व को आमूल-चूल बदल देते हैं, वरन् दूसरों को बदल डालने का भी असम्भव-सा लगने वाला कार्य कर दिखाते हैं । नारद ने थोड़े-से सम्पर्क द्वारा ही प्रह्लाद, ध्रुव, पार्वती आदि कइयों की जीवन-धारा ही बदल दी । भगवान बुद्ध के सम्पर्क में आने के बाद अंगुलिमाल, आम्रपाली जैसे अगणित व्यक्ति पतनोन्मुख दिशा से विमुख होकर उच्चस्तरीय उत्कृष्ट जीवन-दिशा ग्रहण कर सके । महात्मा गाँधी के प्रभाव से अगणित व्यक्ति त्याग-बलिदान के क्षेत्र में उतरे और उन्होंने बढ़े-चढ़े आदर्श उपस्थित किए । इसे आत्म-बल की प्रखरता, प्राण-तत्व की तेजस्विता का चमत्कार ही कहना चाहिए कि जो अगणित असंख्यों की जीवन-धारा को उलट सके । सम्मोहन—एक कला है और छोटी-मोटी साधनाओं द्वारा उसमें पारंगत हुआ जा सकता है, किन्तु व्यक्तित्व में यदि इतना सशक्त आत्म-तेज, आत्म-बल, प्राण शक्ति, ब्रह्मवर्चस विकसित किया जा सके तो लोगों को अपने व्यक्तित्व के जादू से सम्मोहन कर अनायास ही उन्हें उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की ओर अग्रसर किया जा सकता है ।

⌘⌘⌘



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिव्य शक्तियों का उद्भव प्राण शक्ति से

अतीन्द्रिय सामर्थ्यों का मूल स्रोत : प्राणमय कोश

अमेरिका के एक मनोविज्ञानशास्त्री डॉ. राल्फ एलेक्जेण्डर ने पराशक्ति जागृत करके बादलों को इच्छानुसार हटाने और पैदा कर देने का प्रयोग किया है । वे बहुत वर्षों से मन को एकाग्र कर उसकी शक्ति से बादलों को प्रभावित करने का प्रयोग कर रहे थे । १९५१ में उन्होंने मेक्सिको सिटी में १२ मिनट के भीतर आकाश में कुछ बरसाती बादल जमा कर दिए । उस अवसर पर कई स्थानों के वैज्ञानिक और अन्य विद्वान् वहाँ इकट्ठे थे, पर डॉ. एलेक्जेण्डर की शक्ति के सम्बन्ध में उनमें मतभेद बना रहा तो भी सबने यह स्वीकार किया कि जब आकाश में एक भी बादल न था, तब दस-बारह मिनट में बादल पैदा हो जाना और थोड़ी बूँदा-बाँदी भी हो जाना आश्चर्य की बात अवश्य है ।

इसलिए डॉ. एलेक्जेण्डर ने फिर ऐसा प्रयोग करने का निश्चय किया, जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न रहे । उन्होंने कहा कि 'वे आकाश में मौजूद बादलों में से जिसको दर्शक कहेंगे, उसी को अपनी इच्छा-शक्ति से हटाकर दिखा देंगे ।' इसके लिए 'ओण्टेरियो ओरीलियो' नामक स्थान में १२ सितम्बर, १९५४ को एक प्रदर्शन किया गया । उसमें लगभग ५० वैज्ञानिक, पत्रकार तथा नगर के बड़े अधिकारी इस चमत्कार को देखने के लिए इकट्ठे हुए । नगर का मेयर (नगरपालिकाध्यक्ष) भी विशेष रूप से बुलाया गया, जिससे इस प्रयोग की सफलता में किसी को सन्देह न हो । यह भी व्यवस्था की गई कि जब बादलों को गायब किया जाय तो कई बहुत तेज कैमरे उनका चित्र उतारते रहें । इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ी कि कुछ लोगों का ख्याल था कि डॉ. एलेक्जेण्डर दर्शकों पर 'सामूहिक हिप्नोटिज्म' का प्रयोग करके ऐसा दृश्य दिखा देते हैं, वास्तव में बादल हटता नहीं । इससे मनुष्य का मन भ्रम में पड़ सकता है, पर तब ऑटोमेटिक कैमरा उस दृश्य का चित्र उतार लेगा, तो सन्देह की गुंजाइश ही नहीं रहेगी । कैमरे के चित्र में तो वही बात आयेगी, जो उसके सामने होगी । आगे की घटना के विषय में एक स्थानीय समाचार-पत्र 'डी डेली पैकेट एण्ड टाइम्स' ने जो विवरण प्रकाशित किया वह इस प्रकार है—

'जब-जब लोग इकट्ठे हो गए, तो डॉ. एलेक्जेण्डर ने उनसे कहा कि वे स्वयं एक बादल चुन लें, जिसको गायब कराना चाहते हों । क्षितिज के पास बहुत से बादल थे । उनके बीच-बीच में आसमान भी झलक रहा था । उनमें बादलों की एक पतली-सी पट्टी काफी घनी और अपनी जगह पर स्थिर थी । उसी को प्रयोग का लक्ष्य बनाया गया । कैमरे ने उसकी कई तस्वीरें उतार लीं ।'

'डॉ. एलेक्जेण्डर ने थोड़ी देर प्राणायाम किया, भौंहें सिकोड़ी (त्राटक की क्रिया की) और टकटकी लगाकर बादलों की उसी पट्टी की ओर देखने लगे । अकस्मात् उन बादलों में एक विचित्र परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा । बादलों की वह पट्टी चौड़ी होने लगी और फिर धीरे-धीरे पतली होने लगी । कैमरे चालू थे और हर सेकण्ड में एक तस्वीर उतारे जा रहे थे । मिनट पर मिनट बीतते गए , पट्टी और पतली पड़ने लगी, उनका घनत्व भी कम होने लगा । धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा मानो कोई रुई को धुन-धुन कर अलग कर रहा है । आठ मिनट के भीतर सब लोगों ने देखा कि वह पट्टी आसमान मे बिल्कुल गायब हो गई है, जबकि आस-पास के बादल जहाँ के तहाँ स्थिर रहे ।'

'लोगों की आँखें आश्चर्य से फटी जा रही थीं, पर डॉ. एलेक्जेण्डर स्वयं अभी सन्तुष्ट नहीं थे । हो सकता है, कुछ लोग यह समझें कि यह सिर्फ दैवयोग की बात है । बादल तो बनते-बिगड़ते ही रहते हैं । उन्होंने लोगों से फिर किसी दूसरे बादल का चुनाव करने को कहा और फिर कैमरे उस नये बादल पर केन्द्रित कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिए गए । उस दिन तीन बार यही प्रयोग हुआ और तीनों बार डॉक्टर एलेक्जेण्डर ने सफलतापूर्वक बादलों को गायब कर दिया । जब कैमरे की फिल्में साफ की गईं और फोटो निकाले गए तो देखा कि हर बार बादलों का गायब होना उनमें पूरी तरह उतर आया है तब वहाँ के प्रमुख अखबार ने इस समाचार को 'क्लाउड डेस्ट्रायड बाई डॉक्टर' (बादल—डॉक्टर द्वारा नष्ट किए गए) का बहुत बड़ा हैडिंग देकर प्रकाशित किया ।

अमेरिका में इस विद्या की 'साइकोकिनासिस' अथवा पी. के. कहते हैं और इसका अभ्यास करने वालों का दावा है कि कुछ समय पश्चात वे इसके द्वारा बादलों को ही नहीं अन्य अनेक पदार्थों को भी इधर-उधर कर सकेंगे ।

इंग्लैण्ड के अति चमत्कारी जादूगर राबर्ट हडची की सौवीं वर्षगाँठ मनाई गई । अपने समय का वह अद्‌भुत व्यक्ति था । उसके जीवनकाल में इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध पत्र 'डेली मिरर' ने उसकी चमत्कारी शक्ति पर कई प्रकार के लांछन लगाये थे और आशंका प्रकट की थी । राबर्ट ने उन्हें चुनौती दी फलस्वरूप परीक्षण के समय उसने यह करतब सबके सामने दिखाया कि पूरी सावधानी और मजबूती के साथ हथकड़ी, बेड़ियों में जकड़ा गया पर वह दो मिनट में ही उन्हें कच्चे धागे की तरह तोड़कर फेंकने में सफल हो गया । कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगा देने पर भी वह सबके सामने बाहर निकल आया । सुरंगों में बन्द करके बाहर से छेद पूरी तरह बन्द कर दिए जाने पर भी वह बाहर निकला, तब भी उसने उस अवरोध को तोड़कर सबके सामने उपस्थित होने में सफलता पायी । यह सब कैसे सम्भव हो सका उसका रहस्योद्‌घाटन उसकी शताब्दी के अवसर पर उस वसीयत द्वारा होगा जो उसने इसी अवसर पर सर्वसाधारण की जानकारी के लिए लिखकर अपने जीवनकाल में ही रख दी थी ।

'वाराणसी की गलियों में एक दिगम्बर योगी घूमता रहता है गृहस्थ लोग उसके नग्न वेश पर आपत्ति करते हैं फिर भी पुलिस उसे पकड़ती नहीं, वाराणसी पुलिस की इस तरह की तीव्र आलोचनायें हो रही थीं आखिर वारण्ट निकालकर उस नंगे घूमने वाले साधु को जेल में बन्द करने का आदेश दिया गया ।

पुलिस के आठ-दस जवानों ने पता लगाया, मालूम हुआ वह योगी इस समय मणिकर्णिका घाट पर बैठा हुआ है । जेष्ठ की चिल-चिलाती दोपहरी जबकि घर से बाहर निकलना भी कठिन होता है एक योगी को मणिकर्णिका घाट के एक जलते तवे की भाँति गर्म पत्थर पर बैठे देख पुलिस पहले तो सकपकायी पर आखिर पकड़ना तो था ही वे आगे बढ़े । योगी पुलिस वालों को देखकर ऐसे मुस्करा रहा था मानो वह उनकी सारी चाल समझ रहा हो । साथ ही सब कुछ इस प्रकार निश्चिन्त बैठे हुए थे मानो वह वाराणसी के ब्रह्मा हों किसी से भी उन्हें भय न हो । मामूली कानूनी अधिकार पाकर पुलिस का दरोगा जब किसी से नहीं डरता तो अनेक सिद्धियों सामर्थ्यों का स्वामी योगी भला किसी से भय क्यों खाने लगा तो भी उन्हें बालकों जैसी क्रीड़ा का आनन्द लेने का मन तो करता ही है यों कहिए आनन्द की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य है बाल सुलभ सरलता और क्रीड़ा द्वारा ऐसे ही आनन्द के लिए 'श्री तैलंगस्वामी' नामक एक योगी भी इच्छुक रहे हों तो क्या आश्चर्य ?

पुलिस मुश्किल से दो गज की दूरी पर थी कि तैलंग स्वामी उठ खड़े हुए और वहाँ से गंगाजी की तरफ भागे । पुलिस वालों ने पीछा किया । स्वामीजी गंगाजी में कूद गए । पुलिस के जवान बेचारे वर्दी भीगने के डर से कूदे तो नहीं, हाँ चारों तरफ से घेरा डाल दिया । कभी तो निकलेगा साधु का बच्चा, लेकिन एक घण्टा, दो घण्टा, तीन घण्टा । सूर्य भगवान सिर के ऊपर थे अब अस्ताचलगामी हो चले, किन्तु स्वामीजी प्रकट न हुए । कहते हैं उन्होंने जल के अन्दर ही समाधि ले ली । उसके लिए उन्होंने एक बहुत बड़ी शिला पानी के अन्दर फेंक रखी थी और यह जनश्रुति थी कि तैलंग स्वामी पानी में डुबकी लगा लेने के बाद उसी शिला पर घण्टों समाधि लगाये जल के भीतर ही बैठे रहते हैं ।

उनको किसी ने कुछ खाते नहीं देखा तथापि उनकी आयु ३०० वर्ष की बताई जाती है । वाराणसी में घर-घर तैलंग स्वामी की अद्‌भुत कहानियाँ आज भी प्रचलित हैं । निराहार रहने पर भी प्रति वर्ष उनका वजन एक पौंड बढ़ जाता था । ३०० पौंड वजन था उनका जिस समय पुलिस उन्हें पकड़ने गई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना स्थूल शरीर होने पर भी पुलिस उन्हें पकड़ न सकी । आखिर जब रात हो गई तो सिपाहियों ने सोचा डूब गया शायद इसलिए वे दूसरा प्रबन्ध करने थाने लौट गए । इस बीच अन्य लोग बराबर खड़े तमाशा देखते रहे पर तैलंग स्वामी पानी के बाहर नहीं निकले ।

प्रातःकाल पुलिस फिर वहाँ पहुँची । स्वामी जी इस तरह मुस्करा रहे थे मानो उनके जीवन में सिवाय मुस्कान और आनन्द के और कुछ हो ही नहीं, शक्ति तो आखिर शक्ति ही है संसार में उसी का ही तो आनन्द है । योग द्वारा सम्पादित शक्तियों का स्वामी जी रसास्वादन कर रहे हों तो आश्चर्य क्या । इस बार भी जैसे ही पुलिस पास पहुँची तैलंग स्वामी फिर गंगाजी की ओर भागे और उस पार जा रही नाव के मल्लाह को पुकारते हुए पानी में कूद पड़े । लोगों को आशा थी कि स्वामीजी कल की तरह आज भी पानी के अन्दर छुपेंगे और जिस प्रकार मेढ़क मिट्टी के अन्दर और उत्तराखण्ड के रीछ बर्फ के नीचे दबे, बिना श्वास के वर्षों पड़े रहते हैं उसी प्रकार स्वामी जी पानी के अन्दर समाधि ले लेंगे, किन्तु यह क्या जिस प्रकार से वायुयान दोनों पंखों की मदद से इतने सारे भार को हवा में सन्तुलित कर तैरता चला जाता है उसी प्रकार तैलंग स्वामी पानी में इस तरह दौड़ते हुए भागे मानो वह जमीन पर दौड़ रहे हों । नाव उस पार पहुँच नहीं पायी, स्वामी जी पहुँच गए । पुलिस खड़ी देखती रह गई ।

स्वामी जी ने सोचा होगा कि पुलिस बहुत परेशान हो गई तब तो वह एक दिन पुनः मणिकर्णिका घाट पर प्रकट हुए और अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया । हनुमानजी ने मेघनाथ के सारे अस्त्र काट डाले, किन्तु जब उसने ब्रह्म-पाश फेंका तो वे प्रसन्नतापूर्वक बँध गए । लगता है श्री तैलंग स्वामी जी भी सामाजिक नियमोपनियमों की अवहेलना नहीं करना चाहते थे पर यह प्रदर्शित करना आवश्यक भी था कि योग और आध्यात्म की शक्ति भौतिक शक्तियों से बहुत बढ़-चढ़कर है । तभी तो वे दो बार पुलिस को छकाने के बाद इस प्रकार चुपचाप ऐसे बैठे रहे मानो उनको कुछ पता भी न हो । हथकड़ी डालकर पुलिस तैलंग स्वामी को पकड़कर ले गई और हवालात में बन्द कर दिया । इन्सपेक्टर रात गहरी नींद सोया क्योंकि उसे स्वामीजी की गिरफ्तारी, मार्के की सफलता लग रही थी ।

प्रस्तुत घटना 'मिस्ट्रीज ऑफ इण्डिया एण्ड इट्स योगीज' नामक लुई द कार्टा लिखित पुस्तक से उद्धृत की जा रही है । कार्टा नामक फ्रांसीसी पर्यटक ने भारतवर्ष में ऐसी विलक्षण बातों की सारे देश में घूम-घूमकर खोज की । प्रसिद्ध योगी स्वामी योगानन्द ने भी उक्त घटना का वर्णन अपनी पुस्तक 'ओटो बायोग्राफी ऑफ योगी' के ३१वें परिच्छेद में किया है ।

प्रातःकाल ठण्डी हवा बह रही थी । थानेदार साहब हवालात की तरफ आगे बढ़े तो शरीर पसीने में डूब गया । जब उन्होंने योगी तैलंग को हवालात की छत पर मजे से टहलते और वायु सेवन करते देखा । हवालात के दरवाजे बन्द थे, ताला भी लग रहा था, फिर यह योगी छत पर कैसे पहुँच गया ? अवश्य ही सन्तरी की बदमाशी होगी । उन बेचारे सन्तरियों ने बहुतेरा कहा कि हवालात का दरवाजा एक भी क्षण को खुला नहीं फिर पता नहीं साधु महोदय छत पर कैसे पहुँच गए । वे इसे योग की महिमा मान रहे थे पर इन्सपेक्टर उसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था । आखिर योगी को फिर हवालात में बन्द कर दिया गया । रात दरवाजे में लगे ताले को सील किया गया । चारों तरफ पहरा लगा और ताली लेकर थानेदार थाने में ही सोया । सबेरे बड़ी जल्दी कैदी की हालत देखने उठे तो फिर शरीर में काटो तो खून नहीं । सील बन्द ताला बाकायदा बन्द । सन्तरी पहरा भी दे रहे थे जिस पर भी तैलंग स्वामी छत पर बैठे प्राणायाम का अभ्यास कर रहे थे । थानेदार की आँखें खुली की खुली रह गईं । उसने तैलंग स्वामी को आखिर छोड़ दिया ।

श्री तैलंग स्वामी के बारे में कहा जाता है कि जिस प्रकार जलते हुए तेज कड़ाहे में खौल रहे तेल में पानी के छींटे डाले जायें तो तेल की ऊष्मा उसे भाप बनाकर पलक मारते दूर उड़ा देती है उसी प्रकार विष खाते समय एक बार आँखें जैसी झपकतीं पर न जाने कैसी आग उनके भीतर थी कि विष का प्रभाव कुछ ही देर में पता नहीं चलता कहाँ चला गया । एक बार एक आदमी को शैतानी सूझी चूने के पानी को ले जाकर स्वामी जी के सम्मुख रख दिया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा महात्मन ! आपके लिए बढ़िया दूध लाया हूँ स्वामी जी उठाकर पी गए उस चूने के पानी को और अभी कुछ ही क्षण हुए थे कि कराहने और चिल्लाने लगा वह आदमी जिसने चूने का पानी पिलाया था । स्वामी जी के पैरों में गिरा, क्षमा याचना की तब कहीं पेट की जलन समाप्त हुई । उन्होंने कहा भाई मेरा कसूर नहीं यह तो न्यूटन का नियम है कि हर क्रिया की एक प्रतिक्रिया अवश्य है । उसकी दशा उल्टी और ठीक क्रिया की ताकत जितनी होती है ।

मनुष्य शरीर एक यन्त्र, प्राण उसकी ऊर्जा, ईंधन उसकी शक्ति, मन इन्जन और ड्राइवर चाहे जिस प्रकार के अद्‌भुत कार्य के लिए जा सकते हैं, इस शरीर से भौतिक विज्ञान से भी अद्‌भुत पर यह सब शक्तियाँ और सामर्थ्य योगविद्या, योगसाधना में सन्निहित हैं जिन्हें अधिकारी पात्र ही पाते हैं और आनन्दलाभ प्राप्त करते हैं ।

यह घटनाएँ ऐसी हैं जिन्हें थोड़े व्यक्तियों ने प्रत्यक्षतः देखा होगा । अधिसंख्य वर्ग के लिए यह परीकथाओं जैसा विवरण किंवदन्ती या श्रद्धाभूत चमत्कार ही हो सकता है । कुछ लोग ऐसे भी हो सकते, जो इन बातों को निराधार और अवैज्ञानिक कहकर नकार दें । यह तभी होगा जब ऐसे व्यक्तियों को इस तरह की अतीन्द्रिय घटनाओं की आधारभूत सत्यता की विज्ञान की जानकारी न हो । वास्तव में प्राण विद्या और उससे बनने वाले सूक्ष्म शरीर की जिसे तनिक भी जानकारी होगी वह इस तरह की सामर्थ्यों को कभी भी न तो अन्ध-श्रद्धा कहेगा न अवैज्ञानिक, इस अतीन्द्रिय चमत्कारों की आधारभूत शक्ति इतनी समर्थ है कि उसकी तुलना में यह चमत्कार कुछ भी नहीं ।

अन्तर्निहित प्रकाश और उसकी अपारशक्ति

आतिशी-शीशे के द्वारा प्रकाश किरणें एक स्थान पर इकट्ठी कर दी जायें, तो उससे आग उत्पन्न हो उठती है । प्रकाश में अग्नि समाहित है, ऊर्जा है, विद्युत है । इन शक्तियों की महत्ता हर कोई जानता है । किरणों की ही जादूगरी है कि शरीर जैसे जटिल यन्त्र के भीतरी कल-पुर्जों की खराबी ज्ञात कर ली जाती है । एक्स-किरणों से आज सभी कोई परिचित है ।

१९६४ में पहली बार अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. चार्ल्स टाउन ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रकाश इससे भी अद्‌भुत और चमत्कारिक तत्व है । एल्यूमिनियम के ऑक्साइड लाल (एक प्रकार का रत्न) जिसमें हल्की-सी मात्रा क्रोमियम की भी विद्यमान रहती है इस लाल द्वारा साधारण-सी किरणों को जब उन्होंने "लेजर किरणों" में परिवर्तित किया, तो उनकी अपार शक्ति प्रकट हो गई । उद्देश्यहीन विचारों और शेख चिल्ली की कल्पनाओं से जिस तरह कोई उल्लेखनीय काम नहीं हो पाते उसी प्रकार छितरे हुए प्रकाश कण भी अशक्त और निष्प्रयोजन ही मारे-मारे फिरते हैं चार्ल्स टाउन ने इन्हें संसक्त कर दिया तो उनकी शक्ति अपरिचित हो उठी । आज यही संसक्त लेजर किरणें संसार के आठवें आश्चर्य के रूप में गिनी जाती हैं । उसके लिए चार्ल्स टाउन को "नोबेल पुरस्कार" से भी अलंकृत किया गया । यद्यपि इन किरणों को १९६० में थ्यूडार साइमन वैज्ञानिक ने भी खोज लिया । सम्भव है उपयोग की प्रक्रिया न बता पाने के कारण नोबेल पुरस्कार उसे न दिया गया हो ।

लेजर किरणों की शक्तिमत्ता के बारे में कहीं किसी में दो रायें नहीं । अमेरिका ने एक ऐसा यन्त्र बनाया है जो एक ही लेजर किरण से ५० करोड़ वाट क्षमता की विद्युत शक्ति उत्पन्न करता है । आश्चर्य की बात तो यह है कि यह किरण अत्यन्त बारीक और पतली होती है । फैली हुई, किरणों को नियमित करने और उन्हें एक स्थान पर अनुशासित करने में एक ऐसे शीशे के लेन्स का उपयोग किया जाता है जिसका व्यास एक सेन्टीमीटर के हजारवें भाग जितना छोटा है । यदि इससे भी सूक्ष्म किया जाय तो इनकी शक्ति और भी भयंकर हो सकती है ।

इस शक्ति का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस कार्बन को पिघलाकर भाप बनाने में घण्टों लगते हैं लेजर किरणें उसे सेकण्ड के दस लाखवें हिस्से जितने कल्पनातीत समय में ही वाष्पीभूत कर देती हैं । यह छू-मन्तर की तरह है और यह सोचने को विवश करता है कि भारतीय योगी ही नहीं, अन्य देशों के सिद्ध महापुरुष भी पल में किसी को अच्छा कर देते हैं, मारण मोहन उच्चाटन और दूरश्रवण, दूरदर्शन आदि आश्चर्यजनक शक्तियों से ओतप्रोत होते उसमें क्या मानवीय चेतना इस प्रकाश तत्व का ही तो उपयोग नहीं करती ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हीरा अत्यन्त कठोर धातु है उसे काटना और छेदना कठिन काम है—लेजर किरणें हीरे को १/५०००० सेकण्ड में छेद सकती हैं अर्थात् यदि ५०००० हीरे एक पंक्ति में रख दिए जायें और उनके एक छोर से लेजर किरण प्रवेश करा दी जाय तो वह एक सेकण्ड में ही ५०००० हीरों को छेद कर रख देगी । सौ इन्च व्यास की मोटी लकड़ी को आरा कई घण्टों में काटेगा । लेजर उसे कुल १/७ सेकण्ड में काट देगी ।

प्रकाश की इस संगठित अनुशासित शक्ति का लाभ आँखों के ऐसे ऑपरेशन में भी मिला जिनमें अस्त्र-शस्त्र तो छुये भी नहीं जा सकते । इस विधि द्वारा प्रकाश की किरणें ही आँख में प्रविष्ट करा दी जाती हैं और वह सूक्ष्म से सूक्ष्म ऑपरेशन कर देती हैं । कहते हैं महाभारत काल में ऐसे आयुध थे जो यन्त्र शक्ति द्वारा चलाये जाते थे और वे इच्छानुसार काम करते थे जबकि उनका कोई स्थूल रूप सामने नहीं आया करता था—नारायण अस्त्र, पाशुपत अस्त्र, चक्र सुदर्शन, वरुणास्त्र आदि इसी कोटि के थे । अब तक महाभारत कालीन इन शक्तियों के सिद्धान्तों को सम्भव है अतिशयोक्ति माना जाता रहा है पर लेजर गनों ने अब यह बात सिद्ध कर दी कि ऐसे यन्त्र और ऐसी सिद्धियाँ मात्र कल्पना नहीं तथ्यपूर्ण होनी चाहिए । कहते हैं ब्रह्म अस्त्र जो उसे शीश झुका देता था उसे नहीं मारता था इस प्रकार का यन्त्र कल्पनातीत-सा लगता है पर लेजर किरणों से ऐसी भी विशेषता होती है इनसे बनी बन्दूक किसी भी रंग के गुब्बारे और पदार्थ को तोड़कर नष्ट कर देती है पर लाल रंग की यह किरणें लाल रंग से मोह करती हैं उस पर वे आक्रमण नहीं करतीं शान्त और निष्प्रहार रह जाती हैं ।

महाभारत युद्ध के महान समीक्षाकार संजय के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने योग-दृष्टि पायी थी । उनका तृतीय नेत्र जागृत था । आज्ञाचक्र नामक भ्रकुटि मध्य की ग्रन्थि में भारतीय तत्वदर्शियों का कहना है कि, मन को एकाग्र कर उसे विद्युत चुम्बकीय तरंगों के रूप में फैलाकर कहीं भी भेजकर किसी भी दिशा में वस्तुओं का ज्ञान, मौसम की पूर्व जानकारी, दूरश्रवण और ऐसे ही अन्य अनेक चमत्कारिक काम किए जा सकते हैं । उक्त धारणा की पुष्टि २१ जुलाई, १९६९ के दिन तब हो गई जब अमेरिका का प्रथम समानव चन्द्रयान चन्द्रमा की धरती पर उतरा और उसके चालक कमाण्डर नील आर्मस्ट्राँग ने चन्द्रमा की धरती पर उतर कर एक लेजर यन्त्र वहाँ स्थापित किया । इस यन्त्र की सहायता से एक किरण को तार की तरह का माध्यम बनाकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बातचीत की जा सकती है मौसम का पूर्वाभास किया जा सकता है, ग्रह-नक्षत्रों की दूरी नापी जाती है दूर के दृश्य उतारे जा सकते हैं और अब उसका चिकित्सा जगत् में इस प्रकार उपयोग भी हो सकता है जिसे बिल्कुल मन्त्र चिकित्सा का रूप दिया जा सके ।

लेजर किरणों ने प्रकाश की शक्ति का अणुबम से भी शक्तिशाली स्वरूप ला दिया है और अनुमान किया जाता है कि कुछ दिन में प्रकाश-विज्ञान आज की सारी उद्योग पद्धति के ढंग और ढाँचे को, सामाजिक रहन-सहन और संस्कृति को एकदम परिवर्तित कर दे तो कुछ आश्चर्य नहीं । प्रकाश का उपयोग लोगों के मन की बातों को जानने जैसी गूढ़ बातों तक में हो सकता है ।

निघण्टु (५/६) में द्यु-स्थानीय ३१ देवताओं का वर्णन आता है । यह समस्त देव शक्तियाँ एक ही चेतन सत्ता के विभाग कही गई हैं । प्रकाश वस्तुतः मूल चेतना का ही एक रूप है उसके अनेक रूप अभी भी अविज्ञात हैं जिस दिन उसकी सम्पूर्ण जानकारी मिल जायेगी विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले प्राणी के लिए समूची सृष्टि एक ऐसे गाँव की तरह हो जायेगी जिसमें गिने-चुने मकान हों और चिर-परिचित थोड़े से ग्रामवासी निवास करते हों ।

मनुष्य शरीर में भी एक ऐसी ही सत्ता विद्यमान है जिसे "प्राण" कहते हैं । शरीरगत ऊष्मा, चुम्बकत्व, तेजोवलय, मोहकता, आदि उसी के प्रकट गुण हैं, अप्रकट रूप में इन प्राणमय स्फुल्लिंग से बने सूक्ष्म शरीर में लेजर किरणों की तरह की ऐसी अनेक अद्भुत सामर्थ्यें भरी हैं जिन्हें पाकर मनुष्य जागृत देवता और सजीव परमेश्वर ही सिद्ध हो सकता है । पिछले पृष्ठों पर दी गई चमत्कारिक घटनाएँ इस शक्ति का प्रताप हैं चाहे वह साधना द्वारा विकसित हों या देवी अनुग्रह से प्राप्त ।

योग विज्ञान में प्राण साधना द्वारा मिलने वाली अणिमा (शरीर को भार रहित कर लेना), गरिमा (भारी भरकम वजन बढ़ा लेना), लघिमा (छोटा हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाना), प्राप्य (कठिन वस्तुओं की सरलता से प्राप्ति), प्राकाम्य (इच्छा पूर्ति), ईशत्व (सर्वज्ञता), वशित्व (सभी को वशवर्ती कर लेना) आदि आठ सिद्धियों का विस्तृत वर्णन मिलता है ।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने जो अतीन्द्रिय क्षमताएँ खोजी हैं वे उन्हें चार वर्गों में विभक्त करते हैं-- (१) क्लेयर वायेन्स (परोक्ष दर्शन) अर्थात् वस्तुओं या घटनाओं की वह जानकारी जो ज्ञान प्राप्ति के सामान्य आधारों के बिना ही उपलब्ध हो जायें । (२) फ्रीकाग्नीशन (भविष्य ज्ञान) बिना किसी मान्य आधार के भविष्य की घटनाओं का ज्ञान । (३) रेट्रोकांग्नीशन (भूतकालिक ज्ञान) बिना किन्हीं मान्य-साधनों से अविज्ञात भूतकालीन घटनाओं की जानकारी । (४) टेलीपैथी (विचार-सम्प्रेषण) बिना किसी आधार या यन्त्र के अपने विचार दूसरों के पास पहुँचाना तथा दूसरों के विचार ग्रहण करना । इस वर्गीकरण को और भी अधिक विस्तृत किया जाय तो उन्हें ११ प्रकार की गतिविधियों में बाँटा जा सकता है—

चमत्कारी अनुभव निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) बिना किन्हीं ज्ञातव्य साधनों के सुदूर स्थानों में घटित घटनाओं की जानकारी मिलना ।

(२) एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की मनःस्थिति तथा परिस्थिति का ज्ञान होना ।

(३) भविष्य में घटित घटनाओं का बहुत समय पहले पूर्वाभास ।

(४) मृतात्माओं के क्रिया-कलाप जिससे उनके अस्तित्व का प्रत्यक्ष परिचय मिलता हो ।

(५) पुनर्जन्म की वह घटनाएँ जो किन्हीं बच्चों, किशोरों या व्यक्तियों द्वारा सिखाये-समझाये बताई जाती हों और उनका उपलब्ध तथ्यों से मेल खाता हो ।

(६) किसी व्यक्ति द्वारा अनायास ही अपना ज्ञान तथा अनुभव इस प्रकार व्यक्त करना जो उसके अपने व्यक्तित्व और क्षमता से भिन्न और उच्च श्रेणी का हो ।

(७) शरीरों में अनायास ही उभरने वाली ऐसी शक्ति जो सम्पर्क में आने वालों को प्रभावित करती हो ।

(८) ऐसा प्रचण्ड मनोबल जो असाधारण दुस्साहस के कार्य विनोद की साधारण स्थिति में कर गुजरे और अपनी तत्परता से अद्‌भुत पराक्रम कर दिखाये ।

(९) अदृश्य आत्माओं के सम्पर्क से असाधारण सहयोग, सहायता प्राप्त करना ।

(१०) शाप और वरदान जिससे दीर्घकाल तक व्यक्तियों व वस्तुओं पर प्रभाव बना रहता है ।

(११) परकाया प्रवेश या एक आत्मा में अन्य आत्मा का सामयिक प्रवेश सिद्ध होता है ।

इन समस्त सिद्धियों का आधार प्राण साधना है जिसके आधार पर प्राणमय कोश या प्राणमय शरीर का विकास, नियन्त्रण और उपयोग किया जाता है । यह तथ्य अब तक भले ही श्रद्धाभूत रहे हों, किन्तु अब विज्ञान उन तथ्यों को स्वीकारने और उनका विवेचन भी करने लगा है । प्राण एक ऐसी शक्ति जिसका पूरी तरह उद्‌भव किया जा सके तो मनुष्य उन दिव्य शक्तियों का स्वामी बन सकता है जो सामान्य व्यक्ति के लिए महान चमत्कार जैसी लगती हैं ।

दूरदर्शन के छिपे सत्य

कुछ दिन पूर्व अणुव्रत संघ के तत्वावधान में एक योग प्रदर्शन कार्यक्रम रखा गया था, उसमें अणुव्रत आन्दोलन के एक मुनि ने ऐसे चमत्कार दिखाये थे । तमाम देशों के राजदूत उसमें सम्मिलित थे । योगी ने अरब के राजदूत की धर्मपत्नी के बटुये में कितने नोट थे, बताये थे ।

मास्को न्यूज के २२ अगस्त के अंक में एक वोल्दया देन्शिक नामक आठ वर्षीय बालिका का विवरण छपा है । यह बालिका अँधेरे में भी अपने ओठों से देख लेती है । अत्यन्त सूक्ष्म लिखे कागज के ऊपर पच्चीसों कागज ढक देने पर भी वह सब कुछ बता देती है कि नीचे वाले कागज में क्या लिखा है ।

शिकागो अमेरिका के एक हिप्नोटिस्ट डॉ. स्टेनली मिशल ने दावा किया कि टेड सेरियस नाम का उनकी पहचान का एक ऐसा व्यक्ति है, जो विना बिम्ब के भी केवल मानसिक कल्पना द्वारा संसार के किसी भी दूरवर्ती स्थान का चित्र कमरे में उतार सकता है । यह आवश्यक नहीं था कि यह वर्तमान समय के ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हों, वह भूतकाल के भी, जबकि कैमरे का आविष्कार भी नहीं हुआ था, चित्र खींच देने की क्षमता रखता है । उदाहरण के लिए यदि वह चाहे तो सिकन्दर के युद्ध, ईसा मसीह के क्रूस के समय वहाँ कौन-कौन उपस्थित थे, मिस्र के पिरामिड बनाते समय मजदूर जैसे काम करते थे, वह सब दृश्य कैमरे में उतारकर दिखा सकता है ।

इस तरह का समाचार सुनकर अमेरिका की विश्व विख्यात पत्रिका 'लाइफ' के सम्पादक पाल बेल्व और उनके साथियों को बड़ी उत्सुकता हुई । उन्होंने 'लाइफ' कार्यालय का ही कैमरा लिया । रील भी अपने हाथ से भरी और डॉ. मिशल के दफ्तर में जा पहुँचे ।

टेड सेरियस एक कुर्सी पर बैठ गया, फिर उस कैमरे को गोद में लेकर इस तरह फिट किया कि उसका चेहरा लेंस के सामने आ गया । अब वह भूतकाल की कोई घटना याद करता-सा जान पड़ा । मस्तिष्क में ध्यानावस्थित-सा होकर उसने कैमरे का बटन दबाया । पहले दो-तीन चित्र तो अस्पष्ट से उतरे पर एक चित्र जो बिल्कुल स्पष्ट उतरा, वह यूनान की किसी अति प्राचीन मूर्ति का चित्र था । हजारों मील दूर, बिना चले, वह भी अतिभूत की वस्तु का फोटो निकाल देना सचमुच एक बड़ा आश्चर्य था ।

चूँकि श्री मिशल महोदय सम्मोहन विद्या (हिप्नोटिज्म) के ज्ञाता थे, इसलिए श्री पाल बेल्व को आशंका हुई कि सम्भव है उनके सम्मोहित करने के फलस्वरूप यह फोटो आई हो, इसलिए उन्होंने दुबारा फिर अकेले टेड सेरियस को 'लाइफ' पत्रिका के कार्यालय में बुलाया । कैमरा लाइफ की फिल्म भी 'लाइफ' कार्यालय द्वारा भरी गई । पाल बेल्व ने कहा, इस बार वह किसी १७ मंजिल की इमारत का ऐसा चित्र चाहते हैं । जिसकी खिड़कियाँ स्पष्ट दिखाई देती हों । सेरियस फिर पहले की तरह बैठा । वैसा ही चित्र मानसिक कल्पना द्वारा उसने कैमरे में उतार दिया । किस शहर की यह इमारत हो सकती है, इसका तो कुछ पता नहीं चल सका पर वह चित्र 'लाइफ' पत्रिका में छपा था । लोगों को टेड सेरियस की इस विलक्षण क्षमता पर बड़ा आश्चर्य हुआ । टेड का यह भी कहना है कि आज तो लोग मुझे केवल कौतूहल से देखते हैं, पर मैं शीघ्र ही प्रमाणित कर दूँगा कि शरीर में एक प्रकाशपूर्ण सामर्थ्य है और वह एक स्थान पर बैठे हुए संसार भर को देख सकती है । टेड ने प्रथम विश्व-युद्ध और अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाहियों के ऐसे चित्र भी उतारे हैं, जो तत्कालीन परिस्थितियों के हूबहू चित्रण हैं और इस बात के प्रमाण भी । किसी एक बिन्दु पर हम भूत और भविष्य को एक ही दृश्य में देख सकते हैं ।

दरअसल समय कोई वस्तु नहीं वह तो ब्रह्माण्ड अथवा आत्मा का विस्तार मात्र है, यदि हम उस मूल-प्रकाश-बिन्दु को प्राप्त कर लेते हैं तो हम त्रिकालदर्शी, सर्वव्यापी सब कुछ बन सकते हैं । चलने-फिरने अनुभव करने के लिए आँख, कान, नाक और इन्द्रियाँ आवश्यक नहीं आत्मा का प्रकाश रूप अपने आप ही इन क्षमताओं से भरपूर है ।

अभी तक माना जाता था कि कोई वस्तु देखनी हो तो प्रकाश और आँखें दो ही वस्तुएँ आवश्यक हैं । प्रकाश जब आँखों की रैटिना से टकराता है तो आँखों का तन्त्रिका-तन्त्र (ज्ञान-कोष) एक विशेष प्रकार की रासायनिक क्रिया करके सारी सूचनाएँ मस्तिष्क को देता है । मन एक तीसरी वस्तु है, जो प्रकाश और आँखों के क्रिया-कलाप को अनुभव करता और नई तरह की योजनाएँ, आदेश, अनुभूतियाँ तैयार करके शरीर के दूसरे अवयवों में विभक्त करता है अर्थात् मानसिक चेतना न हो तो प्रकाश और आँखों के होते हुए भी देखना सम्भव नहीं ।

१९६७ में आँखों पर शोध के लिए जिन तीन वैज्ञानिकों को सम्मिलित नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था, उनमें से एक डॉ. जाल्ड भी थे । उन्होंने 'रेटिना' (नेत्र का मध्य बिन्दु) स्थित अणुओं की संरचना बताते समय एक 'विजुअल पर्पिल' (रोडोप्सिन) नामक विलक्षण तत्व की बात बताई और कहा कि वास्तव में यही प्रकाश कणों को विद्युत तरंगों में बदलता है, यह विद्युत तरंगें ही मस्तिष्क में जाकर छायांकन करती हैं । इससे एक बात और भी मालूम होती है कि प्रकाश सीधे वस्तु दिखा सकने में सक्षम नहीं, जब तक उसे विद्युत आवेग की क्षमता में न बदला जाय ।

मन प्रकाश ही नहीं, एक प्रकार की विद्युत तरंग जैसा है, इसलिए यदि वह वस्तुओं का दृश्य बनाने में सीधे सक्षम हो तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसे भी अनेक उदाहरण दिखाई देते हैं, जब प्रकाश को 'रेटिना' (पुतली का केन्द्र बिन्दु) द्वारा विद्युत आवेग में बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ती और कुछ लोग केवल त्वचा, गाल अथवा शरीर के और किसी भाग से ही देख लेते हैं ।

'ब्रिटिश जनरल ऑफ मेडिकल हिप्नोटिज्म' ने एक ऐसा ही समाचार छापकर बताया कि बैंकाक में तो एक संस्था ही काम करती है जो अन्धों को गालों से देखने का प्रशिक्षण देती है । उसके संचालकों का दावा है कि मनुष्य के गाल शरीर भर के समस्त अंगों की अपेक्षा अति सम्वेदनशील हैं और उनमें सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्तियों का प्रचुर प्रवाह विद्यमान रहता है । चुम्बन का महत्त्व और निर्देश इसीलिए है कि इस सम्वेदनशील अंग का उपयोग केवल उचित प्रयोजन के लिए और व्यक्ति की सूक्ष्म क्षमताओं का सदुपयोग करने के लिए ही किया जा सके ।

सन् १९५४ में बैंकाक के एक डॉक्टर ने मनोविज्ञान की सहायता से एक प्रयोग १३ वर्ष के लड़के पर किया । उल्लेखनीय है कि उसे मनोविज्ञान की ट्रेनिंग के साथ ही ध्यान और समाधि लगाना भी बताया जाता था । ध्यान में उसे गाल में चित्त एकाग्र करने को भी कहा जाता है । ६ महीने के इलाज के बाद उसमें गालों से देखने की क्षमता आ गई, इसके बाद दस और अन्धों पर प्रयोग किया गया जिनमें से ६ इस प्रयोग में पूर्ण सफल रहे । अब वे गालों से मजे में देख लेते हैं ।

यह उदाहरण बताते हैं कि संसार में कोई ऐसा महत्त्वत्व है, जिसकी सीमित मात्रा विकसित करके भी विलक्षण शक्तियों का जागरण किया जा सकता है । यह तो वैज्ञानिक भी मानते हैं कि प्राणी के अन्दर तन्तुओं का ऐसा जाल फैला है कि कैसी भी नई समस्या आये, उसका भी निराकरण प्रस्तुत कर देने की उनमें क्षमता है । चमड़े की आँखों से जो दीखता है जो देखा जा सकता है वह बहुत स्वल्प है । यदि इतनी ही परिधि तक देख सकना सम्भव हो सके तो उसे बहुत ही नगण्य उपलब्धि कहा जा सकेगा ।

यों देखने का काम आँखों के लेंस ही करते हैं, पर उनकी सीमा बहुत छोटी है । कुछ ही दूरी पर उनकी सीमा समाप्त हो जाती है । स्पष्ट दीखने वाली वस्तुएँ ही उनकी परख, पकड़ में आती हैं पर यह संसार बहत विस्तृत है । सब पदार्थों के स्वरूप दृश्यमान नहीं हैं । जो दीखता है उससे अनदेखा बहुत ज्यादा है । अणुओं की गतिविधियों को ही लें, वे आकाशस्थ ग्रह-नक्षत्रों से भी अधिक संख्या में और उनसे भी अधिक सक्रिय हैं । अपने शरीर में काम करने वाले परमाणुओं जीवाणुओं, शक्तिघर के विद्युत प्रवाहों एवं क्रिया-कलापों को देख सकना, समझ सकना सम्भव हो सके तो वह इतना ही विस्तृत, अद्‌भुत एवं अन्वेषण योग्य प्रतीत होगा जितना कि यह विराट्-विश्व ब्रह्माण्ड । आँखें वह सब कहाँ देख पातीं हैं ।

प्रत्यक्ष जगत में भी, दृश्य पदार्थों में भी हमारी दृष्टि में एक छोटा-सा क्षेत्र ही आता है । जाननी तो आगे की बातें भी पड़ती हैं । वह प्रयोजन चिट्ठियों से, अखबारों, तार, टेलीफोन, रेडियो आदि से पूरा होता है । आँखों की क्षमता से काम चलता न देखकर हमें जानकारी के क्षेत्र दूसरे साधनों से बढ़ाने पड़ते हैं । जिसके पास यह साधन जितने अधिक होते हैं वह उतना ही अधिक लाभान्वित होती है ।

स्थूल दृष्टि की समीपता से आगे असीम तक विस्तृत होने वाला एक और नेत्र हमारे पास है जिसे सूक्ष्म दृष्टि या दिव्य दृष्टि कहते हैं । योग साधना द्वारा कोई चाहे तो इस नेत्र को विकसित कर सकता है और चर्म चक्षुओं की परिधि से बहुत आगे की परिस्थितियों एवं घटनाओं को भली प्रकार देख सकने में समर्थ हो सकता है ।

टेलीफोन के माध्यम से आवाज को सुदूर प्रदेशों तक पहुँचाने की विद्या बहुत पहले ज्ञात हो गई थी । इसके बाद रेडियो प्रणाली से परस्पर बैठे हुए व्यक्तियों का, बिना तार के ही, केवल ध्वनि कम्पनों की सहायता से वार्तालाप करना सम्भव हुआ । टेलीविजन प्रणाली में चित्रों को दूर-दूर तक भेजना सम्भव हुआ । अब उसमें एक कदम और आगे बढ़ा है । फोटोग्राफी भी इसी संचार प्रक्रिया के साथ जुड़ गई है । इसे ऐसे मानना चाहिए जैसे दर्पण और फोटो कैमरा, दर्पण के सामने खड़े होने पर चित्र दीखता है पर हटते ही वह चित्र गायब हो जाता है । कैमरे की बात दूसरी है । उसके सामने खड़े होकर फोटो उतारा जाय तो वह स्थायी बना रहेगा । टेलीविजन को दर्पण कहा जाय तो इस 'विद्युत आवृत्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संचार व्यवस्था' को कैमरे की फोटोग्राफी मानना पड़ेगा जो क्षण भर में एक स्थान का फोटो पृथ्वी के इस छोर से उस छोर पर भेज देती है ।

आजकल अखबारों में जो विश्व भर की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के फोटो दूसरे ही दिन छप जाते हैं इसका कारण यही प्रणाली है । 'टेलेक्स' प्रणाली से भी यह अधिक बारीकियों से भरी हुई है । भारत में ऐसा संचार केन्द्र पूना के पास 'आर्वी' में छोटी पहाड़ियों के बीच बना हुआ है । इसे 'इण्टेल्साट-३' कहते हैं । इसकी संचार तरंगें बम्बई के स्टील टावर में पहुँचती हैं । वहाँ फ्लोरा फाउण्डेशन के निकट बना हुआ अठारह मंजिल वाला संचार भवन उन तरंगों को ग्रहण करता है और फिर शक्तिशाली उपकरणों के माध्यम से अभीष्ट स्थानों पर भेज देता है । प्रेषण जैसी ही ग्रहण व्यवस्था भी इन संयन्त्रों में है । विदेशों से आने वाले फोटो यहीं ग्रहण किए जाते हैं और उनकी अनेक प्रतियाँ छापकर तत्काल अखबारों को अथवा सम्बन्धित सरकारी विभागों को भेज दिए जाते हैं । फोटो ही नहीं, महत्त्वपूर्ण नक्शे, कागजात, पत्र आदि भी तत्काल इसी पद्धति के माध्यम से भेजे और ग्रहण किए जाते हैं ।

अन्यत्र भेजे जाने वाले फोटो एक बड़े बेलन पर चिपका दिए जाते हैं । यह बेलन ६० चक्कर प्रति मिनट के हिसाब से घूमता है । साथ ही प्रति इंच सौ रेखाएँ भी गतिशील करता है । प्रकाश का एक केन्द्रित पुंज उस फोटो पर डाला जाता है, परावर्तित प्रकाश एक लेंस की सहायता से प्रकाश कोशिका पर केन्द्रित होता है । यहाँ प्रकाश की विविधता, विविध विद्युत कम्पनों में बदल जाती है रंगों के उतार-चढ़ाव के हिसाब से इन विद्युत कम्पनों में अन्तर हो जाता है । सफेद रंग के लिए १५०० साइकल, काले रंग के लिए २३००, भूरे रंग के लिए ८०० साइकल प्रति सेकण्ड आवृत्ति होती है । अब इन कम्पनों को दुनिया के किसी भी कोने में रेडियो संचार प्रणाली के अनुसार विश्व के किसी भी कोने पर भेज दिया जा सकता है । जहाँ इन चित्रों को पकड़ा जाता है वहाँ भी रेडियो ध्वनि ग्रहण करने जैसे यन्त्र लगे रहते हैं । वे यन्त्र उन विद्युत कम्पनों को पकड़ कर उन्हें चित्र रूप में पुनः परिवर्तित कर लेते हैं । अपने देश में ऐसे चौबीस रेडियो फोटो चैनल हैं, जिनका सम्बन्ध संसार के चौंतीस प्रमुख देशों से है ।

इस संचार उपग्रह पद्धति की रूसी प्रणाली 'डार्विटा' कहलाती है । अमेरिका की अपनी प्रणाली है । सन् ६९ से लेकर अब तक अमेरिका ने लगभग ६०० से अधिक अन्तरिक्ष यान छोड़े जिनमें से ५५० से अधिक अभी भी पृथ्वी की विभिन्न कक्षाओं में घूम रहे हैं । रूस में हर साल ५० और १०० के बीच में इस प्रकार के उपग्रह भेजते रहे हैं । यह कृत्रिम अन्तरिक्ष उपग्रह मौसम शोध से लेकर खगोलीय परिस्थितियों की जानकारी अपने मूल केन्द्र को भेजते रहे हैं । ऐसे ही उपग्रह इस रेडियो फोटो संचार पद्धति को संचालित रखने में सहायता करते हैं । इस 'इन्टेसाल्ट' उपग्रह पद्धति का विकास करके शब्द संचार की तरह चित्र संसार की सुविधा भी सरल बनाई जा सकती है और हम घर बैठे विश्व की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को सिनेमा के पर्दे पर देखी जाने वाली फिल्मों की तरह प्रत्यक्ष देख सकते हैं । टेलीविजन में अभी जो छोटे दायरे से ही काम करने की कठिनाई है वह भी इस प्रणाली में भी दूर की जा सकती है ।

यह दूरदर्शन का कार्य टेलीविजन यन्त्र करते हैं । चित्रों को दूर तक भेजने वाली यह रेडियो फोटोग्राफी भी काम में आ रही है । टेलीस्कोप, माइक्रोस्कोप आदि सूक्ष्मदर्शी और सुदूरदर्शी यन्त्र भी नेत्रशक्ति की समीपता को बढ़ाकर विस्तृत और व्यापक बनाते हैं । यह साधन जिनके पास हैं वे इन यन्त्रों की मर्यादा के अनुरूप लाभ उठा लेते हैं ।

भगवान का दिया हुआ एक ऐसा ही यन्त्र मनुष्य के पास भी है जिसे दृष्टिवर्धन के अद्यावधि आविष्कारों की सम्मिलित उपलब्धियों से भी कहीं अधिक समर्थ और व्यापक कहा जा सकता है । न इसे खरीदना पड़ता है और न इसके संचालन की कोई बड़ी शिक्षा लेनी पड़ती है । भ्रू-मध्य भाग में अवस्थित आज्ञा-चक्र अपना तीसरा नेत्र है । इसे खोलने की साधना करने से वह अन्तर्ज्योति विकसित हो सकती है जिसके माध्यम से लोग-लोकान्तरों को, भूगर्भ को, पंच भौतिक परिस्थितियों को देखा और समझा जा सके । इतना ही नहीं इस तीसरे नेत्र में वह शक्ति भी है कि जीवित प्राणियों की मनःस्थिति भावना, कल्पना, योजना, इच्छा, आस्था एवं प्रकृति को भी समझा जा सके । इस आज्ञाचक्र को विकसित करने की साधना हमें दृष्टि की प्रखरता और व्यापकता का अनुपम उपहार दे सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । यह उपहार न केवल वर्तमान का ही परिचय प्राप्त करने में समर्थ है वरन् चिर अतीत में जो घटित हो चुका और निकट भविष्य में जो होने जा रहा है उसका पूर्वाभाव भी जाना जा सकता है ।

आज्ञा-चक्र

शिव और पार्वती के चित्रों में उनका एक पौराणिक तीसरा नेत्र भी दिखाया जाता है । कथा के अनुसार शंकर भगवान ने इसी नेत्र को खोलकर उसमें से निकलने वाली अग्नि से कामदेव को भस्म किया था । यह दिव्य दृष्टि का केन्द्र है । इससे टेलीविजन जैसा कार्य लिया जा सकता है । दूरदर्शन का दिव्य यन्त्र यहीं लगा हुआ है । महाभारत के सारे दृश्य संजय ने इसी के माध्यम से देखे और धृतराष्ट्र को सुनाये । चित्रलेखा द्वारा प्रद्युम्न प्रणय इस दिव्य-दर्शन का ही परिणाम था ।

यह तीसरा नेत्र अति प्रभावशाली है इससे दूरदर्शन ही नहीं, अदृश्य और अप्रत्यक्ष भी देखा, समझा जा सकता है । एक्स-रे की किरणें जिस तरह ठोस पदार्थों में होकर भी पार चली जाती हैं और आँखों से न दीख पड़ने वाली वस्तुओं के भी चित्र खींचती हैं, उसी प्रकार यह आज्ञाचक्र का कैमरा अदृश्य को देख सकता है । इसके माध्यम से न केवल पदार्थों को देखने का प्रयोजन पूरा होता है वरन् जीवित प्राणियों की मनःस्थिति को समझना भी सम्भव होता है । देखने समझने से ही बात पूरी नहीं होती आज्ञाचक्र की क्षमता इससे भी आगे है वह दूसरों को प्रभावित, परिवर्तित भी कर सकती है, मेस्मेरिज्म हिप्नोटिज्म में इसी दिव्य क्षमता को स्थूल नेत्रों के माध्यम से प्रयोग किया जाता है ।

यह आज्ञा-चक्र और कुछ नहीं पर्याप्त मात्रा में अर्जित प्राणों को कपाल के मध्य पर्दे पर, भ्रूमध्य में केन्द्रित करना (फोकस) और फिर उसके निक्षेप द्वारा तरह-तरह की जानकारियाँ एकत्र कर लेना है । यह उक्त विज्ञान की तरह ही नितान्त प्रायोगिक तथ्य है, मात्र कल्पना या अतिरंजन नहीं ।

विचार सम्प्रेषण विज्ञान

विचार एक प्रकार से प्राणों पर सवार विद्युत चुम्बकीय स्पन्दन ही है । गायत्री उपासकों को कई बार अपने स्वजनों से ऐसे सन्देश अनायास मिलते देखे गए हैं जिन्हें मानो बेतार के तार द्वारा सम्प्रेषित किया गया हो, गायत्री जप और कुछ नहीं प्राणों के संचय की ही साधना है । विश्व प्राणों की इतनी मात्रा अपने में भरी जा सकती है जो ठीक ट्रान्समीटर का कार्य करने लगे । अगले अध्यायों में इस साधना के स्वरूप पर प्रकाश डाला जा रहा है । संक्षेप में यह समझ लेना आवश्यक है कि विचारों की तीक्ष्णता या निर्बलता और कुछ नहीं प्राणों का ही अल्प या अत्यधिक होना है ।

विचारों की शक्ति का सामान्य जीवन में भी महत्त्वपूर्ण उपयोग होता रहता है । उन्हीं के आधार पर क्रिया-कलाप बनते हैं और तदनुरुप परिणाम सामने आते हैं । बहिरंग व्यक्तित्व वस्तुतः मनुष्य के अन्तरंग की प्रतिक्रिया भर ही होता है । विचारों से समीपवर्ती लोग सहयोगी विरोधी बनते हैं । निन्दा और प्रशंसा के आधारों की जड़ें अन्तःक्षेत्र में ही गहराई तक धँसी होती हैं । सामान्य स्तर की विचार-शक्ति भी जीवन का क्रम बनाती है, तो फिर विशेष स्तर की विचार-शक्ति जो योगाभ्यास के साधना विज्ञान के आधार पर तैयार की जाती है, चमत्कारी परिणाम उत्पन्न कर सके तो इसे अबुद्धिसम्मत नहीं कहा जा सकता । मन्त्र शक्ति के प्रयोगों में जहाँ दम्भ और बहकावे की भी भरमार रहती है वहाँ ऐसे प्रामाणिक प्रसंगों की भी कमी नहीं होती जिनके आधार पर इस अलौकिकता का आधार समझ में न आने पर भी उसे अविश्वस्त नहीं कहा जा सकता ।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि किन्हीं व्यक्तियों में वस्तुओं को विचार-शक्ति से प्रभावित करने की क्षमता अनायास ही पायी जाती है । उन्होंने कोई योगाभ्यास नहीं किया तो भी वे अदृश्य को देख सकने, अविज्ञात को जान सकने में समर्थ रहे । ऐसी विलक्षणता हर मनुष्य के अचेतन मन में मौजूद है । मानवी विद्युत सामान्यतया दैनिक क्रिया-कलापों में ही खर्च होती रहती है, पर यदि उसे बढ़ाया जा सके तो कितने ही विलक्षण कर्म भी हो सकते हैं । साधना से दिव्य क्षमता बढ़ती है और उससे कितने ही प्रकार के असामान्य कार्य कर सकना सम्भव होता है । यह आध्यात्मिक उपलब्धियाँ अगले जन्मों तक साथ चली जाती हैं । ऐसे लोग बिना साधना के भी पूर्व संचित सम्पदा के आधार पर चमत्कारी आचरण प्रस्तुत करते देखे गए हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति

अतीन्द्रिय ज्ञान—एक्स्ट्रा आर्डिनरी सेन्स परएप्शन की प्राप्ति में यों मस्तिष्क के अचेतन भाग के अन्य केन्द्र भी काम करते हैं, पर आज्ञाचक्र का उपयोग सबसे अधिक होता है । धूमिल स्थिति में तो दर्पण पर अपनी आकृति तक देखना सम्भव नहीं होता, फिर धूमिल आज्ञाचक्र क्या काम करेगा । कैमरे के लैन्स पर धूल जम रही हो तो साफ फोटो कहाँ आता है ? आँखें दुखने आ जायें या पट्टी बांध ली जाय तो दृश्य कहाँ दिखाई देते हैं । इसी प्रकार धूमिल आज्ञाचक्र अपनी क्षमता का प्रकटीकरण प्रसुप्त स्थिति में नहीं कर सकता । सक्षम बनाने के लिए उसे स्वच्छ एवं जागृत बनाने की आवश्यकता होती है । इस विभाग को आध्यात्म की भाषा में तृतीय नेत्र कहा जाता है । उसमें दिव्य दृष्टि का अस्तित्व पाया जाता है, दिव्य दृष्टि का अर्थ है वह देख पाना जो नेत्र गोलकों की सामर्थ्य से आगे की बात है ।

प्रसिद्ध जादूगर गोगियापाशा और प्रो. सरकार नेत्रों से कड़ी पट्टी बँधवाकर घनी आबादी की भीड़ भरी सड़कों पर मोटर साइकिल दौड़ाने के अपने करतब दिखा चुके हैं । इन प्रदर्शनों से पहले विशेषज्ञों ने अनेक प्रकार से यह परीक्षा कर ली थी कि इस स्थिति में आँखों से देख सकने की किसी प्रकार कोई गुंजाइश नहीं है । प्रदर्शनों के समय दुर्घटना घटित न होने देने के यों सरकारी प्रबन्ध भी थे, पर वैसा अवसर ही नहीं आया । प्रदर्शन पूरी सफलता के साथ सम्पन्न हुए और दर्शकों में से सभी को यह विश्वास करना पड़ा कि बिना आँखों की सहायता के भी बहुत कुछ देखा जाना सम्भव हो सकता है ।

इसी से मिलती-जुलती एक घटना अमेरिका की भी है । पोदेशिया नामक महिला घोर अँधेरे में आँखों से पट्टी बांधकर दृश्य देखने और रंग पहचानने का दावा करती थी । उसकी परीक्षा बर्नार्ड कॉलेज न्यूयार्क की वैज्ञानिक मण्डली ने की । परीक्षा समिति के अध्यक्ष 'डॉ. रिचर्ड यूटस' ने घोषित किया है, वस्तुतः महिला में वैसी ही क्षमता है जैसा कि उसका कथन है । 'तन्त्र विद्या के विश्व कोश' 'एन साइक्लोपीडिया ऑफ दिं आकल्ट' ग्रन्थ में ऐसे ढेरों उदाहरणों का वर्णन है जिनमें मनुष्य में पायी जाने वाली अतीन्द्रिय क्षमताओं का उल्लेख है । फ्रान्सीसी नाविक फोन्टान जन्मान्ध था, पर वह अपनी उँगलियों से छूकर सब कुछ उसी तरह जान लेता था जैसा कि आँखों वाले नेत्रों से देखकर जानते हैं । फ्रान्सीसी कवि और वैज्ञानिक 'जूल्स रोमेन्स' ने परोक्ष दृष्टि विज्ञान में गहरी दिलचस्पी ली थी और अपने शोध प्रयासों से सिद्ध किया था कि नेत्रों के द्वारा मस्तिष्क में दृश्य सूचना पहुँचाने वाले ज्ञान तन्तुओं के समान ही सम्वेदना वाहक धागे शरीर के अन्य अंगों में भी मौजूद रहते हैं । यदि उन्हें विकसित किया जा सके तो दृष्टि प्रयोजन अन्य अवयवों की सहायता से भी पूरा किया जा सकता है ।

गेविन मैक्सवेल ने दिव्य दृष्टि के अस्तित्व को खोजने में गहरी दिलचस्पी ली है और उन्होंने लम्बी जाँच-पड़ताल के बाद यह पाया है कि बहुतों में सहज ही दृष्टि होती है । लगातार प्रयत्न और अभ्यास करने पर उसे बढ़ाया जा सकता है, किन्तु कितने ही बिना किसी अभ्यास के भी उस क्षमता से सम्पन्न पाये जाते हैं, किन्तु वे अपनी अनुभूतियों को प्रकट करने में प्रायः डरते रहते हैं । ढोंगी समझे जाने, किसी को बुरा लगने, सही न होने पर खिल्ली उड़ने, अपनी अनुभूति पर पूर्ण विश्वास न होने जैसे कारणों से भीतर से जो आभास मिलता है उसे प्रकट नहीं कर पाते और छिपाये ही रहते हैं । यदि पूर्वाभासों के प्रकटीकरण की परम्परा चल पड़े तो फिर प्रतीत होगा कि मनुष्यों में बुद्धिमत्ता की ही तरह अपरात्मानुभूति का अस्तित्व भी बड़ी मात्रा में मौजूद है । प्रयत्नपूर्वक विकसित करने पर तो उसे और भी अधिक सक्षम बनाया जा सकता है । अशिक्षितों को शिक्षित बनाकर जिस प्रकार बुद्धि वैभव बढ़ाया जाता है उसी प्रकार यह भी सम्भव है कि जन-साधारण में सामान्यतया और कुछ विशिष्ट में विशेषतया पायी जाने वाली दिव्य दृष्टि को समर्थ बनाना और उससे लाभ उठाना सम्भव हो सके ।

गेविन मैक्सवेल ने अपने अनुसन्धानों में एक अस्सी वर्षीय अन्धे का वर्णन किया है जिसने समुद्र में डूबी हुई एक मछुआरे की लाश का सही स्थान बताने और उसे बाहर लाने में सहायता की थी । उन्होंने पश्चिमी पठार के द्वीप समूहों के लोगों में यह क्षमता विशेष रूप से पाये जाने का उल्लेख किया है । शम्स फियारना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

द्वीप में एक मछुआरा, मछली पकड़ते समय गाँव के समीप की खाड़ी में डूब गया । उसकी लाश निकालने और विधिवत दफनाने के लिए सारा गाँव उत्सुक था । सभी नावें कई दिन तक लगातार खाड़ी में चक्कर काटती रहीं पर किसी के काँटे में लाश फँसी नहीं । निराशा छाई हुई थी । तभी एक ८० वर्षीय अन्धे कैलम मेकिनन ने कहा, आप लोग मुझे नाव में बिठा कर ले चलें और खाड़ी में घुमाते रहें । सम्भवतः मैं लाश को तलाश करा दूँगा । वैसा ही किया गया । सही जगह मिलने पर बुड्ढा चिल्लाया, काँटा डालो लाश ठीक नीचे है । वैसा ही किया गया । फलतः मृतक को बाहर निकाल लिया गया और उसे विधिवत दफनाया गया ।

यह दिव्य दृष्टि भौतिक क्षेत्र में अदृश्य को देखने और अविज्ञात को जानने में काम आती है और आध्यात्मिक जगत में दूरदर्शिता एवं विवेकशीलता को विकसित करती है । ऐसे दिव्यदर्शी, तत्वदर्शी कहलाते हैं उन्हें जो सूझता और दीखता है वह बहुत ही उच्च स्तरीय होता है । पदार्थों में चेतना और प्राणियों में आत्मा को देख पाना इसी तत्वदर्शी दृष्टि के लिए सम्भव है । ऋतम्भरा प्रज्ञा के नाम से यही विख्यात है, गायत्री महामन्त्र में इसी की आराधना है । इसकी उपलब्धि होने पर सर्वत्र अपनी ही आत्मा बिखरी दीखती है और अन्यान्यों के सुख-दुःख अपने ही प्रतीत होते हैं । इन्हीं से आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर दर्शन का परम लक्ष्य प्राप्त होता है । दिव्यदर्शी भगवान बुद्ध ने कहा था, 'जब करुणा के नेत्र खुलते हैं तो मनुष्य अपने में दूसरों को और दूसरों में अपने को देखने लगता है । करुणा की दृष्टि से ही माया का उच्छेद होता है और उसके पारपूर्णता की परम ज्योति का दर्शन होता है ।' इसी परम ज्योति को प्राप्त करना मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है ।

कई वर्ष पूर्व अप्रैल में मास्को से टेलीविजन पर एक अत्यन्त आश्चर्यजनक कार्यक्रम प्रसारित किया गया । निजनी तगिन की एक २२ वर्षीय तरुणी रोसा कुलेशोवा ने अपने दाहिने हाथ की तीसरी और चौथी अंगुलियों से स्पर्श करके अखबार का एक लेख पढ़ा और फोटो चित्रों को बिना किसी की मदद से देखकर पहचाना । इस कार्यक्रम को हजारों रूसियों और दूसरे देशवासियों ने देखा और बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया ।

रोसा निजनी के एक अन्ध विद्यालय में अध्यापन का कार्य करती है । एक दिन जब वह पढ़ा रही थी, तब एकाएक उसने अनुभव किया कि वह बिना आँखों की सहायता के अंगुलियों के पोरों से देख सकती है । उसने धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाया । स्पर्श से ही वह अंक पहचानने लगी । कुछ दिन में तो वह कागजों पर हुए रंग को भी केवल स्पर्श से जानने लगी । दिसम्बर ६२ को उसने सोवियत संघ, मनोवैज्ञानिक संघ की यूराल शाखा के सदस्यों के सामने प्रदर्शन किया, तुरन्त प्रेस से आये अखबार को अंगुलियों की मदद से पढ़ कर सुना दिया । यही नहीं अखबार पर जहाँ चित्र थे, उनके पोज और वह चित्र कैसे कपड़े पहने थे, यह सब अत्यन्त सूक्ष्म विभाजन तक उसने केवल स्पर्श से बता दिए, स्पर्श से वह किस प्रकार अक्षर, रंग या चित्रों को पहचान लेती है, उसका कोई निश्चित उत्तर रोसा नहीं दे सकी, किन्तु उसने इतना अवश्य बताया कि कोई भी वस्तु छूने से कुछ तरंग जैसी लाइनें मस्तिष्क तक दौड़ने लगती हैं और सब कुछ स्पष्ट होने लगता है ।

वैज्ञानिक बहुत हैरान हुए, खारकोव विश्वविद्यालय के एक मनोविज्ञानशास्त्री ने कहा, "सम्भव है वस्तुओं से इन्फ्रारेड किरणें निकलती हों और उनके स्पन्दन से पता चलता हो, इसलिए रोसा पर कुछ प्रयोग किए गए । पालिश किए हुए काँच के पार से वस्तुएँ दिखाई गईं । अब इन्फ्रारेड किरणों की सम्भावना को रोक दिया गया था तो भी रोसा ने पहले की तरह ही सब कुछ बता दिया । यही नहीं उसे एक लम्बी नली के पार से रंग दिखाये, तब उसने नली के मुँह पर अंगुली रखकर सब कुछ सही-सही बता दिया । वैज्ञानिक कोई कारण समझ न सके, अन्त में रूसी अखबार 'इजवेस्तिया' ने स्वीकार किया, यह किसी दिव्य-दृष्टि का चमत्कार है ।

टेलीविजन पर हुए कार्यक्रम को देखने के बाद खार्कोव के एक डॉक्टर ओल्गा ब्लिजनोव ने अपनी पुत्री पर भी इस तरह का प्रयोग किया और देखा कि रोसा कुलेशोवा की तरह नीले, काले, हरे, लाल सब रंगों को केवल स्पर्श से जान लेती है । उसका भी परीक्षण किया गया । लेना ब्लिजनोव के सामने चौकोर कागजों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का पूरा बण्डल रखा गया और उसके नीचे एक कागज में कुछ लिखकर छुपा दिया गया । आश्चर्य कि उसने बण्डल के ऊपर वाले कागज को छूकर यह बता दिया कि सबसे नीचे वाले कागज में क्या लिखा हुआ है । इतना ही नहीं वह दो-ढाई इंच दूर अंगुलियाँ रखकर भी फोटो, चित्र, रंग और अक्षर पहचान लेती है, जबकि उसकी आँखों में मजबूत पट्टी बँधी होती है ।

प्रोफेसर अलेक्जान्देर स्मिर्नोव ने इस विद्या का गहन अध्ययन किया । उन्होंने ऐसी क्षमता के कुछ लड़के भी खोज निकाले पर इस रहस्य का सही पता न लगा सके । इन चर्चाओं को न्यूयार्क में वारनार्ड कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. रिचार्ड पी. यूज ने भी सुना तो उन्होंने बताया कि १९३९ में कैण्टकी के हाईस्कूल में पेट्रीशिया आइन्सवर्स नाम की एक लड़की भी इस तरह की दिव्य-दृष्टि रखती है । अब तक वह स्त्री कई बच्चों की माँ हो चुकी थी, इसलिए डॉ. यूज ने कॉलेज के लड़कों पर प्रयोग दोहराए और बाद में उन्होंने बताया कि १३५ विद्यार्थियों में से १५ प्रतिशत छात्रों में इस तरह की क्षमता पायी गई, जो अभ्यास के द्वारा अपनी दिव्य-दृष्टि बढ़ा सकते हैं । इस घोषणा से सिद्ध है कि आँखों से ही सब कुछ नहीं देखा जाता उसके अतिरिक्त अंगों में भी देखने, समझने की क्षमता मौजूद है । मस्तिष्क, नेत्र गोलकों का फोटोग्राफी कैमरे जैसा प्रयोग करता है और पदार्थों के जो चित्र आँखों की पुतलियों के लेंस से खींचता है वे मस्तिष्क में जमा होते हैं । इनकी प्रतिक्रिया के आधार पर मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु जो निष्कर्ष निकालते हैं उसी का नाम 'दर्शन' है । आँख इसके लिए सबसे उपयुक्त माध्यम है । मस्तिष्क के रूप दर्शन केन्द्र के साथ नेत्र गोलकों के ज्ञान तन्तुओं का सीधा और समीपवर्ती सम्बन्ध है इसलिए आमतौर से हम नेत्रों से ही देखने का काम लेते हैं और मस्तिष्क उन्हीं के आधार पर अपनी निरीक्षण क्रिया को गतिशील देखता है ।

पर ऐसा नहीं समझना चाहिए कि दृष्टि शक्ति केवल नेत्रों तक ही सीमित है । अन्य अंगों के मस्तिष्क के साथ जुड़े हुए ज्ञान तन्तुओं को विकसित करके भी मस्तिष्क बहुत हद तक उस प्रयोजन की पूर्ति कर सकता है । समस्त विश्व का हर पदार्थ अपने साथ ताप और प्रकाश की विद्युत किरणें संजोये हुए है । वे कम्पन लहरियों के साथ इस निखिल विश्व में अपना प्रवाह फैलाती हैं । ईथर तत्व के द्वारा वे दूर-दूर तक जा पहुँचती हैं और यदि उन्हें ठीक तरह से पकड़ा जा सके तो जो दृश्य बहुत दूर पर अवस्थित है—जो घटनाएँ सुदूर क्षेत्रों में घटित हो रही हैं । उन्हें निकटवर्ती वस्तुओं की तरह देखा जा सकता है । इन दृश्य किरणों को पकड़ने के लिए नेत्र उपयुक्त हैं । समीपवर्ती दृश्य वही देखते हैं और दूरदर्शी दृश्य देखने के लिए—तृतीय नेत्र को भ्रू-मध्य में अवस्थित आज्ञाचक्र को प्रयुक्त किया जा सकता है । इतने पर भी यह नहीं समझ लेना चाहिए कि रूप तत्व का सम्बन्ध नेत्रों से ही है । अग्नि तत्व की प्रधानता से 'रूप' कम्पन उत्पन्न होते हैं । शरीर में अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व नेत्र करते हैं, पर ऐसा नहीं मानना चाहिए कि अग्नि तत्व अन्यत्र शरीर के अन्य अंगों में नहीं है । समस्त शरीर पंचतत्वों के गुम्फन से बना है । यदि किसी अन्य अंग का अग्नि तत्व अनायास ही विकसित हो जायेगा या साधनात्मक प्रयत्नों द्वारा विकसित कर लिया जाय तो नेत्रों की बहुत आवश्यकता उनके माध्यम से भी पूरी हो सकती है । इसी प्रकार अन्य ज्ञानेन्द्रियों के कार्य एक सीमा तक दूसरे अंग कर सकते हैं । स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत किए गए पौहारी बाबा प्रत्यक्षतः वायु ही ग्रहण करते थे । अन्न, जल सेवन नहीं करते थे पर शरीर के अन्य अंगों द्वारा अदृश्य जगत से उन्हें सूक्ष्म आहार बराबर मिलता रहता था इसके बिना किसी के लिए भी जीवन धारण किए रहना असम्भव है ।

वेधक दृष्टि भी असम्भव नहीं

मानवी शरीर की विलक्षणताओं की चर्चा करते हुए उन प्रामाणिक घटनाओं का उल्लेख अक्सर किया जाता रहा है जिनकी यथार्थता सुविज्ञ लोगों ने पूरी जाँच-पड़ताल के बाद घोषित की है । मनुष्य शरीर में यान्त्रिकी बिजली की आश्चर्यजनक मात्रा हो सकती है, इसके कितने ही उदाहरण सर्वविदित हैं । कोलोराडी प्रान्त के लेडीवली नगर में के. डब्ल्यू. पी. जोंस नाम का एक ऐसा व्यक्ति हुआ है जो जमीन पर चलकर यह बता देता था कि जिस भूमि पर वह चल रहा है उनके बीच किस धातु की, कितनी गहरी तथा कितनी बड़ी खदान है । उसे जमीन में दबी भिन्न धातुओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रभाव अपने शरीर पर विभिन्न प्रकार के स्पन्दनों से होता था । अनुभव ने उसे यह सिखा दिया था कि किस धातु का स्पन्दन कैसा होता है । अपनी इस विशेषता का उसने भरपूर फायदा उठाया । कइयों को खदानें बताकर उनसे हिस्सा लिया और कुछ खदानें उसने अपने धन से खरीदीं और चलाईं अमेरिका का यह बहुत धन सम्पन्न व्यक्ति इसी अपनी विशेषता के कारण बना था ।

आयरलैण्ड के प्रो. वैरेट इस बात के लिए प्रख्यात थे कि वे भूमिगत जलस्रोतों तथा धातु खदानों का पता अपनी अन्तःचेतना से देखकर बता देते थे । इस विशिष्टता से उन्होंने अपने देशवासियों को बहुत लाभ पहुँचाया था । आस्ट्रेलिया का एक किसान भी पिछली शताब्दी में इस विद्या के लिए प्रसिद्धि पा चुका है, वह दो शंकु वाली टहनी हाथ में लेकर खेतों में घूमता-फिरता था और जहाँ उसे जलस्रोत दिखाई पड़ता था वहाँ रुक जाता था । उस स्थान पर खोदे गए कुओं में प्रायः पानी निकल ही आता था । भारत के राजस्थान प्रान्त में एक पानी वाले महाराज जिन्हें माधवानन्द जी कहते थे अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर कितने ही सफल कुएँ बनवा चुके थे ।

भूमिगत अदृश्य वस्तुओं को देख सकने की विद्या को रेब्डोमेन्सी कहते हैं । इस विज्ञान की परिधि में जमीन में दबे खनिज रसायन, जल, तेल आदि सभी वस्तुओं को जाना जा सकता है, किन्तु यदि केवल जल तलाश तक ही वह सीमित हो तो उसे 'वाटर डाउनिंग' कहेंगे ।

आयरलैण्ड के विकलो पहाड़ी क्षेत्र में दूर-दूर तक कहीं पानी का नामोनिशान नहीं था । जमीन कड़ी, पथरीली थी । प्रो. वेनेट ने खदान विशेषज्ञों के सामने अपना प्रयोग किया । वे कई घण्टे उस क्षेत्र में घूमें अन्ततः वे एक स्थान पर रुके और कहा, केवल १४ फुट गहराई पर यहाँ एक अच्छा जलस्रोत है । खुदाई आरम्भ हुई और पूर्व कथन बिल्कुल सच निकला । १५ फुट जमीन खोदने पर पानी की एक जोरदार धारा वहाँ से उबल पड़ी ।

इन सबके पीछे उसी प्राण शक्ति का आधार सन्निहित है । बिजली एक ही होती है, पर हीटर, में वही कार्य गर्मी पैदा करने का करती है तो रेफ्रिजरेटर में ठंडक का । दोनों तथ्य एक दूसरे से विपरीत, किन्तु एक ही शक्ति के उपादान । मानव-शरीर में विद्यमान प्राण भी एक ऐसी ही विद्युत है जिसमे भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेकों तरह के कार्य किए जा सकने नितान्त सम्भव हैं ।

मानवी शरीर के शोध इतिहास में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख है जिनसे यह सिद्ध होता है कि किन्हीं-किन्हीं शरीरों में इतनी अधिक बिजली होती है कि उसे दूसरे लोग भी आसानी से अनुभव कर सकें । यों हमारा नाड़ी संस्थान पूर्णतया विद्युत धारा से ही संचालित होता है । मस्तिष्क को जादुई बिजलीघर कह सकते हैं, जहाँ से शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंगों की गतिविधियों का नियन्त्रण एवं संचालन होता है पर यह बिज़ली 'जीव विद्युत' वर्ग की होती है और इस तरह अनुभव में नहीं आती जैसी कि बत्ती जलाने या मशीनें चलाने वाली बिजली । शरीर में काम करने वाली गर्मी से विभिन्न अवयवों की सक्रियता रहती है और वे अपना-अपना काम करते हैं । यह कायिक ऊष्मा वस्तुतः एक विशेष प्रकार की बिजली ही है । इसे मानवी विद्युत कह सकते है । इसी का सम्मिलित स्वरूप ही सूक्ष्म शरीर कहलाता है ।

भारतीय दर्शन ने आत्मा की अमरता, अलौकिकता जगत की विभूतियों का चित्रण, जीवन लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणाएँ इस तत्व दर्शन की अनुभूति के बाद ही दी है इसीलिए हमारे धर्म की वैज्ञानिकता सिद्ध होती है ।

गुरुत्वाकर्षण से मुक्त प्राण चेतना

योग सिद्धियों में वर्णित आकाश गमन जैसी सिद्धियों की चर्चा को दन्त कथा नहीं मान लिया जाना चाहिए । मानव शरीर में भौतिक उपकरण में प्रयुक्त होने वाले सारे आधार बीज रूप में मौजूद हैं उन शक्ति बीजों को विकसित करके शरीर के कणों को इतना हल्का बनाया जा सकता है । जिन पर गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव न पड़े और मनुष्य आकाश में उड़ सकना सम्भव हो सके । प्रयोग की बात आगे की है । पर सिद्धान्त रूप में उसे अब असम्भव नहीं कहा जा सकता । मनोबल की प्रचण्ड क्षमता का, शारीरिक विद्युत का मस्तिष्कीय कम्प्यूटर का कायिक रेडियो सक्रियता का वैज्ञानिकों ने जो परिचय पाया है उससे वे आश्चर्य चकित रह गए हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पानी की सतह के ऊपर एक अदृश्य झिल्ली होती है । जिसे सतह की तनाव शक्ति, सरफेस टेन्शन भी कहते हैं । यह पर्त कई बार घनी भी होती है । उसके ऊपर कोई हल्की चीज इस तरह धीरे से तैराई जाय कि उस झिल्ली को आघात न लगे तो वह पानी पर तैरती रहेगी । हजामत बनाने का ब्लेड यदि होशियारी के साथ इस पर्त के ऊपर छोड़ दिया जाय तो वह तैरता रहेगा, डूबेगा नहीं ।

मृत सागर डैड सी—में क्षार आदि बहुत हैं, उसका पानी भारी है इसलिए उसमें कोई मनुष्य डूबना चाहे तो डूब नहीं सकेगा । कारण कि मनुष्य शरीर के कण उस पानी की तुलना में हल्के हैं । हल्की चीज भारी द्रव में नहीं डूब सकती ।

जल कणों से जो भी चीज हल्की होगी आसानी से तैरने लगेगी । लकड़ी हल्की होती है । हवा भरे गुब्बारे, रबड़ के ट्यूब हल्के होते हैं और वे पानी पर तैरते हैं । शरीरगत कणों के भार में न्यूनता करना और उन्हें जल कण की तुलना में हल्के बना लेना योग साधनाओं द्वारा सम्भव है । स्थूल शरीर में सूक्ष्म शरीर की सत्ता यदि प्रखर हो उठे तो उतना हल्कापन देह में उत्पन्न किया जा सकता है, कि वह जल पर बिना डूबे चल सके एवं आकाश में बिना गिरे उड़ सके । प्राणों के नियन्त्रण द्वारा यौगिक जगत में भी वैसा ही सिद्धान्त कार्य करता है जिसमें न केवल सूक्ष्म शरीर को स्थूल से पृथक कर परकाया प्रवेश किया जा सके अपितु सदेह भी उड़ा जा सकता है । हनुमान जी प्राणायाम की शक्ति से ही समुद्र लाँघते और हवा में उड़ कर संजीवनी बूटी लाये थे ।

इटली के एक पादरी जोसेफ ने अपने समय में हवा में उड़ सकने की क्षमता प्रदर्शित करके अनोखी ख्याति पायी थी । इस सिद्धि की चर्चा तब तो देश भर में फैल गई जबकि उसने मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व एक डॉक्टर को भी अपने साथ हवा में उड़ाकर दिखा दिया ।

जोसेफ की मृत्यु १६६३ में हुई । जब वह मरणासन्न था जो प्रसिद्ध चिकित्सक फ्रांसेस्को थिरयोली को चिकित्सा के लिए बुलाया गया । डॉक्टर ने अपने संस्मरण में लिखा है—मैं देखभाल कर ही रहा था कि जोसेफ ने मेरा हाथ पकड़ा और हवा में तैरने लगा । उससे जकड़ा हुआ मैं भी उड़ रहा था । इसके बाद वह मुझे भी उड़ाते हुए फ्रांस के गिरजे तक ले गया और वहीं बैठकर प्रार्थना करने लगा । मुझसे कहा, 'आपके इलाज की जरूरत नहीं रही । मुझे भगवान ने बुलाया है सो मैं जल्दी ही परलोक जा रहा हूँ ।' डॉक्टर सन्न रह गया और बिना इलाज किए ही वापस लौट गया । दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गई ।

इटली के सरकारी कागजों में जोसेफ के हवा में तैरने के कितने ही प्रसंग हैं जो पुलिस तथा दूसरे अफसरों ने तथ्य का पता लगाने के लिए जाँच-पड़ताल के सम्बन्ध में संग्रह किए थे । किंवदन्तियों से लेकर प्रत्यक्षदर्शियों तक के ऐसे अनेकानेक प्रसंग इटली की जनता में प्रचलित हैं जिनसे पता चलता है कि वह पादरी ऊँची रखी हुई ईसा की मूर्तियों तक उछल कर जा पहुँचता था और ऐसे ही कुछ देर अधर में लटका रहता था । लोग उसे अलौकिक क्षमताओं से सम्पन्न सिद्ध पुरुष मानने लगे थे ।

पादरी जोसेफ का पिता इटली के फेलिक्स डेला नामक गाँव में रहता था और बढ़ई का काम करता था । गरीबी और बेकारी से दुःखी होकर वह अपनी गर्भवती पत्नी को लेकर कहीं गुजारे का आसरा ढूँढ़ने के लिए चल पड़ा । सन् १६०३ की बात है रास्ते में ही इस लड़के का जन्म हो गया । बहुत ही दुर्बल हड्डियों का ढाँचा मात्र था । जन्म से ही बीमार रहने लगा और थोड़े दिनों में ही पेट की भयंकर व्यथा में ग्रसित हो गया । इलाज के लिए पैसा न होने से बाप ने एक साधु की शरण ली । साधु ने कहा, 'इसका शरीर मर चुका केवल आत्मा ही धरती पर बाकी है ।' इतने पर भी उसने कहा वह बचा लिया जायेगा और पादरी होकर जीयेगा । सचमुच ही वह बच गया और बचपन से ही साधुओं जैसा पूजा-पाठ का जीवन-यापन करने लगा । उसकी उपासना चलती रही और चमत्कारी ख्याति बढ़ी । उसकी विशेषताओं में प्रार्थना के अवसरों पर हवा में तैरने लगने की प्रसिद्धि सर्वत्र फैली हुई थी ।

लार्ड अडारे ने अपनी आँखों देखा ऐसा विवरण 'रिपोर्ट ऑफ दि डायलोक्टिकल सोसाइटी ऑन स्प्रिच्युलिज्म' में प्रकाशित कराया था जिसके अनुसार एक व्यक्ति को उन्होंने हवा में पक्षी की तरह उड़ते और तैरते देखा था । उनके इस विवरण की यथार्थता के लिए दी रॉयल एस्ट्रोनोमिकल सोसाइटी के अध्यक्ष की साक्षी भी जोड़ी गई थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस विवरण में होम नामक एक ऐसे अद्‌भुत व्यक्ति का उल्लेख है कि कितनी ही तरह की चमत्कारी सिद्धियाँ प्राप्त थीं । वह हवा में उड़ सकता था । जलते हुए अंगारे बहुत देर तक हाथों पर रखे रहता था ।

इन सिद्धियों की चर्चा हुई तो बहुतों ने अविश्वास किया और इसे अफवाह फैलाकर धोखाधड़ी करने की संज्ञा दी । फलतः प्रख्यात और प्रामाणिक विज्ञानवेत्ता सर विलियम क्रुक्स की अध्यक्षता में एक शोध समिति इसके परीक्षण के लिए बनाई गई । समिति इतना ही बताने में समर्थ हुई कि होम के बारे में जो कहा गया है वह सही है । उसमें कोई चालाकी नहीं है, किन्तु यह बता सकना कठिन है कि यह सब होता कैसे है ? ब्रिटिश सोसाइटी फॉर साइकिक रिसर्च के प्रतिनिधि एफ. डब्ल्यू. मेयर्स से इस सम्बन्ध में की गई भेंट वार्ता में प्रो. क्रुक्स ने अपने परीक्षण, अनुभव और निष्कर्ष का विस्तारपूर्वक वर्णन सुनाया और कहा, चालाकी जैसी कोई बात इसमें नहीं है । अस्तु इस प्रकार की घटनाओं को विज्ञान की नई शोध का विषय माना जाना चाहिए और उन्हें अविश्वस्त न मानकर नये सिरे से खोज का प्रबन्ध करना चाहिए । क्रुक्स ने अपने परीक्षण के समय होम में ऐसी विलक्षण शक्ति भी पायी कि वह अपने प्रभाव से, दूर रहते हुए भी बिना छुए वस्तुओं को इधर से उधर हटा सकता था और ऐसी वस्तुएँ प्रस्तुत कर सकता था जो वहाँ पहले से कहीं भी नहीं थीं ।

अगस्त ६२ की अन्तरिक्ष उड़ान में वोस्तोक-३ यान की यात्रा करने वाले निकोलायेव ने अन्तरिक्ष की स्थिति का कुछ विवरण सुनाते हुए कहा था—अन्तरिक्ष में फर्श, जमीन, दीवार आदि छू कर चलने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती है । खाली पोल में आदमी सहज ही चल सकता है । यान की दीवार से उँगली छूकर एक छोटा धक्का देना काफी है । इतने भर में चलने की गति उत्पन्न हो जायेगी । फिर मजे में चलते रहिए । हाथ और पैरों की सहायता से किसी भी दिशा में बढ़ा चला जा सकता है । चल ही नहीं वहाँ पानी की तरह तैर भी सकते हैं । तैराक पानी को हाथ पैरों का धक्का देकर अपनी गति बढ़ाता है । अन्तरिक्ष के शून्य में भी उसी तरह तैरा जा सकता है ।

गुरुत्वाकर्षण की परिधि से बाहर जाकर स्थूल शरीर का अन्तरिक्ष की पोल में कितनी ही दूरी तक चलना, दौड़ना, तैरना सम्भव है । उसमें आरम्भ में एक छोटे झटके की और पीछे संकल्प शक्ति के आधार पर हाथ-पैरों की थोड़ी हरकत करने भर की जरूरत पड़ेगी । इस स्थिति को प्राप्त कर लेना अब अधिक कष्ट साध्य नहीं रहा । सिद्धान्ततः तो वह स्वीकार ही कर लिया है और अन्तरिक्ष में तथा धरती पर भारहीनता की स्थिति में मनुष्य का आकाशगमन प्रत्यक्ष करके देख लिया गया है ।

गुरुत्वाकर्षण से रहित कमरे पृथ्वी पर बनाये गए हैं । भारहीनता की स्थिति का अभ्यास कराने के लिए अन्तरिक्ष यात्रियों को उन्हीं कमरों में रखकर उस तरह की स्थिति का अनुभव कराया जाता है । अस्तु अब वह भी आवश्यक नहीं रहा कि गुरुत्वाकर्षण की परिधि में ऊपर उठने के बाद ही आकाशगमन किया जा सके । पृथ्वी के किसी कमरे में विज्ञान ने इस तरह का वातावरण उत्पन्न करके यह सिद्ध कर दिया है कि गुरुत्वाकर्षण के रहित अन्तरिक्ष की स्थिति गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के भीतर भी पैदा की जा सकती है ।

न्यूट्रिनों, फोटोन व ग्रेविटोन परमाणु कणों में ग्रैविटेशन अर्थात् गुरुत्वाकर्षण बल कार्य नहीं करता, इसे सर जान एक्लिस (नोबेल पुरस्कार विजेता १९३३) तथा एड्रियन डाव ने अनेक खोजों से सिद्ध कर दिखाया है । यह कण प्रकाश जैसी सत्ता के ही अनुकण हैं । प्राण के अनुकणों में भी ऐसी क्षमता होती है जो स्थूल कणों को भी गुरुत्वाकर्षण युक्त कर सकती है उस स्थिति में आकाश-गमन की सिद्धि को असत्य नहीं कहा जा सकता है ।

यह साधनाएँ यद्यपि कठिन होती हैं पर असाधारण मनस्वी लोग इन्हें सम्पन्न कर सकते हैं । सच पूछा जाय तो प्राण साधना से इस शक्ति का भी स्वतः विकास होता चलता है ।

मानवी विद्युत अति प्रचण्ड शक्ति

शक्ति का विपुल भण्डार अपनी मुट्ठी में

शरीर के अवयवों के कार्यरत रहने से जीवन प्रक्रिया का संचालन होता है, इस मोटे तथ्य को सभी जानते हैं । शरीर शास्त्र के विद्यार्थियों को यह भी पता है कि—नाड़ी संस्थान के संचालन में अचेतन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मस्तिष्क की कोई सूक्ष्म प्रक्रिया काम करती है । उसी के आधार पर रक्त संचार, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन के क्रिया-कलाप अनायास ही चलते रहते हैं । हमें पता भी नहीं चलता और पलक झपकने, पाचन तन्त्र चालू रहने जैसे अगणित कार्यों की अति सूक्ष्म कार्य पद्धति अपने ढर्रे पर स्वसंचालित रीति से चलती रहती है ।

मस्तिष्क का चेतन मस्तिष्क तो जागृत स्थिति में कोई आवश्यकता उत्पन्न होने पर ही कुछ महत्त्वपूर्ण निर्देश देता है अन्यथा वह ऐसे ही पूर्व स्मृतियों में भावी कल्पनाओं में उलझा रहता है । यों विद्या, बुद्धि, कुशलता, चतुरता आदि में सिर के अग्र भाग में अवस्थित चेतन मस्तिष्क ही काम आता है, पर शरीर की समस्त क्रिया के संचालन, यहाँ तक कि मस्तिष्क की गतिविधियों को भी गतिशील रखने में अचेतन ही काम करता है ।

अचेतन की वह कार्य पद्धति जो स्वसंचालित रूप से शरीर और मस्तिष्क को गतिशील रखती है, उसे 'नाड़ी शक्ति' (Vital Energy) कहते हैं । यह एक रहस्य है कि शरीर को सक्रिय रखने वाली इस दिव्य शक्ति का स्रोत कहाँ है ? चेतन और अचेतन मस्तिष्क तो उसके वाहन मात्र हैं । इन उपकरणों को प्रयोग करने के लिए जो यह क्षमता उपलब्ध होती है उसका भण्डार उद्‌गम कहाँ है । शरीर शास्त्री इस प्रश्न का उत्तर कुछ भी दे सकने में समर्थ नहीं हैं । नाड़ी शक्ति तक ही उनकी पहुँच है । यह कहाँ से आती है, कैसे काम आती है, घटती-बढ़ती क्यों है ? इस रहस्यमय तथ्य के अन्वेषण को वे अपनी शोध परिधि से बाहर ही मानते हैं । वस्तुतः जहाँ भौतिक विज्ञान अपनी सीमा समाप्त कर लेता है, आध्यात्म विज्ञान उसके आगे आरम्भ होता है ।

'जीवन तत्व' यों शरीर से ओत-प्रोत दिखाई पड़ता है और उसी के आधार पर जीवित रहना सम्भव होता हैं, पर यह जीवन तत्व शरीर का उत्पादन नहीं है । यह अदृश्य और अलौकिक शक्ति है, जिसमें से उपयोगी और आवश्यक अंश यह काय-कलेवर अन्तरिक्ष से खींचकर अपने भीतर धारण कर लेता है और उसी से अपना काम चलाता है । इस विश्वव्यापी जीवन तत्व का नाम 'प्राण' है ।

प्राण व्यक्ति के भीतर भी विद्यमान है पर वह विश्वव्यापी महाप्राण का एक अंश ही है । बोतल के भीतर भरी हवा की सीमा की नाप-तौल की जा सकती है और मोटी दृष्टि से उसका पृथक स्वतन्त्र अस्तित्व भी माना जा सकता है, पर वस्तुतः वह विश्वव्यापी वायु तत्व का एक अंश मात्र ही है । इसी प्रकार विश्वव्यापी महाप्राण का एक छोटा-सा अंश मानव शरीर में रहता है, उसी अंश को 'जीवन तत्व' के रूप में हम देखते, अनुभव करते हैं । यह जब न्यून पड़ता है तो व्यक्ति हर दृष्टि से लड़खड़ाने लगता है और जब वह सन्तुलित रहता है तो समस्त क्रिया-कलाप ठीक चलता है । यह जब बढ़ी हुई मात्रा में होता है तो उसे बलिष्ठता, समर्थता, तेजस्विता, मनोबल, ओजस् प्रतिभा आदि में देखा जा सकता है । ऐसे व्यक्ति ही 'महाप्राण' कहलाते हैं । वे अपना प्राण असंख्यों में फूँकने और विश्व का मार्ग-दर्शन कर सकने में भी समर्थ होते हैं । 'प्राण' को ही जीवन का आधार माना जाना चाहिए । शरीर शास्त्री जिस शक्ति स्रोत की व्याख्या 'नाड़ी शक्ति' कहकर समाप्त कर देते हैं वह वस्तुतः प्राण तत्व की एक लघु तरंग मात्र ही है ।

मानव शरीर में विद्यमान प्राण शक्ति से ही समस्त अन्तः संचालन (Afferment) और नाड़ी समूह (Nerves System) इसी से अनुप्राणित हैं । मस्तिष्क की कल्पना, धारणा, इच्छा, निर्णय, नियन्त्रण, स्मृति, प्रज्ञा आदि समस्त शक्तियों का उत्पादन, अभिवर्धन तथा संचालन का मर्म जानना हो तो कुण्डलिनी विद्या का आश्रय लेना चाहिए । अचेतन मन अजस्र संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य कहा जाता है और उसे योग की समस्त सिद्धियों का केन्द्र विन्दु माना जाता है ।

विश्वव्यापी प्राण जब शरीर में प्रवेश करता है तो उसका प्रवेश दो छिद्रों के माध्यम से होता है जिन्हें 'मूलाधार' और 'सहस्रार' कहते हैं । सूर्य की शक्ति जब पृथ्वी पर आती है तो उसके माध्यम दोनों ध्रुव होते हैं । विद्युत भण्डार को जब छोटे यन्त्रों में लाना होता है तब भी प्लग के दो छेदों में दो हुक फँसाने पड़ते हैं । विश्व विद्युत महाप्राण का—शरीर विद्युत—कायप्राण में अवतरित करने के लिए भी उपर्युक्त मूलाधार और सहस्रार छिद्र ही माध्यम होते हैं । कुण्डलिनी इस शक्ति सन्तुलन का नाम है । आत्म-विज्ञान प्राण की मात्रा आवश्यकतानुसार घटाने-बढ़ाने के लिए इन्हीं छिद्रों का प्रयोग करता है इस विज्ञान के समझने से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन तत्व के मूल उद्गम का पता ही नहीं लगता वरन् उसकी मात्रा में न्यूनाधिक करके अभीष्ट सन्तुलन बनाने का भी लाभ मिलता है ।

"इस संसार में दिखाई पड़ने वाली और न दीखने वाली जितनी भी वस्तुएँ तथा शक्तियाँ हैं उन सबके सम्पूर्ण योग का नाम 'प्राण' है । इसे विश्व की अति सूक्ष्म और अति उत्कृष्ट सत्ता (Vital Energy) कह सकते हैं । श्वास-प्रश्वास क्रिया तो उसकी वाहन मात्र है जिस पर सवार होकर वह हमारे समस्त अवयवों और क्रिया-कलापों तक आती-जाती है और उन्हें समर्थ, व्यवस्थित एवं नियन्त्रित बनाये रहती है । भौतिक जगत में सव्याप्त गर्मी, रोशनी, बिजली, चुम्बक आदि को उसी के प्रति स्फुरण समझा जा सकता है । वह बाह्य और अन्तर्मन से सम्बोधित होकर इच्छा के रूप में, इच्छा से भावना के रूप में, "भावना से आत्मा के रूप में परिणत होती हुई, अन्ततः परमात्मा से जा मिलने वाली इस विश्व की सर्व समर्थ सत्ता है । एक प्रकार से उसे परमात्मा का कर्तृत्व माध्यम या उपकरण ही माना जाना चाहिए ।"

प्राण की अजस्त्र धारा हमारे लिए

यह शरीर विद्युत जिसके शरीर में जितनी अधिक मात्रा में संचित होती है वह उतना ही अधिक तेजस्वी, सुन्दर, सक्रिय, स्फूर्तिवान, ओजस्वी, प्रतिभावान दिखाई पड़ता है । शरीर की रोग निरोधक शक्ति एवं मस्तिष्क की सूक्ष्मदर्शिता, दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता इसी विद्युत पर निर्भर है ।

व्यक्तित्व पर तेजोवलय की भारी छाप रहती है । प्रायः यह जन्म-जन्मान्तरों के अभ्यास, प्रयास एवं संस्कार के आधार पर विनिर्मित होता है पर मनुष्य अपनी स्वतन्त्र चेतना का उपयोग करके उसे बदल भी सकता है । सामान्य स्तर के लोग इस बने बनाये तेजोवलय के अनुसार अपना स्वभाव और कर्म बनाये रहते हैं, पर मनस्वी लोग अपनी सुदृढ़ संकल्प शक्ति से अपनी अभ्यस्त आन्तरिक एवं बाह्य स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन भी कर सकते हैं । तब विनिर्मित तेजोवलय में भी वैसा ही परिवर्तन हो जाता है । उसके रंगों में कम्पनों के जाल में इस परिवर्तन का हेर-फेर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । सुकरात कहते हैं—'प्रकृतितः मैं कुख्यात हत्यारा ही हो सकता था, पर मैंने प्रयत्नपूर्वक अपने को बदलने में सफलता प्राप्त की ।

मनुष्य की तेजस्विता का अन्तर्निहित भण्डार

भारत के आध्यात्मवेत्ता किसी समय इस दिशा में बहुत बड़ी सेवा करने और सफलता प्राप्त करने में कृत कार्य हो चुके हैं । बुद्ध की प्रचण्ड विचारधारा ने अपने समय में लगभग ढाई लाख व्यक्तियों को अपनी विलासी एवं भौतिक महत्त्वाकांक्षी गतिविधियाँ छोड़कर उस कष्टकर प्रयोजन को अपनाने के लिए खुशी-खुशी कदम बढ़ाया जो प्रचण्ड मानवीय विद्युत से सुसम्पन्न बुद्ध को अभीष्ट था । भगवान राम ने रीछ वानरों को ऐसे कार्य में जुट जाने के लिए भावावेश में संलग्न कर दिया जिससे किसी लाभ की आशा तो थी नहीं उल्टे जीवन संकट स्पष्ट था । भगवान कृष्ण ने महाभारत की भूमिका रची और उसके लिए मनोभूमियाँ उत्तेजित कीं । पाण्डव उस तरह की आवश्यकता अनुभव नहीं कर रहे थे और न अर्जुन की उस संग्राम में रुचि थी तो भी अभीष्ट प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए मानसिक क्षमता के धनी कृष्ण ने उस तरह की उत्तेजनात्मक परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं । गोपियों के मन में सरस भावाभिव्यजनाएँ उत्पन्न करने का सूत्र संचालन कृष्ण ही कर रहे थे ।

शक्ति इसी स्तर की प्रक्रिया है जिसमें मानुषी विद्युत से सुसम्पन्न व्यक्ति का तेजस् दूसरे अल्प तेजस् व्यक्तियों में प्रवेश करके उन्हें देखते-देखते समर्थ बनाकर रख देती है । दीपक से दीपक जलने का, पारस स्पर्श से लोहा, सोना होने का उदाहरण इसी प्रकार के सन्दर्भ में दिया जाता है ।

इस ओजस् ब्रह्मवर्चस आत्मबल का ही एक छोटा स्वरूप मानवी विद्युत है । व्यक्तित्व की प्रखरता होने पर यह प्राण शक्ति बनकर निखरती-उभरती है । ऐसे व्यक्ति बाहर से प्रभावशाली भले ही दिखाई न पड़ें, पर उनका आन्तरिक तेजस् असाधारण होता है । इस शक्ति को धन वैभव, विद्या, शरीर बल, शस्त्र बल आदि भौतिक साधनों की तुलना में असंख्य गुना महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है ।

इसी ओजस् धारा के अनेक शक्ति संस्थान सूक्ष्म शरीर में भरे पड़े हैं । वे यदि जागृत किए जा सकें तो अपने भीतर से ही देवता प्रकट होते देखे जा सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय पूर्व बम्बई के एक विद्वान् बी. जे. रेले ने एक पुस्तक लिखी थी—'दी वैदिक गार्ड्स एस. फिगर्स ऑफ बायोलॉजी' उसमें उसने सिद्ध किया था कि वेदों में वर्णित आदित्य, वरुण, अग्नि, मारुत, मित्र, अश्विन, रुद्र आदि मस्तिष्क के स्थान विशेष में सन्निहित दिव्य शक्तियाँ हैं जिन्हें जागृत करके विशिष्ट क्षमता सम्पन्न बनाया जा सकता है ।

ग्रान्ट मेडीकल कालेज के अतारभी प्राध्यापक वाई. जी. नाडगिर और एडगर जे. टामस ने संयुक्त रूप में पुस्तक की भूमिका लिखते हुए कहा है कि वैदिक ऋषियों के शरीर शास्त्र सम्बन्धी गहन ज्ञान पर अचम्भा होता है कि उस साधनहीनता समय में किस प्रकार उन्होंने इतनी गहरी जानकारियाँ प्राप्त की होंगी । आँख की सीप से ऊपर के मस्तिष्क का भाग वृहत मस्तिष्क कहलाता है । यही सेरिबेलम ब्रह्म चेतना शक्ति का केन्द्र है । इन्द्र और सविता यहीं निवास करते हैं । नाक की सीध में सिर के पीछे वाला भाग सेरिबेलम अनुमस्तिष्क रुद्र देवता का कार्य क्षेत्र है । मस्तिष्क का ऊपरी भाग रोटसी, मध्य भाग अन्तरिक्ष और निम्न भाग पृथ्वी बतलाया गया है । रोटर्स से दिव्य चेतना का प्रवाह, अन्तरिक्ष में ग्रह-नक्षत्रों वाला ब्रह्माण्ड और पृथ्वी में अपने लोक में काम कर रही भौतिक शक्तियों का सूत्र सम्बन्ध जुड़ा रहता है । सप्तधार सोम अग्नि, स्वर्ग द्वार, द्रौण कलश एवं अश्विनी शक्तियों का सम्बन्ध रोटसी क्षेत्र से है ।

अग्नि से नीचे वाले भाग को स्वर्ग द्वार और उससे नीचे वाले भाग को द्रौण कलश कहा गया है । जहाँ से सप्त सरिताएँ सप्त नदियाँ बहती हैं । द्रौण कलश में सोम रस भरा रहता है । जिसके आधार पर स्नायु केन्द्रों की शक्ति प्राप्त होती है । मेरु रज्जुओं के साथ बँधे हुए दो ग्रन्थि गुच्छक अश्विनीकुमार बताये गए हैं । मस्तिष्क की परिधि को घेरे हुए एक विशेष द्रव सम्पूर्ण मस्तिष्क की चेतना प्रदान करता इसी को वरुण कहते हैं, इसी केन्द्र में अग्नि देवता का ज्ञानकोष है । मस्तिष्क के पिछले भाग में अवस्थित "टेपोलर लीव" प्राचीनकाल का शंख पालि है । इसके नीचे की पीयूष ग्रन्थियाँ जिन्हें मेदुला भी कहते हैं अश्वमेध यज्ञ की वेदी है । अश्वमेध अर्थात् इन्द्रिय परिष्कार इसके लिए पीयूष ग्रन्थि वाला क्षेत्र ही उत्तरदायी है ।

सुषुप्ति को जागृति में परिणत करने के लिए ही अपने आप को तपाना पड़ता है । तपश्चर्या के फलस्वरूप सिद्धियाँ मिलने के जो प्रमाण उदाहरण मिलते हैं । उनके पीछे प्राण-तत्व का विकास और आन्तरिक परिष्कार का लक्ष्य ही सन्निहित रहता है । बाहर से कोई देवता हमारी सहायता करने के लिए दौड़ा नहीं आता वरन् तप साधना से आन्तरिक प्रखरता ही देव शक्ति बनकर हमें आत्म सम्पदा से ओत-प्रोत करती है । यह सम्पत्ति जिनके पास है उसे सुखी और समुन्नत रहने तथा दूसरों को महत्त्वपूर्ण अनुदान देते रहने का श्रेय मिलता है ।

शरीर, मन और अन्तःकरण में काम करने वाली विद्युतशक्ति के अभिवर्धन और सदुपयोग का विधान प्रक्रिया का नाम ही योग-साधना है । विभिन्न प्रकार के तप साधन इसी प्रयोजन के लिए किए जाते हैं । प्राणवान व्यक्तियों के समीप रहकर उनके विद्युत-प्रवाह का लाभ उसी प्रकार उठाया जा सकता है जैसा कि चन्दन वृक्ष के समीप उगे हुए झाड़-झंखाड़ भी सुगन्धि युक्त होने का लाभ उठाते हैं । मौन, एकान्त सेवन और ब्रह्मचर्य जैसी साधनाएँ इसीलिए हैं कि वह विद्युत भण्डार निरर्थक कार्यों में खर्च न होकर संग्रहीत रखा जा सके और उसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों में खर्च किया जा सके । महान व्यक्तित्वों का सान्निध्य, सम्पर्क अपने आप में एक बड़ा लाभ है । बिना सत्संग और परामर्श के भी ऐसा सम्पर्क स्वल्प प्राण व्यक्तियों के लिए अमृत वर्षा जैसा अति महत्त्वपूर्ण अनुदान प्रस्तुत करता है । स्पष्ट है कि आग और बिजली के सम्पर्क में आने वाली वस्तुओं में यदि ग्रहण करने की शक्ति हो तो वे भी उसी स्तर की बन जाती हैं ।

प्रयत्न करने पर यही चेतन चुम्बकत्व के—आत्मबल के रूप में विकसित हो सकता है और आगे चलकर योग-साधना की सिद्धियों और देव अनुग्रह से मिलने वाली अभूतियों के रूप में सामने आता है । तपश्चर्या, तितीक्षा और कष्टसाध्य साधना पथ पर दूर तक चल सकना, इस आत्मबल के सहारे ही सम्भव होता है । विकसित स्तर का यही आत्म तेजस् सूक्ष्म जगत में काम करने वाली दिव्य शक्तियों को खींच लाता है और उस व्यक्ति की हथेली पर लाकर रख देता है ।

गायत्री उपासना : प्रकाश की साधना

आध्यात्म विज्ञान में स्थान-स्थान पर प्रकाश की साधना और प्रकाश की याचना की चर्चा मिलती है । यह प्रकाश बल्ब, बत्ती अथवा सूर्य, चन्द्र आदि से निकलने वाला उजाला नहीं वरन् वह परम ज्योति है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो इस विश्व में चेतना का आलोक बनकर जगमगा रही है । गायत्री की उपास्य सविता देवता इसी परम ज्योति को कहते हैं । इसका अस्तित्व ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में प्रत्यक्ष और कण-कण में सव्याप्त जीवन ज्योति के रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने को भी देख सकता है । इसकी जितनी मात्रा जिसके भीतर विद्यमान हो समझना चाहिए कि उसमें उतना ही अधिक ईश्वरीय अंश आलोकित हो रहा है ।

प्रकाश रश्मियों की लम्बाई एक इंच के सोलह से ३० लाख हिस्से के बराबर होती है । रेडियो पर सुनी जाने वाली ध्वनि तरंगों की गति एक सेकण्ड में एक लाख, छियासी हजार मील की होती है, वे एक सेकण्ड में सारी धरती की सात परिक्रमा कर लेती हैं । शब्द और प्रकाश की तरंगों का आकार एवं प्रवाह इतना सूक्ष्म एवं गतिशील हैं कि उन्हें बिना सूक्ष्म यन्त्रों की सहायता से हमारी इन्द्रियाँ अनुभव नहीं कर सकती हैं ।

डॉ. जे. सी. ने 'अणु और आत्मा' ग्रन्थ में स्वीकार किया है, कि मानव अणुओं की प्रकाश वाष्प न केवल मनुष्यों में वरन् अन्य जीवधारियों, वृक्ष वनस्पति, औषधि आदि में भी होती है, यह प्रकाश अणु ही जीवधारी के यथार्थ शरीरों का निर्माण करते हैं खनिज पदार्थों से बना मनुष्य या जीवों का शरीर तो तभी तक स्थिर रहता है, जब तक यह प्रकाश अणु शरीर में रहते हैं । इन प्रकाश अणुओं के हटते ही स्थूल शरीर बेकार हो जाता है, फिर उसे जलाते या गाढ़ते ही बनता है । खुला छोड़ देने पर तो उसकी सड़ाँद से उसके पास एक क्षण भी ठहरना कठिन हो जाता है ।

स्वभाव, संस्कार, इच्छाएँ, क्रिया शक्ति या सब इन प्रकाश अणुओं का ही खेल है । हम सब जानते हैं कि प्रकाश का एक अणु (फोटोन) भी कई रंगों के अणुओं से मिलकर बना होता है । मनुष्य शरीर की प्रकाश आभा भी कई रंगों से बनी होती है । डॉ. जे. सी. ट्रस्ट ने अनेक रोगियों, अपराधियों तथा सामान्य व श्रेष्ठ व्यक्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण करके बताया है कि जो मनुष्य जितना श्रेष्ठ और अच्छे गुणों वाला होता है, उसके मानव अणु दिव्य तेज और आभा वाले होते हैं, जबकि अपराधी और रोगी व्यक्तियों के प्रकाश अणु क्षीण और अन्धकारपूर्ण होते हैं । उन्होंने बहुत से मनुष्यों के काले धब्बों को अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर उनके रोगी या अपराधी होने की बात को बताकर लोगों को स्वीकार करा दिया था कि सचमुच रोग और अपराधी वृत्तियाँ काले रंग के अणुओं की उपस्थिति का प्रतिफल होते हैं, मनुष्य अपने स्वभाव में चाहते हुए भी तब तक परिवर्तन नहीं कर सकता, जब तक यह दूषित प्रकाश अणु अपने अन्दर विद्यमान बने रहते हैं ।

यही नहीं जन्म-जन्मान्तरों तक खराब प्रकाश अणुओं की यह उपस्थिति मनुष्य से बलात्, दुष्कर्म कराती रहती है, इस तरह मनुष्य पतन के खड्डे में बार-बार गिरता और अपनी आत्मा को दुःखी बनाता रहता है । जब तक यह अणु नहीं बदलते न निष्क्रिय होते तब तक मनुष्य किसी भी परिस्थिति में अपनी दशा नहीं सुधार पाता ।

यह तो है कि अपने प्रकाश अणुओं में यदि तीव्रता है तो उससे दूसरों को आकस्मिक सहायता दी जा सकती है । रोग दूर किए जा सकते हैं । खराब विचार वालों को कुछ देर के लिए अच्छे सन्त स्वभाव में बदला जा सकता है । महर्षि नारद के सम्पर्क में आते ही डाकू वाल्मीकि के प्रकाश अणुओं में तीव्र झटका लगा और वह अपने आपको परिवर्तित कर डालने को विवश हुआ । भगवान बुद्ध के इन प्रकाश अणुओं से निकलने वाली विद्युत विस्तार सीमा में आते ही डाकू अंगुलिमाल की विचारधाराएँ पलट गई थीं । ऋषियों के आश्रमों में गाय और शेर एक घाट पानी पी आते थे, वह इन प्रकाश-अणुओं की ही तीव्रता के कारण होता था । उस वातावरण के निकलते ही व्यक्तित्वगत प्रकाश अणु फिर बलवान हो उठने से लोग पुनः दुष्कर्म करने लगते हैं, इसलिए किसी को आत्म-शक्ति या अपना प्राण देने की अपेक्षा भारतीय आचार्यों ने एक पद्धति का प्रसार किया था, जिसमें इन प्रकाश-अणुओं का विकास कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार कर सकता था । देव उपासना उसी का नाम है ।

उपासना एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें हम अपने भीतर के काले, मटमैले और पापाचरण को प्रोत्साहन देने वाले प्रकाश अणुओं को दिव्य तेजस्वी, सदाचरण और शान्ति एवं प्रसन्नता की वृद्धि करने वाले मानव-अणुओं में परिवर्तित करते हैं । विकास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की इस प्रक्रिया में किसी नैसर्गिक तत्व, पिण्ड या ग्रह-नक्षत्र की साझेदारी होती है, उदाहरण के लिए जब हम गायत्री की उपासना करते हैं तो हमारे भीतर के दूषित प्रकाश अणुओं को हटाने और उसके स्थान पर दिव्य प्रकाश अणु भर देने का माध्यम 'गायत्री' का देवता सविता अर्थात् सूर्य होता है ।

वर्ण रचना और प्रकाश की दृष्टि से यह मानव-अणु भिन्न-भिन्न स्वभाव के होते हैं । मनुष्य का जो कुछ भी स्वभाव आज दिखाई देता है, वह इन्हीं अणुओं की उपस्थिति के कारण होता है, यदि इस विज्ञान को समझा जा सके तो न केवल अपना जीवन शुद्ध, सात्विक, सफल रोग मुक्त बनाया जा सकता है, वरन् औरों को भी प्रभावित और इन लाभों से लाभान्वित किया जा सकता है । परलोक और सद्गति के आधार भी यह प्रकाश-अणु या मानव अणु ही हैं ।

वस्तुएँ हम प्रकाश की सहायता से देख सकते हैं, किन्तु साधारण प्रकाश कणों की सहायता से हम शरीर के कोश (सैल) को देखना चाहें तो वह इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें देख नहीं सकते । इलेक्ट्रॉनों को जब ५०००० वोल्ट आवेश पर सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) में भेजा जाता है तो उनकी तरंग दैर्ध्य श्वेत कणों की तुलना में १/१०००० भाग सूक्ष्म होती हैं, तब वह हाइड्रोजन के परमाणु का जितना व्यास होता है, उससे भी ४२.४वें हिस्से छोटे परमाणु में भी प्रवेश करके वहाँ की गतिविधियाँ दिख सकती हैं । उदाहरण के लिए यदि मनुष्य की आँख एक इन्च घेरे को देख सकती है तो उससे भी ५०० अंश कम को प्रकाश सूक्ष्मदर्शी और १०००० अंश छोटे भाग को सूक्ष्मदर्शी । इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि मनुष्य शरीर के कोश (सेल्स) का चेतन भाग कितना सूक्ष्म होना चाहिए । इस तरह के सूक्ष्मदर्शी से जब कोश का निरीक्षण किया गया तो उसमें भी एक टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई दिया । चेतना या महतत्त्व इस प्रकार प्रकाश की ही अति सूक्ष्म स्फुरणा है, यह विज्ञान भी मानता है ।

भारतीय योगियों से ब्रह्मरन्ध्र स्थित जिन षटचक्रों की खोज की है, सहस्रार कमल उनसे बिल्कुल अलग सर्वप्रभुता सम्पन्न है । यह स्थान कनपटियों से दो-दो इन्च अन्दर भृकुटि के लगभग ढाई या तीन इन्च अन्दर छोटे से पोले में प्रकाश पुंज के रूप में है । तत्वदर्शियों के अनुसार यह स्थान उलटे छाते या कटोरे के समान १७ प्रधान प्रकाश तत्वों से बना होता है, देखने में मरकरी लाइट के समान दिखाई देता है । छान्दोग्य उपनिषद् में सहस्रार दर्शन की सिद्धि पाँच अक्षरों में इस तरह प्रतिपादित की 'तस्य सर्वेषु कामचारी भवति' अर्थात् सहस्रार प्राप्त कर लेने वाला योगी सम्पूर्ण भौतिक विज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है । यही वह शक्ति केन्द्र है जहाँ से मस्तिष्क शरीर का नियन्त्रण करता है और विश्व में जो कुछ भी मानवकृत विलक्षण विज्ञान दिखाई देता है, उनका सम्पादन करता है ।

आत्मा या चेतना जिन अणुओं से अपने को अभिव्यक्त करती है, वह यह प्रकाश अणु ही है, जबकि आत्मा स्वयं उससे भिन्न है । प्रकाश-अणुओं को प्राण, विधायक शक्ति, अग्नि, तेजस् कहना चाहिए, वह जितने शुद्ध, दिव्य, तेजस्वी होंगे, व्यक्ति उतना ही महान तेजस्वी, यशस्वी, वीर, साहसी और कलाकार होगा । महापुरुषों के तेजोवलय उसी बात के प्रतीक हैं जबकि निकृष्ट कोटि के व्यक्तियों में यह अणु अत्यन्त शिथिल मन्द और काले होते हैं । हमें चाहिए कि हम इन दूषित प्रकाश अणुओं को दिव्य अणुओं में बदलें और अपने को भी महापुरुषों की श्रेणी में ले जाने का यत्न करें ।

ब्रह्म विद्या का उद्गाता 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना में इस दिव्य प्रकाश की याचना करता है । इसी की प्रत्येक जागृत आत्मा को आवश्यकता अनुभव होती है । अस्तु गायत्री उपासक अपने जप प्रयोजन में इसी ज्योति को अन्तः भूमिका में अवतरण करने के लिए सविता देवता का ध्यान करता है ।

गायत्री का देवता सविता

गायत्री उपासना प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य धर्म कर्तव्य माना गया है । इस उपासना से अर्जित प्राण की मात्रा और उसके व्यावहारिक जीवन के उपयोग के आधार पर ही जाति व्यवस्था तक का निर्धारण करने की परम्परा रही है । ब्राह्मी चेतना की समीपता, धारणा, विकास और ब्रह्मचर्य के विस्तारण के कारण एक वर्ग को ब्राह्मण कहा गया है । ब्राह्मण का तात्विक अर्थ किसी ब्राह्मण माता-पिता से पैदा हुआ नहीं अपितु ब्राह्मी शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व माना गया है । कल्पना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की गई है कि ऐसे व्यक्तियों में ब्रह्मतेज की बहुलता होती है । यह ब्रह्मतेज और कुछ नहीं गायत्री उपासना से अर्जित प्रचुर परिमाण में प्राण और उसके फलस्वरूप विकसित हुई मेधा एवं ऋतम्भरा प्रज्ञा ही है । यह सुनिश्चित है कि ऐसे व्यक्ति की भावनाएँ अत्यधिक आस्तिक, आस्थावादी, विशाल, उदार और परमार्थ परायण होंगी । वह निरन्तर धर्म कृत्यों द्वारा मनुष्य जाति को ऊर्ध्वगामी चिन्तन और आदर्श नेतृत्व की ओर मोड़े रहता है इसलिए वह समाज का शिरोमणि, श्रद्धास्पद और सम्मानास्पद ठहराया गया । अगली श्रेणियाँ क्रमशः इस तत्व की कमी और पार्थिव जीवन के प्रति क्रमशः अधिक आसक्ति के अनुसार निर्धारित हुई हैं, पर तीनों वर्णों के लिए गायत्री उपासना को अनिवार्य माना गया जो सामाजिक कर्तव्यों का उपेक्षक और घोर सांसारिक हुआ उसे अन्त्यज कहा गया । यह विशुद्ध वैज्ञानिक समाज व्यवस्था थी । आज भले ही उसका स्वरूप विकृत क्यों न हो गया हो ।

सामान्यतः यह एकाएक समझ में आने वाली बात नहीं है कि भला मनुष्य की तरह विचारशील चेतन सत्ता बनाने वाली प्राण सत्ता इतनी व्यापक कैसे हो सकती है कि वह वायुमण्डल में घुला हुआ हो, किन्तु विज्ञान ने इस धारणा को पूरी तरह बुद्धि संगत ठहरा दिया है ।

विद्युत वैज्ञानिकों की दृष्टि में पृथ्वी एक चुम्बकीय शक्ति से भरा-पूरा गोला है । रासायनिक पदार्थों का अस्तित्व अवश्य है पर उनकी क्षमता, कार्य प्रणाली, परिवर्तन पद्धति, सम्मिश्रण से रूपान्तरण की प्रक्रिया जैसी हलचलों के पीछे वह विद्युत शक्ति ही काम करती है जिसे प्रत्येक पदार्थ का प्राण कहना चाहिए । यदि इसका अपहरण कर लिया जाय तो वस्तु अपनी मौलिक विशेषताएँ खो बैठेगी और मृत तुल्य बन जायेगी ।

यह तथ्य न केवल वस्तुओं के सम्बन्ध में है अपितु जीवित प्राणियों के सम्बन्ध में भी है । जीवन और मृत्यु के बीच अन्तर करने वाले तत्व को आध्यात्म की भाषा में 'प्राण' कहा जाता है । भौतिक विज्ञानी उसे बिजली की ही एक किस्म मानते हैं ।

चुम्बक और विद्युत यों प्रत्यक्षतः दो पृथक-पृथक सत्ताएँ हैं पर वे परस्पर अविछिन्न रूप से सम्बद्ध हैं और समयानुसार एक धारा का दूसरी में परिवर्तन होता रहता है । यदि किसी 'सरकिट' का चुम्बकीय क्षेत्र लगातार बदलते रहा जाय तो बिजली पैदा हो जायेगी । इसी प्रकार लोहे के टुकड़े पर लपेटे हुए तार में से विद्युतधारा प्रवाहित की जाय तो वह चुम्बकीय शक्ति सम्पन्न बन जायेगी ।

इससे यह भी सुनिश्चित है कि गायत्री उपासना के समय सविता के ध्यान से हमारे मस्तिष्क का चुम्बकत्व सूर्य के प्रकाश कणों के चुम्बकत्व को आकर्षित करता और ग्रहण करता हुआ हमारी जीवनी-शक्ति प्राण को बढ़ाता रहता है ।

गायत्री उपासना से प्राण शक्ति का अभिवर्धन

"गाय" का अर्थ संस्कृत में प्राण और "त्री" का अर्थ त्राण । "गायते प्राणः इति गायत्री"अर्थात् जो प्राणों का त्राण करती है उसे गायत्री कहते हैं । त्राण का अर्थ छुटकारा दिलाना, मुक्त करना होता है । प्राण हमारे शरीर, इन्द्रियों और उनकी विषय वासनाओं में पाशबद्ध "ब्राह्मी" अथवा चेतन तत्व है उसे उस बन्धन से मुक्ति दिलाकर चेतन सत्ता का बोध करना यही प्राणों का परिमाण हुआ । इस अर्थ में प्राणों का सारा विज्ञान गायत्री में आता है । पिछले अध्यायों में जिन अतीन्द्रिय क्षमताओं की चर्चा हुई है वह इस तरह गायत्री उपासना से ही प्राप्त किए जा सकते हैं ।

गायत्री उपासना के समय सूर्य से किस तरह विशाल परिमाण में प्राण ऊर्जा आकर्षित, धारण और विकसित की जा सकती है इस पर भारतीय मनीषियों ने व्यापक खोज की थी । प्राण को तत्वदर्शियों ने दो भागों में विभक्त किया है—(१) अणु, (२) विभु । अणु वह जो पदार्थ जगत में सक्रियता बनकर परिलक्षित होता है । विभु वह जो चेतन जगत में जीवन बनकर लहलहा रहा है । इन दो विभागों को अधिदैविक, कास्मिक और आध्यात्मिक, माइक्रोकास्मिक अथवा हिरण्य गर्भ कहा जाता है ।

आधि दैविकेन समष्टि व्यष्टि रूपेण हैरण्य गर्भेण प्राणात्मनैवैतद् विभुत्व माम्नायते नाध्यात्मिकेन ।

—ब्रह्मसूत्र शंकर भाष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समष्टि रूप हिरण्य गर्भ विभु है । व्यष्टि रूप आधिदैविक अणु ।

इस अणु शक्ति को लेकर ही पदार्थ विज्ञान का सारा ढाँचा खड़ा किया गया है । विद्युत, ताप, प्रकाश, विकिरण आदि की अनेकानेक शक्तियाँ उसी स्रोत में गतिशील रहती हैं । अणु के भीतर जो सक्रियता है वह सूर्य की है । यदि सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक न पहुँचे तो यह सर्वथा नीरव स्तब्धता परिलक्षित होगी । कहीं कुछ भी हलचल दिखाई न पड़ेगी । अणुओं की जो सक्रियता पदार्थों का आविर्भाव, अभिवर्धन एवं परिवर्तन करती है, उसका कोई अस्तित्व दिखाई न पड़ेगा, भौतिक विज्ञान से इस सूर्य द्वारा पृथ्वी को प्रदत्त अणुशक्ति के रूप में पहचाना है और उसे विभिन्न प्रकार के आविष्कार करके सुख साधनों का आविर्भाव किया है । शक्ति के कितने ही प्रचण्ड स्रोत करतलगत किए हैं, पर यह न ही मान बैठना चाहिए । विश्व-व्यापी शक्ति भण्डार मात्र अणु शक्ति की भौतिक सामर्थ्य तक ही सीमाबद्ध है ।

जड़ जगत में शक्ति तरंगों के रूप में संव्याप्त सक्रियता के रूप में प्राण का परिचय दिया जा सकता है और चेतन जगत में सम्वेदना उसे कहा जा सकता है । इच्छा, ज्ञान और क्रिया इसी सम्वेदना के तीन रूप हैं । जीवन्त प्राणी इसी के आधार पर जीवित रहते हैं । उसी के सहारे चाहते, सोचते और प्रयत्नशील होते हैं । इस जीवनी-शक्ति की जितनी मात्रा जिसे मिल जाती है वह उतना ही अधिक प्राणवान कहा जाता है । आत्मा को महात्मा, देवात्मा और परमात्मा बनने का अवसर इस प्राण शक्ति अधिक मात्रा उपलब्ध करने पर ही सम्भव होता है । चेतना की विभु सत्ता जो समस्त विश्व ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है चेतन प्राण कहलाती है । उसी का अमुक अंश प्रयत्नपूर्वक अपने में धारण करने वाला प्राणी, प्राणवान एवं महाप्राण बनता है ।

प्रश्नोपनिषद् में प्राण का उद्गम केन्द्र सूर्य को माना गया है—

स एष वैश्वानरो विश्व रूपः प्राणोऽग्निरुद यते ।

—प्रश्न. १-७

यह भौतिक व्याख्या है सभी जानते हैं कि पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति का श्रेय सूर्य किरणों को है ।

स्थूल जगत की जीवनी शक्ति का केन्द्र सूर्य है । उसके पाँच प्राण तत्व हैं ।

आदित्यो हवै वाह्यः प्राण उदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्राण । मनु गृहणानः पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुषस्यापान । मवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः स समानो वायु ध्वनिः तेजो हवै उदानः ।

—प्रश्नोपनिषद्

यह सूर्य ही बाह्य प्राण है । उदय होकर दृश्य जगत की हलचलों को क्रियाशील करता है । इस विश्व रूपी शरीर को यह सूर्य का महाप्राण ही जीवन्त रखता है । पाँच तत्वों में वह पाँच प्राण बनकर संव्याप्त है ।

सोवियत रूस के वैज्ञानिक डॉ. जी. ए. उशाकोव ने अपने ध्रुव शोध के विवरणों में एक और नया तथ्य प्रतिपादित किया है । वे कहते हैं कि जीवन का आधार मानी जाने वाली ऑक्सीजन, वायु पृथ्वी की अपनी उपज अथवा सम्पत्ति नहीं है । वह सूर्य से प्राणरूप में प्रवाहित होती हुई चली आती है और धरती के वातावरण में यहाँ की तात्विक प्रक्रिया के साथ सम्मिश्रित होकर प्रस्तुत 'ऑक्सीजन' बन जाती है । यदि सूर्य अपने उस प्राण प्रवाह में कटौती कर दे अथवा पृथ्वी ही किसी कारण उसे ठीक तरह ग्रहण न कर सके तो ऑक्सीजन की न्यूनता के कारण धरती का जीवन संकट में पड़ जायेगा । पृथ्वी से ६२ मील ऊँचाई पर यह प्राण का ऑक्सीजन रूप में परिवर्तन आरम्भ होता है । यह ऑक्सीजन बादलों की तरह चाहे जहाँ नहीं बरसता रहता वरन् वह भी सीधा उत्तरी ध्रुव पर आता है और फिर दक्षिणी ध्रुव के माध्यम से समस्त विश्व में वितरित होता है । ध्रुव प्रभा में रंग-बिरंगी झिलमिल का दीखना विद्युत मण्डल के साथ ऑक्सीजन की उपस्थिति का प्रमाण है ।

प्राणायाम का, प्राण विद्या का उद्देश्य उसी सूर्य प्राण को अभीष्ट परिमाण में ग्रहण करके शरीर में धारण करना है । चुम्बकीय विद्युत प्रवाह को दीप्तिमान करने के लिए जिस प्राण अभिवर्धन की आवश्यकता होती है उसे प्राण साधना क्रम से विशेष प्राणायामों द्वारा उपलब्ध किया जाता है । स्वरयोग एवं प्राणविद्या की निर्धारित साधना पद्धति द्वारा कुण्डलिनी अग्नि को ठीक उसी प्रकार प्रदीप्त करते हैं जैसे लुहार अपनी आग की भट्टी को धोंकनी की हवा से तेज करता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । नासिका छिद्रों से प्राण-तत्व को अनन्त आकाश से आकर्षित करके सूर्य तत्व द्वारा प्रेरित चुम्बकीय प्रवाह को तीव्र बनाया जाता है ।

इस प्रकार उत्पन्न हुए प्रकाश के कारण सारा सोया हुआ प्राण जीवित हो उठता है । सूर्य के निकलते ही पशु, पक्षी, कीट, पतंग सभी निद्रा त्याग कर अपने कार्य में उत्साहपूर्वक लगते दिखाई देते हैं । कलियाँ खिलने लगती हैं और वायु का प्रभाव तीव्र हो जाता है । ठीक इसी प्रकार प्राण साधना से जब हमारे दोनों ध्रुव शक्ति प्रवाह से भरने लगते हैं तो सूर्योदय जैसी हलचल उत्पन्न होती है और न केवल स्थूल शरीर के वरन् सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर के भी दृश्य और अदृश्य अंग अवयव अपनी सक्रियता प्रदर्शित करने लगते हैं । साधक को अनुभव होता है मानो वह केंचुली छोड़कर स्फूर्ति या सर्प की तरह नव-चेतना का अपने में अनुभव कर रहा है ।

कभी-कभी सूर्य मण्डल में विशेष उत्क्रान्ति उत्पन्न होने से उस प्रवाह की एक लहर पृथ्वी पर भी चली जाती है और ध्रुव प्रदेश में चुम्बकीय आँधी तूफानों का सिलसिला चल पड़ता है । इनकी प्रतिक्रिया उसे ध्रुव क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रखती वरन् समस्त विश्व को प्रभावित करती है । कई बार यह चुम्बकीय तूफान बड़े उपयोगी और सुखद परिणाम उत्पन्न करते हैं और कई बार इनमें कुछ ऐसे तत्व घुले हुए चले आते हैं जिनका प्रभाव समस्त विश्व को कई प्रकार के संकटों में धकेल दे । एक बार सन् १६३८ में एक चुम्बकीय तूफान ध्रुव प्रदेश पर आया था, उसकी भयानक चमक अफ्रीका तथा क्रीमिया तक देखी गई । उसका प्रभाव न केवल वस्तुओं पर पड़ा वरन् जीवधारी भी बुरी तरह प्रभावित हुए । ऐसी ही विद्युत आँधियों ने धरती पर 'हिम युग' उपस्थित कर दिया, मुद्दतों तक बहुत बड़े भू-भाग को बर्फ ने ढके रखा । समुद्र में बाढ़ आई और जमीन समुद्र में, समुद्र मरुस्थल में बदल गया । कहते हैं कहीं ऐसे ही वायु-प्रलय, जल-प्रलय, अग्नि-प्रलय भी उपस्थित हो सकता है और यह चुम्बकीय आँधियाँ धरती के वर्तमान स्वरूप को कुछ से कुछ करके रख सकती हैं ।

प्रकृति गत चुम्बकीय आँधियाँ पंचतत्वों के हेर-फेर अथवा नियति के विधान से आती हैं, पर योग साधना से ऐसी चुम्बकीय आँधियाँ सूक्ष्म जगत में उठाई जा सकती हैं और आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रों को ही नहीं, दिव्य सत्ता केन्द्रों, देवताओं को उससे प्रभावित किया जा सकता है । इस जगत को प्रभावित करने वाले चेतना केन्द्र सविता को तपस्वी लोग हिला-डुला सकते हैं । ध्रुव प्रकाश में प्रखर तीव्रता मार्च और सितम्बर में (चैत्र और आश्विन की नवरात्रि के दिनों में) अत्याधिक होती है । इसका कारण पृथ्वी का अक्ष सूर्य के साथ उचित कोण पर होता है । बीज बोने का वही समय अधिक प्रभावी होता है । गर्भ स्थापनाएँ भी उन्हीं दिनों अधिक होती हैं । फूल खिलने का समय यही है । साधक लोग साधनाओं में अधिक सफलता भी इन्हीं दिनों पाते हैं । हम अपनी पृथ्वी कामकला को सूर्य तेज कला के साथ जब भी जोड़ सकें तभी यह प्रकाश प्रवाह में तीव्रता के कण आकर्षित कर प्रकाश शरीर वाले सूक्ष्म शरीर को विकसित किया जा सकता है, यह थोड़ी कठिन उपपत्ति (सोलूशन) हैं तथापि विज्ञान अब उसे भी प्रमाणित करने लगा है । इस प्रमाण के लिए बेचारे रूसी खगोलशास्त्री श्री चिजोव्स्की को भारी तप करना पड़ा ।

पहले तो वह घण्टों कभी सूर्य की तेज धूप में तो कभी चन्द्रमा के शीतल प्रकाश में बैठे रहते और होने वाले अपने मानसिक परिवर्तनों को लिखते रहते । फिर उन्होंने पिछले ४०० वर्षों के इतिहास में मानवीय स्वभाव के उतार-चढ़ाव तथा अनेक प्रकार की बीमारियों के वार्षिक आँकड़े एकत्रित कर देखा कि सूर्य आदि की चमक और उसके ११ वर्षीय कलंकों (सन-स्पाट्स) से मनुष्य की मनोदशा से गहरा सम्बन्ध है । इस सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा तो कभी बाद में करेंगे पर यहाँ यह समझ लेना नितान्त आवश्यक है कि विचार प्रणाली का सम्बन्ध मस्तिष्क की जिन थॉयराइड, एड्रीनल और पिचुद्री आदि ग्रन्थियों से है, वे सब नलिका विहीन (डक्टलेस) होती हैं, अर्थात् उनमें किसी प्रकार का रासायनिक प्रभाव न होना, प्रकाश या प्राण के सूक्ष्म कण भी उसी तरह प्रवाहित होते हैं, जिस प्रकार तार में विद्युत-कण । जैसे-जैसे यह प्रकाश-कण होते हैं, वैसे-वैसे भाव उठते हैं । सूर्य की तेज धूप में क्लान्ति, क्रोध, वीरता जैसे भाव आते हैं तो चन्द्रमा के प्रकाश में आल्हाद और कामुकता के । अब यदि कोई व्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना ध्यान किसी प्रकाश-स्रोत पर लगाता है तो इनका अर्थ यह हुआ कि हमारी नलिका विहीन ग्रन्थियाँ उस स्रोत विशेष से विद्युत चुम्बकीय सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं और वह कण तेजी से हमारे अन्दर भरने लगते हैं । ध्यान जितना एकाग्र और गहन होता है, इस आकर्षण की और सूक्ष्म शरीर के विकास की गति को हम उतना ही स्पष्ट अनुभव करते-करते एक दिन उस स्रोत से तादात्म्य कर सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं ।

उदाहरण के लिए गायत्री उपासना के साथ सूर्य का ध्यान भी करना पड़ता है । ध्यान की अवस्था में सूर्य के विद्युत-चुम्बकीय प्रवाह से अपने मस्तिष्क की चोटी वाले स्थान से नलिका विहीन ग्रन्थियों का सम्बन्ध जुड़ जाता है और सूर्य तेज के कण हमारे शरीर में प्रवेश करते हुए चले जाते हैं, इस तरह अपना प्राण शरीर विकसित होता हुआ सूर्य प्रकाश के समान हल्का दिव्य तेजस्वी होता चला जाता है ।

प्राण शक्ति से सर्वतोन्मुखी कल्याण साधना

इन्द्र हँसकर बोले, 'वत्स, मैं यह जानता हूँ कि पुरुषार्थी व्यक्ति को संसार में कोई अभाव नहीं रहता । अपने सुख-समृद्धि के साधन वह आप जुटा लेता है तो भी उसे विश्व-हित की कामना करनी चाहिए । लोक-सेवा के पुण्य से बढ़कर पृथ्वी में और कोई सुयश नहीं तुम उससे ब्रह्म को प्राप्त होंगे । इसलिए मैं तुम्हें लोक का कल्याण करने वाली प्राण विद्या सिखाता हूँ ।'

इसके बाद इन्द्र ने प्रतर्दन को प्राणतत्व का उपदेश दिया । उन्होंने कहा, 'प्राण ही ब्रह्म है । साधनाओं द्वारा योगी, ऋषि-मुनि अपनी आत्मा में प्राण धारण करते और उससे विश्व का कल्याण करते हैं ।'

इसी सन्दर्भ में इन्द्र ने एक व्यक्ति अपनी असीम आने वाली स्थिति पैदा हो सकती है और उसकी प्रतिक्रिया व्यक्तिगत जीवन में आश्चर्यजनक परिणाम लेकर प्रस्तुत हो सकती है । इतना ही नहीं व्यापक वातावरण को भी उससे प्रभावित किया जा सकता है ।

अलेक्जेण्डर मार्शेक ने सघन अन्तरिक्ष में प्रकाश के रूप में भी शब्दों के रूप में भी सौरमण्डल तथा मन्दाकिनी आकाशगंगा से आने वाले शक्ति प्रवाहों को सुना है । उसका यन्त्र अंकन किया है । यह आवाज क्रमबद्ध संगीत एवं स्वर लहरियों की तरह है । यों कान से वे ध्वनि मात्र सुनाई पड़ती हैं उनका कोई विशेष महत्त्व समझ में नहीं आता पर खगोल विद्या की नवीनतम शोधें स्पष्ट करती चली जा रही हैं कि यह शब्द प्रवाह भी सूर्य से ध्रुव प्रदेशों पर बरसने वाले गति प्रवाहों की तरह ही अतीव सामर्थ्यवान हैं और उनके द्वारा प्राणियों के शरीर तथा मन पर ऐसा प्रबल प्रभाव पड़ता है जैसा व्यक्तिगत प्रयत्नों से बहुत परिश्रम करने पर भी सम्भव नहीं । यह प्रभाव भले और बुरे दोनों ही स्तर का होता है ।

योग साधना में शब्द साधना का विशेष स्थान है । कुण्डलिनी साधना में नाद, बिन्दु, कला की साधनाएँ इन अविज्ञात शक्ति प्रवाहों को समझना और उनके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करना ही है । शंख, घण्टा, सीटी, नफीरी, झींगुर, निर्झर, मेघ, गर्जन आदि के शब्द नाद साधना में सुने जाते हैं । यह मात्र चित्तवृतियों को एकाग्र करने के लिए ही नहीं, वरन् इसलिए भी हैं कि लोक लोकान्तरों में ग्रह-नक्षत्रों, आकाश गंगाओं एवं देव संस्थानों में जो अनुदान सूर्य की भाँति ही बरसाये जाते रहते हैं उन्हें ग्रहण कर सकना और उनका लाभान्वित हो सकना सम्भव हो सके । कुण्डलिनी साधक को यह प्रक्रियाएँ अपनानी पड़ती हैं । फलतः वह दैवी वरदानों की तरह अपने में बहुत कुछ अनुपम और अदभुत तत्व समाविष्ट हुआ अनुभव करता है ।

ध्रुव प्रभा का स्वरूप सर्च लाइट की तरह होता है । वह उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर काफी तीव्र होती है । इससे प्रकट होता है कि वह प्रवाह एक स्थान पर दक्षिणी ध्रुव की ओर तीव्र गति से दौड़ रहा है । हमारे मस्तिष्क में अवतरित होने वाला दिव्य तेजस भी योनि गह्वर की और कुण्डलिनी केन्द्र की ओर दौड़ता है दक्षिणी ध्रुव में 'पेनगुइन' नामक पक्षी पाया जाता है यह अति मृदुल स्वभाव का होता है और आगन्तुकों से अत्यन्त मधुर प्रेम भरा व्यवहार करता है । वस्तुतः दक्षिणी ध्रुव कला केन्द्र ही है । वहाँ प्रेम की कोमलता, मधुरता और सरलता की अजस्र धारा बहती है । पेनगुइन पक्षी की तरह ही—योनि गह्वर में सरसता और रसिकता का आनन्द और उल्लास का मिठास भरा पड़ा है । इसे जागृत किया जा सके तो जीवन में कलात्मक सरसता का उल्लास निर्झरिणी की तरह फूटकर प्रवाहित हो सकता है । दक्षिणी ध्रुव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्रतल से १६००० फुट उभरा हुआ है । इसे विश्व शरीर की जननेन्द्रिय का उभार कह सकते हैं । पुराणों में इसे शिवलिंग कहा गया है । नारी की जननेन्द्रिय में भी यह उभार छोटे रूप में पाया जाता है ।

ध्रुवों पर सूर्य की किरणों की विचित्रता के फलस्वरूप वहाँ सब कुछ जादू नगरी जैसा दीखता है । वहाँ पर अक्सर अपनी छाया दुहरी दिखाई पड़ती है । आत्मवेत्ता भी अपने साथ परा और अपरा प्रकृति की दो सहेलियाँ साथ फिरते देखता है और अपने को इन छायाओं से स्थूल और सूक्ष्म शरीरों से भिन्न अविनाशी आत्मा ही मानता है ।

भारतीय प्राण विद्या का प्रयोजन यह है कि दोनों ध्रुवों पर बरसने वाली सूर्य शक्ति सन्निहित प्राण धारा को अभीष्ट मात्रा में आकर्षित करके उनके द्वारा स्थूल और सूक्ष्म चेतना की समग्र दृष्टि से पुष्ट किया जाय ।

मस्तिष्क द्वारा भी किन्हीं अनजाने प्रकाश-स्रोतों के प्रकाश प्राण शक्ति को दूसरों तक कैसे पहुँचाता है, प्राण शक्ति के माध्यम से दूसरों तक अन्तःप्रेरणाएँ और विचार किस तरह पहुँचाता है, इस रहस्य का उद्घाटन करते हुए बताया है—

अथ खलु तस्मा देतमेवोक्थ मुपासीत । यो वै प्राणः सा प्रज्ञा या वा प्रज्ञा स प्राणः.....स यदा प्रतिबुध्यते यथाऽग्नेर्विस्फुलिंग । विप्रतिष्ठन्ते प्राणेभ्यो देवा देवेभ्यो लोका..... ।

अर्थात् 'जब मन विचार करता है, तब अन्य सभी प्राण उसके सहयोगी होकर विचारमान हो जाते हैं, नेत्र किसी वस्तु को देखने लगते हैं तो अन्य प्राण उनका अनुसरण करते हैं । वाणी जब कुछ कहती है, तब अन्य प्राण उसके सहायक होते हैं । मुख्य प्राण के कार्य में अन्य प्राणों का पूर्ण सहयोग होता है ।

अन्यत्र श्लोक में बताया है कि मन सहित सभी इन्द्रियों को निष्क्रिय करके आत्म-शक्ति (संकल्प-शक्ति) को प्राणों में मिला देते हैं । ऐसा पुरुष 'दैवी परिमर' का ज्ञाता होता है । वह अपनी प्राण शक्ति से किसी को भी प्रभावित और प्रेरित कर सकता है । उसके सन्देश को कहीं भी सुना और हृदयंगम किया जा सकता है । उसके प्राणों में अपने प्राणों को घुलाकर स्वल्प क्षमता के लोग भी अपने प्राण जागृत कर सकते हैं । जिस पुरुष को दैवी परिमर का ज्ञान होता है । उसकी आज्ञा को पर्वत भी अमान्य नहीं कर सकते । उससे द्वेष रखने वाले सर्वथा नष्ट हो जाते हैं ।

इसी उपनिषद् में यह भी निर्देश है कि जब पिता को अपने अन्तकाल का निश्चय हो जाय तो पुत्र (अथवा गुरु, शिष्य या शिष्यों) में अपनी प्राण शक्ति को प्रतिष्ठित कर दे । वह वाक्, प्राण, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, गतिशक्ति, बुद्धि आदि प्रदान करे और पुत्र उसे ग्रहण करे इसके बाद पिता या गुरु संन्यासी होकर चला जाय और पुत्र या शिष्य उसका उत्तराधिकारी हो जाय अर्थात् परमार्थ परम्परा रुके नहीं अक्षुण्ण बनी रहे ।

प्राचीनकाल में यह परम्परा आधुनिक सशक्त यन्त्रों की बेतार के तार की भाँति प्रचलित थी ।

आज का विज्ञान मुखी समाज इन उपाख्यानों को तर्क की दृष्टि से देखता है । लोक शक और सन्देह करते हैं, कहते हैं, ऐसा भी कहीं सम्भव है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को बिना किसी उपकरण या माध्यम के सन्देश पहुँचा सके ।

यदि विचारपूर्वक देखें तो विज्ञान भी इसकी पुष्टि ही करेगा । बेतार के तार के सिद्धान्त को कौन नहीं जानता ? शब्द को विद्युत तरंगों में बदल देते हैं । यह विद्युत तरंगें ईथर तत्व में धाराएँ बनकर प्रवाहित होती हैं । ट्रान्समीटर जितना शक्तिशाली होता है विद्युत तरंगें उतनी ही दूर तक दरदराती चली जाती हैं । उसी फ्रीक्वेंसी में लगे हुए दूसरे वायरलेस या रेडियो उन ध्वनि तरंगों को पकड़ते हैं और पुनः शब्दों में बदल देते हैं जिससे वे पास बैठे हुए लोगों को सुनाई देने लगती हैं । अब इस बात में तो कोई अविश्वास कर ही नहीं सकता ।

जो बात बोली जाती है, वह पहले विचार रूप में आती है, अर्थात् विचारों का अस्तित्व संसार में विद्यमान है । ऊपर के श्लोक में बताया गया है कि मन या विचार शक्ति प्राण में मिल जाती है तो सभी प्राण उसके सहायक हो जाते हैं अर्थात् प्राणों के माध्यम से अपने शरीर की सम्पूर्ण चेतना को जिसमें हाव-भाव, क्रिया-कलाप, विचार-भावनाएँ सम्मिलित होती हैं, किसी भी दूरस्थ व्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है ।

प्राण शक्ति की सामर्थ्यों और चमत्कारों का कोई पारावार नहीं जिस तरह परमाणु सम्पन्न राष्ट्र विश्व शिरोमणि माने जाते हैं, प्राण सम्पन्न व्यक्तियों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ताकत उससे कम नहीं अधिक होती है । जब तक हमारा देश इस विज्ञान को जानता रहा तब तक वस्तुतः हमारी स्थिति यही रही । गायत्री उपासना द्वारा अपने वैयक्तिक प्राणों को विभु प्राण सत्ता से जोड़कर अजस्र शक्ति का भण्डार भरते रहे हैं और उससे न केवल अपना सैकड़ों औरों का हित साधन करते रहे हैं । परमाणु विध्वंसक भी है साथ ही उसी के उपयोग से आज विद्युत की कमी और उसके द्वारा कृषि उद्योग, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में बहुमूल्य लाभ उठाये जा रहे हैं प्राणों का भी यही सही उपयोग है कि उसे लोक हित में लगाया जाय । आज की दैन्यता समाप्त की जाय ।

गायत्री सिद्ध महापुरुष एक प्रकार से सूर्य होते हैं वे लोगों का असीम कल्याण कर सकने की क्षमता से ओत-प्रोत होते हैं तो भी चाहे जिसकी सहायता नहीं करते इसका कारण इस शक्ति के सदुपयोग, दुरुपयोग की पात्रता ही होती है । बाप शराबी बेटे को पैसे नहीं देता इसलिए हर किसी को तो शक्ति नहीं बाँटी जा सकती, पर गर्मी, प्रकाश, पोषण देने का स्थूल कार्य सूर्य भी करते हैं, महापुरुष भी वही नीति प्रज्ञा पुत्र गायत्री उपासकों को भी करनी चाहिए । लोगों को प्राण देकर भले ही भला न कर सकें पर उन्हें प्रेरणा देकर सन्मार्ग में लगाकर इतना बड़ा कल्याण कर सकते हैं जिसकी तुलना में कोई भी बड़ी से बड़ी भौतिक सहायता निम्न स्तर की ही ठहरेगी ।

प्राण कहाँ से आता है ? उसके उपलब्धि स्रोत कहाँ हैं ? यह तलाश करने पर इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि यह बहुमूल्य सम्पदा हमें शुद्ध वायु, निर्मल जल, सात्विक आहार, सूर्य सम्पर्क, गहरी नींद, सन्तुष्ट मनःस्थिति से प्राप्त होती है । इन शक्ति स्रोतों की जितनी उपेक्षा करेंगे, उनसे जितने दूर रहेंगे उतने ही क्षीण होते चले जायेंगे । कमाई कम और खर्च अधिक करने पर कोई व्यवसाय ठीक तरह नहीं चलता फिर जीवन व्यवसाय ही कैसे चलेगा ?

हर काम की सीमा है । मर्यादा में रहकर ही स्थिरता प्राप्त हो सकती है । सामर्थ्य से अधिक काम करना, साधनों से असम्बद्ध महत्त्वाकांक्षाएँ गढ़ना, भोगासक्ति में निमग्न होकर इन्द्रियों से अधिक काम लेना, दिनचर्या की नियमितता का ध्यान न रखना आदि बातें देखने-सुनने में कोई बहुत बड़ी गल्तियाँ नहीं मालूम पड़तीं, पर वे छोटी होने पर भी चिनगारी की तरह हमारे हँसते-खेलते जीवनोद्यान में आग लगा देने के लिए पर्याप्त हैं । नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला अपनी प्रामाणिकता खो बैठता है और जन-सहयोग से वंचित होता चला जाता है । व्यक्तिगत जीवनचर्या में मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला उस बहुमूल्य सम्पदा को खोता चला जाता है जिसके आधार पर सर्वतोन्मुखी प्रगति की सम्भावनाओं की पृष्ठभूमि बनती है ।

विषपान से आत्म-हत्या करने वाले की रक्षा कौन कब तक करेगा ? जिन्होंने नशे पीकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने पर कमर कस ली है उनकी प्राण शक्ति कब तक स्थिर रहेगी । उत्तेजक मसाले भी एक प्रकार के विष ही हैं । वासनात्मक उत्तेजनाओं से मन को निरन्तर उद्विग्न करते रहने से हम अपनी ही सुसज्जित जीवन सम्पदा का क्षरण करते चले जाते हैं और अपने ही पापों का फल भोगने के लिए रुग्णता, अशक्तता एवं अकाल मृत्यु के नरक में जा गिरते हैं ।

दार्शनिक कन्फ्यूशियस ठीक ही कहते थे—जो मितव्ययिता के नियम को भंग करेगा वह अन्त में दुःख सहता हुआ मरेगा । उनकी यह उक्ति प्राण शक्ति के अपव्यय के सम्बन्ध में सोलहो आने सच उतरती है । हम अपनी ही जीवन सामर्थ्य से खिलवाड़ करते हैं । उसे अनावश्यक रूप से बर्बाद करते हैं ऐसी दशा में पग-पग पर ठोकर खाने और अशान्त असफल रहने का दुष्परिणाम भोगें तो आश्चर्य ही क्या है ?

अपनी प्राण शक्ति को यदि हम मितव्ययिता पूर्वक खर्च करें तो जीवन को लम्बा और निरोग बनाने में उसका उपयोग कर सकते हैं और इस बचत से कुछ महत्त्वपूर्ण उपार्जन कर सकते हैं ।

प्राण शक्ति का सबसे अधिक अपव्यय अनावश्यक भोजन भार वहन करने से होता है । शरीर रक्षा के लिए सरल और स्वल्प भोजन की आवश्यकता होती है, किन्तु हम दुष्पाच्यरूप में अधिक मात्रा में उसे ग्रहण करते हैं । सोचते हैं कीमती, स्वादिष्ट और अधिक भोजन करने से बलिष्ठ बनेंगे पर होता ठीक उल्टा है । गरिष्ठ और प्रचुर भोजन जितनी शक्ति उत्पन्न करता है उससे कहीं अधिक अपने पचाने में खर्च करा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेता है अस्तु हम प्रतिदिन घाटे में रहते हैं और अन्ततः दिवालिया बनकर असमय में ही जीवनलीला समाप्त कर देते हैं । इसके विपरीत जो लोग प्रयत्न पूर्वक प्राण शक्ति बढ़ाते हैं वे न केवल मानव जीवन सार्थक करते हैं अपितु भौतिक जीवन के भी ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं ।

टेलीपैथी
एक विज्ञानसम्मत प्रक्रिया

विचार-संचालन परिपुष्ट मस्तिष्क वाले मानव के लिए साधारण-सी बात है । हम प्रायः सभी थोड़ी बहुत मात्रा में विचार संचालन क्रिया से कार्य लेते हैं । आपने बहुधा देखा होगा कि किसी को स्मरण करते ही तुरन्त वह व्यक्ति गृह में प्रविष्ट होता दिखाई पड़ता है । हम ऐसा सोचते हैं कि अमुक व्यक्ति आता होगा, वह आ जाना चाहिए, समय हो गया । ऐसी मनः क्रिया होते ही न जाने क्योंकर वह व्यक्ति हम तक पहुँच जाता है कि तथा हम कह उठते हैं, "अरे ! तुम आ गए । हम तुम्हें याद ही कर रहे थे तुम्हारी बड़ी उम्र है ।"

यह क्रिया बिना कारण के नहीं हो जाती । उसके पीछे एक गहन सत्य अन्तर्निहित है । टैलीपैथी विशेषज्ञ इसकी व्याख्याएँ करते हैं—"आने वाला व्यक्ति अपने मस्तिष्क द्वारा आने से पहले आते-आते अपने परिपुष्ट मस्तिष्क द्वारा विचार तरंगें संचालित कर रहा था । ये विचार तरंगें आकाश में व्याप्त ईथर (Ether) माध्यम में होकर क्रमशः हमारे मस्तिष्क में आ रही थीं । हमारा मस्तिष्क उन विचार तरंगों का ग्राहक केन्द्र स्थान (Receiving centre) बन गया । मस्तिष्क में वही थरथराहट उत्पन्न हुई जो संचालक के मस्तिष्क में थी । संचारक (Transmiter) के मस्तिष्क की समस्त तरंगें ग्राहक (Receiver) के मस्तिष्क में आकर पुनः विचारों में परिवर्तित हो गईं ।

विचार संचालन का यन्त्र

जिस प्रकार वृक्ष की समस्त शक्तियाँ उसकी जड़ में है, इसी प्रकार मस्तिष्क ही मानव शरीर की जड़ है । मस्तिष्क ज्ञान का भण्डार, शक्तियों का स्रोत तथा पंच इन्द्रियों का स्वामी है । कौन सुनते हैं, नाक सूँघती है, जिह्वा चखती है, त्वचा को स्पर्श का ज्ञान होता है, नेत्र देखते हैं । ये समस्त शक्तियाँ मस्तिष्क में निवास करती हैं । मन की विभूतियों एवं अतुल सामर्थ्य का प्रदर्शन उत्तम मस्तिष्क द्वारा ही सम्भव है । मानसिक शक्तियों को भली-भाँति प्रकट करने के लिए तीन तत्वों की नितान्त आवश्यकता है, उत्तम मस्तिष्क, मानसिक शक्तियों की परिपुष्टि एवं उनको कार्य में लेने की रीतियाँ । क्रमशः हम तीनों पर विचार करेंगे ।

विचार शक्ति को उत्पन्न करने वाला यन्त्र मस्तिष्क है । मस्तिष्क एक अति सूक्ष्म विचार ग्राहक एवं विचार संचालक यन्त्र या डायनमो समझिए । विद्युत उत्पन्न करने वाले एक साधारण डायनमो की भाँति मस्तिष्क विचार पैदा करता है । मस्तिष्क के विशेष-विशेष भाग विशेष-विशेष कार्य करते हैं । मस्तिष्क को निकम्मा छोड़ दिया जाय, तो फिर इसमें शनैः शनैः व्यर्थ क्रियाएँ करने के अतिरिक्त अन्य किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की क्षमता नहीं रह जाती । यहाँ तक कि यदि मस्तिष्क के विशेष भागों की ओर उचित ध्यान न दिया जाय, तो वे निर्बल और निकम्मे हो जाते हैं । मस्तिष्क के जिस भाग में जो शक्तियाँ निवास करती हैं, उस भाग में स्थित कोषों (Cells) की संख्या के परिणाम में वे शक्तियाँ कम या अधिक होती हैं । इन कोषों की सूक्ष्मता बढ़ाने से मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है । ये कोष जितने ही सूक्ष्म होंगे, एक घन इंच में जितने ही वे अधिक आयेंगे, उतनी ही उच्च प्रकार की शक्तियाँ उनमें गर्भित होंगी और वह मस्तिष्क उतना ही उत्तम समझा जायेगा ।

विचारों में प्रगाढ़ श्रद्धा का समावेश कर एकाग्र करने से हम मस्तिष्क के कोषों की सूक्ष्मता तथा संख्या में वृद्धि कर सकते हैं । समर्थ विचारक और तत्वज्ञ पुरुषों के मस्तिष्क में साधारण मनुष्यों की अपेक्षा ये कोष संख्या में बहुत अधिक होते हैं । ये तत्वज्ञ निरन्तर विचार में निमग्न रहते हैं, ध्यान करने से अलौकिक मानसिक शक्तियाँ प्रकट की जा सकती हैं और मनोबल से अनेक रोग दोष दूर किए जा सकते हैं ।

एकाग्रता से कोषों में वृद्धि क्यों होती है ? बात यह है कि मन को शरीर के किसी भाग पर एकाग्रता पूर्वक लगाने से उस भाग में रुधिर की गति तीव्र हो जाती है । इसी प्रकार विचार, ध्यान द्वारा रक्त की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गति मस्तिष्क के किसी भी भाग में बढ़ने से तथा शरीर के विद्युन्मय सामर्थ्य का उस प्रदेश में संचार करने से मस्तिष्क के उस भाप के अणुओं में वृद्धि और सुधार किया जा सकता है । हमारे प्राचीन योगियों ने मूर्धा, त्रिकुटी आदि स्थानों में मन को एकाग्र करने की जो क्रियाएँ बतलाई हैं, उनका तात्पर्य मस्तिष्क को बलवान बनाने का इसके अन्दर के अणुओं की वृद्धि और शक्ति के विकास का जान पड़ता है । सभी योग की, ध्यान तथा समाधि की क्रियाएँ शरीर को, मन को तथा विचार बल को विकसित करने वाली हैं । क्लोरावेन्स, टेलीपैथी, या समाधि अवस्था आध्यात्मिक चिंतन की ही एक साधना है ।

विचार संचालन के लिए मस्तिष्क को परिपुष्ट करने में एकाग्रता का मुख्य हाथ है । इस साधना का निम्नतम श्रेणी के मनुष्य से लगाकर सर्वोत्तम योगी तक के लिए केवल एक ही उपाय है—एकाग्रता । वस्तुतः जिन प्रयोगों से एकाग्रता प्राप्त हो सके, उनको करने से ही समाधि अवस्था प्राप्त हो सकती है । जहाँ समाधि अवस्था प्राप्त हुई कि आपका मस्तिष्क दूर-दूर तक विचार भेजने का शक्तिशाली डायनमो बन गया समझिए । समाधि अवस्था में पहुँचने से मन की लचक क्रमशः बढ़ जाती है । वह अत्यन्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म कम्पनों को पकड़ सकता है । विचार दूसरे के मस्तिष्क में बलपूर्वक प्रविष्ट करा सकता है और, अनेक गुप्त बातें अनायास ही मालूम कर सकता है । ऐसे योगी प्रायः दूसरे के मन की बात यकायक ताड़ जाते हैं, कभी-कभी स्पष्ट कह भी देते हैं ।

मानसिक शक्तियों की परिपुष्टि

योगशास्त्र का यह एक अखण्डनीय सिद्धान्त है कि ध्यान करने वाला जिसका ध्यान करता है, उसी के समान हो जाता है । ध्यान से मानसिक शक्तियों की परिपुष्टि होती है । जिसका ध्यान किया जाय उसका मनः चित्र इतना स्पष्ट हृदय-पटल पर अंकित किया जाना चाहिए । मानों वह चित्र बोलने ही वाला हो; जैसे बातें ही कर रहा हो । सद्गुरु की मूर्ति का ध्यान करने वाला ध्याता सद्गुरु की इतनी निखरी हुई मूर्ति हृदय चक्षु के सम्मुख लाता है कि जैसे महाप्रभु उससे वार्तालाप ही करते हों । ध्यान करने वाले को चाहिए कि जिसका वह ध्यान करता हो, उसका स्वरूप सर्वप्रथम अपनी बुद्धि में उतारने का प्रयत्न करे । शास्त्रों का ध्यान का अभ्यास करने और उससे अपनी बुद्धि को सूक्ष्म बनाने का तात्पर्य यही है । शास्त्राभ्यास से परमेश्वर के सम्बन्ध में वृत्ति आरूढ़ होती है, तदनुसार धारणा, ध्यान अथवा निदिध्यासन होता जाता है ।

जिस मानसिक शक्ति के विकास का हमने निश्चय किया है, उसके ऊँचे से ऊँचे स्वरूप की, जहाँ तक हमारी बुद्धि की पहुँच हो वहाँ तक मूर्तिमयी कल्पना करनी चाहिए और उस उच्च कल्पना में समस्त मन की समस्त प्रवृत्तियों को आरूढ़ करना चाहिए । पूर्वोक्त क्रिया से कल्पना और अधिक स्पष्ट होने लगेगी और उसका उत्तम सामर्थ्य वाला स्वरूप भी साधक में प्रकट होने लगेगा ।

टेलीपैथी का प्रथम तत्व : एकाग्रता

एकाग्रता से विचार संगठन प्राप्त होता है । असंगठित विचार एक निकम्मी वस्तु है । जिस व्यक्ति के मन में अनेक बेसिर पैर की बातें, नाना ऊल-जलूल कल्पनाएँ, असंगठित विचार, अव्यवस्थित चिन्तन रहता है वह मानसिक संघर्ष का शिकार होता है । मन की समता (Harmony) नष्ट हो जाती है, चित्त अस्थिर हो जाता है और मस्तिष्क विक्षिप्त विचारों का डेरा बन जाता है । दुर्बल भावना, अव्यवस्थित मंतव्य, जर्जर कल्पना मन को शिथिल एवं शान्त कर देती हैं । यदि विचार विक्षिप्त हो गए तो नाड़ी-संस्थान में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है तथा चिन्ता, उद्वेग, भ्रान्ति, भय तथा संक्षय दिमाग को व्याकुल एवं चलायमान रखते हैं । हम अपने असंगठित विचारों के अधीन रह कर दास बने रहते हैं ।

विचार संचालन के लिए सर्वप्रथम आपको विचार संगठन सीख लेना चाहिए । असंगठित विचार एक निकम्मी चीज है, किन्तु संगठित विचार संसार में सबसे महान शक्ति है । दुनिया में रुपया सर्व शक्तिमान माना जाता है, किन्तु संगठित विचार उससे भी बलवान् है । रुपया इसके वश में है तथा दरिद्रता भी इसके डर से भाग जाती है । जिन तत्वों से मानसिक सामर्थ्यों की वृद्धि होती है, वे सब विचार संगठन पर निर्भर हैं ।

जल को लीजिए । यदि बूँद-बूँद कर जल को इधर-उधर फेंक दें तो उसमें कोई शक्ति नहीं, किन्तु यदि पिचकारी द्वारा पानी की उन बूँदों को संगठित करके फेंके तो शक्ति उत्पन्न होती है । बारूद के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दानों की शक्ति बन्दूक की नालिका में भर कर संगठित रूप दे देने से प्रकट होती है । सूर्य की रश्मियाँ एकाग्र होकर भयानक अग्नि उत्पन्न कर देती है । इसी प्रकार यदि विचार इधर-उधर चलायमान रहें तो उनमें कुछ शक्ति नहीं रहती । यदि उन्हें संगठित स्वरूप देकर एक स्थान पर एकाग्र कर लिया जाय तो अतुलित सामर्थ्य की उत्पत्ति होती है । मन की समग्र शक्तियों के बल का आधार चित्त की स्थिरता, विचार संगठन तथा वृत्तियों को केन्द्रीभूत चित्त की स्थिरता विचार संगठन तथा वृत्तियों को केन्द्रीभूत करना है । योगी समस्त अनावश्यक विषयों से मन को हटा कर मानसिक शक्ति को अपनी बिखरी हुई शक्ति को संचित कर एक ही स्थान पर केन्द्रीभूत कर देते हैं । योग एवं समाधि में संचित शक्ति को केन्द्रीभूत करना, उसको किसी विशेष वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रवर्त्त करना प्रधान है । तप के इस नकारात्मक रूप को संयम, तथा सकारात्मक रूप को साधना कहते हैं ।

विचार संयम, स्थिरता, भावना केन्द्रीकरण, वृत्तिसाधन, प्राणायाम, बौद्धिक विकास के विभिन्न रूप हैं । ये विचार की महान शक्तियों को प्रकट करने के उपाय हैं । आत्मोन्नति के लिए विचार एकाग्र करने का अभ्यास करना चाहिए । विचार संचालन के सामर्थ्य का अधिकांश भाग हम प्रायः निकम्मी क्रियाओं में नष्ट कर देते हैं । बैठे-बैठे पैर हिलाते रहेंगे, मुँह से बेअर्थ की बातें कहते रहेंगे तथा मन से सार रहित चीजें सोचते रहेंगे । इसके अतिरिक्त क्रोध, शोक, चिन्ता, भय आदि विविध विकारों से भी पोषक शक्ति का ह्रास होता है । इन सभी प्रकार के क्षयों से बचने के लिए जिस प्रकार मन की अत्यन्त समाधार वाली शान्त स्थिति की आवश्यकता है, उसी प्रकार वाणी तथा शरीर के व्यर्थ के प्रपंच छोड़ने की भी आवश्यकता है ।

गहन एकाग्रता की अवस्था मन को शान्त स्थिति में रखने से प्राप्त होती है । विचार संचालन क्रिया की मूल भित्ति चित्त की शान्त निर्लेप अवस्था ही है । अतएव साधक को योग की क्रियाओं तथा अन्य साधनों से चित्त की एकाग्रता का अभ्यास करना चाहिए ।

शिथिलीकरण का प्रयोग

रात्रि के समय विचार अन्तर्मन में सुदृढ़ होते हैं तथा पुनः तदनुकूल क्रिया दूसरे दिन करते हैं । बिस्तर पर लेट कर शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंगों को शिथिल कर लो, जैसे मशीन के सब पुर्जे पृथक-पृथक पड़े हों । अवयवों को बिल्कुल ढीला छोड़ दो । शरीर के किसी भी भाग में तनाव न रहे । किसी वस्तु का आधार लेकर हम अपने हाथ को ऊँचा करते हैं और उस आधार को हटाते ही जैसे धड़ाम से हाथ गिर जाता है, उसी प्रकार बिस्तर पर पड़े हुए कोई अंग यदि उठाया जाय तो तुरन्त नीचे गिर जाना चाहिए । आरम्भ में यह क्रिया कठिन प्रतीत होगी, किन्तु अभ्यास से शिथिलीकरण स्वाभाविक हो जायेगा । शरीर को शिथिल करने के पश्चात् दिन में जो चिंता, भ्रम, परिताप, ग्लानि, शोक भय आदि के समस्त विचारों के प्रवाह को दूर करो, स्मृति को हटा दो, कल्पना द्वारा एक ही केन्द्र लेकर उस पर मनः क्रिया एकाग्र कर दो । बाह्य जगत् का भान भूल जाओ । केवल एक ही केन्द्र तुम्हारे सन्मुख रहना चाहिए । दस मिनट तक इस एक ही भावना पर चित्त को एकाग्र रखो । दृढ़ता से मन लगाये रहो । इस प्रकार क्रमशः मन की एकाग्रता में वृद्धि होती जायेगी ।

एकाग्रता के लिए पहले एक वस्तु लो । उनका चित्र, स्मृति द्वारा खूब स्पष्ट करो । जैसा तुम बाह्य जगत में देखते हो वैसा ही मानस चित्र स्पष्ट हो जाय । एक-एक लकीर साफ-साफ दिखाई दे । वस्तुओं के पश्चात दृश्य लेकर एकाग्र करो, फिर उत्तम भावनाएँ लो । इस भावना को मस्तिष्क के केन्द्र (Focus) के सन्मुख रखो और अधिचल उसी पर सोचते रहो । मन को इधर-उधर न भागने दो, प्रत्युत दृढ़ता से उसी पर जमाए रहो । इसी क्रिया के अभ्यास से विचारों में संगठन एवं परिपक्वता आ जायेगी और तुम जिस अभीष्ट पर चित्त को एकाग्र करना चाहोगे सफलता पूर्वक कर सकोगे । एकाग्रता का अभ्यास करते समय शुद्ध रीति से श्वास-प्रश्वास लेने से विचार संगठन में अतीव सहायता प्राप्त होती है । विचार की एकाग्रता की इस प्रचण्ड पुष्ट एवं उत्पादक शक्ति द्वारा ही एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति तक अपने विचार भेजने में सफल होता है । अतएव इसका साधन अत्यन्त महत्त्व का है ।

टेलीपैथी का द्वितीय तत्व : उर्वरा कल्पना

विचार संचालन में लचीली या उर्वरा कल्पना से काम लिया जाता है । जिस समय, जिस व्यक्ति के पास विचार भेजना हो प्रायः उसका मानस चित्र खींचना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ता है । वस्तुतः साधक को समयानुसार मानस चित्रों के निर्माण की आवश्यकता पड़ती है । कल्पना शक्ति से ही मनुष्य अज्ञात को ज्ञात में परिणत कर देता है । सर्वप्रथम एक अस्पष्ट और धुंधला चित्र सामने आता है और फिर क्रमशः हम भौतिक जगत में एक साकार रूप प्राप्त करते जाते हैं । अनेक वस्तुओं की कल्पना आज के युग में साकार रूप धारण करके प्रकट हुई है । मनुष्य जितनी ही स्पष्टता से अपनी मनोभिलाषित अवस्था का चित्र अपने मानस नेत्रों से देखता है, उतनी ही वह उसके लिए सुलभ होती है । इसके विपरीत जो व्यक्ति सन्देह एवं संक्षय में अपने मानस चित्र अस्पष्ट एवं धुंधले रखते हैं, वे किसी योग्य नहीं बन पाते । कल्पना शक्ति अथवा सृजनात्मक ध्यान के द्वारा न केवल हम अपने भौतिक जगत में ही निर्माण करते हैं, प्रत्युत उसी के आश्रय से परमात्मा का साक्षात्कार कर उस लोक से सुख को भी प्राप्त करते हैं ।

विचार संचालन के लिए कल्पना शक्ति अत्यन्त पैनी होनी चाहिए, व्यर्थ इधर न दौड़कर वह सर्वदा एक स्पष्ट एवं सुनिश्चित केन्द्र पर चले । एक ही वस्तु, स्थान, व्यक्ति, वातावरण की सृष्टि एक बार में करे । उसे इतना स्पष्ट बना दे कि वह सत्य जीती-जागती, बोलती प्रतिमा-सी प्रतीत हो । जब कोई विचारणीय विषय आ जाय, तो सर्वप्रथम तो वस्तु का खाका खींचे, किन्तु फिर उसे स्पष्ट तर कर दें ।

कल्पना द्वारा कई भावनाओं का एक साथ मेल कराना भी सीखना चाहिए । सामंजस्य, एकीकरण, वस्तुओं का संयोग कल्पना द्वारा होना चाहिए । जितने ही अधिक विषयों में मनुष्य की पैठ रहेगी, उतनी ही उर्वरा उसकी कल्पना होगी । कल्पना ऐसी हो कि सर्वदा विचारों को एक सुनिश्चित स्थान (केन्द्र) पर पहुँचाकर छोड़े । चाहे वे विचार कैसे ही हों, उन्हें मानस चित्र तक पहुँचा दे । प्रत्येक मनुष्य के विचारों का प्रवाह एक सुनिश्चित दिशा में होता है । अतः इस साधना के लिए अपनी अभिरुचियों को केन्द्रीभूत करना आवश्यक है । एक से अधिक केन्द्र रखने पर विचार बीच में ही भटकते रहते हैं । किसी सुनिश्चित स्थान पर पहुँचना उनके लिए कठिन हो जाता है । जब तक मनुष्य अपनी कल्पना द्वारा मानस चित्रों को दृढ़तापूर्वक स्थिर नहीं रखता, तब तक उसके विचारों का प्रवाह भटकता रहेगा । विचारों का प्रवाह निरन्तर मानस चित्र की ओर अखण्ड रूप से चलना चाहिए । जब सब विचार एक बिन्दु पर एकाग्रता पूर्वक डाले जाते हैं, तो आश्चर्यजनक कार्य होते हैं । जिस साधना में चित्त की समस्त वृत्तियाँ किसी विशेष उद्देश्य से एक ही मानसचित्र पर एकाग्र होकर किसी विशेष लक्ष्य की ओर प्रवृत्त कर दी जाय वही कल्पना तथा एकाग्रता की सिद्धि है । एकाग्रता की यह सिद्धि कठिन है । मन पर अधिकार करने में कुछ अधिक समय लगता है । इस कठिनाई का कारण यह है कि हम अपनी चित्तवृत्तियों को रोकना चाहते हैं, किन्तु उसके उद्गम स्थान की उपेक्षा करते हैं । यह उद्गम स्थान हमारा ध्यान मानसिक केन्द्र अथवा मानसिक दृष्टि बिन्दु का मानसिक चक्षु है । जिस विषय की ओर हमारा ध्यान आकर्षित हो जाता है, वैसे ही विचार हमारे मन में आने लगते हैं और हमारा मन इस पर एकाग्र हो जाता है । इसलिए आरम्भ में उचित होगा कि हम अपने ध्यान को वस्तुओं पर केन्द्रित करें । फिर कल्पना द्वारा अपने परिचित, कुटुम्बियों, मित्रों, शिष्यों आदि के मानस चित्र बनावें और उन पर मानसिक दृष्टि बिन्दु को केन्द्रित करें । धीरे-धीरे निमग्नावस्था प्राप्त होने लगेगी और आप मानस जगत में सब परिचितों को प्रत्यक्ष चलते-फिरते, बोलते, कार्य करते देखने लगोगे । मौनाभ्यास द्वारा इस समाधि को प्राप्त करना सर्वश्रेष्ठ है । मौनाभ्यास में हमारा आसन सुस्थिर और सुखपूर्ण हो जिससे साधना के समय हमें अपने मन, शरीर, वातावरण एवं परिस्थितियों का कुछ भी ज्ञान न रहे । मानसिक मूर्ति तथा हममें बातचीत का क्रम चलता रहे ।

तृतीय तत्व : दृढ़ इच्छाशक्ति

इच्छा के विरुद्ध आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते । आप विचार-संचालन करने जा रहे हैं अतएव आपको अपनी शक्तियों में पूर्ण विश्वास का समावेश करना चाहिए । विश्वास आपकी नींव है । विश्वास ऐसी शक्ति है, जिसको प्राप्त करने से ही मनुष्य चमत्कार पूर्ण कार्य करता है । विश्वास ही आत्मा का अन्न है । आत्मा का प्राण है । विश्वास के शब्दार्थ में ही गुह्य तत्व भरा है । "विशेषेण श्वस्ति यस्मिन स विश्वास" अर्थात् विशेष प्रकार से जिसमें पुरुष श्वास लेता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह ही विश्वास है । विश्वास नष्ट कर दो, बस आत्मा, आत्मा नहीं रह सकती । विश्वास आत्मा की आँखें हैं जिससे सर्व अदृष्ट पदार्थों को भी दृष्टवत् करता है ।

जिस व्यक्ति को अपनी शक्तियों में विश्वास है, वह अवश्य विचार संचालन कर सकेगा । इस विश्वास में तीन तत्व मिले हुए हैं, पूर्ण निर्भरता, आशा, सन्तोष व प्रसन्नता । जिस मनुष्य में विश्वास जागृत होता है, उसमें यह तीनों शक्तियाँ पायी जाती हैं । सर्वप्रथम उसमें पूर्ण निर्भरता की शक्ति आती है वह जिसके लिए प्रयत्न कर रहा है उसमें पूर्ण भरोसा रखता है । द्वितीय, आशा से पूर्ण रहता है । तृतीय, सदैव सन्तुष्ट तथा अपने मनोरथों में सफल होने में भरोसा रखता है ।

विचार संचालक को यह पूर्ण विश्वास रखना चाहिए, कि वह जिसके पास विचार संचालित करेगा, उसमें अवश्यमेव सफल होगा । जिस कार्य को करने का निश्चय उसने किया है, वह अक्षरक्षः सफल होगा । कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो उसके मार्ग में बाधा उपस्थित कर सके । जितने अंशों में आपको दूसरे तक विचार भेज देने में विश्वास होगा, उतने ही अंशों में आप इस समाधि की क्रिया में सफल हो सकेंगे ।

विश्वास का प्रभाव हमारे गुप्त मन पर पड़ता है । गुप्त मन की शक्ति सब मानसिक शक्तियों में प्रबल है । हमारे जीवन का कर्त्ता-धर्त्ता गुप्त मन ही है । गुप्त मन से संक्षय, शक-शुबा, निराशा निकाल फेंको और कहो कि तुम वास्तव में विचार संचालित कर सकोगे । जैसे-जैसे तुम्हारे गुप्त मन में यह विश्वास जमेगा वैसे-वैसे जादू-सा तत्काल प्रभाव डालने वाली शक्ति तुममें प्रकट होगी । इस आन्तरिक शक्ति को दृढ़ निकालो, उठो स्वीकार करो और अपना प्रभुत्व जमा लो । विचार संचालन की सम्भावना जहाँ तुम्हारे गुप्त मन में दृढ़ता से जमी कि तुम इस महान कार्य के लिए योग्य हो गए । गुप्त मन की रचनात्मक शक्ति से ही तुम विचारों की लहरें उत्पन्न कर सकोगे । स्मरण रखिए, यदि आप अपनी विचार संचालक शक्तियों के प्रति अविश्वासी रहेंगे, तो कुछ भी न कर पायेंगे । कितने ही व्यक्ति अपनी सूचना शक्तियों के प्रति संशयात्मक भावनाएँ रखते हैं और अश्रद्धा के कारण विचारों में दृढ़ता नहीं ला पाते । आप इस क्रिया को करने से पूर्व पूरा-पूरा विश्वास रखिए कि आप विचार संचालन में अवश्यमेव फलीभूत होंगे और अपने मनोबल से अपने विचार अपने मित्र, सम्बन्धियों तक भेज दिया करेंगे ।

विचार की लहरें और कम्पन्न

विचार तत्व आज तक पूर्ण रीति से प्रकट नहीं किया गया । निःसन्देह विचार की उत्पत्ति परमाणुमयी है । यदि वह छोटे-छोटे परमाणुओं से विनिर्मित न होता तो प्रकृति के नियमानुसार यह अन्तरिक्ष में एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे जाता है ?

जैसे प्रकाश या ध्वनि छोटे-छोटे परमाणुओं या कणों से बने होते हैं, उसी प्रकार विचार भी तरंग माला में चलते हैं । प्रत्येक कण अपने पास के कण को गति देता है । प्रत्येक कण या परमाणु अपनी बारी में क्षोभ का एक केन्द्र बनकर लहरें उत्पन्न करने लगता है । इन लहरों की लम्बाई अत्यन्त सूक्ष्म होती है और वे अमितवेग से चलती हैं । जैसे जल में पत्थर फेंकने से लहरें उत्पन्न होती हैं, उसी प्रकार विचार की लहरें चलती हैं ।

विश्व में जो अनेक शक्तियाँ मौन और प्रकट रूप में कार्य कर रही हैं, उनमें ध्वनि तथा विचार महान शक्तियाँ हैं । ध्वनि तथा विचार के कम्पन एक सेकण्ड में इतने होते हैं कि हम इनकी गिनती नहीं कर पाते । आजकल ऐसे यन्त्रों का आविष्कार किया गया है कि इन सूक्ष्म कम्पनों की गणना भी की जाती है और चित्र भी ले लिए जाते हैं । जैसे कान के अन्दर पर्दे पर एक सेकण्ड में १६ से ५६००० हजार तक कम्पन आघात करते हैं, ऐसे ही मस्तिष्क के सूक्ष्मतम पर्दे पर न जाने विचारों के कितने कम्पन्न निरन्तर आघात किया करते हैं । मस्तिष्क को रेडियो की भाँति विचार ग्राहक एवं संचालक यन्त्र समझिये । इसमें भेद इतना ही है कि मानव मस्तिष्क अन्य सब ज्ञात यन्त्रों से अधिक शक्ति सम्पन्न और अधिक सूक्ष्म रचना रखता है । मनुष्य इस यन्त्र की शक्ति का अन्दाज कम ही लगाते आये हैं । कारण यह कि वह स्वभाव से मस्तिष्क की ऐसी प्रचण्ड विचार संचालक शक्ति को कल्पना में भी नहीं ला सकता ।

माध्यम ईथर पदार्थ

विचार मस्तिष्क के केन्द्र स्थान से निकल कर ईथर (Luminiferous Ether) के माध्यम द्वारा दूसरे केन्द्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थान में पहुँचता है । ईथर या आकाश एक अदृश्य माध्यम है । ईथर सर्वव्यापी है, इससे सम्पूर्ण अन्तरिक्ष परिपूर्ण है । अन्तरिक्ष में से प्रकाश के आवागमन के लिए वैज्ञानिकों ने इसे एक आवश्यक वस्तु माना है क्योंकि वहाँ वायु इत्यादि कोई अन्य माध्यम नहीं पाया जाता । वैज्ञानिक इसे एक साफ और गाढ़े रस जैसा पदार्थ बताते हैं । रोजीक्रूश्यन लोग इसे एक सजीव अग्निशिखा जैसा समझते हैं ।

इस बात को सभी तत्ववेत्ता मानते हैं कि आकाश में लहरें उठती हैं । उन्हीं के कारण सब शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है । अर्थात् आकाश (ईथर) के कण अपने स्थान पर कम्पायमान होते हैं । इससे सिद्ध है कि ईथर के दो कणों के मध्य में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य होना चाहिए । ईथर एक ऐसा पदार्थ है जिससे अधिक सूक्ष्म पदार्थ सृष्टि में नहीं है, जो कुछ स्थूल या सूक्ष्मरूप से विद्यमान है, सभी ईथर से प्रादुर्भूत है । इसे यदि सृष्टि का बीज कहें तो अत्युक्ति नहीं । विद्युत आकाश, उष्णता, गुरुत्वाकर्षण स्नेहाकर्षण, विचार शक्तियाँ जो संसार की प्रचालक हैं और जो इस मनोहर एवं विचित्र सृष्टि के आधार हैं, सभी ईथर के विकार हैं । ये शक्तियाँ ईथर के ही कम्पन से उत्पन्न होती हैं और तरंगों (Waves) के ही द्वारा एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र पर जाती है । आपने विद्युत तरंग, चुम्बक तरंग, प्रकाश तरंग और उष्ण-तरंग (Heat-waves) के नाम सुने होंगे । ये सब तरंगें आकाश (ईथर) के माध्यम में ही उत्पन्न होती हैं ।

ये शक्ति (Energy) के विभिन्न रूप हैं । आकाश की सहायता से, बहुरूपिये की तरह इस सृष्टि में शक्ति ने नाना रूप धारण किए हैं ।

ईथर के कणों के कम्पन का नाम शक्ति है और वह तरंगों के द्वारा एक केन्द्र से चारों ओर फैलती है । जैसे दीपक का प्रकाश चारों ओर फैलता है और जैसे बिजली उत्पन्न करने वाले यन्त्र से बिजली की धारा सर्वत्र फैलती है, वैसे ही ये तरंग भी एक निर्दिष्ट केन्द्र से सब कहीं फैलती हैं, परन्तु याद रहे कि जैसे जल ऊँचे धरातल से निम्न धरातल की ओर प्रवाहित होता है तथा उष्णता, अधिक उष्ण पदार्थ से कम उष्ण पदार्थ की ओर जाती है, उसी प्रकार एक परिपुष्ट दृढ़ एवं शक्तिशाली मस्तिष्क से, अधिक शक्ति सम्पन्न धरातल से न्यून शक्ति सम्पन्न की ओर जाते हैं । सारांश यह कि शक्ति चाहे जिस रूप में हो, वह स्थान परिवर्तन तभी कर सकती है, जब अन्य पदार्थों की अपेक्षा वह उच्च-शक्ति-सम्पन्न धरातल (At a bigger potential stage) हो । अतएव आकाश में कम्प या तरंगों का होना तभी सम्भव है जब दो स्थानों के मध्य में सम्भाव्य-शक्ति सम्पन्न धरातल का अन्तर हो । यदि सम्पूर्ण सृष्टि में सारे पदार्थ एक से धरातल पर प्रतिष्ठित हो जायें तो सृष्टि के सम्पूर्ण कार्य बन्द हो जायें । सूर्य प्रतिदिन ठण्डा होता जा रहा है । जब यह उतना ही ठण्डा हो जायेगा जितने अन्य ग्रह हैं, तो सौर जगत नाश को प्राप्त हो जायेगा । सृष्टि व्यापार चलाने के लिए सम्भाव्य-शक्ति-सम्पन्न धरातल के अन्तर की आवश्यकता है । पदार्थ-विज्ञान वेत्ता यह भी कहते हैं कि शक्ति निम्न से उच्च धरातल पर स्वयं नहीं जा सकती । अवश्य कोई शक्ति या व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो सदैव धरातल में अन्तर करती रहे । हम इस शक्ति को परमात्मा मानते हैं ।

यही आकाश (ईथर) हमारे विचार का माध्यम है । यह हमें उन विचार तरंगों से मिलता है जो दूर-दूर से हमारे सगे सम्बन्धी नित्य भेजा करते हैं । इस माध्यम के द्वारा के हम पुष्ट विचार को जहाँ अन्य व्यक्ति हों, चिरकाल से दूर रहते हों सब स्थानों में भेज सकते हैं । आकाश हमारे सारे शरीर में व्याप्त है । आकाश में विचार की क्रिया का विचार करते समय पाठकों को आकाश में अपने से बाहर की वस्तु न मान लेना चाहिए । विचार को एक अज्ञात, दुर्बल या साधारण सी निसत्व वस्तु न मान लें । विचार आकाश के अद्भुत और अदृश्य माध्यम द्वारा, चुम्बक शक्ति और इसी प्रकार की अन्य ज्ञात वस्तुएँ विश्व ब्रह्माण्ड में से द्रव्य को अपने पास आकर्षित कर सकती हैं । इन वस्तुओं से भी कई गुनी शक्ति विचार में है । जितनी शक्ति विचार में है उतनी अन्य किसी पदार्थ में नहीं है । संसार का कोई पदार्थ इसके आकर्षण को नहीं रोक सकता, चाहे इसके और इसकी अभिलाषित वस्तु (केन्द्र) में कैसी ही बाधा क्यों न हो ।

जितना बलवान मस्तिष्क होता है, उसकी विचार तरंग का क्षेत्र उतना ही विस्तृत एवं वेगवान होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब किसी मनुष्य की विचारधारा में शक्ति आने लगे, तब उसे समझ लेना चाहिए कि वह भी बड़ा व्यक्ति बनने वाला है । शक्ति सर्वप्रथम विचारों में आती है । तत्पश्चात सम्पूर्ण मानव शरीर में व्याप्त हो जाती है ।

जैसे जल में पत्थर से तरंगें उत्पन्न होती हैं, वैसे ही जब हम विचार करना प्रारम्भ करते हैं, तो आस-पास के वातावरण में एक भयंकर थरथराहट उत्पन्न होती है । यकायक ईथर का समस्त वायुमण्डल कम्पायमान हो उठता है । विचार तरंगें इच्छा शक्ति के संयोग से छूटने लगती हैं और आस-पास के प्रदेश में व्याप्त हो जाती हैं । अपने गुणों से ये समस्त वातावरण को प्रभावित कर देती हैं । ऋषियों की इन्हीं विचार तरंगों के कारण बड़े-बड़े हिंसक जन्तु एवं राक्षस भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाते थे । इनका वेग, शक्ति, सामर्थ्य बड़ा उन्नत है । इन अदृश्य तरंगों के समक्ष बड़े-बड़े बली तथा धनाढ्य भी परास्त हो जाते हैं । इन्हीं शक्तियों का सामूहिक नाम "आत्म तेज" भी है । जो व्यक्ति इन तरंगों के क्षेत्र में आ जाता है, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता ।

हम निर्देश कर आये हैं कि विचार की रचना परमाणुमयी है । हमारे विचार अत्यन्त छोटे-छोटे अणुओं के योग से विनिर्मित हुए हैं । विचार के सूक्ष्म अणु अत्यन्त द्रुतगामी हैं । विचार-संचालन में मुख्य वस्तु विचार परमाणुओं के कद (Size) तथा रूप (Shape) के ऊपर निर्भर है । यदि ये परमाणु छोटे-छोटे हैं, तो आस-पास के क्षेत्र में कम कम्पन्न, थरथराहट उत्पन्न करेंगे । यदि ये कुछ बड़े तथा शक्तिशाली हैं, तो भीषण वेग से प्रभावित होंगे, चारों ओर का ईथर मण्डल क्षुब्ध हो उठेगा और ये चारों ओर व्याप्त हो जायेंगे । इनका प्रभाव भी दूर-दूर तक फैल जायेगा । यदि इन विचारों के पीछे दृढ़ इच्छा शक्ति एवं निश्चय बल है तो इनके क्षेत्र में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति इनसे प्रभावित होता जायेगा । प्राचीन योगियों के लिए विचार एक प्रकार के कवच का कार्य करते थे ।

आपके विचार वातावरण में भयंकर थरथराहट उत्पन्न कर देते हैं और विद्युत की तरंगमालिका की भाँति अग्रसर होते हैं । ईथर तो समस्त वायुमण्डल में व्याप्त है । हमारे मस्तिष्क में भी यह माध्यम प्रस्तुत है । अतएव विचार के सूक्ष्म परमाणु हमारे मस्तिष्क से प्रकाशित होकर बाहर निकल आते हैं । इस कम्पन से समस्त वायुमण्डल थरथरा उठता है । एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक ये कम्पनें पहुँच जाती हैं । जिस प्रकार रेडियो, ध्वनि की तरंगों को खींचकर पुनः आवाज उत्पन्न कर देता है, उसी प्रकार विचारों की लहरों के कम्पन भी पुनः विचार का ही रूप धारण कर लेते हैं और एक व्यक्ति का मनः सन्देश बखूबी दूसरे तक पहुँच जाता है । या यूँ समझिये कि सन्देश लेने वाले के मस्तिष्क की वही अवस्था हो जाती है जो सन्देश भेजने वाले के विचार-यन्त्र की है । यदि विचारों में इच्छा का योग नहीं है तो उसकी थरथराहट कुछ ही दूर के आकाशमण्डल में विस्तीर्ण होने के उपरान्त विनष्ट हो जाती हैं और वे दूसरे मस्तिष्क तक नहीं पहुँच पाती । यदि पहुँचते भी हैं तो वे इतने धुँधले होते हैं कि ग्राहक को समझ में नहीं आते ।

क्या कारण है कि एक व्यक्ति सफलतापूर्वक अपना सन्देश दूसरे तक पहुँचा सकता है, किन्तु दूसरा नहीं ? कारण स्पष्ट ही है । एक की विचार कम्पन प्रचण्ड है, तीव्र इच्छा एवं दृढ़ निश्चय के संयोग से वह पूर्ण परिपक्व है । उसके विचार परमाणु अत्यन्त वेगवान हैं । उनका रूप, आकार अत्यन्त परिपुष्ट है । वे ईथर में दूर तक अपना क्षोभ उत्पन्न कर सकते हैं और तीव्र गति से विकीर्ण होते हैं । दूसरे के विचार निर्बल संक्षययुक्त हैं । उनमें दृढ़ इच्छा का मनोबल नहीं है । अतएव वे आस-पास के वातावरण में ही तरंगें उत्पन्न करने के पश्चात नष्ट हो जाते हैं । उनके विचारों के अणु-परमाणु अपने केन्द्र स्थान से निकल कर थोड़ी दूर पर ही फीके, निर्जीव से हो जाते हैं । अतः विचार संचालन के इच्छुक को अपने मनोबल तथा इच्छा शक्तियों को खूब परिपुष्ट करना चाहिए । मेरा अनुभव है कि जब तक साधक की विचार शक्ति निरन्तर अभ्यास द्वारा जागृत होकर पूर्ण संगठित न हो जाय, तब तक कोई स्थायी फल प्राप्त नहीं होता । संगठित विचार ही एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक फेंका जा सकता है । संगठित विचार एकाग्रता से प्राप्त हो सकता है । मन को एक ही वस्तु पर, एक ही स्थान पर रोके रखना, जब तक की समस्त वृत्तियाँ उसे ग्रहण न कर लें सच्ची एकाग्रता से विचार संचालन मामूली योग की क्रिया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाव-समाधि

बाह्य जगत के कम्पनों द्वारा हमारे नेत्र, कान, त्वचा आदि के स्पर्श से हम देखते, सुनते तथा शीतोष्ण आदि का अनुभव करते हैं । सूक्ष्म अवस्था में पहुँच जाने पर ये कम्पन पारदर्शी होने से दूर देशों की यात्रा कराने वाले, दूर की दशा का ज्ञान करा देने वाले होते हैं । अन्तःकरण निर्मल, एकाग्र करके परमतत्व की स्फूर्ति का अनुभव करते हुए स्थित करना ही वास्तविक भाव समाधि है ।

मान लीजिए आपका एक मित्र चीन में निवास करता है । उसे आप स्थूल अवस्था में देख, सुन, बोल नहीं सकते, किन्तु ईथर माध्यम के सूक्ष्म तत्व में जब स्थित हो जाती है तो उस तत्व के प्रभाव से मनुष्य दूर के दृश्य देख सकता है तथा दूर की आवाज सुन सकता है । इसका क्या कारण है ? प्रत्येक वस्तु में कम्पन होते हैं अथवा प्रत्येक वस्तु कम्पनमय होती है । यह समस्त संसार कम्पनों का समुद्र है । मनुष्य जिस वस्तु को जानना चाहता है, उसके कम्पनों का वह मस्तिष्क निष्क्रिय अवस्था में या ध्यानावस्था में स्पर्श करता है । उसी से उस वस्तु का उस समय प्रत्यक्ष ज्ञान होता है । भाव समाधि अवस्था के लिए उन्हीं साधनों की आवश्यकता है जिनका उल्लेख एकाग्रता, कल्पना एवं चिन्तन के अन्तर्गत बताया गया है । स्मृति, चिन्तन, समाधि ये परस्पर इतने अभिन्न है कि इनमें भेद करना कठिन हो जाता है । एक ही वृत्ति तीनों स्थानों पर कार्य करती है । स्मृति द्वारा विगत दृश्यों को मूर्तिमान करते हैं । चिन्तन से उन्हें और अधिक स्पष्ट एवं पूर्ण (Perfect) बनाते हैं और भाव समाधिवस्था में इन कम्पनों द्वारा नवीन दृश्यों, वस्तुओं, चित्रों विभिन्न अवस्थाओं का अवलोकन करते हैं ।

जिनकी स्मृति तथा कल्पना तीखी और क्रियाशील होती है, वे मानस चित्र (Mental images) खींचने में कुशल होते हैं । उन्हें समाधि अवस्था प्राप्त करने में कोई विशेष कष्ट नहीं होता । सर्वप्रथम अपनी स्मृति को विशुद्ध एवं तीव्र बनाना चाहिए । इसके अभ्यास के लिए नियत समय पर किसी शान्त स्थान पर बैठ कर ध्यान करना चाहिए । स्मृति पट पर एक-एक कर चित्र खींचने चाहिए । क्रमशः मानस चित्रों में कुशल होने पर आप देखोगे कि उस स्थान के दृश्य मूर्तिमान बनाकर आपके स्मृति पट पर एक-एक करके आने लगेंगे । इस अभ्यास से स्मृति विशुद्ध और तीव्र बनती है ।

वैसे स्मृति को पुष्ट करने के लिए यात्रा का अभ्यास भी बड़े महत्त्व का है । नियत समय यात्रा करो । जैसे अमुक स्थान पर आप जाना चाहते हैं—ऐसा सोच लें, फिर ऐसा ध्यान करें कि वस्त्र पहने, ट्रंक, बिस्तर इत्यादि साथ लिया, ताँगे में बैठकर स्टेशन पर आये, स्टेशन के प्लेटफार्म पर गाड़ी की प्रतीक्षा में बैठे, फिर ट्रेन आई, ट्रेन में सफर किया और ट्रेन से उतर कर निश्चित स्थान पर बैठे, जिनसे मिलना-भेंटना है, उनसे भेंट और बातचीत करें और फिर गृह को लौट आयें । इस प्रकार के अभ्यास से कल्पना की दूरदर्शन शक्ति शतगुणी अधिक हो सकती है । इसका सूक्ष्म अंकुर प्रायः सभी के मस्तिष्क में आरम्भ से ही रहता है, जिसे 'प्रतिभा' कह कर पुकारते हैं और जिसका कवियों के लेख में पूर्ण उद्‌गार देखा जाता है । मानस चित्र के निर्माण में निपुणता प्राप्त करने के लिए यह अभ्यास उत्तम है ।

स्मरण रखिये, ध्यानाभ्यास के परिपाक होने पर ध्याता और ध्यान की प्रतीति दुर्बल और ध्येय की प्रतीति बलवान रहने लगे, ऐसी अन्तःकरण की स्थिर अवस्था का नाम समाधि है, यह अन्तःकरण की सम्यक निश्चलता है । ध्यान के समय स्मृति पट का धुंधलापन धीरे-धीरे स्वच्छ होता है, धुंधलापन हटकर हृदयपटल साफ हो जाता है । इसी पर दूर की वस्तुओं के दर्शन होते हैं तथा विविध चित्र खींचे जाते हैं ।

भाव समाधि के अभ्यास में सावधानी

(१) भाव समाधि का अभ्यास करने वालों को विषयासक्ति से दूर रहना चाहिए । भाव समाधि के साधक को इस लोक की सुन्दर स्त्रियाँ मोहित करने का प्रयत्न करती हैं । इनसे योगप्रदीप की रक्षा कीजिए ।

(२) भाव समाधि के अभ्यास द्वारा मुझे कोई हानि होगी, ऐसा भय त्याग देना चाहिए ।

(३) मैं अवश्य अपना सन्देश, दूसरे मनुष्य तक भेज सकता हूँ, बातें कर सकता हूँ, उसका सन्देश ग्रहण कर सकता हूँ, ऐसा दृढ़ विश्वास रखना चाहिए ।

(४) नेत्र मूँदने पर मन को इधर-उधर भटकने न देना चाहिए, प्रत्युत कल्पना को गन्तव्य स्थान पर एकाग्र करना चाहिए । समस्त वृत्तियाँ उसी में लय हो जाना जरूरी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(५) तीव्र आकांक्षा तथा दृढ़ विश्वास द्वारा मानस चित्र इधर-उधर भेजे जा सकते हैं । इसी से परमात्मा का साक्षात्कार भी हो सकता है ।

टेलीपैथी

टेलीपैथी वास्तव में एक मस्तिष्क में वैसी ही क्रियाएँ (Movements) उत्पन्न कर देना है, जैसी कि दूसरे के मस्तिष्क में हो रही हैं ।[१] दोनों में एक प्रकार के ही कम्पन उत्पन्न होने अनिवार्य हैं । विचार परमाणुओं से विनिर्मित है । प्रत्येक अणु कम्पन करता है । एक के मस्तिष्क जैसा कम्पन ही दूसरे में उत्पन्न होने की क्रिया टेलीपैथी है विश्व की सूक्ष्म या स्थूल वस्तुएँ कम्पनों से पूर्ण रहती हैं । अतएव चाहे काल और स्थान में वह वस्तु कितनी ही दूर होने पर भी प्रत्येक वस्तु का, प्रत्येक वस्तु से कम्पन सम्बन्ध रखता है । जैसा फ्राँसिस थाम्पसन ने कहा है—वृक्ष से एक पुष्प तोड़ने का झटका तारा-मण्डल तक को कम्पायमान कर देता है ।

टेलीपैथी का अर्थ है एक मस्तिष्क का दूसरे निर्बल मस्तिष्क पर प्रभाव । मछलियों को लीजिए । झुण्ड का झुण्ड एक ओर चलते-चलते यकायक विचार संचालक से एकदम निश्चय करके एक ही ओर मुड़ता है । एक बड़ी मछली का मस्तिष्क तेजी से दूसरे मस्तिष्कों में एक ही प्रकार के विचार फेंकता है । जब हम किसी व्यक्ति के लिए कहते हैं कि अमुक व्यक्ति दूसरे के विचार ताड़ लेता है, तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि वह अपने मस्तिष्क को इस प्रकार संवारता तथा उस दशा में (Adjust) रखता है कि वे कम्पन अनायास ही उसमें उत्पन्न हो जाते हैं । जब जल शान्त, निश्चेष्ट स्थिर अवस्था में होता है तो तनिक-सा कम्पन समस्त धरातल पर फैल जाता है । इसी प्रकार जब मन शान्त, स्थिर और शिथिल होता है (Passive non thinking condition) सब प्रकार खाली (Blank) और भ्रान्ति से सर्वथा मुक्त होता है तो दूसरे के विचारों की परछाईं बड़ी सरलता से उस पर अंकित हो उठती है । जितनी शान्ति होगी, शरीर एवं मन की जितनी शिथिलता होगी, विचार, चिन्ता, भ्रान्ति से जितनी मुक्ति होगी उतनी ही आसानी से विचारों की तरंगें आती हैं और हम विचार जान लेते हैं ।

मस्तिष्क के केन्द्र में इतना प्रचण्ड बल है कि वह प्रायः सर्वथा स्थिर और शान्त प्रतीत होता है । इस स्थिर केन्द्र से विचार बाहर की ओर विकीर्ण होते हैं । इस विचार राशि और उसके दूर तक पहुँचने का आधार इच्छा शक्ति एवं मनोबल पर है । उत्पन्न करने की क्रिया मनुष्य के विश्वात्मा के प्रबल संयोग द्वारा होती है । शुद्ध रीति से श्वास लेने से इस संयोग को प्रायः बहुत कुछ सहायता मिलती है । शुद्ध रीति से साँस लेने पर विचार की एकाग्रता पर बड़ा अद्‌भुत परिणाम होता है । जिस वस्तु पर ध्यान लगाया जाता है, उसकी ओर बलवान और उन्नत इच्छा के जोर से विचार साधा जाता है । यह ध्यान जितना अधिक प्रचण्ड होगा उतना ही अधिक शीघ्र और सीधी उस विचार की यात्रा होगी । यह भली-भाँति समझ लीजिए कि यदि यह असंगठित मन का चंचल और अनिश्चित विचार है, तो अपनी यात्रा में टेढ़े-मेढ़े मार्ग का अनुसरण करता है । इसकी शक्ति बदलती रहती है और अन्ततः अपने लक्ष्य पर पहुँचे बिना ही यह नष्ट हो जाती है ।

कुछ विद्वानों का विचार है कि मनुष्य के अचेतन मस्तिष्क में (Super-Conscious) नाम का एक और मानसिक स्तर है । यह बड़ा सूक्ष्म तथा ग्रहणशील है । विचार की कम्पन इसी में टकराकर पुनः विचार बन जाती है । समाधि अवस्था में अर्ध-चेतन (Sub-Conscious) तथा चेतन (Conscious) मन तो निश्चेष्ट हो जाते हैं पर (Unconscious) अचेतन मन अत्यन्त क्रियाशील बन जाता है । इसका Super conscious स्तर ही विचार ग्रहण एवं विचार संचारण जैसा अद्‌भुत कार्य किया करता है ।

टेलीपैथी का आरम्भ करने के लिए किसी बहुत मनभाती वस्तु को लेना चाहिए आँख बन्द कर शरीर को निश्चेष्ट कर लो, एकान्त स्थान में शान्त चित्त होकर बैठ जाओ, शरीर और मन को शिथिल कर लो । सब ओर से विचार हटा कर अपने भीतर विज्ञानमय कोष में, जहाँ आत्मा का निवास है, उसमें प्रवेश करो । एक मिनट के लिए उस चुनी हुई वस्तु को मानसिक नेत्रों के सन्मुख

१. It is simply the induction in the brain of one individual of molecular movements corresponding with those taking place in the brain of another. —*Joseph Sinel*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखो । उतावले न बनो, प्रत्युत धीरे-धीरे उसे और स्पष्टतर बनाओ, उसे अपनी कल्पना में बिल्कुल साफ-साफ देखने का प्रयत्न करो । प्रारम्भ में अन्दर धुँधुला-धुँधुला प्रतीत होगा अभ्यास से मानसिक चित्र खिचने लगेगा, फिर स्पष्ट होता जायेगा । यदि ऐसा करने में सफलता प्राप्त न हो, तो कुछ देर ठहर कर पुनः उद्योग करो । बार-बार के प्रयास से सफलता मिलने लगेगी ।

अपने मस्तिष्क को एक महान आकर्षण केन्द्र मानो । "मैं एक समुन्नत तेज पिण्ड हूँ ज्योतिर्मय सचेतन, चुम्बक हूँ । शक्ति की किरणों को, विचार की तरंगों को ईथर में फेंकता हूँ, एकाग्रता द्वारा विचार बिखेरता हूँ । मेरे सारे शरीर में ऐसी आकाश-तरंग व्याप्त हो रही हैं, जो अनन्त में से सब चीजों के लिए माध्यम का काम देते हैं । मैं जीवन का नियम हूँ, शक्ति हूँ, प्रेम हूँ । मेरा सारा शरीर प्रेम से परिपूर्ण हो रहा है ।" इस संकेत को स्वीकार करो, इसमें सराबोर हो जाओ । तुम्हारा मस्तिष्क एक सचेतन चुम्बक है और एक विशेष प्रकार के विचार को बाहर बिखेर कर यह वैसा ही आकर्षण केन्द्र बन जाता है । "मैं वही प्रभावशाली केन्द्र हूँ ।" ऐसा उद्‌बोधन करते ही जिस विचार पर मनः नेत्र एकाग्र करते ही, वे एक दम एक विशेष विचार अनुक्रम उत्पन्न कर देते हैं । ज्यों ही एक विशेष प्रकार के विचार करने लगते हैं, झट विचार तरंगे छूटने लगती हैं । ये निरन्तर चारों ओर छूटने लगती हैं और अन्ततः संसार के पास जो सर्वोत्तम पदार्थ हैं, उसके साथ मानसिक संसर्ग उत्पन्न कर देती हैं । यह सर्वोत्तम पदार्थ कुछ भी हो सकता है । अपने विचारों की दशा निर्धारित अवश्य करो अन्यथा विचार तरंगें चारों ओर विकीर्ण होकर नष्ट हो जायेंगी । मन में जो मानस चित्र है उसी को लक्ष्य बना सकते हो । अपनी विचार किरणों को इसी केन्द्र की ओर तेजी से फेंको ।

क्रोध, ईर्ष्या, बैर, प्रतिशोध दूसरे का अनिष्ट, पाप रूप, दोष रूप या अहितकर विचार बड़ा कलुषित वातावरण उत्पन्न कर देंगे । ये चुम्बकीय शक्ति को पंगु कर देंगे । अतः तुम्हें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि शुभ भावना कल्याण की उच्च कल्पना में आरूढ़ हुए चित्र स्थूल रूप में, विचार संचालन में सहायक होते हैं । इसीलिए वेदों में निर्देश किया गया है कि कल्पना सदैव शिवसंकल्पमयी हो । अपने अन्तःकरण में विशुद्ध पवित्र अनन्त स्वरूप चेतन सत्ता के प्रबल मानसिक चित्र की रचना करो । एकान्त स्थान में, रात्रि के समय सुखासन से बैठ जाओ और कुछ क्षण आकाश की ओर देखकर नेत्र मूँद लो और अपनी वृत्ति को मूर्धा में स्थिर करो । इन्द्रियों को विषयों से वृत्ति को हटा लो और ध्यान में ऐसे डूब जाओ कि सम्पूर्ण संसार आपके लिए अदृश्य हो जाय । इस अवस्था में पराबुद्धि जागृत होती है । दिव्य आध्यात्मिक योग की अद्‌भुत शक्तियाँ महान व्यक्तियों को इसी उच्च लोक में प्रवेश करने से प्राप्त हुई हैं । ये गुप्त शक्तियाँ इतना तर्क या बुद्धि द्वारा प्राप्त नहीं होती, जितनी किसी अज्ञात क्षेत्र (Unconscious mind) से ही अपने आप उतरती हैं ।

यह केवल उच्च कल्पना मात्र ही नहीं हैं, किन्तु यथार्थ सत्य है । शास्त्र में बतलाया गया है कि—"मूर्ध ज्योतिषिसिद्ध दर्शनम्"—"प्रातिभाद्वा सर्वम्"—मस्तिष्क में ब्रह्मरंध्र नाम का एक छिद्र है । यह प्रकाश का तेजोमय केन्द्र है । इस स्थान पर चित्त एकाग्र करने से सिद्ध पुरुषों का साक्षात्कार होता है मन में स्वयं स्फूर्ति से जो ज्ञान प्राप्त होता है । उसी से विचार संचालन होता है । जिसकी आज्ञा से प्राण जीवित रहते हैं, जिसकी प्रेरणा से बुद्धि कार्य करती है, जो वाणियों की वाणी है, जो आत्मा की आत्मा है, जो दूर से भी दूर है और समीप से भी समीप है, वह चेतन सत्ता है । यह गुप्त चेतन सत्ता हमें गहन ध्यान की अवस्था में प्राप्त होती है, जो मनुष्य इस गुप्त सत्ता के उच्च शिखर पर पहुँच जाता है, उसमें विचार संचालन का गुण अनायास ही आ जाता है । वही एक सत्, चित्, आनन्द घन सर्वत्र भरा हुआ है, गतिमान-सा प्रतीत होता है, वही बाहर भीतर सभी स्थानों में व्याप्त है, वही हमें दूसरे के विचार देता और हमारे ले जाता है । इसी आत्म तत्व पर विचार केन्द्रित करो ।

विचार संचालन की क्रिया के अभ्यास

रात्रि में किसी एकान्त स्थान में शान्त, ध्यानावस्थित हो बैठ जाओ । सुखासन सर्वोत्तम है । लेटना भी ठीक है । सम्पूर्ण शरीर को शिथिल कर लो, मन को निश्चेष्ट करो और खाली (Blank) कर दो । माँसपेशियों को ढीला छोड़ दो । शरीर में, मन तथा मस्तिष्क में किंचित भी तनाव न रहे । मन में यह दृढ़ विश्वास रहे कि हम अपना सन्देश दूसरे व्यक्ति को भेज सकेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसके पास सन्देश भेजना चाहते हो उससे प्रेम तथा सौहार्द्र होना अनिवार्य है । यदि हो सके तो उसे पहले ही से बता दो कि आज रात्रि में ९ बजे या अमुक समय पर हम अपना सन्देश भेजेंगे ।

नियत समय पर शिथिलीकरण कीजिए । श्वास धीरे-धीरे स्वाभाविक गति से चलता रहे । मन से समस्त चिन्ता, व्याधि, वैर भाव निकाल कर उसे खाली (Blank) कर डालो । अब चित्त में अपनी सृजनात्मक कल्पना द्वारा उस व्यक्ति को मूर्तिमान करो जिसके पास अपना सन्देश भेजना है । उसका साफ बोलता-सुनता मानस चित्र (Mental image) अन्तर्जगत् में प्रस्तुत करो ।

अब पूरे विश्वास के साथ अपना सन्देश इस मानस मूर्ति के सन्मुख कहो । धीरे-धीरे शब्द दृढ़ता से निकालो, जल्दी न करो । अपने सन्देश को दो से तीन बार तक इस मानसिक मूर्ति से कहते जाओ, किन्तु आत्म श्रद्धा को ढीला न होने दो ।

मान लीजिए आप किसी मित्र, सम्बन्धी, सुहृद, बहिन, पत्नी इत्यादि को बुलाना चाहते हैं । शिथिलीकरण कर कल्याण से मानसचित्र खींचो और उसके पास यह सन्देश भेजो—"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास आ जाओ ? मुझे तुम्हारी अत्यन्त आवश्यकता है । मैं अपने जीवन में पग-पग पर तुम्हारी आवश्यकता अनुभव कर रहा हूँ । बिना तुम्हारे मेरे कई आवश्यक कार्य रुके पड़े हैं । अतएव बुलाने का यह सन्देश मैं तुम्हारे पास भेजता हूँ । तुम इसे मिलते ही तुरन्त चले आना । आओ । तुम अवश्यमेव आओ ।"

अब श्वास अन्दर खींचो तो इसी सन्देश पर चित्त को एकाग्र रखो और उस व्यक्ति का मानस चित्र अपने आगे बनाये रहो । बारम्बार इसी की पुनरावृत्ति करते रहो । अधीर मत होओ, न शीघ्रता करो । यह कला काफी अभ्यास चाहती है । इसके लिए दीर्घकालीन अभ्यास चाहिए । हमारी सृजनात्मक कल्पनाशक्ति एकाग्रता (Concentration) और इच्छा शक्ति पर विचार गति का प्रवाह निर्भर है । इन तत्वों के उचित विकास से पूर्व विचार में कम्पन उत्पन्न नहीं होते । दो हफ्तों के अभ्यास से सन्देश आपके सुदृढ़ मित्र के पास पहुँचने लगेंगे ।

शुरू-शुरू के प्रारम्भिक अभ्यास में यह करना चाहिए । अपने प्रेमी मित्र को अपने से दो गज दूरी पर कुर्सी पर बैठाओ । मेज उसके आगे रहे । कागज पेंसिल लेकर उससे कहो कि जो कुछ तुम सन्देश उसे भेजो वह लिखता रहे । तुम स्वयं विचार का सन्देश भेजने के लिए एक कागज का भौंपू, जैसा ग्रामोफोन बाजे में टीन का बना होता है, लेकर दूसरी ओर कुछ ऊँचे स्थान पर बैठ जाओ । इस अभ्यास में आपस में इन्द्रिय स्पर्श की आवश्यकता नहीं है । इसमें केवल अपने आमने-सामने बैठकर एक-दूसरे के मनोगत विचार आकर्षण द्वारा एक दूसरे को सूचित करने की आवश्यकता होती है । इसमें अपने विचार तेजी से दूसरे मस्तिष्क में फेंकने होते हैं । विचार भेजना (Project) या उन्हें ग्रहण करने (Receive) में शान्तवृत्ति और एकाग्रता की बहुत जरूरत रहती है ।

कागज के भौंपू को एक आँख में लगा लीजिए । उसका खुला हुआ चौड़ा भाग बैठे हुए ग्राहक (Receiver) की तरफ कर लीजिए । एक नेत्र मूँद लीजिए । दूसरे नेत्र से एकाग्र दृष्टि कर देखना शुरू कीजिए । ग्राहक से कहिए कि वह भौंपू के चौड़े मुँह पर एकाग्र दृष्टि लगाकर एकाग्रतापूर्वक देखता रहे । पूर्ण एकाग्र हो जाने पर नेत्र मूँद कर दृष्टि की एकाग्रता वैसी ही स्थिर रखने का अभ्यास डालना चाहिए । "तुम्हारा कौन-सा सन्देश कागज पर लिखूँ ?" ऐसा प्रश्न ग्राहक को शान्त चित्त से पूछना चाहिए । उसका मन भी खाली (Blank) रहे । कुछ देर पश्चात भेजने वाले की तरफ से विचार की लहरें ग्राहक के मन में प्रविष्ट होने लगेंगी । उस समय तुम्हारा दिमाग जो कुछ भी लिखने को प्रेरित करे, उसी सन्देश को नोट करते जाओ । आरम्भ में इन सन्देशों में गल्ती होना सम्भव है, किन्तु अभ्यास से धीरे-धीरे साफ विचार की लहरें समझ में आने लगेंगी ।

मान लीजिए एक मित्र दिल्ली में है तथा दूसरा कोटा में है । यह परस्पर एक नियत निश्चित समय में एक दूसरे को सन्देश भेजना चाहते हैं । यह मजे में विचार संचालन की रीति से यह किया जा सकता है, किन्तु ऐसा प्रयोग करने के लिए यह पहले ही निश्चित कर लेना चाहिए कि कौन सन्देश किस समय भेजेगा और कौन सुनेगा । ऐसी दशा में भौंपू का चौड़ा मुँह सन्देश ग्रहण करने वाले (Receiver) को अपने कमरे की सामने वाली दीवार पर अपनी तरफ चौड़ा मुँह करके टाँग लेना चाहिए और नियत समय पर उस पर एकाग्र चित्त से देखना चाहिए । जब दिमाग में स्वयं विचार की लहरें (Waves) प्रारम्भ हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो कागज पर लिखना चाहिए । दूसरी ओर विचार विक्षेपक (Sender) को भौंपू का छोटा मुँह नेत्र पर लगाकर "सन्देश ग्राहक मेरे सामने है ।" —ऐसी कल्पना करनी चाहिए और अपना मानसिक संकेत भेजना चाहिए ।

विचार पुष्टीकरण के दो और उपाय

स्वयं रात्रि में एकान्त में बैठ जाइये और नेत्र मूँद लीजिए । शरीर और मन को शिथिल कर लीजिए । एक पुस्तक हाथ में ले लीजिए । अब नेत्र बन्द किए-किए पुस्तक का कोई पृष्ठ खोल लीजिए । फिर मन में सोचिए कि यह कौन-सा पृष्ठ है । संख्या धीरे-धीरे खाली दिमाग में घूमने लगेगी, जो अंक प्रथम बार मन में उत्पन्न हो वही मन पर अंकित कर लो और आँख खोल कर देखो । तुम्हें आश्चर्य होगा कि कैसे वही अंक मन में आया । प्रारम्भ में चार पाँच अंकों का अन्तर सम्भव है, किन्तु धीरे-धीरे कम होकर अभ्यासी उस अंक को ठीक-ठीक बता सकता है ।

विचार विनिमय की बुद्धि बढ़ाने का एक यह भी उपाय है कि दो मित्र एक कमरे में, एकान्त में एकाग्र चित्त करके स्वस्थ अन्तःकरण से बैठ जायें । उनमें से एक अपने मन में विचार करना प्रारम्भ करे । दूसरा तीव्र मानसिक दृष्टि से जानने की चेष्टा करें । अभ्यास से मन की बात मालूम होने लगेगी । इस प्रकार अन्तः चक्षु खुल जायेंगे । यह अभ्यास छः महीने तक चलता रहे । दोनों मित्र हेर-फेर कर विचार विनिमय मौन रहकर करते रहें । एक बार सिद्ध हो जाने पर दोनों एक दूसरे से कितनी ही दूरी पर क्यों न हों, अपने विचार बखूबी भेज सकते हैं । प्रयोग और अभ्यास करते समय यदि अपनी विचार शक्ति पंगु होती हुई या थकी हुई सी जान पड़े तो अभ्यास बन्द कर देना चाहिए ।

स्मरण रखिए, श्रद्धापूर्वक जो शब्द तुम्हारे मन में मानस चित्र के सन्मुख दुहराये जायेंगे, उनमें बड़ा बल है । इस उद्‌बोधन से विचार तरंगें तुरन्त ईथर प्रदेश में हलचल पैदा कर दूसरे से तुम्हारा मानसिक संसर्ग उत्पन्न कर देते हैं, फिर तुम्हारे विचार क्रमशः दूसरे के दिमाग में घुस जाते हैं ।

इस क्रिया से प्रेम, सहानुभूति, रक्षा, भलाई, शान्ति, आरोग्य, भ्रातृभाव, सुख के शुद्ध परमाणु ही बिखेरने चाहिए । यदि तुम इससे दूसरे को हानि पहुँचाने की कोशिश करोगे तो वे विचार उलट कर तुम्हीं को नुकसान पहुँचायेंगे । क्रोध, ईर्ष्या, व्याधि, लड़ाई, झगड़े के विचार स्वयं भेजने वाले के पास लौट आते हैं । जिससे भेजने वाले पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है ।

प्रत्येक साधक का यह कर्तव्य है कि वह जब कभी किसी के गृह में प्रवेश करे तो मन ही मन सुख, शान्ति, आरोग्य, भातृभाव और प्रेम के विशुद्ध परमाणुओं को फैलाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करे कि इस घर में शान्ति हो, शान्ति हो, शान्ति हो, ओऽम् शान्ति ! शान्तिः शान्तिः ।

इस विद्या के अन्य उपयोग

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए, प्रेम भाव फैलाने, प्रभाव डालने, उन्नत होने के लिए यह विद्या बड़े महत्त्व की है । नित्य रात्रि में या प्रातःकाल तुम कोई उत्तम सन्देश लेकर ध्यान में प्रविष्ट हो जाओ । तुम्हारे सम्पूर्ण शरीर में ऐसी किरणें हैं, ऐसा प्रभा-मण्डल है जिसका प्रभाव दूर-दूर तक पड़ता है । इस प्रभा-मण्डल को Light of the illuminated mind या विकसित मन की आभा कहते हैं । तुम्हारे व्यक्तिगत विचारों के अनुसार इसमें परिवर्तन चला करते हैं । इन्हीं अदृश आभामयी किरणों के प्रभाव से अच्छा या बुरा वातावरण उत्पन्न होता है ।

तुम ऐसा ध्यान करो जैसे तुम्हारे सम्पूर्ण शरीर से आकाश की तीव्र किरणें निकल रही हैं । तुम वातावरण से उत्तम तत्व खींच-खींचकर अपने अन्दर एकत्रित कर रहे हो । फिर उन एकत्रित किरणों को बाहर प्रकाशित कर रहे हो ।

ध्यान करो कि "मैं प्रेम पुंज हूँ । मेरा पूर्ण शरीर प्रेम तत्व से परिपूर्ण हो रहा है । संसार का प्रत्येक अणु परमाणु मुझे प्रेम कर रहा है । मैं प्रेम का महान आकर्षक केन्द्र बन गया हूँ ।" इस प्रकार का एक उत्तम सन्देश बना लो और उसे बार-बार श्रद्धापूर्वक दुहराते रहो । तुम देखोगे कि तुम्हारी इस भावना से संसार के सभी व्यक्तियों का व्यवहार तुम्हारे साथ बदल जायेगा । तुम्हारे आफिसर तुम्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगेंगे । सभी तुझे प्रेम करेंगे । तुम जैसी किरणें बाहर निकालते हो, उसी के अनुसार दूसरे तुमसे व्यवहार भी करते हैं । जिन तत्वों के संकेत तुम दुहराते हो कुछ काल पश्चात वैसे ही बन जाते हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ स्मरणीय तत्व

विचार संचालन अभ्यास का विषय है । इसके अभ्यास में जितना परिश्रम और जितना समय जिज्ञासु लगायेगा, उतना ही चिरस्थायी उसके फल होंगे और उतना ही अधिक सफलता उसे प्राप्त होगी । इसलिए यदि प्रारम्भ में कुछ कम एकाग्रता हो तो घबराना न चाहिए । यथाशक्ति मनोबल का संचय करते रहना चाहिए । नये अभ्यासी पहले एकाग्रता का अभ्यास करें । यह मानना भारी भूल है कि मनोबल तथा मानसिक एकाग्रता केवल ईश्वर प्राप्ति के लिए ही उपयोगी है, वरन् यह स्मरण रखना चाहिए कि मानसिक एकाग्रता से विचार संचालन आसानी से हो सकता है । आध्यात्मिक विकास की यह उच्च स्थिति में प्रविष्ट करना है ।

जब कोई व्यक्ति किसी तुच्छ से तुच्छ विषय पर भी विचार करने बैठता है, तो उसके विचार परमाणु एक दम ईथर में क्षोभ उत्पन्न करते हैं । इससे उनके चारों ओर का मण्डल क्षुभित हो उठता है । यदि इन परमाणुओं के पीछे दृढ़ मनोबल नहीं है तो यह कम्पन उसी स्थान तक रहता है किसी दूसरे पर उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता । यदि कोई दृढ़ निश्चयी इन विचारों को तेजी से फेंकता है तो ये विचार भूमण्डल के एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढकेले जा सकते हैं ।

जब टेलीपैथी के उद्देश्य से दो मस्तिष्क कार्य कर रहे हों, तब उनमें से एक का धनात्मक (+) तथा दूसरे का ऋणात्मक (–) होना आवश्यक है । परस्पर की सहानुभूति, प्रेम, शुभ विचार द्वारा वे आकाश पर दबाव डालते हैं और विचार क्षेत्र इस प्रकार कार्य करते हैं कि उनमें एक से परिवर्तन होने लगते हैं । ये परिवर्तन ही विचारों में परिणत हो जाते हैं । अतः भेजने वाला और विचार ग्रहण करने वाला परस्पर वैमनस्य न रखें ।

जिन व्यक्तियों में अच्छे सम्बन्ध होते हैं उन्हें आपस में विचार संचालन करना सुगम होता है । परस्पर का अच्छा परिचय और आत्मभाव दो व्यक्तियों को एक सम्बन्ध सूत्र बनकर बांधे रहता है । इस सम्बन्ध सूत्र के सहारे विचारधारा उसी प्रकार दौड़ती है, जैसे तारों के सहारे बिजली की धारा दौड़ा करती है । इसलिए आरम्भिक अभ्यासी को विचार प्रेषण का अभ्यास अपने घनिष्ठ मित्रों या आत्मीयजनों पर करना चाहिए । जिनके साथ शिथिल सम्बन्ध हैं, साधारण परिचय है । भीतर ही भीतर मनोमालिन्य है ऐसे लोगों पर आरम्भिक प्रयोग कठिनता से सफलता होते हैं।

अच्छे साथी का चुनाव विचार संचालन विद्या के आरम्भिक अभ्यास के लिए बहुत जरूरी है । शान्त चित्त, सात्विक स्वभाव, श्रद्धालु तथा आत्मवाद पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति का अन्तर्मन ऐसा लचीला होता है कि वह दूसरे के स्वल्प बल से प्रेरित किए हुए विचारों को भी आसानी से पकड़ लेता है । इसके विपरीत अस्थिर चित्त, अविश्वासी तथा उच्छृंखल व्यक्ति सबल विचारों को भी ग्रहण नहीं कर पाते । यदि अभ्यास के लिए अच्छा साथी मिल जाता है तो सफलता बहुत शीघ्र और स्वल्प काल में ही प्राप्त होने लगती है ।

अपने आत्मबल को बढ़ाना चाहिए, चित्तवृत्तियों को पवित्र एवं सात्विक बनाना चाहिए, स्वभाव में सरलता लानी चाहिए और सद्भावों से अन्तःकरण को ओत-प्रोत करना चाहिए । नित्य परमात्मा की उपासना करने से आध्यात्मिक गुप्त शक्तियों का विकास होता है और बढ़े हुए मनोबल द्वारा विचार संचालन की शक्ति आती है । इसलिए अपने जीवन को तपश्चर्या और ईश्वर परायणता में संलग्न रखना चाहिए ।

विचार संचालन विद्या कोई खेल तमाशे की या बाजीगरी की वस्तु नहीं है । यह सुविकसित उच्च अन्तःकरण की एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है । उसे तुच्छ मनोरंजन की बातों में खर्च न करना चाहिए । जिनके लिए भी जो भी विचार भेजे जायें वे आत्मा को ऊँचा उठाने वाले हों, कल्याण मार्ग पर ले जाने वाले हों । साधारण काम-काज की बातें जो एक पोस्टकार्ड से तार या टेलीफोन से चन्द पैसे खर्च करके दूसरों के पास भेजी जा सकती हैं उनके लिए यह श्रम साध्य शक्ति व्यय क्यों की जाय ?

हमें सदा दूसरों के लिए ऐसे आध्यात्मिक भाव प्रेरित करने चाहिए जो उन्हें ऊँचा उठावें, महान उद्देश्य के लिए, दिव्य प्रयोजन के लिए विचार बल का उपयोग होना चाहिए । साधकों को विचार संचालन विद्या की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, पर उसका उपयोग तुच्छ प्रयोजन के लिए नहीं, परमार्थ के लिए, पर-कल्याण के लिए करना चाहिए ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीन्द्रिय क्षमताओं का आधार

अतीन्द्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि व आधार

अतीन्द्रिय ज्ञान अब एक वैज्ञानिक तथ्य है । सामान्यतः ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से ही ज्ञान सम्पादन किया जाता है, पर अब विश्लेषण का विषय छठी इन्द्रिय भी बन गई है । मनुष्य कई बार ऐसी जानकारियाँ प्राप्त करता है, जो इन्द्रिय ज्ञान की परिधि से सर्वदा बाहर की बात होती हैं । अमेरिकी मन रोग चिकित्सक डॉ. एणुरीना पुहरिच ने अपनी पुस्तक "बियोण्ड टेलीपैथी" में ऐसी अनेकों घटनाओं का उल्लेख किया है जिनसे सिद्ध होता है कि कितने ही मनुष्यों को समय-समय पर दूरस्थ स्थानों पर घटित हुई घटनाओं का ज्ञान बिना किसी साधन संचार के अनायास ही होते देखा गया है ।

प्रामाणिक इतिहासकार 'हिरोडोटस' ने ईसा से पूर्व ५४६-५६० में हुए लीडिया के राजा क्रोशस का विवरण लिखा है । उसमें कहा गया है कि राजा अपने शत्रुओं से आतंकित था । उसने किसी भविष्यवक्ता की सहायता से रास्ता निकालने की बात सोची । प्रामाणिक भविष्यवक्ता को ढूँढ़ निकालने के लिए उसने तत्कालीन सात प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं के पास अपने दूत भेजे और कहा जिस समय मिलें उसी समय वह पूछें कि—'अब क्रोशस' क्या कर रहे हैं ? इधर राजा ने अपना घड़ी-घड़ी का कार्य विवरण लिखने की व्यवस्था कर दी ।

छः के उत्तर तो गलत निकले, पर सातवें उत्फी नामक भविष्यवक्ता की बात अक्षरशः सही निकली । उसने दूत के बिना पूछे ही बताया—"क्रोशस इस समय पीतल के बर्तन में कछुए और भेड़ का मिला हुआ माँस भून रहा है ।" पीछे राजा ने उस भविष्यवक्ता को बुलाया और उसके परामर्श से कठिनाइयों से त्राण पाया ।

इटली के एक पादरी अलोफोन्सस लिगाडरी ने अर्धमूर्छित स्थिति में दिवा स्वप्न देखा कि "ठीक उसी समय रोम के बड़े पोप का स्वर्गवास हो गया है ।"

उन दिनों सन् १७७४ में यातायात या डाक-तार का भी कोई प्रबन्ध न था । इतनी दूर की किसी घटना की ऐसी जानकारी जब उन्होंने अपने शिष्यों को सुनाई तो किसी को इसका कोई आधार प्रतीत नहीं हुआ । बड़े पोप बीमार भी नहीं थे फिर अचानक ऐसी यह मृत्यु किस प्रकार हो सकती है । कुछ ही दिन बाद समाचार मिला कि पोप की ठीक उसी समय वैसी ही स्थिति में मृत्यु हुई थी जैसी कि लिगाडरी ने विस्तारपूर्वक बताई थी ।

सन् १७५६ की वह घटना प्रामाणिक उल्लेखों में दर्ज है जिसके अनुसार स्वीडन के इमेनुअल स्वीडन वर्ग-नामक साधक ने सैकड़ों मील दूर पर ठीक समय हो रहे भयंकर अग्निकाण्ड का सुविस्तृत विवरण अपनी मित्र मण्डली को सुनाया था । उस अग्निकाण्ड में घायल तथा मारने वालों के नाम तक उसने सुनाये थे, जो पीछे पता लगाने पर अक्षरशः सच निकले ।

खोए हुए मनुष्यों एवं सामानों के सम्बन्ध में अतीन्द्रिय चेतना सम्पन्न मनुष्य जब सही अता-पता देने में सही सिद्ध होते हैं तो यही मानना पड़ता है कि प्रत्यक्ष साधनों एवं इन्द्रिय ज्ञान के सहारे जो कुछ जाना जाता है बात उतने तक ही सीमित नहीं है, मनुष्य की रहस्यमयी शक्तियों के आधार पर वैसा भी बहुत कुछ जाना जा सकता है जो सामान्यतया असम्भव ही कहा जा सकता है ।

विज्ञानी डॉ. मोरे बर्सटीन ने लेडी वण्डर के बारे में एक दिन अपने एक मित्र से सुना, इसके पूर्व विमान-यात्रा में उनका बिस्तर व सामान खो गया था, जिसमें जरूरी कागजातों वाला बक्सा भी था । विमान कम्पनी ने खोए सामान के न मिलने की घोषणा कर दी थी तथा मुआवजे का प्रस्ताव रखा था, जिसे बर्सटीन ने अस्वीकार कर खोज जारी रखने को कहा था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब मित्र से सुन बर्सटीन को अपने सामान की चिन्ता तो जाती रही । भीतर की जिज्ञासा-वृत्ति उमड़ उठी । वे चल पड़े लेडी वण्डर से मिलने । वहाँ सर्व प्रथम बर्सटीन ने पूछा—बताइये, पेरिस में मैंने जो बिल्ली पाल रखी थी, उसका नाम क्या था ? लेडी वण्डर ने उसे विस्मित करते हुए बताया—भर्तिनी । फिर बर्सटीन ने अपने सामान की बाबत पूछा । लेडी वण्डर ने बताया—तुम्हारा सामान न्यूयार्क हवाई अड्डे में है ।

पहले तो बर्सटीन को अविश्वास हुआ । न्यूयार्क हवाई अड्डा छाना जा चुका था, पर फिर उसने हवाई अड्डे के अधिकारियों को फोन किया—"महोदय, मुझे विश्वस्त सूत्रों से जानकारी मिली है कि मेरा सामान न्यूयार्क हवाई अड्डे के भवन के ही भीतर है । कृपया दुबारा तलाश करें ।" तलाशी शुरू हुई और सामान सचमुच मिल गया ।

न्यूजर्सी की आत्मवेत्ता महिला फ्लोरेन्स किसी वस्तु को छूकर उससे सम्बन्धित व्यक्ति के बारे में जो कुछ बताती थी, उसका प्रायः ८० प्रतिशत सच होता रहा । गुमशुदा की तलाश, हत्याओं की जाँच तथा अन्य खोज-बीन के मामलों में पुलिस भी उसकी सहायता लेती रही ।

पूर्वभास की यह क्षमता कई व्यक्तियों में असाधारण तौर पर विकसित होती है । द्वितीय महायुद्ध में ऐसे लोगों का दोनों पक्षों ने उपयोग किया था । हिटलर के परामर्श मण्डल में पाँच ऐसे ही दिव्यदर्शी भी थे । उनका नेतृत्व करते थे विलियम क्राफ्ट ।

प्रत्यक्ष इन्द्रिय शक्ति हमारे सामान्य जीवन-निर्वाह में अतीव उपयोगी भूमिका सम्पन्न करती है । वह न हो तो फिर हम जीवित माँस-पिण्ड की तरह इधर-उधर लुढ़कते ही मौत के दिन पूरे करेंगे । मानवी प्रगति में उसकी परिष्कृति ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का ही प्रमुख योगदान है ।

कल्पनाएँ सजीव सक्रिय

मानवी चेतना का मोटा उपयोग वस्तुओं के उपभोग और प्राणियों के साथ व्यवहार कौशल के रूप में ही प्रतीत होता है, पर जैसे-जैसे रहस्यमय पर्दे उठते जा रहे हैं, वैसे-वैसे सिद्ध होता जा रहा है कि इस स्थूल के भीतर कोई दिव्य चेतना-लोक जगमगा रहा है और उसमें प्रवेश करके बहुमूल्य रत्न-राशि ढूँढ़ लाने की क्षमता भी मनुष्य में विद्यमान है । मन को साधारणतः इच्छा, ज्ञान और क्रिया में संलग्न रखने वाली चेतना के रूप में जाना जाता रहा है, पर अब उसकी अतीन्द्रियों चेतना पर विश्वास किया जाने लगा है । ऐसे अगणित प्रमाण सामने आ रहे हैं जिनसे प्रतीत होता है कि हाड़-माँस का सोचने-बोलने वाला पिण्ड जो कर सकता है उससे कहीं अधिक परिधि मानवी चेतना की है । उसमें अति मानवी असाधारण शक्तियाँ भी सन्निहित हैं ।

अमेरिका के टोरण्टो टेलीविजन स्टुडियो में एक व्यक्ति की कल्पनाएँ मूर्तिमान रूप में किस प्रकार दिखाई देती हैं, इसके प्रामाणित चित्र लिए गए । ४६ वर्षीय ट्रक ड्राइवर थियोडर सेरिक्षोस का दावा था कि उसके विचार इतने स्पष्ट होते हैं कि उन्हें शायद चित्र रूप में भी उतारा जा सके । उपरोक्त प्रयोगशाला में उसे प्रस्तुत किया गया । इसके लिए कम्पनी में बना सीलबन्द पोलारायड कैमरा खरीदा गया और फिल्म बनाने वाली कम्पनी से सीधे ही उसमें फिल्म भराई गई । यह कैमरा ऐसा है जो अपने आप ही एक मिनट में तैयार फोटो हाथ में रख देता है । यह प्रयोग उपकरण इसलिए ऐसी सावधानी के साथ प्रयुक्त किए गए कि किसी को यह सन्देह न रहे कि—किसी व्यक्ति की ख्याति के लिए कोई बाजीगरी की गई है । उपकरणों की और फोटोग्राफी की शुद्धता के लिए कई साक्षी भी साथ रखे गए ।

थियोडर ने जो-जो कल्पनाएँ कीं, मस्तिष्क के सामने लगे कैमरे ने ठीक उन्हीं चित्रों को उतार दिया । इस विशिष्टता की चर्चा जब अधिक हुई तो कोलरेडो विश्वविद्यालय ने उस व्यक्ति के सम्बन्ध में गहराई तक जाँच करने का निश्चय किया और इसके लिए डॉ. आइमनवद के नेतृत्व में एक विशेष विभाग ही बना दिया, जो न केवल इस चमत्कार की वरन् उसके कारणों की भी जाँच करे । जाँच दो वर्ष तक चली और उसका निष्कर्ष इतना ही निकला कि उस व्यक्ति में निश्चित ही यह अद्भुत शक्ति है । उसके कारण नहीं जाने जा सके केवल कुछ सम्भावनाओं की चर्चा की गई है ।

कल्पना, विचार, भावनाएँ और संकल्प कोई हवाई उड़ानें या अवास्तविक बातें ही नहीं हैं, बल्कि वे भी स्थूल क्रियाओं की तरह प्रभावशाली होती हैं, बल्कि इनका सामर्थ्य स्थूल क्रियाओं से अधिक समर्थ होता है । प्राचीन काल में ऋषि-महर्षियों ने इस शक्ति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्व समझकर उनका उपयोग सरलतापूर्वक करने की विधि खोज ली थी ।

विचार संचालन, टेलीपैथी के अन्तर्गत बिना यन्त्रों, संकेतों या इन्द्रियों की सहायता के दूरस्थ व्यक्तियों द्वारा परस्पर विचार विनिमय की प्रक्रिया इसी शक्ति के अन्तर्गत आती है। अतीन्द्रिय दृष्टि से बिना आँखों की सहायता के दृश्यों को देखा जाना सम्मिलित है । पूर्व ज्ञान से बीती हुई घटनाओं को जानना और भविष्य ज्ञान में भावी सम्भावनाओं का परिचय प्राप्त करने की बात है । स्वप्नों में व्यक्ति की स्थिति अथवा अविज्ञात घटना-क्रमों के भूतकालीन अथवा भावी संकेत समझे जाते हैं । साइकोकाइनेसिस के अन्तर्गत मस्तिष्क का वस्तुओं पर पड़ने वाला प्रभाव आँका जाता है । लूथर वरथेन्क ने पौधे, फूल, कीड़े, पक्षी और पशुओं पर अपनी भाव सम्वेदनाओं के भिन्न-भिन्न प्रभाव डालने में जो सफलता प्राप्त की है, उससे शोधकर्त्ताओं का उत्साह बहुत बढ़ा और वे न केवल प्राणियों पर वरन् पदार्थों पर भी विचार शक्ति के आश्चर्यजनक प्रभावों को प्रमाणित कर सकने में सफल हुए ।

मेस्मेरिज्म के आविष्कर्त्ता डॉ. मेस्मर ने लिखा है—"मन को यदि संसार के पदार्थों और तुच्छ इन्द्रिय भोगों से उठाकर ऊर्ध्वगामी बनाया जा सके तो वह ऐसी विलक्षण शक्ति और सामर्थ्यों से परिपूर्ण हो सकता है, जो साधारण लोगों के लिए चमत्कार सी जान पड़ें । मन आकाश (स्पेश) में भ्रमण कर सकता है और उन घटनाओं को ग्रहण करने में समर्थ हो सकता है, जिन्हें हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ ग्रहण न कर सकें और हमारा तर्क जिन्हें व्यक्त करने में असमर्थ हो ।"

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. जे. वी. राइन ने भी उक्त तथ्य की बाद में विस्तृत खोज की और पाया कि विचार, चिन्तन और किसी भी अभ्यास द्वारा यदि मन को विचारणाओं के सामान्य धरातल से ऊपर उठाकर आकाश में घुमाया जा सके तो वह भूत और भविष्य की अनेक घटनाओं को बेतार के तार के सन्देश की तरह प्राप्त कर सकता है । 'न्यू फ्रण्टियर्स ऑफ माइण्ड' नामक पुस्तक में उन्होंने ऐसी अनेक घटनाओं का विवरण भी दिया है, जो उक्त कथन की सत्यता प्रतिपादित करती हैं । यह एक विज्ञानसम्मत प्रक्रिया है, अन्धविश्वास नहीं ।

इस तथ्य को समझने से पूर्व मन की शक्ति के बारे में जान लेना आवश्यक होगा । जिस प्रकार ध्वनि तंरगों को पकड़ने के लिए रेडियो में एक विशेष प्रकार का क्रिस्टल फिट किया जाता है, शरीर आध्यात्म का भी एक क्रिस्टल है और वह मन है । विज्ञान जानने वालों को पता है ईथर नामक तत्व सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, हम जो भी बोलते हैं उनका भी एक प्रवाह है, पर वह बहुत हल्का होता है, किन्तु जब अपने शब्दों को विद्युत परमाणुओं में बदल देते हैं तो वह शब्द तरंगें भी विद्युत शक्ति के अनुरूप ही प्रचण्ड रूप धारण कर लेती हैं और बड़े वेग से चारों तरफ फैलने लगती हैं । वह शब्द तरंगें सम्पूर्ण आकाश में भरी रहती हैं, रेडियो उन लहरों को पकड़ता है और विद्युत परमाणुओं को रोककर केवल शब्द तरंगों को लाउडस्पीकर तक जाने देता है, जिससे दूर बैठे व्यक्ति की ध्वनि वहाँ सुनाई देने लगती है । शब्द को तरंग और तरंगों को फिर शब्द में बदलने का काम विद्युत करती है, उसी प्रकार आध्यात्मिक चिकित्सा और विचार प्रेषण (टेलीपैथी) का कार्य मन करता है ।

यों मन शरीर में एक पृथक् सत्ता की भाँति दिखाई देता है, पर वैज्ञानिक जानते हैं कि शरीर के प्रत्येक कोष में एक पृथक मन होता है । कोषों के मनों का समुदाय ही अवयव स्थित मन का निर्माण करता है । प्रत्येक अवयव का क्रिया-क्षेत्र अलग-अलग है, पर वह सब मन अवयव के अधीन हैं । मान लीजिए गुदा के समीपवर्ती जीवकोष (सेल्स) अपनी तरह के रासायनिक पदार्थ ढूँढ़ते और ग्रहण करते हैं । उनकी उत्तेजना काम-वासना को भड़काने का काम करती है किन्तु अवयव मन नहीं चाहता कि इन गुदास्थित जीव-कोषों की इच्छा को पूरा किया जाय तो वह कामवासना पर नियन्त्रण कर लेगा । इसी प्रकार शरीर के हर अंग के मन अपनी-अपनी इच्छाएँ प्रकट करते हैं, पर अवयव मन उन सबको काटता-छाँटता रहता है, जो इच्छा पूर्ण नहीं होने को होती, उसे दबाता रहता है और दूसरे को सहयोग देकर वैसा काम करने लगता है ।

इस बात को और ठीक तरह से समझने के लिए शरीर रचना का थोड़ा ज्ञान होना आवश्यक है । यह भौतिक शरीर सूक्ष्म जीव-कोषों से बना है, प्रत्येक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीव-कोष प्रोटीन की एक अण्डाकार दीवार से घिरा रहता है । उस कोष के अन्दर सैकड़ों प्रकार के यौगिक और मिश्रण पाये जाते हैं । नाइट्रोजन और न्यूक्लियक अम्लों का सबसे बड़ा समूह इस सेल के अन्दर होता है । फॉस्फोरस, चर्बियाँ (वसाएँ) और शर्कराएँ भी उसमें मिलती हैं, साथ ही बीसियों अन्य कार्बनिक पदार्थ सूक्ष्म मात्राओं में पाये जाते हैं, जैसे विटामिन और हार्मोन । उनमें बहुत से अकार्बनिक लवण भी होते हैं । यानी प्रोटीन, न्यूक्लियक अम्ल, वसाएँ, शर्कराएँ और लवण, ये सांसारिक पदार्थ जिन्हें रसायनज्ञ एक जीवित कोशिका में पाता है, निश्चय ही ऐसे पदार्थ नहीं हैं, जिससे विचारों का निर्माण होता है, फिर भी ऐसे ही पदार्थों के ऊपर उस असम्भव विचार का भवन निर्मित होता है जिसे हम जीवन कहते हैं । अतः उस जीवन की विचित्रता और बढ़ जाती है, यह मान्यता आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं की है ।

यह जीव-कोषों के मन ही मिलकर अवयव मन का निर्माण करते हैं, इसलिए मन को एक वस्तु न मानकर आध्यात्म-शास्त्र में उसे 'मनोमय कोश' कहा गया है । एक अवस्था ऐसी होती है, जब शरीर के सब मन उसके अधीन काम करते हैं, जब यह अनुशासन स्थापित हो जाता है तो मन की क्षमता बड़ी प्रचण्ड हो जाती है और उसे जिस तरफ लगा दिया जाय उसी ओर वह तूफान की सी तीव्र हलचल पैदा कर देता है ।

इन सूक्ष्म जीवों के मन निःसन्देह प्रत्युत्पन्न मति पटल (संस्कार जन्य मन) के अधीन हैं और बुद्धि की आज्ञाओं को भी मानते हैं । इन जीवों के मन में अपने विशेष कार्य के लिए विचित्र योग्यता रहती है । रक्त से आवश्यक सार का शोषण, अनावश्यक का त्याग इनकी बुद्धि का प्रमाण है । यह क्रिया शरीर के हर अंग में होती है, जो जीव-कोष संस्थान ज्यादा सक्रिय होता है, वह ज्यादा बलवान् रहता है और अपने पास-पड़ौस वाले जीव-कोषों की शक्ति को मन्द कर देता है । गुदा वाले जीव-कोष जो काम-वासना में रुचि रखते हैं, वे सक्रिय होते हैं तो आमाशय के जीव-कोषों की शक्ति का भी अपहरण कर लेते हैं और इस तरह काम-वासना की प्रत्येक पूर्ति के साथ आमाशय की शक्ति घटती जाती है और वह व्यक्ति पेट का मरीज हो जाता है । जीव-कोषों का अनुशासित न होना ही शरीर की कमजोरियों का कारण बनता है । जो भी हो, यह सत्य है कि पाचन का आसात्वत, घावों का पूरना, आवश्यकतानुसार दूसरे स्थानों पर दौड़ जाना, अन्य बहुत से कार्य कोषगत जीवन के ही मानसिक कार्य हैं । उन्हें विशृंखलित रहने देने से उनका सम्राट मस्तिष्क में रहने वाला मन भी कमजोर और अस्त-व्यस्त हो जाता है किन्तु जब सम्पूर्ण शरीर के मन उसके अनुशासन में आ जाते हैं तो शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है ।

केवल कोमल स्नायु, पेशियाँ, झिल्लियाँ आदि ही नहीं हड्डियाँ, दाँत, नाखून आदि कठोर पदार्थ भी सूक्ष्म-जीवों के योग से बने होते हैं । अपने कार्यों के अनुसार इनकी आकृतियाँ अलग-अलग होती हैं पर इनमें भी स्वतन्त्र और प्रत्युत्पन्न मन के अधीन काम करने की दोहरी क्षमता होती है । अर्थात् सब जीव-कोष स्थानीय कार्य भी करते रहते हैं और संगठित कार्य भी । जिस प्रकार एक गाँव के सब लोग अपना अलग-अलग काम करते रहते हैं, अपना खेत जोतना, अपना खेत काटना, अपने लिए अलग खाना पकाना, अपने ही परिवार के साथ बसना, अपनी बनाई कुटिया में रहना आदि केवल अपने तक ही सीमित रहते हैं, पर आवश्यकता आ जाती है तो सब लोग इकट्ठे होकर कोई सार्वजनिक कुआँ, तालाब आदि भी खोदते हैं । एक-आदमी दूसरे की सहायता करता है । ठीक वैसे ही जीव-कोषों के मन और प्रत्युत्पन्न मन के दो क्षेत्र हैं और दोनों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं । कुछ कोष ऐसे भी होते हैं, जिन्हें शरीर में केवल सुरक्षा की दृष्टि से तैनात किया है, वे गंदगी को दूर करने, कचरा न जमा होने देने की चौकीदारी भी करते हैं और कोई रोग का कीटाणु (वायरस) शरीर में आ जाय तो उससे युद्ध करने का काम भी वे कोष करते हैं । इस तरह शरीर के मन तो अपनी-अपनी व्यक्तिगत ड्यूटी पूरी करते हैं, दूसरे बाह्य जगत से सम्पर्क बनाते हैं, दोनों अलग-अलग अपने काम करते रहते हैं ।

शरीर के अन्दर इस तरह जीव-कोषों का मेला लगा हुआ है । अनुमानतः केवल लाल रंग के कोषों की संख्या कम से कम ७५,००,००,००,००० हैं, इनका काम फेफड़ों से ऑक्सीजन चूसना, धमनियों और वाहिनियों के द्वारा सारे शरीर में बाँटना होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह जीव-कोष अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि यह जगत् से भी शक्ति चूसने के वैज्ञानिक कार्य को पूरा करते हैं । इसलिए मनुष्य शारीरिक शक्ति की कमी के बाबजूद भी बहुत दिन तक जिन्दा रहता है, क्योंकि यह विश्व-व्यापी प्राण सत्ता से शरीर का सम्बन्ध बनाये रहते हैं ।

प्रत्युत्पन्न मन जब एकाग्र और संकल्पशील होता है तो सभी कोष स्थित मन जो विभिन्न गुणों और स्थानों की सुरक्षा वाले होते हैं, उसी के अधीन होकर काम करने में लग जाते हैं, फिर उस संग्रहीत शक्ति से किसी भी स्थान के जीव-कोषों को किसी दूसरे के शरीर में पहुँचाकर उस व्यक्ति की किसी रोग से रक्षा की जा सकती है, सुनने, समझने वाले मनों में हलचल पैदा करके उन्हें सन्देश दिया जा सकता है, किसी को पीड़ित या परेशान भी किया जा सकता है ।

जीव-विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान रिचीकाल्डर ने इस तथ्य का प्रतिपादन इस तरह किया है—इलेक्ट्रॉन हमारे दास हैं, क्योंकि वे मानवीय प्रतिक्रियाओं में अधिक तेजी से चलते हैं, ये मानवीय नेत्र से भी अधिक देख सकते हैं, मानवीय स्पर्श से अधिक हर्ष अनुभव कर सकते हैं, मानवीय कान से अधिक सुन सकते हैं, मस्तिष्क की अपेक्षा शीघ्र और ठीक गिनती कर सकते हैं । हमारे सामने दूर आस्वादन (टेलेगस्टेशन), दूर श्रवण (टेलेऑडीशन), दूर घ्राण (टेले ऑल्फेक्शन), सुगन्धित पदार्थ तथा बोलते चित्र भी हैं, वह इन्हीं दास इलेक्ट्रॉनों का काम है । नियन्त्रण मीटरों (सर्वोमीटर) के द्वारा इलेक्ट्रॉन किसी रोलिंग मिल के हजारों टन इस्पात को पाव भर वजन की तरह उठ देता है, जबकि वह पदार्थगत मन है इसके सहारे यदि मानव के जीव-कोषों में अवस्थित मन (इलेक्ट्रॉन्स) की शक्ति का अनुमान करें तो वहाँ तक़ सम्भवतः हमारी बुद्धि न पहुँचे पर अब इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि ऐसी कोई विद्या हो सकती है, जब एक शरीर अपनी विशेष शक्ति या सन्देश किसी और शरीरधारी को दे सके ।

हम जानते हैं कि प्रकाश एक शक्ति है पर वह अपने मौलिक रूप में पदार्थ भी है, क्योंकि वह टुकड़ों में विभक्त हो जाता है, यह प्रकाश परमाणु 'फोटो-सेल्स' कहलाते हैं । इनमें भी इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन और न्यूक्लियस की रचना होती है । अर्थात् प्रकाश से भी सूक्ष्म सत्ताएँ इस संसार में हैं, यह मानना पड़ता है ।

वस्तुएँ हम प्रकाश की सहायता से देख सकते हैं, किन्तु साधारण प्रकाश कणों की सहायता से हम शरीर के कोष (सेल) को देखना चाहें तो वह् इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें देख नहीं सकते । इलेक्ट्रॉनों को जब ५०,००० वोल्ट आवेश पर सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) में भेजा जाता है तो उनकी तरंगदैर्ध्य श्वेत प्रकाश कणों की तुलना में १/१००००० भाग सूक्ष्म होती है, तब वह हाइड्रोजन के परमाणु का जितना व्यास होता है, उसके भी ४२.४वें हिस्से छोटे परमाणु में भी प्रवेश करके वहाँ की गतिविधियाँ दिखा सकती है । उदाहरण के लिए यदि मनुष्य की आँख एक इंच घेरे को देख सकती है तो उससे भी ५०० अंश कम को प्रकाश-सूक्ष्मदर्शी और १०,००० अंश छोटे भाग को इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी । इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि मनुष्य शरीर के कोश (सेल्स) का चेतन भाग कितना सूक्ष्म होना चाहिए । इस तरह के सूक्ष्मदर्शी से जब कोश का निरीक्षण किया गया तो उसमें भी एक टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई दिया । चेतना या महतत्त्व इस प्रकार प्रकाश की ही अति सूक्ष्म स्फुरणा है, यह विज्ञान भी मानता है ।

मास्को के जीव वैज्ञानिक प्रो. तारासोव ने यह देख कर ही बताया था कि मनुष्य शरीर का प्रत्येक सेल एक टिमटिमाते हुए दीपक की तरह है, कुल शरीर ब्रह्माण्ड के नक्षत्रों की तरह, तो यह सूक्ष्मतम चेतना ही उसमें जीवन है ।

यह जीवन तत्व शरीर के प्रत्येक अंग में छिटका हुआ पर उसका एक नियत स्थान भी है, जहाँ से वह प्रभासित होता है । हम देखते हैं कि आत्मा नामक कोई वस्तु शरीर में है तो उसे अणुओं के रूप में पाया जाना चाहिए पर जैसे सूर्य सारे ब्रह्माण्ड में बिखर गया है, यह चेतना भी सारे शरीर में संव्याप्त है और विचार तथा भावनाओं के रूप में निःसृत होती रहती है, इस तरह प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसके विचारों की तरंगदैर्ध्य चलती रहती है । जो अधिक स्थूल स्वभाव और आचार-विचार के व्यक्ति होते हैं, उनका यह तंरगदैर्ध्य बहुत सीमित और दुर्गन्धित होता है, इसलिए बुरे लोग अपने पास वाले को भी प्रभावित नहीं कर पाते, जबकि विचारशील लोग, विशेष प्राणवान् लोग, सभा-मण्डप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में बैठे हजारों लोगों को अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति भाषणों द्वारा करके इतनी शक्ति और प्रेरणा दे सकते हैं कि सैकड़ों लोग थोड़ी ही देर में अपने विचार पलट कर रख देते हैं । इस तरह के प्राणवान् व्यक्ति आदि काल से ही लोगों की जीवन दिशाएँ बदलते और युगों में परिवर्तन लाते आये हैं ।

हमारा शरीर एक प्रकार से आकाश है । यदि त्वचा के आवरण बाँध कर उसे एक विशेष गुरुत्वाकर्षण शक्ति द्वारा पृथ्वी से बाँध नहीं दिया गया होता तो हम आकाश में कहीं विचरण कर रहे होते । सूक्ष्म रूप से हमारी चेतना विचार और संकल्पों के रूप में आकाश तत्व में तरंगित होती रहती है । भारतीय योगियों ने उस चेतना को विभिन्न प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि आदि योग क्रियाओं द्वारा मन के रूप में नियन्त्रित किया था । आज्ञा-चक्र नामक स्थान, जो माथे में दोनों भौंहों के बीच पाया जाता है, ध्यान द्वारा देखा गया तो उस बिखरी हुई ज्योति के एकाकार दर्शन ऐसे ही हुए जैसे हजार दिशाओं में बिखरे होने पर भी सूर्य का एक पुंजीभूत रूप भी है और वह उन बिखरे हुए अस्त-व्यस्त कणों की तुलना में, जोकि सारे सौर-मण्डल की प्रकृति का निर्धारण करते हैं, कहीं अधिक ऊर्जा (प्रकाश, विद्युत, ताप) से सम्पन्न होता है । ऐसे ही मन जब शरीर के कोषों की ऊर्जा के रूप में नियन्त्रित हो जाता है, तो उसकी शक्ति, सामर्थ्य और विभेदन क्षमता का कोई पारावार नहीं रहता है । इस तरह का मन ही सर्वत्र गमनशील, सर्वदर्शी और सर्वव्यापी होता है । वही क्षण में कहीं का कहीं पहुँचकर बेतार के तार की तरह सन्देश पहुँचता रहता है ।

ऊर्जा का प्रकाश में बदलना एक अत्यन्त जटिल प्रणाली है, पर वैज्ञानिक यह जान चुके हैं कि जब यह ऊर्जा किसी वस्तु में प्रवेश करती है तो उसके परमाणु उत्तेजित हो उठते हैं । फिर थोड़ा शान्त होकर जब वे अपने मूल स्थान को लौटते हैं तो उस सोखी हुई ऊर्जा को प्रकाश में बदल देते हैं । इस क्रिया को 'संदीप्ति' कहते हैं । यह गुण संसार के सभी प्राणियों में पाया जाता है, हम उसे जानते नहीं पर यह वैज्ञानिकों को पता है कि मनुष्य जो कुछ सोचता है, वह जितना ही छुपाए, छुप नहीं सकता । वह इसी प्रकार सूक्ष्म प्रकाश तरंगों के रूप में बाहर निकलता रहता है । यदि हम उन तरंगों से भी सूक्ष्म आत्म-चेतना द्वारा उन तरंगों में प्रवेश पा सकें, जैसा कि ऊपर के प्रयोग में बताया गया है, तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि यह व्यक्ति क्या सोच रहा है ? भविष्य की इसकी योजनाएँ क्या हैं ? आदि-आदि । पर यह सब तभी सम्भव है, जब नितान्त शुद्ध रूप में हम मन पर नियन्त्रण कर चुके हों ।

पहले लोगों का विश्वास था कि प्रकाश छोड़ने का यह गुण (संदीप्ति) केवल जड़ वस्तुओं का ही गुण है पर अब यह स्पष्ट हो गया कि यह गुण जीव-धारियों में भी पाया जाता है । 'अणु और आत्मा' पुस्तक में डॉ. जे. सी. ट्रस्ट ने इसी विज्ञान की व्याख्या की है और इस आत्मविज्ञान के पहलू को प्रकाश में लाकर उन्होंने वैज्ञानिकों को शोध की नई दिशा भी दी है । हम उस बात को सामान्यतः फुंगी, मधुरिका, जुगनू आदि जीवों से समझ सकते हैं । जुगनू की तरह कई जीव समुद्र में भी पाये जाते हैं, जो अपने शरीर में 'एन्जाइमी ऑक्सीकरण' की प्रक्रिया में मुक्त होने वाली ऊर्जा को प्रकाश में बदल देते हैं । यही प्रकाश इनमें टिमटिमाता दिखाई देता है । मादा जुगनू जब कभी कामोत्तेजित होती है तो उसके शरीर में एक जैवरासायनिक क्रिया उत्पन्न होती है, जिसमें रासायनिक द्रव्य लूसी फेरस एन्जाइम, लूसीफिरिन और ए. टी. पी. कम्पाउण्ड भाग लेते हैं, इससे एक विशेष प्रकार की रासायनिक ऊर्जा-तरंग उत्पन्न होती है अर्थात् उस विद्युत-तरंग में उस मादा की गन्ध भी रहती है, इसीलिए उस विशेष सिगनल को नर जुगनू पहचान लेता है और मादा के पास जा पहुँचता है ।

एन्जाइम एक प्रकार के सूक्ष्म नाड़ी तन्तु हैं, जो साँस द्वारा प्राप्त ऑक्सीजन को सारे शरीर में पहुँचाकर जीवन शक्ति बनाये रखते हैं । मानसिक शक्तियों का शुद्ध परिष्कार भी अधिकांश प्राणायाम के अभ्यास पर ही निर्भर है, उसमें वायु में पाये गए प्राण-तत्व (प्राकृतिक ऊर्जा) के द्वारा मन को प्रखर और शुद्ध बनाया जाता है ।

डॉ. हर्टलाइन ने सन् १९६७ में पहली बार नेत्र कोशिकाओं में उत्पन्न विद्युत आवेगों को इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों से रिकॉर्ड करके बताया कि प्रत्येक कोष में उस बिम्ब की सारी बारीकियों अर्थात् रंग, आकार, उभरी-धँसी रेखाएँ आदि निहित होती हैं, प्रत्येक कोष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक सेकण्ड के भी करोड़वें हिस्से में उस प्रतिबिम्ब के अगले कोष को पार कर देता है और इस प्रकार सामने दिखाई देने वाले बिम्ब की सूचना प्रकाश की गति के हिसाब से मस्तिष्क के दृश्य-स्थान (ऑप्टिक सेण्टर) में पहुँच जाती है ।

इस दृश्य को मन के द्वारा प्रकृति के प्राण-विद्युत प्रवाह में घोलकर वह दृश्य जो हमारे मस्तिष्क में है किसी भी दूरवर्ती व्यक्ति को भेज सकते हैं । उपग्रह-संचार पद्धति के विकास ने इस मान्यता को भी पुष्ट कर दिया है, अब लन्दन में होने वाली शल्य-चिकित्सा को हजारों मील दूर के अस्पतालों में भी देखा जा सकेगा । अभी रॉयल फ्री हॉस्पिटल के सर्जनों द्वारा सम्पर्क परीक्षणों को मैनचेस्टर और बर्मिंघम स्थित मेडिकल स्कूल के विद्यार्थियों ने देखा । इसमें भारतीय विद्यार्थियों सहित २००० विद्यार्थी सम्मिलित थे । इस प्रणाली से किसी भी दृश्य को फोटो-सेल्स के माध्यम से आठ संचार उपग्रह (टेलीस्टार), जो पृथ्वी की परिक्रमा लगा रहा है, को भेजा । संचार उपग्रह ने उसे एक नियत फ्रिक्वेंसी पर सारे संसार में फैला दिया । इस तरह एक ही दृश्य को सारे संसार में पहुँचाना तक सम्भव है । दूरवर्ती दृश्यों को देखने के प्रकाश परमाणुओं पर पड़े बिम्बों को ऊर्जा की एक धारा में बहाकर लाना या ले जाना होता है, जिसे नियन्त्रित मन से पूरा किया जा सकता है । हम किसी के मन में अचानक सन्देश और दृश्य भेज ही नहीं, सुन और देख भी लेते हैं, वह सब इन प्रकाश अणुओं और उसमें व्याप्त चेतना की ही करामात होती है ।

सन् १९२७ में डॉ. किलिण्टन, लिस्टर एच. जरमर तथा जे. डेवीसन ने बैल टेलीफोन लैबोरेटरी न्यूयार्क में किए अनुसन्धान के आधार पर बताया कि इलेक्ट्रॉन द्वैत प्रकृति तत्व है, अर्थात् वह एक कण की तरह भी काम करता है और लहर की तरह भी । उसकी गति ३१०५० मील प्रति सेकण्ड होती है उनकी इस खोज के आधार पर ही इन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिला था । इलेक्ट्रॉन जिस तरह एक कण के रूप में स्थिर और गतिशील भी है उसी प्रकार प्रकाश भी स्थिर और गतिशील है । सर आर्थर-स्टेनले एडिंग्टन ने "नेचर ऑफ दि फिजिकल वर्ड" में लिखा है कि प्रकाश भी छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त है । इन नाचते हुए कणों को "फोटॉन्स" कहते हैं और इन्हें "फ्लोरोऐण्ट स्क्रीन" के प्रकाश में देखा जा सकता है । इनकी गति १८६३०० मील प्रति सेकण्ड अर्थात् इलेक्ट्रॉन से भी ६ गुना अधिक होती है ।

इलेक्ट्रॉन और प्रकाश, यदि वे शक्ति हैं, तो पदार्थ भी हैं, कण हैं तो लहर भी । इलेक्ट्रॉन सृष्टि के हर कण में है पर वह अपनी उत्पादकता न होकर नाभिक से बँधा है । उसी प्रकार प्रकाश ब्रह्माण्ड भर में कहीं भी विचरण कर सकता है, पर स्वयं अपनी उत्पादकता नहीं है । अपने जीवन के अन्तिम समय आइन्स्टीन, जोकि ऋषियों के मायावाद सिद्धान्त तक पहुँच गए थे, ने यह बताया था कि काल और स्थान सापेक्ष हैं और वे प्रकाश की माप पर निर्भर हैं, (रिलेटिविटी टाइम एण्ड स्पेस इज विद रिफरेन्स टु वार्ड स्टिक ऑफ लाइट) । वे अब यह सिद्ध करना चाहते थे कि कोई एकात्म क्षेत्र (यूनीफाईड फील्ड) ऐसा है जिसमें विद्युत चुम्बकीय बल (इलेक्ट्रोमेगनेटिक फोर्स) भी है और गुरुत्वाकर्षण भी । यह क्षेत्र इन दोनों से युक्त भी है और मुक्त भी । यह इलेक्ट्रॉन की तरह ही द्वैत गुण था और आइन्स्टीन ने उसके अस्तित्व से इन्कार नहीं किया वरन् माना था कि "मस्तिष्कीय द्रव्य" (माइण्ड स्टाफ) में वह गुण हैं कि वह समय और पदार्थ से परे तत्व है उसकी गति और अगति में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् वह (मस्तिष्कीय द्रव्य—माइण्ड स्टाफ) एक ही समय में कलकत्ता या बम्बई में भी हो सकता है और उसी समय वह मथुरा में भी उपस्थित रह सकता है । यही वह तत्व है जो प्रकाश को धारण करके उसकी गति से किसी भी वस्तु का स्थानान्तरण कर सकता है । पदार्थ को शक्ति में बदल कर उसे कहीं भी सूक्ष्म अणुओं के रूप में बहाकर ले जा सकता है और उसे सेकण्ड से भी कम समय में बदल सकता है ।

योगी और साधक द्वारा मस्तिष्क के इसी एकान्त क्षेत्र पर अवस्थित होकर इलेक्ट्रॉन और प्रकाश कणों द्वारा ई. एम. सी.—२ के आधार पर वह शक्ति अपने भीतर से उत्पन्न करते हैं जो किसी भी परमाणविक शक्ति से बढ़कर होती है, उसमें इलेक्ट्रॉन और प्रकाश कणों की द्वैत शक्ति ही होती है जिससे वे स्थूल और सूक्ष्म क्रियाएँ सम्भव हैं जो अतीन्द्रिय घटनाओं के रूप में प्रकट होती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रवण और दर्शन की दिव्य शक्तियाँ

उस समय की बात है जब सिकन्दर पंजाब की सीमा पर आ पहुँचा । एक दिन, रात को उसने अपने पहरेदारों को बुलाया और पूछा—यह गाने की आवाज कहाँ से आ रही है ? पहरेदारों ने बहुत ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की, पर उन्हें तो झींगुर की भी आवाज न सुनाई दी । भौंचक्के पहरेदार एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, बोले—महाराज ! हमें तो कहीं से भी गाने की आवाज सुनाई नहीं दे रही हैं ।

दूसरे दिन सिकन्दर को फिर वही ध्वनि सुनाई दी, उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा—देखो जी ! किसी के गाने की आवाज से मेरी नींद टूट जाती है । पता तो लगाना यह रात को कौन गाना गाता है ? सेनापति ने भी बहुतेरा ध्यान से सुनने का प्रयत्न किया किन्तु उसे भी कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दी । मन में तो आया कि कह दे आपको भ्रम हो रहा है पर सिकन्दर का भय क्या कम था, धीरे से बोला—महाराज ! बहुत प्रयत्न करने पर भी कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा, लेकिन अभी सैनिकों को आपकी बताई दिशा में भेजता हूँ, अभी पता लगा कर लाते हैं, कौन गा रहा है ।

चुस्त घुड़सवार दौड़ाए गए । जिस दिशा में सिकन्दर ने आवाज का आना बताया था—घुड़सवार सैनिक उधर ही बढ़ते गए । बहुत पास जाने पर उन्हें एक ग्रामीण के गाने का स्वर सुनाई पड़ा । पता चला कि वह स्थान सिकन्दर के राज प्रसाद से १० मील दूर है । इतनी दूर की आवाज सिकन्दर ने कैसे सुन ली, सैनिक, सेनापति सभी इस बात के लिए स्तब्ध थे । ग्रामीण एक निर्जन स्थान की झोंपड़ी पर से गाता था और आवाज इतना लम्बा मार्ग तय करके सिकन्दर तक पहुँच जाती थी । प्रश्न है कि सिकन्दर इतनी दूर की आवाज कैसे सुन लेता था; दूसरे लोग क्यों नहीं सुन पाते थे ? सेनापति ने स्वीकार किया कि सचमुच ही जो अपनी ज्ञानेन्द्रियों को सन्तुष्ट कर दे केवल वही सत्य नहीं कहा जा सकता है, अतीन्द्रिय सत्य भी संसार में है, उसे पहचाने बिना मनुष्य जीवन की कोई उपयोगिता नहीं ।

दूर की आवाज सुनना विज्ञान के वर्तमान युग में कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं है । 'रेडियो डिटेक्शन एण्ड रेन्जिग' अर्थात् 'रैडार' नाम जिन लोगों ने सुना है, वे यह भी जानते होंगे कि यह एक ऐसा यन्त्र है, जो सैकड़ों मील दूर से आ रही आवाज, आवाज ही नहीं वस्तु की तस्वीर का भी पता दे देता है । हवाई जहाज उड़ते हैं तब उनके आवश्यक निर्देश, संवाद और मौसम आदि की जानकारियाँ 'रैडार' द्वारा ही भेजी जाती हैं और उनके सन्देश 'रैडार' द्वारा ही प्राप्त होते हैं । बादल छाए है, कोहरा घना हो रहा है, हवाई पट्टी में धुआँ छाया है, रैडार की आँख उसे भी वेध कर देख सकती हैं और जहाज को रास्ता बताकर उसे कुशलतापूर्वक हवाई अड्डे पर उतारा जा सकता है । छोटे रैडार १५० मील तक की आवाज सुन सकते हैं । जापान ने ५०० मील तक की आवाज सुन सकने वाले रैडार बनाये हैं । अमेरिका के पास तो ऐसे भी रैडार हैं जो 'ह्यूस्टन' के चन्द्र वैज्ञानिकों को, चन्द्रमा में उतरे हुए यात्रियों तक से बात-चीत करा देते हैं । रैडार यन्त्र की इस क्षमता पर और उसकी खोज व निर्माण करने वाले वैज्ञानिकों के बुद्धि- कौशल पर जितना ही आश्चर्य किया जाय कम है ।

किसी विज्ञान जानने वाले विद्यार्थी से यह बात कही जाय तो वह हँस कर कहेगा, भाई साहब इसमें आश्चर्य की क्या बात—साधारण सी रेडियो तरंगों का सिद्धान्त है । जब ध्वनि लहरियाँ किसी माध्यम से टकराती हैं तो वे फिर वापिस लौट आती हैं, उस स्थान, वस्तु आदि का पता दे देती हैं । हवाई जहाज की ध्वनि को रेडियो तरंगों द्वारा पकड़ कर यह पता लगा लिया जाता है कि वह किस दिशा में कितनी दूरी पर है । यह कार्य प्रकाश की गति अर्थात् १,८६,००० मील प्रति सेकण्ड की गति से होता है । रेडियो तरंगों की भी वही गति होती है । तात्पर्य यह है कि यदि उपयुक्त सम्वेदनशीलता वाला रैडार जैसा कोई यन्त्र हो तो बड़ी से भी बड़ी दूरी की आवाज को सेकण्डों में सुना जा सकता है, देखा जा सकता है । प्रकाश से भी तीव्रगामी तत्वों की खोज ने तो अब इस सम्भावना को और भी बढ़ा दिया है और अब सारे ब्रह्माण्ड को भी कान लगा कर सुने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने की बात को भी कोई बड़ा आश्चर्य नहीं माना जाता ।

मुश्किल इतनी ही है कि कोई भी यन्त्र इतने सम्वेदनशील नहीं बन पाते कि दशों दिशाओं से आने वाली करोड़ों आवाजों में से किसी भी पतली से पतली आवाज को जान सकें और भयंकर से भी भयंकर निनाद में भी टूटने-फटने के भय से बची रहें । रैडार इतना उपयोगी है पर इतना भारी भरकम कि उसे एक स्थान पर स्थापित करने में वर्षों लग जाते हैं । सैकड़ों फुट ऊँचे एण्टीना, ट्रांसमीटर रिसीवर, बहुत अधिक कम्पन वाली (सुपर फ्रिक्वेन्सी), रेडियो ऊर्जा इंडिकेटर, आस्सीलेटर, माडुलेटर, सिंकोनाइजर आदि अनेकों यन्त्र प्रणालियाँ किस पर एक रैडार काम करने योग्य हो पाता है । उस पर भी अनेक कर्मचारी काम करते हैं, लाखों रुपयों का खर्च आता है, तब कहीं वह काम करने के योग्य हो पाता है । कहीं बिजली का बहुत तेज धमाका हो जाय तो यह 'रैडार' बेकार भी हो जाते हैं और जहाज यदि ऐसे हों जो अपनी ध्वनि को बाहर फैलने ही न दें तो 'रैडार' उनको पहचान भी नहीं सकें । यह सब देखकर इतने भारी मानवीय प्रयत्न और मानवीय बुद्धि-कौशल तुच्छ और नगण्य ही दिखाई देते हैं ।

दूसरी तरफ एक दूसरा रैडार—मनुष्य का छोटा-सा कान एक सर्वशक्तिमान कलाकार—विधाता की याद दिलाता है जिसके बराबर का रैडार सम्भवतः मनुष्य कभी भी बना न पाये । कान हल्की आवाज को भी सुन और भयंकर घोष को भी बर्दाश्त कर सकते हैं । प्रयोगों द्वारा वह सिद्ध हो चुका है कि कानों की मदद से मनुष्य लगभग ५ लाख आवाजें सुनकर पहचान सकता है जबकि रैडार का उपयोग अभी तक सीमित ही है ।

कान के भीतरी भाग में, जो संदेशों को मस्तिष्क में पहुँचाने का काम करता है, ३०,५०० रोयें पाये जाते हैं । यह रोयें जिस श्रवण झिल्ली से जुड़े होते हैं वह तो १,२५०००००००००००००० इंच से भी छोटा अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप से भी मुश्किल से दिखाई दे सकने वाले होते हैं । वैज्ञानिकों का भी अनुमान है कि इतने सूक्ष्म सम्वेदनशील यन्त्र को बनाने में मनुष्य जाति एक बार पूरी तरह सभ्य होकर नष्ट हो जाने के बाद नये सिरे से जन्म लेकर विज्ञान की दिशा में प्रगति करे तो ही हो सकती है (अर्थात् मानवीय क्षमता से परे की बात है) । इस झिल्ली का यदि पूर्ण उपयोग सम्भव हो सके तो संसार की सूक्ष्म से सूक्ष्म हलचलों को, लाखों मील दूर की आवाज को, भी ऐसे सुना जा सकता है, मानो वह यहीं कहीं अपने पास ही हो या बैठे मित्र से ही बातचीत हो रही हो । महर्षि पातंजलि ने लिखा है—

श्रोत्रः काशयोः सम्बन्ध संयमाद्दिव्यं श्रोत्रम् ।

—पा. यो. सूत्र ४०

अर्थात्—श्रवणेन्द्रिय (कानों) तथा आकाश के सम्बन्ध पर संयम करने से दिव्य ध्वनियों को सुनने की शक्ति प्राप्त होती है ।

यह बात अब विभिन्न प्रयोगों से भी सिद्ध हो गई है । सामान्यतः हम ६ फुट की दूरी की आवाज का भी अधिकतम १/३०००००० वाँ हिस्सा ही सुन पाते हैं । शेष कितनी ही मंद ध्वनि क्यों न हो वायुभूत हो जाती है । संसार के प्रत्येक पदार्थ में ऊर्जा विद्यमान है और चूँकि कोई भी स्थान ऊर्जा से रिक्त नहीं, अतएव प्रत्येक ध्वनि कुछ ही समय में सारे ब्रह्माण्ड में उसी प्रकार फैल जाती है, जिस प्रकार जहाँ तक जल होता है वहाँ तक चली जाती है ।

न्यूजर्सी अमेरिका की बेल टेलीफोन प्रयोगशाला के इन्जीनियरों और वैज्ञानिकों ने एक ऐसे 'भवन' का निर्माण किया जो पूरी तरह शब्द प्रूफ था अर्थात् उसके अन्दर बैठने वाले को बाहर की कैसी भी कोई भी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ सकती थी । वैज्ञानिकों को अनुमान था कि उस समय निस्तब्ध, नीरवता का आभास होगा पर जब एक व्यक्ति को प्रयोग के तौर पर उसके अन्दर बैठाया गया तो उसे यह सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि विचित्र प्रकार की ध्वनियाँ उसके कानों में गूँजने लगीं । एक ध्वनि किसी के सीटी बजाने की थी, एक ध्वनि प्रेस मशीन चलने की तरह धड़-धड़ की थी, एक ध्वनि चट-चट चटखने की सी थी । पहले तो वह व्यक्ति डरा पर पीछे ध्यान देने पर मालूम हुआ कि सीटी की आवाज नसों में दौड़ने वाले रक्त प्रवाह की ध्वनि थी । आमाशय में पाचन रसों की चट-चट और हड्डियों की कड़कड़ाहट की ध्वनियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी अलग-अलग सुनाई पड़ने लगीं मानो शरीर न हो पूरा कारखाना ही हो ।

सामान्यतः यह ध्वनि हर व्यक्ति के शरीर से होती है पर अपने कानों की बाह्यमुखी सम्वेदनशीलता और एकाग्रता की कमी के कारण कोई भी उन्हें सुन नहीं पाता, पर यदि अभ्यास किया जाय और सूक्ष्म कानों की शक्ति जगाई जा सके तो अनन्त ब्रह्माण्ड में होने वाली हलचल, पृथ्वी के चलने की आवाज, सौरघोष, उल्काओं की टक्कर के भीषण निनाद, मन्दाकिनियों के बहने का स्वर, जीव-जन्तुओं के कलरव सब कुछ किसी भी स्थान में बैठकर उसी प्रकार सुने जा सकते हैं जिस प्रकार बेल टेलीफोन, लैबोरेटरी के प्रयोग के समय ।

योगी पातंजलि ने लिखा है—

'ततः प्रतिभ श्रवण जायन्ते'

अर्थात्—'श्रवण संयम के अभ्यास से प्रतिभ अर्थात् भूत और भविष्य ज्ञान दिव्य और दूरस्थ शब्द सुनने की सिद्धि प्राप्त होती है ।' योग विभूति में लिखा है—

'शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्यासत् संकरस्तत्प्रतिभाग संयमात् सर्वं भूतरुतज्ञानम्' ।।१७।।

अर्थात्—'शब्द अर्थ और ज्ञान के अभ्यास से अभेद भासता है और उसके विभाग में संयम करने से सभी प्राणियों के शब्दों में निहित भावनाओं का भी ज्ञान होता है ।'—यह सूत्र सिद्धान्त सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय की महान महत्ता का प्रतिपादन करते हैं और बताते हैं कि जब तक मनुष्य के पास ऐसा क्षमता सम्पन्न शरीर है उसे भौतिक शक्तियों की ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नहीं । सिकन्दर १० मील तक ही सुन सकता था । योगी तो अपने कान लगाकर सारे ब्रह्माण्ड को सुन सकता है । यह बात अब विज्ञान भी स्वीकार करता है । कान की बनावट की नकल करके वैज्ञानिक ऐसे रैडार बनाने के प्रयत्न में हैं जो शुक्र, मंगल और उससे आगे की भी गतिविधियों का पता लगा सकें । यह सम्भव हो जायेगा पर कान का मुकाबला बेचारे यन्त्र क्या कर सकेंगे । कानों से तो सारे ब्रह्माण्ड को सुना जा सकता है ।

अमेरिका और इंग्लैण्ड के मनोविज्ञान शास्त्रियों ने सन् १९५५ में न्यूयार्क और लन्दन में 'मनोवैज्ञानिक घटनाओं की खोज' करने वाली दो संस्थाएँ स्थापित की है । इनमें अभी तक १०,००० ऐसी रहस्यमय घटनाओं का विवरण इकट्ठा किया जा चुका है । यह विवरण अमेरिका तथा अन्य कितने ही देशों के स्त्री-पुरुषों ने स्वयं लिखकर भेजा और इसकी सच्चाई के प्रति अपना पूरा विश्वास प्रकट किया है ।

इन घटनाओं में अधिकांश दूरवर्ती समाचारों का ज्ञान, दिव्य-दर्शन, पूर्वज्ञान से सम्बन्धित हैं । वे जागृत, अर्द्ध-जागृत और निद्रित दशा में अनुभव की गई हैं । पर प्रायः सभी घटनाएँ आकस्मिक रूप से अनुभव में आकर चन्द मिनट में समाप्त हो गईं । इसलिए वैज्ञानिक प्रयोगशाला के नियमानुसार उनकी जाँच करना सम्भव है नहीं । उन्हीं के द्वारा मनुष्यों को दूरवर्ती स्थानों के समाचार या भविष्य में होने वाली घटनाओं का आभास मिला है ।

इस प्रकार की भविष्य दर्शन (प्रीकोगनिशन) की घटना प्रायः तब होती है, जब कोई बड़ी दुर्घटना या मृत्यु-संकट शीघ्र ही आने वाला होता है । अधिकांश लोगों के लिए ऐसा अवसर जीवन में एकाध बार ही आता है और वह भी ऐसे आकस्मिक और निराले ढंग से कि वह व्यक्ति उसके कारण के सम्बन्ध में कुछ अनुमान ही नहीं कर सकता । किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की सूचना इस रीति से अनेक व्यक्तियों को हफ्तों या महीनों पहले भी मिल जाती है । यद्यपि ये घटनायें प्रायः ऐसे सामान्य व्यक्तियों द्वारा देखी जाती हैं, जिनको कोई महत्त्व नहीं दिया जाता । तो भी यह समस्या बनी ही रहती है कि उनको किसी घटना का पूर्वज्ञान किस प्रकार हो जाता है ?

इस सम्बध में इस क्षेत्र में खोज-बीन करने वाली एक अमेरिकन महिला डॉ. लुइसा ई. राइन ने अपनी पुस्तक 'ट्रेसिंग हिडन चेनल्स' (गुप्त स्रोतों की खोज) में लिखा है कि "पूर्व दर्शन की घटनाएँ यद्यपि संख्या में बहुत अधिक होती हैं, पर आश्चर्य यह है कि वे कैसे घट जाती हैं ?" फिर लेखिका स्वयं ही उत्तर देती है कि "ये घटनाएँ किसी व्यक्ति के दैनिक जीवन के किसी बहुत छोटे अंश से सम्बन्धित होती हैं, चाहे वह देर से सिर के ऊपर मँडराती हुई हों और चाहें रास्ता चलते-चलते किसी सवारी गाड़ी से टकरा जाने जैसी सर्वथा आकस्मिक । इस प्रकार की घटनाएँ सर्वांगपूर्ण नहीं होतीं और न उनका जीवन से पूरी तरह सम्बन्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है । कुछ ही लोग अपनी देखी घटनाओं पर ऐसा विश्वास रखते हैं कि उनका सम्बन्ध उसके समग्र जीवन से है ।''

श्रीमती राइन ने आगे चलकर कहा है—''इस प्रकार की 'पूर्व-दर्शन' (प्रोकोगनिशन) में एक मिलती-जुलती विशेषता यह होती है कि वे प्रायः सब की सब व्यक्ति सम्बन्धी ही होती हैं । राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने की घटनाओं का पूर्व-दर्शन शायद ही कभी किसी को होता है । अधिकांश में लोगों को अपने निकट सम्बन्धियों के सम्बन्ध में ही होनहार घटनाओं का अनुभव होता है ।''

पर फिर भी अनेक घटनाएँ ऐसी होती हैं और अनेक बार इस विद्या के अभ्यासी ऐसा अकाट्य प्रमाण देते हैं कि वैज्ञानिकों को भी चुप रह जाना पड़ता है । अमेरिका की 'मनोविज्ञान की खोज करने वाली संस्था' ने जो चौदह हजार उदाहरण इकट्ठे किये हैं, उनमें से कई ऐसे हैं जिनमें घोर अविश्वासियों को भी 'पूर्व-दर्शन' की सत्यता को स्वीकार करनी पड़ी । उनमें से 'चाय के प्याले में तूफान' शीर्षक घटना में कहा गया है—

''सेन डियागो (केलीफोर्निया-अमेरिका) का पुलिस सुपरिण्टेडेण्ट वाल्टर जे. मेसी जब एक दिन अपने दफ्तर से लौट कर घर जा रहा था तो रास्ते में अपनी पत्नी की सहेली श्रीमती हाफमैन के यहाँ ठहर गया । उस समय वाल्टर की पत्नी भी वहाँ आयी हुई थी और उसी को लेने के लिए वह गाड़ी से उतर पड़ा था । श्रीमती हाफमैन ने उससे चाय पीने के लिए कहा । बातों ही बातों में श्रीमती हाफमैन कह बैठी—''वाल्टर ! अगर तुम पसन्द करो तो मैं तुम्हारे चाय के प्याले को देखकर किसी होनहार घटना की सूचना दे सकती हूँ ।''

वाल्टर सोलह वर्ष से पुलिस के महकमे में काम कर रहा था और उसे रात-दिन बड़े-बड़े चालाक और जाल-साज लोगों के अंगूठे और उँगलियों के निशान देखकर उनका पता लगाना था । इसलिए वह ऐसी 'दैवज्ञता' की बातों पर जरा भी विश्वास नहीं करता था । तो भी मनोरंजन की दृष्टि से उसने अपना प्याला मिसेज हाफमैन को दे दिया । उसे देखते-देखते उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने बड़े भयभीत स्वर में कहा—''मैं इस प्याले में मृत्यु को देख रही हूँ । दो मौते होंगी—उनमें से एक नागरिक है, जोकि गोली से इस तरह मारा गया है कि उसका बदन छलनी हो गया है । दूसरा आदमी व्यापारी है, उसने वर्दी और काले जूते भी पहन रखे हैं ।''

यद्यपि वाल्टर घोर अविश्वासी था पर श्रीमती हाफमैन की मुखाकृति को देखकर वह प्रभावित हो गया और दूसरे दिन उसने इसका जिक्र अपने अफसर 'जी डोरन' से किया । वह उससे भी बढ़कर अविश्वासी था और उसने वाल्टर की खूब हँसी उड़ाई, पर जैसा श्रीमती हाफमैन ने कहा था, आगामी रविवार को जब एक लुटेरे ने 'केलीफोर्निया थियेटर' में घुसकर उसके मैनेजर की हत्या कर डाली और पीछा करने वाले एक पुलिस सारजैण्ट को घायल कर दिया तो वे सब चकित रह गए । पुलिस वाले बराबर लुटेरों का पीछा करते रहे और उनमें से एक को एक तहखाने में छुपा पाकर गोलियों से छेद डाला । उसका बदन छर्रों के मारे वास्तव में छलनी हो गया था ।

ऐसा ही एक प्रयोग सर जोजेफ बार्नवी ने कराया । एक विशेष प्रकार के शीशे में जब उन्होंने दृष्टि जमाई और पत्नी का हाल जानना चाहा तो उन्होंने एक महिला का चित्र देखा जो बहुत बढ़िया किस्म के वस्त्र और आभूषण पहने हुई थी । महिला की शक्ल-सूरत तो उनकी धर्मपत्नी ने मिलती-जुलती थी पर उन्होंने बताया कि मेरी पत्नी ऐसे आभूषण पहनती ही नहीं, इसलिए उन्हें इस विज्ञान पर विश्वास नहीं हुआ किन्तु जब वह घर लौटे तो यह देखकर आश्चर्य चकित रह गए कि उनकी धर्मपत्नी ठीक वही आभूषण पहने थी, जो उन्होंने दर्पण में देखा था । तब से बार्नवी भारतीय तत्व-दर्शन से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने तमाम भारतीय दर्शन का कक्षा एक के विद्यार्थी की भाँति अध्ययन किया । उनके मस्तिष्क में बहुत दिन तक यह विचार उठता रहा कि जो आत्म-शक्ति न देखे हुए को भी देख सकती है, न जाने हुए को भी जान सकती है, वह अपने आप में सब प्रकार की भौतिक शक्तियों से निःसन्देह परिपूर्ण होनी चाहिए । अपनी इस परिपूर्ण चेतन अवस्था को जानना इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि वही जीव की अन्तिम स्थिति है और उसे प्राप्त कर लेने पर संसार में और कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रह जाती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज वैज्ञानिकों ने ऐसे-ऐसे कम्प्यूटर तैयार किये हैं, जिनकी इलेक्ट्रॉनिक शक्ति उन सब बातों को बता सकती है, जो प्रकृति (नेचर) के गणितीय (मैथेमेटिकल) सिद्धान्त से सम्बन्धित है । कम्प्यूटर शरीर के रोगों का पता बता देते हैं, लाखों प्रकाश-वर्ष दूर के सितारों की दूरी, दिशा और कोण तक बता देते हैं, किन्तु यह मनुष्य कब मर जायेगा, एक वर्ष, एक माह, एक दिन बाद, इस मनुष्य की क्या स्थिति होगी—ऐसा सचेतन ज्ञान न पदार्थ के पास और न किसी मशीन में ही है । वह तो किसी आत्म-चेतना की ही शक्ति हो सकती है, जो ज्ञात-अज्ञात रूप से लोगों को प्रेरित और प्रभावित करती रहती है और ऐसे उदाहरण संसार के हर देश में देखने को मिलते हैं ।

पूर्वाभास की अनेक घटनाओं में एक निम्नलिखित घटना भी है जिसमें पूर्ण स्वस्थ रहते हुए भी मृत्यु का पूर्वाभास मिला और अक्षरशः सही निकला ।

उत्तर-प्रदेश—मुरादाबाद जिले की बिलारी तहसील में ग्राम सबाई के निवासी एक लोकप्रिय समाज सेवी गजराज सिंह को अपनी मृत्यु का आभास चार दिन पूर्व मिल गया था । यों वे कुछ रुग्ण तो थे पर चलने-फिरने तथा साधारण काम-काज करते रहने में समर्थ थे । उन्होंने घर वालों को चार दिन पूर्व अपनी मृत्यु का समय बता दिया था और मरघट में जाकर अपने हाथ से जमीन साफ करके दाह कर्म के लिए स्थान निर्धारित किया था । लकड़ी, कफन यहाँ तक कि जमीन लीपने के लिए गोबर तक समय से पूर्व ही माँग कर रख लिया था । यों वे अन्न खाते थे पर चार दिन पूर्व से उन्होंने दूध और गंगा जल पर रहना प्रारम्भ कर दिया । आस-पास गाँवों के लोगों को बुलाकर उन्होंने आवश्यक परामर्श दिये । मृत्यु का ठीक समय मध्याह्नोत्तर दो बजे था सो उन्होंने हर किसी को भोजन करके निवृत्त होने के लिए आग्रहपूर्वक प्रेरित किया । आश्चर्य यह कि मृत्यु उनके घोषित समय पर ही हुई और मरने से पन्द्रह मिनट पूर्व तक पूर्ण स्वस्थ जैसी स्थिति में बातें करते रहे ।

श्री मेयर्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दि ह्यूमन परसनैलिटी एण्ड इट्स सरवाइबल आफटर बॉडीली डेथ" में १३ उदाहरण दिये हैं, जिनमें ऐसी अद्भुत ज्ञान शक्तियों का विवरण देकर यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि ज्ञान की चमत्कारिक क्षमताएँ पदार्थ की नहीं हो सकतीं । निश्चय ही कोई चेतन-शक्ति का खेल है । इन उदाहरणों में प्रसिद्ध गणितज्ञ वास और ऐम्पेयर के उदाहरण भी दिये गये हैं ।

दो घटनाएँ अमेरिकन इतिहास से संग्रह की गई हैं । वहाँ २८ फरवरी, १८४४ को एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होने को था । 'यू. एस. एस. प्रिन्सटन' नाम का एक नया और सबसे बढ़िया युद्धपोत बनकर तैयार हुआ था और उसके उद्घाटन के अवसर पर उसके कप्तान रॉबर्ट स्टाक्टन ने अनेक गण्यमान व्यक्तियों को समारोह में निमन्त्रित किया । इनमें कर्नल डेविड गार्डिनर, उनकी पुत्री जूलिया, जलसेना के सेक्रेटरी थॉमस गेलमर व उसकी पत्नी ऐनी भी सम्मिलित थे ।

इन दोनों महिलाओं ने दिनांक २७ की रात्रि को ऐसे स्वप्न देखे जिनमें जूलिया के पिता और एनी के पति की मृत्यु का स्पष्ट संकेत था । इससे भयभीत होकर जूलिया ने अपने पिता से इस समारोह में सम्मिलित न होने का अनुरोध किया । इसी प्रकार एनी ने अपने पति को बहुत रोका, पर उन दोनों ने स्वप्न की बातों को अधिक महत्त्व देना ठीक नहीं समझा और वे जहाज पर चले गये । वहाँ जब एक तोप को समुद्र की ओर चलाया गया तो वह अकस्मात फट गई और कर्नल गार्डिनर तथा थॉमस गेलमर, जो पास खड़े थे तुरन्त मर गये ।

एनी भी वहीं थी, पर वह बच गई । शोक से अभिभूत होकर उसने कहा—"मेरी बात किसी ने क्यों नहीं मानी ?" दुर्घटना के समय जूलिया डेक के नीचे थी और जब उसने अपने पिता की मृत्यु के बारे में सुना तो वह चिल्ला उठी—"मेरा सपना आखिर सच हो ही गया ।"

बाद में यही जूलिया अमेरिका के प्रेसीडेण्ट टेलर की पत्नी बन गई । उसे कुछ ऐसी शक्ति प्राप्त थी कि पति से सौ मील दूर रहने पर वह उसके सम्बन्ध में सब बातें जानती रहती । उनके मन इस प्रकार जुड़े थे कि एक की अनुभूति दूसरे को सहज में हो जाती थी । जनवरी १८६२ में जब प्रेसीडेण्ट टेलर रिचमाण्ड में एक सरकारी जलसे में गये थे, एक रात को जूलिया ने स्वप्न में देखा कि 'उनका चेहरा मुर्दे की तरह पीला पड़ गया है उनके हाथ में कमीज और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

टाई है तथा वे कह रहे हैं कि मेरा सर थाम लो ।' सुबह होते ही जूलिया स्वयं रिचमाण्ड को रवाना हो गई और वहाँ प्रेसीडेण्ट को सकुशल देखकर उसे प्रसन्नता हुई, पर दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते हुए उनकी हालत एकदम खराब हो गई और वे मौत के समय की-सी आकृति में जूलिया के कमरे में घुसे । उनका कोट और टाई उनके हाथ में थी, जैसा स्वप्न में दिखाई पड़ा था । उन्होंने जूलिया से कुछ कहा भी पर वह स्पष्ट सुनाई नहीं दिया । कुछ घण्टों में उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई ।

विज्ञानवादी आलोचक ऐसी घटनाओं का कोई कारण नहीं बता सकते । वे तो बराबर यही कहते रहते हैं कि जो घटना अभी हुई ही नहीं उसका प्रभाव किसी पर कैसे पड़ सकता है ? पर एक आध्यात्मवादी जानता है कि मानव-जीवन का निर्णय करने वाली मुख्य घटनाएँ सूक्ष्म-जगत में पहले से घटती रहती हैं, बाद में वे स्थूल-जगत में प्रकट होती हैं । इसलिए जिन लोगों को पूर्व-दर्शन की शक्ति किसी दैवी कारण से कुछ क्षणों के लिए प्राप्त हो जाती है, वे ऐसी घटनाओं को अर्द्ध जागृत अथवा स्वप्न की अवस्था में देख लेते हैं । इसके अतिरिक्त योगी और अभ्यास करने वाले भी अन्तरंग शक्ति से अन्तरिक्ष में मौजूद भविष्य के चिह्नों को देखकर समझ जाते हैं । यही भविष्य-दर्शन अथवा पूर्व-दर्शन का वास्तविक रहस्य है ।

पूर्वाभास के 'सत्य अनुभव' (ट्रू एक्सपीरियन्सेज इन प्रोफेसी) नामक पुस्तक के विद्वान लेखक श्री मार्टिन इवान ने सैकड़ों घटनाओं का वर्णन किया है, जिनमें सामान्य को भी स्वप्न या साधारण अवस्था में विलक्षण पूर्वाभास हुए । लैण्डेड टू, (दो व्यक्तियों की जान बचाई) शीर्षक से हेरॉल्ड ग्लूक एक घटना इस प्रकार देते हैं—

'नवम्बर १९५० की एक शनिवार को हमारे घर कोई उत्सव होने वाला था । एक दिन पूर्व शुक्रवार को ही मेरी धर्मपत्नी ने मुझसे कहा—"आज आप बाहर नहीं जाइयेगा । घर की आवश्यक व्यवस्था में आज आपको हाथ बटाना पड़ेगा ।" किन्तु उस दिन मुझे ऐसी प्रबल प्रेरणा उठ रही थी कि आज तो समुद्र की सैर के लिए जाना ही चाहिए । मैंने अपनी धर्मपत्नी की बात को कभी ठुकराया नहीं, पर मैं स्वयं ही नहीं जानता कि उस दिन मुझे किस अज्ञात शक्ति द्वारा प्रेरित किया जा रहा था कि मैंने जानबूझ कर अपने मित्र जैक को कार लेकर अपने साथ चलने को राजी कर लिया । उस दिन समुद्र में तूफान आने की घोषणा मौसम-विभाग के द्वारा की जा चुकी थी, इसलिए, मेरी धर्मपत्नी ने समुद्र की ओर जाने से इन्कार कर दिया, किन्तु मेरे मन में न जाने क्यों कोई बात चिपक नहीं रही थी । मेरा कोई मन भी नहीं था, पर भीतर से ऐसा लगता था, तुम्हें समुद्र की ओर जाना ही चाहिए ।

निश्चित समय पर गाड़ी आ गई, हम और जैक समुद्र की ओर चल पड़े । हमारे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही समुद्र भयंकर आवाज के साथ गरजने लग गया था । तटवर्ती मल्लाह पीछे हट चुके थे तो भी मेरे मुख से निकल ही गया—"ओ भाई मल्लाह, हमें समुद्र की सैर करनी है, एक बोट तो देना ।"

मल्लाह बुरी तरह झल्लाया—"आपको दिखाई नहीं देता समुद्र किस तरह उबल रहा है, बोट तो डुबोयेंगे ही आप जान से हाथ धो बैठेंगे ।" यही बात जैक ने भी कही किन्तु मुझे तो कोई अज्ञात शक्ति खींच रही थी, मैंने कहा—"यह लो बोट की कीमत और एक बोट मेरे लिए छोड़ दो ।"

मेरे हठ के सामने सब परास्त हो गये । बोट, हम और जैक देखते-देखते समुद्र की लहरों में जा फँसे । मुझे २०० गज की दूरी पर फुटबाल की तरह कोई वस्तु दिखाई दी । मैंने जैक को इशारा किया तो जैक झल्लाया—"आज आपको क्या हो गया है, एक साधारण सी फुटबाल के लिए अपने को मौत के मुख में डाल रहे हैं ।"

मुझे वह बातें भी कुछ प्रभावित न कर सकीं । बोट उधर ही बढ़ा दी । पास पहुँचकर देखता हूँ कि दो नाविक जो समुद्र के तूफान में फँस गये थे, डूब रहे हैं, हमने किसी तरह उन्हें अपनी नाव में चढ़ाया और डोलते डगमगाते किनारे आ पहुँचे ।

मेरी इस सहृदयता और साहस को जिसने भी सुना सराहा । मेरी धर्मपत्नी ने उस दिन मुझे हृदय से लगा लिया । तब से बराबर सोचता रहता हूँ कि वह कौन-सी शक्ति थी जो मुझे इस तरह प्रेरित करके वहाँ तक ले गई ? क्या ऐसा भी कोई तत्व है, जो अपनी इच्छा से विश्व का सृजन और नियमन करता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, यदि हाँ, तो क्या मनुष्य इसकी स्पष्ट अनुभूति कर सकता है ?

क्या दृष्टि सम्पन्न हुआ जा सकता है ?

इन घटनाओं को जानकर प्रश्न उठता है कि, क्या मनुष्य की आँखें वही देख सकती हैं जो सामने परिलक्षित होता है ? साधारण स्थिति में ऐसा ही होता है । नाक के ऊपर लगे हुए दो नेत्र गोलक केवल सामने की दिशा में और कुछ दाएँ-बाएँ एक नियत रूप तक के दृश्य देख सकते हैं । सो भी उन्हें जो उनकी ज्योति तथा पदार्थों की ध्वनि तरंगों के संयोग का एक नियत माध्यम बनाते हैं । नेत्र-ज्योति क्षीण हो अथवा पदार्थ जीवाणु, परमाणु जैसी सूक्ष्म आकृति का हो तो फिर सूक्ष्मदर्शक अथवा दूरदर्शक यन्त्रों से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकना नेत्र गोलकों के लिए सम्भव होता है । यह दृश्य वर्तमान काल के ही हो सकते हैं, आगे पीछे के नहीं । फोटोग्राफी, चित्रकला एवं फिल्म टेलीविजन जैसे माध्यमों से भूतकाल के दृश्य भी देखे जा सकते हैं । अब तक इतनी ही उपलब्धियों से मनुष्य को सन्तुष्ट रहना पड़ा है ।

निकट भविष्य में मनुष्य उन चमत्कारों को भी इन्हीं आँखों से देख सकेगा जो भूतकाल में केवल आध्यात्म विज्ञानियों के लिए ही सम्भव थे । भूतकाल की घटनाएँ सदा सर्वदा के लिए सुरक्षित रखी जा सकेंगी और उन्हें फिल्म-टेलीविजन की तरह आभास मात्र स्तर पर नहीं वरन् बिल्कुल उसी तरह देखा जा सकेगा, जिस तरह आँखों से देखा जाता है । तब यह पहचानना कठिन हो जायेगा कि जो दृश्य देख रहे हैं वह असली है या नकली । भूतकाल को हम वर्तमान में पूर्णतया वैसा ही देखेंगे मानो वह सचमुच अभी-अभी ही घटित हो रहा है और हम उसे बिल्कुल असली रूप में देख रहे हैं । ऐसा 'त्रियायतन' फोटोग्राफी के सुविकसित विज्ञान के द्वारा ही सम्भव हो सका ।

दुर्योधन को पाण्डवों के घर जाकर थल में जल और जल में थल दिखाई देता था । वह दर्पण का चमत्कार नहीं था । दर्पण के लिए दूसरी छवि वैसी ही सामने उपस्थित होनी चाहिए । वैसा वहाँ कहाँ था ? खुले आकाश में बिना किसी पर्दे की सहायता के अभीष्ट दृश्यों को देख सकना निःसन्देह बहुत ही अद्‌भुत है । पहली बार जिन्हें वैसा कुछ देखने को मिलेगा वे निःसन्देह अवाक् रह जायेंगे और अपनी आँखों पर विश्वास न करेंगे । संजय ने घर बैठे महाभारत के दृश्य देखे थे और सारा घटनाक्रम धृतराष्ट्र को सुनाया था । इस सम्भावना की टेलीविजन ने पुष्टि कर दी थी । अब रही बची कसर 'होलोग्राफी' ने पूरी कर दी है । उस विज्ञान के आधार पर हम देशकाल की समस्त परिधियों को तोड़कर किसी घटनाक्रम को इतने स्पष्ट और इतने निर्दोष रूप में देख सकते हैं कि असल-नकल को पहचान सकना ही सम्भव न रहे ।

विज्ञानाचार्य आइन्स्टाइन ने देश और काल की मान्यता को भ्रान्त, अवास्तविक सिद्ध किया है । वेदान्त दर्शन में जगत को माया, भ्रान्तिवत् कहा है और रज्जु सर्प का उदाहरण देकर बताया है कि जो कुछ हम देखते हैं वह वास्तविक नहीं है । अणु विज्ञानी की दृष्टि में यह संसार अणु धूल के आँधी तूफान से भरा बबण्डर मात्र है । इसमें भँवर चक्रवात जैसे उपक्रम बनते-बिगड़ते रहते हैं, उन्हें ही अमुक पदार्थों के रूप में अनुभव किया जाता है । जो कुछ दिखाई देता है वह खोखला आवरण मात्र है, उसके भीतर आणविक हलचलों का अंधड़ भर चलता रहता है । हमारा मस्तिष्क और नेत्र संस्थान अपनी बनावट एवं अपूर्ण संरचना के कारण वह सब देखता है जिसे हम यथार्थ मानते हैं वस्तुतः होता कुछ और ही है ।

स्थिर तस्वीरों को चलती-फिरती दिखाकर सिनेमा ने बहुत पहले ही यह सच्चाई सामने ला दी थी कि आँखों को प्रामाणिक साक्षी नहीं माना जा सकता । वे जो कुछ देखती या अनुभव करती हैं, वह सब का सब यथार्थ ही नहीं होता । अब रही बची कमी होलोग्राफी ने पूरी कर दी है । वह पर्दे पर नहीं, खुले आकाश में हमें ऐसे दृश्य दिखा सकती है, मानो उस देशकाल की स्थिति यथार्थ रूप से देखी जा रही है, जो वस्तुतः दूरवर्ती ही नहीं भूतकाल की भी है । उस दृश्यावली को फोटोग्राफी कहना, स्वीकार करना भी दर्शक के लिए सम्भव न रहेगा ।

आध्यात्म विद्या के आधार पर देशकाल की परिधि के बाहर के दृश्य को देख सकना सम्भव रहा है, इसे दिव्य-दृष्टि कहा जाता रहा है । दिव्य-दृष्टि की बात अविश्वसनीय नहीं है । यह तथ्य होलोग्राफी के रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में अब सामने आ खड़ा हुआ है । वेदान्त का वह कथन भी अब गम्भीरतापूर्वक विचार करने योग्य प्रतीत होता है कि हमारी आँखें धोखा खाती हैं और अवास्तविक को वास्तविक समझती हैं । यह तथ्य भी उभरता आता है कि हमारे सामने की दिशा में और नियत सीमा के दृश्य ही देखे जा सकते हैं । किसी भी दिशा के पीठ पीछे के भी-भूतकाल के, दूर देश के भी दृश्य हम इन्हीं आँखों से देख सकते हैं किं देशकाल की मान्यता भ्रामक है ।

प्रकाश किरणों को छवि के रूप में पकड़ने की कला अब फोटोग्राफी टेलीविजन तक सीमित नहीं रही, अब वे आधार प्राप्त कर लिए हैं जिनसे तीन आयामों वाले, त्रिविमितीय चित्र देखे जा सकें । आमतौर से फोटोग्राफी लम्बाई-चौड़ाई का ही बोध कराती है, गहराई का तो उसमें आभास मात्र ही होता है, यदि गहराई को भी प्रतिबिम्बित किया जा सके, तो फिर आँखों से देखे जाने वाले दृश्य और छाया अंकन में कोई भेद न रहेगा । ऐसा दृश्य प्रचलन सम्भव हो सका तो फिल्में अपने वर्तमान अधूरे स्तर की फोटोग्राफी तक सीमित नहीं रहेंगी वरन् पर्दे पर रेल, मोटर, घोड़े, मनुष्य आदि उसी तरह चलते-दौड़ते दिखाई पड़ेंगे, मानो वे अपने यथार्थ स्वरूप में ही आँखों के आगे से गुजर रहे हैं । यदि सामने से अपनी ओर कोई रेल दौड़ती आ रही हो या शेर झपटता आ रहा हो तो बिल्कुल यही मालूम पड़ेगा कि अब अपने ऊपर ही चढ़ बैठने वाले हैं । ऐसी दशा में आरम्भिक अभ्यास की स्थिति में, सिनेमा दर्शक को भयभीत होकर अपनी सीट छोड़कर भागते ही बनेगा ।

प्रकाश विज्ञानी एर्नेस्टेये और उनके सहयोगी शिष्य डी. गैवर ने होलोग्राफी के एक नये सिद्धान्त का आविष्कार किया, जिसके आधार पर त्रिविमितीया-स्तर का छाया चित्रण आँखों से देखा जा सकेगा और भूतकालीन दृश्यों को इन्हीं आँखों से इस प्रकार देखा जा सकेगा मानो वह घटनाक्रम अभी-अभी ही बिल्कुल सामने घटित हो रहा है ।

इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी के इस विधि विज्ञान को रूस ने विज्ञानी यूरीदैनिस्यूक के नेतृत्व में और भी आगे बढ़ाया है । इस युग में वैज्ञानिक ने परम्परागत पतली परत वाली फोटो 'प्लेटों' के स्थान पर मोटी परत लगाई और उन पर प्रकाश किरणों को गहराई तक प्रवेश कर सकने का अवसर दिया । फलतः तीन आयाम वाले चित्रों की एक विशेषता यह है कि जिस कोण से इन्हें देखा जाय वे उसी कोण से खींचे हुए पूर्ण प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ेंगे । सामने खड़े होकर देखें तो वे सामने से खिंचे हुए दीखेंगे और अगल-बगल से देखने पर लगेगा कि उन्हें इसी प्रकार खींचा गया और जितना अंश वहाँ खड़े हुए दृश्य को जिस रूप में देखा जा सकता था, फोटोग्राफ ठीक उसी तरह का दीख रहा है ।

होलोग्राफी वस्तुतः 'लेजर' किरणों के अनेक चमत्कारों में से एक है । लेजर का सैद्धान्तिक आविष्कार आइन्स्टाइन ने किया था । ५० वर्ष बाद उस परिकल्पना को साकार बनाया, चार्ल्स टाउनेस ने सन् १९५४ में । परमाणुओं की एक विशेष विद्या से उत्तेजित करने और उनसे एक जैसी माइक्रो तरंगें निकालने की आरम्भिक प्रक्रिया 'मेजर' कहलाती थी । उसी का परिष्कृत रूप चार वर्ष बाद सामने आया और वह 'लेजर' कहलाया ।

कुछ पदार्थों को गरम या उत्तेजित करने से एक विशेष प्रकार की ऊर्जा एवं आभा निकलती है जो रोशनी की बत्ती से भिन्न प्रकार की होती है । साधारण प्रकाश कई रंगों से मिलकर बना होता है और वे किरणें अलग-अलग लम्बाइयों और कलाओं की होती हैं । इन्द्रधनुष पड़ते समय यह लम्बाई की भिन्नता ही उस सुन्दर दृश्य के रूप में अपना परिचय देती है । इस बिखराब को एक भीड़ भेड़चाल कह सकते हैं । लेजर प्रक्रिया में परमाणुओं को उत्तेजित करके एक ही रंग की, एक ही कद की किरणें निकाली जाती हैं और उन्हें अधिकाधिक सघन बनाया जाता है । इतने से ही किरणें इतनी प्रचण्ड हो उठती हैं कि गजब के काम करती हैं । इन्हें अब तक के उपलब्ध शक्ति स्रोतों में सबसे अधिक प्रचण्ड माना जाता है । अणु विस्फोट की शक्ति से भी कई क्षेत्रों में ये अधिक तीखी और पैनी हैं । लेजर किरणों के प्रयोग से अगले दिनों भौतिक क्षेत्रों में अनोखी एवं क्रान्तिकारी प्रतिक्रियाएँ सामने आने वाली हैं । उन्हीं में एक होलोग्राफी भी है ।

आविष्कार के प्रारम्भिक दिनों में यह कठिनाई थी कि लेजर किरणें केवल एक ही रंग की किरणें उत्पन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती थीं इसलिए फोटो भी एक रंग के बनते थे । दूसरी कठिनाई यह थी कि खींचने की तरह देखने में भी लेजर किरणों का प्रकाश ही प्रयुक्त करना पड़ता था । स्पष्ट है कि लेजर अत्यन्त खतरनाक होती हैं । उनका तनिक भी व्यतिक्रम हो जाय तो सर्वनाश निश्चित है । अब उसमें कितने ही सुधार हो गये हैं । विज्ञानी लिपमाना ने तीन आयाम वाली फोटोग्राफी के लिए जो 'प्लेट' बनाई थीं वे होलोग्राफी में फिट बैठ गई हैं और तस्वीर खींचने के लिए साधारण रोशनी के प्रयोग से काम चलने लगा है । यह सुधार हो जाने से अब मार्ग निष्कंटक हो गया और सर्वसाधारण के लिए होलोग्राफी का आनन्द ले सकना सम्भव हो गया । अब उसके लिए सुलभ यन्त्रों का बनना ही शेष रह गया है ।

होलोग्राफी का आविष्कार ब्रिटिश नागरिक डॉ. डैनिस गेवर ने किया । उसे इसके उपलक्ष्य में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला है । चमत्कारी आविष्कारों में इस भौतिकी को अपने ढंग की अत्यन्त अद्‌भुत ही कहा जायेगा । यों अभी उसका क्षेत्र निर्धारित प्रयोगशालाओं में ही है । फिल्म या टेलीविजन की तरह विस्तार इतना व्यापक नहीं हुआ है कि जनसाधारण उससे लाभ उठा सके, पर वह दिन दूर नहीं जब यह आविष्कार भी सर्वसुलभ हो जायेगा । फोटोग्राफी का विज्ञान आविष्कृत होने के ११२ वर्ष बाद सर्वसाधारण के लिए प्रयोग योग्य बन पाया था । टेलीफोन ५६ वर्ष बाद, टेलीविजन १२ वर्ष बाद, एटम बम ५ वर्ष बाद, अपने आविष्कार के बाद उपयोग में आये थे । होलोग्राफी को भी कुछ समय लग सकता है पर जब भी वह प्रयुक्त होगी तब जिन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था उन्हें बहुत ही अजीब, किसी जादू लोक के तिलस्म जैसा लगेगा ।

अन्तर्निहित विभूतियों का आभास प्रकाश

"मुझे अच्छी तरह स्मरण है, तब मैं सात वर्ष का बच्चा था । पिताजी किसी काम से अपने ही शहर में बाहर गये थे । विचार और भावनाएँ कहाँ से आती हैं, मुझे कुछ मालूम नहीं है, किन्तु मुझे इनमें मानव-जीवन का कुछ यथार्थ दर्शन और अमरता का रहस्य छिपा हुआ जान पड़ता है । ऐसा मैं इस आधार पर कहता हूँ कि मुझे उस दिन यों ही एकाएक खेलते-खेलते ऐसा लगा कि पिताजी एक ट्राम से घर आ रहे हैं । ट्राम दुर्घटनाग्रस्त हो गई है और उसमें पिताजी बुरी तरह घायल हो गये हैं । बिना किसी दूरदर्शन (टेलीविजन) यन्त्र के इस तरह का आभास क्या था, मुझे कुछ भी पता नहीं है ।"

'रीडर्स डाइजेस्ट' नामक विश्व-विख्यात मासिक पत्रिका में "सैम बेन्जोन की सूक्ष्म शक्तियाँ" नामक शीर्षक से यह पंक्तियाँ उद्‌धृत की गई हैं । पूर्वाभास की घटनाओं का उल्लेख करते हुए इसमें लेखक ने स्वीकार किया है कि "संसार में कोई ऐसा तत्व भी है, जो हाथ-पाँव विहीन होकर भी सब कुछ कर सकता है, कान न होकर भी सब कुछ सुन सकता है, आँखें उसके नहीं हैं, पर वह अपने आपके प्रकाश में ही सारे विश्व को एक ही दृष्टि से देख सकता है । त्रिकाल में क्या सम्भाव्य है, यह उसको पता है । उसका सम्बन्ध विचार और भावनाओं से है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि विचार और ज्ञान की शक्ति चिरभूत और सनातन है ।"

सैम बेन्जोन अपनी माँ के पास गया और कहा—"माँ ! पिताजी घायल हो गये लगते हैं, मुझे अभी-अभी ऐसा आभास हुआ है, कि वे जिस ट्राम से वापस आ रहे थे, वह दुर्घटनाग्रस्त हो गई है ।" माँ ने बच्चे को झिड़की दी—"तुझे यों ही ख्याल आया करते हैं, चल भाग जा अपना काम कर ।"

बच्चा अभी वहाँ से गया ही था कि सचमुच उसके पिता घायल अवस्था में घर लाये गये । पूछने पर ज्ञात हुआ कि सचमुच वे जिस ट्राम में आ रहे थे, वह दुर्घटनाग्रस्त हो गई, उसमें कई व्यक्ति मारे गये । माँ को जितना पति की चोट का दुःख था, उससे अधिक पुत्र के पूर्वाभास का आश्चर्य । हमारे जीवन में ऐसे अनेक बार आत्मा से प्रकाश आता है, जिसमें हमें कुछ सत्य अनुभव होते हैं पर सांसारिकता में अनुरक्त मनुष्य उनसे आत्म-ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता कहाँ अनुभव करते हैं ।

क्रिसमस का त्यौहार आया । घर दावत दी गई । बहुत से मित्र, सम्बन्धी और पड़ौसी आये । लोगों ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेक तरह के उपहार दिये । उपहार के सब डिब्बे एक तरफ रखे दिये । प्रीतिभोज चलता रहा । सबको बड़ी प्रसन्नता रही । हँसी-खुशी के वातावरण में सब कुछ सानन्द सम्पन्न हुआ ।

मेहमान घरों को विदा हो गये, तब डिब्बों की जाँच-पड़ताल प्रारम्भ हुई । माँ ने बच्चे के कहा—'बेन्सन ! तू बड़ा भविष्य-दर्शी बनता है, बोल इस डिब्बे में क्या है ।" 'बेसबाल' माँ ! ऐसे जैसे उसने खोलकर देखा हो । जबकि डिब्बा जैसा आया था, वैसे ही बन्द था, किसी को भी देखने तो क्या खोलने का भी अवकाश नहीं मिला था ।

डिब्बा खोला गया । माँ अवाक् रह गई । सचमुच डिब्बे में 'बेसबाल' ही था ।

अब जब एक्सरे जैसे यन्त्र बन गए हैं, जो त्वचा के आवरण को भी पार करके भीतर के चित्र खींच लेते हैं, तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं रह गई है, किन्तु बिना 'लेन्स' या 'यन्त्र' के डिब्बे के भीतर की वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लेना यह बताता है कि विचार और भावनाओं की शक्ति इतनी दिव्य और सूक्ष्म है कि गहन अन्तराल में छिपी हुई वस्तुओं का भी ज्ञान बिना किसी माध्यम के प्राप्त कर सकती है । इससे उसकी सर्वव्यापकता का पता चलता है ।

यह तो एक व्यक्ति से सम्बन्धित घटना हुई । कई बार साधारण व्यक्तियों को सामान्य अवस्था में भी इस प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं, जो लगती तो स्वप्न जैसी हैं परन्तु उनकी प्रामाणिकता के कारण वे वास्तविक सी भी लगती हैं । उस समय की अनुभूतियों पर भले ही विश्वास न हो, परन्तु कालान्तर में वही घटनाएँ सत्य सिद्ध होती हैं ।

पूर्वाभास और स्वप्न

सन् १९४३ की रात, द्वितीय महायुद्ध, पैसफिक सागर में तेरहवीं एअर फोर्स बटालियन के कमाण्डर जनरल नेथान एफ. ट्वीनिंग दुर्भाग्यवश युद्ध के दौरान अपने बेड़े से अलग-थलग पड़ गये । वे एस्पेराइट सान्तो एअर बेज के लिए अपने चौदह साथियों के साथ रवाना हुए थे । युद्ध के दिन थे ही । बहुत खोज की गई पर उनका व उनके साथियों का कुछ भी पता नहीं चला ।

जनरल नेथान की पत्नी उस समय अमेरिका में अपने घर में रह रही थीं । प्रगाढ़ निद्रा के समय उन्हें लगा उनके पति उनके पास खड़े हैं और बेचैनी पूर्वक उसे जगा रहे हैं । श्रीमती ट्वीनिंग ने अपने पति का मुँह और हाथ स्पष्ट देखा । उन्होंने पति के हाथ पकड़ने चाहे तभी उनकी एकाएक नींद टूट गई । स्वप्न उन्होंने पहले भी देखे थे किन्तु यह स्वप्न उनसे विचित्र था । जग जाने पर भी वह ट्वीनिंग को इस प्रकार रोमांचित कर रहा था कि उनकी गर्दन के बाल सिहर कर खड़े हो गए थे ।

उसके बाद उन्हें नींद नहीं आयी । रात पूरी जागकर बिताई । सवेरा हो चला था । तभी एकाएक टेलीफोन की घण्टी बजी । उनकी एक सहेली का फोन था । उसके पति भी दक्षिणी पैसफिक सागर पर सैनिक अफसर थे, इसलिए श्रीमती ट्वीनिंग के हृदय में रात की रोमांचकारी घटना ने फिर एक बार उत्तेजना उत्पन्न की । उन्होंने जल्दी-जल्दी में पूछा कहो सब ठीक तो है ना ! उधर से आवाज आयी सब ठीक, पर मेरा मन न जाने क्यों बड़ी देर से बार-बार तुम्हें ही याद कर रहा है । मैंने तुम्हारे पास आने का निश्चय किया है, कहीं जाना मत, मैं दो-तीन दिन में तुम्हारे पास आ रही हूँ ।

श्रीमती ट्वीनिंग को अब भी आशंका थी कि उसे कोई बात कहनी है जो अभी छिपाई जा रही है किन्तु जब वे घर आईं तब भी ऐसी कोई बात उन्होंने नहीं बताई । इतने पर भी श्रीमती ट्वीनिंग की उस स्वप्न के प्रति आशंका गई नहीं ।

दो दिन रहकर जब उनकी सहेली वापस लौट गई तब श्रीमती ट्वीनिंग को सरकारी तौर पर जानकारी दी गई कि, उनके पति अपने बेड़े के साथ लापता हैं उनकी खोज की जा रही है । खोज करने वाले अधिकारी नियुक्त कर दिये गये हैं । इस समाचार से उनका मन बड़ा व्यग्र हो रहा था । थोड़ी देर बाद दूसरी सूचना मिली, जिसमें यह बताया गया था कि जहाज मिल गया है और श्री ट्वीनिंग शीघ्र ही उनसे मिलने घर आ रहे हैं ।

भेंट होने पर श्रीमती ट्वीनिंग ने बताया कि सचमुच उस दिन ठीक उसी समय वे संकट में पड़े थे, जिस समय उन्होंने स्वप्न देखा । उन्होंने यह भी बताया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि कितने आश्चर्य की बात है कि ठीक उसी समय मुझे—तुम्हारी (उनकी पत्नी) तीव्र याद आयी थी । इस पारस्परिक अनुभूति का कारण क्या हो सकता है ? इसके अतिरिक्त जिस ऑफीसर ने खोज की वह उनकी सहेली का ही पति था । उसे किसने वहाँ आने के लिए प्रेरित किया यह सब रहस्य हैं । जीवन में जो कुछ प्रकट है वही सत्य नहीं वरन् सत्य का सागर तो अदृश्य में छुपा हुआ है और वह विचित्र संयोगों के मध्य प्रकट हुआ करता है ।

सत्य की खोज में "इन सर्च ऑफ दि ट्रुथ" पुस्तक में इस घटना का हवाला देते हुए-श्रीमती रूथ मान्टगुमरी लिखती हैं कि युद्धों के समय पाशविक वृत्तियाँ एकाएक आत्म-मुखी हो उठती हैं तब किन्हीं भी व्यक्तियों को अतीन्द्रिय अनुभूतियाँ स्पष्ट रूप से होने लगती हैं । युद्ध के मैदानों में लड़ने वाले सैनिक और उनके सम्बन्धी रिस्तेदारों के बीच एक प्रगाढ़ भावुक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, वही इन अति मानसिक अनुभूतियों की सत्यता का कारण होता है । ध्यान की गहन अवस्था में होने वाले भविष्य की घटनाओं के पूर्वाभास भी इसी कारण होते हैं कि उस समय एक ओर से मानसिक विद्युत दूसरी ओर से पूरी क्षमता के साथ सम्बन्ध जोड़ देती और जिस प्रकार लेजर यन्त्र, दूरदर्शी (टेलीविजन) यन्त्र हमें दूर के दृश्य व समाचार बताने दिखाने लगते हैं उसी प्रकार यह भाव सम्बन्ध हमें दूरवर्ती स्थानों की घटनाओं के सत्य आभास कराने लगते हैं ।

द्वितीय विश्वयुद्ध की ही एक अन्य घटना का उल्लेख अपने इसी अध्याय में करते हुए श्रीमती रूथ माण्टगुमरी ने लिखा है कि चेकोस्लोवाकिया तथा थाईलैण्ड के भूतपूर्व राजदूत जो उसके बाद ही जापान के राजदूत नियुक्त हुए श्री जॉन्सन तब मुकड़ेन नगर में थे । युद्ध की आशंका से बच्चों को अलग कर दिया गया । उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पैट्रोसिया जॉन ने कैलीफोर्निया के लैगुना बीच में एक मकान ले लिया और वहीं रहने लगीं ।

इस बीच श्रीमती जॉन्सन ने कई बार जापान के समाचार जानने के लिए अपना रेडियो मिलाया पर रेडियो ने वहाँ का मीटर पकड़ा ही नहीं । एक दिन पड़ौस की एक स्त्री ने बताया कि उनका रेडियो जापानी प्रसारणों को (रेडियो ब्रॉड कास्टिंग) खूब अच्छी तरह पकड़ लेता है । तीन महीने तक श्रीमती जॉन्सन ने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया । एक दिन उन्हें एकाएक रेडियो सुनने की इच्छा हुई । रेडियो का स्विच घुमाया ही था कि आवाज आयी, "हम रेडियो स्टेशन मुकड़ेन से बोल रहे हैं । अब आप एक अमेरिकन ऑफीसर बी. जॉन्सन को सुनेंगे ।"

विस्मय विस्फारित श्रीमती जॉन्सन एकाग्र चित्त बैठ गईं—अगले ही क्षण जो आवाज आयी वह उनके पति की ही आवाज थी । वे बोल रहे थे—"मैं बी. एलेक्सिन जॉन्सन मुकड़ेन से बोल रहा हूँ जो भी कैलिफोर्नियाँ अमेरिका का नागरिक इसे सुने, कृपया मेरी पत्नी पैट्रोसिया जॉन्सन या मेरे माता-पिता श्री व श्रीमती कार्ल टी. जॉन्सन तक पहुँचायें और बतायें कि मैं यहाँ कैद में हूँ, स्वस्थ्य हूँ, खाना अच्छा मिलता है और आशा है, कैदियों की अदला-बदली में शीघ्र ही छूट जाऊँगा, अपनी पत्नी और बच्चों को प्यार भेजता हूँ ।"

दो माह पीछे जॉन्सन कैदियों की बदली में छूटकर आ गये । पैट्रोसिया पति से मिलने गई तो वहाँ उसे पति से क्षणिक भेंट होने दी क्योंकि कुछ समय के लिए श्री एलेक्सिस जॉन्सन को तुरन्त जहाज पर जाना था । पैट्रोसिया को थोड़ी ही देर में घर लौटना पड़ा । उसकी सहेलियाँ उसे घुमाने ले गईं पर अभी वे एक सिनेमा में बैठी ही थी कि पैट्रोसिया एकाएक उठकर बाहर निकल आईं और अपने घर को फोन मिलाया तो दूसरी ओर से एलेक्सिस जॉन्सन बोले और बताया कि मैं यहाँ हूँ, मुझे जहाज में नहीं जाना पड़ा । पैट्रोसिया सिनेमा छोड़कर घर चली आई ।

३ माह तक कभी भी रेडियो सुनने की आवश्यकता अनुभव न करना और ठीक उसी समय, जबकि पति सन्देशा देने वाले हों, रेडियो सुनने की अन्तःकरण की तीव्र प्रेरणा का रहस्य क्या हो सकता है ? कौन-सी शक्ति थी जिसने पैट्रोसिया को सिनेमा के समय फोन पर पहुँचने की प्रेरणा दी । जब इन बातों पर विचार करते हैं तो पता चलता है कोई एक अदृश्य शक्ति है अवश्य, जिसने मानव मात्र को एक भावनात्मक सम्बन्ध में बाँध अवश्य रखा है । हम जब तक उसे नहीं जानते तब तक मनुष्य शरीर की सार्थकता कहाँ ? दूरवर्ती स्वजनों के साथ घटित होने वाली घटनाओं तथा भविष्य वक्ताओं का पूर्वाभास कितनी ही वार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचित्र ढंग से सामने आता है कि न तो उन्हें झुठलाया जा सकता है और न उनका आधार अथवा कारण समझ में आता है ।

इस सन्दर्भ में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ. नेलसन वाल्ट का कथन है कि—मनुष्य के अन्दर एक बलवती आत्म-चेतना रहती है, जिसे जिजीविषा एवं प्राणधात्री शक्ति कह सकते हैं । यह न केवल रोग निरोध अथवा आत्म-रक्षा जैसे अस्तित्व संरक्षण के अविज्ञात साधन जुटाती है, वरन् चेतना जगत में चल रही उन हलचलों का पता लगा लेती है जो अपने आगे विपत्ति के रूप में आने वाली है । पूर्वाभास बहुधा अपने ऊपर तथा अपने सम्बन्धियों के ऊपर आने वाले संकटों के ही होते हैं । सुख-सुविधा की परिस्थितियों का ज्ञान कभी-कभी या किसी-किसी को ही हो पाता है ।

परामनोविज्ञानी हैराल्ड व ते हैं, स्वप्न में ही नहीं, अपितु जागृत स्थिति में भी कई बार बिल्कुल सही ऐसे पूर्वाभास होते पाये गये हैं, जिनका सामयिक परिस्थितियों से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था । उन्होंने फ्रांसीसी उड्डयन संस्थान में काम करने वाले एक यान चालक की विमान दुर्घटना से मृत्यु होने का उल्लेख किया है और बताया है कि ठीक दुर्घटना के समय ही रास्ता चलती उसकी एकमात्र बहिन को यह अनुभव हुआ था कि अभी-अभी उनका भाई वायुयान दुर्घटना में मरा है । दूसरे दिन ठीक वैसा ही समाचार भी उसे मिल गया । इस प्रकार के प्रसंगों में व्यक्तियों की पारस्परिक आत्मीयता की सघनता का बहुत हाथ रहता है ।

मनःशास्त्री हेनब्रुक ने अपनी शोधों में इस बात का उल्लेख किया है कि अतीन्द्रिय क्षमता, पुरुषों की अपेक्षा नारियों में कहीं अधिक होती है । दिव्य अनुभूतियों की अधिकता, उन्हें ही क्यों मिली इसका कारण वे नारी स्वभाव में कोमलता, सहृदयता जैसे सौम्य गुणों के आधिक्य को ही महत्त्व देते हैं । उनकी दृष्टि में आध्यात्म क्षेत्र में नारी को अपनी प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं के कारण सहज ही अधिक सफलता मिलती रहती है ।

बीज रूप से यह अलौकिक एवं अतीन्द्रिय क्षमता हर किसी में मौजूद है और यह सम्भावना हर किसी के सामने खुली पड़ी है कि उस दिव्य शक्ति को प्रयत्नपूर्वक विकसित करके न केवल अपना किन्तु दूसरों का भी भला कर सके ।

मनुष्य शरीर में इनकी सम्भावना किन स्थानों पर हो ? इस सम्बन्ध में भारतीय योगियों की मान्यता है कि, मेरुस्तम्भ के शिखर पर सीधे ऊपर खोपड़ी के बीच में बाल स्थान से थोड़ा हटकर लालिमा लिए हल्के भूरे रंग की कोण की शक्ल की वस्तु मस्तिष्क की पिछली कोठरी के आगे तीसरी कोठरी की तह से मिली हुई पायी जाती है । यह गुच्छी का पुन्ज है, जिसमें छोटे-छोटे खुरखुरे चूनेदार अणु होते हैं । इन्हें "मस्तिष्क बालुका" कहा जाता है । पश्चिमी वैज्ञानिक इसे पाइनल ग्लैण्ड या पाइनल बॉडी कहते हैं, पर वे अभी उसके कार्य, अभिप्राय और प्रयोग से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं । कोरी जानकारियाँ ही इस सम्बन्ध में मिलती हैं ।

दूरवर्ती वस्तुओं और सूक्ष्म से सूक्ष्म मन तक लगाव का कारण, योगी लोग इसी स्थान को मानते हैं । यह आत्मा की ज्ञान-शक्ति का कोष कहा जा सकता है । इस अवयव के लिए यह आवश्यक नहीं कि इसमें कोई बाह्य द्वार हो, जैसा कि कान, नाक, मुँह में होता है । इसमें से उठने वाले विचार कम्पन स्थूल पदार्थों का भेदन भी उसी तरह कर जाते हैं, जिस तरह 'एक्सरेज' । वह सूक्ष्म विचार कम्पन पहाड़ों की चट्टानों, लोहे आदि का भी भेदन कर उसके भीतर की आणविक संरचना का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

उल्लेखनीय है, कि जमशेद जी टाटा को खनिज और इस्पात का कारखाना खड़ा करने का स्थान, स्वामी विवेकानन्द ने लन्दन में तब बताया था, जब श्री टाटा जी वहाँ उसकी स्वीकृति लेने गये थे । खनिज पदार्थ, पानी और तेल के कुओं तक का पता धरती के भीतर हजारों फीट निचाई में हो तो वहाँ भी यह विचार कम्पन पहुँचकर वहाँ की स्थिति का रहस्य आत्मा को बता सकते हैं ।

उन दिनों पाकिस्तान से दिल्ली आये हुए ४० हजार शरणार्थियों के लिए फरीदाबाद के निकट एक बस्ती बसाई जा रही थी । योजना पूरी तैयार थी, पर पानी का विकट प्रश्न था । यमुना वहाँ से १८ मील दूर थी । इतनी लम्बी पाइप लाइन तुरन्त बिछाना कठिन भी था और खर्चीला भी । इन्जीनियर पहले ही बता चुके थे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि उस इलाके की जमीन में नलकूप लगाये जाने योग्य पानी नहीं है । समस्या बड़ी विकट थी ।

तभी श्री नेहरू को याद आया कि जामसाहब नवा नगर ने एक बार उनसे किसी ऐसे व्यक्ति की चर्चा की थी जिसमें भूमिगत पानी का पता लगाने की अद्‌भुत शक्ति है । तत्काल जामसाहब के पास सन्देश पहुँचाया गया और वह व्यक्ति साधारण किसान की वेश-भूषा वाला "पानी वाला महाराज" दिल्ली जा पहुँचा । महाराज को लेकर उस क्षेत्र की ३५०० एकड़ जमीन का पर्यवेक्षण किया । उसने पैर से ठोक-ठोक कर कई जगह की जमीन जाँची और दस जगहों पर निशान लगवाये कि यहाँ पानी है, तदनुसार नलकूप खोदे गये और सचमुच ही वहाँ जल के गहरे स्रोत निकले । इनमें से हर कुआँ अभी भी तीन हजार गैलन पानी हर घण्टे की गति से दे रहा है । इससे पूर्व इस पथरीले इलाके में इतना पानी मिलने की किसी इन्जीनियर के कल्पना भी नहीं की थी ।

मस्तिष्क के सूक्ष्म स्नायु कोष बेतार के तार की तरह अदृश्य जगत के सूक्ष्म से सूक्ष्म कम्पन को भी पकड़ लेता है, इसलिए जो बात मन में तो न हो, अवचेतन मन में हो, उसे भी जाना जा सकता है । उदाहरण के लिए कौड़ी वाले बैल देखे होंगे, जो अपने स्वामी के संकेत पर बता देते हैं कि ५) का नोट किसकी जेब में है—बैल चलता है और उस आदमी के पास जा पहुँचता है, वह आदमी पूछता है—इनमें 'रामशंकर' कौन है, उस समय भीड़ में खड़ा रामशंकर अपने मन में अपना नाम भी नहीं लेता, उस समय तो उसे केवल कौतूहल होता है पर चूँकि उसके अवचेतन मस्तिष्क में यह बात रहती है कि मैं रामशंकर हूँ, उसी को बैल का वह अवयव पकड़ लेता है और उस व्यक्ति के पास जाकर बता देता है ।

इस तरह के खेल प्रायः सभी ने देखे होंगे । अभी तक इनको चमत्कार माना जाता है, पर मनुष्येत्तर जीवों में सभी में इस तरह की ज्ञानशक्ति के आधार पर यह पता लग सकता है, कि आत्मा का अस्तित्व मनुष्य में ही नहीं अन्य प्राणियों में भी है । जिस दिन यह मान्यता लोगों के मस्तिष्क में उतर जायेगी, उसी दिन पुनर्जन्म व कर्मफल के अनेक रहस्य भी मालूम होने लगेंगे और तब अब की तरह चोरी, छल, कपट, धोखा, अपराध, अत्याचार करने वाले लोगों को मालूम होगा कि इनके कारण दूसरी योनियों में रहकर किस तरह कष्ट उठाना पड़ा और देहासक्ति से अब किस तरह बचा जा सकता है ।

आध्यात्म विज्ञान में स्थान-स्थान पर प्रकाश की साधना और प्रकाश की याचना की चर्चा मिलती है । यह प्रकाश बल्ब, बत्ती अथवा सूर्य, चन्द्र आदि से निकलने वाला उजाला नहीं वरन् वह परम ज्योति है जो इस विश्व चेतना का आलोक बनकर जगमगा रही है । गायत्री का उपास्य सविता देवता इसी परम ज्योति को कहते हैं । इसका अस्तित्व ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में प्रत्यक्ष और कण-कण में संव्याप्त जीवन-ज्योति के रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर भी देख सकता है । इसकी जितनी मात्रा जिसके भीतर विद्यमान हो, समझना चाहिए कि उसमें उतना ही अधिक ईश्वरीय अंश आलोकित हो रहा है ।

मस्तिष्क के मध्य भाग से प्रकाश कणों का एक फुहारा सा फूटता रहता है । उसकी उछलती हुई तरंगें एक वृत्त बनाती हैं और फिर अपने-अपने मूल उद्‌गम में लौट जाती हैं । यह रेडियो प्रसारण और संग्रहण जैसी प्रक्रिया है । ब्रह्मरन्ध्र से छूटने वाली ऊर्जा अपने भीतर छिपी हुई भाव स्थिति को विश्व-ब्रह्माण्ड में ईथर कम्पनों द्वारा प्रवाहित करती रहती है, इस प्रकार मनुष्य अपनी चेतना का परिचय और प्रभाव समस्त संसार में फेंकता रहता है । फुहारे की लौटती हुई धाराएँ अपने साथ विश्व-व्यापी असीम ज्ञान की नवीनतम घटनात्मक जानकारियाँ लेकर लौटती हैं, यदि उन्हें ठीक तरह समझा जा सके, ग्रहण किया जा सके, तो कोई भी व्यक्ति भूतकालीन और वर्तमान काल की अत्यन्त सुविस्तृत और महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कर सकता है । व्यक्ति में प्रवाह ग्रहण करने की और प्रसारित करने की जो क्षमता है, उसका माध्यम यह ब्रह्मरंध्र अवस्थित ध्रुव संस्थान ही है । पृथ्वी पर अन्य ग्रहों का प्रचुर अनुदान आता है तथा उसकी विशेषताएँ अन्यत्र चली जाती हैं । यह आदान-प्रदान का कार्य ध्रुव केन्द्रों द्वारा सम्पन्न होता है । शरीर के दो ध्रुव हैं, एक मस्तिष्क, दूसरा जनन गह्वर । चेतनात्मक विकिरण मस्तिष्क से और शक्ति परक ऊर्जा प्रवाह जनन गह्वर से सम्बन्धित है । सूक्ष्म आदान-प्रदान की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया इन्हीं केन्द्रों के माध्यम से संचालित होती है ।

शारीरिक और मानसिक स्थिति के अनुरूप तेजोवलय की स्थिरता बनती है । यदि स्थिति बदलने लगे तो प्रकाश पुंज की स्थिति भी बदल जायेगी । इतना ही नहीं समय-समय पर मनुष्य के बदलते हुए स्वभाव तथा चिन्तन स्तर के अनुरूप उसमें सामयिक परिवर्तन होते रहते हैं । सूक्ष्मदर्शी उसकी भिन्नताओं को रंग बदलते हुए परिवर्तनों के रूप में देख सकते हैं । शान्ति और सज्जनता की मनःस्थिति हल्के नीले रंग में देखी जायेगी । विनोदी, कामुक, सत्तावान, वैभवशाली, विशुद्ध व्यवहार कुशल स्तर की मनोभूमि पीले रंग की होती है । क्रोधी, अहंकारी, क्रूर, निष्ठुर, स्वार्थी, हठी और मूर्ख मनुष्य लाल वर्ण के तेजोवलय के घिरे रहते हैं, हरा रंग सृजनात्मक एवं कलात्मक प्रवृत्ति का द्योतक है । गहरा बैंगनी चंचलता और अस्थिर मति का प्रतीक है । धार्मिक ईश्वर भक्त और सदाचारी व्यक्तियों की आभा केशरिया रंग की होती है । इसी प्रकार विभिन्न रंगों का मिश्रण मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के परिवर्तनों के अनुसार बदलता रहता है । यह तेजोवलय सदा स्थिर नहीं रहता । बदलती हुई मनोवृत्ति प्रकाश पुंज के रंगों में परिवर्तन कर देती है । यह रंग स्वतन्त्र रूप से कुछ नहीं । मनोभूमि में होने वाले परिवर्तन, शरीर से निःसृत होते रहने वाले ऊर्जा कम्पनों की घटती-बढ़ती संख्या के आधार पर आँखों को अनुभव होते हैं । वैज्ञानिक उन्हें "फ्रीक्वेन्सी ऑफ दी वेब्स" कहते हैं ।

दिव्य दर्शन (क्लेयर वाइन्स), दिव्य अनुभव (साइकोमैक्ट्री), प्रभाव प्रेषण (टेलीपैथी), संकल्प प्रयोग (सजैशन) जैसे प्रयोग थोड़ी आत्मशक्ति विकसित होते ही आसानी से किए जा सकते हैं । इन विद्याओं पर पिछले दिनों से काफी शोध कार्य होता चला आ रहा है और उन प्रयासों के फलस्वरूप उपयोगी निष्कर्ष सामने आये हैं । परा-मनोविज्ञान, अतीन्द्रिय विज्ञान, मैटाफिजिक्स जैसी चेतनात्मक विद्याएँ भी अब रेडियो विज्ञान तथा इलेक्ट्रॉनिक्स की ही तरह विकसित हो रही हैं । अचेतन मन की सामर्थ्य के सम्बन्ध में जैसे-जैसे रहस्यमय जानकारियों के पर्त खुलते हैं, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता जाता है कि नर-पशु लगने वाला मनुष्य वस्तुतः असीम और अनन्त क्षमताओं का भण्डार है । कठिनाई उतनी भर है कि उसकी अधिकांश विकृतियाँ प्रसुप्त अविज्ञात-स्थिति में पड़ी हैं ।

प्रकाश रश्मियों की लम्बाई एक इंच के सोलह से तीस लाखवें हिस्से के बराबर होती है । रेडियो पर सुनी जाने वाली ध्वनि तरंगों की गति एक सेकण्ड में एक लाख छियासी हजार मील की होती है, वे एक सेकण्ड में सारी धरती की सात परिक्रमा कर लेती हैं । शब्द और प्रकाश की तरंगों का आकार एवं प्रवाह इतना सूक्ष्म एवं गतिशील है कि उन्हें बिना सूक्ष्म यन्त्रों की सहायता से हमारी इन्द्रियाँ अनुभव नहीं कर सकती हैं ।

डॉ. जे. सी. ट्रस्ट ने 'अणु और आत्मा' ग्रन्थ में स्वीकार किया है कि मानव अणुओं की प्रकाशवाष्प न केवल मनुष्यों में वरन् अन्य जीवधारियों, वृक्ष, वनस्पति, औषधि आदि में भी होती है, यह प्रकाश अणु ही जीवधारी के यथार्थ शरीरों का निर्माण करते हैं । खनिज पदार्थों से बना मनुष्य या जीवों का शरीर तो तभी तक स्थिर रहता है, जब तक यह प्रकाश अणु शरीर में रहते हैं । इन प्रकाश अणुओं के हटते ही स्थूल शरीर बेकार हो जाता है, फिर उसे जलाते या गाड़ते ही बनता है । खुला छोड़ देने पर तो उसकी सड़ाध से उसके पास एक क्षण भी ठहरना कठिन हो जाता है ।

स्वभाव, संस्कार, इच्छाएँ, क्रिया-शक्ति—यह सब इन प्रकाश अणुओं का ही खेल है । हम सब जानते हैं, कि प्रकाश का एक अणु (फोटॉन) भी कई रंगों के अणुओं से मिलकर बना होता है । मनुष्य शरीर का प्रकाश भी कई रंगों से बना होता है । डॉ. जे. सी. ट्रस्ट ने अनेक रोगियों, अपराधियों तथा सामान्य व श्रेष्ठ व्यक्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण करके बताया है, कि जो मनुष्य जितना श्रेष्ठ और अच्छे गुणों वाला होता है, उसके मानव अणु दिव्य तेज और आभा वाले होते हैं, जबकि अपराधी और रोगी व्यक्तियों के प्रकाश अणु क्षीण और अन्धकारपूर्ण होते हैं । उन्होंने बहुत से मनुष्यों के काले धब्बों को अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर उनके रोगी या अपराधी होने की बात को बताकर लोगों को स्वीकार करा दिया था, कि सचमुच रोग और अपराधी वृत्तियाँ काले रंग के अणुओं की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपस्थिति का प्रतिफल होते हैं, मनुष्य अपने स्वभाव में चाहते हुए भी तब तक परिवर्तन नहीं कर सकता, जब तक यह दूषित प्रकाश अणु अपने अन्दर विद्यमान बने रहते हैं ।

यही नहीं जन्म-जन्मान्तरों तक खराब प्रकाश अणुओं की यह उपस्थिति मनुष्य से बलात् दुष्कर्म कराती रहती है, इस तरह मनुष्य पतन के खड्ढे में बार-बार गिरता और अपनी आत्मा को दुःखी बनाता रहता है । जब तक यह अणु नहीं बदलते, न निष्क्रिय होते तब तक मनुष्य किसी भी परिस्थिति में अपनी दशा नहीं सुधार पाता ।

यह तो है कि अपने प्रकाश अणुओं में यदि तीव्रता है तो उससे दूसरों को आकस्मिक सहायता दी जा सकती है । रोग दूर किए जा सकते हैं । खराब विचार वालों को कुछ देर के लिए अच्छे सन्त स्वभाव में बदला जा सकता है । महर्षि नारद के सम्पर्क में आते ही डाकू वाल्मीकि के प्रकाश अणुओं में तीव्र झटका लगा और वह अपने आपको परिवर्तित कर डालने को विवश हुआ । भगवान बुद्ध के इन प्रकाश अणुओं से निकलने वाली विद्युत विस्तार सीमा में आते ही डाकू अंगुलिमाल की विचारधाराएँ पलट गई थीं । ऋषियों के आश्रमों में गाय और शेर एक घाट पानी पी आते थे, वह इन प्रकाश-अणुओं की ही तीव्रता के कारण होता था । उस वातावरण से निकलते ही व्यक्तिगत प्रकाश अणु फिर बलवान हो उठने से लोग पुनः दुष्कर्म करने लगते हैं, इसलिए किसी को आत्म-शक्ति या अपना प्राण देने की अपेक्षा भारतीय आचार्यों ने एक पद्धति का प्रसार किया था, जिसमें इन प्रकाश-अणुओं का विकास कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार कर सकता था । देव उपासना उसी का नाम है ।

उपासना एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें हम अपने भीतर के काले, मटमैले और पापाचरण को प्रोत्साहन देने वाले प्रकाश अणुओं को दिव्य, तेजस्वी, सदाचरण और शान्ति एवं प्रसन्नता की वृत्ति करने वाले मानव-अणुओं में परिवर्तित करते हैं । विकास की इस प्रक्रिया में किसी नैसर्गिक तत्व, पिण्ड या ग्रह-नक्षत्र की साझेदारी होती है—उदाहरण के लिए जब हम गायत्री की उपासना करते हैं तो हमारे भीतर के दूषित प्रकाश अणुओं को हटाने और उसके स्थान पर दिव्य प्रकाश अणु भर देने का माध्यम 'गायत्री' का देवता अर्थात् सूर्य होता है ।

वर्ण रचना और प्रकाश की दृष्टि से यह मानव-अणु भिन्न-भिन्न स्वभाव के होते हैं । मनुष्य का जो कुछ भी स्वभाव आज दिखाई देता है, वह इन्हीं अणुओं की उपस्थिति के कारण होता है, यदि इस विज्ञान को समझा जा सके तो न केवल अपना जीवन शुद्ध, सात्विक, सफल, रोगमुक्त बनाया जा सकता है, वरन् औरों को भी प्रभावित और इन लाभों से लाभान्वित किया जा सकता है । परलोक और सद्गति के आधार भी यह प्रकाश अणु या मानव अणु ही हैं ।

वस्तुएँ हम प्रकाश की सहायता से देख सकते हैं, किन्तु साधारण प्रकाश कणों की सहायता से हम शरीर के कोश (सैल) को देखना चाहें तो वह इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें देख नहीं सकते । इलेक्ट्रॉनों को जब ५०००० वोल्ट आवेश पर सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) में भेजा जाता है, तो उनकी तरंगदैर्घ्य श्वेत प्रकाश कणों की तुलना में १/१०००० भाग सूक्ष्म होती है, तब वह हाइड्रोजन के परमाणु का जितना व्यास होता है, उसके भी ४२.४ वें हिस्से छोटे परमाणु में भी प्रवेश करके वहाँ की गतिविधियाँ दिखा सकती हैं । उदाहरण के लिए यदि मनुष्य की आँख एक इंच घेरे को देख सकती है तो उससे भी ५०० अंश कम को प्रकाश-सूक्ष्मदर्शी और १०००० अंश छोटे भाग को सूक्ष्मदर्शी । इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि मनुष्य शरीर के कोश (सेल्स) का चेतन भाग कितना सूक्ष्म होना चाहिए । इस तरह के सूक्ष्मदर्शी से जब कोश का निरीक्षण किया गया तो उसमें भी एक टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई दिया । चेतना या महत्तत्व इस प्रकार प्रकाश की ही अति सूक्ष्म स्फुरणा है, यह विज्ञान भी मानता है ।

भारतीय योगियों ने ब्रह्मरन्ध्र की स्थिति और जिन षटचक्रों की खोज की है, सहस्रार कमल उनसे बिल्कुल अलग सर्वप्रभुता सम्पन्न है । यह स्थान कनपटियों से दो इंच अन्दर भृकुटि से लगभग ढाई या तीन इंच अन्दर छोटे से पोले में प्रकाश पुंज के रूप में है । तत्वदर्शियों के अनुसार यह स्थान उल्टे छाते या कटोरे के समान १७ प्रधान प्रकाश तत्वों से बना होता है, देखने में मर्करी लाइट के समान दिखाई देता है । छान्दोग्य उपनिषद में सहस्रार दर्शन की सिद्धि पाँच अक्षरों में इस तरह प्रतिपादित की 'तस्य सर्वेषु लोकेषु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कामचारी भवति' अर्थात् सहस्रार प्राप्त कर लेने वाला योगी सम्पूर्ण भौतिक विज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है । यही वह शक्ति केन्द्र है जहाँ से मस्तिष्क शरीर का नियन्त्रण करता है और विश्व में जो कुछ भी मानवकृत विलक्षण विज्ञान दिखाई देता है, उसका सम्पादन करता है ।

आत्मा या चेतना जिन अणुओं से अपने को अभिव्यक्त करती है, वह यह प्रकाश अणु ही है, जबकि आत्मा स्वयं उससे भिन्न है । प्रकाश अणुओं को प्राण विधायक शक्ति, अग्नि, तेजस् कहना चाहिए, वह जितने शुद्ध, दिव्य और तेजस्वी होंगे, व्यक्ति उतना ही महान, तेजस्वी, यशस्वी, वीर, साहसी और कलाकार होगा । महापुरुषों के तेजोवलय उसी बात के प्रतीक हैं जबकि निकृष्ट कोटि के व्यक्तियों में यह अणु अत्यन्त शिथिल, मन्द और काले होते हैं । हमें चाहिए कि हम इन दूषित प्रकाश अणुओं को दिव्य अणुओं में बदलें और अपने को भी महापुरुषों की श्रेणी में ले जाने का यत्न करें ।

गायत्री उपासना में सविता देवता का ध्यान करने की प्रक्रिया इसीलिए की जाती है कि अन्तर के कण-कण में सर्वव्याप्त प्रकाश आभा को अधिक दीप्तिमान बनने का अवसर मिले । अपने ब्रह्मरंध्र में अवस्थित सहस्रांशु आदित्य सहस्रदल कमल को खिलाये और उसकी प्रत्येक पंखुरी में सन्निहित दिव्य कलाओं के उदय का लाभ साधक को मिले ।

ब्रह्म विद्या का उद्गाता 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना में इस दिव्य प्रकाश की याचना करता है । इसी की प्रत्येक जागृत आत्मा को आवश्यकता अनुभव होती है । अस्तु गायत्री उपासक अपने जप प्रयोजन में इसी ज्योति को अन्तःभूमिका में अवतरण करने के लिए सविता का ध्यान करता है ।

पूर्वाभास : संयोग नहीं सत्य

समय और परिस्थिति विशेष के अनुसार घटने वाली घटनाओं तथा पूर्वानुमानों को कई लोग संयोग मात्र कहकर उन्हें बहुत हल्केपन से लेते हैं, लेकिन पूर्वाभास की घटनाएँ, जिनका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है, तथ्यों पर आधारित हैं । इस तरह की घटनाओं को वस्तुतः पूर्व दैवी चेतावनी के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए ।

हमारे बाह्य जगत की अपेक्षा, अन्तर्जगत की शक्ति और सक्रियता अदृश्य होकर भी कहीं अधिक प्रखर और प्रभावपूर्ण होती है । मस्तिष्क में क्या विचार चल रहे होते हैं वह दिखाई नहीं देता, पर क्रिया-व्यापार की समस्त भूमिका मनोजगत में ही बनती है । किसी व्यक्ति को किसी के मन की बात का पता चल जाय तो प्रकारान्तर से वह भी लाभ ले सकता है । पूर्वाभासों को इसी रूप में लिया जा सके, तो अनिष्टकारी परिस्थितियों से बचना और लाभदायक सम्भावनाओं की तैयारी करना किसी के लिए भी सम्भव हो सकता है ।

अन्तर्जगत विशाल और विराट् है । उससे एक व्यक्ति ही नहीं बड़े समुदाय भी प्रेरित होते हैं । पूर्वाभास की ऐसी ही एक घटना यों है—अमेरफान वेल्स का एक छोटा कस्बा है । वर्षाकाल की बात है । समूचे कस्बे में एक अजीब खलबली मची । अधिकांश लोगों को या तो रात्रि के स्वप्नों में या दिन में यों अनायास ही पूर्वाभास होता है, कि उनकी मृत्यु शीघ्र ही हो जायेगी । अमेरफान वासियों की इस बेचैनी ने इस तरह सार्वजनिक चर्चा का रूप ग्रहण किया कि जर्मनी के सुप्रसिद्ध मानस शास्त्री जॉन मारकर को घटना के अध्ययन के लिए बाध्य होना पड़ा । सर्वेक्षण के मध्य उन्होंने पाया कि कस्बे के अधिकांश व्यक्तियों को इस तरह का पूर्वाभास हो रहा है । यही नहीं, लोगों के चेहरे पर भय की रेखाएँ स्पष्ट झलकती थीं ।

मुश्किल से एक पखवाड़ा बीता था कि सचमुच समीप के पहाड़ से एक दिन ज्वालामुखी फटा—कोयले की राख का भयंकर तूफान उमड़ा और उसने देखते-देखते हजारों व्यक्तियों को मौत की नींद सुला दिया । एक स्कूल की दीवार में हुए भयंकर विस्फोट से तो १०० बच्चे एक ही स्थान पर मृत्यु के घाट उतर गये ।

इस विद्यालय की एक नौ वर्षीय बालिका तब तो बच गई थी किन्तु घटना के १० दिन बाद वह एकाएक अपनी माँ से बोली, माँ-मैं मृत्यु से बिल्कुल नहीं डरती, क्योंकि मेरे साथ भगवान रहते हैं । माँ ने समझा बच्ची पूर्व घटना से भयाक्रान्त है इसलिए उसने उसे हृदय से लगाकर समझाया, नहीं बेटी अब तो जो होना था हो गया अब तू निश्चिन्त रह ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जॉन मारकर ने उस बालिका से भी भेंट की और पूछा—बेटी तुम ऐसा क्यों सोचती हो ? बालिका ने उत्तर दिया—क्योंकि मुझे अपने चारों ओर अन्धकार दिखाई देता है । इस भेंट के दूसरे ही दिन मध्याह्न में बच्ची का निधन हो गया । संयोग से उसे जिस स्थान पर दफनाया वह स्थान कोयले की राख की ५-६ फुट परत से ढका हुआ था । जॉन मारकर ने इस अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकाला कि समस्त प्राणि जगत एक ही चेतना के समुद्र में सम्बद्ध है । यह सम्पर्क जितना प्रगाढ़ और निर्मल हो, जानकारियाँ उतनी ही अधिक और लाभ भी वैसा ही लिया जा सकता है । अतएव आध्यात्मिक साधनों द्वारा अन्तर्जगत का क्षेत्र विकसित किया जाना किसी भी भौतिक हित की अपेक्षा अधिक आवश्यक है ।

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का आधार अब विज्ञान-वेत्ताओं को एक विशिष्ट तत्व 'ग्रेविटी' के रूप में हाथ लगा है । यह ग्रेविटी प्रत्येक पिण्ड से निकलता है और उसकी आकर्षण शक्ति के स्तर की संरचना करता है । इसी के आधार पर एक ग्रह दूसरे को खींचता है और यह विश्व ब्रह्माण्ड एक व्यवस्थित सम्बन्ध शृंखला से जकड़ा हुआ है ।

ग्रह-नक्षत्रों की तरह ही मनुष्य में भी एक विशिष्ट विद्युत का प्रवाह निःसृत होता है । वह एक-दूसरे को बाँधता है । इस प्रकार समस्त मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे के साथ अनजाने ही बँधा हुआ है और जिन धागों को यह बन्धन कार्य करना पड़ता है, वही एक से दूसरे तक उसकी सत्ता का भला-बुरा प्रभाव पहुँचाता है । एक व्यक्ति दूसरे के विचारों से अनायास ही परिचित और प्रभावित होता रहता है यह आगे की बात है कि वह प्रभाव कितना भारी-हल्का था और उसे किस कदर, किसने, स्वीकार या अस्वीकार किया ।

आइन्स्टीन 'समग्र ज्ञान' को सामान्य ज्ञान की परिधि से आगे की बात मानते थे । वे कहते थे जिज्ञासा, प्रशिक्षण, चिन्तन एवं अनुभव के आधार पर जो जाना जाता है, उतना ही 'ज्ञान' नहीं है वरन् चेतना का एक विलक्षण स्तर भी है, जिसे अन्तर्ज्ञान कहा जा सकता है । संसार के महान आविष्कार इस अन्तर्ज्ञान प्रज्ञा के सहारे ही मस्तिष्क पर उतरे हैं । जिन बातों का कोई आधार न था उनकी सूझ अचानक कहाँ से उतरी ? इसका उत्तर सहज ही नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उसका कोई संगत एवं व्यवस्थित कारण नहीं है । रहस्यमय अनुभूतियाँ जिस प्रज्ञा से प्रादुर्भूत होती हैं उन्हें अति मानवीय मानना पड़ेगा ।

इस तरह के अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष बोध जब कसौटी पर सत्य पाये गए तब वैज्ञानिकों को भी उनके सत्य तक पहुँचने की जिज्ञासा जागृत हुई । इस समय इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, रूस, चैकोस्लोवाकिया, नीदरलैण्ड आदि अनेक प्रमुख देशों में "परामनोविज्ञान" की शाखाओं का तेजी से विकास हो रहा है जो इस तरह की घटनाओं से विस्तृत अध्ययन और विवेचन द्वारा वस्तु स्थिति तक पहुँचने का प्रयास करती हैं । अतीन्द्रिय बोध या पूर्वाभास को तीन खण्डों में विभक्त करते हुए रूसी परामनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि मनुष्य के "मन" में कुछ ऐसे तत्व विद्यमान हैं, जिनकी जानकारी विज्ञान को तो नहीं है किन्तु यदि उनका विकास और नियन्त्रण किया जा सके तो यह एक नितान्त सामान्य वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में सामने आ सकता है । उनके अनुसार यह इन्द्रियों की क्षमता विस्तार का एक अति प्रारम्भिक चमत्कार है । मनीषियों का मत भी यही है कि मन की सामर्थ्य अनन्त और अपार है उसे जितना अधिक पैना, केन्द्रित और सूक्ष्मग्राही बनाया जायेगा, वह उतना ही अधिक विलक्षण और चमत्कारी ज्ञान-विज्ञान, अनुभूति और क्षमताओं से विभूषित होता चला जायेगा ।

पूर्वाभास की तीन कक्षाएँ हैं—(१) परीन्द्रिय ज्ञान (टेलीपैथी) या किसी जीवित व्यक्ति द्वारा घनीभूत स्मृति, अत्यधिक भावुक होकर हृदय से किसी को पुकारना या सन्देश देना, (२) अतीन्द्रिय ज्ञान (क्लैरवायेन्स) जिसमें अपनी स्वतः की क्षमताएँ विस्तृत होकर घटना स्थल से सायुज्य स्थापित करतीं और अपनी अन्तःस्थिति के अनुरूप स्थिति का बोध करती हैं, (३) पूर्व संचित ज्ञान—अर्थात् पूर्व जन्मों की स्मृति जो मस्तिष्क में साइनेप्सिस (मस्तिष्क में भूरे रंग का एक पदार्थ होता है ।) उसमें कुछ इस तरह की विलक्षण आड़ी-टेढ़ी लाइनें होती हैं, जैसे राख के ढेर में किसी कीड़े के रेंग जाने से पड़ जाती हैं । इन्हें "साइनेप्सिस" कहते हैं । इनमें जब मन एक क्षण के लिए एकाकार होता है, तो ग्रामोफोन या टेप-रिकॉर्डर पर सुई घूमने से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न ध्वनि की तरह पूर्वाभास या भविष्य ज्ञान ऐसा हो सकता है । मानसिक संस्थान की रचना जितनी विलक्षण है, उतनी ही अद्‌भुत शक्ति और क्षमताओं से वह ओत-प्रोत भी है । बिना तार के तार से भी उन्नत प्रकार से यदि इस तरह प्रकृति के अन्तराल के रहस्य कभी अनायास ही समझ में आ जायें तो इस मानसिक संस्थान को प्रौढ़ बनाकर उसे विकसित करके तो और भी महत्त्वपूर्ण लाभ, योगियों जैसी सिद्धियाँ, सामर्थ्यें प्राप्त की जा सकती हैं ।

पूर्वाभास से मार्गदर्शन

मौण्टे कौसिनो के विशप बेनेडिक्ट एक बार गिरजाघर की खिड़की के सहारे खड़े आकाश की ओर देख रहे थे । उन्हें लगा कि उनकी बहिन श्वेत वस्त्रों में, बादलों में समाती चली जा रही है । यह दृश्य देखते-देखते उनके हृदय की गति तीव्र हो उठी । वे तीन दिन पूर्व ही बहिन स्कोलास्टिका से कन्वेन्ट में मिलकर आये थे । तब वे पूर्ण स्वस्थ थीं, पर न जाने कैसे उन्हें यह आभास हुआ कि उनकी बहिन की मृत्यु हो गई । दिन भर विचार आते रहते, पर शरीर संस्थान प्रभावित नहीं होता । इस स्थल पर हृदय का धड़कना विशिष्टता का द्योतक था । सचमुच हुआ भी वैसा ही । जिस क्षण बेनेडिक्ट को यह दिवास्वप्न आ रहा था, ठीक उसी समय उनकी बहिन स्कोलास्टिका अपना इहलोक त्याग रही थी । पीछे पता चला कि मृत्यु के समय बहिन ने सबसे अधिक अपने भाई बेनेडिक्ट को ही याद किया था । यह घटना इस बात का प्रमाण है कि भावनाओं की शक्ति और सामर्थ्य भौतिक शक्तियों की अपेक्षा बहुत अधिक है । यदि लोग इन्द्रियों के सुखों के छलावे में न आयें अपितु भावनाओं की सूक्ष्म सत्ता और महत्ता को समझ सकें तो भौतिक जीवन भी बहुत अधिक सफल और सरल रूप में जीया जा सकता है ।

पराविज्ञान की ड्यूक विश्वविद्यालय शाखा ने पूर्वाभास की असंख्य घटनाएँ संकलित की हैं । उसमें एक महिला की अनुभूति बहुत भाव भरे शब्दों में इस प्रकार अंकित है—मेरे पति स्नायुविक सन्निपात का लगभग ५० मील दूर एक कस्बे में इलाज करा रहे थे । उनका प्रतिदिन पत्र आता और उससे स्वास्थ्य की प्रगति का समाचार मिल जाता । एक दिन अनायास ही मेरे मन की बेचैनी बहुत अधिक बढ़ गई । मुझे लगा कि कोई फोन पर बुला रहा है । सम्मोहित सी मैं फोन के पास तक गई पर उन अधिकारी महोदय के भय से फोन न कर सकी, जिनका वह फोन था । मैंने यह बात अपनी पुत्री को भी बताई । दूसरे दिन पति का कोई पत्र नहीं मिला । तीसरे दिन एक साथ दो पत्र मिले जिसमें मेरे पति ने अपनी बेचैनी लिखते हुए ठीक उस समय फोन करने की बात लिखी थी जिस समय मैं फोन करने के लिए अत्यधिक और अनायास भाव विह्वल हो गई थी । दूसरे पत्र में उन्होंने फोन न करने पर दुःख व्यक्त किया था । पत्र समय पर नहीं आया, पर अन्तःप्रेरणा किस तरह मन को झकझोर गई यह रहस्य समझ में नहीं आया ।

जीवित आत्माएँ ही नहीं, हमारी अन्तरात्मा पवित्र और उत्कृष्ट हो, अन्तःकरण की आस्था बलवान हो और उसकी पुकार को हम सम्पूर्ण श्रद्धा से सुनने को तैयार हों, तो अन्तर्जगत में निवास करने वाली परमार्थ परायण, पितर और देव आत्माओं द्वारा भी आभास, अनुभूतियाँ अर्जित की जा सकती हैं । अमेरिका के इंजन ड्राइवर होरेस एल. सीवर ने तो अपनी इस पूर्वाभास की विलक्षण क्षमता के कारण "किंग ऑफ दि रोड" की सम्मानास्पद उपाधि पायी थी और उसकी गणना सर्वश्रेष्ठ रेल चालकों में की जाती थी । होरेस के जीवन की दो घटनाएँ इतनी विलक्षण थीं जिन्होंने सैकड़ों अमरीकियों को अतीन्द्रिय सत्ता पर विश्वास करने के लिए बाध्य किया । होरेस धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । आत्मा के अस्तित्व पर उन्हें आस्था थी । भूत-प्रेतों पर वे पूरी तरह विश्वास करते थे । यही नहीं उनकी यह मान्यता भी थी कि, घटनाओं से आगाह कराने का पूर्वाभास भी उन्हें कोई अपने साथ रहने वाली अतीन्द्रिय सत्ता ही कराती है ।

उन दिनों होरेस "बिगफोर" ट्रेन के ड्राइवर थे, जो अमेरिका के कैण्टकी शहर से चलकर इलिनास होती हुई शिकागो पहुँचती है । एक दिन उन्हें एक मिलिट्री रेजीमेंट को शिकागो पहुँचाने का कार्य सौंपा गया । गाड़ी ६० मील प्रति घण्टा की गति से चल रही थी । एकाएक उन्हें लगा कि इंजन कक्ष में किसी की आवाज गूँजी—सावधान ! खतरा है । आगे पुल जला हुआ है । जबर्दस्त विश्वास के साथ होरेस उठ खड़े हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और पूरी शक्ति से गाड़ी रोकने का उपक्रम किया । गाड़ी बीच में ही रुक जाने से परेशान कमाण्डर नीचे आये और गाड़ी रोकने का कारण पूछा तो होरेस ने अपने पूर्वाभास की बात बताई । कमाण्डर बहुत बिगड़ा और गाड़ी स्टार्ट करने का आदेश दिया, किन्तु होरेस ने स्थिति स्पष्ट हुए बिना गाड़ी चलाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया । पता लगाया गया तो बात सच निकली । कमाण्डर ने न केवल क्षमा-याचना की, अपितु हजारों सैनिकों की जीवन-रक्षा के लिए होरेस को हार्दिक धन्यवाद दिया, किन्तु होरेस कृतज्ञतापूर्वक यही कहते रहे, यह तो उस अज्ञात आत्मा की कृपा है जो मुझे ऐसा अनुभव कराती रहती है ।

एक बार तो शिकागो से लौटते समय बड़ी ही विलक्षण घटना घटी, तब एकाएक उन्हें किसी ने कहा सामने इसी पटरी पर दूसरी गाड़ी आ रही है, गाड़ी तुरन्त पीछे लौटाओ । बड़ी कठिन परीक्षा थी, किन्तु अदम्य विश्वास के सहारे पूरी शक्ति और सावधानी से गाड़ी रोक दी और उसकी रफ्तार पीछे को कर दी । गाड़ी में बैठे यात्री चालक की सनक पर झुँझला ही रहे थे कि सामने से धड़-धड़ाता हुआ इंजन इस गाड़ी पर चढ़ बैठा । एक ही दिशा होने और सम्हल जाने के फलस्वरूप किसी भी यात्री को चोट नहीं आयी, मात्र इंजन को मामूली क्षति पहुँची । पीछे सारी बात ज्ञात होने पर यात्री होरेस के प्रति कृतज्ञता से आविर्भूत हो उठे, साथ ही इस विलक्षण पूर्वाभास पर वे आश्चर्य चकित हुए बिना भी न रह सके ।

सन्त सुकरात को भी इसी तरह पूर्वाभास होता था । पूछने पर वे कहते थे—कोई 'डेमन' उनके कान में सब कुछ बता जाता है । होरेस की स्थिति भी ठीक वैसी ही है ।

ऐसी कितनी ही घटनाएँ देखने में आती हैं जिनमें लोगों में अनायास ही अद्‌भुत शक्तियाँ विकसित होती देखी गई हैं, जबकि उन्होंने कुछ भी साधना नहीं की है । यह उनके पूर्व जन्मों के प्रयासों का प्रतिफल है । ऐसे कितने ही अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न विवरण उपलब्ध हैं, जिनमें इस जन्म की कोई विशेष साधनाएँ न होते हुए भी उनके अन्दर आश्चर्यजनक विशेषताएँ पायी गईं ।

हॉलैण्ड की यूट्रेक्ट यूनीवर्सिटी के पैरासाइकोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. विलियम तेनहाफ ने कितने ही अतीन्द्रिय शक्ति का दावा करने वाले लोगों की जाँच करने की दृष्टि से उनके साथ भेंट की है । उनके शोध संग्रह में कितने ही प्रमाणों में सबसे अधिक प्रत्यक्ष उदाहरण यूट्रेक्ट नगर के एक सरल सौम्य नागरिक जेरार्ड क्रोयसेत का है । यह ५६ वर्षीय व्यक्ति अपने बेटे, पोतों के साथ साधारण आजीविका उपार्जन के घरेलू धन्धों में लगा रहता है । दिव्य दर्शन उसका न तो व्यवसाय है और न वह इस क्षेत्र में अपनी कोई शोहरत चाहता है, फिर भी उसमें जो जन्मजात उपलब्धि है, वह लोगों को अचम्भे में डाल देती है और कौतूहलों की दृष्टि से कितने ही लोग उसके छोटे से घर पर जा पहुँचते हैं और तरह-तरह की पूछ-ताछ करते हैं ।

क्रोयसेत की असाधारण क्षमता की ओर इस सन्दर्भ में दिलचस्पी रखने वाले कितने ही शोधकर्त्ता उसके पास पहुँचे हैं । उसने सहज स्वभाव से सबका स्वागत किया है और उस जाँच-पड़ताल में पूरा-पूरा सहयोग दिया है । न केवल हॉलैण्ड के वरन् आस्ट्रिया, फ्राँस, जर्मनी, इटली, स्विट्जरलैण्ड आदि के अतीन्द्रिय विज्ञान के सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल करने वाले लोग उसके पास पहुँचे हैं । विलियम तेनहाफ ने तो उसके सम्बन्ध में क्रमबद्ध खोज की है और उसे सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित भी किया है । उस खोज में कुछ घटनाओं को विशेष महत्त्व दिया गया है ।

६ जनवरी, सन् १९५७ की बात है । यूट्रेक्ट यूनीवर्सिटी में २५ दिन बाद एक लेक्चर होना था । उसके लिए आगन्तुकों की सीटें तो जमा दी गई थीं, पर यह मालूम न था कि कौन दर्शक आयेगा और किस स्थान पर बैठेगा । प्रो. तेनहाफ ने क्रोयसेत को वह लेक्चर हाल दिखाया और अन्य प्रोफेसरों की उपस्थिति में यह पूछा कि क्या आप बता सकते हैं कि नौ नम्बर की सीट पर ३१ जनवरी की मीटिंग में कौन दर्शक बैठेगा ? यह उसके भविष्य ज्ञान सम्बन्धी जानकारी की जाँच के सम्बन्ध में पूछा गया था ।

क्रोयसेत कुछ देर ध्यान मग्न रहे और फिर बताना शुरू किया कि दिहेग नगर की रहने वाली एक अधेड़ महिला वहाँ बैठेगी । उसके हाथ की एक उँगली अभी-अभी डिब्बी खोलते समय कट गई है । वह उस पर पट्टी बाँध रही है । यह महिला एक पशु पालक परिवार में जन्मी है । जब वह छोटी थी तब उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घर में आग लग गई थी और एक कोठे में बँधे कुछ जानवर जल गये थे .....आदि ।

यह सारा विवरण नोट कर लिया गया । वह बात गुप्त रखी गई । नियत तारीख को सचमुच ही उसी विवरण के अनुरूप एक दर्शक महिला वहाँ आ बैठी और उससे पीछे पूछ-ताछ की गई तो उसके सम्बन्ध में बताई गई सभी बातें सच निकलीं ।

क्रोयसेत ने अपराधियों का और चोरियों का पता लगाने में पुलिस की अच्छी मदद की है । एक बार एक बहुमूल्य हीरों का हार चोरी होने की सूचना पुलिस में दर्ज हुई, क्रोयसेत से पूछा तो बताया वह हार चोरी नहीं गया । नाली में गिर पड़ा है और बहते-बहते अमुक स्थान पर जा पहुँचा है । लोग दौड़े और बताये हुए ठीक स्थान पर हार प्राप्त कर लिया गया ।

नार्वे की मोंयराना बस्ती में जा बसे एक डच नागरिक ने टेलीफोन से पूछा उसकी १५ वर्षीय लड़की जोर्ग हाडखेन अचानक लापता हो गई है, क्या आप उसका कुछ पता बता सकते हैं । क्रोयसेत ने टेलीफोन पर ही उत्तर दिया कि वह झरने में डूबी है । लाश को अमुक स्थान पर जाकर निकाल लिया जाय । वह आधी डूबी पड़ी है और आधा भाग ऊपर चमक रहा है । ढूँढ़ने पर ठीक उसी स्थान पर लाश प्राप्त कर ली गई ।

लन्दन के कुख्यात अपराधी जिंजर मार्क को क्रोयसेत की सहायता से पुलिस ने पकड़ा था । ऐसी-ऐसी अनेकों घटनाएँ हैं जिनमें उसकी अतीन्द्रिय शक्ति की यथार्थता का समर्थन किया गया है । उस व्यक्ति को वह क्षमता जन्मजात रूप से प्राप्त है । इसके लिए उसने कोई विशेष साधना आदि नहीं की है । वह भोला व्यक्ति अतीन्द्रिय शक्ति के सिद्धान्तों के बारे में भी अधिक कुछ बता नहीं सकता । केवल जो कुछ वह है उसे प्रकट करने में बिना संकोच अपने को प्रस्तुत करता रहता है ।

अतीन्द्रिय विज्ञान, एक्स्ट्रा सेन्सरी, परसेप्शन, द्वितीय दिव्य दृष्टि, सेकेण्ड साइट, छठी इन्द्रियानुभूति, सिक्सथ सेन्स के नाम से अति मानवी चेतना की चर्चा होती रहती है । ऐसे कितने ही मनुष्य देखे जाते हैं, जिनमें इस प्रकार की विलक्षण क्षमताएँ पायी जाती हैं । उनमें अतीत ज्ञान, भविष्य दर्शन, मनःपाठन, दूरदर्शन आदि कितनी ही विशेषताएँ ऐसी हैं जो हर किसी में तो नहीं होतीं, पर किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों में पायी जाती हैं ।

भूत और भविष्य भी ज्ञात और ज्ञेय

लन्दन में एक ऐसी हत्या हुई, जिसका पता लगाने के लिए पुलिस, सी. आई. डी., कुत्ते सब नियुक्त किए गए पर अपराधी का कोई पता न चला । अपराधी उसी मुहल्ले का एक सम्भ्रान्त व्यक्ति था । उसके बारे में कोई कल्पना तक भी नहीं कर सकता था कि वह कभी अपराध कर सकता है ।

अन्त में प्रसिद्ध भविष्य वक्ता 'क्लेयर वायेण्ट' की मदद ली गई । क्लेयर वायेण्ट जो भी भविष्य वाणियाँ करता है, वह अधिकांश सत्य निकलती हैं । वहाँ के बड़े-बड़े व्यापारी, पुलिस और म्युनिसपेलिटी तक उसकी मदद लेते हैं । क्लेयर वायेण्ट ने अपराधी का पूरा हुलिया और नाम बता दिया । उसके आधार पर अपराधी पकड़ा गया और उसने सारी घटना बड़े रोमांचक ढंग से स्वीकार की । इस घटना से पता चलता है कि संसार में अतिरिक्त सहजानुभूति (एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्सन) मनुष्य जीवन का एक महान सत्य है और वह मनोविज्ञान का ही विषय नहीं वरन् उसे वैज्ञानिक यन्त्रों के विकास द्वारा भी उपलब्ध किया जा सकता है ।

ऐसी सैकड़ों घटनाएँ होती रहती हैं जो इस तथ्य के सैद्धान्तिक पहलू का समर्थन करती हैं । यह घटनाएँ देखकर यह विश्वास होता है कि संसार में कोई ऐसी भी सत्ता या तत्व है जहाँ भूत और भविष्य वर्तमान के दृश्य-पटल की भाँति मिलते हैं । कभी-कभी अनायास दीख जाने वाली घटनाओं की शक्ति को यदि विकसित या नियन्त्रित किया जा सके तो सचमुच मनुष्य त्रिकालदर्शी हो सकता है ।

१६ अगस्त, सन् १९६४ के धर्मयुग के पेज ५० पर दिनकर सोनबलकर का एक संस्करण छपा है । शीर्षक है—'वह स्वप्न और नेहरू अस्थि विसर्जन दिवस पर बच्चियों की जल-समाधि' । इस लेख में भी ऐसी ही एक आश्चर्यजनक घटना का वर्णन है, जिसमें कल होने वाली घटना का पूर्वाभास एक साथ कई लोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को हुआ और उसके बाद वह घटना सचमुच होकर ही रही ।

धर्मयुग में एक और ऐसी घटना छपी है, जो इस विश्वास की पुष्टि करती है कि संसार में एक कोई ऐसा तत्व अवश्य है जिसके अनेक रहस्यमय गुणों में सहजानुभूति का गुण भी है । वह तत्व भूत-भविष्य सबको जानता है ।

तमिल भाषी हिन्दी लेखक श्री टी. एस. कन्नन लिखते हैं—"मेरे भाई विजयकुमार विश्व-यात्रा पर गए थे । एक रात मेरे पिताजी ने स्वप्न में देखा, एक जहाज ऊपर उड़ने को है, उसमें विजयकुमार भी है । जहाज जैसे ही उड़ा, उसमें आग लग गई और वह ध्वस्त होकर भूमिसात हो गया । यह स्वप्न देखने के साथ ही पिताजी के मन में घबराहट बढ़ी और नींद टूट गई । उन्होंने स्वप्न मुझे बताया और बोले—कोई बात अवश्य है । हमने बहुत समझाया कि ऐसे स्वप्न तो आते ही रहते हैं, पर उनकी बैचेनी दूर न हुई । शेष सारी रात प्रार्थना करते रहे—मेरे विजयकुमार का कोई अहित न हो । हे प्रभु ! उसका ध्यान रखना ।"

"दूसरे दिन के समाचार पत्र में एक विमान दुर्घटना ग्रस्त होने का समाचार छपा था, पर उसमें विजयकुमार रहा हो, ऐसी कोई सूचना नहीं थी । चौथे दिन विजयकुमार का पत्र भी आ गया । हमने पिताजी की हँसी उड़ाई, देखो न, आपका स्वप्न झूठा ही था । पिताजी कुछ न बोले । बात आयी-गई हो गई ।"

"विजयकुमार यात्रा से वापस लौटे । मद्रास हवाई अड्डे पर हम उन्हें लेने गए । उनके आते ही यात्रा की कुशल-मंगल पूछी तो उन्होंने कहा और तो सब ठीक रहा पर एक दिन तो सचमुच मुझे भगवान ने ही बचाया । हम लोग घर आ गए तब उन्होंने सारी घटना विस्तार से बताई ।"

"भाई साहब को टूवाण्टी (कनाडा) से न्यूयार्क जाना था । हवाई जहाज बुक हो चुका था । अपने निवास स्थान से वे हवाई अड्डे के लिए निकले तब कुल आधा घण्टा समय शेष था । उसी बीच एक कनाडियन उन्हें जबर्दस्ती पकड़ ले गया और उन्हें एक होटल में उनकी अनिच्छा के बाबजूद कॉफी पिलाई । लगता था वह जान-बूझकर देर करना चाहता है । किसी तरह जल्दी-जल्दी हवाई अड्डे उसने पहुँचाया तो, पर तब तक जहाज छूट चुका था । विजय कनाडियन पर क्रुद्ध हो रहा था तभी लोगों ने देखा कि उस जहाज में एकाएक आग लग गई और एक धड़ाके के साथ वह पृथ्वी पर आ गिरा । उसमें बैठी सभी सवारियाँ जल मरीं । यह घटना सुनकर हम आश्चर्यचकित सोचते रह गए कि पिताजी के स्वप्न में सचमुच सत्य था । भाई साहब को किसी अज्ञात शक्ति ने ही बचाया ।"

स्वप्नों के माध्यम से भविष्य के पूर्वाभास की ये घटनाएँ फ्रायडवादी मनोविज्ञान को जड़-मूल से ही निरस्त कर देती हैं, जिसके अनुसार स्वप्नों का कारण केवल अतृप्त यौनाकांक्षा मात्र है । इतना ही नहीं फ्रायड ने तो मनुष्य की प्रत्येक क्रिया और इच्छा में यौन भावना का आरोपण किया है । उन्हें माँ और बेटे के सम्बन्ध में भी यौनेच्छा का ही नर्तन दिखाई दिया । यही नहीं किसी भी प्रकार के स्वप्नों को उन्होनें यौन भावना का प्रतीक कहा और यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि अतृप्त यौनाकांक्षा किसी भी रूप में—भले ही वह स्वप्न ही हो अपनी पूर्ति कर लेती है । फ्रायड प्रणीत मनोविज्ञान के प्रतिनिधि ग्रन्थ 'ए जनरल इण्ट्रोडक्शन टु साइको एनैलिसिस' में उन्होंने ऐसे कई स्वप्नों का विवरण कर अपना सिद्धान्त प्रतिपादित करने की खींच-तान की है । एक स्वप्न विवरण इस प्रकार है—"स्वप्नद्रष्टा यात्रा करने वाला था और उसका सामान एक गाड़ी में स्टेशन से लाया जा रहा था । उसमें एक-दूसरे पर बहुत से सन्दूक लदे हुए थे और उनमें दो बड़े काले सन्दूक थे । उसने दिलासा देते हुए किसी से कहा, "देखो, वे सिर्फ स्टेशन तक जा रहे हैं ।"

यह स्वप्न कोई विशेष अर्थ लिए नहीं दीखता, पर फ्रायड ने अपनी उक्त पुस्तक में इस स्वप्न की जो व्याख्या की है वह द्रष्टव्य है—"दो काले सन्दूक दो काली स्त्रियों के प्रतीक हैं ।" फ्रायड के अनुयायी ही नहीं आधुनिक मनोविज्ञान के कई पण्डित भी स्वप्नों को अतृप्त वासना की प्रतीकात्मक तृप्ति ही बतलाते हैं ।

भारतीय शास्त्र ग्रन्थ स्वप्नों के सम्बन्ध में जिस धारणा का प्रतिपादन करते हैं, वह अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ अतीन्द्रिय शक्तियों के स्पन्दन, स्फुरण को भी पुष्ट करती है । पुराण ग्रन्थों में स्वप्नों को भविष्य दर्शन की भाषा कह कर कई स्थानों पर उनकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशिष्ट व्याख्या की गई है । इस प्रकार की घटनाओं के कई विवरण भी मिलते हैं, जो स्वप्नों में प्रकट हुई अतीन्द्रिय चेतना का सिद्धान्त पुष्ट करते हैं । भारत ही नहीं विदेशी इतिहासों में भी इस प्रकार की घटनाओं के विवरण मिलते हैं । ढाई हजार साल पहले मिस्र के राजा फैराओ ने एक अद्भूत स्वप्न देखा था, जिसकी व्याख्या करते हुए एक यहूदी बन्दी ने सात वर्ष बाद मिस्र में एक भीषण अकाल पड़ने की भविष्यवाणी कर दी । क्लियोपैट्रा के प्रेमी सीजर और हैनरी तृतीय को अपनी हत्या का पूर्वाभास स्वप्न द्वारा ही हो गया था ।

इन्हें पुरानी घटनाएँ कह कर गप्प भी माना जाता है, परन्तु इसी शताब्दी में स्वप्नों में अतीन्द्रिय चेतना अनुभव के सैकड़ों प्रमाण मिले हैं, जिनकी फ्रायडवादी कोई संगति नहीं बिठा पाये हैं । स्वप्नों में होने वाले भविष्य दर्शन के प्रति भारत ही नहीं विदेशों में भी कई लोग विश्वास करते हैं । कई बार तो सपने इतने आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुए कि सुनने वालों के साथ-साथ स्वप्न दृष्टा को भी हतप्रभ रह जाना पड़ा । अमेरिका की प्रसिद्ध रेडरॉक सोने की खान का पता विनफील्ड स्कॉट स्ट्रेटन को स्वप्न द्वारा ही लगा था । जब वे बेहद आर्थिक तंगी में थे तो एक रात उन्होंने देखा कि बैटिल पर्वत के रेडरॉक क्षेत्र में सोने की खुदाई हो रही है । पहली बार स्ट्रेटन ने कोई गौर नहीं किया पर बार-बार जब सपना दिखाई देने लगा तो उन्होंने अपने एक मित्र से चर्चा की । मित्र ने आरम्भ में हँसी उड़ाई, पर स्ट्रेटन को उस स्वप्न का इतना विश्वास हो गया था कि वे जबर्दस्ती अपने मित्र को वहाँ खींच कर ले गए तथा खुदाई करने लगे । कुछ ही गहरा खोदने पर उन्हें सोने का एक टुकड़ा दिखाई दिया । मित्र को अब विश्वास हो गया । उस सोने के टुकड़े को बेचकर दोनों ने वह जमीन खरीद ली और खुदाई द्वारा प्राप्त सोने से अरबपति हो गये ।

इसी प्रकार एक घटना ८ मार्च, १९४६ की है । लॉर्ड किलब्रेफन तब पढ़ते थे । एक रात उन्होंने सपने में देखा कि वे कोई समाचार पढ़ रहे हैं । समाचार अगले दिन का अर्थात् १० मार्च का था । रह-रह कर उन्हें इस अंक में दो घोड़ों के नाम दिखाई दिए जो रेस में जीते थे । किलब्रेफन रेस के न आदी थे और न ही उन्हें इसका शौक था । इस सपने के सम्बन्ध में उन्होंने अपने कई मित्रों को बताया जो घोड़ों पर दाव लगाया करते थे । मजाक उड़ाते हुए मित्रों ने किलब्रेफन से कहा—"यदि तुम्हें अपने सपनों पर इतना विश्वास है तो खुद ही बिन्दल और जिलादीन पर दाव क्यों नहीं लगा देते ।" ये नाम उन घोड़ों के थे जो कि उन्होंने रात सपने में देखे थे । न जाने किस शक्ति से प्रेरित होकर किलब्रेफन ने रेस खेली और एक बड़ी रकम जीती । जिसने उनकी आर्थिक स्थिति का ही काया पलट कर दिया ।

स्वप्नों के माध्यम से सम्भावित खतरों का आभास भी हो जाता है । यदि उन्हें समझने की क्षमता हो तो सचमुच यह संयोग एक वरदान बन सकता है । लिंकन की हत्या का सपना उनकी पत्नी ने एक दिन पहले ही देखा था । इसी प्रकार फ्रान्स के एक प्रोफेसर चार्ल्स लन्दन में अपने मित्र के यहाँ कुछ दिनों के लिए ठहरे । एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि एक व्यक्ति ने लम्बे चाकू से शयन कक्ष में उनके मित्र की हत्या कर दी है । स्वप्न इतना स्पष्ट और प्रभावशाली था कि उन्हें स्वप्न के हत्यारे का हुलिया भी हू-बहू याद रहा । सुबह चार्ल्स ने अपने मित्र को इस स्वप्न के सम्बन्ध में बताया और उस व्यक्ति का हुलिया भी । हुलिया मित्र के माली से एकदम मिलता था जो दस वर्ष से उनके यहाँ नौकरी कर रहा था । चार्ल्स ने माली को निकाल देने की सिफारिश की । उस समय तो उसे नहीं हटाया पर चार्ल्स जब बिदा हुए तो उसे हटाना पड़ा क्योंकि एक रात सचमुच उसने अपने मालिक पर शयन कक्ष में उसी प्रकार हमला बोल दिया था जिस प्रकार का स्वप्न कि चार्ल्स ने देखा था ।

अपने प्रिय परिजनों के लिए ही नहीं स्वयं के लिए भी सम्भावित खतरों का आभास स्वप्नों के माध्यम से मिलता देखा गया है । फरवरी ५३ में एक रात कार्लीमेपल्स ने सपना देखा कि वह अगले दिन किसी दुर्घटना का शिकार हो गया है । इन सब बातों को ढकोसला मानने के कारण उसने कोई ध्यान नहीं दिया, पर सचमुच अगले दिन वह मोटर साइकिल समेत सड़क की एक रपट पर फिसल गया, इस दुर्घटना में उसे प्राणान्तक चोटें आयीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ब्रिटेन की एक महिला ट्रटिन ने बार-बार यह सपना देखा कि कोई अजनवी उसके घर में घुस आया है और चीजों को उलट-पलट रहा है । ट्रटिन के सामने पड़ जाने पर उसे डरा धमका कर अजनवी एक मोटी रकम माँगता है । जिसे वह देने से इन्कार करती है । इस पर अजनवी उसे गोली मार देता है । कई रात तक यह सपना देखने के बाद उसे न जाने क्यों सपने के सच्चाई पर विश्वास हो गया और पुलिस से मदद माँगी । सपने के आधार पर पुलिस सहायता देने को तैयार नहीं हुई तो ट्रटिन ने अपनी निजी व्यवस्थाएँ कर लीं और सम्भावित खतरे का मुकाबला करने की पूर्ण तैयारियाँ भी । एक दिन जब वह अपने मकान में अकेली थी पास वाले कमरे में किसी के चलने-फिरने की आहट सुनाई दी । चुपके से ट्रटिन ने झाँका, आगन्तुक अजनवी था और कुछ तलाश कर रहा था । उसका हुलिया भी सपने में दिखाई देने वाले अजनवी की तरह था । बस, ट्रटिन ने हल्ला-गुल्ला मचा कर पड़ोसियों को इकट्ठा कर लिया और उस अजनवी को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया । सचमुच ही उसके पास एक रिवाल्वर भी मिला ।

किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी स्वप्नों द्वारा पूर्व संकेत मिलने के उदाहरण सामने आये हैं । जिन व्यक्तियों के प्रति हम अपने हृदय में आन्तरिक सम्मान रखते हैं, उनसे एक सूक्ष्म आत्मिक सम्बन्ध भी बन जाता है, भले ही उनके लिए हम अपरिचित हों । इंग्लैण्ड के एक सामान्य नागरिक जान विलियम्स को तत्काली वित्तमन्त्री पर्सीवल के प्रति इसी स्तर की आत्मिक घनिष्ठता थी । एक बार जॉन ने स्वप्न में देखा कि पार्लियामेण्ट में कुछ लोग पर्सीवल की हत्या कर रहे हैं । यह भी कि पर्सीवल सफेद ड्रेस में है और उनकी हत्या करने वालों का हुलिया भी अच्छी तरह दिखाई देता है ।

इस सपने का उल्लेख जॉन ने पार्लियामेण्ट में कुछ सदस्यों से किया । सुरक्षा अधिकारियों को भी इस सम्बन्ध में बताया, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया । लेकिन कुछ ही दिनों बाद पार्लियामेण्ट भवन में ही पर्सीवल की हत्या कर दी गई । पर्सीवल ने उस समय सफेद रंग के कपड़े ही पहन रखे थे । इतना ही नहीं जब हत्यारों को गिरफ्तार किया गया तो जॉन ने बताया कि इन्हीं लोगों को वह स्वप्न में हत्या करते देखता रहा है । बाद में जॉन को स्वप्न के आधार पर हत्या का गवाह भी बनाया गया ।

यह जानकर तो और आश्चर्य होता है कि स्वप्नों के आधार पर अपराधियों की धर पकड़ भी की गई है । रोम में की गई एक हत्या का सुराग मृतक की पत्नी द्वारा देखे गए सपने के आधार पर मिला । बताया जाता है कि मृतक की पत्नी एमीलिया ने ही सर्वप्रथम पुलिस को यह सूचना दी कि उसके पति की हत्या की गई है—जबकि उसके पति रूसो का शव एक दुर्घटनाग्रस्त क्षत-विक्षत कार में पाया गया था । जिसके सम्बन्ध में यह मान लिया गया था कि रूसो की मृत्यु कार दुर्घटना के कारण हुई है । जब पोस्ट मार्टम हुआ तब पता चला कि मृत्यु दुर्घटना से पहले ही हो चुकी है और मृत्यु का कारण दुर्घटना नहीं एक तीव्र जहर है जो शराब में मिला कर पिलाया गया है ।

एमीलिया ने स्वप्न में अपने पति का शव देखा था और उस पर बैठी हुई एक स्त्री भी जिसने हत्या की थी । इस स्त्री के सम्बन्ध में एमीलिया तो कुछ भी नहीं जानती पर वह उसके पति को फाँसने वाली एक चालाक औरत थी, जिसने एक लम्बी रकम ऐंठने के बाद रूसो की हत्या कर दी थी । लिसा और उसके सहयोगी भारि को गिरफ्तार कर लिया गया जिन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया । एमीलिया ने लिसा को देखते ही पहचान लिया और कहा कि यही है वह औरत जिसे मैंने स्प्न में अपने पति के शव पर बैठा देखा है । मैं इस रात वाली इसकी कुटिल मुस्कान को तो जिन्दगी भर नहीं भूल सकूँगी ।

लिसा के सहयोगी भारि ने अपने बयान में एक विस्मयजनक बात कही कि जब वह और लिसा रूसो की लाश को खोह में छोड़कर बाहर आ रहे थे, तो उन्हें लगा कि खोह में उन दोनों के अलावा कोई तीसरा व्यक्ति भी मौजूद है । यह अनुभूति बहुत तीव्र थी । मैंने लिसा को बार-बार बताया भी कि कोई हमारा पीछा कर रहा है । इस घटना में प्रेम सम्बन्धों की प्रगाढ़ता से व्यक्तियों के घनिष्ठ और सूक्ष्म आन्तरिक सम्पर्क सूत्रों की प्रतीति होती है, जिसे भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व सिद्ध कर दिखाया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब इस प्रश्न का उत्तर आसानी से खोजा जा सकता है कि, स्वप्न क्या केवल यौनेच्छाओं की प्रतीकात्मक तृप्ति का साधन है या और भी कुछ ? यह तो ठीक है कि व्यक्ति अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति स्वप्नों के माध्यम से भी करता है, पर उसमें केवल यौन जीवन का सम्बन्ध नहीं है । स्वप्नों के माध्यम से भविष्य के संकेत भी प्राप्त किये जा सकते हैं । इस विद्या में प्राचीन ऋषियों ने काफी प्रगति भी की है ।

परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि सभी स्वप्न अनागत के संकेत या पूर्व सूचक होते हैं । इस सम्बन्ध में जानकार व्यक्तियों का अभिमत है कि भविष्य की पूर्व सूचना देने वाले स्वप्न बहुत स्पष्ट, शृंखलाबद्ध और क्रमागत होते हैं । प्रायः हम सभी स्वप्न भूल जाया करते हैं, कुछेक दो-चार दिन तक याद भी रहते हैं, पर ऐसे स्वप्न पूरे व्यक्तित्व को झखझोर देने वाले, बहुत दिनों तक प्रभावित करने तथा आजीवन अविस्मरणीय रहते हैं ।

सपनों के झरोखे से

प्रायः स्वप्नों में अपने या अपने सम्बन्धी स्वजनों के सम्बन्ध में ही पूर्वाभास होते हैं । हर किसी के बारे में सपने आते हैं । इसका कारण सम्बन्धितजनों के प्रति घनिष्ठता का भाव ही कहा जाता है । सामान्य जीवन में भी आत्मिक घनिष्ठता का बहुत महत्त्व और मूल्य है । उसके आधार पर छोटे-बड़े आदान-प्रदानों का क्रम चलता रहता है । परायेपन का भाव आने और स्नेह सहयोग का आधार झीना रहने पर अन्यमनस्कता बनी रहती है, पर जब घनिष्ठता का संचार होता है तो व्यक्तियों का न केवल सहयोग ही प्रखर होता है वरन् आन्तरिक एकता भी सघन होती चली जाती है । इसकी प्रतिक्रिया दोनों पक्षों के लिए हितकारक बनती है । व्यावहारिक जीवन में मित्रता के लाभों से सभी परिचित हैं ।

सूक्ष्म जीवन में यह घनिष्ठता मरण काल का आभास आत्मीय जनों के सामने अदृश्य सूचना के रूप में जा पहुँचती है । कितने ही प्रसंग ऐसे हैं जिनमें एक मित्र या सम्बन्धी की मृत्यु होने पर उसकी सूचना द्वारा दूसरे पक्ष को जानकारी मिली है । कई बार तो यह सूचना स्वप्नों के माध्यम से मिलती है और कई बार ऐसे ही चौंका देने वाली विकलता के रूप में उभरती है । कई बार ऐसे आभास मिलते हैं कि मृतक की आत्मा स्वयं अपने मरण की सूचना देने और अन्तिम बार मिलने के उद्देश्य से सूक्ष्म शरीर में समीप आई है । ऐसे अनेकों प्रसंग हैं जिन्हें विश्वस्त एवं प्रामाणिक ही कहा जा सकता है ।

स्वप्नों के सम्बन्ध में सोचा जाता है कि किसी पूर्व सम्भावना का दृश्य प्रत्यक्ष बन कर दीख सकता है, पर जब उस प्रकार की कोई कल्पना तक न हो तो उसे क्या कहा जाय ? अति वृद्ध, अशक्त, बीमारी से ग्रसित युद्ध क्षेत्र में लड़ने अथवा ऐसी ही किसी विपन्न स्थिति में पड़े हुए व्यक्ति के सम्बन्ध में मृत्यु सम्भावना का कल्पना क्षेत्र का स्थान हो सकता है और उस स्तर के स्वप्न दीख सकते हैं, किन्तु जो पूर्ण स्वस्थ एवं भली चंगी स्थिति में हैं उनके आकस्मिक निधन की सम्भावना किस की कल्पना में होगी और कोई, क्यों उस प्रकार के स्वप्न देखेगा ।

आकस्मिक मृत्यु की सूचना बिना किसी संचार साधन के जब स्वप्न सम्बन्धियों को मिलती है तो उससे आत्मा के अस्तित्व और सूक्ष्म जगत में घटित होने वाली हलचलों का सूक्ष्म रूप से प्रमाण मिल जाता है ।. घनिष्ठता स्नेह सूत्र में बँधे हुए लोगों के साथ किसी विशेष उत्तेजना के समय विशेष रूप से प्रभावित करती है । इस तथ्य को हम मृत्यु की अदृश्य सूचनाओं को विश्लेषण करते हुए सहज ही जान सकते हैं । ऐसी घटनाएँ एक नहीं अनेक हैं और ऐसी हैं, जिन्हें किम्वदन्ती नहीं, प्रामाणिकता की कसौटी पर खरा मानने में कोई अड़चन नहीं पड़ती ।

ऐसी अनुभूतियाँ प्रायः स्वप्नावस्था अथवा अर्ध निद्रा की स्थिति में होती हैं । गहरी नींद को सुषुप्ति कहते हैं । वह इतनी प्रगाढ़ होती है कि उसमें मस्तिष्कीय तन्तु प्रायः पूरी तरह निश्चेष्ट हो जाते हैं । उस स्थिति में कोई स्वप्न नहीं आता । तन्द्रावस्था में अन्तर्मन सक्रिय रहता है और यदि उसमें सूक्ष्म जगत से सम्पर्क बना सकने लायक सम्वेदना हुई तो रहस्यमय अदृश्य घटना चक्रों को समझने और पकड़ने में समर्थ हो जाता है । कभी-कभी मृत्यु जैसी घटनाएँ अपने आप में इतनी प्रबल होती हैं कि वे सामान्य स्तर के व्यक्तियों को भी आत्मीयता का सूत्र जुड़ा रहने के कारण प्रभावित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती हैं और उन्हें उस प्रकार की सम्भावना का स्वप्न में आभास देती हैं ।

नैपोलियन जिस दिन मरा, उसी दिन सैकड़ों मील दूर अपनी माँ से मिलने पहुँचा । माँ ने यही समझा कि वह सहसा मिलने आ गया है । मृत्यु की तब तक कोई सूचना मिलने का प्रश्न भी तो नहीं था । नैपोलियन माँ के पास पहुँच कर बोला—"माँ ! अभी ही झंझटों से मुक्त हो पाया हूँ ।" अन्य तीन व्यक्तियों ने भी उसे देखा । बाद में पता चला, नैपोलियन की उसी समय मृत्यु हुई थी ।

कवि बायरन ने भी ऐसी अनेक अनुभूत घटनाओं का वर्णन किया है । उनमें से एक यह है—

"एक ब्रिटिश कैप्टिन किड गहरी नींद में सो रहे थे । सहसा उन्हें लगा—बिस्तर पर कोई भारी बोझ है । आँखें खोली तो देखा, सुदूर वेस्टइण्डीज में नौकरी कर रहा भाई बिस्तर पर बैठा है । उसका उस समय वहाँ होना असम्भव था । किड ने सोचा—सपना है और आँख मूँदली । थोड़ी देर बाद फिर देखा—भाई अभी भी वहीं है । तब भाई की ओर हाथ बढ़ाया । उसका कोट पानी से तर था । हड़बड़ा कर वे उठे । कुछ देर में भाई गायब हो गया । बाद में पता चला उसी भाई की पानी में डूब जाने से वेस्टइण्डीज में ही मृत्यु हो गई थी ।"

फिल्म तारिका ओलिविया एक शाम को कुछ उदास थी । अपने एक मित्र के यहाँ से काम के बाद पैदल ही टहलती घर की ओर चल पड़ी । घर के पास वह पहुँची तो लगा—उसकी बाँह के नीचे कोई हाथ है और साथ का व्यक्ति धीरे-धीरे एक गीत गुनगुना रहा है । वह बेहद थकी थी । स्वर व स्पर्श परिचित था । अतः मान लिया कि उसका वह मित्र अभी ही बाहर से आया होगा । घर आने पर यह जानकर कि मैं अमुक जगह काम पर गई हूँ, वहाँ पहुँचा होगा । फिर वहाँ पता चला होगा कि मैं अभी-अभी पैदल ही घर चल दी हूँ, तो राह में आ पकड़ा है । यह उसकी आदत थी । ओलिविया को स्वाभाविक ही खुशी हुई । वह चलती रही, फिर स्वयं भी उसके साथ गुनगुनाने लगी । जब घर के दरवाजे पर पहुँची तो उसने कहा—"गुडनाइट" और जाकर सो गई । सोचा—मित्र भी घर गया ।

सुबह नाश्ते के समय अखबार पलट रही थी, तो अन्दर के पृष्ठ पर एक खबर छपी थी कि ओलिविया का वह मित्र एक दिन पूर्व दोपहर को मार डाला गया है ।

कैप्टिन फ्रेडरिक प्रथम बर्मा के युद्ध में एक जहाज में कमाण्डर ऑफीसर के नाते ड्यूटी पर थे । एक रात सहसा उन्होंने एक व्यक्ति को अपने कैबिन में घुसते देखा । वे सतर्क हो गए और उस पर आक्रमण करना ही चाहते थे कि चाँदनी के प्रकाश में उन्होंने स्पष्ट पहचाना—उनका भाई । वे चौंक पड़े । भाई और पास आया । बोला—'फ्रेड, मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि मैं मर चुका हूँ ।' फ्रेड सभी घटनाओं का ब्यौरा लिख रखते थे । अतः इस घटना का भी समय व विवरण लिख लिया । इंग्लैण्ड लौटे तो पता चला, उसी घटना वाले दिन, ठीक उसी समय उनके भाई की मृत्यु हुई थी ।

क्वीन्स टाउन की श्रीमती काक्स का अनुभव भी दिलचस्प है । जब वे मायके में थीं, उनका भाई जो कि नेवी में अफसर था और हाँगकाँग में तैनात था, अपने छोटे बच्चे को उन्हीं की देखभाल में छोड़ गया था । एक रात जब वे नित्य की भाँति उस भतीजे को कमरे में सुलाकर अपने कमरे आयीं, तो थोड़ी ही देर बाद वह बालक भाग आया और डरी-डरी आवाज में बताया—आँटी ! मैंने अभी-अभी पिताजी को अपने बिस्तर के पास चलते हुए देखा । श्रीमती काक्स ने समझाया कि तूने सपना देखा होगा । बच्चा डरा था, अतः अपने कमरे में नहीं गया । कुछ समय बाद श्रीमती काक्स भी लेट गईं । लेटने के थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा·····उनके भाई अँगीठी के पास कुर्सी पर बैठे हैं । उनके चेहरे पर पीलापन है । वे चौंक पड़ीं । बाद में वह छाया गायब हो गई । कुछ दिनों बाद पता चला कि उक्त घटना के कुछ घण्टों पहले श्रीमती काक्स के भाई की हाँगकाँग में आकस्मिक मृत्यु हो गई थी ।

रूसी बैले नर्तक श्री सर्जेक्रेस की १९१९ में एक ड्रामे हेतु रिहर्सल करके लौटे और भोजन के पश्चात थकान दूर करने बिस्तर पर लेट गये । रात के पहले चरण में ही सर्जे ने स्वप्न देखा कि वृक्ष के नीचे क्रिसमस त्यौहार मनाया जा रहा है । वहाँ एक नाटक मन्च सजा है जिस पर 'इन्फाण्टा' संगीत नाटिका दिखाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने वाली है । अचानक पेड़ पर से जलती हुई मोमबत्ती मन्च पर गिरी और प्रोड्यूसर एडाल्फवाम मन्च के पीछे भागते नजर आये और उस स्थान पर सुन्दर सफेद फूलों का ढेर लगा हुआ है । इतना देख कर सर्जे की नींद भंग हो गई और सचमुच ही वह आयोजन, जिसके लिए सर्जे रिहर्सल करके लौटे थे, क्रिसमस के दो दिन पूर्व ही हुआ और तैयारी के बीच में ही सूचना मिली कि संचालक मौत का शिकार हो गया और सर्जे ने अपनी आँखों से पुनः स्वप्न वाले सफेद फूल मृतात्मा की श्रद्धांजलि के रूप में देखे ।

अर्थों का सामंजस्य न बिठाये जा सकने वाला एक स्वप्न २७ नवम्बर, १९१७ को अमेरिका के डॉ. बाल्टर फ्रैकलिन प्रिंस को आया । उन्होंने देखा स्वप्न में एक महिला ने आकर उनके हाथ में एक पर्चा दिया जिसमें लिखा था "पत्र वाहिका को सजाये मौत दी जाय ।" लाल स्याही से लिखी इस बात को पढ़कर उन्होंने उस महिला को बड़े ध्यान से निहारा, इसी बीच महिला ने उनका हाथ पकड़ कर जोर से दबा दिया । प्रिंस को ऐसा अनुभव हुआ कि महिला ने उनके दूसरे हाथ की अँगुलियाँ दाँतों से चबा डालीं और ऐसा करते ही उस महिला का सिर धड़ से अलग होकर गिर गया । यह स्वप्न प्रिंस के मन-मस्तिष्क पर हावी रहा । उन्होंने यह स्वप्न अमेरिका परामनोविज्ञान शोध समिति की सदस्या किसटवी को सुनाया तो उन्होंने भी नोट भर कर लिया और अधिक कर भी क्या सकती थीं वे, पर सुवह के समाचार-पत्र में एक २७ वर्षीय महिला द्वारा रेल की पटरी पर लेटकर आत्महत्या करने का समाचार देखा, उसका हैण्ड बैग उसका नाम 'सारा-हैण्ड' बता रहा था । डॉ. प्रिंस ने शव देखा तो वह स्वप्न वाली महिला का ही था । तब उन्हें 'हैण्ड' माने हाथ को दाँत से काटना, सिर धड़ से अलग होना ये सारे सन्दर्भ जुड़ते नजर आये ।

अमेरिका के उच्च सैनिक अधिकारी कर्नल गार्डिनर की पुत्री 'जूलिमा' और जल सेना के तत्कालीन सेक्रेटरी श्री थामस डब्ल्यू. गिलमर की पत्नी 'ऐनी' दोनों ने २७ फरवरी, १८४४ को स्वप्न में अपने-अपने पतियों की मृत्यु को देखा तो दूसरे ही दिन २८ फरवरी को वाशिंगटन में होने वाले राष्ट्रीय उत्सव में जाने से अपने-अपने पतियों को रोका, पर वे गये ही और उत्सव में प्रदर्शन होने वाली दो तोपों के बैरेल में ही गोले फट जाने से उन दोनों की मृत्यु हो गई ।

'जूलिमा' सौ मील दूर बैठे अपने पति की स्थिति से अवगत (स्वप्न में) होने का दावा करतीं । एक स्वप्न में उन्होंने अपने नवविवाहित पति प्रेसीडेण्ट-टेलर का पीला चेहरा देखा—तब वे रिचमाण्ड में थे । स्वप्न में वे हाथ में टाई और कमीज लिए कह उठे "मेरा सिर थामलो" । स्वप्न टूटा पर घबराई हुई जूलिमा सुवह ही रिचमाण्ड के लिए रवाना हो गई और प्रेसीडेण्ट टेलर को सकुशल पाया, पर जहाँ वे ठहरे थे उस होटल में दुर्घटना के कारण एक मृत्यु का ठीक वही दृश्य था ।

श्रद्धायुक्त, स्वच्छ, पवित्र मन वाले उपासक आत्मचिंतन करते हुए सार्थक स्वप्न देख मानव कल्याण का हेतु बन सकते हैं ।

इंग्लैण्ड की एक १२ वर्षीय बालिका जेनी को भी सत्यसूचक स्वप्न आते थे । पहले तो उस पर कोई विश्वास न करता, किन्तु २९ जनवरी, १८९८ के दिन उसके पिता कप्तान स्मूइट एक जहाज पर कोयला लाद कर विदेश चल दिए । एक रात सहसा बालिका चीख पड़ी । कारण पूछने पर उसने बताया—पिताजी का जहाज डूब गया है, पर उन्हें एक अन्य जहाज ने बचा लिया है । माँ ने डाँटकर जेनी को चुप कर दिया, पर २५ फरवरी को लौटकर स्मूइट ने जो कुछ बतलाया वह जेनी के स्वप्न के अनुसार पूरी तरह घटित हुआ था । सभी विस्मित रह गए ।

वर्तमान के घटनाक्रमों का स्वप्न में दिखाई पड़ना इस आधार पर सही समझा जा सकता है कि सूक्ष्म जगत में हो रही हलचलें एक स्थान से दूसरे स्थान तक रेडियो तरंगों की तरह जा सकती हैं और बिना संचार साधनों के भी, उनका परिचय मिल सकता है, पर आश्चर्य तब होता है जब भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का बहुत समय पहले ही आभास मिल जाता है । ऐसे स्वप्नों की भी कमी नहीं जिनमें मृत्यु अथवा अन्य प्रकार के पूर्व संकेत स्वप्न में मिले हैं और वे सही सिद्ध होकर रहे हैं ।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने रात को एक स्वप्न देखा कि उन्हें रोने की बहुत सी आवाजें सुनाई पड़ती हैं । वे बिस्तर से उठ कर ह्वाइट हाउस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के कमरों में चक्कर लगाकर इन रोने की आवाजों का कारण तलाश करते हैं । एक कमरे में वे एक लाश कफन से ढकी हुई देखते हैं और वहीं कुछ सिपाही खड़े पाते हैं । वहाँ बहुत से लोग रो रहे हैं । सपने में ही लिंकन एक सिपाही से पूँछते हैं—कौन मरा ? सिपाही कहता है राष्ट्रपति लिंकन की हत्या गोली मारकर करदी गई है । यह उन्हीं की लाश पड़ी है ।

लिंकन ने सपना अपने परिचितों को सुनाया । चार दिन बाद ही वह स्वप्न सच हो गया । जब वे वाशिंगटन के फोर्ड थियेटर में नाटक देख रहे थे तो एक अभिनेता ने उनकी गोली मार कर हत्या करदी ।

अमेरिका ने एक नागरिक एलन बेधन ने एक रात स्वप्न देखा कि तत्कालीन राष्ट्रपति रॉबर्ट केनैडी एक भीड़ के साथ किसी पार्टी में जा रहे हैं । रास्ते में विरोधी दल का एक सदस्य उन्हें गोली मार देता है और राष्ट्रपति की मृत्यु हो जाती है ।

एलन ने अपना सपना 'स्वप्न अनुसन्धान संस्था' के रजिस्टरों में नोट करा दिया और अनुरोध किया कि वे इस सपने की बात राष्ट्रपति तक पहुँचा दें । इसके एक सप्ताह बाद सचमुच वह सपना सत्य हो गया और राष्ट्रपति गोली से मारे गये ।

एक दिन एक आस्थावान छात्र अपने नास्तिक प्रोफेसर फ्रान्ज मेमर के पास प्रातःकाल ही पहुँच गया और बोला—सर ! आज बहस करने नहीं, प्रमाण लेकर आया हूँ । जेना विश्वविद्यालय के ये प्रोफेसर एवं छात्र प्रायः आस्तिकता वाद पर विवाद करते रहते, पर बिना प्रमाण प्रोफेसर महोदय मानने को तैयार नहीं होते । छात्र ने कहना प्रारम्भ किया—आज रात मैंने एक स्वप्न देखा है किन्तु आपको बताऊँगा नहीं । मात्र इतना बताता हूँ कि मेरी मृत्यु शीघ्र ही हो जायेगी । प्रसंग यहीं समाप्त हो गया । घटना घटित होने तक के क्षणों तक के लिए और हफ्ते भर बाद ही सोमवार को वह छात्र बीमार पड़ा और तीसरे दिन तक उसका काम ही हो गया । प्रोफेसर महोदय आतुर मन लिए अन्त्येष्टि समाप्त होते ही छात्र के घर पहुँचे और उस दिन छात्र द्वारा मत्यु के बाद बक्सा खोलकर देखने के लिए दिए संकेतानुसार बक्सा खोल कर उस दिन के स्वप्न का लिखित वृतान्त पढ़ा । लिखा था—"तारीख १७ दिन वृहस्पतिवार को प्रातः काल पाँच बजे मेरी मृत्यु हो जायेगी । मुझे अमुक स्थान पर दफनाया जायेगा । जब मुझे दफनाया जा रहा होगा तब मेरे माता-पिता आयेंगे और मुझे एक बार फिर बाहर रखकर देखेंगे । इसके बाद मुझे दफना दिया जायेगा ।" प्रोफेसर महोदय के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । लिखित विवरण के अनुसार ही सारा नाटक आँखों से देख कर अन्ततोगत्वा उन्हें उस सत्ता को स्वीकार करना पड़ा उस सत्ता को जिसे हठ वश उपेक्षित किया जाता है ।

अबोहर (पंजाब) से छपने वाले पत्र 'दीपक' में ७ अगस्त, १९३९ के अंक में एक घटना छपी कि लुधियाना के पुराना बाजार में एक ब्राह्मण के यहाँ झीवर नौकरी करता और प्रतिदिन पूजन के लिए विल्व-पत्र तोड़ लाता । उसने एक दिन स्वप्न देखा कि वह विल्व-पत्र तोड़ने पेड़ पर चढ़ा तो नीचे खड़ा हुआ भैंसा कह रहा है कि तुम नीचे उतरे और मैंने तुम्हें मार डाला । यह बात उसने गाँव वालों को सुनाई पर किसी ने उस स्वप्न को महत्त्व नहीं दिया, किन्तु सचमुच ही जब वह दूसरे दिन प्रातःकाल विल्व-पत्र तोड़ने पेड़ पर चढ़ा तो एक क्रोधित भैंसा पेड़ के नीचे आ धमका । उसे देख वह भयभीत हो नीचे गिर पड़ा और मर गया ।

एक रात हरफोर्ड के आर्क विशप की पत्नी ने स्वप्न देखा कि एक सुअर उनकी डाइनिंग टेबिल पर भोजन कर रहा है । प्रातःकाल यह बात विशप से कही गई तो वे हँस कर रह गए, पर वास्तव में जब पति-पत्नी गिरजाघर से प्रार्थना करके लौटे तो देखा कि पड़ौसी का पालतू सुअर किसी प्रकार उनके घर में घुस आया है और भोजन की टेबिल पर सवार है । पति-पत्नी के लिए नौकर द्वारा लगाया गया नाश्ता उनके पहुँचने तक सुअर साफ कर चुका था ।

एक दुर्घटना की पूर्व सूचना, दुर्घटना तथा दुर्घटना हो जाने के निश्चित समाचार लगातार एक ही स्वप्न के तीन बार आने के रूप में मैनचेस्टर की ही एक स्त्री का अनूठा अनुभव है । तीनों बार स्वप्न में उसने देखा कि उसकी लड़की की मृत्यु मोटर-दुर्घटना से हो गई है और प्रातःकाल सचमुच ही समाचार आ गया कि उसकी लड़की मोटर दुर्घटना में समाप्त हो गई है । एक ही स्वप्न की तीन बार पुनरावृत्ति के द्वारा पहिले दुर्घटना के भविष्य की रचना, दूसरी बार दुर्घटना एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीसरी बार दुर्घटना हो चुकने के समाचार से अवगत कराया गया ।

स्वयं डॉ. फ्राइड ने अपनी पुस्तक 'इण्टरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम' में एक अनूठी घटना से सम्बन्धित स्वप्न के सम्बन्ध में लिखा कि—

"मेरे शहर में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के पुत्र का देहावसान हो गया । रात्रि में अन्त्येष्टि सम्भव न होने से प्रातःकाल करने का निर्णय कर शव के चारों ओर मोमबत्ती जला एक पहरेदार छोड़ मृतक का पिता अपने कमरे में जा सोया । नींद लगे थोड़ा ही समय हुआ होगा कि स्वप्न में उनका लड़का उनके सामने खड़ा हो कह रहा है कि मेरी लाश यहीं जल जाने दोगे । यह स्वप्न देखते ही उसकी नींद टूटी और उसने झाँककर देखा तो लाश वाले कमरे में प्रकाश हो रहा था । वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पहरेदार सो गया है और मोमबत्ती गिर जाने से कफन में आग लगने से लाश ही क्या यदि विलम्ब हो जाता तो मकान ही जल जाता ।

इस स्वप्न से फ्राइड को यह स्वीकार करना पड़ा कि स्वप्न जगत को दृश्य जगत एवं स्थूल वासनाजन्य कल्पनाओं तक सीमित करना भूल ही होगी । हाँ अक्षरशः सत्य निकलने वाले स्वप्नों की तह तक हम अवश्य ही नहीं पहुँच पाते ।

भूतकाल में हुई घटनाओं के आभास भी कई बार स्वप्नों में मिलते हैं । इस सन्दर्भ में यह समझा जा सकता है कि जिस प्रकार मस्तिष्क में भूतकाल की स्मृतियाँ प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती हैं और जब कभी अवसर आता है, तब वे उभर कर सामने आ जाती हैं । इसी प्रकार सूक्ष्म जगत में भूतकाल की घटना अपना अस्तित्व बनाये विचरण करती रहती होंगी और जब जहाँ उनका सम्पर्क बनता होगा वहाँ स्वप्न अथवा आभास रूप में जिस-तिस को उनका अनुभव हो जाता होगा ।

पर मनोविज्ञान की वर्तमान खोजों में इस प्रकार के हजारों प्रमाण बहुत छान-बीन के बाद एकत्रित किए हैं और विशेषज्ञों ने तथ्यों का कारण समझ सकने में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए भी इतना तो स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि जिन सूत्रों से इन घटनाओं का संकलन पूरी छान-बीन के साथ किया गया है उनमें अतिशयोक्ति एवं किम्वदन्तियों का अंश कदाचित ही कहीं रहा होगा अन्यथा वे विश्वस्त भी हैं और प्रमाणिक भी ।

मैनचेस्टर की घटना है । एक पिता ने अपने दो पुत्रों को एक खण्डहर मकान में ले जाकर मार डाला और जलाकर हड्डियाँ गड्ढे में गाड़ दीं और पुलिस मैनचेस्टर के इस दम्पत्ति के साथ सम्वेदना व्यक्त करते हुए लड़कों की खोज करती रही, पर पता न लग सका । एक रात चिन्तित माता को स्वप्न आया जिसमें उसने देखा कि उसके पति महाशय अपने दोनों लड़कों को साथ लेकर एक खण्डहर मकान में घुसे और उनको मौत के घाट उतार दिया । यह निर्मम दृश्य देख माँ का हृदय चीत्कार कर उठा और नींद भंग हो गई । उसने स्वप्न का सन्दर्भ देते पुलिस में रिपोर्ट की पर पुलिस बिना प्रमाण मानने को तैयार नहीं हुई । उसने कहा, मैंने उस जगह स्वप्न में 'चेस्टर सिटी' लिखा देखा था । यदि मुझे चेस्टर सिटी ले लाया जा सके, तो मैं उस स्थल को बता सकती हूँ । पुलिस इस आधार पर उस महिला की मदद के लिए तैयार हो गई और चेस्टर सिटी पहुँचकर महिला ने पहिले कभी न देखे उस शहर के गली कूँचे पार करते हुए उस खण्डहर मकान में ले जाकर पुलिस को खड़ा कर दिया, जहाँ शव को जलाने के निशान मिले और गड्ढे में गाड़ी गई हड्डियाँ भी मिलीं ।

इन घटनाओं से कुछ ऐसे निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं जो अव्यक्त चेतन सत्ता के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं । अधिक गम्भीरता से तो साधना और प्रयोगों द्वारा ही समझा जा सकता है । सामान्य स्वप्नों के माध्यम से भविष्य को परखने की विद्या हमारे यहाँ स्वप्नों के शुभाशुभ निर्णय करने वाले विज्ञान के रूप में भी विकसित हुई है, पर उस सम्बन्ध में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता क्योंकि साहित्य और दूसरे सूत्रों द्वारा इस सम्बन्ध में जो भी जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं वे तथ्यों पर आधारित होने की अपेक्षा पेट भरने की विद्या के सिद्धान्त पर ही अधिक आधारित हैं, लेकिन इतना निश्चित है कि जीवन में विविध दिशाओं से उस अविज्ञात तत्व का निमन्त्रण मिलता रहता है, जिसे चेतना कहते हैं । वह अपनी उपस्थिति का आभास किन्हीं न किन्हीं रूपों में कराता ही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्वाभास और अतीन्द्रिय दर्शन के वैज्ञानिक आधार

सामान्यतः वर्तमान में घटित होने वाली घटनाएँ ही उसमें जीवित प्रतीत होती हैं । भूतकाल में जो कुछ घटित हो चुका वह स्मृतियों में शेष रह जाता है और भविष्य में क्या होने वाला है, उसका अनुमान अनुभव नहीं होता क्योंकि वह अनागत है । सत्य और साक्षात् वही लगता है जो सामने है तथा वर्तमान है । भूतकाल में भी जो कुछ घटित हुआ वह सत्य तो है पर वर्तमान में उसका कोई अस्तित्व नहीं है । इसलिए भूत और भविष्य का सामान्य व्यक्ति के लिए कोई अस्तित्व नहीं है, पर वस्तुतः काल चेतना में ऐसा कोई भेद नहीं है । वहाँ न भूत है, न वर्तमान और न भविष्य । इस प्रकार का कोई विभाजन काल चेतना में है ही नहीं । समग्र काल चेतना अपने आप में एक सम्पूर्ण इकाई है ।

इस तथ्य को अब विज्ञान भी स्वीकार करने लगा है । पहले वैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रकार की मान्यताओं का कैसा उपहास उड़ाया जाता था और इन्हें अवास्तविक निराधार कहा जाता था । अब वैज्ञानिक भी नए शोध प्रयासों के द्वारा निष्कर्षों के आधार पर अपनी मान्यताओं में परिवर्तन करने लगे हैं । यह तो पहले भी माना जाता रहा है कि आवश्यक नहीं कि जो बात एक समय सही मानी जाती है वह दूसरे समय भी उसी प्रकार मानी जाती रहे, इसी प्रकार यह भी आवश्यक नहीं कि जिस बात को आज अप्रमाणिक माना जाता है उसे भविष्य में भी वैसा ही समझा जाय । उदाहरण के लिए अपने समय के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो ने ब्रह्माण्डीय गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त मानने से इन्कार किया था । वे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति को तो मानते थे, पर यह स्वीकार नहीं करते थे कि एक ग्रहपिण्ड की आकर्षण शक्ति दूसरों को भी प्रभावित करती है और इसी आधार पर वे एक दूसरे के साथ बँधे हुए हैं । न्यूटन तक ने ग्रहों के आपस में बँधे रहने वाले गुरुत्वाकर्षण को बहुत पीछे और बड़ी कठिनाई के बाद स्वीकार किया था, पर आज वे विरोध ठण्डे पड़ गये और ग्रहों के बीच गुरुत्वाकर्षण की बँधन-शृंखला की वास्तविकता स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है ।

मात्र एक महत्त्वपूर्ण खोज किस तरह विज्ञान में कई प्रतिष्ठित मान्यताओं को गलत सिद्ध कर देती है, यह सुविदित तथ्य है । हमारा यह विश्व कब अस्तित्व में आया, इसके बारे में कुछ वर्ष पहले तक खगोलविदों की मान्यता थी कि इस विश्व की उम्र लगभग १० अरब वर्ष है, पर १९७१—७२ में दूरस्थ ज्योति-पुंजों ने प्रकाश को ग्रहण करने वाले यन्त्रों द्वारा ऐसा प्रकाश ग्रहण किया गया, जो अपने स्रोत स्थान से २० अरब वर्ष पहले चला था । इससे स्पष्ट हुआ कि ज्ञेय विश्व कम से कम २० अरब वर्ष पुराना है । इसी से यह भी स्पष्ट है कि कोई भी नई जानकारी किसी भी क्षण इस मान्यता को लाँघ सकती है । विश्व सचमुच कितना पुराना तथा कितना बड़ा है । यह अज्ञात एवं अनिश्चित है ।

इस समय विश्व की उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानिकों की मुख्य-मुख्य परिकल्पनाएँ निम्न हैं—

एक परिकल्पना के अनुसार अरबों वर्ष पूर्व सम्पूर्ण विश्व का द्रव्य एक पुंजीभूत महापिण्ड के रूप में था । नाभिकीय कणों का सघन सम्पुंजन किया जाय तो एक घन सेण्टीमीटर स्थान में करोड़ों टन द्रव्य समा सकता है । इसीलिए सम्पूर्ण विश्व द्रव्य का महापिण्ड में सम्पुंजन सम्भव है ।

इस महापिण्ड का विस्फोट हुआ और विस्तार होने लगा । उसी से मन्दाकिनियाँ—नीहारिकाएँ—बनीं, ग्रह नक्षत्र बने, यह विस्तार अभी जारी है । इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि दूरस्थ आकाशगंगाएँ हम से लगातार दूर भाग रही हैं । उनमें पृथ्वी से दूर हटने की गति पृथ्वी से उनकी दूरी के अनुपात में है । इससे स्पष्ट है कि ब्रह्माण्ड का विस्तार हो रहा है ।

मन्दाकिनियों के लगातार दूर भागने की बात की पुष्टि विख्यात वैज्ञानिक प्रो. फ्रेड हायल के एक परीक्षण से हुई है । सुदूरस्थ आकाशगंगाओं से पृथ्वी तक आने में आकाश-तरंगों का कम्पन बढ़ जाता है । दूर से आने वाली प्रकाश का झुकाव, वर्णपट प्राप्त करने पर, नीले रंग की ओर होता है और दूर जाने वाले प्रकाश स्रोत के प्रकाश का झुकाव लाल रंग की ओर होता है । आकाशगंगाओं से आने वाली प्रकाश तरंगों के प्रकाश का वर्णपट प्राप्त करने पर, उस वर्णपट का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

झुकाव लाल रंग की ओर पाया गया । इससे पता चला कि आकाशगंगाएँ दूर जा रही हैं । माउण्ट पोलोयर बेधशाला की दूरबीन से भी आकाशगंगाओं के दूर हटने की प्रक्रिया देखी गई । एक सिद्धान्त यह है कि विश्व जैसा अभी है, वैसा ही आरम्भ से है । आकाशगंगाएँ दूर भाग रहीं है, तो पास भी आ रही होंगी, जो अभी हमें दीखती नहीं । वस्तुतः यह सिद्धान्त प्रो. हायल का है, जिसे 'सन्तुलित अवस्था का सिद्धान्त' कहते हैं । प्रो. फ्रेड हायल ने ही सर्वप्रथम यह खोजा था कि आकाशगंगाएँ पृथ्वी से दूर हट रही हैं । इससे जहाँ कुछ वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि ब्रह्माण्ड का विस्तार हो रहा है, लेकिन स्वयं प्रो. हायल का निष्कर्ष यह था कि पुरानी मन्दाकिनियाँ, जो दूर भागती दीखती हैं, अस्तित्वहीन होती रहती हैं और नई मन्दाकिनियाँ जन्म लेती रहती हैं । इससे ब्रह्माण्ड की पिण्ड संख्या स्थिर रहती है और घनत्व अपरिवर्तित ।

टामस गोल्ड, हर्मन वांडो, वेरोजोफ, वेल्मामिनोफ आदि भी इसी सिद्धान्त को मानते हैं ।

एक मत यह है कि प्रारम्भ मे प्लाज्मा रूप में विश्व का समस्त द्रव्य एकत्र था । वह सन्तुलन की स्थिति थी । धीरे-धीरे असन्तुलन का आरम्भ हुआ । प्लाज्मा के कणों तथा प्रतिकणों के विस्फोट हुए । इससे फोटोन-कण निकले । फोटोन-कणों यानी प्रकाश के कणों से परमाणु बने । समय बीतने पर परमाणु बादल बने, उन्हीं से क्रमशः विविध आकाशीय पिण्ड अस्तित्व में आये । यह परिकल्पना आल्फवेन तथा क्लाइन की है । इसका आधार कणों तथा प्रतिकणों की खोज है ।

कणों तथा प्रतिकणों के ही आधार पर द्रव्य और प्रतिद्रव्य की धारणा परिकल्पित की गई है । गोल्डहारन ने एक परिकल्पना प्रस्तुत की है कि पुंजीभूत द्रव्य का महापिण्ड विखण्डित होते ही दो विश्वों में बँट गया—एक द्रव्यमय विश्व, दूसरा प्रतिद्रव्यमय विश्व ।

गोल्डहारन व अन्य कुछ वैज्ञानिक एक सर्वथा भिन्न प्रतिद्रव्यमय विश्व की परिकल्पना करते हैं, तो कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार इसी ज्ञेय विश्व में प्रतिद्रव्य वाली आकाशगंगाएँ अस्तित्व में हैं, किन्तु हमें उनका ज्ञान अभी सम्भव नहीं क्योंकि हम तो मात्र आकाशीय पिण्डों से उत्सर्जित विकिरण द्वारा ही उन पिण्डों के बारे में जान पाते हैं और द्रव्य तथा प्रतिद्रव्य का विकिरण एक जैसा ही होता है, इसलिए हम उसे अलग से पहचानने में असमर्थ हैं ।

विज्ञा फेनयन माँ के अनुसार ब्रह्माण्डव्यापी प्रति-पदार्थ के अति सूक्ष्म घटक, पॉजिट्रोन-काल से पीछे की ओर भी चलते हैं और उनका प्रवाह भविष्य की ओर न होकर भूतकाल की ओर लौटता है । ठीक इसी प्रकार अन्तरिक्ष वेत्ता फ्रेड हायल का कथन है कि समय आमतौर पर जिस प्रकार सिद्धान्तः वह भूतकाल की ओर गतिशील हो सकता है ।

अन्तरिक्ष विज्ञान के शोधकर्त्ता इस तथ्य का समर्थन कर रहे हैं कि अपने सौरमण्डल में तो नहीं पर अनन्त आकाश में ऐसे कितने ही ग्रह हैं, जो पदार्थ से नहीं 'प्रतिपदार्थ' से बने हैं । वहाँ भरे हुए परमाणुओं को 'टेकयोन' नाम दिया गया है । उनकी चाल प्रकाश से भी तीव्र तथा गति भविष्य की ओर न होकर भूतकाल की ओर चल रही है ।

साधारणतया हम वर्तमान को भविष्य के साथ जोड़ते हैं । भविष्य की तैयारी के लिए वर्तमान को नियोजित करते हैं । कल्पनाएँ और योजनाएँ भविष्य निर्धारण के लिए जुटी रहती हैं । आकांक्षाओं की पूर्ति आगे चल कर होने की ही बात सोची जाती है और उसी पर विश्वास किया जाता है । अपनी परिस्थितियों में यही सम्भव भी है । जल की धारा जिस दिशा में बह रही हो, हवा जिस ओर उड़ रही हो उसी में प्रगति की उपलब्धियों की आशा करना सहज स्वाभाविक है । भूतकाल से तो इतना ही लाभ लिया जाता है कि उसके आधार पर संग्रह किये गये अनुभवों से लाभ उठाया जाय और भावी गतिविधियों के निर्धारण में उनका ध्यान रखा जाय । मीठी-कड़ुई स्मृतियाँ संजोए रह कर उनके दृश्य चित्रों से अठखेलियाँ करते रहने के अतिरिक्त और कोई बड़ा प्रयोजन उनके द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता ।

किन्तु तथ्य इससे भिन्न भी है । समय की गति पीछे की दिशा में लौट सकने की बात आज तो ठीक से समझ में भी नहीं आती और उस पर विश्वास करने को भी जी नहीं करता, इतने पर भी तथ्य तो अपने स्थान पर बने ही रहेंगे । अन्य प्राणी वर्तमान तक ही सीमित रहते हैं । उनकी भविष्य कल्पना आज का आधार पाने के सम्बन्ध में कुछ अनुमान भर लगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकती है । वे हमारी तरह भविष्य कल्पना नहीं कर सकते । ठीक इसी प्रकार हम भी भूतकाल की कुछ अधिक प्रभावोत्पादक घटनाओं की स्मृति तक ही सीमित रहते हैं । यदि भविष्य कल्पना में भूतकाल के अनुभव अपना समुचित योगदान दे सकें तो भविष्य निर्धारण सही भी होगा और सरल भी, किन्तु भूत के अनुभवों का लाभ तो हम यत्किंचित ही उठा पाते हैं ।

मोटर और रेलगाड़ी प्रायः आगे की ओर ही चलती हैं, पर उन्हें पीछे की दिशा में लौटते हुए भी कोई विशेष कठिनाई नहीं होती । इसी प्रकार समय का आगे की तरह पीछे लौट सकना भी सम्भव हो सकता हैं । आमतौर से नदी में प्रवाह की दिशा में ही तैरा और बहा जाता है किन्तु कुशल तैराक के लिए यह भी सम्भव है कि वह उल्टी दिशा में धारा को चीरता हुआ तैर सके । विज्ञान ने तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि भूत भी सर्वथा नहीं हो जाता । वह मस्तिष्क स्मृति-पटलों की तरह धुँधला भर होता है, अपना अस्तित्व बनाये ही रहता है । इसी प्रकार भूत गुजर भले ही गया है, पर उसका अस्तित्व इस ब्रह्माण्ड में अपनी सत्ता अक्षुण्ण रखे हुए है । राम और हनुमान के शरीर अब नहीं रहे, पर उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व अभी भी इस संसार में मौजूद है । यदि कोई मार्ग खोजा जा सके तो हम उल्टी दिशा में तैरने वाले तैराक की तरह उन महामानवों के सम्पर्क का उसी प्रकार लाभ उठा सकते हैं, जैसा कि उनके सहचर उठाया करते थे ।

समय फैलता व सिकुड़ता है

अभी तक तो यह अनुभव में आया है कि घन पदार्थ ही फैलते व सिकुड़ते हैं परन्तु वैज्ञानिक सम्वेदनाओं द्वारा अब यह सिद्ध हो चुका है कि न केवल पदार्थ ही सिकुड़ता है, वरन् समय भी फैलता और सिकुड़ता है ।

मालूम तो यही पड़ता है कि समय बिना किसी की प्रतीक्षा किए अपने ढंग से—अपने क्रम से व्यतीत होता चला जाता है, पर अब इस सम्बन्ध में नए सिद्धान्त सामने आये हैं कि गति की तीव्रता होने पर समय की चाल घट जाती है । मोटेतौर से इसका परिचय हम द्रुतगामी वाहनों पर सवारी करके आसानी से देख सकते हैं । एक घण्टे में पैदल चलने पर तीन मील का सफर होता है, पर मोटर से ८० मील पार कर लेते हैं । यह समय व्यतीत होने की चाल का घट जाना भी कहा जा सकता है ।

यह तो मोटा उदाहरण हुआ । वैज्ञानिक अनुसन्धान ने समय की गति का सिकुड़ने से लेकर उसकी स्थिरता तक को एक तथ्य के रूप में सिद्ध किया है । यद्यपि वैसा अभी प्रत्यक्ष नहीं हो सका, पर वे सभी सिद्धान्त प्रामाणिक ठहराए जा चुके हैं जिनके सहारे समय की गति को शिथिल अथवा अवरुद्ध होने की बात सम्भव कही जाने लगी है ।

आइन्स्टीन ने अपनी क्लिष्ट गणनाओं के आधार पर इस सम्भावना को पूर्णतया विश्वस्त बताया है । वे कहते हैं कि गति में वृद्धि होने पर समय की चाल स्वभावतः घट जायेगी । यदि १,८६,००० मील प्रति सेकण्ड प्रकाश की चाल से चला जा सके तो समय की गति इतनी न्यून हो जायेगी कि उसके व्यतीत होने का पता भी न चलेगा । इस चाल के किसी रॉकेट पर बैठकर सफर किया जाय तो जिन ग्रह-नक्षत्रों पर घूमकर वापिस लौटने पर अपने वर्तमान गणित के हिसाब से एक हजार वर्ष लगेंगे, उस विशिष्ट गणित के हिसाब से एक महीने से भी कम समय लगेगा । ऐसा व्यक्ति पृथ्वी पर लौटेगा तो देखेगा कि यहाँ हजार वर्ष बीत गए और ढेरों पीढ़ियाँ तथा परिस्थितियाँ बदल गईं । इतने पर भी उस लौटे हुए व्यक्ति की आयु में तनिक भी अन्तर दिखाई न पड़ेगा, वह तरुण का तरुण ही प्रतीत होगा ।

पुराणों में ऐसी कथाएँ मिलती हैं जिनमें समय की सापेक्षता की कल्पना की गई है । भागवत पुराण में वर्णन है कि पाताल लोक के राजा रेवत अपनी पुत्री रेवती के लिए उपयुक्त वर तलाश न कर सके तो उस कठिनाई को हल करने के लिए ब्रह्माजी के पास गए । उस समय वहाँ एक संगीत कार्यक्रम चल रहा था । ब्रह्माजी उसी में व्यस्त थे, अस्तु रेवत को प्रतीक्षा में बैठना पड़ा । सभा समाप्त हुई तो राजा ने ब्रह्माजी को अपना मनोरथ बताया तो उन्होंने हँसकर कहा—इतनी देर में तो पृथ्वी में सत्ताईस चतुर्युगी व्यतीत हो गईं । जो लड़के तुम्हें पसन्द आये थे वे सब मर खप गए अब उनके वंश, गोत्रों तक का पता नहीं है । इन दिनों नारायण के अंशावतार बल्देव जी विद्यमान हैं, उन्हें ही अपनी कन्या दान कर दो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय और चेतना से परे

हम देश के यथार्थ को क्यों नहीं समझ पाते ? महान-अणु विज्ञानी आइन्स्टीन अपने सापेक्षवाद सिद्धान्त (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) के द्वारा उत्तर देते हैं—"हमारे साधारण विचार, समय और पदार्थमय हो गए हैं, (वी आर बाउण्ड टु टाइम एण्ड स्पेस), हम इनसे मुक्त नहीं हो पा रहे हैं, किन्तु हमारा समय और स्थान या पदार्थ से बँध जाना समस्त प्रकृति या विराट् जगत का दर्शन कराने में असमर्थ है । हम प्रकृति की वास्तविकता को तभी पहचान सकते हैं जब समय और स्थान (टायम एण्ड स्पेस) से हम ऊपर उठ जायें ।"

समय और स्थान क्या हैं ? यह वास्तव में कुछ भी नहीं है, हमारे मस्तिष्क की कल्पना या रचना मात्र है । लोग कहा करते हैं कि—मैं आठ बजकर आट मिनट पर घर से निकला, मेरी सगाई २ जुलाई को सायं सात बजे हुई, राम और श्याम में परसों दोपहर १२ बजे लड़ाई हो गई, किशोर ने मई १९५७ में हाईस्कूल में परीक्षा दी आदि । इन वाक्यों को ध्यान से कई बार पढ़ें तो हमें मालूम होगा कि प्रत्येक समय किसी न किसी घटना से जुड़ा हुआ है । समय दरअसल कोई वस्तु ही नहीं है । यदि कोई घटना या क्रिया न हुई तो हमारे लिए समय का कोई अस्तित्व ही नहीं होता । आठ बजकर आठ मिनट, सात बजे, मई सन् १९५७, परसों—यह सब घटनाओं की सापेक्षता (रिलेटिविटी) मात्र हैं । जिसे हम १९५७ कहते हैं उसे सम्वत् २०१५ भी कह सकते हैं । शक सम्वत् के हिसाब से वह कोई और ही तिथि होगी, आर्य सम्वत् प्रणाली के अनुसार वह और ही कुछ होगा क्योंकि वे लोग समय की माप उस अवस्था से करते हैं जब से यह पृथ्वी या पृथ्वी में जीवन अस्तित्व में आया । कल्पना करें कि पृथ्वी का अस्तित्व ही न होता तब हमारे लिए समय क्या रह जाता, कुछ भी तो नहीं । यदि हम घटनाओं से परे हो पायें, तो समय नाम की कोई वस्तु संसार में है नहीं । ऐसी कल्पना तभी हो सकती है जब हम सारा चिन्तन, क्रिया-कलाप छोड़कर मस्तिष्क बन जायें या मस्तिष्क में केन्द्रीभूत हो जायें । अर्थात् समय मस्तिष्क की रचना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । जब हम अपने आपको समय के ऊपर उठकर देखते हैं, तो हमें अपनी मस्तिष्कीय चेतना के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता, तब हमारा सही रूप से एक भिन्न व्यक्तित्व होता है । तब हम लगातार विचार, ज्ञान, अनुभूति या प्रकाश की किरण के समान हो जाते हैं और स्थूल शरीर के प्रति अपना मोह भाव समाप्त हो जाता है ।

समय की भाँति ही मनुष्य के सामने आने वाली सभी वस्तुएँ भी सापेक्ष हैं । भौतिक पदार्थ साधारणतया कोई अपरिवर्तनीय (ऑब्सोल्यूट) मूल्य नहीं रखते वरन् चुने गए प्रसंग के अनुसार आप जिसे मिट्टी कहते हैं, यदि उसे आप किसी रसायनज्ञ के पास ले जायें तो वह उस ढेले का रासायनिक विश्लेषण (केमिकल एनालाइसिस) करेगा और बतायेगा कि उसमें इतना भाग धातु के कण, इतना नमक है, इतना पानी और अमुक-अमुक गैसों के समूल कण हैं । इस तरह हमें दिखाई देने वाले सभी भौतिक पदार्थ वैज्ञानिकों की दृष्टि में कार्बनिक (ऑर्गेनिक) या अकार्बनिक (इनॉर्गेनिक) कण मात्र होते हैं । उन्हीं से यह सारा संसार बना है ।

हम जब तक अपने स्थूल रूप से देखते हैं तब तक संसार की स्थूलता दृष्टिगोचर होती है, लेकिन यहाँ भी किसी प्रकार की सत्यता नहीं है । प्रत्येक परमाणु संसारमय है अर्थात् हर परमाणु की रचना एक भरे-पूरे संसार जैसी है, उसमें पूरे के पूरे संसार के दर्शन कर सकते हैं और उस पर भी मस्तिष्क (सतर्कता) बैठा हुआ होता है । वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषण करने से पता चलता है कि परमाणु भी अन्तिम सत्य नहीं है । वह और भी सूक्ष्म आवेशों—इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन, पॉजिट्रॉन और न्यूट्रॉन से बना होता है । यों समझाने के लिए इन्हें बिन्दु के रूप में दिखाया जाता है, किन्तु इलेक्ट्रॉन पदार्थ नहीं, तरंग रूप (वेविकल शेप) में है । अर्थात् हम जिन पदार्थों को देख रहे हैं, यदि अपने देखने की स्थूलता हटा दें और केवल मस्तिष्क से हटा दें तो वह एक तरंग के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है अर्थात् हम जिस संसार को स्थूल रूप में देख रहे हैं, वह तो हमारा दृष्टिदोष है । क्वान्टम सिद्धान्त (थ्योरी ऑफ लाइट क्वान्टम) के अनुसार जो वस्तु कण के रूप में है, वह उसी प्रकार से तरंग के रूप में है । साधारण अवस्था में हम उसे ठीक तरंग रूप में नहीं देख पाते । उसका और कोई कारण नहीं वरन् हमारे मस्तिष्क का पदार्थ से बँधे रहना मात्र होता है ।

इस सब जानकारी का उद्देश्य मनुष्य को विभ्रमित या आश्चर्य चकित करने का नहीं है, वरन् उसके दृष्टिकोण को चौड़ा करना है, जिससे वह अपने स्वरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को समझने की चेष्टा कर सकता है । हम अपने आपको कितना ही धोखा दें, कितना ही शरीर, समय और स्थान में बँधे हुए देखकर हमारा विशुद्ध 'अहंभाव' (शाश्वत स्वरूप) तो अपने नियमों से विचलित होने वाली है नहीं ।–तब फिर हमारे लिए अपने आपको पदार्थों की सीमा में बाँधना कहाँ तक उचित होगा ? कहाँ तक हम अपने मनुष्य-जीवन में आने के लक्ष्य को न पहचानने की भूल करते रहेंगे ?

पदार्थ या स्थान और समय में कोई सत्यता नहीं है । कोई भी निश्चित एक ब्रह्माण्ड नहीं है, जिसमें कि संसार समा सके । अनेक ब्रह्माण्ड हैं और वह सब मस्तिष्क से समाए हुए हैं । एक कण प्रकृति का, एक अहंभाव, चेतना या परमेश्वर का दो ही अनादि तत्व हैं । उनका विस्तृत ज्ञान जब तक नहीं, तब तक मनुष्य इस सांसारिक भूल-भुलैया में ही गोते लगाता रहेगा । क्योंकि हम जिस सुख-शान्ति, सन्तोष और आनन्द की खोज में है, वह पदार्थ में मस्तिष्क की अपनी अनुभूति है इसलिए यथार्थ आनन्द की प्राप्ति भी स्थान और समय से ऊपर उठकर ही प्राप्त की जा सकती है ।

कोई मूलभूत समय भी नहीं है, जिसमें कोई घटना घटित हुई हो । निरीक्षण के अनुभव ही समय की रचना करते हैं और इसी समय से हम ब्रह्माण्डों को, स्थान को, अपने जीवन को नापते हैं । यदि हम अपने मस्तिष्क को समय से ऊपर उठा दें तो अपने अमरत्व की अनुभूति ही नहीं पदार्थ और ब्रह्माडों के स्वामी बनते चले जा सकते हैं । हमारा मस्तिष्क अर्थात् हम स्वयं ही सदैव ही जागरूक रहते हैं । परिवर्तनीय तो यह जड़ या प्राकृतिक परमाणु ही हैं और जब तक हम अपने आप में समाहित नहीं होते, प्रकृति पर न तो नियन्त्रण कर सकते हैं और न ही उसका उपयोग ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन अल्वर्ट आइन्स्टीन के सापेक्षवाद (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) की व्याख्या मात्र है । इसे उन्होंने गणित के द्वारा सिद्ध किया है । उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि एक सरल रेखा का सरल या सीधा होना आवश्यक नहीं । संसार अण्डाकार है । ब्रह्माण्ड सीमा रहित है किन्तु अनन्त नहीं और भी ब्रह्माण्ड हैं जिनका ज्ञान पाना मानवीय बुद्धि के लिए सम्भव नहीं है । प्रकाश-कणों में भार होता है, जबकि भार पदार्थ में ही सम्भव है शक्ति में नहीं (स्मरण रहे-प्रकाश पदार्थ नहीं, शक्ति माना गया है) । मस्तिष्क प्रकाश से बना है । इस तरह यह साबित होता है कि संसार में प्रकृति और परमात्मा, प्रकाश और पदार्थ, मस्तिष्क और चेतना दोनों अभिन्न हैं । मनुष्य-शरीर एक छोटा ब्रह्माण्ड है और अपना मस्तिष्क छोटा परमात्मा—हमारी अपने ज्ञान और स्थूलता के आधार पर उन्हीं से यह सारा संसार बना है ।.

संसार परमाणुमय है । परमाणुओं के मिलने से पदार्थ बनते हैं और पदार्थों से मिलकर स्थान, देश और ब्रह्माण्ड बने । इस ब्रह्माण्ड को ही हम पदार्थों के रूप में खाते हैं, पहनते हैं, उसी में रहते हैं । हमारा शरीर भी तो पदार्थ या परमाणुओं से बना हुआ है । यह भी एक प्रकार का ब्रह्माण्ड ही है । आइन्स्टीन ने सम्भवतः शरीर रूपी पदार्थ जगत् (स्पेस) में एक मस्तिष्क सतर्कता होने के विश्वास स्वरूप अपना यह मत व्यक्त किया था कि प्रत्येक ब्रह्माण्ड को एक सतर्कता (सेन्टीमेन्ट) नियन्त्रण करती है अर्थात् पृथ्वी की या प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र की अपनी एक स्वतन्त्र चेतना या अहंभाव है और वह मनुष्य के समान ही गणितीय आधार पर (इन दि मैथेमेटिक वे) काम करती रहती है अर्थात् संसार मस्तिष्क द्वारा पदार्थों की रचना के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीन्द्रिय शक्ति का उद्भव और विकास

अतीन्द्रिय शक्ति का विकास हर किसी के लिए सम्भव

सन् १९१८ का अक्टूबर मास था । प्रथम महायुद्ध समाप्त हो चुका था । इस युद्ध में लाखों लोग मारे गए थे और हजारों का पता नहीं था कि वे कहाँ हैं ? इन्हीं दिनों मसजरेंक (पोलैण्ड) के उच्चाधिकारियों के पास एक लड़की मैरिना आया करती थी और वह आग्रह करती थी कि वे उसके ब्वायफ्रेण्ड का पता लगाएँ जो महायुद्ध में एक सैनिक की हैसियत से शामिल हुआ था और जिसके बारे में पता नहीं था कि वह जीवित है या मारा गया । अधिकारी उसके बार-बार आने और अपने ब्वायफ्रेण्ड का पता लगाने के आग्रह को सुन-सुनकर तंग आ चुके थे । वे उल्टे उसी से प्रश्न करते थे कि बताओ बेबी ! तुम्हीं बताओ । हम उसे कहाँ ढूँढ़ें ?

इसके उत्तर में मैरिना एक स्वप्न का हाल सुनाती जो प्रायः वह देखा करती थी । अक्टूबर १९१८ में जब वह अगली बार उच्चाधिकारियों से आग्रह करने के लिए गई थी, उसी रात उसने सपना देखा कि उसका साथी एक अन्धेरी सुरंग में रास्ता ढूँढ़ रहा है । घोर अन्धकार है । अन्धकार में रास्ता टटोलने के लिए उसके साथी ने मोमबत्ती जलाई और उसके बाद चारों ओर बिखरे पड़े मलवे को हटाने की कोशिश की । मलवा हटाते-हटाते वह थक गया । उसकी शक्ति जवाब दे गई । हार कर घुटनों के बल झुक गया और सिसकने लगा ।

मैरिना यह स्वप्न कई बार देख चुकी थी । इस स्वप्न का प्रत्येक दृश्य चलचित्र के दृश्यों की भाँति उसे दिखाई देता । एक भी दृश्य में कहीं भी कोई भी परिवर्तन नहीं आता था । कुछ समय उपरान्त उसके स्वप्न में थोड़ा-सा परिवर्तन आया । अब वह देखती थी कि एक पहाड़ी है, उस पहाड़ी की चोटी के पास एक दुर्ग है । उस दुर्ग का बुर्ज टूटा हुआ है वह टूटे हुए बुर्ज के मलवे तक पहुँचती है । वहाँ जाकर वह खड़ी होती है तो मलवे में से उसे अपने खोये हुए मित्र स्टानी स्लोनिस की जानी-पहचानी आवाज सुनाई देती है जो मदद के लिए पुकार रहा है । यह आवाज उन पत्थरों के नीचे से आ रही थी, मैरिना ने मलवा हटाने की कोशिश की पर मलवा था कि खत्म ही नहीं होता था । मलवा हटाते-हटाते वह बुरी तरह थक जाती है और निराश होकर हाँफती हुई वापस लौटती है । इसी निराशा और हताशा के क्षणों में उसकी नींद टूट जाती है ।

यही सपना वह बार-बार देखती है । वह परेशान हो गई । अन्त में उसने अपने इस स्वप्न से अपनी माँ को अवगत कराया और माँ ने इसके बारे में नगर के एक वृद्ध व्यक्ति को जो उसके परिवार का मित्र भी था बताया । उस व्यक्ति को मैरिना के स्वप्न पर विश्वास नहीं हुआ । मैरिना ने अन्य लोगों से भी इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त करनी चाही, परन्तु उसे निराशा ही हाथ लगी । हार कर मैरिना ने स्वयं उस स्थान को ढूँढ़ने और स्टानी की मदद करने का निश्चय किया । वह अकेली ही उस स्थान की ओर निकल पड़ी, यद्यपि उस स्थान को ढूँढ़ लेने और स्टानी की सहायता करने की सम्भावना बहुत कम थी फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी । वह दिन भर चलती और रात को सड़क के किनारे ही सो जाती ।

कई हफ्तों की यात्रा और भटकन के बाद अन्ततः मैरिना ने वह दुर्ग खोज ही लिया, जिसे वह स्वप्न में देखा करती थी । आस-पास की बस्तियों में रहने वाले कुछ नागरिकों को उसने अपनी मदद के लिए राजी कर लिया । दो दिन तक निरन्तर मलवा हटाने का काम चला । तीसरे दिन जमीन में भीतर घुसने का रास्ता मिल गया । मैरिना गाँव वालों के साथ सुरंग के मुँह पर रखा पत्थर हटा ही रही थी कि उसने तथा साथ काम करने वाले लोगों ने सुरंग के उस पार से किसी मनुष्य की आवाज सुनी । मैरिना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस आवाज को सुनते ही पहचान गई कि यह आवाज किसकी है ? आवाज सुनकर वह मारे खुशी के चीख-सी उठी । उसने अपने हाथों से चट्टान तोड़ी । अन्य लोगों ने सुरंग में सुराख को इतना बड़ा किया कि उसमें आदमी भली-भाँति भीतर प्रवेश कर सके । मैरिना और गाँव वालों ने स्टानी सलोनिस को उस सुरंग से बाहर निकाल लिया । उसका चेहरा पीला और सख्त था । इतना लम्बा समय उसने अपने पास इकट्ठे रखे हुए पनीर और शराब पर बिताया था । प्रकाश के लिए उसके पास जो मोमबत्तियाँ थीं, उन्हीं का उपयोग किया था ।

मैरिना ने कई दिनों तक लगातार जो स्वप्न देखा था वह आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुआ था । इस तरह की सैकड़ों घटनाएँ हैं जो स्वप्नों के माध्यम से, तरंगों के माध्यम से, अनायास उठने वाली कल्पनाओं के माध्यम से दूर बोध या पूर्वाभास के सत्य को प्रमाणित करती हैं । गेटे ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है कि एक बार वह अपने निवास स्थान वाइमर में था तो उन्हें अचानक तीव्र अनुभूति हुई कि वहाँ से हजारों मील दूर सिसली में एक भयंकर भूकम्प आया है । गेटे ने इस अनुभूति के सम्बन्ध में अपने मित्रों को बताया लेकिन किसी ने गेटे की इस बात का विश्वास नहीं किया कि बिना किसी आधार के, बिना किसी सूत्र के इतनी दूर की बात इस प्रकार कैसे मालूम हो सकती है ? लेकिन कुछ दिन बाद आये समाचारों से पता चला कि ठीक उसी समय सिसली में वैसा ही भूकम्प आया था जैसा कि गेटे ने अपने मित्रों को बताया था ।

बिना किसी आधार के, बिना किसी प्रत्यक्ष कारणों के किस प्रकार किसी व्यक्ति को सुदूर घटनाओं का, अनागत भविष्य का, व्यतीत हो चुके अतीत का विवरण ज्ञात हो जाता है, यह वैज्ञानिकों के लिए अभी शोध का विषय बना हुआ है । सामान्यतः मस्तिष्क इन्द्रियगम्य ज्ञान की जानकारियों तक ही सीमित रहता है । शरीर विज्ञानियों की ऐसी मान्यता है लेकिन अब पैरासाइकोलॉजी, मनोविज्ञान की एक शाखा में हुई नवीनतम शोधों के आधार पर यह स्वीकार किया जाने लगा है कि मानवीय मन विराट् विश्व मन का ही एक अंश है और जो कुछ इस विराट् विश्व ब्रह्माण्ड में हो रहा है या निकट भविष्य में होने जा रहा है उसकी सम्वेदनाएँ मानवी मन को भी मिल सकती है ।

मानवी मस्तिष्क की जितनी जानकारी सामान्य रूप से प्राप्त की जा सकी है उसके अनुसार मनुष्य के मस्तिष्क में स्नायुकोश, जैवसेल्स की संख्या लगभग दस अरब है । इनकी संख्या से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ये कितने छोटे होते होंगे, लेकिन छोटे होते हुए भी इनकी क्षमता अपनी दक्षता के अनुरूप किसी परिपूर्ण मनुष्य से कम नहीं है । इन दस अरब कोशों की क्षमता और दक्षता का विश्लेषण किया जाय तो यही कहना पड़ेगा इन कोशों में से प्रत्येक अपनी विशेषताओं के कारण देव या दानव स्तर का है ।

इन कोशों में से कुछ तो माइक्रो फिल्मों की तरह न जाने कब की स्मृति सँजोये हुए हैं । इनमें न जाने कब की स्मृतियाँ सुरक्षित हैं ? मोटे तौर पर जिन बातों को हम भूल चुके होते हैं, वे भी मूलतः विस्मृत नहीं होतीं, वरन् इन कोशों में सुरक्षित रहती हैं या कहा जा सकता है कि मस्तिष्क के एक कोने में छिपी पड़ी रहती हैं और जब अवसर पाती हैं तो वर्षा में उग आने वाली घास की तरह उभर कर ऊपर आ जाती हैं ।

कनाडा के स्नायु विशेषज्ञ डॉ. पेनफील्ड ने इस तथ्य को जाँचने के लिए एक व्यक्ति का स्मृति कोश विद्युत धारा से उत्तेजित किया तो उसने बीस वर्ष पहले देखी गई एक फिल्म के कथानक, दृश्य और संवाद इस प्रकार बताने आरम्भ कर दिए कि मानो वह वही फिल्म देखता जा रहा हो और सामने के दृश्यों का वर्णन करता जा रहा हो । मस्तिष्क में रहने वाले इन कोशों का सम्बन्ध शरीर के प्रत्येक अंग अवयव से है । कोशों से सम्बन्धित नाड़ी तन्तु समस्त शरीर में फैले पड़े हैं । वैज्ञानिकों ने इन्हें दो श्रेणियों में बाँटा है—एक सेन्सरी नब्ज अर्थात् संज्ञावाहक और दूसरे मीटर नर्व्स अर्थात् गतिवाहक । संज्ञावाहक तन्तुओं का सम्बन्ध ज्ञानेन्द्रियों से होता है, जो कुछ हम देखते, सुनते, चखते, सूँघते और स्पर्श करते हैं उनकी अनुभूति संज्ञावाहकों के माध्यम से होती है और चलने, फिरने, खाने, पीने, पढ़ने, लिखने जैसे शारीरिक क्रिया-कलाप कर्मेन्द्रियों की गतिविधियाँ गतिवाहकों द्वारा नियन्त्रित तथा संचालित होती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा गया है कि हमारा मस्तिष्क सामान्यतः इन्द्रियगम्य अनुभूतियों और सम्वेदनाओं की जानकारी तक ही सीमित रहता है किन्तु मस्तिष्क में ही इन सम्भावनाओं के बीज भी छिपे रहते हैं कि पिछले दिनों क्या-क्या हो चुका, इस समय कहाँ क्या हो रहा है और निकट भविष्य में कहाँ क्या होने वाला है ? इसकी जानकारी हो सके । यह क्षमता जिसे अतीन्द्रिय शक्ति कहा जा सकता है सामान्य स्थिति में प्रसुप्त अवस्था में ही पड़ी रहती है । केवल वर्तमान से सम्बन्धित प्रत्यक्ष की ही अधिक जानकारी होती है, भूतकाल की निज से सम्बन्धित घटनाएँ ही जब विस्मृत हो जाती हैं तो अन्यत्र घटने वाली घटनाओं की जानकारी कैसे रह सकती हैं ? लेकिन यह बात सामान्य स्तर के मस्तिष्कों पर ही लागू होती है । परिष्कृत मस्तिष्क इससे कहीं ऊँचे उठे होते हैं और वे त्रिकालज्ञ की सी स्थिति में वैसी ही क्षमताओं से सम्पन्न होते हैं ।

विज्ञान की परिधि में अभी भौतिक जानकारी संग्रह करने वाले चेतन मस्तिष्क और स्वयं चालित नाड़ी संस्थान को प्रभावित करने वाले अचेतन मस्तिष्क का परिचय ही आया था । अब अतीन्द्रिय मस्तिष्क के अस्तित्व को भी स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि बहुत-सी ऐसी घटनाएँ घटती रहती हैं जिनसे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास मिलने और उनके अक्षरशः सही उतरने के प्रमाण मिलते हैं । यह प्रमाण इतने स्पष्ट और प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किए गए होते हैं कि उनमें किसी प्रकार के सन्देह की कोई गुंजाइश ही नहीं है ।

मानवीय सत्ता में अतीन्द्रिय चेतना का अस्तित्व स्वीकार किए बिना इन भविष्यवाणियों, पूर्वाभासों और दूरबोध की घटनाओं का कोई कारण ही नहीं रह जाता है । योगी और सिद्ध पुरुष जिस दिव्य चेतना को अपनी तप साधना के माध्यम से विकसित करते हैं, वह कई बार कुछ व्यक्तियों में अनायास ही उत्पन्न हो जाती है । अनेक लोगों में वह जन्म-जात रूप में पायी जाती है । इस क्षमता का विकास करके मनुष्य सीमित परिधि के बन्धनों को काट कर असीम के साथ अपने सम्बन्ध सूत्र जोड़ सकता है और अपनी ज्ञान परिधि को उतना ही विस्तृत बना सकता है । समय-समय पर इस प्रकार के जो प्रमाण मिलते रहते हैं उनसे इस सम्भावना को और भी बल मिलता है कि आत्मविकास का प्रयत्न मनुष्य को कहीं से कहीं पहुँचाने में समर्थ है ।

अतीन्द्रिय चेतना को प्रमाणित करने और उसका विश्लेषण करने वाले ढेरों प्रामाणिक ग्रन्थ मिलते हैं । थर्ड आई, सहस्र सिद्धों का सिद्धपीठ द मेक ऑफ है वनली ड्राइजर्स आदि पुस्तकों में उनके लेखकों ने अपनी निजी दिव्य अनुभूतियों के वर्णन लिखे हैं । उन्होंने अतीन्द्रिय दर्शन और अनुभूतियों का जो वर्णन विश्लेषण किया और जो प्रतिपादन दिए वे आज्ञाचक्र के जागरण और उसकी क्षमताओं की कसौटी पर पूर्णतया खरे उतरे हैं । भ्रूमध्य भाग में अवस्थित तीसरा नेत्र देवी-देवताओं के ही नहीं मनुष्य के पास भी होता है । आवश्यकता उसे जागृत करने, उसे विकसित बनाने भर की है । उस आधार पर सहज ही दिव्यदर्शी हुआ जा सकता है ।

सामान्य मनुष्यों की चेतना जिस स्तर की होती है, अतीन्द्रिय क्षमताओं से सम्पन्न मनुष्यों की चेतना इससे ऊपर उठी होती है । इसलिए उन्हें अनागत भविष्य, सुदूर स्थित घट रही घटनाओं और बहुत पहले घट चुकी घटनाओं की भी जानकारी हो जाती है, इस तथ्य को यों भी समझा जा सकता है कि सड़क पर चल रहे लोगों को अपने आस-पास कुछ फुट दूर तक ही चीजें दिखाई देती हैं । जो लोग ऊँचे स्थान पर खड़े होते हैं उन्हें ज्यादा दूर तक दिखाई देता है । आसमान में उड़ने वाले हवाई जहाजों से और भी अधिक दूर तक अधिक विस्तार से देखा जा सकता है । यही बात उच्चस्तरीय चेतना वाले व्यक्तियों पर लागू होती है । यदि अपनी चेतना को परिष्कृत बनाया जाय प्रयत्न किया जाय तो कोई भी व्यक्ति अपने में अतीन्द्रिय दिव्य शक्ति विकसित कर सकता है । योग साधना ऐसी ही सम्भावनाओं का पथ-प्रशस्त करती है ।

अतीन्द्रिय शक्तियों का आधार हमारा मन

भारतीय तत्ववेत्ताओं ने मन सर्वशक्तिमय इन्द्रियातीत ज्ञान का आधार और परमब्रह्म का ही लघुरूप माना है । सामान्यतः हमारे जो भी देखने, सुनने में आता है उसके सम्बन्ध में यह प्रतीत होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि हमने आँखों से देखा अथवा कानों से सुना । इसी प्रकार सुगन्ध, स्पर्श, रसास्वादन आदि अनुभूतियाँ भी इन्द्रियों के माध्यम से होती हुई दिखाई देती हैं परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं । इन्द्रियों के माध्यम से मन ही अनुभूतियाँ ग्रहण करता है और सम्वेदनाएँ व्यक्त करता है । किसी भी दिशा में दृष्टि लगी रहे तो भी मन यदि किसी और विषय में लगा हुआ हो तो वह आँखों से दिखाई देने पर भी नहीं दिखाई पड़ता क्योंकि मन कहीं और लगा रहता है ।

सोते समय आँखें बन्द रहती हैं फिर भी स्वप्न में चित्र-विचित्र दृश्य दिखाई देते हैं और उन्हें देखने के लिए नेत्रों का खुला या बन्द रहना कोई महत्त्व नहीं रखता । कान आस-पास होने वाली ध्वनि को ही सुन पाते हैं पर नींद में कानों से भी प्रायः कुछ नहीं सुनाई देता और स्वप्न में ऐसी ध्वनियाँ सुनाई देती हैं जो अपने आस-पास तो नहीं ही होती हैं । यह सब इसलिए कि इन्द्रियों का स्वामी, नियन्त्रणकर्त्ता, नियोक्ता और उनके माध्यम से ज्ञान तथा अनुभव करने वाला मन ही होता है ।

दैनन्दिन जीवन में मन की सामान्य शक्तियों का ही अनुभव आभास होता है । परन्तु मन की शक्तियों को किसी सीमा या परिधि में नहीं बाँधा जा सकता है । भारतीय मनीषियों का कथन है कि मन की शक्तियों को ब्रह्म में तादात्म्य कर हाड़-माँस का मनुष्य भी भगवान के समान हो जाता है । उसकी शक्तियों का आश्चर्यजनक और चमत्कारिक विकास इसी अवस्था में होता है । इसी कारण आत्म-विकास के लिए की जाने वाली समस्त साधनाओं में जप, ध्यान और एकाग्रता द्वारा मन को ही नियन्त्रित संयमित किया जाता है । महर्षि वशिष्ठ ने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'योग वाशिष्ठ' में कहा है—'मन से सब प्रकार की शक्तियाँ हैं । वह अपने भीतर जैसी भावना करता है क्षण भर में वैसा ही हो जाता है ।

(३/६१/१७)

योग साधनाओं द्वारा मन की इस शक्ति को विकसित किया जा सकता है तथा विलक्षण शक्तियों का स्वामी बना जा सकता है । प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान लुई जकालियान ने जो बहुत दिनों तक भारत में रह कर योग विद्या का अध्ययन अन्वेषण करते रहे इस तरह के कई उदाहरणों का उल्लेख किया है जिनमें उन्होंने योग के द्वारा मानसिक शक्तियों के अद्‌भुत विकास की घटनाएँ प्रत्यक्ष देखीं । लुई जकालियान ने गोविन्द स्वामी नामक दक्षिण के एक योगी के सम्बन्ध में लिखा है पानी से भरे हुए घड़े को वह दूर बैठकर अपनी मानसिक या दैवी शक्ति से आगे-पीछे कर देता था और हवा में उठा सकता था । उसके आदेश पर जल से भरा हुआ घड़ा भी अधर में लटक जाता हुआ मैंने देखा है । भारतीय योगियों के इन करतबों को कई लोग मनोरंजन की दृष्टि से देखते हैं, पर मुझे कौतूहल के पीछे किसी बड़े रहस्य की अनुभूति होती है । ऐसा लगता है कि मनुष्य के मन में वह शक्तियाँ हैं जिनका विकास यदि किया जा सके तो मनुष्य जीवन की अनेक गुत्थियों को सुलझाया जा सकता है ।

मास्को (रूस) की एक महिला नेल्या भिखाई लोवा सिर्फ घड़ी की ओर देखकर उसका चलना रोक सकती है । वह मेज पर रखे बर्तनों और भोज्य पदार्थों को भी खिसका सकती है । दिक्‌सूचक यन्त्र (कम्पास) की सुई जो केवल चुम्बकीय शक्ति (मैगनेटिक फील्ड) से ही प्रभावित होती है । उसे भी अपनी शक्ति से किसी भी दिशा में घुमा देती है । रूस के प्रसिद्ध समाचार-पत्र 'मास्कोवास्काया' ने उक्त महिला की इस विलक्षण शक्ति पर टिप्पणी करते हुए लिखा है, "मनुष्य के मन में वस्तुतः विज्ञान से परे विलक्षण शक्तियाँ भी विद्यमान हैं । उनका विकास कर लिया जाय तो आधुनिक विज्ञान उनके सामने एक छोटा-सा बच्चा ही सिद्ध होगा ।"

स्थूल शरीर से होने वाली इन्द्रियानुभूतियों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक और जीवशास्त्री भी यह जानते हैं कि शरीर में इन्द्रियों की चेतना और उनकी शक्ति का अस्थायी महत्त्व है । उनकी शक्तियों का असली स्रोत तो मस्तिष्क में विद्यमान है । थैलामस नामक एक पिण्डली (गैंगलियन) भीतरी मस्तिष्क में होती है जो मस्तिष्क के केन्द्र में अवस्थित होती है । यही स्थान सभी तन्मात्राओं (शब्द, रूप, रस, गन्ध के सूक्ष्म रूप) के ठहरने का स्थान है । यहीं से पीनियल ग्रन्थि निकलती है जो तीसरे नेत्र का काम करती है, "पिट्‌यूटरी ग्लैण्ड्स" और मेडुला ऑबलांगेटा शरीर के सम्पूर्ण अवयवों का नियन्त्रण करती है । ये सब मन से ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धित हैं । मन की सत्ता यद्यपि मस्तिष्क से सूक्ष्म है । फिर भी मस्तिष्क का शरीर में महत्त्वपूर्ण स्थान है । मस्तिष्क के वह केन्द्र जो ऊपर बताये जा चुके हैं यदि काट दिए जायें तो शरीर के अन्य सब संस्थान बेकार हो जायेंगे ।

भारतीय तत्वदर्शन के अनुसार मस्तिष्क मन का एक स्थूल स्वरूप मात्र है । इससे भी सूक्ष्म और सामर्थ्यवान बुद्धि, चित्त और अन्तःकरण है जो मस्तिष्क से कई गुना शक्तिशाली है । भौतिक जानकारियाँ संग्रह करने वाले चेतन मस्तिष्क और स्वसंचालित नाड़ी संस्थान को प्रभावित करने वाला अचेतन मस्तिष्क ही अभी तक विज्ञान की परिधि में आया है । मन की सूक्ष्म सत्ता और विलक्षण शक्ति सामर्थ्य का विश्लेषण कर पाने में अभी सफलता नहीं मिल सकी है; फिर भी विज्ञान इतना तो स्वीकार करने ही लगा है कि विज्ञान की परिधि में आने वाली मस्तिष्कीय क्षमता के अतिरिक्त मनुष्य में एक ऐसी क्षमता भी विद्यमान है । जिसे अतीन्द्रिय और अभौतिक कहा जा सकता है, क्योंकि बहुत-सी घटनाएँ आए दिन प्रकाश में आती रहती हैं जिनसे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास, परोक्ष दर्शन और अनदेखे भूत,भविष्य वर्तमान का आभास होने तथा उनके अक्षरशः सही उतरने के प्रमाण मिलते रहते हैं ।

यह प्रमाण इतने प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किए गए होते हैं कि उनमें किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश ही नहीं रहती है । गेटे द्वारा अपने निवास स्थान से हजारों मील दूर सिसली में एक भयंकर भूकम्प की तीव्र अनुभूति, जानेथन स्विफ्ट द्वारा उस समय मंगलग्रह के दो चन्द्रमा होने की बात कहता जब वैज्ञानिक मंगल के चन्द्रमा की कल्पना भी नहीं करते थे आदि ऐसी ही घटनायें हैं । प्रसिद्ध लेखक जे. डब्ल्यू ने अपनी पुस्तक 'एन एक्स पोर्ट मेण्ट विद द टाइम' में लिखा है कि क्रेस्टोआ द्वीप में हुए ज्वालामुखी के भयंकर विस्फोट की जानकारी उन्हें काफी समय पहले ही हो गई थी और इस बात को उन्होंने अपने मित्रों को भी बता दिया था ।

विकसित मनःचेतना में भविष्य के आभास और परोक्ष दर्शन की ही क्षमताएँ विद्यमान हों ऐसा नहीं है । बल्कि मन के द्वारा दूसरों के मनोभाव पढ़ लेने, जो कुछ संसार में है उसे प्राप्त कर लेने तथा और भी कितनी ही विलक्षण जानकारियाँ, उपलब्धियाँ अर्जित करने में सफलता पायी जा सकती है । इन उपलब्धियों के अतिरिक्त जिन्हें सिद्धियाँ भी कहा जा सकता है और भी कई विलक्षणताएँ हैं जो न तो पूरी तरह उल्लेखित की जा सकती हैं और न ही उनके बारे में कुछ बताया जा सकता है ।

अभी तक किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि कम्प्यूटर से अधिक जल्दी सही उत्तर कोई व्यक्ति दे सकता है । कम्प्यूटर को इसीलिए आश्चर्य की दृष्टि से देखा जाता है कि वह घण्टों में हल किया जाने वाला कोई प्रश्न सेकण्डों में हल करके रख देता है परन्तु कुछ वर्षों पूर्व दक्षिण भारत की एक साधारण महिला ने कम्प्यूटर को भी पछाड़ दिया । बंगलौर की रहने वाली शकुन्तला देवी बिना एक क्षण का विलम्ब किए गणित का जटिल से जटिल प्रश्न भी सामने रखते ही उसका उत्तर बता देती है । लन्दन में उनके इस कार्यक्रम का टेलीविजन पर प्रदर्शन किया गया और ब्रिटेन के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने उन्हें गणित का जादूगर कहा ।

कुछ महीनों पूर्व ही एक जैन मुनि अमेरिका गए । तो उनके अवधान प्रयोग वहाँ चर्चा का विषय रहे वे भी गणित की सात आठ संख्याओं का इतनी ही संख्याओं से गुणनफल कुछ सेकण्ड में बता देते थे जबकि कागज पेंसिल लेकर लोग घण्टों तक उन सवालों को करने बैठें और जो हल उन्होंने निकाले वे अक्षरशः सही निकले । जैन मुनियों द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाले अवधान प्रयोग कहीं देखे जा सकते हैं और इसके पीछे कोई रहस्यमय सिद्धियाँ नहीं होतीं बल्कि मुनि स्वयं घोषित करते हैं कि यह मन की शक्तियों को साधने का कमाल है ।

इन उदाहरणों और घटनाओं द्वारा मन की शक्तियों का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है । आध्यात्मविदों ने मन की इन शक्तियों को आत्म-साधना की उपलब्धि, आत्मा का वरदान ही कहा है । इन्हीं बातों को देखकर वैज्ञानिक शरीर में आत्मा जैसी किसी सर्वव्यापक शक्ति के अस्तित्व की बात स्वीकार करने लगे हैं । भले ही अभी उसका विस्तृत अध्ययन कर पाना सम्भव न हो पाया था । अमेरिका के प्रसिद्ध जीव-शास्त्री और चिकित्सा विज्ञान के माने हुए पण्डित डॉक्टर एम. डी. कुले ने वर्जीनिया के मेडिकल कॉलेज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में व्याख्यान देते हुए बताया था कि, मनुष्य के जीवन का आधार केन्द्र हृदय नहीं वरन् मस्तिष्क है । यद्यपि मस्तिष्क का सम्पूर्ण विश्लेषण अभी न किया जा सका है, पर यह मानने के पर्याप्त आधार हैं कि मनुष्य की जीवन चेतना विज्ञान के स्थूल उपकरणों से नहीं समझी जा सकती ।

इस तथ्य को भारतीय ऋषियों और योगियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही जान लिया था । आज भी समधि अवस्था में आत्म-चेतना को ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) में चढ़ा कर बिना साँस लिए कहीं भी दबे पड़े रहने के सैकड़ों प्रयोग सफलतापूर्वक किए जाते हैं । इन प्रयोगों के आधार पर कहा जा सकता है कि मनुष्य के शरीर में प्रत्येक सेल के भीतर उस सामूहिक प्रक्रिया का नाम ही जीवन या मन है और उसमें सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता के लक्षण विद्यमान हैं ।

योग वाशिष्ठ में भगवान राम ने महर्षि वशिष्ठ को बताया है—"जैसे बीज के भीतर पुष्प, शाखा और पत्तों की तथा मृत्तिका में घट की सम्भावना छिपी रहती है, जड़ पदार्थ के भीतर भी वासना विद्यमान रहती है । जड़ पदार्थों में विद्यमान वासना की तरह ही संसार की सब वस्तुओं के भीतर चित्त (मन) विद्यमान है । यह शक्ति सम्पूर्ण जड़-चेतन में वासना के रूप में सोई हुई उसके रस के रूप में सदैव वर्तमान रहती है ।

(३।४०।२०)"

उपर्युक्त पंक्तियों में शास्त्रकार ने जहाँ एक गहन दार्शनिक सत्य को उद्घाटित किया है वहीं उसका विश्लेषण भी कर दिया है । अर्थात् संसार में जितनी भी धातुएँ या पदार्थ हैं चेतना (मन) उन सबसे सूक्ष्मतम है । वह मनुष्यों में वासना के रूप में सोयी रहती है किन्तु यदि उसे संयमित कर लिया जाय तो मनुष्य अपने में उन सभी शक्तियों को विकसित देख सकता है; जिनकी कल्पना हम परमात्मा में करते हैं । अर्थात् वासनाओं से उन्मुक्त मन ही ईश्वर है ।

मन में इस तरह असंख्य सामर्थ्यों का भण्डार छुपा हुआ है । मन ही जीवन है, मन ही सब सिद्धियों का साधन है, मन ही देवता और मन ही भगवान है । मन का पूर्ण विकास ही एक दिन मनुष्य को अनन्त सिद्धियों, सामर्थ्यों का स्वामी बना देता है पर इस दिशा में कठोर आत्म-संयम, साधना, तपश्चर्या के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता ।

अतीन्द्रिय शक्तियाँ और उनका प्रयोजन

वाल्टर अपनी पत्नी के साथ चाय की टेबिल पर बैठा हुआ था । श्रीमती मैसी कप में चाय छान रही थीं । चाय उड़ेल कर उसने दूध मिलाया ही था कि वह बड़बड़ाने लगी, 'किसी होटल के मैनेजर को गोली से मार कर हत्यारा कार में बैठकर भागा जा रहा है । दो मोटर साइकिलें उसका पीछा कर रही हैं । हत्यारे ने पीछा करने वालों पर भी गोली चलाई उनमें से एक सवार मारा गया । हत्यारा मोटर छोड़ कर अधबनी झोंपड़ी में घुस गया·····।'

"यह बुदबुदाना जारी ही था कि श्रीमती मैसी के हाथ से दूध का बर्तन छूट गया और वह अर्धमूर्छित होकर टेबिल पर ही लुढ़क-सी गईं । वाल्टर को कुछ भी समझ में न आया कि क्या करें ? उपलब्ध चिकत्सा उपचार के बाद जब उसकी पत्नी होश में आईं तो उसने बताया कि वह ठीक यही दृश्य किसी फिल्म की तरह चाय की प्याली में देख रही थीं ।"

यह घटना मार्टिन इबोन ने अपनी पुस्तक "डू एक्सपीरियन्स इन प्रोफेसी" में लिखी है । लेखक ने इस तरह की और भी कई प्रामाणिक घटनाओं का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध किया है कि मनुष्य के भीतर अद्भुत, अलौकिक और विलक्षण क्षमताएँ हैं । उन क्षमताओं के माध्यम से भूत, भविष्य, वर्तमान को देश-काल की सीमाओं से परे जाकर देखा व जाना जा सकता है ।

वाल्टर ने इस घटना को कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया, पर मैसी के मस्तिष्क पर इसका प्रभाव ज्यों का त्यों बना हुआ था । वह अपने पति से बार-बार यही कहती कि या तो यह घटना हो चुकी है अथवा घटने वाली है । अतएव इस बारे में पुलिस को सूचित कर देना चाहिए । वाल्टर इसे भ्रम या मनोग्रन्थि का विकार कह रहा था जबकि मैसी बार-बार विचार कर रही थी । दो दिन तक दोनों में विवाद हुआ, अन्ततः वाल्टर ने मैसी की बात रख कर इस विवाद से छुटकारा पा लेने का निर्णय किया । वे लोग पुलिस दफ्तर में पहुँचे और स्वप्न में देखे हत्यारे की हुलिया तथा पोशाक बताते हुए सारी बात कह दी । पुलिस अधिकारियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने वाल्टर और मैसी को सनकी समझा तथा रिपोर्ट फाइलों में दबा दी गई ।

अभी दो सप्ताह भी न बीत पाये थे कि ठीक ऐसी ही घटना का विवरण दैनिक समाचार-पत्रों में छपा । कैलिफोर्निया के एक होटल मैनेजर की तिजोरी लूटने और गोली मार देने का विवरण सचमुच ही सनसनीखेज था । इससे भी सनसनीखेज था वह विचित्र साम्य जो मैसी ने पुलिस में दर्ज कराई सूचना से अक्षरशः मेल खाता था । हत्यारा कार में बैठ कर ही भागा था । दो पुलिस मैनों ने मोटर साइकिल पर उसका पीछा किया जिनमें से एक हत्यारे की गोली से मारा गया । बाद में वह हत्यारा लूट के धन समेत एक अधबनी झोंपड़ी में पकड़ा गया ।

यह समाचार भी बाद में अखबारों ने प्रकाशित किया कि किस प्रकार श्रीमती मैसी को इस हत्या की दुर्घटना का पूर्वाभास हो गया था तथा वह घटना अक्षरक्षः सत्य निकली । इस घटना से मार्टिन इबोन ने यही निष्कर्ष निकाला है, कि मनुष्य में अतीन्द्रिय शक्तियों की सम्भावनाएँ बीज रूप से विद्यमान हैं जो कभी-कभी इस रूप में भी प्रस्फुटित हो जाती हैं । मनुष्य यों अन्य प्राणियों की तरह ही एक जीवित पशु मात्र है उसमें बोलने और सोचने की अतिरिक्त विशेषताएँ भर विद्यमान हैं ।

कितनी ही बातों में तो वह जीवों की तुलना में पिछड़ा हुआ भी है, फिर भी उसे सृष्टि का मुकुटमणि परमात्मा का युवराज बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । उसका प्रधान कारण यही है कि परमात्मा ने अपने इस पुत्र में किसनी ही अलौकिक शक्तियाँ और अद्‌भुत विशेषताएँ रोम-रोम में कूट-कूट कर भर दी हैं । इन्हीं शक्तियों ने उसे स्नेह, सहकारिता, सद्‌भाव, संयम, परमार्थ जैसे सद्‌गुण प्रदान किए और उन्हीं के बल पर वह अनेक भौतिक तथा आन्तरिक समृद्धियों तथा सिद्धियों का अधिपति बन सका है । सृष्टि के अन्य प्राणियों में इस प्रकार के सद्‌गुण कहीं-कहीं नाम-मात्र को ही देखे जाते हैं । वह मनुष्य ही है जो इनके बल पर मनस्विता तथा तेजस्विता अर्पित करता है । परमात्मा ने मनुष्य में ही इस प्रकार की सम्भावना कूट-कूट कर भर रखी है कि वह आदर्शवादी उत्कृष्टता अपनाकर-उपासना और साधना का सहारा लेकर चाहे तो इतना ही ऊँचा उठ सकता है जहाँ पहुँचने पर उसे सिद्ध पुरुष एवं देवात्मा कहा जा सकता है ।

अतीन्द्रिय शक्तियों के यदा-कदा दिखाई पड़ने वाले चमत्कार भी मनुष्य को अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं । दूसरे प्राणी खाना, सोना और जगना भर जानते हैं अतः उनके क्रिया-कलाप भी वहीं तक सीमित रहते हैं जितनी कि उनकी क्षमता होती है; परन्तु मनुष्य के भीतर निहित उच्चस्तरीय जागृत आत्मा इन महिमामय झलकियों के रूप में बिजली की तरह कौंधती भी रहती है ।

यदि इन शक्तियों का विधिवत् विकास किया जा सके तो जो कुछ मनुष्य ने भौतिक व मानसिक दृष्टि से उपार्जित किया है उससे कहीं अधिक सिद्धियाँ, सफलताएँ और सामर्थ्य अर्जित कर सकता है । अभ्यास और साधनाओं के द्वारा इन सामर्थ्यों को विकसित करने के उदाहरण भारतीय योगी ऋषियों में सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं, परन्तु चेतना और मानवीय सत्ता की शक्ति सामर्थ्य किसी देश-प्रदेश तक सीमित नहीं है । सृष्टि के नियम जिस प्रकार सर्वत्र लागू होते हैं उसी प्रकार चेतना भी अपना प्रभाव व सामर्थ्य हर कहीं दिखाती है । आवश्यकता उसे विधिवत् विकसित करने भर की है ।

हाल ही में इंग्लैण्ड में चमत्कारी क्षमता सम्पन्न जादूगर राबर्ट हडची की जन्म शताब्दी मनाई गई । उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में राबर्ट हडची अपने समय का अद्‌भुत व्यक्ति था । पूरी सावधानी और मजबूती के साथ जकड़ी गई बेड़ियों को वह उसी क्षण कच्चे धागे की तरह तोड़ फेंकता था । कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगाने पर भी वह सबके सामने बाहर निकल आता था । इंग्लैण्ड में जब उसके इन करतबों की धूम मच रही थी तो तब के प्रख्यात समाचार-पत्र 'डैलीमिरर' ने उसकी इन शक्तियों के प्रति आशंका व्यक्त की तथा कुछ प्रश्न उठाए । राबर्ट हडची ने इन आपत्तियों की चुनौती को स्वीकार किया और हजारों लोगों की उपस्थिति में एक सुरंग में घुसकर पूरी तरह बन्द हो जाने के बाद बाहर निकलने का प्रदर्शन किया । इस पर भी कतिपय आशंकाएँ शेष रहीं तो तुरन्त एक ताजा गड्ढा खुदवाया गया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हडची उसमें उतर गया । उतर जाने के बाद घण्टे भर में ही उस गड्ढे को मिटटी से अच्छी तरह पाट दिया गया तथा ऊपर से बन्द कर दिया गया । हडची ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अच्छी तरह सीमेण्ट कर देने के बाद तीस सैकण्ड में ही बाहर आ जाने की घोषणा की थी । सचमुच वह इससे भी कम समय में बाहर आ गया । गड्ढे के ऊपर किए गए सीमेण्ट में कहीं भी कोई दरार या छिद्र तक नहीं था । पुनः उस गड्ढे को खोदा गया तो वहाँ केवल वह सन्दूक मिला जिसमें हडची को बन्द कर गड्ढे में उतारा गया था ।

राबर्ट हडची ने मरने से पूर्व एक वसीयत लिखी थी और कहा था इसमें उसकी तमाम चमत्कारी क्षमताओं के रहस्य उसने बता दिए हैं । प्रतिबन्ध यह था कि इस वसीयत को सन् १९७४ में खोला जाय । इसी वर्ष हडची की सौवीं वर्षगांठ भी थी । पिछले दिनों जब हडची की सौवीं वर्षगांठ मनाई गई और वह वसीयत प्रकाशित की गई तो उसमें इतना भर लिखा था कि, योग साधनाओं के अभ्यास द्वारा इस प्रकार के करतब कोई भी कर सकता है ।

योग विद्या के प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रकार की सिद्धियों के अनेकानेक विवरण मिलते हैं । उपासना साधना द्वारा इस प्रकार की सिद्धियाँ अनायास ही मिल जाने के उल्लेख भी मिलते हैं । निःसन्देह साधना तपस्या से कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की असाधारण शक्ति प्राप्त कर सकता है, परन्तु इस बात के कोई कारण नहीं मिल सके हैं कि किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में ये विशेषताएँ अनायास ही क्यों उत्पन्न हो जाती हैं ?

स्वप्नों के द्वारा भविष्य के पूर्वाभास की घटनाएँ आमतौर पर प्रकाश में आती हैं । प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता जे. वी. राइन और उनकी पत्नी लुई ईण्टाइन ने मिलकर इस सम्बन्ध में वर्षों तक शोध की कि कई बार स्वप्नों में इस प्रकार के संकेत क्यों मिलते हैं जिनमें भावी घटनाओं का आभास होता है । डॉ. राउन विज्ञान अन्वेषण के दूसरे क्षेत्र में कार्यरत थे; परन्तु जब उनकी पत्नी ने ऐसी दर्जनों घटनाओं का विवरण सुनाया जिनसे स्वप्नों की सार्थकता सिद्ध होती थी तो उन्होंने अपने अन्वेषण का क्षेत्र बदल कर स्वप्नों में पूर्वाभास को अपना विषय बना लिया और लगभग ४००० ऐसी घटनाओं का संग्रह प्रकाशित किया जिनमें स्वप्नों के माध्यम से लोगों की भवतव्यता की पूर्व सूचना प्राप्त हुई थी ।

डॉ. राउन ने अपने अन्वेषण पर कितनी ही विज्ञान गोष्ठियों पर भाषण दिए और इस सन्दर्भ में और अधिक शोध करने की आवश्यकता प्रतिपादित की । ब्रिटिश ब्राडकॉस्टिंग कॉरपोरेशन ने उनके कई भाषण भी प्रकाशित किए । उनके भाषणों में मुख्यतः तीन शोध निष्कर्ष रहते थे । एक यह कि मनुष्य के भीतर ऐसी कोई अविज्ञात चेतना विद्यमान है जो सुदूर तक अपना सम्बन्ध सूत्र बनाये हुए है और वह उपयुक्त अवसरों पर रहस्यमयी घटनाओं का उद्घाटन करती है । दूसरा यह कि परस्पर घनिष्ठ व्यक्तियों में सहज ही यह आदान-प्रदान हो सकता है । तीसरा यह कि इस प्रकार की अतीन्द्रिय शक्तियाँ महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक रहती हैं । विशेष रूप में उनमें जो धार्मिक रुचि लेती हैं ।

यह चमत्कारी क्षमताएँ अद्भुत, विलक्षण हैं और कोई भी इन्हें प्राप्त करने का लोभ संवरण नहीं कर सकेगा, परन्तु भारतीय ऋषियों ने इन सिद्धियों को दूसरे दृष्टिकोण से देखा है । महर्षि पातंजलि ने योग दर्शन में इस प्रकार की सिद्धियों का उल्लेख करते हुए कहा है कि "ये सिद्धियाँ समाधि में विघ्न हैं तथा व्युत्थान में सिद्धि है, (विभूतिपाद ३६)

अर्थात्—ये जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं है । जैसे दरिद्र मनुष्य थोड़ा-सा द्रव्य पाकर सन्तुष्ट हो जाता है उसी प्रकार विभ्रम ग्रस्त पुरुष ज्ञान से पहले प्राप्त होने वाली इन सिद्धियों में रम जाता है और हर्ष, गौरव तथा गर्व से अभिभूत होकर अपने अन्तिम लक्ष्य-समाधि, परमशान्ति से विमुख हो जाता है । इन सिद्धियों की एक ही उपयोगिता बताई गई है कि मनुष्य इनके माध्यम से अपनी अद्भुत सामर्थ्य को पहचाने और विराट् चेतना का ही अंश होने की अनुभूति करे । उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो ।

उसी से शास्त्रकारों ने इन सिद्धि सामर्थ्यों में न उलझते हुए सत्य की खोज में अनवरत लगे रहने का निर्देश दिया है यदा-कदा चमत्कारी क्षमताएँ झलकती दिखाई देती हैं तो उसका भी कुल इतना ही उपयोग है कि मनुष्य अपने आपको परमपिता परमात्मा का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तराधिकारी होने की बात अनुभव कर सके और स्वयं भी उतना ही समर्थ, शक्तिमान तथा संसिद्ध होने की बात स्वीकार कर सके ।

परमात्मा ने मनुष्य को परिपूर्ण और सामर्थ्यवान शरीर दिया है । उसे अलौकिक एवं अतीन्द्रिय क्षमताओं की सम्भावनाएँ भी बीज रूप में प्रदान की हैं तथा इस सम्भावना के द्वार भी हर किसी के लिए खोल दिए हैं कि वह उन शक्तियों को प्रयत्नपूर्वक अर्जित कर सकता है । इतने पर भी कोई व्यक्ति अपने यथार्थ स्वरूप को न पहचान सके तो दोष किसका है । कोई सम्पन्न और प्रभावशाली व्यक्ति अपनी सन्तान में आत्म-विश्वास जगाने के लिए बार-बार अपनी साधन सम्पदा के बारे में बताता रहता है तथा हिम्मत न हारने की, निरन्तर आगे बढ़ते रहने की, प्रेरणा देता रहता है । परमात्मा भी उसी प्रकार अपने पुत्र को इन सिद्धियों की झलक बताकर उसमें आत्म-विश्वास उत्पन्न करना चाहता है । ताकि वह अपने मूल स्वरूप को पहचान सके और जिस उद्देश्य से उसे इस संसार में भेजा गया है उसे प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हो सके ।

अतीन्द्रिय क्षमता कोरी करामात नहीं

पूर्वाभास भविष्यकथन, दूरदर्शन, दूरश्रवण, परोक्षज्ञान जैसी घटनाएँ अब भूत, पलीत, देवी-देवताओं की करामात अथवा संयोग न मानकर पूर्णतः विज्ञान सम्मत मानी जाने लगी हैं । सामान्यतः ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से ही ज्ञान प्राप्त होता है, किन्तु मनोवैज्ञानिकों की शोध के अनुसार एक छठी इन्द्रिय भी है जो ऐसी जानकारियाँ देने में समर्थ है जिसे मन, बुद्धि से परे कहा जाता है । चेतना की गहन पर्तों की खोज-बीन से अब इस रहस्य पर से पर्दा उठा है कि अतीन्द्रिय सामर्थ्य बाह्य उपार्जन नहीं, वरन् आन्तरिक उद्‌भव है । अभी तक हमें मानवीय सत्ता के थोड़े से ही अंश और शक्तियों की जानकारी है इससे भी अनन्तगुनी सम्भावनाएँ सत्ता के गहन अन्तराल में छिपी पड़ी हैं । धरती की ऊपरी पर्त में भले ही घास-पात उगाने की क्षमता हो किन्तु गहराई में खोदने पर बहुमूल्य खनिज सम्पदा उपलब्ध होती है, ठीक इसी प्रकार शारीरिक श्रम और मानसिक शक्ति से आगे की गहराई में उतरने पर उस क्षमता का अस्तित्व सामने आता है जिसे अतीन्द्रिय क्षमता अथवा दैवी शक्ति के नाम से पुकारा जाता है ।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक अतीन्द्रिय क्षमताओं की गहरी खोज में लगे हैं । उन्होंने परोक्ष दर्शन, भविष्यगत ज्ञान, भूतकालिक ज्ञान और विचार सम्प्रेषण पर अनुसंधान भी किया है साथ ही अनेकों ऐसे प्रमाण जुटाने का प्रयास किया है जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय योग शास्त्रों में ऋद्धियों, सिद्धियों का जो वर्णन मिलता है वह मिथ्या नहीं वरन् सत्य है ।

अतीन्द्रिय क्षमता की भौतिक अभिव्यक्ति का सर्वप्रथम वैज्ञानिक परीक्षण फ्रांस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक काउण्ट एगेनर डी. गेस्परिन ने किया था । उन्होंने अन्य वैज्ञानिकों को साथ लेकर एक प्रयोग किया और देखा कि कुछ लोग वस्तुओं को बिना स्पर्श किए एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाने की क्षमता रखते हैं । बिना स्पर्श किए हटाने वाली शक्ति को उसी प्रकार उन्होंने मापा जैसे भौतिक विज्ञानी गुरुत्वाकर्षण शक्ति को नापते हैं । अभी तक किसी वस्तु का गुरुत्वाकर्षण नियमों के विरुद्ध अधर में झूलना या ऊपर उठना उस शक्ति के नियमों के प्रतिकूल माना जाता रहा है, किन्तु देखा गया है कि यह कार्य मानव अपनी प्रचण्ड आत्म-शक्ति के बल पर सम्भव कर दिखा सकता है ।

इसी प्रकार "जनरल ऑफ साइन्स" पत्रिका में प्रोफेसर विलियम क्रुक्स के अनुसंधान की रिपोर्ट का विवरण मिलता है जिसमें उन्होंने डेनियल होम की अतीन्द्रिय क्षमता के बारे में प्रकाश डाला है । डेनियल बड़ी सरलता से बिना स्पर्श किए किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित कर देता था । बिना स्पर्श किए वाद्य यन्त्रों को बजाकर बता देता था । आगे क्रुक्स लिखते हैं कि वह भार तौलने की मशीन के एक बोर्ड के सिरे को छू भर देता था कि मशीन कम या ज्यादा भार बताने लगती । आत्म-शक्ति द्वारा वैज्ञानिकों को आश्चर्य चकित करने वाला यह एक अनूठा प्रयोग था ।

वस्तुतः अतीन्द्रिय क्षमता सूक्ष्म शरीर का मस्तिष्कीय चेतना का विषय है । मस्तिष्क ब्रह्माण्डीय चेतना से सम्पर्क बना सकने और उस क्षेत्र की जानकारियाँ प्राप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर सकने में समर्थ है । अविकसित स्थिति में उसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन्द्रिय जैसे सामान्य उपकरणों पर निर्भर रहना पड़ता है । इससे उसे सीमित जानकारी के आधार पर अल्पज्ञ बन कर रहना पड़ता है, किन्तु जब मस्तिष्कीय चेतना का अपेक्षाकृत अधिक विकास हो जाता है, तब फिर बिना इन्द्रियों के सहारे दूरवर्ती घटनाओं तथा अविज्ञात के रहस्यों पर से पर्दा उठने लगता है । अन्तरिक्ष के अन्तराल में अनन्त छिपी घटनाओं, सम्पदाओं, विभूतियों, शक्तियों, ऋद्धियों, सिद्धियों की जानकारी मिलने लगती है ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के बीजाकुर जो कभी भी कहीं भी उग सकते हैं

अन्य प्राणियों की तुलना में मानवी शरीर संरचना ही विशिष्ट नहीं है । उसकी सम्भावनाएँ भी इतनी विपुल हैं कि जहाँ भी दृष्टि डाली जाय वहाँ सब कुछ आश्चर्य, अद्‌भुतमय ही दीखता है ।

अद्‌भुत है वह प्रक्रिया जो सर्वसाधारण में सामान्य रूप से दृष्टिगोचर नहीं होती । मनुष्य के साथ ऐसा बहुत कुछ जुड़ा हुआ है, उसमें सूक्ष्म रूप में विद्यमान है जिसे यदि जागृत किया जा सके । खारा या उभारा जा सके तो यह उस स्तर पर पहुँच सकता है जिसमें सामान्य जन निर्वाह नहीं करते ।

समझा जाता है कि विचित्रताएँ और विशेषताएँ किसी-किसी में जन्मजात ही होती हैं । उन्हें संयोग, पूर्ण संचय, ईश्वर अनुग्रह आदि ही कह और अपवाद तुल्य मान सकते हैं । यह कथन आंशिक रूप से ही सत्य है । इसमें मात्र इस सम्बन्ध में विचार किया गया है कि यह विचित्रताएँ किस प्रकार प्रकट होती हैं । मूल प्रश्न यह नहीं वरन् यह है कि मानवी सत्ता में वैसे प्रकटीकरणों का उपयुक्त गठन है या नहीं । समझा जाना चाहिए कि मनुष्य विचित्र है । उसकी सामान्य गतिविधियाँ तो अन्य प्राणियों की तरह काम चलाऊ निर्वाह के लिए आवश्यक जितनी दीखती है किन्तु विशेष अवसरों पर विशेष उपायों से उन विशेषताओं को भी उभारा जा सकता है जिस आधार पर उसे अद्‌भुत कहा जा सके और यह आशा की जा सके कि जब वैसी संरचना विद्यमान है तो उसे आवश्यकतानुसार प्रयत्नपूर्वक उभारा भी जा सकता है ।

मनुष्य का शरीर भी ऐसी विचित्रताओं से भरा पड़ा है और मन भी । अवसर मिले तो शरीर का कलेवर तथा बल पराक्रम असाधारण रूप में विकसित हो सकता है । अवसर मिले तो यही काया ऐसी सुदृढ़ता एवं सहनशीलता का परिचय दे सकती है, जैसी कि सामान्य काया से आशा नहीं की जा सकती । हाड़माँस का शरीर तो तनिक से झटकों से भी टूट सकता है । उसमें बहुत बड़ी सहन शक्ति नहीं है । मृत्यु उत्पन्न करने वाले आघातों से उसकी रक्षा नहीं हो सकती, किन्तु देखा गया है कि आकार, बल सुदृढ़ता की दृष्टि से कई बार मनुष्यों में ऐसी क्षमता पायी जाती है जिसे अद्‌भुत ही कहा जा सकता है ।

स्मरण रखने योग्य बात यह है कि सृष्टा की इस संरचना में न कहीं अपवाद है न व्यतिरेक । प्रकृति भूल नहीं करती । उसके कुछ नियम हैं । जिनमें से हम बहुत थोड़ों को जानते हैं और उतनों तक ही प्रकृति को सीमाबद्ध मानते हैं । वस्तुतः ऐसा है नहीं । अविज्ञात नियमों को भी यदि समझा और प्रयुक्त किया जा सके तो आज का अद्‌भुत कल नितान्त सामान्य बन सकता है । मानवी काय संरचना में कितनी सम्भावनाएँ भरी पड़ी हैं जिनका परिचय यदा-कदा ही देखने को मिलता है । इन्हें कौतूहल मात्र नहीं समझा जाना चाहिए वरन् यह माना जाना चाहिए कि अपवाद रूप में देखी जाने वाली सम्भावनाएँ भी मानवी संरचना का एक अविच्छिन्न अंग हैं । वे प्रयुक्त नहीं होती, उनकी आवश्यकता नहीं समझी गई, उन्हें जगाने का प्रयत्न नहीं हुआ, इसलिए उपेक्षित, प्रसुप्त स्थिति में किसी कोने में पड़ी रहती हैं । यदि आवश्यकता समझी जाय और चेष्टा हो तो काय संरचना में विद्यमान अनेकानेक विचित्रताओं में से जिन्हें आवश्यक समझा जाय उन्हें जागृत एवं प्रखर किया जा सकता है ।

गोल्ड हिल ऑरुगान (यू. एस. ए.) में जैक शवार्ज नामक व्यक्ति ने सामान्य शरीर में असामान्य विशेषताएँ होने की सम्भावना प्रदर्शित करने के लिए एक प्रयोगशाला स्थापित की है । इसमें वह सिद्ध करता है कि शरीर को तेजधार वाले हथियारों का प्रवेश होने पर भी उसका कुछ नहीं बिगड़ता । पानी में ढेला फेंकने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ ही क्षण के लिए आघात वाले स्थान का पानी हटता है और तत्काल उस स्थान पर पास का पानी आकर उस गड्ढे को समतल बना देता है ऐसा ही दृश्य मानवी शरीर में भी देखने को मिल सकता है । बात सहज ही समझ में नहीं आती, पर है सच । जैक शवार्ज ने यह प्रदर्शन अनेकों स्थानों पर किए हैं और सामान्य जनों से लेकर विशेषज्ञों तक को चुनौती दी है कि वे जिस तरह भी चाहें इस विशेषता की यथार्थता परखने के लिए जाँच-पड़ताल कर लें और यह भ्रम मिटा लें कि इस कृत्य में कोई बाजीगरी की जा रही होगी ।

मैनिंगर फाउण्डेशन के डायरेक्टर 'एलियर ग्रीन' ने अपनी आँखों से देखा कि उसने लोहे की पैनी शलाख अपने हाथ में आर-पार की । लिपटे कपड़े में सूराख हो गए किन्तु खून नहीं निकला । बाद में शलाख निकाल लेने पर वह छेद भी अपने आप भर गया जो शरीर में सलाख पार होने के कारण हुआ था । वह पैनी नोकें लगे तख्त पर सोकर भी दिखाता है और छाती पर अपने से भी अधिक वजन का आदमी खड़ा कर लेता है ताकि नोकें उसके शरीर में न घुसने की दूसरी क्षमता का भी प्रदर्शन हो सके ।

हिमाचल प्रदेश के भोरज ब्लाक में एक छोटा गाँव है—बस्सी । यह शिमला से ८५ किलोमीटर दूर है । यहाँ का २३ वर्षीय युवक रामचन्द्र विषपायी होने के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुका है । यह शौक उसे जन्मजात विशेषता के रूप में मिला है । जब आठ वर्ष का था तभी साँप, बिच्छू आदि जहरीले कीड़े को चावपूर्वक पकड़ लेता था । १३ वर्ष की आयु में उसने तेजाब पीकर दिखाया । बाद में उसने अनेकों इससे भी बड़े 'पोटेशियम साइनाइड' जैसे विष को विशेषज्ञों की उपस्थिति में खाकर दिखाए । नींद की गोली वह दर्जनों निगल जाता है । यह प्रदर्शन उसने चण्डीगढ़ के कृषि विश्वविद्यालय तथा दूसरे प्रामाणिक संस्थानों में करके यथार्थता प्रमाणित की है । कई समाचार-पत्रों में यह विवरण छपा है और टेलीविजन पर भी प्रदर्शित हुआ है ।

इसी प्रकार मनुष्य शरीर एक विलक्षण बिजली घर है । बिजली को शक्ति का प्रतिनिधि माना जाता है । उसके सहारे कितने ही यन्त्र उपकरण काम करने हैं । ऊर्जा की आवश्यकता उससे पूरी होती है । जहाँ शक्ति की आवश्यकता है वहाँ बिजली का प्रयोग किया जाता है । मनुष्य शरीर की सामान्य गतिविधियों के लिए जितनी बिजली काम आती है प्रायः उतनी ही उसमें बनी रहती है । अधिक की आवश्यकता समझी जाय तो उसके अन्तराल में ऐसे स्रोत विद्यमान हैं जिनके सहारे उसे अधिक बिजली उगलते पाया जा सकता है। यदा-कदा ऐसी घटनाएँ देखने में मिलती रहती हैं । जिनमें मनुष्य को एक चलते-फिरते बिजली घर जैसा काम करते पाया गया है ।

लन्दन के डॉ. डिन्वल ने अपने अनुभव में आये विशेष विद्युतीय क्षमता वाले कितने ही व्यक्तियों के विवरण अपनी पुस्तक में प्रकाशित किए हैं । इस पुस्तक का नाम है—"एवनार्मल हिप्नोटिक फिनामिना" इसमें प्रस्तुत किए गए वर्णनों से विदित होता है कि कभी-कभी किसी की शरीर विद्युत असाधारण रूप से उद्दीप्त हो उठती है और वह अपने स्पर्श करने वाले व्यक्तियों तथा पदार्थों पर आक्रामक प्रभाव छेड़ने लगती हैं । वे कहते हैं, "एक सीमित मात्रा में यह जैव विद्युत हर किसी के शरीर में रहती है और नाड़ी संस्थान के सहारे इस छोर से उस छोर तक दौड़ती रहती है । इसी के आधार पर शरीर यन्त्र के विभिन्न क्रिया-कलाप चलते हैं । सामान्य या स्वाभाविक मात्रा में कमी आने पर व्यक्ति निर्बल, निस्तेज हो जाता है और उसकी हर क्रिया-प्रक्रिया से शिथिलता दीखने लगती है । साथ ही यह भी देखा गया हैं कि वह मात्रा अनावश्यक रूप से बढ़ने लगे तो आदमी आवेशग्रस्त, क्रोध, आक्रामक, अस्थिर प्रकृति का बनने लगता है । सामान्य जाँच-पड़ताल से कोई रोग प्रतीत न होने पर इसे वैयक्तिक विशेषताएँ माना जाने लगता है, पर वस्तुतः यह होता बिजली की मात्रा घटने-बढ़ने के कारण ही है । जिस प्रकार अन्यान्य विकृतियों की अभिवृद्धि के उपचार हैं । उसी प्रकार शरीरगत विद्युत प्रवाह की अव्यवस्था को भी नियन्त्रित किया जा सकता है ।

अपवाद रूप में मानवीय विद्युत के अत्यधिक उद्दीप्त हो उठने की कई घटनाओं का प्रामाणिक विवरण वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की जाँच-पड़ताल से होकर गुजर चुका है । इसमें एक घटना अमेरिका लड़की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लूलू हर्स्ट की है । उसकी आयु १४ वर्ष की होते-होते एक ऐसा विद्युतीय उभार आया कि सभी सम्बन्धियों के लिए विशेषतया उसके लिए सर दर्द बन गया । वह जिसे भी छूती उसी को बिजली का भारी झटका लगता मनुष्य छूते तो औंधे मुँह गिरते । धातुओं की वस्तुएँ छूती, तो वे बुरी तरह हिलने-डुलने लगती ।

इस अनौखेपन की चर्चा गली-मुहल्ले में फैली और कई दिन कौतूहल के लिए भीड़ इकट्ठी होती रही, पर अन्त में यह मामला विशेषज्ञों के सामने प्रस्तुत किया गया पुलिस आयी वास्तविकता की जाँच-पड़ताल होने लगी । अनेकों परीक्षण हुए । अन्ततः पाया गया कि उसके शरीर से बिजली का प्रवाह फूटता है ।

लड़की तथा उसके अभिभावक कई दिन तक बहुत हैरान रहे कि उसे अछूत बनाकर किस प्रकार रखा जाय और एकाकी निर्वाह में होने वाली कठिनाइयों का सामना कैसे किया जाय । अन्ततः कुछ बुद्धिमान लोगों की सलाह से यह उपाय अपनाया गया कि इस कौतूहल का जगह-जगह प्रदर्शन करके धन कमाया जाय । सूझ-बूझ के साथ वह व्यवस्था बना ली गई । दो वर्ष तक उसकी विशेष स्थिति रही । इस अवधि में उससे लाखों की राशि एकत्रित कर ली । इसके बाद वह उभार उतर गया और लड़की सामान्य जीवन जीने लगी ।

एक ऐसा ही उदाहरण फ्रांस के लावेरे नगर में देखा गया । एगलिन कोटिन नामक लड़की ने जनवरी १९४६ में पन्द्रहवें वर्ष में प्रवेश किया तो उसके शरीर से असाधारण बिजली का प्रवाह फूटने लगा, छूने पर झटके खाने वालों और वस्तुओं के गिर पड़ने की बात वैज्ञानिक अनुसन्धान का विषय बन गई । भौतिक विज्ञानी फेंकाई ऐरगो के नेतृत्व में एक कमेटी इस सन्दर्भ में गहरी जाँच-पड़ताल करने के लिए बिठाई गई । उन्होंने इस विशेषता का कारण शरीर में उभरने वाले विशेष प्रकार के मैगनेट को पाया और इसका प्रभाव न केवल दूसरों पर वरन् उसके निजी शरीर को भी उत्तेजित करता देखा गया ।

'एवनॉर्मल हिप्नोटिक फिनामिना' पुस्तक में एक ऐसी ही तीसरी घटना का भी वर्णन है । लन्दन की १७ वर्षीय लड़की केरोलिन सन् १८७० में बीमार पड़ी । चारपाई छोड़ते-छोड़ते उसे एक नई व्यथा लग गई शरीर से विद्युतधारा फूट पड़ने की । इसका प्रथम बार परिचय तब मिला, जब उसका एक युवक मित्र मिलने आया और जैसे ही चाय का प्याला पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया वैसे ही उँगलियाँ छू जाने के कारण वह झटका खाकर गिरा । इस युवती की स्थिति भी प्रायः दो वर्ष ही ऐसी विचित्र रही बाद में वह भी सामान्य स्थिति में आ गई ।

लन्दन के स्नायु रोग विशेषज्ञ जान एस. क्राफ्ट के सामने भी सुप्रसिद्ध जैनी मार्गन नामक लड़की का प्रसंग आया था जिसमें उसका शरीर बिजलीघर बना हुआ था और उसे बिना सुरक्षा उपकरणों की सहायता लिए कोई उसे छूने का साहस नहीं करता था ।

इस प्रकार की घटनाओं में प्रायः लड़कियों को ही प्रधान रूप से प्रभावित पाया गया है । सो भी चौदह से अठारह वर्ष की उठती आयु में लड़कों की एक भी ऐसी घटना प्रकाश में नहीं आयी ।

हाँ पुरुषों में एक 'स्टोन सलावा' नामक व्यक्ति पोलैण्ड में हुआ है । जिसने १९०८ में वैज्ञानिक जगत में खलबली मचा दी थी । वह इच्छानुसार अपनी उँगलियों से चुम्बकीय किरणें प्रवाहित करता था और धातु विनिर्मित पदार्थों में से जिसे भी हाथ में लेता उसे चुम्बकीय विशेषताओं से सम्पन्न कर देता । उसकी यह विशेषता वैज्ञानिकों के लिए एक विशेष अनुभव एवं अनुसन्धान का कारण बनी रही । उसमें भी यह क्षमता अधिक समय न रही दो तीन वर्षों में ही घटते-घटते समाप्त हो गई ।

देखने में सामान्य लगने वाले मनुष्य शरीर में एक से एक अद्भुत सम्भावनाओं के बीजांकुर भरे पड़े हैं । आवश्यकता उनके उभारने की है । यह साधना द्वारा सम्भव हो सकता है । किन्हीं-किन्हीं की पूर्व जन्मों की साधना भी इस जन्म में काम आती देखी गई है । अनायास ऐसी अद्भुतताएँ प्रकट होना इसी कारण सम्भव होता । जिनमें यह क्षमताएँ प्रकट हों उसका उत्तर-दायित्व है कि वे उन्हें खिलवाड़ में खर्च न करें । मात्र उच्चस्तरीय प्रयोजनों में ही लगाएँ ।

स्पेन की एक ईसाई भिक्षुणी मेरी आमतौर से अपने गिरजे में ही रहती थी । पूजा में निरत रहती और अहाते से बाहर भी नहीं निकलती थी, फिर भी उसके बारे में यह कहा जाता रहा कि वह सूक्ष्म शरीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में मैक्सिको में बसे आदिवासियों में ईसाई धर्म का प्रसार करने जाती रहती है । तथ्य की जाँच-पड़ताल करने के लिए जैम्स कैरिको ने अमेरिका का दौरा किया और उसने प्रस्तुत प्रमाणों के साथ यह विवरण छिपाया कि वस्तुतः मेरी मैक्सिको जाती है । वहाँ के आदिवासी उसे नीली पुतलियों वाली देवी के नाम से जानते और चली जाने पर उसके आगमन की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते रहते हैं ।

जिन दिनों गोवा भारत में पुर्तगाल का उपनिवेश था । उन दिनों एक पुर्तगाली व्यवसायी अचानक गायब हुआ और कुछ ही क्षणों में अपने देश में जा प्रकट हुआ उसने यह आश्चर्यजनक विवरण सुनाया तो किसी ने विश्वास नहीं किया वरन् अतिश्योक्ति कहने के अपराध में उसे जीवित जला दिया गया । बाद में खोज करने पर ऐसे प्रमाण मिले जिससे सिद्ध हुआ कि वस्तुतः व्यवसायी ने जैसा कहा था वही तथ्य था ।

पौराणिक कथाओं में भी मनुष्य में अतीन्द्रिय सामर्थ्यों की सम्भावना सम्बन्धी अनेकों प्रमाण मिलते हैं । कभी इन बातों को कपोल कल्पनाएँ कहा जाता था, पर अब वैसी स्थिति नहीं रही । कई प्रत्यक्ष प्रमाणों की जाँच-पड़ताल करने के उपरान्त प्रत्यक्षवादी जिस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, उसके अनुसार मनुष्य में ऐसी सामर्थ्यों का होना शक्य माना गया है, जो मानवी सामर्थ्य से बाहर की हैं, इन्द्रियातीत हैं ।

महाबली रावण मायावी विद्याओं का जाना-माना महामान्त्रिक था । उसने दस सिर, बीस भुजा, देव-विजय, स्वर्ण भवन, काल-विजय जैसी अनेकों अद्भुत सिद्धियों का अर्जन किया था । मारीच ने सीताहरण में जो भूमिका निभाई उससे विदित होता है कि वह अदृश्य प्रकट होने की आँख-मिचौनी खेलता था और वेश बदलकर मनुष्य से स्वर्ण-मृग बन जाने जैसी छद्मों में प्रवीण था । हनुमान जी ने "मसक समान रूप कपिधरी" और "तव कपि भयेऊ भू धरा कारा" जैसी अनिमा और महिमा सिद्धियों का परिचय दिया था ।

ये समस्त उदाहरण एक ही तथ्य का प्रतिपादन करते हैं कि मनुष्य अद्भुत क्षमताओं का पुंज है । असीम सम्भावनाएँ उसमें छिपी पड़ी हैं । कभी-कभी यदा-कदा छुटपुट घटनाएँ जो प्रकाश में आती रहती हैं, अतीन्द्रिय सामर्थ्य की वास्तविकता ही प्रमाणित करती हैं । यदि इन्हें सुनियोजित किया जा सके, इनसे प्रेरणा लेकर इनका प्रयोग मात्र प्रदर्शन में नहीं उच्चस्तरीय व्यक्तित्व सम्पन्न बनने हेतु करने का संकल्प उठने लगे तो ही इनकी सार्थकता है । विधाता ने किसी को शक्ति दी है तो छीनने का भी उसे पूरा अधिकार है । यदि प्राप्त सामर्थ्य का दुरुपयोग होगा तो वे स्वतः लुप्त भी हो सकती हैं । अनुशासन की विधि-व्यवस्था में संचालित यह धरती और सारा चेतन जगत इस तथ्य का प्रमाण समय-समय पर देते रहते हैं ।

किनमें जागती है अतीन्द्रिय सामर्थ्य ?

मानवी अन्तराल दिव्य विभूतियों का भाण्डागार है । चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार की उत्कृष्टता एवं उदात्तता ही जीवन के वे वातायन हैं जिनके माध्यम से उनका जागरण होता है और दैवी अनुदान तथा दिव्य वरदान व्यक्तित्व में उतरते, उभरते और जीवन को धन्य बना देते हैं । अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास इससे कम में सम्भव नहीं ।

अमेरिका स्थित "फ्राइवर्ग यूनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट फार ब्रोडर एरिया ऑफ साइकोलॉजी" के विभागाध्यक्ष प्रख्यात मनोवैज्ञानिक एलेन वाघेन एक ऐसे ही व्यक्तित्व थे । लोग उन्हें सादा जीवन उच्च विचार की जीवन प्रतिमा मानते थे । स्वयं के प्रति कठोरता और दूसरों के प्रति उदारता उनका जीवन आदर्श था । जीवन के प्रति इसी उच्चस्तरीय दृष्टिकोण ने उनके अन्तराल को खरे सोने की भाँति प्रखर बना दिया । बिना किसी कठोर तप, तितीक्षा एवं योगसाधना के अतीन्द्रिय क्षमताएँ विकसित हो गईं । इसका प्रथम आभास उन्हें ५ अप्रैल, १९६८ को हुआ जिसमें तत्कालीन अमेरिका राष्ट्रपति के भाई राबर्ट केनेडी की हत्या कर दिए जाने के स्पष्ट दृश्य मानस पटल पर दिखाई देने लगे । इसकी सूचना उन्होंने उन तक पहुँचाई भी, पर तब लोगों ने उन पर सहज विश्वास नहीं किया और बात आयी गई हो गई, पर घटना के उक्त तिथि पर घट जाने से सभी को उन पर आश्चर्य भी हुआ और विश्वास भी ।

इसी प्रकार २९ अप्रैल एवं २८ मई, १९६८ को उन्होंने अपने अन्तरंग मित्र एवं मूर्धन्य परामनोविज्ञानी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्टेनली क्रिपनर को एक इसी आशय का पत्र लिखा, जिसमें जान एफ केनेडी एवं मार्टिन लूथर किंग की हत्या की आशंका प्रकट की गई थी और कहा गया था कि उन्हें सावधान रहना चाहिए, पर साथ ही इस बात का भी उल्लेख किया था कि वे सतर्क नहीं रह पायेंगे और घटना घट जायेगी । कुछ ही दिनों में उनकी आशंका सत्य साबित हुई और दोनों की थोड़े-थोड़े अन्तरालों में हत्या कर दी गई ।

फ्रांस में जन्मे प्रसिद्ध भविष्यवक्ता पीटर हरकौस के बारे में शायद बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होगा, कि उनमें अतीन्द्रिय क्षमता का विकास कैसे हुआ । हुआ यों कि जब वे पढ़ाई समाप्त कर चुके, तो उनके परिवार वालों की इच्छा हुई कि वह कोई अच्छी और उच्च पद पर नौकरी करके परिवार का सम्मान बढ़ायें । कई प्रस्ताव भी इस हेतु उन्हें प्राप्त हुए, पर उनकी इच्छा कुछ और थी । पद और प्रतिष्ठा के चक्कर में न पड़ कर जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने एक सामान्य शिक्षक की नौकरी कर ली और शेष समय में वे फ्रांस के कबाइली क्षेत्र में जाकर उनकी सेवा करते, रहन-सहन का ढंग बताते, उनके बच्चों को शिक्षा देते । इसी कारण उस क्षेत्र के लोग आदर से उन्हें "सन्त हरकौस" कहकर पुकारने लगे । अनेक वर्ष बीत गए । इसी बीच उन्हें ऐसा महसूस होने लगा, जैसे उनमें कोई विशिष्ट क्षमता विकसित हो रही हो । एक दिन उस क्षेत्र में एक घटना घट गई । किसी ने वहाँ के एक कबाइली की हत्या कर दी । उन्हें सूचना मिली, तो वे तत्काल वहाँ पहुँचे । लाश को देखते ही उनके मस्तिष्क पटल पर हत्या का सारा दृश्य घूम गया । किसने, किन परिस्थितियों में किन कारणों से उसका कत्ल किया, अनायास ही यह सब कुछ उन्हें ज्ञात हो गया । बाद में इसी आधार पर अपराधी पकड़ा गया और उसने इसे स्वीकार किया । इसी के बाद फ्रांस का गुप्तचर और पुलिस विभाग ऐसे मामलों में उनकी सेवाएँ लेने लगे । उनका कहना था कि वह मृत व्यक्ति के वस्त्र को देखकर ही सारे घटनाक्रम पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाल सकता है ।

जिज्ञासावश एक व्यक्ति ने उनसे प्रश्न किया कि ऐसी क्षमता तो कठिन साधना के बाद ही विकसित हो पाती है फिर आप अपने जीवन की इस अद्‌भुत क्षमता के लिए किसे जिम्मेदार मानते हैं ? उनका सीधा और सपाट उत्तर था—अपने विशिष्ट सेवा और सादगीयुक्त जीवनक्रम को ।

इस प्रकार लगभग सभी अतीन्द्रिय सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्तियों के जीवनक्रम को देखने और परखने से जिस एक निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है, वह है सादगी सच्चरित्रता और सेवापरायणता । यही जीवन के वह उपादान हैं, जो ईश्वरीय शक्ति को खींचकर अपने अन्दर प्रतिष्ठित व प्रकट होने के लिए विवश कर देते हैं । यदि ऐसा जीवन जीया जा सके, तो कोई कारण नहीं कि हम में से हर कोई विलक्षण और विशिष्ट कही जाने वाली शक्तियों के स्वामी न बन सकें ।

आज लोग चेतना शक्ति को सूक्ष्म और समर्थ न बना पायें तो यह दोष आत्म-विद्या का मन्त्र-शक्ति का नहीं वरन् लोगों की भौतिकतावादी आसक्ति का है हमें जानना चाहिए कि हमारे भीतर क्रियाशील आत्म-चेतना की शक्ति और सामर्थ्य अकूत है योग साधनाओं द्वारा उसे प्रखर बनाया जा सके तो बरसात को रोकना तो क्या सूर्य जैसी महाशक्ति की ऊर्जा का हस्तान्तरण कर सारे सौर-मण्डल का मन्थन और युग परिवर्तन तक किया जा सकता है थोड़े से भू-भाग की तो बात ही क्या है ।

इस प्रकार की योग-शक्ति का प्रदर्शन अकेले भारतवर्ष में मलाया में ही होता हो शेष विश्व उससे अनभिज्ञ हो सो बात नहीं । इस सम्बन्ध में "रिसर्चेज साइकोलॉजिक आडकरेस्पाण्डेन्स सर ला मैग्नेटिज्म वाइटल एण्ट्रेन्स सालिटेयर एट एम डिल्यूज" पेरिस (फ्रांस) के अध्यक्ष डॉ. बिल्लाट ने व्यापक शोधें की हैं और इन क्रियाओं को पदार्थ-विज्ञान के समान ही व्यवस्थित विज्ञान की संज्ञा दी है । २७ अक्टूबर, १८२० के दिन एक अन्धी स्त्री ने डॉ. बिल्लाट के आग्रह पर प्रदर्शन किया और अपनी पराशक्ति से एक फूल मँगाकर वहाँ उपस्थित सैकड़ों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया ।

रैन्थम (मैसाच्युसेट्स) में एक डॉक्टर रहते थे । उनका नाम था डॉ. लार्किन इनके घर में एक नौकरानी थी जिसका नाम था "जेनी" । जेनी के बारे में लोगों में एक चर्चा सारे मुहल्ले में व्याप्त थी कि उसने अपनी इच्छा शक्ति पर इतना जबर्दस्त अधिकार प्राप्त किया हुआ है कि सैकड़ों मील दूर की वस्तु भी अपनी इच्छा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति से मँगा सकती हैं और वापस भेज भी सकती हैं । डॉ. लार्किन को इन सब बातों पर विश्वास नहीं था वे प्रायः इस सत्य का प्रतिवाद किया करते । "जेनी" जानती थी कि प्रदर्शन से किसी को थोड़ी देर के लिए आश्चर्य चकित तो किया जा सकता है पर प्रदर्शन अन्ततः अपने दर्शन और परा विद्या तीनों के अहित में ही होता है । सो वह डॉक्टर के साथ विवाद नहीं चाहती थी, किन्तु डॉ. लार्किन उसके पीछे ही पड़ गए तब, १८४० की बात है जेनी ने एक दिन प्रदर्शन की आज्ञा देदी ।

डॉ. लार्किन ने उन लोगों को इकट्ठा किया जो इस पर विश्वास करते थे ताकि उन्हें मौके पर ही अन्ध-श्रद्धालु प्रमाणित किया जा सके । अपने मित्रों परिजनों के अतिरिक्त उन्होंने नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी सम्मिलित किया । उन्होंने अपनी ओर से कोई डेढ़ वालिस्त का एक टुकड़ा लिया और उसे अपने रसोई घर के सामने जाकर रख दिया फिर सब लोगों के साथ मकान के बड़े वाले हॉल में उपस्थित हुए । दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दिए गए जिससे बाहर की हवा तक भी अन्दर न आ सके ।

जेनी ने मन्त्र पढ़ा, प्रार्थना की और मन ही मन में उथल-पुथल करने वाली शक्ति का संचार किया । न कोई खटका हुआ न शीशा टूटा । दरवाजे ज्यों के त्यों बंद थे । तभी पास में फर्श पर डाले कपड़े को जेनी ने उठाया लोग आश्चर्य चकित रह गए यह देखकर कि ठीक वही लोहे का टुकड़ा जो बाहर रसोई घर के सामने रखा गया था कपड़े के नीचे रखा हुआ है । डॉ. लार्किन अपने साथियों सहित रसोई घर की तरफ गए जाकर देखो तो वहाँ से लोहे का टुकड़ा गायब था । रसोई घर का ताला लगाकर चाबी अपने हाथ में लिए वे वापस लौटे और बोले-अच्छा जेनी ! अब इस टुकड़े को रसोई घर के अन्दर पहुँचा दो । जेनी ने क्रिया-योग का प्रयोग किया और फिर कपड़ा उठाया तो उसके नीचे से लोहे का टुकड़ा गायब था । डॉ. लार्किन वापस लौटकर रसोई घर गए ताला खोला तो देखा कि वहाँ ठीक वहीं लोहे का टुकड़ा रखा हुआ है । पदार्थ किस प्रकार से वायु भूत होकर एक स्थान से दूसरे स्थान उड़ जाता है और किस प्रकार परमाणुओं का एक स्थान पर संलयन हो जाता है । यह सब डॉ. लार्किन समझ नहीं सके किन्तु उन्होंने मान लिया कि इच्छा शक्ति-मन्त्र शक्ति में वस्तुतः कुछ यथार्थ अवश्य है ।

सामान्य क्रिया-कलाप देखने में शरीर करता दिखाई देता है पर उसमें इच्छा की ही मूल प्रेरणा रहती है वह प्रेरणा विद्युत शक्ति की भाँति शरीर में इफरेन्ट नाड़ियों द्वारा शरीर के किसी विशेष अंग तक जाती और "अफरेण्ट नाड़ियों द्वारा संदेश लाती हैं । यदि मन को पूर्ण एकाग्र किया जा सके तो नाड़ियों में दौड़ने वाली इस अग्नि विद्युत को बहुत दूर तक भेजा, पदार्थ को जलाया, टुकड़े-टुकड़े किया जा सकता है और वायुभूत कणों में इच्छा शक्ति द्वारा ही कहीं भी खींचकर एकत्र किया जा सकता है । योग विज्ञान में यह बहुत ही छोटा चमत्कार है पदार्थ वादियों के लिये इसमें चाहे जितना कौतुक क्यों न भरा हो ?"

अतीन्द्रिय क्षमता बनाम प्रचण्ड आत्म-शक्ति

परा-मनोविज्ञान शाखा के अन्तर्गत अतीन्द्रिय क्षमताओं के कई अचरज भरे प्रदर्शन देखने को मिलते हैं । दूरदर्शन, दूरश्रवण, स्वप्नसन्देश, प्रेतसम्पर्क, भविष्य कथन, पुनर्जन्म विषयक ऐसी अनहोनी घटनाएँ हैं, जो सामान्यतया देखने को मिलती हैं, इन्हीं की खोजबीन होती रहती है और यह पता लगाने का प्रयत्न किया जाता रहता है, कि मस्तिष्क में क्या और क्यों ऐसी विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं जो सामान्यजनों में देखने को नहीं मिलती । इन दिनों भौतिकवाद की दृष्टि में इतना ही छोटा आध्यात्मवाद है । इन सब में जो अतीन्द्रिय क्षमता के नाम से देखा जाता है, उसमें एक तथ्य समान रूप से काम करता है कि किसी व्यक्ति विशेष में यह क्षमताएँ उत्पन्न हुई देखी जाती हैं, उसे निजी रूप से चमत्कारी अनुभव होते हैं । वह उनका विवरण दूसरों को सुनाता है । जाँच करने पर वह कथन सही पाया जाता है । आश्चर्य प्रकट किया जाता है और कारण की खोज पर माथा-पच्ची होती रहती है । अब तक यही होता रहा है ।

इस विधा से एक चरण और बढ़ना चाहिए था तभी बात दूसरों तक पहुँचती, जो अनुभव स्वयं होते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, वे दूसरों को भी कराये जाते । अपने अन्दर जो विशेषता प्रकट हुई है, वह दूसरों में भी प्रकटाई जाती । विवरण को सुनने वालों से जो बात सम्बन्धित है उसका वे लाभ उठा लेते हैं, पर इससे आगे बढ़कर वे अपना कार्यक्षेत्र नहीं बढ़ा सकते । उस शक्ति से अन्यान्यों को सम्पन्न नहीं कर सकते, जो अनुभव अपने को होते हैं उससे घनिष्ठ लोगों का ही सम्बन्ध होता है । ऐसा नहीं होता कि जो उस मण्डली में नहीं है वे भी उस विशेष वेत्ता की सहयता से वैसी ही जानकारियाँ प्राप्त कर सकें अथवा लाभ उठा सकें ।

आँख में पट्टी बाँध कर मोटर साइकिल चलाने में मात्र इतना ही आश्चर्य है कि जो कार्य खुली आँखों से किया जा सकता है, उसे दूसरा आदमी आँखें बन्द करके कर सकता है । अच्छा होता ऐसे व्यक्ति किन्हीं अन्धों की दृष्टि खोल देते हैं और वे सामान्य लोगों की तरह देखना आरम्भ कर देते । तब तो यह भी कहा जा सकता था कि इस जादुई शक्ति का कोई वास्तविक लाभ भी है । जादूगर अपनी हाथा-फेरी से कई तरह के तमाशे दिखाते रहते हैं । वर्तमान विज्ञात अतीन्द्रिय क्षमता को लगभग उसी स्तर की कहा जा सकता है और इस प्रकार के व्यक्ति को एक खास किस्म का जादूगर समझा जा सकता है । मृतकों का आह्वान करने वाले अपने मित्र सम्बन्धियों को ही बुलाते और घर-गृहस्थी की ही बातें पूछते देखे गए हैं । अभी तक किसी ने यह हिम्मत नहीं की कि राष्ट्रीय गुत्थियों को सुलझाने के लिए सरदार पटेल, पं. नेहरू, महात्मा गाँधी जैसे सुलझी हुई आत्माओं का परामर्श प्राप्त करें और सिद्ध करें कि यह परामर्श सचमुच उतने सुलझे हुए स्तर के लोगों का ही हो सकता है ।

तान्त्रिक हवा में हाथ मार कर लौंग, इलायची के कुछ दाने मँगा सकते हैं । ऐसा नहीं कर सकते कि एक बोरी लौंग नित्य मँगा दिया करें अथवा हीरा-पन्ना आदि बहुमूल्य रत्न नित्य मँगाकर किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की पूर्ति हेतु आर्थिक कठिनाई का चिरस्थायी समाधान कर दें । शाप-वरदान भी उनके छोटे स्तर के ही होते हैं । भविष्य कथन भी अनिश्चित । किसी विषय में यहाँ तक कि तेजी-मन्दी तक के सम्बन्ध में छाती ठोंक कर कुछ नहीं कह सकते । लाटरी के नम्बर या सट्टे के उतार-चढ़ाव तो क्या बतायेंगे । शाप-वरदान भी वे मुहल्ले, पड़ोस वालों को ही दे पाते हैं । राष्ट्रों की बदलती राजनीति को मनचाही दिशा में मोड़ देने की सामर्थ्य किसी अतीन्द्रिय क्षमता का दावा करने वाले में नहीं देखी गई ।

इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए परा-मनोविज्ञान शाखा के अन्तर्गत जिस अतीन्द्रिय क्षमता के प्रामाणिक सबूत भी पाये गए हैं उनमें इतना ही निष्कर्ष निकलता है कि यह जादूगर स्तर का कोई खेल तमाशा भर है । इसके सहारे किन्हीं बड़ी सार्वजनिक समस्याओं का हल निकालने की आशा नहीं की जा सकती । ऐसी दशा में उसे आध्यात्म शक्ति भी नहीं कहा जा सकता । बहुत हुआ तो मानसिक विकास का एक चरण भर कह सकते हैं । हिप्नोटिज्म सम्मोहन का खेल मात्र उनसे हो सकता है । वे लोगों को अचम्भे में डाल सकते हैं । उनकी गतिविधियाँ कुछ ही व्यक्तियों तक सम्बन्ध साधने या प्रभावित करने की हो सकती हैं । ऐसी दशा में किसी महत्त्वपूर्ण भूमिका की भी उनसे आशा नहीं की जा सकती ।

यह चर्चा गुरुदेव के सूक्ष्मीकरण प्रयास के सन्दर्भ में कही जा रही है । इसे पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहने वाले जादुई घटनाक्रमों से सर्वथा भिन्न समझा जाना चाहिए । उसका प्रभाव मित्र-पड़ोसियों को कोई छोटी हानि लाभ पहुँचाने जैसा होगा, यह भी नहीं सोचना चाहिए । ऐसा तो उनके जीवन में सदा ही होता रहा है । लोगों ने ध्यान दिया नहीं, वरन् हर दिन उनके क्रियाकलापों में विलक्षणता देखी जा सकती थी । उन्हें कुछ बड़ा काम करना है, व्यापक काम करना है, इसलिए अतीन्द्रिय क्षमताओं में उनके सभी संकल्प, प्रयास एवं कार्यक्रमों को नहीं गिनना चाहिए । वे बड़े कदम उठाने जा रहे हैं उसी की तैयारी में उनकी मौन एकान्त साधना इन दिनों चल रही है ।

युग परिवर्तन से सम्बन्धित कदमों में वातावरण को बदलना प्रमुख है । वातावरण को बदलने के लिए व्यक्तियों का स्तर बदला जाना है । इसके साथ-साथ सार्वजनिक गतिविधियों में उथल-पुथल होना आवश्यक है । यह तीनों ही काम ऐसे हैं । जिसके लिए विशिष्ट कार्य पद्धति अपनानी होगी और उसके लिए विशेष क्षमता चाहिए । बुद्धकाल में जन-साधारण की मनोवृत्ति धर्म के नाम पर कुकर्मों में निरत और प्रसन्न रहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की थी । उस वातावरण को बुद्ध द्वारा बदला गया । कुछ ही दशाब्दियों में न केवल भारत का वरन् समूचे एशिया का काया कल्प हो गया है । इतने बड़े परिवर्तन की सहज आशा न थी । गाँधी काल अद्भुत था । दो हजार वर्षों की पराधीनता भोगते-भोगते मनुष्य का रोम-रोम गुलाम हो गया था । अंग्रेजों के सात समुन्दर तक फैले हुए शासन का आतंक ऐसा था जिसमें किसी के हाथ-पाँव चलना तो दूर मुँह तक नहीं खुलता था, पर वातावरण ऐसा बदला कि गाँधी की आँधी पत्तों और धूल कणों को उड़ाकर आसमान तक ले गई और परिस्थितियाँ इतनी बदलीं की अंग्रेजों को पैर जमाए रहना मुश्किल हो गया । उन्होंने सलाह मशविरा करके सत्ता हस्तान्तरित कर दी ।

रावण का आतंक पूरी तरह छाया हुआ था । सीता को वापस लाने के युद्ध में एक भी राजा सहयोगी न बना । सबको अपनी-अपनी जान प्यारी थी । उस जमाने में रामराज्य की स्थापना का माहौल बना । न केवल सोने की लंका वाला दसशीश बीस भुजा वाला रावण मरा, उसके एक लाख पूत सवा लाख नाती वाला कुटुम्ब भी सफाचट हो गया । उन दिनों कोई आशा नहीं करता था कि १४ वर्ष के वनवास काल में इतनी बड़ी उथल-पुथल सम्भव हो जायेगी ।

यह वातावरण की बात हुई । व्यक्तियों के पुरुषार्थ का प्रसंग भी देखने ही योग्य है । तान्त्रिक अनाचार के विरुद्ध जहाँ किसी की भी जीभ नहीं खुलती थी वहाँ देखते-देखते लाखों चीवरधारी भिक्षु-भिक्षुणी मैदान में कूद पड़े और भारत एशिया समेत विश्व में धर्म चक्र प्रवर्तन की असम्भव प्रक्रिया को सम्भव कर दिखाने लगे । यह आँधी-तूफान का काम था । उपदेश सुनाने भर से इतने लोग किस प्रकार इतने बदल जाते और जो कार्य जीवन भर में कभी सुना सीखा तक नहीं था उसे कैसे कर दिखाते सत्याग्रहियों की सेना में लाखों निहत्थे लोग जेल जाने, घर बर्बाद करने, गोली खाने, फाँसी पर चढ़ने के लिए तैयार हो गए । इन्हें कहीं फौजी ट्रेनिंग नहीं मिली थी । जिन्हें वर्षों खर्चीली ट्रेनिंग मिलती है उनमें से भी बहुतेरे पीठ दिखाकर भागते देखे गए हैं, पर गाँधी के सत्याग्रही रातों रात न जाने कहाँ ढलकर आ गए और ऐसा कमाल दिखाते रहे जिससे सारी दुनिया दाँतों तले उँगली दबाये रह गई । यह व्यक्ति निर्माण है । गोवर्धन पहाड़ का वजन उठाने वाले इतने वजन के नीचे पिचककर मर सकते थे, पर हिम्मत का कमाल देखा जाय कि गोवर्धन उठाना था तो उठा करके ही दम लिया । लंका युद्ध तो छिड़ गया पर सैनिक कहाँ से आये । दैत्य कुम्भकरण जैसों के मुँह में चारा बनते की हिम्मत किस समझदार में उत्पन्न हो । रीछ, वानर रातों-रात दौड़ते चले आए और निहत्थी स्थिति में अस्त्र-शस्त्रों वाले असुरों से भिड़ पड़े । रीछों ने इन्जीनियरों की शानदार भूमिका निभाकर रख दी इसे कहते हैं दैवी चमत्कार ।

इस प्रक्रिया में पराक्रम और साधनों का अगला चरण है, अंगुलिमाल जैसे दुर्दान्त दस्यु ने उस दिन बुद्ध का सिर उतार लेने की योजना बनाई थी । निहत्थे साधु के सामने पहुँचा तो शक्ति हीन हो गया । थर-थराकर काँपने लगा और शत्रुता छोड़कर मित्रता के बन्धन में बँध गया । साधनों की बारी आयी तो बिना झोली पसारे ही काम चल गया । आम्रपाली का तीस लाख का खजाना एक ही दिन में मिला और ढेरों संघाराम वाला विहार बनकर तैयार हो गया । काम बढ़ा सो बड़े साधनों की आवश्यकता पड़ी । नालन्दा विश्वविद्यालय के संचालन का काम अशोक ने और तक्षशिला का उत्तरदायित्व हर्षवर्धन ने अपने कन्धे पर उठा लिया । चीन के समूचे क्षेत्र में अवरोधों का ढाँचा सहयोगियों में बदल गया गाँधी का युद्ध, राणा प्रताप के युद्ध से बड़ा था तब एक भामाशाह निकलकर आये थे । अब जमुनालाल बजाजों की भीड़ लग गई । पराक्रमियों में क्रांतिकारियों की ग़दर पार्टियाँ देश-विदेश में तहलका मचाने लगीं । सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह और चन्द्रशेखरों की कमी न रही । धन के बिना, साधनों के बिना भी वह काम रुका कहाँ ? विनोबा जैसे अकिंचन पचास लाख एकड़ जमीन माँग लाए । गाँधी स्मारक निधि पर एक करोड़ और कस्तूरबा निधि पर साठ लाख रुपया बरस पड़ा । खादी उद्योग, सर्वोदय जैसी गाँधी द्वारा आरम्भ की गई अतिरिक्त प्रवृत्तियों में अरबों रुपया लग गया । यदि समूचे स्वतन्त्रता संग्राम का कोई अनुमान लगाए तो प्रतीत होगा कि उसमें न साधन कम लगे, न पराक्रम में न्यूनता पड़ी । राम इधर से नंगे पैरों वनवास गए थे, उधर से पुष्पक विमान में बैठकर आये । कृष्ण वन में गौवें चराते थे, पर पीछे उनके साथी द्वारिकापुरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वासी और वे स्वयं द्वारिकाधीश कहलाए । पराक्रम तो उन्हें भी बचपन से ही करना पड़ा ।

यह इतिहास की कुछेक प्रतिभाओं की चर्चा है । जिन्होंने वातावरण बदला-सुयोग्य सहकर्मियों की मण्डली जुटाई और पराक्रम तथा साधना की आवश्यकता पड़ी तो दौड़ती चली आयी । जमाने की प्रतिकूलता एक ओर और एक व्यक्ति का पौरुष एक ओर । घनघोर अन्धेरे में प्रकाश उत्पन्न करने वालों को आध्यात्मवादी कहा जा सकता है । जिन्होंने अपनी अथवा दूसरों की आत्म-शक्ति के सहारे समूचे समय को बदल डालने वाले चमत्कार दिखाए, उनके सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि उनमें आत्म-शक्ति की और उसके सहारे उन्होंने ऐसे काम कर दिखाए जो आत्म-शक्ति की गरिमा को बताते और बढ़ाते हैं ।

प्रश्न प्रचलित अतीन्द्रिय क्षमताओं का है जो इन दिनों परा-मनोविज्ञान के नाम पर तथाकथित अतीन्द्रिय क्षमताओं के नाम पर शोध का विषय बनी हुई हैं । ऐसे कितने ही व्यक्तियों की, उनके चमत्कारों की चर्चा होती रहती है और समझा जाता है कि आत्म-शक्ति नाम की यदि कोई वस्तु होती है तो उसकी इतनी ही छोटी सीमा है । यहाँ इन पंक्तियों में यह बताया जा रहा है कि आत्मबल इससे सर्वथा भिन्न है । उसमें कौतुक-कौतूहल नहीं है । वरन् वैयक्तिक न होकर सार्वजनिक उपयोग का अति महत्त्वपूर्ण भण्डार है । उसका उत्पादन आड़े समय में होता है । महामानव उसे उत्पन्न करते हैं और उसका सुनियोजन वातावरण को बदलने में, सहयोगी महामानवों की सेना जुटाने में होता है । पराक्रम पौरुष की आवश्यकता उसी के बलबूते पूरी की जाती है और साधनों को इस प्रकार जुटाया जाता है जैसे सूखे आसमान में से घटाटोप वर्षा होती है और हरितिमा का दृश्य देखकर आँखें अचम्भे से चकित हो जाती हैं ।

उनकी आँखों से वेधक किरणें निकलती थीं

"आपको लोग 'एक्सरे' आँखों वाली महिला कहते हैं ? आखिर इसका रहस्य क्या है ? आप में इस दिव्य क्षमता का विकास कैसे हुआ ? क्या आपने कोई विशिष्ट साधना की है ?" एक पत्रकार ब्रिटेन की विलक्षण शक्ति उत्पन्न महिला एनी ओवन्स से ताबड़तोड़ प्रश्न किए जा रहा था । ओवन्स ने बड़े धैर्यपूर्वक उसके सवालों को सुना और संक्षेप में उत्तर दिया "जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैंने ऐसी कोई साधना नहीं की है, जो ऐसी दिव्य सामर्थ्य के उद्भव के लिए जिम्मेदार होती है । हाँ, पर एक काम मैंने अपने जीवन में अवश्य किया है, वह है सच्चे अर्थों में आध्यात्म को समझने और उसे जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास-अभ्यास । मैंने महत्त्वाकांक्षा रहित जीवन जीया और अपनी योग्यता, क्षमता और सम्पदा से अभावग्रस्तों की सहायता करने में कोई कोर-कसर उठा न रखी । मैं इसे ही अपनी अद्भुत क्षमता के विकास के लिए उत्तरदायी मानती हूँ । मैंने भौतिक अनुदान सत्पात्रों को बाँटे और बदले में भगवान का दिव्य प्रतिदान हाथोंहाथ इसी जन्म में प्राप्त किया ।"

यह उद्गार थे, एनी ओवन्स के, जो १९३० के दशक की इंग्लैण्ड की बहुचर्चित महिला रही थीं । उन्होंने "माइ लाइफ इटसेल्फ इज ए मिरेकल" नाम से अपनी एक आत्म-कथा लिखी है, जिसमें ढेर सारी ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है, जिन्हें आश्चर्यजनक कहा जा सके । एक घटना का उल्लेख करते हुए वह लिखती हैं कि एक दिन दोपहर में आराम करने की नीयत से जैसे ही वह बिस्तर में लेटीं और आँखें बन्द कीं, वैसे ही फिल्म की भाँति एक दृश्य मानस पटल में घूम गया । दृश्य 'हैराल्ड ऑफ फ्री इण्टरप्राइज' में फँसे एक पानी वाले जहाज का था, जिसके सभी यात्री बड़े बेचैन दिखाई पड़ रहे थे और मौत से बच निकलने का प्राणपण से प्रयत्न कर रहे थे । सहायता हेतु भगवान से करुण प्रार्थना कर रहे थे । वे कहती हैं कि उनके कणों तक वह आवाजें स्पष्ट पहुँच रही थीं । तभी उन्होंने देखा बचाव कार्यों में जुटे गोताखोरों ने भी निराश होकर बचाव कार्य बन्द कर दिए । वह उठ बैठीं और ध्यान के माध्यम से दूर सम्वेदी तरंगें गोताखोरों तक भेजने और प्रेरणा देने लगीं—"प्रयास जारी रखो, बन्द मत करो ।"

इसके बाद एनी ने आपात सेवा प्रदान करने वाले विभाग को फोन किया कि अमुक स्थान पर एक जहाज और उसके यात्री मौत के मुँह में फँसे हुए हैं, कृपया उन्हें जल्द ही आपात सेवा प्रदान की जाय, पर उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोगों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया । सम्भवतः वे यह समझ रहे हों कि इस घटना की जानकारी तत्सम्बन्धी विभाग को न होकर एक सामान्य सी महिला को किस तरह हो सकती है, यह मानकर विभाग ने विनती टाल दी हो जब वहाँ से इस दिशा में कोई कदम उठता दिखाई न पड़ा, तो एनी ने स्थानीय रेडियो स्टेशन परिचित प्रोड्यूसर गैरी सैवेज को इस आशय का फोन किया और उन्हें किसी प्रकार सहायता प्रदान करने की विनती की । गैरी ने पुनः सम्बन्धित अधिकारियों से इसके लिए प्रार्थना की । इसके बाद ही संकट में फँसे यात्रियों को बचाया जा सका ।

एनी ने अपनी इसी क्षमता के सहारे एक पुलिस अफसर की, हत्यारे को पकड़ वाने में सहायता की थी । हत्यारा कोई भी सुराग नहीं छोड़ गया था । एनी ने हत्या की गई लड़की का फोटो और खून से लथपथ वस्त्रों को ध्यानपूर्वक अवलोकन किया । बस फिर क्या था, सारा घटनाक्रम फिल्म की तरह उसके नेत्रों के आगे घूम गया । उसके दिव्य नेत्रों ने देखा कि लड़की का हत्यारा उसका ही अन्तरंग मित्र कार्ल हैन्स स्काफनर है । इसी सूचना के आधार पर वह पकड़ा गया । बाद में उसने अपराध भी स्वीकार कर लिया ।

एक बार एनी अपने पिता के साथ कार में सैर करने को निकली । अचानक उसके सामने एक दृश्य उभरा, जिसमें दिखाई पड़ा कि कार का एक पहिया निकल रहा है । वह चीख पड़ी, "डैडी ! डैडी कार रोकिए । दुर्घटना होने वाली है ।" पिता ने कार रोकी और देखने के लिए बाहर निकले । जब दृश्य देखा, तो दुर्घटना की कल्पना कर ही रोमांचित हो उठे । कहने लगे, "यदि थोड़ी भी देर होती, तो कोई नहीं बचते, बेटी ।

किशोरावस्था से ही एनी के विलक्षण चमत्कार लोगों को दिखाई पड़ने लगे थे । वह अपनी आत्म-कथा में लिखती हैं "मैं हमेशा जानती थी कि परिवार के किस व्यक्ति को क्या तकलीफ है । अपनी वेधक दृष्टि उन पर डालती और पूछती क्या तुम्हारी छाती में दर्द है ? और हमेशा ही मेरा अनुमान सही होता, मैं व्यक्ति के वस्त्र के अन्दर छिपी किसी भी वस्तु को स्पष्ट देख सकती थी, जैसे वह वस्तु प्रत्यक्ष मेरे सामने रखी हो ।"

एक बार उसकी चाची, जो कि पड़ोस में ही रहती थी, के यहाँ एक बड़ी मजेदार घटना घट गई । चाची रायसा का एक स्वर्ण आभूषण ड्रेसिंग टेबल से अचानक एक दिन गायब हो गया । रायसा ने समझा कि शायद उसने आभूषण कहीं अन्यत्र रख दिया हो, अतः सारी आलमारियों और दूसरे स्थानों में इसकी गहराई से ढूँढ़ तथा खोज की गई, पर वह वहाँ रहता, तब तो मिलता । आखिर हार कर उसने यह अनुमान लगा लिया कि वह चोरी चला गया, पर दोष किस पर लगाये ? घर में तो कुल चार सदस्य थे—पति पत्नी और बच्चे । बच्चे ऐसे थे नहीं, कि उन पर शक किया जाय । फिर गहना कहाँ गया ? किसी की समझ में नहीं आ रहा था । अन्ततः मामला एनी के पास पहुँचा । सब कुछ सुनने के बाद वह थोड़ी देर चुपचाप आँखें बन्द कर बैठ गई । दूसरे ही पल आँखें खोलीं और मुस्कराते हुए बोली "चाची ! आभूषण आपके एक पालतू पशु ने अपने घर छिपा रखा है ।" सभी चकरा गए । घर में जन्तु भी तो नहीं पाल रखा है फिर चुराने वाला पशु कौन हो सकता है । जिज्ञासा जब चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई, तो एनी ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा—"एक चूहे ने उसे अपने बिल में छुपा रखा है । घर के भीतर कोने में ही वह स्वर्णाभूषण पड़ा हुआ है, अतः चिन्ता की कोई बात नहीं । उसे खोदकर निकाल लीजिए ।" सचमुच वह वहीं पड़ा मिला, जिससे रायसा की खुशियाँ फिर वापस आ गईं ।

उसकी दृष्टि में एक यह भी विशेषता थी, कि वह जिस किसी भी रोगी पर नजर डालती, कुछ दिनों में वह बिल्कुल स्वस्थ हो जाता । मेडस्टोन कैंट की ४६ वर्षीया महिला ब्रैंडा डायसन की पसलियों में कुछ दिनों से असह्य दर्द था । अनेक उपचार करवा चुकी थी । किसी से थोड़ा-बहुत अन्तर भी आ जाता था, पर पूर्णरूप से उसका दर्द नहीं जा पा रहा था । किसी मित्र ने उसे एनी के पास जाने की सलाह दी, तो वह तैयार हो गई । एनी ने थोड़ी देर उससे मधुर बातें कीं । इस मध्य वह अपलक दृष्टि से ब्रैंडा को निहारती रही । फिर कुछ क्षण पश्चात उसने दर्द वाले स्थान पर अपना हाथ रख दिया । कुछ देर वैसा ही रखे रही । इसके बाद ब्रैंडा ने महसूस किया कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे उसका दर्द कम हो रहा है । चार दिनों के उपरान्त वह अपनी पसलियों के दर्द से पूर्णतः छुटकारा पा चुकी थी ।

मानव के अन्दर सोया पड़ा जखीरा इतना सशक्त एवं प्राणवान है कि उसका निज के आत्मिक उत्थान व दूसरों के कल्याण के लिए सुनियोजन सम्भव है । योगी-ऋषि, तपस्वी-महामानव मात्र अपने दृष्टिपात से मन के भावों को जानकर सुपात्र को वरदानों से लाभान्वित कर देते थे, उसके मूल में योग साधना द्वारा अर्जित दिव्य सामर्थ्य ही थी । हर किसी में ये सम्भावनाएँ विद्यमान हैं ।

मनुष्य की विलक्षण सत्ता

शरीर यों तो सभी के देखने में एक जैसे प्रतीत होते हैं, पर उनमें ऐसी विलक्षण विशेषता देखी जाती है कि आश्चर्यचकित रह जाता है । हिमालय की गुफाओं में ऐसे सन्त पाये गए हैं जिन्हें उस क्षेत्र में खाने योग्य कोई वस्तु भी नहीं मिलती थी और वे अपना नियत स्थान छोड़कर कहीं जाते भी नहीं थे । वायु में रहने वाले पोषक तत्वों से ही वे अपने लिए काम चलाऊ आहार उपलब्ध कर लेते हैं ।

आहार की तरह ही नींद का स्थान भी है । सोये बिना न तो थकान दूर होती है और न मस्तिष्क को विश्राम मिलता है । बहुत दिन जागते रहने पर मनुष्य पागल हो जाता है । इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि पागल होने से पूर्व नींद आना बन्द हो जाती है ।

किन्तु कभी-कभी इसके भी अपवाद पाये जाते हैं । जकार्ता से उत्तर पूर्व में एक द्वीप है—बाली । उसके अलासंकार कस्बे में एक व्यक्ति है 'केतूल' वह पिछले ४० साल से क्षण भर के लिए भी नहीं सोया ।

द्वितीय महायुद्ध के समय उसने अपनी आँखों से ऐसे दृश्य देखे थे जिसने उस कलेजा काँप गया । तब वह छोटा बालक ही था । उस घटना का उसके मन पर ऐसा घातक प्रभाव पड़ा कि उसे नींद आना बिल्कुल बन्द हो गई । कुछ दिन तो उसे थकान रही किन्तु पीछे शरीर और मस्तिष्क ने अपने को ऐसे ढाँचे में ढाल लिया कि नींद की आवश्यकता शरीर दूसरी किसी विशेष प्रणाली से पूरी करने लगा । 'जकार्ता पोस्ट' नामक पत्र के अनुसार दूर-दूर के मनःशास्त्री इस रहस्य को खोजने के लिए वहाँ पहुँचे हैं, पर अभी तक उस रहस्य का उद्घाटन नहीं हो सका है ।

हार्मोनों की न्यूनाधिकता में तनिक-सा अन्तर आ जाने से मनुष्य बहुत लम्बा भी हो सकता है और बहुत ठिगना भी रह सकता है ।

चीन में एक व्यक्ति सुनीजंग की लम्बाई ७ फुट ६$\frac{१}{२}$ इंच थी । बाजार में इतना बड़ा ताबूत न मिला तो उसके पैर सिकोड़ कर सन्दूक में रखना और दफनाना पड़ा ।

इसी प्रकार स्कॉटलैण्ड में एक बौना आदमी मात्र ढाई फुट का था । वह बौद्धिक दृष्टि से बौना नहीं था । समझदारी की बातें कहता और समझदारों जैसे काम करता था वह ३० वर्ष जीवित रहा ।

इराक के एक नागरिक सलमाआवोदीन ने आठ साल में अपने रक्त की ४३५वीं बोतल दान देकर रक्त दान का नया विश्व रिकार्ड कायम किया है । उसका स्वास्थ्य इन वर्षों में यथावत् बना हुआ है उसको कोई क्षति नहीं पहुँची है ।

अभ्यास करने से मनुष्य अपनी कार्य-क्षमता असाधारण रूप से बढ़ा सकता है । अपंगों के इतिहास में ऐसे अनेकों हुए हैं जिन्होंने दोनों हाथ चले जाने पर पैर, नेत्र और मुँह की सहायता से उच्च शिक्षा प्राप्त की और चित्रकला तथा टाइप राइटिंग जैसे कामों में सामान्य लोगों की तरह काम कर सके ।

योगाभ्यास के आधार पर कई व्यक्ति अपने हृदय की धड़कन और श्वास-प्रश्वास क्रिया बन्द करके समाधिस्थ हो जाते हैं । देखने में वे मृतक जैसी स्थिति में होते हैं, पर इच्छित समय पर समाधि में लगकर फिर अपने अवयवों को जीवित मनुष्यों की तरह सक्रिय बना लेते हैं ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के ज्ञान में जैसे-जैसे अभिवृद्धि होती जाती है । उसी आधार पर ऐसे प्रमाण मिल रहे हैं कि एक ही शरीर में दो या इससे भी अधिक व्यक्तित्व निवास कर सकते हैं । कभी-कभी एक जीवित और दूसरा मृतात्मा होता है । कभी-कभी छाया पुरुष जैसे दो व्यक्तित्व एक ही शरीर में निवास करते पाये गए हैं । उससे भी अधिक आत्माओं के एक ही शरीर में रहने की कुछ घटनाएँ देखी गई हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य की विलक्षण अतीन्द्रिय क्षमताएँ

मनुष्यों में अतीन्द्रिय क्षमताओं का होना पौराणिक कथाओं में भी प्रकट है । मध्यकाल में उनके ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं और आज भी वे विशेषताएँ कितनों में ही देखी जाती हैं । कभी इन बातों को कपोल-कल्पना कहा जाता था, पर अब वैसी स्थिति नहीं रही । अंगणित प्रत्यक्ष प्रमाणों की जाँच पड़ताल करने के उपरान्त प्रत्यक्षवादी जिस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—उसके अनुसार मनुष्य में ऐसी सामर्थ्यों का होना शक्य माना गया है जो इन्द्रिय शक्ति से परे की हैं ।

ऐसी सामर्थ्यों में दूरदर्शन, दूर-श्रवण, भविष्य-कथन, विचार-सम्प्रेषण, शाप-वरदान, स्वप्न-संकेत, प्राण-प्रत्यावर्तन, दिव्य-लोक के साथ आदान-प्रदान जैसी कितनी ही सामर्थ्य अब तक प्रमाणित हो चुकी हैं और कितनी ही ऐसी हैं जो करिश्मा या जादूगरी की अवमानना चिरकाल तक सहन करने के उपरान्त अब यथार्थता की तरह प्रामाणिकता और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में प्रवेश करने जा रही हैं ।

इन क्षमताओं के सन्दर्भ में अनेकानेक पुरातन प्रमाण उपलब्ध हैं जिनसे प्रतीत होता है कि उन दिनों में मात्र इन्द्रिय शक्ति ही सब कुछ नहीं थी, वरन् इन्द्रियातीत क्षमताएँ महत्त्वपूर्ण अवसरों पर प्रयुक्त होते रहने का प्रचलन था उनके सहारे मनुष्य अब से कहीं अधिक सशक्त था और अधिक सुविधाएँ सम्पादित करता था ।

संजय की दूरदर्शन और दूर-श्रवण की क्षमता का उल्लेख मिलता था । वे महाभारत मोर्चे पर चल रहे दृश्यों और सम्भावनाओं का यथावत् विवरण जन्मान्ध धृतराष्ट्र को घर बैठे सुनाते रहते थे । लोक-लोकान्तरों में परिभ्रमण करते रहने की शक्ति देवर्षि नारद में थी उनका विष्णुलोक के साथ आवागमन और आदान-प्रदान सदा बना रहता था । उन्हें पूर्वाभास भी होता था और जानकारियाँ सम्बन्धित व्यक्तियों तक सहज सेवा सहायता के भाव से पहुँचाते रहते थे । पार्वती को शिव विवाह की सम्भावना, सावित्री को एक वर्ष बाद पति वियोग, जैसी पूर्व सूचनाएँ उनके द्वारा सम्बन्धित व्यक्तियों तक पहुँचाए जाने के अनेकानेक वर्णनों का विभिन्न पुराणों में उल्लेख है ।

गान्धारी की आँखों में दिव्य तेज था । वे आमतौर से पट्टी बाँध कर रहती थीं । आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने एक बार पट्टी खोलकर दुर्योधन को देखा और उसका शरीर लोहे जैसा सुदृढ़ बना दिया । वनवास में अकेली पाकर एक व्याध ने दमयन्ती पर कुदृष्टि डाली । दमयन्ती ने अग्नि दृष्टि से उसे देखा फलतः वह व्याध वहीं जलकर भस्म हो गया । दुर्वासा के शापों से अम्बरीष जैसे कितनों को ही अपार कष्ट सहना पड़ा । शृंगी ऋषि के शाप से परीक्षित की सर्प दंश से मृत्यु हुई थी । उन्हीं के वरदान मन्त्रोच्चारणों से सम्पन्न हुए यज्ञ द्वारा दशरथ को चार अवतारी पुत्रों का प्राप्त होना सर्वविदित है । कपिल मुनि के शाप से राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का भस्म होना प्रख्यात है । कालिदास के मेघदूत का नायक यक्ष शाप पीड़ित होकर ही अपनी प्रेयसी से दूर पड़ा था और मेघों को सन्देश वाहन बनाकर अपनी व्यथा प्रेयसी तक पहुँचाने का उपक्रम कर रहा था । ऋषि से व्यंग उपहास करने वाले यादवों का पूरा समुदाय शाप का भाजन बना और परस्पर लड़भिड़कर समाप्त हो गया । परशुराम से छल-पूर्वक बाण विद्या सीखने वाले कर्ण गुरु शाप से उस विद्या का प्रयोग कर सकने की क्षमता गवाँ बैठा और मात्र सारथी रहकर निर्वाह करता रहा । देवयानी का विवाह प्रस्ताव स्वीकार न करने पर कच को भी सीखी हुई संजीवनी विद्या से हाथ धोना पड़ा ।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने संस्मरणों में एक ऐसे महात्मा का वर्णन किया है जो बिना अब जल ग्रहण किए मात्र वायु भक्षण करके लम्बे समय तक जीए । वे पोहारी बाबा के नाम से प्रख्यात थे । इसकी यथार्थता जाँचने के लिए विदेशों से भी पर्यवेक्षकों के कई जत्थे आए और वे सभी सन्तुष्ट होकर लौटे । पंजाब के राजा रणजीत सिंह ने अंग्रेज गवर्नर को हरिदास नामक साधु के छः महीने लम्बी भूमिगत समाधि का प्रमाण परिचय दिया था । वे साधु पूरे छः महीने गड्ढे में बन्द रहे । गड्ढे को बन्द करके ऊपर से फसल बो दी गई थी ताकि उसमें किसी चालाकी हेरा-फेरी की गुंजाइश न रहे । छः महीने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाद समाधि खोदी गई तो वे साधु जीवित निकले और कुछ ही समय में पूर्ववत सामान्य हो गए ।

इस सम्बन्ध में—"हिस्ट्री ऑफ दि सिख्स" नामक पुस्तक में (लेखक : डॉ. मैकग्रेगर) महाराजा रणजीत सिंह के गुरु स्वामी हरिदास द्वारा सन् १८३७-३८ में किए गए भूमिगत समाधि के प्रदर्शन का विस्तृत विवरण मिलता है । इसका निरीक्षण पंजाब से नियुक्त ब्रिटिश राज्य के तात्कालीन अन्य उच्चाधिकारियों ने भी किया था । स्वामी हरिदास को एक मजबूत सन्दूक में सीलबन्द करके जमीन में खोदे गए गहरे गड्ढे में उतार दिया गया फिर ऊपर से मिट्टी डालकर प्लास्टर से बन्द कर दिया गया । ४० दिन पश्चात गड्ढा खोद कर सन्दूक बाहर निकालने पर स्वामीजी का समूचा शरीर निश्चेष्ट पाया । हृदय और नाड़ी में भी स्पन्दन नहीं था । लेकिन सिर में शिखा वाला स्थान इतना तप्त था कि छूते ही हाथ जल जाता था । कान-नाक से मोन निकाल कर पूर्व निर्दिष्ट विधि के अनुसार शरीर पर शीतल जल का छिड़काव करते ही उनका शरीर चैतन्य हो उठा तथा सभी उपस्थित लोगों व विशिष्ट अतिथियों से उसी तरह बातचीत करने लगे जैसे समाधि में जाने से पूर्व कर रहे थे ।

सन्त हरिदास की दूसरी समाधि की अवधि दस महीने थी । यह प्रदर्शन उन्होंने अदीना नगर में किया था । उस प्रसंग का संस्मरण कैप्टेन ओसबर्न ने अपनी पुस्तक 'रणजीत सिंह' में दिया है । इस बार सुरक्षा, निगरानी और पहरेदारी सम्बन्धी काफी एहतियात बरते गए । जिस जमीन के भीतर स्वामी जी समाधिस्थ थे उस भूमि पर जौ की फसल बो दी गई ताकि भीतर से निकल भागने की धोखाधड़ी पकड़ी जा सके, लेकिन पूरी सतर्कता और कड़ाई से बावजूद ऐसी कोई घटना घटी नहीं ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के अन्तर्गत ही पुराणों में ऐसी अनेकानेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है, जिसमें शाप के फलीभूत होने और उससे अप्रत्याशित कष्ट-कठिनाइयों के उत्पन्न होने का उल्लेख है, कपिल मुनि के शाप से सगर पुत्रों का भस्मीभूत होना, शृंगी ऋषि के शाप से राजा परीक्षित को साँप द्वारा काटा जाना, गान्धारी के शाप से छप्पन कोटि यदुवंशियों का लड़ मरना, नहुष का सर्प बनना, दमयन्ती के शाप से व्याध का विनष्ट होना आदि कुछेक उदाहरण हैं ।

गुरु गोरखनाथ से एक कापालिक बहुत चिढ़ा हुआ था । एक दिन आमना-सामना हो गया । कापालिक के हाथ में कुल्हाड़ी थी, उसे ही लेकर वह तेजी से गोरखनाथ को मारने दौड़ा, पर अभी कुल दस कदम ही चला था कि वह जैसे-का-तैसा खड़ा रह गया । कुल्हाड़ी वाला हाथ ऊपर और दूसरा हाथ पेट में लगाकर हाय-हाय चिल्लाने लगा । वह इस स्थिति में भी नहीं था कि इधर-उधर हिलडुल भी सके ।

केप कालावी के गवर्नर पीटर जिज्वर्ट नार्टन की मृत्यु भी एक सैनिक के शाप के परिणामस्वरूप हुई मानी जाती है । कहा जाता है कि एक बार जिज्वर्ट नार्टन ने नौ निर्दोष सैनिकों को फाँसी की सजा भागने के अभियोग में दी थी, जिसके फलस्वरूप आठ तो बिना कुछ बोले फाँसी पर झूल गए किन्तु अन्तिम व्यक्ति ने बड़े रोष के साथ यह कहते हुए कि नार्टन तुझे कुछ ही समय में ईश्वर के पास जवाब देने के लिए घसीट कर ले चलूँगा ।" फाँसी पर झूल गया । देखा गया कि कुछ ही क्षणों के उपरान्त वह गर्वनर दफ्तर में कुर्सी पर बैठे-बैठे मर गया ।

वस्तुतः मनुष्य जितना विलक्षण है, क्षमता सम्पन्न है, उतना उसे अपने आपके विषय में आभास नहीं है यदि इस सामर्थ्य को उभारा जा सके तो हर व्यक्ति अपनी अद्भुत अतीन्द्रिय सामर्थ्य का प्रयोग सत्प्रयोजन के निमित्त कर सकता है । विडम्बना तो यही है कि बहुसंख्य व्यक्ति अपनी इस अविभज्ञात विभूति से अनजान बने रहकर जीवन व्यर्थ गवाँ देते हैं ।

क्या आप बनना चाहेंगे चलते-फिरते कम्प्यूटर

स्मरण शक्ति की प्रखरता से मनुष्य अधिक विचारशील समझा जाता है और उसके ज्ञान की परिधि अधिक बड़ी होती है, जबकि भुलक्कड़ लोग महत्त्वपूर्ण ज्ञान-संचय से तो वंचित रहते ही हैं, साथ ही दैनिक काम-काज में भी जो आवश्यक था, उसे भी भूल जाते व समय-समय पर घाटा उठाते तथा ठोकर खाते हैं ।

कइयों में प्रखर स्मृति जन्मजात रूप से भी पायी जाती है एवं वह इतनी तीक्ष्ण होती है कि दूसरे लोग चमत्कृत होते और अवाक् रहते देखे जाते हैं । ऐसा ही एक व्यक्ति ग्लोसीस्टरशायर इंग्लैण्ड में सन् १६०१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से ६० के दशक के बीच था । जान फ्रेजर नामक यह व्यक्ति जन्मान्ध था, किन्तु उसे दस हजार व्यक्तियों के नाम व निवास स्थान मौखिक याद थे, इतना ही नहीं, वह आवाज सुनकर प्रत्येक का नाम एवं वास स्थान तुरन्त बता देता । इसमें कभी भी कोई गल्ती नहीं हुई । ऐसी ही विलक्षणता एक आइरिस व्यक्ति में देखी गई । संयोग से वह भी अन्धा था और धन्धे से चिट्ठी बाँटने का काम करता था । उसकी अद्भुत स्मृति के कारण ही सरकार की ओर से उसे पोस्टमैन की यह नौकरी मिल सकी थी । फिलमण्ड नामक यह व्यक्ति दूसरों की सहायता से पत्रों को सिलसिले से लगाता, फिर उनका क्रम व नाम याद कर लेता । बस इतने भर से हर दिन सैकड़ों चिट्ठियाँ बाँटने में उसकी स्मरण शक्ति काम दे जाती । जब तक वह नौकरी में रहा, पत्र बाँटने में उसने कभी भी कोई गल्ती नहीं की और न औरों को किसी प्रकार की शिकायत का मौका ही दिया ।

जर्मनी का नेबूर नामक व्यक्ति अपनी इसी प्रतिभा के कारण विश्व-विख्यात बन गया । उनकी यह प्रसिद्धि भी एक विचित्र संयोग का परिणाम थी । हुआ यों कि एक बार जिस ऑफिस में वे मुन्शीगीरी का काम करते थे, वहाँ अचानक आग लग गई सारी फाइलें और जरूरी कागजात इसकी भेंट चढ़ गए । इस पर नेबूर ने सारे रजिस्टरों को दुबारा मात्र स्मरण-शक्ति के आधार पर तैयार कर लिया । इसके बाद वे इसके एक-से-एक बढ़-कर प्रमाण देते चले गए और प्रतिभाशाली लोगों में गिने जाने लगे ।

इजरायल का जान जैकब नामक व्यक्ति तो चलता-फिरता कम्प्यूटर के नाम से प्रसिद्ध था । येरूशलम के निवासी जैकब को एक लाख कहानियाँ, २० हजार कविताएँ एवं १५ हजार व्यक्तियों के नाम उनके स्थान सहित कंठस्थ थे । एक बार उनके साथ एक बड़ी मजेदार घटना घटी । उसके एक पड़ोसी ने यह निश्चय करने के लिए कि वास्तव में उसकी स्मरण शक्ति तीव्र है अथवा वह यों ही डींगें हाँका करता है, उससे "स" अक्षर से प्रारम्भ होने वाली कुछ कविताएँ सुनाने को कहा । जैकब ने सुनना आरम्भ किया और एक घण्टे के अन्दर ही डेढ़ सौ के करीब कविताएँ सुना गया । वह सुनाता ही जा रहा था, किन्तु जब पड़ोसी को उसकी प्रतिभा का निश्चय हो गया तो उसे रोक दिया ।

चैतन्य महाप्रभु के बारे में कहा जाता है कि वे "एकश्रुतिधर" थे, अर्थात् एक बार में सुन कर याद करने वाले । एक बार एक पण्डित से उनका शास्त्रार्थ हो गया । इसी क्रम में उसने सौ पंक्तियों का एक श्लोक सुनाया और बीच की एक निर्दिष्ट पंक्ति को चैतन्य देव से सुनाने को कहा । वे न सिर्फ उक्त लाइन को अविकल सुना गए, वरन् अद्योपान्त पूरा श्लोक भी सुना दिया । यह देख ब्राह्मण हतप्रभ रह गया और शास्त्रार्थ की इच्छा त्याग उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया ।

राजा भोज के दरबारियों में भी एक ऐसे ही विद्वान का उल्लेख मिलता है । उसके बारे में कहा जाता है कि वह एक घड़ी (२४ मिनट) तक सुने प्रसंग को तत्काल वैसा ही दुहरा देता था ।

इतने पर भी यह नहीं समझा जाना चाहिए कि स्मरण रखने की विशिष्ट क्षमता कोई दैवी वरदान या जन्मजात सौभाग्य होता है । हो सकता है किन्हीं विरलों को अनायास ही प्राप्त हो गई हो परन्तु वह अन्य शारीरिक क्षमताओं के सदृश्य एक सामान्य सामर्थ्य ही है, जिसे प्रयत्नपूर्वक आसानी से बढ़ाया जा सकता है । जिस बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है, वह स्वभावतः विकसित होने लगती है और जिसकी उपेक्षा की जाती है, उसका घटना भी सुनिश्चित है । किसी प्रकरण का वर्षों तक दिमाग में बना रहना और किसी का कुछ ही दिनों में धूमिल हो जाना प्रायः इसी तथ्य पर आधारित होता है । देखा गया है कि घटनाओं के प्रति यदि अन्यमनस्कता बरती जाय, उपेक्षा भाव रखा जाय, उन्हें महत्त्वहीन एवं निरर्थक समझा जाय, तो स्मृति-पटल पर वे देर तक टिकती नहीं । इसके विपरीत यदि उन्हें तन्मयता के साथ एकाग्र होकर देखने-समझने का प्रयत्न किया जाय, तो उनकी छवि देर तक मस्तिष्क में बनी रहती है । वे जल्दी धुलती नहीं । यही कारण है कि अधिकांश महत्त्वपूर्ण घटनाएँ व्यक्ति को आजीवन स्मरण रहती हैं, जबकि दूसरी विस्मृत हो जाती हैं ।

मनोविज्ञानी कार्ल सीशोर का कथन है कि औसत व्यक्ति अपनी स्वाभाविक स्मरण शक्ति का मात्र दस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिशत प्रयोग करता है, ९० प्रतिशत तो ऐसे ही मूर्छित और अस्तव्यस्त स्थिति में पड़ी रहती है । फलतः मनुष्य मन्दबुद्धि और मूर्ख स्तर का बना रहता है । यदि प्रयास में कमी न की जाय, तो ऐसे लोग भी नियमित अभ्यास द्वारा स्वयं को बौद्धिक दृष्टि से कहीं अधिक सक्षम बना सकते हैं ।

मनोवैज्ञानिकों ने विस्मरण के प्रायः तीन कारण बताये हैं—(१) किसी बात को स्मरण रखे रहने की पूर्व इच्छा का न होना । (२) प्रस्तुत विषयों को पूरे मनोयोगपूर्वक समझने का प्रयत्न न करना (३) प्रसंगों में अरुचि और उपेक्षा का भाव रहना । उनके अनुसार यदि इन तीन कारणों को हटाया जा सके, तो विस्मरण सम्बन्धी शिकायत भी काफी हद तक दूर हो सकती है । यह ठीक है कि कुछ एक में यह ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के रूप में मौजूद रहती है, पर न भूलने योग्य तथ्य यह भी है कि शरीर के कई निर्बल अंगों को व्यायाम द्वारा भी सबल समर्थ बनाया जाता है । स्मरण इस बात का भी रखा जाना चाहिए कि कई अवसरों पर जन्मजात विकलांगता को कसरत के ही माध्यम से दूर करने में काफी सफलता मिलती है, और जो शिशु प्रसवकाल में अपंग नजर आता है, उसकी अपंगता उम्र के साथ घटती नजर आती है । अस्तु किसी को यह मान्यता नहीं बना लेनी चाहिए कि स्मरण शक्ति की मंदता स्थायित्व लिए आती और आजीवन साथ रहती है ।

मनःशास्त्री जॉन इर्विन ने इस बात पर जोर दिया है कि जिन तथ्यों को भविष्य में याद रखने की आवश्यकता समझी जाय, उनमें गहरी रुचि उत्पन्न करनी चाहिए और यह विचार करना चाहिए कि स्मरण से क्या लाभ और विस्मरण से क्या हानि होने की सम्भावना है । वे प्रसंग कब याद करने की आवश्यकता पड़ेगी एवं संस्मरणों का किस प्रकार क्या उपयोग होगा । इतना सोच-विचार कर लेने के उपरान्त किन्हीं तथ्यों की परत मस्तिष्क में देर तक जमायी जा सकेगी और उन प्रसंगों को भूल जाने की कठिनाई प्रायः उत्पन्न नहीं होगी ।

विद्वान प्रो. मैनिहन का कथन है कि घटनाओं को मात्र उनके कल्पना चित्र के रूप में ही नहीं, वरन् तात्पर्य और फलितार्थ को भी ध्यान में रखते हुए यदि मानस पटल पर जमाया जाय, तो जल्दी याद भी हो जायेंगे और देर तक टिकाऊ भी बने रहेंगे । फिर आवश्यकतानुसार उनको स्मरण करने में किसी को किसी प्रकार की कठिनाई न होगी ।

देखा जाय कि कौन घटनाएँ स्मरण रखने योग्य हैं । किन बातों की उपयोगिता है, किन तथ्यों को चिरकाल तक स्मृति पटल में जमाये रहना आवश्यक है, जो उपयोगी जान पड़े, उन्हें गम्भीरतापूर्वक समझने का प्रयत्न किया जाय, उन पर चित्त को एकाग्र किया जाय । कई-कई बार उन्हें मौन मानसिक रूप से एवं वाणी से दुहराया जाय । जरूरी लगे तो नोट करके रखा जाय । ऐसा करते रहने से न केवल उपयोगी व आवश्यक तथ्य स्मृति में बने रहेंगे, अपितु स्मरण शक्ति भी अनायास ही इस प्रक्रिया में बढ़ती चलेगी और व्यक्ति को प्रतिभा सम्पन्नों, विचारशीलों की श्रेणी में ला खड़ा करेगी ।

अविज्ञात रहस्यों से भरी मानवी चेतना

मानवी काया का बहिरंग ढाँचा अस्थि चर्म से विनिर्मित दीखता है जिसके साथ जुड़ी ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ अपना-अपना कार्य करती रहती हैं और जिस-तिस प्रकार जीवन की गाड़ी आगे धकेलती रहती हैं । सामान्यजनों की जानकारी में यही है—स्थूल काया का स्वरूप और उसका उपयोग ।

किन्तु सूक्ष्मदर्शी जानते हैं कि स्थूल की तुलना में सूक्ष्म की सत्ता, प्राण चेतना की क्षमता असीम, अपरिमित है । जितना कुछ मनुष्य को अपने शरीर एवं ज्ञानेन्द्रियों के बारे में ज्ञात है, उसकी तुलना में अविज्ञात बहुत अधिक है । यह समय-समय पर भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होकर अपनी सामर्थ्य-क्षमता का परिचय देता रहता है ।

मूर्धन्य परामनोविज्ञानवेत्ता डॉ. पाल गेल्डीन का कहना है कि ज्ञानेन्द्रियों के सुनने, बोलने, देखने, सूँघने तथा स्पर्शानुभूति की क्षमता से हम सभी परिचित हैं, पर इससे भी महत्त्वपूर्ण एवं अत्यन्त सामर्थ्यवान एक और शक्ति है जिसके बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है । इसे छठी इन्द्रिय या पराचेतना शक्ति कहते हैं । प्रयत्नपूर्वक इसे जागृत एवं अभिवर्धित किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जा सकता है । किन्हीं-किन्हीं में यह संयोगवश भी प्रकट हो जाती है ।

नवम्बर १९६७ में जर्मनी के बवेरिया क्षेत्र के राशेनहेम स्थित एक पदाधिकारी के मकान की ट्यूब लाइटों का प्रकाश एकाएक मन्द पड़ गया । बिजली के सभी स्विच अपने आप ऑफ हो गए । कार्यालय के चारों टेलीफोन एक साथ घनघना उठे और उनके रिकार्ड में हजारों लोगों के बातचीत करने का लेखा बिल पर अंकित होने लगा । कारणों की छानबीन बहुत की गई, पर सुराग कुछ भी हाथ नहीं लगा । अन्ततः प्रो. हंस बेन्डर जैसे मूर्धन्य मनोवैज्ञानिक की सहायता ली गई । उन्होंने पता लगाया कि यह सब परिवर्तन १९ वर्षीय नौकर एनीमैरी की उपस्थिति में घटित होता है । उसकी प्राण वैद्युतीय ऊर्जा असाधारण रूप से बढ़ी हुई है जो काया से निःसृत होकर आस-पास के वातावरण को प्रभावित करती है ।

एनीमैरी की यह क्षमता अनायास ही फूट पड़ी थी जिसने उसे असाधारण सामर्थ्य वाला व्यक्ति बना दिया । वैज्ञानिकों ने परखने पर पाया कि उसकी उपस्थिति के कारण दीवाल पर टँगी तस्वीरें उल्टी हो जाती हैं । बल्ब फ्यूज होने लगते हैं । मेजों की दराजें स्वयमेव खुल जाती हैं । फाइलों से खचाखच भरी लौह अलमारियाँ अपने स्थान से एक फुट दूर तक खिसक जाती हैं । घड़ी की सुइयाँ अपनी गति को तीव्र करके २० मिनट में ही एक घण्टा पूरा कर लेती हैं । विद्युत सप्लाई काट देने पर भी वैद्युतीय उपकरण ५० एम्पियर की करेण्ट को रिकार्ड करते देखा गया । टेलीविजन से जुड़े एक वीडियो रिकार्डर ने तत्कालीन वातावरण का जो चित्रांकन किया, उससे स्पष्ट भुतहा दृश्य दिखाई देने लगा । राशेनहेम में फोटो कैमरे में प्रयुक्त होने वाली बैटरी बिना पावर हाउस कनेक्शन के चला करती थी । इतना ही नहीं मैरी के चलने पर बिजली के बल्ब हिलने से लगते थे ।

चेकोस्लोवाकिया के परामनोविज्ञान संस्थान के प्राध्यापक मेलिन रिन्स एवं लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक वासिलिवेव ने अपने अनुसन्धान निष्कर्ष में बताया है कि मनुष्य में इस तरह की अनेकानेक क्षमताओं का अस्तित्व होता है । किन्हीं-किन्हीं में यह अचानक विकसित हो जाती है और मनुष्य आखों या कानों का काम शरीर के अन्य अंगों से लेने जैसे चमत्कृत करने वाले अनेकों करतब करने लगता है । विश्व में ऐसे अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं ।

सोवियत संघ में कुलेशोवा नामक एक महिला आँखें रहते हुए भी देखने का काम उँगलियों के पोरुओं से कर लेती थी । परखने पर वैज्ञानिकों ने पाया कि आँख पर पट्टी बाँधने के पश्चात भी वह न केवल अक्षरों को सही रूप में पढ़ लेती वरन् उनके रंग, डाक टिकटों के अक्षर मूल्य आदि ज्यों का त्यों बता देती थी । बाद में जाँच करने पर यह और ज्ञात हुआ कि इस प्रकार की विलक्षण शक्ति उसके बाएँ पैर की उँगलियों, जीभ और टखनों में बहुलता से विद्यमान थी ।

इसी प्रकार सेन्ट्रल चीन के वुहन क्षेत्र में रहने वाली १३ वर्षीय लू विंग नामक एक किशोरी किसी भी लिखावट को कान से पढ़ सकती है । वैज्ञानिकों ने 'इन्ग' 'इलेक्ट्रिसिटी' जैसे कठिन शब्द कागज पर लिखकर उसे आठ बार मोड़ा और उनका पुलिन्दा बनाकर लू विंग के कान के पास छोड़ दिया । उसने इन शब्दों को कर्ण नेत्रों से पढ़ कर स्पष्ट बता दिया । किसी भी कठिन शब्द को समझने में उसे सात से दस मिनट का समय लग जाता है ।

चीनी पत्रकारों के एक दल ने अपने देश के कई प्रान्तों में ऐसे अद्भुत क्षमता सम्पन्न बीस बच्चों का अध्ययन किया है जो कान, नाक, हाथ, पैर, पेट अथवा आँख द्वारा पढ़ लेते हैं ।

दिव्य दृष्टि के अस्तित्व के सम्बन्ध में अनुसन्धानरत मूर्धन्य वैज्ञानिक गेविन मैक्सवेल ने अपने अनुसन्धान निष्कर्ष में बताया है कि यह क्षमता सभी मनुष्यों में होती है । लगातार प्रयत्न और अभ्यास करने पर उसे जागृत एवं विकसित किया जा सकता है । अपवाद स्वरूप ऐसे व्यक्ति भी देखे जाते हैं जिनमें दूरदर्शन की सामर्थ्य सहज ही विकसित होती है । उदाहरण के लिए वेलरुयोयांग नामक १२ वर्षीय चीनी बालक को लिया जा सकता है । इसमें विलक्षण दूरदर्शन क्षमता है । १९८१ से वह वैज्ञानिकों के लिए चुनौती बना हुआ है । उसकी आँखें इतनी तीक्ष्ण हैं कि पत्थर की मोटी दीवार के दूसरी ओर देखने में भी सक्षम हैं । वैज्ञानिकों के एक दल ने जब इस तथ्य का परीक्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना चाहा तो उसने सात मंजिला एक महान की छत पर चढ़कर सबसे नीचे वाली मंजिल में रखे हुए सभी वस्तुओं का यथावत वर्णन कर दिया । वेल कानों से भी भली-भाँति देख लेता है । जब उसके कान में एक कागज पर कुछ लिखकर बाँध दिया गया तो उसने अपनी कर्ण दृष्टि से पढ़कर लिखे गए अंश को अक्षरशः सुना दिया । मनुष्य तो क्या अन्य प्राणियों के शरीर से निकलने वाले प्रभा-मण्डल को भी वह अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देख लेता है और उनके रंगों को बता देता है । भू-गर्भ में बहने वाले जल-स्रोतों का पता लगा लेना और उनके नक्शे बनाना उसके लिए सामान्य-सी बात है । किसी भी व्यक्ति के अन्तर्मन के विचारों, भावनाओं को वह आसानी से पढ़ लेता है ।

लेनिनग्राड के सुविख्यात परामनोविज्ञानी डॉक्टर वासिलियोव का कहना है कि यदि हम अपनी मूलशक्ति प्राण चेतना की खोज कर सकें तो भौतिक शक्तियों की तुलना में अनन्तगुना सामर्थ्यवान बन सकते हैं । पिछले दिनों विश्व की विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए जा रहे अनुसन्धानों से जो तथ्य सामने आए हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य यदि अपनी चेतना को ब्रह्माण्डीय चेतना की सूक्ष्म धारा प्रवाह के साथ जोड़ सके तो वह ऐसे उच्चस्तरीय लाभ प्राप्त कर सकता है जो अभी तक काल्पनिक और अविश्वसनीय समझे जाते रहे हैं ।

मनःशास्त्री विक्टर ई. क्रोमर मानवी प्राण ऊर्जा की चर्चा करते हुए कहते हैं कि यह ब्रह्माण्डीय चेतना के साथ सम्बन्ध जोड़ने वाली ऐसी चाबी है जिसका सही उपयोग करने पर भौतिक जगत में भारी उथल-पुथल उत्पन्न की जा सकती है और अपनी निजी क्षमता में विशिष्ट स्तर की भारी मात्रा में अभिवृद्धि की जा सकती है ।

मनुष्य अपनी प्राण चेतना को परिष्कृत एवं अभिवर्धित करके उसे स्थूल काया से अलग कर सकता है । परा-मनोविज्ञानी कर्नल टाडन सेंड ने प्राणायाम के अभ्यास से प्राणमय शरीर के नियन्त्रण में सफलता प्राप्त की थी । एक बार उन्होंने सैकड़ों वैज्ञानिकों एवं साहित्यकारों से खचाखच भरे हाल में इस प्रकार का प्रदर्शन किया । वह स्वयं एक स्थान पर बैठ गए, एवं दीवाल के सहारे टिके ब्लैक बोर्ड के साथ एक चाक का टुकड़ा बाँध दिया गया । सेंड अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही अपनी प्राण चेतना को स्थूल काया से बाहर निकाल कर अदृश्य सूक्ष्म शरीर से बोले गए अक्षरों को बोर्ड पर लिखने लगे । बीच-बीच में वे अपने स्थूल शरीर में भी आ जाते और वस्तुस्थिति भी लोगों को समझाते जाते ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं का सुविस्तृत भण्डार

भगवान ने न केवल मनुष्य को वरन् अन्याय प्राणियों को असीम शक्ति भण्डार से भरा है पर वे अनुदान बीज रूप में मनःसंस्थान में जहाँ-तहाँ भरे रहते हैं । इन क्षमताओं का इतना भी पक्ष जागृत और अभ्यस्त रहता है जितने से जीवनचर्या की गाड़ी लुढ़कती रहती है । शेष 'भाग' प्रसुप्ति में पड़ा रहता है । इसलिए समझा जाता है कि जितनी समर्थता उपलब्ध है, उतनी ही कार्य क्षमता है, जबकि बात ऐसी है नहीं । अविज्ञात अतिरिक्त क्षमताओं को खोजा और जगाया जा सके तो किसी को भी सामान्य की परिधि पार करके विशिष्ट बनने का अवसर मिल सकता है ।

योगियों, सिद्धियों में अनेकानेक ऋद्धि-सिद्धियों की बात देखी और सुनी जाती है । कितनों में ही यह बिना साधना या अभ्यास प्रयास के भी अनायास फूट पड़ती देखी गई है । इसलिए अतीन्द्रिय क्षमता का एक स्वतन्त्र विज्ञान ही बन गया है और उसे अनुसन्धान की परा-मनोविज्ञान शाखा के अन्तर्गत मान्यता मिल गई है । इस दिशा में जो खोजें हुई हैं उनसे पता चला है कि मानवी क्षमता की मूलभूत सीमा उससे कहीं अधिक है जितना कि वह दैनिक में प्रयुक्त करता है । अब प्रश्न इस बात का शेष रह जाता है कि उस सामर्थ्य को विकसित करने का उपाय क्या हो सकता है ? आध्यात्मवादी इस सन्दर्भ में योग और तप का प्रयोग परीक्षण बहुत पहले से ही करते रहे हैं पर यह भौतिक विज्ञानियों का हठ है कि अतीन्द्रिय क्षमता को भी एक शरीरगत विशेषता माना जाय और उसे जगाने के लिए कोई भौतिक उपाय उपचार ही खोज निकाला जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीन्द्रिय क्षमता का क्षेत्र अब बहुत समझा जाने लगा है और इस निष्कर्ष तक पहुँच गया है कि चेतना क्षेत्र की यह विशिष्ट क्षमता न केवल मनुष्यों में वरन् अन्यान्य प्राणियों में भी न्यूनाधिक मात्रा में पायी जाती है । उनमें से कितने ही विपत्ति से बचने और सुविधा साधन खोजने में इसी आधार पर आश्चर्यजनक रूप से सफल होते हैं । इतना ही नहीं वे उन्हें भी इस अतिरिक्त क्षमता से लाभान्वित करते हैं जो इनके सम्पर्क में आते अथवा गतिविधियों पर ध्यान देते हैं । यहाँ प्राणि वर्ग में सूक्ष्म जीवियों और वनस्पति समुदाय को भी सम्मिलित किया जा सकता है क्योंकि बहुत बार उन्हें भी योगियों सिद्ध पुरुषों जैसी सिद्धियों का परिचय देते हुए पाया गया है ।

"फ्राइबर्ग इन्स्टीट्यूट ऑफ पैरासाइकोलॉजी (प. जर्मनी) के प्रोफेसर डॉ. हान्स बेण्डर ने पशुओं में पाई जाने वाली अतीन्द्रिय क्षमताओं की ५०० घटनाओं का संकलन किया है । इन घटनाओं में फ्राई बर्ग पार्क की एक ऐसी चिड़िया का उल्लेख है जो मित्र राष्ट्रों द्वारा की जाने वाली बमबारी की सूचना ठीक १५ मिनट चिल्ला-चिल्ला कर देने लगती थी । इस संकेत को सुनते ही स्थानीय नगर निवासी सुरक्षित स्थानों (एयर रेड शेल्टर्स) में पहुँच जाते थे । इस प्रकार उस पक्षी ने अनेक अवसरों पर हजारों लोगों की जान बचाने के लिए भावी आपत्ति की पूर्व सूचना दी । एक दिन सूचना देने का अपना कर्तव्य पूरा करके जब वह अपने छिपने के लिए निरापद स्थान की तलाश कर रहा था तभी बमबारी होने लगी और सबकी जान बचाने वाला वह पक्षी अपनी जान गवाँ बैठा । स्थानीय निवासियों को जब उसकी मृत्यु का पता चला तो उसी पार्क में उस पक्षी का एक भव्य स्मारक बनाकर, उसे श्रेष्ठतम नागरिक का अलंकरण प्रदान कर दुःखी संतप्तों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

प्रसिद्ध मनोविश्लेषक श्रीमती रेनी हाइन्स ने अपनी पुस्तक 'दि हिडेन स्प्रिंग्स' में पशुओं में पायी जाने वाली ऐसी अतीन्द्रिय क्षमताओं के अनेक उदाहरणों का संकलन किया है । उसमें एक ऐसे कुत्ते का दृष्टान्त दिया गया है जिसके मालिक का घर आने का समय अनिश्चित रहता था । उसने एक चीनी रसोइया नौकर रखा हुआ था ताकि हारे-थके घर लौटने पर गर्म भोजन तत्काल मिल सके । वह कुत्ता मालिक के लौटने से तीन-चार घण्टे पूर्व ही रसोइये को मालिक के आने की सूचना उसके कपड़े खींचकर अथवा विशेष आवाज में बोलकर दे देता था । रसोइया इस संकेत को समझकर तुरन्त भोजन बनाने की तैयारी में जुट जाता और मालिक को पधारने पर गर्मागर्म भोजन तैयार मिलता । कुत्ते द्वारा बिना टेलीफोन के दी जाने वाली यह सूचना कभी भी गलत नहीं निकली ।

"दि साइकिक पावर ऑफ एनीमल्स" नामक पुस्तक में मानवेत्तर प्राणियों में पायी जाने वाली अतीन्द्रिय शक्तियों सम्बन्धी कई घटनाओं को संकलित किया गया है । उसमें लेखक ने अपने ही एक अनुभव का उल्लेख इस प्रकार किया है ।

"एक दिन मैं अपने घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था । अचानक घोड़ा एक मिनट के लिए अड़ गया । काफी मारपीट करने और जोर लगाने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ । उसी समय थोड़ी दूर पर बिजली गिरी । यह देखकर मेरे मन में अपने घोड़े के प्रति असीम प्यार उमड़ पड़ा क्योंकि यदि वह अपने स्थान से चल देता तो हम दोनों की मृत्यु हो जाती ।

एक और विचित्र घटना अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से जुड़ी है । उनका प्यारा कुत्ता 'पैट' जो व्हाइट हाउस में बँधा था, लिंकन की हत्या से कुछ समय पूर्व विचित्र प्रकार से भौंकने एवं अपने स्थान पर ही बेचैनी से चहल कदमी करने लगा था ।

सोसायटी ऑफ पैरासाइकोलॉजी रिसर्च के डॉ. जे. बी. राइन के कबूतरों के पेट में नम्बर डालकर कई प्रयोग किए । उसमें १६७ नम्बर के कबूतर की एक घटना इस प्रकार है ।

इस विशिष्ट कबूतर को पालने के लिए एक लड़के की नियुक्ति की गई थी । उसका नाम हग ब्रेडी परकिन्स था । सर्दी का मौसम था उस लड़के को एक रात "फास्ट बाइट" के कारण तकलीफ हुई । शल्य चिकित्सा के लिए उस लड़के को १२० मील दूर अस्पताल में ले जाया गया । दिन में ऑपरेशन सम्पन्न हो गया । रात को वह लड़का हॉस्पिटल के एक कमरे में सोया हुआ था । बाहर बर्फ पड़ रही थी । बर्फीली हवा भीतर न आये इसलिए खिड़की दरवाजे बन्द रखे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गए थे । तभी खिड़की के शीशे पर कुछ फड़फड़ाहट की आवाज सुनायी पड़ी । नर्स ने ज्यों ही खिड़की खोली कबूतर भीतर घुस आया । इसकी आहट पाकर लड़के की नींद खुल गई । लड़के ने नर्स से पूछा कि "इसके पैर में बँधे टैग पर कहीं १६७ नम्बर तो नहीं लिखा है ।" नर्स ने उसके कथन को सही पाया ।

ड्यूक यूनिवर्सिटी के परा-मनोविज्ञान विभाग के डॉ. कार्ल्स ओसिस ने अंग्रेजी अक्षर 'टी' के आकार का एक चेसिस बनवाया और उसमें बिल्ली के बच्चे छोड़े और इस प्रयोग में इस बात की जाँच की गई कि कौन-सा बच्चा प्रयोगकर्त्ता की इच्छानुसार दाएँ-बाएँ मुड़ता है । इन अनुसंधान में पाया गया कि जो बच्चा प्रयोगकर्त्ता से प्यार करता था । उसी अनुपात में उसके विचारों का प्रभाव उस पर पड़ता था । इन विभिन्न परीक्षणों से निष्कर्ष निकालते हुए बताया गया है कि पालतू पशु एवं उसके मालिक के बीच टेलीपैथिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है । इसका अनुपात उनकी आन्तरिक घनिष्ठता पर निर्भर करता है ।

"कैन ह्यूमन्स कम्यूनिकेट विद प्लैण्ट्स" के लेखक ने एक मरुस्थल के उपजाऊ भूमि में बदल जाने की घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—१९६२ में उत्तर स्कॉटलैण्ड में एक अमेरिकी दम्पत्ति आकर बसे । पति-पीटर केडी, पत्नी-इलिन तथा उसकी आया डोरोथी मेक्लीन । यही तीन लोग तथा बच्चे कुल छह लोग उस छोटे से परिवार में रहते थे । वहाँ और कोई काम न देख उन लोगों ने बागवानी करने का निश्चय किया । वह स्थान उस क्षेत्र की सबसे अनुपजाऊ भूमि मानी जाती थी, बर्फ और रेत की अधिकता के कारण वहाँ खेती करने कोई नहीं आता था, लेकिन उन लोगों का निश्चय दृढ़ था । इस कार्य में एलिन तथा मैक्लिन ने अपनी विशेष सूझ-बूझ का परिचय दिया । कुछ ही वर्षों में वे लोग उसी जमीन से इतनी अधिक पैदावार लेने लगे । जिससे वहाँ के स्थानीय लोगों को ही नहीं अपितु पूरे इंग्लैण्डवासियों को आश्चर्यचकित कर दिया और वह उपेक्षित कृषि व वनस्पति शास्त्रियों का तीर्थ बन गया । उन्होंने उस ऊसर समझी जाने वाली जमीन से २८ किलाग्राम से भी अधिक वजन के पत्ता गोभी उपजाकर पूरे देश में तहलका मचा दिया । जब पत्रकार उनसे इसका रहस्य पूछने आये तो उन्होंने इतना ही कहा कि "अन्ततः प्यार ही वह तत्व है जो अन्य सभी नियमों की सम्पूर्ति कर देता है ।"

केडी का कहना है कि हमारे परिवार के प्रेम के प्रत्युत्तर में वनदेवता हमें विपुल वनस्पति और धान्य ही नहीं अपितु कृषि कार्य में उन्नति के लिए अधिकाधिक सूझबूझ भी प्रदान करते हैं ।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विद् सर जगदीशचन्द्र वसु ने इन्हीं तथ्यों पर अपना अनुसंधान कार्य किया था । विषय यह था कि जिस प्रकार मनुष्यों में सम्वेदना के वाहक स्नायु तन्तु बने हुए हैं उसी प्रकार वनस्पति जगत में सम्वेदनवाही तन्त्र (सेन्सरी सिस्टम) विद्यमान हैं । इसी तथ्य की पुष्टि प्रसिद्ध अमेरिकी हॉर्टीकल्चरिस्ट लूथर बरबैंक ने अपने प्रयोगों में की । उनके कथनानुसार प्रेमपूर्ण इच्छाशक्ति के माध्यम से वनस्पतियों में अनहोनी परिवर्तन भी लाया जा सकता है । जैसे कि बिना काँटे का गुलाब उत्पन्न करना ।

१९५० में माननीय फ्रेंकलिन लोहर ने कैलिफोर्निया में वनस्पतियों पर किए गए अपने प्रयोगों के आधार पर सिद्ध किया कि प्रार्थना के बल पर फसल की उपज २० प्रतिशत तक अधिक बढ़ाई जा सकती है ।

इस विषय में मैग्रिल यूनिवर्सिटी मौण्ट्रियल (कनाडा) के डॉ. बर्नार्ड ग्रेड ने व्यावसायिक साइकिक हीलर ऑस्कर एस्टवनी के वनस्पतियों पर हाथ फैराने से होने वाले परिवर्तनों की जाँच की । इस प्रयोग में अंकुरित हो रहे जौ के पौधों को दो विभाग में बाँटा गया । एक विभाग को वह पानी दिया गया जिस फ्लास्क के जल पर ऑस्कर ने हाथ रखा था । दूसरे को साधारण जल दिया गया । बाद में विभिन्न यन्त्रों से उनके विकास दर को मापा गया तो डॉ. बर्नार्ड ग्रेड ने देखा कि जिस पौधे को ऑस्कर के हाथ से संस्कारित पानी दिया गया था उसकी विकास गति अधिक तीव्र थी । इसी कारण दार्शनिक मनोवैज्ञानिक सर विलियम जेम्स ने लिखा है कि समूची जीव सृष्टि एक अदृश्य सत्ता से संचालित है तथा वही इन सभी घटकों को एक माला के धागे की तरह एक सूत्र में पिरोए रहती है ।

जिस प्रकार प्रकृति के भण्डार से प्रयत्नपूर्वक मनुष्य ने अनेकानेक क्षमताओं को खोजा और लाभ उठाया है उसी प्रकार अब की बारी यह है कि चेतना क्षेत्र की उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विलक्षणताओं की उपयोगिता भी समझें जो उसके अन्तराल में प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है । अतीन्द्रिय क्षमताओं का धनी मनुष्य अब की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी समुन्नत हो सकता है । इस प्रयास में प्राणि समुदाय एवं वनस्पति वर्ग की विशिष्ट क्षमताएँ भी वैसा ही अतिरिक्त सहयोग कर सकती हैं जैसे कि अनेक प्रकार से मानवी सहयोग में निरत रह कर रही हैं ।

अतीन्द्रिय क्षमताएँ अभ्यास की देन

परा-मनोविज्ञान की वर्तमान शोधों में आध्यात्म रहस्यवाद के कुछ ही तथ्यों तक पहुँच सम्भव हो सकी है । क्लेयरवायन्स (अतीन्द्रिय ज्ञान) टेलीपैथी (विचार सम्प्रेषण) फ्रीकॉगनीशन (पूर्वाभास) साइकोकाइनेसिस (प्राणियों तथा पदार्थों को प्रभावित करना) इनके अतिरिक्त अब पुनर्जन्म की मान्यता को भी उसमें सम्मिलित कर लिया गया है ।

वैज्ञानिक क्षेत्रों में मानवी चेतना को शरीर तन्त्र पर आधारित और उसी की परिधि में ज्ञान सम्पादन तथा कार्य संलग्न रहने की बात कही और समझी जाती रही है पर अब यह प्रतीत हो रहा है कि अतीन्द्रिय क्षमताओं के जो प्रमाण उपलब्ध हो रहे हैं, उन्हें झुठलाया कैसे जाय ? और यदि झुठलाया नहीं जाता तो यह संगति कैसे बैठे कि चेतना शरीर के माध्यम से काम करती और उसी परिधि में सीमित रहती है ।

मस्तिष्क विद्या के निष्णान्तों ने इस सन्दर्भ में कुछ अपने ढंग से सोचा है । पिनियल और पिट्यूटरी ग्रन्थियों के स्राव एड्रीनल को प्रभावित करते हैं । उन प्रभावों से मस्तिष्क का हाइपोथेलेमस भाग उत्तेजित होता है और अचेतन मन को उन्मुक्त रूप से काम करने का अवसर प्रदान करता है । सामान्य स्थिति में वह सचेतन के प्रभाव से दबा रहता है और शरीर यात्रा के स्वसंचालित समझे जाने वाले क्रिया-कलापों का ही ताना-बाना बुनता रहता है, किन्तु उस पर से सचेतन का दबाव हट सके तो अचेतन की रहस्यमयी गतिविधियों को विशेष काम करने का अवसर मिल सकता है । अतीन्द्रिय क्षमताओं का स्रोत अचेतन पक्ष है ।

सचेतन को शान्त सीमित एवं मूर्छित करने की साधनाएँ ध्यानयोग कहलाती हैं । उसके कितने ही प्रयोग ऐसे हैं जो सचेतन को शान्त और अचेतन को उत्साहित करने का दुहरा प्रयोजन पूरा कर सके । यह स्थिति जिसमें जितनी मात्रा में बन पड़ती है वह अतीन्द्रिय क्षेत्र की प्रगति में उतना ही अधिक सफल हो सकता है ।

इतने पर भी यह प्रश्न यथावत् बना रहता है कि गुह्य विद्या प्रसंगों में शरीरगत चेतना का ही विकास हुआ अथवा इसके अतिरिक्त किसी स्वतन्त्र आत्म-सत्ता की सिद्धि हुई ?

एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्सन (अतीन्द्रिय क्षमता) यदि शरीरगत है तो इससे आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता कहाँ सिद्ध हुई और इसके बिना आध्यात्मवाद के सिद्धान्त का समर्थन कहाँ हुआ ? दूरदर्शन, दूरश्रवण, दूर-आस्वादन, दूर-स्पर्शन जैसी अनुभूतियाँ इन्द्रिय चेतना का क्षेत्र विस्तार मात्र है । सामान्य स्थिति में इन्द्रियाँ एक सीमित क्षेत्र में काम कर पाती हैं जबकि अतीन्द्रिय स्तर के अभ्यासों में उनका कार्यक्षेत्र बढ़ जाता है । खुली आँखें साधारणतया मध्यवर्ती आकार एवं दूरी को ही देख सकती है, पर वे माइक्रोस्कोप के सहारे ऐसा भी देख सकती है जो खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता है । यही बात टेलिस्कोप के सम्बन्ध में भी है वे इतनी दूरी तक देख सकती हैं, जितना कि सामान्यतया दीख नहीं पड़ता । यह कृत्य आए दिन होते रहते हैं, इन्हें आध्यात्म कैसे माना जाय ? और उससे आत्मा के स्वतन्त्र अस्तित्व की सिद्धि कैसे हो ?

बौद्धिक प्रखरता के आधार पर लोग ऐसे अनुमान लगा लेते हैं जिन्हें अदृश्य, अश्रुत, अघटित स्तर का कहा जा सके, किन्तु विलक्षण प्रतिभाएँ ऐसे अनुमान लगाती और निष्कर्षों पर पहुँचती देखी गई हैं जिन्हें दिव्य ज्ञान कहा जा सके । फलित ज्योतिष वाले ऐसे ही तीर तुक्के बिठाते रहते हैं जिनमें से अधिकांश अनायास ही ठीक बैठ जाते हैं । परामनोविज्ञान की पूर्वाभास शाखा के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कुछ सोचा जा सकता है ।

सन् १८५१ में फारस निवासी सुलैमान सौदागर भारत आये थे । उन्होंने अपने संस्मरणों में कितनी ही अद्भुत घटनाओं का वर्णन किया है उन्होंने प्रयाग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुम्भ मेले में आकर्षण का केन्द्र बने हुए एक साधु का वर्णन किया है जो निरन्तर खुली आँखों से सूर्य की ओर देखता रहता था । उनके लिए भी यह एक अजूबा ही था ।

अनेक देशी-विदेशी पर्यटकों ने हिमालय के स्वामी रामानन्द अवधूत के सम्बन्ध में लिखा है कि वे सूर्य पर घण्टों खुली आँख से त्राटक करते थे । सौ वर्ष से अधिक आयु के थे और शरीर की दृष्टि से कुछ भारी होते हुए भी निरोग थे । सदा निर्वस्त्र रहते थे ।

अंग्रेज इतिहासकार बिसेन्ट पर्ल ने अपने ग्रन्थ "रिलीजस हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" में उज्जैन कुम्भ के अवसर पर आये एक हठयोगी का विवरण लिखा है—वे बिल्कुल नंगे रहते थे । अपने पतले शरीर को गुब्बारे की तरह फुलाकर कई गुना कर लेते थे लोहे की मोटी छड़ को उन्होंने हाथों से मोड़कर दिखाया । गुप्तेन्द्रिय को बढ़ाकर दो फुट लम्बा कर दिखाया । "शरीर सम्बन्धी ये कौतुक ही उनकी दृष्टि में आत्म-शक्ति का चमत्कार था लेकिन आध्यात्म विज्ञान की दृष्टि से इनको महत्त्व नहीं दिया जा सकता ।

परामनोविज्ञान क्षेत्र में पिछले दिनों संसार की कितनी ही संस्थानों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं । "प्रोसीडिंग्स ऑफ दि सोसाइटी फार सायकिकल रिसर्च एवं फाउण्डेशन फार रिसर्च इन टू दि नेचर ऑफ मैन" संस्थाओं ने जो कार्य किए हैं उनके प्रमाणों और निष्कर्षों का समय-समय पर प्रकाशन होता रहा है । इनसे सिद्ध होता है कि मनुष्य की क्षमता उतनी ही नहीं है जितनी कि कार्यों से प्रकट होती है । मस्तिष्कीय प्रभाव आमतौर से सोच-विचार में कल्पना एवं निर्णय में काम आता दीखता है । इतने पर भी परिधि इतनी छोटी भर मान बैठना ठीक नहीं ।

सन् १८८२ से लेकर अब तक के सौ वर्षों में इन संस्थानों के माध्यम से इंग्लैण्ड को हेनरी रिजावक एफ. मायर्स, एडमंड गर्नी और अमेरिका के जे. बी. राइन अपनी पत्नी लुइसा समेत इस सन्दर्भ में आजीवन जुटे रहे हैं । इन लोगों ने मनुष्य की अतीन्द्रिय क्षमताओं के सम्बन्ध में अनेकों प्रमाण प्रस्तुत किए हैं और सिद्ध किया है कि यदि इन प्रसुप्त क्षमताओं को बढ़ाया और काम में लाया जाने लगे तो उनके विकसित होने की वैसी ही सम्भावना है जैसी कि एकाग्रताजन्य अनेकों मानसिक क्षमताएँ उपलब्ध हुईं और प्रगतिक्रम में सहायक बनी हैं ।

डॉ. बार्नेट द्वारा प्रकाशित एक अतीन्द्रिय पर्यवेक्षण में भारत के एक मिलट्री मेजर का उल्लेख है जिसके मरणकालीन विचार तत्काल उनकी पत्नी के पास पहुँचे । घटना ६ सितम्बर, १८४२ की है । मेजर मुलतान के सैनिक शिविर में घायल पड़ा था । मरते समय उसने अपने एक मित्र अफसर को कहा—"मेरी उँगली से यह अँगूठी निकाल लो, इसे मेरी पत्नी के पास पहुँचा देना ।" इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई ।

ठीक उसी समय फिरोजपुर में सोती हुई उसकी पत्नी ने ठीक वही दृश्य देखा और शब्द सुनाई-पड़े । गहरी नींद से वह हड़बड़ा कर उठी और उसने अशुभ स्वप्न का विवरण घर वालों को सुनाया । सभी ने उसे मन का भ्रम कहकर टाल दिया । पर तीसरे दिन वह मित्र अफसर जब मृतक की अँगूठी लेकर पहुँचा तो उस पूर्वाभास की वास्तविकता पर सभी दंग रह गए ।

अंग्रेज महाकवि शैली को अक्सर अपना ही प्रतिबिम्ब सामने खड़ा दीखता था । प्रत्यक्ष बात तो वही करता था, पर उँगली के इशारे से कुछ संकेत करता था । इन संकेतों पर ध्यान देने से शैली को कई बार कई रहस्य भरी जानकारियाँ भी मिली थीं ।

एकबार शैली ने अपने छाया पुरुष को समुद्र किनारे का एक विशेष स्थान दिखाया और वहाँ गड्ढा खोदने लगा । यह घटना कवि ने अपनी डायरी में नोट कर ली । ठीक एक वर्ष बाद शैली उसी स्थान पर कारणवश पहुँचे और देखते-देखते मर गए ।

हालीवुड की अभिनेत्री शर्ल मैकलिन कुछ समय पूर्व भूटान आदि पर्वतीय क्षेत्रों के पर्यटन पर आई थी । उन्होंने अपने प्रकाशित संस्करणों में भूटान क्षेत्र में एक पीत वस्त्रधारी लामा को आकाश में उड़ते हुए अपनी आँखों देखी घटना का वर्णन किया है । आँखों को धोखा होने की बात को उन्होंने नहीं माना है और इस आकाश गमन के इस प्रत्यक्ष दर्शन पर टिप्पणी करते हुए लिखा है—"काश ! न्यूटन मेरे साथ होते तो अपने प्रतिपादित गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त में अवश्य ही कोई सुधार-परिवर्तन करते ।"

एलेक्जेण्ड्रा डेविल नील नामक एक यूरोपियन महिला ने चौदह वर्ष तक तिब्बत में रहकर वहाँ के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहस्यवादियों की गतिविधियों का अध्ययन किया है । उन्होंने अपने संस्मरणों में 'लुंग गाम्या' वर्ग के सिद्ध लामाओं का वर्णन किया है जो हिरनों की तरह लम्बी कुचालें लगाते हुए आकाश गमन करते थे । उन्होंने लूमो वर्ग के ऐसे वर्ग का भी वर्णन किया है जिनके शरीर आग जैसे गरम हो जाते थे और बर्फीले झरनों में बैठकर अपनी साधना करते थे ।

सन्त फ्रांसिस का जन्म इटली के एक कृषक परिवार में हुआ था । बचपन से ही उनके जीवन की अनेकों चमत्कारी घटनाएँ लोगों को देखने को मिलती थीं । आग के शोलों से खेलना उनका प्रिय विनोद था । अग्नि में तप्त लाल लोहे की सलाकें हाथ में लेकर वे कहा करते थे कि इससे मैं अपने को गरम करता हूँ । १५०७ में पओला के सन्तफ्रांसिस की मृत्यु हो गई । उनका शव अभी तक यथावत स्थिति में रखा है, सड़ा नहीं । प्रतिवर्ष एकबार दर्शन के लिए उसकी शव पेटिका को खोला जाता है ।

पाकिस्तानी नागरिक खुदावख्श ने अमेरिका के पत्रकारों की एक कॉन्फ्रेन्स में आँखों पर पट्टी बाँधकर अखबारों के पन्ने पढ़कर सुनायें थे और उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था । आँखों पर पट्टी पत्रकारों ने बाँधी थी और मोटे कपड़े की कई परतें इस प्रकार घुमाई थीं कि उनमें होकर कहीं से भी दीख पड़ने जैसी गुंजाइश न रहे । यहाँ तक कि नीचे की ओर जो थोड़ी-सी ढील रह जाती है उसमें भी रुई इस प्रकार भर दी गई कि उधर से भी कुछ दीख न सके ।

फ्रान्सिस स्टोरी द्वारा लिखित 'रीवर्स एज डोक्ट्रो इन एण्ड एक्सपीरिएन्स' पुस्तक में परा-मनोविज्ञान से सम्बन्धित अनेक तथ्य पर प्रमाणों समेत प्रकाश डाला है और बताया है कि टैलीपैथी, क्लेअर वायन्स, साइकोटेलीमेट्री टेलिकिनेसिस आदि के नाम से जानी जाने वाली अतीन्द्रिय क्षमताओं का कारण क्या हो सकता है ? इन दिनों वैज्ञानिक जगत में मानवी चेतना की रहस्यमयी परतों को खोजने के लिए नया उत्साह उभरा है और 'साइकिक फिनेमिना' को भी खोज की मान्यता प्राप्त विषय स्वीकार किया गया है, जबकि कुछ समय पूर्व तक इन बातों को अन्धविश्वास कहकर मजाक में उड़ाया जाता था ।

मानवी काय सत्ता के अन्तराल में असीम क्षमताएँ एवं विभूतियाँ प्रसुप्त सिद्ध में, बीज रूप में भरी पड़ी हैं । इनमें से प्रकट एवं फलित वे ही होती हैं, जो दैनिक जीवन के प्रयोग अभ्यास भी आती हैं, जो उपेक्षित रहती हैं । उनका पता भी नहीं चलता पर यदि उन्हें भी जगाया और कार्य रूप में परिणत करने का अभ्यास किया जाय तो उन्हें भी जागृत करने की ऐसी ही सुविधा हो सकती है जैसी कि बोलने सोचने आदि की अन्य प्राणियों से भिन्न स्तर की विशेषताएँ जागृत हो गई हैं । अतीन्द्रिय क्षमताएँ भी इन्द्रिय क्षमताओं का ही परोक्ष एवं सूक्ष्म पक्ष है । उन्हें जगाना और काम में लाना भी मनुष्य की बात है बाहर की नहीं ।

जन्मजात अर्जित अतीन्द्रिय सामर्थ्य

अमेरिका के लांस एंजेल्स नगर में एक सामान्य व्यक्ति रहते हैं—रॉज । वे कोई योगी महात्मा नहीं हैं, साधारण गृहस्थ हैं । उन्होंने अतीन्द्रिय क्षमता प्राप्त करने के लिए कोई योगाभ्यास भी नहीं किया है । परन्तु अनायास ही उनकी भीतर से ऐसी क्षमताएँ उद्भूत हुई हैं जिसके आधार पर वे गड़ी हुई वस्तु का विवरण बता देते हैं । यह बताये हुए विवरण इतने सही होते हैं कि जिनका खनिज व्यवसाय से सम्बन्ध है, वे उनकी सेवाओं का भरपूर लाभ उठाते हैं ।

अपने गुजारे के लिए वे किसी दान-दक्षिणा, इनाम उपहार पर भी निर्भर नहीं रहते । वरन् फीस के रूप में ५० डालर की फीस वसूल कर लेते हैं ताकि अवांछनीय तत्व उनकी घेरा बन्दी कर एकाग्रता भंग न कर दें । इतना होते हुए भी प्रश्नकर्त्ताओं की इतनी भीड़ रहती है कि उत्तर प्राप्त करने के लिए कई-कई महीनों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है । आमतौर से प्रश्नकर्त्ताओं में जमीन में कहाँ पानी का स्रोत है, कहाँ नहीं है, यह पूछने वाले ही अधिक होते हैं । उनके बताये हुए उत्तरों में ८५ प्रतिशत सही निकलते हैं ।

एक बार एक विचित्र घटना हुई । एक व्यक्ति के यहाँ चोरी हो गई । चोरी में कीमती हीरे थे । कुछ अता-पता नहीं चल पा रहा था । पूछताछ के लिए वे लोग रॉजबार्मेई के पास गए । उन्होंने उत्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देने के लिए ३ दिन माँगे । इसके बाद उन्होंने वे हीरे जमीन में जहाँ गढ़े थे, उस स्थान को बता दिया । इतना ही नहीं, जिन लोगों ने चोरी की थी, उन्हें पुलिस द्वारा पकड़वा दिया । ऐसे कार्य वे कई बार करके पुलिस की प्रशस्ति पा चुके हैं ।

एक तेल खोदने वाली कम्पनी ने उनकी सहायता ली और पूछा कि इस इलाके में तेल कहाँ मिल सकता है ? उन्होंने अपनी अतीन्द्रिय क्षमता के सहारे वह स्थान बताया जहाँ अभीष्ट मात्रा में तेल निकलने की आशा थी । वहीं खुदाई की गई । इस स्थान से न केवल बड़ी मात्रा में तेल मिला वरन् सोना, यूरेनियम, आदि कीमती धातुओं का भण्डार भी मिला । यह करोड़ों की सम्पत्ति थी । इस पर कम्पनी ने कुछ अतिरिक्त उपहार उन्हें देना चाहा । उसे लेने से उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया और कहा—निर्धारित फीस लेने के उपरान्त मेरा इनाम लेने का कोई हक नहीं रह जाता ।

बार्मेई अपनी इस विशेषता को जन्मजात बताते हैं । इसके लिए उन्हें कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ा । उनकी माँ खेल-खेल में ही यह पूछती रहती थी कि बता मेरी मुट्ठी में क्या है ? उत्तर अस्सी प्रतिशत सही निकलते थे । कुछ दिन ऐसे ही खेल-खेल चलता रहा । पीछे उनकी माँ को विश्वास हो गया कि मेरा लड़का किसी कारण अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न है । परिवारीजनों ने उसका व्यावसायिक प्रयोग आरम्भ कर दिया । इसका ईमानदारी से उपयोग करने पर सभी ने राजी-खुशी से निर्धारित फीस देकर भूगर्भ की छिपी जानकारियाँ लेना जारी रखा ।

एक दिन एक व्यक्ति ने पूछा कि वह चाँदी की खदान के लिए जहाँ खुदाई चला रहा है वहाँ चलाये या नहीं । इसके उत्तर में वे उसे एक दूर स्थित जगह पर ले गए और कहा आप वहाँ नहीं, यहाँ खोदें । कथन सही निकला और नई जगह पर अनुमान से अधिक चाँदी निकली ।

बढ़ती हुई ख्याति को सुनकर खदान खोदने की मशीनों में कहीं खराबी हो जाती तो वे लोग भी पहुँचते । अतीन्द्रिय क्षमता के आधार पर वे यह भी बता देते कि मशीन का कौन-सा पुर्जा खराब हो गया है और क्या करने पर वह ठीक हो सकता है ?

बार्मेई अपने को सदा एक साधारण-व्यक्ति बताते रहे और बिना अनुचित लाभ उठाये अपनी अतीन्द्रिय क्षमता का लाभ सबको देते रहे । वे कहते थे, यह जन्मजात, बिना किसी प्रयत्न के प्राप्त निधि है, इसका उपयोग सभी के लिए सामान्य रूप से होना चाहिए ।

अतीन्द्रिय चेतना निराधार नहीं, विज्ञान सम्मत

सामान्य दृष्टि से मनुष्य हाड़-माँस का पिण्ड भर दिखाई देता है, जो चलता है, बोलता है, हँसता है, गाता है अर्थात् जीवित है । स्थूल दृष्टि से कई प्राणी उससे बढ़-चढ़कर हैं फिर भी मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जाता है । इसका कारण उसकी बौद्धिक एवं भावनात्मक क्षमताएँ हैं । इन क्षमताओं के आधार पर ही वह शिक्षा, उद्योग, कृषि, चिकित्सा, शिल्पकला और विज्ञान आदि कई क्षेत्रों में अन्य प्राणियों से बहुत आगे बढ़ सका है और आश्चर्यजनक प्रगति कर सृष्टि का मुकुटमणि बना हुआ है । यह विस्मयकारी प्रगति उसकी बौद्धिक क्षमता के ही प्रमाण हैं । इसके अतिरिक्त भाव-सम्वेदना के क्षेत्र में भी वह अन्य प्राणियों से कहीं बढ़-चढ़कर है । सहानुभूति और प्रेम प्यार की कोमल सम्वेदनाओं के आधार पर उसने अपने पारस्परिक सम्बन्धों को जितना मधुर बनाया है और चिन्तन के क्षेत्र में जितना रस विभोर करने का अवसर प्राप्त किया है, यह उसकी भावनात्मक क्षमता सम्भावना की प्रक्रिया का ही परिचायक है ।

अन्य प्राणी बौद्धिक और भावनात्मक क्षेत्र में मनुष्य से पिछड़े होने के कारण ही, शरीर क्षेत्र में उससे अधिक बलिष्ठ और अधिक क्षमतावान होने के बाद भी कनिष्ठ हैं । बौद्धिक और भावनात्मक क्षमताओं के कारण ही मनुष्य को वैसा श्रेय सौभाग्य मिला है, जो सृष्टि के अन्य प्राणियों को प्राप्त नहीं है । इन क्षमताओं से भी अधिक आश्चर्यजनक और विस्मयकारी है, मनुष्य की अतीन्द्रिय चेतना ।

केवल सामान्य चिन्तन और बौद्धिक प्रगल्भता की सम्भावनाओं से भरा होने के कारण ही मानवी मस्तिष्क को जादुई पिटारा कहा जाता है । मस्तिष्क का यह परिचय, उसकी विशेषताओं का यह विश्लेषण तो बहुत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधा-अधूरा है । इसके गहन अन्तराल में उतरने पर प्रतीत होता है कि इसमें वे दिव्य चेतनाएँ भरी हुई हैं जिन्हें अलौकिक और अतीन्द्रिय कहा जा सके । इन सम्भावनाओं और विशेषताओं की व्याख्या सामान्य मस्तिष्कीय गतिविधियों के आधार पर नहीं की जा सकती । प्राचीन काल में ऋषि, मुनि योग-साधना के द्वारा उस दिव्य चेतना को विकसित करने में एक बड़ी सीमा तक सफल हुए थे । इन दिनों चूँकि क्षमताओं को जागृत करने की वह विद्या लुप्त हो गई है इसलिए इन्हें बाजीगरी, हाथ की सफाई, जादुई करतब और मनोरंजन चमत्कार के समतुल्य माना जाने लगा । कुछ धूर्त लोगों ने मूर्खों को भ्रमग्रस्त करने और उन्हें ठगने के लिए, स्वार्थ साधन के लिए तथाकथित चमत्कार प्रस्तुत किए और लोगों में योग विज्ञान के प्रति अश्रद्धा बढ़ने लगी । इसे अवैज्ञानिक और "सूडोसाइन्स" का फतवा देने वालों की आज सर्वत्र भरमार है, परन्तु इस सम्बन्ध में अब जो तथ्य सामने आते जा रहे हैं । उनके कारण अतीन्द्रिय चेतना वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित होने लगी है ।

पिछले कई वर्षों से अनेक मनोवैज्ञानिक और परामनोवैज्ञानिक इन दिव्य क्षमताओं, अतीन्द्रिय शक्तियों का अध्ययन करते रहे हैं । इस सम्बन्ध में तरह-तरह की मान्यताएँ स्थापित की गई हैं, लेकिन मान्यताओं का आधार निरीक्षण और विवेचन मात्र था । इसलिए इन सम्भावनाओं को कोई वैज्ञानिक समर्थन नहीं मिला था । अब इन सम्भावनाओं और क्षमताओं का अध्ययन तथा परीक्षण कई भौतिक विज्ञान भी कर रहे हैं और जो निष्कर्ष सामने आ रहे हैं, उनसे यही बात सिद्ध होती है कि अतीन्द्रिय चेतना को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त वैज्ञानिक आधार हैं । हाल ही में अमेरिका के दो प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हेराल्ड पुरहोफ तथा डॉ. रसेल टार्ग ने अतीन्द्रिय चेतना के सम्बन्ध में ऐसे कई व्यक्तियों का अध्ययन किया जो अतीन्द्रिय चेतना से सम्पन्न बताये जाते थे । इन वैज्ञानिकों ने ऐसे व्यक्तियों का न केवल अध्ययन किया, वरन् कई तरह के प्रयोग भी किए और पाया कि अतीन्द्रिय शक्तियों के दावे निराधार या छलावे नहीं हैं ।

प्रयोगों की शुरुआत अमेरिका के एक प्रसिद्ध लेखक रिचार्ड बाख से हुई । बाख अपने व्यावसायिक जीवन में एक उड़ाके थे । एक दिन समुद्र किनारे टहलते-टहलते सुना कि जैसे किसी ने पुकार कर कहा हो "जोनाथन लिविंग्सटन सीगल" । आवाज बहुत साफ थी और लग रहा था कि कोई बाख को ही सम्बोधित कर रहा है रिचर्ड बाख इस नाम के किसी भी व्यक्ति को नहीं जानते थे और न ही उन्हें किसी ने आज तक इस नाम से पुकारा था । इस नाम को सुनने के बाद वे एक विचित्र सम्मोहित की-सी अवस्था में आ गए और तुरन्त ही घर लौट पड़े । लौटते ही उन्होंने जो लिखना शुरू किया तो चार-पाँच सौ पृष्ठों की एक मोटी किताब लिख डाली और वह भी एक ही बैठक में । यह एक उपन्यास था । इसके पहले बाख ने उपन्यास लिखना तो दूर रहा कोई लघु कथा भी नहीं लिखी थी ।

बाख का दावा था कि यह पुस्तक उन्होंने परामनोवैज्ञानिक शक्तियों के वशवर्ती होकर लिखी थी । पुस्तक बाख के इस दावे के साथ प्रकाशित हुई । अमेरिका की प्रसिद्ध पत्रिका "साइकिक" ने रिचर्ड बाख से इस विषय पर भेंट वार्ता ली और उसे प्रकाशित किया । यह भेंट वार्ता डॉ. रसेल टार्ग ने पढ़ी और उन्होंने इस दावे की सच्चाई को परखने का निश्चय कर लिया । इसके पूर्व भी डॉ. टार्ग और पुरहोफ अतीन्द्रिय शक्तियों से सम्बन्धित दावों की सच्चाई परख चुके थे और इस विषय में कई प्रयोग कर चुके थे । दोनों वैज्ञानिकों ने सन् १९७३ में इस तरह के अनुसन्धान प्रयोगों की योजना बनाई थी और पहला प्रयोग २६ मई, १९७३ को किया । प्रयोग के लिए न्यूयार्क के प्रसिद्ध कलाकार इंगो स्वान को चुना गया था । इंगो स्वान के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वह आँखें बन्द करके मीलों दूर के दृश्य देख लेता है । अर्थात् उसमें अतीन्द्रिय दर्शन की क्षमता है । इंगो को इस पराशक्ति पर प्रयोग करने के लिए राजी किया गया और उन्हें एक कमरे में बन्द कर दिया गया ।

इस कमरे में इंगो के अतिरिक्त और कोई नहीं था । था तो केवल एक वीडियो रिकॉर्डर जो आवाज भी टेप करता है और तस्वीर भी । इंगो को कमरे में पहुँचने तक यह नहीं बताया गया था कि उनसे क्या-क्या पूछा जाने वाला है । कमरे में प्रवेश करते ही प्रयोगकर्त्ता रसेल, टार्ग की बातों का टेप, टेपरिकॉर्डर पर खोल दिया गया । पूछा गया था कि हमारा एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मित्र जो इस समय अमुक अक्षांश और अमुक देशान्तर पर है, वहाँ क्या कर रहा है ? हमें खुद भी इस बात का पता नहीं है कि वह कहाँ है और किस स्थिति में है ? इस प्रयोग में आपको बताना है कि वह कहाँ है ? कौन से नगर या क्षेत्र के किस हिस्से में है ?

इंगो ने आँखें बन्द की और कुछ देर तक अपने चित्त को एकाग्र किया, फिर वह बताने लगे कि इस समय क्या-क्या देख रहे हैं ? बीच-बीच में वह कागज पर रेखाचित्र भी खींचते जाते थे । इस प्रकार इंगो ने उस साथी के सम्बन्ध में कई विवरण बताये और उस स्थान के नक्शे बनाये । कुछ हफ्तों बाद जब वह व्यक्ति वापस लौटा, जिसके बारे में प्रश्न किए गए थे तो उसे इंगो द्वारा बनाये गए नक्शे और दिए गए विवरण, जिन्हें टेप कर लिया गया था, बताये गए । साथी ने बताया कि इंगो स्वान द्वारा दिए विवरण ही सही नहीं हैं बल्कि उन्होंने जो नक्शे खींचे और नक्शों में दृश्यों की दूरियों का जो अनुपात दिया है, वह भी हू-ब-हू सही है । पुरहोफ और रसेल टार्ग अपने इस पहले प्रयोग के निष्कर्ष से चकित थे ।

पर वह वैज्ञानिक ही क्या जो एकाध प्रयोग से ही सन्तुष्ट हो जाय । एकाध प्रयोगों की सफलता तो संयोगों पर भी आधारित हो सकती है । इसलिए उन्होंने प्रयोगों में विविधता लाकर इस निष्कर्ष का खरा-खोटापन भली-भाँति परख लेने का निश्चय किया । उन्होंने विभिन्न तरह के कई प्रयोग किए । इन प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्ष इनके विवरणों सहित प्रकाशित होने लगे तो वैज्ञानिक द्वय के पास दर्जनों फोन आने लगे कि हम अनुभव करते हैं, हमारे भीतर भी ऐसी कुछ शक्तियाँ हैं और उनका परीक्षण करने के लिए हम अपने को आपके प्रयोगों में सम्मिलित करना चाहते हैं ।

स्वाभाविक ही सब प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया जा सकता था । कुछ खास प्रस्तावकर्त्ताओं को ही चुना जा सका । ऐसे प्रस्तावकों में एक थे बरबैंक शहर के उप-मेयर और पुलिस कमिश्नर रह चुके पैट्रिक एच. प्राइस । पैट्रिक ने अपनी इस क्षमता का उपयोग अपने पुलिस जीवन में भी किया था और कई अपराधियों को पकड़ा था । पैट्रिक पर डॉ. टार्ग और पुरहोफ ने फोन पर ही प्रयोग किए । इन प्रयोगों की कुल संख्या नौ थी और आश्चर्य की बात थी कि इनके निष्कर्ष अतीन्द्रिय चेतना के अस्तित्व को पूर्व प्रयोगों के समान ही पुष्ट करते थे । उल्लेखनीय है कि सभी प्रयोग भिन्न-भिन्न तरह के थे और उनके विवरण भी एक ऐसे वैज्ञानिक को विश्लेषण करने के लिए दिए गए थे जिसे यह भी पता नहीं था कि मामला क्या है ? जिन नौ स्थानों को पैट्रिक ने बन्द कमरे में बैठकर पहचाना था उनकी दूरी वहाँ से दो से पन्द्रह किलोमीटर तक थी । विश्लेषण कर्त्ता वैज्ञानिक ने इन सभी विवरणों का विश्लेषण कर वही निष्कर्ष निकाले डॉ. टार्ग और पुरहोफ ने निकाले थे ।

पुरहोफ और टार्ग के अतिरिक्त और भी कई वैज्ञानिक अतीन्द्रिय चेतना की वास्तविकता जाँचने में लगे हुए हैं । इस विषय में फ्रांस के डॉ. पाल गोल्डीन का नाम उल्लेखनीय है । वे अपने विषय का अध्ययन करने के लिए संसार के कई देशों की यात्रा कर चुके हैं । सैकड़ों प्रयोग और निरीक्षण करने के बाद डॉ. गोल्डीन इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मनुष्य के पास एक छठी इन्द्रिय भी है, जिसके सम्बन्ध में लोगों को बहुत कम जानकारी है । पाँच ज्ञानेन्द्रियों की सुनने, बोलने, देखने, सूँघने और स्पर्शानुभूति की क्षमता से तो सभी परिचित हैं, परन्तु छठी इन्द्रिय जिसे पराशक्ति भी कहा जा सकता है, इन पाँचों इन्द्रियों से अधिक महत्त्वपूर्ण है । किन्हीं-किन्हीं में यह संयोगवश प्रकट होती है और देखने, सम्पर्क में आने वालों को चकित कर देती है, किन्तु वह आकस्मिक है । प्रयत्नपूर्वक उसे बढ़ाया जा सकता है और उससे अधिक लाभ उठाया जा सकता है जो पाँच ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से प्राप्त होना सम्भव है ।

आध्यात्म की इन मान्यताओं को, अतीन्द्रिय चेतना की इन सम्भावनाओं को विज्ञान ने आरम्भ में निराधार भावुक मान्यताओं की संज्ञा दी थी और कहा था कि इनका कोई प्रामाणिक आधार नहीं है, पर अब ऐसी बात नहीं है । चेतना के क्षेत्र में जो नित नवीन खोजें होती जा रही हैं, उन्होंने यह तथ्य सामने प्रस्तुत कर दिया है कि मस्तिष्क मात्र चिन्तन का एवं संचालन कार्य सम्पादन का उत्तरदायित्व ही नहीं सँभालता है । शरीर और मस्तिष्क का कार्यक्षेत्र वहीं तक सीमित नहीं है । जितना कि समझा जाता है । बल्कि उसकी परिधि बहुत व्यापक है । परामनोविज्ञान जो काफी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय से इन शक्तियों का प्रतिपादन पुष्टिकरण करता आ रहा है, आरम्भ में भूतविद्या जैसी जादुई चर्चा कहा गया था, किन्तु अब प्राप्त तथ्यों ने इसे विज्ञान की ही एक शाखा मानने जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी है और उसकी गम्भीरता तथा वास्तविकता को स्वीकारा, समझा व माना जाने लगा है । अमेरिका की विज्ञान संस्था ए. ए. ए. एस. ने परा-मनोविज्ञान संस्था को अपना पूर्ण सदस्य माना है और उसके प्रतिनिधि अन्य वैज्ञानिकों के साथ बैठते, विज्ञान कांग्रेसों में भाग लेते हैं । परा-मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है । उसमें मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले और मस्तिष्क द्वारा प्रभावित होने वाले सभी आधार सम्मिलित रखे गए हैं । उसी की एक शाखा अतीन्द्रिय विज्ञान है जिसे पी. एस. आई. कहा जाता है । इस शाखा में अतीन्द्रिय दृष्टि, पूर्वाभास, विचार सम्प्रेषण आदि कई धाराएँ सम्मिलित हैं ।

अतीन्द्रिय चेतना की बहुत सीमित सम्भावनाओं पर ही अभी प्रयोग परीक्षण किए जा सके हैं । इस दिशा में प्रयोगों का क्रम जारी है और अगले दिनों बहुत कुछ प्राप्त होने की आशा की जा रही है तथा समझा जा रहा है कि मनुष्य अतीन्द्रिय चेतना के क्षेत्र में प्रगति कर विलक्षण सामर्थ्यों का अधिष्ठाता बन सकता है ।

अतीन्द्रिय शक्ति : विकास के प्राचीन और नवीन प्रयोग

मनुष्य में दबी हुई प्रसुप्त शक्तियाँ उससे कहीं अधिक हैं जितनी कि प्रकट में देखी जाती हैं । धरती के ऊपर जितनी वस्तुएँ हैं उनसे हजारों, लाखों गुनी सम्पदाएँ भू-गर्भ में दबी पड़ी है । ठीक इसी तरह मनुष्य जैसा कुछ देखा समझा जाता है उसकी तुलना में उसका आन्तरिक वैभव अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा है । दृश्य क्षमताएँ और विशेषताएँ बढ़ाकर अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करने का क्रिया-कौशल लोग जान गए हैं, पर यह नहीं समझ पा रहे हैं जो अतीन्द्रिय एवं अति मानवी सामर्थ्य उसके भीतर भरी पड़ी है उसे कैसे जगाया जाय और उसका किस प्रयोजन के लिए किस प्रकार उपयोग किया जाय ।

कुछ समय पहले तक भौतिक विज्ञानी मनुष्य को एक बोलते-चलते वृक्ष की उपमा देते थे, वे उसे उतना ही मानते थे जितना कि आँखों से दिखाई देता है; अथवा प्रत्यक्ष रूप से नापा तोला जा सकता है । अब उसकी गहन क्षमताओं को धीरे-धीरे समझा जा रहा है और अनुभव किया जा रहा है, कि मनुष्य के बारे में जो सोचा गया था वस्तुतः वह उससे कहीं अधिक है ।

अति मानवी विलक्षण शक्तियों का केन्द्र अब प्रसुप्त मन को माना जा रहा है और उस क्षेत्र की तत्परतापूर्वक शोध हो रही है । समझा गया है कि चेतन मस्तिष्क की धमाचौकड़ी के कारण प्रसुप्त मन खिन्न होकर एक कोने में जाकर सो जाता है । उसे जागृत होने और अपना काम करने का अवसर तब मिलता है जब मस्तिष्कीय प्रबुद्ध चेतना को लय किया जा सके या सुषुप्ति अवस्था में पहुँचाया जा सके ।

प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के अनेक प्रकार और अनेक प्रयोग हैं उनके द्वारा जागृत मस्तिष्क को किसी बिन्दु पर केन्द्रित करके ध्यानावस्था में लय किया जाता है । यह लय योग है । प्रकाश का ध्यान बिन्दुयोग विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का श्रवण नादयोग, खेचरी मुद्रा द्वारा सोमरस का पान, षट्चक्र वेधन, आज्ञाचक्र उन्मीलन आदि ध्यानयोग परक क्रियाएँ इसी प्रयोजन के लिए हैं । इनमें प्रबुद्ध मस्तिष्क एक केन्द्र पर केन्द्रीभूत होता है—एकाग्रता की स्थिति में जाकर अपनी धमाचौकड़ी बन्द कर देता है, उस शान्त वातावरण में अचेतन मन को अपने लिए कार्य क्षेत्र मिल जाता है और उसके साथ जुड़ी हुई शक्तियाँ उगने-बढ़ने और फलने-फूलने का अवसर प्राप्त कर लेती हैं ।

दूसरा मार्ग समाधि मार्ग है । इसकी बाल कक्षा मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म जैसे वेधक दृष्टि एवं संकल्प शक्ति के प्रयोग द्वारा सिखाई समझाई जाती है । इन प्रयोगों में भी प्रबुद्ध मस्तिष्क योगनिद्रा में धकेल दिया जाता है और अचेतन मन जागृत होकर अपनी विशिष्ट भूमिका निवाहने के लिए अभ्यस्त होने लगता है ।

स्व-सम्मोहन का अपना अलग प्रयोग है । इसमें भी संकल्प शक्ति की प्रखरता ही प्रधान है । मस्तिष्क को निःचेष्ट होने से शरीर निष्क्रिय हो जाता है इसे समाधि अथवा 'योगनिद्रा' कहते हैं । शरीर के निःचेष्ट होने में मस्तिष्क सुषुप्ति अवस्था में चला जाता है इसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामान्य निद्रा कहते हैं । यह रोज ही कई घण्टे आती है । उसमें अचेतन मन अपना काम तो करता है, पर वह बेतुका होता है उसमें स्वप्न दिखाई पड़ते हैं । यह स्वप्न अनगढ़ होते हैं, जो देखा, सुना या सोचा गया है उसी का घुला-मिला रूप सपनों के रूप में सामने आता है । कभी-कभी ऐसा भी होता है कि साधारण निद्रा में भी योगनिद्रा की स्थिति बन जाय ऐसा हो सके तो सपने सार्थक होते हैं उनमें भूत या भविष्य की सारगर्भित झाँकी रहती है ।

यह पुरानी योगशास्त्र सम्मत परिपाटियाँ हैं अतीन्द्रिय चेतना विकसित करने के लिए शारीरिक संयम एवं तप का, मानसिक तप के लिए ध्यान एवं भक्ति साधना का आश्रय लिया जाता था । अब भौतिक विज्ञान द्वारा यह प्रयास हो रहे हैं कि शरीर और मन को वस्तुओं के द्वारा प्रभावित करके वह स्थिति पैदा की जाय जिससे प्रबुद्ध मस्तिष्क को सुषुप्ति अवस्था में पहुँचाकर फिर अचेतन मन से वे काम लिए जायें जो योगाभ्यास द्वारा लिए जाते रहे हैं । इस सन्दर्भ में अब हिप्नोटिज्म स्तर के प्रयोग अब पुराने पड़ते जाते हैं । उसमें यों शरीरगत मानवी विद्युत को संकल्प बल द्वारा दूसरे शरीर में धकेला जाता था । इसलिए उसे अर्ध-भौतिक एवं अर्ध-आध्यात्मिक माना जाता था ।

सम्मोहन विद्या द्वारा मनुष्य की विशिष्ट योगनिद्रा ग्रस्त स्थिति कैसे बन जाती है इस पर प्रकाश डालते हुए येल विश्वविद्यालय के स्नायु विशेषज्ञ डॉ. कैविज ने 'अमेरिकन सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल हिप्नोसिस' के एक अधिवेशन में अपने प्रयोगों के आधार पर बताया था कि मस्तिष्कीय हलचलों का स्नायविक स्थिति पर पड़ने वाला प्रभाव ही सम्मोहन का मूल कारण है । मस्तिष्क के कुछ विशिष्ट केन्द्रों में विद्युतीय आवेश की मात्रा अधिक बढ़ जाने से उसका प्रभाव 'नियोकॉर्टेक्स' नामक उस केन्द्र क्षेत्र पर पड़ता है जो तर्क, निर्णय, संकल्प, इच्छा, विवेक आदि उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है । यह केन्द्र जब अर्ध-मूर्च्छित स्थिति में चला जाता है तो अन्यान्य ऐसे केन्द्र काम करने लगते हैं जो सामान्य मनःस्थिति में प्रायः प्रसुप्त स्थिति में पड़े रहते हैं । इनका जागरण ही न केवल सम्मोहन विद्या की भूमिका प्रस्तुत करता है वरन् अन्यान्य अतीन्द्रिय चमत्कारों का भी कारण होता है ।

साधारणतया मनुष्य का मस्तिष्क चिन्तनरत रहता है । कई बार तो यह चिन्तन अत्यन्त व्यस्त और उद्विग्न होता है । ऐसी स्थिति में वहाँ उत्तेजना और तनाव की मात्रा बढ़ी रहना स्वाभाविक है । इस उद्विग्नता के तूफान में उन विशिष्ट केन्द्रों की स्थिति दयनीय हो जाती है जो अतीन्द्रिय चेतना को विकसित करके उसे 'दिव्य' बना सकते हैं ।

क्रिया लाभ की दृष्टि से मन की प्रशान्त और शिथिल स्थिति अवांछनीय है । मन शिथिल पड़ा रहेगा तो चिन्तन धीमा और हल्का होगा साथ ही उत्साह एवं स्फूर्ति में भी न्यूनता आयेगी तद्नुसार क्रिया का परिमाण स्वल्प रहेगा और मनुष्य आलसी एवं मन्द कर्मी बनता दिखाई देगा । सामान्य बुद्धि से ऐसी स्थिति अनुत्पादन होने के कारण अवांछनीय है । उससे प्रत्यक्ष प्रगति में बाधा पहुँचती है । आलसी और प्रमादी प्रायः होते भी इसी स्तर के हैं । यदि ऐसी स्थिति में आदत बन जाय और शिथिलता, निरुद्देश्यता, निष्क्रियता की पर्यायवाची बन जाय तो निःसन्देह वह हानिकारक है, पर जब वह शिथिलता विशिष्ट प्रयोजन के लिए संकल्पपूर्वक उत्पन्न की जाती है और उस प्रशान्त स्थिति का लाभ अन्य प्रकार के महत्त्वपूर्ण उत्पादन अभिवर्धन के लिए उठाया जाता है तो उसे हेय नहीं ठहराया जा सकता है । योगनिद्रा एवं समाधि स्थिति इसी प्रयोजन के लिए है । प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की साधनाएँ मस्तिष्क की बहुमुखी हलचलों को रोककर न केवल केन्द्रीभूत करती हैं वरन् मनः क्षेत्र में शान्ति शिथिलता और निष्क्रियता का वातावरण भी उत्पन्न करती है । ध्यान का अर्थ मात्र एकाग्रता नहीं है, वरन् मस्तिष्क के महत्त्वपूर्ण केन्द्रों को प्रशान्त वातावरण का लाभ देकर उन्हें सजग एवं परिपुष्ट बनाना भी है । इन्हीं केन्द्रों से चमत्कारी अतीन्द्रिय उपलब्धियाँ उत्पन्न होती हैं ।

समाधि की स्थिति में मस्तिष्क में अल्फा तरंगें अधिक मात्रा में निकलती हुई पायी गई हैं । मन के एकाग्र होने पर बीटा, डेल्टा और ईटा तरंगों का निःसरण कहीं अधिक बढ़ जाता है । मन और बुद्धि की मन्दता और प्रखरता की जानकारी मस्तिष्क से निकलने वाली अल्फा किरणों को मापकर जानी जा सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मस्तिष्कीय आवेश के कई प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं । शोधकर्त्ताओं का अनुमान है कि यह ध्वनियाँ ई. एस. वी. इलेक्ट्रिकल स्टिमुलेशन ऑफ ब्रेन से उद्‌भूत होती हैं । योगी लोग अनहद नाद के रूप में इसी प्रवाह को सुनते हैं । इस सूक्ष्म श्रवण से यह पता चलता है कि मस्तिष्क में विद्युत ऊर्जा किस स्तर पर काम कर रही है ।

मिशिगन विश्वविद्यालय के चिकित्सा संस्थान द्वारा समाधि की स्थिति में शरीर और मन की स्थिति का विवेचन करने के लिए एक भारतीय योगी शान्तानन्द को चुना था । प्रयोगशाला में उनकी समाधि स्थिति का अनेक यन्त्रों से परीक्षण किया गया था उससे निष्कर्ष निकला कि उस अवस्था में, शरीर की आन्तरिक हलचलें अत्यन्त न्यून हो जाती हैं, मस्तिष्क मूर्च्छा स्थिति में चला जाता है फिर भी शरीर में सड़न अथवा विघटन की कोई बुरी प्रक्रिया आरम्भ नहीं होती । यहाँ तक विभिन्न छिद्रों से निःसृत होते रहने वाले मलों में प्रक्रिया रुक जाने से भी कोई विषाक्त प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता ।

हारवर्ड इन्स्टीट्यूट फॉर साइकिक एण्ड कल्चर रिसर्च की ओर से डॉ. थेरेस ब्रोसे अपने दल के साथ भारत में योग विलक्षणता की शोध करने आयी थीं । उन्होंने समाधिस्थ योगियों के शरीरों की उसी स्थिति में पूरी-पूरी जाँच की और पाया कि वे लगभग मृत स्थिति में पहुँचने पर भी सामान्य स्थिति में जीवित रह रहे हैं और उनके शरीर से कोई अवांछनीय स्थिति उत्पन्न नहीं हो रही है । इस सम्बन्ध में आगे के अनुसन्धान करने के लिए श्रीमती ब्रोसे एक फ्रांसीसी शरीर विज्ञानी डॉ. माइलोवेनोविच के साथ भारत आयी थीं, उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने शेष सन्देहों को भी दूर कर लिया । कुछ समय के लिए दिल की धड़कन बिल्कुल बन्द कर लेने का दावा भी उन्होंने सही पाया । ऐसे योगी तो बहुत से हैं जो सामान्यतया प्रति मिनिट ७२ बार की धड़कन को घटाकर ३० की संख्या तक शिथिल कर लेते हैं । तीन दिन से लेकर २८ दिन तक बिना साँस लिए, बिना अन्न-जल ग्रहण किए, बिना मल-मूत्र विसर्जन किए—समाधिस्थ रहने वाले योगियों में से भी अधिकांश के दावे सही पाये गए । उनके संज्ञा शून्य होने की बात उनका हाथ बर्फ में दबाये रहने और आग का स्पर्श करने पर भी परीक्षा में खरी उतरी । एक योगी संकल्प बल से जिस भी अंग से कहा जाय उसी से पसीना निकाल देते थे ।

अमेरिका के अन्तरिक्ष विज्ञानी अब इस खोज में लगे हुए हैं कि लम्बी अन्तरिक्ष यात्राओं में जाने वाले लोगों के शरीरों में ऐसी विशिष्टताएँ उत्पन्न की जायें जिनके आधार पर वे उस कष्टकर अवधि को स्वल्प साधनों से सुविधापूर्वक सम्पन्न कर सकें । सर्दी, गर्मी, भूख-प्यास आदि पर लम्बे समय तक बिना कष्ट सहे, क्या विजय प्राप्त की जा सकती है ? क्या देर तक मूर्च्छित और शीतल रहा जा सकता है ? इस सन्दर्भ में वे योगियों में पाई जाने वाली विलक्षणताओं को अपना शोध आधार बना रहे हैं ।

अन्तरिक्ष अनुसन्धान विज्ञानी टॉवी फ्रेडमेन का एक लेख कुछ समय पूर्व 'लाइफ' पत्रिका में छपा था । जिसमें उन्होंने चमत्कारी योगियों की विलक्षणताओं के कारण जानने पर बहुत जोर दिया था । उन्होंने कहा—चमत्कार नामक कोई वस्तु इस संसार में नहीं । यहाँ जो कुछ होता है वह सब विज्ञान के नियमों के आधार पर ही होता है । चमत्कार हम इसलिए कहते हैं कि वे क्रियाएँ प्रचलित नहीं हैं और उनके कारण सर्वविदित नहीं हैं । जिस दिन उनका रहस्य जान लिया जाता है, उस दिन वे सामान्य क्रिया-कलाप बन जाते हैं । चमत्कारी योगियों में यदि कोई विशेषता दिखाई पड़ती है तो उसका कारण प्रकृति के मान्य सिद्धान्तों पर ही आधारित होना चाहिए और वह विशेषता उत्पन्न करना किसी भी पुरुषार्थी के लिए सम्भव होना चाहिए ।

भारतीय योगीजन साधना के लिए शीत प्रधान हिमालय जैसे पर्वतों को अपना निवास स्थान बनाते थे और ध्यान समाधि द्वारा प्रबुद्ध चेतना को निद्रित करके अन्तःचेतना की गहराई में उतरते थे । अब ध्यान द्वारा समाधि का तो नहीं केवल शीत का उपयोग करके समाधि स्थिति उत्पन्न करने का गुर ढूँढ़ निकाला गया है । अत्यधिक शीत में शरीर के अंग-प्रत्यंगों को विश्राम मिलता है मस्तिष्क को भी । अस्तु आयु का आगे बढ़ना रुक जाता है । शीत समाधि में जो जिस समय उतारा गया था वह आयु की दृष्टि से जहाँ का तहाँ बना रहता है । दस वर्ष के लड़के को शीत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाधि दी जाय और उसे पन्द्रह वर्ष बाद जगाया जाय तो वह पच्चीस वर्ष का युवक नहीं वरन् दस वर्ष का बच्चा ही मिलेगा । इन पन्द्रह वर्षों में दो लाभ और भी होंगे एक यह कि जन्म से दस वर्ष की आयु तक जितनी शक्ति खर्च हुई होगी उसकी क्षतिपूर्ति हो जायेगी । जीवाणु अभिनव उत्साह से काम करने योग्य बन जायेंगे । दूसरा लाभ है, प्रबुद्ध मस्तिष्क के सुषुप्ति स्थिति में रहने के कारण अचेतन को अपनी हलचलें जारी रखने का अवसर मिल जायेगा और अतीन्द्रिय क्षमता विकसित करने का अवसर मिल जायेगा ।

चूहे आदि छोटे जीवों को कृत्रिम शीत वातावरण में रखकर निद्रित करने में सफलता प्राप्त कर ली गई है । अब यह सोचा जा रहा है कि मनुष्य को भी क्यों न इस स्थिति का लाभ लेने दिया जाय । शीत निद्रा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि कोशिकाओं और तन्त्रिकाओं को उतने समय तक काम करने से छुट्टी मिल जाती है । शरीर निर्वाह के लिए जब उन्हें कुछ नहीं करना पड़ता तो वे अपनी दुर्बलता को दूर करने में लग जाती हैं । ऐसे विश्रामकाल में उन्हें नव-जीवन प्राप्त होता है । अस्तु जागरण के उपरान्त वे अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह जीवनयात्रा को चला सकने में समर्थ होती हैं । वृद्धि और क्षति का क्रम रुक जाने से भी उन दिनों का लाभ दीर्घजीवन की बुढ़ापे को आगे खिसकाने की दृष्टि से भी मिलता ही है ।

सचेत पक्षियों के शरीर का तापमान प्रायः १०० फारेनहाइट होता है । शीतकाल में सुषुप्त पक्षियों के शरीर में वह घटकर ६५ डिग्री ही रह जाता है ।

ठण्डे प्रदेश के चमगादड़ अति शीत ऋतु में गहरी नींद में सोये रहते हैं । ठण्डे प्रदेशों में रहने वाले रीछ और गिलहरियाँ अधिक ठण्ड के दिनों में सोते तो रहते हैं, पर उनकी निद्रा बहुत गहरी नहीं होती । वे उस ऋतु के लिए भोजन जमा कर लेते हैं और बीच-बीच में उठ-उठकर खाने और मल-मूत्र त्यागने की आवश्यकता पूरी कर लेते हैं ।

इस नींद में शरीर की आन्तरिक गतिविधियाँ इतनी शिथिल हो जाती हैं कि उस प्रसुप्त शरीर में कहीं कुछ विषाणु प्रवेश करा दिए जायें तो वे जहाँ के तहाँ पड़े रहेंगे आगे बढ़कर शरीर में अन्यत्र कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न न कर सकेंगे ।

ऐसी सुषुप्तावस्था में इन प्राणियों का तापमान घट जाता है, श्वसन गति न्यून हो जाती है, हृदय की धड़कन घट जाती है, ऑक्सीजन की भी उन्हें बहुत थोड़ी आवश्यकता रहती है, शरीर की समस्त मैटाबोलिक क्रियाएँ मन्द होती चली जाती हैं । इस स्थिति की गहराई जब होती है तब प्रायः सभी जीवन क्रियाएँ एक प्रकार से अवरुद्ध हो जाती हैं और वह मृतक जैसा दिखाई पड़ता है । इस अवस्था को शरीर विज्ञानियों के शब्दों में 'एनावायोसिस' कहा जाता है ।

जिन जलाशयों की ऊपरी सतह पर बर्फ जमती है उनमें रहने वाले कीड़े उस स्थिति का सामना करने के लिए निद्राग्रस्त हो जाते हैं । मछलियाँ यों पानी पर तैरती तो रहती हैं, पर उनकी स्थिति भी निद्रालु जैसी रहती है ।

सर्वविदित है कि मेढ़क शीत ऋतु में सुषुप्तावस्था में चले जाते हैं और वर्षा की अनुकूल ऋतु आने पर उस घोर निद्रा का परित्याग करते हैं । न केवल मेढ़क वरन् घोंघे, केंचुए, साँप और कई तरह के सरीसृप भी प्रतिकूल ऋतु प्रभाव से बचने के लिए लम्बे समय की समाधि लगा लेते हैं । आहार, जल आदि की उन्हें उस स्थिति में आवश्यकता नहीं पड़ती । संचित चर्बी से ही शरीर को आवश्यक ऊर्जा उस अवधि में मिलती रहती है । घोंघे एवं अन्य जाति के निमेटोड कीड़े कड़ी सर्दी से प्राण रक्षा करने के लिए अपने भीतर से ही एक विशेष प्रकार का रस निकाल कर उसका कवच मढ़ लेते हैं और उसी के भीतर प्रतिकूल ऋतु में पड़े-पड़े सोते रहते हैं ।

शीत समाधि पर जोर इसलिए दिया जा रहा है कि उसके माध्यम से मनुष्य सैकड़ों वर्ष लम्बी अन्तरिक्ष यात्राएँ पूरी कर सकेगा । उसे नित्य कर्म के लिए किसी वस्तु की आवश्यकता न पड़ेगी । नियत कार्य करके लौटने पर यथासमय स्वसंचालित यन्त्र उसे गर्मी देकर पुनर्जीवित कर दिया करेंगे । इसके अतिरिक्त शीत समाधि में पड़ा हुआ व्यक्ति रोगी या बूढ़ा होगा तो उस विश्रान्ति काल में प्रकृति जीर्ण-शीर्ण की मरम्मत करके नया कर दिया करेगी । इस प्रकार काया-कल्प का पुराना उद्देश्य इस नवीन ढंग से पूरा हो जाया करेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतने पर भी योग समाधि की उपयोगिता अपने स्थान पर बनी ही हुई है । उसमें संकल्प शक्ति इतनी सुदृढ़ बनानी पड़ती है कि शरीर की स्वसंचालित क्रियाओं का घटाया-बढ़ाया जाना पूर्णतया रोका जा सके सामान्यतया यह कार्य भौतिक विज्ञान की दृष्टि से अति कठिन माना जाता है । संकल्प शक्ति यदि इतनी परिपक्व हो गई है कि वह श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन, रक्त-संचार जैसी क्रियाओं को रोक सकें तो निश्चय ही उसका प्रयोग प्रबुद्ध मस्तिष्क के अथवा चेतन मन के किन्हीं रहस्यमय संस्थानों को जागृत करने एवं मूर्च्छित करने के लिए भी किया जा सकता है । ऐसा पूर्ण स्वशासन मनुष्य को सच्चे अर्थों में महा सिद्ध पुरुष बना सकता है ।

भूमि समाधि की घटनाओं में से एक का परीक्षण उदयपुर, आयुर्विज्ञान, महाविज्ञान के प्रांगण में ली गई एक समाधि का हुआ था । डॉक्टरों ने समाधि से पूर्व विविध परीक्षाएँ लीं । योगी के शरीर के साथ 'इलेक्ट्रो-कार्डियोग्राम' आदि कई यन्त्र फिट किए और उनका लेखा-जोखा बाहर निरन्तर अंकित होता रहे ऐसा व्यवस्था की । आठ दिन में समाधि खोली गई । योगी मूर्च्छित था उसका तापमान ९७.६ था जबकि सामान्यतया ९८.४ होता है । निर्धारित सूचना के अनुसार गरम पानी से स्नान कराया गया और मालिश की गई तो चेतना फिर लौट आयी ।

समाधि में वही हाइवर्नेशन स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसमें मेढ़क, रीछ आदि लम्बे समय तक पड़े रहकर जीवित बने रहते हैं । इसमें बेसलमेटा वोतिक रेट घट जाने से जीवन काल बढ़ जाता है । समाधि के लिए प्रयुक्त संकल्प शक्ति मस्तिष्क स्थित बुद्धि केन्द्र के उस मर्म स्थल पर प्रहार करती है जिसे डॉक्टरी भाषा में सेरिब्रल कार्टेस कहते हैं । यहीं से हाइपोथैलमस नामक ग्रन्थि का नियन्त्रण होता है । यह ग्रन्थि ओटोनॉमिक नर्वस सिस्टम, स्वसंचालित नाड़ी मण्डल का नियमन करती है । स्वतन्त्र स्नायु मण्डल की नियामक सत्ता जिस 'वेगस नर्व' में मानी जाती है उसका मूलकेन्द्र यही है । मेड्यूला ऑब्लांगेटा पर यदि इच्छा शक्ति का नियन्त्रण हो जाय तो शरीर की वह स्थिति बन सकती है जिसे तापमान और हृदय स्पन्दन की गिरी हुई स्थिति में बन पड़ने वाली समाधि कह सकते हैं ।

सम्मोहन एवं शीत समाधि जैसे प्रयोग एक सीमित उद्देश्य ही पूरे कर सकेंगे । यदि अचेतन मन की दिव्य शक्तियों से लाभान्वित होना हो तो विज्ञान को ध्यान एवं समाधि स्तर के उन्हीं योग साधनों को अपनाना पड़ेगा जो न केवल अतीन्द्रिय शक्तियों को जागृत करके उसे चमत्कारी सिद्धि शक्तियों से सम्पन्न करते हैं वरन् व्यक्ति के भाव स्तर को भी देव भूमिका तक पहुँचाकर उसे नर शरीर में निवास करने वाला नारायण बना देते हैं ।

ज्ञानेन्द्रियों की देव शक्तियाँ

देवताओं की संख्या ३३ कोटि मानी गई है । कोटि का अर्थ श्रेणियाँ भी होती हैं और करोड़ भी । हो सकता है कि दिव्य मानवों की, भारतीय नागरिकों की संख्या कभी तेतीस करोड़ रही हो । वृहत्तर भारत की परिधि में जम्बूद्वीप आता है, जिसे वर्तमान एशिया के समान ही माना जा सकता है । इतनी परिधि में इतने सभ्य, शालीन लोगों का निवास होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । दूसरा अर्थ यह हो सकता है कि देवमानवों के ३३ स्तर एवं कार्य क्षेत्र रहे हों । श्रेष्ठताएँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं । प्रतिभा के स्तर भी अनेकानेक हैं । सेवा के कार्य क्षेत्र भी अनेक प्रकार के हैं । इनमें से ३३ को प्रमुख माना गया हो, यह भी माना जा सकता है ।

उपर्युक्त प्रकार के सभी देवों में पाँच प्रमुख माने गए हैं । इन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य माना गया है । सम्पदा, विद्या, बलिष्ठता प्रतिभा एवं कला को देवियाँ माना गया है । पंच देवों में पंच तत्व, पंच प्राण, पाँच कोश भी गिने जाते हैं । ज्ञानेन्द्रियों की गणना भी पंच देवों में है । वे सामान्यतया रूप, रस, शब्द, गंध, स्पर्श की जानकारियाँ देती हैं । उनका सामान्य विकास इतना ही होता है, जितना कि दैनिक जीवन में प्रयोग होता है । शेष शक्ति निष्क्रिय, रहने के कारण प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती है फिर भी मृत नहीं होती । प्रयत्न करने पर उसे अभीष्ट स्तर तक जगाया जा सकता है । असाधारण स्तर तक सक्षम बनाया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिव्हा का सामान्य कार्य चखना और बोलना है । चखने में विकृत स्वाद ही उसके पल्ले बाँधा गया है । मसाले, मिठाई, चिकनाई उस पर एक व्यसन बनकर नशे की तरह चढ़ गए हैं । चटोरपन की आदत के कारण वह आवश्यकता से कहीं अधिक मात्रा में अभक्ष्य खाती-पीती रहती है । फलतः वह मौलिक क्षमता नष्ट हो जाती है, जिसके आधार पर चखने मात्र से पदार्थों के गुणों को जाना जा सकता है, जिनका विवेचन, विश्लेषण और वर्गीकरण हो सकता है । कोई समय था जब वनस्पतियों और कन्द-मूल, फलों के गुणों का विश्लेषण किया गया था कि किस-किस मात्रा में किस प्रकार प्रयुक्त करके क्या प्रतिफल पाया जा सकता है । मुख एक अच्छी खासी प्रयोगशाला का काम करता है । चबाता और उदरस्थ करने का काम तो करता ही है साथ ही चखने मात्र से यह भी जान लेता है कि किस पदार्थ में क्या रसायन, किस अनुपात में मिले हुए हैं । उनका किस प्रकार किस निमित्त क्या उपयोग होना चाहिए ? किन्तु अब उसकी वह क्षमता नष्ट हो गई । मात्र चबाने, निगलने भर के लिए ही उसका प्रयोग होता है । अविवेकी, अनाचारी परीक्षक की तरह वह स्वाद की रिश्वत लेकर उन वस्तुओं को भी पेट के भीतर तक पहुँचने देती है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से तो सर्वथा अहितकर हैं पर वेश्या के रूप की तरह आकर्षक लगते हैं और जादू चलाकर सर्वनाश के लिए सहमत करते हैं ।

वाणी की कर्कशता, छलना, धूर्तता किस प्रकार लोगों को जाल में फँसाती, किस प्रकार दिग्भ्रान्त करके कहीं से कहीं पहुँचाती है, यह भी किसी से छिपा नहीं है । मिथ्याचार, मायाचार का प्रपंच वाणी द्वारा ही रचा जाता है । ऐसा प्रयोग होते रहने से उसकी प्रभाव शक्ति नष्ट हो जाती है । मात्र कर्ण प्रिय लगने वाले विष घोलती रहती है । असत्य और प्रपंच उसका स्वभाव बन जाता है । फलतः बोलने पर भी दूसरों का विश्वास एवं सहयोग प्राप्त कर सकना सम्भव नहीं हो पाता । कुमार्गगामी मार्गदर्शन करके अनेकों को वह अनाचारी बनाती रहती है । स्वार्थ साधने के लिए अनेकों का अनेक प्रकार अहित करती रहती है ।

जिव्हा का संयम यदि साधा जा सके तो उसके चमत्कारी प्रतिफल नकद धन की तरह हाथों-हाथ परिलक्षित होते दिख पड़ सकते हैं । अस्वाद व्रत की साधना बन पड़े तो चटोरपन की नशेबाजी वाली लत छूट सकती है और भक्ष्य-अभक्ष्य का बोध फिर से वापस लौट सकता है । इस आधार पर न केवल भोजन की मात्रा और सुव्यवस्था चल पड़ेगी वरन् बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य भी सुधर जायेगा । पेट पर अनावश्यक भार न पड़े तो समझना चाहिए कि अस्वस्थता की समस्या का आधा समाधान निकल आयेगा । निरोगता और दीर्घ-जीवन परस्पर मिले हुए हैं ।

जिव्हा की दूसरी साधना है—मौन । नित्य दो घण्टे सुविधा के समय पर मौन रहने की आदत डालनी चाहिए । इस व्रत के समय लगातार यह ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक रूप से वाक् शक्ति का उपयोग नहीं करना चाहिए । बहुत बक-झक करने वाले को लवार समझे । उनकी बात में आत्मश्लाघा परनिन्दा, चुगली आदि अनौचित्य भरे रहते हैं । इससे वाणी का प्रभाव चला जाता है । विश्वसनीयता और प्रामाणिकता घटती है । समय और शक्ति का अपव्यय होते रहना तो स्पष्ट ही है । अभ्यास यह किया जाना चाहिए कि आवश्यक वार्तालाप ही किया जाय । सम्भाषण में अपनी विनम्रता और दूसरों की प्रतिष्ठा का पुट समुचित मात्रा में लगाया जाय, जो भी कहा जाय वह आदर्शवादिता का पक्षधर होना चाहिए । परामर्श प्रतिपादन सभी ऐसे होने चाहिए जो इस कसौटी पर खरे उतरें । इसप्रकार मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए जो बोला जाता है वह व्यावहारिक मौन की मर्यादाओं के अन्तर्गत ही आता है । यह वाणी का तप है । ऐसी साधी गई वाणी प्रभावशाली होती है । वह मात्र कानों की सरसता बन कर नहीं रह जाती वरन् मस्तिष्क एवं हृदय की गहराई तक पहुँचकर शब्द वेधी बाण की तरह अचूक निशाना साधती और अभीष्ट परिणाम उत्पन्न करती है । सत्, ऋत्, हित्, मित् यह वाणी के चार गुण है । सत्य ही बोला जाय । कल्याणकारी बोला जाय । सीमित बोला जाय । आदर्श युक्त बोला जाय तो समझना चाहिए कि वह सम्भाषण भी मौन साधना में सम्मिलित होकर रह रहा है । ऐसी परिशोधित वाणी शाप और वरदान देने की सामर्थ्य रखती है । उसके कथन सत्य होकर रहते हैं । मस्तिष्कीय विचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उच्चस्तरीय रहते हैं और भावनाओं, आस्थाओं, आकांक्षाओं का स्तर ऊँचा उठाते हैं ।

अन्य प्राणी वाणी का उपयोग उद्देश्यपूर्ण प्रयोजनों के लिए ही करते हैं । इसलिए वे भले ही कम बोलते हैं, पर जितना भी बोलते हैं, उससे सम्बद्ध समुदाय को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ देते हैं । आवश्यक आदान-प्रदान करते हैं । उनका शब्द भण्डार सीमित रहते हुए भी उतना काम चला लेते हैं जितना कि सभ्य समुदाय के लोग परस्पर आवश्यक वार्तालाप करके निकालते हैं । अपनी जिव्हा सधी हुई हो तो उसका प्रभाव निकटवर्ती कर्णेन्द्रिय पर भी पड़ता है । दोनों के संयोग से अन्य वाणियों की अनगढ़ भाषा होने पर भी उनका अभिप्राय समझ की विशिष्टता से हस्तगत होते हैं । मनुष्य का साथ न रहने पर भी वे निकटवर्ती अन्य प्राणियों के साथ विचार-विनिमय करते रह सकते हैं । आपस में क्या कह सुन रहे हैं, इसका अनुमान लगा सकते हैं । इस प्रकार सुनसान भी उनके लिए अच्छे खासे मनोरंजन की आवश्यकता पूरी करता रहता है । इस आधार पर ज्ञान सम्पदा का दायरा तो विस्तृत होता ही है ।

त्वचा इन्द्रिय की सक्षमता भी अन्य किसी ज्ञानेन्द्रिय से कम नहीं है । अन्य इन्द्रियों का आकार तो थोड़ा-थोड़ा ही होता है । त्वचा तो समूचे शरीर में लिपटी हुई है । इसके ज्ञान-तन्तु साधारणतया स्पर्श का भी भान कराते हैं, छूकर किसी वस्तु का आकार वजन, ताप आदि ही मोटे रूप में जाना जाता है पर उसकी क्षमता इतनी सीमित है नहीं ।

त्वचा में विद्युत प्रभाव निकलता है जो शरीर के चारों ओर एक आभा-मण्डल बना लेता है । यह आभा-मण्डल समीप आने वालों को अपनी ओर खींचता है और उन्हें प्रभावित भी करता है । जिन्होंने हिप्नोटिज्म विज्ञान की अतिरिक्त जानकारी प्राप्त की है, वे जानते हैं कि किस प्रकार शारीरिक विद्युत अपने क्षेत्र को प्रभावित करती है और किस प्रकार समीपवर्ती वातावरण में संव्याप्त रहस्यों को खोज निकालती है । मनुष्य के समूचे शरीर को ही एक सचेतन चुम्बक माना गया है । उसकी मात्रा चेहरे पर विशेष रूप से दीख पड़ती है । इसे सौन्दर्य से भी आगे बढ़ी हुई क्षमता ओजस, तेजस कहा जाता है । सुन्दरता का आधार तो मात्र चमड़ी का रंग और चेहरे के साथ जुड़े हुए कान, आँख, होठ, गाल आदि की प्राकृतिक बनावट भर से सम्बन्धित है, किन्तु यदि यह सारी बनावट सही होने पर भी स्फूर्ति, जागरूकता, प्रभावोत्पादक, आकर्षण न हो, उत्तेजना देने वाली तरंग न उभरती हों तो समझना चाहिए कि बनावट सही होने पर भी चेहरे पर मुर्दनी छाई रहेगी और वह सौन्दर्य किसी को प्रभावित न कर सकेगा । इसके विपरीत यदि बनावट साधारण सी हो, त्वचा काली हो, फिर भी ऐसा पाया जाता है कि प्रतिभा ओजस्विता चेहरे पर छाई रहती है और वजनदार व्यक्तित्व का परिचय देती है । यह सब त्वचा से बाहर निकलने वाले विद्युत चुम्बकत्व का प्रभाव है । इसकी मात्रा प्रकृत रूप से न्यूनाधिक हो तो उसे साधना द्वारा बढ़ाया भी जा सकता है ।

त्वचा कितनी सम्वेदनशील है, इसका थोड़ा परिचय जननेन्द्रिय के स्पर्श या घर्षण से सहज पता चलता है । बगलों में गरदन के दाएँ-बाएँ उँगली फिरवाने पर गुदगुदी का अनुभव होता है । स्तन, कपोल, टुण्डी, होठ आदि की त्वचा भी अधिक सम्वेदनशील होती है । दुलार मनुहार से इन अंगों का स्पर्श अनायास ही उत्तेजना करता है । यह स्वाभाविक प्रकरण हुआ । साधना विज्ञान के आधार पर समूची त्वचा को सम्वेदनशील, प्रभावशाली और चमत्कारी बनाया जा सकता है । उसका स्पर्श दूसरों को कराने से उन्हें शक्तिपात जैसा लाभ दिया जा सकता है । महाप्रभु ईसा अपना हाथ रोगियों के शरीर तथा अंगों पर फिराते और उनके रोग निवारण किया करते थे । ऐसी विलक्षणता अन्य जैव विद्युत के धनी लोगों की त्वचा में भी पायी जाती है ।

कीट, पतंग तथा छोटे पक्षी अपने समूचे शरीर को ही समग्र इन्द्रिय शक्ति से भरपूर रखते हैं । केंचुए की मुँह के अतिरिक्त अन्य कोई इन्द्रिय नहीं होती, पर वह मात्र त्वचा के सहारे उन सब प्रयोजनों की पूर्ति कर लेता है जो मनुष्य अपनी सभी ज्ञानेन्द्रियों के समूह द्वारा प्राप्त करता है । चमगादड़ में त्वचा की सम्वेदनशीलता बढ़ी-चढ़ी मात्रा में पायी जाती है । वह घने अंधकार के बीच पतले बिजली के तारों के बीच जहाँ थोड़ी जगह पाती है वहीं बिना कोई जोखिम उठाये सहज पार करती रहती है । इसी प्रकार अन्य रेंगने वाले कीड़े भी स्पष्टतः ज्ञानेन्द्रियों से रहित होते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं फिर भी उनकी त्वचा में रहने वाली सम्वेदनशीलता उन समस्त प्रयोजनों की पूर्ति करती रहती है जो बड़े प्राणियों में विकसित इन्द्रिय समूह के द्वारा बन पड़ता है । मनुष्य भी यदि चाहे तो अपनी उपेक्षित पड़ी रहने वाली त्वचा को मात्र पसीना निकालने वाली विसर्जन इन्द्रिय से आगे बढ़ा कर और अनेकों उपयोगी प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त हो सकने जैसी स्थिति में विकसित कर सकता है ।

नाड़ी-परीक्षा, जिव्हा-परीक्षा, नेत्र-परीक्षा, नाखून-परीक्षा, हस्तरेखा, पैररेखा आदि को देखकर वैद्य एवं सामुद्रिक ज्ञाता मनुष्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ बता सकते हैं यदि सूर्य विज्ञान द्वारा त्वचा की विद्युत शक्ति को अधिक बढ़ाया जा सके तो वह इतनी अधिक शक्ति सम्पन्न हो सकती है कि वह अकेली ही पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की संयुक्त भूमिका निभा सके ।

सिरजनहार का जगत को अनुपम उपहार

मानवी काया सृष्टा का एक अनुपम उपहार है । प्रत्यक्ष काया के अन्दर ही सूक्ष्म तथा कारण शरीर, पंचकोश, षटचक्रों के रूप में अनेकानेक दिव्य विभूतियों के भाण्डागार भरे पड़े हैं । योग साधना के विभिन्न उपक्रमों को अपनाकर उन्हें जागृत करके मनुष्य अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न बन सकता है । भूत, भविष्य की बातें जान लेने की सामर्थ्य हस्तगत कर सकता है, उसके लिए तब देश, काल एवं समय की दूरी का सीमाबन्धन समाप्त हो जाता है । प्राचीनकाल के भारतीय ऋषि-मनीषी इसी स्तर को प्राप्त करने के पुरुषार्थ में संलग्न रहते थे ।

योगशास्त्र ज्ञाता आचार्यों ने अलौकिक क्षमताओं को जागृत करने के जिन विधि-विधानों, नियमों का आविष्कार किया था आज के भौतिक विज्ञानी भी उसकी पुष्टि अपने ढंग से कर रहे हैं । ऐसा ही एक प्रयोग पिछले दिनों 'रायल यूनीवर्सिटी ऑफ रोम' में किया गया था । विषय था—मनुष्य की दूरदर्शन शक्ति का विकास और प्रदर्शन । सुप्रसिद्ध स्नायु मनोवैज्ञानिक डॉ. गिसेप कालिगॉरिस ने इसके लिए एक व्यक्ति के शरीर के कुछ मर्मस्थलों को १५ मिनट तक दबाया जिससे, उसकी इन्द्रियातीत क्षमता विकसित हो गई । उसने एक दीवार की दूसरी ओर अवस्थित व्यक्तियों और वस्तुओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म सारा विवरण बता दिया । डॉ. कालिगॉरिस ने उपस्थित अन्यान्य वैज्ञानिकों, प्राध्यापकों को बताया कि "यदि शरीर के कुछ विशिष्ट स्थलों को जागृत किया जा सके तो व्यक्ति को अतीन्द्रिय अनुभूति प्राप्त हो जाती है और वह उन सब वस्तुओं को देखने में सक्षम हो जाता है जो चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देती । इस सामर्थ्य के विकसित होने पर मनुष्य कितनी दूर स्थित किसी भी वस्तु को एवं किसी भी घटित अथवा सम्भावित घटना-क्रम को देख सुन सकता है ।"

मनोवैज्ञानिक जगत में आज ई. एस. पी. अर्थात् 'एक्स्ट्रा सेन्सरी परसेप्सन' का नाम बहुप्रचलित है । यह मानव के अन्तर्ज्ञान को प्रदर्शित करने की वह विद्या है जिसके माध्यम से व्यक्ति की अतीन्द्रिय क्षमताओं को कुरेदा एवं विकसित किया जाता है । मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से श्रेष्ठ एवं समुन्नत कैसे बन सकता है ? दूसरे व्यक्ति के मन की बातों का आभास और अतीन्द्रिय शक्तियों में वृद्धि कैसे की जा सकती है ? इस खोज में अमेरिका के मिशीगन और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक निरन्तर प्रयत्नशील हैं । उनका कहना है कि अतीन्द्रिय क्षमताओं को व्यक्तिगत स्तर पर अनुभव किया जा सकता है । इस प्रकार वे प्रमाणों से परे नहीं हैं ।

मनीषियों के अनुसार मन-मस्तिष्क की सहज गति ऐसी है जो किसी एक विषय अथवा वस्तु पर केन्द्रित न रहकर कहीं दूसरी तरफ चली जाती है । यदि उसे किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित किया जा सके तो उसकी वेधक क्षमता उसी प्रकार दिखा सकती है, जिस प्रकार आतिशी-शीशे पर सूर्य रश्मियाँ एकत्रित होकर अग्नि उत्पन्न करती हैं । केन्द्रीभूत मस्तिष्कीय तरंगें उन स्थानों पर भी जा पहुँचती हैं, जो प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं पड़ते । इससे मनुष्य के पूर्व निर्णय की क्षमता बढ़ती है । दूसरे के मन की बातों को जानने, दिव्य दर्शन तथा भविष्यवाणी जैसे प्रयोजन इसी के माध्यम से पूरे होते हैं । येल विश्वविद्यालय के अनुसंधानरत वैज्ञानिक द्वय-डॉ. ए. ए. ऑशफ तथा राबर्ट एवेल्सन का कहना है कि आस्था एवं तन्मयता के अभाव में व्यक्ति की क्षमताएँ बिखरी हुई होती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । एकाग्रतापूर्वक उनका नियोजन अन्तःशक्तियों के जागरण में यदि किया जा सके तो प्रसुप्त, गुप्त शक्तियों के उद्घाटन से वह सबको चमत्कृत कर सकता है । अतीन्द्रिय क्षमताओं के सत्यापन के लिए उन्होंने विद्यार्थियों का चुनाव किया जिनमें से सत्तर प्रतिशत से अधिक ई. एस. पी. के प्रयोग सही निकले । इन्हें मात्र संयोग नहीं कहा जा सकता ।

मूर्धन्य मनोवैज्ञानिक मार्टिन इवॉन ने अपनी पुस्तक "टू एक्सपीरिएन्सेस इन प्रोफेसी" में ऐसी अनेक प्रामाणिक घटनाओं का उल्लेख करते हुए सिद्ध किया है कि मनुष्य के भीतर अद्भुत अलौकिक क्षमताएँ विद्यमान हैं उन्हें जागृत करके भूत, भविष्य एवं वर्तमान को देश-काल की सीमाओं से परे होकर देखा जा सकता है । इसी तरह न्यूरो साइकिएट्रिक इन्स्टीट्यूट, केलिफोर्निया के निर्देशक डॉ. क्रेग ने भी अपने शोध निबन्धों में अनेक अतीन्द्रिय शक्ति की घटनाओं का वर्णन किया है । उनका कहना है कि यह सामर्थ्य किसी-किसी को तो गहन अभ्यास से प्राप्त होती है, परन्तु बहुत से व्यक्ति संसार में ऐसे भी हैं जिन्हें यह शक्ति जन्मजात अतिरिक्त वरदान के रूप में पूर्व जन्म संचित सम्पदा के रूप में मिली होती है, ।

पश्चिम जर्मनी में पुलिस विभाग से सेवारत मेजर हेल्मुज जींक को प्रकृति प्रदत्त ऐसी दिव्य क्षमता प्राप्त है जिससे उन्हें जर्मनी में हिटलर के समय के छिपाए गए बमों और अस्त्र-शस्त्रों की जानकारी मात्र जमीन पर खड़े होते ही मिल जाती है । उनके इस अतीन्द्रिय ज्ञान का लाभ जर्मन सरकार ने विगत ४० वर्षों से भरपूर उठाया है और अब तक साढ़े तीन लाख युद्ध आयुधों के जखीरे खोजे जा चुके हैं । भवन निर्माण के स्थान का चयन भूगर्भस्थ जल स्रोतों के सही स्थान का चुनाव हेल्मूज की सलाह पर ही किया जाता है ।

केलिफोर्निया की एक महिला—क्लेरीसा बर्नहेड भूकम्पों की पूर्व जानकारी देने में प्रख्यात है । इसी कारण लोग उसे "अर्थक्वेक लेडी" के नाम से सम्बोधित करते हैं । भूकम्प सम्बन्धी दी गई सूचना रेडियो एवं टेलीविजन से सीधे प्रसारित भी होती रहती हैं । २८ नवम्बर, १९७४ को दोपहर तीन बजे केलिफोर्निया के मध्य तटवर्ती क्षेत्र में आये भूकम्प की जानकारी उसने बहुत पहले लोगों को दे दी थी । साथ ही यह भी कहा था कि उसमें जान-माल की कोई विशेष क्षति नहीं होगी । वास्तव में सुनिश्चित अवधि में ठीक ऐसा ही हुआ । एक दूसरे पूर्व कथन में बर्नहेड ने नवम्बर १९७५ में हवाई द्वीप में आये विनाशकारी भयंकर भूकम्प की ग्यारह माह पूर्व ही चेतावनी दे दी थी । इसमें बहुत अधिक जन-धन हानि हुई थी । इसी तरह अमेरिका के ही और्गन प्रान्त की लेडी शॉरलेट किंग भूकम्प के आने से पहले ही उनकी सूचना देने के लिए प्रख्यात है । होलिस्टर, न्यू जूनिया, लिवरमूर, यूरेका जैसे प्रान्तों में आने वाले भूकम्पों की पूर्व घोषणा करके वह लाखों लोगों की जानें एवं करोड़ों की सम्पत्ति बचा कर ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं ।

१९०९ में जन्मा हॉलैण्ड का क्रोसेट भी बचपन से ही परादृष्टी से सम्पन्न था । उसने नाजी आक्रमण तथा जापानियों द्वारा डचों के ईस्ट इण्डीज द्वीपों के अधिग्रहण के बारे में वर्षों पूर्व ही बता दिया था । किसी भी वस्तु को स्पर्श करके उसके मालिक नौकर परिवार एवं मित्र सम्बन्धियों के बारे में पूरा विवरण बता देना क्रोसेट के लिए बहुत आसान था । इतना ही नहीं वरन् वह सम्बन्धित व्यक्तियों की मनःस्थिति एवं परिस्थिति के बारे में भी सब कुछ बता देता था । वहाँ की पुलिस ने उसकी इस क्षमता का भरपूर फायदा उठाया और अनेक अपराधियों तथा हत्यारों को पकड़ कर जेल के सीकचों में बन्द किया ।

कभी-कभी जीवन में अनायास होने वाले घटनाक्रमों से भी मनुष्य की दिव्य क्षमताएँ जागृत हो जाती हैं । अमेरिका के कैन्टुकी नगर के पास एक छोटे से गाँव में रहने वाले एडगर केसी नामक युवक के साथ ऐसा ही हुआ । एक दिन अचानक वह बीमार पड़ गया । उसकी माँसपेशियों में जकड़न और दर्द इतने जोरों से होने लगा जिसका निदान वहाँ के प्रख्यात चिकित्सक भी न कर सके । डॉक्टर परामर्श कर ही रहे थे कि केसी ने आँखें खोलीं । उसकी छठी इन्द्रिय जागृत हो चुकी थी । उसके प्रकाश में अपनी बीमारी का नाम, उसका निदान उपचार वह स्वयं उपस्थित चिकित्सकों को बताने लगा । दवाइयाँ मँगाई गईं और उसके सेवन से वह पूर्ण स्वस्थ हो गया । प्रकृति प्रदत्त इस शक्ति का उपयोग उसने अनेक रोगियों पर किया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अमेरिका के मूर्धन्य मनोविज्ञानी डॉ. नेल्सन वाल्टर के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति में एक बलवती चेतना काम करती है । यही परोक्ष जगत की हलचलें एवं दूरस्थ वस्तुओं की जानकारी देती है । समस्त प्राणि जगत के एक ही चेतना के सागर से जुड़े होने के कारण कोई भी अपनी चेतना को विकसित एवं परिष्कृत करके अतीन्द्रिय सामर्थ्य को प्राप्त कर सकता है । उसके माध्यम से दूसरों के उत्थान पतन सहित अन्यान्य घटित होने वाले समस्त घटनाक्रमों की पूर्व जानकारी दे सकता है । प्रख्यात विज्ञान वेत्ता डॉ. जे. बी. राइन ऐसे ही व्यक्ति हैं जिन्हें विश्व में कहीं भी कोई घटित होने वाली घटना-क्रम का पूर्व परिचय मिल जाता है उन्होंने अपनी एक पुस्तक में चार हजार पूर्वाभास की घटनाओं का चित्रण किया है जो समय आने पर सच निकलीं । इस सम्बन्ध में उनके अनेकों व्याख्यान ब्रिटिश ब्रॉडकॉस्टिंग कॉरपोरेशन ने प्रसारित किए तथा उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं । राइन ने तीन बातों का जिक्र किया है उनका मत है कि प्रत्येक मनुष्य में अतीन्द्रिय शक्ति होती है जो दूरस्थ घटनाओं का बोध कराती है । दूसरे परस्पर घनिष्ठ व्यक्तियों में चेतनात्मक आदान-प्रदान बहुत सरलता से सम्पन्न हो जाता है । तीसरे पुरुषों की अपेक्षा यह अनुभूति महिलाओं एवं आध्यात्मिक, धर्मनिष्ठ व्यक्तियों में अधिक होती है ।

वर्तमान में किए जा रहे विभिन्न मनोवैज्ञानिक परा-मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों की खोज विस्मयकारी मानवी मस्तिष्क के तंत्रिका आवेगों तक ही सीमित है इससे चमत्कारों का ज्ञान मात्र होता है, पर चेतना का परिष्कार नहीं होता । जीवन पद्धति यथावत् बनी रहती है । वस्तुतः वास्तविक रहस्य तो अन्तःचेतना को विकसित एवं परिशोधित करके ही जाना जा सकता है । इस दिशा में प्रयास जारी रखे जा सके एवं विज्ञान द्वारा प्रदत्त भौतिक उपादानों का आश्रय लेकर आध्यात्म अवलम्बन से अर्जित इन विभूतियों पर अनुसंधान किया जा सके तो सृष्टा के भाण्डागार में छिपे बहुमूल्य मणि-माणिक्य मानव जाति को हस्तगत हो सकते हैं ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रसुप्त की जागृति द्वारा भविष्य-ज्ञान सम्भव है

प्रसुप्त पड़ा अतीन्द्रिय सामर्थ्य का जखीरा

जहाँ तक दृश्य इन्द्रियों का प्रश्न है, देखने की प्रतियोगिता में मनुष्य से कहीं अधिक आगे गिद्ध वर्ग के प्राणी हैं । उनकी आँखें ऐसी होती हैं कि वे सुदुर आकाश में उड़ते हुए भी अपने शिकार को देख लेती हैं व एक झपट्टे में अपने शिकार को उदरस्थ कर लेती हैं । कान भी मनुष्य को एक सीमित डेसीबल तक की, सुनिश्चित फ्रिक्वेन्सी व एम्पलीट्यूड तक की ध्वनि तरंगों को सुन सकने भर की सुविधा देते हैं । इसके अतिरिक्त भी इस विशाल आकाश में असंख्य प्रकार की ध्वनियाँ गतिशील रहती हैं, जिनके आधार पर न केवल सुदुर क्षेत्रों का घटनाक्रम समझा जा सकता है, वरन् भूत और भविष्य के सम्बन्ध में भी जो हो चुका है, जो होने वाला है, उसे जाना जा सके, परन्तु प्रकृति ने उसे सीमित स्तर की इतनी ही क्षमता प्रदान की है, जिसके सहारे वह अपने निर्वाह के लिए आवश्यक साधनों भर की जानकारी प्राप्त कर सकें ।

मनुष्य की आँखें सतेज मानी जाती हैं । वे रंगों को पहचान सकती हैं और बारीक अक्षरों वाली पुस्तक भी तेजी से पढ़ सकती हैं । इतने पर भी वे मछली की तरह गहरे पानी में खुली रहकर दूर-दूर तक के दृश्य नहीं देख सकती हैं । दूरबीन जैसी क्षमता भी उनमें नहीं है कि मीलों दूरी के दृश्यों को स्पष्टतया देख सकें । इस कारण जो दो इन्द्रियाँ अधिक तीव्र हैं, उन्हें भी अकिंचन क्षमता सम्पन्न ही कहा जा सकता है । इस सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए इन्द्रिय शक्ति तो नहीं बढ़ सकी, पर रेडियो, टेलीविजन, दूरबीन जैसे उपकरण विनिर्मित कर लिए गए हैं, जिनकी सहायता से अपेक्षाकृत अधिक जानकारियाँ यह दोनों इन्द्रियाँ दे सकती हैं । उनकी क्षमता अभी तो इतनी ही है, जिसे कि ज्ञान के महासागर में एक बूँद के समतुल्य समझा जा सके । आवश्यकता इनकी शक्ति सामर्थ्य बढ़ाये जाने की भी है । यह वृद्धि मात्र इतनी ही नहीं होनी चाहिए कि कुछ अधिक दूरी तक का देखना या सुनना सम्भव हो सके, वरन् वह विस्तार इतना आगे तक बढ़ना चाहिए कि प्रकृति के अन्तराल में होने वाली हलचलों को भी देख एवं सुन सकें । यह स्थिति तो अतीन्द्रिय क्षमताओं से उपलब्ध होती है । अतीन्द्रिय का अर्थ यह नहीं कि कोई अतिरिक्त शक्ति किसी अन्य माध्यम से उपलब्ध की या कराई जाती है, वरन् यह है कि वर्तमान इन्द्रियों का इतना अधिक उदात्तीकरण-निखार किया जाता है कि वे सामान्य ग्रहण शक्ति की तुलना में अधिक सूक्ष्म क्षेत्र में अपनी पैठ पहुँचा सकें ।

आँखों का सूक्ष्मदर्शन दूरदर्शन के रूप में प्रकट होता है । दूरबीनें तो कुछ ही दूर के क्षेत्र को देख पाती हैं पर दिव्य-चक्षु, केवल सारे भू-लोक की स्थिति जान सकते हैं वरन् लोकान्तरों की परिस्थितियों को भी जान सकते हैं । अपने भीतर भी महत्त्वपूर्ण शारीरिक, मानसिक क्रिया-कलाप होते रहते हैं उनका भी पता लगाया जा सकता है । यह चर्म-चक्षुओं की शक्ति का विस्तार नहीं है, वरन् मस्तिष्क रन्ध्र में विद्यमान आज्ञाचक्र की क्षमता सम्पन्न होना है । इससे दूसरों के शरीर-मन को भी पढ़ा जा सकता है । इस आधार पर उन्हें भविष्य की तैयारी करने अथवा सावधान रहने, बचाव करने का परामर्श भी दिया जा सकता है । प्रकृतिगत हलचलों को पूर्ण सम्भावनाओं का ज्ञान रहने से तदनुरूप अपनी तैयारी कर सकना भी सम्भव हो सकता है ।

कर्णेन्द्रियों के अतीन्द्रिय पक्ष को जगाने के लिए नादयोग से भी अधिक स्वरयोग सरल पड़ता है । कानों में बाहरी शब्दों को पूरी तरह रोक सकना कठिन पड़ता है । रुई, कार्क या मोम की पोटली कान के छिद्रों में लगाकर अक्सर नादयोग के अभ्यासी बाहरी शब्दों का भीतर प्रवेश करना रोकते हैं पर उससे आंशिक सफलता ही मिलती है । शब्द ध्वनियाँ पूरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तरह रुक नहीं पातीं । कर्ण इन्द्रिय नेत्रों से भी अधिक स्थूल है, इसलिए उनमें विकृतियाँ भी अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में और अधिक जल्दी उत्पन्न हो जाती हैं । अक्सर शोरगुल वाले स्थानों में रहने से धीमा बहरापन शुरू होता देखा जाता है । वृद्धावस्था में नेत्रों की ज्योति जाने से पूर्व कानों की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक जल्दी और अधिक मात्रा में घटने लगती है । इन सब कारणों से सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय द्वारा की जाने वाली नाद साधना कठिन पड़ती है । बाहर के शब्द रुक जाने पर भी भीतर शरीरगत हलचलें भी शब्द बनकर कानों के पर्दे से टकराने लगती हैं । रक्त संचार, श्वास-प्रश्वास की क्रियाएँ, रेलगाड़ी की घड़घड़ाहट या झरना झरने, बादल गरजने जैसी आवाजें बन जाती हैं । वे होती तो समीपवर्ती क्षेत्र की ही हैं पर साधक अनुमान लगाने लगता है कि यह सूक्ष्म जगत के संकेत हैं । इस भ्रम में फँसे रहने पर शब्द मात्र सुनाई पड़ते रहते हैं, पर उनके सहारे जो दिव्य श्रवण की शक्ति मिलनी चाहिए, वह नहीं मिलती । साधक को खाली हाथ रहना पड़ता है । मस्तिष्क भी कर्ण माध्यम से प्रवेश हुए शब्दों को उतनी गम्भीरता से नहीं पकड़ता । यही कारण है कि लोग बहुत सुनते रहने पर भी उसे देर तक स्मरण नहीं रख पाते । इस कान से सुना उस कान से निकालने वाली उक्ति भी इसी कारण चरितार्थ होती रहती है । कर्णेन्द्रिय के माध्यम से नादयोग की साधना करते हुए दूर श्रवण की अतीन्द्रिय क्षमता भी कठिनाई से थोड़ी मात्रा में जगती है । फिर ब्रह्म चेतना से सम्बन्ध जुड़ना, अनाहत नाद से सम्पर्क स्थापित करना कठिन हो जाता है । उसमें किन्हीं विरलों को ही अभीष्ट सफलता मिलती है । एकाग्रता का लाभ ही एक सीमा तक मिल पाता है ।

नादयोग के लिए कर्णेन्द्रिय का सहारा लेने की अपेक्षा नासिका अधिक सम्वेदनशील भी है, मस्तिष्क के निकट भी और उस पर भीतरी या बाहरी शब्दों के आघात का कोई प्रभाव भी नहीं पड़ता । साथ ही "सोऽहम्" साधना के माध्यम से नादयोग भी सध जाता है और इससे भी आगे शब्द ब्रह्म के साथ सम्बन्ध जोड़ने का प्रयोजन भी पूरा हो सकता है ।

"सोऽहम्" अजपा जप साधना अपेक्षाकृत सरल भी है ।" दोनों में बाहर के शब्दों का प्रवेश रोकने के लिए जिस प्रकार अवरोध लगाने पड़ते हैं, उस प्रकार की आवश्यकता नासिका मार्ग में नहीं पड़ती । शब्द के आवागमन से उसका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है । श्वास को गहरी खींचना और उसी तरह उसे बाहर निकालने का उपक्रम श्वास विज्ञान की दृष्टि से भी शरीर के लिए लाभदायक सिद्ध होता है । फेफड़ों को पूरी हवा मिलने से वे सुदृढ़ होते हैं । रक्त को ऑक्सीजन की अधिक मात्रा मिलने लगने पर रक्त-संचार एवं रक्त-शोधन की प्रक्रिया तेज होती है । जीवनी शक्ति बढ़ती है । यह प्रत्यक्ष लाभ हुए । परोक्ष लाभों में श्वास क्रिया के साथ जो सूक्ष्म, 'सोऽहम्' ध्वनि प्रवाह चलता है उसकी पकड़ करने पर श्वास की सीढ़ी पर चढ़कर मस्तिष्क के विभिन्न शक्ति केन्द्रों में से जिस पर भी पहुँचना हो उस तक आसानी से पहुँचा जा सकता है । इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि समस्त शरीर में दौड़ने वाले श्वास के साथ चेतना को जोड़कर जिस भी अवयव तक पहुँचना हो, उसमें सुधार परिवर्तन करना हो, उसे किया जा सकता है । मेरुदण्ड में षटचक्र है । चौबीस नाड़ी गुच्छकों के रूप में उपत्यिकाएँ शरीर के विभिन्न भागों में पायी जाती हैं । उनमें अपनी-अपनी दिव्य क्षमताएँ सन्निहित हैं । उन्हें कुरेदने, झकझोरने तथा गह्वर बनाने जैसे कितने ही वे कार्य किए जा सकते हैं, जो चमत्कारी सिद्धियों का उद्भव करते हैं । इस प्रकार 'सोऽहम्' साधना में नादयोग वाले सभी उद्देश्य पूरे हो जाते हैं । इसके अतिरिक्त प्राण वायु पर सवारी गाँठकर शरीर में अवस्थित सभी दिव्य केन्द्रों तक पहुँचना और वहाँ से गोताखोरों की तरह बहुमूल्य मोती निकालना भी सरल होता है । "सोऽहम्" साधना अति सरल है, श्वास खींचते समय 'सो' की और निकालते समय 'हम', की धारणा करनी पड़ती है । कुछ दिन के अभ्यास से यह भावना अपेक्षाकृत अधिक सरल होती चली जाती है और अभीष्ट शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ने लगते हैं । बात शब्द सुनने तक ही समाप्त नहीं हो जाती, वरन् दूर श्रवण की अतीन्द्रिय क्षमता भी जागृत होने लगती है । इसके अतिरिक्त ब्रह्माण्ड के प्रतीक प्रतिनिधि इस काय पिण्ड में जो शक्ति-संस्थान विद्यमान है, उनकी प्रसुप्ति दूर करके जागृति का उद्देश्य भी पूरा होता है । नाद ब्रह्म और शब्द ब्रह्म दोनों की ही साधना सध जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानेन्द्रिय वर्गीकरण ने जिह्वा को द्विधा इन्द्रिय माना गया है—रसना और वाणी । वह दुहरे प्रयोजन पूरे करती है । स्वाद भी चखती है और बोलती भी है ठीक उसी प्रकार नासिका को भी सूक्ष्म आध्यात्म विज्ञान में द्विधा माना गया है । उसका प्रत्यक्ष कार्य श्वास-प्रश्वास है । उससे जहाँ ऑक्सीजन की ऊर्जा शरीर को मिलती है, वहाँ थोड़ा अधिक प्रयत्न करने पर प्राण शक्ति से भण्डार भरने वाले प्राणायामों को भी साधा जा सकता है । प्राणवान अर्थात् जीवट वाला । ओजस्वी, तेजस्वी, साहसी, पुरुषार्थी । यह इन प्रत्यक्ष विशेषताओं को अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में संचित करने के लिए प्राणायामों की अनेकानेक विधियाँ हैं । उनके माध्यम से शारीरिक और मानसिक रोगों का भी निराकरण किया जा सकता है ।

नासिका का दूसरा कार्य क्षेत्र है—गन्ध । सामान्य जीवन में उसका बहुत थोड़ा उपयोग रह गया है । दुर्गन्ध से बचने और सुगन्धजन्य प्रसन्नता प्राप्त करने भर की सुविधा नासिका द्वारा प्राप्त की जाती है । नाक की बनावट, चेहरे की सुन्दरता और कुरूपता में भी अपना योगदान करती है । बस यही है नासिका का सामान्य उपयोग जो इन दिनों सर्व साधारण द्वारा किया जाता है, किन्तु यह तो उपेक्षित एवं अविज्ञात वह विशेषता है जो एक प्रकार से तिरोहित ही हो गई और मनुष्य एक भारी लाभ से वंचित रह गया ।

अन्यान्य जीव-जन्तुओं की शारीरिक, मानसिक आवश्यकताएँ प्रायः गन्ध द्वारा ही पूरी होती हैं । शरीर संरचना की दृष्टि से वे मनुष्य की तुलना में पिछड़े होते हैं । मानसिक क्षमता भी दुर्बल होती है । इतने पर भी उनकी घ्राणेन्द्रियाँ इतनी तीव्र होती हैं कि आवश्यक वस्तुओं को तलाशने और संकटों से बचने के सभी प्रयोजन वे गन्ध के सहारे पूरे कर लेते हैं । प्रणय निवेदन और प्रजनन से सम्बन्धित सारी व्यवस्थाएँ गन्ध के आधार पर ही चलाते हैं, वे न केवल अपना शरीरगत सूत्र संचालन ही नहीं करते वरन् प्रकृति के उन अदृश्य रहस्यों को भी जान लेते हैं, जो मनुष्य के लिए अभी भी अविज्ञात एवं आश्चर्यजनक बने हुए हैं । शहद की मक्खी, चींटी, दीमक आदि कीड़ों के जीवन क्रम पर नजर डालने से ऐसा बहुत कुछ प्रतीत होता है, जिसमें वे मनुष्य की तुलना में कहीं अधिक मात्रा में कितने ही अतिरिक्त क्षेत्रों में आगे बढ़े-चढ़े हैं । छोटे कीड़े जो छेद बना कर धरती में रहते हैं या पेड़-पौधों पर चिपके रहते हैं, उन्हें भी अपनी जीवनचर्या मात्र गन्ध के आधार पर निर्भर रखनी होती है । पारस्परिक पहचान अपने स्थान तक पहुँचने का बिना भटकाव वाला मार्ग उन्हें गन्ध के ही आधार पर निर्धारित करना होता है ।

मनुष्य की गन्ध शक्ति एक प्रकार से जीव-जन्तुओं की तुलना में बहुत ही पिछड़ी हुई, नगण्य स्तर की है । इसे यदि किसी प्रकार बढ़ाया जा सके और उसे महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों में लगाया जा सके तो निश्चय ही मानवी क्षमता उसकी अपेक्षा कहीं अधिक विकसित स्तर की हो सकती है, जैसी कि आज है ।

मन के झरोखे से भविष्य की झाँकी

परामनोविज्ञान के अनुसार विश्व मानस (यूनीवर्सल माइण्ड) एक समग्र विचार सागर है और वैयक्तिक चेतना उसकी अलग-अलग लहरें जो अलग-अलग दीखते हुए भी परस्पर एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं । इस चेतना के विराट् सागर में उठने वाली विचार तरंगें एक कोने से उठकर समूचे सागर में फैल जाती हैं । घटनाओं के सूक्ष्म स्वरूप इसी महासागर में पहले तैयार होता तथा पकता रहता है । सूक्ष्मदर्शी इसी से सम्पर्क स्थापित कर भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पता लगा लेते हैं । भविष्य ही नहीं भूत और वर्तमान की घटनाओं का सूक्ष्म स्वरूप सूक्ष्म जगत में बना रहता है । भविष्य की भाँति 'भूत' का भी पता लगाया जा सकता है ।

समग्र भविष्य भूत दर्शन की क्षमता तो दिव्यदृष्टि सम्पन्न किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होती है पर भविष्य दर्शन का एक छोटा अनुभव प्रायः हर व्यक्ति को स्वप्नों आदि के माध्यम से कभी न कभी प्राप्त होता है । जिन व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के अपनापन जुड़ा होता है । प्रायः भावी संकेत उन्हीं से सम्बन्धित होते हैं । स्वप्नों में सचेतन मन से जो जाने पर अचेतन अपने से जुड़े व्यक्तियों एवं वस्तुओं के इर्द-गिर्द घूमता रहता है उससे जुड़े घटनाक्रमों का पूर्वाभास भी उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिल जाता है । जिनका मन अधिक सम्वेदनशील, निश्छल और पवित्र होता है उन्हें जागृत अवस्था में भी सुदूर सगे-सम्बन्धी जिनसे आत्मीयता जुड़ी रहती है से सम्बन्धित घटनाक्रमों का पूर्व बोध हो जाता है । समाचार पत्रों में पूर्वाभास, दुरानुभूति, दूरदर्शन से सम्बन्धित अनेकों घटनाएँ समय-समय पर प्रकाशित होती रहती हैं । जिसे पढ़कर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है तथा यह मानना पड़ता है कि अदृश्य जगत तथा अदृश्य घटनाक्रमों की पूर्व जानकारी प्राप्त करने की सामर्थ्य मानवी मन की अचेतन पर्तों में प्रसुप्त स्थिति में विद्यमान है ।

अमेरिका के गोस्टन शहर में जैक सुल्लीवान नामक एक मजदूर खाइयों में लगे पानी के पाइप ठीक करने का काम करता था । एक दिन वाशिंगटन स्ट्रीट पर अकेले ही खाई में बेल्डिंग का काम कर रहा था । तभी खाइयों को बन्द करने वाला एक दस्ता आया और बिना भीतर देखे खाई को बन्द करके चलता बना । सुल्लीवान उसी खाई में दब गया और जीवन मृत्यु के झूले में झूलने लगा । उस स्थान से पाँच मील दूर उसका एक घनिष्ठ मित्र वेल्डरटामी विकटर रहता था । उसे अचानक बोध हुआ कि उसका मित्र सुल्लीवान खतरे में है तथा खाई में दब गया है । वाशिंगटन स्ट्रीट पर शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने की बारम्बार भीतर से प्रेरणा उठने पर वह चल पड़ा । वहाँ जाकर देखा कि सचमुच ही सुल्लीवान खाई में दबा पड़ा है । जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था । कुछ मिनट का और विलम्ब हो जाता तो शायद उसे बचा सकना सम्भव नहीं हो पाता ।

जर्मनी में अपने समय की प्रख्यात मनोचिकित्सक मैडम डि फेरीम ने सन् १८९६ में अनायास बैठे-बैठे एक हृदय विदारक दृश्य देखा जो एक खान दुर्घटना से सम्बन्धित था । दृश्य यह था कि क्रिसमस के दिन चेकोस्लावाकिया के ब्रुक्स के पास डस्क स्थित कोयले की खान में एक भयंकर विस्फोट होता है और सैकड़ों लोग पहले भूरे और बाद में काले रंग में बदल जाते हैं । हजारों लोग घायलावस्था में पड़े कराह रहे होते हैं जिन्हें उपचारार्थ अस्पतालों, चिकित्सालयों में भर्ती किया जाता है । दुर्घटनाग्रस्त सभी लोग बोहेमियन जाति के हैं । "उन्होंने इस घटनाक्रम को एक समाचार पत्र के सम्पादक को नोट करा दिया । तीन वर्ष बाद १८९९ में उस जर्मन समाचार पत्र ने मैडम फेरीम के इस पूर्वाभास को एक कथानक रूप में प्रकाशित किया । अगले वर्ष १९०० ई. में यह घटना सत्य साबित हुई । चेकोस्लोवाकिया में ब्रुक्स के समीपस्थ डस्क की एक कोयला खान में हुए एक विस्फोट से सैकड़ों लोग काल कवलित हो गए और हजारों व्यक्ति, जिनमें महिलाएँ और बच्चे भी सम्मिलित थे, घायल हो गए ।

"वियॉण्ड टेलीपैथी" पुस्तक में प्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक डॉ. एण्डरीना पुहरिच ने ऐसी अनेकों घटनाओं का संकलन किया है । एक घटना इस प्रकार है—सालिनांस (केलीफोर्निया) निवासी एक महिला श्रीमती हायेस का पुत्र दूरवर्ती एक नगर में काम करता था । अचानक उन्हें बोध हुआ कि उनका पुत्र जॉन हायेस एक कार दुर्घटना में घायल पड़ा है । अपने पति से वास्तविकता का पता लगाने के लिए आग्रह किया । खोजबीन करने पर ज्ञात हुआ कि ठीक उसी समय जब श्रीमती हायेस को दुर्घटना का पूर्व संकेत मिला था तभी जॉन हायेस की कार एक दूसरी कार से टकरा गई । दुर्घटना में उसे गम्भीर चोटें आईं ।

ये सारे घटनाक्रम साधारण से लेकर सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्धित हैं और एक ही तथ्य का रहस्योद्घाटन करते हैं मन के विशाल सागर में सतत जो तरंगें उफनती रहती हैं, उनमें भवितव्य की घटनाएँ भी निहित होती हैं । आध्यात्म मान्यता भी यही है कि व्यष्टिगत समष्टिगत ब्राह्मी चेतना का एक अविच्छिन्न घटक है—उस समुद्र की एक बूँद है । जानकारी भर तक सीमित रहने वाला तर्क प्रधान मन तो बाहरी पर्त भर है । अविज्ञात एक क्षेत्र मन का ऐसा भी है जिसे उभारा, विकसित किया जा सके तो दिव्य अतीन्द्रिय सामर्थ्यों सम्पन्न बना जा सकता है । साधना उपचार के अवलम्बन हेतु इसी कारण निर्देश दिए जाते हैं ताकि ये मात्र कौतूहल तक सीमित न रहकर मानव समुदाय के लिए हितकारी भी हों ।

क्या सुदूर अतीत का पुनरावलोकन सम्भव है ?

वर्तमान से भूत में प्रवेश कर सकना सम्भव है क्या ? विज्ञान का बुद्धिवाद तो यही कहता है कि यह न सिर्फ असम्भव है, वरन् अकल्पनीय भी । जो समय बीत गया, जो व्यक्ति नहीं रहे अथवा जिस वस्तु की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्ता समाप्त हो चुकी है, उनके बारे में बिना किसी माध्यम के स्वयमेव जानकारी प्राप्त कर लेना बालू की दीवार खड़ी करने के समान है, पर आध्यात्मवाद की इस सम्बन्ध में सर्वथा विपरीत मान्यता है । वह तो यहाँ तक कहता है कि भविष्य के गर्भ में प्रवेश कर सकना शक्य है । दिग्काल से परे जाकर कभी-कभी सुदूर अतीत में भी मन जा ही नहीं सकता, उस समय की घटनाओं को हस्तामलकवत अपने सामने देख सकता है ।

यदा-कदा घटने वाले कुछ घटनाक्रम इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं । १० अगस्त १९०१ का दिन था । इंग्लैण्ड के ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के सेण्ट हग्स महिला कॉलेज की प्राचार्या एनी मोबरली एवं उप प्राचार्या एलीनर जोरडैन फ्रांस के "पैलेस ऑफ वर्सेल्स" के उद्यान में घूम रही थीं । दोपहर का समय था । पुष्पों की सुगन्ध से वातावरण सुवासित हो रहा था । रंग-बिरंगे फूलों की छटा और मनमोहक वृक्षों की पंक्तियाँ वहाँ की सुषमा को चार चाँद लगा रही थीं । इतने पर भी न जाने क्यों वे कुछ विचित्र और विलक्षण अनुभव कर रही थीं । प्रतीत ऐसा हो रहा था, मानो मन गहरे अवसाद में डूबता जा रहा हो, जबकि प्रत्यक्ष जीवन और वर्तमान क्षणों में ऐसी कोई बात दीख नहीं रही थी, जिससे इस विषण्णता का कारण समझा जा सके । मन का भ्रम समझ कर वे दोनों इसे टालती रहीं और घूमती भी रहीं । इसी बीच बातचीत के दौरान उन्होंने "पेटिट ट्रायनन" देखने का निश्चय किया । यह विशाल महल के उस भाग का नाम है, जो फ्रांस के तत्कालीन शासक लुईस १६वें एवं रानी मेरी एण्ट्वायनेट का निजी निवास था । गहरी वार्तालाप में संलग्न तुरन्त उन्हें यह ज्ञात हुआ कि वे मार्ग भटक चुकी हैं । उन्होंने नये सिरे से खोज आरम्भ की, किन्तु यह क्या ! अनुभूति यथार्थता में परिवर्तित होती जान पड़ने लगी । दोनों को ऐसा महसूस होने लगा, जैसे वे नींद की स्थिति में स्वप्नवत् टहल रही हों । अभी कुछ ही पल बीते थे कि प्रतीति बदली । जो बगीचा कुछ समय पूर्व तक वीरान नजर आ रहा था, अब उसमें चहल-पहल दीखने लगी । वे चौंकी ! इसके साथ ही उन्हें सामने खड़े दो व्यक्ति दिखाई पड़े, जो सम्भवतः माली थे । उसका पहनावा सदियों पुराना लग रहा था । वे लम्बे कोट और विशिष्ट प्रकार के हैट लगाए हुए थे, जिनका प्रचलन उन दिनों फ्रांस में बन्द हो चुका था । उन दोनों ने मोबरली और उसकी उप-प्राचार्या को सीधे आगे बढ़ जाने का संकेत किया । थोड़ी देर आगे जाने पर उन्हें एक पेड़ के नीचे एक व्यक्ति बैठा दिखाई पड़ा । वह भी एक विचित्र ढंग का लबादा एवं हैट पहने हुए था और शक्ल-सूरत से दुष्ट जान पड़ता था । उसे देख कर दोनों भयभीत हो गईं, किन्तु साहस कर आगे बढ़ गईं । सामने ही एक अन्य व्यक्ति खड़ा मिला, जिसने "पेटिट ट्रायनन" का पता बताया । यह व्यक्ति भी फ्रांस में अति प्राचीन समय में पहने जाने वाले लिवास में सुसज्जित था । उसके बताये रास्ते से दोनों कुछ दूर बढ़ीं, तो निकट ही "पेटिट ट्रायनन" राजमहल दिखाई पड़ा । महल के निकट ही घास के मैदान में बैठी एक महिला मोबरली को दिखाई पड़ी, जो जमीन में कोई चित्र बना रही थी । अचानक उसकी दृष्टि मोबरली पर पड़ी । उसने विचित्र ढंग से उसे घूरा, जो मोबरली को भीतर तक हिला गया । जल्द ही वे राजमहल के अन्दर प्रवेश कर गईं । इसके साथ ही उनका अवसाद न जाने कैसे कहाँ गायब हो गया । कुछ ही क्षणों में वहाँ एक वैवाहिक दृश्य उपस्थित हुआ, जिसमें उनकी पूर्व की दुःखद अनुभूति सदा-सदा के लिए तिरोहित हो गई ।

यह सब कुछ थोड़े ही समय में घटित हो गया था । लौटते समय वहाँ न तो वह महिला दिखाई पड़ी न मार्ग बताने वाले व्यक्ति । उद्यान और महल एक बार फिर पूर्णतः जनशून्य थे । इस भ्रमण के एक सप्ताह उपरान्त मोबरली अपनी एक मित्र को पत्र लिखने बैठी, तो एक बार फिर वह वैसा ही अवसादग्रस्त अनुभव करने लगी, जैसा राजमहल और बगीचे के अवलोकन के दौरान कर चुकी थी । अवसाद की अनुभूति इतनी प्रबल थी कि वह अपनी उप-प्राचार्या से इस सम्बन्ध में चर्चा करने के लिए विवश हो गई । चर्चा से पता चला कि मोबरली की सहयोगी को भी भ्रमण के दौरान लगभग वैसा ही अनुभव हुआ था, जैसा स्वयं मोबरली को । भिन्नता मात्र इस बात की थी कि जो चित्र बनाती नारी मोबरली को दिखाई पड़ी थी, जोरडैन को उसके दर्शन नहीं हुए थे । उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थान पर उसे मात्र पेड़-पौधे ही दिखाई पड़े थे । उन्होंने तभी यह निश्चय कर लिया था कि स्वदेश लौटने पर वे इस बात की गहराई से खोजबीन करेंगी कि वर्सेल्स में जो कुछ उन्हें अनुभव हुआ, वह मात्र भ्रम था या सत्य ।

एक महीने की फ्रांस यात्रा के पश्चात् वे दोनों इंग्लैण्ड लौट आईं । यहाँ आने पर फ्रांस के इतिहास के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ठीक उसी दिन जिस दिन प्राचार्या एवं उप-प्राचार्या ने "पैलेस ऑफ वर्सेल्स" की यात्रा की थी, उससे ११६ वर्ष पूर्व १० अगस्त, १७९२ को फ्रांस के तात्कालीन शासक लुईस १६वें एवं उनकी रानी मेरी एण्ट्वायनेट को पेरिस में कैद कर एक छोटे कमरे में बन्द कर दिया गया था । इस दौरानं राजा-रानी को असह्य वेदना सहनी पड़ी थी । सम्भवतः इसी वेदना की अनुभूति मोबरली एवं उप-प्राचार्या को मानसिक अवसाद के रूप में हुई हो ।

फ्रांस के प्राचीन इतिहास को पढ़ने से यह भी विदित हुआ कि १७८६ में राजमहल और उद्यान बिल्कुल उसी रूप में थे जैसा कि भ्रमण काल में उन्होंने देखा था । यह भी पता चला कि उन दिनों की पोशाक ठीक वैसी ही थी, जैसी कि उन्होंने पेटिट ट्रायनन में विवाह समारोह में देखी थी । मोबरली के आश्चर्य का तब कोई ठिकाना न रहा, जब उन्होंने इतिहास के पन्नों को पलटते हुए मेरी एण्ट्वायनेट का एक चित्र ढूँढ़ निकाला । अब उन्होंने मालूम हुआ कि यह तो वह महिला है, जिसे उन्होंने जमीन पर चित्र बनाते देखा था, अर्थात् तत्कालीन राजमहिषी-मेरी एण्ट्वायनेट ।

इस खोज एवं यात्रा के मध्य हुए विलक्षण अनुभव से दोनों की जिज्ञासा बढ़ी, तो दो वर्ष पश्चात् उन्होंने पेरिस की पुनः यात्रा की । वे एक बार फिर "पैलेस ऑफ वर्सेल्स" एवं उसके उद्यान में पहुँची, पर उन्हें यह देखकर भारी आश्चर्य हुआ कि दो वर्ष के इतने स्वल्प अन्तराल में यहाँ इतना बदलाव कैसे आ गया । न तो महल अब उस स्थिति में दिखाई पड़ रहा था और न बगीचे का ही वह चित्ताकर्षक स्वरूप रह गया था । लोगों से इस विषय में जब पूछताछ की गई तो पता चला कि वर्षों से यह भवन और उपवन इसी रूप में हैं, जो वर्तमान में दिखाई पड़ रहा है । विभिन्न इतिहासकारों और प्राचीन ग्रन्थों के माध्यम से ही यह सुनिश्चित हो सका कि दो वर्ष पूर्व इस राजप्रासाद और उपवन का जो दृश्य दिखाई पड़ा था, वह ११२ वर्ष पहले के इनके स्वरूप से बिल्कुल मिलता-जुलता है ।

इस अनुभव व शोध के आधार पर दोनों अध्यापिकाओं ने एक पुस्तक लिखी—"एन एडवेन्चर" । इसके अन्त में वे विभिन्न प्रकार की सम्भावनाओं व साक्षियों का वर्णन करती हुई इसी निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि दो वर्ष पहले उक्त महल के अवलोकन के दौरान वे थोड़े समय के लिए एक भिन्न आयाम में पहुँच गई थीं, जिसने उन्हें एक शताब्दी पीछे धकेल कर महल और उद्यान के उस समय की झाँकी दिखाई थी ।

तो क्या ऐसा सम्भव है ? या यह एक कल्पना मात्र है ? समय से पीछे जाकर उस वक्त की सभ्यता और संस्कृति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है क्या ? विज्ञान और बुद्धिवाद की दृष्टि से विचार किया जाय, तो यह असम्भव जैसा प्रतीत होगा, किन्तु आध्यात्म में इसका सुनिश्चित उत्तर "हाँ" में दिया जा सकता है । उसके अनुसार न सिर्फ समय से पीछे जाकर किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकना सम्भव है, वरन् समय से बहुत आगे निकल कर भवितव्यता को भी जाना जा सकता है । योगी लोग इसी आधार पर भूतकालीन घटनाओं और भविष्य की सम्भावनाओं को सरलता से बता देते हैं । उनके लिए दिक्काल (टाइम एण्ड स्पेस) का सीमाबन्धन समाप्त हो जाता है । वे फिर इनसे परे उन्मुक्त विचरण कर सकते हैं, किसी भी लोक अथवा कालखण्ड में प्रवेश कर उसकी जानकारी अर्जित कर सकते हैं । आध्यात्म-अवलम्बन से कम में ऐसा सम्भव नहीं । भूतकाल में भी ऐसा आध्यात्मिक सिद्धान्तों को जीवन में उतार कर ही सम्भव हो सका था । वर्तमान में यदि किन्हीं विरलों में इस प्रकार की शक्ति दिखाई पड़ती है, तो उसकी पृष्ठभूमि में आध्यात्म साधना के अवलम्बन को ही प्रमुख माना जा सकता है । हर किसी के द्वारा ऐसा आध्यात्म उपचारों का प्रयोग करना शक्य है, इसे एक सुनिश्चित तथ्य मानना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूत व भविष्य दोनों को वर्तमान में देखा-जाना जा सकता है !

विश्व के रूप और उसकी क्रियाओं का गणितीय आधार पर विश्लेषण करते हुए जब आइन्स्टाइन ने सापेक्षवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया, तभी से अतीत की घटनाओं को असली रूप में देख सकने की सम्भावनाओं की चर्चा वैज्ञानिकों के बीच चल पड़ी है । अब प्रति-पदार्थ और प्रति-कणों की खोज के साथ ही भविष्य में वर्तमान और वर्तमान से अतीत की ओर काल-यात्रा करने वाले कणों तथा तरंगों की खोज से भविष्य की झाँकी करने की प्रक्रिया पर भी विचार चल रहा है ।

सापेक्षतावाद द्वारा आइन्स्टाइन ने सिद्ध कर दिया था कि अतीत की जो घटनाएँ हमारे लिए घटित एवं समाप्त हो चुकी हैं, उनकी तरंगें विश्व-ब्रह्माण्ड में अब भी विद्यमान हैं तथा किसी अन्य लोक के निवासी यदि उनके सामने समुचित साधन हों, तो हो सकता है कि वे उन घटनाओं को ऐसे देख रहे हों, जैसे कि वे इसी समय उनके सामने घट रही हों । इसी सिद्धान्त के आधार पर आर्कियोविडियोफोन जैसे यन्त्र की रचना हुई और वैज्ञानिक यह विश्वास कर रहे हैं कि शीघ्र ही वे अतीत की घटनाओं को चाहने पर प्रत्यक्ष देख सका करेंगे, ऐसा एक अनूठा टेलीविजन जैसा यन्त्र बनाया जा सकेगा । इसका अर्थ है कि ईसामसीह को प्रवचन करते, पैगम्बर मुहम्मद को जनता का संगठन-मार्ग-दर्शन करते तथा भगवान कृष्ण को गीता का उपदेश करते या राम-रावण युद्ध अथवा महाभारत युद्ध होते देखा-सुना जा सकता है ।

पिछले दिनों अंग्रेजी पत्रिकाओं में ऐसी कितनी ही घटनाएँ छपी हैं जिनमें यह तथ्य उभर कर आता है कि भूतकाल के घटनाक्रम भी दिवास्वप्न की तरह कई बार वर्तमान में भी प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं और वे यथार्थता की कसौटी पर सही उतरते हैं ।

आक्सफोर्ड के सेंन्टह्यूम कॉलेज की प्राध्यापक कुमारी एलेनोर एफ. जार्डन ने अपनी वार्साई (फ्रांस) यात्रा के समय प्राचीन खण्डहरों में ऐसे दृश्य देखे थे जो शताब्दियों पूर्व हुए, राजाओं के रहन-सहन पर प्रकाश डालते थे । उन दृश्यों की ऐतिहासिक तथ्यों के साथ संगति बिठाई गई तो वे सच निकले । एलेनोर का कथन है कि इससे पूर्व उन विवरणों का उन्हें आभास मात्र भी नहीं था ।

इंग्लैण्ड के गैयार्सी टावर नामक कस्बे के रहने वाले कर्नल स्मिथ ने सौ वर्ष का एक घटनाक्रम इस प्रकार देखा, मानो वह अभी-अभी घटित हो रहा हैं । आश्चर्यजनक उन्होंने तलाश किया कि क्या कभी ऐसी कोई घटना उधर घटित हुई थी । पता लगाने पर पाया गया कि जैसा उन्होंने दिवा स्वप्न देखा ठीक वैसा ही भूतकाल में प्रत्यक्ष हो चुका है ।

अतीत की तरह अनागत भविष्य की सम्भाव्य घटनाएँ भी कई बार दिवास्वप्न के रूप में प्रत्यक्ष देखी जानी जाती हैं और कालान्तर में वे ज्यों की त्यों सत्य सिद्ध होती हैं । बाल्टीमोर के एक इन्जीनियर की लड़की लिन्डा एन. ब्युरिट्स को अपने भविष्य की ऐसी ही पूर्व झाँकी दिखाई पड़ गई थी । यह भावुक, सम्वेदनशील, कल्पना-प्रवण किशोरी जीवन के प्रति प्रगाढ़ आसक्ति रखती थी । काव्य, संगीत और चित्रकाल में उसे रुचि थी । जब वह हाईस्कूल में थी, तभी एक दिन अचानक एक पोर्ट्रेट बनाने बैठी । यह उसके द्वारा बनाया गया प्रथम व्यक्ति-चित्र था । उसने अपनी ही आयु के एक अनजान लड़के का चेहरा बना डाला । वह चेहरा न तो उसने अपने जीवन में कभी भी देखा था, न उसके माता-पिता ने । जब माँ ने पूछा कि यह लड़का कौन है, जिसकी तुमने तस्वीर बनाई है, तो लिण्डा ने बताया कि "यह मेरी कल्पना का राजकुमार है । मैंने इसे कभी भी देखा नहीं । बस मुझे एक चित्र बनाने की प्रेरणा हुई, मैं बैठ गई और यह पोर्ट्रेट बन गया । वह पोर्ट्रेट बड़े चाव से उस किशोरी ने अपने अध्ययन-कक्ष में लगा लिया ।"

आगे चलकर महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त कर वह एक अध्यापिका बन गई । इसी बीच उसे "ब्रेन ट्यूमर" हो गया । उसकी मृत्यु के समय डॉक्टरों ने उसके माँ-बाप से अनुरोध किया कि बच्ची की आँखें नेत्र-बैंक को दान कर दी जायें । उन्होंने अनुमति दे दी । मृत्यु के तत्काल बाद डॉक्टरों ने उसकी आँखें सुरक्षित रख लीं ।

ये आँखें लगाई गईं वहाँ से ४०० मील दूर स्थित चार्लस्टन शहर के उसी लड़की के हम उम्र २२ वर्षीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युवक वूडी को । इस लड़के की आँखें बचपन से ही कमजोर थीं । बीस साल की आयु में उसे गम्भीर नेत्ररोग हो गया तथा ऐसे ऑपरेशन के अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं शेष बचा, जिसमें नेत्रदाता के शरीर से अलग किए जाने के ७२ घण्टों के भीतर रोगग्रस्त आँख की जगह दूसरी आँख प्रतिरोपित कर दी जायें ।

युवती लिण्डा की आँखें नेत्र-बैंक को दे दी गईं । वूडी के डॉक्टर का क्रम नेत्र-आकांक्षियों में प्रथम था, अतः उसे ही वे आँखें मिलीं । ताजी नई आँखें पाकर वूडी कृतज्ञता से भर उठा । उसने नेत्रदानी परिवार के प्रति कृतज्ञता दिखलाने हेतु बैंक से उनका पता पूछकर पत्र लिखा । कुछ दिन बाद वह उनसे मिलने गया । वहाँ अपने मधुर व्यवहार से बहुत घुल-मिल गया । उसकी हँसी लिण्डा जैसी ही थी । अतः माँ-बाप को अपनी बेटी की स्मृति ताजी हो आयी । विदा के समय वूडी अपना एक चित्र उन्हें दे आया । लिण्डा की माँ को वैसे भी यह चेहरा परिचित लग रहा था ।

इस घटना के छः माह बाद, एक दिन लिण्डा के माता-पिता अपनी स्वर्गीया पुत्री की वस्तुएँ उलट-पुलट रहे थे । तभी उन्हें वह पोर्ट्रेट मिला, जिसे उनकी लाड़ली ने हाईस्कूल जीवन में बनाया था तथा अपनी कल्पना का राजकुमार कहा था । इन्जीनियर-दम्पत्ति विस्मय से उछल पड़े, "हे भगवान ! यह तो वूडी का ही चित्र है ।" सचमुच वह पोर्ट्रेट वूडी के ही उस चित्र जैसा था, जो उस लड़के ने अपने आगमन के समय छः माह पहले उन दोनों को दिया था । उस प्रकार लिण्डा की भविष्य कल्पनापूर्ण सत्य निकली ।

समष्टि-मन अपने आप में एक इकाई है । हमारे साधारण विचार समय और पदार्थ में ढले-सिमटे रहते हैं । काल और देश के ढाँचों में होकर विचार स्पष्ट रूप ले पाते हैं और वही जानकारी जो दिक्काल के खाकों में ढली हो, हमारे चेतन-मन को ग्राह्य होती है, किन्तु वस्तुतः समय और स्थान हमारे मस्तिष्क की ही कल्पना एवं रचना है । उनकी कोई निरपेक्ष स्थिति नहीं है । घटनाओं की सापेक्षता में ही दिक् और समय का महत्त्व उभरता है ।

३ अगस्त को सुबह ५ से ६ तक हमने दर्शन-शास्त्र की काण्ट की पुस्तक पढ़ी । १६ जुलाई को संसद में दोपहर २ बजे अमुक-अमुक ने बहस की । मई ७८ में राजेन्द्र ने हाईस्कूल की परीक्षा दी । ११ नवम्बर ७७ को विनय के घर में सुबह ३ बजकर ५५ मिनट पर बच्ची पैदा हुई, आदि-आदि प्रत्येक कथन किसी घटना से जुड़ा है । घटनाओं से पूरे समय को समझ पाना सचेतन मस्तिष्क के लिए दुष्कर है । जब व्यक्ति अपने आपको समय से ऊपर उठाकर देखता है, तो उसे मस्तिष्कीय चेतना ही दिखाई पड़ती है ।

अतः समष्टि मन से अपने को जोड़ देने पर चित्त की अनुभूति-क्षमता का क्षेत्र अनन्त तक विस्तृत हो जाता है और उस समय भूत-भविष्य की किसी भी घटना को प्रत्यक्ष जानना सहज सम्भव है ।

सायास-सचेत रूप में अपने मन को समष्टि-मन से जोड़ने के लिए साधना करनी होती है जो जिस स्तर तक उस समष्टि चित्त से तादात्म्य स्थापित कर लेता है, उसकी भूत-भविष्य की दर्शन-क्षमता उतनी ही बढ़ती जाती है ।

कई बार व्यक्ति के अवचेतन मन का तार कुछ पलों के लिए समष्टि के प्रवाह से अनायास भी जुड़ जाता है । सामान्य लोगों में ऐसा किसी अनजान क्षण में ही घटित हो उठता है । उस क्षण में ही उन्हें भूत या भविष्य की प्रत्यक्ष झाँकी दिखाई पड़ जाती है, जिसे लोग चमत्कार मान बैठते हैं ।

वस्तुतः इसमें चमत्कार जैसा कुछ है नहीं । मनुष्य के भीतर ऐसी विशिष्ट क्षमताएँ स्वभाविक रूप में विद्यमान हैं, जिनका समुचित विकास कर वह काल की मानव-निर्मित सीमाओं को भेदकर अतीत-अनागत की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर सकता है । योग-साधनाओं द्वारा यह विकास सहज रूप में हो जाता है और तब व्यक्ति को अपनी उस अनन्त विस्तृत आत्म-चेतना का बोध होता है, जिसे वह विस्तृत किए रहता है ।

वर्तमान की मुट्ठी में भूत और भविष्य-दर्शन

सन् १६६६ तक वैज्ञानिकों ने देखने के विज्ञान को अधिक महत्त्व नहीं दिया । अब तक यह समझा जाता था कि कोई वस्तु देखने के लिए आँखें और रोशनी मात्र पर्याप्त हैं । साधारण मनुष्य जिस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने थोड़े से ज्ञान के आधार पर ही वस्तुओं का मूल्यांकन करते और सृष्टि के कण-कण में भरी हुई रहस्यपूर्ण जानकारियों से वंचित रह जाते हैं उसी प्रकार अब तक वैज्ञानिकों ने भी दृश्य-विज्ञान की सामान्य-सी जानकारियाँ तो प्राप्त कर ली थीं पर उनकी पहुँच भारतीय योगियों और तत्ववेत्ताओं की पहुँच से करोड़ों मील पीछे थी ।

१९६७ में अपने-अपने ज्ञान का अहंकार और सीमा बन्धन तोड़कर संसार के तीन बड़े वैज्ञानिक—सर्वश्री (१) डॉ. जार्ज वाल्ड (हारवर्ड यूनिवर्सिटी के प्राणि विज्ञान के प्रोफेसर), (२) डॉ. हाल्डेन केफेर हार्टलाइन (जैव भौतिकी प्रोफेसर राक फेलर यूनिवर्सिटी) तथा (३) "नोबेल कन्स्टीट्यूट फार ब्यूरो फिजियोलॉजी" के अध्यक्ष डॉ. रैग्नर ग्रैनिट ने अपने अध्ययन और शोधों को एकत्रित किया तो पता चला कि किसी वस्तु को देखने के लिए केवल मात्र प्रकाश और आँखें ही पर्याप्त नहीं वरन् आँखों से लेकर मस्तिष्क के उस स्रोत तक की सारी जानकारी भी आवश्यक है जो दृश्य और प्रकाश की अनुभूति में सहायक और कर्त्ता का काम करती हैं । यह एक महत्त्वपूर्ण क्षण था जब इन तीन वैज्ञानिकों को १९६७ में नोबेल पुरस्कार देकर संसार को बताया गया कि सत्य और तथ्य एक विषय की विशेषता मात्र से समझ में नहीं आते जब संसार का सब तरह का ज्ञान एक स्थान पर एकत्रित किया जाता है तब कहीं यथार्थ का प्रतिपादन हो पाता है ।

देखने का विज्ञान यह है—आँख की पुतली के पीछे एक गोल ताल (लेन्स) लगा होता है जिसमें से होकर प्रकाश किरणें अन्दर गुजर जाती हैं । इस ताल से गुजरने के बाद बिम्ब उल्टा हो जाता है । अर्थात् ऊपर का भाग नीचे और नीचे का ऊपर हो जाता है । इसके बाद प्रकाश ताल के पीछे के नेत्र गोलक नामक खोखले को पार करती हैं । इस गोलक में भीतरी सतह पर चारों ओर एक विशेष प्रकार की नाड़ियों की तह होती है इसे दृष्टि पटल या 'रैटिना' कहते हैं । यह रैटिना जिन अत्यन्त सूक्ष्म-कोशों (प्रत्येक जीवित पदार्थ प्रोटोप्लाज्मा नामक तत्व से बना होता है उसके सूक्ष्मतम कण को कोश या "सेल" कहते हैं) से बना होता है उन्हें "राड" कहते हैं । प्राणि विज्ञान वेत्ता डॉ. वाल्ड ने बताया कि इन कोशों (राड्स) में "रोडोप्सिन" नामक एक अत्यन्त जटिल रसायन पाया जाता है । इसी को "विजुअल पर्पिल" कहते हैं और वह प्रोटीन एप्सिन तथा विटामिन "ए" को मिलाकर बना होता है । इसी तत्व के परमाणुओं में पदार्थ से टकराकर आने वाले प्रकाश कण विद्युत आवेग (इलेक्ट्रिक करेन्ट उत्पन्न करते हैं) यह आवेग अपने अन्दर धारण किए बिम्ब की लहरों को मस्तिष्क में पहुँचाते रहते हैं । मस्तिष्क के कोश उसे ग्रहण किए रहते हैं । मन में यह शक्ति होती है कि वह जब भी मस्तिष्क में छाये इन पिछले कभी के भी दृश्यों पर जोर लगाता है तो वह दृश्य एक-एक कर सिनेमा के पर्दे की भाँति याद आते चले जाते हैं ।

यथार्थ में ज्ञान और विज्ञान के सब रहस्य मस्तिष्क के प्रकाश कणों में भरे हैं । पर अभी विज्ञान की जानकारियाँ इतनी व्यापक नहीं हो पायीं कि मस्तिष्क के किन्हीं कोशों के रासायनिक विश्लेषण द्वारा मनुष्य के बताये बिना किसी मशीन से उन सब चित्रों और दृश्य को टेलीविजन पर्दे की तरह साफ किया जा सके जिसे मस्तिष्क ने पहले कभी देखा है, पर वैज्ञानिक इस तथ्य से इन्कार नहीं करते कि प्रकाश कणों की सूक्ष्म अवस्थाओं में ज्ञान-विज्ञान के वह अक्षर विधाता की कुण्डली के समान अंकित अवश्य रहते हैं ।

पातंजलि कृत योग दर्शन के सूत्र ३ के ३०वें निरुक्त में बताया है—"मूर्द्ध ज्योतिषि सिद्ध दर्शनम्" अर्थात् कपाल के भ्रूमध्य स्थित छिद्र में झाँकने से प्रकाश के दर्शन होते हैं यह प्रकाश ही ज्ञान की अनुभूति करता है । उसमें संयम करने से योगी न केवल नेत्र बन्द करके भी सब संसार को देख सकने में समर्थ हो जाता है वरन् वह भूत और भविष्य को भी जानने लगता है ।

संयम का अर्थ है धारणा, ध्यान और समाधि, त्रयमेकत्र संयमः (योग दर्शन ३।४) । अर्थात् जब किसी वस्तु में ध्यान इस तरह विलीन हो जाय कि "मनुष्य शरीर हूँ ऐसी कल्पना ही शेष न रहे" वरन् ऐसी अनुभूति होने लगे कि "वह वस्तु मैं स्वयं हूँ"—तो उस वस्तु के सम्पूर्ण गुणों का विकास अपनी आत्मा में हो जाता है । अर्थात् यदि सूर्य-मण्डल में संयम किया जाये और ध्यान पूर्ण परिपक्व हो जाय तो सूर्य की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो भी दिव्य शक्तियाँ हैं, वह सब मानवीय अन्तःकरण में उतरी हुई देखी जा सकती हैं ।

इन तथ्यों को शाण्डिल्य उपनिषद् में भी विस्तार से बताया गया है कि मस्तिष्क में चित्र का संयम करने और धर्म अधर्म दोनों से निरासक्त हो जाने अर्थात् न तो किसी से राग हो, न द्वेष, न प्रेम हो, न घृणा, न लगाव हो न दुराव आदि की स्थिति में सत्यलोक का ज्ञान होता है और भूतकाल में—क्या हुआ, आने वाले भविष्य में क्या होगा, उसका एक-एक क्षण का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

अब तक भारतीय योग की इन बातों को अतिरंजित, काल्पनिक मिथ्या और भ्रमोत्पादक कहा जाता रहा है पर प्रकाश और उसके विभिन्न स्रोतों की नई-नई जानकारियों के आधार पर अब जो तथ्य सामने आये हैं वह यह बताते हैं कि भूत और आगत भविष्य की होनहार को एक क्षण में जान सकना कोई असम्भव बात नहीं है । पर यह सब ज्ञान से ही सम्भव है वैज्ञानिक यन्त्रों से भी भूत और भविष्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । वैज्ञानिक इसके लिए परिश्रम के साथ किसी ऐसी मशीन के निर्माण के लिए प्रयत्नशील भी हैं पर मशीनें जटिल, कठिन और धनसाध्य साधन हैं । मनुष्य शरीर एक परिपूर्ण यन्त्र है हमें केवल उस यन्त्र के प्रयोग की यौगिक प्रणाली पर विश्वास करने और उसे निष्ठापूर्वक सीखने भर की आवश्यकता है । योग और विज्ञान—सिद्धान्त दोनों के एक समान हैं उनके वर्णन और अनुभूति की शैली मात्र भिन्न है ।

भूत क्या था और भविष्य क्या होगा ? इसे जानने के लिए आकाश स्थित ग्रह-नक्षत्रों, प्रकाश पिण्डों, मन्दाकिनियों और नीहारिकाओं की तात्विक विवेचना, ग्रह-पथ, ग्रह-गति और उसकी पृथ्वी से दूरी के आधार पर किया जाता है । ज्योतिष के इस ग्रह-गणित वाले भाग पर किसी समय भारतीय आचार्यों ने महत्त्वपूर्ण शोधें की थीं । आज उस गणित को भुलाकर ज्योतिष के नाम पर फलित और अधूरे कूड़े-कचरे जैसे भाग्यवाद को प्रोत्साहन देने वाली दुकानें तो हैं पर उस आर्ष-गणित को समझने और विकसित करने की कठिनाई कोई मोल नहीं लेना चाहता । यदि ऐसा किया गया होता तो भूत, भविष्य की जानकारियाँ ही न मिलतीं लोग मनुष्य-जीवन के लक्ष्य, अनिवार्य कर्मफल, प्रायश्चित आदि के द्वारा आत्म-शुद्धि के विज्ञान को भी अच्छी तरह समझते । ग्रह-गणित की यथार्थ उपयोगिता यही थी । भविष्य को जानने के पीछे आत्म-शुद्धि के विधान प्राचीन ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर लिखे हैं वह इस बात के प्रमाण हैं कि जहाँ मनुष्य पूर्व-कृत कर्मों के फल भोगने के लिए अनिवार्य रूप से बाध्य है वहाँ वह अपने भविष्य को अच्छा बनाने और जीवन को ऊँचा उठाने में भी आप ही समर्थ है ।

मूल विषय के सम्बन्ध में अब विज्ञान भी सहमत हो गया है । आकाश में दो तरह के पिण्ड पाये जाते हैं १-जीवित २-मृत । जीवित ग्रह वह है जो प्रकाश का उत्पादन स्वयं करते हैं । दूसरे वह जो प्रकाश के लिए दूसरों पर अवलम्बित रहते हैं पर पाये हुए प्रकाश अपनी प्रकृति को मिलाकर विकिरण का कार्य वे भी करते रहते हैं मृत ग्रह कहलाते हैं । जीवित ग्रह व्यक्ति की अन्तःचेतना और स्थूल प्रकृति दोनों को प्रभावित करने में समर्थ होते हैं जबकि मृत ग्रह शरीर और प्रकृति को प्रभावित करते हुए भी यदि अन्तःचेतना बलवान है तो उसे अपने सिद्धान्तों से हटा नहीं पाते हैं । ज्योतिष का यही अंश समझने योग्य है ।

अविज्ञात भूत और अकल्पित भविष्य जानना भी सम्भव है

खगोल विद्या की गणित विधि अमुक सिद्धान्तों, अनुभवों और निष्कर्षों पर आधारित है । चन्द्र, सूर्य और पृथ्वी की चाल, का, उनकी कक्षाओं का विवरण हमें ज्ञात है अस्तु भविष्य में सूर्य या चन्द्र पर ग्रहण कब लगेगा, कितनी छाया पड़ेगी इसकी पूर्व घोषणा बिना किसी कठिनाई के की जा सकती है । यह भविष्य कथन वैज्ञानिक है । इसे भाग्यवाद या विधि-विधान की व्याख्या के अन्तर्गत तभी तक लाया जाता रहा होगा जब तक खगोल विद्या का क्रमबद्ध विकास नहीं था । अब ग्रह-नक्षत्रों के उदय, अस्त, ग्रहण उनके मार्गी वक्री होने की भावी सम्भावना को गणित व्यवस्था के अन्तर्गत ले लिया गया है । इसमें अनिश्चित भाग्यवाद या विधि-विधान जैसी कोई बात नहीं है ।

भविष्य कथन का धन्धा करने वाले तो ऐसे ही तीर-तुक्का मिलाते रहते हैं । सामान्य अनुमान ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनका प्रधान अस्त्र होता है जिसे पोथी-पत्रा की उलट-पुलट के बहाने लोगों को बताते-सुनाते रहते हैं । इनमें से बहुत-सा सही और बहुत-सा गलत निकलता रहा है । जिनका सही निकला वे ज्योतिषी जी की प्रशंसा करते और भेंट-पूजा चढ़ाते हैं, जिनका गलत निकला वे मन मसोस कर रह जाते हैं । यह तो ऐसे ही अटकल पच्चू के खेल-विनोद हैं जिनमें धूर्त और मूर्ख अपने-अपने कारणों से रुचि लेते और भ्रम जंजाल की बेल को पोषने-फैलाने की विडम्बना रचते रहते हैं ।

चर्चा ऐसे लोगों की नहीं, उनकी की जा रही है जो अपनी अतीन्द्रिय क्षमता के कारण व्यक्तिगत अथवा समूहगत भविष्य की घोषणा करते हैं और वे प्रायः सही सिद्ध होती हैं । इनका आधार सूक्ष्म जगत में पक रही वह खिचड़ी होती है जो वर्तमान और भूतकाल की परिस्थितियों एवं हलचलों के दाल-चावल को डाल कर तैयार की गई है । इसे देख सकना असामान्य होने के कारण आश्चर्यजनक तो है, पर वह असम्भव अथवा आधार रहित नहीं है ।

तथ्य यह है कि यह समस्त विश्वब्रह्माण्ड चेतना का एक सुविस्तृत समुद्र है । स्थूल जगत में जो होता है, उसकी प्रतिक्रिया सूक्ष्म जगत में निश्चित रूप से होती है । उसे देख, समझ सकना, हर किसी के लिए सम्भव नहीं होता, पर जिनकी चेतनात्मक स्थिति विशिष्ट है वे उस अदृश्य को दृश्य की तरह देख सकते हैं और सुविदित की तरह जान सकते हैं ।

प्रयत्नपूर्वक चेतना का अतीन्द्रिय विकास किया जा सकता है और अपनी जानकारी का क्षेत्र इन्द्रिय शक्ति के आधार पर सीमित रहने का बन्धन तोड़ कर वह सब भी जाना जा सकता है जो इस ब्रह्माण्ड में किसी भी क्षेत्र में हो रहा या हो चुका है । जब तक बूँद समुद्र से अलग है तब तक उसका विस्तार, मूल्य एवं बल स्वल्प है, किन्तु जब वह समुद्र में मिल जाती है तो फिर उसका स्वरूप सागर जैसा सुविस्तृत बन जाता है और ज्वार-भाटों की तरह ऊँचा उठने लगता है और नीचे गिरने की नई सामर्थ्य प्राप्त करने का अवसर मिल जाता है । बूँद रहने पर उसका अपना अलग स्वरूप और स्वाद था, पर अब उसमें आमूल-चूल परिवर्तन हो गया । समुद्र जल का खारीपन, भारीपन उसमें ओत-प्रोत हो गया । ब्रह्माण्डीय चेतना से, ब्रह्म सत्ता से, सम्बद्ध व्यक्ति सीमा बन्धन तोड़कर असीम बनता है । उसकी ज़ानकारी का क्षेत्र असीम हो जाता है । स्तर बढ़ते चलने पर स्थिति और भी आगे बढ़ती है । आत्मा में वे गुण उत्पन्न हो जाते हैं जो परमात्मा में हैं । परमात्मा सत्, चित, आनन्दमय है—सत्यं शिवं सुन्दरं है । ब्रह्म परायण का व्यक्तित्व इन्हीं विभूतियों का प्रतीक प्रतिनिधि बन जाता है । इतना ही नहीं ईश्वर में जो सामर्थ्य एवं विशेषताएँ हैं उनकी झांकी भी ऐसे मनुष्यों में होने लगती है । वे महानताओं-महामानवों एवं देवात्माओं-अवतारों जैसे उस प्रकार के काम करते हैं जो सामान्य लोगों को अपने लिए अद्भुत एवं असम्भव प्रतीत होते हों । युग प्रवाह को मोड़ना और व्यापक असन्तुलन को सन्तुलन में बदलना ऐसे ही महामानवों के लिए सम्भव होता है, जो ब्रह्म सत्ता के साथ अपना विशेष सम्बन्ध बनाकर असाधारण आत्म शक्ति के अधिकारी बन गए हैं । सीमित व्यष्टि चेतना भव-बन्धनों में, पंचभूत कलेवर में जकड़े हुए लोग तो अपना सामान्य निर्वाह तक ठीक प्रकार नहीं कर पाते और उतने भर प्रयोजन में रोते-कलपते, असफलता पर हाथ मलते पाये जाते हैं । जबकि आत्मशक्ति सम्पन्न न केवल अपना वरन् व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करते और समय की आवश्यकता को पूरी करते देखे जाते हैं ।

आत्म-शक्ति का अभिवर्धन ब्रह्म सत्ता के साथ घनिष्ठता स्थापित करने से सम्भव होता है । तपश्चर्याएँ एवं योग साधनाएँ उसी प्रयोजन के लिए की जाती हैं । यह ऊँची स्थिति एवं आगे की बात हुई । ऊपर की पंक्तियों में ब्रह्म सम्बन्ध बनाने और योगी की दिव्य शक्ति प्राप्त करने का प्रसंग है । इससे पहले की हल्की स्थिति वह है जिसमें आत्म-शक्ति बढ़ाने के लक्षण तो नहीं मिलते पर मस्तिष्कीय चेतना से सीमाबन्धन टूटते और असीम के साथ सम्बन्ध बनते हैं । यह पंच भौतिक प्रकृति के व्यापक क्षेत्र में प्रवेश की बात है । भौतिक जगत उतना ही नहीं है जितना कि आँख से देखा, हाथ से छुआ या अन्य इन्द्रियों के आधार पर प्रत्यक्षतः जाना जाता है । अप्रत्यक्ष एवं अविज्ञात भी असीम है । वैज्ञानिक शोधों द्वारा उसी को खोजा जा रहा है जो अप्रत्यक्ष होने पर भी प्रत्यक्ष की तुलना में अत्यधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्तिशाली है । इसी सूक्ष्म प्रकृति के क्षेत्र में मस्तिष्कीय चेतना का प्रवेश होता है और प्रत्यक्ष जगत की जो छाया, प्रतिक्रिया सूक्ष्म जगत में विद्यमान है उसका परिचय स्पष्ट रूप से मिलने लगता है ।

अतीन्द्रिय चेतना की चर्चा आध्यात्म ग्रन्थों में आज्ञाचक्र एवं तृतीय नेत्र के रूप में होती रही है । शिव के, दुर्गा के मस्तक में भृकुटि के मध्य एक तीसरा नेत्र होने का उल्लेख है । इसे दिव्य चक्षु भी कहते हैं । दिव्य दृष्टि इसी में रहती है । शिव ने इसी का उन्मीलन करके काम विकार को जला कर भस्म किया था । अर्जुन को विराट् ब्रह्म का दर्शन इसी दिव्य चक्षु से हुआ था । संजय ने महाभारत का घटना क्रम इसी नेत्र से देखते हुए धृतराष्ट्र को सारा वृत्तान्त सुनाया था । 'अदृश्य दर्शन' इसी केन्द्र का काम है । यह रूप शक्ति का, 'दृष्टि' क्षेत्र का प्रसंग है । शब्द, रस, गन्ध, स्पर्श की अन्य ऐसी अनुभूतियाँ भी अतीन्द्रिय क्षमता से हो सकती हैं जो प्रत्यक्ष सम्पर्क से तो बहुत परे हैं, पर देशकाल की सीमा लाँघकर अपना अस्तित्व अन्यत्र कहीं न कहीं सूक्ष्म रूप से बनाये हुए हैं । इस प्रकार के अनुभव सर्व-साधारण को नहीं होते, इसलिए वे अद्‌भुत, अलौकिक प्रतीत होते हैं किन्तु वस्तुतः वे होते सर्वथा लौकिक एवं सामान्य ही हैं । इस संसार में जो कुछ घटित होता है वह नितान्त क्रमबद्ध और प्रकृति व्यवस्था के अनुरूप ही होता है । अन्तर इतना ही है कि हम प्रकृति के थोड़े से नियमों से ही परिचित हैं । जो अभी भी अविज्ञात बना हुआ है उसका क्षेत्र, विज्ञात की तुलना में असंख्य गुना अधिक है । इन्द्रिय शक्ति के आधार पर जितनी अनुभूतियाँ हमें होती हैं वे ही सामान्य अथवा लौकिक प्रतीत होती हैं । इसमें आगे की सभी बातें असामान्य एवं अलौकिक हैं, जो सब नहीं कर सकते, कोई विशिष्ट ही कर पाते हैं उन्हें 'अद्‌भुत' कहा जाता है । उस स्थिति पर पहुँचे हुए व्यक्ति देखते हैं कि उनकी विशिष्ट उपलब्धियाँ वस्तुतः सामान्य ही हैं और प्रकृतिक्रम से बाहर की कोई बात उनमें नहीं है ।

प्रकृति व्यवस्था की सामान्य जानकारी अत्यल्प है । उससे गहरे जाकर जो लोग अन्तर्निहित नियम-सूत्रों तथा विधि-व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं और प्रकृति की सूक्ष्म तथा गहरी पर्तों के विश्लेषण एवं अर्थ संकेतों को समझने की क्षमता अपने में विकसित कर लेते हैं, उन्हें यद्यपि प्रकृति-गर्भ में पक रही घटनाएँ प्रत्यक्षवत् ही दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु सामान्य लोकानुभव में तो इन घटनाओं को वर्षों बाद ही आना है और उस समय तो वे सर्वतः अज्ञात व अनुमानातीत ही होती हैं । अतः भविष्य की उन घटनाओं का कथन जनसामान्य में विस्मय का कारण बने, यह स्वाभाविक ही है ।

वर्तमान में जो सामने है जिसे जानने के साधन उपलब्ध हैं उसे जाना जा सकता है, पर जो स्थान की दृष्टि से दूर हैं, जहाँ के समाचार साधन रहित स्थिति में हैं पहुँच नहीं सकते वहाँ की परिस्थितियों को प्रत्यक्ष घटना की तरह दृश्य रूप में देखने, श्रव्य रूप से सुनने की घटनाएँ निश्चय ही आश्चर्यजनक हैं । वर्तमान का ज्ञान भी तभी मिल सकता है जब वे इन्द्रिय अनुभूति के द्वारा प्रत्यक्ष हों अथवा पत्र, संदेश, टेलीफोन, तार, रेडियो, टेलीविजन जैसे उपकरणों के सहारे उन्हें जाना जा सकता है । ऐसी स्थिति न होने पर भी यदि कोई घटनाक्रम प्रत्यक्ष की भाँति ही जाना जा सके तो उसे आश्चर्यजनक एवं अतीन्द्रिय क्षमता का चमत्कार ही कहा जायेगा ।

वर्तमान में दूरवर्ती घटनाक्रमों को देख या सुन सकना भी विकसित इन्द्रिय शक्ति की परिधि में आ सकता है, पर भूतकाल की अविज्ञात घटनाओं का इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उनकी प्रामाणिकता में कोई सन्देह न रहे, सचमुच ही आश्चर्य की बात है । इससे भी अधिक आश्चर्य उन सम्भावनाओं की जानकारी का है जो अभी घटित ही नहीं हुईं और अनुमान के आधार पर भी उस प्रकार की कल्पना करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता ।

भूतकाल और वर्तमान के बीच समय की दूरी एक प्रकार की खाई है जिसे पाट सकना सामान्यतया अति कठिन प्रतीत होता है । इतिहास के पृष्ठों पर अंकित लेखों, खण्डहरों, पुरातत्व शोधों तथा जनश्रुति प्रसंगों के आधार पर ही भूतकाल का आधा, अधूरा विवरण प्राप्त होता है, पर उसे ज्यों का त्यों जान सकना, प्रसंगों को उसी प्रकार देख या सुन सकना कठिन है । सामान्य मानवी चेतना इतनी लम्बी खाई छलांग सके ऐसे साधन उसके पास नहीं हैं । अतीन्द्रिय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्या के सहारे यह सम्भव हो सकता है । विकसित चेतना भूतकाल की घटनाओं को उसी प्रकार देख, सुन या जान सकती है, जिस प्रकार कि हम सब वर्तमान के प्रत्यक्ष घटनाक्रम की जानकारी सरलतापूर्वक प्राप्त कर लेते हैं ।

भविष्य दर्शन और भी कठिन है, जो हो चुका उसके स्थूल अथवा सूक्ष्म प्रमाणों का मिल सकना समझ में आता है । पुरातत्व शोधें जिस प्रकार अवशेषों के सहारे प्राचीन घटनाक्रम का निष्कर्ष निकालती हैं उसी प्रकार सूक्ष्म जगत में विद्यमान किन्हीं प्रमाणों को सूक्ष्म चेतना द्वारा जाना जा सकना, तार्किक दृष्टि से सम्भव हो सकता है । उस प्रकार के उपकरणों का विकास अभी नहीं हो सका, यह दूसरी बात है, पर उसे जानने की सम्भावना को सिद्धान्ततः स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । मस्तिष्क के किसी कोने में पड़ी चिर विस्मृत घटनाएँ कई बार प्रसंग वश तथा स्वप्न में अनायास ही उभर आती हैं । इसी प्रकार ब्रह्माण्डीय मस्तिष्क में पड़ी भूतकाल की घटनाएँ भी जानी जा सकती हैं, यह सम्भावना सहज ही समझ में आती है, किन्तु जो हुआ ही नहीं, जो अनिश्चित है, उसकी जानकारी कैसे मिले ?

यदि भविष्य निश्चित है और उसे हम जान सकते हैं तो एक नया संकट यह उत्पन्न होता है कि 'कर्म' की कोई उपयोगिता या महत्ता नहीं रहती । विधि का विधान, भाग्य का निर्धारण, यदि पूर्व निश्चित ही है तो फिर उसी की प्रतीक्षा में बैठे रहना कोई बुद्धिमानी है, तब विविध-विधि दौड़-धूप करने की आवश्यकता क्या रही ? ऐसी दशा में मनुष्य मात्र भाग्य की कठपुतली बन जाता है और पुरुषार्थ का कोई मूल्य नहीं रहता । यह विचित्र स्थिति है । इसे स्वीकार करने पर तो भाग्यवाद का ही समर्थन बनेगा और अकर्मण्यता ही पनपेगी । तब मनुष्य कुम्हार द्वारा चाक पर घुमाई जाने वाली मिट्टी की तरह अपने को असहाय अनुभव करेगा और इस प्रतीक्षा में बैठा रहेगा कि देखें भाग्य हमें किस ढाँचे में ढालता और किस परिस्थिति में ले जाकर पटकता है । यदि यही तथ्य है तो फिर मनुष्य को दयनीय स्थिति में रहता हुआ ही अनुभव किया जा सकेगा और पुरुषार्थ की निरर्थकता घोषित करने में किसी को कोई संकोच न होगा ।

तत्वतः भविष्य दर्शन और भाग्यवाद एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं । समान दीखते हुए भी उनकी स्थिति में जमीन-आसमान जितना अन्तर है । भाग्यवाद— सुनिश्चित विधि-विधान का प्रतिपादन करता है जबकि भविष्य दर्शन इस बात पर निर्भर है कि जो कुछ वर्तमान में घटित हो रहा है अथवा भूतकाल में घट चुका है उसकी संयुक्त प्रतिक्रिया निकट भविष्य में क्या होने वाली है ।

इन दिनों गणितीय जटिलताओं को सरल बनाने के लिए अनेकों प्रकार के 'कम्प्यूटर' बने हैं । वे ऋतु सम्भावनाओं जैसी सामान्य ही नहीं, युद्ध, शान्ति एवं राजनैतिक, सामाजिक उतार-चढ़ावों सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ भी करते हैं और उनमें से अधिकांश सही भी निकलती हैं । अब ज्योतिषियों का स्थान यह 'कम्प्यूटर' ग्रहण कर रहे हैं और उनके भविष्य कथन को अधिक विश्वस्त एवं प्रामाणिक माना जा रहा है । इन यन्त्रों की अमुक स्थिति का अमुक उतार-चढ़ावों में अमुक परिणाम निकलता है । इस सिद्धान्त के आधार पर बनाया गया होता है । फार्मूले पूर्व निश्चित होते हैं उसी आधार पर वे मशीन निष्कर्ष निकालती चली जाती हैं । इन भविष्य घोषणाओं को चमत्कारी समझा तो जा सकता है पर वस्तुतः उनमें वैसा कुछ है नहीं । तथ्यों की सुविदित प्रतिक्रिया के पूर्व निर्धारण का फलितार्थ ही है जिसे 'कम्प्यूटर' अपनी विशेष संरचना के कारण सर्व साधारण के लिए सुलभ करते रहते हैं ।

मामूली किसान भी प्रचलित अटकलों के आधार पर वर्षा और फसल सम्बन्धी अनुमान लगाते हैं और उनमें बहुत कुछ सच्चाई भी होती है । कई पशु-पक्षियों और कीड़ों की हलचलों को देखकर ऋतु परिवर्तनों एवं भावी घटना-क्रमों का अनुमान लगाया जाता है । शकुन विद्या में यदि कुछ तथ्य है तो उसका आधार अन्य प्राणियों की अतीन्द्रिय क्षमता के आधार पर दृष्टिगोचर होने वाली हलचलों को ही आधारभूत माना जा सकता है ।

बुद्धिमान लोग अपनी सामान्य सूझ-बूझ के आधार पर भावी सम्भावनाओं का ऐसा निष्कर्ष निकालते हैं जो प्रायः सही ही बैठता है । 'सटोरिए' मात्र जुआरी नहीं होते वे वर्तमान घटनाक्रमों पर पैनी नजर रखते हैं और अनुभवों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया किस परिणाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को उपस्थित कर सकती है । यह सूझ-बूझ जिस सटोरिए में जितनी पैनी होती है वह उसी के सहारे दाव लगाता है और नफा उठाता है । बड़ी-बड़ी योजनाओं का निर्धारण इसी आधार पर होता है । भविष्य के स्वप्न साकार करने में किस चाल से, किन साधनों के सहारे, किस प्रकार पहुँचना होगा, इसी सूझ-बूझ के सहारे योजनाएँ बनातीं और उन्हें पूरा करने का विधान बनता और सही सिद्ध होता है ।

जिस प्रकार वर्तमान को देखकर भूतकाल में घटनाक्रमों का बहुत कुछ अनुमान लगा लिया जाता है उसी प्रकार वर्तमान की गतिविधियों का भावी परिणाम क्या हो सकता है इसकी कल्पना कर लेना कुछ कठिन नहीं है । ऐसा भविष्य दर्शन प्रायः हर मनुष्य करता है । उसमें अतिवाद घुसा हुआ हो तो बात दूसरी है अन्यथा दूरदर्शितापूर्ण चिन्तन अपने साथ क्रिया-प्रक्रिया लेकर लक्ष्य की दिशा में अग्रसर होता है और बहुत अंशों में सफल ही होकर रहता है । छोटे-बड़े परिणाम में हर स्थिति के व्यक्ति को भावी कल्पनाएँ करनी और योजनाएँ बनानी पड़ती हैं । किसान अनुमान लगाता है कि अगले वर्ष अमुक कारणों से अमुक फसल बोने से अधिक लाभ हो सकता है । अस्तु वह अपने अमुक खेत में अमुक बीज बोने की तैयारी बहुत विचार मन्थन के बाद आरम्भ करता है । इस प्रकार प्रायः हर स्तर के व्यक्ति भविष्य दर्शन का प्रयत्न करते हैं, कल्पना तथ्य और अनुभव का समन्वय ऐसे निष्कर्ष निकालता है जो सच्चाई और सम्भावना के बहुत कुछ समीप होते हैं ।

यह सामान्य जीवन की, सामान्य सूझ-बूझ परक चर्चा हुई । अब असामान्य को देखा, समझा जाय, सूक्ष्म जगत का पर्यवेक्षण किया जाय तो प्रतीत होगा कि भूत और वर्तमान के घटनाक्रमों की प्रतिक्रिया अपने ढंग से पकती और पनपती रहती है । समयानुसार उसका प्रकटीकरण तो होता ही है, पर सूक्ष्म बुद्धि उसका आभास पहले से ही लगा लेती है । प्रसव के बाद यह पता हर किसी को चल जाता है कि लड़का पैदा हुआ या लड़की, पर जानकार लोग गर्भवती में उभरे लक्षणों को देखकर उसकी भविष्यवाणी पहले से ही कर देते हैं । अमुक मुकदमे का क्या फैसला हो सकता है इसका अन्दाज न्याय विशेषज्ञों को पहले से ही लग जाता है ।

सूक्ष्म जगत में प्रस्तुत परिस्थितियों एवं हलचलों के आधार पर सम्भावना बननी आरम्भ हो जाती है । समयानुसार उसका प्रकटीकरण तो होना ही है पूर्वाभास के रूप में भी उसे जानना सम्भव हो सकता है । भविष्य वक्ताओं की दिव्य चेतना उस अदृश्य को देखती और अव्यक्त को व्यक्त करती है जो निकट भविष्य में घटित होने जा रहा है । सामान्य अनुमान तो सभी लगाते और अपनी-अपनी सम्भावना व्यक्त करते हुए शर्त लगाते हैं । आश्चर्य तब माना जाता है कि सामान्य बुद्धि के आधार पर सोची जा सकने वाली बात की अपेक्षा कोई अटपटी बात कही जाती है और वह सत्य सिद्ध होकर रहती है । यही 'विधि-विधान' मानने को मन करता है, पर वस्तुतः वैसा होता कुछ नहीं । भविष्य कथन प्रस्तुततः परिस्थितियों की ऐसी प्रतिक्रिया भर है जो सामान्य सूझ-बूझ की परिधि से आगे चली जाती है और ऐसे परिणामों का परिचय देती है जो मोटी बुद्धि के लिए अटपटे और असम्भव लगते हैं । यद्यपि वे सम्भावनाएँ होती तथ्यों पर आधारित ही हैं ।

वर्तमान की घटनाएँ अन्यत्र अपने अदृश्य रूप में सूक्ष्म रूप धारण करने अनन्त आकाश में बिखर जाती हैं । उन्हें विशिष्ट व्यक्तियों अथवा परिस्थितियों द्वारा पकड़ा एवं समझा जा सकता है । किसी के मन की बात बता देना, किसी के लिखे कागज गुप्त रखने पर भी पढ़ लेना, जेब अथवा बन्द डिब्बे, बक्से में रखी वस्तुओं का यथा विवरण परिचय प्रस्तुत कर देना—कई विशिष्ट अल्प क्षमता सम्पन्न व्यक्ति के लिए सम्भव होता है । ऐसे चमत्कारों के प्रमाण समाचार अनेक बाद देखने, सुनने को मिलते रहते हैं ।

परिस्थितियों का प्रवाह बदल जाय तो भविष्य दर्शन भी निश्चित रूप से बदल जायेगा । भविष्यवाणियाँ वही सही उतरती हैं जिनसे घोषणा तथा फलित होने के मध्य घटना प्रवाह अपनी चाल पर यथावत् चलता रहता है । मनुष्य की सत्ता प्रचण्ड है वह अपने पराक्रम से सामान्य चाल को उलट कर नई रीति-नीति अपना सकता है । साहसी व्यक्ति ऐसे मोड़ बहुधा लेते रहते हैं । ऐसी दशा में उनके सम्बन्ध में बताया गया भविष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी निश्चित रूप से उल्टे या मोड़ लेते देखा जायेगा । व्यक्ति की भाँति ही, समूहगत सामाजिक हलचलें भी अपने प्रवाह की दिशा धारा बदल सकती हैं । ऐसी दशा में समूहगत भविष्य कथन भी बदलते देखे जायेंगे ।

न यहाँ भूत है, न वर्तमान, न भविष्यकाल

हवा जब तक गेंद में भरी रहती है, तब तक उसे विस्तृत विशाल वायुमण्डल से एकाकार होने का मौका नहीं मिलता, किन्तु उसके ऊपर के मोटे आवरण को ढीला करते ही वह वायु से मिलकर अधिक व्यापक और विराट् हो जाती है । मनुष्य के साथ भी यही बात है । वह जब तक स्थूलता में जीता है, हाड़-माँस का पुतला भर बना रहता है, पर जैसे-जैसे यह बन्धन ढीला होता जाता है, वैसे-ही-वैसे उसकी सूक्ष्मता बढ़ती है और अन्ततः वह स्थिति पैदा होती है, जहाँ उसकी सूक्ष्म सत्ता, सूक्ष्म जगत में प्रवेश कर नवीन जानकारियाँ अर्जित करने लगे । यही वह अवस्था है, जिसमें समय से पीछे चलकर विगत का ज्ञान प्राप्त कर सकना सम्भव होता है ।

यों तो समय के तीन काल खण्डों में से मनुष्य सामान्य स्थिति में केवल वर्तमान में जीता है, भूत और भविष्य उसके लिए अविज्ञात स्तर के रहस्य बने रहते हैं । इतने पर भी सच यह है कि वह एक साथ इन तीनों में जीता है । या दूसरे शब्दों में कहें, तो वर्तमान शेष दोनों को अपने में सँजोए रहता है । अन्तर मात्र इतना है कि विगत और अनागत सूक्ष्म भूमिकाओं में होने के कारण मनुष्य उन्हें वर्तमान की तरह ग्रहण नहीं कर पाता, किन्तु इतने से ही सत्य बदल नहीं सकता । शब्द और ध्वनि उच्चारण के बाद विलुप्त होते प्रतीत होते हैं । ऐसा लगता है कि उनका अस्तित्व समाप्त हो गया, पर वैज्ञानिक जानते हैं कि उनका नाश नहीं होता । सिर्फ अपनी स्थूलता और अभिव्यक्ति खोकर अव्यक्त स्थिति में चले जाते हैं । काया मरती है, पर आत्मवेत्ताओं को यह भली-भाँति विदित है कि जीवन एक सतत प्रवाह है, वह मरता कहाँ है ! अग्नि जलती है, फिर भी उसकी वह ऊर्जा अक्षुण्ण बनी रहती है । घटनाओं के सन्दर्भ में भी यही बात है । वह एक बार अस्तित्व में आने के बाद समाप्त हो जाती है, सो बात नहीं, मात्र-व्यक्त से अव्यक्त बनती है ।

भौतिक जगत में समय को घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का आम प्रचलन है । इस आधार पर जो कुछ सामने दृष्टिगोचर होता है, समय के उस भाग को वर्तमान कह दिया जाता है और जो बीत गया उसे 'भूत' एवं अनागत वाले हिस्से को 'भविष्यत्' कहा जाता है । इतने पर भी 'समय' न तो केवल भूत है, न भविष्य, न वर्तमान । वह एक सम्पूर्ण इकाई है, जिसमें एक साथ तीनों उपस्थित होते हैं । विज्ञानवेत्ताओं का कहना है कि जब रैखिक समय के मध्य भाग (वर्तमान) को मनुष्य जान सकता है, तो कोई कारण नहीं कि उसके आगे (भविष्य), पीछे (भूत) वाले हिस्से को वह ग्रहण कर सके । सिद्धान्त रूप में वैज्ञानिकों ने इसे सम्भव बताया है और इसके लिए कई उपाय सुझाए हैं ।

फ्रान्सीसी विज्ञानवेत्ता एमाइल ड्राइवेट अपनी पुस्तक "इन दि डेड पास्ट" में आशा व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि आने वाले समय में काल के विगत और अनागत वाले हिस्से में पहुँच पाना न केवल यथार्थ सिद्ध होगा, वरन् लोग वैज्ञानिक विधियों द्वारा उनमें आ-जा सकेंगे । विगत में पहुँचने सम्बन्धी एक परिकल्पना का उल्लेख करते लिखते हैं कि चूँकि समय स्थिर है और गति हम सब कर रहे हैं, इसलिए भूत में पहुँचने के लिए यह जानना जरूरी होगा कि विगत की उक्त तिथि में पृथ्वी अन्तरिक्ष के किस बिन्दु पर स्थित थी । चूँकि वह सूर्य के चारों ओर एक कुंडलाकार पथ में परिभ्रमण कर रही है और सम्पूर्ण सौर तन्त्र स्वयं भी कृतिका नक्षत्र की परिक्रमा कर रहा है, अतः बीते समय के एक निश्चित दिन अपने ग्रह की वास्तविक स्थिति का पता लगा पाना बहुत ही मुश्किल काम होगा, इसलिए यह यात्रा भी असम्भव स्तर की है या यों कहना चाहिए कि मात्र सैद्धान्तिक है ।

इसी प्रकार परिभ्रमणशील ब्रह्माण्ड में आइन्स्टीन का सापेक्षवाद का सिद्धान्त भी भूत-भ्रमण की सम्भाव्यता प्रकट करता है । इसको आधार मानते हुए कुर्ट गोडेल नामक एक विज्ञानविद् एवं तर्कशास्त्री ने तो यहाँ तक कह डाला है कि यदि यह सम्भव हुआ, तो यात्रा के दौरान हर व्यक्ति अपनी ही युवा अनुकृति से मिल सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मूर्धन्य भौतिकीविद् जॉन ह्वीलर का "वर्महोल सिद्धान्त" भी इस बात की सम्भावना दर्शाता है कि यदि दो ब्रह्माण्डों को जोड़ने वाली इस सुरंग में से किसी उपयुक्त में प्रवेश कर पाना शक्य हुआ, तो सम्भव है कि हम कहीं सुदूर भूत में जाकर बाहर निकलें ।

किन्तु यह सब सम्भावना मात्र है । सम्भावना भी ऐसी, जो शायद ही साकार हो सके । ऐसे में विज्ञान लगभग निराश हो चुका था और मानने लगा था कि इस प्रकार की सफलता शायद इस विधा द्वारा सम्भव नहीं । इसी बीच एक घटना घट गई । १७ अगस्त, १९५८ को "मियामी हेराल्ड" नामक समाचार पत्र ने एसोसियेटेड प्रेस के हवाले से एक ऐसे प्रयोग का समाचार छापा जो उन दिनों "यूनाइटेड स्टेट्स एयरफोर्स" में चल रहा था । विवरण का उल्लेख करते हुए अखबार लिखता है कि एक विशिष्ट प्रकार के अवरक्त (इन्फ्रारेड) कैमरे से एक बार सर्वेक्षण विमान के माध्यम से एक ऐसे भूखण्ड का चित्र खींचा गया, जो गाड़ियाँ खड़ी करने के काम आता था, पर तस्वीर लेते समय भूमि बिल्कुल खाली थी, वहाँ कोई भी वाहन नहीं था । कुछ घण्टे पूर्व जो कारें खड़ी थीं, वह सब जा चुकीं थी । फोटो जब बनकर आया, तो सब यह देखकर हैरान रह गए, कि उसमें असंख्यों मोटरें खड़ी दिखाई पड़ रही थीं । इसका अर्थ यह हुआ कि कैमरे ने कुछ घण्टे पूर्व के दृश्य को भी अपने अन्दर कैद कर लिया था । यही महत्त्वपूर्ण सूत्र साबित हुआ, जिसका कि बाद में सहारा लिया गया ।

इस सम्पूर्ण प्रसंग का वर्णन एण्ड्रू थामस ने अपने चर्चित ग्रन्थ "बियोण्ड दि टाइम बेरियर" में विस्तारपूर्वक किया है । उक्त घटना के उपरान्त विज्ञानी यह मानने के लिए विवश हो गए कि समय के बीते भाग में इस प्रकार का प्रवेश सम्भव तो है, पर ऐसा मानसिक धरातल पर ही हो सकता है, शारीरिक स्तर पर नहीं । उनका विचार था कि सामान्य कैमरे से इस प्रकार के चित्र नहीं आने का एक ही मतलब हो सकता है कि साधारण प्रकाश भूत और वर्तमान के मध्यवर्ती अवरोध को चीरकर भूतकाल के गर्भ में प्रवेश पाने की क्षमता नहीं रखता, जो अपेक्षाकृत सूक्ष्म इन्फ्रारेड में विद्यमान है, अतः वह कुछ घण्टे पूर्व ही घटना का फिल्मांकन करने में सफल होता है । इस सफलता के उपरान्त वैज्ञानिक यह जानने का प्रयास करने लगे कि क्या ऐसा सुदूर भूत के दृश्यों और घटनाओं के साथ भी शक्य हो सकता है ? इस निमित्त उन्होंने भिन्न-भिन्न स्थानों के कई ऐसे चित्र खींचे, जहाँ सदियों पूर्व सुविकसित सभ्यताएँ थीं, पर आज वे बीहड़ों, जंगलों या रेगिस्तानों में परिवर्तित हो चुके हैं । तस्वीर जब बनकर सामने आयी, तो उनमें वही सारे दृश्य देखे गए, जिनके चित्र खींचे गए थे । कोई ऐसी विलक्षणता नहीं दिखाई पड़ी, जो उन स्थूलों में नहीं देखी गई हों । इससे शोधकर्त्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि समय के साथ-साथ घटनाएँ और दृश्यावलियाँ अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म स्तरों में प्रवेश करती जाती हैं, फलतः वे विशिष्ट इन्फ्रारेड कैमरे की भी पकड़ से बचती रहती हैं । यदि कोई और अधिक वेधक सामर्थ्य वाली किरण हो, तभी इनका फिल्मांकन कर पाना सम्भव है, पर विशेषज्ञ अभी ऐसी कोई रोशनी ढूँढ़ पाने में सफल नहीं हो सके हैं । ऐसी स्थिति में भूतकालीन जानकारियाँ उपलब्ध करने के लिए अनुसन्धानकर्त्ता सूक्ष्म चेतना के महत्त्व से इन्कार नहीं करते । "टाइम-दि अल्टीमेट एनर्जी" पुस्तक की विद्वान लेखिका मरीहोप अपने उक्त ग्रन्थ में लिखती हैं कि चूँकि चेतना विश्व का सर्वाधिक सूक्ष्म तत्व है, अतएव वह समय के अवरोध को पार करते हुए किसी भी काल खण्ड में प्रवेश करने में समर्थ होती है । सुषुप्ति की अवस्था में हर एक के साथ ऐसा इसलिए सम्भव हो पाता है, क्योंकि इस दशा में चेतना और शरीर के बीच का बन्धन ढीला पड़ जाता है, फलतः वह भूत-भविष्य के किसी भी भाग में जाकर स्वप्नों के माध्यम से स्वप्न द्रष्टा को अनागत-विगत की ऐसी सूचनाएँ देने लगती है जिससे वह सर्वथा अनभिज्ञ स्पष्ट होता है । कई बार यह जानकारियाँ इतनी होती हैं और बार-बार आती हैं कि द्रष्टा भयभीत हो उठता है और किसी अनिष्ट की आशंका से चिन्ताग्रस्त हो जाता है । मरी होप ने इस पुस्तक में विगत का ज्ञान कराने वाले ऐसे अनेक स्वप्नों का उल्लेख किया है, जिसके बारे में सम्बन्धित व्यक्ति को कोई जानकारी नहीं थी । स्वप्न संकेतों के पश्चात् जब सम्बद्ध स्थानों में पहुँचा गया, तभी उनके बार-बार आने का रहस्य समझा जा सका ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना स्पष्ट हो जाने के बाद अन्वेषणकर्त्ता यह तो मानने लगे कि सुषुप्तावस्था में बीते काल की उदर-दरी में गति कर पाना सम्भव है, पर फिर भी वे इस सम्भावना से इन्कार करते रहे कि जागृत अवस्था में भी ऐसा कुछ सम्भाव्य है । इसका कारण वे एक ही बताते रहे कि इस दशा में चेतना काया से इतनी बुरी तरह आबद्ध होती है, कि दोनों को परस्पर पृथक कर पाना सरल नहीं । जिन दिनों विज्ञान जगत में इस विषय पर गम्भीर चिन्तन हो रहे थे, उन्हीं दिनों कुछ एक विलक्षण घटनाएँ घट गईं, जिससे वैज्ञानिक इस पर पुनर्विचार के लिए मजबूर हो गए ।

एक घटना स्काटलैण्ड की है । टामकिन परिवार की वहाँ बड़ी जागीर थी । एक दिन उसके एक सदस्य थामस टामकिन ने जो प्रायः ही अपने खेतों में दूर टहलने जाया करता था, उस दिन कुछ अधिक स्वस्थ अनुभव करने के कारण और दूर तक जाने और कुछ नये दृश्य देखने का निश्चय किया । अनेक मैदानों, खेतों को पार करने के पश्चात् वह एक प्राचीन स्काटिश मुहल्ले के निकट आ पहुँचा । उसे देखते ही वह ठिठक गया और सोचने लगा कि पहले तो इसे उसने कभी नहीं देखा, वह भी कितना मूर्ख है ! यह सोचते हुए वह उस ओर तनिक आगे बढ़ा । वहाँ कई झोपड़ियाँ, मकान तथा जानवर बंधे थे । एक झरना भी बह रहा था । कुछ और आगे बढ़ा, तो कई लोग झोंपड़ियों के बाहर खड़े दिखाई पड़े, किन्तु उनकी पोशाक इन दिनों जैसी नहीं थी । कई शताब्दी पूर्व लोग वैसा पहनावा पहनते थे, उनकी ड्रेस उससे मिलती-जुलती थी । टामकिन ने उन्हें आवाज लगायी, पर उसका कोई प्रभाव पड़ता उसे दृष्टिगोचर नहीं हुआ । वे सब स्वयं में ऐसे व्यस्त बने रहे, मानो सब-के-सब बहरे हों और आवाज किसी को भी सुनाई नहीं पड़ी हो । हाँ, बाहर खड़े पशुओं ने अवश्य प्रतिक्रिया दिखाई । वे सभी गर्दन घुमा कर टामकिन की ओर देखने लगे । इसके उपरान्त टामकिन लौट आया । भवन में पहुँचकर उसने इस नयी बस्ती के बारे में लोगों को बताया, पर लोग बार-बार यही कहते रहे कि जागीर के उस भाग में कहीं कोई बस्ती नहीं । जब दोबारा टामकिन उन्हें दिखाने के लिए सभी के साथ उक्त स्थल पर पहुँचा, तो वहाँ खाली मैदान के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिगत नहीं हुआ । वह आश्चर्यचकित रह गया । पर इसे भ्रम मानने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था ।

इस घटना की गवेषणा करने वाले विशेषज्ञ यह अनुमान लगाने लगे कि जाग्रतावस्था में भी यदि किसी प्रकार देह का बन्धन ढीला हो जाय, तो चेतना शरीर की परिधि से बाहर भी अपना विस्तार कर वर्तमान के अतिरिक्त समय के दूसरे खण्डों में प्रवेश कर सकती है, पर ऐसा किस प्रकार हो ? इसे बता पाने में वे अब तक विफल रहे हैं, किन्तु इतना अवश्य मानने लगे हैं कि जागृत रह कर भी ऐसा किया जा सकना सम्भव है । विज्ञान भले ही इसके विधान को बता पाने में असफल रहा हो, पर आध्यात्म में इसका सुनिश्चित उपाय है, जिसका यदि निष्ठापूर्वक अनुपालन किया गया, तो इस पथ का कोई भी पथिक इस विभूति को करतलगत कर भूत-भविष्य के अविज्ञात हिस्सों में प्रवेश पा सकता है, किन्तु इसके लिए चरित्र, चिन्तन, व्यवहार के परिमार्जन की प्रारम्भिक शर्त पहले पूरी होनी चाहिए, तभी अन्ततः अन्तराल की अन्तिम परिष्कृति पा सकना सम्भव है । जिसने यह अनुबन्ध पूरा कर लिया, उसके लिए समय सम्बन्धी अवरोध को मिटा सकना सरल हो जाता है, इसमें कोई दो मत नहीं ।

चलें काल से परे, समझें महाकाल को

समय का एक नाम 'काल' भी है । इसी से 'महाकाल' शब्द बना है । महाकाल अर्थात् काल का अधीश्वर । भौतिक जगत में जिसने इस काल को पहचान लिया और उसका सही-सही सदुपयोग करना सीख गया, समझना चाहिए, उसने समय-देवता को जीत लिया । समय की आराधना प्रकारान्तर से महाकाल की ही उपासना है ।

संसार में समय को सर्वोपरि शक्ति के रूप में मान्यता मिली है । यों शक्तियाँ प्रायः चुकती, बनती और बदलती रहती हैं, पर एकमात्र काल ही ऐसी शक्ति है, जिसका कभी क्षय नहीं होता । इसी बात को गीता में भी कहा गया है । भगवान कहते हैं—"**अहमेवाक्षयः कालो**·····" अर्थात् मैं अक्षय काल हूँ । यहाँ इस जगत में सब कुछ क्षणिक और क्षणभंगुर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । सब क्षीण होता रहता है । जो जन्मता है, वह मरता भी है । शाश्वत और सनातन यहाँ कुछ भी नहीं । परिवर्तन चक्र यहाँ सतत गतिशील है । परिवर्तन अवधि को ही काल कहते हैं । यह काल हमें बदलता प्रतीत इसलिए होता है क्योंकि उसे घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं । घटनाएँ घटती और गुजरती हैं । अनादि काल से यह क्रम चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा, फिर भी समय वही रहेगा । सृष्टि का जब जन्म हुआ था, तब भी समय वही था और आज वह बूढ़ी हो चली है, तब भी समय वही है । वह स्थिर है । जो अस्थिर है, वह सृष्टि है । बदलाव उसी में होता है, वही गतिवान और प्रवाहवान है, पर आँखों को बदलता और बहता समय प्रतीत होता है । यही दृष्टिभ्रम है । जबकि काल स्वयं में न तो छोटा है, न बड़ा । वह तो सदा एक जैसा स्थिर है । उसका छोटा-बड़ा होना हमारी अपनी गति पर निर्भर है । इसे निम्न उदाहरण द्वारा भली-भाँति समझा जा सकता है । यदि कोई हरिद्वार से आँवलखेड़ा तक की दूरी पैदल चलकर तय करना चाहे, तो इसमें सप्ताह भर जितना समय लग सकता है; किन्तु यदि उसी दूरी को मोटर द्वारा तय किया जाय, तो १०-१२ घण्टे से अधिक का समय नहीं लगेगा । वायुयान से सफर करने में आधे घण्टे का समय पर्याप्त है । इस प्रकार स्पष्ट है कि गति के बढ़ने के साथ-साथ समय सिकुड़ने लगता है । यदि भ्रमण, प्रकाश जितनी गति से कर पाना सम्भव हो, तो समय को और ज्यादा सिकोड़ा जा सकना शक्य है । इसी प्रकार यदि किसी ऐसे सूक्ष्म लोक में हम जा सकें, जहाँ पर काल की गति और भी तीव्र हो, तो समय सिकुड़ कर वहाँ अत्यन्त छोटा हो जाएगा । ऐसे में जो कार्य वहाँ पाँच मिनट में सम्पन्न होगा, उसके पूरा होने में पृथ्वी पर ५ वर्ष जितना लम्बा समय लग सकता है । अलौकिक घटनाक्रमों के मध्य काल के इस प्रकार फैलने और सिकुड़ने की अप्रत्याशित अनुभूति कई बार हो जाती है ।

घटना हाबड़ा (प. बंगाल) के प्रसिद्ध संत शिव रामकिंकर योगत्रयानन्द के जीवन से सम्बद्ध है । बहुत दिनों से उन्हें पाणिनि व्याकरण पर पतंजलिकृत महाभाष्य पढ़ने की तीव्र इच्छा थी, किन्तु बंगाल में उन दिनों इस ग्रन्थ का कोई योग्य विद्वान था नहीं । जो थे, वे बनारस रहते थे । अस्तु बनारस जाकर उन्होंने महाभाष्य पढ़ने का निश्चय किया । तब वहाँ व्याकरण आचार्यों में पंडित गोविन्द शास्त्री का बड़ा नाम था । शिव रामकिंकर ने उन्हीं से शास्त्र अध्ययन करने की सोची और एक दिन इस आशय का निवेदन लेकर उनके समक्ष उपस्थित हुए । उस दिन पंडित जी ने समय नहीं होने का बहाना बनाकर उन्हें लौटा दिया । दूसरे दिन जब आये, तब भी उन्होंने अवकाश नहीं होने की बात कही । तीसरे दिन शिव रामकिंकर पुनः आये, किन्तु आज भी वही पुराना उत्तर मिला, साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि वे कोई अन्य आचार्य तलाशें । उनके पास पहले से ही इतने विद्यार्थी हैं कि किसी दूसरे को अब समय दे पाना बिल्कुल भी सम्भव नहीं । दो टूक उत्तर पाकर शिव रामकिंकर एकदम हताश हो गए । चलते समय उन्होंने पंडित जी के पैर पकड़ लिए और बड़े दीन भाव से किंचित समय निकाल लेने की प्रार्थना की । आचार्य इतने दयालु थे नहीं कि द्रवित हो उठते । क्रुद्ध होकर पैर झटकते हुए उन्होंने वहाँ से चले जाने को कहा और स्वयं कमरे से बाहर निकल गए ।

आचार्य के इस व्यवहार से वे बहुत दुःखी हुए । उसी क्षण उन्होंने संकल्प किया कि ज्ञानार्जन के निमित्त अब वे किसी के पास नहीं जायेंगे । अपमान और उपेक्षा की वेदना इतनी गहरी थी कि वे उस दिन भोजन नहीं कर सके और बिना खाए सो गए, पर नींद भी कहाँ आने वाली थी । बार-बार उनके मन में वही दृश्य उभर उठता और स्वयं को कोसते हुए कहते हैं "कितना आभागा हूँ ! जिज्ञासा होने पर भी ज्ञान-दान करने वाला कोई नहीं" यह सोचते हुए मध्य रात्रि के करीब उनकी आँख लग गई । एक घण्टे पश्चात् नींद अचानक खुली, तो कमरे को दिव्य आलोक से आलोकित पाया । सामने देखा तो एक सौम्य मानव-मूर्ति जर्जर, किन्तु तेजस्वी काया में करुण नेत्रों से उनकी ओर निहार रही है । कुछ क्षण पश्चात् उनकी मधुर वाणी मुखरित हुई—"दुःख मत कर । किसी ने तुम्हें महाभाष्य नहीं पढ़ाया तो क्या हुआ ? मैं पढ़ाऊँगा । मैंने ही उसकी रचना की है । जा ग्रन्थ ले आ ।" यह सुनकर शिव रामकिंकर गद्गद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो उठे । महापुरुष को साष्टांग प्रणाम निवेदित किया और महाभाष्य ले आये । इसके बाद वे दिव्य पुरुष ग्रन्थ पढ़ाने लगे । आरम्भ से लेकर अन्तिम सूत्र की विशद् व्याख्या की । ग्रन्थ जब समाप्त हुआ, तो वे आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गए । चेतना लौटने पर शिव रामकिंकर अपने भाग्य को सराहने लगे । खुशी के मारे उनके नेत्र सजल हो उठे, तभी सामने की दीवार पर टँगी घड़ी पर अकस्मात् दृष्टि गई । ठीक १५ मिनट बीते थे । वे कुछ आश्चर्य में पड़ गए । महाभाष्य की ओर नजरें गईं, तो वह इतना मोटा था कि पन्द्रह मिनट तो क्या, पन्द्रह घण्टे में भी उसे पूरी तरह पढ़ और हृदयंगम कर पाना कठिन था । परीक्षा के लिए उन्होंने उसे उलटना-पलटना आरम्भ किया तो यह जानकर घोर अचम्भा हुआ कि सारे सूत्र उनके पढ़े हुए हैं । जिस भी सूत्र पर निगाहें जमतीं, उसी की व्याख्या मस्तिष्क में घुमड़ने लगती । इससे उन्हें यह निश्चय हो गया कि उन देवपुरुष ने आद्योपान्त ग्रन्थ पढ़ाया है, पर इतने कम समय में अध्यापन कैसे सम्भव हो सका ? इस उलझन को वे किसी भी प्रकार नहीं सुलझा सके ।

वस्तुतः उपर्युक्त घटना त्रिआयामी विश्व से परे एक ऐसे सूक्ष्म संसार की है जहाँ का टाइम-स्केल स्थूल जगत से भिन्न है । वहाँ कार्य-सम्पादन की गति इतनी तीव्र होती है कि समय सिकुड़ने लगता है, जबकि प्रत्यक्ष जगत में यह गति इतनी मन्द है कि समय फैलता प्रतीत होता है । यही कारण है कि समय के दूसरे आयाम में जो कार्य पार्थिव घड़ी के हिसाब से १५ मिनट में सम्पन्न प्रतीत होता है, उसी को स्थूल विश्व में सम्पादित करने पर १५ दिन जितना लम्बा अन्तराल लग जाता है । ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि दोनों प्रकार के लोकों में समय और क्रिया के बीच की गति में अन्तर है । इहलोक में समय का वेग भीषण है, जबकि अदृश्य लोकों में उसकी रफ्तार क्रिया के आगे धीमी पड़ने लगती है । यदि किसी प्रकार क्रिया का वेग बढ़ाकर समय के बराबर कर दिया जाय, तो एक ऐसी भी अवस्था आयेगी, जहाँ समय में ठहराव का आभास मिलेगा, अर्थात् समय का बोध समाप्त हो जायेगा । विज्ञावेत्ताओं के अनुसार यह स्थिति ब्लैक होल में उत्पन्न होती है, किन्तु आत्मवेत्ता इसे अन्तर्जगत की सर्वोपरि उपलब्धि के रूप में स्वीकारते हैं । उनका मानना है कि इस दिव्य उपलब्धि का क्षण ऐसा होता है, जिसमें समय के अभाव का अनुभव होता है । ऐसा लगता है, जैसे काल में पंख लग गए हैं वह उड़ गया । यही वह अवस्था है, जिसे आध्यात्म विज्ञान में ब्रह्मानन्द-दिव्यानन्द की समय-शून्य अवस्था कहकर अभिहित किया गया है ।

प्रभु ईशु से एक बार एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया कि आप जिस अलौकिक राज्य की चर्चा करते हैं, वहाँ विशेष बात क्या होगी ? उन्होंने उत्तर दिया—"वहाँ 'समय' नहीं होगा । यही उसकी सबसे बड़ी विशिष्टता होगी ।"

सचमुच महावीर से लेकर मुहम्मद साहब तक सब इस एक तथ्य को अंगीकार करते हैं कि ईश्वर प्राप्ति के क्षण समय का अस्तित्व नहीं रहता । सभी इस बात पर सहमत हैं कि वह जो पल है, वह वास्तव में "टाइमलेस मोमेण्ट—कालातीत अवस्था" है । इस अवस्था में योगियों का प्राण कम्पन और काल की गति एकदम बराबर होती है । इसके उपरान्त यदि प्राण-वेग को और बढ़ा दिया जाय, तो फिर काल के विगत और अनागत वाले हिस्से में प्रवेश कर सकना सम्भव है । यती लोग इसी प्रक्रिया द्वारा भूत और भविष्य के अन्तराल में उतरते और अविज्ञात का ज्ञान प्राप्त करते हैं । परिष्कृत अभ्यस्त चेतना द्वारा ही यह सब सम्भव है । जिनकी देह-चेतना अनभ्यस्त और अनाड़ी स्तर की है, उनके लिए यह कार्य आकाश कुसुम खिलाने जैसा है । वहाँ चेतना के काल-गह्वर में उतर पाना तो क्या, शरीर से बाहर निकलना भी अशक्य जैसा बना रहता है, किन्तु जो ऐसा कर पाते हैं और जिन्होंने इतनी सामर्थ्य अर्जित कर ली है कि काया से बाहर आ सकें, वे इसे स्पष्ट अनुभव करते हैं कि किस प्रकार इस अवस्था में समय सम्बन्धी अवरोध बिल्कुल समाप्त हो जाता है । यदि इस स्थिति में वर्षों रह कर फिर शरीर में प्रवेश किया जाय, तो प्रवेशार्थी को ऐसा आभास होगा, मानो अभी कुछ ही क्षण बीते हैं । कारण यह है कि प्रत्यक्ष विश्व से परोक्ष विश्व का टाइम-स्केल भिन्न है । जैसे-जैसे अधिकाधिक सूक्ष्म की गहराई में उतरते जायेंगे वैसे-ही-वैसे टाइम-स्केल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धी पृथकता बढ़ती जायेगी और अवधि उत्तरोत्तर और सिकुड़ती चली जायेगी ।

सामान्यतः मनुष्य का क्रिया व्यापार जागृत अवस्था में सम्पन्न होता है । इस अवस्था का जो समय है, वह मानव द्वारा निर्मित है । यह वह काल नहीं, जिसे भगवान ने 'अक्षय काल' कहा है । इसलिए पृथ्वी का समय बीतता रहता है । सूर्योदय हुआ, सुबह हो गई, दिन का प्रारम्भ हुआ । शाम हुई, अँधेरा घिरा, रात आ गई । दिन समाप्त हुआ । इस प्रकार २४ घण्टे बीत गए । काल सम्बन्धी यह विभाजन पृथ्वी और सूर्य पर आधारित है तथा आदमी द्वारा बनाया गया है । पृथ्वी को चौबीस भागों में विभक्त कर दिन-रात को उतने ही घण्टों में बाँट दिया गया । घण्टे साठ मिनटों में और हर मिनट को पुनः साठ सेकण्डों में विभाजित किया गया है । यह हमारी अपनी व्यवस्था है, प्रकृति की नहीं । निसर्ग में तो वह अविभाज्य है । जागृत में, सामान्य चेतना की दशा में हम इसी काल विभाजन से अपना काम चलाते हैं । इससे जब कुछ गहराई में उतरते हैं, तो यह विभाजन स्वतः ही समाप्त हो जाता है, किन्तु फिर भी भिन्न-भिन्न चेतना स्तर अपनी सूक्ष्मता के आधार पर टाइम-स्केल की पृथकता बनाये रखते हैं । स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय यह चेतना की शेष तीन अवस्थाएँ हैं । काल-विज्ञान के अनुसार चेतना की सबसे मन्दगति जागृत अवस्था में है, इसी कारण समय उसमें असाधारण रूप से बड़ा प्रतीत होता है । तुरीय अर्थात् समाधि की स्थिति में उसकी गति सर्वाधिक होती है, इसलिए उस दशा में समय का बन्धन समाप्त हो जाता है । तुरीयावस्था प्राप्त एक योगी जितनी अवधि में पृथ्वी की परिक्रमा कर लेता है, यदि वही प्रदक्षिणा जागृत अवस्था में की जाय तो शायद पूरा जीवन बीत जायेगा । स्वप्न, चेतना की दृष्टि से जागृत से कुछ उच्चावस्था है, अतएव समय का वेग थोड़ा मन्द पड़ जाता है । सपनों की अवधि मुश्किल से पाँच-सात मिनट की होती है, किन्तु जब आँख खुलती और दृष्टि घड़ी पर जाती है, तो आश्चर्य होता है कि इतने स्वल्प काल में स्वप्न द्रष्टा ने जीवन के विशाल भाग का सफर तय कर लिया । उसका विवाह हो गया, नौकरी लग गई, बच्चे हो गए और अब उनकी शादियाँ हो रही हैं । घड़ी इस सम्पूर्ण अवधि को मात्र पाँच मिनट बता रही है, जबकि व्यावहारिक जीवन में इस यात्रा में तीन चौथाई भाग खप जाता । यह कैसे हुआ ? हमारी अपनी गति के कारण । उसमें चेतना-कणों का वेग बढ़ गया और उस प्रतिस्पर्धा में समय पिछड़ गया, हम आगे निकल गए, जिससे युगों का कार्य पलों में पूरा होता दिखाई पड़ता है । सुषुप्ति की रफ्तार उससे भी तीव्र है और सर्वाधिक है तुरीयावस्था की, जिसमें फिर समय आड़े नहीं आता । किसी संकटग्रस्त शिष्य ने पृथ्वी के सुदूर कोने में गुरु का स्मरण किया और पलक झपकते ही उसे सहायता मिल जाती है, न तो समय सम्बन्धी रुकावट सामने आती है, न विशाल भौगोलिक दूरी । कारण एक ही है, वेग का अत्यधिक बढ़ जाना ।

टेलीपैथी, क्लेयरवायन्स आदि भी चेतना की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ हैं, जिनमें समयान्तराल सिमट कर छोटा हो जाता है । गुरु, दुर्गम, हिमालय में साधनारत है और शिष्य पृथ्वी के दूसरे छोर-अमेरिका में रह रहा है । दोनों के मध्य कोई भौतिक संचार माध्यम उपलब्ध नहीं, किन्तु फिर भी शिष्य का मार्गदर्शन होता रहता है । यह सब घड़ी भर में घटित हो जाता है । यदि उसी घटना को जिसे उसने अनुभूति स्तर पर आत्मसात् किया है, लिखें तो कदाचित् घण्टे भर का भी समय लग सकता है, किन्तु टेलीपैथी क्रम में उतना बड़ा प्रसंग क्षणमात्र में घट जाता है । कारण कि घटनाक्रम को सुस्त बनाने वाले भौतिक व्यवधान वहाँ नहीं रहे ।

महाभारत के दौरान भगवान द्वारा गीता उपदेश भी वस्तुतः ऐसी ही एक प्रक्रिया थी, जिसमें कृष्ण और अर्जुन के मध्य मौन सम्वाद हुआ था । दोनों ओर की सेनाएँ जब युद्ध के लिए आमादा हों, तो भला इस स्थिति में इतनी फुर्सत कहाँ कि कोई जीवन सम्बन्धी गम्भीर दर्शन की शिक्षा दे ! यदि दे भी तो अर्जुन स्तर का कोई योद्धा, जिस पर युद्ध का बहुत कुछ परिणाम निर्भर है, समयक्षेप कर पराजय को आमन्त्रण क्यों कर देगा ? नहीं, भगवान द्वारा ऐसा अविवेकपूर्ण कार्य नहीं हो सकता । जो हो सकता है, वह एकमात्र अन्तर्संवाद ही है, जिसमें शब्दों का वैखरी प्रयोग न होकर 'परा' वाणी प्रयुक्त हुई हो । यह टेलीपैथी है । समरभूमि में यही सम्भाव्य हो सकती है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यावहारिक भी इसमें समय कितना लगा होगा, कहना कठिन है, पर यह निश्चित है कि इस भूमिका में काल का कोई मूल्य और महत्त्व रह नहीं जाता, बिल्कुल गौण हो जाता है । यही चेतना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है ।

एक बार परमहंस विशुद्धानन्द के पास एक श्रद्धालु भक्त आया और अपनी टूटी हुई रुद्राक्ष की माला देकर उसे शास्त्रोक्त ढंग से बना देने का आग्रह किया । परमहंस ने माला अपनी मुट्ठी में बन्द कर ली और हाथ को हवा में दो-चार बार लहराया । इसके बाद उसे शिष्य की ओर बढ़ाते हुए कहा, "यह लो तैयार हो गई ।" माला सचमुच बहुत अच्छे ढंग से गुँथी हुई थी । इतनी जल्दी यह कैसे तैयार हो गई ? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने इतना ही कहा कि गुह्य विषय को सामान्य बुद्धि समझ सकती, फिर भी इतना जान लो कि यह "क्षण-विज्ञान" के प्रयोग के द्वारा विनिर्मित की गई, जिसमें पृथ्वी का एक पल एक वर्ष जीतना खिंच कर लम्बा हो जाता है ।

समय को घटा-बढ़ा सकना साधारण स्थिति और अवस्था में भी सम्भव है । एक महामानव, जो काल के हर कण का सुनियोजित ढंग से उपयोग करता है, समय को इतना लघु बना लेता है कि कब वह जवान से बूढ़ा हो गया, पता ही नहीं चलता । इस मध्यान्तर में उसने इतने ढेरों कार्य कर लिए, इसकी प्रतीति तक नहीं होती । जब होती है, तो यह जान कर अचम्भा होता है कि इतनी स्वल्प अवधि में कई जन्मों जितने कार्य किस प्रकार बन पड़े । दूसरी ओर वे लोग हैं, जिनके सामने यह पहाड़ की तरह अड़ जाता है, वह काटे नहीं कटता, न बिताये बीतता है । वस्तुतः समय न तो किसी के लिए घटता है, बढ़ता है, न फैलता, न सिकुड़ता है । यह दो भिन्न जीवनशैलियों के दो भिन्न परिणाम हैं । समय सबको बराबर मिला हुआ है । एक इसी अन्तराल में आश्चर्यजनक ढंग से असंख्यों पराक्रम कर दिखाता और महापुरुषों की पंक्ति में आ खड़ा होता है, जबकि दूसरे के लिए पुरुषार्थ तो क्या, जीवन-यात्रा करना भी भारी पड़ने लगता है । एक स्थिति में पलों का अभाव अनुभव होता है, तो दूसरी में वह इतना विशाल कि अनावश्यक मालूम पड़ता है, जबकि दोनों के लिए काल-विस्तार एक जितना है, फिर यह पृथक परिणतियाँ क्यों ? इसे समझने के लिए काल और उसकी शक्ति को भली-भाँति जानना होगा, तभी ऐसा कुछ कर पाना शक्य है, जो जीवन में अभिवन्दनीय बनकर प्रस्तुत हो सके ।

काल की शक्ति अप्रतिम स्तर की है । हम महाकाली की उपासना भी करते हैं, फिर भी उसके अधिष्ठाता महाकाल और तत्वदर्शन से अनभिज्ञ बने हुए हैं । जिस दिन हम सब 'काल' अर्थात् समय को पहचान कर जीवन में उसका समुचित उपयोग कर सकेंगे, समझना चाहिए महाकाल और महाकाली की यथार्थ अभ्यर्थना हमारी उसी दिन से प्रारम्भ हुई ।

भविष्यवक्ता बन सकना हर किसी के लिए सम्भव है

भविष्य को जानने की सामर्थ्य मनुष्य में विद्यमान है । यदि अचेतन से उठती स्फुरणाओं को गम्भीरतापूर्वक जाना समझा जा सके तो न केवल यह ज्ञात हो सकता है कि भविष्य की हाँड़ी में क्या पक रहा है वरन् उसके अशुभ पक्ष से बचा और सुखद सम्भावनाओं से लाभान्वित हुआ जा सकता है ।

मार्गन राबर्टसन उनमें से एक हैं, जिन्होंने सन् १८९८ में "रेक ऑफ द टाइटन ऑर फ्यूटीलिटी" नामक एक उपन्यास लिखा था । इसमें अटलांटिक महासागर की यात्रा कर रहे 'टाइटन' नामक एक विशाल जलयान के समुद्र में डूब जाने और सैकड़ों लोगों के जल समाधि लेने का वर्णन था । १४ वर्ष बाद १६ अप्रैल, १९१२ को मार्गन का काल्पनिक उपन्यास जीवन्त हो उठा जब सचमुच टाइटेनिक नामक जहाज एक हिमखण्ड से टकराकर ध्वस्त हो गया । इसमें सवार चौदह सौ से भी अधिक लोग जलमग्न हो गए । १८९८ में लिखित उपन्यास के वर्णन में और उस दुर्घटनाग्रस्त जलयान के दृश्य में इतना अधिक साम्य था कि न केवल उसका नाम और उसमें सवार यात्रियों की संख्या, लाइफ बोटों की संख्या वही थी वरन् यान का वजन, उसकी लम्बाई, गति और डूबने के समय में भी अद्भुत समानता थी । मार्टिन ऐबन के अनुसार लगता था राबर्टसन ने १४ वर्ष पूर्व ही भविष्य का सारा चित्र खींचकर रख दिया था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमेरिका के एक वरिष्ठ पत्रकार यूजीन पी. लाइल जूनियर ने द्वितीय विश्व युद्ध का सारा खाका सन् १९१८ में ही खींचकर रख दिया था । "एवरीबडीज मैगजीन" नामक पत्रिका के सितम्बर १९१८ के अंक में "द वार ऑफ १९३८" शीर्षक से उसे प्रकाशित भी कराया था । उसमें कहा गया था कि यदि जर्मनी को पूरी तरह नष्ट न किया गया तो वह पुनः उठ खड़ा होगा जिसका संचालन एक तानाशाह करेगा और देखते ही देखते सारे विश्व को महामारी की तरह अपनी लपेट में ले लेगा । लेख पढ़ने वालों में से विश्वास किसी को भी नहीं हुआ क्योंकि उस समय जर्मनी बुरी तरह परास्त हो चुका था और शान्ति समझौते की शर्तों पर हस्ताक्षर कर चुका था ।

परन्तु बीस वर्ष बाद उसमें वर्णित सभी घटनाक्रम ज्यों के त्यों घटित होते चले गए । सन् १९२० के बाद से ही जर्मनी ने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ानी आरम्भ कर दी थी । हिटलर की पचास हजार से अधिक नाजी सेना सुसज्जित तैयार थी । सन् १९३९ के पश्चात् जो घटित हुआ वह युजीन लाइल की भविष्यवाणी में वर्णित था । विद्वानों का कहना है कि उनके इस भविष्य कथन पर यदि ध्यान दिया और उसे गम्भीरता से लिया गया होता तो सम्भवतः द्वितीय विश्व युद्ध न होता तथा आज विश्व का स्वरूप भी कुछ और ही होता ।

इस सन्दर्भ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मूर्धन्य भौतिकविद् एड्रियन डाब्स का कहना है कि भविष्य में घटने वाली इस तरह की हलचलें मनुष्य के वर्तमान में एक प्रकार की सूक्ष्म तरंगें उत्पन्न करती हैं जिन्हें "साइट्रोनिक वेव फ्रण्ट" कहा जा सकता है । मानवी मस्तिष्क प्रायः स्वप्न अवस्था या ध्यान की 'अल्फा स्टेट' में इन स्फुरणाओं या तरंगों को पकड़ लेता है । अतः मनः मस्तिष्क को सचेतन बनाये रखकर सम्भावित घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकना हर किसी के लिए सम्भव है । सुप्रसिद्ध मनीषी विल्हेम वान लिबनीज इस सन्दर्भ में अन्तः प्रज्ञा के जागरण पर बल देते हैं और कहते हैं कि प्राचीन काल के ऋषि मनीषी इसी क्षमता को जागृत कर भविष्य की झाँकी कर लेते थे और उसी आधार पर वर्तमान ढाँचे को बदलने, परिष्कृत, परमार्जित करने का उपाय सुझाते थे ।

"सुपरनेचर" नामक अपनी कृति में ख्यातिलब्ध विद्वान लायल वाटसन ने कहा है कि कितने ही व्यक्तियों को भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास अन्तः स्फुरणा के आधार पर चेतन या अचेतन अवस्था या स्वप्नावस्था में हो जाता है । इसे ही विज्ञान की भाषा में 'प्रीकाग्नीशन' अर्थात् पूर्वानुमान कहते हैं, जिसका अर्थ है जो कुछ घटित होने वाला है उसकी पहले से जानकारी हो जाना । यह वह ज्ञान है जो मनुष्य को भविष्य की विवेक सम्मत तैयारी करने और अशुभ पक्ष में बचने की दिशा देता है । वस्तुतः यह क्षमता स्रष्टा ने हर किसी को प्रदान की है कि वह अपनी अन्तःप्रज्ञा को जागृत कर दिक्काल की सीमा को लांघकर भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के गर्भ में झाँक सके और उसकी परिणति को जानकर उसमें वांछित परिवर्तन के लिए कटिबद्ध हो सके । कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो शत-प्रतिशत भविष्य कथन की क्षमता बिना किसी साधना पुरुषार्थ के भी रखते हैं । वह या तो दैवी अन्तः स्फुरणा के आधार पर, स्वप्नों के माध्यम से अथवा व्यष्टि चेतना के समष्टि चेतना के सीधे सम्पर्क में होने के आधार पर ऐसा करते हैं । किन्हीं-किन्हीं में यह सामर्थ्य पूर्व जन्मों के आधार पर अर्जित सम्पदा के रूप में भी प्रस्फुटित हो जाती है, पर यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि अभ्यास करने पर हर कोई इस क्षमता को जागृत और विकसित कर सकता है और एक अच्छा भविष्यवक्ता बन सकता है ।

किसी युग में भले ही यह कहा जा सकता था कि इस प्रकार की घटनाएँ मात्र संयोग के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, परन्तु अब वैज्ञानिक और डॉक्टर भी यह मानते हैं कि शरीर में इन्द्रियों की चेतना का भी अस्थायी महत्त्व है । स्थायी रूप से दर्शन, श्रवण, घ्राण उत्प्रेरण और सम्वेदन को सभी क्षमताएँ मस्तिष्क में विद्यमान हैं । थैलामस नामक पिण्डली (गैलियन) भीतरी मस्तिष्क में होती है, जो सिर के केन्द्र में अवस्थित है । यही केन्द्र सभी तन्मात्राओं के ठहरने का स्थान (स्टेशन) है । यही सी पीनियल ग्रन्थ (ग्लैण्ड्स) निकलती है जो देखने का काम करती है । "पीनियल ग्लैण्ड" को तीसरा नेत्र भी कहते हैं । पिट्यूटरी ग्लैण्ड्स और सुषुम्ना शीर्ष (मेडुला ऑब्लांगेटा) जो शरीर के सम्पूर्ण अययवों का नियन्त्रण करती है, वे सब भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन से सम्बन्धित हैं । मस्तिष्क का यदि वह केन्द्र काट दिया जाय तो शरीर के अन्य सब संस्थान बेकार हो जायेंगे ।

विज्ञान और शरीर रचना शास्त्र (एनोटॉमी) की इन आधुनिक जानकारियों का भण्डार यद्यपि बहुत समृद्ध हो चुका है किन्तु योग और भारतीय तत्व-दर्शन की तुलना में यह जानकारियाँ समुद्र में एक बूँद की तरह हैं । भारतीय तत्ववेत्ताओं ने मन को सर्वशक्ति मय इन्द्रियातीत ज्ञान का आधार माना है । उसकी शक्तियों को ही ब्रह्म में लीन कर देने से हाड़-माँस का मनुष्य सर्वजयी और कालदर्शी हो जाता है । महर्षि पातंजलि ने इस तत्वदर्शन का साधन स्वरूप बताते हुए कहा है—

परिणाम त्रय संयमाद तीतानागत ज्ञानस् ।

—योगदर्शन, विभूतिपरिषद

तीनों परिणामों में (चित्त का) संयम करने से भूत और भविष्य का ज्ञान होता है ।

योग वशिष्ठ में बताया गया है—

मनो हि जगतां कतृ मनो हि पुरुषः स्मृतः ।

—३/६१/४

अर्थात्—संसार को रचने वाला पुरुष भी स्वयं मन ही है, मन में सब प्रकार की शक्तियाँ हैं । हमारे मन में चूँकि ईश्वरीय शक्ति का बढ़ा-चढ़ा रूप है, इसलिए इन बातों पर यकायक विश्वास नहीं होता । मन की शक्तियों से सम्बन्ध न होने के कारण यह बातें भ्रम लगती हैं कि प्रत्येक मनुष्य के मन में सब कुछ जान लेने, दूसरों के अन्तरंग को पढ़ लेने और जो अभी अनागत है, उसे किस प्रकार जाना जा सकता है स्वाभाविक भी है । यह शंका उठना कि जो अभी घटा ही नहीं है उसे किस प्रकार जाना जा सकता है ?

उपर्युक्त घटना के सन्दर्भ में, उपन्यास और जहाज दुर्घटना की सभी बातें समान रूप से घटित होने के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले कुछ और विवरणों को जान लेना उचित होगा । उपन्यास में वर्णित घटनाक्रम तो १४ वर्ष पूर्व का था, परन्तु उसी समय जब 'टाइटैनिक जहाज'' का जलावतरण होने वाला था कुछ और लोगों को भी इसी प्रकार का आभास हुआ । एक अंग्रेज व्यापारी जे. कैनन मिडिलटन ने २३ मार्च १९१२ को टाइटैनिक से यात्रा करने के लिए टिकट खरीदा । लेकिन यात्रा में दस दिन पूर्व ही कैनन ने एक स्वप्न देखा । स्वप्न में उसे एक बड़ा जहाज समुद्र में उल्टा तैरता दिखाई दिया । उसकी तली टूटी हुई दिखाई दे रही थी और बहुत से यात्री चीखते-चिल्लाते पानी में हाथ-पैर मार रहे थे ।

स्वप्न इतना भयावह था कि घबराकर कैनन की आँख खुल गई । उसने सोचा ऐसे ही कोई स्वप्न होगा और वह उस बात को भूल गया। अगली रात जब वह फिर सोने लगा तो सोते ही फिर वही स्वप्न देखने लगा । इस बार उसने अपने आपको जहाज के ऊपर हवा में तैरते हुए देखा । दो दिन तक लगातार यही स्वप्न देखने के कारण कैनन इतना सन्देहग्रस्त हो गया कि उसने अपनी यात्रा ही स्थगित कर दी । दुर्घटना के बाद उसने लन्दन की 'सोसाइटी फार साइकोलॉजिकल रिसर्च, को पत्र लिखकर अपने स्वप्न की जानकारी दी । यह विवरण सोसाइटी की पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ था ।

बैरी ग्राण्ट ने एक-दूसरे ही प्रकार का विवरण "फार मेमोरी" नामक पुस्तक में लिखा है जो सन् १९५६ में न्यूयार्क से प्रकाशित हुई थी । बैरी ग्राण्ट ने लिखा है कि जिस दिन टाइटैनिक जहाज अपनी पहली यात्रा का आरम्भ कर रहा था । जहाज का भौंपू बज चुका था और इन्जिन भी स्टार्ट हो चुका था, तब उसके पिता जेक मार्शल और उसकी माँ आइल ऑफ ह्वाइट दूसरी ओर मकान की छत पर जहाज को रवाना होते देख रहे थे । एकाएक न जाने क्या हुआ कि श्रीमती मार्शल अपने पति की बाँह पकड़ कर जोर से चीखी "अरे·····रे ! वह जहाज तो अमेरिका पहुँचने से पहले ही डूब जायेगा । कुछ करो, रोको उसे ।"

जैक मार्शल ने अपनी पत्नी को सहलाया और कहा, 'चिन्ता मत करो टाइटैनिक कभी भी डूब नहीं सकता ।' लेकिन श्रीमती मार्शल अपने पति को इस प्रकार कहते देखकर गुस्सा हो गई और कहने लगी, 'तुम कैसी बातें कर रहे हो । मैं सैकड़ों लोगों को अपनी आँखों से पानी में डूबते हुए देख रही हूँ । क्या तुम उन्हें मरने दोगे ।'

इस प्रकार के अनुभव और भी कितने ही व्यक्तियों को हुए तो क्या उन सबके आभासों और टाइटैनिक जहाज की समाधि को मात्र संयोग ही कहा जाय । कहना कठिन है । सामान्य मस्तिष्क की शक्ति इन्द्रिय गम्य जानकारियों तक ही सीमित है । शरीर विज्ञानियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा अब तक कहा जाता है, किन्तु अब न्यूरोलॉजी, पैरासाइकोलॉजी, मेटाफिजिक्स आदि विज्ञान के जानकार यह स्वीकार करने लगे हैं कि मानवी मन, विराट विश्व मन का ही एक अंश है और जो कुछ निकट भविष्य में होने जा रहा है उसकी सम्वेदनायें मानवी मन को भी मिल सकती हैं ।

स्थूल जानकारियाँ संग्रहीत करने वाले चेतन मस्तिष्क और स्वसंचालित नाड़ी संस्थान को प्रभावित करने वाले अचेतन मस्तिष्क का ही ज्ञान अभी विज्ञान क्षेत्र की परिधि में आया है, पर अब अतीन्द्रिय मस्तिष्क के अस्तित्व को भी स्वीकारा जा रहा है, क्योंकि ऐसी अनेकानेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं । जिनसे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास मिलने और उनके अक्षरशः सही उतरने के प्रमाण मिलते हैं ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार गेटे ने लिखा है कि एक बार वह अपने निवास स्थान वाइक्नर में था तो अचानक उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा कि वहाँ से हजारों मील दूर सिसली में एक भयंकर भूकम्प आया है । यह बात उसने अपने मित्रों को बताई पर किसी को विश्वास न हुआ कि बिना किसी आधार के इतनी दूर की बात कैसे मालूम हो सकती है, पर कुछ ही महीनों बाद सिसली में भयंकर भूकम्प आया । जैसा कि गेटे ने अपने मित्र को बताया था ।

प्रसिद्ध लेखक जानेथन स्विपट ने अपनी पुस्तक 'गुलिवर की यात्राएँ' में लिखा था कि 'मंगल ग्रह के चारों ओर दो चन्द्रमा परिक्रमा करते हैं । इसमें एक की चाल दूसरे से दुगनी है ।' उस समय यह बात निरी कल्पना के सिवा कुछ नहीं लगती थी, क्योंकि तब इस बात का किसी को तनिक भी आभास नहीं था कि मंगल के इर्द-गिर्द चन्द्रमा भी हो सकता है । पीछे डेढ़ सौ वर्ष बाद सन् १८७७ में वाशिंगटन की नेबल आबेजरवेटरी में एक शक्तिशाली दूरबीन के सहारे यह देख लिया गया कि वास्तव में मंगल ग्रह के दो चन्द्रमा हैं और एक की चाल दूसरे से दूनी है तो लोग आश्चर्यजनक रह गए कि उस साधनहीन जमाने में जब इस तरह की कल्पना कर सकना भी सम्भव नहीं था, तब किस प्रकार स्विफ्ट ने मंगल ग्रह की स्थिति बताई ।

विज्ञान कथा लेखिका मेरिनिवेन ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास "ए होल इन दे स्पेस" में एक ऐसे तारे की कल्पना की थी जो सूर्य से आकार में दस गुना था और अरबों वर्ष बाद एक काला पिण्ड भर रह गया । यही नहीं वह सिकुड़ कर साठ किलोमीटर अर्द्धव्यास का रह गया किन्तु उसका भार अभी भी सूर्य से दस गुना अधिक है ।

उस समय जब यह उपन्यास लिखा गया तब वैज्ञानिकों का इस ओर ध्यान भी नहीं गया था । सन् १९७२ में 'साइगनस-एक्स वन' नामक एक ब्लैक होल के अस्तित्व का पता चला जिसका अर्धव्यास साठ किलोमीटर है और वजन सूर्य से दस गुना अधिक । पृथ्वी से उसकी दूरी, घनत्व, गुत्वाकर्षण वहाँ की गतीय सम्भावना, आकर्षण शक्ति आदि कुछ उपन्यास में वर्णित विशेषताओं से मेल खाती थी ।

क्या इन सब घटनाओं से मात्र संयोग कहकर छुटकारा पा लिया जाय । विज्ञान के लिए इतने प्रबल प्रमाण होने के बाद उनकी उपेक्षा कर पाना सम्भव नहीं है । भारतीय तत्वदर्शन तो पहले ही मानता है, अतीन्द्रिय चेतना मानवी सत्ता के अस्तित्व में विद्यमान है । योगी सिद्ध पुरुष जिस शक्ति को अपनी तप, साधना के माध्यम से विकसित करते हैं वह कई बार बिजली की चमक के समान अनायास ही सामने आ प्रस्तुत होती है । इस सत्ता का विकास करके मनुष्य सीमित परिधि के बन्धन काट कर असीम के साथ अपने सम्बन्ध मिला सकता है और अपनी ज्ञान परिधि को उतना ही विस्तृत कर सकता है ।

मानवी अन्तराल में सन्निहित दिव्य विभूतियाँ

पदार्थों की तरह मनुष्य में भी चुम्बकत्व होता है वह वस्तुओं को अपनी ओर खींचता भी है और फेंकता भी । आग जहाँ भी जलती है गर्मी बिखेरती है । ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी अपनी क्षमताओं और विशेषताओं से सम्पर्क क्षेत्र के पदार्थों और प्राणियों को प्रभावित करता है । सुसंस्कारी अपने स्नेह सम्बन्धियों और परिचितों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रगति, प्रसन्नता का लाभ अनायास ही देता रहता है । उसके उपयोग में आने वाले वस्त्र, उपकरण भी स्वच्छ और सुव्यवस्थित रहते हैं । इसके विपरीत कुसंस्कारी व्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न केवल सम्बन्धित व्यक्तियों को रुष्ट किए रहते हैं वरन् उन्हें तरह-तरह की हानि भी पहुँचाते रहते हैं । वस्तुएँ तो उनकी बर्बाद होतीं और कुरूप दीखती ही रहती है । सामान्य जीवन में यह सामान्य चुम्बकत्व का प्रभाव है जिसे हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से अपने-अपने क्षेत्र में प्रकट करता रहता है ।

विशेष चुम्बकत्व वह है जिसे महामानव स्तर के व्यक्ति अपनी प्रतिभा के रूप में प्रकट करते रहते हैं । व्यक्तियों एवं समुदायों को प्रेरणा देते और सुधारते हैं । ऐसों की प्राण ऊर्जा वातावरण बदलने में समर्थ होती है । युग पुरुषों में पायी जाने वाली अनेकों विशेषताओं में से वह भी एक जिसे स्व-उपार्जित भी कहा जा सकता है और ईश्वर प्रदत्त भी ।

यह चुम्बकत्व प्रयोग करने या न करने पर घटता-बढ़ता भी रहता है । योगाभ्यास के क्षेत्र में इस स्तर की जागृति एवं उपलब्धि को अतीन्द्रिय क्षमता कहा जाता है । विज्ञजनों ने पाया है कि मनुष्य उतना ही सीमित नहीं है जितना कि दैनिक व्यवहार में दृष्टिगोचर होता है उसमें अगणित विशेषताएँ बीज रूप से विद्यमान हैं । प्रश्न एक ही है कि उन्हें जागृत समुन्नत एवं प्रयुक्त कैसे किया जाय ।

कई बार यह विशेषताएँ पूर्व संचित भण्डार की तरह तनिक-सा कुरेदने पर उछलकर ऊपर आती और बिना प्रयास के ही प्रकट होती देखी गई हैं । कई बार उन्हें योगाभ्यास, तप साधन जैसे प्रयत्नों द्वारा समुन्नत बनाया जाता है । जो हो, यह तथ्य अब सर्वमान्य बनता जा रहा है कि मनुष्य क्षमताओं का ही नहीं दिव्य विभूतियों का भी भण्डार है । उसके गहन कलेवर में ऋद्धि-सिद्धियों के मणि मुक्तकों की खदानें भरी पड़ी हैं । आवश्यकता इतनी भर है कि उन्हें खोजा, समेटा और खरादा जाय । प्रयास यदि इस दिशा में चल पड़े तो सामान्य मनुष्य आन्तरिक क्षेत्र के विकास में अग्रगामी हो सकता है और इतना कुछ प्राप्त कर सकता जिसके सहारे सिद्ध पुरुष या ऋषि-कल्प बनने जैसी स्थिति हस्तगत हो सके । अतीन्द्रिय क्षमताओं का प्रसंग अब कौतुक कौतूहल का विषय नहीं रहा वरन् उसे विज्ञान की एक सुनिश्चित शाखा के रूप में मान्यता मिल गई है ।

सर विलियम क्रूक्स नामक एक अंग्रेज ने मनःसम्प्रेषण नाम से जानी जाने वाली एक शक्ति को यथार्थता मानते हुए उस पर आज की और उनके "रिसर्चेस इन दी फिनोमिना ऑफ स्प्रिचुएलिज्म" नामक एक पुस्तक में प्रकाशित भी किया ।

पहले प्रयोग में कोई वस्तु को अपने स्थान से केवल छूकर हटाने की बात कही गई । जबकि दूसरे प्रयोग में अनेक प्रकार की ध्वनि तरंगों का प्रदर्शन किया गया जो कि किसी मानव द्वारा उत्पन्न नहीं की गई थी । इसमें साधारण टिक-टिक की आवाज से लेकर विस्फोट की आवाज तक कई प्रकार की आवाज पैदा की गई । तीसरे प्रयोग द्वारा किसी भी वस्तु का भार कम और ज्यादा करके दिखाया गया ।

चौथे प्रयोग में भारी वस्तुओं को इधर-उधर हटाना प्रमुख था । इसमें क्रूक्स की कुर्सी को जिस पर कि वह स्वयं बैठे थे और उनके पैर जमीन से ऊपर थे, उस कमरे में चारों ओर बिना किसी मदद के घुमाया गया और उसने कई मित्रों के सामने एक छोटी टेबिल को जिसके कि पास कोई नहीं था, कमरे में इस ओर से उस ओर तक घुमाया । पाँचवें प्रयोग में बिना किसी मानव की मदद के कमरे में फर्नीचर को भूमि से ऊपर हवा में इधर उधर घुमाकर (उड़ाकर) दिखाया गया । अन्तिम एवं सफलतम छठे प्रयोग में मनुष्य को ही हवा में उड़ाकर दिखाया गया ।

क्रूक्स ने लिखा है कि एक बार मैंने स्वयं देखा कि एक कुर्सी को जिस पर एक महिला बैठी थी, कई इन्च भूमि की सतह से मनःशक्ति की सामर्थ्य से ऊपर उठा दिया गया । लोगों की शंका को दूर करने की दृष्टि से दूसरी बार उस महिला को कुर्सी पर इस प्रकार बिठाया कि जिससे उसके पैर ऊपर रहें और कुर्सी के चारों पैर सबको स्पष्ट दिखाई दें । इस स्थिति में उस महिला समेत उस कुर्सी को लगभग ३ इन्च भूमि से ऊपर उठाया और थोड़ी देर बाद धीरे से फिर भूमि पर नीचे उतार दिया ।

क्रूक्स ने लिखा है कि अतीन्द्रिय मानसिक क्षमताओं के कारनामों की यह अन्तिम कड़ी नहीं है, किन्तु यह शृंखला और भी बढ़ी है जिन्हें मनःसम्प्रेषण के नाम से जानते हैं । इसमें अपने आप लिखने की एक क्रिया भी है जिसमें कोई भी एक माध्यम के रूप में केवल कलम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाथ में पकड़ता है और फिर किसी अदृश्य शक्ति द्वारा वह कलम अपने आप लिखती चली जाती है ।

एक अत्यन्त ही रहस्यमय विस्मयकारी करतब स्थानान्तरण से सम्बन्धित है । इसमें एक वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाना होता है । इसमें उस वस्तु को केवल हवा में ले जाकर दूसरी जगह पहुँचाना ही नहीं था किन्तु एक बन्द कमरे में रखी किसी वस्तु को वहाँ से निकालकर दूसरे कमरे में पहुँचाना भी था । क्रूक्स ने इस प्रकार की एक घटना का वर्णन अपनी पुस्तक "मिसलेनियस ऑकरन्सेस ऑफ ए कॉम्पलेक्स करेक्टर", "जटिल महामानव के अनेकानेक वृत्तान्त" में दिया है । एक बार वह एक आध्यात्मिक सभा में एक माध्यम के साथ बैठे थे । उन्होंने एक घण्टी को उन लोगों के आस-पास बजते हुए सुना उन्हें ऐसा आभास हो रहा था कि जैसे कोई व्यक्ति उस घण्टी को उनके आस-पास घूमकर बजा रहा हो किन्तु कोई व्यक्ति दिखाई ही नहीं दे रहा था । फिर उन्होंने देखा कि वह घण्टी अचानक उनके टेबिल पर गिरी । उन्होंने उस घण्टी को अच्छी तरह पहचान लिया और उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस घण्टी को तो स्वयं पास के कमरे में रखकर आये थे और वह कमरा अभी तक बन्द था और ताला लगा हुआ था और उस ताले की चाबी उनकी जेब में मौजूद थी ।

क्रूक्स ने अपने अनुसन्धान के लिए कुछ तथ्यों को एकत्र करना प्रारम्भ किया । इसके लिए उन्हें कई स्थानों पर जाना पड़ा । उन्हें पता लगा कि विश्व में अनेक स्थानों पर ऐसे प्रमाण मिले हैं कि आदिवासी जन और कुछ जादूगर लोग किसी वस्तु को बिना स्पर्श किए एक स्थान से दूसरे स्थान को हटा सकते हैं । यही नहीं वे दूर से ही किसी को आरोग्यता भी प्रदान कर सकते हैं तो किसी को मार भी सकते हैं । यह शक्ति शाप-वरदान के समान ही मानी जा सकती है । प्राचीन साहित्य में भी कई मनःसम्प्रेषण की कहानियाँ आयी हैं जिनमें जोव नामक एक देवता द्वारा दम्भी व्यक्तियों को वज्रपात द्वारा दण्ड देते दिखाया गया है और कई बुरे लोगों को नष्ट करने की व अच्छों को संरक्षण देने की बात कही गई है । बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेंट में किसी विशेष प्रकार की ध्वनि का वर्णन है जिसके पीछे कोई अदृश्य शक्ति थी । उसने खड़ी दीवार को समतल बना दिया था । न्यू टेस्टामेंट में कुछ चमत्कारों का प्रदर्शन किया गया है जिसमें एक स्थान पर यीशू को पानी को मदिरा में बदलते हुए दिखाया गया है और उन्हें जल से पूर्ण झील पर पैदल चलते दिखाया गया है ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के विषय में ब्रिटेन के डेनियल डुंगलाज होम से बढ़कर कोई अन्य उदाहरण मिलना कठिन होगा । इसका जन्म सन् १६३३ में स्कॉटलैण्ड में हुआ । इन्हें बचपन से ही अतीन्द्रिय ज्ञान का आभास होने लगा था । वह उनकी आयु के साथ बढ़ता गया और १६५० में तो वह अनेकानेक प्रकार के अलीन्द्रिय क्षमता के प्रयोग जन सामान्य के सामने प्रदर्शित करने लगे । हवा में उड़ना उसमें एक प्रधान कार्य था । वह अनेकों बार हवा में उड़े । कभी वह स्वयं की प्रेरणा से और कभी किसी सभा में अथवा किसी भी मौके पर हवा में उड़कर इधर-उधर मँडराने लगते थे । उनके हवा में उड़ने के बारे में कई लोगों ने लिखा है । उनमें लिण्डने के मास्टर भी एक हैं ।

एक घटना का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है—"एक समय में, श्रीमान होम, लार्ड अडारे और उनके भतीजे के साथ बैठे थे कि होम अचानक समाधिस्त हो गए और उसी स्थिति में वे उस कमरे की खिड़की से बाहर निकल गए और पास के कमरे की खिड़की में से दूसरे कमरे में प्रवेश कर गए । दोनों खिड़कियों का अन्तर सात फीट छः इन्च था और इनके बीच में किसी प्रकार का कोई भी सहारा लेने को स्थान नहीं था । ये खिड़कियाँ भूमि की सतह १ से ५ फीट ऊपर थी । हमने स्वयं देखा कि कैसे खिड़कियाँ खोली गईं और होम ने उसमें पहले पैर और फिर शरीर के साथ प्रवेश किया और फिर कमरे में आकर वे बैठ गए । उनसे पूछने पर कि यह उन्होंने कैसे किया तो वे फिर उसी हालत में उसी खिड़की से बाहर जाकर दूसरी खिड़की से दूसरे कमरे में प्रवेश कर गए । हाँ इस बार उनका सिर आगे था और पैर पीछे थे । इस घटना के बारे में जब लार्ड अडारे और उनके भतीजे कैप्टन बिने से पूछा गया तो उन्होंने इस घटना को उनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप में देखी गई निरूपित किया । अमेरिका और ब्रिटेन के कई स्वतन्त्र विचार वाले व्यक्तियों ने भी होम के इस प्रकार के करतबों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की सत्यता की पुष्टि की है । सर विलियम क्रूक्स ने तो इनके उड़ने की लगभग सौ घटनाओं का विवरण किया है ।

विलियम स्टेनटोन मोजेस नामक एक सम्माननीय नागरिक और स्कूल मास्टर को अचानक एक बार अपनी उड़ने की अतीन्द्रिय क्षमता के बारे में आभास हुआ, किन्तु वयोवृद्ध सेवा निःसृत व्यक्ति के रूप में जो उनका व्यक्तित्व लोगों के समक्ष आ चुका था उसमें वे हवा में उड़ने का प्रदर्शन कर बाजीगर के रूप में जनता के सामने आना नहीं चाहते थे । अतः कुछ व्यक्तिगत मित्रों के समक्ष ही वे हवा में उड़ते थे । उनकी इस क्षमता के बारे में लोगों को अविश्वास होने का कोई कारण ही नहीं हो सकता था क्योंकि वे स्वयं सदैव प्रचार से दूर ही रहे ।

इन घटनाओं से संकेत मिलता है कि अतीन्द्रिय क्षमता के भण्डागार की सत्ता को समझा, स्वीकार और उपयोगी बनाया जाय । यदि ये प्रयास चल पड़ें तो मनुष्य अपनी मेधा का उपयोग सामान्य काम चलाऊ बुद्धि तक ही नहीं उससे भी कुछ इतर विशिष्ट प्राप्त करने के लिए करेगा । इन दिनों हम सब अतीन्द्रिय क्षमता को जादू-टोना न समझते रहकर उसे यथार्थता के रूप में अंगीकार करने की स्थिति से गुजर रहे हैं । यदि इस निश्चय पर असंदिग्ध रूप से पहुँचा जा सका तो कल परसों उन उपायों को भी खोजा, अपनाया जा सकेगा जिनके सहारे अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न मानव अत्यधिक महत्त्व की विभूति से लाभान्वित होने की स्थिति में होगा ।

अनायास ही मिलने वाला श्रेय

आग का सामान्य स्वभाव गर्मी और रोशनी है, जो वस्तु उसके जितनी निकट आती है, वह उसे प्रस्तुत परिस्थितियों के अनुसार जलाती है । जब तक जितना ईंधन जिस स्तर का रहता है, वह प्रज्वलन उसी स्तर का होता है । आग बुझ जाय तो ईंधन के रहते हुए भी ज्वलन क्रम बन्द हो जाता है । इसी प्रकार ईंधन कितना ही क्यों न हो, यदि आग जल न रही हो, तो फिर सब कुछ जहाँ का तहाँ पड़ा रहने पर भी जलने जैसा कोई उपक्रम दीख न पड़ेगा ।

आग और ईंधन के मिलन से प्रज्वलन होता है । यह तथ्य यथावत् रहते हुए भी उस सम्मिलन की प्रतिक्रिया में यही अन्तर रहता है । लकड़ी गीलेपन समेत जलायी जाय, तो उसमें से धुँधला धुआँ भर निकलता और जलता-बुझता रहेगा । इसके विपरीत सूखा ईंधन यदि भीतर तक हवा पहुँचने की स्थिति का हो, तो तेज आग जलेगी, जल्दी फैलेगी और ज्वलन भी वेगवान होगा । इन भिन्नताओं के कारण आग और ईंधन के मिलने पर लपट उठने के सिद्धान्त में बहुत कुछ अन्तर देखा और पाया जायेगा ।

पेट्रोल या गैस हवा के साथ मिलकर एक चिन्गारी भर से भक् जल जाती है और देखते-देखते बड़े क्षेत्र को अपने प्रभाव परिकर में लपेट लेती है । बारूद में मिले रसायनों के अपने-अपने गुण हैं । आतिशबाजी जलने पर अपने चित्र-विचित्र रंग-रूप दिखाती और अपने ढंग के मनोरंजक स्वरूप धारण करती है । आग्नेयास्त्रों के साथ सम्पर्क बनने पर उसकी प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग तरह की होती हैं । बन्दूक की कारतूसों और तोप के गोलों की शक्ति अलग-अलग तरह की उठती है । 'डायनामाइट' की कारतूस पहाड़ की चट्टानों को उड़ा देती है, मजबूत किले के धुर्रे बिखेर देती है । मुर्दा जलते समय वही आग अपनी परिधि को विषैले धुएँ से भर देती है । इसके विपरीत यदि चन्दन या कपूर आदि को जलाया जाय, तो उसकी मन-भावन सुगन्ध उठती है । पुआल में लगने पर वह तेजी पकड़ती जाती और दूर-दूर तक देखते-देखते फैल जाती है । इसके विपरीत गीला और मटमैला ईंधन ज्यों-त्यों करके थोड़ा-थोड़ा करके जलता और धुआँ बिखेरता रहता है ।

आग के अपने गुण हैं, ईंधन के अपने । मोटी प्रतिक्रिया मिलने पर जलने की ही होती है, पर पदार्थों और परिस्थितियों के अनुरूप उस ज्वलनशीलता में असाधारण स्तर का अन्तर पाया जाता है ।

मनुष्य के शरीर में एक तरह की और चेतना में दूसरी तरह की शक्ति रहती है । शरीर जीवनी शक्ति को धारण किए रहता है, जिसके सहारे अनेकों अंग-अवयव और कल-पुर्जे चलते और अपना-अपना काम करते हैं । गर्मी उसी के सहारे बनी रहती है और काम करने की क्षमता का उद्भव भी उसी से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है । बलिष्ठता उसी पर निर्भर है । रोगों से लड़ने की शक्ति भी उसी में रहती है । इसमें कमी पड़ने पर अनेकों प्रकार की दुर्बलता और रुग्णता आ घेरती है ।

चेतना मन की शक्ति, हिम्मत, साहस की जन्मदात्री है । ओजस्, तेजस् और वर्चस् भी उसी की देन है । यदि यह न रहे, तो जीवित रहना भी कठिन और असम्भव हो जाय । बौद्धिक प्रखरता भी इसी के बल पर मिलती है । मनोबल, आत्मबल चेतना की ही प्रखरता के गुण हैं । दोनों उपर्युक्त शक्तियाँ यदि अक्षुण्ण रहें, तो ही मनुष्य जीवित या सशक्त रह पाता है ।

यह शारीरिक और मानसिक प्रयोग है । आध्यात्मिक शक्ति इससे आगे एवं ऊपर है । उसका सम्बन्ध न केवल शरीर एवं मस्तिष्क से है, वरन् अदृश्य जगत में संव्याप्त दैवी सत्ता के साथ भी वह अपना सम्बन्ध जोड़ती है । देवी-देवताओं के नाम से भी उन्हीं विशेषताओं को भागों-उपभागों को सम्बद्ध समझा जाता है । परब्रह्म यही है । ईश्वर, भगवान, स्रष्टा आदि भी इसी के नाम हैं । विश्व-ब्रह्माण्ड में संव्याप्त होने के कारण इसी को विश्व-चेतना भी कहते हैं । यह थोड़ी मात्रा में तो सभी में होती है, पर इसकी विशेष मात्रा में योग, तपस्वी, अपनी विशिष्ट साधना के बलबूते अर्जित करते हैं । इसी के अनुपात से कोई देवमानव, देवात्मा, महामानव, सिद्ध पुरुष आदि बन सकता है । जिस प्रकार पतंग के पतले धागे में भी कभी-कभी कारणवश विद्युत प्रवाह आ जाता है, या उसे प्रयत्नपूर्वक आकर्षित अर्जित कर लिया जाता है, उसी प्रकार मनुष्य में दैवी शक्तियों का समावेश भी हो जाता है । यह बड़ी मात्रा में होती है, तो उसे व्यक्तित्व की असाधारण मात्रा में देखा पाया जाता है । दिव्य व्यक्तित्व इसी के ही सहारे उपलब्ध या विकसित होता है, किन्तु अतिरिक्त प्रयत्न करने पर दोनों के बीच घनिष्ठता भी उत्पन्न हो जाती है और परस्पर का आश्चर्यजनक आदान-प्रदान भी आरम्भ हो जाता है ।

ब्रह्माण्ड में अगणित शक्तियों के भण्डार भरे पड़े हैं । उनमें से जितने अपने लिए पृथ्वी आवश्यक समझती है, उतनी ध्रुव केन्द्र के माध्यम से खींचती और धारण करती रहती है, जो अनावश्यक है, बहिष्कृत कर दी जाती है । इस प्रकार जिस मनुष्य ने अपने सूक्ष्म अन्तःकरण को जितना परिष्कृत बना लिया है, वह उतना ही दैवी अंश अदृश्य जगत से अपने लिए आकर्षित कर लेता है । उसमें उतने ही बढ़े-चढ़े दैवी अंश पाये जाते हैं । उच्चस्तरीय शक्ति-स्रोत यही है । इसकी तुलना में शारीरिक जीवनी शक्ति और मानसिक विलक्षणता नगण्य है । उसमें उतना ही अंश पाया जाता है, जितना कि अन्तराल में धारण कर सकने की विशिष्ट क्षमता होती है । इसे प्रयत्नपूर्वक अर्जित करना पड़ता है । साधना इसी प्रयत्नशीलता को कहते हैं ।

उच्चकोटि के साधकों में जो कतिपय दिव्य शक्तियाँ पायी जाती हैं, वह उनके अपने साधना प्रयत्नों द्वारा अर्जित की हुई होती हैं । तपस्वी इसी प्रयत्न में लगे रहते हैं । योगियों का पुरुषार्थ इसी उपार्जन-अर्जन के लिए होता है । ऋषि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि, देवर्षि इसी स्तर की क्षमता अपने भीतर अत्यन्त कष्टसाध्य प्रयत्नों द्वारा अर्जित करते हैं, जो जितनी, जिस स्तर की सफलता प्राप्त कर लेता है, वह उतने ही बढ़े-चढ़े स्तर का सिद्ध पुरुष बन जाता है ।

मनुष्य कलेवर में सीमित मात्रा में विशेष शक्ति धारण की क्षमता है । शरीर की धारणा शक्ति एक सीमा तक है । खेलों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले इसी का परिचय देते हैं । पहलवानों, बलवानों, योद्धाओं, बलिष्ठों में इसी का बाहुल्य देखा जाता है । मानसिक बल की भी एक सीमा है । बुद्धिमान, मेधावान, विशेषज्ञ, विद्वान, मनीषी, इसी धन के धनी होते हैं । कभी-कभी उनमें अतीन्द्रिय क्षमताएँ भी पायी जाती हैं । आधुनिक परामनोविज्ञान के अन्तर्गत दूरदर्शन, दूरश्रवण, भविष्यज्ञान, प्राण प्रत्यावर्तन जैसी विशेषताएँ इसी आधार पर अर्जित करते देखी गई हैं । मानवी विद्युत के कई प्रकार के चमत्कार कितने ही लोगों में देखे गए हैं । यह भी इसी क्षमता का परिचय है ।

ऊपर आँख उठाकर देखने से नीला-पीला आकाश दीख पड़ता है, इसकी परिधि कितनी बड़ी है, यह साधारण आँखों से या मोटी बुद्धि से नहीं समझा जा सकता फिर भी वह इतना विस्तृत है कि उसे अकल्पनीय ही कह सकते हैं । साधारण समझ के अनुसार यह खाली दिखाई पड़ता है । जहाँ-तहाँ चाँद, तारे, गैसें, ग्रह-पिण्ड चमकते दिखाई पड़ते हैं, किन्तु उनकी भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक सीमा है । जितने तारे दीखते हैं, उससे करोड़ों गुना वे हैं, जो आँखों की पकड़ में नहीं आते और सदा अदृश्य ही बने रहते हैं दीखने में पोला या खाली दीखने वाला यह आकाश भी सर्वथा शून्य नहीं है । इनमें एक-से-एक बढ़कर चमत्कारी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं । एक्स-रे, अल्ट्रावायलेट, लेसर, रेडियो तरंगें, ईथर आदि का बड़ा शक्तिशाली भण्डार इस पीले आकाश में भरा पड़ा है । यदि उसे नापा-तौला जा सके, तो उसका भारमान उससे कहीं अधिक बैठेगा, जितना कि इस अपनी दृश्यमान पृथ्वी की देन समझा जा सकता है ।

जो वस्तुएँ खुली आँखों से नहीं देखी जा सकतीं, उसे सामान्य बोलचाल में सूक्ष्म कहते हैं । दृश्यमान पदार्थों में से बहुत थोड़ा अंश ही आँखों से दीख पड़ता है, शेष ऐसे हैं, जिन्हें अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी यन्त्रों में से ही किसी मात्रा में देखा-समझा जा सकता है । यह अदृश्य प्रतीत होते हुए भी स्थूल जगत की परिधि में आता है । पदार्थ इस संसार में जितना दृश्य है, उससे करोड़ों-अरबों गुना अदृश्य है । इतने पर भी उसे हम कदाचित ही किसी सीमा तक देख-समझ पाते हैं ।

सूक्ष्म पदार्थ जगत की तरह सूक्ष्म चेतना जगत का भी उससे भी विशाल सूक्ष्म जगत है सचेतन । इस समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड में अदृश्य चेतना भी भरी पड़ी है । इसे सचेतन स्तर को सूक्ष्म जगत कहते हैं । यही विराट् ब्रह्म है । इसकी विशेषताएँ और विचित्रताएँ इतनी हैं कि उनकी आंशिक कल्पना कर सकना भी कठिन है । परब्रह्म या विराट् ब्रह्म यही है । इसी विशाल सूक्ष्म चेतना जगत के अन्तर्गत मनुष्य की प्राण-चेतना का भी एक बहुत छोटा अंश रहता है । जिस प्रकार विशाल समुद्र में छोटे-छोटे असंख्य जल जन्तु रहते हैं, ठीक उसी प्रकार विराट् ब्रह्म के अन्तर्गत भी मनुष्य में विद्यमान चेतना भी अणु-परमाणुओं के रूप में किसी प्रकार अपनी सत्ता बनाये हुए हैं । आमतौर से उसमें से उतना ही छोटा अंश लोगों के परिचय में आता है, जो शरीर अथवा मस्तिष्क की हलचलों के निमित्त काम आता है । इससे भीतर अन्तःकरण या कारण सत्ता है । इसे जीवधारी या आत्मा कहते हैं ।

यों पृथक-पृथक लोगों ने आत्मा के परमाणु अलग-अलग स्तर के बताये हैं । इतने पर भी वे एक ही विराट् ब्रह्म के छोटे-छोटे घटक हैं, साथ ही इतनी सघनतापूर्वक जुड़े हुए भी हैं कि एक-दूसरे को असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं, एक-दूसरे को आवश्यक एवं अभीष्ट मात्रा में क्षमता का आदान-प्रदान भी करते हैं । जिस विशेष क्षेत्र में यह हलचल चलती है, उसे अदृश्य अथवा सूक्ष्म जगत कहते हैं । इसमें अनेकों अदृश्य स्तर के जीवधारी भी रहते हैं, जिन्हें भूत, प्रेत, देव, दानव आदि नामों से जाना जाता है । जिस प्रकार दृश्य जगत के प्राणी पारस्परिक सहयोग या विद्वेष करते हैं, उसी प्रकार सूक्ष्म चेतना जगत के सचेतन घटक भी परस्पर चित्र-विचित्र स्तर का पारस्परिक सम्बन्ध बनाये रहते हैं । इस सचेतन सत्ता का जिसमें जितना अधिक अंश किसी प्रकार बढ़ जाता है, वह महामानव दैत्य मानव बन जाता है । यदि यह शक्ति सात्विक स्तर की हो, तो उसे देवत्व कहा जायेगा और यदि वह असुरता प्रधान हो, तो फिर उसे दैत्य और दानव स्तर का कहा जायेगा । दोनों में ही साधारण मनुष्यों की अपेक्षा अतिरिक्त स्तर की असाधारण शक्ति पायी जाती है । इसलिए उनका कर्तृत्व जनसाधारण की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा और विशिष्ट, बलिष्ठ, अद्भुत एवं चमत्कारी भी होता है ।

मनुष्य विशेष की तरह परब्रह्म सत्ता की भी समय-समय पर अपनी इच्छाएँ और योजनाएँ उभरती हैं । सृष्टि का सन्तुलन बनाये रहना ही उसका प्रधान उद्देश्य होता है । इस प्रयोजन के लिए वह कई प्रकार के निर्माण, अभिवर्धन एवं परिवर्तन भी करती रहती है, पर उस कर्तृत्व की प्रक्रिया विलक्षण होती है । व्यापक सत्ता का कोई आकार नहीं हो सकता । उसके अंग अवयव भी नहीं होते । उपकरणों से भी वह सिद्ध नहीं होती । इसके बिना कोई दृश्यमान क्रिया-प्रक्रिया बन कैसे पड़े ? इसलिए सूक्ष्म जगत के विशिष्ट कार्य भी जब दृश्यमान स्तर पर सम्पन्न करने होते हैं, तो उसके लिए परब्रह्म को भी मनुष्य शरीर का आश्रय लेना पड़ता है क्योंकि इस विशाल विश्व में मात्र मनुष्य शरीर ही एक ऐसा है, जो दैवी चेतना के अनुरूप कोई क्रिया-प्रक्रिया कर सकने में समर्थ है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थूल और सूक्ष्मजगत का संचालन करने वाली परब्रह्म सत्ता की किसी इच्छा या अपेक्षा में योगदान दे सकता है ।

इस स्तर के मनुष्यों को देवात्मा कहते हैं । मानवी संरचना वाले यह देव पुरुष पर ब्रह्म की आशा एवं योजना के अनुरूप आवश्यक प्रयोजन पूरा करने में समर्थ होते हैं । दिव्य मानव, सिद्धिपुरुष, अवतार, देवदूत नाम से इन्हें ही जाना जाता है । भगवान अपने सामयिक अभीष्ट प्रयोजन विकासक्रम में मनुष्य स्तर की पूर्णता प्राप्त होने के बाद इन शरीरों से ही पूरे कराते रहे हैं । जिन दिनों पृथ्वी पर सतयुग का वातावरण था, उन दिनों सृष्टि सन्तुलन की अनेकानेक महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ ऋषि स्तर के समर्थ व्यक्तित्वों द्वारा भी सम्पन्न होती रही हैं ।

इन दिनों असामान्य समय है । एक ओर जहाँ असन्तुलन का बोलवाला है, भटकावजन्य, दुर्गति दीख पड़ती हैं, वहाँ दूसरी ओर परिवर्तन की प्रक्रिया पलक झपकते सम्पन्न होते दिखाई देने लगी है । निश्चित ही अगले दिन ऊँचे उठने और उठाने के हैं । उसमें जिनकी भूमिका हो सकती है, उन्हें देवदूतों की गणना में सम्मिलित किया जाना चाहिए । यों ऐसे कितने काम हैं जिनमें निजी विवेक के अतिरिक्त ईश्वरीय अनुग्रह भी सम्मिलित होता है । इस समन्वय से उत्पन्न शक्ति का पारावार नहीं रहता । शक्ति हाथ में हो तो श्रेय मिलने में कठिनाई नहीं पड़ती । भावना में प्रखरता हो तो परिस्थितियाँ दुर्बल होते हुए भी सफलता का सुयोग बन जाता है, जो भगवान के साथ जुड़ने का प्रयत्न करते हैं, उनके साथ भगवान भी गज और ग्राह भूमिका निबाहने के लिए स्वयं दौड़े आते हैं, यह तथ्य सदैव स्मरण रखा जाना चाहिए ।

सम्भावित घटनाक्रमों के पूर्वाभास

साधारणतया यही समझा जाता है कि घटना का आसार बनने अथवा उसके घटित होने पर उसकी जानकारी प्रकट होती है, किन्तु कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि वैसी कोई पूर्व भूमिका न होने पर भी कइयों को पूर्वाभास मिल जाता है । इसमें जानकारी प्राप्त करने वाले की विशेष अतीन्द्रिय क्षमता की तो पुष्टि होती ही है, साथ ही यह भी प्रकट होता है कि घटनाओं का पूर्व उपक्रम अदृश्य जगत में बनता रहता है । ऐसा कैसे होता है ? यह एक आश्चर्य का विषय है । क्या सब कुछ पूर्व निर्धारित है ? क्या निर्धारित विधि-विधान के अनुसार ही संसार का घटनाक्रम चल रहा है ? यदि ऐसा है तो मनुष्य के प्रयास पुरुषार्थ का क्या मूल्य रहा ? यह गुत्थी वस्तुतः बहुत पेचीदा है और उसका स्पष्ट उत्तर नहीं दिया जा सकता । फिर भी यह तथ्य स्वीकारने योग्य है कि कइयों को भवितव्यता का पूर्वाभास होता है ।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एलेक्स टैनस अपने भाग्य निर्णायक भविष्यवाणियों के लिए प्रख्यात हैं । २३ अगस्त, १९८० को अमेरिकन सोसाइटी फार साइकिकल रिसर्च द्वारा आयोजित एक इण्टरव्यू में एलेक्स ने एक दुःखद भविष्यवाणी टेप कराई । उन्होंने बताया कि न्यूयार्क सिटी के डैकोटा एपार्टमेण्ट में कुछ महीने के अन्दर ही एक प्रसिद्ध राक स्टार की अनिश्चित समय में हत्या कर दी जायेगी । जिसके कारण बहुत से लोग प्रभावित होंगे । प्रभावित होने के कारण उसकी प्रसिद्धि होगी ।

इस टेप को ५ सितम्बर, १९८० को एक शो में लोगों को सुनाया गया । ८ दिसम्बर को विश्व प्रसिद्ध राक म्यूजिसियन जान लेनन को उनके निवास स्थान डैकोटा के दरवाजे पर गोली मार कर हत्या कर दी गई । भविष्यवाणी करते समय टैनस ने किसी का नाम नहीं बताया था परन्तु टेप करने वाले ली स्पीजल ने छः प्रख्यात सितारों की एक सूची बनाई थी जिसमें जान लेनन का नाम प्रथम था ।

सन् १९७९ में फिलाडेल्फिया स्थित अपने मकान में हेलेन टिलोट्सन नामक एक महिला सो रही थी । सुबह ५ बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया । दरवाजा खोलने पर हेलन ने देखा कि सामने उसकी माँ खड़ी हुई थी । वह कह रही थी, हेलेन क्या तुम यहाँ हो ? मुझे अन्दर आने दो ।

जैसे ही हेलेन ने दरवाजा खोला उसकी माँ, जो सड़क के पार बने अपने मकान में रह रही थी, कहने लगी कि कुछ मिनट पहले उसका दरवाजा क्यों खटखटाया गया । हेलेन ने बताया कि वह तो रात्रि ११ बजे से अब तक सोती रही, बीच में जगी ही नहीं । जबकि श्रीमती टिलोट्सन का कहना था कि हेलेन,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुम्हीं ने तो मुझे जगाया है । मैंने तुझे देखा है और तुमसे बातें की हैं परन्तु तुम मौन रहीं और अपने पीछे आने का इशारा कर चली आयीं ।

कुछ देर बाद सबने देखा कि श्रीमती टिलोट्सन के कमरे से धुआँ उठा और जोर से एक धमाके के साथ पूरा मकान ध्वस्त हो गया । इस दृश्य को देखकर फायर चीफ ने कहा, इसमें कोई सन्देह नहीं था कि यदि श्रीमती टिलोट्सन उस मकान में सो रही होती तो निश्चय ही उनकी मृत्यु हो गई होती ।

सिनसिनैटी, ओहियो के एक ऑफिस मैनेजर २३ वर्षीय नवयुवक डैविड बूथ को रात्रि में सोते समय दस दिनों तक लगातार एक ही दुःस्वप्न दिखाई देता रहा । स्वप्न में जो दृश्य दिखाई देता वह अमेरिकन एयर लाइन्स के डी-१० जेट लाइनर वायुयान का था जो अपने रास्ते से मुड़कर बलखाता हुआ जमीन पर आते-आते रक्तिम वर्ण के नरक में परिणत हो जाता है तथा उसमें सवार सभी यात्री मारे जाते हैं । यह स्वप्न इतना स्पष्ट होता था जैसे डैविड किसी दृश्य को टेलीविजन पर देख रहा हो । डैविड को निश्चय हो गया कि कोई अनहोनी घटना घटित होने वाली है ।

२२ मई, १९७९ को मंगलवार के दिन डैविड ने ग्रेटर सिनसिनैटी इण्टरनेशनल एयर पोर्ट के फेडरल एविएसन एडमिनिस्ट्रेशन, अमेरिकन एयर लाइन्स और सिनसिनैटी विश्वविद्यालय के एक मनःचिकित्सक को अलग-अलग फोन करके स्वप्न में देखे गए दृश्य का हवाला दिया । संयोग से २६ मई को अमेरिकन एयरलाइन्स का एक 'जेट लाइनर डी-१० शिकागो के ओ' हेयर इण्टर नेशनल एअरपोर्ट पर उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया । उसमें सवार सभी २७५ यात्री काल कवलित हो गए । अमेरिका के इतिहास में यह सबसे बड़ी हवाई दुर्घटना थी ।

फेडरल एविएसन एडमिनिस्ट्रेशन ने जब डैविड बूथ द्वारा बताये गए स्वप्नों से इस दुर्घटना की जाँच करके मिलाया तो दोनों दृश्य अक्षरशः समान निकले ।

स्पेन के एक होटल मालिक जेम कास्टेल की धर्मपत्नी छः माह से गर्भवती थी । एक स्वप्न में जेम ने सुना कि गर्भस्थ शिशु उससे कह रहा है कि तुम मुझे देख नहीं पाओगे । जेम्स कास्टेल को विश्वास हो गया कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु होने वाली है । अतः जल्दी में उसने दस लाख डालर का अपना बीमा करा लिया ।

कुछ सप्ताह बाद जेम होटल से वापस घर की ओर अपनी कार में बैठा ५० एम. पी. एच. की रफ्तार से आ रहा था । सामने से विपरीत दिशा में १०० एम. पी. एच. गति से आती हुई एक दूसरी कार कास्टेल की कार के ऊपर चढ़ गई । इस दुर्घटना में कास्टेल और उनके कार चालक की मृत्यु हो गई । कम्पनी ने श्रीमती कास्टेल को बीमे की राशि का तुरन्त भुगतान कर दिया ।

४ दिसम्बर, १९७८ को एडवर्ड पियर्सन नामक व्यक्ति को स्काटलैण्ड में इन्वर्नेस से पर्थ की ओर बिना टिकट के यात्रा करने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया । अगले दिन पर्थ के कोर्ट में उपस्थित किया गया, जहाँ पियर्सन ने परिचय पूछे जाने पर अपने को "एक बेरोजगार भविष्य वक्ता" बताया और कहा कि वह इस रास्ते से लन्दन को जा रहा था, जहाँ पर्यावरण के मन्त्री को यह सूचित करना था कि अतिशीघ्र ही ग्लैस्गो में भयंकर भूकम्प आने वाला है ।

एडवर्ड पियर्सन की यह कहानी ६ दिसम्बर के डण्डी क्यूरियर एण्ड एडवर टाइजर में "भविष्य वक्ता ने टिकट नहीं लिया" नामक मुख्य शीर्षक प्रकाशित हुआ । तीन सप्ताह बाद ग्लैस्गो तथा स्काटलैण्ड के अन्य भागों-में एक भयंकर भूकम्प आया जिससे अनेकों भवन ध्वस्त हो गए और क्यूरियर एण्ड एडवर टाइजर के पाठक अपने बिस्तरों पर लड़खड़ाने और डगमगाने लगे ।

ब्रिटिश आइजलेस के किसी भी भाग में इस तरह के भूकम्प की प्रक्रिया बहुत ही बिरली मानी जाती है ।

सन् १९७२ में रेजेन्सी प्रेस ने हैरिसन जेम्स द्वारा लिखित उपन्यास का प्रकाशन किया । उपन्यास का नाम था—"ब्लैक एवडक्टर" (काला अपहर्ता) और हैरिसन जेम्स का पेन नाम था—जेम्स रस्क जूनियर । उपन्यास में आतंकवादियों द्वारा एक सुप्रसिद्ध धनी दक्षिणपंथी व्यक्ति की एक लड़की के अपहरण की कहानी का वर्णन था । आतंकवादियों का ग्रुप एक काले नेता द्वारा संचालित होता है जो कॉलेज कैम्पस में अपने बॉय फ्रेण्ड के साथ खेल रही पेट्रीसिया नामक लड़की का अपहरण कर लेता और लड़के द्वारा विरोध करने पर उसकी जमकर पिटाई की जाती है । आतंकवादी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पैट्रासिया का पोलराइड फोटोग्राफ उसके पिता के पास भेजकर उस काण्ड को अमेरिका का "प्रथम राजनैतिक अपहरण" की संज्ञा देते हैं । नाटक का अन्त पुलिस द्वारा आतंकवादियों का घिराव करके अश्रु गैस छोड़ने और उन्हें मौत के घाट उतार देने में होता है ।

ब्लैक एवडक्टर उपन्यास के प्रकाशन के एक महीने बाद ही दक्षिण पन्थी रण्डोल्फ हर्स्ट नामक एक धनीमानी व्यक्ति के पेट्रीसिया हर्स्ट नामक लड़की का कॉलेज कैम्पस से सन् १९७४ में सिम्बिओनीज लिबरेशन आर्मी के सदस्यों ने अपहरण कर लिया । इस आर्मी का नेता एक काले रंग का व्यक्ति था । पेट्रीसिया के बॉय फ्रेण्ड स्टीवेन वीड को मार-पीट कर घायल कर दिया था । एफ. वी. आई ने स्टीवेन वीड और उपन्यासकार जेम्स रस्क जूनियर को साक्ष्य के रूप में पकड़ लिया क्योंकि जेम्स का उपन्यास सभी ने पढ़ा था । जेम्स का उपन्यास एक भविष्यवाणी की तरह सबके सामने आया । आतंकवादियों को पुलिस ने घेर लिया और अश्रुगैस छोड़कर सभी सदस्यों को पकड़ कर मारा डाला ।

शिकागो के अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न जोसेफ डि लूइस अपने भविष्यवाणियों के लिए प्रख्यात हैं । जोसेफ पेशे से एक हेयर ड्रेसर हैं । भविष्यवाणियों के लिए वे एक क्रिस्टल बाल का उपयोग करते हैं । जिस पर भविष्य में घटित होने वाली घटनाएँ टेलीविजन की तरह अंकित हो जाती हैं ।

१६ जनवरी, १९६९ की रात्रि को जोसेफ शिकागो की एक मधुशाला में चहलकदमी करते हुए समाचार पत्र का बेतावी से इन्तजार कर रहे थे । जोसेफ ने उपस्थित लोगों को बताया कि शिकागो से दक्षिण कुछ दूरी पर घने कुहासे के कारण दो ट्रेनों में भिड़न्त हो गई है । जिसमें सवार अधिकांश व्यक्ति घायल हो गए और कुछेक मारे गए हैं । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद २५ वर्षों में इस तरह की यह पहली भयंकर रेल दुर्घटना है । लोगों ने जोसेफ को बताया कि समाचार पत्रों में इस प्रकार की दुर्घटना का कोई समाचार प्रकाशित नहीं हुआ और न ही रेडियो प्रसारण पर किसी प्रकार की अप्रिय घटना का समाचार सुनने को मिला ।

दूसरे ही दिन १७ जनवरी को शिकागो से ४५ मील दूर दक्षिण में दो इलीनोइस सेण्ट्रल ट्रेनें घने कुहरे के कारण आपस में टकरा गईं जिससे ४७ व्यक्ति घायल हो गए और तीन व्यक्तियों की मृत्यु हो गई । २५ वर्षों के अन्दर इस क्षेत्र की यह सबसे बड़ी रेल दुर्घटना थी ।

डि लूइस ने १४ दिसम्बर, १९६८ को ग्रे इण्डियाना के एक रेडियो इण्टरव्यू में भविष्यवाणी की थी कि उक्त दुर्घटना पाँच अथवा छः सप्ताह के अन्दर ही घटित होगी । टेलीविजन पर और प्रेस में इस तरह की अनेकों भविष्यवाणियाँ जोसेफ डि लूइस पहले भी कर चुके थे ।

जोसेफ ने २५ नवम्बर, १९६७ को एक पुल के बैठ जाने की भविष्यवाणी की थी । तीन सप्ताह बाद १६ दिसम्बर को ओहियो नदी पर बना सिल्वर ब्रिज धँस गया जिसमें ३६ व्यक्ति तत्काल काल कवलित हो गए तथा १० व्यक्तियों का कोई पता नहीं चला ।

७ अप्रैल, १९६८ को शिकागो में होने वाले विद्रोह की पूर्व घोषणा डि लूइस ने ४ जनवरी, १९६८ को ही कर दी थी ।

१५ दिसम्बर, १९६८ को डि लूइस ने अपने एक भविष्य कथन में कहा था कि केनेडी परिवार जल सम्बन्धित एक दुःखान्त घटना के कुचक्र में फँसेगा । उसने देखा कि इस सन्दर्भ में एक महिला को पानी में डुबा दिया गया । १८ जुलाई, १९६८ को मेरी जो कोपक्ने नामक एक महिला की चौपाक्विडिक में एक कार एक्सीडेण्ट में मृत्यु हो गई जिसे समीप के एक नदी में डुबो दिया गया । इस दुर्घटना में सीनेटर एडवर्ड केनेडी भी सम्मिलित थे ।

२१ मई, १९६९ को डि लूइस ने भविष्यवाणी में कहा था कि इण्डियाना पोलिस के सन्निकट एक जेट प्लेन दुर्घटनाग्रस्त होगा जिसमें ७९ व्यक्ति मारे जायेंगे । ९ सितम्बर, १९६९ को सायं ३.३० बजे इण्डियाना पोलिस के निकट एलेघेनी एयरलाइन्स डी. सी.-९ एक प्राइवेट प्लेन से टकरा गया जिसमें सवार ७८ यात्री तथा ४ अन्य चालक दल के सदस्य सभी मारे गए साथ ही प्राइवेट यान का पाइलट भी मारा गया ।

मन की शक्ति अपार है जो भी कुछ समष्टि में घटित होता है या होने वाला होता है उसका पूर्व से ही छाया चित्र मनःपटल पर बन जाता है । न्यूरॉन्स

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की यह अतीन्द्रिय सामर्थ्य ही अनेकों भवितव्यताओं के पूर्वाभास के रूप में प्रकट होकर अपनी विलक्षण सामर्थ्य एवं असीम सम्भावनाओं का एक तनिक-सा परिचय भर देती है । साधना उपक्रमों के सहारे तो इस सामर्थ्य को और भी अधिक विकसित कर परिष्कृत रूप से प्रयुक्त किया जा सकता है ।

क्रियाकलाप प्रत्यक्ष प्रेरणा परोक्ष

प्रत्यक्षवाद को ही प्रमुख मानने वाले बुद्धिजीवियों में प्रथम गणना होती है—वैज्ञानिकों की । इनके उपहास को चिन्ता न कर ब्रिटेन और अमेरिका के कुछ परामनोवैज्ञानिकों ने ऐसे प्रकरणों का अध्ययन, विश्लेषण आरम्भ किया, जिन्हें दिव्य प्रेरणा या संदेश की संज्ञा दी गई थी । अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए उन्होंने इतना ही कहा कि जिन्हें संयोग या अपवाद कह कर टाल दिया जाता है, वस्तुतः वे परोक्ष के अनुदान हैं, जो अनुकूल माध्यमों को ही मिल पाते हैं ।

यह सत्य है कि कई बार हम कुछ चिन्तन कर रहे होते हैं, पर अनायास इस क्रम में ऐसे विचार कौंध जाते हैं । जिसकी आशा भी नहीं की गई होती है । कुछेक अवसरों पर ऐसे विचार क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए जिम्मेदार होते हैं । १७वीं सदी के फ्रांसीसी दार्शनिक रेने डेस्कार्टिस के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने जो प्रतिपादन आधुनिक युग के वैज्ञानिक तरीकों, सिद्धान्तों एवं उनसे सम्बन्धित दर्शन के बारे में किया, उन सबके मूल में परोक्ष जगत की अदृश्य प्रेरणा की ही प्रमुख भूमिका थी । इस क्रान्तिकारी प्रतिपादन के कारण ही उन्हें वैज्ञानिक युग का 'जनक' माना गया है ।

ब्रिटेन के सर ई. ए. वेलिंगटन को पुरातन भाषाओं और लिपियों का विशेषज्ञ माना जाता है । इस दिशा में ये अपनी सफलता का श्रेय मुख्य रूप से दैवी चेतना को देते हैं और कहते हैं कि यदि इसका सहयोग न मिला होता, तो आज मैं वह न बना होता जो हूँ । 'डिवाइन हेल्प' नामक पुस्तक में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है । एक घटना की चर्चा करते हुए ये लिखते हैं कि एक रात जब वे सोये हुए थे तो किसी ने उन्हें झकझोर कर यह कहते हुए उठाया, कि क्रैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पुरातन विद्या का एक शोध विशेषज्ञ नियुक्त किया जाना है, जिसके लिए जल्द ही एक प्रतियोगिता परीक्षा होने वाली है । तुम्हें उसमें अवश्य सम्मिलित होना चाहिए, सफलता मिलेगी । वेलिंगटन हड़बड़ा कर उठ बैठे और चारों ओर देखने लगे पर वहाँ कोई नहीं था । पत्नी बच्चे भी सो रहे थे । उन्होंने उसे दैवी प्रेरणा मानकर वैसा ही करने का निश्चय किया और तैयारी शुरू कर दी । समय कम था, अतः अच्छी तैयारी तो नहीं हो सकी, फिर भी उन्हें जो-जो प्रकरण महत्त्वपूर्ण जान पड़े, उन्हें भली-भाँति हृदयंगम कर लिया । आश्चर्य की बात तो यह थी कि प्रश्न-पत्र में जो-जो प्रश्न आये थे, सिर्फ उन्हें ही उन्होंने पढ़ा था । परीक्षा दी और वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । उनकी नियुक्ति विभागाध्यक्ष के रूप में हो गई । बाद में इस पद पर काम करते हुए उन्होंने प्राचीन लिपियों का सफल अन्वेषण किया उनके प्रतिपादन को प्रामाणिक माना गया और कितने ही अविज्ञात रहस्यों का उद्घाटन उनके द्वारा हुआ ।

प्रख्यात अमेरिकी शरीर शास्त्री डॉ. आट्टोलोबी ने जिन आविष्कारों के आधार पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया, उसके आवश्यक सूत्र संकेत उन्हें परोक्ष जगत की दिव्य प्रेरणा से ही मिले थे । शरीर कोश और स्नायु तन्तुओं पर वे शोध कार्य कर रहे थे, पर ऐसा कोई सुनिश्चित आधार नहीं मिल पा रहा था, जिसके माध्यम से किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके । ईस्टर के दिन उन्हें अनायास वह सूत्र हाथ लगा, जिसके कारण उनका अनुसंधान सफल और पूर्ण हो सका ।

यदि व्यक्ति देवी सन्देशों को ग्रहण करने हेतु पात्रता के अनुबन्धों को पूरा कर सके, जागरूक रहे और उन संकेतों को समझ सके, तो वह सब कुछ कर गुजरने में सफल हो सकता है, जिसे सर्वसाधारण असम्भव मानते रहे हैं ।

मात्र संयोग नहीं, अन्तःस्फुरणा से उपजे चमत्कार

कई बार हम बनाना कुछ चाहते हैं और बन कुछ जाता है । करना कुछ चाहते हैं, पर संयोगवश हो कुछ जाता है । ऐसे संयोगों ने विज्ञान को कई महत्त्वपूर्ण आविष्कार दिए हैं । ऐसी कई खोजें तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतनी महत्त्वपूर्ण साबित हुई हैं कि यदि ये मनुष्य को उपलब्ध नहीं होतीं, तो अनेक ऐसी सुविधा साधनों और आवश्यकताओं का आनन्द-लाभ हम उठा ही नहीं पाते, जो अब उठा रहे हैं ।

एक तरह से दृष्टिकोण बदलकर देखा जाय तो हम पायेंगे कि ये महज संयोग नहीं है । आर्थरकोस्लर अपनी पुस्तक "द रुट्स ऑफ काइन्सीडेन्स" में लिखते हैं कि अविज्ञात के गर्भ में सारा ज्ञान छिपा पड़ा है जो अपनी अन्तः सामर्थ्य को जगा कर उससे तादात्म्य स्थापित कर लेता है, वह अपनी तन्मयता व मानसिक रुझान के अनुरूप उस जानकारी को पा लेता है । यह सही है । इसे महज संयोग नहीं कहा जा सकता कि कोई उपयोगी वस्तु अनायास ही खोज ली जाती है । इसमें प्रकृति प्रेरणा एवं अन्तःस्फुरणा दोनों का योगदान होता है ।

घटना सन् १६०३ की है । मूर्धन्य फ्रांसीसी रसायनवेत्ता एडपोर्ड बैनेडिक्ट्स अपनी प्रयोगशाला में काम कर रहे थे । सामने की शेल्फ में विभिन्न प्रकार के रसायनों से भरी अनेक शीशियाँ रखी थीं । इन्हीं के बीच सेल्युलाइड से भरी बोतल भी रखी थी । उन्होंने कुछ परीक्षण के लिए सेल्युलाइड की बोतल उठानी चाही, पर अचानक वह हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ी । बोतल तो टूट गई, पर उसके टुकड़े बिखरने की बजाय परस्पर जुड़े रहे । बैनेडिक्ट्स ने जब यह देखा, तो उन्हें आश्चर्य हुआ । वे यह जानने के लिए कि आखिर इसका कारण क्या है ? बोतल को उठा कर उसका निरीक्षण करने लगे । इसमें ज्ञात हुआ कि बोतल की भीतरी सतह पर सेल्युलाइड की एक पतली पर्त चढ़ गई थी । इसी के कारण काँच बिखरे नहीं ।

इस घटना को देखकर उनके मन में एक विचार कौंधा कि काँच के निर्माण के समय बीच में नाइट्रो सेल्यूज की एक पर्त चढ़ा दी जाय तो एक विशेष प्रकार के मजबूत काँच का निर्माण हो सकता है और बस, इसी के उपरान्त ऐसे शीशे बनने लगे, जिनका उपयोग आज मोटर गाड़ियों में किया जाता है ।

कई बार संयोगवश कुछ ऐसा हो जाता है, जो अन्ततः वरदान सिद्ध होता है । यही स्थिति एक बार प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई पाश्चर के साथ हुई । १८८० में वे मुर्गियों के चूजों में पाये जाने वाले हैजे के रोग पर अनुसन्धान कर रहे थे । उन दिनों यह बीमारी मुर्गियों में बड़ी तेजी से पनप रही थी । प्रतिदिन अगणित बच्चे मर जाया करते थे । इसीलिए वे इस व्याधि का अध्ययन कर कोई उपयुक्त उपचार ढूँढ़ना चाहते थे । अध्ययन से यह तो पता चल गया, कि यह बीमारी एक विशेष प्रकार के रोगाणु के कारण होती है, पर इसे समाप्त कैसे किया जाय ? यह गुत्थी नहीं सुलझ पा रही थी । प्रतिदिन वे मुर्गियों के चूजों पर नये-नये प्रयोग परीक्षण कर रहे थे, पर फल कुछ नहीं निकल पा रहा था । एक दिन इसी क्रम में उनसे एक छोटी चूक हो गई । कई दिनों तक मुर्गियों की हड्डियों का एक्स्ट्रैक्ट एक बर्तन में रखा रह गया । जब उन्हें इसका पता चला, तो एक नया परीक्षण करने को सोचा । वे बीमार मुर्गियों में एक्स्ट्रैक्ट का इंजेक्शन लगा कर उसका परिणाम जानने को उत्सुक हुए । उनका विश्वास था कि इससे मुर्गियाँ तुरन्त ही दम तोड़ देंगी, पर हुआ इसके विपरीत । रोगग्रस्त चूजे धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे । यह देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और जब उस रस का परीक्षण किया, तो पता चला कि उसमें हैजे के रोगाणुओं को मारने का औषधीय गुण है और इस प्रकार मुर्गियों के हैजे रोग के लिए टीके का संयोगवश आविष्कार हो गया ।

कागज को दबाने के लिए पेपर क्लिप की हर पढ़ने-लिखने वाले को आवश्यकता पड़ती है, पर इसकी खोज कैसे हुई ? इसे कम ही लोग जानते होंगे । हुआ यों कि एक बार एक युवक वाशिंगटन (अमेरिका) की सड़कों पर निकटवर्ती शहर जाने के लिए किसी वाहन की तलाश में था । बस के आने में देरी होते देख वह युवक वहीं चहल कदमी करने लगा । इसी क्रम में सड़क पर उसे एक तार का टुकड़ा मिल गया । वह उसने उठा लिया और निरुद्देश्य उसे मोड़ने-मरोड़ने लगा । वह बार-बार उसे टेढ़ा एवं सीधा करता । इसी बीच उसके मस्तिष्क में विचार आया कि इस तरह तार टुकड़े को मोड़कर पेपर क्लिप (यू पिन) बनाया जा सकता है । इस प्रकार यू पिन उस युवक-मस्तिष्क की खोज साबित हुई, जो अकस्मात् ही हो गई । उपयोगिता की वस्तुएँ जितनी भी आविष्कृत हुई हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनके मूल में यह अन्तःस्फुरणा प्रमुख भूमिका निभाती रही है ।

चिकित्सा विज्ञान जब अल्प विकसित स्थिति में था, उन्हीं दिनों की घटना है । १९२२ से पूर्व रक्ताल्पता रोग की कोई दवा नहीं थी । सामान्य रोगियों को लौह तत्व खिला कर किसी प्रकार ठीक कर लिया जाता था, पर जो घातक रक्ताल्पता (परनीशियस एनीमिया) के शिकार होते थे, उन्हें निश्चय ही मौत के मुँह में जाना पड़ता था । इसकी औषधि की खोज की भी एक विलक्षण कथा है । इस आविष्कार का श्रेय संयुक्त रूप से तीन लोगों को जाता है ।

घटना इस प्रकार है । अमेरिका में न्यूयार्क के डॉ. मेनाट ने एक निजी अस्पताल खोल रखा था, जिसमें कई प्रकार के रोगों की चिकित्सा होती थी । सन् १९२२ में उन्होंने वहीं के डॉ. मर्फी को अपना सहयोगी बनाया, जो स्वयं भी एक कुशल चिकित्सक थे । डॉ. मर्फी को अध्ययन का बड़ा शौक था । वे पत्र-पत्रिकाओं के पठन-पाठन में बड़ा रस लेते थे इसी क्रम में एक पत्रिका में उन्हें डॉ. विपेल का एक चिकित्सा सम्बन्धी लेख पढ़ने को मिला, जिसमें बताया गया था कि पशुओं पर किए जाने वाले प्रयोगों में कुत्तों से बारम्बार खून लिया जाता है । रक्त की अतिशय कमी के कारण ये एनीमिया रोग के शिकार हो जाते हैं, पर जब उन्हें दूसरे जन्तुओं का यकृत खिलाया जाता है तो वे धीरे-धीरे स्वस्थ हो जाते हैं । इस लेख को पढ़ कर डॉ. मर्फी के मन में विचार उठा कि क्यों न रक्ताल्पता के मरीजों पर यह प्रयोग किया जाय । उस समय उनके चिकित्सालय में घातक एनीमिया के कई रोगी थे । डॉ. मेनाट ने डॉ. मर्फी को उन रोगियों पर प्रयोग करने की अनुमति दे दी । उक्त रोगियों में एक उग्र स्वभाव की महिला भी थी, जो यकृत खाने के लिए तैयार ही न हो रही थी । इस पर परिश्रमपूर्वक यकृत का एक्सट्रैट तैयार किया गया और उस महिला को दवा के नाम पर इसे पिलाया जाने लगा । एक सप्ताह बाद उसके रक्त परीक्षण से व्याधि में सुधार दिखाई पड़ने लगा और फिर बड़ी तेजी से वह स्वास्थ्य लाभ करने लगी । डॉ. मर्फी को आश्चर्य इस बात का हुआ कि प्राणलेवा एनीमिया से ग्रस्त यह महिला स्वस्थ कैसे होने लगी ? चूँकि उस चिकित्सालय में यह इस प्रकार की पहली घटना थी, अतः अचम्भा होना स्वाभाविक ही था । सामान्य रक्ताल्पता वाले मरीजों में लोहे की कमी पूरी कर देने भर से काम चल जाता था और पीड़ित व्यक्ति ठीक हो जाता था पर रोग की जानलेवा स्थिति में इतने मात्र से कोई काम नहीं बनता था, अतः डॉ. मर्फी ने एक्स्ट्रैट का विश्लेषण करने का निश्चय किया । जब इसका परीक्षण किया गया, तो उसमें लौह तत्व के अतिरिक्त विटामिन बी-१२ भी उपस्थित पाया गया । जाँच के रूप में जब विटामिन बी-१२ को ऐसे रोगियों को दिया गया तो परिणाम पहले जैसा प्राप्त हुआ । इस प्रकार जब यह निश्चय हो गया कि उक्त बीमारी में विटामिन बी-१२ ही अपना औषधीय चमत्कार दिखाता है, तो बाद में इसे संश्लेषण द्वारा दवा के रूप में विकसित किया गया । इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए सन् १९२६ में डॉ. मेनाट, मर्फी और विपेल को संयुक्त रूप से चिकित्सा विज्ञान का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया । इस सम्पूर्ण घटना का वर्णन अमेरिका के डॉ. लेविस थॉमस ने अपनी पुस्तक "दि यंगेस्ट साइन्स" में विस्तारपूर्वक किया है ।

एल्युमिनियम के पतले पाइपों का प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों में किया जाता है । यह घर में विद्युत तारों की वायरिंग में भी प्रयुक्त होता है और दूसरे कार्यों में भी काम आता है, पर इसका निर्माण भी सोद्देश्य नहीं, वरन् अनायास ही हो गया । हुआ यों कि न्यूयार्क (अमेरिका) का जॉर्जली नामक एक व्यक्ति कमीज में प्रयुक्त होने वाले बटन बनाने का बड़ा इच्छुक था । इससे पूर्व बटन, प्रायः प्लास्टिक के बनते थे, पर वह धात्विक बटन बनाना चाहता था, अस्तु बाजार में बटन बनाने वाली एक मशीन और एल्युमिनियम की चादर खरीद लाया और बटन बनाना शुरू किया । उसने मशीन में चादरें डालनी शुरू कीं और बटनों के निकलने का इन्तजार करने लगा, पर जॉर्जली के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने देखा कि बटन की जगह मशीन से धात्विक नलियाँ बनकर निकल रही हैं । वस्तुतः मशीन की डाई में कुछ त्रुटि रह गई थी । इसी कारण चपटे बटनों के स्थान पर नलियाँ बनने लगी थीं और इस प्रकार अचानक ही एक नया आविष्कार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो गया । इसी के बाद से धात्विक नलियों का निर्माण व्यापारिक स्तर पर आरम्भ हुआ ।

रंगों की दुनिया भी बड़ी विलक्षण है । कई बार सुन्दर आकर्षक रंग ही हमें तरंगित उत्तेजित करते हैं और कई बार मन इसके कारण वितृष्णा से भर उठता है । पर्व-त्यौहारों एवं खुशी के मौकों पर हम नये व रंगीन कपड़े पहन कर मौज मस्ती मनाते और प्रसन्नता जाहिर करते हैं, पर इतना निश्चित है कि रंग न होता, तो दुनिया रंगीन नहीं होती और मन निराश-उदास ही बना रहता । इस रंग के आविष्कार की कहानी भी कोई कम मनोरंजक नहीं है ।

एक बार हेनरी पारकिन नामक अंग्रेज बालक क्रिसमस की छुट्टियाँ मनाने अपने घर आया । वह अपने घर से दूर एक अन्य शहर में रहकर पढ़ता था और बड़ी खोजी वृत्ति का लड़का था । रसायन शास्त्र के प्रति उसकी विशेष अभिरुचि थी । इसी कारण से अपने घर पर भी एक छोटी प्रयोगशाला उसने बना रखी थी, जिसमें विभिन्न प्रकार के रसायनों की ढेर सारी बोतलें थीं । उसकी इच्छा थी कि वह सिन्थेटिक क्वीनाइन अथवा उस जैसी कोई नयी चीज बनाये । इसीलिए एक दिन उसने कुछ रसायनों को परस्पर मिलाकर उसका सम्मिश्रण तैयार किया एवं कुछ समय के लिए उसे यों ही छोड़ दिया । थोड़े समय उपरान्त तरल रसायनों के मिश्रण वाले फ्लास्क की दीवार में एक काली पर्त चढ़ गई । उसने जब इसे अल्कोहल से साफ करना चाहा, तो उसके सम्पर्क में आते ही काला रंग बदल कर बैंगनी हो गया । यह मात्र एक संयोग ही था, जिसके कारण बैंगनी रंग बनकर तैयार हुआ । यही रंग विश्व का पहला अप्राकृतिक और कृत्रिम रंग साबित हुआ । इस आविष्कार के बाद हेनरी पारकिन की गणना वैज्ञानिकों में होने लगी और इसके उपरान्त उसने विभिन्न प्रकार के न छूटने वाले कृत्रिम रासायनिक रंग तैयार किए । आज इन्हीं रंगों के सहारे टेक्सटाइल मिल में अनेकानेक प्रकार के रंगीन और आकर्षक कपड़े तैयार किए जाते हैं । रंगों की चित्र-विचित्र दुनिया जो जन्मी उसके मूल में यह खोज ही थी ।

इस प्रकार संयोगवश अथवा भूलवश हुई घटनाओं की उपेक्षा न कर, यदि सहज मिल रही उस अन्तःप्रेरणा पर ध्यान दिया जाय, उसका अध्ययन कर कारणों का पता लगाया जाय, तो कई बार नये तथ्यों व सत्यों की जानकारी मिलती है, जो आगे चलकर काफी महत्त्वपूर्ण साबित होती है । ऐसी बात नहीं, कि ऐसे संयोग सिर्फ किन्हीं-किन्हीं के साथ घटित होते हैं । होते तो यह प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हैं, पर हर व्यक्ति उस पर ध्यान नहीं दे पाता, उसकी उपेक्षा कर देता है, फलतः जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि उसे मिल सकती थी, जो यश और गौरव वह प्राप्त कर सकता था, उससे वंचित रह जाता है । ऐसे अवसरों पर जो जिज्ञासा दिखाते एवं खोज-बीन की वृत्ति प्रदर्शित करते हैं, वही श्रेय के भागी बनते हैं । विज्ञान की आज की प्रगति का श्रेय मानवी जिज्ञासा एवं अन्तः से उपजी प्रेरणा को, अन्तर्प्रज्ञा को दिया जाय तो यह अत्युक्ति न होगी ।

अन्दर का आईना साफ करें, भविष्यज्ञान पायें

बात तब की है, जब रूस पर आक्रमण कर नेपोलियन की सेनाएँ तबाही मचा रही थीं । उन दिनों रूसी सेना की कमान जनरल काण्ट टोरस्काफ सँभाले हुए थे । इस मध्य एक दिन जनरल की पत्नी को पूर्वाभास हुआ कि वह किसी सराय के एक कमरे में बैठी हुई हैं । अचानक कमरे में एक वृद्ध व्यक्ति प्रवेश करता है । वह पहचान जाती हैं कि यह उसका पिता है । कुछ क्षण पश्चात् पिता का स्वर उभरता है—"लो, अपने पुत्र को सँभालो । अब इसे तुम्हें ही पालना होगा । जनरल टोरस्काफ स्वर्ग सिधार चुके हैं । फ्रांसीसी सेनाओं ने बोरोडिनो में उनका वध कर डाला है ।"

पूर्वाभास जब कई-कई बार हुआ, तो पत्नी ने टोरस्काफ को इसकी सूचना दी । पहले तो इस पर उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया । बाद में उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा कि क्यों न नक्शे में इस स्थान को खोजा और देखा जाय कि आखिर यह है कहाँ ? पति-पत्नी ने उस क्षेत्र का मानचित्र पलट डाला, पर उक्त स्थान कहीं नहीं मिला ।

दिन बीतने लगे । दोनों के मस्तिष्क से वह घटना विस्मृत हो गई । उधर लड़ाई भीषण होती जा रही थी । इसी मध्य ७ सितम्बर, १८९२ को मास्को के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निकट फ्रांसीसी सेनाओं को जबर्दस्त मुँह की खानी पड़ी । इसमें दोनों पक्षों के काफी सैनिक मारे गए । रूसी सेना का नेतृत्व टोरस्काफ कर रहे थे । उनकी पत्नी तब एक निकटवर्ती सराय में रह रही थीं । जब वह कमरे में अकेली थीं, तभी उसके पिता जनरल के पुत्र की कलाई थामे आये और उसे सौंपते हुए पुत्री से कहा—"जनरल अब इस संसार में नहीं रहे, वोरोड़िनो के युद्ध में मारे गए । अब सन्तान की देखभाल तुम्हें ही करनी पड़ेगी । लो इसे सँभालो ।"

आभास को यथार्थ में परिवर्तित होते देख टोरस्काफ की पत्नी स्तम्भित रह गई । मरणस्थल भी ठीक वही था, जो दोनों को मानचित्र में कहीं नहीं मिला था ।

यह प्रसंग पूर्वाभास का है, जिसमें घटनाएँ यदा-कदा समय से पूर्व ही प्रतिभासित हो जाती हैं और वास्तविकता की इतनी सच्ची जानकारी दे जाती हैं, जिसे देखकर आश्चर्य होता है । प्रारम्भ से ही विज्ञानियों के लिए यह कौतूहल का विषय रहा है कि भौतिक घटनाक्रम मानसिक धरातल पर किस प्रकार उतर आते हैं और समय से पहले उनका प्रकाशन कैसे होता है ? इस पर लम्बे काल से शोध-अनुसन्धान होते रहे हैं । उनसे प्राप्त तथ्यों से यह सुनिश्चित हो गया है कि घटनाएँ जब घटती हैं, तो वह उनकी प्रथम अभिव्यक्ति नहीं होती । इसे प्रत्यक्षीकरण कह सकते हैं, पर वास्तविक प्रकटीकरण तो काफी समय पूर्व हो जाता है । यह सत्य है कि तब वह अगोचर स्तर का अव्यक्त और अप्रत्यक्ष बना रहता है, किन्तु घटनाक्रम का गर्भाधान तभी हो जाता है, ऐसा विशेषज्ञों का मत है । जिस प्रकार बीज वपन के साथ ही वह वृक्ष नहीं बन जाता, दूध को जमकर दही बनने और कर्म के फल रूप में परिणत होने में आवश्यकतानुसार छोटा-लम्बा समय लगता है, ठीक उसी प्रकार घटनाक्रमों की वास्तविक सत्ता की शुरुआत उसके इन्द्रियगोचर बनने से काफी समय पूर्व हो जाती है । इसे अब विज्ञानवेत्ता भी भली-भाँति स्वीकारने लगे हैं । उनका तर्क है कि यदि ऐसा नहीं होता, तो समय से पहले उनका आभास होना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं होता । दूसरे शब्दों में कहें तो हर व्यक्ति, वस्तु और घटना की अपनी एक सूक्ष्म अनुकृति होती है । मानसिक धरातल पर यदा-कदा सत्ताएँ अवतरित होकर समय से पूर्व उनकी जानकारी देती हैं, इसे स्वीकारने में वैज्ञानिकों को अब कोई आपत्ति नहीं रही ।

उपलब्ध तथ्यों से यह भी विदित हुआ है कि कोई भी घटना तरंग के रूप में घटित होती है । उसे प्रयासपूर्वक मानसिक स्तर पर ग्रहण किया जा सकता है अथवा मानसिक बिम्ब के रूप में उक्त घटनाक्रम को एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक संचारित संप्रेषित किया जा सकता है । वैज्ञानिकों ने इस तथ्य को पकड़ा और इसी पृष्ठभूमि पर अनुसंधान को आगे बढ़ाया । उन्होंने देखा कि दिमाग जब अधिक शान्त और अनावश्यक कल्पनाओं से मुक्त जैसी स्थिति में रहता है, तो सम्प्रेषण की क्रिया अधिक सरल और सफल होती है, जबकि सक्रियता की स्थिति में वह मन्द हो जाती है । इसे देखते हुए शोधकर्मी विज्ञानवेत्ताओं ने एक प्रयोग किया । उन्होंने दो व्यक्तियों में से एक के सो जाने पर दूसरे को पहले तक कोई ऐसी सूचना मानसिक स्तर पर भेजने को कहा, जिसकी जानकारी पहले को नहीं थी । व्यक्ति जब प्रगाढ़ निद्रा में था, तो प्रयोग सम्पन्न हुआ । उसे मध्य रात्रि में उठकर अपने अभिन्न मित्र को स्मरण करने के लिए कहा गया । अनेक बार सन्देश देने के पश्चात् सम्प्रेषण रोक दिया गया । दूसरे दिन जब इस सम्बन्ध में उससे पूछ-ताछ की गई, तो उसने स्वीकार किया कि मध्यरात्रि में अकस्मात् उसकी नींद खुल गई और न जाने क्यों अपने अमुक दोस्त की याद आने लगी ।

शोधार्थियों ने इस दौरान यह भी अनुभव किया कि यदि सम्प्रेषण उच्च मानसिक धरातल पर सम्पादित नहीं हुआ हो, तो सन्देश अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो पाता । दूसरी ओर सूचना ग्रहण करने वाला भी समान भूमिका में नहीं हुआ तो भी जानकारी अग्राह्य स्तर की बनी रहती है । इसलिए पूर्वाभास अक्सर शान्त मानसिक अवस्था के दौरान ही होते देखे जाते हैं ।

अनेक वर्ष पूर्व रूसी परा मनःशास्त्रियों ने इस सन्दर्भ में एक अत्यन्त रोचक प्रयोग किया । अलमाअता के अनुसंधानकर्त्ताओं ने इसके लिए कई ऐसी महिलाओं का चयन किया, जिनके बच्चे एक से दो वर्ष के थे । सभी को एक बड़े कमरे में इतनी दूरी पर रखा गया कि उनकी दृष्टि से परे दूरस्थ कमरे में स्थित बच्चों की आवाज भी उन्हें सुनाई न पड़े । इसके पश्चात्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हर बच्चे के शरीर से थोड़ा-थोड़ा रक्त निकाला गया । ऐसा करते समय माताओं पर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि रखी गई और उनकी गतिविधियों का गहन अध्ययन किया गया । अध्येता यह देखकर चकित रह गए कि माँ और शिशु एक अदृश्य सम्पर्क सूत्र से परस्पर जुड़े हुए थे । जिस भी बच्चे का खून लिया गया, उसकी माता एक अजीब बेचैनी अनुभव करने लगी । कई तो उठकर टहलने भी लगीं । जब उनसे इस अनुभव के बारे में पूछा गया, तो सबने इसे स्वीकार किया कि वह किन्हीं अज्ञात कारणों से इस दौरान परेशानी महसूस करती रहीं । क्या यह परेशानी उनकी सन्तानों को उनसे पृथक कर दिए जाने के कारण थी ? सभी ने इसके उत्तर में यही कहा—'शायद नहीं ।'

इजरायल की एक संस्था 'साइकिकल रिसर्च सोसायटी' इस विषय में लम्बे काल तक शोध करती रही है । उसका कहना है कि माँ-बाप और बच्चे के बीच प्रायः चेतनात्मक स्तर पर सन्देशों का आदान-प्रदान होता रहता है । उसके वैज्ञानिकों ने वृक्ष-वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं पर भी इस बारे में अध्ययन किए हैं । उनका विचार है कि वे भी इस प्रकार के सूक्ष्म संकेत छोड़ और ग्रहण कर सकते हैं । इसे पकड़ सकना पूरी तरह ग्रहीता की क्षमता पर निर्भर है । वह यदि उच्च भाव-भूमिका वाला हुआ, तो न सिर्फ उन संकेतों को प्राप्त कर सकता है, वरन् उन्हें समझ सकना भी उसके लिए सरल हो जाता है, ऐसा उनका मन्तव्य है ।

इंग्लैण्ड के लिवरपूल विश्वविद्यालय के शोधकर्मी जी. डब्ल्यू. ब्लेक ने अपने प्रयोग के लिए दो किशोर बालिकाओं का चयन किया और यह जानना चाहा कि इनमें यह क्षमता किस सीमा तक है । उन्हें दो पृथक कमरों में रखा गया और कुछ परिचित व्यक्तियों और वस्तुओं के चित्र दिए गए । कक्षों में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी कि वे एक-दूसरे से सम्पर्क साध सकें । प्रयोग आरम्भ करने से पहले उन्हें यह भली-भाँति बता दिया गया कि करना क्या है ? दी गई तस्वीरों में से किसी एक पर ध्यान केन्द्रित कर उसकी मानसिक छायाकृति टेलीपैथी के माध्यम से दूसरे तक पहुँचाने की बात उन्हें बता दी गई । प्रयोग के पश्चात् दोनों के मध्य मानसिक सम्पर्क और सन्देशों का आदान-प्रदान होता पाया गया । ब्लेक का इस सम्बन्ध में कहना था कि उक्त कौशल बड़ी आयु के व्यक्तियों की तुलना में कम उम्र के लोगों, किशोरों और बालकों में अधिक बढ़े-चढ़े परिमाण में होता है ।

अनुसंधानकर्त्ताओं का कहना है कि टेलीपैथी और पूर्वाभास एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं । एक में ग्रहणकर्त्ता को लक्ष्य करके सूचनाएँ सम्प्रेषित की जाती हैं और प्रेषित सन्देश को प्रयासपूर्वक पकड़ना पड़ता है, जबकि दूसरे में लक्ष्य अविज्ञात होता है । एक, वर्त्तमान क्रिया की वर्तमान में जानकारी देता है, दूसरा भविष्य को वर्तमान की धरातल पर ला उतारता है । टेलीपैथी द्वारा कोई भी किसी के साथ प्रयासपूर्वक सम्पर्क स्थापित कर सकता है । पूर्वाभास में उच्च भाव-भूमि की अवस्था में ही भवितव्यता ज्ञान-पटल पर अवतरित होती हैं । एक आयास की फलश्रुति है, जबकि दूसरा, अनायास सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया ।

इतना जान लेने के उपरान्त भविष्य के गर्भ में छिपी जानकारियों को करतलगत करने की प्रक्रिया स्पष्ट हो जाती है । अन्तःकरण यदि तनिक भी स्वच्छ हुआ, तो भावी घटनाक्रम इसमें स्वतः ही उतरते और ग्रहीता को महत्त्वपूर्ण सूचना देकर, लाभान्वित करते रहते हैं । इस प्रकार पूर्वाभ्यास वस्तुतः अन्तराल के परिष्कार के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा संयोग है । जो परिमार्जन के इस उपक्रम को जिस अनुपात में अपनाते हैं, उतने ही अंशों में भविष्य-ज्ञान के अधिकारी बनते हैं ।

जगायें तो सही इस प्रसुप्त जखीरे को

रेडियो जब तक बन्द पड़ा रहता है, तब तक न उससे गीत सुनाई पड़ते हैं, न संगीत । खबरें भी नहीं आतीं, किन्तु जब वह चालू होता है, तो सूक्ष्म तरंगों को पकड़-पकड़ कर श्रव्य बनाने लगता है । हमारा मस्तिष्क भी रेडियो जैसा है । जब उसके अन्दर के सूक्ष्म संस्थान जागृत होते हैं, तो अदृश्य और अविज्ञात स्तर की घटनाएँ भी सुविज्ञात बनने लगती हैं । यदा-कदा जब ऐसा अकस्मात् होता है, तो उसे ही लौकिक जगत "पूर्वाभास" के नाम से पुकारता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घटना १९५८ की है । पेंसबरी हाइट्स फिलाडेल्फिया की हैजल लैम्बर्ट अपनी ड्यूटी से घर जा रही थी । आज भी वह उसी रास्ते से गुजर रही थी जिससे होकर अक्सर जाया करती थी । मोरिसविले पहुँचने पर डेलमूर एवेन्यू में उसने कार रोकी और अपनी एक सहकर्मी को उतारा । इसके बाद उसने बाजार जाने का विचार बनाया । जैसे ही उस रास्ते पर वह कुछ दूर आगे बढ़ी, उसके मन में अचानक एक तीव्र भाव उत्पन्न हुआ, मानो कुछ गलत हो रहा हो । इसके पश्चात् अपनी कार दूसरी ओर मोड़ दी और गाड़ी तेज रफ्तार से चलाने लगी । ऐसा क्यों किया ? उसे स्वयं भी नहीं पता । गाड़ी चली जा रही थी । जल्द ही वह हिलसाइड स्ट्रीट के चौराहे पर पहुँच गई । यह सड़क एक नहर के किनारे-किनारे दूर तक चली गई थी । लैम्बर्ट ने ज्यों ही चौराहे से दूसरी ओर नजर दौड़ायी, भयभीत हो उठी । एक दो वर्षीय बालक नहर के बर्फ युक्त किनारे से लटका हुआ था । उसके हाथ छूटने या बर्फ के टूटने से वह नहर में गिर कर मर सकता था । गाड़ी सीधे उस बालक के निकट ले गई, किन्तु दुर्भाग्यवश उससे बाहर आने से पूर्व ही कार बर्फ में धँस गई, जिससे उसका निकलना सम्भव हो गया । वह जोर-जोर से चिल्लाने और हॉर्न बजाने लगी । आवाज सुनकर जॉर्ज टेलर और उसका चौदह वर्षीय बालक सहायतार्थ पहुँचे । दोनों ने मिलकर पहले उस बालक को बचाया, फिर फँसी गाड़ी को उन्होंने बाहर निकाला । अब लैम्बर्ट को समझ में आया कि क्यों उसे इस ओर आने की प्रेरणा मिली ।

ऐसी ही एक घटना का उल्लेख विण्डसर ऑनटेरियो ने अपनी पुस्तक "प्रीमोनीशन" में किया है । प्रसंग मार्च १९५९ का है । चालीस वर्षीय चार्ल्स बोगार्ड्स लॉस एंजिल्स में एक पुलिस अफसर के पद पर कार्यरत थे । एक रात वे अपने साउथ सिमरन स्ट्रीट स्थित मकान में अपनी पत्नी के साथ बीमा सम्बन्धी कुछ दस्तावेज देख रहे थे । अचानक उन्होंने कागजों को एक ओर सरकाते हुए कहा—"मिल्डरेड ! न जाने क्यों मुझे ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे कुछ बुरा होने वाला है । यदि सचमुच ही मेरे साथ कोई दुर्घटना घटी, तो तुम धीरज से काम लेना, घबराना मत ।"

इतना कह कर बोगार्ड्स सो गया । पत्नी भी सो गई । तीन-चार दिनों तक सब कुछ सामान्य रहा । असामान्य कुछ भी घटित न हुआ । उस दिन की बात दोनों भूल गए ।

एक दिन बोगार्ड्स एवं एक अन्य अफसर अपनी रूटिन ड्यूटी पर थे । ११ बजे दिन तक सब कुछ ठीक-ठाक था, तभी अचानक उन्हें एक रेडियो सन्देश मिला । कहा गया कि वे पश्चिमी वाशिंगटन में बोलीवार्ड अविलम्ब पहुँचे । सूचना थी कि वहाँ दो बन्दूकधारी लूट-पाट मचा रहे हैं । बोगार्ड्स और साथी अफसर कार से तत्काल उक्त स्थल पर पहुँचे । पुलिस को देखते ही दोनों दस्यु भागने लगे । बोगार्ड्स ने एक का पीछा किया किन्तु वे अभी थोड़ी ही दूर बढ़े थे कि डाकू ने पीछे मुड़ कर बन्दूक चला दी । गोली मस्तिष्क में लगी और वे वहीं लुढ़क गए । इस प्रकार बोगार्ड्स का पूर्वाभास अन्ततः सत्य सिद्ध हुआ ।

मिलता-जुलता एक अन्य प्रकरण कैलिफोर्निया का है । पॉल स्ट्रैटस, मोडेस्टो, कैलिफोर्निया में ड्यूटी पर थी । अकस्मात् उसे ऐसा लगा, जैसे घर पर कुछ गड़बड़ होने वाली है । वह इससे व्यग्र हो उठी । पिता को फोन किया और अपने तेरह वर्षीय पुत्र का समाचार जानना चाहा । पिता तुरन्त लड़की के घर पहुँचे, किन्तु तब तक विलम्ब हो चुका था । निकी अपनी साइकिल में भरी बन्दूक लिए कहीं चला जा रहा था । न जाने कैसे वह हाथ से फिसल कर नीचे गिर पड़ी । गोली ऊपर की ओर चली और उसकी छाती को भेदते हुए निकल गई । वहीं उसके प्राण छूट गए । पॉल की आशंका इस प्रकार सही साबित हुई ।

पूर्वाभास की एक ऐसी ही और घटना कैलिफोर्निया की है । क्लीफोर्ड मैक नामक एक व्यक्ति ने अब्राहम इजर को अपने घर पर दोपहर के खाने में निमन्त्रित किया । भोजन हो चुकने के उपरान्त दोनों वार्तालाप में व्यस्त हो गए । मैक प्रकाशक था और अब्राहम भी ऐसा ही कोई धन्धा करता था । मैक की पत्नी वहाँ से ये कहते हुए उठ पड़ी कि उसे स्नान की इच्छा हो रही है । दोनों अपने व्यवसाय से सम्बन्धित बातचीत में पुनः तल्लीन हो गए । जब करीब बीस मिनट बीत गए, तो इजर को न जाने क्यों यकायक ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैक की पत्नी किसी संकट में है । वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिल्ला उठा और मैक से बाथरूम का दरवाजा तोड़ डालने का आग्रह करने लगा । अब्राहम में अचानक आये इस बदलाव से मैक भौंचक्का रह गया, सोचने लगा कहीं वह पागल तो नहीं हो गया ।

चिल्लाना जारी था । अब्राहम बार-बार यही कह रहा था कि दरवाजा तुरन्त तोड़ डालो, किन्तु जब उसकी चेतावनी का कोई असर पड़ता नहीं दिखाई दिया, तो उसने पुलिस बुलाने की धमकी दी । अब मैक कुछ गम्भीर हुआ । दोनों स्नानगृह के निकट पहुँचे । वह अन्दर से बन्द था । मैक ने आवाज लगाई, पर कोई जवाब नहीं मिला । उसने दुबारा पुकारा, किन्तु इस बार भी कोई उत्तर न मिला । अब मैक को भी स्थिति की गम्भीरता नजर आयी । उसने धक्के मारकर दरवाजा तोड़ डाला । अन्दर उसकी पत्नी बेहोश पड़ी थी । उसका सिर पानी के टब के भीतर था । दोनों ने मिलकर उसे उठाया और अविलम्ब अस्पताल ले गए, जहाँ वह कुछ घण्टे के उपचार के बाद पुनः स्वस्थ हो गई ।

यहाँ कुछ कतिपय घटनाओं की चर्चा द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि जब सामान्य स्तर और अवस्था में काया इतनी अद्‌भुत हो सकती है, तो उसके दिव्य जागरण में वह कितनी असाधारण होगी, इसका अन्दाज लगाया और उन अपरिमित सम्भावनाओं को जाना जा सकता है जो प्राकृतिक जागृति की स्थिति में आने पर सम्भव हो जाती है । शरीर में अलौकिक अवतरण सम्भव है, हर किसी के द्वारा, हर कहीं भी, कुछ को यह सहज सुलभ हो जाता है, कुछ को साधना पुरुषार्थ द्वारा ।

अन्तर्जगत के सन्देशवाहक पूर्वाभास

पूर्वाभास का इतिहास मानवीय अस्तित्व जितना पुराना है और आये दिन उनमें एक से एक विलक्षण अध्याय जुड़ते रहते हैं । इटली निवासी अल्बर्टो अस्करी, जिन्हें तेज कार चलाने की ग्राण्ड प्री कार प्रतियोगिता के वर्ष १९५३ तथा १९५४ में सर्वप्रथम आने का पुरस्कार मिल चुका था, के जीवन में भी इस तरह का लोमहर्षक क्षण आया जब उनकी मृत्यु उन्हें पूर्व ही आकर दर्शन दे गई । १९५५ में जिन दिनों वह पुनः रेस में भाग लेने की तैयारी कर रहे थे । उन्हें २० वर्ष पुरानी ८ सितम्बर १९३५ की एक घटना याद हो आयी । जब अल्बर्टो १६ वर्ष के बालक थे । उन दिनों कार-रेस में उनके पिता एण्टोनियो अस्करी शीर्ष स्थान पर थे । उस वर्ष की प्रतियोगिता में पिता के साथ कार में पुत्र अल्बर्टो भी दौड़ रहे थे । जिस समय कार वायलोन का घना जंगल पार कर रही थी, एकाएक एक काली बिल्ली ने रास्ता काटा । बिल्ली को बचाने के लिए एण्टोनियो ने तेज स्टीयरिंग काटा; किन्तु तीव्र गति से चल रही गाड़ी नियन्त्रण खो बैठी और एक पेड़ से जा टकराई । ऐण्टोनियो का घटनास्थल पर ही देहावसान हो गया । न जाने क्यों उसी क्षण अल्बर्टो जो अब तक सकुशल था; को एकाएक ऐसा आभास हुआ कि २० वर्ष बाद वह ३६ वर्ष का होगा, उसकी भी इसी तरह मृत्यु हो जायेगी । यह आभास कुछ ही क्षणों में विश्वास में बदल गया ।

दुर्घटना के चार दिन पूर्व जब एकाएक अल्बर्टो की तबियत खराब हुई तब तो उनका विश्वास कतई परिपुष्ट हो गया क्योंकि उनके पिता को भी ठीक चार दिन पूर्व तबियत बिगड़ी थी । उसका मन रेस में भाग लेने का नहीं कर रहा था, किन्तु उसके प्रशिक्षक भूतपूर्व काररेस चैम्पियन लुई बिल्लोरसी ने उन्हें आश्वस्त किया-ऐसा कुछ नहीं होगा । उन्होंने इस अन्धविश्वास जैसी भीति के लिए अल्बर्टो को फटकारा भी; किन्तु नियति तो जैसे अभेद्य हो, अल्बर्टो ने नियत समय पर प्रतियोगिता के लिए अन्तिम अभ्यास के लिए अपनी कार स्टार्ट की । बिल्लोरसी की कार उसके पीछे थी । जैसे ही कार वायलोन के जंगल में उस स्थान पर पहुँची ठीक वही २० वर्ष पूर्व का दृश्य-एक काली बिल्ली ने रास्ता काटा । अल्बर्टो ने हर चन्द बचने की कोशिश की; किन्तु कार एक दैत्याकार पेड़ से जा टकराई और अल्बर्टो ने वहीं अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी ।

इस घटना से दैवी विधान की निश्चितता सिद्ध की जा सकती है । वस्तुतः बात ऐसी नहीं है । किसी स्थान पर आग लगने से पूर्व धुआँ निकलता है । वह एक प्रकार से इस बात का संकेत होता है कि अभी समय है, पानी डाल कर आग लगने के सम्भावित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संकट को टाला जा सकता है; किन्तु कोई ध्यान न दे तो ईश्वर-विधान का क्या दोष ।

पूर्वाभास की घटनाओं को वस्तुतः पूर्व दैवी चेतावनी के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए । हमारे बाह्य जगत की अपेक्षा, अन्तर्जगत की शक्ति और सक्रियता अदृश्य होकर भी कहीं अधिक प्रकार और प्रभाव पूर्ण होती है । मस्तिष्क में क्या विचार चल रहे होते हैं, यह दिखाई नहीं देता पर क्रिया-व्यापार की समस्त भूमिका मनोजगत में ही बनती है । किसी व्यक्ति को किसी के मन की बात का पता चल जाए तो प्रकारान्तर से वह भी लाभ ले सकता है । पूर्वाभासों को इसी रूप में लिया जा सके तो अनिष्टकारी परिस्थितियों से बचना और लाभदायक सम्भावनाओं की तैयारी करना किसी के लिए भी सम्भव हो सकता है ।

आत्मा के सनातनत्व का प्रमाण पूर्वाभास

सैम बेन्जोन की घरों में रंग-रोगन करने वाले एक पेण्टर मार्टिन से जान-पहचान थी । एक दिन वह अपने ऑफिस में बैठे हुए कुछ काम कर रहे थे । जैसे चलचित्र में पर्दे पर कहानी के दृश्य एक पर एक उभरते हुए चले आते हैं, विचारों का फिल्म में एकाएक ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ जैसे मार्टिन किसी दीवार की पेण्टिंग करते समय सीढ़ियों से लुढ़क कर गिर पड़ा है, उसके सारे शरीर में पेण्ट के से धब्बे पड़े दिखाई दिए ।

यह तो वैज्ञानिक भी जानते हैं कि मस्तिष्क के कुछ भाग बड़े सूक्ष्म और अविज्ञात हैं । मस्तिष्क में ज्ञान क्षेत्र (सेन्सरी एरिया), दृश्य क्षेत्र (ऑप्टिक एरिया) जैसे स्थान हैं, जहाँ आँखों की रेटिना से होकर पहुँचते और मस्तिष्क को उनकी जानकारी देते रहते हैं पर वे यह नहीं जान पाये कि विचारों के द्वारा स्वप्न और जागृत अवस्था में जो चित्र मस्तिष्क में बना करते हैं, उनका सम्बन्ध किन परमाणुओं से है और मस्तिष्क के किन नाभि-केन्द्रों (न्यूक्लिक सेण्टर्स) से है । सम्भव है आगे ऐसी खोजें हों, जिनसे विश्व ब्रह्माण्ड में फैली आत्म-चेतना के रहस्यों पर प्रकाश पड़े पर अभी इस तरह की अनुभूतियाँ ही क्या कम हैं, हम चाहें तो इनको ही आत्मा के अस्तित्व का प्रमाण मान सकते हैं ।

यदि ऐसा न होता तो यह पूर्वाभास सत्य क्यों होते । बेन्जोन के मस्तिष्क में इस तरह का दिवास्वप्न आये तीन दिन हुए थे कि उसे समाचार मिला सचमुच मार्टिन मौहल्ले के ही एक मकान की रंगाई करते समय फिसल कर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई है ।

आत्मा सनातन ही नहीं पूर्ण शक्ति है । भारतीय तत्व दर्शन ने पग-पग पर उसे प्राप्त करके अपने जीवन को परिपूर्ण बनाने की प्रेरणा इसलिए दी है कि मनुष्य शरीर जैसी बहुमूल्य वस्तु पाकर, उसे व्यर्थ न जाने दे, यदि इस शरीर से आत्मा को प्राप्त न किया जा सका तो और कोई उपाय और जन्म संसार में नहीं हैं, जो इस उद्देश्य में सहायक हो सके । शास्त्रकार इसीलिए कहते हैं—"आत्मा बारे दृष्टव्यो, श्रोतव्यो निदिध्या·····हे मनुष्यों ! आत्मा को देखो, आत्मा को सुनो और मनन, चिन्तन द्वारा आत्मा को ही प्राप्त करो ।"

द्वाविमौ पुरुषौलोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥

—गीता १५।१६

हे अर्जुन ! इस संसार में नाशवान् और अविनाशी दो प्रकार के तत्व हैं, सब प्राणियों में शरीर तो नाशवान हैं पर जीवात्मा अविनाशी तत्व है ।

पाश्चात्य दार्शनिकों और विज्ञान की प्रगति के कारण हम आत्म-तत्व की उपेक्षा करते हैं और इसी कारण अलौकिक सत्यों की प्राप्ति नहीं कर पाते । यह प्रमाण हमें इस बात के लिए विवश करते हैं कि अव्यक्त और अदृश्य को भी जान समझ लेने की क्षमता का रहस्य क्या है ।

एक रात सैम बेन्जोन घर पर सो रहे थे । एकाएक उनकी नींद टूटी उन्हें ऐसा लगा कि कहीं से किसी के जलने की दुर्गन्ध आ रही है । अपनी धर्म-पत्नी को जगाकर उन्होंने पूछा—"देखना चाहिए कहीं कुछ जल तो नहीं रहा ।" पति-पत्नी ने सारा घर ढूँढ़ लिया कहीं कोई आग या जलती हुई वस्तु नहीं मिली । बेन्जोन ने कहा—"मुझे ऐसा लगता है, दुर्गन्ध तुम्हारी माँ के घर से आ रही है ।"

दूरदर्शन, दूर-भाष के यन्त्र बन गए हैं सो इन प्रसंगों में आक्षेप हो सकता है पर अभी ऐसी मशीन नहीं बनी जो किसी भी स्थान में फैली हुई दुर्गन्ध या सुगन्ध की दूरानुभूति करा सके । पत्नी ने बिदक कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा—"पागल हुए हो, मेरी माता जी का घर आठ मील दूर है, इतनी दूर से कोई दुर्गन्ध आ सकती है ।" सैम बेन्जोन ने थोड़ा जोर देकर कहा—"तुम जानती हो मेरा आत्म-विश्वास प्रायः अचूक होता है । देखो टेलीफोन करके ही पूछ लो सचमुच कोई बात तो नहीं ।"

पत्नी ने रिंग बजाई उधर से कोई आवाज नहीं आयी किसी ने टेलीफोन नहीं उठाया । लगभग १५ मिनट तक प्रयत्न करने के बाद भी जब उधर से किसी ने टेलीफोन 'रिसीव' (उठाया) नहीं किया, तो पत्नी ने झिड़ककर कहा—"सब सो रहे होंगे, व्यर्थ ही परेशान किया । पर तभी उधर से 'हलो' की आवाज आयी—माँ ने बताया घर के पिछले हिस्से में आग लग गई थी, पड़ोसियों की सहायता से उसे बुझाया जा सका । इस घटना का उन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि फिर उन्होंने आत्मा के अस्तित्व से कभी इन्कार नहीं किया । वे रात भर इस विलक्षण तत्व के बारे में सोचती रहीं । यह तो यूरोप था जहाँ लोगों की जिज्ञासाएँ उठती हैं पर उन्हें समाधान नहीं मिलता है और हम भारतीयों का दुर्भाग्य यह है कि योग और आत्म-तत्व की शोध से हमारा सारा आर्ष वाङ्मय भरा पड़ा है पर हमारे मन में कभी इस अविनाशी तत्व के प्रति जिज्ञासाएँ ही जागृत नहीं होतीं ।

कोई प्रश्न कर सकता है कि सैम बेन्जोन कोई योगी नहीं था उसने कोई साधना नहीं की थी, फिर भी उसे ऐसी सूक्ष्म अनुभूतियाँ क्यों होती थी, ऐसा प्रायः सबके साथ क्यों नहीं होता । एक ही उत्तर है—आत्मिक पवित्रता और पूर्वजन्मों के संस्कार । यह आवश्यक नहीं कि सूक्ष्म शक्तियाँ इस जीवन की साधना का ही परिणाम हों, वह पूर्वजन्मों की भी हो सकती हैं । इसकी पुष्टि स्वयं सैम के जीवन से होती है । उसके परिवार में और किसी भी व्यक्ति में ऐसा गुण नहीं था पर सैम बेन्जोन लिखते हैं कि—"मेरे पुत्र में सम्भवतः वंशानुक्रम से यह गुण आ गए थे । उसका नाम टेड था । टेड मेरी आत्मा की आवाज को अच्छी तरह पकड़ लेता था ।" इसके उन्होंने कई उदाहरण भी दिए हैं ।

एक दिन बेन्जोन जैसे ही घर पहुँचे, उन्हें ऐसा लगा कि 'टेड' किसी तालाब में डूब रहा है । उसके हाथ-पाँव दर्द कर रहे हैं । उन्होंने तीव्र शक्ति से अपनी भावनाओं से ही सन्देश दिया, पीठ के बल लेट जाओ । इसके बाद उसे ऐसा लगा 'टेड' उल्टा हो गया और धीरे-धीरे बाहर आ गया । बाहर निकलकर वह साइकिल उठा रहा है । यह दृश्य देखते-देखते तक बेन्जोन घबड़ा गया और वह तालाब की ओर भागा । मार्ग में ही टेड मिल गया, उसने बताया कि जब वह स्नान कर रहा था उसके पेट और पाँव में एकाएक मरोड़ उठा । वह डूबने ही वाला था कि किसी ने कहा—"पीठ के बल लेट जाओ ।" मैंने वैसा ही किया और इससे मुझे दम मिल गया, मैं धीरे-धीरे किनारे निकल आया ।"

प्रत्येक जीव में व्याप्त चेतना एक ही है, जन्म मरण से रहित इस तत्व का न जन्म होता है, न नाश—

न जायते म्रियते वा कदाचि—
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।

—गीता २।२०

अर्थात्—यह आत्मा किसी काल में भी न जन्म लेती है और न ही मृत्यु को प्राप्त होती है । ऐसा भी नहीं कि वह कभी न रहती हो, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और सनातन है, शरीर के नाश हो जाने पर भी इसका नाश नहीं होता ।

गहराई से विचार करें तो ऊपर दी हुई घटनाएँ इसी सत्य का प्रतिपादन करती प्रतीत होंगी । जागृत अवस्था में यों पूर्वाभास का और कारण भी क्या हो सकता है ?

हमारी प्रसुप्त एवं जागृत अतीन्द्रिय क्षमताएँ

देखने और छूने पर मनुष्य की काया एक ही आवरण से आच्छादित दीखती है, पर वस्तुतः ऐसा है नहीं । शवोच्छेद करने पर उनके अनेक घटक अपनी-अपनी जगह पर अवस्थित और एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध दीख पड़ते हैं । अस्थि-पंजर के ढाँचे के साथ लिपटी हुई अनेकों इकाइयाँ अपना-अपना काम करती दिखाई पड़ती हैं । साँसें चलने तक यह ढाँचा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवित रहता है और हृदय एवं मस्तिष्क की गतिविधियाँ बन्द होते ही यह समझ लिया जाता है कि मृत्यु हो गई । तब काया को येन-केन प्रकारेण नष्ट करने की आवश्यकता पड़ती है अन्यथा उसके भीतर से कृमि उत्पन्न होकर उसे खाते और समाप्त कर देते हैं ।

यह प्रत्यक्ष काया की बात हुई । इसी के अन्दर सूक्ष्म शरीर है जिसका आरम्भ माता की उदरदरी में आरम्भ होता है और श्मशान भूमि में उसकी समाप्ति हो जाती है, पर बात इतने तक सीमित नहीं है । पुरातन मान्यताओं के अनुसार मरणोत्तर जीवन बना रहता है । भूत-प्रेत, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म आदि का अस्तित्व यह बताता है, कि प्रत्यक्ष काया का अस्तित्व समाप्त हो जाने पर परोक्ष काया का अस्तित्व बना रहता है । जीवन काल में भी स्वप्न देखने के सम्बन्ध में कभी यही मान्यता थी कि शरीर से बाहर निकलकर सूक्ष्म शरीर कहीं परिभ्रमण के लिए निकल जाता है और वहाँ जो कुछ देखता है, उसे स्मृति के सहारे आँख खुलने पर बताता है । यह मान्यताएँ पुरानी हुईं और किम्बदन्ती के रूप में प्रचलित हैं फिर भी पता चलता है कि अस्थि पंजर के अतिरिक्त किसी सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व की मान्यता चिरकाल से चली आ रही है । मरण के उपरान्त परिवार वालों द्वारा जो क्रिया-कृत्य किए जाते हैं, वे उस उद्देश्यपूर्ण शरीर की सत्ता को मान्यता देते हुए ही किए जाते हैं ।

योगाभ्यास द्वारा सूक्ष्म शरीर को विकसित, सशक्त एवं क्रियान्वित करने के कतिपय विधि-विधान हैं । उसके आधार पर इस प्राण सूक्ष्मता के अन्तर्गत कोई भेद-प्रभेद भी बताये जाते हैं । मौटे-तौर पर इन्हें सूक्ष्म और कारण कहा जाता है । त्रिविध शरीरों के अतिरिक्त एक और सिद्धान्त है जिसे पंचकोश कहते हैं । उन्हीं को थोड़े भेद-उपभेद से षट्चक्र प्रकरण कहा गया है । कुण्डलिनी विज्ञान में षट्चक्र की प्रक्रिया आती है । इस विभाजन के आधार पर क्षमताओं का विभाजन भी है और जिस क्षमता से जो प्रयोजन सधता है उसका विवरण भी । अभिवर्धन और उपयोग की कार्य-पद्धति को सूत्र रूप में वैदिक एवं तान्त्रिक विधि-विधानों ने अपने-अपने ढंग से बताया है । अनुभवियों की गुरुपरम्परा के आधार पर साधक की मनःस्थिति तथा उपयोग से सम्बन्धित परिस्थितियों का ध्यान रखकर चलने पर यह पगडण्डियाँ गुरुपरम्परा भी बन जाती हैं । कभी कोई एक राजमार्ग भी रहा होगा, पर इन दिनों देश, काल, पात्र का ध्यान रखते हुए अपनाये गए अनुभवों और हस्तगत हुए परिणामों को ध्यान में रखते हुए काम चलाने का प्रचलन है ।

दूसरा मार्ग परामनोविज्ञान का है उसके अन्तर्गत अद्भुत घटनाओं की प्रामाणिकता एवं सम्भावना ही जाँची जाती है । यह सब किस साधना या प्रक्रिया के आधार पर सम्भव हुआ इस ओर अधिक ऊहा-पोह नहीं हुआ है । परामनोविज्ञान इस अन्तर के सम्बन्ध में मौन है । उसे विलक्षणताओं से सम्बद्ध माना जाता है । इन्द्रियजन्य सामान्य क्रिया-कलाप का व्यतिक्रम करके जो अतीन्द्रिय क्षमताएँ यदा-कदा—जहाँ-तहाँ दीख पड़ती हैं, उन्हीं के सम्बन्ध में यह टोह ली जाती है कि वह घटनाक्रम वास्तविक है या अवास्तविक ।

अवास्तविक अर्थात् इन्द्रजालिक । जादूगरी, हथफेरी, भ्रम जंजाल, कइयों द्वारा मिल-जुलकर रचा गया षड्यन्त्र । इस आधार पर भी ऐसे घटनाक्रम गढ़े जा सकते हैं जो लोगों को दैवी चमत्कार जैसे प्रतीत हों, पर वस्तुतः उनके पीछे छद्म चातुर्य ही काम कर रहा है । परामनोविज्ञान का उद्देश्य है अतीन्द्रिय स्तर के दीख पड़ने वाले क्रिया-कलापों को वैज्ञानिकों, बुद्धिवादियों एवं छिद्रान्वेषियों के तत्वावधान में सत् असत् का निर्णय करना । अभी परामनोविज्ञान इतनी ही भूमिका निभा रहा है । आगे चलकर उसे यह देखना पड़ेगा कि यदि वस्तुस्थिति के बारे में निश्चिन्तता हो जाये, तो फिर अगले कदम में यह देखा जाये कि ऐसे अद्भुत घटनाक्रम क्योंकर घटित होते हैं और उनकी पृष्ठभूमि में विज्ञान के कौन से नियम काम करते हैं ।

भौतिक विज्ञान के अन्तर्गत अभी तक जो नियम और विधान हस्तगत हुए हैं, उनकी प्रामाणिकता परख ली गई है, पर यह नहीं समझा जाना चाहिए कि जो जान लिया गया है वह पूर्ण या पर्याप्त है । अभी प्रकृति के रहस्यों को और अधिक खोजा जाना और उनके पीछे काम करने वाले विषयों का बहुत कुछ रहस्योद्घाटन होना बाकी है । प्रयोग परीक्षण के उपरान्त ही उनकी यथार्थता विज्ञान की कोई सुनिश्चित धारा मानी जा सकेगी । आध्यात्म के प्रयोग गुरुगम्य हैं । उन्हें वैज्ञानिक प्रयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परीक्षणों के लिए इस प्रकार प्रस्तुत नहीं किया गया है कि अविश्वासियों को विश्वास हो सके, किन्तु परामनोविज्ञान ने अपना कार्यक्षेत्र दृश्य को प्रामाणिक तर्क सीमित भले ही रखा हो पर वे उसकी गहराई में प्रवेश करते हैं और देखते हैं कि इस कथन के पीछे कोई छद्म तो काम नहीं कर रहा है ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के अस्तित्व की चर्चा चलाते हुए और उनके प्रमाण संकलित करते हुए लम्बा समय हो गया । दूरदर्शन, दूर-कथन, भविष्य की जानकारी, विगत का घटनाक्रम आदि की असंख्यों घटनाएँ घटित होती देखी गई हैं । जिन व्यक्तियों में ये विशेषताएँ थीं उन्होंने योगी या योगाभ्यास होने का दावा नहीं किया, इसलिए निष्कर्ष यह निकाला गया है कि मस्तिष्क के जो पक्ष व्यवहार में नहीं आते, वे यदा-कदा अनायास ही सजग हो उठते हैं और अपनी विशेष क्षमताओं का परिचय देने लगते हैं । स्वप्नों की सार्थकता, सम्भावनाओं का पूर्वाभास सुदूर क्षेत्र में घटित हुए घटनाक्रमों का विवरण जान पाना अचेतन मस्तिष्क की किन्हीं रहस्यमयी क्षमताओं का जागरण माना गया है । ऐसा किन्हीं पशु-पक्षियों में भी होता है । वर्षा, तूफान, भूकम्प आदि आने की पूर्व सूचनाएँ कितने ही पशु-पक्षियों को सही रूप में मिल जाती हैं और वे उसी सुनिश्चित सूचना के आधार पर अपना बचाव करने, स्थान बदलने लग जाते हैं । कुत्तों की घ्राणशक्ति का उपयोग करने के लिए शिकारी लोग उन्हें पालते थे और अब जासूसी खोज-बीनों के लिए उन्हें पुलिस द्वारा प्रयुक्त किया जाता है । गर्भाधान की उत्तेजना भी गन्ध विशेष के माध्यम से मिलती थी । फूल से मधु बना लेने का एक विशेष तन्त्र मधु-मक्खियों के भीतर पाया जाता है । चींटी, दीमक आदि आकार में छोटी और किसी शिक्षा के रहित होते हुए भी अपने समुदाय के ऐसे नियमोपनियम बनाती है, मानो वे किसी सुसभ्य समुदाय की विधिवत् ट्रेनिंग लिए हों । ऐसी ही अनेक विलक्षणताएँ कितने ही पशु-पक्षियों एवं कीड़े-मकोड़ों के सम्बन्ध में पायी गई हैं । यह सब आश्चर्यजनक होते हुए भी विज्ञान ने इतना ही माना है कि मस्तिष्क के किन्हीं अनभ्यस्त प्रसुप्त कोष्ठकों का जागरण है, जो न्यूनाधिक मात्रा में सभी में होता है । जिनके अंकुर बड़े हो जाते हैं वे प्रख्यात हो जाते हैं और चमत्कारी समझे जाने लगते हैं । कारण का विवेचन करते हुए इतना ही कहा गया है कि घटनाएँ अथवा वस्तुएँ इस निखिल ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म-तरंगों के रूप में अपनी हलचलें चलाती रहती हैं । उनके तारतम्य का जो सही अनुमान लग सकने योग्य मस्तिष्कीय क्षमता के अभ्यस्त हो जाते हैं वे अपने में ऐसी विशेषताओं का परिचय देने लगते हैं । यह क्षमताएँ अमुक अभ्यास, करने से ही जागृत हों, यह आवश्यक नहीं । किन्हीं में वे अनायास ही जागृत हो जाती हैं और लोगों को अचम्भे में डालती हैं ।

रूस की एक महिला नेल्या मिखाईलोवा आँखों में पट्टी बाँधकर अंगुलियों से छूकर पुस्तकें पढ़ देती हैं और जहाँ-तहाँ रंगों की भिन्नता का प्रयोग हुआ है उसका विवरण बता देती है । इसका परीक्षण वैज्ञानिकों की कितनी ही परीक्षा गोष्ठियों के सम्मुख हो चुका है ।

इंग्लैण्ड में एक व्यक्ति आँख का काम नाक से लेता था और गन्ध के आधार पर दृश्य को पहचानने की परीक्षा में सफल हुआ था । आगे-पीछे की घटनाओं को बताने में कितनों ने ही असाधारण ख्याति प्राप्त की है । कुछ व्यक्ति धरती के भीतर पाये जाने वाले जल या धातु भण्डार (डाउजिंग) का पता बताने में सफल हुए हैं ।

योगाभ्यास के नाम पर कई जादूगर विषपान करते, हृदय की धड़कन रोकते, समाधि लगाते देखे गए हैं । इन्हें भी मनोबल का चमत्कार कहा जाता है । सरकस के कलाकार शरीर को साधने और उसका बैलेंस सँभाले रहने की कितनी ही अद्भुत क्रियाओं का अभ्यास कर लेते हैं इस आधार पर ये दर्शकों को आकर्षित करते और स्वयं अच्छी आजीविका कमाते हैं । वे इस कौशल के पीछे मनोबल और नियमित अभ्यास के आधार पर उपलब्ध हुई प्रवीणता को ही कारण बताते हैं । इसमें वे किसी योगाभ्यास का दावा नहीं करते और न उनका रहन-सहन, खान-पान ही ऐसा होता है जिन्हें योगी लोग संयम साधना के रूप में अनिवार्यतः अपनाया करते हैं । उन्हें किसी भी तरह तपस्वी, योगी नहीं कहा जा सकता ।

स्थूल, दृश्य शरीर के विशेषतया मस्तिष्क के, कितने ही घटक ऐसे हैं जिन्हें यदि साधारण क्रिया-कलाप की सीमा से आगे बढ़कर अभ्यास क्षेत्र में विशेष पराक्रम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने का अवसर मिले तो वे अपनी प्रतिभा का ऐसा विशिष्ट परिचय देने लगते हैं कि अजनवी के लिए उसमें आश्चर्य ही आश्चर्य दृष्टिगोचर होने लगे । कुछ समय पूर्व जब नट विद्या का प्रचलन था तो ऐसे लोग गाँव-गाँव में अपने तमाशे दिखाते थे जिसमें जोखिम का खतरा प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता था । अब भी वे कलाएँ प्रख्यात जादूगरों और किन्हीं-किन्हीं सर्कस वालों की कृतियों में दृष्टिगोचर होती हैं । यों इनमें इन्द्रजालिक चालाकी का भी सम्मिश्रण होता है पर सर्वथा यह नहीं कहा जा सकता कि इस निमित्त उन्होंने शारीरिक या मानसिक अभ्यास विशेष रूप से नहीं किए हैं । खेल प्रतियोगिताओं में समर्थ शरीर वाले भी हर खेल में विजयी नहीं हो सकते वे उन्हीं में कमाल दिखाते हैं जिनमें पहले से अभ्यास कर रहे होते हैं और प्रवीणता हस्तगत कर लेते हैं । शरीर संरचना में नियोजित हर घटक की स्थिति ऐसी है कि वह सामान्यतया उतनी ही प्रवीणता प्राप्त करता है जितना कि उसे आये दिन काम करना पड़ता है । यदि इससे भिन्न प्रकार का काम करना पड़े तो उनकी स्थिति साधारण या अनगढ़ होते हुए भी वे अपने विषय में पारंगत तो हो ही जाते हैं । वन प्रदेश में रहने वाले आदिवासी लोग तीर-कमान चलाने में इतने प्रवीण होते हैं कि शेरों और सुअरों का शिकार कर लेते हैं । नारियल, खजूर, सुपाड़ी आदि तोड़ने वाले उन ऊँचे और सीधे वृक्षों पर तेजी से चढ़ते-उतरते रहते हैं । यही बात आहार-विहार के सम्बन्ध में भी है । जिसके कारण साधारण लोगों को तत्काल जुकाम होता या लू मारती है । उसी वातावरण में कुछ लोग पतली लँगोटी लगाते, जीवन भर भ्रमण करते रहते और किसी रोग के शिकार नहीं होते । यह शरीरगत माँसपेशियों की स्थिति का विवेचन है, फिर मस्तिष्क का तो कहना ही क्या, वर्तमान स्थिति में हम मस्तिष्कीय क्षमता का ७ प्रतिशत भाग काम में लेते हैं । ९३ प्रतिशत ऐसा है जिसे विस्मृत, अनभ्यस्त प्रसुप्त या उपेक्षित ही कह सकते हैं यदि इस प्रसुप्त को जागृति में बदला जा सके तो यह सामान्य सूक्ष्म शरीर ही ऐसे करतब दिखा सकता है जैसा कि कीर्तिमान स्थापित करने वालों का पराक्रम देखकर हमें चमत्कृत रह जाना पड़ता है ।

अतीन्द्रिय क्षमताएँ कल्पना नहीं, विज्ञान सम्मत

योग शास्त्रों में आत्मा को परमात्मा से मिलाने, जीव को ब्रह्म में विलीन करने वाली साधनाओं द्वारा अपने लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव बताई गई है, वहीं यह भी बताया गया है कि ये साधनाएँ करते-करते मनुष्य अनेक दिव्यशक्तियों का स्वामी बन जाता है और उसके भीतर ऐसी-ऐसी विलक्षणताओं के उद्भव की बात भी कही गई है जिन्हें चमत्कारी सिद्धियाँ कहा जाता है । योगदर्शन के चार पादों में से एक पाद, एक अध्याय में तो केवल उसी बात का विवेचन किया गया है कि योग साधक को कौन-कौन सी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । दिव्य दर्शन, दिव्यश्रवण, दूरदर्शन, भूत-भविष्य का ज्ञान, प्रातिभ; श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद, वार्ता छः पुरुष ज्ञान सिद्धियाँ तथा अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, काय सम्पत और अनभिघात आदि सिद्धियों का उल्लेख आता है । अन्यान्य शास्त्रों में इन सिद्धियों का इतना सविस्तार उल्लेख मिलता है कि उन्हें पढ़कर सहज ही विश्वास करते नहीं बनता । कई लोग इसी कारण योगशास्त्र और उसकी सिद्धियों को कपोल कल्पित मानते थे कल तक विज्ञान की भी यही धारणा थी, किन्तु जब इस तरह की अनेकानेक घटनाओं और सिद्धि सम्पन्न व्यक्तियों का विश्लेषण तथा परीक्षण किया गया तो पता चला कि अतीन्द्रिय सामर्थ्य केवल कहने-सुनने या मन-मोदक खाने जैसा ही बात नहीं है । बल्कि वे तथ्यपूर्ण हैं और योगसाधना द्वारा उनका विकास एक विज्ञान सम्मत प्रक्रिया से होता है । उसके द्वारा विश्व-ब्रह्माण्ड में व्याप्त परम चेतना से तादात्म्य स्थापित कर जीव चेतना उसकी सामर्थ्य को अर्जित करने लगती है ।

मुडुकोपनिषद् के दूसरे अध्याय में महर्षि अगिरा शौनक से कहते हैं कि जिस प्रकार प्रज्ज्वलित अग्नि से उसी के जैसे रूप रंग वाली हजारों चिन्गारियाँ चारों ओर निकलती हैं, उसी प्रकार परम पुरुष अविनाशी ब्रह्म से नाना प्रकार के मूर्त-अमूर्त भाव निकलते हैं, उन्हें जीव सत्ता भी कहा जा सकता है । चिन्गारियाँ जिस प्रकार अग्नि की समस्त विशेषताएँ अपने में समाहित किए रहती हैं, उसी प्रकार जीवात्मा में भी परमात्मा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की समस्त विशेषताएँ अन्तर्निहित रहती हैं । उन्हें प्रयत्नपूर्वक योग साधन और तपश्चर्या द्वारा जागृत किया जा सकता है । उस जागृति के फलस्वरूप जो कुछ इन्द्रियातीत है, वह इन्द्रिय गम्य बन सकता है, और जिसे बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता, जो बुद्धि की पकड़ में नहीं आता वह प्रज्ञा द्वारा, जागृत सूक्ष्म बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है ।

अतीन्द्रिय क्षमताओं के प्रमाण ऐसे रूप में भी मिलते हैं कि कई बार यह किन्हीं व्यक्तियों में बिना किसी प्रयास के अनायास ही जागृत हो जाती हैं । शास्त्रकार इसका कारण पूर्व जन्मों के संचित संस्कार बताते हैं । पूर्व अभ्यास के फलस्वरूप भी इनका उदय हुआ बताया जाता है, यह किस प्रकार और किसे उत्पन्न होता है ? यह एक अलग विषय है, पर इन चमत्कारी असाधारण कही जाने वाली घटनाओं से इतना तो पता चलता ही है कि मनुष्य में अतान्द्रिय क्षमताओं के स्रोत विद्यमान हैं तथा उन्होंने आध्यात्मिक साधनाओं या भौतिक उपायों और उपचारों द्वारा जागृत किया जा सकता है । ऐसी अनेक घटनाएँ आये दिन सामने आती रहती हैं जिनके आधार पर चेतन की स्वतन्त्र सत्ता, ब्रह्माण्डव्यापी चेतन जगत और अतीन्द्रिय सामर्थ्य प्रमाणित होती है ।

पिछले दिनों विचारशील लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने इस दिशा में खोजबीन की । खोजबीन का लक्ष्य यह रखा गया कि क्या सचमुच ही चेतना का अपना अस्तित्व, क्षेत्र और बल होता है ? यदि होता है तो क्या उसको विकसित करके उपयोग में लाया जा सकता है ? यदि हाँ तो उसका लाभ किस प्रकार उठाया जा सकता है ? इन बातों की खोजबीन करने पर जो जानकारियाँ मिली हैं, वे इसके लिए विवश करती हैं कि विज्ञान और आध्यात्म का समन्वय मनुष्य को अधिक समर्थ एवं संसार को अधिक सुखी बनाने वाले आधार खड़े किए जा सकते हैं ।

इस खोजबीन के दौरान अन्वेषणकर्त्ताओं ने ऐसी कई घटनाओं और व्यक्तियों की जाँच की जिनका सम्बन्ध अतीन्द्रिय क्षमता से था । चेकोस्लोवाकिया के एक शिल्पी व्रेतिलाव कापथ में अतीन्द्रिय दर्शन की अद्‌भुत क्षमता थी उसके द्वारा उत्तरी ध्रुव की ऋतुओं और परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला तथा दूसरे महायुद्ध के समय उसने युद्ध के मोर्चे की हलचलों के बारे में जो विलक्षण जानकारियाँ दीं, वे आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुईं । इतना ही नहीं उसकी इस क्षमता का लाभ भी युद्ध में उठाया गया । इन-साइक्लोपीडिया ऑफ आकल्ट तन्त्र विद्या के विश्वकोष के रूप में प्रसिद्ध हैं, में एटीन मेसकर नामक एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख मिलता है, जो पेट के माध्यम से अप्रत्यक्ष एवं अदृश्य वस्तुओं का विवरण बताया करता था । फ्रान्सीसी वैज्ञानिक और कविजूल्स ने इस व्यक्ति की जाँच कर यह लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति की त्वचा में ऐसे कोषाणु उपस्थित रहते हैं जो देखने की क्षमता रखते हैं मेसकर में ये कोषाणु अधिक सुविकसित स्थिति में विद्यमान हैं । यह कोश स्पर्श के आधार पर देखने का बहुत कुछ प्रयोजन पूरा करते हैं । स्मरणीय है अन्धे व्यक्ति अपनी त्वचा और कानों द्वारा ही नेत्रों के अभाव की बहुत कुछ आवश्यकता पूरी कर लेते हैं ।

सन १९५९ में अमेरिका के वैज्ञानिकों ने टेलीपैथी का सफल, प्रयोग किया और बिना किसी यन्त्र उपकरण के नाटिलस नामक पनडुब्बी तक अपने विचार सन्देश भेजे और पनडुब्बी में बैठे व्यक्तियों से भी उसी प्रकार के विचार सन्देश प्राप्त किए । इस समाचार को रूस में काफी महत्त्व दिया गया और वहाँ भी टेलीपैथी के जो प्रयोग चल रहे थे, उन्हें काफी तीव्र कर दिया गया । रूस के एक वैज्ञानिक ने एक खरगोश के नवजात बच्चों को पनडुब्बी में पहुँचाया । उद्देश्य था टेलीपैथी का प्रयोग परीक्षण करना । इन बच्चों की माँ, मादा खरगोश को समुद्र से बाहर रखा गया तथा मादा और बच्चों के मस्तिष्क में एक ही प्रकार के इलेक्ट्रोड्स लगा दिए गए थे । गहरे पानी में पनडुब्बी पहुँचने पर बच्चों को एक-एक कर कत्ल किया गया । बच्चों और उनकी माँ के मस्तिष्क में लगे इलेक्ट्रोड्स का कोई सम्बन्ध नहीं था पर देखा गया कि जिस समय बच्चे कत्ल किए गए उस समय उनकी माँ बुरी तरह तिलमिलाई । उसकी गतिविधियाँ ऐसी थी मानो वह अपने बच्चों के छीने जाने पर उन्हें बचाने के लिए प्रयत्न कर रही हो या जैसे ठीक उसी के सामने उनका कत्ल किया जा रहा हो । इस प्रयोग से जाना गया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि प्राणियों के बीच कोई पारस्परिक सम्बन्ध सूत्र है और उसे प्रखर बनाकर उनके बीच आदान-प्रदान का आधार खड़ा किया जा सकता है ।

अमेरिका के जीव विज्ञानी कलीप वैवस्टोट ने कुछ समुद्री केकड़ों पर इसी प्रकार प्रयोग किए । उन्होंने देखा कि एक केकड़े के मारे जाने पर दूसरे केकड़ों को ही नहीं अन्य जल-जीवों को भी कष्ट का अनुभव होता है । इस अनुभूति प्रवाह को रोकने के लिए सीसे की दीवारें खड़ी की गईं जिससे कष्ट पाने वाले प्राणी का सूक्ष्म सम्पर्क उस क्षेत्र के अन्य प्राणियों से न रहें । इतना करने पर भी वह प्रवाह रुका नहीं और एक पीड़ित प्राणी की प्रतिक्रिया अन्यान्यों को प्रभावित करती रही । इस आधार पर वैवस्टेट ने यह प्रतिपादित किया है कि प्राणीमात्र के बीच एक ऐसा चेतना प्रवाह विद्यमान है जो उन्हें परस्पर एक सूत्र में बाँधे रहता है और वे एक-दूसरे के सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं । एक दूसरे वैज्ञानिक डॉ. गार्डनर मरफी का प्रतिपादन भी इसी प्रतिपादन से मिलता-जुलता है । उनके अनुसार जिस प्रकार समुद्र में पाये जाने वाले ज्वालामुखी द्वीप समूह बाहर से पृथक दीखते हुए भी अग्नि उगलने के सम्बन्ध में गहराई के अन्तराल में परस्पर जुड़े रहते हैं । उसी प्रकार प्राणियों की सत्ता भी पृथक-पृथक होते हुए भी उनके बीच ऐसा सम्बन्ध सूत्र विद्यमान हैं । जो एक-दूसरे की अनुभूतियों में सहभागी बनाये रहता है ।

बीस-बाईस वर्ष पूर्व तक रूस में टेलीपैथी को जादूगरी और धोखाधड़ी की संज्ञा दी जाती थी तथा उसका तिरस्कारपूर्वक उपहास उड़ाया जाता था । इस सम्बन्ध में कहा जाता था कि विचार सम्प्रेषण के लिए मस्तिष्क में इलेक्ट्रो मैजोटिक तरंगें चाहिए जब कि वहाँ उनका कोई अस्तित्व नहीं है । ऐसी दशा में इस प्रकार की कोई सम्भावना विज्ञान स्वीकार नहीं कर सकता । इस प्रतिपादन के अग्रणी वैज्ञानिक अलेक्जेण्डर किताई गोरोरस्की ने पीछे अपने विचार बदल दिए । विचार बदलने का कारण यह था कि आगे चलकर उन्होंने कई परामनोवैज्ञानिक शोधों का निकट से अध्ययन किया और जो तथ्य सामने आये उनके अनुसार अपनी पूर्व धारणाओं की गल्ती को ईमानदारी के साथ स्वीकार कर लिया ।

गोरोरस्की ने अपने बाद के प्रतिपादनों में कई व्यक्तियों की अतीन्द्रिय क्षमता को पूरी ईमानदारी के साथ स्वीकार किया है । उन्होंने बूल्फ मेसिंग नामक एक व्यक्ति का उल्लेख किया है जिसमें अनायास ही ऐसी क्षमता उत्पन्न हो गई जिससे वह दूरस्थ घटनाओं एवं विचारों का परिचय प्राप्त कर लेता था । गोरोरस्की के अतिरिक्त अन्य कई व्यक्तियों ने भी उसका परीक्षण किया और पाया कि टेलीपैथी कोई जादूगरी अथवा धोखाधड़ी नहीं बल्कि एक ध्रुव सिद्ध सत्य है ।

भारतीय योग शास्त्रों में स्थूल नेत्रों के अतिरिक्त एक तीसरे सूक्ष्म नेत्र का उल्लेख भी मिलता है, जिसे आज्ञाचक्र कहते हैं । इसका स्थान दोनों ध्रुवों के बीच में बताया जाता है । ध्यान साधना के समय यही दृष्टि से केन्द्रित करने का निर्देश भी विभिन्न शास्त्रों में मिलता है । इस केन्द्र को संसार की स्थूल और सूक्ष्म परिस्थितियाँ जानने समझने की ही नहीं, वस्तुओं और व्यक्तियों को प्रभावित करने की भी क्षमता है । इतना ही नहीं वातावरण में व्यापक परिवर्तन भी इस केन्द्र के उपयोग द्वारा सम्भव बताया गया है । दूरदर्शन, परोक्ष दर्शन तो उसकी आरम्भिक कला है । एक्स-किरण जिस प्रकार ठोस पदार्थों में पार हो जाती हैं, वे पदार्थ उसमें कोई बाधा नहीं पहुँचाते और वह आँखों से न दिखाई देने वाली भीतरी स्थिति का भी चित्र खींच कर रख देती हैं, उसी प्रकार आज्ञाचक्र की संकल्प किरणें दूर अदृश्य को भी तमाम अवरोधों बाधाओं के बाद भी जान लेती हैं । इस माध्यम से केवल पदार्थों को देखने का प्रयोजन पूरा होता है, वरन् जीवित प्राणियों की मनःस्थिति को भी समझ पाना सम्भव हो जाता है । आज्ञाचक्र द्वारा मात्र देखना समझना ही सम्भव नहीं होता अपितु उसकी क्षमता दूसरों को भी प्रभावित और परिवर्तित कर सकती है ।

इस तथ्य को तो विज्ञान भी स्वीकार करता है कि विश्व का हर पदार्थ अपने साथ ताप और प्रकाश की विद्युत किरणें संजोए हुए हैं । वे कम्पन लहरियों के साथ इस निखिल विश्व में अपना प्रवाह फैलाता है और ईथर तत्व के द्वारा दूर-दूर तक जा पहुँचती हैं । यदि उन्हें ठीक प्रकार से पकड़ा जा सके तो दृश्य बहुत दूरी पर अवस्थित होते हुए भी देखा जा सकता है । इस प्रवाह को पकड़ पाना किसी प्रकार सम्भव हो सके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो जो घटनाएँ बहुत दूर घटित हो रही हैं उन्हें निकटवर्ती दृश्यों की तरह देख पाना सहज सम्भव है । आस-पास की वस्तुओं और ध्वनियों को नेत्र तथा कर्णेन्द्रियाँ देख सुन सकती हैं । प्रत्यक्ष को ये ही देखती सुनती हैं । आज्ञाचक्र वह तीसरा नेत्र और तीसरा स्रोत्र है जो अदृश्य दूरवर्ती को भी देख सुन सकता है । यही नहीं उसे छठी इन्द्रियाँ भी कहा गया है । छठी इन्द्रियाँ अर्थात् जो पाँच इन्द्रियों का वह क्रिया व्यापार सम्पादित कर सकती है, जो स्थूल इन्द्रियों के माध्यम से सम्भव न हो । यही है अतीन्द्रिय क्षमता और उसका विज्ञान ।

वर्तमान के आँगन में भूत और भविष्यत्

शेफील्ड (ब्रिटेन) के श्री डेनिस होम्स और श्रीमती ईर्टलन होम्स की १८ माह की बच्ची ने एक दिन दीवार की ओर सिर उठाकर देखा और कहा 'मम्मी, पिक्चर हॉल' । इसके बाद घुटनों के बल आकर वह माँ की गोद में बैठ गई, लेकिन कुछ ही समय बीता कि अचानक उसी दीवार से एक भारी चौखटे वाली तस्वीर टूट कर जहाँ पहले केसी बैठी हुई थी, ठीक वहीं आ गिरी ।

इसके नौ महीने बाद होम्स परिवार छुट्टियाँ बिताने के लिए कार से 'यारमुथ' जा रहा था । केसी की यह पहली यात्रा थी । यारमुथ से आठ मील दूर पहले सड़क पर एक मोड़ है और जहाँ मोड़ पूरा होता है वहाँ ६-७ टूटी हुई पवन चक्कियाँ हैं, जो मोड़ पार करने पर ही दिखाई देती हैं, लेकिन मोड़ पूरा होने के पूर्व ही केसी बोल उठी 'मम्मी, वहाँ पवन चक्कियाँ हैं ।' पत्नी और पति इस बात को सुनते ही आवाक् हो गए, लेकिन उन्होंने इसे निरा संयोग समझ कर टाल दिया ।

पर इस अस्वाभाविकता को कब तक मात्र संयोग समझा जाय । मार्च १९७३ में एक दिन केसी की बुआ उसें शेफील्ड के सिटी रोड कब्रिस्तान में ले गईं ताकि वहाँ वह अपने दादा की कब्र पर फूल चढ़ा सके । सहसा केसी बोल उठी, 'मेरा दोस्त डेविड भी यहीं दफना है ।' आश्चर्यचकित होकर बुआ ने उसे दिखाने को कहा ।

केसी उन्हें कब्रिस्तान के एक ढलवें कोने में ले गई जहाँ एक कब्र पर लिखा था—'डेविड सुपुत्र क्लारा और फ्रैंक । मृत्यु १९०३ उम्र १८ मास ।

केसी से उसके माता-पिता ने काफी पूछा कि उसे डेविड की कब्र का पता कैसे लगा ? लेकिन वह बराबर एक संक्षिप्त उत्तर देती रही—'मुझे पता था ।'

ऐसी क्षमताओं की कल्पना सिद्ध योगियों में तो की जा सकती है, पर नन्हें बालकों में इस तरह की अद्भुत क्षमताओं का प्राकट्य विस्मयकारी तथ्य जान पड़ता है । आत्मविद्या के ज्ञाताओं को इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लगता । सृष्टि में जो भी कुछ पैदा होता है, चाहे वह जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, मनुष्य हो अथवा वृक्ष वनस्पति शैशव । युवा (प्रौढ़) तथा जरा-अवस्था का सामना सभी को करना पड़ता है । यह विज्ञान सफल प्रक्रिया साधन के क्षेत्र में भी कार्य करती है । साधनाएँ चाहे वह यम नियम प्राणायाम हों या मन्त्र जाप, सोऽहम्, खेचरी और मुद्रा बन्ध साधनाएँ, सबका उद्देश्य प्राणशक्ति को प्रखर बनाना है । प्रज्ज्वलित प्राण ऊर्जा ही मस्तिष्कीय न्यूरॉन के लिए विद्युत का काम करते हैं । उसी के सहारे सिद्ध योगी टेलीविजन की तरह चाहे कहीं देखते, कहीं भी सुन लेते हैं । भूत और भविष्य उनके लिए वर्तमान में निवास करते हैं ।

जब तक साधना द्वारा उपार्जित प्राण पक न जायें तब तक साधक के दिन जोखिम भरे कसौटी के होते हैं, उनके न पकने तक विषय, वासना और तृष्णा, अहंता के वनचरों द्वारा उदरस्थ कर लिए जाने की आशंका तो रहती ही है, कहीं कोई अनुभूति हो तो बाल बुद्धि उसे चमकाकर अपना अहंकार जताने की भी भूल करके उसे गवाँ सकती है । कदाचित साधना काल में ही किसी की मृत्यु हो जाए तो लोकोत्तर जीवन में प्राण परिपाक क्रिया चलती रहती है वही इतर जन्मों की प्रतिभा के रूप में दिखाई देती है ।

जब केसी ४ वर्ष की थी, एक दिन श्रीमती होम्स वर्ग-पहेलियाँ हल कर रही थीं । उन्होंने अपने पति से पूछा कि—'ही' से प्रारम्भ होने वाला पाँच अक्षरों का वह कौन-सा शब्द है जिसका अर्थ हवाई जहाज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है ? श्री होम्स तथा उनकी १५ वर्षीय पुत्री 'जैकलीन' इस प्रश्न का उत्तर न दे सके । तभी केसी कह उठी—'ब्लिम्प' । शब्दकोश ढूँढ़ने पर बात सही निकली ।

अगस्त १९७४ के दूसरे सप्ताह में होम्स परिवार छुट्टी मनाने वारमुथ गया । एक बुधवार को समुद्र के किनारे टहलते हुए केसी कहने लगी 'आज दादाजी उदास हैं । एक कोई बुरी घटना घटने वाली है । वह अपने पिता के पुराने सहकर्मी श्री 'वेनराइट' के बूढ़े पिता को 'दादाजी' कहा करती थी । शनिवार को होम्स परिवार शेफील्ड लौटा । वहाँ उन्हें पता चला कि बुधवार को दादाजी के भाई की मृत्यु हो गई थी ।

एक दिन श्रीमती होम्स रसोईघर में काम कर रही थीं । तभी केसी वहाँ आयी और बोली-'कैसी हो टिच ?' श्रीमती होम्स ने पूछा कि मुझे इस नाम से पुकारने के लिए तुमसे किसने कहा ? केसी के जबाब देने के बदले पूछा—'नानाजी की कमर टेढ़ी थी और वे चपटी टोपी पहनते थे न ?' वास्तव में केसी के नानाजी की कमर झुकी हुई थी । चपटी टोपी भी पहनते थे तथा केसी की माँ को प्यार से 'टिच' कहकर बुलाते थे, लेकिन वे तो केसी के जन्म से ४ वर्ष पूर्व ही मर चुके थे ।

अप्रैल १९७५ की बात है । वियतनाम युद्ध में अनाथ हुए बच्चों को हवाई जहाज द्वारा अमेरिका में बसाने के लिए लाया जा रहा था । टी. वी. में उसकी खबरें देखते समय केसी ने कहा, 'बच्चे मर जायेंगे ।' माँ ने कहा 'हाँ बच्चे भूखों मर रहे हैं ।' लेकिन केसी ने उनकी बात काटते हुए कहा—'नहीं जहाज जल रहा है, बच्चे मर रहे हैं ।' दो दिन बाद ही खबर आयी कि एक जहाज के गिर जाने के कारण कई बच्चे मर गए ।

दूरदर्शन, भविष्य दर्शन को प्रामाणिकता की कसौटी पर कसने के लिए अमेरिका में एक शोध कार्यक्रम बनाया गया । राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन और केन्द्रीय जासूसी संगठन ने इन शक्तियों से युक्त 'इंगोस्वान' एवं 'पेट प्राइस' नामक दो व्यक्तियों का परीक्षण किया । यह कार्य स्टेन फोर्ड शोध-संस्थान की प्रयोगशाला में सम्पन्न हुआ । किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश न रहे इसलिए हैराल्ड पुराफ और रसेल टार्ग नामक दो भौतिकविदों को भी नियुक्त किया गया । इंगोस्वान एवं पेट प्राइस एक स्थान पर बैठकर किसी भी दूरवर्ती स्थान में हो रहे क्रिया-कलाप, स्थान की विशेषताओं का वर्णन उसी प्रकार कर देते थे जैसे प्रत्यक्ष देख रहे हों ।

एक प्रयोग पेट प्राइस पर किया गया । वैज्ञानिकों ने पेट प्राइस से कहा कि वह वर्जीनिया के एक गुप्त सैनिक केन्द्र का पूरा विवरण प्रस्तुत करें । कुछ देर ध्यान मग्न के उपरान्त प्राइस ने जो विवरण प्रस्तुत किया उसे सुन कर वैज्ञानिक विस्मित रह गए । उसने इतनी छोटी-छोटी बातों का भी उल्लेख किया जिसकी जानकारी वहाँ रहने वाले अधिकारियों को भी नहीं रहती थी । प्राइस ने कहा कि उक्त सैनिक अड्डे के तलघट के ऑफिस में दो फाइलें रखी हैं जिनमें एक का नाम है 'फ्लाइंग ट्रेप' तथा दूसरी का 'मिनर्वा' । तलघट के उत्तर की दीवार के साथ लगी आल्मारी पर लिखा है—'ऑपरेशन पुल' । उक्त स्थान का नाम प्राइस ने बताया 'टेस्टाक या हेफार्क' तलघट के मूर्धन्य अधिकारियों का नाम कर्नल 'आर. जे. ह्वेमिल्स', मेजर जनरल जार्जनेश और मेजर 'जानकलहूम' बताया । जिस तलघट का विवरण प्राइस ने प्रस्तुत किया वह एक गोपनीय प्रयोगशाला थी जहाँ से सोवियत उपग्रहों की निगरानी रखी जाती थी । विशिष्ट सूत्रों द्वारा मालूम करने पर सभी बातें सही पायी गईं । उपस्थित अधिकारियों ने कहा कि 'प्राइस तथा स्वान' कुशल जासूस का कार्य कर सकते हैं । उन्होंने इस कार्य के लिए बड़ी रकम देने का भी आग्रह किया किन्तु दोनों ने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि ईश्वर प्रस्तुत इस सामर्थ्य का हम दुरुपयोग नहीं कर सकते ।

दूरदर्शन, भविष्यदर्शन अतीन्द्रिय सामर्थ्य का एक छोटा-सा पक्ष है । मानवी अन्तराल में प्रचण्ड सामर्थ्य भरी पड़ी है जो सषुप्तावस्था में विद्यमान रहती है । परमात्मा द्वारा यह सभी को प्राप्त है । आध्यात्मिक पुरुषार्थों द्वारा उन्हें जगाया एवं उच्चस्तरीय कार्यों से प्रयुक्त किया जा सकता है । यह कठिन है, पर असाध्य नहीं । श्रम साध्य है, पर असम्भव नहीं । जितना समय, श्रम एवं मनोयोग भौतिक उपलब्धियों के लिए किया जाता है, उतना ही आध्यात्मिक विभूतियों के लिए किया जा सके तो मनुष्य उन सामर्थ्यों को प्राप्त कर सकता है जिसे सामान्यतया सिद्धि एवं चमत्कार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा जाता है । भूत-भविष्य दूरदर्शन ही नहीं अन्तरात्मा में परिस्थितियों एवं प्रकृति में हेर-फेर करने की सामर्थ्य भी मौजूद है । आध्यात्मिक पुरुषार्थों की महत्ता समझने एवं उपलब्धियों को करतलगत करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए ।

नियति द्वारा प्रस्तुत मानवीय सत्ता की विलक्षणताओं का परिचय

परमात्मा ने मनुष्य को अनन्त क्षमताओं और अजस्र सम्भावनाओं से पूरित कर इस पृथ्वी पर भेजा है । वह चाहे तो साधना और अभ्यास द्वारा इन क्षमताओं को जागृत कर अपूर्व शक्ति का स्वामी बन सकता है, किन्तु अधिकांश मनुष्य शिश्नोदर परायण जीवन तक ही अपनी गतिविधियाँ सीमित रखते हैं और पेट तथा प्रजनन का सामान जुटाते-जुटाते ही इस संसार से कूच कर जाते हैं । अधिकांश लोगों की कल्पना में यह बात आती ही नहीं है कि जिन्हें वे सिद्धियाँ और चमत्कार कहते हैं । वे किसी व्यक्ति विशेष को दिए गए उपहार नहीं हैं, अपितु उनके बीज उनमें स्वयं ही निहित हैं । आवश्यकता केवल उन्हें सींचने और खाद पानी देकर अकुंरित भर करने की है ।

इस तथ्य को न समझ पाने के कारण लोग ऐसे व्यक्तियों को किसी दूसरे लोक का प्राणी समझते हैं जो साधना और अभ्यास द्वारा अपनी किन्हीं विशेष शक्तियों को जागृत कर लेते हैं । परमात्मा ने ऐसी शक्तियाँ किसी भी मनुष्य को पक्षपात से प्रेरित होकर नहीं दी हैं वरन् उसने अपने सभी पुत्रों को बिना किसी भेदभाव के इन सम्भावनाओं से पूरित बनाया है ।

समय-समय पर किन्हीं व्यक्तियों में इस तरह की विशेषताएँ अनायास ही प्रकट हो जाती हैं । उन्हें पूर्व जन्मों का संस्कार भी कह सकते हैं और प्रकृति द्वारा इस बात का परिचय प्रमाण भी, कि उसके परिकर में रहने वाले सभी मनुष्यों को अतिमानव बनने की सम्भावनाएँ वरदान के रूप में प्राप्त हैं । यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह उन सम्भावनाओं को साकार करता है अथवा नहीं । इस तरह के कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं ।

उत्तर प्रदेश के बिजनौर शहर के मुहल्ला ब्रह्मनान में एक साधारण परिवार में जन्मी ग्यारह वर्षीय लड़की सुधा ने २७ जनवरी, १९४८ को सुबह उठते ही अपने माता-पिता से कहा कि महात्मा गाँधी को किसी ने प्रार्थना के समय गोली मार दी । सुधा घर में सबसे छोटी थी और माता-पिता का उस पर कुछ स्नेह भी विशेष था इसलिए कोई उसे कुछ कहता नहीं था, लेकिन जब उनसे बिना किसी प्रसंगवश घर वालों से यह बात कही तो वे हैरान भी हुए और उन्होंने सुधा को डाँटा-डपटा भी । सुधा डाँट खाकर चुप हो गई । लेकिन ठीक तीन दिन बाद ३० जनवरी, १९४८ की संध्या को रेडियो से लोगों ने महात्मा गाँधी की हत्या का समाचार सुना । समाचार का विवरण बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि सुधा ने बताया था । सुधा को तीन दिन पहले ही महात्मा गाँधी की हत्या का पूर्वाभास कैसे हो गया ? इस सम्बन्ध में सुधा कुछ नहीं बता सकी, उसके माता-पिता द्वारा कुछ बताने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।

सन् १९५९ में लखनऊ के एक प्रतिष्ठित परिवार से स्वप्नों के माध्यम से पूर्वाभास की घटना घटी । लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. डी. एन. मजूमदार एन्थ्रोपोलॉजी विभाग के अध्यक्ष थे । उनकी पुत्री भी कलकत्ता विश्वविद्यालय में लेक्चरार थी । एक दिन रात को दस बजे डॉ. मजूमदार के फोन की घण्टी घनघना उठी । टेलीफोन ऑपरेटर ने बताया कि आप अपनी बेटी से कलकत्ता से बात कीजिए । सहसा डॉ. मजूमदार के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ खिंच गईं । ऐसी तो कोई पृष्ठभूमि बनी नहीं थी जिसमें इतनी रात को बेटी का फोन करना स्वभाविक लगे । डॉ. मजूमदार ने पूछा, "क्या बात है बेटी ? तुम ठीक तो हो न ?"

"ठीक हूँ पापा, 'बेटी ने कहा, 'आप बताइए कैसे हैं ? घर में सब लोग ठीक तो हैं न ?" डॉ. मजूमदार को समझ नहीं आ रहा था कि अकारण इतनी रात को उनकी बेटी घर परिवार की कुशलता के बारे में चिन्तित क्यों हो उठी है ?" उन्होंने कहा—"सब ठीक हैं बेटी ?" इधर ऐसी कोई बात तो हुई नहीं है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुम्हें इतनी रात को परेशान होना पड़े । बताओ क्या बात है ?" 'कुछ नहीं पापा,' उनकी लड़की ने कलकत्ता से कहा, 'दरअसल मैंने अभी-अभी एक बहुत बुरा सपना देखा है इसलिए चिन्ता से आकुल हो उठी । मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ उठने लगीं । इत्मीनान करने के लिए ट्रंककोल किया था ।' डॉ. मजूमदार हँसे और अपनी बेटी के बताये कारण पर लाड़ से बोले—"कोई बात नहीं है बेटी, 'सब ठीक है । तुम आराम से सो जाओ । अरे पगली ! सपनों को लेकर कहीं इस कदर परेशान हुआ जाता है ।" टेलीफोन कट गया । इसके कुछ ही देर बाद डॉ. मजूमदार अपना काम खत्म कर सोने के लिए बेडरूम में पहुँचे । कपड़े बदल कर वे पलंग पर लेटे ही थे कि उनकी छाती में तेज दर्द शुरू हुआ और कुछ मिनटों में हृदय गति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया । कलकत्ता में मजूमदार की बेटी द्वारा देखा गया सपना एकदम सही उतरा था । उसके द्वारा फोन किए जाने के कोई दो घण्टे बाद ही लखनऊ से उसे फोन पर खबर दी गई कि पापा का अचानक देहान्त हो गया है ।

स्वप्नों के माध्यम से भविष्य की घटनाओं का पूर्वाभास कैसे हो जाता है ? यह अब वैज्ञानिकों के लिए खोज का विषय बन गया है । इस सम्बन्ध में भारतीय मनीषियों की मान्यताएँ बहुत स्पष्ट हैं । उनके अनुसार भूत-भविष्य और वर्तमान की घटनाएँ सूक्ष्म जगत में पहले से विचरण करती रहती हैं और बहुत बाद तक बनी रहती हैं । कहा जा सकता है कि वर्तमान में जो घटनाएँ घट रही हैं, उनकी पूर्व भूमिका सूक्ष्म जगत में बहुत पहले ही विनिर्मित हो चुकी थी और भविष्य में जो घटनाएँ घटने वाली हैं उनकी पृष्ठभूमि वर्तमान में बन चुकी है । भारतीय दर्शन के अनुसार जो व्यक्ति सूक्ष्म जगत से जागृत अवस्था में ही सम्पर्क करने की क्षमता रखता है, वह भूत, वर्तमान और भविष्य की बातों को सरलता से जान सकता है । लेकिन यह क्षमता सभी में नहीं होती । हाँ, स्वप्नावस्था में अवश्य ही लोग सूक्ष्म के अधिक निकट तक पहुँच जाते हैं और बहुतों को भावी का ज्ञान हो जाता है ।

भविष्य का पूर्वाभास स्वप्न में प्राप्त करने की घटना शास्त्रीजी की मृत्यु के समय रूस में घटी है । इस घटना की चर्चा देश-विदेश के समाचार पत्रों ने भी दी थी । सन् १९६५-६६ में भारत, पाक समझौते के समय स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खाँ, रूस के प्रधानमन्त्री कोसीगिन की मध्यस्थता में बातचीत करने के लिए ताशकन्द में एकत्र हुए थे । उन दिनों एक भारतीय छात्र उदय कुमार वर्मा ताशकन्द में अध्ययनरत थे । एक दिन उक्त छात्र के पड़ोस में रहने वाली एक सोवियत छात्रा उसके पास आयी और बोली, 'आप हमें आज शास्त्रीजी के दर्शन अवश्य करा दें वरना फिर कभी उनके दर्शन नहीं होंगे ।'

छात्र अपनी सहपाठी छात्रा के आखिरी शब्दों को सुनकर बहुत हैरान हुआ, उदय कुमार ने पूछा कि ऐसी क्या बात है ? तो छात्र ने कहा कि "मैंने आज रात एक दुःस्वप्न देखा है कि शास्त्री जी हमारे बीच नहीं रहे हैं ।" खैर ! उदयकुमार ने सोवियत छात्रा को शास्त्री जी के कार्यक्रम तक पहुँचा दिया और उसकी लालसा पूरी कर दी । उसी रात उदयकुमार ने खुद भी स्वप्न देखा कि शास्त्री जी को विदा करने जब वह हवाई अड्डे पर पहुँचता है तो वहाँ खबर लगती है कि शास्त्री जी का स्वर्गवास हो गया है और लोग उनके शव को विदा करने आये हैं । वह स्वप्न इतना स्पष्ट था कि उदयकुमार की नींद टूट गई और अगले दिन जब वह उसी सोवियत छात्रा से मिले तो उलाहना-सा देते हुए कहा, तुम्हारी बातों का मेरे मन पर इतना बुरा असर पड़ा है कि रात को मैंने भी वैसा ही स्वप्न देखा है । यह १० जनवरी, ६६ की सुबह की बात है और उसी रात को शास्त्री जी का देहान्त हो गया । ११ जनवरी की प्रातः वह छात्र जब अन्य भारतीय और सोवियत छात्रों के साथ शास्त्रीजी को काबुल प्रस्थान के लिए विदा करने जाने लगे तब यह जानकर स्तब्ध रह गया कि सचमुच शास्त्री जी का स्वर्गवास हो गया है ।

प्रत्यक्ष अनुभवों तथा वैज्ञानिक शोधों के आधार पर अभी तक सपनों की रंगीन ओर कौतूहलपूर्ण दुनिया के सम्बन्ध में जो जानकारी मिल पायी है, वह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक और बहुत ही उपयोगी है । उन निष्कर्षों से पता चलता है कि सपने न केवल भविष्यवाणी करते हैं बल्कि ऐसी सच्चाइयों को भी सामने लाते हैं जो प्रायः अविज्ञात ही होती हैं और जिन्हें जानने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई सूत्र भी नहीं होता । इस तरह के कई स्वप्न प्रसंगों का विवरण मिलता है जिनमें सपनों के द्वारा मिले संकेतों की मदद से अपराधियों को पकड़ा जा सका और उन्हें सजा दिलाई जा सकी ।

इस तरह की घटनाओं में आयरलैंड की एक घटना सर्वाधिक चर्चित है । वहाँ तिपेरारी नगर में रहने वाले एक व्यापारी युवक हिकी ने न्यूफाउण्डलैण्ड से अपने मित्रों को सूचित किया कि वह शीघ्र ही तिपेरारी पहुँच रहा है । हिकी तिपेरारी से न्यूफाउण्डलैण्ड व्यापार के सिलसिले में आया था और उसने वहाँ काफी पैसा कमाया था । हिकी ने जिस तारीख को वापस पहुँचने की सूचना दी थी, उस तारीख को वह नहीं पहुँचा । उस तारीख को बीते भी एक सप्ताह बीत गया तो मित्रों ने पुलिस में रिपोर्ट की । पुलिस ने हिकी की खोजबीन शुरू की । इस सिलसिले में रोजर्स नामक एक सराय मालिक के पास पहुँच गया, जहाँ हिकी ठहरा था । रोजर्स ने बताया कि हिकी के हुलिए का एक युवक कुछ दिन पहले एक साथी के साथ जलपान के लिए आया था और उसके बहुत रोकने पर भी नहीं रुका था । पुलिस के यह पूछने पर कि वह उन दोनों को क्यों रोकना चाहता था ? रोजर्स ने एक विचित्र कारण बताया कि उनके आने के कुछ समय पहले मेरी पत्नी के स्वप्न में उन दोनों युवकों को जलपान के लिए सराय में आते देखा था कि वे दोनों जलपान के बाद चले गए हैं । रास्ते में एक युवक ने दूसरे की हत्या कर दी और उसकी लाश को झाड़ी में छिपा दिया । रोजर्स की पत्नी ने बताया कि मैं वह स्थान बता सकती हूँ जहाँ युवक को छिपाया गया था ।

रोजर्स के इस बयान के आधार पर पुलिस ने हिकी के साथी को खोजना आरम्भ कर दिया । कुछ दिन बाद पुलिस ने काउफील्ड नामक उस युवक को एक गिरजाघर में पकड़ा । काउफील्ड वहाँ वेश बदल कर एक पादरी के सहायक के रूप में काम कर रहा था । किसी को भी विश्वास न हुआ कि देखने में इतना भोला-भाला और सीधा लगने वाला लड़का निर्मम हत्यारा भी हो सकता है । अदालत में काउफील्ड ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा—"कि सराय में रोजर्स की पत्नी को अपनी ओर घूरते हुए देखकर मैंने हिकी की हत्या करने का इरादा बदल दिया था लेकिन बाद में जैसे ही एकान्त मिला, मुझ पर शैतान सवार हो गया और मैंने उसके ही चाकू से उसका गला काट दिया ।" काउफील्ड को इस हत्या के अपराध में फाँसी की सजा मिली ।

इस तरह के अनेकों उदाहरण और प्रमाण हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य वही नहीं है, जो कुछ वह प्रतीत होता है और उसकी शक्ति वहीं तक सीमित नहीं है, जितनी कि वह दिखाई देती है ।

प्रश्न उठता है कि मनुष्य की विराट् सत्ता जब अपने को प्रकट करने के लिए आकुल-व्याकुल है, तो जिन्हें अतीन्द्रिय स्तर की क्षमताएँ अनायास ही प्राप्त हो जाती हैं । उनकी संख्या कुछेक तक ही सीमित क्यों है ? क्यों नहीं सभी मनुष्यों में वह प्रकट होती है ? इसका कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता, पर इतना सच है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर के विराट् और महान की झाँकी कभी न कभी मिलती अवश्य है । कई बार बिना किसी आधार या ठोस कारण के हुए बिना भी किए गए पूर्णानुमान आश्चर्यजनक रूप से सही सिद्ध होते हैं । ध्यानपूर्वक अपने अतीत के अनुभवों का विश्लेषण किया जाय, तो इस तरह की कुछेक घटनाएँ सभी लोगों के जीवन में मिल जायेंगी । होता यही है कि इस तरह के अनुभवों या अनुमानों को सामान्य दिनचर्या का ही अंग मानकर उपेक्षा कर दी जाती है और अपने भीतर की अनन्त सम्भावनाओं का परिचय होते-होते रह जाता है ।

भारतीय तत्व चिन्तकों ने प्रत्येक मनुष्य को इस तरह की सम्भावनाओं से पूरित बताया है, क्योंकि उनकी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति, व्यक्ति ही नहीं प्रत्येक प्राणी परमात्मा का अंश है और उसमें परमात्मा की कल्पित की गई समस्त विशेषताएँ बीज रूप में विद्यमान हैं ।

विज्ञान सम्मत विचार सम्प्रेषण विधा

व्यक्ति के सामान्य जीवन में ज्ञानेन्द्रियों के एक मामूली भाग के सदुपयोग से ही जीवन के सारे क्रियाकलाप चल रहे हैं । जबकि उनकी क्षमताएँ अनन्त हैं । "रीडर डायजेस्ट" में "आपके मस्तिष्क की सीमा क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ?" (ह्वाट इज दी लिमिट ऑफ योर माइण्ड) शीर्षक से आर्डिस मिटमैन ने एक लेख छापा था । उसमें उन्होंने लिखा है कि सारे संसार में जितनी भी विद्युत और विद्युत उपकरणों की सामर्थ्य है, उसे पूरी तरह इकट्ठा करके तराजू के एक पलड़े में रख दिया जाय और दूसरी तरफ मस्तिष्क का ३ पिण्ट ग्रे मैटर (मस्तिष्क का भीतरी भाग) रखकर तौला जाय तो ग्रे मैटर की शक्ति कहीं अधिक होगी ।

जिस व्यक्ति में जितनी अधिक मात्रा में संकल्प शक्ति, तेजस्वी, उत्साही, आत्म-विश्वासी और आशावादी मनोवृत्तियाँ होंगी, उतना ही वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों को विकसित करने में सक्षम होगा । इस विषय में अब तक जो भी प्रमाण और उदाहरण प्राप्त हुए हैं, उनसे यही निष्कर्ष निकला है कि कोई भी सामान्य स्तर का व्यक्ति अपने संकल्प बल, उपयुक्त प्रेरणा, प्रोत्साहन, अनुभव और प्रशिक्षण में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ करतलगत कर सकता है ।

सूडान प्रदेश में मवाना जाति को अत्यधिक शान्तप्रिय कहा जाता है, जो कि जंगलों, वन-वीहड़ों और सुरम्य पर्वतीय, खोह, कोटरों में निवास करती हैं । इस जाति के लोगों ने अपनी कर्मेन्द्रियों को इतना अधिक विकसित कर लिया है कि उनकी दूर श्रवण की क्षमता वैज्ञानिकों तक के लिए चुनौती का विषय बन चुकी है । वे मीलों दूर से उठने वाली 'धीमी-मन्द' आवाज को भी भली प्रकार सुन समझ लेते हैं ।

वर्तमान युग में दूर की आवाज सुनना कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं रह गई है । आज विज्ञान के युग में रेडार एक ऐसा विलक्षण यन्त्र है जो सैकड़ों मील दूर से आ रही आवाज ही नहीं, वस्तु की तस्वीर का भी पता दता देता है, किन्तु आज से शताब्दियों पहले जबकि आधुनिक विज्ञान का जन्म भी नहीं हुआ था, हमारे भारतीय आध्यात्म विद्या के गुरु जब अपने शिष्यों को कोई निर्देश विशेष देना चाहते थे, तब उसके लिए आज की तरह टेलीफोन, आदि नहीं प्रयुक्त करते थे, प्रत्युत टेलीपैथी के माध्यम से अपने विचार सम्प्रेषित करते थे । यद्यपि टेलीपैथी (दूरबोध विचार सम्प्रेषण) की रिपोर्टें अभी भी समय-समय पर मिलती रहती हैं, किन्तु निश्चित वैज्ञानिक सम्मत प्रमाण न मिलने के पूर्वाग्रह पर अड़े होने के कारण यह बात वैज्ञानिकों के गले नहीं उतरती ।

'टेलीपैथी' विषय हमेशा से वैज्ञानिकों के लिए अत्यधिक रहस्यपूर्ण विषय रहा है । मध्यकालीन इतिहास का अवलोकन करने से पता चलता है कि पहले-पहले टेलीपैथी के अस्तित्व को जानने के लिए छठवीं शताब्दी में लीडिया के राजा क्रोयसिस ने एक प्रणाली अपनाई थी । उसने अपने राजदूतों को राज्य के प्रसिद्ध भविष्य वक्ताओं के पास यह जानने के लिए भेजा कि अमुक दिन, अमुक समय पर, राजा क्या कर रहा होगा ?" इस सन्दर्भ में जब राजकर्मचारी अपने समय के प्रसिद्ध दिव्यदर्शी डैल्फी के पास पहुँचे और राजा का सन्देश सुनाया । भविष्यवक्ता डैल्फी ने थोड़ी देर के लिए गम्भीर होते हुए बताया कि इस समय राजा स्वयं एकाकी बिना किसी की मदद लिए ताँबे की कड़ाही में भोजन पका रहा है ।

इसी प्रकार की एक दूसरी प्रणाली रोम सम्राट ट्रैजन ने अपनाई थी । उन्होंने कुछ औषधियों की टेबलेटों को कई तहों के भीतर कपड़े में लपेटकर उस समय के प्रसिद्ध दिव्यदर्शी वैलवेक के पास यह पूँछने के लिए राजदूतों के हाथ सूचना भिजवाई कि इस पैक के अन्दर रखी गई टेबलेटों पर क्या अंकित है । भविष्य वक्ता ने उस सील बन्द पैकिट को अपने हाथ में लेकर गम्भीर मुद्रा में एक कागज पर लिखा कि इस पैकेट के अन्दर "पपीरस" नामक औषधि है । जब लिखित कागज राजा के सामने प्रस्तुत किया गया तो दिव्यदर्शी विद्वान का कथन सत्य हुआ है ।

"टेलीपैथी" के गहन अध्ययन के लिए सर्वप्रथम इंग्लैण्ड के प्रमुख दण्डाधिकारी मैलकॉम गुथरे और 'लिवरपूल लिटरेरी एण्ड फिलोसोफीकल सोसाइटी" के ऑनरेरी सेक्रेटरी श्री जेम्स विरचॉल ने एक सुनियोजित रूप से "सोसाइटी फोर साइकिकल रिसर्च" नामक संस्था की स्थापना की जिसके अन्तर्गत अनेकों विद्वान वैज्ञानिक शोध-सर्वेक्षण को आमन्त्रित किए गए । विधिवत् रूप से वैज्ञानिक की टीम, बैठकों-सत्रों में टेलीपैथी में विश्वास रखने वालों, लोगों से साक्षात्कार करती व उनके अनुभवों का अध्ययन करती है । इससे तत्कालीन समय के प्रख्यात टेलीपैथी के विशेषज्ञ औलीवर लॉज की टेलीपैथी क्षमता का अध्ययन करने के लिए आमन्त्रित किया गया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था । सर्वप्रथम वैज्ञानिकों ने लकड़ा के ब्लैक बोर्ड पर कुछ अत्यधिक पेचीदी डिजायनें बनायीं और श्याम पट को उलटकर रख दिया । तत्पश्चात् पुनः वैसी ही डिजायनें बनाने के लिए निर्देश दिया । उपस्थित वैज्ञानिकों व अन्य शोध सर्वेक्षण कार्यों का समुदाय यह देखकर अत्यधिक हतप्रभ ही रह गया कि उसने हूबहू ठीक वैसी ही सभी जटिल डिजायनें कुछ ही क्षणों में बनाकर प्रस्तुत कर दी ।

आगे चलकर प्रो. जे. बी. राइन और उनके सहयोगी शोध कर्मियों ने लन्दन की प्रसिद्ध 'ड्यूक यूनीवर्सिटी' में अनेकों प्रयोग-परीक्षण के अनन्तर यह निष्कर्ष निकाला कि अब तक हम लोगों ने जो भी टेलीपैथी विषय पर विचार सम्प्रेषण प्रक्रिया की जाँच की है वह सभी अतीन्द्रिय क्षमताओं के अन्तर्गत है । यहाँ तक वैज्ञानिक उपकरणों की पहुँच अभी सम्भव नहीं हो पायी है ।

रूस के प्रसिद्ध भौतिकविद् एडवार्ड नौमॉव ने अपने हजारों अध्ययनों के पश्चात् यह प्रतिवेदन प्रस्तुत किया कि टेलीपैथिक प्रक्रिया दो घनिष्ठ आत्माओं के बीच स्नेह और सुरक्षा से सम्बन्धित अधिक पायी जाती है । अपने इस कथन का विवेचन करने से पहले उन्होंने इसका परीक्षण मास्को के एक शिशु ग्रह में किया था । नौमॉव ने नवजात शिशु और माँ को काफी दूर-दूर अलग-अलग ऐसे कमरों में रखा, जहाँ कि एक दूसरे की आवाज तक सुनाई न दे । जब बालक ने रोना-चिल्लाना शुरू किया, तो दूसरे कमरे में बिस्तर पर शान्तिपूर्वक लेटी हुई माँ यकायक व्यग्र और घबराहट सी महसूस करने लगी । इसी प्रकार जब शारीरिक दर्द से व्यथित होकर माँ कराहने लगी, तो उधर दूसरे कमरे में स्थिति सोया हुआ बच्चा ठीक उसी समय यकायक रोने-चिल्लाने लगा । अपने इस प्रयोग परीक्षण से नौमॉव ने बताया कि, माँ और बच्चे में टेलीपैथिक प्रक्रिया अत्यधिक होती है ।

"सुपर नेचर" नामक पुस्तक के लेखक लायैल वैस्टन ने एक अति महत्त्वपूर्ण तथ्य का विवेचन अपनी इस पुस्तक में किया है कि कोशिकीय स्तर पर पौधों में टेलीपैथिक प्रक्रिया अत्यधिक क्रियाशील रहती है । इस पर अब तक अनेकों प्रयोग हो चुके हैं व लाइडिटेक्टर का प्रयोग भी पौधों पर किया जा चुका है ।

दूरस्थ टेलीपैथिक विचार सम्प्रेषण विषय पर न्यूयार्क कॉलेज ऑफ इन्जीनियरिंग के प्रधान डॉ. डॉगलस डीन ने गहन प्रयोग परीक्षण किए एवं अपने शोध परीक्षणों का निष्कर्ष देते हुए बताया कि यदि कोई व्यक्ति सैकड़ों मील दूरस्थ किसी घनिष्ठ मित्र, सम्बन्धी के बारे में तन्मयता पूर्वक, एकाग्रचित्त होकर विचार (ध्यान) करता है, तो उस सैकड़ों मील दूर स्थित व्यक्ति का ब्लड-प्रैशर चिन्तन, रक्त, प्रवाह, हृदय की धड़कन, श्वास गति में यकायक परिवर्तन पाया जाता है । ये सभी निष्कर्ष बताते हैं कि देर सबेर विज्ञान जगत को टेलीपैथी को एक विधा के रूप में स्वीकार करना ही होगा । "मेण्टल वार", "मेण्टल पावर" नामक ग्रन्थों के रचयिता वैज्ञानिक एल्विन टॉफलर का कहना है कि रूस ने अतीन्द्रिय क्षमता के द्वारा वैचारिक युद्ध में महारत हासिल कर ली है । वहाँ अतीन्द्रिय सामर्थ्य के इस पक्ष को विकसित कर शत्रु पक्ष के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के चिन्तन को प्रभावित करने के सफल प्रयोग किए गए हैं । अच्छा हो इस दैवी विभूति का सुनियोजन श्रेष्ठ कार्यों हेतु, सद्भावना विस्तार हेतु, वैचारिक प्रदूषण निवारण एवं समष्टिगत कल्याण हेतु प्रयुक्त हो न कि व्यक्तिगत स्वार्थ या किसी के अहित के लिए ।

मनुष्य की अदृश्य सत्ता अति समर्थ

अतीन्द्रिय क्षमताएँ परामनोविज्ञान के अनुसार मनःसंस्थान का ही अंग हैं और उनका कारण एवं आधार मस्तिष्कीय संरचना में खोजा जा सकता है । आध्यात्म शास्त्र में रहस्य लोक को सूक्ष्म शरीर का विषय माना है । इस सूक्ष्म शरीर का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना हो तो उसे मानसिक चेतना की गहरी पर्तों के साथ जुड़ा हुआ देखा जा सकता है । शरीर यात्रा में काम आने वाली, दैनिक जीवन की गुत्थियों को सुलझाने वाली, क्षमता व्यवहार मस्तिष्क में है । उसे शिक्षा, अनुभव अभ्यास से विकसित किया जा सकता है किन्तु सूक्ष्म शरीर की क्षमताएँ विकसित करने के लिए ऐसे प्रयोग अपनाने पड़ते हैं जो मनःसंस्थान में सन्निहित सूक्ष्म चेतना केन्द्रों को सजग सक्रिय कर सकने में सफल हो सकें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब विज्ञान मनुष्येत्तर विभिन्न प्राणियों की शारीरिक एवं मानसिक संरचना में जुड़ी हुई अद्‌भुत विशेषताओं को खोजने में संलग्न है । इसका एक स्वतन्त्र शास्त्र ही बन गया है, जिसका नाम है—'बायोनिक्स' ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि दूर की फोटो लेना, अथवा दूरवर्ती वस्तुओं का फोटो लेना, केवल माइक्रो फिल्म द्वारा ही सम्भव है और वह भी जबकि उस तरह का दृश्य किसी निश्चित फ्रीक्वेन्सी पर निश्चित माइक्रोट्रान्समीटर द्वारा शक्तिशाली विद्युत तरंगों द्वारा प्रेक्षित किया गया हो ।

किन्तु शिकागो के टेडसीरियस ने मानसिक कल्पना के आधार पर ध्यान में लाये गए चित्र कैमरे से खिंचाए तो ध्यान कर्त्ता टेड सीरियस के फोटो के स्थान पर ध्यान की गई वस्तु के साफ-साफ फोटो थे । जैसे ध्यान में घोड़ा अथवा शेर है तो स्पष्ट घोड़ा और शेर का ही फोटो था टेड का चित्र क्यों नहीं आया यह एक विचित्र उलझन अजीब पहेली है । विज्ञान के लिए चुनौती और चैलेन्ज है ।

वैज्ञानिक इसे न ट्रिक मानते हैं न हिप्नोटिज्म और टेड ने कभी भारत आकर किसी योगी से भी ऐसा प्रशिक्षण नहीं लिया ।

१९६२ में टेड सीरियस ने भारत का नक्शा देखकर फतेहपुर सीकरी, के मुख्य द्वार "बुलन्द दरवाजा" दिल्ली के लाल किले के दीवाने आम की कल्पना कर कैमरे के चित्र खिंचाए तो हू-बहू वैसे ही थे जैसे कि दिल्ली और फतेहपुर सीकरी के, किन्तु टेड तो कभी भारत भी नहीं आये जो अतीत में देखी कल्पना मस्तिष्क में उभर सके । नवम्बर १९६८ की कादम्बिनी में टेड के कल्पना चित्रों का फोटो भी छपा था । आश्चर्य है कि अमेरिका में बैठा व्यक्ति हिन्दुस्तान के कल्पना चित्र का फोटो उतरवाकर भारतीय उपासना दर्शन की प्रामाणिकता सिद्ध करता रहा है ।

गुप्त या अप्रकट बातों को जानने की जिसे शक्ति प्राप्त होती है उसे "डिवाइनिंग" कहा जाता है ।

अंग्रेजी सेना के प्रसिद्ध सेनापति और बाद में इंग्लैण्ड के युद्ध मन्त्री लार्ड किचनर इस विद्या में पारंगत थे । जब वे अंग्रेजी सेना में लेफ्टिनेण्ट पद पर कार्यरत थे तब कोरस्को के रेगिस्तान में २५० मील लम्बी रेल लाइन बनाई जा रही थी, जहाँ पानी का भारी संकट और अभाव था । वहाँ लार्ड किचनर ने अपनी इस क्षमता का उपयोग कर भयंकर रेगिस्तान में दो कुएँ बनवाए, जिनमें मीठा स्वच्छ जल निकला । इस तरह रेल लाइन बनने में जो पानी की कठिनाई आ रही थी वह दूर हो गई ।

प्रथम विश्व युद्ध के अवसर पर इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री लार्ड जायज ने बुढ़ापे में बगीचा लगाया तो उनके फार्म के पास जल साधनों के अभाव में बगीचा सूख रहा था किन्तु पड़ोसी किसान के खेत हरे-भरे देखकर वे उस किसान के पास पहुँचे तो उन्होंने उसके खेतों को पानी मिलने के साधनों की जानकारी करनी चाही । उस किसान ने बताया कि इस भूमि में सभी संस्थानों पर जल नहीं मिलता मेरी स्त्री को एक ऐसी विद्या (डिवाइनिंग) आती है जिससे वह पानी के स्रोतों का पता लगा लेती है । लार्ड जायज को जहाँ-जहाँ उस महिला ने बताया वहाँ खोदने पर अपार जल भण्डार मिले जिससे ३ लाख गैलन पानी प्रतिदिन निकाला जा सकता था ।

कोलोरोडो प्रान्त के लेडीवली नगर में के. डब्लू. पी. जोन्स नाम का एक ऐसा व्यक्ति है जो जमीन पर चलकर यह बता देता था कि जिस भूमि पर यह चल रहा है उसके बीच किस धातु की, कितनी बड़ी खदान है । उसे जमीन में दबी भिन्न धातुओं का प्रभाव अपने शरीर पर विभिन्न प्रकार के स्पन्दनों से होता था । अनुभव ने उसे यह सिखा दिया था कि किस धातु का स्पन्दन कैसा होता है । अपनी इस विशेषता का उसने भरपूर लाभ उठाया । कइयों को खदान बताकर उनसे हिस्सा लिया और कुछ खदानें उसने अपने धन से खरीदीं और चलाईं । अमेरिका का यह बहुत धन-सम्पन्न व्यक्ति अपनी इसी विशेषता के कारण बना था ।

गेविन मेक्सवेल ने अपने अनुसन्धानों में एक अस्सी वर्षीय अन्धे का वर्णन किया है जिसने समुद्र में डूबी हुई एक मछुहारे की लाश का सही स्थान बताने और उसे बाहर लाने में सहायता की थी । उन्होंने पश्चिमी पठार के द्वीप समूहों के लोगों में यह क्षमता विशेष रूप से पाये जाने का उल्लेख किया है । शमूस फियारना द्वीप में एक मछुआ, मछली पकड़ते समय गाँव के समीप की खाड़ी में डूब गया । उसकी लाश निकालने और विधिवत्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दफनाने के लिए सारा गाँव उत्सुक था । सभी नावें कई दिन तक लगातार खाड़ी में चक्कर काटती रहीं, पर किसी के काँटे में लाश फँसी नहीं । निराशा छाई हुई थी । तभी एक अस्सी वर्षीय अन्धे कैलम मेकिनन ने कहा आप लोग मुझे नाव में बिठा कर ले चलें और खाड़ी में घुमाते रहें । सम्भवतः मैं लाश को तलाश करा दूँगा । वैसा ही किया गया । सही जगह मिलने पर बुड्ढा चिल्लाया—काँटा डालो लाश ठीक नीचे है । वैसा ही किया गया । फलतः मृतक को बाहर निकाल लिया गया और उसे विधिवत् दफनाया गया ।

आयरलैण्ड के प्रो. वैरेट भूमिगत जल स्रोतों एवं खदानों का पता लगाने के सन्दर्भ में प्रख्यात था । वहाँ के विकलो पहाड़ी क्षेत्र में दूर-दूर तक पानी का कहीं नामोनिशान नहीं था, कड़ी एवं पथरीली जमीन पर प्रो. वेरेट खदान विशेषज्ञों के सामने उस क्षेत्र में कई घण्टे घूमते रहे, अन्ततः एक स्थान पर रुककर बोले—यहाँ १४ फुट गहराई पर एक अच्छा जल स्रोत है । खुदाई के पश्चात् वहाँ मात्र १५ फुट जमीन खोदने पर पानी की एक जोरदार धारा फूट पड़ी ।

भारत के राजस्थान प्रान्त में "पानी वाले महाराज", अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर कई सफल कुएँ बनवा चुके हैं, उन्हें माधवानन्द जी के नाम से जाना जाता था ।

वैज्ञानिक अलेक्जेण्डर किताई गोरोरस्की ने कई परा- मनोवैज्ञानिक शोधों का निकट से अध्ययन किया और अतीन्द्रिय- क्षमता को पूरी ईमानदारी के साथ स्वीकार किया है । उन्होंने बूल्फ मेसिंग नामक एक व्यक्ति का उल्लेख किया है जिसमें अनायास ही ऐसी क्षमता उत्पन्न हो गई जिससे वह दूरस्थ घटनाओं एवं विचारों का परिचय प्राप्त कर लेता था । गोरोरस्की के अतिरिक्त अन्य कई व्यक्तियों ने भी उसका परीक्षण किया और पाया कि टेलीपैथी कोई जादूगरी अथवा धोखाधड़ी नहीं बल्कि एक ध्रुव सिद्ध सत्य है ।

विचार संचालन विद्या भी अतीन्द्रिय क्षमताओं के अन्तर्गत आती है । एक व्यक्ति दूसरे के मन की बात जान सकता है । अपने मन की बात बिना वार्तालाप किए ही दूसरों को जता सकता है । इतना ही नहीं इस क्षेत्र में आग्रह करने और दबाव डालने की भी गुंजाइश है । यहाँ तक कि किसी पर चढ़ बैठने और पछाड़ देने की बात भी तान्त्रिकों द्वारा प्रयुक्त की जाती रहती है । उतना आगे तक न बढ़ा जाय तो भी विचार शक्ति की जानकारी के आदान-प्रदान से आगे बढ़ाकर दूसरों की सेवा सहायता करने में तो निश्चित रूप से लगाया जा सकता है । इस तथ्य की प्रामाणिकता का परिचय देने वाले कितने ही प्रमाण समय-समय पर मिलते रहते हैं ।

टेलीपैथी के एक प्रयोगकर्त्ता इंग्लैण्ड के ए. एन. क्रीरी ने बहुत समय तक वह प्रयोग चलाया कि बन्द कमरे में क्या हो रहा है इसकी जानकारी प्राप्त की जाय । इस प्रयोग में एक महिला अधिक दिव्यदृष्टि सम्पन्न सिद्ध हुई ।

क्रीरी ने अपने प्रयोगों की सच्चाई जाँचने के लिए अनेक प्रामाणिक व्यक्तियों से अनुरोध किया । जाँचने वालों में डबलिन विश्वविद्यालय के प्रो. सर विलियम वैरट इंग्लैण्ड की 'सोसाइटी फार साइकिकल रिसर्च' के प्रधान प्रो. सिजविग जैसे मूर्धन्य लोग थे । उन्होंने कई तरह से उलट-पलटकर इन प्रयोगों को देखा और उन प्रयोगों के पीछे निहित सच्चाई को स्वीकारा ।

परामनोविज्ञान अनुसंधान की दिशा में विधिवत् प्रयत्न लगभग एक शताब्दी से चल रहे हैं । इसका 'श्री गणेश' लन्दन सोसाइटी फार साइकिकल रिसर्च' के रूप में हुआ । इसके तीन वर्ष बाद वैसी ही शोध सभा अमेरिका में भी गठित हुई उसका नाम रखा गया, 'अमेरिकन सोसाइटी फार साइकिकल रिसर्च' इंग्लैण्ड में हेनरी लिजविक, सर कानन डायल, सर अलीवर लाज, सर विलियम क्रुक्स जैसे मनीषियों ने इन प्रयोगों में गहरी दिलचस्पी ली । अमेरिका में हुए शोध प्रयत्नों में पिछली पीढ़ी के मनीषियों में विलियम जेम्स, मैक्डागल का नाम अग्रिम पंक्ति में है । रूस के शरीर शास्त्री बी. एम. बेख्तेरेफ की खोजों ने परामनोविज्ञान शोध को आगे बढ़ाने में भारी प्रयत्न किए हैं ।

फाउण्डेशन ऑफ रिसर्च ऑन दि नेचर ऑफ मेन से सम्बद्ध 'इन्स्टीट्यूट फॉर पैरासाइकोलॉजी' ने परा मनःशक्ति के सन्दर्भ में अति महत्त्वपूर्ण शोध सामग्री एकत्रित की है ।

ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जे. बी. राइन द्वारा लिखित पुस्तक 'न्यू फ्रण्टियर्स ऑफ माइण्ड' से मस्तिष्कीय विलक्षणता पर गम्भीर प्रकाश डाला गया है । इनको

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकसित करने पर प्राप्त हो सकने वाले लाभों की ओर मात्र निर्देश किया है ।

कैलीफोर्निया के पुलिस अधिकारी 'रिचमाण्ड' ने अचानक फोन पर किसी व्यक्ति की सूचना सुनी— "पैनपाब्लो के मैकडोल्ड एवेन्यू में स्टीम लाइनर से टकराकर एक दुर्घटना-ग्रस्त हो गया । चालक के सीने में गम्भीर चोट लगी है और दूसरे व्यक्ति घायल हो गए हैं, वहाँ जल्दी पहुँचिये ।"

फोन पर प्राप्त सूचना के अनुसार अधिकारी ने एक पुलिस दल को तुरन्त वहाँ भेज दिया । वहाँ पूछताछ करने पर पता चला कि इस तरह की कोई घटना अभी नहीं घटी है । पुलिस कर्मचारियों ने समझा कि किसी ने यों ही मजाक में उन्हें तंग किया है ।

पुलिस दल लौटने ही वाला था कि उसके सामने ही एक स्टीम लाइनर सामने से आ रहे एक ट्रक से टकरा गया । ड्राइवर की छाती चूर-चूर हो गई और कई अन्य व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गए ।

विन्सेट तथा मारग्रेट नामक दो वैज्ञानिकों ने सैकड़ों जुड़वाँ बच्चों पर शोध कर अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं । जुड़वाँ बच्चों में कुछ सामान्य अन्तर होते हुए भी उनकी आदतों, विचारों एवं स्वभाव में पर्याप्त साम्य पाया गया है । इस सन्दर्भ में उक्त वैज्ञानिकों ने कई घटनाक्रमों का उल्लेख किया है । पार्टी में सम्मिलित एक डॉक्टर की पत्नी डोंग मार्टिन अपने मित्रों से हँस-हँसकर बोल-बतिया रही थी, अचानक वे उदास हो गईं और फूट-फूट कर रोने लगीं । तत्काल तो उनका कोई कारण न ढूँढ़ा जा सका, परन्तु कालान्तर में ज्ञात हुआ कि उसी समय उसकी जुड़वाँ बहिन अचानक बीमार पड़ गई थी ।

बर्किंघम शहर की एक और घटना इसी प्रकार आश्चर्यचकित कर देने वाली हुई । मारग्रेट एक परिवार में अतिथि बन कर गए हुए थे । उस परिवार की महिला रसोई में, खूब प्रसन्न और स्वस्थ स्थिति में काम कर रही थी । अचानक रसोई से कराहने की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी । मारग्रेट सहित परिवार के अन्य सदस्य दौड़ आये । कराहने का कारण पूछने पर महिला ने बताया कि अचानक उसके चेहरे, पीठ और पैरों में इस प्रकार दर्द होने लगा था, जैसे वह किसी दुर्घटना से आहत हो गई हो । तत्काल तो उसका कारण पता न चला, पर बाद में ज्ञात हुआ कि उसी समय जब महिला कराह रही थी उसकी बहिन 'बैब्स' एक कार दुर्घटना से बुरी तरह घायल हो गई थी और उसके चेहरे, पीठ और पैरों पर काफी चोटें आयी थीं ।

ब्रिटेन की लेवर पार्टी के संसद सदस्य डगलस की बेटी कैथरीन ने जिस समय एक बच्चे को जन्म दिया, उसी समय उसकी जुड़वाँ बहिन हेलन के पेट में भी सख्त पीड़ा हो रही थी ।

प्रो. जे. एच. कैमरान ने लिवरपूल के एक मैकेनिक का विचित्र विवरण दिया है, जिसे न कहीं चोट आयी न कोई बीमारी हुई फिर भी वह एक सप्ताह तक चलने-फिरने में असमर्थ रहा, कारण कि उसके एक जुड़वां भाई की टाँग एक दुर्घटना में टूट चुकी थी ।

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ प्रकाश में आती रहती हैं, जिससे जुड़वाँ बच्चों को एक ही व्यक्तित्व के दो बिम्ब कहा जाए तो भी अत्युक्ति नहीं होगी । कई ऐसे व्यक्तियों में तो सुदूर प्रदेश में रहने पर भी एक दूसरे तक अपने विचार और सम्वेदना सम्प्रेषित करने की अद्‌भुत क्षमता पायी जाती है ।

इन साम्यों का कारण ढूँढ़ना वैज्ञानिकों के लिए चुनौती सदृश है । अमेरिकी विशेषज्ञ विन्सेट का कथन है कि 'उन बच्चों का विकास गर्भाशय के भीतर ही एक-सी ही स्थितियों में होता है । उस समान स्थिति में पलने के कारण अलग-अलग देहधारी होते हुए भी उनके व्यक्तित्व तथा आचरण में समानता आ जाती है ।'

लन्दन हॉस्पिटल के 'साइकी आर्टी इन्स्टीट्यूट' के डॉ. जेम्स शील्ड ने जुड़वाँ बच्चों पर काफी अनुसन्धान कार्य किया और उनमें पायी जाने वाली समानताओं के वैज्ञानिक कारण प्रस्तुत किए हैं । उनका विचार है कि एक ही परिवेश में पले और विकसित हुए बच्चों के शरीर, स्वभाव, आदतों, व्यवहार, रुचियों एवं मस्तिष्कीय क्षमताओं में पर्याप्त समानता आ जाती है । इसका प्रधान कारण गर्भ में एक ही प्रकार का पोषण मिलना है ।

वुडलैण्ड (अमेरिका) के डॉक्टर जियो वर्नहाट ने अपना अनुभव परामनोविज्ञान की एक प्रसिद्ध पत्रिका में प्रकाशित कराया है । वे लिखते हैं कि "सन् १९७१ की घटना है, एक दिन बैठे-बैठे लगा कि उनका पुत्र जॉन, वियतनाम के युद्ध मोर्चे पर बुरी तरह आग में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फँस गया है और उसके तम्बू की आग फैल रही है । यह बड़े सन्दूक के नीचे दब गया है । उन्हें लगा कि जैसे उन्होंने जॉन को सन्दूक के नीचे से उठाया और तम्बू से बाहर घसीट लाये और खड़ा कर दिया । इसके बाद मुझे अपना शरीर पूर्ववत् महसूस होने लगा । आँखें खोलीं तो मालूम पड़ा कि तन्द्रा-सी आ गई है । पत्नी नब्ज टटोल रही थी मैंने पूछा कि क्या बात है तो वे बोलीं ऐसा लगा कि आप "एबनॉर्मल" हैं मैंने पत्नी को यह सपने की-सी बात कह सुनाई उन्होंने हँसकर टाल दिया । बात आयी गई हो गई छः माह बाद जॉन मोर्चे से वापस आया तो सर्वप्रथम उसने अग्निकाण्ड में फँसने और अचानक किसी अनजान शक्ति की मदद से निकलने की बात ने पुनः उस घटना की स्मृति तरोताजा और रहस्य पर से पर्दा उठा दिया ।"

परामनोविज्ञान की परिधि बड़ी विशाल है । यह अविज्ञात का क्षेत्र है । मानवी चेतना की रहस्यमयी पर्तों में ऐसी न जाने कितनी विलक्षणताएँ छिपी पड़ी हैं । आध्यात्म दृष्टि में इन्हें सामान्य मन की प्रसुप्त सामर्थ्य माना जाता है । यह कोई सिद्धि अथवा विलक्षण उपलब्धि नहीं, प्रकृति प्रदत्त क्षमता है जो सबमें एक समान रूप से विद्यमान है । कोई इन्हें साधना पुरुषार्थ से व कोई-कोई पूर्व अर्जित सुसंस्कारोंवश जल्दी जगा लेते हैं । पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्री व शोधकर्त्ता इन्हें आश्चर्य से देखते हैं जबकि यह मनःसंस्थान के सूक्ष्म शक्ति के केन्द्र के जागरण को प्रतिक्रिया मात्र है । मनुष्य असीम सामर्थ्यों में भरपूर है । अपने आपको पहचानने का प्रयास तो किया जाय । फिर तो असीम उपलब्धियों का क्षेत्र खुल जाता है ।

समर्थ सत्ता को खोजें पत्तों में न भटकें

घटना २८ जून सन् १९५४ की है । न्यूयार्क अमेरिका के एक डॉक्टर श्री रेमर की धर्मपत्नी विश्राम कर रही थी । उनकी एक पुत्री—जेस्सी १ माह पूर्व ही अपनी दादी के पास कैलिफोर्निया गई हुई थी । माँ-बेटी के बीच की भौगोलिक दूरी ३००० किलोमीटर थी । अकस्मात् श्रीमती रेमर चीखकर पलंग से खड़ी हो गईं डॉक्टर साहब दौड़े-दौड़े आये । पूछा क्या बात है ? श्रीमती रेमर ने कहा—मैंने अभी-अभी जेस्सी के चीखने की आवाज सुनी, ऐसा लगा वह किसी संकट में है । डॉक्टर ने धर्मपत्नी के शरीर का परीक्षण किया । हृदय, नाड़ी, रक्तचाप सभी असामान्य थे, उन्होंने ज्ञात करना चाहा, तुमने कोई स्वप्न तो नहीं देखा ? श्रीमती रेमर ने बताया वह बिल्कुल जागृत अवस्था में थीं, उन्हें भयंकर चीख के अतिरिक्त कुछ सुनाई नहीं पड़ा । मैंने आवाज पहचानी वह केवल जेस्सी की थी ।

उस समय और कोई बात तो नहीं हुई किन्तु दो दिनों तक घर में विलक्षण मायूसी छाई रही । तीसरे दिन वह निराशा की स्थिति पूर्ण विहाग में तब बदल गई जब सचमुच जेस्सी के दुर्घटनाग्रस्त होने का तार मिला । आश्चर्य की बात यह थी कि श्रीमती रेमर ने जिस समय यह चीख सुनी वह और जेस्सी के कार एक्सीडेण्ट, जिससे उसका प्राणान्त हुआ, का समय एक ही था ।

एक अन्य घटना—फ्रान्स के रियर एडमिरल गैलरी की आत्मकथा से उद्धृत । आठ घण्टियाँ (एट बेल्स) नामक उक्त आत्मकथा में गैलरी महाशय लिखते हैं—मुझे सोमवार को अपनी ड्यूटी पर जाना था । रविवार की रात जब मैं सोया तो स्वप्न देखा कि मैं अपने जहाज पर बैठा हूँ, जहाज चलने की तैयारी में है । यात्री ऊपर आ रहे हैं, दो युवक आते हैं, मैंने उनसे नाम पूछा—एक ने अपना नाम डिक ग्रेन्स दूसरे ने पाप कनवे बताया । तभी जहाज में एकाएक विस्फोट होता है और किसी को तो कुछ नहीं होता पर यही दोनों जख्मी होते हैं और पाप मर जाता है । स्वप्न इतनी गम्भीर मनःस्थिति में देखा था कि सोकर उठने के बाद भी वह मानस पटल पर छाया रहा, जबकि आये दिन दीखने वाले स्वप्न जोर देने पर भी याद नहीं आते ।

आश्चर्य वहाँ से प्रारम्भ हुआ जब मैंने ऑफिस जाकर जहाज के यात्रियों की लिस्ट पर दृष्टि दौड़ाई मुझे यह देखकर भारी हैरानी हुई कि जो नाम इससे पहले कभी सुने भी नहीं थे, जो रात स्वप्न में देखे थे वे सचमुच उस लिस्ट में थे । यह देखते ही हृदय किसी अज्ञात आशंका से भर गया । फिर भी जीवन की गति तो कोई न चलाना चाहे तो भी चलती है । जहाज ने ठीक समय पर प्रस्थान किया पर अभी उसने अच्छी तरह बन्दरगाह भी नहीं छोड़ा था कि एक इंजन में विस्फोट हुआ, केवल डिक ग्रेन्स और पाप कनवे दुर्घटनाग्रस्त हुए, जिनमें से पाप कनवे की तत्काल मृत्यु हो गई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक तीसरी घटना—डरहम की एक स्त्री से सम्बन्धित है, पैरासाइकोलॉजी संस्थान कैलीफोर्निया के रिकार्ड से ली गई—डरहम की एक स्त्री अपने बच्चों के साथ स्नान के लिए निकली । घर में उस समय उक्त महिला अर्थात् उस स्त्री की सास ही रह गई । अभी वह स्त्री वहाँ से कुछ सौ गज ही मोड़ पार कर गई होगी कि उसकी सास बुरी तरह चिल्लाई—बहू को खतरा है । पास-पड़ोस के लोग दौड़े और इस पागलपन पर हँसे भी, किन्तु दो घण्टे बाद ही शेरिफ ने सूचना दी कि रास्ते में एक्सीडेण्ट हो जाने से अस्पताल में महिला का प्राणान्त हो गया है ।

ऊपर एक ही तरह की तीन घटनाएँ दी हैं जो न तो भाव-सम्प्रेषण (टेलीपैथी) है और न ही दूरदर्शन (क्लेरवायेन्स) । टेलीपैथी का अर्थ उस आभास से है जिसमें किसी मित्र, परिचित, कुटुम्बी या प्रिय परिजन द्वारा भावनाओं की अत्यधिक गहराई से याद किया गया हो और वह सम्वेदना इस व्यक्ति तक पहुँची हो । इसी तरह दूरदर्शन का अर्थ तो मात्र भौगोलिक दूरी को किसी अतीन्द्रिय क्षमता से पार कर किसी घटना का आभास पाया गया हो । ऊपर तीन घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं उनमें एक का सम्बन्ध वर्तमान से है तो शेष दो का अतीत और भविष्य से । जो हो रहा है वह देखा जा सकता है, जो हो चुका है उसे भी जाना जा सकता है कि अभी तक जो हुआ ही नहीं यदि उसकी जानकारी हो जाती है तो उसे न तो दूरदर्शन ही कहा जायेगा और न ही दूर संचार । वास्तव में इस तरह की अनुभूतियाँ आये दिन हर किसी को होती रहती हैं और उनका मानव-जीवन से गहन आध्यात्मिक सम्बन्ध भी है । तथापि उन्हें समझ पाना हर किसी के लिए सम्भव नहीं होता ।

वेदान्त दर्शन के अनुसार सृष्टि में एक "ब्राह्मी चेतना" या परमात्मा ही एक ऐसा तत्व है जो सर्वव्यापी है अर्थात् ब्रह्माण्ड उसी में अवस्थित है । वह काल की सीमा से परे है अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों भी उसी में समाहित हैं । उक्त तीनों घटनाओं का उल्लेख करते हुए "एक्सप्लोरिंग साइकिकल फेनामेना बियाण्ड एण्ड मैटर" पुस्तक के लेखक श्री डी. स्काट रोगों ने उक्त तथ्य का स्मरण कराते हुए लिखा है कि भावनाएँ तथा विचार "प्राणशक्ति की स्फुरणा" (डिस्चार्ज ऑफ वाइटल फोर्स) के रूप में होती हैं । यह स्फुरणा यदि एक ही समय में एक-दूसरे को आत्मसात करती हैं तब तो वह दूर संचार हो सकता है किन्तु यदि वह समय की सीमाओं का अतिक्रमण करता है तो उसका अर्थ यही होगा कि माध्यम की आधार-भूत सत्ता या ब्राह्मी चेतना होती है । इस चेतना की कल्पना आइन्स्टीन ने भी सापेक्षवाद के सिद्धान्त में की है और यह लिखा है कि यदि प्रकाश की गति से भी कोई तीव्र गति वाला तत्व होता है तो उसके लिए बीते कल, आज और आने वाले कल में कोई अन्तर ही न रहेगा । भारतीय शास्त्र पग-पग पर उसी महान सत्ता में अपने आप घुलाने और परमपद पाने की बात कहते हैं । निःसन्देह वह एक अति समर्थ, अत्यन्त सम्वेदनशील स्थिति होगी । यह घटनाएँ इस दिक्कालातीत चिन्मय ब्रह्म सत्ता से अपनी अभिन्नता जुड़ने की अनुभूति ही हो सकती है । क्षणिक सम्पर्क इतना आश्चर्यजनक हो सकता है तो उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति कितनी सामर्थ्य प्रदान करने वाली होगी, तब मनुष्य को किसी प्रकार के अभाव वस्तुतः क्योंकर सताते होंगे ?

ऋग्वेद में एक ऋचा आती है—"अग्निना अग्नि समिध्यते" अर्थात् अग्नि से अग्नि प्रदीप्त होती है । आत्मज्ञान, आत्मानुभूति से ब्रह्म प्राप्ति इसी सिद्धान्त पर होती है । उपर्युक्त घटनाएँ "अन्तः स्फुरणा" तथा "आत्म जागृति" की क्षणिक अनुभूतियाँ हैं । रेडियो घुमाते-घुमाते अनायास कोई अति-सूक्ष्म स्टेशन सेकण्ड के सौवें हिस्से में पकड़ में आ जाता है फिर ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता । यह घटनाएँ वैसा ही तत्व बोध हैं । विस्तृत अनुभूति, ज्ञान प्राप्ति, ईश्वर की शक्तियों को अनुभव करने के लिए तो आत्म परिष्कार की गहराई में ही उतरना पड़ेगा । जो लोग सांसारिकता में ही पड़े रहेंगे वे न तो उस महान को अनुभव कर सकेंगे न पा सकेंगे । वे तो ऐसी घटनाओं पर भी अटकलें ही लगाते रहेंगे ।

विज्ञान का सच्चा उच्चस्तरीय सोपान

दो हजार वर्ष पूर्व चीन के महान दार्शनिक लाओत्जू ताओ ते चिंग ने कहा था कि 'जो जानता है वह बोलता नहीं और जो बोलता है उसे ज्ञान नहीं ।' यही तथ्य आध्यात्म और विज्ञान के सन्दर्भ में भी लागू होता है । 'आज एक गूँगा-बहरा बनकर रह गया है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो दूसरा पंगु । पहले ने चेतन पक्ष को ही सब कुछ मानकर उसकी खोज तक में अपने को सीमाबद्ध कर लिया तो विज्ञान प्रकृति पदार्थों के अविज्ञात रहस्यों का अनुसंधान करने और प्रगति के साधन जुटाने में निमग्न हो गया । सत्य की खोज में निरत होने पर भी दोनों पृथक एवं असम्बद्ध दिशाधारा अपनाये हुए हैं । चेतना को परिष्कृत एवं सुसंस्कृत बनाये बिना जड़ पदार्थों से लाभान्वित होना, करतलगत प्राकृतिक शक्तियों का सदुपयोग बन पड़ना संदिग्ध ही बना रहेगा ।

समूची मानव सभ्यता का समग्र विकास विज्ञान और आध्यात्म के एकत्व पर निर्भर है । दोनों महाशक्तियों के समन्वय की ओर मनीषियों के प्रयास अब चल भी पड़े हैं । विज्ञान और आध्यात्म के मध्य चलने वाला असहयोग का संघर्ष का क्रम धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है । जहाँ वैज्ञानिक अनुसन्धानों की दिशाधारा चेतना की ओर मानवी भाव-सम्वेदनाओं के उन्नयन की ओर अभिमुख हुई है । आध्यात्म से दिशा लेकर ध्वंसात्मक प्रयोजन से निरत होकर सृजनात्मकता की ओर अपनी शक्तियों को नियोजित करने की ओर प्रवृत्त हैं, वही आध्यात्म भी तर्क, तथ्यपूर्ण वैज्ञानिक विधि अपनाकर लोक मान्यताओं, अन्धविश्वासों, चित्र-विचित्र प्रथा-प्रचलनों का कुहासा मिटाकर अपनी यथार्थता, प्रखरता को खरा सिद्ध करने को समुद्यत है । इसी तथ्य का उद्घाटन करते हुए वैज्ञानिक सर आर्थर एडिंगटन ने अपनी कृति "फिलॉसफी ऑफ फिजिकल साइन्स" में कहा है कि विज्ञान अब दर्शन या आध्यात्म का विरोधी नहीं, वरन् उसका पूरक बनने जा रहा है । संयुक्त रूप से दोनों शक्तियाँ सत्य और असत्य के मध्य के भेद का विवेक सम्मत समाधान प्रस्तुत करेंगी । उनके अनुसार वैज्ञानिक प्रत्यक्षवाद की कसौटी पर अब यह सिद्ध हो गया है कि चेतना की बोधगम्यता ही वास्तविक सत्य है ।

"माइण्ड एण्ड मैटर" नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में भौतिक विज्ञानी ई. श्रोडिन्गर ने कहा है कि विश्व ब्रह्माण्ड का प्रमुख तत्व चेतना है । पदार्थ जगत का निर्माण उसी के द्वारा सम्पन्न हुआ है । जिस प्रकार शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति भोजन के पाचन और उसके रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तन से होती है, उसी तरह बौद्धिक प्रक्रियाओं, परिकल्पनाओं (थिंकिंग प्रोसेस) के लिए आवश्यक ऊर्जा चेतन सत्ता से प्राप्त होती है । चेतना की शक्ति से ही संसार की समस्त हलचलें, प्रक्रियाएँ संचालित, परिवर्तित एवं परिवर्धित हो रही हैं । मानवी चेतना उसी समष्टिगत सत्ता का एक छोटा घटक है । वह चाहे तो दृढ़ आस्था एवं संकल्पबल के आधार पर परमचेतना से घनिष्ठता जोड़कर अपने में देवत्व का विकास कर सकता है । अन्तः एवं बाह्य प्रकृति पर नियन्त्रण सध सकता है । प्रत्यक्षवादी वैज्ञानिक बुद्धि तो मनुष्य के मस्तिष्क में कौंधने वाली चेतना के छोटे से प्रयास का प्रतिफल है । यदि उस सीमा बन्धन को लांघा जा सके तो सुपरचेतन जैसी उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ हस्तगत हो सकती हैं । यह वह अवस्था है, जहाँ प्रकृति का नियम नहीं चलता, चेतना का ही साम्राज्य रह जाता है । जन्म मृत्यु का, दिक्काल का बन्धन टूट जाता है ।

भौतिक विज्ञान के उच्च शिखर पर पहुँचने के पश्चात् विश्व विख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में 'लाइफ' पत्रिका को दिए गए एक साक्षात्कार में कहा था कि वैज्ञानिक खोजों को लम्बी अवधि में मुझे जो सबसे सुन्दर और सुखद अनुभव हुआ है वह यह कि कोई अदृश्य चेतना इस विश्व-ब्रह्माण्ड की नियामक है । वही सम्पूर्ण सत्य, कला और विज्ञान का स्रोत है । अन्तराल की गहराई में प्रवेश कर कोई भी इसकी अनुभूति कर सकता है । उनके अनुसार विज्ञान का भी उद्देश्य सत्य की खोज करना है, पर मस्तिष्कीय चेतना के उथली परत से संचालित होने के कारण वह गहराई में प्रविष्ट नहीं कर पाता । हमने जो जानकारी प्राप्त की है वह एक स्कूली छात्र से अधिक नहीं है । उस ज्ञान के सहारे न तो वस्तुओं का सही स्वरूप, जाना जा सकता है और न जीवन उद्देश्य की पूर्ति ही सम्भव है ।

अपनी अनुपम कृति "आई विलीव नाइन्टीन पर्सनल फिलॉसफीज" में आइन्स्टीन कहते हैं कि इस धरती पर हमारी स्थिति अनोखी है । हम में से प्रत्येक व्यक्ति यहाँ बहुत थोड़े समय की शार्ट विजिट पर आता है, परन्तु यह नहीं जानता कि वह कहाँ से और क्यों आया है ? बिरले ही होते हैं, जिन्हें कभी-कभी यह आभास हो पाता है कि उन सबके पीछे कोई दिव्य उद्देश्य सन्निहित है । सामान्य तर्क बुद्धि के आधार पर विशाल ब्रह्माण्ड पर छाये रहस्यमय पर्दे को नहीं उठाया जा सकता और न ही मनुष्य स्वयं के बारे में अधिक कुछ जान सकता है । इसी तरह जैवविकास की जटिल प्रक्रियाओं को तर्क और कल्पनाओं के द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं समझा जा सकता । वस्तुतः मानवी विकास बायोलॉजीकल न होकर मनोवैज्ञानिक एवं चेतनात्मक है । उनका कहना है कि हम उतना ही प्राप्त कर सकते हैं, प्रगति कर सकते हैं, जितना हमारी बुद्धि जानती और प्रमाणित करती है, किन्तु एक क्षण जीवन में ऐसा भी आता है जब वह छलांग लगाकर एक उच्चस्तरीय धरातल पर जा पहुँचती है, जिसे अन्तःप्रज्ञा या सुपर कान्सियसनेस कहते हैं । प्रायः सभी महान आविष्कारों का उद्भव कान्सियस माइण्ड के सुपर कान्सियस माइण्ड की ओर क्वाण्टम जम्प से हुआ है । यह अति चेतन अवस्था ही सत्य की, आत्मबोध की स्थिति है । हमें अपने शोध के दायरे को विस्तृत कर इस दिशा में कदम बढ़ाना होगा । आन्तरिक परिपूर्णता का यही सुगम मार्ग है ।

आध्यात्म वेत्ताओं का कहना है कि अदृश्य चेतना ने ही भौतिक पदार्थों का सृजन किया है । वही इसमें आवश्यक परिवर्तन, परिवर्धन करती रहती है । विज्ञानवेत्ता भी अब इस तथ्य को स्वीकारने लगे हैं कि संसार में जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, चेतना का खेल है । प्लांक, ब्रोगली, जेम्सजीन जैसे विख्यात वैज्ञानिक इसी निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि चेतना प्रमुख तत्व है और पदार्थ उसी से व्युत्पन्न हुए हैं । यह मान्यता इतनी सुदृढ़ हो गई थी कि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में उक्त वैज्ञानिक दार्शनिक हो गए थे और आत्मिकी के संश्लेषण में निरत हो गए थे ।

डॉ. ई. रेगर एवं जे. जी. टेलर नामक मूर्धन्य वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि जिस तरह मानवी चेतना का एक केन्द्र उसकी आत्मा है, उसी तरह प्रत्येक भौतिक प्रणाली का एक सचेतन सेण्टर है । चेतना एवं पदार्थ के मध्य अन्यान्य क्रिया के लिए वही उत्तरदायी है । उनके अनुसार चेतना और पदार्थ परस्पर पूरक हैं एवं सघनता से एक दूसरे से गुथे हुए हैं । जिस प्रकार भौतिक जगत में पदार्थ और ऊर्जा परस्पर सम्बन्धित हैं और आइन्स्टीन के समीकरण ई. एम. सी. २ के अनुसार एक-दूसरे में परिवर्तित किए जा सकते हैं, उसी तरह आध्यात्मिक जगत में चेतन ऊर्जा और प्रकृति पदार्थों में आपसी सम्बन्ध है और दोनों एक-दूसरे को आकार प्रदान करते हैं । इतना ही नहीं जड़ और चेतन 'ई. एम. वी. २' सूत्र के आधार पर अपना रूप भी परिवर्तित कर सकते हैं । यहाँ ई. से तात्पर्य साइकिक एनर्जी. एम. से. मास अर्थात् मात्रा और वी. से वेलोसिटी ऑफ थॉट से है ।

अतीन्द्रिय सामर्थ्य द्वारा नये पदार्थों के निर्माण अथवा वस्तुओं के रंग, रूप, आकार में परिवर्तन से उक्त तथ्य की पुष्टि होती है कि चेतना सर्वोपरि है और पदार्थों पर उसका आधिपत्य है । इच्छानुरूप वह उनमें हेर-फेर करने में समर्थ । उदाहरण के लिए स्वामी विवेकानन्द द्वारा वर्णित उस घटनाक्रम को लिया जा सकता है, जिसमें एक व्यक्ति ने उनके समक्ष अपनी मानसिक शक्ति से अंगूर, संतरों आदि के ढेर पैदा कर दिए थे । एक दूसरे प्रयोग में ताजे सुगन्धित गुलाब के पुष्प खिला दिए थे । इसी तरह स्वामी विशुद्धानन्द के बारे में विख्यात है कि स्पर्शमात्र से वह जड़ वस्तुओं में मनचाही खुशबू पैदा कर देते थे । मृत जीवों में प्राण फूँक देते थे । बनारसी साड़ी के एक गट्ठर को उन्होंने एक बार तिब्बती परिधान में बदल दिया था । इजराइल के गुह्यविज्ञानी यूरीगेलर ने पिछले दिनों इस तरह के कितने ही प्रयोग जाने-माने वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किए हैं । कठोर धातुओं में रबर जैसी लोचकता प्रकट कर दिखाई वैनेडियम कार्बाइड जैसे कठोरतम धातु को मनःशक्ति के आधार पर विनष्ट कर ऊर्जा में बदल दिया । सभी उदाहरण यह प्रमाणित करते हैं कि चेतना द्वारा वस्तुओं का रूपान्तरण सम्भव है । एक ओर जहाँ पदार्थ को साइकिक ऊर्जा में बदलना सम्भव है, वहीं अतिचेतन मन मानसिक ऊर्जा से पदार्थ का संश्लेषण भी कर सकता है ।

प्रस्तुत समय की माँग है कि विज्ञान की खोज प्रकृति पदार्थों और उनमें सन्निहित शक्तियों के उद्घाटन तक सीमित न रहकर चेतना की गहराइयों में प्रवेश करे, जिसमें भाव सम्वेदनाओं, मान्यताओं, आस्थाओं, प्रज्ञा, श्रद्धा आदि के उच्चस्तरीय तत्व छिपे हैं । इनकी उत्कृष्टता एवं परिपक्वता ही मनुष्य को देवोपम बना सकेगी मनुष्य एक साथ सच्चा वैज्ञानिक एवं सच्चा आध्यात्मिक तभी कहा जा सकेगा ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असामान्य और विलक्षण किन्तु सम्भव और सुलभ

दैहिक सीमाओं से परे आत्मा का विचरण

आद्य शंकराचार्य ने एक शास्त्रार्थ प्रयोजन में काम-शास्त्र का अनुभव प्राप्त करने के लिए अपने शरीर में से आत्मा को निकालकर मृत—सुधन्वा के शरीर में प्रवेश किया था । परकाया प्रवेश की इस प्रक्रिया का उद्देश्य पूरा होने पर वे पुनः अपने शरीर में वापस लौट आये थे ।

रामकृष्ण परमहंस ने अपनी आत्मा को विवेकानन्द में प्रवेश कर दिया था । परमहंस जी के स्वर्गवास के अवसर पर विवेकानन्द को भान हुआ कि कोई दिव्य-प्रकाश उनके शरीर में घुस पड़ा और उनकी नस-नस में नयी शक्ति भर गई ।

शंकराचार्य के उदाहरण से मृत शरीर पर किसी अन्य जीवात्मा का अधिपत्य हो सकने की बात, प्रकाश में आती है और परमहंस जी के परकाया प्रवेश से जीवित मनुष्य में किसी समर्थ व्यक्तित्व के प्रवेश कर जाने का लक्ष्य सामने आता है । परकाया प्रवेश की आध्यात्म सिद्धियों के सन्दर्भ में चर्चा होती रही है । यह आंशिक प्रवेश समान रूप से पारस्परिक विनियोग की तरह सम्भव है । शक्ति-पात दीक्षा में गुरु अपना एक अंश शिष्य के व्यक्तित्व में हस्तान्तरित करता है ।

आत्मा स्वामी है और शरीर सेवक । आत्मा यात्री है और शरीर वाहन । स्वामी की अपनी दुर्बलताएँ ही सेवक के श्रम-सहयोग से वन्चित रह सकती हैं । स्वेच्छाचार बरतने वाले सेवकों को देखकर यही अनुमान लगाया जा सकता है, कि स्वामी को अपने पद का ध्यान नहीं रहा । वाहन रहते हुए भी यदि सवार को पैदल चलना पड़े तो समझना चाहिए कि उसे अपने साधन के उपभोग की समुचित जानकारी नहीं है ।

अपने शरीर पर तो आत्मा का आधिपत्य होता ही है, यदि उसकी सामर्थ्य सबल है, तो वह दूसरों के शरीर का भी अपने लिए उपयोग कर सकता है । ऐसा जीवित अवस्था में भी हो सकता है और प्रेतात्माएँ भी वैसा कर सकती हैं ।

दो अमरीकी प्रोफेसरों ने मिलकर एक किताब लिखी है, "बीसवीं सदी में अचेतन मनोविज्ञान की खोज ।" इसमें आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता तथा पुनर्जन्म को सिद्ध करने वाले अनेकों प्रमाण दिए गए हैं । इसी पुस्तक में परकाया प्रवेश सम्बन्धी कई घटनाओं, तथ्यों का संकलन किया गया है । उनमें से कुछ ये हैं—

एक बर्तन विक्रेता घर से टहलने निकला और गायब हो गया । जाकर मशीनों की मरम्मत का काम करने लगा । दो वर्ष बाद सहसा घर की सुधि आयी । जैसे गहरी नींद टूटी हो, घर वापस पहुँचा । पता चला, मशीनों की मरम्मत का वही काम एक अन्य व्यक्ति करता था, जो कुछ ही समय पहले मरा था । बर्तन विक्रेता दो वर्ष तक उसी व्यक्ति की तरह काम करता रहा । वहाँ के सभी कर्मचारियों के नाम, व्यवहार, सराय, होटल सब उसे याद थे । घर लौटकर धीरे-धीरे आते वह सब भूल गया और पूर्ववत् अपना पुराना कसेरे का धन्धा करने लगा । डॉ. आसबन ने इस घटना को विस्तार से प्रकाशित किया । अनुमान यह किया गया कि, मशीनों की मरम्मत करने वाले व्यक्ति की आत्मा ने कसेरे की आत्मा को दो वर्ष तक अपने कब्जे में रखा । जब वह आत्मा कब्जा छोड़कर चली गई, तो पुरानी आत्मा अपनी स्वतन्त्र सत्ता का परिचय पुनः दे सकी । इस बीच वह दबी रही ।

कभी-कभी ऐसे घटनाक्रम भी प्रकाश में आते हैं कि किसी मृतात्मा ने किसी दूसरे जीवित मनुष्य के शरीर पर अधिपत्य जमा लिया और उसका उपयोग मन मर्जी से करती रही । भूत-प्रेतों के आवेश की चर्चा झाड़-फूँक के क्षेत्र में आये दिन होती रहती हैं । उनमें अधिकतर तो मानसिक दुर्बलता, मूढ़ मान्यता, अर्द्ध-उन्मुक्त की मनःस्थिति, झूठ-मूठ का नाटक एवं सम्बद्ध व्यक्तियों द्वारा छोड़ी गई छाप ही प्रमुख कारण होती है, फिर भी ऐसे तत्वों की कमी नहीं जिनमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मृतात्माओं के अन्य शरीर पर अधिकार जमा लेने की बात सिद्ध होती है । इस प्रकार के अधिकार प्रायः अस्थायी होते हैं । आत्माएँ अपना उद्देश्य पूरा करके उस अधिपत्य को अनायास ही छोड़कर चली जाती हैं अथवा उदासीन हो जाती हैं ।

किन्हीं विशिष्ट आत्माओं ने दूसरों के शरीर में प्रवेश करके उनसे कुछ विशिष्ट काम कराये, ऐसी घटनाएँ संसार के अनेक भागों में घटित होती रही हैं ।

विश्व विख्यात कलाकार गोया की आत्मा ने अमेरिका की एक विधवा हैनरोट के शरीर में प्रवेश करके उसके द्वारा गवालन नामक एक अद्भुत कलाकृति का सृजन कराया था । यह समाचार उन दिनों अमेरिका में अनेक पत्रों में प्रकाशित हुआ था ।

रोड्स नगर के एक नागरिक ऐसेलबर्न बैंक से दस हजार का चैक भुनाकर निकले और सहसा गायब हो गये । घर वाले ढूँढ़-ढूँढ़कर थक गये । ऐसेलबर्न सैकड़ों मील दूर एक नगर में जाकर वहाँ चीनी का व्यापार करने लगा । अपना नाम बताता—ए. से. ब्राउन । उसने पहले यह व्यापार कभी भी नहीं किया था । अब एक निष्णात व्यापारी की तरह काम कर रहा था । दो माह बाद जैसे स्वप्न टूटा, वह चौंका । यह चीनी का व्यापार मैंने तो कभी नहीं किया और मेरा घर भी यहाँ नहीं । वह भागा और पुराने घर जा पहुँचा । इस घटना का भी निष्कर्ष यही निकाला कि किसी मृत व्यापारी की आत्मा ने उसे वशवर्ती कर लिया था ।

१८६४ में डॉक्टर डामा के पास एक सुशिक्षित बेहोश रोगी आया । वह चंगा हो गया, पर शिशुवत् आचरण व चिंतन करने लगा । पढ़ना-लिखना भूल चुका था । कई महीनों तक यही दशा रही, फिर उसे जैसे कुछ याद आया और वह पुनः प्रौढ़ व्यक्तित्व का स्वामी बन गया ।

बोस्टन के डॉ. नार्टन प्रिंस के पास आयी एक महिला की भी कुछ यही स्थिति थी । वह प्रतिदिन कुछ घण्टे तक एक अन्य ही व्यक्तित्व की बन जाती । व्यवहार, क्रिया-कलाप, उच्चारण, सब भिन्न । वह एक स्वस्थ पुरुष जैसा आचरण करती । अपना नाम भी किसी पुरुष का नाम बताती, फिर अपने महिला व्यक्तित्व में लौट आती ।

परकाया प्रवेश

एक ही तारीख, एक ही दिन, धरती के ठीक विपरीत दो भागों में, एक ही नाम के दो व्यक्ति बीमार पड़े । अचेतावस्था में एक का प्राण दूसरे के शरीर में, दूसरे के प्राण पहले के शरीर में परिवर्तित हो जायें तो, उसे मात्र संयोग नहीं, वरन् आत्मा का अद्भुत तत्व दर्शन और किसी सर्वोपरि बुद्धिमान सत्ता की अनौखी लीला ही कहेंगे ।

प्रस्तुत घटना उसका जीता जागता उदाहरण है । यह घटना सर्वप्रथम सेण्टपीटर्स वर्ग की वीकली मेडिकल जनरल में छपी, उसी के आधार पर उसे "थियोसोफिकल इन्क्वारीज" ने छापा ।

२२ सितम्बर, सन् १८७४ की बात है, रूस के यूराल पर्वत स्थित नगर औरन वर्ग का एक धन कुवेर यहूदी बीमार पड़ा । डॉक्टरों ने उसे सन्निपात होना बताया । उसकी नाड़ी लगभग टूट गई, शरीर ठण्डा पड़ गया, बत्तियाँ जलादी गईं, अन्तिम प्रार्थना की जाने लगी, तभी मरणासन्न यहूदी इब्राहीम चारको के शरीर में फिर से चेतना लौटती दिखाई दी, श्वास गति धीरे-धीरे तीव्र हो उठी, आँखें खुल गईं, उसने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई लगा अब बिल्कुल ठीक हो गया । कुछ गड़बड़ दीख रही थी इतनी ही कि, वह कुछ विस्मित, आश्चर्य चकित सा दीख रहा था, मानो इस स्थान के लिए वह निरा अनजान हो ।

होश में आने के बाद इब्राहीम चारको ने जो शब्द कहे, उन्हें सुनकर घर वाले थोड़ा चौंके क्योंकि वह भाषा घर में कोई नहीं समझ पाया । घर वालों ने अपनी भाषा में बात-चीत करनी चाही पर इब्राहीम चारको ने जो कुछ कहा उसे घर का एक भी सदस्य नहीं समझ पाया । लोगों ने समझा इब्राहीम पागल हो गया । वह इसी तरह दिन भर बड़-बड़ाता, शीशे में चेहरा देखता और घर से भागने की चेष्टा करता । पागलों का इलाज करने वाले डॉक्टर परेशान थे कि पागल होने पर मनुष्य चाहे जितना ऊल-जलूल बोले पर बोलता अपनी भाषा है या अस्त-व्यस्त बोलता है, पर इब्राहीम जो कुछ बोलता है, वह सब एक ही भाषा के शब्द हैं । उसने कागज पर कुछ लिखा उसे भाषा विशेषज्ञों से पढ़ाया गया तो पता चला कि उसने जो लिखा वह लैटिन भाषा के क्रमबद्ध शब्द और वाक्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थे, जो निरर्थक नहीं थे । इब्राहीम चारको को लैटिन के एक अक्षर का भी ज्ञान नहीं था, यही हैरानी थी कि वह आधे घण्टे के अन्तर से लैटिन किस तरह जान गया ।

अब उसे सेण्टपीटर्स वर्ग की मेडिकल यूनिवर्सिटी में ले जाया गया । वहाँ लैटिन भाषा जानने वाले प्रोफेसर आरेलो ने उसका परीक्षण किया । पहली बार इब्राहीम ने खुलकर लैटिन में बात की उसने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा आज मैं खुश हूँ कि कम से कम आप मेरी बात तो सुन और समझ सकते हैं । आप यकीन नहीं करेंगे पर यह है सच भगवान जाने कैसे हुआ पर मैं ब्रिटिश कोलम्बिया (उत्तरी अमेरिका) का रहने वाला हूँ । न्यूवेस्ट मिनिस्टर में मेरा घर है । मेरी पत्नी भी है और बच्चा भी । मेरा नाम इब्राहीम ही है, पर इब्राहीम चारको नहीं इब्राहीम उरहम है । प्रोफेसर आरलो ने उस समय तो यही कहा कि यह सब जासूसी षड्यन्त्र सा लगता है । इससे अधिक वे कुछ जान न पाये । इसी बीच इब्राहीम वहाँ से चुपचाप भाग निकला फिर बहुत दिनों तक उसका पता न चला । लोगों ने समझा वह किसी नदी, जोहड़ में डूबकर मर गया ।

कुछ दिन बाद ब्रिटिश कोलम्बिया के अखबारों में एक विचित्र घटना छपी । ठीक उसी दिन जिस दिन रूस का इब्राहीम चारको बीमार पड़ा था, न्यूवेस्ट मिनिस्टर के एक साधारण परिवार में भी इब्राहीम उरहम नामक अंग्रेज बीमार पड़ा । न्यूवेस्ट मिनिस्टर ग्लोब में ठीक ओरन वर्ग की सीध में पड़ता है, यदि कोई लम्बी कील ओरन वर्ग से घुसेड़ी जाय और वह पृथ्वी के आर-पार कर जाय तो न्यूवेस्ट मिनिस्टर में ही पहुँचेगी । बीमार थोड़ी देर अचेत रहा और जब होश में आया तब यहूदियों जैसी भाषा बोलने लगा । उसने अपने बच्चों तक को पहचानने से इन्कार कर दिया । इसी बीच एक दूसरा इब्राहीम न्यूवेस्ट मिनिस्टर आ पहुँचा, उसकी शक्ल सूरत रूसियों की सी थी, पर वह लैटिन बोलता था और इब्राहीम उरहम की पत्नी को अपनी पत्नी बताता था । उसने बहुत-सी ऐसी बातें बताईं जो केवल वह और उसकी पत्नी ही जानते थे । पत्नी ने वे सारी बातें स्वीकार तो कीं पर उसने कहा—सब बातें सच होने पर भी शक्ल में तो तुम मेरे पति से भिन्न शरीर के हो ।

यह समाचार अखबारों में छपा तब प्रो. आरलो स्वयं ब्रिटिश कोलम्बिया आये और यह देखकर हैरान रह गए कि यह वही व्यक्ति था, जिसका उन्होंने पूर्व परीक्षण किया था । आत्म-विज्ञान की जानकारी के अभाव में पाश्चात्य वैज्ञानिक भी इस घटना का कुछ अर्थ न निकाल सके । रहस्य, रहस्य ही बना रह गया, किन्तु इस घटना की याद करने वाले अमेरिकन आज भी आश्चर्यचकित होकर विचार करते हैं, क्या सचमुच शरीर से पृथक कोई आत्म-चेतना है, जो शरीर के व्यापार में संलग्न होकर भी मुक्त जीवन तत्व हो ? इस रहस्य का विश्लेषण भारतीय धर्म विज्ञान और तत्व-दर्शन ही कर सकता है । विविध योग साधनाओं द्वारा इस सत्य का यथार्थ ज्ञान और अनुभूति कोई भी मनुष्य प्राप्त कर सकता है ।

१५ अप्रैल, १८९७ को एक पादरी मोटर दुर्घटनाग्रस्त हो गये । होश आया तो एक छोटे बालक का ही आचरण करने लगे । पिछला नाम, पता, व्यवसाय सब भूल गये । पहले वे यहूदी भाषा नहीं जानते थे । शिशु रूप में अब यहूदी बोलते । परेशान होकर डॉक्टरों ने उन्हें लन्दन से न्यूयार्क भेजा । वहाँ चिकित्सा चली, धीरे-धीरे सुधार हुआ । लम्बे समय तक कभी बालक व्यक्तित्व मुखर रहता, कभी पादरी-व्यक्तित्व । अरसे बाद अन्ततः वे असली व्यक्तित्व में लौट सके ।

मृतात्माएँ दूसरों के शरीर पर किस स्थिति में ? किन पर, और किस लिए अधिपत्य स्थापित करती हैं ? इसका सही उत्तर दे सकना तो आज की स्थिति में कठिन है, पर अनुमान यह लगाया जा सकता है कि कोई मनस्वी आत्मा अपने से दुर्बल पड़ने वाले व्यक्तित्वों पर छा जाने में अधिक सफल होती है । पूर्व परिचय एवं स्नेह-सौहार्द्र भी एक कारण हो सकता है । अतृप्त आत्माएँ सांसारिक जीवन का आनन्द लेना चाहती हैं, अथवा अपनी अभिलाषाएँ पूरी करने के लिए आतुर होती हैं । यह इन्द्रिय क्षमता से युक्त स्थूल शरीर से ही सम्भव है । सूक्ष्म शरीर मानसिक अनुभूतियाँ तो ले सकता है, पर स्थूल इन्द्रियों के अभाव से भौतिक वस्तुओं का उपभोग उसके लिए शक्य नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता । अस्तु इस प्रयोजन के लिए वे दूसरों के शरीरों पर अधिपत्य जमाते हैं और अपना मनोरथ पूरा करते हैं इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी हो सकते हैं ।

यह अधिपत्य थोड़े समय के लिए आवेश, उन्माद स्तर का भी हो सकता है और उसका एक रूप यह भी सम्भव है कि शरीर का असली स्वामी जीवात्मा मूर्छित अवस्था में जा पड़े और उस शरीर का उपयोग कोई अधिकार जमाने वाली सत्ता मन चाहे ढंग से करती रहे ।

योग साधना द्वारा भी साधक सिद्धगण परकाया प्रवेश की सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं । एक सिद्ध पुरुष के आँखों देखे गए परकाया प्रवेश का विवरण कमाण्डर एल. पी. फैरेल ने लिखा है । घटना सन् १९३९ की है । एक दिन पश्चिमी कमान के सैनिक कमाण्डेण्ट श्री एल. पी. फैरेल अपने सहायक अधिकारियों के साथ एक युद्ध सम्बन्धी योजना तैयार कर रहे थे । यह स्थान जहाँ पर उनका कैम्प लगा हुआ था, असम-बर्मा की सीमा पर था । वहीं पास में एक नदी बहती थी, नदी के पास ही यह मंत्रणा चल रही थी ।

एकाएक कुछ अधिकारियों का ध्यान नदी की ओर चला गया । श्री फैरेल ने भी उधर देखा तो उनकी भी दृष्टि अटक कर रह गई । टेलीस्कोप उठाकर देखा एक मरा जीर्ण-शीर्ण शरीर का वृद्ध संन्यासी पानी में घुसा एक शव को बाहर खींच रहा है । कमजोर शरीर होने से शव ढोने में अड़चन हो रही थी । हाँफता जाता था और खींचता भी । बड़ी कठिनाई से शव किनारे आ पाया ।

श्री एल. पी. फैरेल यद्यपि अंग्रेज थे, पर अपनी बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिक विषयों में रुचि उन्होंने प्रगाढ़ कर ली थी । भारतवर्ष में एक उच्च सैनिक अफसर नियुक्त होने के बाद तो उनके जीवन में एक नया मोड़ आया । भारतीय तत्व-दर्शन का उन्होंने गहरा अध्ययन ही नहीं किया, जिसकी भी जानकारी मिली, वह सिद्ध महात्माओं के पास जा-जाकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी करते रहे । धीरे-धीरे उनका परलोक, पुनर्जन्म, कर्मफल और आत्मा की अमरता पर विश्वास हो चला था । यह घटना तो उनके जीवन में अप्रत्याशित ही थी और उसने उनके उक्त विश्वास को निष्ठा में बदल दिया । श्री फैरेल एक अंग्रेज आफीसर के रूप में भारत आये थे, पर जब वे यहाँ से लौटे तब उनकी आत्मा में शुद्ध हिन्दू संस्कार स्थान ले चुके थे ।

एक वृद्ध शव क्यों खींच रहा है ? इस रहस्य को जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक ही थी । योजना तो वहीं रखी रह गई, सब लोग एकटक देखने लगे कि वृद्ध संन्यासी इस शव का क्या करता है ?

वृद्ध शव को खींचकर एक वृक्ष की आड़ में ले गया, फिर थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा, कुछ पता नहीं चला कि वह क्या कर रहा है ? कोई १५-२० मिनट पीछे ही दिखायी दिया कि वह युवक जो अभी शव के रूप में नदी में बहता चला आ रहा था, उन्हीं गीले कपड़ों को पहने बाहर निकल आया और कपड़े उतारने लगा । सम्भवतः वह उन्हें सुखाना चाहता होगा ।

मृत व्यक्ति का एकाएक जीवित हो जाना एक महान आश्चर्यजनक घटना थी और एक बड़ा भारी रहस्य भी, जो श्री फैरेल के मन में कौतूहल भी उत्पन्न कर रहा था और आशंका भी । उन्होंने कुछ सैनिकों को आदेश दिया—सशस्त्र सिपाहियों ने जाकर युवक को घेर लिया और उसे बन्दी बनाकर श्री फैरेल के पास ले आये ।

युवक के वहाँ आते ही श्री फैरेल ने प्रश्न किया "वह वृद्ध कहाँ है ?" इस पर युवक हँसा जैसे इस गिरफ्तारी आदि का उसके मन पर कोई प्रभाव ही न पड़ा हो और फिर बोला "वह वृद्ध मैं ही हूँ ।"

"लेकिन अभी कुछ देर पहले तो तुम शव थे, पानी में बह रहे थे, एक बुड्ढा तुम्हें पानी में से खींचकर किनारे पर ले गया था, फिर तुम प्रगट हो गए, यह रहस्य क्या है ? यदि तुम्हीं वह वृद्ध हो, तो उस वृद्ध का शरीर कहाँ है ?" आश्चर्यचकित फैरेल ने एक साथ ही इतने प्रश्न पूछ डाले, जिनका एकाएक उत्तर देना असम्भव-सा था ।

युवक ने सन्तोष के साथ बताया—"हम योगी हैं, हमारा स्थूल शरीर वृद्ध हो गया था, काम नहीं देता था, अभी इस पृथ्वी पर रहने की हमारी आकांक्षा तृप्त नहीं हुई थी । किसी को मार कर बलात् शरीर में प्रवेश करना तो पाप होता, इसलिए बहुत दिन से इस प्रतीक्षा में था, कि कोई अच्छा शव मिले तो उसमें अपना यह पुराना चोला बदल लें । सौभाग्य से यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इच्छा आज पूरी हुई । मैं ही वह वृद्ध हूँ, यह शरीर उस युवक का था, अब मेरा है ।"

इस पर फैरेल ने प्रश्न किया—तब फिर तुम्हारा पहला शरीर कहाँ है ?

संकेत से उस युवक शरीर में प्रवेशधारी संन्यासी ने बताया—वह वहाँ पेड़ के पीछे अब मृत अवस्था में पड़ा है । अपना प्राण शरीर खींचकर उसे इस शरीर में धारण कर लेने के बाद उसकी कोई उपयोगिता नहीं रही । थोड़ी देर में उसका अग्नि संस्कार कर देते, पर अभी तो इस शरीर के कपड़े भी नहीं सुखा पाये थे, कि आपके इन सैनिकों ने हमें बन्दी बना लिया ।

श्री फैरेल ने इसके बाद उन संन्यासी से बहुत सारी बातें हिन्दू-दर्शन के बारे में पूछीं और बहुत प्रभावित हुए । वह यह भी जानना चाहते थे कि स्थूल शरीर के अणु-अणु में व्याप्त प्रकाश शरीर के अणुओं को किस प्रकार समेटा जा सकता है, किस प्रकार शरीर से बाहर निकाला और दूसरे शरीर में अथवा मुक्त आकाश में रखा जा सकता है ? पर यह सब कष्ट साध्य योग साधनाओं से पूरी होने वाली योजनाएँ थीं । उसके लिए श्री फैरेल के पास न तो पर्याप्त साहस ही था और न ही समय, पर उन्होंने यह अवश्य स्वीकार कर लिया कि सूक्ष्म अन्तर्चेतना से सम्बन्धित भारतीय तत्व-दर्शन कोई गप्प या कल्पना मात्र नहीं, वह वैज्ञानिक तथ्य है, जिसकी ओर आज यूरोपीय वैज्ञानिक बढ़ रहे हैं ।

कोश (सेल) स्थिति नाभिक (न्यूक्लियस) में, जिसमें जीवित चेतना के सूक्ष्मतम् संस्कार माला के मनकों की तरह पिरोये हैं, स्वतन्त्र कोश में शरीर निर्माण की क्षमता है । अमीबा के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रकट हो गया है, पर वैज्ञानिक अभी यह स्वीकार नहीं करते कि न्यूक्लियस स्वतन्त्र अवस्था में भी रह सकता हैं । उस सिद्धान्त की पुष्टि भारतीय दर्शन का यह परकाया प्रवेश सिद्धान्त करेगा । भूत-प्रेत की कल्पना को भले ही लोग एकाकार स्वीकार न करें, पर श्री फैरेल के उक्त संस्मरण को धोखा नहीं कहा जा सकता । वे एक जिम्मेदार व्यक्ति थे और यह घटना उन्होंने स्वयं ही १७ मई, १९५९ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उद्धृत की थी ।

हारवर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका के डॉक्टर आसबन ने अपनी मनोवैज्ञानिक खोजों में कई सच्ची घटनाओं का उल्लेख दिया है, जो किसी व्यक्ति में किसी अन्य आत्मा का प्रवेश हो जाना सम्भव बताती हैं । उन्होंने एक कारीगर का उदाहरण प्रस्तुत किया है । एक दिन अनायास ही वह अपने औजार फेंक कर चिल्लाया कि में यहाँ कैसे आ गया और यह बेकार काम कैसे करने लगा ? सही यह है कि दो वर्षों से उसने अपना असली घर छोड़ दिया था । किसी आत्मा के प्रभाव में आकर ही उसने घर छोड़ा और वह काम करने लगा, जिसका उसे अभ्यास नहीं था । जब तक वह उस आत्मा के प्रभाव में रहा तब तक वह अपना असली नाम व घर भूला हुआ था ।

सम्मोहन और परकाया प्रवेश

सम्मोहन विद्या एक प्रकार से परकाया प्रवेश का ही दूसरा रूप है । प्रयोक्ता अपने प्रचण्ड मनोबल का प्रहार करता है और जिस पर प्रयोग किया गया है उसके बाह्य मस्तिष्क की चेतना को पीछे अन्तर्मन में धकेल देता है । यह अर्द्ध-मूर्छित स्थिति हुई । सोचने-समझने वाला मस्तिष्क निद्राग्रस्त हो गया और उसकी जगह प्रयोक्ता का मनोबल काम करने लगा । सारे मस्तिष्कीय तन्त्रों का उपयोग तब तक वही करता है जब तक कि उस बलात् निद्रा से मुक्ति नहीं मिल जाती । प्रयोक्ता को प्रहार और उपभोक्ता की सहज स्वीकृति का समन्वय ही सम्मोहन की स्थिति उत्पन्न करता है । दोनों में से एक पक्ष भी दुर्बल न हो तो प्रयोग सफल न हो सकेगा ।

स्व सम्मोहन का स्तर अधिक ऊँचा है, उसमें प्रबल आत्म शक्ति के द्वारा ही अपने चेतन मस्तिष्क को अर्द्धतन्द्रा में धकेल दिया जाता है और अचेतन को सामान्य जीवन संचार की व्यवस्था जुटाते रहने के लिए सीमित कर दिया जाता है । इसे योग-निद्रा या समाधि कहते हैं । इसमें अहर्निश श्रम-संलग्न रहने वाले बाह्य मस्तिष्क की कृत्रिम शक्ति साथ ही दिव्य निद्रा का आनन्द मिलता है । इस विश्रान्ति के उपरान्त एक नई स्फूर्ति का लाभ मिलता है । साथ ही चेतना को अनावश्यक पर्तों को दुर्बल एवं आवश्यक पर्तों को सबल बनाने का अवसर मिलता है । योगी लोग आत्मोत्कर्ष के अन्यान्य उच्चस्तरीय लाभ भी इस योग-निद्रा द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त करते हैं । सामान्यतया प्रचलित स्व-सम्मोहन भी अपना मनोबल बढ़ाने, बुरी आदतें छुड़ाने एवं उपयोगी निष्ठाएँ जमाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है ।

स्व-सम्मोहन कठिन है । आत्मबल को प्रखर बनाने के उपरान्त ही उसमें इतनी क्षमता उत्पन्न होती है कि जागृत मस्तिष्क को शिथिल बना सके और उस स्थिति का लाभ लेकर अनावश्यक को हटाने एवं आवश्यक को जमाने का कार्य पूरा कर सके । आमतौर से जागृत मस्तिष्क ही सबल होता है और वह अपनी सर्वोपरि सत्ता को चुनौती दी जाना स्वीकार नहीं करता । तर्क और सन्देह के आधार पर वह अपने ऊपर होने वाले आक्रमण को पूरी शक्ति के साथ रोकता है । फलतः स्व-सम्मोहन की गहराई उत्पन्न होने से भारी कठिनाई उत्पन्न होती है । इतने पर भी शान्त चित्त से, श्रद्धापूर्वक किन्हीं विचारों को बार-बार दुहराने से भी कुछ तो प्रभाव पड़ता ही है और उपयोगी मानसिक परिवर्तन के लिए प्रयासों से कुछ तो सफलताएँ मिलती ही हैं । यह कुछ-कुछ भी बूँद-बूँद करके घड़ा भरने की उक्ति के अनुरूप लाभदायक ही सिद्ध होता है ।

"कान्शस ओटोसजैशन" ग्रन्थ में फ्रांस के मनोविज्ञान विशारद प्रो. इमाइल कू ने अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया है कि किस प्रकार इच्छा शक्ति का प्रयोग करके अपने आप में तथा दूसरों में असाधारण परिवर्तन किया जा सकता है । ये प्रयोग शारीरिक और मानसिक रुग्णता को दूर करने में भी बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं ।

स्व-सम्मोहन आत्म साधना है, सम्मोहन वैज्ञानिक प्रयोग । मानसिक चिकित्सा जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को अर्द्ध-मूर्च्छित करने की प्रक्रिया द्वारा ही सम्पन्न होता है । इस प्रकार उत्पन्न हुई योग निद्रा इतनी गहरी होती है कि उसमें छोटे-बड़े ऑपरेशन भी आसानी से हो सकते हैं । पाश्चात्य देशों में यह विज्ञान अब बहुत आगे तक बढ़ गया है और दन्त चिकित्सक तो आमतौर से इस प्रक्रिया का उपयोग करके बिना सुन्न किये ही दाँत उखाड़ते रहते हैं और रोगी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता ।

हिप्नोटिज्म का हिन्दी अनुवाद 'सम्मोहन' है । उसे सामान्यतः एक विशेष प्रकार की सुझाई हुई नींद 'नर्वस निन्द्रा' कहा जा सकता है । साधारण नींद में मनुष्य सुधि-बुधि खोकर अचेत हो जाता है, पर सम्मोहन निन्द्रा में मनुष्य का आधा सचेतन मस्तिष्क भर सोता है । उसके स्थान पर अचेतन अधिक सक्षम हो जाता है और आदेशकर्त्ता के निर्देशों के प्रति पूर्ण सजगता का परिचय देता है । इसे चेतना की सामान्य स्थिति का असामान्य प्रत्यावर्तन कहा जा सकता है । सक्रिय मस्तिष्क की सुषुप्ति और निष्क्रिय की ज़ागृति इसे कहा जाय तो भी बात बनती नहीं है, क्योकि सक्रिय की निन्द्रा वाली बात तो सही है, पर जिसे निष्क्रिय कहा जा रहा है, वह अपने क्षेत्र में सक्रिय से भी अधिक सक्रिय रहता है और व्यक्तित्व के निर्माण में ज्ञानवान चेतना से भी कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी भूमिका का निर्वाह करता है ।

डॉक्टर बार्बर की तरह अन्य लोगों को भी यह सन्देह था कि सम्मोहन प्रदर्शनों में कोई पटु-शिष्य बाजीगर को सफल सिद्ध करने के लिए जान-बूझकर ढोंग बनाता है, किन्तु आशंका क्रमशः निर्मूल होती चली गई है । जब तक बाजीगरी के कौतुक-प्रदर्शनों में सम्मोहन विद्या का प्रयोग होता था, तब तक उस पर अंगुली उठने की काफी गुंजाइश थी, पर अब वैसा कदाचित ही होता है । अब यह विद्या मानसोपचार के क्षेत्र में सम्मिलित हो गई है और प्रायः इसी के लिए इसका उपयोग होता है । मस्तिष्क में तर्क शक्ति, इच्छा शक्ति एवं निष्कर्ष क्षमता के कुछ अपने क्षेत्र हैं । सम्मोहन निद्रा में उसी को निष्क्रिय बना दिया जाता है और सम्मोहित व्यक्ति इस स्थिति में पहुँच जाता है, मानो उसकी अपनी निजी विचार बुद्धि का अन्त हो गया ।

विज्ञानी एरिक्शन ने सम्मोहित व्यक्ति की रंग पहचानने की क्षमता बदल देने, पानी को ही शराब बताकर उसमें नशे के लक्षण उत्पन्न कर देने में सफलता पायी है । इसी प्रकार 'जनरल ऑफ साइकेटरी' में मनःशास्त्री के. उलमैन के प्रयोग विवरण लेख में उन सफलताओं का वर्णन है, जिनमें शरीर के विभिन्न अवयवों पर विभिन्न परिवर्तन सम्भव कर दिखाये थे । उदाहरण के लिए एक व्यक्ति का हाथ ठण्डे पानी में डलवाया गया और उसे अत्यधिक उष्ण मनवा लेने पर हाथ में छाले उठ आना सम्भव हो गया था । ऐसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही अनेक विवरण रूसी मानसोपचारक प्लेटोनोव ने अपनी पुस्तक "दि वर्ल्ड एज ए फिजियोलॉजिकल एण्ड थैराट्यूटिक फैक्टर" में प्रकाशित कराये हैं ।

रूसी मनःशास्त्री पावलोव के अनुसार सम्मोहन में जादू जैसी कोई बात नहीं । वह मनोविज्ञान सम्मत सहज प्रक्रिया है, जिसमें कुछ मस्तिष्कीय कणों की अन्तःक्षमता को कृत्रिम रूप से सुला देने और जगा देने की प्रक्रिया को संकल्प शक्ति के आधार पर सम्पन्न कर दिया जाता है ।

सम्मोहन से शरीर की सामान्य स्थिति में भी अन्तर आ जाता है । यह अन्तर शरीर परीक्षा में सहज ही शरीर को सुन्न करने में सम्मोहन प्रयोग बहुत सफल हुए हैं । प्रथम महायुद्ध के दिनों रूसी डॉक्टर पोडिंया पोलेस्की ने ३० घायलों के शरीर बिना क्लोरोफार्म के ही सुन्न करके दिखाये थे और उनके पीड़ा रहित ऑपरेशन सम्पन्न किए थे । ब्रिटिश डॉक्टर एस्टल ने इस प्रयोग के आधार पर लगभग २०० ऑपरेशन सम्पन्न किए थे । यूरोप के अनेक देशों में दन्त चिकित्सक बिना कष्ट दाँत उखाड़ने में इस पद्धति का प्रयोग करते हैं । दन्त ही में नहीं प्रसव के लिए भी प्रसूति गृहों में यह प्रक्रिया बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है । अमेरिका की मेडीकल ऐसोसिएशन ने चिकित्सा विज्ञान के एक प्रामाणिक पद्धति के रूप में सम्मोहन को सन् १९५८ से ही मान्यता दे रखी है । इसी प्रकार 'ब्रिटिश एण्ड अमेरिकन मेडीकल एसोसिएशन' ने भी उसे उपयोगी चिकित्सा विधि के रूप में प्रामाणिकता प्रदान की है ।

'सम्मोहन किसी समय जादुई करिश्मा समझा जाता था और उसके समर्थकों और विरोधियों के पक्ष में अपनी-अपनी बातें इतने जोर-शोर से कहते थे कि जन-साधारण के लिए उस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट अभिमत बना सकना सम्भव न हो पाता था, पर ऐसी बात नहीं है । उसे विज्ञान की एक तथ्यपूर्ण धारा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है । अब सम्मोहन को कला नहीं, विज्ञान के रूप में प्रतिपादित किया जाता है । इसे आश्चर्यजनक प्रदर्शनों के रूप में नहीं, मनुष्य के लिए उपयोगी सत्परिणाम प्रस्तुत कर सकने वाली 'विद्या' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । देखा जा सकता है, जैसे हृदय की गति ८२ से बढ़कर १४६ तक हो जाना, रक्त का बढ़ाव १०५ से उठकर १३६ तक जा पहुँचना, तापमान ९९ सेन्टीग्रेट से १०१ तक देखा जाना । इतना होने पर भी रक्त में जिन तत्वों का समावेश है, उनके अनुपात में अन्तर नहीं आता । लवण, शक्कर आदि की जो मात्रा रक्त में विद्यमान थी, उसका परिमाण नहीं बदला जा सका । इसी प्रकार बीमारियों के कारण होने वाले कष्ट की अनुभूति तो उतने समय के लिए रुक सकती है और रोगी अपने को अच्छा अनुभव कर सकता है । इतने पर भी उस बीमारी की जड़ कट जाना सम्भव नहीं होता । हाँ सुधार का धीमा सिलसिला प्रारम्भ हो सकता है ।

पूर्व निर्धारित नैतिक मान्यताओं को बदलने के प्रयोग यदि करने ही हों, तो उनमें बहुत समय लगेगा और सफलता बहुत धीरे-धीरे मिलेगी । लड़ाइयों में पकड़े गए शत्रु पक्ष के सैनिकों को पहले की अपेक्षा भिन्न मत का बनाने के लिए सम्मोहन विज्ञान के आधार पर प्रयोग होते रहे हैं । उन्हें 'ब्रेन वाशिंग' कहा जाता रहा है । इनसे आंशिक सफलता ही मिली है, क्योंकि यह उनकी परिपक्व देश भक्ति की मूल धारा को बदल देने के लिए किए गए अति कठिन कार्य थे । इनकी तुलना में किसी अनाचारी व्यक्ति का अनाचार छुड़ा देना सरल पड़ता है । क्योंकि उस अनाचार की आदत होते हुए भी अन्तःकरण में उसके लिए विरोधी भावना पहले से ही बनी हुई थी ।

सम्मोहित व्यक्ति में उसके विनिर्मित व्यक्तित्व की सीमा के अन्तर्गत ही कार्य कराये जा सकते हैं । अचेतन की गहरी पर्तें अपने भीतर कुछ नैतिक और आत्मिक मान्यताएँ अत्यन्त सघन होकर जमाये रहती हैं । उन्हें सम्मोहित प्रयोगों में नहीं छुआ जाता । सामान्य कामकाजी बातों को ही शरीर और मस्तिष्क द्वारा पूरा कराया जा सकता है । किसी व्यक्ति की आन्तरिक आस्था जीव दया पर आधारित है । उसे सम्मोहित स्थिति में माँस खाने के लिए कहा जाय तो मन की गहरी पर्तें उसका विरोध करेंगी और वह व्यक्ति उस आदेश का पालन करने से इन्कार कर देगा । इसी प्रकार किसी का धन या शील हरण करने, किसी की हत्या करने, जैसे कुकृत्यों के लिए सम्मोहनकर्त्ता कोई प्रयोग करे तो अन्तःकरण की अस्वीकृति होने पर वे प्रयोग सफल न हो सकेंगे । इसी प्रकार यह भी सम्भव नहीं कि किसी व्यक्ति की मूल-भूत क्षमता से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाहर के काम कराये जा सकें । हिन्दी पढ़े व्यक्ति से अंग्रेजी बोलने के लिए कहा जाये तो वह न बोल सकेगा । इसी प्रकार इतना वजन उठाने के लिए कहा जाय जो उसकी शारीरिक क्षमता से बाहर हो, तो भी वह इन प्रयोगों से न बन पड़ेगा । आत्म-हत्या कर लेने जैसे आदेश भी सम्मोहित व्यक्ति को स्वीकार्य नहीं होते । इसका तात्पर्य इतना ही है कि प्रदर्शनों में इतनी ही सफलता मिलेगी जितनी कि किसी अनुशासित व्यक्ति से जीवित अवस्था में सहमत करके कराया जा सकता है । प्रकारान्तर से इन्हें काम-काजी सहमति से लादी हुई सफलता भर कह सकते हैं ।

सत्संग और कुसंग का प्रभाव सर्वविदित है । ऋषियों के आश्रमों में सिंह और गाय एक घाट पानी पीते थे । यह उस आत्म-चेतना का ही प्रभाव था जो प्रचण्ड होने के कारण अपने क्षेत्र में एक प्रकार से सम्मोहन का वातावरण उत्पन्न किए रहती थी । नारद जी के थोड़े से सम्पर्क से ही प्रह्लाद, ध्रुव, पार्वती, वाल्मीकि आदि अनेकों को दिशा मिली और जीवन-क्रम उलट गए । भगवान बुद्ध के सम्पर्क में आने वाले अंगुलिमाल, अम्बपाली जैसे अगणित अधम जन उच्चस्तर पर पहुँचे । गाँधी जी के प्रभाव से अगणित व्यक्ति त्याग और बलिदान के क्षेत्र में उतरे और बढ़े-चढ़े आदर्श उपस्थित करते रहे । इसे प्राण-तत्व की प्रखरता का—सुविस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ आलोक ही कह सकते हैं । परकाया प्रवेश एवं सम्मोहन विज्ञान के अनुसार भी इस प्रभाव प्रक्रिया की व्याख्या की जा सकती है ।

परकाया प्रवेश उच्चस्तरीय आध्यात्म विज्ञान की परिधि में आने वाली महत्त्वपूर्ण विधि व्यवस्था है । इसका उपभोग सदुद्देश्य के लिए सज्जनता सम्पन्न आत्माओं द्वारा, सद्भावनापूर्वक किया जा सके तो उसका प्रभाव उसी प्रकार श्रेयस्कर होगा जैसा कि चिकित्सा-विज्ञान आदि के द्वारा सम्भव होता है ।

निग्रहीत मन की अपार शक्ति सामर्थ्य

श्री रामकृष्ण परमहंस दक्षिणेश्वर में थे । एक दिन अनेक भक्तों के बीच उनका प्रवचन चल रहा था । तभी एक व्यक्ति उनके दर्शनों के लिए आया । रामकृष्ण परमहंस उसे ऐसे डाँटने लगे जैसे उसे वर्षों से जानते हों । कहने लगे "तू अपनी धर्मपत्नी को पीटकर आया है । जा पहले अपनी साध्वी पत्नी से क्षमा माँग, फिर यहाँ सत्संग में आना ।"

उस व्यक्ति ने अपनी भूल स्वीकार की और क्षमा माँगने लौट गया । उपस्थित लोग आश्चर्यचकित रह गए कि रामकृष्ण परमहंस ने बिना पूछे यह कैसे जान लिया कि उस व्यक्ति ने अपनी स्त्री को पीटा । वे अपना आश्चर्य रोक न सके, तब परमहंस ने बताया—मन की सामर्थ्य बहुत अधिक है । वह सेकण्ड के भी हजारवें हिस्से में कहीं भी जाकर सब कुछ गुप्त रूप से देख-सुन आता है, यदि हम उसे अपने वश में किये हों ।

गुरु गोरखनाथ से एक कापालिक बहुत चिड़ा हुआ था । एक दिन आमना-सामना हो गया । कापालिक के हाथ में कुल्हाड़ी थी, उसे ही लेकर वह तेजी से गोरखनाथ को मारने दौड़ा, पर अभी कुल दस कदम ही चला था कि वह जैसे-का-तैसा खड़ा रह गया । कुल्हाड़ी वाला हाथ ऊपर और दूसरा पेट में लगाकर हाय-हाय चिल्लाने लगा । वह इस स्थिति में भी नहीं था, कि इधर-उधर हिल-डुल भी सके ।

शिष्यों ने गोरखनाथ से पूछा—महाराज ! यह कैसे हो गया ? तो उन्होंने बताया—निग्रहीत मन बैताल की तरह शक्तिशाली और आज्ञाकारी होता है । यह तो क्या, ऐसे सैकड़ों कापालिकों को मारण क्रिया के द्वारा एक क्षण में मार गिराया जा सकता है ।

ब्रह्मचारी व्यासदेव ने आत्म-विज्ञान पुस्तक की भूमिका में बताया है कि उन्हें इस विज्ञान का लाभ कैसे हुआ ? उस प्रस्तावना में उन्होंने एक घटना दी है, जो मन की ऐसी ही शक्ति का परिचय देती है । वह लिखते हैं "मैं उन साधु के पास गया । मुझे क्षुधा सता रही थी । मैंने कहा—भगवन् ! कुछ खाने को हो तो दो, भूख के कारण व्याकुलता बढ़ रही है । साधु ने पूछा—क्या खायेगा ? आज तू जो भी, वस्तु चाहेगा हम तुझे खिलायेंगे । मुझे उस समय देहली की चाँदनी चौक की जलेबियों की याद आ गई । मैंने वही इच्छा प्रकट कर दी । साधु गुफा के अन्दर गये और एक बर्तन में कुछ ढककर ले आये । मैंने देखा—बिल्कुल गर्म जलेबियाँ, स्वाद और बनावट वैसी ही जैसी देहली में खाईं थीं । गुफा में जाकर देखा, वहाँ तो एक फूटा बर्तन तक न था । मैंने पूछा—भगवन् !

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह जलेबियाँ यहाँ कैसे आईं ? तो उन्होंने हँसकर कहा—"योगाभ्यास से वश में किए हुए मन में शक्ति आ जाती है कि आकाश में भरी हुई शक्ति का उपयोग एक क्षण में कर ले और भारी-से-भारी पदार्थ को उलट-फेर कर दे ।"

सन् १९०२ में बंगाल के एक साधु अगस्तिया ने हठ-योग की एक प्रतिज्ञा की । प्रतिज्ञा यह थी कि वह लगातार १० वर्ष तक अपना बायाँ हाथ उठाते ही रहेगा, कभी नीचे नहीं गिरायेगा ।

और सचमुच ही वह लगातार १० वर्षों तक बिना हिलाये हाथ ऊँचा किये रहे । इस बीच एक चिड़िया ने समझा यह किसी पेड़ की टहनी है सो उसने बड़े मजे के साथ योगी के उठाये हुए हाथ की हथेली पर घोंसला बना लिया और उस पर अण्डे भी दे दिए । हाथ की हड्डियाँ सीधी मजबूत हो गईं, मुड़ना बन्द हो गया और इस तरह हाथ बेकार हो गया, किन्तु योगी का कहना था कि इससे उसे कोई कष्ट नहीं हुआ । योग की ऐसी साधनाओं के पीछे कोई दर्शन नहीं है, यदि कुछ है तो इतना ही कि तितीक्षा पूर्ण अभ्यास के द्वारा मनुष्य चाहे तो अपने शरीर की सामान्य क्रियाओं को असामान्य बना सकता है ।

शरीर में नन्हीं-सी सुई चुभ जाती है तो बड़ा कष्ट होता है, किन्तु सिंगापुर के एक भारतीय योगी ने जिसका उल्लेख 'ए वण्डर बुक ऑफ स्ट्रेंज फैक्ट्स' में भी है अपने शरीर में नक्की ५० भाले आर-पार घुसेड़ लिए और इस अवस्था में भी वह हँस-हँसकर बातचीत करता रहा । लोगों ने कहा यदि आपको कष्ट नहीं हो रहा हो तो थोड़ा चलकर दिखाइए । इस पर योगी ने ३ मील चलकर भी दिखा दिया । उन्होंने बताया कि कष्ट दरअसल शरीर को होता है, आत्मा को नहीं । यदि मनुष्य अपने आपको आत्मा में स्थिर कर ले तो जिन्हें सामान्य लोग यातनाएँ कहते हैं, वह कष्ट भी साधारण खेल जैसे लगने लगते हैं ।

इसका एक उदाहरण विन्ध्याचल के योगी गणेशगिरि ने प्रस्तुत किया । उन्होंने एक बार अपने होठों के आगे ठोड़ी वाले समतल मैदानी हिस्से में थोड़ी गीली मिट्टी रख कर उसमें सरसों बो दिए, जब तक सरसों उगकर बड़े नहीं हो गए और उनकी जड़ों ने खाल चीरकर अपना स्थान मजबूत नहीं कर लिया तब तक वे धूप में चित्त लेटे रहे ।

"साहिब अल्लाह शाह" नामक लाहौर का एक मुसलमान फकीर ६०० पौण्ड से भी अधिक वजन की मोटी लोहे की साँकलें पहने रहता था । वृद्ध हो जाने पर भी अपने अभ्यास के कारण इतना वजन भार नहीं बना । पंजाब में वह "साँकलवाला" और जिंगलिंग के नाम से आज भी याद किया जाता है । उसकी मृत्यु के बाद साँकलों की तौल की गई तो वह ६७० पौण्ड (१ पौण्ड = ४५० ग्राम) निकलीं ।

श्रीराव नामक योगी के सम्बन्ध में देश-विदेश में अनेक चमत्कारिक वर्णन प्रचलित हैं । दहकते अंगारों पर चलना, नाइट्रिक एसिड खा लेना, काँच और कीलें खा जाना उनके लिए सामान्य बात थी । वे जल पर चलने के भी कई प्रदर्शन कर चुके हैं ।

श्री बल्लभदास बिन्नानी नामक एक व्यक्ति ने एक बार ऐसे चमत्कारों की खोज के उद्देश्य से विन्ध्याचल की यात्रा की । यात्रा के दौरान उन्हें जो अनुभव हुए उनका विवरण देते हुए बिन्नानी जी लिखते हैं कि—"मैंने योगी महात्मा के दर्शन किए । वह पानी में नंगे पाँव चलने की दिव्य क्षमता रखते थे । वह हवा में भी उड़ते थे । मैंने उनको पानी में प्रत्यक्ष चलते हुए देखा और फोटो भी उतारी ।"

यह कहने पर कि योगी जी आप इस तरह की सिद्धियों का सार्वजनिक प्रदर्शन क्यों नहीं करते, तो उन्होंने भर्तृहरि का निर्देश सुनाते हुए बताया कि चमत्कारों का प्रदर्शन अहंकार बढ़ाता है और योगी को पथ-भ्रष्ट करता है । सिद्धियाँ आत्म-कल्याण के लिए हैं न कि प्रदर्शन के लिए ? तो भी अनेक सिद्ध-महात्माओं द्वारा ऐसे चमत्कार यदा-कदा देखने को मिल ही जाते हैं ।

लुम्का में जबर्दस्त बाढ़ आयी हुई थी । सारा नगर कुछ ही क्षणों में जलमग्न हो जाने वाला था । इन्जीनियरों की सारी शक्ति निष्क्रिय हो गई, सब पाताल समाधि की प्रतीक्षा कर रहे थे । उसी समय कुछ व्यक्तियों ने फ्रीडियन नामक साधु से जाकर प्रार्थना की—महात्मन् ! इस दैवी प्रकोप से बचाव का कुछ उपाय आप ही कीजिए । कहते हैं, महात्मा फ्रीडियन ने ओसर नदी की धारा योग बल से मोड़ दी और नगर को डूबने से बचा लिया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एम्निस नाम की एक ईसाई महिला हुई हैं । उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग योगाभ्यास में लगाया । उनके आश्रम में २० और साधिकाएँ रहती थीं । एक बार उन्हें तीन दिन तक कुछ भी खाने को न मिला । एक साधिका भूख से अति व्याकुल होकर बोली—"मैडम ! हमें रोटी दो, नहीं तो हम मर जायेंगी ।" एम्निस ने कहा—"अच्छा बगल वाले कमरे में रोटियाँ रखी हैं, उठा लाओ ।" उस विहार में अन्न का एक दाना भी न था, पर उन्होंने इतने विश्वास पूर्वक कहा जैसे वह सचमुच स्वयं पकाकर रोटियाँ रख आईं हों । साधिका वहाँ गई तो सचमुच एक पात्र में रोटियाँ थीं । उन्हें खाकर सब ने भूख मिटाई ।

स्वामी ब्रह्मानन्द का एक भाषण काशी में हुआ । उसमें कई रुढ़िवादी उनसे बहुत रुष्ट हो गए । एक दिन स्वामी जी गंगातट पर बैठे ध्यान कर रहे थे, तभी उधर कुछ विरोधी आ पहुँचे । उन्होंने बदला निकालने का यह अच्छा अवसर समझा । इसलिए दो हृष्ट-पुष्ट युवक आगे बढ़े और पद्मासन बैठे स्वामी जी को जबर्दस्ती उठाकर पानी में फेंक दिया । स्वामी जी उन दोनों युवकों को भी हाथ में कसे लेते चले गए जब वे डूबने लगे तो उन्हें छोड़ दिया और आपने स्वयं नदी की सतह पर पद्मासन समाधि ले ली । बाहर मुसलमान बड़ी देर तक हाथों में पत्थर लिए खड़े रहे कि स्वामी जी बाहर निकलें तो उन पर पत्थर दे मारें, पर वह स्थिति ही नहीं आयी । स्वामी जी शाम तक जल के अन्दर ही बैठे रहे । जब वे वहाँ से चले गए, तो वे शान्ति-भाव से बाहर निकल आये ।

योग विज्ञान की दृष्टि से शारीरिक शक्ति में इस तरह की वृद्धि का उद्‌गम मस्तिष्क है । विशेष परिस्थितियों में मस्तिष्क माँसपेशियों को उद्‌भट कार्य करने का आदेश देता है और उनमें से कुछ सूक्ष्म तत्व निकलकर अपना प्रभाव दिखाते हैं । वैज्ञानिकों ने हाल में ऐसी विधियाँ ढूँढ़ी हैं, जिनसे कृत्रिम रूप से शारीरिक शक्ति बढ़ाई जा सकती है ।

मस्तिष्क के आदेशों को बीच में रोक लिया जाता है और मानव शरीर को एक विशेष प्रकार का ट्रान्जिस्टर बनाकर उन आदेशों की शक्ति बढ़ा दी जाती है । इससे मनुष्य अति मानवीय शक्ति सम्पन्न हो जाता है । शरीरस्थ जीवाणुओं को प्राण और संकल्प शक्ति के द्वारा हल्का और भारी करके, सम्मोहन क्रिया द्वारा थोड़ी ही देर में बहुत भारी प्राण की मात्रा खींच कर के ऐसे असामान्य कार्य दिखलाये जा सकते है, जिन्हें चमत्कार कहा जा सकता है ।

इन सिद्धियों, सामर्थ्यों को पाकर मनुष्य उन स्थितियों में भी आनन्दपूर्वक रह सकता है, जिनमें साधारण लोग जाकर जीवित नहीं रह सकते ।

अष्ट सिद्धियाँ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वाशित्व को प्राप्त कर मनुष्य इसी देह में ईश्वर तुल्य शक्ति का अनुभव कर सकता है और संसार में होने वाले घटना चक्रों को परास्त कर सकता है, विस्फोट कर सकता है, शाप, वरदान, प्राण-संचार या सन्देश-प्रसारण कर दूसरों का भला भी कर सकता है और लोगों के जीवन की दिशाएँ भी मोड़ सकता है ।

श्री श्यामाचरण जी लाहिड़ी एक बार हिमालय गए । वहाँ एक युवा संन्यासी से उनकी भेंट हुई । साधु उन्हें एक गुफा में ले गया और एकान्त में ले जाकर उनके सिर पर हाथ रखा । श्री लाहिड़ी जी लिखते हैं—"मुझे ऐसा लगा कि यह हाथ नहीं कोई प्रचण्ड विद्युत शक्ति वाला दण्ड था, उससे मेरे शरीर में प्रकाश भरना प्रारम्भ हुआ । मुझे पूर्व जीवन की स्मृतियाँ उभरने लगीं । यहाँ तक कि मैंने अनेक वस्तुएँ ऐसी भी पहचानी, जिनका मेरे पिछले जन्मों से सम्बन्ध था, मैं अनुभव करता हूँ कि गुरुओं का प्राण, योग्य शिष्य इसी तरह पा कर स्वल्पकाल में ही दीर्घ-प्राणवान् बनते होंगे ।

यह तो भारतवर्ष के हठयोगियों की बातें हैं । अन्य देशों में भी आभ्यास द्वारा अर्जित ऐसी विचित्रताएँ देखने को मिल जाती हैं, जो इस बात की प्रतीक हैं कि मनुष्य कुछ विशेष परिस्थितियों में पैदा अवश्य किया गया है, किन्तु वह चाहे तो अपने आपको बिल्कुल बदल सकता है ।

इन्का जाति के राजा अटाहुल्लापा ने अपने कानों में वजनदार छल्ले डालकर उन्हें १५ इंच तक बढ़ा लिया था । सारा शरीर सामान्य मनुष्य का होते हुए भी कान हाथी के से लगते थे ।

सिख सम्राट सरदार रणजीतसिंह के दरबार में प्रसिद्ध भारतीय योगी सन्त हरदास ने जनरल वेण्टूरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के सम्मुख अपनी जीभ को निकाल कर माथे का वह हिस्सा जीभ से छूकर दिखा दिया, जो दोनों भौंहों के बीच होता है । सन्त हरदास बता रहे थे कि जीभ को मोड़कर गर्दन के भीतर जहाँ चिड़िया होती है उस छेद को बन्द कर लेने से योगी मस्तिष्क में अमृत का पान करता है । ऐसा योगी अपनी मृत्यु को जीत लेता है । अंग्रेजों का कहना था कि जीभ द्वारा ऐसा हो ही नहीं सकता । इस पर सन्त हरदास ने अपनी जीभ को आगे निकालकर दिखा दिया, उन्होंने बताया कि कुछ औषधियों द्वारा जीभ को सूत कर इस योग्य बनाया जाता है ।

सरसर्जिंगा—अफ्रीका के हब्शियों में अपने ओंठ बढ़ाने की प्रथा है, इसके लिए वे लकड़ी की तश्तरियाँ बनाकर उनसे ओठों को बाँध देते हैं ओंठ जितने बढ़ते जाते हैं बड़ी तश्तरियाँ बाँध दी जाती हैं और इस प्रकार कई स्त्रियाँ तो अपने ओंठ १४-१५ इंच अर्थात् सवा फुट व्यास की ढक्कनदार तश्तरी की तरह बढ़ा लेती हैं ।

फिजी द्वीप के निवासी एक त्यौहार मनाते हैं । उस दिन उन्हें आग पर चलना पड़ता है । इसे अभ्यास भी कहा जा सकता है और आत्मविश्वास की शक्ति भी, कि वे लोग दहकते आग के शोलों में घण्टों नाचते रहते हैं, किन्तु कभी ऐसा कोई अवसर नहीं आता कि उनके पैर जल पाते हों ।

आयरन ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन कन्सास राज्य अमेरिका के जान डब्ल्यू. हार्टन ने पेट में न जाने कहाँ की आग पैदा कर ली थी कि नास्ते में ४० पौण्ड तरबूजा खा लेने के बाद भी सोडा की बोतलें, टूटे शीशे, अण्डों के छिलके और केले के अनगिनत छिलके चबा जाते थे । एक बार एक इन्जीनियर द्वारा चुनौती दिये जाने पर उन्होंने भरपूर भोजन करने के बाद सीमेण्ट का पूरा एक कट्टा खा लिया और उसे इस स्वाद के साथ एक एक चम्मच भक्षण किया जैसे छोटे बच्चे प्रेमपूर्वक शक्कर या मिठाई खाते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि मैं कुछ और अभ्यास करूँ तो इतनी ही मात्रा में विष तक खाकर दिखा सकता हूँ ।

भारतीय योगी चाँगदेव की योग-गाथाएँ सारे भारतवासी जानते हैं । एक-एक कर चौदह बार उन्होंने अपनी मृत्यु को वापस लौटाया । उनकी आयु १४०० वर्ष की हो गई थी । ईसामसीह के समय से लेकर १२वीं शताब्दी—संत ज्ञानेश्वर के समय तक उनकी गाथाओं के उल्लेख मिलते हैं । वह शेर की सवारी किया करते थे और शेर को हाँकने के लिए जहरीले साँप की चाबुक लिए रहते थे । एक बार उनके हवा में स्थिर रहने की चुनौती दी गई तब महाराष्ट्र के एक गाँव में उन्होंने हजारों लोगों के सम्मुख भाषण देने का प्रस्ताव किया । एक-एक कर २४ चौकियाँ रखी गईं । सबसे ऊपरी चौकी पर बैठकर उन्होंने प्रवचन प्रारम्भ किया । पीछे उनके पूर्व आदेशानुसार शिष्यों ने एक-एक कर सभी चौकियाँ हटा लीं । चांगदेव वैसे ही हवा में स्थिर प्रवचन करते रहे । लोगों ने उनकी जय जयकार की तो वे बोले—भाइयो ! इसमें मेरा कुछ बड़प्पन नहीं । योग क्रियाओं के अभ्यास द्वारा मनुष्य चाहे तो पक्षियों की तरह हवा में उड़ सकता है, सितारों की तरह हवा में अधर लटक कर संसार का दृश्य देखता रह सकता है ।

मानव शरीर की क्षमताएँ अब तक हुई जानकारी से हजारों गुनी अधिक हैं । भयानक सर्प या कुत्ते से बचने के लिए कई व्यक्ति जो कभी १ फुट भी नहीं उछल सकते थे, भयावेश में तीन मीटर ऊँची दीवार कूद जाते हैं । जेल से भागते हुए कैदी लोहे की सलाखें मोड़ सकते हैं, यह सब क्रियाएँ यह बताती हैं कि मनुष्य शरीर की सामर्थ्य बहुत अधिक है । शरीर में कुछ तत्व और सूक्ष्म एवं महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, उनमें भरी हुई हिमनदियों को जागृत कर मनुष्य भीम की तरह बलवान, नागार्जुन की तरह रसायनज्ञ, संजय की तरह दिव्य दृष्टि सम्पन, अर्जुन की तरह लोक-लोकान्तर में आने-जाने की क्षमता वाला, रामकृष्ण की तरह परमहंस और गुरु गोरखनाथ की सी चमत्कारिक सिद्धियाँ पा सकता है ।

अतीन्द्रिय क्षमता विकसित करने का एक क्रमबद्ध विज्ञान है—योग । आज तो हर क्षेत्र में नकली ही नकली की भरमार है । नकली योग भी इतना बढ़ गया है कि उस घटाटोप में से असली को ढूढ़ निकालना कठिन पड़ रहा है । तो भी तथ्य अपने स्थान पर यथावत् अडिग है । यदि अन्तःचेतना पर चढ़े हुए कषाय-कल्मषों को प्रयत्नपूर्वक धो डाला जाय तो आत्म-सत्ता की प्रखरता जग पड़ेगी और उसके साथ-साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही अतीन्द्रिय परीक्षानुभूतियाँ होने लगेंगी । अप्रत्यक्षत भी प्रत्यक्षवत् परिलक्षित होने लगेगा ।

प्रयत्नपूर्वक आत्मबल को बढ़ाना और सिद्धियों के क्षेत्र में प्रवेश करना यह एक तर्क और विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है, किन्तु कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि कितने ही व्यक्तियों में इस प्रकार की विशेषताएँ अनायास ही प्रकट हो जाती हैं । उन्होने कुछ भी साधन या प्रयत्न नहीं किया तो भी उनमें ऐसी क्षमताएँ उभरीं जो अन्य व्यक्तियों में नहीं पायी जातीं । असामान्य को ही चमत्कार कहते हैं । अस्तु ऐसे व्यक्तियों को चमत्कारी माना गया । होता यह है कि किन्हीं व्यक्तियों के पास पूर्व संचित ऐसे संस्कार होते हैं, जो परिस्थितिवश अनायास ही उभर आते हैं । वर्षा के दिनों में अनायास ही कितने पौधे उपज पड़ते हैं, वस्तुतः उनके बीज जमीन में पहले से ही दबे होते हैं । यही बात उन व्यक्तियों के बारे में कही जा सकती है, जो बिना किसी प्रकार की आध्यात्म साधनाएँ किये ही अपनी अलौकिक क्षमताओं का परिचय देते हैं ।

चाहे जो बन जाय इतनी भर ही छूट है

मानवी सत्ता, असुरता और देवत्व दोनों से मिलकर बनी है । परमात्मा ने यह छूट केवल मनुष्य को ही दी है कि वह चाहे तो दिव्य दैवी प्रवृत्तियाँ अपनाये अथवा आसुरी-पाश्विक वृत्ति अपनाकर नर-पशु से नर-पिशाच बन जाये । यह चयन सुविधा मनुष्य के विवेक की परीक्षा के लिए ही मिली है । वह कौन-सी प्रवृत्ति अपनाता है यह उसकी मनमर्जी की बात है, परन्तु जिस किसी भी वृत्ति को वह अपनाता है उसका पुरस्कार या दण्ड निश्चित रूप में मिलता है ।

मनुष्य की प्रकृति में दोनों तत्व विद्यमान हैं । जिस पक्ष को समर्थन, अवसर और पोषण मिलता है वही पक्ष सुदृढ़ होता चला जाता है । सद्गुण, सद्भाव और सद्विचारों की दिव्य भावनाओं का अभ्यास मनुष्य को देवता बना देता है और इनकी पुष्टि होती जाती है, तो व्यक्ति नर से नारायण बनता जाता है । इसके विपरीत यदि दुष्ट संगति, दुराचरण, आसुरी क्रिया-कलाप और पाप प्रवृत्तियों को अपनाता है तो धीरे-धीरे निकृष्ट से निकृष्टतम् बनता चला जाता है । पशु से भी बढ़कर पिशाच का रूप धारण करता है और जघन्य कृत्य करके ही उसके भीतर बैठा असुर मोद मनाता है । ऐसे कुकृत्य जिन्हें सुनकर ही एक सहृदय व्यक्ति काँप उठे वह उन नृशंस कृत्यों को अपने अहंकार की पूर्ति समझने लगता है ।

१४३० ई. ट्रान्सलवानिया के पहाड़ी प्रदेशों के राज्य सिंहासन पर आरूढ़ होने वाला काउण्ट ड्राक्युला ऐसा ही नर-पिशाच था । उसने १४७६ तक राज्य किया ४६ वर्षों के इस शासन काल में उसने ऐसी-ऐसी अमानवीय क्रूरताएँ बरतीं कि उसे इतिहासकारों ने 'लाद दि इम्पेलर' अर्थात् आदमी के शरीर को छेदने वाला कहा । जिस किसी भी व्यक्ति पर वह अप्रसन्न हो जाता, उसे सजा देने के वह क्रूरतम तरीका अपनाता था । वह लोगों को लकड़ी के बड़े-बड़े आदम कद खूँटों पर कीलों से ठुकवा देता और उनकी पीड़ा तथा तड़प को देखकर प्रसन्न होता था ।

यह उसका मनोरंजन भी था । वह प्रायः अपने महल में प्रीतिभोज दिया करता । भोज की मेज के चारों ओर काठ की बनी सूलियों पर जीवित मनुष्यों के शरीर कीलों से टँगे होते थे । लोग यातना और पीड़ा से चीखते-चिल्लाते रहते और उन्हें देखकर ड्राक्युला बड़ा आनन्द विभोर होता हुआ भोजन करता रहता । सड़ती लाशों और बासी खून की सड़ाँध भरी बदबू में ड्राक्युला को जैसे महक-सी आती थी ।

दरबार में भी वह इसी प्रकार सूलियों पर जीवित लोगों को कीलों से ठुकवा देता तथा शासन प्रबन्ध के विभिन्न पहलुओं पर विचार करता रहता । दरबारी बड़े सहमें और डरे रहते थे, क्योंकि उससे जरा भी विरोध या अरुचि दर्शाने का अर्थ था, उनकी भी वही दशा । एक बार किसी नये दरबारी ने ड्राक्युला से कह दिया—इन लाशों से बहुत बदबू आती है । उसने ड्राक्युला को यह कार्य कहीं एकान्त में करने की सलाह दी, ताकि दरबार में आने वालों को दुर्गन्ध का सामना न करना पड़े । ड्राक्युला ने इस सुझाव को सुनकर जोरों से अट्टहास किया और बड़ा उल्लास व्यक्त करते हुए उसने तुरन्त आदेश दिया कि इस आदमी को भी एक खूँटे पर ठोक दिया जाय । वह दरबारी घबरा कर माफी माँगने लगा । जीवन दान की दया याचना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने लगा तो ड्राक्युला ने इस पर दयाभाव जताते हुए इतना भर किया कि उसका खूँटा कुछ ऊँचा गढ़वाया और उसे ऊँचे खूँटे पर जड़वा दिया । इस दया को जताते हुए उसने कहा था 'अब तुम्हें कभी भी दूसरों की बदबू नहीं मिलेगी । घबराने की जरुरत नहीं है ।'

ड्राक्युला ने इस प्रकार क्रूरतापूर्वक नृशंस हत्याएँ करने के नए-नए ढंग ईजाद किये थे । इसमें उसे बड़ा आनन्द आता था । हत्याओं के एक ही तरीके से जब वह ऊब जाता तो दूसरे तरीके भी अपनाने लगता । कई बार वह दूध पीते हुए बच्चों को उनकी माताओं के सीने पर ही कील से जड़वा देता । माँ-बाप के सामने ही उनके अबोध और प्यारे बच्चों को मारकर उन्हें अपने बच्चों का माँस खाने के लिए मजबूर कर देता । एक बार उसने अपने राज्य के सभी गरीब, बूढ़े और बीमार लोगों को सेना द्वारा इकट्ठा कराया तथा उन्हें जिन्दा जलवा दिया ।

ड्राक्युला के नाम और आतंक का इतना दबदबा था कि उसकी चर्चा आज भी ट्रान्सलवानिया में होती है, तो लोग मारे दहशत के चर्चा वहीं बन्द करने का आग्रह करने लगते हैं । इतिहासकारों ने ड्राक्युला को अब तक के विश्व का सर्वाधिक क्रूर, नृशंस और अत्याचारी शासक माना है ।

१६२० से १६६६ तक लिपजिंग (जर्मनी) के सेशन कोर्ट में न्यायाधीश रहा बेनेडिक्स कार्पजे बड़ी कठोर और क्रूर प्रकृति का था । लोग उसे भी ड्राक्युला का अवतार बताते हैं । जो भी हो परन्तु उसका जीवन ड्राक्युला से अद्‌भुत समानता रखता था । ड्राक्युला ने ४६ वर्ष तक शासन किया, कार्पजे भी ४६ वर्ष तक न्यायाधीश रहा । उसने इस काल में ३० हजार पुरुषों और २२ हजार स्त्रियों को फाँसी पर चढ़ाया । छोटे से छोटे अपराध, जुआ, चोरी और उठाईगीरी तक में वह मृत्यु-दण्ड देता था । जैसे मृत्युदण्ड से नीची सजा कोई हो ही नहीं । स्त्रियों को तो उसने जादू टोने के सन्देह तक में पकड़वा कर फाँसी पर चढ़ा दिया ।

कार्पजे ने औसतन प्रतिदिन पाँच व्यक्तियों को फाँसी पर चढ़वाया और फाँसी देखने के लिए वह स्वयं वध-स्थल पर पहुँचता । फाँसी लगने का दृश्य देखने में उसे बहुत रस आता था । इसके साथ ही वह व्यवस्था भी देखता कि मृतकों का माँस खाने कि लिए शिकारी कुत्ते तथा दूसरे जानवर यथा समय पहुँचे हैं अथवा नहीं । दया या क्षमा शब्द तो जैसे कार्पजे ने कहीं सीखा ही नहीं था फिर भी वह अपने आपको धार्मिक कहता था ।

निष्ठुर नृशंसता के ये दो इतिहास प्रसिद्ध उदाहरण हैं, जिनमें केवल आदमी को मरते हुए देखने का आनन्द लिया जाता रहा । व्यक्तिगत जीवन में भी यह नृशंसता समय-समय पर घुलती रहती है और सामाजिक-जीवन में भी विष घोलती रहती है, लेकिन एक बात तय है कि जो व्यक्ति इस प्रकार की अमानवीय, क्रूरता को छोटे या बड़े किसी भी रूप में अपनाते हैं वे जीवन में कभी भी चैन से नहीं बैठ पाते हैं ।

इस शताब्दी में नृशंस सामूहिक हत्याओं के लिए हिटलर का नाम, बड़ी घृणा और तिरस्कार के साथ लिया जाता है । उसने लाखों निरपराध व्यक्तियों को मरवाया, परन्तु वह जीवन भर चैन से नहीं बैठ सका । यहाँ तक कि अपनी छाया से, अपने पद चाप की प्रतिध्वनि तक के डरता रहा । कहते हैं कि वह इतना सशंकित रहता था, कि रात में चार-पाँच घण्टे की नींद लेते समय भी तीन-चार बार उठ बैठता और अपने सिरहाने रखी रिवाल्वर तथा अन्य सुरक्षा प्रबन्धों की जाँच करके देखता ।

ऐसे व्यक्ति मरने के बाद भी उसी प्रकृति के बने रहते हैं । अशान्त, व्यथित और आत्म प्रताड़ना से आन्दोलित उनका जीवन नाटकीय बन जाता है । बजाय अपनी गल्तियों को सुधारने के, वे मरने के बाद में प्रेत, पिशाच बनकर लोगों को अपने दुष्ट आचरण द्वारा सताते रहते हैं ।

इटली के तानाशाह मुशोलिनी के सम्बन्ध में विख्यात है कि वह मरने के बाद प्रेत बनकर अपने खजाने की रखवाली करता रहा है । युद्ध में हारने के बाद वह अपनी जान बचाकर स्विट्जरलैण्ड की तरफ भागा था । अरबों रुपयों की सम्पत्ति, सोने की छड़, हीरे, जवाहरात. पौण्ड, पैंस और डॉलरों के रूप में उसके पास जमा थी, लेकिन वह भागने में सफल नहीं हुआ और कम्युनिस्ट सेनाओं द्वारा गोली से उड़ा दिया ।

इसके बाद उसने प्रेत, पिशाच का रूप धारण कर लिया और अपने खजाने की रखवाली करने लगा । अशरीरी होने के कारण खुद तो वह खजाने का लाभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उठा नहीं सकता, लेकिन वह दूसरों को भी उसका लाभ नहीं उठाने देना चाहता था । कहा जाता है कि उसी ने प्रेत, पिशाच बनकर खुद अपना खजाना छिपाया और उसकी रखवाली करने लगा । जिन्होंने भी उसका पता लगाने की कोशिश की मुसोलिनी के प्रेत ने उनके प्राण लेकर ही छोड़े । उस खजाने को ढुँढ़वाने और प्राप्त करने के लिए सरकार ने कितनी ही समितियाँ गठित कीं परन्तु सभी खोजी दल काल-कवलित हो गये ।

मरने के बाद उस प्रेत, पिशाच पर क्या बीतती, होगी यह तो कहा नहीं जा सकता, परन्तु व्यक्ति के अपने नृशंस क्रूर कर्म उसे स्वयं तड़पा-तड़पा कर मारते हैं । ट्रान्सलवानिया के शासक काउण्ट ड्राक्युला ने अपने जीवनकाल में जिस प्रकार लोगों की नृशंस हत्याएँ कीं, उससे भी भयंकर तरीके से उसे मारा गया । तुर्की सेनाओं ने जब ट्रान्सलवानिया को जीतकर ड्राक्युला को बन्दी बना लिया तो उसके शरीर से रोज माँस का एक टुकड़ा काट लिया जाता और वहीं उसे कच्चा चबाने के लिए मजबूर किया जाता ।

जर्मनी के नृशंस—क्रूर न्यायाधीश कार्पजे को कुछ ऐसे लोगों ने पकड़ लिया, जिनके सम्बन्धियों को निरपराध होते हुए भी उसने सजा दी थी और फाँसी पर चढ़वाया था । उन लोगों ने कार्पजे को एक ऐसे कमरे में छोड़ दिया जहाँ हजारों बिच्छू पहले से ही रख दिए गये थे । कोई तीन दिन में उसकी मृत्यु हुई । उस कोठरी में से कार्पजे की आवाज आना बन्द हुई तब लोगों ने उसे बाहर निकाला । उसके शरीर पर ऐसा कोई स्थान नहीं बचा था, जहाँ बिच्छूओं ने दंश नहीं लिया हो ।

यह तो हुआ बाहरी दण्ड व्यवस्था प्रतिरोध परक वृत्तान्त । इनसे बचा भी जा सकता है, परन्तु परमात्मा ने एक ऐसा न्यायाधीश इसी शरीर में बिठा दिया है, जो व्यक्ति के कर्मों को देखता रहता है और यथासमय दण्डित भी करता है । कहते हैं कि मृत्यु के समय अपने जीवन भर के कर्मों की याद आती है और वे स्मृतियाँ व्यक्ति को दग्ध करने लगती हैं । कई बार ऐसा भी होता है कि पराभव के समय व्यक्ति को अपने सारे क्रूर कर्म याद आते हैं और वह अपने ही कर्मों के प्रेत से डरकर अपने आपका उत्पीड़न करने लगता है ।

सन् १९१८-१९ की घटना है । रूस में कम्युनिस्ट क्रान्ति हो चुकी थी । जारशाही के स्तम्भ एक-एक कर ढहते जा रहे थे और लोग जो निरीह गरीब तबके का निर्ममता के साथ शोषण करते रहे थे, एक-एक कर अपने बचाव के लिए भाग रहे थे । ऐसे ही भागने वाले व्यक्ति में एक था करेलिया प्रदेश का जागीरदार इवान । वह अपनी पत्नी अन्ना, बेटी काल्या और पुत्र कोल्या के साथ करेलिया के बीहड़ प्रदेश में नदी के तट पर भागते हुए किसी सुरक्षित स्थान की तलाश कर रहे थे ।

सेण्ट पीटर्स वर्ग से कुछ मील दूर ग्रेनाइट पत्थरों से बनी एक काटेज में उन्होंने शरण ली । उन लोगों के साथ उनका एक पुराना सेवक बूढ़ा मल्लाह भी था । इवान ने अपनी वासना-पूर्ति के लिए सैकड़ों महिलाओं के साथ अनाचार किया था, उनमें से कईयों ने तो आत्महत्या कर ली थी, अनेक अबोध बालिकायें इस क्रूर कर्म को सहन न कर पाने के कारण मर गईं । यही हाल अन्ना का था, अपने चरित्र पर पर्दा पड़ा रहे, इसलिए उसने अपने बाप और भाई तक को मरवा डाला था ।

इसके अलावा भी जागीरदार ने हजारों निरपराध व्यक्तियों को मरवा डाला था । उस काटेज में दोनों को अपने अतीत की याद आने लगी । संयोग की बात है कि जिस काटेज में उन्होंने शरण ली, वह काटेज कभी इवान का विलास महल रह चुका था । वहाँ का एक-एक पत्थर इवान के क्रूर कर्मों का साक्षी था । ये क्रूर कर्म इतने वीभत्स और भयावह रूप में याद आ रहे थे, कि वे सब लोग जिन्हें उसने सताया था, प्रेत बनकर उससे बदला लेने के लिए उतारू लगने लगे । इस स्थिति में इवान ने अपनी पत्नी, बच्चों को बूढ़े मल्लाह के साथ रवाना कर दिया । रास्ते में अन्ना इतनी विक्षिप्त हो उठी कि अपने कपड़े फाड़ने लगी, बाल नोंचने लगी और नदी पार करते समय नाव में से कूद पड़ी ।

इवान का भी यही हाल हुआ । उसने भी आत्म प्रताड़ना या अतीत में किए नए क्रूर कर्मों की स्मृति से बुरी तरह भयभीत होकर नेवा झील में कूदकर आत्म-हत्या कर ली । स्मरणीय है दोनों पति-पत्नी अपनी क्रूरता के शिकार व्यक्तियों को नदी, झील में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही फेंका करते थे । शासन और सेना से भले ही वह बच गए, परन्तु अपनी अन्तरात्मा/ में बैठे न्यायाधीश से बचना कहाँ सम्भव रहा ?

तत्वविदों का कथन है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है । वह चाहे तो देवता भी बन सकता है और यदि चाहे तो नर-पिशाच भी, परन्तु इनके परिणामों में चुनाव जैसी कोई स्वतन्त्रता नहीं है । जिन्होंने भी असुरता पकड़ी और नृशंसता अपनायी उन्हें अन्ततः उसका दण्ड भुगतना ही पड़ा । भले ही वे तत्काल अपने अहंकार को सन्तुष्ट कर सके हों, पर परिणाम में उससे भी भयंकर यातना तथा अन्त में उनकी यन्त्रणादायक स्मृतियों के अलावा और कुछ भी नहीं मिल पाया है ।

आत्मचेतना का उपयोग

प्राचीन काल में प्रकृति परमात्मा की इसी नियम व्यवस्था का लाभ उठाकर ऋषि-महर्षियों ने आत्म-सत्ता की सामर्थ्य का लाभ उठाया था । आज भी उसके प्रमाण कभी यदा-कदा देखने को मिल जाते हैं । एक समय था जब आधुनिक विज्ञान और आत्म-विद्या कभी भी न मिल सकने वाले दो परस्पर विरोधी बिन्दु माने जाते थे । इसी कारण विज्ञान की प्रगति के साथ आध्यात्मिक अवमानना हुई, किन्तु आधुनिक विज्ञान भी बढ़ते-बढ़ते एक ऐसी स्थिति में आ गया है, जब उसे यह विचार करना आवश्यक हो गया है कि क्या शरीर ही आत्मा है या आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए शरीर अपर्याप्त माध्यम नहीं ? मनुष्य की मस्तिष्कीय चेतना की भौतिक परिधि और उसकी विराट् अवस्था दोनों के व्यापक अध्ययन से धीरे-धीरे यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि सारे शरीर में मस्तिष्क के विद्यमान् होने की तरह, विराट् चेतना सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है । शरीर उसका एक स्टेशन और मन्दिर मात्र है, जिसमें वह अपने अंश या जीव रूप में कुछ क्षण विश्राम के लिए आता है । उसका अन्तिम लक्ष्य विभु या विराट् बनना है । इस उद्देश्य की पूर्ति न होने तक सन्तोष नहीं होता ।

मनुष्य की चिन्तन शक्ति, भावनाओं, सम्वेदनाओं को मात्र रासायनिक संवेग मानकर मनुष्य जीवन को नितान्त भौतिक मानने की भूल थोड़े से वैज्ञानिकों ने की है । अधिकांश ने या तो अत्यन्त गूढ़ कहकर निष्कर्ष निकालने का विचार ही त्याग दिया या फिर श्रद्धापूर्वक उन्होंने यही स्वीकार किया कि मानवीय चेतना का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है । वह भौतिकीय तत्वों का सम्मिलन मात्र नहीं, अपितु विराट् चेतना का ही अंश है । वह शरीर रूप नाम का पिंड मात्र नहीं, अनादि अनन्त गुण वाला चेतन तत्व है । शरीर को इन्द्रियों का विकास उसकी इच्छानुसार, उसके संकल्प के आधार पर हुआ है ।

भौतिक विज्ञान के जो पण्डित स्नायु-तन्त्र (नाड़ी मण्डल) को ही आत्मा मानते और उन्हीं से विचारों को उद्भूत हुआ मानते हैं, उनमें जर्मनी के शरीर विज्ञानी डॉ. काल ह्वाक्ट तथा डॉ. टेण्डाल आदि प्रमुख हैं । अपने सिद्धान्त की पुष्टि में उन्होंने अनेक प्रयोग शरीर पर किये । स्नायु-मण्डल की विस्तृत खोज की । उन्होंने उस गति की माप की जो शरीर में किसी अंग पर आघात के बाद उस अंग से भाव सन्देश के रूप में मन तक और मन से शरीर के किसी अंग तक पहुँचते हैं । मस्तिष्क-बोध की सूक्ष्मता का भी पता लगाया तथा विद्युत आवेश देकर उन सन्देशों को घटाने-बढ़ाने में भी सफलता प्राप्त की । विचारों की उत्पत्ति को उन्होंने कहा यह मस्तिष्क की वैसी ही उपज होते हैं, जैसे यकृत की पित्त । हालाँकि अब तक वैज्ञानिक मस्तिष्क के गहन अन्धकार में झाँककर जितना जान सके हैं, वह अधिकतम १३ प्रतिशत है । मस्तिष्क के शेष ८७ प्रतिशत भाग की कोई जानकारी नहीं है । इतनी कम जानकारी को पूर्णता की संज्ञा देना वैसे ही अविवेकपूर्ण कहा जायेगा ।

फिर कुछ ऐसी घटनाएँ और प्रसंग भी आये दिन आते रहते हैं जो इस वैज्ञानिक मान्यता के सामने चुनौती बनकर खड़े हो जाते हैं । वैज्ञानिक उन कारणों की कोई व्याख्या करने में असमर्थ होते हैं । उदाहरणार्थ इटली में गियोवानी गलान्ती नामक एक ऐसा बालक था, जो रात के अँधेरे में भी पढ़ सकता था । १९२८ में उसे इसी स्वास्थ्य परीक्षा के बाद अमेरिका नहीं जाने दिया गया था । पढ़ते समय मुख्य कार्य मस्तिष्क करता है और कोई भी मस्तिष्क प्रकाश के बिना पढ़ नहीं सकता, फिर इस बालक में यह क्षमता कहाँ से आयी ?

स्कॉटलैण्ड में जेम्स क्रिस्टन नाम के एक बालक ने १२ वर्ष में ही अरबी, ग्रीक, यहूदी तथा फ्लेमिश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहित विश्व की १२ भाषाएँ सीख ली थीं । २० वर्ष तक वह विज्ञान की सभी भाषाओं का पण्डित हो गया था । उसके और सामान्य व्यक्ति के आहार और जीवन-क्रम में जब कोई विशेष अन्तर नहीं था, तब बौद्धिक क्षमता में आकाश-पाताल जैसे अन्तर का कारण क्या हो सकता है ? फ्रांस में जन्मे लुईस कार्डक ४ वर्ष की आयु के थे, तभी अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मनी तथा अन्य यूरोपीय भाषाएँ बोल लेते थे । इससे भी बड़ा आश्चर्य यह था कि वह ६ माह की आयु में ही बाइबिल पढ़ लेते थे । ६ वर्ष की आयु तक पहुँचने पर कोई भी प्रोफेसर गणित, इतिहास और भूगोल में इनकी बराबरी नहीं कर पाता था । जो ज्ञान और बौद्धिक क्षमताएँ इतने अधिक अध्ययन और अभ्यास से विकसित हो पाती हैं और वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार, जिन्हें पदार्थ की परिणति होना चाहिए थीं, वह शारीरिक विकास के अभाव में ही इतने विकास तक कैसे जा पहुँची ?

ब्लेइस पास्कल ने १२ वर्ष की आयु में ही ध्वनि-शास्त्र पर निबन्ध प्रस्तुत कर सारे फ्रांस को आश्चर्य में डाल दिया था । जीन फिलिप बेरोटियर को १४ वर्ष की आयु में ही डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि मिल गई थी । उनकी स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि दिन याद कराने की देर होती थी, उस दिन की व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ भी टेप की भाँति दुहरा सकते थे । जोनी नामक आस्ट्रेलियाई बालक को जब तीन वर्ष की आयु में विद्यालय में प्रवेश कराया गया तो वह उसी दिन से ८वीं कक्षा के छात्रों की पुस्तकें पढ़ लेता था । उसे हाईस्कूल में केवल इसलिए प्रवेश नहीं दिया जा सका, क्योंकि उस समय उसकी आयु कुल ५ वर्ष थी, जबकि निर्धारित आयु १२ वर्ष न्यूनतम थी ।

कोई भी अल्पबुद्धि व्यक्ति यह स्पष्ट समझ सकता है कि यह असामान्य ज्ञान पूर्व जन्मों के ही संस्कार हो सकते हैं । हमारे मनीषी निरन्तर स्वाध्याय की आवश्यकता अनुमोदित करते रहे और यह बताते रहे कि ज्ञान आत्मा की भूख-प्यास की तरह है । उससे उसका विकास होता है । यह बात समझ में आने वाली है कि चेतना का विकास ज्ञान साधना से ही सम्भव है । जो अद्‌भुत क्षमता के रूप में हर किसी को मिलती है । बालकों के आहार, वातावरण, पोषण आदि की समान सुविधाएँ होने पर भी बौद्धिक असमानता इन्हीं भारतीय मान्यताओं की समर्थक हैं ।

इटली के डॉ. लोम्ब्रोसी जिन्होंने एक समय एक प्रतिष्ठापना दी थी कि रचना विज्ञान की दृष्टि से एक पागल और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों में समरूपता होती है । इस बात को भौतिकतावादियों ने बहुत अधिक उछाला, किन्तु वे यह भूल गये कि देखने में नमक और शक्कर दोनों में समानता दिखायी देने पर भी उनके गुणों में इतना अन्तर होता है कि एक के भाव ५ रु. किलो होता हैं तो दूसरे का १० पैसे किलो । प्रतिभाशाली व्यक्तियों, आध्यात्मिक, धार्मिक सन्तों के विचारों में रचनात्मक जागरूकता और मार्गदर्शन की क्षमता होती है । उन्होंने सैकड़ों लोगों के जीवन में शान्ति, सुरुचि और सुव्यवस्था दी, जबकि पागल के विचार अस्त-व्यस्त होते हैं । उसे लोग दुत्कारते ही हैं, उसकी सुनता कोई नहीं ।

लोम्ब्रोसी के उक्त प्रतिपादन का खण्डन अनेक वैज्ञानिकों तथा मनोवैज्ञानिकों ने भी किया है । डॉ. मोर्शले ने उपरोक्त मत से असहमति व्यक्त की है और लिखा है कि, सामान्य मस्तिष्क में दुनियादारी की प्रवृत्ति तो होती है, किन्तु सूक्ष्म चिन्तन शक्ति असाधारण लोगों में ही होती है ।

मैडम ब्लैवटस्की का कथन है कि मस्तिष्क उस वीणा व वायलिन की तरह है, जिसके तार को जितना अधिक खींचा व कसा जायेगा ध्वनि कम्पन उतने ही सूक्ष्म और मोहक होंगे । असामान्य मस्तिष्क की असामान्य उपलब्धियाँ ऐसी ही हैं, तार कसने में उसके टूटने का भय होता है । इसलिए उसे धीरे-धीरे सावधानी से कसते हैं । मस्तिष्क को जिन साधनों (योग विद्या) से सूक्ष्म तत्वग्राही और सम्वेदनशील बनाया जाता है उनकी भी यही प्रवृत्ति होती है । एकाएक कठोर अभ्यास पागल और विक्षिप्त भी कर सकते हैं । इसलिए साधना का क्रम मार्ग दर्शकों की देख-रेख में धीरे-धीरे बढ़ाया जाता है । शारीरिक अभ्यास, उपवास आदि से शरीर शोधन, विचारों में प्रकाश अवधारणा आदि से ही उच्च क्षमताएँ विकसित होती हैं । योगियों पर कोई स्नायविक दबाव नहीं पड़ता, कोई बीमारी नहीं होती । अतएव सूक्ष्म विचारों की महत्ता के साथ-साथ योग-साधनाओं की भी प्रामाणिकता सिद्ध होती है । चिन्तन के सूक्ष्मतर होने से ज्ञान चेतना के कोश परस्पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जुड़ते हुए चले जाते हैं और सामान्य मस्तिष्क जो सन्देश, प्रेरणाएँ, अनुभूतियाँ नहीं ग्रहण कर पाते उनके लिए सुलभ हो जाती हैं । सर आलिवर लाज ने भी अपनी बौद्धिक क्षमताएँ इसी आधार पर विकसित की थीं और यह माना था कि हमारी ज्ञान चेतना पदार्थ जन्य न होकर विराट् चेतना का ही एक अंश और अंग है । जब तक इस बात को नहीं समझते तब तक हमारे दृष्टिकोण भी भौतिकतावादी बने रहते हैं । तब पाप-पुण्य में कोई अन्तर ही नहीं रहता, नैतिकता का कोई अर्थ ही नहीं होता । आज जो सर्वत्र पीड़ा और पतन के दृश्य हैं, स्वार्थ संकीर्णता ने पुण्य-परमार्थ को दबोच रखा है, वह उसी मान्यता का दुष्परिणाम है ।

पूर्वी मनोविज्ञान या भारतीय दर्शन के पीछे शोधों की एक लम्बी विज्ञान सम्मत शृंखला है, जबकि पश्चिमी मनोविज्ञान अभी ३०-४० वर्ष का बालक मात्र है, जो सतह पर खड़ा स्नान करता है । उसमें इतनी क्षमता भी नहीं कि गहरे में जाकर गोता लगा सके । इसीलिए वह जितने समाधान प्रस्तुत करता है उतने ही प्रश्न और समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं । ऊपर मस्तिष्क की जिन अदम्य क्षमताओं का वर्णन किया गया है, उन्हें कुछ देर के लिए भूल भी जायें तो भी जब मस्तिष्क सामान्य नहीं होता तब भी चेतन क्रियाएँ चलती रहती हैं । न केवल जागृत अवस्था में अपितु स्वप्न व सुषुप्ति अवस्था में भी चेतना बनी रहती है, उसका भी समाधान आवश्यक है । डॉ. ड्यूप्रेल ने अपनी पुस्तकों में ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है, जिनसे यह सिद्ध होता है कि समय या अनुभूति के एक सेकण्ड के करोड़वें भाग में ही महाकाल या अनेक वर्षों में हुए ज्ञान की अनुभूति कैसे सम्भव हो जाती है । इसका अर्थ तो स्पष्टतः यही होता है कि कोई एक ऐसी चेतना है जो विराट् है और उसके लघुत्तम अंश में भी वही सम्भावनाएँ सन्निहित हैं । अपनी पुस्तक में डॉ. प्रेल ने एक व्यक्ति के स्वप्न का उल्लेख करते हुए लिखा है कि, उस व्यक्ति की गर्दन का एक उँगली से स्पर्श किया गया । उसकी नींद टूट गई । जब उससे अनुभव के बारे में पूछा गया तो उसने बताया कि उसने स्वप्न देखा कि मैंने किसी की हत्या कर दी, उस व्यक्ति के घर वालों ने पुलिस में रिपोर्ट लिखायी, पुलिस ने पकड़ा, जेल भेजा, मुकदमा चला, वकील की जिरह हुई, मुझे फाँसी की सजा हो गई । नियत समय पर जल्लाद आया, उसने मेरी गर्दन पर चाकू रखा और नींद टूट गई ।

डॉ. प्रेल लिखते हैं, जिस तरह ज्ञान के अंश में ही विराट्काल व्याप्त होने का यह उदाहरण है, उससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात है सम्मोहन की अवस्था (हिप्नोटिज्म) में व्यक्ति अचेत हो जाता है उसे अपनी स्थिति का भी बोध नहीं रहता, आँखें देख नहीं सकतीं, कान सुन नहीं सकते, पलकें तीव्र विद्युत प्रकाश में भी नहीं सिकुड़ती हैं, त्वचा स्पर्श ज्ञान से शून्य हो जाती है । हृदय की धड़कन बन्द-सी हो जाती है । अत्यन्त सम्वेदनशील यन्त्रों से ही जीवन का बोध होता है । कार्बन तत्व अत्यधिक बढ़ जाने से मस्तिष्क संज्ञा शून्य हो जाना चाहिए था । जड़ता, अगति या मृत्यु हो जानी चाहिए थी, किन्तु तब ज्ञान की क्षमताएँ जागृति से भी अनेक गुनी अधिक बढ़ जाती हैं । अर्थात् सम्मोहन की अवस्था में बाल्यावस्था की जो घटनाएँ याद नहीं रहतीं वे भी स्मरण शक्ति में आ जाती हैं । सामान्य स्थिति में कोई पुस्तक का एक पैराग्राफ पढ़े तो तीव्र बुद्धि व्यक्ति ही उसके कुछ शब्द दोहरा सकते हैं, पर सम्मोहित अवस्था में तो यदि भाषा उसकी पढ़ी हुई नहीं तो भी अक्षर ब-अक्षर दोहरा सकता है । जागृत अवस्था में आँख की शक्ति सीमित होती है, किन्तु उस स्थिति में कमरे में बन्द रहकर भी सैकड़ों मील दूर की वस्तुएँ तक दिखाई देती हैं, यह सब कैसे सम्भव है ?

इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि आत्म-चेतना विराट् चेतना का ही अंश है, जिसमें असीम ज्ञान की शक्ति, अद्वितीय क्षमताओं की सम्भावना सन्निहित है । भूत, भविष्य और वर्तमान उसी में अवस्थित हैं, वह पदार्थ से परे हैं तथा उसे जानने में ही जीवन की सार्थकता है । योग-साधना, ध्यान-धारणा और साधन अभ्यासों द्वारा इन्हीं शक्ति-केन्द्रों को जागृत किया जाता है तथा दिव्य-शक्ति सम्पन्न हुआ जाता है ।

अतीन्द्रिय-क्षमताओं का आधार और विज्ञान

घटना इंग्लैण्ड के चेशायर नगर की है । यहाँ रहने वाली जिना ब्यूचम्प जो एक सेक्रेटरी का काम करती थीं, एक दिन विक्टोरिया स्टेशन पर बैठी अपनी माँ से बात-चीत कर रही थीं । स्टेशन वे इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयी थीं कि उन्हें ट्रेन द्वारा मेन्स्टन सिटी जाना था और वहाँ से हवाई जहाज द्वारा 'कारेटा ब्रेवा' ।

ट्रेन आने में अभी थोड़ी देर थी इसलिए माँ-बेटी एकान्त में बैठी बात-चीत कर रही थीं । अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि एकाएक 'जिना' बोली—माँ मुझे बार-बार डर लग रहा है और ऐसा लगता है मेरे अवचेतन मन में कोई कह रहा है कि यह यात्रा खतरे से खाली नहीं है । मैं तो यह यात्रा नहीं करूँगी ।

माँ बोली—'बेटी !' यह तेरा वहम है । तू तो व्यर्थ ही डर रही है, इस तरह का अन्ध-विश्वास एक प्रकार का पिछड़ापन है, तुझे ना करते देखकर बड़ा असमंजस हो रहा है । इस पर जिना बोली—"माँ तुम कुछ भी कहो पर मुझे तो यह विश्वास है कि संसार अपनी प्रेरक सत्ता से रिक्त नहीं । मेरे अन्तःकरण में उठ रही दैवी स्फुरणा झूठ नहीं हो सकती ?"

माँ ने बहुतेरा समझाया पर जिना ने एक न सुनी वह फिर जाने के लिए तैयार ही नहीं हुई । माँ ने यात्रा अकेले ही की । यात्रा क्या थी मौत का बुलावा था । कहते हैं संसार के प्राणियों की जन्म मृत्यु का हिसाब रखने वाली कोई सत्ता है, जिसे यमराज कहते हैं, वे हर व्यक्ति को निश्चित समय पर मृत्यु के लिए प्रेरित कर देते हैं और संसार के पालक, पोषक, संरक्षक भगवान जिसे बचाना चाहते हैं, मौत के मुँह से झपटकर बचा लेते हैं । कोई अनुभव करे या न करे कि संसार सचमुच सूक्ष्म शक्तियों के विधान पर चल रहा है, यहाँ प्रस्तुत की जा रही घटनाएँ इस बात की पुष्टि करती हैं ।

जिना को स्टेशन से घर लौटे ४-५ घण्टे ही हुए थे तभी 'अरजैण्ट' (द्रुतगामी) तार आया । अब तक जो मात्र प्रेरणा और आशंका थी वह सच निकली । तार में सूचना थी आपकी माँ श्रीमती व्यूचैम्प जिस जहाज से कोरटा ब्रेवा जा रही थीं, वह परिफ्गनान (फ्रांस) के पास गिरकर नष्ट हो गया और आपकी माँ की मृत्यु हो गई । इस विमान दुर्घटना में विमान में सवार एक भी व्यक्ति नहीं मरा । जिना को अन्तिम समय प्रेरणा और कार्यक्रम का परिवर्तन क्या किसी भूत और भविष्य को जानने वाली मनुष्य से उच्च सत्ता का काम नहीं है ?

ड्यूक विश्वविद्यालय में परामनोविज्ञान से सम्बन्धित एक स्त्री से सम्बन्धित घटना इस प्रकार है ।

"दूसरा महायुद्ध प्रारम्भ हो चुका था । तब मेरे पति को स्नायु सन्निपात (नर्वस ब्रेक डाउन) हो गया वे घर से लगभग ५० मील दूर एक चिकित्सालय में चिकित्सा करा रहे थे । हम दोनों प्रतिदिन एक दूसरे को पत्र लिखते । एक दिन शाम को मैं अपने ड्राइंग रूम में अकेली बैठी थी । आठ बजने को थे कि एकाएक मुझे बेचैनी होने लगी । बहुत प्रयत्न करने पर भी व्यग्रता बढ़ती ही गई । इस अनायास परिताप का कारण समझ नहीं पा रही थी । मुझे ऐसा लगा, जैसे मुझे कोई टेलीफोन की ओर आकर्षित कर रहा है । मुझे ऐसा लगा कि अपने पति को टेलीफोन करूँ, इसी गरज से टेलीफोन के पास चक चली गई । मुझे अनावश्यक फोन करने की मनाही करदी गई थी, इसलिए आस-पास चक्कर तो काटती रही पर फोन न कर सकी और फिर चुपचाप लौट आई ।

दूसरे दिन पति के दो पत्र आये । एक तो प्रतिदिन लिखा जाने वाला पत्र था, जो नियमित रूप से आता था । दूसरा उससे पहले लिखा गया था और उसमें पतिदेव ने मुझसे ठीक आठ बजे फोन पर बात-चीत करने को लिखा था । इसके दूसरे दिन एक और पत्र आया, जिसमें लिखा था "मैं आठ बजे टेलीफोन पर तुम्हारी व्यग्रता से प्रतीक्षा करता रहा । मुझे बहुत बेचैनी रही ।"

गेटे ने अपनी आत्मकथा में लिखा है एक बार वह अपने निवास स्थान वाइम्नर में था तो अचानक तीव्र अनुभूति हुई कि वहाँ से हजारों मील दूर सिसली में एक भयंकर भूकम्प आया है । यह बात उसने अपने मित्रों को बताई पर किसी को विश्वास न हुआ कि बिना किसी आधार के इतनी दूर की बात इस प्रकार कैसे मालूम हो सकती है, पर कुछ दिन बाद आये समाचारों से पता चला कि ठीक उसी समय वैसा ही भूकम्प सिसली में आया था जैसा कि उसने अपने मित्रों को बताया था ।

मनोगतिशीलता वस्तुतः शरीर या किसी शारीरिक ऊर्जा से सम्बन्ध नहीं रखता । उसका सम्बन्ध प्राण और संकल्प (सूक्ष्म शरीर) से रहता है पर उसकी शक्ति अपरिमित होती है, शाप और वरदान तक उससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफल होते देखे जाते हैं । एक बार दक्षिणेश्वर के काली मन्दिर में भक्तों के एक मेले में रानी रासमणि भी सम्मिलित हुईं । रानी से दक्षिणेश्वर मन्दिर को बहुत धन मिलता था । स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने सहसा उन्हें जोर का तमाचा मार दिया । तो उनके अंग-रक्षक बहुत नाराज हुए पर रानी ने उन्हें शान्त करते हुए स्वीकार किया कि उन्हें ऐसे पवित्र स्थान में जो बात नहीं सोचनी थी, वह सोच रही थीं । उसे रामकृष्ण परमहंस किस प्रकार जान गए इसे तब बड़ी आश्चर्य की दृष्टि से देखा गया पर अब परामनोविज्ञान इसे मन की संकल्प-सिद्धि का छोटा-सा चमत्कार मानता है । स्वामी विवेकानन्द ने सिस्टर निवेदिता को इसी तरह अपनी मृत्यु का पूर्व-ज्ञान करा दिया था ।

स्वामी शिवानन्द ने एक बार एक ग्रामीण की जो उन्हें दूध पहुँचाने आता था, एक साँप से रक्षा की । जब वह स्वामी जी के पास पहुँचा तो उन्होंने आते ही पूछा—"साँप ने कहाँ काटा ?" वह व्यक्ति यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया । रास्ते में साँप ने जहाँ काटा था, वह स्थान दिखाया और स्वामी जी ने मन्त्र बल से उसे अच्छा कर दिया ।

इन घटनाओं से सिद्ध होता है कि हमारे अन्तःकरण और मन में उठा कोई भी भाव या विचार नष्ट नहीं होता वरन् वह सम्बन्धित व्यक्ति तक पहुँचता है और भावनाएँ जितनी हार्दिक और प्रखर होती हैं, उतनी ही तेजी से प्रभावित और प्रेरित भी करती हैं । देव उपासनाओं से मिलने वाला अनुग्रह और प्रार्थना से मिलने वाला आशीर्वाद भी इसी तरह होता है । उससे अधिक अतीन्द्रिय ज्ञान से जीवन की अमरता सिद्ध होती है ।

वह इस तरह कि जब हम स्वप्नावस्था में होते हैं तो भी इन्द्रियातीत ज्ञान की अनुभूति होती रहती है । ऐसा लगता है, जैसे हम प्रत्यक्ष शरीर से चल-फिर, उठ-बैठ और क्रियाएँ कर रहे हों । उस समय की कितनी ही अनुभूतियाँ इतनी सच्ची निकलती हैं कि आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है । अपने पति की हत्या से पूर्व ही राष्ट्रपति अब्राहमलिंकन की पत्नी ने एक सुस्पष्ट स्वप्न में अपने पति की मृत्यु का दृश्य देखा था ।

पौराणिक कथा है कि "भरत ने कई दिन पूर्व ही अयोध्या में होने वाले विग्रह और दशरथ की मृत्यु का भविष्य-दर्शन स्वप्न में किया था ।" प्राचीन टेस्टामेंट की एक घटना से यह भी सिद्ध होता है कि इस तरह का इन्द्रियातीत ज्ञान जागृत अवस्था में भी हो सकता है और किसी को विचार-संचार भी किया जा सकता है । एक बार राजा बेलसज्जार अपने मेहमानों के साथ भोजन के लिए बैठे, तभी उन्हें किसी के हाथ ऊपर उठते और अंगुली से दीवाल पर कुछ शब्द लिखे दीखे । भविष्य वक्ता डेनियल ने उक्त सारी घटना की व्याख्या करते हुए बताया कि "राजा का राज्य और अस्तित्व खतरे में है ।" वैसा ही हुआ भी । प्रातःकाल होने से पूर्व ही सम्राट् की हत्या कर दी गई और डोरिस नाम के एक उच्च-पदाधिकारी ने राज्य सत्ता पर अपना अधिकार कर लिया ।

अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जब आत्मा को बोलने की इच्छा होती है तो वह बुद्धि द्वारा अर्थों को संग्रहीत कर मन को इस कार्य के लिए प्रेरित करती है । मन शरीरस्थ अग्नि द्वारा प्राण-वायु को गर्म करके उसे अपने प्रयोजन के लिए गतिमान करता है । नाभि प्रदेश से उठता हुआ, यह वायु छाती (उरस) आदि स्थानों में से उत्क्रमण कर कण्ठ प्रदेश में पहुँचता है । उपरोक्त प्रक्रिया वायु और आकाश तत्वों से मिलकर कम्पन करती है, इन ध्वनि कम्पनों को अभ्यान्तर प्रयत्नों से किसी के भी पास पहुँचाया जा सकता है ।

चन्द्र यात्रा में एक प्रयोग

अपोलो १४ अन्तरिक्षयान के तीन सदस्यों में से एक थे—एडगर मिचेल । उन्होंने अपनी यात्रा के साथ-साथ एक व्यक्तिगत परीक्षण भी सम्मिलित रखा । क्या पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के बाहर भी विचार संचालन का क्रम चल सकता है ? क्या टेलीपैथी अन्तर्ग्रही आदान-प्रदान का माध्यम बन सकती है ? क्या लोक-लोकान्तरों के निवासी परस्पर विचार विनिमय कर सकते हैं ? यदि ऐसा सम्भव हो सके तो इसे चेतना के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी उपलब्धि कहा जायेगा ।

मिचेल ने चन्द्र यात्रा की लम्बी उड़ान में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के बाद अपने कुछ मित्रों के साथ टेलीपैथी के आधार पर विचार विनिमय किया । कुछ सन्देश भेजने और कुछ पाने के लिए समय निर्धारित रखा, जो उन्होंने भेजा उसे उनके मित्रों ने और जो मित्रों ने भेजा उसे उन्होंने ग्रहण किया । लौटने पर लेखा-जोखा लिया गया तो उसमें शत-प्रतिशत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो नहीं, पर बड़ी मात्रा में यथार्थता पाई । श्री मिचेल ने इस सन्दर्भ में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहा—'यह स्थापना हो चुकी है कि टेलीपैथी एक यथार्थता है । उसकी शोध उसी प्रकार होनी चाहिए जिस प्रकार अन्य वैज्ञानिक तथ्यों की होती है ।

अब वे दिन लद गए जिनमें यह कहा जाता था कि—'मस्तिष्क में इन्द्रिय छिद्रों के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम से ज्ञान का प्रवेश नहीं हो सकता ।' प्लेटो की मान्यताएँ ऐसी ही थीं, पर अब वैसा कोई नहीं कहता—ई. सी. पी. के विद्युताग्र मस्तिष्क को असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं । इस सफलता के आधार पर यह वायदा किया जाने लगा है कि बिना सर्जरी के ही अमुक विचार प्रवाह से किसी के या किन्हीं के मस्तिष्क की स्थिति बदली जा सकेगी । उसे अपनी मान्यताएँ बदलने, चिन्तन की धारा बदलने और नये किस्म का कुछ भी सोचने के लिए विवश किया जा सकेगा । अब मस्तिष्क व्यक्तिगत सम्पत्ति न रहकर सार्वजनिक प्रयोग परीक्षण का, क्रीड़ा विनोद का क्षेत्र बनता जा रहा है । पार्क में सैर करने की तरह किसी के मस्तिष्क में भी अनिच्छित विचार प्रवेश कर सकते हैं और उन्हें स्थान देने के लिए किसी भी व्यक्ति को बाध्य किया जा सकता है ।

शब्द वेधी बाण

तथाकथित पिछड़े हुए लोगों के हाथों में कभी-कभी ऐसी क्षमताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, जिन्हें देखकर अवाक् रह जाना पड़ता है । अफ्रीका और आस्ट्रेलियाई जन-जातियों में अभी भी कई ऐसे करतब देखे जा सकते हैं, जिनका कारण आधार और अभ्यास समुन्नत और क्रिया-कुशल समझे जाने वाले लोगों के लिए भी एक पहेली ही बना हुआ है । आस्ट्रेलिया के वनवासियों की भोजन समस्या को हल करने का आधार 'बूमरैंग' अस्त्र उस क्षेत्र के बच्चे-बच्चे के अभ्यास में आया हुआ है । यह हस्त-कौशल एवं बुद्धि-कौशल से चलने वाले हथियार बन्दूक को पीछे छोड़ता है और शब्द वेधी की उन दन्त कथाओं को सत्य सिद्ध करता है, जिनमें लक्ष्य वेधने के उपरान्त तीर फिर से प्रयोगकर्त्ता के तरकस में स्वयं ही वापस आ जाता था ।

इंग्लैण्ड की महारानी एलिजावेथ द्वितीय और उनके पति ड्यूक ऑफ एडनवरा सन् १९५४ में आस्ट्रेलिया के दौरे पर गए । शाही अतिथियों के सम्मान में आयोजित एक समारोह में इस देश के आदिवासियों द्वारा प्रयुक्त होने वाले 'बूमरैंग' अस्त्र के आश्चर्यजनक करतब दिखाये गये । जिसे देखकर महारानी मन्त्रमुग्ध रह गईं और प्रदर्शनकारी जोटम्बरी की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और उस शस्त्र संचालन को कई बार देखा ।

बूमरैंग एक विचित्र प्रकार का हथियार है । उसकी लम्बाई डेढ़ से तीन फुट तक की होती है । इस रहस्यमय अस्त्र के बनाने का ढंग भी बड़ा विचित्र है दोनों सिरे एक समान नहीं होते फिर भी उनका वजन समान होता है । एक सपाट दूसरा लगभग गोल एक कुछ इंच छोटा दूसरा बड़ा । किनारों पर लोहे के नुकीले तथा तेज धार वाले फल लगे होते हैं । उनकी बनावट में तिरछापन होता है । कीकर के पेड़ की एक गीली लकड़ी को काट कर उसे आग पर सेंकते हुए नरम करके बीच में से इच्छानुसार मोड़ लिया जाता है । बस तैयार हो गया 'बूमरैंग' । देखने में वह हँसिये जैसी शक्ल का मामूली सा औजार लगता है पर उसका प्रयोग इतना अद्भुत और चमत्कारपूर्ण है कि आज के बुद्धि-कौशल को उसने अपने ढंग से चुनौती ही दे रखी है ।

बूमरैंग को एक प्रकार का शब्द वेधी बाण कहना चाहिए । वह प्रयोक्ता द्वारा हवा में उछाला जाता है तीर की तरह सनसनाता हुआ ऊपर उड़ता है—अमुक ऊँचाई पर पहुँच कर मुड़ता है और एक विशेष कक्षा में चक्कर लगाता हुआ निर्धारित निशाने पर जा लगता है अथवा लौटकर चलाने वाले के पास ही वापस आ जाता है ।

आस्ट्रेलिया के आदिवासी शिकारी इसी से पशु-पक्षियों का शिकार करके अपना पेट पालते हैं । दौड़ते हुए कंगारू पर सही निशाना साधना और कितनी देर में जानवर किस गति से कहाँ पहुँचेगा और उतने समय में बूमरैंग हवा में तैरता हुआ उस तक पहुँचने में कितना समय लेगा, यह हिसाब लगाना किसी शक्तिशाली कम्प्यूटर के लिए ही सम्भव हो सकता है पर आस्ट्रेलियाई आदिवासी इस कला में इतने निष्णात होते हैं, कि उनके लिए दौड़ते-उड़ते पशु-पक्षियों को इसी छोटे से लकड़ी के टुकड़े की सहायता से मार देना बाँये हाथ का खेल जैसा सरल होता है । वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाँच मिनट में चलते भागते कंगारू को धराशायी बना देते हैं । प्रायः सिर पर चोट करना इस अस्त्र का लक्ष्य होता है । निशाना प्रायः कभी भी खाली नहीं जाता ।

कभी-कभी इन आदिवासियों के प्रतियोगिता समारोह होते हैं, तब 'बूमरैंग' के करतब देखकर दाँतों तले उंगली दबाकर रह जाना पड़ता है । पेड़ के चारों ओर चक्कर काटकर फिर फेंकने वाले के हाथ में आ जाना अथवा पैर के आगे कुछ ही इंच जमीन के आधे फुट गहराई तक घुस जाना ऐसा खतरनाक प्रयोग है कि गलती होने पर फेंकने वाला ही प्राण गँवा सकता है, पर वे बचपन से ही अभ्यास करते हैं और युवा होने तक उस कला में पारंगत हो जाते हैं । इस अस्त्र की सारी विशेषता उसकी लकड़ी तथा फ्लों के भार तथा तिरछेपन के साथ जुड़ी हुई विशेषताओं में सन्निहित रहती है । अब से सौ वर्ष पूर्व यह अस्त्र प्रायः पाँच फुट लम्बा होता था, वह निशाना तो ठीक लगाता था पर लौट कर प्रयोक्ता के पास वापस नहीं आता था, पर अब उनमें उन लोगों ने आवश्यक सुधार कर लिए हैं और इस योग्य बना लिया है कि बढ़िया बन्दूकें भी उसका मुकाबला न कर सकें ।

महारानी एलिजावेथ के सामने लंगोटीधारी—वनवासी—जोटम्बरी ने जब बूमरैंग फेंका तो वह एक सौ बीस फुट तक सीधा तीर की तरह गया । फिर एक सेकण्ड के लिए रुका और देखते-देखते ६० अंश का कोण बनाते हुए आकाश में १०० फुट ऊँचा उड़ा । वहाँ उसने अपने आप कई चक्कर लगाये, पीछे वह फेंकने वाले की ओर मुड़ गया । अस्त्र सिर के समीप आ चुका था कि जोटम्बरी ने अपना एक पैर उछाला और उसी से बूमरैंग को पकड़ लिया । यह सारा दृश्य ऐसा लगता था मानो कोई वायुयान किसी प्रशिक्षित पायलेट के कुशल संचालन में यह सारे करतब दिखा रहा हो । ऐसे कई प्रयोग उसने दिखाये और बताया कि यह कोई नट विद्या नहीं वरन् उसकी जाति के लिए जीवन-मरण जैसा आवश्यक अभ्यास है ।

क्षमताओं की जागृति

इस तरह की क्षमताएँ विशेष अभ्यासों द्वारा जागृत की जा सकती हैं । ये होती तो प्रत्येक मनुष्य में हैं पर अधिकांश व्यक्तियों में सुखी स्थिति में ही रहती हैं । इन क्षमताओं को जागृत करने के लिए अनेक प्रकार के साधन विधान हैं । उन सबका आधारभूत सिद्धान्त अपनी मनःस्थिति और आत्मिक स्तर को क्रमशः परिष्कृत, परिपक्व तथा उन्नत करते चलना है । जापान में बौद्ध धर्म की एक शाखा है, जिसके अनुयायी जैन कहे जाते हैं । सम्भव है भारत में प्रचलित जैन धर्म का इस शाखा पर प्रभाव रहा है और इसका वैसा ही नामकरण किया गया हो ।

इस सम्प्रदाय के अनुयायी ध्यान योग पर बहुत आस्था रखते हैं और अपनी आस्था इस हद तक सुदृढ़ करते हैं कि उन्हें कठिन तितिक्षाजन्य कष्ट सहने में भी दुःख अनुभव नहीं होता । एकाग्रता की गहराई इस हद तक वे लोग विकसित करते हैं, कि बाह्य कष्टों के सहन करने की तपश्चर्या उन्हें अपने साधना क्रम से विचलित न कर सके ।

दक्षिण जापान के कई बौद्ध मन्दिरों में ऐसे धर्मानुष्ठान होते हैं, जिनमें छः फुट लम्बी दहकते हुए कोयलों से सजाई हुई वेदी पर नंगे पैरों चलकर उसे पार करना पड़ता है । पुरोहित आगे चलता है और अनुयायी पीछे । जो लोग इस रास्ते को हँसते हुए पार कर लेते हैं, वे सच्चे जैन विश्वासी माने जाते हैं ।

ऐसी अग्नि परीक्षा मलेशिया के कई क्षेत्रों में धर्मानुष्ठानों के रूप में प्रचलित है । होली के अवसर पर भारत के कई स्थानों में पुरोहित लोग जलती हुई ऊँची लपटों में होकर नंगे पाँवों और नंगे शरीर पार निकलने का प्रदर्शन करते हैं ।

सर्प जैसे क्रोधी और स्नेह शून्य प्राणी को मनुष्य का परम सहयोगी और विश्वस्त बना लेना असामान्य तथा कठिन ही दीखता है और सिंह-शावक, कुत्ते की तरह मनुष्य के पीछे फिरे यह भी प्रकृति विरुद्ध है फिर भी अनेक घटनाएँ ऐसी होती रहती हैं और बताती हैं कि मानवी चेतना अन्य प्राणियों की प्रकृति में भी परिवर्तन कर सकती हैं ।

अंग्रेज साहित्यकार डी. एच. लारेन्स ने अपनी मैक्सिको यात्रा का सचित्र विवरण छापते हुए उस देश के आदिवासियों-रैड इण्डियनों के सर्प प्रेम की चर्चा की है और बताया है कि किस प्रकार वर्ष में एक बार वे भयंकर विषधरों के साथ मिलकर सर्प पूजा की परम्परा निभाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह सर्प पूजा वर्षा के प्रथम महीने में रविवार के दिन से आरम्भ होती है और सोमवार की शाम तक चलती है । इसे देखने के लिए आदिवासी ही नहीं सुशिक्षित गोरे भी अपनी मोटरें लेकर उस छोटी देहात में पहुँचते हैं । एक मेला सा लग जाता है । इस मेले को दृष्टि में रखते हुए ही वहाँ तक पहुँचने के लिए एक कच्ची-पक्की सड़क भी बना दी गई है ।

सर्प अनुष्ठान नवाजो प्रान्त के आरिजोना रेगिस्तान से कोई ७० मील उत्तर की ओर 'वल्पि' गाँव में होता है । निर्धारित तिथि पर उपस्थित होने के लिए सुपरिचित सर्प गुफाओं में होपी कबीले के पुरोहित उन्हें निमन्त्रण देने जाते हैं और उपस्थिति के लिए मन्त्रोच्चारण पूर्वक अनुरोध करते हैं । यह क्रम प्रायः साल भर तक चलता रहता है । आश्चर्य यह है कि वह निमन्त्रण स्वीकार भी हो जाता है और निर्विष और विषधर सर्प बड़ी संख्या में उस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए स्वेच्छापूर्वक क्रियाशील होते हैं ।

यह सर्पानुष्ठान कोई मनोरंजन या मेला-तमाशा नहीं है । दर्शक उसे जो भी समझें पर इसका आयोजन करने वाले होपी कबीले के आदिवासी सर्पों को सूर्य देवता का विशेष प्रतिनिधि मानते हैं और उन्हें इस पूजा समारोह में आमन्त्रित करके परस्पर मैत्री कर घनिष्ठता की नयी पर्त चढ़ाते हैं और उनके माध्यम से समस्त सर्प परिवार तक तथा सूर्य देवता तक अपनी शुभकामनाएँ भिजवाते हैं । उनका विश्वास है कि न केवल मनुष्य वरन् सभी प्राणी भाई-भाई हैं । यहाँ तक कि मनुष्य और सर्प में भारी प्रकृति भिन्नता होते हुए भी उनके बीच स्नेह सौजन्य के सम्बन्ध बने रहने में कोई अड़चन नहीं है । रैड इण्डियनों के यह विचार भारतीय धर्मानुयायियों से बहुत अंशों में मेल खाते हैं । अपनी इस मान्यता को हर वर्ष पुष्ट करते रहना भी इस धर्मानुष्ठान का एक प्रयोजन है ।

लारेन्स के कथनानुसार परम्परागत स्थान पर नियत दिन यह आयोजन होता है । इसमें प्रधान भूमिका निभाने वाले याजक नौ दिन तक उपवास करते हैं और पवित्र मन्त्र जपते रहते हैं । निर्धारित समय पर वे अपनी विचित्र वेश-भूषा में सर्प नृत्य आरम्भ करते हैं । दर्शकों से कह दिया जाता है कि पूर्णतया मौन रहें, अन्यथा आगन्तुक सर्प भयंकर उपद्रव कर सकते हैं । दर्शक उस आदेश का पूर्णरूपेण पालन करते हैं ।

पत्तों से ढके एक गड्ढे में न जाने कितने सर्प कब से छिपे बैठे होते हैं । अनुष्ठानकर्त्ता मन्त्रोच्चार पूर्वक उनमें से थोड़े-थोड़े सर्प पकड़ कर लाते हैं । उन्हें गले में पहनते हैं, शरीर से लपेटते हैं, उनका मुँह अपने मुँह में दबाते हैं और विचित्र मुद्राओं में सर्प नृत्य करते हैं; इसमें नर्तकों के शरीर पर लिपटे हुए सर्प भी भाग लेते हैं और अपने अंगों को हिलाते, घुमाते हुए यह सिद्ध करते हैं कि उन्हें भी इस आयोजन में आयोजनकर्त्ताओं की तरह ही दिलचस्पी तथा प्रसन्नता है ।

नर्तक लोग अपने साथ लिपटे हुए साँपों में से कुछ को जमीन पर छोड़कर उन्हें स्वतन्त्र क्रीड़ा-कल्लोल करने देते हैं । कुछ को दर्शकों पर भी फेंक देते हैं पर कभी कोई दुर्घटना नहीं होती ।

देखने वाले तरह-तरह के अनुमान लगाते हैं और कहते हैं, यह पाले हुए हैं, जहर निकाले हुए-बूढ़े, मद्य मूर्च्छित सर्प हैं । याजकों के पास कोई सर्प विष नाशक जड़ी-बूटी है जिसे खाकर वे दंशन हानि से बचे रहते हैं । जो हो, सर्प इतने बलिष्ठ और विषधर भी होते हैं, जिनकी जहरीली मार न सही, शारीरिक पकड़ भी किसी का कचूमर निकाल सकती है । फिर भी आमन्त्रित सैकड़ों सर्पों में से एक भी इस तरह का उत्पात नहीं करता और ऐसा लगता रहता है मानो मनुष्य और सर्प दोनों ही छोटे बालकों की तरह सौहार्दपूर्ण क्रीड़ा विनोद कर रहे हैं ।

अनुष्ठान के अन्त में सांयकाल एक निर्धारित स्थान पर समस्त सर्पों को विसर्जित कर दिया जाता है और अपने सम्बन्धित अन्य देव परिवार तक उनका अभिवादन पहुँचाने और बदले में सुख-शान्ति का वरदान भिजवाने को वे लोग भूमिका निभाते हैं विदाई के समय सर्पों को अगले वर्ष फिर आने का निमन्त्रण दिया जाता है और वे आते भी हैं ।

मैसूर क्षेत्र के दक्षिण कनारा जिले का निवासी चालीस वर्षीय वेनारी वेक्टारमन कुछ समय पूर्व एक विचित्र प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध था । उसने अपनी दाढ़ी में मधुमक्खियों का छत्ता जमा रखा था, उसमें मक्खियाँ भली प्रकार जीवन-निर्वाह करती थीं । दक्षिण कनारा के मधुमक्खी पालकों का एक सम्मेलन हुआ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसमें वेक्टारमन को अध्यक्ष बनाया गया । उस सम्मेलन में मधुमक्खी पालकों के अतिरिक्त अधिक संख्या उन लोगों की थी जो दाढ़ी में लगे हुए सफल मधुमक्खी छत्ते का विचित्र दृश्य आँखों से देखने के लिए एकत्रित हुए थे ।

मानसिक चेतना की नीची पर्तों में तो केवल इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और बुद्धि शक्ति जैसा लौकिक प्रयोजन सिद्ध कर सकने वाली सामान्य एवं विशिष्ट क्षमताएँ पायी जाती हैं, पर उसकी उच्चस्तरीय संकल्प शक्ति में वे क्षमताएँ विद्यमान हैं, जिसे चमत्कारी सिद्धियों के रूप में जब-तब जहाँ-तहाँ देखा जाता है । यह सब भी अनायास नहीं, वरन् क्रमबद्ध हैं । श्रद्धा और विश्वास के आधार पर परिपक्व हुआ अन्तःकरण मनुष्य में वैसी अनेक विशेषताएँ पैदा कर सकता है, जिनमें से कुछ की चर्चा ऊपर की गई है ।

समर्थ सत्ता का अनुदान

विज्ञानमय कोश की विशिष्ट क्षमताओं का एक केन्द्र उच्च चेतन मन है । दूसरा एक और भी आधार है—प्राण विद्युत । यह एक चुम्बक है जो सांसारिक जीवन में प्रभावोत्पादन शक्ति एवं प्रतिभा के रूप में दृष्टिगोचर होता है । यह आकर्षण तत्व यदि अधिक सक्षम हो सके तो उसके माध्यम से कई तरह की ऐसी विशेषताएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिनसे व्यक्तित्व के उभरने के असाधारण अवसर उत्पन्न हो सकें । इस ऊर्जा में यह शक्ति भी है कि सूक्ष्म जगत के प्रवाहों को अपनी ओर मोड़ सकना और उनके सम्पर्क से कई महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्ध करना भी सम्भव हो सकता है । साधक अपने व्यक्तित्व को साधना मार्ग पर चलते हुए जिस प्रखरता को प्राप्त करता है, उससे भौतिक सफलताओं और आत्मिक सिद्धियों के उभयपक्षीय लाभ मिल सकते हैं ।

मनःशक्ति जड़ जगत और चेतन सत्ता के बीच का एक घटक है, इसलिए ज्ञात जीवन में उसका सर्वोपरि महत्त्व है । जीव विज्ञान (जेनेटिक साइन्स) की नवीनतम जानकारियाँ यह बताती हैं कि शरीर जिन कोशिकाओं से बना है वह तथा शरीरगत परमाणु पूरी तरह मनःशक्ति के नियन्त्रण में हैं । यही नहीं वंशानुक्रम में भी वह गतिशील रहता है तथा मरणोत्तर जीवन में भी उसकी गतिशीलता समान रूप से बनी रहती है । फ्रायड के "सुपर ईगो" और "सेन्सस" की परिधि वाले मन को जर्मन मनोवैज्ञानिक हेन्सावेण्डर अतीन्द्रिय क्षमता तक ले जाने में सफल हुए । इसके लिए उन्होंने अनेक प्रमाण तक उपलब्ध कराये । टेलीपैथी पर अत्यधिक खोजबीन करने वाले रेने बार्कोलियर ने कहा है—"मन की व्याख्या पदार्थ विज्ञान के प्रचलित सिद्धान्तों द्वारा सम्भव नहीं ।"

मस्तिष्क की स्थिति जीवन-यापन के सामान्य क्रिया-कलाप पूरे करने जितनी सीमित नहीं है । अपितु उसमें एक से एक विलक्षणताएँ, सम्भावनाएँ प्रतीत होती हैं । वैज्ञानिक परमाणु में भार, घनत्व विस्फुटन तथा चुम्बकीय क्षेत्र आदि भौतिक परिचय देने वाले तत्वों की खोज करते हुए एक ऐसे सूक्ष्म विद्युतीय कण के सम्पर्क में आये हैं, जिनमें भौतिक परमाणु में पाये जाने वाले उपरोक्त एक भी लक्षण नहीं । यह विद्युत कण शरीरों के पोले भाग तथा समस्त आकाश में निर्बाध विचरण करते हैं । ये भौतिक परमाणुओं को भी वेधकर पार निकल जाते हैं, पर अभी तक कोई ऐसी प्रणाली या विज्ञान विकसित नहीं हो पाया जो इन विद्युत कणों को कैद कर सके । जब तक वह पकड़ में न आयें उनकी अन्तःसंरचना का अध्ययन कैसे हो ?

इन कणों की उपस्थिति का बोध भी उन्हीं के परस्पर टकराव की स्थिति में ही हो पाता है । गणित शास्त्री 'एड्रियाँ ड्राब्स' ने इनको 'न्यूट्रिनो' नाम दिया है । कुछ वैज्ञानिकों ने इसी तरह के कणों को 'साइन्नोन' नाम दिया है । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि जब मस्तिष्क के 'न्यूरोन' कण विचारों और भावनाओं के प्रवाह के रूप में इन कणों से सम्पर्क स्थापित करते हैं, तो उस क्षणिक सम्पर्क से ही पूर्वाभास जैसी घटनाओं की अनुभूति होती है । इससे दो सत्य उद्घाटित होते हैं—(१) पहला यह कि ब्रह्माण्डव्यापी घटनाओं का मूल उद्गम एक है, यह उद्गम काल, दिशा और पदार्थ से अतीत है । संसार का नियमन और नियन्त्रण इसी के अधिकार में है । (२) मानवीय चेतना का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में इस उद्गम से निश्चित है ।

न्यूट्रिनो कणों का मनुष्य की मस्तिष्कीय चेतना तथा तन्तु समूह पर क्या और किस तरह प्रभाव पड़ता है, इस पर गम्भीर शोधें चल रही हैं वैज्ञानिक "एक्सेल फरसेफि" का कथन है कि यह कण जब मानसिक चेतना पर प्रभाव डालते हैं तो नयी जाति के "माइन्जेन"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नामक ऊर्जा कणों का जन्म होता है । यह अनुमान है कि तत्व की व्यापक प्रक्रिया मस्तिष्क में चल पड़े तो मनुष्य सहज की ब्रह्माण्डव्यापी ऊर्जा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने लगेगा और अपनी ज्ञान परिधि को इतना असीम बना लेगा कि उसकी कल्पना करना भी कठिन हो । उस स्थिति में मनुष्य धरती की एक बन्द कोठरी में ही वह सारे दृश्य फिल्म की भाँति देख सकेगा, जो चन्द्रमा या मंगल पर जाकर कोई मनुष्य या उपकरण देख सकता है और उतना ही स्पष्ट भी ।

इन समस्त अलौकिक क्षमताओं के केन्द्र व्यक्ति-मस्तिष्क में विद्यमान हैं, किन्तु वे केन्द्र ही चेतना नहीं है । चेतन सत्ता उससे भिन्न और सर्वव्यापी है । व्यक्ति-मस्तिष्क उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकने में समर्थ है । कोट खूँटी पर टाँगा जा सकता है । खूँटी के गिर जाने पर उस पर टँगा कोट भी गिर जायेगा । किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि खूँटी ही कोट है या कि कोट ही खूँटी है । मानव-शरीर से निरन्तर विद्युत-चुम्बकीय, इन्फारेड, अल्ट्रावायलेट आदि विकिरण होते रहते हैं । इसी से विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र बनता है । शरीर के भीतर के कार्बन, पोटेशियम, सोडियम, रेडियम, थोरियम, स्वर्ण, सीसियम, कोबाल्ट, आयोडीन आदि तत्व विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । मनुष्य की सम्पूर्ण त्वचा से पीजोइलेक्ट्रिक इफेक्ट, पाइरोइलेक्ट्रिक इफेक्ट, विद्युत चुम्बकीय विकिरण आदि प्रसारित भी होते रहते हैं तथा बाहर के ऐसे ही विकिरणों एवं प्रभावों (इफेक्टस) को मनुष्य की त्वचा ग्रहण भी करती रहती है । इन्हीं विकिरणों तथा प्रभावों के फलस्वरूप क्वाण्टम फील्ड तैयार होती है, अर्थात् इनकी समन्वित प्रक्रिया का क्षेत्र । उस क्षेत्र की किरणों को क्वाण्टम किरणें कहते हैं । क्वाण्टम किरणें प्रकाश की गति से चलती हैं और उनका तरंगदैर्ध्य (वेवलेंथ) प्रायः १ सेन्टीमीटर होता है । उनकी फ्रीक्वेन्सी एक अरब 'इर्त्स' तक होती है । इसका अर्थ यह हुआ कि क्रमशः क्षीण होते जाने पर वे लाखों मील की दूरियाँ पार कर लेती हैं । अभी इसकी विस्तृत खोज सम्भव नहीं हो सकी है । इन क्वाण्टम किरणों द्वारा ही मनुष्य दूरस्थ नक्षत्र पिण्डों का प्रभाव ग्रहण करता है । साथ ही उसका प्रभाव दूर-दूर तक बिखरता भी रहता है ।

भौतिक विज्ञान परमाणु सत्ता की सूक्ष्म प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँच रहा है कि एक ही अणु में सक्रिय दो इलेक्ट्रॉनों को पृथक दिशा में खदेड़ दिया जाय तो भी उनके बीच पूर्व सम्बन्ध बना रहता है । वे कितनी ही दूर रहें, दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह अपनी स्थिति का परिचय एक-दूसरे को देते रहते हैं । एक इलेक्ट्रॉन जो किसी तरह प्रभावित किया जाय तो इतनी दूर चले जाने पर भी दूसरा पहले इलेक्ट्रॉन के समान ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । इस सत्य का प्रतिपादन करते हुए आइन्स्टीन रोजेन, पाटोल्स्की जैसे महान वैज्ञानिकों ने भी यह माना है कि इस छोटे से घटक की यह गति निःसन्देह एक विश्वव्यापी ड्रामे का ही छोटा रूप हो सकता है ।

डॉ. एफ केफ्रा ने तो यहाँ तक स्वीकार कर लिया कि परमाणु का प्रत्येक घटक विश्व ब्रह्माण्ड का परिपूर्ण घटक है । अर्थात् प्रत्येक अणु में ब्रह्माण्ड सत्ता ओत-प्रोत है । अणु में ही विराट् ब्रह्माण्ड के दर्शन किए जा सकते हैं । यह पारस्परिक सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ हैं, कि इन्हें कभी निरस्त नहीं किया जा सकता । जहाँ इस तरह का प्रयास होता है वहाँ भयंकर दुष्परिणाम उपस्थित हो उठते हैं ।

वैज्ञानिक गेटे ने ब्रह्माण्डीय चेतना के अस्तित्व को कटु सत्य के रूप में स्वीकार किया है । रूडोल्फ स्टीनर ने भी गेटे के तथ्यों का पूर्ण समर्थन ही नहीं किया, अपितु उसके आधार भी प्रस्तुत किए हैं । टॉमस हक्सले ने एक कदम आगे बढ़कर स्वीकार किया है कि कि ब्रह्माण्ड में एक मूलभूत चेतना काम कर रही है, जो जीवाणुओं में तथा परमाणुओं में पृथक-पृथक ढंग से काम करती है । भारतीय दर्शन में ब्रह्म की परा और अपरा दो शक्तियाँ इसी तथ्य का निरूपण करती हैं । इस की पुष्टि से उन्होंने अपनी "हेवेन एण्ड हेल" पुस्तक में विस्तार से की है ।

परमाणु की इलेक्ट्रॉन प्रक्रिया को यन्त्रों से जितना जाना जा सकता है, वह अत्यल्प है । अधिकांश की जानकारी गणितीय सिद्धान्तों पर होती है, उसी तरह जीवाणुओं की मूलभूत प्रक्रिया के लिए जो यन्त्र बनाया गया है, उसका का नाम है "मस्तिष्क" । इस यन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की योग-पद्धति से सर्वांगपूर्ण जानकारी कर लेने के कारण ही भारतीय दर्शन, वेद वेदान्त के उस अलभ्य ज्ञान तक पहुँच गया, पर विज्ञान अभी तक मस्तिष्क के बारे में बहुत सीमित जानकारी ही प्राप्त कर सका है । शेष अविज्ञात को अन्धकार क्षेत्र 'डार्क एरिया' घोषित किया हुआ है । इसी कारण ब्रह्माण्डव्यापी सूक्ष्म सत्ता से अभी तक उसका तालमेल नहीं हो पाया । परमाणुओं की इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रिया का भी अधिकांश हल गणित के रूप में यह मस्तिष्क ही करता है । अतएव ब्रह्माण्डीय चेतना का स्वरूप पहचानने से पूर्व मस्तिष्क की अथ-इति जानाकरी होनी आवश्यक है । ज्ञात रहे कि जो अतीन्द्रिय घटनाएँ प्रकाश में आती हैं, उनमें भी प्रधान माध्यम मस्तिष्कीय बोध ही होता है, चाहे वह पूर्व जन्म का ज्ञान हो, पूर्वाभास या भूत-प्रेतों के दर्शन ।

मानवीय काया में सन्निहित विलक्षण अति समर्थ अतीन्द्रिय क्षमताओं की उपलब्धि यद्यपि, कठिन योगाभ्यास से ही सम्भव है, तथापि रेडियो की सुई घुमाते-घुमाते कई बार अनायास ही किसी प्रिय स्टेशन में लग जाती है, जब कि उसका साइकिल नम्बर अथवा 'फ्रिक्वेन्सी' का पता नहीं होता । उसी प्रकार दुनिया भर में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जिनमें ऐसी क्षमताओं के अयाचित उपलब्ध हो जाने के विवरण मिलते रहते हैं । यह घटनाएँ इस बात की प्रमाण हैं कि मनुष्य उतना ही नहीं जितना वह स्थूल आँखों से हाड़-माँस के पिण्ड रूप में दिखाई देता है, अपितु उसकी सूक्ष्म और सनातन सत्ता तो अपने परमपिता की सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्वसमर्थ सत्ता से ओत-प्रोत है ।

जो रहस्य है वह इन्द्रिय चेतना से परे

मनुष्यों में तथा मनुष्येत्तर प्राणियों में दिखायी देने वाली अद्भुत और विलक्षण क्षमताओं का कारण व केन्द्र जानने के लिए कई स्तर पर प्रयास हुए हैं । वैज्ञानिक अपने ढंग से इनका कारण जानने के लिए प्रयत्नशील हैं । निरीक्षण, परीक्षण प्रयोग और विश्लेषण ही वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धति है, पर अभी तक इन अन्वेषणों से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सकता है । आज एक मान्यता बनती सिद्ध होती है, तो कल उसका खण्डन हो जाता है, दूसरी मान्यताओं की पृष्ठभूमि बन जाती है । वैज्ञानिक अन्वेषणों के अतिरिक्त इन क्षमताओं का कारण व सिद्धि जानने के प्रयास योग विद्या द्वारा भी किए जाते रहे हैं । योग विद्या के प्रयास आचार्यों, योगियों द्वारा भी किए गए हैं और उन्होंने इस क्षेत्र में न केवल सफलता प्राप्त की है । बल्कि अपने प्रयोग और अन्वेषण द्वारा वे विलक्षण सिद्धियाँ भी प्राप्त कर सके ।

इसका कारण है सत्य तक पहुँचने की दृष्टि से विज्ञान सिद्धियों और अद्भुत विशेषताओं का कारण स्थूल शरीर में खोज रहा है । जबकि योग ने इसके लिए चेतना का क्षेत्र पहचाना और चुना है । प्राणियों में पायी जाने वाली चेतना का अपना निजी अस्तित्व है । वह रासायनिक तत्वों के मिलन से जन्मती और बीछुड़न से मर जाती हो, ऐसी बात नहीं है । उसका स्वतन्त्र अस्तित्व है । वह शरीर पर निर्भर नहीं है । वह रासायनिक पदार्थों और परमाणुओं को अपनी इच्छानुसार खींचती, बदलती एवं प्रयुक्त करती है । इस प्राणि चेतना का अपना आकर्षण और प्रभाव है । अपनी आकांक्षा, अभ्यास, प्रकृति एवम् आवश्यकतानुसार वह शरीर धारण करती है । शरीर को ही नहीं वातावरण को भी वह प्रभावित करती है ।

वृक्षों की सघनता वर्षा के बादलों को आकर्षित करती है, यह सर्वविदित है । पेड़ कट जाने पर वर्षा घट जाती है । उद्यानों में अभिवृद्धि से मौसम बदलता और बादल खिंचते चले आते हैं । यह वृक्षों में रहने वाली चेतना का आकर्षण एवम् प्रभाव है । सृष्टि के इतिहास से अनेकानेक परिवर्तनों की लम्बी शृंखला और उनके पीछे तत्कालीन प्राणियों की आकांक्षाओं का दबाव भारी काम करता रहा है । अपने-अपने शरीरों की स्थिति में तथा अपनी इन्द्रिय चेतना में भी उन्होंने भारी परिवर्तन कर लिए हैं ।

प्राणि जगत की चेतना अनुभवों का लाभ उठाते हुए, ठोकरों से शिक्षा लेते हुए, भूलों को सुधारते हुए प्रगति के प्रस्तुत स्तर तक पहुँच पायी है । आदिमकाल के डायनासोरों जैसे विशालकाय प्राणी पूँछ, दाँत और पीठ पर आक्रमणकारी शस्त्र साधनों में सुसज्जित थे । तब शायद संघर्ष और विजय का मत्स्य न्याय ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयुक्त समझा गया होगा, पर वह प्रयोग सफल न रहा । एक दूसरे की चमड़ी उधेड़ने और अण्डे निगलने की नीति, सार्थक सिद्ध नहीं हुई । कायिक दृष्टि से विशाल और सामर्थ्य की दृष्टि से सबल होते हुए भी आदिमकाल के पशु-पक्षी अपनी हिंस्र आदतों के दुष्परिणाम भुगतते हुए अपना अस्तित्व ही गँवा बैठे ।

आगे नया अध्याय प्रारम्भ हुआ और नीति बदली प्राणियों की ममता बच्चों के प्रति बढ़ी और उन्होंने अण्डों को घोंसलो में सेने की अपेक्षा पेट में ही पकाने का निश्चय किया इतना ही नहीं, उन्हें शरीर रस निचोड़ कर दूध भी पिलाया । यह प्रकृति परिवर्तन की एक महाक्रान्ति थी । हिंसा की निरर्थकता समझी गई और स्नेह, सहयोग भरे अनुदान का आदान-प्रदान क्रम चल पड़ा ।

माँसाहारी प्राणियों की मूल चेतना ने अपने शारीरिक अवयव अपनी आवश्यकतानुसार उपलब्ध एवं विकसित किए हैं । पेड़ों, की छाया में तथा घास की झाड़ियों में अपने को छिपाये रहने की जिन्होंने आवश्यकता समझी, उनकी चमड़ी का रंग तथा दागा-धब्बे उसी प्रकार के उत्पन्न हो गये । शाकाहारियों को दाँत, आँत की जैसी स्थिति आवश्यक थी, उसी के अनुरूप उन्होंने अपने-अपने कलेवरों को प्राप्त कर लिया । घोर शीत में आहार प्राप्त कर सकने की कठिनाई देख कर हिम प्रदेश के रीछों ने उन दिनों गहरी निद्रा में पड़े रहने की आदत बना ली । देश काल के अनुरूप विभिन्न प्राणियों ने जहाँ अपने को बदला है, वहाँ ऐसे प्रमाण भी उपलब्ध हुए हैं कि अमुक क्षेत्र में बहुसंख्यक प्रबल चेतना सम्पन्न प्राणियों ने अपनी आवश्यकता के अनुरूप व्यवस्था बदलवा लेने के लिए प्रकृति को सहमत कर लिया ।

यह बहुत पुराने जमाने की गई-गुजरी बात हो गई, जब प्राणी को रासायनिक पदार्थों का समूह और उसकी चेतना को जीवाणुओं की सम्मिलित स्फुरणा मात्र कहा गया था और उसे चलता-फिरता पौधा घोषित किया गया था । शरीर के साथ ही जीवन का आदि और मरण के साथ अन्त होने की बात भी कभी-कभी विज्ञान क्षेत्र से उठी थी पर अब उस मान्यता में लगभग आमूल चूल परिवर्तन कर लिया गया। मरणोत्तर जीवन के प्रमाण इतने अधिक मिले हैं, कि उन्हें झुठलाया जा सकना सम्भव नहीं रहा । पुनर्जन्म की घटनाएँ आये दिन सामने आती हैं । ऐसे बालक जन्मते रहते हैं । जो पूर्व जन्म की अपनी स्थिति को स्मृति के आधार पर प्रामाणिक सिद्ध कर सके । प्रेतात्माएँ कैसी होती हैं ? कहाँ रहतीं और क्या करती हैं ? इस सम्बन्ध में अभी बहुत जानना शेष है, पर उनके अस्तित्व को अब अप्रामाणिक ठहरा देना सम्भव नहीं । इस सन्दर्भ में भी इतने अधिक प्रमाण मिलते रहते हैं, कि इन्हें अन्धविश्वास या भ्रान्ति समुच्चय कह देने से काम नहीं चल सकता ।

परमाणुवादी पदार्थ विज्ञान ने आत्मा के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार किया है और यह प्रयत्न किया है कि उस अस्तित्व की संगति किसी प्रकार प्रकृति की विज्ञान सम्मत व्याख्या के साथ ही बैठ जाय ।

आत्म-सत्ता के अस्तित्व सन्दर्भ में अधिक सुबोध प्रकाश टामस ऐडिसन ने डाला है । फोनोग्राफ रोशनी के बल्ब आदि के आविष्कर्त्ता इस प्रख्यात विज्ञानी का कथन है कि "प्राणी की सत्ता उच्चस्तरीय विद्युत कण गुच्छकों के रूप में रहती है । मरने के बाद भी यह गुच्छक विघिवत् नहीं होते और परस्पर सघन सम्बद्ध बने रहते हैं । यह गुच्छक बिखरते नहीं, वरन् मरने के उपरान्त अनन्त आकाश में भ्रमण करने के उपरान्त पुनः जीवन-चक्र में प्रवेश करते और नया जन्म धारण करते हैं । यह गुच्छक मधुमक्खियों के झुण्ड की तरह हैं । पुराना छत्ता वे एक साथ छोड़ती और नया छत्ता एकसाथ बनाती हैं । इसी प्रकार उच्चस्तरीय विद्युत कणों के गुच्छक अपने साथ स्थूल शरीर की साधन सामग्री और अपनी आस्थाओं और सम्वेदनाओं को साथ लेकर जन्मते-मरते रहने पर भी अमर बने रहते हैं ।"

क्वाण्टम के थ्योरी के परिपूरक सिद्धान्त ने यह सिद्ध किया है कि जड़ और चेतना की सत्ता एक-दूसरे से भिन्न स्तर की देखते हुए भी वस्तुतः उनके बीच सघन तादात्म्य मौजूद है । 'पदार्थ' एक स्थिति में ठोस रहता है, पर दूसरी स्थिति में वह अपदार्थ बन जाता है । इस प्रकार जड़ चेतन में और चेतन जड़ में परिणत हो सकता है । मन की सत्ता शरीर रूप में, पदार्थ रूप में प्रकट हो सकती है और अमुक स्थिति में पहुँच कर पदार्थ भी बन सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञानी हाइसन वर्ग का प्रतिपादन है कि अन्तरिक्ष में अमुक स्थिति पर पहुँचने पर परमाणु पदार्थ न रहकर अपदार्थ में—ऊर्जा में परिणत हो जाते हैं । पदार्थ, सत्ता, परिधि, काल और रूप में ढाँचे में बँधी है । मनःसत्ता में अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ, विचार और बिम्ब के रूप में व्याख्या होती है । इतना अन्तर रहते हुए भी उन दोनों के बीच अत्यधिक घनिष्ठता है, यहाँ तक कि वे दोनों एक-दूसरे को प्रभावित ही नहीं, वरन् परस्पर रूपान्तरित भी होते रहते हैं ।

इस तथ्य को नोबेल पुरस्कार विजेता यूजोन विगनर ने और भी अधिक स्पष्ट किया है । वे कहते हैं कि यह जान लेना ही पर्याप्त नहीं कि वस्तुओं की हलचलों से चेतना ही प्रभावित होती है । वस्तु स्थिति यह है कि चेतना से पदार्थ भी प्रभावित होता है ।

रूस के इलेक्ट्रॉनिक विज्ञानी सेमयोन किर्लियान ने एक ऐसी फोटोग्राफी का आविष्कार किया है, जो मनुष्य के इर्द-गिर्द होने वाली उसकी विद्युतीय हलचलों का छायांकन करती है । इससे प्रतीत होता है कि स्थूल शरीर के साथ-साथ किसी सूक्ष्म शरीर की भी सत्ता विद्यमान है और वह ऐसे अविज्ञात पदार्थों से बनी है जो इलक्ट्रॉनों से बने ठोस पदार्थ की अपेक्षा भिन्न भी है और अधिक गतिशील भी ।

विज्ञान-विश्लेषण के अनुसार मनुष्य विद्युत आवेगों से सम्पन्न एक विशेष प्राणी है । वह अदृश्य ऊर्जाओं के समुद्र में तैरता है । हर मनुष्य में अपने स्तर के कुछ विशेष प्रवाह उठते रहते हैं और वे अपने सजातीय ऊर्जा तत्वों को इस निखिल आकाश में से खींचकर अपने में धारण करते रहते हैं । साथ ही मनुष्य अपनी इन चुम्बकीय विशेषताओं को अन्तरिक्ष में बिखेरता भी रहता है । उसका यह ग्रहण और प्रक्षेपण क्रिया-कलाप निरन्तर चलता रहता है । अदृश्य ऊर्जाओं से वह प्रभावित होता है और उनमें अपना योगदान सम्मिलित करता है । इसी आकर्षण-विकर्षण में मृत-आत्माओं के साथ सम्पर्क स्थापित करना और आदान-प्रदान का क्रम चल पड़ना भी सम्भव हो सकता है ।

ख्यातिनामा वैज्ञानिक यू. ई. बर्नार्ड का कथन है कि अभी मनः तत्व के बारे में हमारी जानकारी बहुत स्वल्प है, पर वह दिन दूर नहीं जब चेतना के उन रहस्यों का उद्घाटन होगा जो उपलब्ध भौतिक शक्तियों की तुलना में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । निकट भविष्य में यह सम्भव हो सकेगा कि मनःतत्व की शक्ति से पदार्थों का गठन, विघटन एवं रूपान्तरण हो सके । इसी प्रकार यह भी सम्भावना है कि संकल्प शक्ति के सहारे मनुष्य अपने शरीर में अभीष्ट परिवर्तन प्रस्तुत कर सके ।

मनुष्य शरीर के सम्बन्ध में आध्यात्म की वैज्ञानिक व्याख्या यह है कि 'थ्री डाइमेन्शस ऑव स्पेस' और वन डाइमेन्शन आव ट्यून' के समन्वय से यह अद्भुत निर्माण सम्भव हुआ है । इनमें जो अनुपात है वही मनुष्य की वर्तमान स्थिति का आधार है । यदि इस अनुपात में थोड़ा-सा हेर-फेर सम्भव हो सके, तो स्थिति में इतना अन्तर हो सकता है कि आज का सामान्य मनुष्य कल अनेक कसौटियों पर असामान्य सिद्ध हो सके ।

प्राणियों को चेतन का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार कर लेने और उसका प्रभाव पदार्थों पर पड़ने के वैज्ञानिक निष्कर्ष ने उस बचपन से छुटकारा पा लिया, जिसमें आत्मा का अस्तित्व ही अस्वीकार कर दिया गया था और प्राणियों के जन्म-मरण को रासायनिक पदार्थों की एक विशेष हलचल ठहराया गया था । अब प्राणि सत्ता को चेतना घटक के रूप में जाना-माना जा रहा है । आत्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार करने में अब वैज्ञानिक आना-कानी, बहाने-बाजी मात्र कहीं जा सकती है । वह दिन दूर नहीं जब इस सन्दर्भ में आड़े आ रहा असमंजस भी समाप्त होकर रहेगा ।

अब दूसरा प्रश्न है परमात्म सत्ता का—उसे विज्ञान ने ब्रह्माण्डीय चेतना के रूप में स्वीकार किया है । आत्मा को अर्द्ध चेतन और अर्द्ध-जड़ के रूप में ही अभी विज्ञान ने मान्यता दी है । इसी अनुपात से परमात्मा को भी अर्ध ब्रह्म और अर्द्ध प्रकृति के रूप में स्वीकारा है । काम इतने से भी चल सकता है । आध्यात्मवाद को यह स्थिति भी स्वीकार है । अर्द्धनारी नटेश्वर की प्रतिमाओं में इस मान्यता की स्वीकृति है । ब्रह्म और प्रकृति का युग्म ब्रह्म विद्या के तत्व दर्शन ने स्वीकार किया है । ब्रह्मा, विष्णु, महेश अपनी-अपनी पत्नियों को साथ लेकर ही चलते हैं । अन्य देवताओं में से भी कदाचित ही कोई कुमार या विधुर हो । प्रकृति और परमात्मा के समन्वय से जीवात्मा की उत्पत्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई है । ऐसे प्रतिपादन ब्रह्म विद्या की अनेक व्याख्याओं में उपलब्ध हैं ।

विज्ञान अपनी भाषा में परब्रह्म को, परमात्मा को 'ब्रह्माण्डीय चेतना' के रूप में स्वीकार करने लगता है और उसका घनिष्ठ सम्बन्ध जीव-चेतना के साथ जोड़ने में उसे अब विशेष संकोच नहीं रह गया है । यह मान्यता जीव और ब्रह्म को अंश के रूप में मानने की वेदान्त व्याख्या से बहुत भिन्न नहीं है ।

अब विज्ञान वेत्ताओं ने एक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का अस्तित्व स्वीकार किया है । इससे पूर्व पृथ्वी पर चल रही भौतिकी को ही पदार्थ विज्ञान की सीमा माना जाता था, पर अब एक ऐसी व्यापक सूक्ष्म सत्ता का अनुभव किया गया है जो अनेक ग्रह-नक्षत्रों के बीच ताल-मेल बिठाती है । पृथ्वी पर 'इकालॉजी का सिद्धान्त प्रकृति की एक विशेष व्यवस्था के रूप में अनुभव कर लिया गया है । वनस्पति प्राणी, भूमि, वर्षा, रासायनिक पदार्थ आदि के बीच एक सन्तुलन काम कर रहा है और वे सब एक-दूसरे के पूरक बनकर रह रहे हैं । जड़ समझी जाने वाली प्रकृति की वह अति दूरदर्शितापूर्ण, चेतन-व्यवस्था उन भौतिक विज्ञानियों के लिए सिर-दर्द थी, जो पदार्थ के ऊपर किसी ईश्वर जैसी चेतना का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते । अब ब्रह्माण्डीय ऊर्जा उससे भी बड़ी बात है । ग्रह पिण्डों के बीच एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान की, सहयोग-सन्तुलन की जो 'इकालॉजी' से भी अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर हो रही है, उसे क्या कहा जाय ?

परामनोविज्ञान की नवीनतम शोधें भी इसी निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि मनुष्य चेतना ब्रह्माण्ड चेतना की अविच्छिन्न इकाई है । अस्तु प्राण सत्ता शरीर में सीमित रहते हुए भी असीम के साथ अपना सम्बन्ध बनाये हुए हैं । व्यष्टि और समष्टि की मूल सत्ता में इतनी सघन एकता है कि एक व्यक्ति समूची ब्रह्म चेतना का प्रतिनिधित्व कर सकता है ।

परमाणु सत्ता की सूक्ष्म प्रकृति का विश्लेषण करते हुए विज्ञान इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि दो इलेक्ट्रॉनों को पृथक दिशा में खदेड़ दिया जाय, तो भी उनके बीच पूर्ण सम्बन्ध बना रहता है । वे कितनी ही दूर रहें एक-दूसरे की स्थिति का परिचय अपने में दर्पण की तरह प्रतिविम्बित करते-रहते हैं । एक की स्थिति को देखकर दूसरे के बारे में बहुत कुछ पता मिल सकता है । एक को किसी प्रकार से प्रभावित किया जाय, तो उसका दूसरा साथी भी अनायास ही प्रभावित हो जाता है । इस प्रतिपादन पर आइन्स्टाइन, रोजेन पोटेल्स्की जैसे विश्व-विख्यात विज्ञान वेत्ताओं की मुहर है । इस सिद्धान्त से एक व्यापक सत्ता और उसके सदस्य रूप में छोटे घटकों की सिद्धि तथा पृथक रहते हुए भी एकता का तारतम्य बने होने की पुष्टि होती है ।

विज्ञान की मान्यता के अनुसार पूर्ण को जानने के लिए उसका अंश जानने का और अंश के अस्तित्व को समझने के लिए उसके पूर्णरूप को समझने की आवश्यकता पड़ती है । इसके बिना यथार्थता को पूरी तरह समझा नहीं जा सकता । मूर्धन्य विज्ञान वेत्ता डॉ. एफ. केफ्रा ने अंश या अंशों के बीच अविच्छिन्न सम्बन्ध होने की बात का विस्तार पूर्वक प्रतिपादन किया है और कहा है कि परमाणु का प्रत्येक घटक विश्व ब्रह्माण्ड का परिपूर्ण सदस्य है इस सदस्यता को किसी भी प्रकार निरस्त नहीं किया जा सकता । दोनों एक-दूसरे के पूरक होकर ही आदि काल से रह हैं और अनन्त काल तक अपना सघन सम्बन्ध यथावत बनाये रहेंगे ।

गेटे ने कहा था, ब्रह्माण्डीय चेतना का अस्तित्व सिद्ध कर सकने योग्य ठोस आधार मौजूद है । रुडोल्फ स्टीनर ने अपने ग्रन्थ में गेटे के प्रतिपादन को और भी अच्छी तरह सिद्ध करने के लिए आधार प्रस्तुत किये हैं ।

जीव-विज्ञानी टामस हक्सले ने ब्रह्माण्डीय चेतना के अस्तित्व और उसके कार्य क्षेत्र पर और भी अधिक प्रकाश डाला है । वे उसे जीवाणुओं में अपने ढंग से और परमाणुओं में अपने ढंग से काम करती हुई बताते हैं और भारतीय दर्शन की परा और अपरा प्रकृति को ब्रह्मपत्नी के रूप में प्रस्तुत करने वाली मान्यता के समीप ही जा पहुँचते हैं । इस सन्दर्भ में उन्होंने विस्तृत प्रकाश अपनी 'हेवेन एण्ड हेल' पुस्तक में डाला है ।

परमाणु की इलेक्ट्रॉन प्रक्रिया को मात्र मन्त्रों से नहीं जाना जा सकता है । उसके अस्तित्व का दर्शन और निरूपण करने वाला एक ही यन्त्र है, मानवी मस्तिष्क अन्य उपकरण तो इस सन्दर्भ में थोड़ी-सी सहायता मात्र करके रह जाते हैं । परमाणु की विवेचना नेत्र का नहीं गणित का विषय है । उसकी हलचलों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से उत्पन्न प्रतिक्रिया के आधार पर गणना करके यह पता लगाया जाता है कि परमाणु और उसके उदर में हलचल कर रहे घटकों का स्वरूप, स्तर एवं क्रिया-कलाप क्या होना चाहिए ? विज्ञानी लुडबिग ने इसे और भी अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है कि क्वाण्टम शास्त्र यन्त्रों पर नहीं वैज्ञानिकों की मानसिक चेतना पर अवलम्बित है ।

कुल मिलाकर यह कि इस संसार की समस्त गतिविधियाँ सुव्यवस्थित रीति से चल रही हैं । प्रकृति के नियम ऐसे हैं, जिनमें व्यतिरेक की तनिक भी गुंजाइश नहीं है । जिन नियमों को हम जानते हैं, जिनका पता अभी तक चल नहीं पाया है, उन्हें रहस्य कहते हैं । रहस्य का तात्पर्य उन घटनाक्रमों से है जो असामान्य होते हैं और जिनके घटित होने के कारणों का पता नहीं है ।

इस संसार में रहस्य कुछ नहीं

ऐसे घटनाक्रमों को दैवी कहकर सन्तोष कर लिया जाता है । अभी भी सूर्य और चन्द्र ग्रहण को असाधारणतः कोई दैवी प्रकोप समझा जाता है । बिजली का कड़कना पिछड़े इलाकों में देवता दैत्यों के विग्रह का प्रतीक है । विज्ञान के विद्यार्थी इन्हें प्रकृति क्रम की एक नियत विधि व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकट होने वाले सामयिक घटना-क्रम मात्र मानते हैं । उन्हें ऐसे कारणों में आश्चर्य जैसी कोई बात प्रतीत नहीं होती ।

मिस्र के पिरामिडों को 'जादुई' माना जाता है और उनके निर्माण की अलौकिकताओं का सम्बन्ध किन्हीं देवी-देवताओं के साथ जोड़ा जाता है । अब उन आधारों का पता लगाया जा रहा है, जिनके सहारे इन निर्माणों में कई प्रकार के 'अद्‌भुत' दृष्टिगोचर होते हैं ।

इलेक्ट्रॉनिक विज्ञानी ऐरिक मेहलोइन ने यह सिद्ध किया है कि पिरामिडों में पायी जाने वाली सभी अलौकिकताएँ आज भी उन्हीं वैज्ञानिक नियमों के आधार पर खड़ी की जा सकती हैं, जिनके सहारे वे प्राचीन काल में की गई थीं । उन्होंने अठारह इंच ऊँचा एक पिरामिड मॉडल प्लेक्सीग्लास का बनाया है, उसके भीतर माँस के टुकड़े तथा अन्य पदार्थ उसी स्थिति में रखे गए जैसे कि पिरामिडों में रखे हुए हैं । प्रायः सभी पदार्थ वही प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगे जो उन प्राचीन निर्माणों में पायी जाती और जादुई कही जाती है ।

ताबूतों में बन्द 'सभी' हजारों वर्ष बाद भी क्यों सुरक्षित है ? पिछले लोग भूत-प्रेतों की चौकीदारी मानते थे, पर अब प्रतीत हुआ है कि जैसा वातावरण पिरामिडों के बाहर और भीतर है वैसा ही बना लेने पर माँस की सड़न रुक सकती है और वैसे ही रहस्य दृष्टिगोचर हो सकते हैं । जैसे कि पिरामिडों की कथा-गाथाओं के साथ जुड़े हुए हैं ।

आग के बारे में यह मान्यता सर्वविदित है कि उनके जलने के लिए ईंधन और ऑक्सीजन दोनों की आवश्यकता है । वे दोनों जब तक उपलब्ध रहेंगे तब तक आग जलेगी । एक भी समाप्त हो जाने पर वह बुझ जायेगी, किन्तु ऐसे प्रमाण भी मिले हैं, जिनमें इस सर्वविदित मान्यता का कुछ खण्डन होता है । मामूली आकार के दीपकों में भरी हुई चिकनाई कुछ घण्टों ही जल सकती है, पर यदि कोई छोटा दीपक सैकड़ों वर्षों तक जलता रहे तो ईंधन के आधार पर अग्नि प्रज्वलन का सिद्धान्त कट जाता है । यही बात ऑक्सीजन के सम्बन्ध में भी है एक बन्द सन्दूक के भीतर की हवा दो चार दिन ही काम दे सकती है । उतने से घेरे की हवा सैकड़ों वर्षों तक किसी दीपक का काम दे सकती है, इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता, तो भी ऐसे प्रमाण पाये गए हैं जो अग्नि विज्ञान को प्रचलित मान्यताओं के सही गलत होने के सम्बन्ध में प्रश्न चिन्ह लगाते हैं ।

इतिहासकार विलियम कैमडन ने अपनी पुस्तक 'ब्रिटेन' में पुराने खण्डहरों में खुदाई में मिले ऐसे जलते दीपकों का वर्णन किया है, जो सैकड़ों वर्षों से बन्द खिड़की के भीतर जलते चले आ रहे थे । कैमडन ने इस आश्चर्य का समाधान यह लिखकर किया है कि प्राचीन काल के रसायन वेत्ता सोने को पिघलाकर तेल जैसा बना देते थे, उसी से यह दीपक सैकड़ों वर्षों तक जलते थे । सेण्ट अमास्टाइन ने अपनी संस्मरण पुस्तक में लिखा है कि देवी वीनस के मन्दिर में एक ऐसा अखण्ड दीपक खुली जगह में जलता था, जिस पर वर्षा और तेज हवा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था । पुरातत्व विभाग ने सन् १८४० में स्पेन के कुर्तण क्षेत्र की एक कब्र को खोदकर जलता दीपक उपलब्ध किया था । उस ज्योति को कई सौ वर्षों से जलती आ रही माना गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इटली के नसीदा द्वीप में एक किसान के अपने खेत में एक कब्र पायी थी । उसे खोदकर देखा गया तो काँच के बरतन में बन्द एक ऐसा दीपक पाया जो मुद्दतों से उसी में बन्द जल रहा था । इतिहासकार ऐसेलाईस ने ऐस्टेनाग की खुदाई में निकली एक कब्र का वर्णन किया है, जिसमें जलता हुआ दीपक पाया गया । उसके पास ही अभिलेख पाया गया जिसमें लिखा था—खबरदार ! कोई दीपक को छुए नहीं । यह देवता पलोटी का उपहार है । ऐसेलाईस ने इस दीपक को चौथी शताब्दी में जलाया गया माना है ।

अनुसन्धानकर्त्ता ओडोपेन्सी रोलेस ने सम्राट् कान्स्टेट क्लोर्स के राज्य महल का वर्णन किया है और लिखा है, उसमें कभी न बुझने वाले दीपक जला करते थे उनमें मामूली तेल नहीं वरन् कोई विशेष रासायनिक पदार्थ जलता था । सिसरो की बेटी टोल्या की कब्र में भी एक ऐसा ही दीपक पाया गया था जो बिना तेल और हवा के जल रहा था । उसे हवा में निकाला गया तो तुरन्त ही बुझ गया ।

उड़न तश्तरियों के सम्बन्ध में पिछले ३० वर्षों से बहुत चर्चा चली है । उनेके आँखों देखे विवरण इतने अधिक छपे और रिकार्ड किए गए हैं कि उन्हें कपोल कल्पनाएँ, मनगढ़न्त कहकर झुठलाया नहीं जा सकता । आँखों न देखा गया जो काण्डरों और कमराओं ने उन्होंने क्यों अंकित किया ? अप्रैल ७७ में उड़न तश्तरियों के सन्दर्भ में विचार करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेन्स अमेरिका में सम्पन्न हुई । उनमें अनुसन्धानकर्त्ताओं ने अपने विभिन्न निष्कर्ष बताये । उनमें से एक शोधकर्त्ता सालवाडोर फ्रीक्सेडो ने कहा—अच्छा हो यह शोध भौतिक विज्ञान तक सीमित न रहे, इसमें आत्म-विद्या विशारद भी भाग ले और तलाश करे कि क्या इसमें किन्हीं प्रत्यक्ष या अदृश्य प्राणियों की हलचलें तो जुड़ी हुई नहीं हैं ?

अन्तरिक्ष विज्ञानी एलन हाईनेक का कथन है—वे भौतिक क्षेत्र की ही इकाइयाँ हैं । अभी बहुत से प्रकृति रहस्य जानने के लिए शेष हैं । उन्हीं में से एक उड़न तश्तरियों का प्रसंग भी सम्मिलित रखा जाना चाहिए और उस सन्दर्भ में धैर्य और प्रयत्नपूर्वक प्रयास किया जाना चाहिए ।

अमेरिका वायु सेना के एक जाँच कमीशन ने अपने देशवासियों को आश्वस्त किया था कि वे जो भी हों सार्वजनिक सुरक्षा के लिए उनसे कोई खतरा नहीं है । इतने पर भी जनता को कोई समाधान न हो सका और यह भय बना ही रहा, कि यदि वे कभी नीचे उतर आईं तो न जाने क्या कहर बरसाने लगेंगी ।

मानसिक रोग और स्नायविक दुर्बलता से उत्पन्न ज्ञान-तन्तुओं की विकृतियाँ भूत-पलीतों का सृजन करती हैं । किम्बदन्तियों और अन्धविश्वासों का जाल-जंजाल उन्हें इस प्रकार धुएँ से बादल गठ देता है, मानो वे सचमुच ही चोर उचक्कों की तरह हर किसी को परेशान करने पर उतारू हो रहे हों ।

जादूगरी, बाजीगरी के अनेकों खेल लोगों को अचम्भे में डाल देते हैं और लगता है, वह किसी जिन्न दैत्य की करामात है । इसका खण्डन प्रायः भले बाजीगर करते भी रहते हैं और यही बताते हैं कि यह केवल हाथ की सफाई है, फिर भी कितने ही अन्धविश्वासी उन्हें चमत्कार ही कहते रहते हैं ।

स्मरण रखने योग्य यही है कि विश्व ब्रह्माण्ड अपने आप में रहस्य है उसके नियम विधान भी रहस्य जैसे हैं, उसके अतिरिक्त वैसा कोई रहस्य नहीं है, जैसा कि अन्ध-विश्वासी क्षेत्र में फैला हुआ है ।

इन रहस्यों को इन्द्रिय चेतना से परे कहा जाता है । शरीर और मस्तिष्क की शक्तियाँ प्रत्यक्ष और सर्वविदित हैं । शरीर में श्रम और मस्तिष्क में सोचने समझने की, विचार करने की शक्तियों को भी सभी कोई जानते, मानते और विश्वास करते हैं । विज्ञान ने इन शक्तियों को अपनी भाषा में अद्भुत और विलक्षण कहा है तथा इन प्रत्यक्ष शक्तियों को ही देखकर प्रकृति के कौशल को अद्वितीय बताया है । भौतिक विज्ञान इतना ही जानता है, परन्तु वह इस बात को नहीं जान पाया है कि मनुष्य और अन्य प्राणियों में अतीन्द्रिय चेतना भी विद्यमान है । भौतिक शक्तियाँ तो स्थूल नियमों से परिचालित होती हैं । विज्ञान उन नियमों की परिभाषा करने में भी सफल हुआ है पर अतीन्द्रिय शक्तियाँ जिन सूक्ष्म नियमों के अनुसार काम करती हैं, उनकी व्याख्या कर पाना अभी सम्भव नहीं हो सका है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाड़-माँस की बनी काया उन्हीं नियमों का पालन करेगी जो उस के लिए निर्धारित हैं । इसी प्रकार मस्तिष्क भी उतना ही सोचेगा जो उसने सीखा है । परन्तु सामान्य लौकिक ज्ञान की सीमा से परे कई बार ऐसा कुछ भी देखने को मिलता है, जिससे विदित होता है कि स्थूल शरीर और ज्ञात मस्तिष्क से अलग भी शरीर के भीतर अन्तरंग चेतना में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो शारीरिक मर्यादाओं से प्राप्त न हो सकने वाली जानकारी प्राप्त कर लेती हैं । इस जानकारी का आधार मनुष्य और जीवधारियों में विद्यमान उस चेतना को बताया जाता है, जिसे अतीन्द्रिय चेतना कहते हैं । उसे झुठलाया नहीं जा सकता ।

यदि भौतिक विज्ञान के अनुसार जीवधारी को जड़ प्रकृति का ही एक स्थूल उत्पादन कहा जाय तो अतीन्द्रिय चेतना का कोई आधार नहीं मिल सकेगा । क्योंकि तब तो प्राणी एक 'चलता-फिरता वृक्ष' ही ठहरा और उसकी शारीरिक मानसिक हलचलें शरीर के नियमों से बाहर कैसे जा सकती हैं, लेकिन विज्ञान की यह मान्यता भी ध्वस्त होने लगी है । जार्जिया विज्ञान एकेडमी के शरीर शास्त्री डॉ. आई. एस. बेकेताश्विली ने एक काकेशियायी कुत्ते 'त्स्वाला' की गतिविधियों और क्रिया-कलापों का अध्ययन करने के बाद कहा कि प्राणधारियों में एक ऐसी चेतन सत्ता भी है, जो शरीर के नियमों से बँधी हुई नहीं है और वह इन्द्रियों का प्रत्यक्ष सहारा लिए बिना भी काम कर सकती है । ऐसे काम, जो आँख-कान के बिना सम्भव नहीं होते, वे भी उस चेतन सत्ता के द्वारा सम्पन्न हो जाते हैं ।

'त्स्वाला' की कथा जार्जिया (रूस) निवासियों के घर-घर में प्रचलित है । वह इतना स्वामिभक्त और कर्त्तव्यपरायण था कि लोग उसकी तुलना वफादार घरेलू नौकरों से किया करते थे । त्स्वाला कुत्ता अपने मालिक के जानवरों को चराने प्रायः जंगल में अकेला ही जाया करता था । जानवरों को कहाँ चरना है, कहाँ बैठना है, कहाँ पानी पीना है, कोई जानवर झुण्ड से बाहर निकलकर इधर-उधर बिछुड़ न जाय, इस बात का वह पूरा ध्यान रखता । जिस क्षेत्र में वह अपने मालिक के साथ रहता था । उसमें भेड़िए और तेंदुएँ भेड़-बकरियों की घात लगाए रहते थे । त्स्वाला उनसे जूझने के लिए सदैव मुस्तैद रहता था और जब भी ऐसा अवसर आता तो वह आक्रमणकारी हिंस्र पशु का डटकर मुकाबला करके या तो उसे भगा देता अथवा मार गिराता ।

एकबार किसी दूर के पशु फार्म पर 'त्स्वाला' की जरूरत पड़ी । मालिक ने उसे वहाँ भेज दिया । त्स्वाला वहाँ जाने में अड़ियलपने से काम ले रहा था इसलिए उसे एक ट्रंक में बन्द कर सैकड़ों मील दूर स्थित उस नए फार्म में ले जाया गया । वहाँ उसे बाँधकर रखा गया, लेकिन त्स्वाला का बुरा हाल था । न उसने खाना खाया न कुछ पिया केवल रोता रहा और एक दिन मौका देखकर रस्सी तोड़कर भाग निकला यद्यपि उसे आँखें बाँधकर एक ट्रक में डालकर लाया गया था फिर भी उसने अन्तःप्रेरणा के आधार पर दौड़ लगाई और सैकड़ों मील दूर अपने मालिक के पास तिब्लिसी क्षेत्र में आ गया ।

कुत्ते ने न रास्ता देखा था न वह मार्ग के चिन्हों को ही पहचानता था, फिर किस प्रकार वह इतनी दूर आ गया । डॉ. बेकेताश्विली को किसी प्रकार इस घटना का पता चला तो उन्हें लगा कि प्राणधारियों में कोई ऐसी अतीन्द्रिय चेतना भी होती है, जिसके सहारे वे प्रधान ज्ञानेन्द्रिय आँख का काम बिना आँख के भी कर लेते हैं । इस घटना से तो स्पष्ट ही यह निष्कर्ष निकलता है, फिर भी इसकी पुष्टि के लिए डॉ. बेकेताश्विली ने एक बिल्ली पाली और उसका नाम रखा 'त्योबा' ।

त्योबा को नियत समय पर खाना दिया जाता । उसके खाने की तश्तरी कमरे के एक कोने पर दूर रख दी जाती । आँख बाँधकर त्योबा उस कमरे में छोड़ दी जाती । शुरू में तो उसे गन्ध के आधार पर भोजन तक पहुँचने में कुछ कठिनाई होती । पीछे वह बिना किसी कठिनाई के अपने भोजन तक पहुँच जाती थी ।

गन्ध के आधार पर ही वह ऐसा कर रही है । यह बात वैज्ञानिक जानते थे । अतः उन्होंने त्योबा के अतीन्द्रिय ज्ञान की परीक्षा के लिए तश्तरी में कुछ पत्थर के टुकड़े भी रखे । आँखें बाँध दी गई थीं और सोचा यह गया था कि गन्ध तो सारे प्लेट में से उठती थी, इसलिए बिल्ली उसमें रखी हुई किसी भी चीज को मुँह मार सकती है, लेकिन देखा गया कि त्योबा ने बहुत ही सँभलकर अपना खाना खाया और पत्थर के टुकड़ों को चाटा तक नहीं । इसी प्रकार कुछ दिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में ही वह रास्ते में रखी हुई कुर्सी, सन्दूक आदि को बचाकर इस तरह अपना रास्ता निकालने लगी कि उसमें से किसी के गिरकर टूटने या चोट पहुँचने का डर न रहे । स्मरण रहे इन प्रयोगों में भोजन की तश्तरी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग कमरों में रखी गई । बिल्ली सभी स्थानों पर पहुँच जाती ।

बेकेताश्विली ने यही प्रयोग 'जिल्डा' नामक एक कुत्ते पर और किया । जिल्डा की आँखों पर भी पट्टी बाँध दी जाती और उसे प्रयोगशाला में छोड़ दिया जाता । जिल्डा कुछ ही दिनों में सारी बातें ताड़ गया और बिना किसी वस्तु से टकराए बुलाई गयी, आवाज पर पहुँचने लगा ।

इन सब प्रयोगों से एक ही निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि प्राणिधारियों में विद्यमान चेतन सत्ता इन्द्रियों की दास नहीं है । इन्द्रियाँ तो उसके लिए उपकरण मात्र का काम करती हैं । वह उन पर निर्भर नहीं है । सामान्य जीवन में भी देखा जा सकता है कि अन्धे व्यक्ति छड़ी के सहारे नेत्र वालों की ही तरह चलने लगते हैं, लँगड़े या अपंग व्यक्तियों की भुजाएँ और लोगों की अपेक्षा बलिष्ठ होती हैं और वे उनके द्वारा लाठी या वैसाखियों का सहारा बड़ी आसानी से लेकर चल लेते हैं । जन्मजात गूँगे, बहरे व्यक्ति किसी के चेहरे और हाव-भाव को देखकर ही उसके मन्तव्य को समझने लगते हैं । यह सब इस बात का प्रतीक है कि चेतना इन्द्रियों की दास या उन पर आश्रित नहीं है । बल्कि इन्द्रियाँ उसके उपकरण हैं, जिनका अभाव होने पर चेतना ज्ञान के लिए दूसरी वैकल्पिक व्यवस्था भी कर लेती है । अतीन्द्रिय ज्ञान का यही आधारभूत सिद्धान्त है । डॉ. बेकेताश्विली ने लिखा है कि—'यह क्षमता हर प्राणी में विद्यमान रहती है किसी में कुछ कम तो किसी में कुछ अधिक । कुछ लोग इस तरह की क्षमताएँ जन्म-जात लेकर आते हैं और कुछ प्रयत्न करके उन्हें जगाया, बढ़ा लेते हैं ।

इन क्षमताओं की जन्मजात विद्यमानता के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं । सन् १९७६ में अमेरिकी पत्रिका 'डेनवर' ने किसी पाठक की लिखी हुई एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी, कि १९७७ के अगस्त महीने में सेनफ्रान्सिस्को नगर तथा पश्चिमी घाट में भूकम्प आयेगा । स्मरणीय है आज तक ऐसी कोई मशीन नहीं बन सकी जो एक वर्ष पूर्व भूकम्प की भविष्यवाणी कर सके । लोगों ने इस भविष्यवाणी को कोई खास महत्त्व नहीं दिया; परन्तु १३ अगस्त १९७७ को सेनफ्रान्सिस्को के नगर और पश्चिमी तट वाले क्षेत्र में भूकम्प के तेज झटके लगे ।

कई व्यक्तियों में इस प्रकार की प्राकृतिक घटनाओं के पूर्वाभास की क्षमता होती है । वैज्ञानिक भले ही इन्हें स्वीकार न करें, परन्तु ऐसी अनेक घटनाएँ पश्चिमी देशों में घटी हैं, जिनमें साधारण लोगों ने भूस्खलन की भविष्यवाणी कर दी और प्रयोगशालाएँ कुछ न कह सकीं । नवम्बर १९७४ में अमेरिका के डॉ. डेविड एम. स्टूवार्ड ने कैलिफोर्निया रेडियो पर घोषणा की थी कि पिछले दिनों हुए विलक्षण आभास के आधार पर वे यह कह रहे हैं इस महीने के चौथे वृहस्पतिवार को समुद्र तट पर भूकम्प आयेगा । भूकम्प तेज होगा किन्तु उससे जन-धन की कोई विशेष क्षति नहीं होगी ।

२८ नवम्बर, १९७४ उस माह का चौथा गुरुवार था । उसी दिन शाम को रेडियो ने सामाचार प्रसारित किया कि आज शाम तीन बजे कैलिफोर्निया के मध्य समुद्री तट पर हेलिस्टर के पास भूकम्प के तेज झटके लगे हैं, परन्तु उससे कोई विशेष क्षति नहीं हुई है । इस प्रकार के और भी कई प्रसंग हैं । प्राकृतिक घटनाओं के पूर्वाभास की क्षमता यद्यपि, किन्हीं-किन्हीं मनुष्यों को होती है, किन्तु पशु-पक्षियों की कई जातियाँ तो इन घटनाओं को तुरन्त ताड़ लेती हैं और अपना व्यवहार बदल लेती हैं ।

अमेरिका के विख्यात मौसम विशेषज्ञ डॉ. लागन इस दिशा में वर्षों से परिश्रम कर रहे हैं । उनका कहना है कि भूकम्प से पहले पशु-पक्षियों के व्यवहार में आये परिवर्तनों को सही ढंग से पहचान लिया जाय तो घण्टों नहीं, दिनों पहले उससे होने वाले नुकसान से बचाव के प्रयास किए जा सकते हैं ।

चीन में भी इस विषय में काफी शोध कार्य हुआ है, क्योंकि वहाँ के कई क्षेत्रों में एक वर्ष में पाँच-पाँच, छः-छः बार भूकम्प आते हैं । इन मौसम विशेषज्ञों ने विधिवत् एक चार्ट तैयार किया है, जिसमें यह बताया गया है कि कौन-कौन से पशु-पक्षी भूकम्प के समय अपना व्यवहार बदल लेते हैं और उनके व्यवहार में किस प्रकार का परिवर्तन होता है । चार्ट में कहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया है कि—'जब भूकम्प आने की सम्भावना होती है तब गाय, भैंस, घोड़े, गधे आदि चौपाए बाड़े में नहीं जाते । बाड़े में जाने के स्थान पर वे उल्टे भागने लगते हैं । एकाध तरह का चौपाया तो कभी भी ऐसा कर सकता है, परन्तु जब अधिकांश या सभी चौपाए बाहर भागने लगें तो भूकम्प की सम्भावना रहती है । उस समय चूहे और साँप भी अपना बिल छोड़कर भागने लगते हैं, सहमे हुए कबतूर निरन्तर आकाश में उड़ाने भरने लगते हैं और वापस अपने घोंसलों में नहीं जाते । मछलियाँ भयभीत हो जाती हैं तथा पानी की ऊपरी सतह पर तैरने लगती हैं । खरगोश अपने कान खड़े कर लेते हैं और अकारण उछलने-कूदने लगते हैं ।"

जापान भी भूकम्पों का देश है और वहाँ किए गए परीक्षणों तथा अध्ययन में पशु-पक्षियों के व्यवहार में इसी प्रकार के परिवर्तन नोट किए गए । अमेरिका, इटली तथा ग्वाटेमाला के वैज्ञानिक भी इन परिवर्तनों की पुष्टि करते हैं । उनका कहना है कि भूकम्प आने के पहले पृथ्वी का चुम्बकीय आकर्षण वायु-मण्डल को प्रभावित करने लगता है । हवाओं की गति और तापमान में अन्तर आ जाता है । धरती और आकाश के बीच का दबाव बढ़ जाता है । ये परिवर्तन बहुत सूक्ष्म होते हैं, जिन्हें पशु-पक्षी ही पहचान पाते हैं तथा वे अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करने लगते हैं ।

यह तो सच है कि बहुत सूक्ष्म परिवर्तन स्थूल परिवर्तनों का बोध इन्द्रियों के माध्यम से नहीं होता या सूक्ष्म तरंगें इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आतीं, उन्हें इन्द्रियाँ पहचानने में असमर्थ होती हैं । इसीलिए जिन व्यक्तियों को इनका आभास होता है, वे अतीन्द्रिय सामर्थ्य से सम्पन्न कहे जाते हैं । पशु-पक्षियों में यह सामर्थ्य मनुष्यों की तुलना में अधिक बढ़ी-चढ़ी रहती है, क्योंकि वे प्रकृति के समीप रहते हैं, प्राकृतिक जीवन जीते हैं और मनुष्यों की तुलना में कम बुद्धिमान हैं । सम्भवतः इसी कारण प्रकृति ने अपने इन नन्हें लाड़लों को यह विशेष सामर्थ्य दी है । जो भी हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि कुछ है जो इन्द्रिय चेतना से परे, अतीन्द्रिय से सम्पन्न है और वह स्थूल की पकड़ से बाहर है । भारतीय मनीषियों ने इस चेतना को परमात्म सत्ता की ही एक किरण कहा है । उस सत्ता से सम्पर्क सान्निध्य स्थापित कर लेने पर जो असामान्य तथा विलक्षण लगता है वह भी सहज सम्भव और सुलभ उपलब्ध हो सकता है ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिव्य विभूतियों से ओत-प्रोत यह मानवी सत्ता

मनुष्य अतीन्द्रिय शक्तियों का भण्डार है

शरीर और मन की क्षमताएँ सर्वविदित हैं, उन्हीं को बलिष्ठ बनाकर लोग ऊँचे उठते, आगे बढ़ते और सुख-समृद्धि के साधन एकत्रित करते हैं । इससे ऊँची मानवी सत्ता है—अन्तरात्मा, इसको परिष्कृत करने की साधना में संलग्न होकर मनुष्य अतीन्द्रिय शक्तियों से सम्पन्न होता है, अति मानव की भूमिका में प्रवेश करता है और हर दृष्टि से असाधारण बन जाता है ।

अति मानवी चेतना के जागरण से जहाँ मनुष्य में देवोपम गुणों की वृद्धि होती है और उसके निखरे व्यक्तित्व से समाज को भारी लाभ मिलता है । वहाँ उसकी वे विशेषताएँ भी बढ़ जाती हैं, जिन्हें अतीन्द्रिय एवं चमत्कारी सिद्धियों के नाम से जाना जा सकता है ।

प्रकाश तरंगों से भी गतिशील, सुपरसोनिक वेव, पराध्वनिक तरंगें इस संसार में विद्यमान हैं । उनसे भी अधिक सामर्थ्यवान तथा द्रुतगामी विचार तरंगें हैं, जो क्षण भर में कल्पना की दौड़ के समतुल्य गति से संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक जा पहुँचती हैं । सामान्यतया विचार-धावन को कल्पना की उड़ान कहकर उसे उपहासास्पद गिना जाता है, पर अब उसे एक तथ्यपूर्ण विज्ञान का रूप मिल गया है । विचार संक्रमण, चेतना सम्वहन, अतीन्द्रिय ज्ञान एवं टेलीपैथी के नाम से इस विद्या को अब विज्ञान क्षेत्र में समुचित मान्यता मिलती जाती है ।

हीटर अपने प्रभाव क्षेत्र को गर्म रखते हैं और कूलर एक सीमा तक ठण्डक उत्पन्न करते हैं । विचार का प्रभाव अपने समीपवर्ती क्षेत्र में इसी प्रकार का पड़ता है । मिट्टी पर जिस गन्ध का जल गिरता रहे वह सूखने पर भी उसी गन्ध से गन्धित रहेगी । जिस स्तर के विचार, जिस वातावरण में भरे रहेंगे उनका प्रभाव वहाँ वैसा ही देखा जा सकेगा । कहते हैं कि ऋषियों के आश्रमों में गाय और सिंह एक घाट पानी पीते थे, यह सर्वथा सम्भव है । व्यक्ति के विचार उसकी क्रिया के साथ समन्वित होकर प्रौढ़ बनते हैं और उस वैचारिक प्रौढ़ता से वातावरण प्रभावित होता है । सज्जनों के निकट रहने पर एक अद्‌भुत शान्ति मिलती है और कितनी ही उद्विग्नताओं का सहज ही समाधान होने लगता है । दुष्ट, दुर्जनों के साथ रहने पर धीरे-धीरे भले मानुष भी उसी रंग में रंगने लगते हैं और उसी ढाँचे में ढलने लगते हैं । यह प्रभाव तब उत्पन्न होता है जब कोई व्यक्ति अपने विचारों से इतना प्रभावित होता है कि उसका व्यक्तित्व एवं क्रिया-कलाप भी उसी दिशा में गतिशील हो चलें ।

यों विचार तो वे भी हैं जिन्हें कल्पना-जल्पना कहते हैं, पर उनमें शक्ति बहुत स्वल्प होती है । वे मस्तिष्क में बे-मौसमी बादलों की तरह उड़ते छितराते इधर-उधर बिखर जाते हैं । काली घटाएँ, जिनमें जल-कण अधिक मात्रा में इकट्ठे होकर घनीभूत होते हैं, मूसलाधार वर्षा करते हैं । इसी प्रकार जो विचार, कल्पना मात्र न रहकर प्रभावशाली होते हैं और चिन्तन करने वाले को अपने रंग में रंगकर उसी स्तर की गतिविधियाँ अपनाने के लिए बाध्य कर देते हैं; उनमें शक्ति रहती है । यही शक्ति कल्पनाओं को सफलता के रूप में परिणत करने के साधन जुटाती है और इसी प्रखरता के आधार पर समीपवर्ती क्षेत्र, वातावरण एवं व्यक्तियों को प्रभावित करने वाला आधार बनता है । विचारों की शक्ति का प्रभाव तभी अनुभव किया जा सकता है, जब वे प्रौढ़, प्रचण्ड एवं क्षमता सम्पन्न हों ।

फ्रांस के ख्याति नामा चिकित्सक एमेल क्वे ने अनेक रोगियों पर प्रयोग करके यह सिद्ध किया, कि विचार संचरण से किसी भी औषधि की तुलना में रोगियों को अधिक लाभ पहुँचाया जा सकता है और औषधियों की उस हानि से बचा जा सकता है, जो रोग के साथ जीवनी-शक्ति को क्षति पहुँचाती है । उन्होंने अपने उपचार में औषधियों का प्रयोग लगभग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन्द ही कर दिया था । देते थे, तो केवल रोगी की दुर्बल मनःशक्ति को सान्त्वना देने भर के लिए । उन्होंने कष्ट साध्य रोगियों को अपना विचार-बल देकर और रोगी में आशा एवं उसाह की वृद्धि करके ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं, जिससे रोगी तेजी के साथ सुधार की दिशा में बढ़ते चले गए ।

"इसिस अनवेल्ड" ग्रन्थ में ऐसे कितने ही उल्लेख हैं, जिनमें विचार शक्ति द्वारा दूसरों को भले या बुरे प्रयोजन के लिए प्रभावित किए जाने के उल्लेख हैं । पुस्तक में "जैक्यूज पैलिसियर" नामक व्यक्ति का उल्लेख है, जो अपनी वेधक दृष्टि से चिड़ियों को मूर्छित करके पकड़ लेता था और अपनी आजीविका चलाता था । डॉक्टर एलगर ने अपनी साक्षी सहित वह विवरण विस्तारपूर्वक प्रकाशित कराया है, जिसमें उपरोक्त व्यक्ति उड़ती चिड़ियों को किस प्रकार वशवर्ती करके उनके प्राण हरण करता था ।

विचारों से वस्तुओं को प्रभावित करने की विद्या साइकोमेट्री के नाम से जानी जाती है । जिन पदार्थों का जिस प्रयोजन के लिए प्रयोग होता रहा है, वे उसमें भर जाते हैं और फिर जहाँ भी उनका प्रयोग होता है, वहाँ वे उस क्षमता का परिचय देते हैं, जो उन्होंने दीर्घकालीन सम्पर्क से संचित की थी ।

हाथ देखकर या जन्म-पत्र, पंचाग पढ़कर फलित ज्योतिष की सस्ती विधि के आधार पर किया गया भविष्य कथन और घटनाक्रम का पूर्वाभास प्रकट करना अशक्य है । अस्तु बाजारू पोथी-पाड़े को यदि उपहासास्पद कहें और भ्रम जंजाल फैलाने के दोषी, यदि उन्हें बताएँ तो यह उचित ही है, इतने पर भी यह तथ्य है कि किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों में पाई जाने वाली अतीन्द्रिय शक्ति वर्तमान तथा भविष्य की उन परिस्थितियों को जान सकती है, जो सर्व-साधारण के लिए प्रकट नहीं है । भूतकाल का घटनाक्रम बता देना तो और भी अधिक सरल है, क्योंकि उसके चित्र एवं शब्द अनन्त आकाश में पहले से ही भ्रमण कर रहे होते हैं और उन्हें अपेक्षाकृत अधिक सरलता से पकड़ा, पहचाना जा सकता है । भूत कथन आध्यात्म शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों के लिए सहज और सुगम है । वर्तमान की अविज्ञात पर्तें उखाड़ना इससे कठिन है और सबसे कठिन भविष्य ज्ञान है । कारण कि सूक्ष्म जगत में जो प्रवाह चल रहे हैं और जिनके आधार पर भविष्य को जाना जाता है, वे पत्थर की लकीर नहीं है । अवरोध उन्हें निरस्त भी कर सकते हैं और तीव्र सहयोग से उनकी गति एवं स्थिति में भारी उभार आ सकता है, ऐसी दशा में आज की दृष्टि से किया गया भविष्य कथन कल गलत भी हो सकता है ।

संसार के राजनेताओं में से ऐसे कितने ही मूर्धन्य सत्ताधीश रहे हैं, जिन्होंने परखे हुए अतीन्द्रिय शक्ति सम्पन्न लोगों से महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम का निर्धारण करने के लिए परामर्श लेते रहना आवश्यक समझा और उसकी उचित व्यवस्था बनाई ।

अमेरिकी राष्ट्रपति जान्सन और सेक्रेटरी मैकेनहारा, वियतनाम युद्ध की चालें निर्धारित करने में एक देवज्ञ से अक्सर परामर्श करते थे । हिटलर और चर्चिल के बारे में जो रहस्य अब प्रकट हुए हैं, उनमें यह तथ्य भी सामने आया है कि उन्होंने अपने विश्वस्त भविष्य वक्ताओं के परामर्शों को सदा असाधारण महत्त्व दिया । चर्चिल ने लुई व्हाल को यह जासूसी सौंपी थी कि वे यह पता लगा दिया करें कि हिटलर के ज्योतिषी ने उसे क्या-क्या परामर्श दिए हैं ? कहते हैं कि गलत भविष्य कथन करने के अपराध में एक भविष्य-वक्ता को हिटलर ने मौत के घाट उतरवा दिया था ।

संसार की प्रसिद्ध राजनैतिक घटनाओं के सम्बन्ध में पूर्व कथन करने वाले भविष्य दृष्टाओं की बातें जब सच निकलीं तो बाजारू ज्योतिषियों के कारण उत्पन्न हुआ सर्वजनीन अविश्वास फिर रुका और विचारशील लोग सोचने लगे, कि क्या उसे जानना सम्भव है जो अभी तक घटित नहीं हुआ है ? क्या भविष्य पूर्व निर्धारित है ? क्या मनुष्य नियति के हाथ का खिलौना भर है । इन प्रश्नों का सही उत्तर तर्कसंगत आधार पर अभी भी नहीं मिला है, पर भविष्यवाणियाँ पहले की तरह अभी भी जब सही उतरती हैं, तो बुद्धिवाद को एक विचित्र असमंजस में डाल देती हैं ।

राष्ट्रपति केनैडी की हत्या की पूर्व सूचना भविष्य वक्ता पीटर वीडल प्रकाशित करा चुके थे । एक ज्योतिषी ने अन्य आधार पर प्रेसीडेण्ट केनेडी के ठीक उसी समय मरने की बात प्रकाशित कराई थी, जिस समय कि वे वस्तुतः मर गए । उसका विचित्र तर्क यह था कि नियति का विधान हर बीस वर्ष बाद एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमेरिका प्रेसीडेन्ट को उदरस्थ कर जाता है । चाहे वह स्वाभाविक मौत से मरे या हत्या से । सन् १८६१ में लिंकन, १८८१ में गारफील्ड, १९०१ में मैकिन्ले, १९२१ में हार्डिंग, १९४१ में रूजवेल्ट मरे थे । इसी शृंखला में १९६१ में केनेडी प्रेसीडेण्ट बने थे उन पर भी वैसा ही संकट आया । कहना न होगा कि यह आशंका पूर्णरूप से सही हुई । लगता है सन् ८१ में जो व्यक्ति अमेरिका में प्रेसीडेण्ट पद के लिए खड़ा हुआ होगा उसे भी इस भयावह तथ्य को ध्यान में रखना पड़ा होगा । प्रेसीडेण्ट केनेडी की हत्या की पूर्व सूचना प्रकाशित करने वालों में श्रीमती जीन डिक्सन और श्रीमती शर्ल स्पेन्सर नामक दो महिला देवज्ञ भी हैं ।

भौतिक उपलब्धियों के लिए भौतिक जगत में भौतिक साधनों की सहायता से पुरुषार्थ करने पर सांसारिक सम्पदाएँ उपलब्ध की जाती हैं । ठीक उसी प्रकार अति मानवी अतीन्द्रिय विभूतियों को प्राप्त करने के लिए यदि आत्म-शोधन एवं आत्म-विकास का पुरुषार्थ योग एवं तप के आधार पर किया जाय तो उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ मिल सकती हैं जिनके लिए संसारी लोग बेतरह मरते-खपते रहते हैं ।

अतीन्द्रिय क्षमता और उसके उद्‌गम स्त्रोत

बहुधा ऐसी घटनाएँ देखने में आती रहती हैं, जिनकी सामान्य स्थिति के साथ संगति नहीं बैठती और वे अद्‌भुत असामान्य और चमत्कारी लगती है । अतीत काल में इनके समाधान सरल थे । तब देवी-देवताओं और भूत-पलीतों की करतूतें उन्हें समझ लिया जाता था और उससे उनके अनुग्रह तथा रोष का अनुमान लगा कर पूजा-उपचार का ताना-बाना बुन लिया जाता था । आज उतने से किसी को सन्तोष नहीं है । यदि देवी-देवताओं की ही वे कृतियाँ हैं, तो इन आत्माओं का अस्तित्व सिद्ध होना तथा स्वरूप, स्वभाव समझा जाना आवश्यक है । किम्वदन्तियों, दन्तकथाओं, मूढ़ मान्यताओं और अन्ध परम्पराओं की मान्यता अपने युग में निरस्त कर दी गई है । अस्तु देवी-देवताओं का अस्तित्व भी अप्रामाणिक और अविश्वस्त ठहरा दिया गया है । ऐसी दशा में समय-समय पर घटित होने वाली ऐसी घटनाओं का कोई आधार ढूँढ़ना ही होगा जो अप्रमाणिक भी नहीं कही जा सकती और जिनका सामान्य स्थिति के साथ कोई समाधान भी नहीं निकलता ।

मनुष्य के अतीन्द्रिय अनुभवों की शृंखला बहुत बड़ी है और उनके प्रकारों का ठीक तरह वर्गीकरण करना तथा सीमा परिधि निर्धारित कर सकना कठिन है । तो भी आये-दिन सामने आने वाले चमत्कारी अनुभवों को कुछ वर्गों में मोटे रूप से विभक्त किया जा सकता है । यथा—(१) सुदूर स्थानों में घटित हुई घटनाओं की बिना ज्ञातव्य साधनों के स्पष्ट जानकारी मिलना, (२) एक व्यक्ति को अन्य व्यक्ति की मनःस्थिति एवं परिस्थिति का ज्ञान होना, (३) भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का समय से बहुत पहले ही आभास मिल जाना, (४) मृतात्माओं द्वारा ऐसे कृत्य किए जाना, जिससे उनके अस्तित्व का प्रत्यक्ष परिचय मिलता हो, (५) पुनर्जन्म की वे घटनाएँ जिनमें यह प्रमाण मिलता तो है कि यह व्यक्ति पूर्वजन्म की ऐसी जानकारियाँ दे रहा है, जो अन्य लोगों द्वारा उसे सिखाई पढ़ाई नहीं जा सकती थीं, (६) किसी व्यक्ति द्वारा अनायास ही अपना ज्ञान अथवा अनुभव इस प्रकार प्रकट करना जो प्रस्तुत व्यक्तित्व से अत्यधिक ऊँचा अथवा भिन्न हो, (७) शरीरों में अनायास उभरने वाली ऐसी शक्ति जो सम्पर्क में आने वालों को प्रभावित करती हो, (८) ऐसा मनोबल जो दुःसाहसों को क्रीड़ा विनोद की तरह कर गुजरे और अपनी तत्परता के सहारे अद्‌भुत पराक्रम कर दिखाए, (९) अदृश्य आत्माओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करके, उनका असाधारण सहयोग प्राप्त करना, (१०) शाप, वरदान का दीर्घकाल तक वस्तुओं तथा व्यक्तियों पर बना रहने वाला प्रभाव, (११) परकाया प्रवेश ।

इस प्रकार के और भी अनेक ऐसे प्रसंग सामने आते हैं, जिन्हें उपरोक्त वर्ग विभाजन की श्रेणी में नहीं सोचा जा सकता है । उन्हें फुटकर एवं विसंगत बहुवर्गीय कहा जा सकता है । सिद्धि और चमत्कारों के नाम से इन्हें समझा, समझाया जा सकता है । यह अतीन्द्रिय शक्ति के प्रमाण का क्षेत्र है । इन्द्रियों की सहायता से हम जो अनुभव करते हैं, यह स्वाभाविक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं सरल है । यों है तो वह भी आश्चर्यजनक ही । अन्य प्राणियों की तुलना में मानवी संयन्त्र कितना परिष्कृत है और उसकी ज्ञान-क्षमता तथा सम्वेदनाएँ कितनी विशिष्ट है, इसे कोई प्रखर समीक्षक ही बता सकता है । अभ्यस्त होने के कारण हम तो उस विशिष्ट स्थिति को भी सामान्य ही मानने लगे हैं । इन्द्रियों के अतिरिक्त दूसरे साधन वैज्ञानिक उपकरण हैं, जो हमारे ज्ञान तथा साधनों का क्षेत्र अत्यधिक विशाल बना देते हैं । इन्द्रिय अनुभूतियों की तरह ही अब यह यान्त्रिक क्षमता भी मनुष्य की व्यक्ति क्षमता का ही एक अंग बन गई है । यों जिन दिनों बिजली जैसी शक्तियों और टेलीफोन जैसे उपकरणों का आविष्कार नहीं हुआ था । उन दिनों की आज की सुविधा सम्पन्न परिस्थितियों से तुलना की जाय, तो वह भी जादुई स्तर का चमत्कार ही प्रतीक होगा । अब से चार सौ वर्ष पूर्व के मनुष्य कहीं हों और आज की वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा यान्त्रिक प्रगति के सहारे मिले सुविधा-साधनों को देखें तो प्रतीत होगा, कि इस जमाने के लोग किसी जादूगर के लोक में रह रहे हैं । यह प्रकृति के पदार्थपरक स्थूल क्षेत्र की उपलब्धि हैं, जो प्रयत्न करने पर हाथ लगी हैं, यों उनका अस्तित्व तो सृष्टि के आदि काल से ही था । अन्तर इतना ही हुआ कि भूतकाल में मनुष्य उनके अस्तित्व एवं उपयोग से अपरिचित था । अब वह स्थिति बदल गई ।

अतीन्द्रिय ज्ञान में इन दिनों जो खोजबीन चल रही है, उसमें शोध को चार भागों में विभक्त किया गया है—(१) परोक्ष दर्शन (क्लेअर वायेन्स) ज्ञान प्राप्ति के सामान्य आधारों के बिना ही उन वस्तुओं या घटनाओं की जानकारी पाना जो प्रत्यक्ष नहीं हैं । (२) भविष्य ज्ञान (फ्रीकाग्नीशन) भविष्य में घटित होने वाले घटनाक्रम की बिना किसी मान्य आधार के जानकारी, (३) भूतकालिक ज्ञान (रेट्रोकांग्नीशन) भूतकाल की अविज्ञात घटनाओं का बिना किसी मान्य साधन के जानकारी प्राप्त करना, (४) विचार-संचार (टेली पैथी) अपने विचार दूसरों के पास बिना किसी साधन के पहुँचाने और उनके पकड़ने की कला ।

सरजान एक्लीस का कथन है, कि मस्तिष्कीय संस्थान से काम करने वाले अणुओं में एक न्यूरोन को प्रभावित किया जा सके तो प्राणी की क्रिया शक्ति और इच्छा शक्ति में पहले की अपेक्षा असाधारण परिवर्तन हो सकता है ।

विज्ञानी फेन माँ का कथन है कि समय गति साधारणतया पीछे से आगे को चलती है, पर यह अनिवार्य नहीं । ऐसा भी हो सकता है कि समय आगे की अपेक्षा पीछे को लौटने लगे । हम भविष्य की ओर बढ़ने की अपेक्षा भूतकाल की घटनाओं को देखते हुए चिर अतीत का अवलोकन करने को ही प्रगति अनुभव करने लगें ।

'लीग फार स्पिरिचुअल डिस्कवरी' नामक संगठन का उद्देश्य है, मनःचेतना से परे की चेतन-तत्व की तलाश । इस संस्था की स्थापना का आधारभूत कारण मनःतत्व की विभिन्न शक्तियों का परिचय रहा है । उसी से प्रेरणा लेकर यह गठित हुई । एलन गिन्स बर्ग ने विभिन्न रासायनिक तत्वों के आधार पर की गई मानसिक अनुभूतियों को प्राप्त कर, मन को ही जीव-चेतना का अन्त माना है । डॉ. टिमोदी लियरी ने मन को ही सब कुछ माना है और आध्यात्म का उसे ही आधार माना है । भारतीय तान्त्रिक और तिब्बती तन्त्र साधक भी विभिन्न रासायनिक तत्वों के द्वारा मनःचेतना के विस्तार-प्रसार और उसकी असामान्य अनुभूति-क्षमताओं का लाभ उठाते रहे हैं । कभी-कभी दूरवर्ती ज्ञान भी उससे सम्भव है ।

डॉ. टिमोदी लियरी ने नशा और कुछ औषधियों द्वारा मनःचेतना के विस्तार के प्रयोग व अनुभव किए हैं । उस स्थिति में शक्ति का विशेष अनुभव होता है और जीवन में आनन्द छा जाता है । वह भी वस्तुतः चेतना को निम्न तल से उठाकर कुछ समय के लिए जगत के मूलभूत तत्वों से एकाकार कर देने की ही स्थिति है ।

जैकी केसन ने भी मनोविस्तारक प्रयोग किए हैं । प्रकाश किरणों को विभिन्न आकृतियों में संयोजित कर, वे उनके छायाचित्र पानी के माध्यम से किसी पर्दे में प्रक्षेपित करती हैं । उन चित्रों को ध्यान से देखने वाला व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है और विचित्र अनुभूतियाँ उसे होने लगती हैं । यह भी हैं आत्म-तत्व से एकाकार की ही स्थिति ।

मनःशक्ति की उत्तेजक और वर्धक औषधियों में सोमरस प्रसिद्ध कहा है । आल्डुअस हक्सले ने उसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारी गुणगान किया है । उत्तरी यूरोप में भी ऐसा ही एक पेच, 'फ्लाई एगेरिक' नामक कुकुरमुत्तों से बनता है । फिजी में 'कावा' और एण्डियन तहाई (अमेरिका) में ओयाहुस्का पेच प्रचलित है, जो दिवास्वप्न की-सी अनुभूतियाँ देने लगते हैं । इस स्थिति में कई बार भविष्य, नोप्य भी होता है और मृतात्माओं से सम्पर्क भी । स्पष्ट है कि उस स्थिति में मन किसी महत् तत्व से क्षणिक एकाकारिता की स्थिति प्राप्त कर ही, वे अनुभूतियाँ कर पाता है ।

जीव-वैज्ञानिकों की ताजी खोजें बताती हैं कि शरीरस्थ कोशिकाओं और परमाणुओं को मनःशक्ति नियन्त्रित करता है । मनःचेतना वंशानुक्रम विधि से तो गतिशील रहती ही है, मरणोत्तर जीवन में भी वह सक्रिय रहती है ।

फ्रायड ने 'सुपर ईगो' और 'सेन्सर' की परिधि में मनःशास्त्र रचा, पर अब मनोविज्ञान निरन्तर आगे ही बढ़ता जा रहा है । जर्मन मनोवैज्ञानिक हेन्सा वेण्डर ने अतीन्द्रिय क्षमता के अनेक प्रमाण जुटाए हैं । टेलीपैथी के शोधकर्त्ता रेने वार्कोलियर ने कहा है—"मन की व्याख्या पदार्थ विज्ञान के प्रचलित सिद्धान्तों द्वारा सम्भव नहीं ।"

मन निःसन्देह अति सूक्ष्म सत्ता है, पर वह अन्न की ही गैसीय स्थिति है । अन्न से रस बनते हैं । रस, रक्त-माँस, मेदा, मज्जा, अस्थि, वीर्य से सप्त-धातुएँ कही गई हैं । ये अन्न से ही बनते हैं । वीर्य इनकी अन्तिम स्थिति है । वहाँ से आगे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि अन्तःकरण चतुष्टय हैं । मन चाहे तो सांसारिक पदार्थों से ही घिरा रहे, चाहे सूक्ष्म-सत्ता को प्राप्त कर समाधि सुख प्राप्त करे, पर मन एक रासायनिक तत्व है, आत्मा नहीं ।

मात्र मनःशक्ति के विस्तार तथा उसकी किसी कौतुक क्रीड़ा का नाम अतीन्द्रिय विज्ञान नहीं है । वस्तुतः कौतुक क्रीड़ा में परितुष्टि सदा अविकसित मन को ही होती है । मनःचेतना का प्रसार होते ही इन बाल-क्रीड़ाओं से गहरी विरक्ति हो जाती है । तब ब्रह्म-चेतना से एकाकार होने की तड़प बढ़ने लगती है । इस एकाकारिता की स्थिति में प्रकृति में क्रियाशील नियमों की जानकारी प्राप्त होने लगती है । अतीन्द्रिय विज्ञान मनःशक्ति के विकास तथा आत्म-तत्व से उसे एकाकार कर प्रकृति के गूढ़ रहस्यों के पीछे क्रियाशील नियमों, सिद्धान्तों की जानकारी की विधा है । यह मात्र मनःचेतना का विस्तार नहीं, बल्कि मनःचेतना के विस्तार द्वारा ब्रह्माण्डव्यापी चेतना से एकाकार होने का निरन्तर प्रयास और उसके परिणामस्वरूप उस ब्रह्म-चेतना की कार्य-विधि तथा उसके गणितीय नियमों की अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने का विज्ञान है ।

मानवी चेतना एक है । उसके विभिन्न क्रिया-कलापों के अनुसार समय-समय पर उसे विभिन्न नाम दिए जाते हैं । जैसे एक ही व्यक्ति परिस्थितिवश वैद्य, रोगी, ग्राहक आक्रान्ता, दानी, गायक आदि हो सकता है. उसी प्रकार मनःचेतना को उसकी सामयिक स्थिति के अनुरूप कई नाम दे दिए जाते हैं । एक ही व्यक्ति विभिन्न व्यक्तियों की दृष्टि में पिता, पुत्र, भाई, मालिक, नौकर आदि समझा जाता है, उसी प्रकार मन भी प्रयोजन विशेष की भूमिका निभाते समय विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है ।

सोचते समय चेतना के मनःनिष्कर्ष निकालने की स्थिति में बुद्धि-संस्कारों के जाल में जकड़ी हुई स्थिति चित्त और आत्म मान्यताओं की गहन आस्था अहंकार है । इनमें से जब जो स्थिति अधिक उभरी होती है तब मनुष्य को उसी स्तर का ठहराया जाता है, किन्तु यह स्थिति भी सदा एक जैसी नहीं रहती । वकील के रूप में बहस करता हुआ व्यक्ति बुद्धिमान कहा जा सकता है, पर जब वह नशे की लत से अपने को विवश अनुभव कर रहा होगा तो उसे चित्तग्रसित कहा जायेगा ।

प्राणियों में पायी जाने वाली चेतना में शरीर निर्वाह एवं सुखोपभोग के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों में कितना क्रिया-कौशल, कितना चातुर्य विद्यमान है, यह देखकर एक ओर उनकी बुद्धिहीनता और दूसरी ओर उनकी बुद्धिमत्ता के बीच आकाश-पाताल जैसा अन्तर देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है । चींटी कितनी तुच्छ और कितनी बुद्धिहीन है, पर उसकी समाज व्यवस्था, भवन निर्माण कला, अनुशासित सहकारिता देखते ही बनती है । मधुमक्खियों की अपनी दुनिया है । उनका जीवन क्षेत्र जिस परिधि में सीमित है उसमें वे किसी कुशल कलाकार, शिल्पी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, शासनाध्यक्ष, धर्माध्यक्ष एवं समाज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्थापक की समस्त विशेषताओं के समन्वय का परिचय देती हैं । दीमक द्वारा बनाये जाने वाले नगरों को देखकर उसकी तुलना मनुष्य भवन निर्माताओं से की जाय, तो प्रतीत होगा कि स्थिति और सुविधा को ध्यान में रख कर की गई समीक्षा में दीमक को कहीं अधिक कुशल ठहराया जायेगा । मकड़ी का जाला बुनना अपने निर्वाह, भोजन एवं वंश वृद्धि के प्रयत्नों में बरते गए वर्चस्व को देखकर मनुष्य का गर्व गल जाता है । मनुष्य और मकड़ी के बीच कितनी असमानता है, फिर भी मकड़ी अपने क्षेत्र में अपने स्तर के अनुरूप जो विशेषता प्रस्तुत करती है, वैसी उस अनुपात से विकसित से विकसित मनुष्य भी अपने क्षेत्र में कर सकेगा, ऐसी सम्भावना नहीं है ।

फिर मनुष्य की बुद्धिमत्ता भी एक आश्चर्य है । सिर की खोपड़ी के भीतर जो तनिक-सा लिवलिवा पदार्थ भरा है, उसमें किस प्रकार चिन्तन की अद्‌भुत विशेषता उत्पन्न होती हैं । विचारों के आँधी-तूफान और भावनाओं के ज्वार-भाटे किस आधार पर उठते हैं ? आदतों और आकांक्षाओं में इतनी विचित्रता एवं भिन्नता क्यों रहती है ? प्राणियों में शरीर निर्वाह भर की कुशलता पायी जाती है, पर मनुष्य के मस्तिष्क में जो ज्ञान-विज्ञान का भण्डार संजोए रह सकने योग्य जो स्वरूप बना हुआ है, उसका कारण क्या है ? मानवी मस्तिष्क की विचित्र स्थिति के लिए उत्तरदायी कौन है ? यह प्रश्न ऐसे हैं जिन पर विचार करते हुए बुद्धि हत-प्रभ होकर बैठ जाती है ।

अतीन्द्रिय चेतना की पर्तें और भी विलक्षण हैं । इसका मोटा स्वरूप भाव सम्वेदनाएँ और गहरा स्वरूप वे जानकारियाँ हैं, जो प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष होती हैं, जिनका ज्ञानेन्द्रियों के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता ।

सर्दी, गर्मी, स्वाद, आघात स्पर्श, हानि-लाभ से प्रसन्नता-अप्रसन्नता होने जैसी प्रतिक्रियाएँ मस्तिष्कीय संरचना से सीधी सम्बद्ध मानी जा सकती हैं । भय, आक्रोश, शोक जैसे घटना-परक प्रभावों को भी किसी कदर समझा जा सकता है, पर प्रेम, दया, करुणा, सेवा, सहानुभूति जैसी उन उदात्त सम्वेदनाओं का क्या आधार माना जाय, जिनसे प्रेरित होकर मनुष्य कष्ट सहने और त्याग करने जैसे 'अबुद्धिमत्तापूर्ण' कदम उठाने के लिए तैयार हो जाता है । देश धर्म के लिए हँसते-हँसते प्राण होम देने वाले परमार्थ के लिए सब कुछ लुटा देने वाले, आत्म-कल्याण के लिए अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, तप-साधन दान-पुण्य, व्रत, उपवास जैसी कष्ट साध्य रीति-नीति अपनाने वाले क्यों इन कार्यों में सन्तोष, आनन्द अनुभव करते हैं ? इन समस्याओं का समाधान मस्तिष्कीय संरचना की शरीर के साथ प्रस्तुत संगति को देखते हुए किसी भी प्रकार नहीं दीखता । श्रद्धा भक्ति की, उदार आत्मीयता की, स्थिति किस कारण अन्तःकरण में उत्पन्न ही नहीं, इतनी प्रबल भी होती है कि उस आधार पर शरीर सुख की स्वाभाविक चेष्टा ही उलट जाय ।

धर्म, आध्यात्म, संयम, उदारता और कर्तव्य-पालन के सिद्धान्त अपनाने से व्यवहारतः मनुष्य घाटे में रहता है । घाटे को न होने देने के लिए ही मस्तिष्क तन्त्र है । फिर उस स्वाभाविक संरचना से विपरीत आदर्शवादी तत्व दर्शन क्यों मनुष्य को स्वीकार्य होता है । दूसरों के दुःख में अपने आँसू क्यों निकलते हैं ? दूसरों को सुखी देखकर अपने को सुख क्यों होता है ? दूर देशों में घटित होने वाली घटनाएँ हमें भावनात्मक स्तर पर प्रभावित क्यों करती हैं ? मानवतावादी आदर्शवादी आध्यात्मवादी उमंगें, महानता की आकांक्षाएँ बनकर क्यों अन्तःकरण को मथती और बेचैन दिखाई पड़ती हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर उन मनोविज्ञानियों के पास नहीं है, जो घटनाओं को प्रतक्रिया स्वरूप चिन्तन तन्त्र की गतिविधियों का निरूपण निर्धारण करते हैं । इसके आगे की अति चेतन स्थिति बहुत ही अद्‌भुत है और उसके रहस्य समझने में अति कठिनाई उत्पन्न होती है । यों शरीर संरचना के घटकों का क्रिया-कलाप और पारस्परिक योग भी कम विचित्र नहीं है । ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर जिस प्रकार मस्तिष्क की सूचनाएँ मिलती हैं और उस विधान के अनुसार वह स्थिति का स्वरूप निर्धारित करता है, वह तन्त्र भी कम विलक्षण नहीं है । शारीरिक और मानसिक हलचलों को मोटे रूप में देखा जाय तो बात दूसरी है, अन्यथा थोड़ी गहराई में प्रवेश किया जाय तो प्रतीत होगा कि हमारी सामान्य गतिविधियों के पीछे कितनी असामान्य विधि व्यवस्था काम कर रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मस्तिष्क सोचने का कार्य करता है । निर्वाह की आवश्यकताएँ जुटाने तथा प्रस्तुत कठिनाइयों का समाधान ढूँढ़ना उसका काम है । उसकी ज्ञान आकांक्षा इसी प्रयोजन के लिए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने तक सीमित हो सकती है ।

उसके पीछे अचेतन मन की पर्त है वह रक्त संचार हृदय की धड़कन, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन, निमेष-उन्मेश, ग्रहण-विसर्जन, निन्द्रा-जागृति जैसी अनवरत शारीरिक क्रिया-प्रक्रियाओं का स्वसंचालित विधि-विधान बनाये रहता है ।

आदतें अचेतन में जमा रहती हैं और आवश्यकता पूर्ति के लिए चेतन मन काम करता रहता है । मोटे तौर पर मस्तिष्क का कार्य क्षेत्र यहीं समाप्त हो जाना चाहिए ।

इससे आगे जादू से बने संसार का अस्तित्व सामने आता है । जिसकी अनुभूति तो होती है, पर कारण और सिद्धान्त समझ में नहीं आता । इस प्रकार की अनुभूतियाँ प्रायः अतीन्द्रिय मनः चेतना की होती हैं । भूतकाल की अविज्ञात घटनाओं का परिचय, भविष्य का पूर्वाभास, दूरवर्ती लोगों के साथ वैचारिक आदान-प्रदान, अदृश्य आत्माओं के साथ सम्बन्ध, पूर्वजन्मों की स्मृति, चमत्कारी ऋद्धि-सिद्धियाँ, शाप-वरदान, जैसी घटनाएँ अतीन्द्रिय अनुभूतियाँ मानी जाती हैं । व्यक्तित्व का स्तर भी इसी उपचेतना की पर्तों में अन्तर्निहित होता है । विज्ञानी इसे पैरासाइकिक तत्व कहते हैं । इसके सम्बन्ध में इन दिनों जिस आधार पर शोध कार्य चल रहा है, उसे परामनोविज्ञान—(पैरा साइकालॉजी) नाम दिया गया है ।

स्थूल और कारण शरीरों के बीच एक सूक्ष्म शरीर भी है । त्रिविध शरीरों में एक स्थूल है, जिसमें ज्ञानेन्द्रियों का, कर्मेन्द्रियों का समावेश है । सूक्ष्म को मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की चार पर्तों में विभक्त किया गया है । मनोविज्ञानी इसे चेतन और अचेतन मन में विभक्त करते हैं और उसके कई-कई खण्ड करके कई-कई तरह से उस क्षेत्र की स्थिति को समझाने का प्रयत्न करते हैं । कारण शरीर को अन्तरात्मा कहा जाता है । सम्वेदनाएँ एवं आस्थाएँ उसी क्षेत्र में जमी होती हैं । योगी लोग प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा इसी क्षेत्र को जागृति एवं परिष्कृत करने का प्रयास करते हैं ।

अतीन्द्रिय क्षमता सूक्ष्म शरीर का, मस्तिष्कीय चेतना का विषय है । इन्द्रिय शक्ति के आधार पर ही प्रायः मनुष्य अपनी जानकारियाँ प्राप्त करता है और उस प्रयास में जितना कुछ मिल पाता है, उसी से काम चलाता है । मस्तिष्क ब्रह्माण्डीय चेतना से सम्पर्क बना सकने और उस क्षेत्र की जानकारियाँ प्राप्त कर सकने में समर्थ है । अविकसित स्थिति में उसे ज्ञान सम्पादन के लिए इन्द्रिय उपकरणों पर ही निर्भर रहना पड़ता है । वे जितनी जानकारियाँ दे पाती हैं, उतनी ही व्यक्ति का ज्ञान-वैभव सम्भव होता है, पर जब मस्तिष्कीय चेतना का अब के अथवा पिछले प्रयत्नों से अपेक्षाकृत अधिक विकास हो जाता है, तो फिर बिना इन्द्रियों की सहायता के ही समीपवर्ती एवं दूरवर्ती घटनाक्रम की जानकारी होने लगती है । इतना ही नहीं ब्रह्माण्डव्यापी ज्ञान-विज्ञान की असंख्य धाराओं से अपना सम्पर्क बन जाता है । प्रयत्नपूर्वक तो थोड़ा-सा धीरे-धीरे ही कमाया जा सकता है, पर यदि किसी अक्षय रत्न भण्डार पर अधिकार प्राप्त हो जाय, तो अनायास ही धन कुबेर बना जा सकता है । अन्तरिक्ष के अन्तराल में असंख्य मनीषियों की ज्ञान-सम्पदा बिखरी पड़ी है । विकसित सूक्ष्म शरीर उस ज्ञान-भण्डार से सम्बन्ध मिला सकता है और अपनी जानकारियों का इतना विस्तार स्वल्प समय में ही कर सकता है, जितना सामान्य प्रयत्नों से सम्भव नहीं हो सकता ।

मनुष्य के उपचेतन मन का पक्षी मस्तिष्क के घोंसले में रहता भर है, पर वह उतने में ही आबद्ध रहने के लिए विवश नहीं है । वह देश और काल का, मर्यादाओं का अतिक्रमण करके हजारों वर्ष पूर्व की, अथवा हजारों मील दूर की घटनाओं को उसी प्रकार देख सकता है मानो वे उसके ठीक सामने घटित हो रही हैं । मानसोपचार विज्ञानी डॉ. थेमला मौस ने ठीक ही कहा है कि चेतन मस्तिष्क का दबाव यदि उपचेतन पर से हट जाय और वह स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण कर सकने की सुविधा प्राप्त कर सके तो उसके ज्ञान की और गति की क्षमता असीमित बन सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी चेतना में सन्निहित दिव्य शक्तियाँ

यूरीगैलर को आरम्भ में बाजीगर माना जाता था पीछे उसने अपनी शक्तियों को वैज्ञानिक प्रयोग के लिए प्रस्तुत किया और उसके दावे सही निकले, तो यूरोप भर के पत्रों में उसकी चर्चा छपी । उसे प्रयोग प्रदर्शन के लिए यूरोप भर में बुलाया गया । वह इच्छा शक्ति के चमत्कार दिखाता था । एक प्रदर्शन में उसने मजबूत अँगूठी के दो टुकड़े कर दिए । लन्दन में उसने एक घड़ी को देखा जिसमें ४-४५ बज रहे थे, उसने दूर बैठकर घड़ी की सुइयाँ उल्टी घुमाई और ३-१२ पर रोकी । उसने दूर रखे चम्मच को बीच में से मोड़कर दुहरा कर दिया । म्युनिख प्रदर्शन में तो उसने कमाल ही कर दिया । सड़कों पर दौड़ती ट्रामों और मोटरों को उसने अपने संकल्प बल से रोक कर खड़ा कर दिया और वे जहाँ की तहाँ निस्तब्ध खड़ी रह गई ।

इंग्लैण्ड के वायुयान इन्जीनियर जे. डन अपने सपनों को एक प्रकार की भविष्यवाणी सिद्ध करते रहे । उन्होंने इस विलक्षणता की यथार्थता का पता लगाने के लिए उसे प्रस्तुत किया । उन्हें जो सपने आते थे उन्हें वे दूसरों को नोट कराते । लोग कौतूहलपूर्वक प्रतीक्षा करते और अन्ततः एक समय ऐसा आ जाता, जब स्वप्नों को एक तथ्य रूप में सिद्ध करने वाली घड़ी सामने आ पहुँचती ।

रूस में अतीन्द्रिय घटनाओं को जालसाजी और किम्वदन्ती मात्र कहकर हँसी में उड़ाया जाता था, तीस वर्ष पूर्व प्रकाशित रूसी शब्दकोश में चमत्कारी की भरपूर खिल्ली उड़ाई गई थी । पर अब उस देश में ही सबसे अधिक दिलचस्पी इस दिशा में ली जा रही है और जो शोध निष्कर्ष सामने आ रहे हैं, उनसे वे लोग उसे तथ्य रूप में स्वीकार करने लगे हैं । वैज्ञानिकों की सभा में मेज पर रखी वस्तुओं को इच्छा शक्ति के आधार पर खींचने, धकेलने और इधर-उधर करने का सफल प्रदर्शन श्रीमती मिखाइलोबी ने किया तो सभी को यह मानने के लिए विवश होना पड़ा, कि मनुष्य की संकल्प शक्ति में असामान्य बल हो सकता है ।

'टाइम' पत्रिका ने रूस की उन तीन लड़कियों का विवरण विस्तारपूर्वक छापा था, जो आँखों से पट्टी बाँधकर किसी भी वस्तु की आकृति और रंग बिना छुए बता देती थी । उनमें से एक को घोर अन्धेरे में पुस्तक पढ़कर सुना देने का कमाल हासिल है, इनके नाम हैं नाडियालोवानोवा, रोशाकुले शोवा, लेनाडिलजनोवा । एक अन्य रूसी महिला नेग्या मिखेलोवना की यह विशेषता है कि वह अपने संकल्प बल से चलती घड़ियों की चाल रोक देती है, उनकी गति में तेजी या मन्दता उत्पन्न कर देती है । रूस में बाजीगरी करके जनता को भ्रम में डालने की गुंजाइश नहीं है । वहाँ के जादूगरों को सबसे पहले यह घोषणा करनी पड़ती है कि यह सिर्फ धोखाधड़ी और हाथ की सफाई भर है । वहाँ अतीन्द्रिय शक्ति का दावा करने वाले को सर्वप्रथम वैज्ञानिकों की कठिन परीक्षा के लिए अपने को प्रस्तुत करना पड़ता है अन्यथा कठोर कारावास भुगतना पड़ता है ।

परामनोविज्ञान यह पता लगाने के लिए प्रयास कर रहा है, कि अतीन्द्रिय क्षमता के स्रोत आखिर हैं कहाँ ? संसार भर के प्रायः प्रत्येक देश में इस प्रकार की अगणित घटनाएँ अभी भी होती रहती हैं, जिनसे मनुष्य में असामान्य क्षमताओं के होने का प्रमाण मिलता है । भूतकाल की चमत्कारी घटनाओं का किम्वदन्ती कहा जा सकता है, पर जो सामने प्रत्यक्ष खड़ा है और अपनी सच्चाई को हर कसौटी पर कसे जाने का दावा प्रस्तुत कर रहा है, उसे झुठलाया कैसे जाय ? अस्तु मस्तिष्क विद्या की एक विशेष धारा पैरा साइकोलॉजी के अन्तर्गत अतीन्द्रिय शक्ति सम्बन्धी खोजें सभी विकसित देशों में बड़े उत्साह के साथ चल रही हैं ।

मनःशास्त्र के महामनीषी डॉ. जोसेफ राइन ने सर्वप्रथम अतीन्द्रिय विज्ञान पर अपनी वैज्ञानिक आधार पर लिखी हुई पुस्तक 'एक्ट्रा सेन्सरी पर्सेरशन' प्रकाशित कराई थी । तब से लेकर अब तक इस सन्दर्भ में शोधकार्य बहुत आगे चला गया है । डॉ. जोसेफ ने प्रायः ८५ हजार घटनाओं की साक्षियों का विश्लेषण करके कुछ निष्कर्ष निकाले थे । उन्होंने कहा है—'बिना संचार साधनों की सहायता के एक मन दूसरे मन को प्रभावित कर सकता है । मन में पदार्थों को प्रभावित करने को सामर्थ्य मौजूद है । मनःशक्ति की लम्बी दौड़ में दूरी, ताप, ऊँचाई, गहराई अथवा अन्य कोई भौतिक कारण व्यवधान उत्पन्न नहीं करते ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूसी परामनोविज्ञानवेत्ता एल. एल. बेसिलियेब ने इलेक्ट्रो मैग्नेटिज्म-एक्सरेंज आदि के व्यवधान उत्पन्न करके यह पता लगाने का प्रयत्न किया, कि मन की दूरबोध शक्ति में उनके कारण कोई अड़चन उत्पन्न होती है या नहीं । पर पाया यही गया कि जिनमें यह शक्ति मौजूद है उनका कार्य प्रत्येक वैज्ञानिक बाधा के बावजूद यथावत चलता रहता है । मन की क्षमता को कोई भौतिक शक्ति प्रभावित नहीं करती । इससे वे यह सोचने को बाध्य होते हैं कि मन की शक्ति कोई अभौतिक शक्ति हो सकती है ।

अब विज्ञान के मूर्धन्य क्षेत्रों में यह सोचा जा रहा है कि ज्ञात पदार्थ भौतिकी से आगे कोई अविज्ञात अतिभौतिकी होनी चाहिए । तरंग यान्त्रिकी, ऊर्जाणुवाद, सापेक्षवाद आदि सिद्धान्तों ने पदार्थ विज्ञान को असमंजस भरे एक ऐसे गतिरोध केन्द्र पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहाँ से आगे की बात कुछ सूझ नहीं पड़ रही है । विज्ञान की भूतकालीन सरल व्याख्याओं से अब कुछ काम नहीं चल रहे हैं । वे बाल-बोध के लिए गढ़ी गई बाल-बुझक्कड़ कहानियों जैसे रह गई हैं । खोज की गहराई ने विज्ञान को उन मूल तथ्यों तक पहुँचा दिया है जहाँ से आगे क्या हो सकता है ? इस सन्दर्भ में कुछ भी सोच सकना सम्भव नहीं हो रहा है । इस असमंजस ने एक नई अतिभौतिकी के आविष्कार की सम्भावना को बहुत बल दिया है ।

डॉ. जोसेफ राइन अपने ग्रन्थ "दि रीच ऑफ माइण्ड" में इस सम्भावना के बीज छोड़े गए हैं कि "भविष्य में आध्यात्म को उच्चस्तरीय विज्ञान के रूप में प्रस्तुत करना पड़ेगा और एक नई अतिभौतिकी का जन्म होगा ।"

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का आधार अब विज्ञानवेत्ताओं को एक विशिष्ट तत्व 'ग्रेविटी' के रूप में हाथ लगा है । यह ग्रेविटी प्रत्येक पिण्ड से निकलता है और उसकी आकर्षण शक्ति के स्तर की संरचना करता है । इसी के आधार पर एक ग्रह दूसरे को खींचता है और यह विश्व ब्रह्माण्ड एक व्यवस्थित सम्बन्ध शृंखला में जकड़ा हुआ है ।

ग्रह-नक्षत्रों की तरह ही मनुष्य में भी एक विशिष्ट विद्युत का प्रवाह निःसृत होता है । वह एक दूसरे को बाँधता है । इस प्रकार समस्त मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे के साथ अनजाने ही बँधा हुआ है और जिन धागों को यह बन्धन कार्य करना पड़ता है वही एक से दूसरे तक उसकी सत्ता का भला-बुरा प्रभाव पहुँचाता है । एक व्यक्ति दूसरे के विचारों से अनायास ही परिचित और प्रभावित होता रहता यह आगे की बात है कि वह प्रभाव कितना भारी-हल्का था और उसे किस कदर, किसने, स्वीकार या अस्वीकार किया ।

आइन्स्टीन 'समग्र ज्ञान' को सामान्य ज्ञान की परिधि से आगे की बात मानते थे, वे कहते थे जिज्ञासा, प्रशिक्षण, चिन्तन एवं अनुभव के आधार पर जो जाना जाता है, उतना ही 'ज्ञान' नहीं है वरन् चेतना का एक विलक्षण स्तर भी है जिसे अन्तर्ज्ञान कहा जा सकता है । संसार के महान आविष्कार इस अन्तर्ज्ञान प्रज्ञा के सहारे ही मस्तिष्क पर उतरे हैं । जिन बातों का कोई आधार न था, उनकी सूझ अचानक कहाँ से उतरी ? इसका उत्तर सहज ही नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उसका कोई संगत एवं व्यवस्थित कारण नहीं है । रहस्यमय अनुभूतियाँ जिस प्रज्ञा से प्रादुर्भूत होती हैं उन्हें अति मानवीय मानना पड़ेगा ।

आध्यात्म में जिन पाँच कोशों की विवेचना की है वे भौतिक विज्ञान सम्मत भी । अन्नमय कोश को 'मैटर', प्राणमय कोश को 'सेल', मनोमय कोश को 'माइण्ड', विज्ञानमय कोश को 'पर्सनालिटी' और आनन्दमय कोश को 'इण्ट्यूशन' कहा जा सकता है ।

अब तक विज्ञान मैटर के बारे में ही कुछ कहने लायक जानकारी प्राप्त कर सका है । कुछ कदम 'सेल' और 'माइण्ड' के बारे में भी बढ़े हैं । पर्सनालिटी और 'इण्ट्यूशन' के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अब वैज्ञानिकों को कटिबद्ध होना होगा । समुद्र जैसी अगाध सम्भावनाओं से युक्त मेरुदण्ड में छः चक्रों के अति महत्त्वपूर्ण रक्त भाण्डागार अपने भीतर विद्यमान हैं; यदि उन्हें ढूँढ़ा, कुरेदा जा सके तो भौतिक जगत में जो कुछ है, उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण विभूतियाँ करतलगत हो सकती हैं ।

षट् चक्रों में से चार का अस्तित्व अब विज्ञान ने स्वीकार कर लिया है । मूलाधार चक्र—पैल्विक प्लेक्सस, मणिपूर चक्र—सोलर प्लेक्सस, अनाहत चक्र—कार्डियल प्लेक्सस, विशुद्ध चक्र—फैरिंजियल प्लेक्सस के रूप में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने जा चुके हैं । इनके दृश्यमान स्वरूप की झाँकी कर लेने पर अब यह पता लगाया जाना शेष है कि शरीर संचालन की सामान्य भूमिका के अतिरिक्त इनकी अतीन्द्रिय गतिविधियाँ एवं क्षमताएँ क्या हो सकती हैं ।

आशा की जानी चाहिए कि स्थूल जगत से जो चमत्कारी शक्तियाँ प्राप्त की जा सकी हैं, उसकी तुलना में असंख्य गुनी दिव्य शक्तियाँ हमें अपनी अन्तः चेतना में सन्निहित मिलेंगी । उनका प्राप्त करना और सत्प्रयोजन के लिए प्रयुक्त कर सकना सम्भव हो सका, तो निःसन्देह मनुष्य, नर-शरीरधारी होते हुए भी सच्चे अर्थों में देव, दिव्य सत्ता सम्पन्न सिद्ध होकर रहेगा ।

मनुष्य की अतीन्द्रिय और अद्‌भुत क्षमताएँ

स्वामी विवेकानन्द ने अपने एक भाषण में कहा था—मुझे एक बार एक मनुष्य के बारे में बताया गया जो किसी का प्रश्न सुनने से पूर्व ही उसका उत्तर देता था । मुझे उत्सुकता हुई और मैं अपनी मित्र मण्डली के साथ वहाँ पहुँचा । उसने एक-एक कागज हम सब को दे दिया । हमने अपने प्रश्न सोच लिए । हमें कागज खोलने को कहा गया । मेरी सोची संस्कृत की पक्तियाँ ज्यों की त्यों उस कागज पर लिखी मिलीं । यही नहीं मेरे साथी ने अरबी भाषा का एक काव्य सोचा था । वह भी ठीक उसी तरह लिखा मिला । हमारे तीसरे साथी जो जर्मन में डॉक्टर थे, उन्होंने भी किसी जर्मन डॉक्टरी पुस्तक का वाक्य अपने मन में सोचा था, वह भी उनके कागज पर ज्यों का त्यों लिखा मिला । इस आश्चर्य के बाद भी मेरा मन सोचता रहा कि कहीं मैंने धोखा तो नहीं खाया । कई बार मैं उसके पास अधिक गहरी परीक्षा करने की दृष्टि से गया और हर बार आश्चर्य में डूबा हुआ वापस आया ।

कुछ वर्ष पूर्व इच्छा शक्ति के चमत्कारों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन करने के लिए डॉ. राल्फ एलेक्जेण्डर ने एक सार्वजनिक प्रदर्शन मैक्सिको नगर में किया था । इस प्रदर्शन में प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्रों के प्रतिनिधि और अन्यान्य वैज्ञानिक, तार्किक, बुद्धिजीवी तथा सम्भ्रान्त नागरिक आमन्त्रित किए गए थे । प्रदर्शन यह था कि आकाश में छाये बादलों को किसी भी स्थान से, किसी भी दिशा में हटाया जा सकता है और उसे कैसी ही शक्ल दी जा सकती है । बादलों को बुलाया और भगाया जा सकता है ।

नियत समय पर प्रदर्शन हुआ । उस समय आकाश में एक भी बादल नहीं था । पर प्रयोगकर्त्ता ने देखते-देखते घटाएँ बुला दीं और दर्शकों की माँग के अनुसार बादलों के टुकड़े अभीष्ट दिशाओं में बिखेर देने और उनकी चित्र-विचित्र शक्लें बना देने का सफल प्रदर्शन किया । इस अद्‌भुत प्रदर्शन की चर्चा उन दिनों अमेरिका के प्रायः सभी अखबारों में मोटे हैडिंग देकर छपी थी ।

उपरोक्त प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए एक प्रसिद्ध विज्ञानी एलेन एप्रागेट ने 'साइकोलॉजी' पत्रिका में एक विस्तृत लेख छाप कर यह बताया कि मनुष्य की इच्छा शक्ति अपने ढंग की एक सामर्थ्यवान विद्युतधारा है और उसके आधार पर प्रकृति की हलचलों को प्रभावित कर सकना पूर्णतया विधि सम्मत है । इसे जादू नहीं समझा जाना चाहिए ।

वस्तुओं को इच्छा शक्ति द्वारा प्रभावित करने का अब एक स्वतन्त्र विज्ञान ही बन गया है, जिसे 'साइकोकिनास्सिस', कहते हैं । इस लम्बे शब्द का संक्षिप्त है—सी. के. । इस विज्ञान पक्ष का प्रतिपादन है कि ठोस दीखने वाले पदार्थों के अन्तर्गत भी विद्युत अणुओं की तीव्रगामी हलचलें जारी रहती हैं । इन अणुओं के अन्तर्गत जो चेतना तत्व है उस मनोबल की शक्ति तरंगों द्वारा प्रभावित नियन्त्रित और परिवर्तित किया जा सकता है । इस प्रकार भौतिक जगत पर मनःशक्ति के नियन्त्रण को एक तथ्य माना जा सकता है । डॉ. एलेक्जेण्डर के इस सन्दर्भ में गहरे प्रयोग 'ओरीलिया' कस्बे में क्रमबद्ध रूप से चल रहे हैं । कई शोधकर्त्ता और शिक्षार्थी उनके इस शोध प्रयोजन में सम्मिलित हैं ।

एक व्यक्ति के विचार दूरवर्ती दूसरे तक पहुँच सकते हैं और उसे प्रभावित कर सकते हैं । यह तथ्य अब असंदिग्ध हो चला है । न केवल अनायास घटित होने वाले घटनाएँ ही इसकी साक्षी हैं, वरन् प्रयोग करके यह सम्भव बनाया जा सका है कि यदि समुचित इच्छा शक्ति का समावेश हो और मनुष्यों के बीच घनिष्ठता की कमी न हो तो विचारों का वायरलैस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान करते रह सकने में समर्थ हो सकता है ।

सैन फ्रान्सिसिस्को में एक ट्रक ड्राइवर था—लुई फिशर उसकी पत्नी का नाम था—हैजल रेफर्टी । दोनों में एक दिन डट कर झगड़ा हुआ और वे दोनों फिर कभी न मिलने की कसम खाकर उस शहर को ही छोड़कर अन्यत्र चले गए, ताकि फिर कभी एक-दूसरे का मुँह न देख सकें ।

गुस्से में वे चले तो गए पर जल्दी ही अपनी भूल अनुभव करने लगे कि उन्हें तनिक से आवेश में इतना बड़ा कदम नहीं उठाना चाहिए था । इतने लम्बे समय से वे कितने अच्छे मित्रों की तरह रह रहे थे । जैसे-जैसे दिन बीतते गए, दोनों की बेचैनी बढ़ती गई और ऐसा उपाय ढूँढ़ने लगे कि साथी को ढूँढ़ पायें । पर दोनों में से किसी को किसी का पता न था ।

एक दिन सबेरे आठ बजे हैजल ने रेडियो पर प्रसारित सूचना सुनी । लुई इसी लामऐंजिल्स शहर में है, वह तुम्हारा इन्तजार ग्रिफिथ की वेधशाला पर बैठा कर रहा था । ठीक ऐसा ही रेडियो एनाउन्स लुई ने सुना—ग्रिफिथ की वेधशाला पर पहुँची सीढ़ियों पर बैठी हैरिस तुम्हारा इन्तजार कर रही है । दोनों ही तत्काल दौड़ पड़े और जैसे ही नियत स्थान पर पहुँचे कि परस्पर मिलन हो गया । दोनों फूट-फूटकर रोये और फिर कभी बिलग न होने की प्रतिज्ञा करके वापस अपनी जगह पहुँच गए ।

मिलन की पृष्ठभूमि बनाने वाला रेडियो प्रसारण था, पर एक ही समय में दो प्रकार का प्रसारण क्यों ? लुई को हैरिस से मिलने की और हैरिस को लुई से मिलने की पृथक-पृथक शब्दावली क्यों ? एनाउन्स करने वाला कौन ? इस आश्चर्य का निराकरण करने के लिए वे रेडियो स्टेशन पहुँचे । पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसा कोई प्रसारण किसी रेडियो ने नहीं किया, फिर यह सूचना उनके कानों ने सुनी कैसे ! जो शब्दशः सत्य निकली । परामनोविज्ञान वेत्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अतीन्द्रिय चेतना ऐसा ताना-बाना बुन सकती है जिसके अनुसार दो घनिष्ठ व्यक्तियों के विचार एक से दूसरे तक इस तरह पहुँच जायें मानो वे एक-दूसरे से प्रत्यक्ष वार्तालाप कर रहे हों ।

अतीन्द्रिय विज्ञान के शोधकर्त्ताओं के सामने फ्रेड की एक घटना बहुत ही दिलचस्पी से विश्लेषण का विषय बनी रही है, जिसके कारण उसे न केवल अपनी पत्नी के बहाने ऐसे संकेत मिले थे, जो दुर्घटना एवं विभीषिका का भी पूर्वाभास देते थे । शोधकर्त्ता उस घटना को अन्तःचेतना का एक रहस्योद्घाटन ही मानते हैं, जो किसी महत्त्वपूर्ण घटना का पूर्व परिचय देने और विपत्ति से सतर्क करने का भी कार्य कर सकती है ।

अटलाण्टिक महासागर के केरोवियन द्वीप हिस्पानोलिया के पश्चिम में वेस्टइण्डीज द्वीप समूह में एक सुरम्य स्थान है—हेटी । इस क्षेत्र पर १७वीं शताब्दी में फ्रांसीसियों ने कब्जा किया था और अफ्रीकी गुलामों को पकड़ कर उसे सरसब्ज किया था । इस प्रदेश में एक व्यापारी फ्रेण्ड स्पेडलिंग कुछ खरीद-बेच करने के लिए अक्सर आया जाया करता था ।

२२ अगस्त १९६४ की बात है । फ्रेण्ड अपनी मोटर से हेटी की ओर बढ़ रहा था । रास्ते में ऐसा भयानक तूफान आया जैसा उस क्षेत्र में कभी भी नहीं आया था, इसमें १३८ जानें गई थीं । फ्रेण्ड उस अन्धड़ में फँस गया पर आखिर आगे तो चलना ही था—अपने होटल तक पहुँचने के लिए वह नक्शे की सहायता से आगे बढ़ने लगा । मोटर चलाई तो उसने सुना कि उसकी पत्नी की आवाज हवा में गूँज रही है और वह चीख-चीख कर कह रही है पीछे लौटो—यह रास्ता खतरनाक है । फ्रेड को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ । उसकी पत्नी हजारों मील दूर कनेक्टीकट (अमेरिका) में है उसकी आवाज यहाँ क्यों कर आयी । उसने अपनी यात्रा जारी रखी, फिर भी उसे वह आवाज बार-बार सुनाई पड़ती रही, जिसमें पीछे लौटने का आग्रह किया जा रहा था ।

कुछ ही घण्टों में फ्रेण्ड एक नदी के पुल पर पहुँच गया । पुल पार करने की वह तैयारी कर ही रहा था कि समुद्र के दबाव से वह पुल चरमरा कर ढह पड़ा और टूटे छप्पर की तरह उस उफनती जलराशि में डूबते-उतरते पत्ते की तरह बहता हुआ चला गया । यह भयानक दृश्य उसने देखा तो काँप उठा, यदि एक क्षण पूर्व उसने पुल पर मोटर बढ़ा दी होती तो ही उसका अस्तित्व ही मिट जाता । मोटर लौटाई और सबेरे का इन्तजार करते हुए खुले मैदान में रात बिताई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सबेरा होने पर वह रास्ता बदल कर अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचा । उसके दिमाग पर यह रहस्य छाया ही रहा कि पत्नी की आवाज खतरे की चेतावनी देने और पीछे लौटने का आग्रह करती हुई बार-बार सुनाई क्यों पड़ रही थी ?

फ्रेण्ड जब अमेरिका वापस पहुँचा तब उसे मालूम हुआ कि ठीक उसी रात उसकी पत्नी ने सपना देखा कि उसका पति हेरी के भयानक जंगल में तूफान में फँस गया । आगे गहरी नदी है, उसमें उसकी मोटर डूबने ही वाली है । इस दृश्य से वह बेतरह घबराई और सोते-सोते ही चीख पड़ी—फ्रेण्ड वापस लौटो—खतरे से बचो ।

यह एक रहस्य ही था कि हजारों मील दूरी पर रह रही इस पत्नी को एक ही समय में ऐसी अनुभूतियाँ हुईं जो न केवल भविष्य बताती थीं वरन् एक की स्थिति का दूसरे को तत्क्षण आभास भी देती थीं ।

ब्रिटिश साइकिक रिसर्च सोसाइटी ने श्री मायर्स की अध्यक्षता में ऐसी खोजें की हैं, जिनसे मनुष्य में सन्निहित अतीन्द्रिय क्षमता का रहस्योद्घाटन होता है जिसे मनुष्य में देव दानव का आवेश अथवा जादू टोने की सिद्धि कहा जाता है—वह वस्तुतः अतीन्द्रिय क्षमता ही है, जो आमतौर से प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती है, किन्तु अभ्यास से जगायी जा सकती है । कभी-कभी यह अनायास ही जागृत हो जाती है और व्यक्ति में ऐसी अद्भुत विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जो आमतौर से हर किसी में नहीं देखी जातीं ।

परामनोविज्ञान के गुणात्मक (क्वालिटेटिव) मात्रात्मक (क्वान्टिटेटिव) और मनःसंचारण के तीनों पक्ष इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, कि मनुष्य मानसिक दृष्टि से इतना ही सीमित नहीं है, जितना कि वह कामकाजों और दैनिक जीवन में दिखाई पड़ता है । अतीन्द्रिय क्षमताएँ हर किसी में विद्यमान हैं । वे प्रसुप्त इसलिए रहती हैं कि उन्हें काम नहीं करना पड़ता । यदि यह आवश्यकता अनुभव की जाने लगे कि इनका जागरण होना ही चाहिए तो ऐसी परिस्थितियाँ सहज ही विकसित होने लगेंगी, जिनसे व्यक्ति परीक्षानुभूति की उन विशेषताओं से सम्पन्न हो चले जो आज अद्भुत एवं चमत्कारी समझी जाती हैं ।

परामनोविज्ञान की इन दिनों तीन प्रमुख शोध दिशाएँ हैं—(१) साइकोकिक नेसिस (सी. के) मनोगति—मानसिक स्पन्दन शीलता, (२) एक्स्ट्रा सेन्सरी परसेपसन (ई. एस. पी.) अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष बोध, (३) इन कारपोरेल पर्सनल ऐजेन्सी—अमूर्त व्यक्ति परक अभिकरणी ।

अतीन्द्रिय अनुभूति की यथार्थता सिद्ध करने वाले आये दिन अगणित प्रमाण मिलते रहते हैं । इस क्षमता को विकसित कर सकना भी सम्भव है । इस तथ्य पर की गई खोजों ने परामनोविज्ञान को अधिक गहरे अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया है । टेलीपैथी, पारेन्द्रिय ज्ञान—विचार, संचार—क्लैयर वायन्स—अपरोक्षानुभूति—प्रिकाग्नीशन—पूर्व संज्ञान अब स्वतन्त्र शास्त्र बन चले हैं । कुछ समय पूर्व इनकी यथार्थता पर सन्देह किया जाता था और जादू-टोना वालों की विद्या माना जाता था, पर अब विज्ञान क्रमशः इन्हें ऐसे प्रामाणिक तथ्य मानता चला जा रहा है । जिसकी खोज भौतिकी के अन्य क्रिया-कलापों को जानने की तरह ही आवश्यक है । सेन्सरी चेतना के सम्बन्ध में जितनी जानकारी अब तक मिली है । उससे स्पष्ट है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच में पड़ी हुई गोपनीयता की दीवार उठ सकती है और एक दूसरे की न केवल अन्तःस्थिति को जाना जा सकता है, वरन् कायिक उपकरणों का प्रयोग दूरस्थ रहते हुए भी भावनात्मक आदान-प्रदान कर सकता है । विश्व मानस-यूनिवर्सल माइण्ड, एक समग्र विचार सागर है और व्यक्ति की चेतना उसकी ऐसी पृथक् लहरें हैं, जो एक दूसरे से भिन्न दीखने पर भी वस्तुतः एक दूसरे के साथ अविछिन्न रूप में सम्बद्ध हैं । वस्तुतः समस्त समुद्र की जलराशि एक ही इकाई है । लहरें अलग दीखती भर हैं, पर उनमें सागर का क्षार एवं ताप जुड़ा ही रहता है । प्रत्येक लहर अपने से पिछली वाली से कुछ लेती है और अगली वाली को कुछ देती है । इसी आधार पर लहरों का अस्तित्व है । व्यक्तिगत चेतना के बारे में यही बात है । प्रत्यक्षतः मनुष्य सामाजिक प्राणी है वह समाज से ही बहुत कुछ पाता है और अपनी हलचलों से समाज को प्रभावित करता है । यह शास्त्र की बात हुई । मनोविज्ञान शास्त्र की अतीन्द्रिय शाखा इस निष्कर्ष पर पहुँची है, कि विश्व मानस एक अथाह और असीम जलराशि की तरह है । व्यक्तिगत चेतना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसी विचार महासागर की एक नगण्य सी तरंग है । विश्व मानस से ही व्यक्ति विविध विधि चेतनाएँ उपलब्ध करता है और फिर अपनी विशेषता सम्मिलित करके फिर उसे वापस उसी समुद्र को समर्पित कर देता है ।

आध्यात्म शास्त्र में समस्त प्राणियों में एक ही चेतना का अस्तित्व बताया गया है । काय-कलेवर की दृष्टि से अलग दीखते हुए भी वे वस्तुतः आत्मिक दृष्टि से एक है । व्यक्तिगत मौलिकता और स्वभावजन्य विभिन्नताएँ कई बार एक दूसरे से विपरीत स्तर की मालूम पड़ती है, फिर भी मूल प्रकृति में न केवल साम्य है, वरन् पारस्परिक ऐसा सम्बन्ध भी है, जिसे पूर्णतया अलग कर सकना सम्भव ही नहीं हो सकता । ऐसे मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती, जो अन्य मनुष्यों से सर्वथा स्वतन्त्र होकर अपना अस्तित्व कायम रखे रहे ।

निकट भविष्य में मनुष्य को अतीन्द्रिय क्षमता का और भी अधिक रहस्योद्घाटन होगा । तब मनुष्य की सत्ता के बारे में यह जाना जा सकेगा कि वह उतना ही नहीं है, जितना कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के आधार पर जाना समझा जाता है । मनुष्य अतीन्द्रिय क्षमताओं का भी भण्डारं है, और यदि उन्हें जागृत किया जा सके तो उसे वह संज्ञा प्राप्त हो सकती है जो आज देवताओं को उपलब्ध है ।

मनुष्य में अन्तर्निहित अलौकिक दिव्य शक्ति

मानव प्राणि, यों अन्य प्राणियों की तरह बोलने सोचने वाला पशु मात्र है । कितनी ही बातों में तो वह अन्य जीवों की तुलना में कहीं अधिक पिछड़ा हुआ है, फिर भी उसे सृष्टि का मुकुटमणि बनने का जो सौभाग्य प्राप्त है । उसका प्रधान कारण वह अलौकिक शक्ति ही है जिसे परमात्मा ने अपने इस परम प्रिय ज्येष्ठ के रोम-रोम में कूट-कूट कर भरा है । इन्हीं शक्तियों ने उसे स्नेह, सहकारिता, सद्भाव, संयम, परमार्थ जैसे सद्गुण प्रदान किए और उन्हीं के बलबूते वह अनेक भौतिक एवं आन्तरिक समृद्धियों, सिद्धियों का अधिपति बन सका । मनस्विता, तेजस्विता की महिमा से सभी परिचित हैं । आदर्शवादी उत्कृष्टता अपनाकर-उपासना और साधना का सहारा लेकर मनुष्य चाहे तो इतना ऊँचा उठ सकता है, जहाँ पहुँचने पर उसे सिद्ध पुरुष एवं देवात्मा कहा जा सके ।

अतीन्द्रिय शक्ति के चमत्कार किन्हीं-किन्हीं में कभी-कभी दीख पड़ते हैं । इनसे यह पता चलता है कि इसके अन्दर ऐसे बीज मौजूद हैं, जो साधारण प्राणियों में नहीं होते । दूसरे प्राणी खाना, जनना भर जानते हैं । अस्तु उनके क्रिया-कलाप भी उतने ही रहते हैं जितनी कि उनके माँस पिण्ड में क्षमता होती है पर मनुष्य के भीतर विचारणा की उच्चस्तरीय जागृति मौजूद है । फलस्वरूप उसकी अन्तर्निहित महिमा भी यदा-कदा झरोखों में से झाँकती दिखाई पड़ जाती है ।

आत्म शक्ति से सम्बन्धित अलौकिक एवं अद्भुत क्षमताओं के जब उदाहरण सामने आते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है, कि मनुष्य में अतिरिक्त विशेषताएँ पहले से मौजूद हैं । यदि उनका विधिवत् विकास किया जा सके तो जो कुछ मनुष्य ने भौतिक एवं बौद्धिक दृष्टि से उपार्जित किया है, उससे कहीं अधिक मात्रा में सिद्धियों और सफलताओं से उपलब्ध कर सकता है ।

यूरोप के परामनोविज्ञान शोध क्षेत्र में पीटर हरकौस अभी भी एक पहेली बना हुआ है । वह न कोई योगी है न सन्त न साधक, फिर भी अनायास ऐसी विलक्षण अतीन्द्रिय शक्ति उसे उपलब्ध रही, जिसे देखने वाले यह समझ नहीं पाते कि किस विशेषता के कारण वह अविज्ञात बातें बताने में समर्थ हो सका ।

पीटर गरीब घर में जन्मा वह दीवारों पर पुताई करके अपने पेट पालता था, एक दिन दीवार की पुताई करते हुए वह सीढ़ी से गिरा और गहरी चोट आयी अस्पताल में भर्ती किया गया । होश आया तो उसने पास के पलंग पर पड़े हुए मरीज से कहा—'आपने अपने स्वर्गीय पिता द्वारा उपहार में दी हुई घड़ी बेचकर अच्छा नहीं किया । पिताजी यह आशा करते हुए मरे थे कि लड़का इस उपहार को स्मृति के रूप में सुरक्षित रखेगा ।' मरीज सन्न रह गया कि यह सर्वथा अपरिचित व्यक्ति उसके निजी जीवन की ऐसी घटना की चर्चा कैसे कर रहा है, जिसकी जानकारी उसके अतिरिक्त और किसी को थी ही नहीं । इसी प्रकार पीटर ने एक दिन अपनी नर्स से कहा—'आप कल रेल के सफर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से लौटीं तो सामान में से अटैची को रेल के डिब्बे में ही क्यों भूल आईं ?' नर्स को इस भूल का पता स्वयं भी नहीं था । घर आकर देखा तो सचमुच एक छोटी अटैची रेल में ही छूट गई थी । नर्स को उस नुकसान पर इतना दुःख नहीं हुआ, जितना कि एक मरीज द्वारा इस प्रकार की आश्चर्यजनक उक्ति पर आश्चर्य ।

एक दिन पीटर रेलवे स्टेशन पर था कि एक यात्री को पकड़ कर जोर से चिल्लाया—'पकड़ो, इसी नें कुछ घण्टे पूर्व महिला की हत्या की है । पुलिस ने उसे पकड़ लिया । पीछे हत्या का भेद खुला और सचमुच वही व्यक्ति हत्या का दोषी पाया गया । इसी प्रकार एक होटल में चाय पीते हुए उसने पास की मेज पर चाय पीते हुए एक साधारण व्यक्ति की ओर घूर कर देखा और चुपके से मैनेजर को बताया कि यह व्यक्ति अंग्रेज जासूस है, इसे तुरन्त पकड़वा दो ।' पीछे उसकी बात सोलहों आने सच निकली ।

द्वितीय युद्ध के दिनों में उसे संदिग्ध व्यक्तियों की सूची में दर्ज करके जेल भेज दिया गया । वहाँ वह कैदियों को कितनी ही अद्‌भुत बातें बताया करता था । एक दिन उसने यों ही कहा कि ४ जून सन् ४४ को फ्रांस पर हमला होगा और अन्ततः जर्मनी हार जायेगा । इसमें अन्तर दो दिन का ही पड़ा । हमला ४ जून को न होकर ६ जून को हुआ और जर्मनी की अप्रत्याशित हार हुई । सन् ४८ में उसने वेल्जियम पुलिस की सहायता करके जेम्स नामक डाकुओं द्वारा अपहरण किए व्यक्ति की मृत्यु का पता बताया, फलतः हत्यारों को मृत्यु दण्ड मिला । एक दिन वेल्जियम के हवाई अड्डे पर वह चिल्ला रहा था इस हवाई जहाज पर कोई न चढ़े, यह एक घण्टे बाद ही जलकर नष्ट हो जायेगा । तब उसे पागल का प्रलाप भर समझा गया पर आश्चर्य कि सचमुच ही उस जहाज का उसी प्रकार जलकर दुःखद अन्त हुआ ।

साधना तपस्या से कई विशेष व्यक्ति असाधारण शक्ति प्राप्त करते हैं, पर पीटर की अनायास ही उपजी सहज अतीन्द्रिय चमत्कारिता कोई अविज्ञात कारण अपने गर्भ में छिपाये बैठी है ।

विज्ञान वेत्ता जे. वी. राइन और उनकी पत्नी लुई ई. राइन ने मिलकर उस सम्बन्ध में भारी शोध किया है कि स्वप्नों में कई बार ऐसे संकेत क्यों मिलते हैं, जिनमें भविष्य में घटित होने वाली पूर्व सूचनाओं का संकेत होता है । यह डॉक्टर राइन विज्ञान अन्वेषण के कार्य में निरत थे, पर जब उनकी पत्नी ने ऐसी दर्जनों घटनाओं का विवरण सुनाया जिनमें स्वप्नों की सार्थकता सिद्ध होती थी, तो उन्होंने अपने अन्वेषण का क्षेत्र बदल कर स्वप्नों में पूर्वाभास को अपना विषय बना लिया और लगभग ४००० ऐसी घटनाओं का संग्रह प्रकाशित किया है, जिनमें स्वप्नों के माध्यम से लोगों को भवतव्यता की पूर्व सूचना प्राप्त हुई थी ।

डॉ. राइन ने अपने अन्वेषण पर कितनी ही विज्ञान गोष्ठियों में भाषण दिए और इस सन्दर्भ में अधिक गहरी शोध किए जाने की आवश्यकता बतायी । ब्रिटिश ब्रोडकॉस्टिंग कॉरपोरेशन (बी. बी. सी.) के माध्यम से उनके कई भाषण इंग्लैण्ड के रेडियो से भी प्रसारित हुए ।

राइन के शोध निष्कर्षों में तीन बातें प्रमुख हैं एक यह कि मनुष्य के अन्दर कोई ऐसी अविज्ञात चेतना विद्यमान है, जो सुदूर क्षेत्र तक अपना सम्बन्ध सूत्र बनाये हुए है और वह उपयुक्त अवसरों पर रहस्यमयी घटनाओं का उद्‌घाटन कर सकती है । दूसरा यह कि परस्पर घनिष्ठ व्यक्तियों में सहज ही तथा मनस्वी लोगों द्वारा प्रयत्नपूर्वक मनःस्थिति का आदान-प्रदान हो सकता है । तीसरा यह कि पुरुषों की अपेक्षा यह अतीन्द्रिय शक्ति महिलाओं में कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी होती है । विशेषतया उनमें जो धार्मिक रुचि अधिक लेती हैं ।

स्वप्नों की सार्थकता पर ऐसी ही शोधें अन्य अन्वेषकों ने भी की हैं और उन्होंने अपनी ढूँढ़ खोज का विवरण पुस्तकाकार छपाया है । ऐसी पुस्तकों में ड्यू मारियर की 'पेटर टूबेट् एन' और किपलिंग की 'ब्रश वुड ब्बाय' पुस्तकें प्रसिद्ध हैं ।

दूरवर्ती स्वजनों के साथ घटित होने वाली घटनाओं तथा भवतव्यताओं का पूर्वाभास कितनी ही बार ऐसे विचित्र ढंग से सामने आता है, कि न तो उन्हें झुठलाया जा सकता है और न उनका आधार अथवा कारण समझ में आता है ।

इस सन्दर्भ में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ. नेलसन वाल्ट का कथन है कि—मनुष्य के अन्दर एक बलवती आत्म-चेतना रहती है, जिसे जिजीविषा एवं प्राणधात्री शक्ति कह सकते हैं । यह न केवल रोग निरोध अथवा अन्य आत्मरक्षा जैसे अस्तित्व संरक्षण के अविज्ञात साधन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुटाती है, वरन् चेतना जगत में चल रही उन हलचलों का पता लगा लेती है, जो अपने आगे विपत्ति के रूप में आने वाली हैं । पूर्वाभास बहुधा अपने ऊपर तथा अपने सम्बन्धियों के ऊपर आने वाले संकटों के ही होते हैं । सुख-सुविधा की परिस्थितियों का ज्ञान कभी-कभी या किसी-किसी को ही हो पाता है ।

परामनोविज्ञानी हैराल्ड कहते हैं स्वप्न में ही नहीं, अपितु जागृत स्थिति में भी कई बार बिल्कुल सही ऐसे पूर्वाभास होते पाये गए हैं, जिनका सामयिक परिस्थितियों से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था । उन्होंने फ्रांसीसी उड्डयन संस्थान में काम करने वाले एक यान चालक की विमान दुर्घटना में मृत्यु होने का उल्लेख किया है और बताया है कि ठीक दुर्घटना के समय ही रास्ता चलती उनकी एक मात्र बहिन को यह अनुभव हुआ था, कि अभी-अभी उनका भाई वायुयान दुर्घटना में मरा है । दूसरे दिन ठीक वैसा ही समाचार भी उसे मिल गया । इस प्रकार के प्रसंगों में व्यक्तियों की पारस्परिक आत्मीयता की सघनता का बहुत हाथ रहता है ।

मनःशास्त्री हेनब्रुक ने अपनी शोधों में इस बात का उल्लेख किया है, कि अतीन्द्रिय क्षमता पुरुषों की अपेक्षा नारियों में कहीं अधिक होती है । दिव्य अनुभूतियों की अधिकता उन्हें ही क्यों मिलती है, इसका कारण वे नारी स्वभाव में कोमलता, सहृदयता जैसे सौम्य गुणों के आधिक्य को ही महत्त्व देते हैं । उनकी दृष्टि में आध्यात्म क्षेत्र में नारी को अपनी प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं के कारण सहज ही अधिक सफलता मिलती रहती है ।

बीज रूप से यह अलौकिक एवं अतीन्द्रिय क्षमता हर किसी में मौजूद है और यह सम्भावना हर किसी के सामने खुली पड़ी है कि उस दिव्य शक्ति को प्रयत्नपूर्वक विकसित करके न केवल अपना किन्तु दूसरों का भी भला कर सकें ।

हम भूत और भविष्य भी जान सकते हैं

लन्दन में एक ऐसी हत्या हुई, जिसका पता लगाने के लिए पुलिस, सी. आई. डी., कुत्ते सब नियुक्त किए गए, पर अपराधी का कोई पता न चला । अपराधी उसी मुहल्ले का एक सम्भ्रांत व्यक्ति था । उसके बारे में कोई कल्पना तक भी नहीं कर सकता था कि वह कभी अपराध भी कर सकता है ।

अन्त में प्रसिद्ध भविष्यवक्ता 'क्लेयर वायेण्ट' की मदद ली गई । क्लेयर वायेण्ट जो भी भविष्यवाणियाँ करता है वह अधिकांश सत्य निकलती हैं । वहाँ के बड़े-बड़े व्यापारी, पुलिस और म्युनिसपेलिटी तक उसकी मदद लेते हैं । क्लेयर वायेण्ट ने अपराधी का पूरा हुलिया और नाम ,बता दिया । उसके आधार पर अपराधी पकड़ा गया और उसने सारी घटना बड़े रोमांचक ढंग से स्वीकार की । इस घटना से पता चलता है कि संसार में अतिरिक्त सहजानुभूति (एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्सन) मनुष्य-जीवन का एक महान सत्य है और वह मनोविज्ञान का ही विषय नहीं, वरन् उसे वैज्ञानिक यन्त्रों के विकास द्वारा भी उपलब्ध किया जा सकता है ।

ऐसी सैकड़ों घटनाएँ होती रहती हैं, जो इस तथ्य के सैद्धान्तिक पहलू का समर्थन करती हैं । ये घटनाएँ देखकर यह विश्वास होता है, कि संसार में कोई ऐसी भी सत्ता या तत्व है, जहाँ भूत और भविष्य वर्तमान के दृश्य-पटल की भाँति मिलते हैं । कभी-कभी अनायास दिख जाने वाली घटनाओं की शक्ति को यदि विकसित या यन्त्रित किया जा सके तो सचमुच मनुष्य त्रिकालदर्शी हो सकता है ।

१६ अगस्त १९६४ के धर्मयुग के पेज ५० पर दिनकर सोनवलकर का एक संस्मरण छपा था । शीर्षक था—'वह स्वप्न और नेहरू अस्थि-विसर्जन दिवस पर बच्चियों की जल-समाधि ।' इस लेख में भी ऐसी ही एक आश्चर्यजनक घटना का वर्णन है, जिसमें कल होने वाली घटना का पूर्वाभास एक साथ कई लोगों को हुआ और उसके बाद वह घटना सचमुच होकर भी रही ।

मण्डला मध्यप्रदेश का जिला है । यहाँ के शासकीय बहुउद्देशीय शाला के प्रिन्सीपल श्री रामनारायण जी खरे की धर्मपत्नी ने ७ जून, १९६४ की रात एक विचित्र स्वप्न देखा । स्वप्न अस्पष्ट-सा था । तीन बच्चों के डूबने की सी घटना दिखाई दी थी । उससे उनका हृदय काँपने लगा, नींद खुल गई । रात के एक बजे होंगे, उन्होंने अपने पति को जगाया और कहा—मैंने एक भयानक स्वप्न देखा है तब से मेरा हृदय काँप रहा है । मुझे कुछ अनहोनी-सी होती जान पड़ती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खरे जी ने कहा—वैसे ही स्वप्न की घबराहट है, कोई बात नहीं है, सो जाइये । उन्हें फिर कठिनाई से नींद आयी ।

उसी रात को प्रातःकाल ४½ बजे उनकी ६ वर्षीया पुत्री वीणा की नींद टूटी । उसने कहा—पापाजी ! मैंने एक स्वप्न देखा कि मैं और मीना (वीणा की छोटी बहन) और निर्मला (उसी विद्यालय के चपरासी की लड़की) तीनों नर्मदाजी स्नान करने गए और वहाँ डूब गए हैं । इसके बाद आप, मम्मीजी और दादीजी सबको रोते हुए भी मैंने देखा ।

खरेजी ने बात टाल दी, पर रात की धर्मपत्नी की घटना और इस घटना दोनों से तालमेल बैठने की याद करते ही उनका भी हृदय धड़कने लगा । विलक्षण बेचैनी थी । खरे साहब का प्रतिदिन नर्मदाजी स्नान करने के लिए जाने का नियम था । विचित्र बात तो यह थी कि ये तीनों बच्चियाँ भी प्रतिदिन उनके साथ स्नान करने जाती थीं । सावधानी के तौर पर आज उन्होंने बच्चियों से बहाना बना दिया—'आज मुझे जल्दी लौटना है । तुम लोगों को स्नान करने नहीं ले जायेंगे ।' यह कहकर वह अकेले ही स्नान करने चले गए । वह प्रतिदिन वाले घाट पर नहीं गए, ताकि यदि लड़कियाँ पीछे से आ भी जायें, तो उन्हें वहाँ न पाकर चुपचाप लौट जायें ।

खरेजी के स्नान करने चले जाने के बाद लड़कियों ने माँ से स्नान करने चलने को कहा, पर उन्होंने साफ इन्कार कर दिया । तब वे अपनी दादी से स्नान के लिए चलने को मचलने लगीं । दादी मान गईं और उन्हें लेकर नर्मदा की ओर चल पड़ीं ।

उस दिन नेहरू जी की अस्थियाँ नर्मदा में प्रवाहित की जानी थीं, इसलिए घाट पर थोड़ी भीड़ थी । सो वृद्धा उन्हें लेकर एक ऐसे स्थान पर चली गई, जहाँ कोई घाट नहीं था । थोड़े पत्थर पड़े थे, उन्हीं पर बैठकर स्नान किया जा सकता था ।

दुर्दैव कि जैसे ही लड़की वीणा आगे बढ़ी, उसका पाँव फिसल गया । ऊपर केवल चोटी दिखाई दे रही थी । लड़की बचाव के लिए छटपटाती रही । बुढ़िया ने सोचा—वह फुंदक रही है । छोटी बहन मीना चिल्लाई—दादीजी ! दीदी डूब रही है और यह कहते हुए वह स्वयं भी आगे बढ़ी । आगे बढ़ना था कि पाँव फिसला और वह स्वयं भी जल में समा गई । मीना के पीछे ही निर्मला भी चली गई और उन दोनों के साथ ही वह भी पानी में समा गई । पुल पर चपरासी यह सब देख रहा था । वह चिल्लाता हुआ भागा, पर एक मिनट में ही सब काम हो गया । वीणा और मीना के अर्द्ध मृत शरीर मिल तो गए पर अस्पताल पहुँचते-पहुँचते उनकी मृत्यु हो गई । निर्मला की तो लाश ही पानी से निकाली गई । बाद में तीनों लड़कियों की एक साथ शव-यात्रा निकाली गई । हजारों लोगों ने उसमें भाग लिया । हर व्यक्ति यही सोचता रहा कि आखिर वह रहस्य क्या है, जिससे भविष्य की घटनाएँ वर्तमान जीवन की भाँति दिखाई दे जाती हैं ?

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ. केन गार्डनर की सहजानुभूति के रहस्य पर बड़ी जिज्ञासा है । उन्होंने ऐसी सैकड़ों घटनाएँ एकत्रित की हैं, जो भूत या भविष्य की जानकारी देती हैं और बाद में उनके सत्य होने का प्रमाण मिलता है । इन घटनाओं को उन्होंने दुनिया के अनेक अखबारों में छपाया है । फरवरी १९६५ में लन्दन में रोनाल्ड आर्थर नामक एक व्यक्ति ट्रोव ब्रिज के जार्ज होटल में नाश्ते के लिए गया । वहाँ जाने का एक आकर्षण यह भी था कि उस होटल में एक ऐसी लड़की रहती थी, जो लोगों का भविष्य बता सकती थी ।

रोनाल्ड आर्थर को उसने बहुत-सी बातें बतायीं, जो भविष्य से सम्बन्धित थीं । वह जितनी ही सत्य थी, रोनाल्ड की जिज्ञासा उतनी ही बढ़ती गई । लड़की एकाएक रुक गई तो उन्होंने पूछा—आगे मेरा भविष्य में क्या होगा ? तो लड़की बोली—दुर्भाग्य कि नवम्बर के बाद आपका कोई भविष्य ही नहीं है । यह कहकर वह वहाँ से चली गई । सचमुच उसी वर्ष नवम्बर में रोनाल्ड की मृत्यु हो गई ।

ड्यूक यूनिवर्सिटी कैरोलाइना (अमेरिका) के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जे. बी. राइन ने भी इस तथ्य को माना है कि कोई एक महान सत्ता (सुपर पावर) है, जो मानवीय चेतना की तरह ही है और यदि मनुष्य उसका विकास कर ले तो वह आगत-अनागत की इन सब बातों को सहज ही जान सकता है, जो साधारण अवस्था में कभी कल्पना में भी नहीं आतीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्व इन थोड़ी-सी प्रकाश में आने वाली घटनाओं का उतना नहीं, जितना इस तथ्य की प्रामाणिकता का कि संसार में एक ऐसी सत्ता है, जो इस तरह की विलक्षण क्षमताओं से परिपूर्ण है । ब्रह्मसूत्र शंकर भाष्य में इस तरह की अनुभूतियों का माध्यम जगद्गुरु शंकराचार्य ने अपनी 'आत्मा' को ही माना है और लिखा है कि यह आभास (१) सन्ध्यादिकरण अर्थात् जीवन की अनन्तता, (२) आत्मा की विद्यमानता, (३) आत्मा का प्रकाश शरीर, (४) आत्मा की सर्वव्यापकता, (५) इच्छा संसार, (६) आत्मा की परिपूर्णता, (७) उभय लिंगाधिकरण अर्थात् आत्मा, स्त्री-पुरुष आदि लिंग-भेद से परे हैं, (८) आत्मा दृष्टा या साक्षी मात्र तत्व रूप है, (९) जीव का लक्ष्य इन्द्रिय सुख नहीं, शुद्ध आनन्द की प्राप्ति है, (१०) कर्मफल और पुनर्जन्म की सत्यता को ही प्रमाणित करते हैं । उपरोक्त घटनाओं में यह सारी बातें स्पष्ट अनुभव की जा सकती हैं ।

सहजानुभूति आत्मा के अस्तित्व का प्रकट प्रमाण है । यदि हम उसे स्वीकार करें तो हमें निःसन्देह एक ऐसे जीवन की तैयारी के लिए बल मिल सकता है जिसके लिए ही हम मनुष्य शरीर में आये हैं, लेकिन भौतिक आकर्षणों में फँसे उस सौभाग्य को गवाँ रहे हैं । यह हमारे वर्तमान पर निर्भर है कि हम इस तरह का विवेक जागृत कर अपने भूत-भविष्य को अपनी मुट्ठी में लायें और यह मनुष्य शरीर सार्थक करें ।

मनुष्य में अलौकिक क्षमताएँ भरी पड़ी हैं

अतीन्द्रिय विज्ञानी प्रो. काइरो (शीरो) के सम्बन्ध में संसार भर के आत्मवादी परिचित हैं । उन्होंने न केवल इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा ही है, वरन् यह सिद्ध भी किया है कि मनुष्य में असामान्य दिव्य शक्तियाँ भी अन्तर्हित हैं । प्रो. काइरो का जन्म सन् १८६६ में आयरलैण्ड में हुआ । उसे कीरो, चीरो, कैको, शीरो आदि नामों से भी पुकारते हैं । भारत भ्रमण में उसने कई आत्मविद्या विशारदों की सेवा कर, भविष्य ज्ञान की अद्भुत सिद्धि प्राप्त की एक दिन इंग्लैण्ड की ईस्ट एण्ड स्टीट सड़क के सहारे एक दीवार पर अंकित हाथ चित्र को देखकर काइरो ने पुलिस को सूचना दी कि यह किसी ऐसे हत्यारे का चित्र है, जिसने अपने पिता की हत्या की है । पुलिस को पहले तो विश्वास न हुआ पर खोजबीन की गई तो वह हत्यारा पकड़ गया और भविष्य कथन अक्षरशः सही सिद्ध हुआ । इसकी ख्याति यूरोप भर में फैली और लोग उसकी भविष्यवाणियों से लाभ उठाने लगे ।

सन् १८९३ में वह अमेरिका पहुँचा और फिफ्थ एवेन्यू न्यूयार्क में ठहरा । वहाँ भी उसकी बहुत ख्याति थी । अमेरिका के दैनिक पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' ने सम्वाद सम्पादक महिला को यथार्थता का पता लगाने भेजा । महिला ने काइरो के सामने चित्रों का एक अलबम रखा और उन व्यक्तियों का विवरण बताने के लिए कहा । काइरो उनका विस्तृत परिचय इस प्रकार बताते चले गए मानो वे सभी उनके पूर्व परिचित हों । अन्त में एक चित्र को देखकर उन्होंने कहा—यह आपका प्रेमी जल्दी ही हत्याओं के अभियोग में पकड़ा जायेगा और जेल में पागल होकर मरेगा । अच्छा हो आप समय से पूर्व उससे पीछा छुड़ा लें । सम्पादक महिला इस अप्रत्याशित कथन पर अवाक् रह गई पर कुछ ही दिन में बात सही निकली ।

यह घटना 'न्यूयार्क वर्ल्ड' ने पूरे दो पृष्ठों पर छापी । इससे काइरो की ख्याति बहुत बढ़ी । संसार भर में समय-समय पर महत्त्वपूर्ण मामलों में उससे परामर्श लिए जाने लगे ।

'पिक्चर ऑफ डोरियनडे' के लेखक 'आस्कर वाइल्ड' का भविष्य कथन करते हुए काइरों ने कहा आप जल्दी ही जेल जायेंगे और आजीवन कारावास का दण्ड भोगेंगे । उस समय वाइल्ड ने यही कहा, यह सर्वथा असम्भव है, आप शायद मुझे डरा कर कुछ रकम ऐंठना चाहते हैं । काइरो वहाँ से यह कहकर उठ आये नहीं, एक पैसा भी नहीं, पर कुछ ही दिन में उनकी पोल खुली और एक भयंकर मुकदमे में उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड मिला ।

सन् १८९७ में रूस के सम्राट जार ने उन्हें अपना हस्तचित्र भेजा पर यह प्रकट नहीं किया कि यह किसका हाथ है । चित्र की पीठ पर उन्होंने लिख भेजा, 'यह व्यक्ति आज से बीस वर्ष बाद अपने समस्त अधिकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खो बैठेगा और परिवार सहित रोमांचकारी मृत्यु से मरेगा ।' पढ़कर सम्राट जार सन्न रह गए । वह पत्र उनके कागजों में सुरक्षित रहा और समयानुसार ठीक घटना घटित हुई ।

इंग्लैण्ड के सम्राट सप्तम ऐडवर्ड के सम्बन्ध में उनके राजतिलक की तारीख, प्राण घातक बीमारी, की बातें सही निकलीं । महारानी विक्टोरिया को काइरो ने उसका मृत्यु दिवस लिख कर दे दिया था जो उसके निजी कागजों में पाया गया । अष्टम एडवर्ड की प्रणय लीला और राजत्याग की प्रसिद्ध घटना की घोषणा वे वर्षों पहले कर चुके थे ।

भारत के विशिष्ट व्यक्तियों में से ऐनी वीसेन्ट, स्वामी विवेकानन्द, मोतीलाल नेहरू, कर्नल आर्थर, लार्ड किचनर आदि के हाथ देखे थे और जो बताया था उससे वे लोग बहुत प्रभावित हुए थे । अपनी 'विश्व का भविष्य' नामक पुस्तक में उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता, गृहयुद्ध, पाकिस्तान की स्थापना, शरणार्थी समस्या, साम्प्रदायिक हिंसा के सम्बन्ध में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में वर्णन लिखा है और वह अक्षरशः सच होकर रहा ।

यह अलौकिक क्षमता किन्हीं-किन्हीं में अनायास ही उभरी हुई दृष्टिगोचर होती है, तब उसका कारण यही प्रतीत होता है कि इस जन्म में न सही उन्होंने भूतकाल में उन प्रसुप्त बीजांकुरों को सींच-सींच कर बड़ा किया होगा और अब अनायास ही वे उस सम्पदा से सुसज्जित दीख पड़ते हैं ।

१३ अगस्त, १९३१ ने 'न्यूयार्क हैराल्ड' और 'ट्रिब्यून' आदि दैनिक पत्रों में यह खबर बड़े दुःख की टिप्पणियों के साथ छपी कि ७२ वर्षीय ऐंजलो फेटी फोमी का स्वर्गवास हो गया । वह कार्क का बना आदमी समझा जाता था ।

कार्क की लकड़ी सबसे हलकी होती है और वह सबसे अधिक सरलतापूर्वक पानी पर तैरती रहती है । कहते हैं कि, ऐंजलो में भी कुछ ऐसी ही विशेषता थी '। यद्यपि उसके द्वारा दिखाये गए करतबों के अवसर पर बार-बार डॉक्टरों द्वारा उसके शरीर की परीक्षा की जाती रही कि आखिर उसमें ऐसी क्या अलौकिकता है जिसके कारण वह पानी पर इतने अनौखे ढंग से तैर सकता है ।

ऐंजली इटली के मोची का लड़का था । उसे पानी पर तैरने का भारी शौक था । उसके बाप ने इसके लिए उसे रोका, न मानने पर एक दिन तो उसकी बुरी तरह पिटाई भी कर दी । लड़का भाग खड़ा हुआ । तब वह दस वर्ष का था । उसने पानी के जहाज पर एक छोटी-सी नौकरी प्राप्त कर ली और बाप से छिप कर अमेरिका के लिए रवाना हो गया ।

जहाज अपने रास्ते चला जा रहा था कि एक तट पर कोई व्यक्ति डूबता उतराता अपनी प्राण-रक्षा की गुहार कर रहा था । ऐंजली से यह न देखा गया और वह अपने जहाज पर से धमाक से अथाह समुद्र में कूदा और देखते-देखते उस डूबते व्यक्ति तक तीर की तरह तैरता हुआ पहुँचा और २०० पौण्ड भारी उस आदमी को घसीट कर यथास्थान पहुँचा दिया । जहाज के नाविक लड़के के इस दुस्साहस पर क्षुब्ध थे । उन्होंने नाव खोली और उसे बचाने के लिए तैयारी की, तब तक अपना काम निपटाकर ऐंजली वापस आ गया और रस्से के सहारे चढ़कर अपनी जगह पर पहुँच गया । नाविक स्तब्ध थे कि यह लड़का क्या है कमाल है ।

आगे चलकर उसकी जल तरण सिद्धि अमेरिका भर में एक जादू-चमत्कार की तरह देखी जाती रही उसने कितने ही दुस्साहस भरे सार्वजनिक प्रदर्शन किए जिनकी चर्चा उन दिनों प्रायः सभी अखबारों में भरी रहती थी । जल की सतह पर बिना हाथ पैर हिलाये घण्टों आराम से तैरते रहना उसके लिए साधारण काम था । कुर्सी के साथ रस्सों से बाँधकर गहरे पानी में फेंका जाना, हाथ पैरों से मनों लोहे का वजन बाँधकर पानी में डाल दिया जाना, इस पर भी लगातार पन्द्रह घण्टे तैरते रहना, बोरे में सीकर भारी वजन बाँधकर नदी में प्रवाहित कर दिया जाना, ऐसे कृत्य थे, जिसे देखने वाले यही सोचते थे कि अब उसका बच सकना असम्भव है; फिर भी जल से वह गेंद की तरह उछलता-फुदकता बाहर निकला तो उसे कार्क का बना आदमी कहा जाने लगा और न्यूयार्क वर्ल्ड जैसे अखबारों ने उसके करतबों को दाँतों तले उँगली दबाने जैसे आश्चर्य बताया ।

'वाशिंगटन हैराल्ड' की प्रकाशिका स्वर्गीया इलेम्नर मेरिट एक मध्यान्ह विश्राम करने के लिए बिस्तर पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

झपकी ले रही थी । लगभग अर्ध-निद्रा की स्थिति में उसने अपने पति कैस्सी को चारपाई के पास खिन्न मुद्रा में खड़े देखा । वे पुलिस के बड़े अफसर थे । पदों के अनुरूप पदक प्रतिष्ठा प्रतीक उनकी वर्दी में टँके हुए थे । लगता था वे बहुत उतावली में थे । कुछ ही क्षण वे खड़े दिखाई दिए और उसके बाद वे मुड़े और अचानक हवा में गायब हो गए ।

यह अर्धस्वप्न श्रीमती मेरिट के लिए हड़बड़ा देने वाला था । वे समझ नहीं सकीं कि यह सब क्या था । सामान्य स्वप्न ऐसे ही हल्की-फुल्की स्मृति छोड़ते हैं, पर इस अनुभूति ने तो उन्हें हिला ही दिया । भागी हुई दफ्तर में गई और उस दृश्य का विवरण सुनाया । कार्यकर्त्ताओं ने इसे मात्र एक घटना भर समझा और उसे विशेष महत्त्व नहीं दिया ।

दूसरे दिन तार आया कि उनके पति की अचानक मृत्यु हो गई । मृत्यु ठीक उसी समय हुई जिस समय कि उन्हें झपकी लेते समय उस आत्मा के आगमन की अनुभूति हुई थी ।

न केवल जीवित स्थिति में, वरन् मरणोत्तर जीवन में भी मनुष्य की सत्ता अपनी अलौकिक क्षमता का परिचय देती रहती है । स्थूल शरीर न रहने पर भी सूक्ष्म शरीर से अपनी गतिविधियाँ जारी रख सकती है और सम्बन्धित व्यक्तियों से सम्पर्क बनाये रह सकती है । साधारण मनःस्थिति के व्यक्ति मरणोत्तर जीवन में शान्त हो जाते हैं, किन्तु यदि मनःस्थिति प्रखर हो तो उसका सूक्ष्म शरीर लगभग वैसा ही समर्थ रह सकता जैसा कि जीवन काल में स्थूल शरीर था ।

हीडर डायजेस्ट पत्रिका के नवम्बर ६७ अंक में जॉन राविन्स का एक लेख छपा था, जिसमें उन्होंने लन्दन से ऑक्सफोर्ड जाते समय वेस्ट वेकोम्बे नामक गाँव के होटल में ठहरने और वहाँ पर एक महिला प्रेतात्मा से भेंट होने का विवरण प्रकाशित किया है ।

एक गोरी युवती की आश्चर्यजनक हरकतों के बारे में जब होटल के मालिक जॉन बूल से उन्होंने पूछा तो बताया गया कि विचित्र हरकतों वाली महिला जीवित नहीं, वरन् मृतात्मा है । इसका नाम सुक्की है । यह इसी होटल में कुछ समय पूर्व कर्मचारी थी । बहुत सुन्दर थी । उसने एक अमीर यात्री से शादी पक्की कर ली, इस पर उसे चाहने वाले होटल के अन्य कर्मचारी उससे जल गए और भारी चोट पहुँचा कर उसे मार डाला । तब से यह आत्मा इसी होटल के इर्द-गिर्द रहती है और यहाँ ठहरने वालों को अपने अस्तित्व का परिचय विचित्र-विचित्र ढंग से देती रहती है ।

सुप्रसिद्ध पत्रिका 'फेट' के अगस्त ६८ के अंक में पृष्ठ ६१ पर डॉ. नाटेली एम. डी. का एक लेख छपा था । उन्होंने अपने मरीजों में से कासाबलानका (मोरक्को) के हेनरी डेलारटे का एक विचित्र विवरण प्रकाशित कराया है ।

उपरोक्त मरीज के शरीर में एक महिला प्रेतात्मा प्रवेश करती थी । जब उसका आवेश आता तब आवाज पूर्णतया बदली हुई और नारी जैसी प्रतीत होती । वह महिला आत्मा इस युवक रोगी पर आसक्त थी और उसके साथ रहने की आकांक्षा व्यक्त करती थी । जब तक आवेश रहता-रोगी अपने आपे की सुध-बुध भूला रहता । कई चिकित्सा शास्त्रियों के कई तरह के उपचार किए पर रोगी दिन-दिन दुबला ही होता गया और मरणासन्न स्थिति तक जा पहुँचा । जब डॉक्टरों ने असमर्थता प्रकट कर दी, तब मन्त्र-जन्त्र का सहारा लिया गया और सम्भवतः इसी उपाय से उसका निस्तारा भी हुआ ।

आये दिन सामने आते रहने वाले इस प्रकार के घटनाक्रम, तथ्य एवं अनुभव यह बताते हैं, कि मनुष्य मात्र माँस पिण्ड नहीं है और शारीरिक क्षमता तक ही उसका वर्चस्व सीमित नहीं है । आज उसकी सत्ता अत्यन्त रहस्यमयी व्यापक सम्भावनाओं से ओत-प्रोत है । यदि उसे विकसित होने का अवसर दिया जा सके तो वह अपने अस्तित्व उस रूप में भी परिणत कर सकती है, जिसे अलौकिक और अद्‌भुत कहा जा सके ।

छठी इन्द्रिय और उसकी चमत्कारी शक्ति

सन् १९३९ के अगस्त मास में एक दिन लाहौर विश्वविद्यालय का सीनेट हाल, विद्यार्थियों, प्रोफेसरों और सरकारी अफसरों से खचाखच भरा था । गवर्नर और डिवीजनल कमिश्नर भी वहाँ उपस्थित थे । प्रोफेसर हबीब ने छठी इन्द्रिय के कुछ चमत्कार दिखलाने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घोषणा की थी । समय हो जाने पर प्रो. हबीब ने कमिश्नर से कहा कि आप अपने मन से कोई भी पुस्तक उठा लीजिए और उसका कोई पन्ना खोल लीजिए, मैं उस पृष्ठ में लिखे मजमून को आपसे बहुत दूरी पर खड़ा रह कर अक्षरशः पढ़कर सुना दूँगा ।

कमिश्नर को विश्वास न हुआ । बिना देखे भला किसी पुस्तक को कैसे पढ़ा जा सकता है ? और यदि कोई ऐसी पुस्तक उठाई जाय, जिसे प्रोफेसर हबीब ने कभी देखा भी न हो तब ? उन्होंने सचमुच एक ऐसी ही पुरानी पुस्तक निकाल कर उसका एक अध्याय खोला । प्रो. हबीब ने उनसे लगभग २२ फीट की दूरी पर खड़े रहकर उस पुस्तक को इस तरह स्पष्ट रूप में बाँच कर सुना दिया, मानो वह उनके सामने ही खुली रखी हो ।

उस सभा में एक अंग्रेज ऐसा भी था, जिसे हबीब को पुस्तक पढ़ते देख कर भी विश्वास न हुआ । उसने खड़े होकर कहा—"क्या आप बता सकते हैं कि मेरा घर कहाँ है ? मेरे घर का दरवाजा किस तरफ है ? मेरी स्त्री का नाम क्या है और मेरे कितनी सन्तानें हैं ?"

एक ऐसे व्यक्ति के घर और परिवार का हाल बतलाना जो सात समुद्र पार रहता हो वास्तव में असम्भव ही जान पड़ता था । पर आश्चर्य कि प्रो. हबीब ने थोड़ी देर विचार करने बाद सब बातें बता दीं और उस अंग्रेज को स्वीकार करना पड़ा कि वे सब बिल्कुल ठींक थीं ।

भन्ना भील

सिकन्दराबाद (हैदराबाद) के एक गाँव में एक भील रहता है जिसका नाम था भन्ना । वह भी अपनी छठी इन्द्रिय की सहायता से अनेक गुप्त बातों को सरलतापूर्वक बता सकता है । गढ़ा हुआ धन, जमीन में कहाँ पानी है और कितनी गहराई पर है, ये सब बातें वह ऐसे ढंग से बता देता है, मानो उसकी आँखें जमीन के भीतर का हाल देख सकने में समर्थ हैं । आपके घर में अगर चोरी हो गई तो भन्ना भील से बात करो, वह तुरन्त आपको बता देगा कि चोर कौन है और वह इस समय कहाँ होगा ? इतना ही नहीं वह यह भी बता सकता है कि अमुक स्त्री के गर्भ से लड़का पैदा होगा या लड़की ?

इस प्रकार बिना देखी या बिना जानी वस्तुओं के विषय में ठीक-ठीक बतला देने की शक्ति को अंग्रेजी में 'सिक्सथ सेन्स' अर्थात् छठी इन्द्रिय कहते हैं । देश और काल की सीमा ही नहीं, इसके द्वारा आप किसी भी व्यक्ति के मन और मस्तिष्क के गुह्य प्रदेश की बातें भी जान सकते हैं । अनेक लोग प्रश्न करेंगे कि क्या वास्तव में ऐसी बात सत्य हो सकती है ? ऊपर के उदाहरणों से इसकी सत्यता में सन्देह नहीं किया जा सकता । ऐसे ही और भी अनेक व्यक्तियों के उदाहरण हमारे सुनने में आये हैं ।

जयपुर राज्य के चिड़ावा नगर में कुछ वर्ष पहले एक पं. गणेशजी महाराज हो गए हैं, उनमें भी बिना देखी बातों को जानने की दैवी शक्ति स्वाभाविक रूप से प्रकट हो गई थी । एक दिन नगर के बाजार में बैठे-बैठे वे अचानक जोर से बोल उठे—"अरे रे, वह तो कूद ही पड़ा और मर गया । जाओ ! सब मस्तक के बाल मुड़ा डालो ।" उन दिनों में राजस्थान की रियासतों में यह प्रथा थी कि अगर राजा मर जाय तो छोटे-बड़े सब मस्तक मुड़ावें । श्री गणेशजी महाराज ने जिस समय उपरोक्त शब्द कहे थे, उसी समय खेतड़ी के राजा ने ताजमहल की मीनार से कूद कर जान दे दी थी । इसकी खबर चिड़ावा में कई दिन बाद आई, पर गणेश महाराज को वह घटना उसी समय दिखाई पड़ गई थी ।

इस प्रकार की एक नहीं सैकड़ों घटनाएँ समाचार पत्रों और पुस्तकों में देखने को मिलती हैं । स्विट्जरलैण्ड की एक स्त्री को अपनी बहिन की मृत्यु का आभास उसी समय हो गया था, यद्यपि उसकी बहिन कई हजार कोस की दूरी पर अमेरिका में मरी थी । जावा में भी एक आदमी को अपनी माता की मृत्यु की इसी प्रकार खबर पड़ गई थी, यद्यपि उसकी माँ दक्षिण केरोलिना में थी । इन घटनाओं में जिन व्यक्तियों को दूर की घटनाएँ दिखलाई पड़ीं, उनमें यह शक्ति सदैव नहीं पाई जाती थी, पर उस समय किसी मानसिक आकर्षण के कारण उनको अपने प्रियजन के देहान्त की सूचना दैवी रीति से मिल गई ।

ऐसी छठी इन्द्रिय की शक्ति कुछ पशुओं में भी उत्पन्न हो जाती है । अमेरिका के रिकमेण्ड नगर में रहने वाली श्रीमती सी. डी. फोडानी के पास एक घोड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी, जो ऐसी-ऐसी बातों का जवाब दे सकती थी कि दर्शक दंग रह जाते हैं । इसी तरह जापान के प्रधान सेनापति जनरल टोजो के एक बिल्ली थी जो कि नक्शा पर पैर रखकर यह बता देती थी कि युद्ध में जापानी फौज को किस तरफ बढ़ना चाहिए । जनरल टोजो प्रायः उसके संकेत के अनुसार अपनी फौज को धावा करने का हुक्म देते थे और उनको बराबर सफलता मिलती थी, लोगों ने उसका नाम 'मैप रीडिंग केट' (नक्शा पढ़ने वाली बिल्ली) रख दिया था ।

प्रत्येक मनुष्य में सामान्यतः पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं । दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि मनुष्य अपनी इन्द्रियों द्वारा ही स्पर्श, स्वाद, गन्ध, श्रवण और देखने का कार्य करता है, पर इनके सिवाय मनुष्य में दो अन्य शक्तियाँ भी होती हैं, जिनका प्रयोग करना अभी वह नहीं सीख सका है । ये शक्तियाँ कम या अधिक मात्रा में प्रत्येक व्यक्ति में पायी जाती हैं, और कभी-कभी संयोगवश किसी में विकसित होकर प्रकट भी हो जाती हैं । चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत इन शक्तियों की ग्रन्थियों को 'पिनियल' और 'पिट्युटरी' ग्रन्थि कहा जाता है । इन्हीं दोनों के सम्मिश्रण से अन्तर दृष्टि उत्पन्न हो जाती है ।

अमेरिका के ड्यूक विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में डॉक्टर हाइन छठी इन्द्रिय के विषय में प्रयोग कर रहे हैं । इन प्रयोगों द्वारा वे यह मालूम करना चाहते थे कि मनुष्य किस प्रकार इस शक्ति को प्राप्त कर सकता है ? डॉक्टर हाइन के सिवाय अन्य अनेक वैज्ञानिक भी इस सम्बन्ध में खोज कर रहे हैं, जिस दिन इन लोगों को अपने कार्य में सफलता मिल जायेगी उस दिन यन्त्र-युग से बढ़कर एक आश्चर्यजनक युग का आरम्भ होगा, जिसकी अद्भुत सम्भावनाओं की अभी हम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

यद्यपि अभी पश्चिमी वैज्ञानिक इस विषय की बाहरी सीमा पर भी नहीं पहुँचे हैं, पर भारतवासियों ने इस विज्ञान की बहुत पहले खोज कर ली थी । हमारे देश में जो योग-विद्या प्रचलित है, यह उसका एक बहुत छोटा अंग है । पाठकों में से अनेकों ने कुण्डलिनी शक्ति का नाम सुना होगा । इसी कुण्डलिनी को जागृत करने से यह दूरदर्शन की शक्ति ही नहीं, वरन् और भी अनेक अद्भुत शक्तियाँ—जैसे परकाया प्रवेश उत्पन्न हो जाती हैं । योग की इस शक्ति को भारतीय ही स्वीकार नहीं करते, वरन् कलकत्ता हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज सर जान वुडरफ जैसे अंग्रेज महापुरुष भी उसका अध्ययन और मनन कर चुके हैं और उन्होंने इस सम्बन्ध में 'सर्पेण्टाइल पावर' नाम का एक बहुत बड़ा ग्रन्थ भी लिखा है, जो आज भी सभ्य-संसार में आदरणीय स्थान रखता है । हमारे देश के तो बहुसंख्यक व्यक्ति आज भी योगाभ्यास की कितनी ही क्रियाओं को करके लाभ उठाते रहते हैं और वे चाहें तो कुण्डलिनी-योग द्वारा अपनी छठी इन्द्रिय को विकसित करके दूरदृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार संसार का बहुत कुछ उपकार कर सकते हैं ।

मनुष्य की विलक्षण दिव्य शक्तियाँ

"सहदेव के जन्म के समय मेरे एक मित्र, जिन्होंने ज्योतिष का बहुत अध्ययन किया था, मेरे पास ही थे । उन्होंने भैया (जिस परिवार को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, उनके घर छोटे बच्चों को भैया के ही सम्बोधन से पुकारा जाता है) की जन्म तिथि के आधार पर बताया कि आपके घर कोई देवात्मा आयी है । इसे तो किसी बड़े सम्पन्न घर में जन्म लेना चाहिए था, पता नहीं वह कैसे आपके घर आ गयी, फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा—जून सन् १९५५ की किसी तारीख को आपका बच्चा न रहेगा ? यदि कुछ उपाय कर लोगे तो यह बना भी रह सकता है, बचा रहा तो आपके जीवन में तीव्र परिवर्तन आयेगा । सुख-सम्पत्ति का घाटा नहीं रहेगा ।"

"बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि ज्योतिष शास्त्र के अब ज्ञाता रहे नहीं, अब तो जहाँ-तहाँ उसका झूठ व्यवसाय चल रहा है, पर यदि सचमुच भविष्य विद्या की साधना करे तो न केवल बालक के पूर्व जन्मों का इतिहास जाना जा सकता है, वरन् भविष्य के एक-एक दिन का इतिहास भी सिनेमा के पर्दे की तरह देखा जा सकता है । उन्होंने नकली प्रचलित फलित ज्योतिष का बहुत खण्डन किया था ।"

"मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि पूर्वजन्मों में जो ईश्वर उपासक और देव वृत्ति की आत्माएँ हैं, वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि किसी प्रकार परमात्मा को नहीं पा पातीं है, तो उनका दूसरा जन्म श्री कुल, यश, साधन सम्पन्न परिवारों में जन्म होता है । यदि वे किसी साधारण परिवार में ही जन्म ले लें तो "तिमि सुख सम्पत्ति बिनहिं बुलाये । धर्मशील पह जाहिं सुहाए ।" के अनुसार साधन-सम्पत्तियाँ उसके पास अपने आप दौड़ी चली आती हैं । इसी आधार पर हमने कहा है कि यदि बच्चा ६ वर्ष की आयु के बाद जीवित रहा तो आपके घर किसी बात की कमी न रहेगी ।"

उस समय की यह बात आई गई हो गई । ज्योतिष पर पढ़े-लिखे लोगों का जैसा आम अविश्वास है, वैसे ही हमने भी उन बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया ।

उपरोक्त घटना पाण्डिचेरी के अरविन्द आश्रम की वर्तमान संचालिका श्री यज्ञ शिखा माँ (श्री माँ) को लिखे गए एक पत्र के आधार पर लिखी जा रही है । यह पत्र मध्य प्रदेश के महान राजनैतिक क्रान्तिकारी काशीराम का है, जो उनके एक मित्र द्वारा श्री माँ को भेजा गया था । श्री काशीराम जी अमर शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि के साथियों में हैं, कानपुर सूटिंग केस में उन्हें सात वर्ष की जेल हुई थी । गाड़ोदिया बैंक के डकैती केस में वे चन्द्रशेखर आजाद के साथ रहे थे ।

इस पत्र में अपने प्रिय पुत्र के निधन का सकरुण चित्रण करते हुए काशीराम ने आत्मा सम्बन्धी भारतीय दर्शन को गम्भीर आस्था के साथ स्वीकार किया है और लिखा है कि हम सांसारिक व्यापारों में इतने पदार्थवादी हो गए हैं, कि आत्मा की आवाज को भी नहीं पहचान सकते । आत्मा हर क्षण हमें अपने सन्देश और प्रेरणाएँ देकर हमारा मार्गदर्शन करना चाहती हैं, पर सांसारिक आसक्तियों में फँसे हम साधारण मनुष्य उसकी उपेक्षा ही करते रहते हैं और मनुष्य शरीर जैसे अलभ्य अवसर को यों ही गवाँते रहते हैं ।"

"आगे की घटना फिर प्रारम्भ होती है—सहदेव बच्चा था, पर वह जीवन में एक बार भी असत्य नहीं बोला । उसने कभी पैसे भर की किसी और की वस्तु नहीं उठाई । उसके मुँह से निकली हुई कोई भी बात असत्य नहीं होती थी । एक बार काशीराम के एक पड़ोसी का मुकदमा चल रहा था । जिस दिन उन्हें फैसला सुनाया जाना था, सवेरे-सवेरे वे घर आये और पूछा "भैया ! बताओ मैं मुकदमा जीत जाऊँगा या नहीं ।" भैया ने कहा—"तुम मुकदमा हार जाओगे और तुम्हें तीन साल की सजा होगी ।" उन सज्जन ने इस मुकदमे में बड़ी लम्बी रिश्वतें दी थीं और उन्हें छूट जाने का पक्का आश्वासन मिला था, इसीलिए वे हँसे और बड़े विश्वास के साथ बोले—सहदेव ! तेरी बात झूठ निकलेगी, किन्तु सायंकाल उनके घर से खबर आयी कि सहदेव की बात सच निकली । उस व्यक्ति को सचमुच तीन वर्ष की सजा सुना दी गई थी । सहदेव ने कहा—देख लिया न । मैं कभी झूठ नहीं बोलता, फिर मेरी बात असत्य कैसे हो जाती ? बच्चे ने अनेक बार ऐसी भविष्यवाणियाँ कीं और वह सब सच निकलीं । घर मुहल्ले के लोग समझ नहीं पाते कि जब बड़े-बड़े शिक्षित और बुद्धिमान लोग साधारण बातों का भविष्य नहीं जान पाते, तब यह बच्चा असाधारण भविष्य ज्ञान कहाँ से पा गया । ऐसी जिज्ञासाएँ हम सबके सामने आती हैं, किन्तु हम कहाँ सोच पाते हैं कि आत्मानुवर्ती होना सबसे बड़ा ज्ञान और योग्यता है, जो आत्मा के जितना समीप है, वह उतना ही स्पष्ट भूत और भविष्य दृष्टा होता है ।

जून की २० तारीख और सन् १९५५, काशीराम जी किसी काम से घर के बाहर जाने लगे । बच्चे ने जिद की—पिताजी मुझे भी साथ ले चलिए । श्री काशीराम जी ने उसे समझा दिया और वहाँ से चले गए । पीछे एक दो बार बच्चे ने उन्हें याद किया तो उसकी माँ ने यों ही हँसी-हँसी में कह दिया—तेरे पापाजी अब घर नहीं आयेंगे तू उन्हें बहुत तंग करता रहता है, सो वे घर छोड़कर चले गए हैं ।" बात हँसी में कही गई थी, पर लड़का इस बात को लेकर दिन भर उदास बना रहा ।

शाम को श्री काशीराम जी के घर पहुँचते ही सहदेव उनसे लिपट कर रोया पिताजी ! आप मुझसे तंग रहते हो । तो अब तुम घर छोड़कर न जाना मैं स्वयं ही चला जाऊँगा ।" बच्चे के यह शब्द कहते ही न जाने क्यों श्री काशीराम जी को ज्योतिषी की बात याद आ गई । बच्चे के कथन में कोई एक सत्य झाँकता हुआ सा उन्हें प्रतीत हुआ । उन्हें जब पता लगा तो अपनी धर्मपत्नी को वैसा कह देने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डाँटा भी, पर सहदेव का मनोमालिन्य दूर न हुआ । वह शाम तक फिर काशीराम जी से एक शब्द भी नहीं बोला । उनके पास ही सोता था, सो सोया तो उन्हीं के साथ ही, पर उसे कुछ हटकर निःशब्द बिना कुछ बोले, बातचीत किए, जबकि इससे पूर्व वह घण्टों अपने पिता से तरह-तरह की मीठी-मीठी बातें किया करता था ।

बच्चे कितने सम्वेदनशील होते हैं, पर हम उनकी भावनाओं का आदर कहाँ करते हैं । माता-पिताओं की उपेक्षा उन्हें गलत रास्तों में भटका देती है । उन्हें गुनहगार ठहराया जाता है, पर सारी भूल अभिभावकों की होती है, जो उन्हें स्नेह और मनोवैज्ञानिक ढंग से सिखाना, समझाना भी नहीं जानते ।

रात बारह बजे बच्चे की नींद टूटी । उसने कई बार श्री काशीराम जी को पिताजी, पिताजी ! कहकर पुकारा, उस दिन दुर्भाग्य से पति-पत्नी दोनों ने भंग पी ली थी । देर तक नींद न टूटी, एक पड़ोसी ने आकर जगाया बच्चा कब से चिल्ला रहा है और आप ऐसे धुत्त सो रहे हैं । उस दिन श्री काशीराम जी ने पहली बार अनुभव किया नशा, मनुष्य जीवन का कितना बड़ा पाप है ।

बच्चे ने बिना किसी प्रकार की शिकायत किए कहा—"पापाजी—मेरी गर्दन दुःख रही है" यह कहकर उसने काशीराम जी का हाथ पकड़ कर अपने दाहिनी गर्दन पर रख कर वह स्थान बताया । श्री काशीरामजी चौंक पड़े, बच्चे का सारा शरीर गर्म तवे की भाँति जल रहा था । उन्होंने घबड़ा कर पत्नी को जगाया । दोनों उतर कर नीचे आये । पत्नी बच्चे को लेकर सो गई काशीराम जी अलग जा सोए । नशे का अभिशाप, दोनों में से किसी को भी यह ध्यान नहीं रहा कि बच्चे को बुखार है, उसे डॉक्टर को दिखाना चाहिए, औषधि दिलानी चाहिए ।

प्रातःकाल सहदेव की स्थिति बहुत बिगड़ी हुई मिली तब श्री काशीराम जी डॉक्टर के लिए दौड़े । समय निकल जाता है, तब सिवाय हडबड़ी के और क्या हो सकता है । डॉक्टर आया उसने देखकर बताया कि स्थिति ठीक नहीं है, उसे अस्पताल ले जाना चाहिए ।

नानी-नाना बुला लिए गए । बच्चा दिनभर तीव्र ज्वर में अचेत नानी की गोद में पड़ा रहा । काशीराम जी डॉक्टर के पास गए । डॉक्टर "अभी-अभी" कहकर अपने मरीजों में व्यस्त था, उसे पता था, काशीराम जी की स्थिति तंगी की है, वहाँ से दवाओं के पैसे मिलना कठिन है, इसलिए उसने शाम के सात बजा दिए और चला नहीं ।

काशीराम जी डॉक्टर के पास खड़े थे, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे सहदेव कह रहा हो—"पिताजी अब तो लौट आओ अब मैं हमेशा के लिए जा रहा हूँ ।" आत्मा की आवाज, पर कितनी स्पष्ट और शक्तिशाली । श्री काशीराम जी ने कहा—"डॉक्टर साहब ! धन्यवाद ! अब आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं रही । सहदेव रहा नहीं ।" यह कहकर वे घर की तरफ भागे और तब पीछे-पीछे डॉक्टर साहब भी अपनी कार लेकर दौड़े, पर प्राण किसी की प्रतीक्षा करते हैं ? बच्चे का शरीर ठण्डा पड़ चुका था, ओठ सूख गए थे । डॉक्टर ने जल्दी-जल्दी देखा और कह दिया—"बच्चे की मृत्यु हो गई ।" किसे दोष दिया जाय ऐसे तो हजारों बच्चे रोज मरते रहते हैं, डॉक्टर लौटा और अपने काम में लग गया ।

जल्दी नाना जी को भी थी । जीवन और मृत्यु के क्षणों में भी मनुष्य उस काल की विलक्षण घटनाओं के बारे में एक क्षण भी विचार नहीं करता । सम्भव है ऐसे प्रसंग देखकर ही धर्मराज युधिष्ठिर ने यक्ष के "संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या ?" प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था—

अहन्यहन्य भूतानि गच्छन्ति यम मन्दिरम् ।
शेषा स्थिरत्वमिच्छन्ति किंआश्चार्य मतः परम् ॥

अर्थात्—एक-एक करके सारा संसार मृत्यु के मुख में समाता चला जा रहा है, पर पीछे रह जाने वालों की गतिविधियाँ ऐसी रहती हैं, मानो उन्हें मृत्यु तक जाना ही नहीं—हे यक्ष ! इससे बढ़कर संसार में कोई दूसरा आश्चर्य नहीं हो सकता ।

व्यवस्थापक नाना जी ही थे । बच्चे को ले जाकर जल्दी-जल्दी गड्ढा खोदकर दफना दिया गया । श्री काशीराम जी उसका अच्छी तरह मुँह भी नहीं देख पाये ।

मित्र, परिचित और सम्बन्धी आते और श्री काशीराम जी को सान्त्वना दिलाते रहे । वह दिन ऐसे ही बीता । सन्ध्या आई और चली गई । बत्तियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जल गईं । बच्चे की माँ की स्थिति अब भी बड़ी गम्भीर थी, पर काशीराम जी के दुःख का पारावार ही न था । स्वतन्त्रता आन्दोलन का क्रान्तिकारी जो कभी गोली और बन्दूक दागने और डकैती डालने जैसे कामों में भी नहीं घबराता था, पुत्र की ममता के आगे उसकी सारी दृढ़ता ढेर हो गई ।

रात कोई आठ बजे होंगे । काशीराम जी चारपाई पर लेटे थे । बिजली का खम्भा सामने ही था, बल्ब जल गया था । उससे सड़क के उतने हिस्से में खूब प्रकाश फैल रहा था । तन्त्र वस्य (हिप्नोटाइज्ड) मस्तिष्क की भाँति काशीराम जी को एकाएक ऐसा लगा जैसे सहदेव की छाया बल्ब के नीचे प्रकाश में खड़ी है । आकृति थोड़ा आगे बढ़ी और बोली—"पिताजी ! आपने मुझे जीवित गाढ़ दिया । जल्दी करो मुझे निकाल लो, मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है ।" रुक-रुक कर बच्चे ने तीन बार यही शब्द कहे । बच्चे की आकृति सामने आते ही पिता का हृदय छलक पड़ा । वे चिल्लाये—भैया ! मेरे भैया ! और उनके इतना कहने पर ही उनकी धर्म-पत्नी का ध्यान उनकी ओर गया । उन्होंने बताया अभी भैया था और कह रहा था, मुझे जीवित गाड़ दिया गया है । मुझे फावड़ा तो लाओ, में अभी जाकर सहदेव को खोद लाता हूँ ।

धर्मपत्नी ने कहा—तुम्हें यों ही वहम हो गया है, जब बच्चा बीमार था, तब दवा कराते नहीं बना अब जब उसकी लाश गाड़ दी गई तो उसे उखाड़ने से क्या लाभ ? श्री काशीराम ढीले पड़ गए और फिर इन्हीं शोकपूर्ण विचारों में डूब गए ।

हल्की सी नींद लगी और भैया की आवाज फिर सुनाई दी—"पिताजी, मुझे जीवित गाड़ दिया गया है, मुझे निकाल लो पिताजी, मेरा दम घुट रहा है ।" काशीराम जी की नींद फिर टूट गई फिर सोए तो फिर वही आवाज । रात भर बच्चे की आत्मा पिता के आस-पास घूमती, जगाती और सन्देश देती रही, पर कुछ धर्मपत्नी के शब्द, कुछ अपना भी अविश्वास बेचारे लेटे ही रहे, पर प्रातःकाल ४ बजे जब बच्चे को मरे २४ घण्टे हो रहे थे, फिर जोर से बच्चे की वही आवाज सुनाई दी—पिताजी मुझे जीवित गाड़ दिया गया है, मुझे जल्दी निकाल लो ।"

श्री काशीराम जी की नींद टूट गई । वहाँ भागे पागल की तरह बच्चे की कब्र के पास पहुँच गए । एक क्षीण सी आवाज आई—"पिताजी ! बहुत देर कर दी । मैं मर रहा हूँ, अब आने का क्या लाभ ?" काशीराम जी पागल हो उठे । हाथ में कोई वस्तु नहीं किससे खोदते । फिर घर को भागे । फावड़ा लेकर फिर उसी स्थान की ओर दौड़े, जहाँ बच्चा गाड़ा था । अब तक घर के सब लोग भी जग चुके थे । सबने यही कहा कि श्री काशीराम जी बच्चे की ममता में पागल हो गए हैं, यह किसी ने नहीं समझा कि आत्मा की भी कोई आवाज होती है, उसका भी कहीं कोई अस्तित्व होता है ?

काशीराम जी ने कब्र खोदकर बच्चे को निकाला तो आश्चर्य चकित रहे गए । बच्चे की देह बिल्कुल गर्म थी, लाश में किसी प्रकार की खराबी नहीं थी । साँस चलने का तो कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहा था, पर कनपटी की नसें अब भी फड़क रही थीं और उससे यह स्पष्ट होता था कि बच्चा थोड़ी देर पहले पूर्णतया जीवित था । अभी भी उसके शरीर में जीवन शेष है । अब तक घर के बहुत से लोग और दूसरे लोग भी जमा होने लगे थे, बहुत लोगों ने उसके फोटो लिए । कई लोग कई तरह की चर्चा कर रहे थे, पर यह किसी से न बना कि कोई किसी डॉक्टर को लाता ।

बच्चे का शरीर उसकी नानी को देकर काशीराम जी कई डॉक्टरों के पास गए, पर जिसने भी यह चर्चा सुनी उसी ने काशीराम जी को पागल कहकर टाल दिया । इसी बीच कोई एक तान्त्रिक भी दौड़ा-दौड़ा वहाँ आया और बच्चे को देखकर चिल्लाया, "तुम लोगों ने बच्चे को जीवित मार डाला, उसका इलाज भी नहीं करते बना ।" उसके इतना कहते-कहते एक बार बच्चे ने खून की उल्टी की और फिर सदा के लिए इस संसार से विदा हो गया । मिट्टी जहाँ से आयी थी उसी में मिल गई ।

यह पत्र श्री माँ ने बहुत ध्यान से पढ़ा और फिर काशीराम जी के मित्र को, जिन्होंने उन तक यह पत्र पहुँचाया था, लिखा—ओह ! उसने आत्मा की आवाज को नहीं पहचाना (पिटी, ही डिडनाट लिसन टु दि इन्ट्यूशन) । एक काशीराम क्या, हम सब भी तो पागलों की सी जिन्दगी जीते हैं । बाहरी भौतिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार के सुख के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं, पर आत्मा तो उपेक्षित पड़ी है । हमें उसकी आवाज सुनने का अवकाश ही कहाँ ?

यह घटना प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी के आग्रह पर स्वयं काशीराम जी ने लिखकर नई दुनिया को भेजी थी । यह दैनिक पत्र इन्दौर से निकलता है । ३ नवम्बर, १९६८ के अंक में यह हृदयस्पर्शी संस्मरण छपा भी था ।

अतीन्द्रिय क्षमता में जैव ऊर्जा का योगदान

विज्ञानमय कोश की विशिष्ट क्षमताओं का एक केन्द्र उच्च चेतन मन है । दूसरा एक और भी आधार है—प्राण विद्युत । यह एक चुम्बक है जो सांसारिक जीवन में प्रभावोत्पादन शक्ति एवं प्रतिभा के रूप में दृष्टिगोचर होता है । यह आकर्षण तत्व यदि अधिक सूक्ष्म हो सके तो उसके माध्यम से कई तरह की ऐसी विशेषताएँ उत्पन्न हो सकती हैं । जिनसे व्यक्तित्व के उभरने के असाधारण अवसर उत्पन्न हो सकें । इस ऊर्जा में यह शक्ति भी है, कि सूक्ष्म जगत के प्रवाहों को अपनी ओर मोड़ सकना और उनके सम्पर्क से कई महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्ध करना भी सम्भव ही सकता है । साधक अपने व्यक्तित्व को साधना मार्ग पर चलाते हुए जिस प्रखरता को प्राप्त करता है, उससे भौतिक सफलताओं और आत्मिक सिद्धियों के उभयपक्षीय लाभ मिल सकते हैं ।

मनःशक्ति जड़ जगत और चेतन सत्ता के बीच का एक घटक है । इसलिए ज्ञात जीवन में उसका सर्वोपरि महत्त्व है । जीव विज्ञान (जेनेटिक साइन्स) की नवीनतम जानकारियाँ यह बताती हैं कि शरीर जिन कोशिकाओं से बना है, वह तथा शरीरगत परमाणु पूरी तरह मनःशक्ति के नियन्त्रण में हैं । यही नहीं वंशानुक्रम में भी वह गतिशील रहता है तथा मरणोत्तर जीवन में भी उसकी गतिशीलता समान रूप से बनी रहती है । फ्रायड की "सुपर ईगो" और "सेन्सस" की परिधि वाले मन को जर्मन मनोवैज्ञानिक हेन्सावेन्डर अतीन्द्रिय क्षमता तक ले जाने से सफल हुए । इसके लिए उन्होंने अनेक प्रमाण तक उपलब्ध कराए । टेलीपैथी पर अत्यधिक खोजबीन करने वाले रेने वार्कोलियर ने कहा है—"मन की व्याख्या पदार्थ विज्ञान के प्रचलित सिद्धान्तों द्वारा सम्भव नहीं ।"

मस्तिष्क की स्थिति जीवन-यापन के सामान्य क्रियाकलाप पूरे करने जितनी सीमित नहीं है अपितु उसमें एक से एक विलक्षणताएँ, सम्भावनाएँ प्रतीत होती हैं । वैज्ञानिक परमाणु में भार, घनत्व विस्फुटन तथा चुम्बकीय क्षेत्र आदि भौतिक परिचय देने वाले तत्वों की खोज करते हुए एक ऐसे सूक्ष्म विद्युतीय कण के सम्पर्क में आये हैं, जिनमें भौतिक परमाणु में पाये जाने वाले उपरोक्त एक भी लक्षण नहीं । यह विद्युत कण शरीरों के पोले भाग तथा समस्त आकाश में निर्बाध विचरण करते हैं । ये भौतिक परमाणुओं को भी वेधकर पार निकल जाते हैं, पर अभी तक कोई ऐसी यन्त्र प्रणाली या विज्ञान विकसित नहीं हो पाया, जो इन विद्युत कणों को कैद कर सके । जब तक वह पकड़ में न आये उनकी अन्तःसंरचना का अध्ययन कैसे हो ?

इन कणों की उपस्थिति का बोध भी उन्हीं के परस्पर टकराव की स्थिति में ही हो पाता है । गणित शास्त्री 'एड्रियाँ ड्राब्स' ने इनको 'न्यूट्रिनो' नाम दिया है । कुछ वैज्ञानिकों ने इसी तरह के कणों को 'साइन्नोन' नाम दिया है । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि जब मस्तिष्क के 'न्यूरोन' कण विचारों और भावनाओं के प्रवाह के रूप में इन कणों से सम्पर्क स्थापित करते हैं तो उस क्षणिक सम्पर्क से ही पूर्वाभास जैसी घटनाओं की अनुभूति होती है । इससे दो सत्य उद्घाटित होते हैं—(१) पहला यह कि ब्रह्माण्ड-व्यापी घटनाओं का मूल उद्गम एक है । यह उद्गम काल, दिशा और पदार्थ से अतीत है । संसार का नियम न और नियन्त्रण इसी के अधिकार में है । (२) मानवीय चेतना का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में इस उद्गम से निश्चित है ।

न्यूट्रिनो कणों का मनुष्य की मस्तिष्कीय चेतना तथा तन्तु समूह पर क्या और किस तरह प्रभाव पड़ता है ? इस पर गम्भीर शोधें चल रही हैं । वैज्ञानिक "एक्सेल फरसेफि" का कथन है कि यह कण जब मानसिक चेतना पर प्रभाव डालते हैं तो नई जाति के "माइन्जेन" नामक ऊर्जा कणों का जन्म होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह अनुमान है कि इस तत्व की व्यापक प्रक्रिया मस्तिष्क में चल पड़े तो मनुष्य सहज ही ब्रह्माण्ड-व्यापी ऊर्जा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने लगेगा और अपनी ज्ञान परिधि को इतना असीम बना लेगा कि उसकी कल्पना करना भी कठिन हो । उस स्थिति में मनुष्य धरती की एक बन्द कोठरी में ही वह सारे दृश्य फिल्म की भाँति देख सकेगा जो चन्द्रमा या मंगल पर जाकर कोई मनुष्य या उपकरण देख सकता है और उतना ही स्पष्ट ।

इन समस्त अलौकिक क्षमताओं के केन्द्र व्यक्ति-मस्तिष्क में विद्यमान हैं, किन्तु वे केन्द्र ही चेतना नहीं है । चेतन सत्ता उससे भिन्न और सर्वव्यापी है । व्यक्ति-मस्तिष्क उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकने में समर्थ है । कोट खूँटी पर टाँगा जा सकता है । खूँटी के गिर जाने पर उस पर टँगा कोट भी गिर जायेगा, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि खूँटी ही कोट है या कि कोटी ही खूँटी है । मानव-शरीर से निरन्तर विद्युत-चुम्बकीय, इन्फ्रारेड, अल्ट्रावायलेट आदि विकिरण होते रहते हैं । इसी से विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र बनता है । शरीर के भीतर के कार्बन, पोटेशियम, सोडियम, रेडियम, थोरियम, स्वर्ण, सीसियम, कोबाल्ट, आयोडीन आदि तत्व विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । मनुष्य की सम्पूर्ण त्वचा से पीजोइलेक्ट्रिक इफेक्ट, पाइरोइलेक्ट्रिक इफेक्ट, विद्युत चुम्बकीय विकिरण आदि प्रसारित भी होते रहते हैं तथा बाहर के ऐसे ही विकिरणों एवं प्रभावों (इफेक्ट्स) को मनुष्य की त्वचा ग्रहण भी करती रहती है । इन्हीं विकिरणों तथा प्रभावों के फलस्वरूप क्वाण्टम-फील्ड तैयार होता है । अर्थात् इनकी समन्वित प्रक्रिया का क्षेत्र । उस क्षेत्र की किरणों को क्वाण्टम किरणें कहते हैं । क्वाण्टम किरणें प्रकाश की गति से चलती हैं और उनका तरंग दैर्ध्य (वेवलेंथ) प्रायः १ सेन्टी मीटर होता है । उनकी फ्रीक्वेन्सी एक अरब 'हट्र्स' तक होती है । इसका अर्थ यह हुआ कि क्रमशः क्षीण होते जाने पर भी वे लाखों मील की दूरियाँ पार कर लेती हैं । अभी इनकी विस्तृत खोज सम्भव नहीं हो सकी है । इन क्वाण्टम किरणों द्वारा ही मनुष्य दूरस्थ नक्षत्र पिण्डों का प्रभाव ग्रहण करता है । साथ ही उसका प्रभाव दूर-दूर तक बिखरता भी रहता है ।

भौतिक विज्ञान परमाणु सत्ता की सूक्ष्म प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए, इस निष्कर्ष पर पहुँच रहा है, कि एक ही अणु में सक्रिय दो इलेक्ट्रॉनों को पृथक दिशा में खदेड़ दिया जाये तो भी उनके बीच पूर्व सम्बन्ध बना रहता है । वे कितनी ही दूर रहें दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह अपनी स्थिति का परिचय एक दूसरे को देते रहते हैं । एक इलेक्ट्रॉन को किसी तरह प्रभावित किया जाय तो इतनी दूर चले जाने पर भी दूसरा पहले इलेक्ट्रॉन के समान ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । इस सत्य का प्रतिपादन करते हुए आइन्स्टीन रोजेन, पाटोल्स्की जैसे महान वैज्ञानिकों ने भी यह माना है कि इस छोटे से घटक की यह गति निःसन्देह एक विश्व व्यापी ड्रामे का ही छोटा रूप हो सकता है ।

डॉ. फ्रिट्जाफ काफ्रा ने तो यहाँ तक स्वीकार कर लिया कि परमाणु का प्रत्येक घटक विश्व ब्रह्माण्ड का परिपूर्ण घटक है अर्थात्, प्रत्येक अणु में ब्रह्माण्ड सत्ता ओत-प्रोत है । अणु में विराट् ब्रह्माण्ड के दर्शन किए जा सकते हैं । यह पारस्परिक सम्बन्ध में इतने प्रगाढ़ हैं कि उन्हें कभी निरस्त नहीं किया जा सकता । जहाँ इस तरह का प्रयास होता है वहीं भयंकर दुष्परिणाम उपस्थित हो उठते हैं ।

वैज्ञानिक गेटे ने ब्रह्माण्डीय चेतना के अस्तित्व को कटु सत्य के रूप में स्वीकार किया है । रूडोल्फ स्टीनर ने भी गेटे के तथ्यों का पूर्ण समर्थन ही नहीं किया अपितु उसके आधार भी प्रस्तुत किए हैं । टामस हक्सले ने एक कदम आगे बढ़कर स्वीकार किया है कि ब्रह्माण्ड में एक मूलभूत चेतना काम कर रही है जो जीवाणुओं में तथा परमाणुओं में पृथक-पृथक ढंग से काम करती है । भारतीय दर्शन में ब्रह्म की परा और अपरा दो शक्तियाँ, इसी तथ्य का निरूपण करती हैं । इसकी पुष्टि उन्होंने अपनी "हेवेन एण्ड हेल" पुस्तक में विस्तार से की है ।

परमाणु की इलेक्ट्रॉन प्रक्रिया को यन्त्रों से जितना जाना जा सकता है, वह अत्यल्प है, अधिकांश की जानकारी गणितीय सिद्धान्तों पर होती है, उसी तरह जीवाणुओं की मूलभूत प्रक्रिया के लिए जो यन्त्र बनाया गया है, उसका नाम है "मस्तिष्क" । इस यन्त्र की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग-पद्धति से सर्वांग पूर्ण जानकारी कर लेने के कारण ही भारतीय दर्शन बेद वेदान्त के उस अलभ्य ज्ञान तक पहुँच गया, पर विज्ञान अभी तक मस्तिष्क के बारे में बहुत ही सीमित जानकारी ही प्राप्त कर सका है, शेष अविज्ञात को अन्धकार क्षेत्र 'डार्क एरिया' घोषित किया हुआ है । इसी कारण ब्रह्माण्डव्यापी सूक्ष्म सत्ता से अभी तक उसका तालमेल नहीं हो पाया । परमाणुओं की इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रिया का भी अधिकांश हल गणित के रूप में यह मस्तिष्क ही करता है । अतएव ब्रह्माण्डीय चेतना का स्वरूप पहचानने से पूर्व, मस्तिष्क की अर्थ इति जानकारी होना आवश्यक है । ज्ञात रहे कि जो अतीन्द्रिय घटनाएँ प्रकाश में आती हैं, उनमें भी प्रधान माध्यम मस्तिष्कीय बोध ही होता है चाहे वह पूर्व जन्म का ज्ञान हो, पूर्वाभास या भूत-प्रेतों के दर्शन ।

मानवीय काया में सन्निहित विलक्षण अति समर्थ अतीन्द्रिय क्षमताओं की उपलब्धि यद्यपि कठिन योगाभ्यास से ही सम्भव है, तथापि रेडियो की सुई घुमाते-घुमाते कई बार अनायास ही किसी प्रिय स्टेशन में लग जाती है । जबकि उसका साइकिल नम्बर अथवा 'फ्रिक्वेन्सी' का पता नहीं होता । उसी प्रकार दुनिया भर में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जिनमें ऐसी क्षमताओं के अयाचित उपलब्ध हो जाने के विवरण मिलते रहते हैं । यह घटनाएँ इस बात की प्रमाण हैं, कि मनुष्य उतना ही नहीं जितना वह स्थूल आँखों से हाड़ माँस के पिण्ड रूप में दिखाई देता है, अपितु उसकी सूक्ष्म और सनातन सत्ता तो अपने परमपिता की सर्वज्ञ, सर्वदर्शी सर्वसमर्थ सत्ता से ओत-प्रोत है ।

ड्यू मारियर की पुस्तक "पटेर टूवेट् एन" तथा डॉ. किपलिंग की "ब्रश बुड व्याप" पुस्तकों में इस तरह की घटनाओं तथा मान्यताओं का विस्तृत संकलन है । इनमें भवतव्यताओं के पूर्वाभास की सत्यता का समर्थन तो है, कारणों की विज्ञता से असमर्थता प्रकट की गई है । अमेरिका के मनोवैज्ञानिक डॉ. नेलसन वाल्ट का मत है, कि मनुष्य के अन्दर एक शक्तिशाली आत्म-चेतना काम करती है जिसे जिजीविषा तथा प्राणधात्री शक्ति कहते हैं । इस शक्ति में रोग निरोधक शक्ति तथा अन्य आत्मरक्षा जैसे अस्तित्व संरक्षण की क्षमताएँ भी सन्निहित हैं । परामनोविज्ञानवेत्ता हेरल्ड के कथनानुसार पूर्वाभास जागृत अवस्था में भी होते हैं जिनका सामयिक परिस्थितियों से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता । उन्होंने लिखा है कि एक वाहन चालक की बहिन को यह पूर्वाभास जागृत अवस्था में ही हुआ कि अमुक दिन उसके भाई की मृत्यु विमान दुर्घटना में हो जायेगी । उसने यह तिथि नोट कर ली और ठीक उसी दिन यह दुर्घटना सचमुच घटित हुई ।

विज्ञानवेत्ता जे. वी. राइन की धर्म-पत्नी को स्वप्नों में अनेक बार आश्चर्यजनक पूर्वाभास मिले । स्वयं वैज्ञानिक राइन ने पूर्वाभास स्वप्नों को सत्य पाया तो उन्होंने अपने शोध की दिशा को परामनोविज्ञान की दिशा में मोड़ दी । उन्होंने ४००० ऐसी घटनाएँ संकलित की जो स्वप्नों में हुए पूर्वाभास की सत्यता प्रतिपादित करती थीं । डॉ. राइन उनका कोई वैज्ञानिक आधार तो न पा सके, पर उन्होंने जो निष्कर्ष निकाले वह हैं—(१) मनुष्य के अन्दर कोई अविज्ञात चेतना विद्यमान हैं, जो सुदूर क्षेत्रों से सम्बन्ध बनाये हुए है, वही उपयुक्त अवसरों पर रहस्यमयी घटनाओं का उद्घाटन करती है । (२) परस्पर घनिष्ठ व्यक्तियों में सहज ही तथा मनस्वी व्यक्ति मन और भावनाओं की एकाग्रता द्वारा प्रयत्नपूर्वक भी इस तरह की घटनाएँ जान सकते हैं । (३) पुरुषों की अपेक्षा भावुक होने के कारण स्त्रियों में यह क्षमताएँ अधिक विद्यमान रहती हैं । स्त्रियों में धार्मिक अभिरुचि की प्रधानता भी इसका कारण हो सकती है । मनःशास्त्री हेनब्रुक ने भी इस तथ्य का समर्थन किया है । उन्होंने इसके लिए नारी की कोमलता, सहृदयता और सौम्य गुणों के आधिक्य को कारण माना है ।

भारी शरीर को अणु मात्र बना लेने की "अणिमा" सिद्धि, समाधिस्थ होकर जीवन चेतना को मस्तिष्क में धारण कर लेने की सिद्धि, प्राणायाम द्वारा शरीर के किसी भी अंग में वज्र की सी शक्ति धारण करने की सिद्धियाँ अब भ्रान्त प्रलाप कहीं जा सकती हैं, क्योंकि न तो इनके योगी अभ्यासी रहे न सिद्ध समर्थ, किन्तु पिछले ६ अप्रैल सन् ७४ को १०० वर्ष पूरे हो जाने पर भी इंग्लैण्ड के रावर्ट हड़ची की इस तरह की क्षमताओं की सारे इंग्लैण्ड में चर्चा रही । हड़ची ने एक बार सार्वजनिक प्रदर्शन में हाथ में मजबूती से बाँधी गई हथकड़ियाँ को धागे की तरह तोड़ दिया । उन्हें कमरे में बन्द कर ताला लगा दिया गया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिकारियों ने ताले को विधिवत् सील किया, किन्तु वे अभी अपना काम पूरा ही कर पाये थे कि हड़्ची पीछे से आ प्रकट हुए और बोले श्रीमान् जी इसकी क्या आवश्यकता ? इसी तरह उन्हें एक सुरंग में दबा दिया और कई दिन तक भी उसी में बन्द रहने दिया गया । नियत समय पर हड़्ची निकाले गए तो हड़्ची ऐसे लग रहे थे, मानो वे अभी-अभी सो कर उठे हों ।

शरीर को जिन पदार्थों से पोषण मिलता है, वे भौतिक और दृश्य रूप में तो प्राकृतिक साधनों प्राकृतिक-प्रक्रिया से उपलब्ध होते हैं, पर ऐसे सभी पदार्थ वायुभूत अवस्था में अपार मात्रा में उपलब्ध होते हैं । अपनी अतीन्द्रिय चेतना को सक्षम बनाकर योगीजन इन वायवीय तत्वों से ही पोषण पा सकते हैं । स्वामी विवेकानन्द ने अपने समय के सिद्ध योगी पौहारी बाबा में ऐसी क्षमता का उल्लेख कर लिखा है, कि उन्होंने मुद्दतों तंक न जल पिया न अन्न खाया, तथापि उनका शरीर कतई क्षीण नहीं हुआ । इस स्थिति में मल-मूत्र विसर्जन, सोने, उठने आदि की भी कोई आवश्यकता नहीं होती । उन पर ताप और असह्य शीत का भी कोई प्रभाव नहीं होता ।

पाण्डिचेरी के चीफ जस्टिस (ब्रिटिश शासन काल) जेकालियट ने लिखा है—एक बार एक साधु ने मुझे कुछ लिखकर अपने पास रखने को कहा—'मैंने एक कागज पर लिखकर जेब में रखा । थोड़ी देर में साधु ने एक कागज पर वही लिख दिया जो मैंने लिखा था ।'

ड्यूक विश्वविद्यालय के डॉ. जे. वी. राइन ने अपनी पुस्तक "न्यू फ्रण्टियर्स ऑफ माइण्ड" मस्तिष्कीय विलक्षणता पर गम्भीर प्रकाश डाला है और यह संकेत दिया है कि मस्तिष्क की सम्पूर्ण संरचना तथा क्रिया प्रणाली के ज्ञात हो जाने से मनुष्य के लिए संसार में कुछ भी असम्भव न रह जायेगा, यहाँ तक कि हथेली में सरसों उगाना तथा हवा में खेती करना भी ।"

मनःचेतना की उच्चस्तरीय पर्त को, विज्ञानमय कोश को यदि जागृत, समर्थ और परिष्कृत बनाया जा सके, तो निःसन्देह उसके सत्परिणाम इतने महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, जिनकी तुलना में बढ़ी-चढ़ी भौतिक सामर्थ्य को भी तुच्छ सिद्ध किया जा सके ।

विज्ञानमय कोश की अतीन्द्रिय सामर्थ्य

चेतना के चतुर्थ आयाम, विज्ञानमय कोश की मूर्छना यदि दूर की जा सके तो सूक्ष्म जगत के साथ सम्बन्ध जुड़ सकता है और उस क्षेत्र में बिखरी पड़ी ऐसी विभूतियों का लाभ मिल सकता है, जो सर्वसाधारण के लिए सामान्यतया उपलब्ध नहीं है ।

कभी-कभी विज्ञानमय कोश की विशेषता अनायास ही उग जाती है । निर्जल द्वीपों में भी फलदार वृक्ष पाये गए हैं । यह वहाँ की अपनी उपज नहीं है, वरन् चिड़ियों की वीट में वे बीज उधर पहुँचे और उगे हैं । ऐसे अनायास सुयोग भी कई सामान्य व्यक्तियों को ऐसे लाभ देते हैं, जिन्हें अद्भुत एवं अप्रत्याशित ही कहा जा सकता है । प्रयत्नपूर्वक यह क्षमता व्यवस्थित रूप से जगायी जा सकती है । इस सन्दर्भ में समय-समय पर उपलब्ध होती रहने वाली घटनाएँ यह बताती हैं कि दिव्य अनुभूतियों की कोई सत्ता-व्यवस्था इस संसार में निश्चित रूप से विद्यमान है ।

दिव्य दर्शन का लाभ जागृत अनुभूतियों की तरह स्वप्न में भी मिल सकता है । सजग मस्तिष्क जिस समय निद्रित स्थिति में होता है, उस समय 'अचेतन' को अधिक स्वतन्त्रता रहती है, अस्तु उस स्थिति में वह और भी अधिक अच्छी तरह अपनी क्षमता का परिचय दे सकता है । ऐसी कितनी ही घटनाएँ हैं, जिनमें कुछ लोगों को स्वप्न में दिव्य दर्शन का लाभ मिला है ।

गेटे ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उसे एक दिन अचानक यह अनुभूति हुई कि सिसली में भयंकर भूकम्प आया है । उस समय उसने इसे ऐसे ही भ्रम समझा, पर कुछ ही समय में समाचार पत्रों में जब सिसली के भयंकर भूकम्प का विवरण छपा तो उसने जाना कि वह अनुभूति एक यथार्थता थी । प्रसिद्ध लेखक जानेवन स्विफ्ट ने अपनी एक पुस्तक में "मंगल ग्रह के दो चन्द्रमा होने और उनमें से एक की चाल दूसरे से दूनी होने" की बात लिखी है । उस समय वह बात गप्प समझी गई थी, पर उस लेख के १५० वर्ष बाद सन् १८७७ में जब वाशिंगटन की 'नेवल ऑवजरवेटरी' में शक्तिशाली दुर्बीन से उस कथन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की सत्यता घोषित की गई तो लोगों ने उस दिव्य-दर्शन पर आश्चर्य प्रकट किया कि बिना किसी साधन के ऐसी जानकारी किस प्रकार सम्भव हो सकी ।

जे. डब्ल्यू. डने के ग्रन्थ 'एन एक्सपेरिमेण्ट विद टाइम' में ऐसे अनेक विवरणों का संग्रह है, जिनमें समय से पूर्व मिली जानकारियाँ समय आने पर बिल्कुल सही सिद्ध हुईं ।

'दि आर्ट ऑफ थॉट' के लेखक विद्वान ग्राहमवालास ने लिखा है कि सृजनात्मक चिन्तन अनायास ही नहीं फूट पड़ते । पहले-पहले उनका अनुमान आभास होता, पीछे वे हाँड़ी के चावलों की तरह मस्तिष्क में पड़े-पड़े पकते रहते हैं । माता के पेट में प्रविष्ट हुए भ्रूण की तरह यह आभास अनगढ़ होते हैं, किन्तु भीतर ही भीतर कोई अविज्ञात चेतना उन्हें अपने ढंग से पकाती रहती है । तदुपरान्त ऐसी स्थिति आती है, जिसे उत्साह और विश्वास का सम्मिश्रण कह सकते हैं । इस स्थिति में अपने आपको लगता है, कोई व्यावहारिक आधार हाथ लग गया । इसी स्थिति के परिपक्व विचार ही इस लायक होते हैं कि उन्हें गुण-अवगुण की कसौटी पर तर्क और बुद्धि के सहारे परखा जा सके । इतनी मंजिलें पार कर लेने के उपरान्त किन्हीं महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक अनुमानों को व्यावहारिक बन सकने की स्थिति तक पहुँचने का अवसर मिलता है ।

आइन्स्टीन से पूछा गया कि उन्होंने रिलेटिविटी के सिद्धान्त का सर्वप्रथम आभास किस प्रकार पाया ? तो उन्होंने उत्तर दिया—'इट हैपेण्ड' अर्थात् यह अनायास ही सामने ही आ खड़ा हुआ । रेडियम खोज के सम्बन्ध में जब क्यूरी ने पूछा गया तो, उनका उत्तर भी इसी से मिलता-जुलता था । संसार में जो कुछ अद्‌भुत और असाधारण है, उसका उदय भाव सम्वेदना के क्षेत्र से होता है । विज्ञान की उपलब्धियों के सूत्र संकेत भी उसी क्षेत्र से मिले हैं और दार्शनिक क्षेत्र के अद्‌भुत विचारों का उदय भी वहीं से हुआ है । अन्तःकरण को मस्ती से भर देने वाली और लोक-मानस को झकझोर देने वाली दिव्य सम्वेदनाओं का उद्‌गम, भाव-सम्वेदनाओं की गहरी तली से ही उभर कर ऊपर आता है ।

विज्ञान क्षेत्र में हुए अनेकानेक आविष्कारों का आरम्भ कहाँ से हुआ ? इस प्रश्न का सर्वत्र एक ही उत्तर मिलेगा कि—'वह सम्भावना अनायास ही सूझ पड़ी ।' मात्र सूझ ही नहीं पड़ी, वरन् अन्तःकरण में किसी ने यह विश्वास भी दिलाया कि यह आभास भ्रम जंजाल नहीं, वरन् सर्वथा सत्य है । इस आश्वासन भरे आभास के सहारे ही उन लोगों ने अपनी खोजें अधिक गम्भीरता, अधिक तत्परता और अधिक तन्मयता के साथ प्रारम्भ कीं । फलतः उनका पथ-प्रशस्त होता चला गया और थोड़े से प्रयत्न ने आश्चर्यजनक सफलता उनके सामने लाकर खड़ी कर दी । प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण आविष्कारों का आरम्भ इसी प्रकार होता रहा है ।

जेम्स वाट के एक आविष्कार की कहानी स्वप्न संकेतों के साथ जुड़ी हुई है । उन दिनों बन्दूक के छर्रे सीसे का तार काट-काटकर बनाये जाते थे । वह कोई ऐसा सुगम, सस्ता तरीका ढूँढ़ना चाहता था । जिससे छर्रे अपेक्षाकृत सुन्दर भी बनें ।

उन्हीं दिनों एक रात जेम्स वाट ने सपना देखा कि वह कहीं जा रहा है । आँधी आई और पानी बरसा । पानी की बूँदों की जगह उसके सिर पर सीसे के गोल छर्रे बरस रहे हैं । आँखें खुलने पर उसने इस विचित्र सपने को मन की भटकन भर माना और विशेष ध्यान नहीं दिया, किन्तु वही सपना कई रात लगातार उसी तरह आता रहा । तब वाट ने उसका संकेत खोजा । उसे लगा किसी ऊँची जगह से गर्म सीसा पिघला कर पानी के तालाब में डाल कर प्रयोग करने पर छर्रे बन जाने की सम्भावना का यह संकेत हो सकता है । बड़ी कठिनाई से प्रयोग के लिए एक ऊँची इमारत उसे मिली जिसकी दीवार से सटा हुआ जलाशय भी था । जेम्स ने गर्म सीसे की बूँदें ऊपर से गिराईं और पानी में गिरने पर ये गोल छर्रे के रूप में बदल गईं । वाट का आविष्कार सफल हुआ और तभी से बन्दूक में काम आने वाले गोल छर्रे बनने लगे ।

पेन्सिलवेनिया यूनिवर्सिटी के प्रो. लेम्बरटन एक वैज्ञानिक गुत्थी को वर्षों से सुलझाने में लगे हुए थे, पर कोई समाधान सूझ नहीं पड़ता था । अचानक एक रात उन्होंने वह हल दीवार पर चमकता देखा । पाया गया कि वह उत्तर पूरी तरह सही था ।

कोलरिज, गेटे, स्टीवेन्सन, ब्लेके सरीखे मूर्धन्य कवियों को अपनी सर्वश्रेष्ठ कविताओं की पृष्ठिभूमि स्वप्नों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में ही उपलब्ध हुई है । गणित और दर्शन का समन्वय करने वाले विलक्षण दार्शनिक रेने देकार्त ने अपने प्रतिपादन का आधार स्वप्न में ही ढूँढ़ा था ।

गणित सिद्धान्तों के आविष्कारों के सम्बन्ध में खोज करने वाले विद्वान हेनरी फेहर ने संसार के ६६ गणितज्ञों के सम्बन्ध में जानकारी एकत्रित करने पर यह पाया कि उनमें ५१ को गणित के गूढ़ सिद्धान्तों को ढूँढ़ निकालने में स्वप्न संकेतों से ही असाधारण सहायता मिली है ।

हालैण्ड के "डच सोसाइटी फार साइकिकल रिसर्च" के सुविस्तृत अनुसन्धानों में एक विचित्र घटना यह भी दर्ज है, कि एक व्यक्ति ने ३६८४ की संख्या कई दिन स्वप्न में लगातार देखी । वह उसका और कुछ मतलब तो न समझ सका, पर उसी नम्बर का लाटरी टिकट खरीद लिया । उसे सन् १९४८ का लाटरी का प्रथम पुरस्कार मिला ।

सिलाई की मशीन का आविष्कर्त्ता ऐलियास उस अति उपयोगी यन्त्र का ढाँचा प्रायः तैयार कर चुका था, पर उसके लिए उपयुक्त सुई कैसे बने वह समझ में नहीं आ रहा था । जितनी तरह की सुइयाँ बनाईं वे सभी असफल हुईं । ऐलियास की उधेड़-बुन और चिन्ता बढ़ती जाती थी, पर कोई तरकीब हाथ नहीं लग पा रही थी ।

एक रात ऐलियास ने सपना देखा, कि सिलाई की मशीन चौबीस घण्टे में बनकर तैयार करने की उसे राजाज्ञा मिली है । वह पूरा नहीं कर पाया तो उसे मार डालने का फरमान निकला और मारने के लिए घुड़सवार भाले लेकर वधस्थल पर जमा हो गए । भालों को उसने भय और आतंक के साथ देखा उनकी नोंको में छेद थे । सपना समाप्त हो गया । आँख खुलते ही एलियास को नई दिशा मिली । उसने सुई की पैनी नोंक पर ही छेद किया और मशीन में उल्टी चलने के लिए लगा दिया । बस आविष्कार पूर्ण हो गया ।

उन दिनों विज्ञान के क्षेत्र में परमाणु को मान्यता तो मिल गई थी, पर उसका स्वरूप स्पष्ट न था । विज्ञानी नील्स बोहर के इसी के शोध प्रयास में भारी माथा-पच्ची कर रहा था, पर कोई सूत्र कहीं से हाथ नहीं लग रहा था ।

एक दिन उसने सपना देखा कि—"वह सूर्य के बीचों बीच जलती ज्वालाओं में खड़ा है । अनेकों ग्रह-नक्षत्र उसके इर्द-गिर्द घूम रहे हैं । नील्स सीटी बजाता है, गैस ठण्डी हो जाती है और सूरज टूट कर टुकड़े-टुकड़े बिखर जाता है । वे टुकड़े फिर अपने केन्द्र का चक्कर काटना शूरू कर देते हैं । सपना समाप्त हुआ और नील्स हड़बड़ा कर उठ बैठा । यह दृश्य अजीव भी था और भयंकर भी । उसने उसे निरर्थक नहीं माना, वरन् अपने शोध विषय में किसी अज्ञात सहायता के संकेत की तरह लिया । अणु संरचना की उसने संगति बिठाई कि सूर्य की तरह उसके मध्य में 'नाभिक' है और उसके इर्द-गिर्द इसी के खण्ड इलेक्ट्रॉमों के रूप में चक्कर लगाते हैं । इस अनुमान पर वह अपनी खोज चलाता रहा और अन्ततः उसे पूर्णतया सत्य पाया । विज्ञान को परमाणु के स्वरूप का निर्धारण करा सकने में नील्स का वह सपना कितना आधारभूत सिद्ध हुआ, यह समझा जा सके तो प्रतीत होगा कि आध्यात्म की उपलब्धियों ने विज्ञान की प्रगति में कितनी बहुमूल्य सहायता की है ।

पैरिस (फ्रांस) की आध्यात्मवादी शोध संस्था "रिसर्चेस साइकोलॉजिक ऑफ कॉरिस्पाण्डेन्स सर ला मैग्नेटिज्म वाइटल एन्ट्रेअना सालिटियर एट एम डिल्यूज" के अध्यक्ष डॉ. विल्लाट ने मनुष्य में पायी जाने वाली अतीन्द्रिय क्षमता के सम्बन्ध में गहरी खोज-बीन संस्था के माध्यम से और निजी तौर से की है । उन्होंने आत्म-शक्ति को भी भौतिक शक्ति के ही समतुल्य माना है ।

सुकरात कहते थे मेरे भीतर एक 'डेमन' रहता है । उसी के सहारे वे दूरानुभूति के आश्चर्यजनक प्रमाण प्रस्तुत करते थे । गेटे को भी ऐसी ही अदृश्य अनुभूति होती थी, जिनका कोई प्रत्यक्ष आधार तो नहीं था, पर वे प्रायः सत्य ही सिद्ध होती थीं । यह 'डेमन' क्या हो सकता है । इसके उत्तर में उन्होंने स्वयं ही कहा था—'यह सुविकसित अन्तःकरण का ही दूसरा नाम है, किसी प्रेत बेताल का नहीं ।"

मनःशास्त्र के महामनीषी डॉ. जोसेफ राइन ने सर्वप्रथम अतीन्द्रिय विज्ञान पर अपनी वैज्ञानिक आधार पर लिखी हुई पुस्तक 'एक्ट्रा सेन्सरी परसेप्सन' प्रकाशित कराई थी । तब से लेकर अब तक इस सन्दर्भ में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शोधकार्य बहुत आगे चला गया है । डॉ. जोसेफ ने प्रायः ८५ हजार घटनाओं की साक्षियों का विश्लेषण करके कुछ निष्कर्ष निकाले थे । उसने कहा है—"बिना संचार साधनों की सहायता के एक मन दूसरे मन को प्रभावित कर सकता है । मन में पदार्थों को प्रभावित करने की सामर्थ्य मौजूद है । मनःशक्ति की लम्बी दौड़ में दूरी ताप, ऊँचाई, गहराई अथवा अन्य कोई भौतिक कारण व्यवधान उत्पन्न नहीं करते ।

रूसी परामनोविज्ञान वेत्ता एल. एल. वेसिलियेव ने इलेक्ट्रो मैग्नेटिज्म-एक्सरेज आदि के व्यवधान उत्पन्न करके यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि मन की दूरबोध शक्ति में उनके कारण कोई अड़चन उत्पन्न होती है या नहीं, पर पाया-यही गया कि जिनमें यह शक्ति मौजूद है, उनका कार्य प्रत्येक वैज्ञानिक बाधा के बावजूद यथावत् चलता रहता है । मन की क्षमता को कोई भौतिक शक्ति प्रभावित नहीं करती । इससे वे यह सोचने को बाध्य होते हैं कि मन की शक्ति कोई अभौतिक शक्ति हो सकती है ।

हनावा होकीची जापान के मुसाशी प्रान्त का रहने वाला व्यक्ति सात वर्ष की आयु में अन्धा हो गया था, किन्तु उसने अपना जीवन उच्चकोटि के विद्वानों को इकट्ठा कर उन्हें पढ़ाने में बिताया । उसने स्वयं ने सुनकर पढ़ा था और अपनी बौद्धिक क्षमता को इतना प्रखर बनाया था कि ४००००० हस्तलिपि की विषय-सूची तैयार कर सकता था । उसने एक ऐसी पुस्तक संकलित की, जिसके २८२० खण्ड हैं । ऐसी विशाल पुस्तक आज तक दुनिया में किसी ने भी नहीं लिखी । उसने बागाक्से में एक स्कूल भी खोला, जिसमें जापानी साहित्य पढ़ाया करता था ।

स्पेन की सर्वश्रेष्ठ समझी जाने वाली इमारत 'इस्कोपियल' वहाँ के राजा फिलिप द्वितीय ने अपनी पत्नी मेरी ट्यूडार की स्मृति में बनवायी थी । उसमें यह भी व्यवस्था थी कि राजाओं की मृत्यु के बाद उन्हें इन्हीं में बनी कब्रों में दफनाया जाया करे । फिलिप को एक भविष्यवक्ता ने बताया था, कि उसका राजवंश २४ पीढ़ी तक चलेगा । उस कथन पर राजा को पूरा विश्वास था । इसीलिए उसने २४ कब्रें ही बनवाकर रखीं । आश्चर्य यह है कि भविष्यवाणी पूर्णतया सच निकली । रानी मेरिया क्रिस्टिना को सन् १६२६ में २३वीं कब्र में दफनाया गया । इसके बाद २४वें राजा अलफोनो को दो वर्ष बाद ही गद्दी छोड़नी पड़ी । साथ ही राजतन्त्र का भी अन्त हो गया । वहाँ गणतन्त्र स्थापित हुआ और अलफोनो स्पेन का अन्तिम चौबीसवाँ राजा कहलाया ।

"इसिंस अनवेल्ड" ग्रन्थ में ऐसे कितने ही उल्लेख हैं जिनमें विचार-शक्ति द्वारा दूसरों को भले या बुरे प्रयोजन के लिए प्रभावित किए जाने के उल्लेख हैं । पुस्तक में "सैक्यूज पेलिसियर" नामक व्यक्ति का उल्लेख है जो अपनी वेधक दृष्टि से चिड़ियाँ को मूर्च्छित करके पकड़ लेता था और अपनी आजीविका चलाता था । डॉक्टर एसगर ने अपनी साक्षी सहित वह विवरण विस्तारपूर्वक प्रकाशित कराया है, जिसमें उपरोक्त व्यक्ति उड़ती चिड़ियों को किस प्रकार वशवर्ती करके उनके प्राण-हरण करता था ।

विचारों से वस्तुओं को प्रभावित करने की विद्या "साइकोमेट्री" के नाम से जानी जाती है । जिन पदार्थों का जिस प्रयोजन के लिए प्रयोग होता रहा है, वे उससे भर जाते हैं और फिर जहाँ भी उनका प्रयोग होता है । वहाँ वे उस क्षमता का परिचय देते हैं, जो उन्होंने दीर्घकालीन सम्पर्क से संचित की थीं ।

ड्यूक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जी. वी. राइन ने अतीन्द्रिय ज्ञान से सम्पन्न कितने ही व्यक्तियों की क्षमताओं को जाँचा और तथ्यपूर्ण पाया है । विज्ञानी कैरिंग्टन के शोधकार्य में भी मनुष्यों ने अतीन्द्रिय शक्ति पाये जाने की यथार्थता स्वीकार की गई है ।

डॉ. ब्रोरो, डॉ. वेगनर, डॉ. वेकची, डॉ. चेना आदि मूर्धन्य शरीर शास्त्रियों की एक मण्डली ने विश्व भ्रमण करके योगियों की विलक्षणताओं का पता लगाया था । उन्होंने अपने अनुभवों में कितने ही योगियों का वर्णन किया है, जिनमें ऐसी असामान्य क्षमताएँ पायीं, जिन्हें आश्चर्यजनक कहा जा सके ।

अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न व्यक्तियों तथा घटनाओं के ऐसे उदाहरण आये दिन देखने को मिलते हैं, जिनसे सिद्ध होता है, कि मस्तिष्क का समान्य ज्ञान एवं कौशल ही सब कुछ नहीं है । सूक्ष्म जगत में ऐसा बहुत कुछ है, जो सामान्य लोगों को उपलब्ध नहीं है । इसे प्राप्त करने के लिए अचेतन मन की उस पर्त को परिपुष्ट करना पड़ता है, जिसे आत्म-विज्ञान में विज्ञानमय कोश नाम दिया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य की चमत्कारी अतीन्द्रिय चेतना

मोटी दृष्टि से मनुष्य हाड़-माँस का पिण्ड और सोचने, बोलने वाला पौधा मात्र समझा जाता है । स्थूल विश्लेषण करने पर अन्य प्राणियों की तुलना में अनेक प्रकार से पिछड़ा हुआ प्राणी है भी वैसा ही । पर जब सूक्ष्म दृष्टि से उसका पर्यवेक्षण किया जाता है तो उसकी बौद्धिक एवं भावनात्मक क्षमता में असीम सम्भावनाएँ सन्निहित दृष्टिगोचर होती हैं ।

कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति करके वह सृष्टि का मुकुटमणि बना है यह उसकी बौद्धिक क्षमता का प्रमाण है । सहानुभूति की कोमल सम्वेदनाओं ने पारस्परिक सम्बन्धों को कितना मधुर बनाया है और आत्म-चिन्तन के क्षेत्र में कितना रस विभोर रह सकने का अवसर प्रदान किया है यह उसकी भावनात्मक विकास प्रक्रिया का परिचय है । अन्य प्राणी इस दृष्टि से कितने अधिक पिछड़े हुए हैं । उनके साथ तुलना करते हुए प्रतीत होता है कि मनुष्य को वैसा ही श्रेय सौभाग्य मिला है जैसा कि हम अपनी तुलना में देवताओं के बारे में सोचते हैं ।

मनुष्य की अतीन्द्रिय चेतना तो और भी आश्चर्यजनक है । मस्तिष्क को जादुई पिटारा कहा जाता है । यह उसके सामान्य चिन्तन की व्याख्या है । इससे भी गहरे अन्तराल में उतरने पर प्रतीत होता है कि उसमें वे दिव्य चेतनाएँ भी भरी हैं, जिन्हें आलौकिक और अतीन्द्रिय कहा जा सकता है । जिनकी व्याख्या सामान्य मस्तिष्कीय गतिविधियों के आधार पर नहीं की जा सकती ।

हमारे पूर्व पुरुष योग साधना के आधार पर उस दिव्य चेतना को विकसित करने में बहुत बड़ी सीमा तक सफल हुए थे । पिछले दिनों आलस्यवश वे क्षमताएँ गवाँ दी गईं । उनके स्थान पर बाजीगरी की ठग-विद्या को प्रश्रय मिल गया । तथाकथित चमत्कार धूर्त लोगों द्वारा मूर्खों को भ्रमग्रस्त करके स्वार्थ साधन के लिए प्रयुक्त किए जाते रहे । उससे योग विज्ञान के प्रति लोगों की अश्रद्धा बढ़ती गई ।

अब विज्ञान के आधार पर मनुष्य की अतीन्द्रिय चेतना को खोजा जा रहा । दिन-दिन अधिक उत्साहवर्धक प्रमाण सामने आ रहे हैं । लगता है, यह प्रगति हमें उस स्थान तक पहुँचा देगी, जहाँ हम पूर्व पुरुष विकसित आत्म शक्ति के सहारे देव भूमिका का निर्वाह करने में सफल हुए थे ।

फ्रांसीसी परामनोविज्ञान वेत्ता डॉ. पाल गोल्डीन अतीन्द्रिय चेतना की जानकारी सर्वसाधारण को देने और उसकी उपयोगिता समझाने के लिए संसार भर में दौरा कर चुके हैं । वे भारत भी आये थे । यहाँ उन्होंने प्रबुद्धजनों की गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था—पाँच ज्ञानेन्द्रियों को सुनने, बोलने, देखने, सूँघने तथा स्पर्शानुभूति क्षमता से हम सभी परिचित हैं, पर इनसे भी महत्त्वपूर्ण एक और शक्ति है, पराचेतना शक्ति, जिसे छठी इन्द्रिय कहा जा सकता है । आश्चर्य है कि हम लोग इस बलवती सामर्थ्य के बारे में बहुत कम जानते हैं । किन्हीं-किन्हीं में यह संयोगवश प्रकट होती है और देखने वालों को आश्चर्य चकित करती है किन्तु वह आकस्मिक नहीं है । प्रयत्नपूर्वक उसे बढ़ाया जा सकता है और उससे अधिक लाभ उठाया जा सकता है, जो पाँच ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से प्राप्त किया जाता है ।

सुकरात कहते थे, मेरे भीतर एक 'डेमन' रहता है । उसी के सहारे वे दूरानुभूति के आश्चर्यजनक प्रमाण प्रस्तुत करते थे । गेटे को भी ऐसी ही अदृश्य अनुभूतियाँ होती थीं, जिनका कोई प्रत्यक्ष आधार तो नहीं था, पर वे प्रायः सत्य ही सिद्ध होती थीं ।

यह 'डेमन' क्या हो सकता है, उसके उत्तर में उन्होंने स्वयं ही कहा था, यह सुविकसित अन्तःकरण की ही दूसरा नाम है, किसी प्रेत वेताल का नहीं ।

आध्यात्म सिद्धान्तों को विज्ञान ने आरम्भ में निराधार भावुक मान्यताओं की संज्ञा दी थी और कहा था, उनका कोई प्रामाणिक आधार नहीं है, पर अब वैसी बात नहीं रही । चेतना के क्षेत्र में जो खोजें हुई हैं । उन्होंने यह तथ्य सामने खड़ा कर दिया है, कि मस्तिष्क मात्र चिन्तन का एवं शरीर संचालन का ही उत्तरदायित्व निभाने तक सीमित नहीं है । उसकी परिधि इतनी व्यापक है कि अतीन्द्रिय अनुभूतियों का भी तथ्य स्वीकार कर लिया जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परामनोविज्ञान को आरम्भ के दिनों में भूत विद्या जैसी जादुई चर्चा कहा गया था । पीछे तथ्यों ने उसकी गम्भीरता और वास्तविकता मानने के लिए विवश कर दिया । अमेरिका की विज्ञान संस्था (ए. ए. ए. एस.) ने सन् १९६९ में परामनोविज्ञान संस्था को अपना पूर्ण सदस्य माना और उसके प्रतिनिधि प्रथम बार सन् १९७० में अन्य वैज्ञानिकों के साथ बैठे । परामनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, उसमें मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले और मस्तिष्क द्वारा प्रभावित होने वाले सभी आधारों को सम्मिलित रखा गया है । उसकी एक शाखा अतीन्द्रिय विज्ञान की है, जिसे पी. एस. आई. कहा जाता है । इसमें टेलीपैथी, पूर्व ज्ञान, अतीन्द्रिय दृष्टि, भविष्य, आभास स्वप्न बोध, साइकोकाइनेसिस आदि धाराएँ सम्मिलित हैं ।

विचार संचालन, टेलीपैथी के अन्तर्गत बिना यन्त्रों संकेतों या इन्द्रियों की सहायता के दूरस्थ व्यक्तियों द्वारा परस्पर विचार विनिमय की प्रक्रिया आती है । अतीन्द्रिय दृष्टि में बिना आँखों की सहायता के दृश्यों को देखा जाना सम्मिलित है । पूर्व ज्ञान से बीती हुई घटनाओं को जानना और भविष्य ज्ञान में भावी सम्भावनाओं का परिचय प्राप्त करने की बात है । स्वप्न बोध में, स्वप्नों में व्यक्ति की स्थिति अथवा अविज्ञात घटनाक्रमों के भूतकालीन अथवा भावी संकेत समझे जाते हैं । साइकोकाइनेसिस के अन्तर्गत मस्तिष्क का वस्तुओं पर पड़ने वाला प्रभाव आँका जाता है । लूथर वरबेन्क ने पौधे, फूल, कीड़े, पक्षी और पशुओं पर अपनी भाव सम्वेदनाओं के भिन्न-भिन्न प्रभाव डालने में जो सफलता प्राप्त की है, उससे शोधकर्त्ताओं का उत्साह बहुत बढ़ा और वे न केवल प्राणियों पर, वरन् पदार्थों पर भी विचार शक्ति के आश्चर्यजनक प्रभावों को प्रमाणित कर सकने में सफल हुए ।

मनोविज्ञान शास्त्र के जन्मदाताओं में अग्रणी फ्रायड ने अपने अनुसंधान प्रकरण में 'अवचेतना' का वर्णन किया है । फ्रेडरिक मायर्स ने उसे 'सुप्रालिमिनल सेल्फ' की संज्ञा दी थी । इसी सन्दर्भ में 'सब लिमिनल सेल्फ' को भी गिना जा सकता है । इसे हम उप चेतना कह सकते हैं ।

मायर्स ने उप चेतना की अतीन्द्रिय शक्ति का विस्तृत विवेचन किया है, उसकी सम्भावनाओं पर ब्यौरे बार प्रकाश डाला है । उनका कथन है कि बिना इन्द्रियों की अथवा उपकरणों की सहायता के भी मानवी मस्तिष्क इतना कुछ जान सकता है, जिसे सामान्य नहीं असामान्य कहा जा सके । विशेष व्यक्ति विशेष अवसरों पर भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पूर्व परिचय देते देखे गए हैं । अथवा तत्काल उसका विवरण बता देते हैं । अशरीरी प्रेतात्माओं द्वारा ऐसे प्रमाण प्रस्तुत करा सकना, जिनसे उनके अस्तित्व की प्रामाणिकता सिद्ध होती हो, इसी रहस्य ज्ञान के अन्तर्गत आता है । किन्हीं व्यक्तियों को अनायास ही प्रेरणा मिलती देखी गई है जिसे अपनाकर उन्होंने प्रगति के नये सोपान उपलब्ध किए हैं ।

मायर्स यों वैज्ञानिक थे और उनकी प्रतिपादन प्रणाली पूर्णतया वैज्ञानिक थी, फिर भी उसका स्वयं का जीवन बड़ा रहस्यवादी रहा । उन्हें निज के जीवन में ऐसी अनुभूतियाँ होती रहीं जो रहस्यमय जगत के अस्तित्व को प्रमाणित करती थीं । अन्ततः उसने इस सम्बन्ध में विधिवत् शोधकार्य आरम्भ किया । पीछे हेनरी सिजविक नामक एक दूसरे वैज्ञानिक का सहयोग उसे प्राप्त हुआ । उन लोगों ने मिलकर ऐसे तथ्यों का संकलन किया, जिनसे अदृश्य जगत और अतीन्द्रिय चेतना को चुनौती देकर सिद्ध किया जा सकता था । पीछे इन लोगों ने सुप्रसिद्ध "साइकिकल रिसर्च सोसाइटी" की स्थापना की, उसके प्रामाणिक शोध कार्यों से प्रभावित होकर ब्रिटेन के दो प्रख्यात प्रधान मन्त्री बालफूर और ग्लेडस्टन भी उस संस्था के सदस्य बने और एलफ्रेडवालेस, आलिवरलाज, विलियम क्रुक्स, डब्ल्यू. एफ. बैरेट जैसे सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने उस कार्य में उत्साहपूर्वक योगदान दिया ।

विचार संचार विद्या को टैलीपैथी नाम मायर्स का ही दिया हुआ है । टैली अर्थात् दूरवर्ती—पैथी अर्थात् अनुभूति । रेडियो संचार से भी अधिक द्रुतगति से विचारों की तरंगें बहती हैं और वह देशकाल की समस्त मर्यादाओं को लाँघती हुई क्षण भर में ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में जा पहुँचती हैं । इसी प्रकार उसने अतीन्द्रिय विद्या के अन्य पक्षों पर बहुत कुछ खोजा, जाना, संग्रह किया और पुस्तक रूप में प्रकाशित किया, यह सामग्री इस योग्य थी कि उसके पीछे भी उत्साहपूर्वक उस दिशा में प्रयास जारी रखे जा सकते थे तथा रखे भी गए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अदृश्य लोक पर मायर्स का अटूट विश्वास था । जनवरी सन् १९०१ में उनकी मृत्यु हुई । मरते समय उन्होंने बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में अपने मित्रों से कहा—"एक अनदेखे और अनजाने देश में छुट्टियाँ बिताने भर के लिए जा रहा हूँ ।"

दूरानुभूति क्रमशः एक अकाट्य तथ्य सिद्ध होती चली गई । परामनोविज्ञान को विश्व विद्यालयों के पाठ्य-क्रम में सम्मिलित किया गया । इस दिशा में पहला कदम उत्तरी केरोलिना के ड्यूक विश्वविद्यालय ने उठाया । डॉ. राइन के नेतृत्व में परीक्षण का जो सिलसिला चला, उससे प्रामाणिकता परिपुष्ट ही हुई । पीछे अन्य विश्व विद्यालयों ने उसका अनुगमन किया । क्वीनमेरी कालेज के गणित प्राध्यापक डॉ. एस. जी. सोल, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के डॉ. ह्वाटले कैरिंगटन की खोजों से अतीन्द्रिय विज्ञान की एक नई धारा प्रकाश में आयी, जिसे 'प्रीमानिशन' नाम दिया गया । घटनाएँ घटित होने से पूर्व उनका आभास मिलना, इस विद्या का शोध विषय है ।

सम्मोहन विद्या का वशीकरण मूर्छा प्रयोग दैवी आवेश आदि के रूप में प्रचलन तो पहले भी था, पर उसे व्यवस्थित रूप अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में आस्ट्रिया निवासी डॉक्टर फ्रान्ज मेस्मर ने दिया । उन्होंने मानवी विद्युत का अस्तित्व, स्वरूप और उपयोग सिद्ध करने में घोर परिश्रम किया और उसके आधार पर कठिन रोगों के उपचार में बहुत ख्याति कमाई । वे अपने शरीर की बिजली का रोगियों पर आघात करते साथ ही लौह चुम्बक भी आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाते । इस दुहरे प्रयोग से न केवल शारीरिक वरन् मानसिक रोगों के उपचार में भी उन्होंने आशातीत सफलता प्राप्त की ।

मेस्मर के शिष्य प्युइसेग्यूर ने प्रयोग को अधिक तत्परतापूर्वक आगे बढ़ाया और उन्होंने चुम्बकीय शक्ति द्वारा तन्द्रा उत्पन्न करने में नई सफलताएँ पाईं । यह तन्द्रा मानसिक तनाव को विश्राम द्वारा शान्त करने और अवचेतना के रहस्यमय पर्तों को खोलने में बहुत कारगर सिद्ध हुई । इस प्रकार बिना चिकित्सा की सहायता से भी कोई व्यक्ति स्वनिर्देशन विधि का उपयोग करके अपनी शारीरिक एवं मानसिक चिकित्सा आप कर सकता है ।

सम्मोहन प्रयोग से गहरी निद्रा लाकर गहरे ऑपरेशन करने में समग्र सफलता सबसे पहले डॉ. ऐसडेल को मिली । उन्होंने लगभग ३०० ऐसे ऑपरेशन किए । उनके दावे विवादास्पद माने गए । अस्तु सरकारी जाँच कमीशन बिठाया गया । कमीशन ने अपनी उपस्थिति में ऐसे ऑपरेशन कराये और ऐसडेल के प्रयोगों को यथार्थ घोषित किया । यह प्रक्रिया संसार भर में फैली । फ्रान्स के डॉ. सार्क को इस विधि से हिस्टीरिया को अच्छा करने में कारगर सफलता मिली । मनोविश्लेषण विज्ञान को मूर्त रूप देने वाले डॉ. फ्रायड ने अपने प्रतिपादनों में डॉ. सार्का के प्रयोगों से विशेष प्रेरणा ली थी ।

इंग्लैण्ड की रायल मेडीकल सोसाइटी के अध्यक्ष तथा लन्दन विश्वविद्यालय में चिकित्सा विज्ञान के प्राध्यापक डॉ. जान एलियट सन ने सम्मोहन विज्ञान में सन्निहित तथ्यों को बहुत उपयोगी पाया और वे इस प्रयत्न में जुट पड़े कि रोगी को पीड़ा की अनुभूति से बचाकर ऑपरेशन करने में इस विद्या का उपयोग किया जा सकता है । उन दिनों बेहोश करने की दवाओं का आविष्कार नहीं हुआ था । ऑपरेशन के समय रोगी कष्ट पाते थे । इस कठिनाई को हल करने में सम्मोहन विज्ञान बड़ी सहायता कर सकता है । इसी दृष्टि से उनका अनुसन्धान एवं प्रयोग कार्य चलता रहा, इसमें उन्हें आरम्भिक सफलता भी मिली ।

इसी शोध सन्दर्भ में इंग्लैण्ड के एक दूसरे डॉक्टर जेम्स ब्रेड ने यह सिद्ध किया, कि दूसरे के प्रयोग से ही नहीं वरन् आत्म निर्देशों से एवं ध्यान की एकाग्रता से भी सम्मोहन निद्रा की स्थिति बुला लेना सम्भव है । दूसरों के सुझाव को बिना किसी तर्क-वितर्क के स्वीकार कर लेना एक अद्‌भुत बात है । इसमें तर्क शक्ति लगभग प्रसुप्त स्थिति में चली जाती है और आदेश अनुशासन पालन करने वाली श्रद्धा का आधिपत्य मस्तिष्क पर छाया रहता है । इस स्थिति में लाभ उठाकर उपचारकर्त्ता मन में जमी हुई अवांछनीय पर्तों को उखाड़कर उस जगह नई स्थापनाएँ करता है । यह शारीरिक सर्जरी जैसी क्रिया है । सड़े अंग काटकर फेंक देना और उस स्थान पर नई चमड़ी, नया माँस जोड़ देना सर्जरी के अन्तर्गत सरल है । इसी प्रकार सम्मोहन विद्या—हिप्नोटिज्म के प्रयोगों से मन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकृतियों के झाड़-झंखाड़, उखाड़ना और उनके स्थान पर नई पौध जमाना सम्भव होता है । उपचारकर्त्ता यही करते हैं । यों इन प्रयोगों का एक हानिकारक पक्ष भी है, जिसे भूतकाल में तान्त्रिक लोग किन्हीं को क्षति पहुँचाने के लिए मरण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि रूपों में करते रहे हैं ।

अपोलो १४ अन्तरिक्ष यान के तीन सदस्यों में से एक थे, एडगर मिचेल । उन्होंने अपनी यात्रा के साथ-साथ एक व्यक्तिगत परीक्षण भी सम्मिलित रखा । क्या पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के बाहर भी विचार संचालन का क्रम चल सकता है ? क्या टेलीपैथी अन्तर्ग्रही आदान-प्रदान का माध्यम बन सकती है ? क्या लोक-लोकान्तरों के निवासी परस्पर विचार विनिमय कर सकते हैं । यदि ऐसा सम्भव हो सके, तो इसे चेतना के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी उपलब्धि कहा जायेगा ।

मिचेल ने चन्द्र यात्रा की लम्बी उड़ान में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के बाद अपने कुछ मित्रों के साथ टेलीपैथी के आधार पर विचार विनिमय किया । कुछ सन्देश भेजने और कुछ पाने के लिए समय निर्धारित रखा, जो उन्होंने भेजा, उसे उनके मित्रों ने और जो मित्रों ने भेजा, उसे उन्होंने ग्रहण किया । लौटने पर लेखा-जोखा लिया गया तो उसमें शत-प्रतिशत तो नहीं, पर बड़ी मात्रा में यथार्थता पाई । श्री मिचेल ने इस सन्दर्भ में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहा—'यह स्थापना हो चुकी है कि टेलीपैथी एक यथार्थता है । उसकी शोध उसी प्रकार होनी चाहिए जिस प्रकार अन्य वैज्ञानिक तथ्यों की होती है ।

अब वे दिन लद गए, जिनमें यह कहा जाता था कि—'मस्तिष्क में इन्द्रिय छिद्रों के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम से ज्ञान का प्रवेश नहीं हो सकता ।' प्लेटो की मान्यताएँ ऐसी ही थीं, पर अब वैसा कोई नहीं कहता—ई. सी. पी. के विद्युताग्र मस्तिष्क को असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं । उस सफलता के आधार पर यह वायदा किया जाने लगा है कि बिना सर्जरी के ही अमुक विचार प्रवाह से किसी के या किन्हीं के मस्तिष्क की स्थिति बदली जा सकेगी । उसे अपनी मान्यताएँ बदलने, चिन्तन की धारा बदलने और नये किस्म का कुछ भी सोचने के लिए विवश किया जा सकेगा । अब मस्तिष्क व्यक्तिगत सम्पत्ति न रहकर सार्वजनिक प्रयोग परीक्षण का, क्रीड़ा विनोद का क्षेत्र बनता जा रहा है । पार्क में सैर करने की तरह किसी के मस्तिष्क में भी अनिच्छित विचार प्रवेश कर सकते हैं और उन्हें स्थान देने के लिए किसी भी व्यक्ति को बाध्य किया जा सकता है ।

यह कुछ थोड़ी-सी उपलब्धियाँ हैं, जो सम्मोहन विज्ञान, दूर-दर्शन, दूरश्रवण, दूरानुभूति, विचार संचालन आदि के क्षेत्र में प्राप्त हुई हैं । अगले दिनों इस दिशा में बहुत कुछ प्राप्त होने की आशा की जा रही है और माना जा रहा है कि मनुष्य अतीन्द्रिय चेतना के क्षेत्र में भी प्रगति करके सिद्ध पुरुषों और योगियों की स्थिति तक पहुँच सकेगा ।

प्रत्यक्ष से परे एक परोक्ष जगत का अस्तित्व

भौतिकी के मूर्धन्य प्रोफेसर एड्रियान इलिंगवर्थ अपने साथी प्राध्यापक जान एच. वाकर के साथ पदार्थ की प्लाज्मा अवस्था पर विचार कर रहे थे । इलिंगवर्थ का कहना था कि प्लाज्मा और पदार्थ के ऊर्जा में रूपान्तरण के बीच एक अन्य अवस्था होनी चाहिए, जबकि वाकर इसका प्रतिवाद कर रहे थे । कह रहे थे, यह सम्भव नहीं । चर्चा अभी चल ही रही थी कि प्रो. वाकर देखते-देखते न जाने अचानक कहाँ गायब हो गए । इलिंगवर्थ और उनकी पत्नी ने सारे कमरे छान मारे, बाहर देखा, कॉलेज और उनके घर में पता लगाया, पर कहीं पता न चला कि वे कहाँ अन्तर्धान हो गए ।

प्रस्तुत प्रसंग अब से कई पाँच वर्ष पूर्व घटी हॉलैण्ड (हेग) की एक सत्य घटना है । योग विज्ञान और रहस्यवाद के पास तो ऐसी घटनाओं का सुनिश्चित समाधान है, पर विज्ञान का प्रत्यक्षवाद अब भी स्थूल इन्द्रियों की क्षमता से परे के संसार में प्रवेश नहीं कर सका है, अस्तु इनका कारण भी नहीं ढूँढ़ सका है । यों धीरे-धीरे वह अब इस निश्चय पर पहुँच रहा है कि मनुष्य की इन्द्रिय चेतना के आधार पर विकसित बुद्धि जितना जान पाती है, दुनिया वस्तुतः उससे कहीं अधिक है । उसे न बुद्धि समझ पाती है और न मानव निर्मित यन्त्र ही उसे पूरी तरह पकड़ पाते हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फिर भी कुछ विशेष सूक्ष्म सम्वेदना वाले यन्त्र थोड़ी बहुत जानकारी कभी-कभी देते रहते हैं और यह सिद्ध करते हैं, कि प्रत्यक्ष दर्शन न केवल अधूरा, वरन् भ्रामक भी है ।

हम नित्य ही सूर्य की धूप को देखते हैं, पर सच्चाई यह है कि धूप कभी भी देखी नहीं जा सकती । उसके प्रभाव से प्रभावित पदार्थ विशेष स्तर पर चमकने लगते हैं । यह पदार्थों की चमक है । सूर्य की किरणें जो इस चमक का प्रधान कारण हैं, हमारी अदृश्य शक्ति से सर्वथा परे हैं । अन्तरिक्ष में प्रायः पूरे सौरमण्डल को प्रकाशित एवं प्रभावित करने वाली धूप वस्तुतः सोलर स्पेक्ट्रम—सौरमण्डलीय वर्णक्रम है । उसे ऊर्जा की तरंगों एवं स्फुरणाओं की एक सुविस्तृत पट्टी कह सकते हैं । इस पट्टी में १० अरब प्रकार के रंग हैं । उनमें से हमारी आँखें लाल से लेकर बैंगनी तक के रंगों एवं उनके सम्मिश्रणों को ही देख पाती हैं । बाकी सारे रंग हमारे लिए सर्वथा अदृश्य और अपरिचित हैं ।

अब हम कुछ एक सूक्ष्म किरणों को किन्हीं विशेष यन्त्रों की सहायता से देख-समझ सकने में थोड़ा-थोड़ा समर्थ होते जाते हैं, जैसे धूप में "इन्फ्रारेड" तरंगें देखी तो नहीं जा सकतीं, पर विशिष्ट उपकरणों से अनुभव की जा सकती हैं । आजकल इसकी सहायता से दुनिया की विचित्र ही तस्वीर सामने आयी है । कुछ वर्ष पूर्व इन किरणों की मदद से अमेरिका ने क्यूबा में लगे रूसी प्रक्षेपास्त्रों के फोटो हवाई जहाज में खींचे थे । आश्चर्य यह कि उसमें वे उन जलती सिगरेटों के फोटो भी आ गए जो २४ घण्टे पूर्व वहाँ के कर्मचारियों ने जलायी थीं और वे तभी बुझ भी गई थीं । दृश्य जगत में पदार्थ समाप्त हो जाने पर भी वह अन्तरिक्ष में अपनी स्थिति बनाये रह सकता है । यह अजूबा हमें भूत और वर्तमान के बीच खिंची हुई लक्ष्मण रेखा से आगे बढ़ा ले जाता है । जो वस्तु अपने अनुभव के अनुसार समाप्त हो गई, वह भी अन्तरिक्ष में 'वर्तमान' की तरह यथावत् मौजूद है, यह कैसी विचित्रता है ।

ट्रेवर जेम्स ने इन्फ्रारेड मूवी फिल्म के लिए प्रयुक्त होने वाले एक विशेष कैमरे आई. आर. १३५ का उपयोग करके मोजावे रेगिस्तान के अन्तरिक्ष की स्थिति चित्रित की है । फिल्म में ऐसे पक्षी दिखाई पड़ते हैं, जो स्थूल चक्षुओं से कभी भी दिखाई नहीं पड़ते ।

जीवाणुओं की अपनी अनोखी दुनिया है । वे मिट्टी, घास-पात, पानी और प्राणियों के शरीरों में निवास करते और अपने ढर्रे की जिन्दगी जीते हैं, पर हम उनमें से कुछ को ही सूक्ष्मदर्शी यन्त्रों से देख पाते हैं, बाकी तो इतने सूक्ष्म हैं कि किसी भी यन्त्र की पकड़ में नहीं आते, किन्तु अपने क्रिया-कलाप वे बड़ी शान के साथ जारी रखते हैं ।

शास्त्रकार ने उसे "अणोरणीयान् महतो महीयान्" कहा है । परमाणु से भी गहरी उसकी संचालनकर्त्री सूक्ष्मता को देखा और जाना तो नहीं जा सका, पर उसका आभास पा लिया गया है । 'महतो महीयान्' की बात भी ऐसी ही है । विशालकाय ग्रह-पिण्ड और नीहारिका समुच्चय अत्यन्त विशाल है इतना कि जिसकी तुलना में अपना सौरमण्डल बाल बराबर भी नहीं है । फिर भी वह सब कुछ अधिक दूरी होने के कारण दीखता नहीं । रेडियो टेलिस्कोप जिन आकाशीय पिण्डों का परिचय देते हैं, वह आँखों से देखे जा सकने वाले सितारों की तुलना में अत्यधिक विस्तृत हैं । आश्चर्य यह है कि यह रेडियो दूरबीनें भी पूरी धोखेबाज हैं । वे अब से हजारों-लाखों वर्ष पुरानी उस स्थिति का दर्शन कराती हैं, जो सम्भवतः अब आमूल-चूल ही बदल गई होंगी । सम्भव है वे तारे बूढ़े होकर मर भी गए हों जो हमारी दूरबीनों पर जगमगाते दिखते हैं ।

अल्ट्रावायलेट फोटोग्राफी से ऐसे प्राणियों के अस्तित्व का पता चलता है, जो हमारी समझ, परख और प्रामाणिकता के लिए काम में आने वाली सभी कसौटियों से ऊपर हैं । इन प्राणियों को 'प्रेत मानव' अथवा 'प्रेत प्राणी' कहा जाय, तो कुछ अत्युक्ति न होगी, अब हमारे परिवार में यह अदृश्य प्राणधारी भी सम्मिलित होते जा रहे हैं । सूक्ष्म जीवाणु की तरह उनकी हरकतें और हलचलें भी अपने अनुभव की सीमा में आ जायेंगी ।

हर्बर्ट गोल्डस्टीन ने अपने शोध निबन्ध "प्रोपेगेशन ऑफ शार्ट रेडियो वेव्स" में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, कि वायुमण्डल में संव्याप्त अपवर्तनांक प्रवणता के पर्दे के पीछे अदृश्य प्राणियों की दुनिया है । वह दुनिया हमारे साथ जुड़ी हुई है और दृश्यमान सहचरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से कम प्रभावित नहीं करती । वर्तमान सूक्ष्मदर्शी साधन अपर्याप्त हैं, तो भी हमें निराश न होकर ऐसे साधन विकसित करने चाहिए, जो इस महत्त्वपूर्ण अदृश्य संसार के साथ हमारी अनुभव चेतना का सम्बन्ध जोड़ सकें ।

साधारणतया हमारी जानकारी पदार्थ के तीन आयामों तक सीमित है—लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई । अब इसमें 'काल' को चौथे आयाम के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है । आइन्स्टीन ने अपने सापेक्षवाद सिद्धान्त की विवेचना करते हुए यह समझाने का प्रयत्न किया है, कि यह भौतिक संसार वस्तुतः "संयुक्त चतुर्विस्तारीय दिक्काल जगत" है । वे देश और काल की वर्तमान मान्यताओं को एक प्रकार से सापेक्षवाद और दूसरे प्रकार से अपूर्ण-अवास्तविक मानते हैं ।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के डॉ. राबर्ट सिरगी अपने दल के साथ ऐसे उपकरण बनाने में संलग्न हैं, जिनसे पदार्थ के चौथे आयाम को समझ सकना सम्भव हो सके । वे कहते हैं, जो हम जानते और देखते हैं, उनसे आगे की गतियाँ और दिशाएँ मौजूद हैं । हम केवल तीन आयामों की परिधि में आने वाले पदार्थों का ही अनुभव कर पाते हैं, जबकि इससे आगे भी एक विचित्र दुनिया मौजूद है । उस विचित्रता को समझे बिना हमारी वर्तमान जानकारियाँ बाल-बुद्धि स्तर की ही बनी रहेंगी ।

दृश्य का अदृश्य बन जाना और अदृश्य का दिखाई देने लगना—मोटी-बुद्धि से बुद्धि-भ्रम अथवा कोई दैवी चमत्कार ही कहा जा सकता है । इतना होते हुए भी एक ऐसे सूक्ष्मजगत का अस्तित्व विद्यमान है, जो अपने इस ज्ञात जगत की तुलना में न केवल अधिक विस्तृत, वरन् अधिक शक्तिशाली भी है । भूतकाल में उसे सूक्ष्मजगत एवं दिव्यलोक कहा जाता रहा है । उसमें पदार्थों का ही नहीं, प्राणियों का भी अस्तित्व मौजूद है । वे प्राणी मनुष्य की तुलना में बहुत छोटे भी हो सकते हैं, और बहुत बड़े भी । आवश्यकता और परिस्थितियाँ उनकी भी हो सकती हैं और जिस प्रकार हम उस सूक्ष्मजगत के साथ सम्बन्ध जोड़ने को उत्सुक हैं, उसी प्रकार वे भी हमारे सहचरत्व के लिए इच्छुक हो सकते हैं । प्राणियों और पदार्थ का लुप्त एवं प्रकट होते रहना इन स्थूल-सूक्ष्मजगत के बीच होते रहने वाले आदान-प्रदान का एक प्रमाण हो सकता है ।

सुप्रसिद्ध विज्ञान कथा लेखक ए. पी. मेगरमोट ने अपनी पुस्तक "दि इनविजिबल मैन" में उन सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला है, जिनके अनुसार कोई दृश्य पदार्थ या प्राणी अदृश्य हो सकता है और अदृश्य वस्तुएँ दृष्टिगोचर होने लग सकती हैं । इस विधा का उन्होंने "अपवर्तनांक का विज्ञान-साइंस ऑफ रिफ्रेक्टिव इण्डेक्स" नाम देकर उसके स्वरूप एवं क्षेत्र का विस्तृत वर्णन किया है ।

हम ज्ञात को ही पर्याप्त न मानें, प्रत्यक्ष को ही सब कुछ न कहें । प्रस्तुत मस्तिष्कीय क्षमता और यान्त्रिक साधनों को सीमित मानकर न चलें और जो अविज्ञात है, उसकी शोध में बिना किसी पूर्वाग्रह के लगे रहें, तो इस अणोरणीयान महतो महीयान्" जगत के वे रहस्य जानने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं, जो अभी तक नहीं जाने जा सके हैं । निश्चित ही सूक्ष्म जगत के लीला उपक्रम जो ज्ञात हैं, उससे कहीं अधिक विलक्षण होंगे ।

सूक्ष्म जगत का प्रत्यक्षीकरण अतीन्द्रिय ज्ञान से

जो कुछ हम आँखों से देखते हैं, क्या वह सब सत्य है ? जो इन्द्रियों से अनुभव किया जाता है, क्या वह यथार्थ है ? इस प्रश्न पर तात्विक दृष्टि से विवेचन करने पर पता चलता है कि इन्द्रियाँ बहुत हद तक स्वयं धोखे में रहती हैं और हमारी अन्तःचेतना को धोखे में डालती हैं । इस धोखेबाजी से भरे हुए कुहरे को ही माया कहा गया है ।

सत्य का निरूपण करने के लिए वस्तु स्थिति को जानने के लिए एक दूसरा माध्यम अपने पास है, उसे छठवीं इन्द्रिय कहना चाहिए । विवेक, दूरदर्शिता, तत्व-बोध वह आधार है, जो हमें वास्तविकता के निकट पहुँचा सकता है और उस यथार्थता से अवगत होकर हम सही जीवन नीति अपनाने में समर्थ हो सकते हैं ।

प्रत्यक्षवाद की इन दिनों बहुत धूम है जो सामने है जो देखा समझा जा सकता है, उसी को स्वीकार किया जाय । यह आज की माँग है, पर देखना यह भी है, कि जो कुछ सामने है-प्रत्यक्ष है, दीखता है, वह सही भी है या नहीं । यदि आँखें ही धोखा दे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रही हैं, अनुभूत कराने वाले यन्त्र ही गड़बड़ी पैदा कर रहे हों, तो फिर जिस प्रत्यक्ष पर विश्वास करने के लिए कहा जा रहा है, उसकी यथार्थता की बात कैसे बनेगी ? जबकि परिस्थितियों ने अपनी जानकारी को ही भ्रमित कर रखा है, तब उस आधार पर मिले हुए ज्ञान को यथार्थ कैसे माना जायेगा ?

सत्य को कसौटी पर कसा जाना चाहिए । अन्धविश्वास का अनुगामी नहीं होना चाहिए । यह कहना ठीक है । बुद्धि रहते हुए, अबुद्धिमत्तापूर्ण मान्यताओं को क्यों अपनाया जाय, जब यथार्थता जानने के कितने ही साधन अपने पास मौजूद हैं, तो बिना जाँच पड़ताल किए किसी बात को क्यों माना जाय ? यह कथन उचित है । सत्य और असत्य को विलग करने के लिए परीक्षात्मक विश्लेषण से ही तो काम लेना पड़ेगा । बिना जाने परखे दन्त कथाओं पर क्यों विश्वास किया जाय ? किम्वदन्तियों को सत्य क्यों माना जाय ? बुद्धिवादी क्षेत्र का यह कथन उचित है । सत्य की समीक्षा होनी ही चाहिए । यथार्थता को परखने में कोई हर्ज नहीं ।

किन्तु यहाँ इस तथ्य का भी ध्यान रखना पड़ेगा कि जिस थर्मामीटर से बुखार नापा जाता है, कहीं वही तो खराब नहीं पड़ा हुआ है । खराब थर्मामीटर उग्र बुखार को न्यून अथवा न्यून तापमान को उग्र बता सकता है । उस भ्रान्त उपकरण को सही मानकर यदि उपचार आरम्भ कर दिया जाय, तो रोगी के लिए प्राण संकट ही खड़ा हो जायेगा । चिकित्सक के लिए उचित है, रोग का निदान करने से पूर्व यह देख ले कि उसके थर्मामीटर, स्टेथस्कोप, आदि यन्त्र सही हैं या नहीं, यदि वे सही न हों तो फिर उनका आश्रय लेकर ऐसे माध्यम अपनाने चाहिए जो रोगी की वस्तुस्थिति प्रकट कर सकने में समर्थ हों ।

परोक्ष जीवन, सूक्ष्म जगत, आत्मा, ईश्वर, आत्मबल आदि आध्यात्म क्षेत्र की अति प्रचण्ड सत्ताएँ यदि आँखों से नहीं देखी जा सकतीं और इन्द्रियों से अनुभव नहीं की जा सकतीं, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उन दिव्य तत्व का अस्तित्व ही नहीं है । उन्हें जानने-समझने के लिए हमारे पास दूरदर्शी, विवेक, आन्तरिक अनुभूति और सूक्ष्म दर्शन के अन्य माध्यम मौजूद हैं । उनके द्वारा सारा अतीन्द्रिय जगत प्रत्यक्ष हो सकता है और उस शक्तिशाली सत्ता की यथार्थता को समझा जा सकता है जो आँखों से भले ही न देखी जा सके पर दृश्य जगत की भाँति ही जिसका अस्तित्व मौजूद है ।

स्थूल जगत का स्वरूप समझने के लिए मोटे तौर पर इन्द्रिय ज्ञान का सहारा लिया जाता है । सूक्ष्म दर्शी यन्त्रों का उपयोग भी इन्द्रियाँ ही करती हैं । इस दृश्य मान की जानकारी मस्तिष्क को इन्द्रियों द्वारा मिलती है । वह उसका स्वरूप निर्माण करता है । मोटे तौर पर यथार्थता की परख यही है, पर यह प्रणाली सही नहीं है । दृश्य जगत की यथार्थता जानने में ही आँखें बराबर धोखा खाती रहती हैं और मस्तिष्क पग-पग पर भ्रम में पड़ता है । यदि इसी आधार पर हम सत्य का निरूपण करते चलें, तो प्रत्यक्ष जगत के बारे में सही निष्कर्ष निकाल सकना सम्भव नहीं, फिर अदृश्य जगत की तो बात ही क्या है ? वह अतीन्द्रिय है । इन्द्रियों की पहुँच, उसका विश्लेषण, निरूपण कर सकने में समर्थ नहीं । उसके लिए तत्व दृष्टि को विकसित करने की आवश्यकता है । वह अपने भीतर प्रचुर मात्रा में विद्यमान है । यदि उस दिव्य दर्शन की विवेक सम्मत क्षमता को विकसित कर लिया जाय तो परोक्ष जीवन एवं सूक्ष्म जगत को भी प्रत्यक्ष की तरह ही देखा, समझा और अनुभव किया जा सकता है ।

इन्द्रियों से आँखों के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे बहुत ही भोंड़े और अधूरे होते हैं, उनको सच मानकर चला जाय तो हमारी दुर्गति ही हो सकती है । मृग मरीचिका का उदाहरण पुराना है । ऊसर क्षेत्र में जमीन का नमक उभरकर ऊपर आ जाता है । रात की चाँदनी में वह पानी से भरे तालाब जैसा लगता है । प्यासा मृग अपनी तृष्णा बुझाने के लिए वहाँ पहुँचता है और अपनी आँखों के भ्रम पर पछताता हुआ निराश वापस लौटता है । इन्द्र धनुष दीखता तो है, पर उसे पकड़ने के लिए लाख प्रयत्न करने पर भी कुछ हाथ लगने वाला नहीं है । जल बिन्दुओं पर सूर्य की किरणों की चमक ही आँखों पर एक विशेष प्रकार का प्रभाव डालती है और हमें इन्द्र धनुष दिखाई पड़ता है, उसका भौतिक अस्तित्व कहीं नहीं होता ।

सिनेमा को ही लीजिए । पर्दे पर तस्वीर चलती-फिरती, बोलती, रोती-हँसती दीखती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असम्भव जैसे जादुई दृश्य सामने आते हैं । क्या वह सारा दृश्यमान सत्य है । प्रति सेकण्ड सोलह की गति से घूमने वाली अलग-अलग तस्वीरें हमारी आँखों की पकड़ परिधि से आगे निकल जाती हैं । फलतः दृष्टि भ्रम उत्पन्न हो जाता है । स्थिर तस्वीरें चलती हुई मालूम पड़ती हैं । लाउडस्पीकर से शब्द अलग जगह निकलते हैं और तस्वीरें अलग जगह चलती हैं पर आँख कान इसी धोखे में रहते हैं कि तस्वीरों के मुँह से ही यह उच्चारण या गायन निकल रहे हैं ।

प्रातःकालीन ऊष्मा और सायंकालीन सूर्यास्त के समय आकाश में जो रंग-विरंगा वातावरण छाया रहता है, क्या वह यथार्थ है ? वस्तुतः वहाँ कोई रंग नहीं होता, यह प्रकाश किरणों के उतार-चढ़ाव का दृष्टि संस्थान के साथ आँख मिचौनी है । आसमान नीला दीखता है पर वस्तुतः उसका कोई रंग नहीं है । पाल का रंग हो भी कैसे सकता है ? आसमान को नीला बता कर हमारी आँखें धोखा खाती हैं और मस्तिष्क को भ्रमित करती हैं ।

आँखों का काम मुख्यतया प्रकाश के आधार पर वस्तुओं का स्वरूप समझना है, पर देखा जाता है कि उनकी आधी से ज्यादा जानकारी अवास्तविक होती है । कुछ उदाहरण देखिए । कारखानों की चिमनियों से धुआँ निकलता रहता है । गौर करके उसका रंग देखिए वह अन्तर कई तरह का दिखाई देता रहता है । जब चिमनी की जड़ में पेड़, मकान आदि अप्रकाशित वस्तुएँ हों तो धुआँ काला दिखाई देगा, पर यदि नीचे सूर्य का प्रकाश चमक रहा होगा तो वही धुआँ भूरे रंग का दीखने लगेगा । लकड़ी, कोयला अथवा तेल जलने पर प्रकाश के प्रभाव से यह धुआँ पीलापन लिए हुए दीखता है । वस्तुतः धुएँ का कोई रंग नहीं होता । वह कार्बन की सूक्ष्म कणिकाओं अथवा तारकोल सदृश्य द्रव पदार्थों की बूँदों से बना होता है । इनसे टकराकर प्रकाश लौट जाता है और वे अँधेरी काले रंग की प्रतीत होती है ।

प्रकाश के रंग-बिरंगे दृश्य का तमाशा प्रयोगशाला में देखा जा सकता है । धूल कणों से मुक्त 'वेंजनी' द्रव को काँच के बरतन में रखिये । आतिशी शीशे से सूर्य की किरणें इस पर केन्द्रित कीजिए । आपोलो किरणों को लम्बवत दिशा में इसे देखिए । द्रव के भीतर हल्के नीले रंग का प्रकाश दृष्टिगोचर होगा ।

काँच के बर्तन में हाइपोसल्फाइट ऑफ सोडा का पतला घोल डालिए । उसमें गंधक के तेजाब की कुछ बूदें टपका दीजिए ऊपर वाली प्रक्रिया की तरह देखिए । गहरे नीले रंग का प्रकाश दृष्टिगोचर होगा ।

थोड़ा सा एलाइल आयोडाइड काँच की नली में डालिए उस पर प्रकाश केन्द्रित कीजिए । गैस बनेगी, पहले वह नली-सा होगा पीछे प्रकाश का प्रभाव बढ़ने से वह श्वेत दिखाई देगी ।

रेल के इंजन में वॉयलर की निकास नली से निकलती हुई भाप निकलते समय तो नीली होती है पर थोड़ा ऊपर उठते ही संघतित हो जाने पर भाप के कणों का आकार बढ़ जाता है और वह श्वेत दिखाई देने लगती है ।

जिन फैक्ट्रियों में घटिया कोयला जलता है, उनका धुआँ गहरा काला होता है और यदि उसमें से आरपार सूर्य को देखा जाय तो सूर्य गहरे लाल रंग का दिखाई देगा ।

पानी के भीतर अगणित जीव-जन्तु विद्यमान रहते हैं, पर खुली आँखों से उन्हें देख सकना सम्भव नहीं, माइक्रोस्कोप की सहायता से ही उन्हें देखा जा सकता है । आकाश में जितने तारे खुली आँखों से दिखाई पड़ते हैं, उतने ही नहीं हैं । देखने की क्षमता से आगे भी अगणित तारे हैं, जो विद्यमान रहते हुए भी आँखों के लिए अदृश्य ही हैं, बढ़िया दुर्बीनों से उन्हें देखा जाय तो दृश्य तारागणों की अपेक्षा लगभग दस गुने अदृश्य तारे दृष्टिगोचर होंगे ।

परमाणु अणु की सत्ता को दूर सूक्ष्म दर्शक यन्त्रों से भी उसके यथार्थ रूप में देख सकना अभी भी सम्भव नहीं है । उसके अधिक स्थूल कलेवर की गणित के आध्यात्म पर विवेचना करके परमाणु और उसके अंग प्रत्यंगों का स्वरूप निर्धारण किया गया है । अणु संरचना के स्पष्टीकरण में जितनी सहायता उपकरणों ने की है, उससे कहीं अधिक निष्कर्ष अनुमान पर निर्धारित गणितपरक आधार पर निकाला जाना सम्भव हुआ है ।

यथार्थता की तह तक पहुँचने के लिए सत्य को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें परख के आधार को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा । इन्द्रियजन्य ज्ञान को ही सब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ मान बैठना भूल है, जो भौतिक प्रयोगशाला से प्रत्यक्ष हो सके, वह सही है, ऐसी बात भी तो नहीं है । ऊपर प्रकाश की आँख मिचौनी से रंगों की गलत अनुभूति होने की चर्चा की गई है । सत्य तक पहुँचने के लिए इन्हीं भोंड़े उपकरणों को परिपूर्ण मानकर चलेंगे तो अन्धकार में ही भटकते रहना पड़ेगा । किम्वदन्तियों और दन्तकथाओं के प्रतिपादनों से मुक्ति पाने के प्रयास में यदि इन्द्रिय ज्ञान की भोंड़ी भूल-भुलैयों में भटक पड़े तो केवल पिंजड़ा बदला भर हुआ, स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही ।

भौतिक जगत में भी हमें यथार्थ की तह तक पहुँचने के लिए विवेक का सहारा लेना पड़ता है और सूक्ष्म विवेचना को प्रमाण मानना होता है । आध्यात्म जगत यदि आँखों से दिखाई नहीं पड़ता, ईश्वर और आत्मा की, परोक्ष जीवन की अनुभूति इन्द्रियों से नहीं होती तो यह नहीं मान बैठना चाहिए कि उनका अस्तित्व ही नहीं है । प्रत्यक्ष की परधि हमें चौड़ी करनी चाहिए । इसमें अतीन्द्रिय ज्ञान को भी सम्मिलित करना चाहिए । विवेकशीलता, ऋतम्भरा प्रत्यक्ष तत्व दृष्टि, योग भूमिका जैसे आधार ही अदृश्य जगत की प्रामाणिकता सिद्ध कर सकते हैं । आध्यात्म प्रयोगों से उत्पन्न चमत्कारी निष्कर्षों को परख कर भी उसके अस्तित्व को समझने में सहायता मिल सकती है ।

दृश्य एवं अदृश्य शरीर

भौतिक विज्ञान के अनुसार चेतना का तात्पर्य उस प्राण विद्युत से है, जो शरीर के हर क्षेत्र में ज्ञान-तन्तुओं के साथ प्रवाहित होती रहती है । इसका केन्द्र मस्तिष्क माना गया है । संगठित ऊतकों द्वारा उसका उत्पादन होता है अथवा कुछ मस्तिष्कीय केन्द्र उसे मिल-मिलकर उत्पन्न करते हैं । यह अब पूर्व काल की तरह विवादास्पद नहीं रहा और यह माना जाता है, कि दोनों ही कारण एक-दूसरे के पूरक हैं । इनमें किसे प्रमुख माना जाय, किसे गौण, इस विवाद को अनसुलझा छोड़ देने में भी हर्ज नहीं । दोनों में से एक कारण ही उभर पड़े तो मृत्यु निश्चित है ।

विज्ञान की आरम्भिक प्रगति के युग में कहा जाता था कि प्राणी समुदाय एक विशेष प्रकार का रासायनिक गुच्छक है और अपनी वंश परम्परा के घटकों द्वारा किए जाने वाले मार्ग-दर्शन पर अपना स्वभाव बनाता और रीति-नीति अपनाता है । शरीर के साथ ही चेतना का अन्त बहुत समय तक माना जाता रहा । अणुओं के विघटन के साथ-साथ चेतना की आत्यन्तिक मृत्यु मानी गई । यों यह नास्तिकता की पूर्ववर्ती मान्यता है । पर इसमें एक प्रतिशत की कमी है । शरीर के न रहने पर उनके घटक किसी के पेट में जाते भूमि या जल में पड़ते और भटकते-भटकते कोई खाद्य बनते हैं, उसे जो खाता है, उसमें यदि पूर्ववर्ती प्राणी के जीवनकोश पहुँचे हैं तो उसी आधार पर पुनर्जन्म हो जाता है । यह आत्मा का नहीं वंशानुक्रम घटकों का पुनर्जन्म है । यह घटक प्रकृति के अंग माने गए । उनके पीछे किसी चेतन तत्व की सत्ता स्वीकार नहीं की गई ।

इसी अर्थ में भौतिकवाद को नास्तिकवादी या नास्तिकवाद को भौतिकवाद माना गया था और कहा गया था कि शरीर ही आत्मा है । शरीर के साथ ही आत्मा का भी अन्त हो जाता है । इस कथन के प्रतिपादन और समर्थन में पिछली शताब्दी में इतना बल दिया जाता रहा, मानो उन्होंने कोई आत्यन्तिक सत्य हस्तगत कर लिया हो और उन लोगों को पूरी तरह उपहासास्पद ठहरा दिया गया हो, जो आत्मा और परमात्मा की कथा-गाथा कहते रहते थे ।

बहुत समय नहीं गुजरा कि उस खोज को बाल हठ समझा जाने लगा और इस पर नये सिरे से खोज करने की आवश्यकता अनुभव की गई, कि मरने के बाद भी चेतना का अस्तित्व रहता है या नहीं एवं एक शरीर में रहते हुए भी चेतना दूसरे शरीर में प्रवेश करने या प्रभावित करने में समर्थ हो सकती है या नहीं ।

पाया यह गया कि शरीर में विद्युत रहती है । यह मान्यता ठीक होते हुए भी उसमें यह परिशिष्ट और जोड़ना पड़ा, कि प्राण विद्युत का एक घेरा शरीर के बाहर भी घिरा रहता है, जैसे सूर्य के घेरे से बाहर उसकी किरणों का विस्तार होता है । जिस प्रकार बहुत से तारे चिरकाल पूर्व मर गए, पर उनका प्रकाश अभी भी धरती पर आ रहा है । उसी प्रकार मनुष्य का शरीर मर जाने पर भी उसका तेजोवलय उसी पूर्व स्थिति में उसी आकार में बना रहता है । स्थिति से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तात्पर्य यह है कि उसका स्वभाव प्रायः बहुत कम बदलता है और इच्छा अभिरुचियों का प्रवाह पूर्ववत् बना रहता है । राग द्वेष भी पूरी तरह नहीं छूटता । मरणोपरान्त बना रहने वाला यह प्राण शरीर अब विज्ञान की अनेक कसौटियों पर अपनी सत्ता सिद्ध करने में समर्थ हो चुका है । इसे अदृश्य या अशरीरी शरीर कह सकते हैं । वह अस्थि, माँस आदि प्रत्यक्ष पदार्थों का बना न होकर विद्युत तरंगें जैसा होता है । इतने पर भी उसका अस्तित्व सर्वथा समाप्त नहीं होता और उसका परिचय समय-समय पर इन्द्रियगम्य न होते हुए भी अनुभव गम्य बना रहता है । स्वेच्छापूर्वक उदासीनता अपनाकर वह किसी अन्य प्रिय विषय की ओर भी लुढ़क सकता है और छोड़े हुए जीवन के पदार्थों, व्यक्तियों एवं घटनाओं के साथ विशेष लगाव होने पर वह उसी पूर्व भूमिका के इर्द-गिर्द परिभ्रमण कर सकता है । भीतर से उत्तेजना, उमंगें तो वह किन्हीं के सम्मुख अपने वायुभूत शरीर को प्रकट भी कर सकता है । अपनी मनःस्थिति का परिचय भी दे सकता है और कुछ कहना हो तो वह भी अवगत करा सकता है ।

इस प्रयोजन में प्रेरक सत्ता की क्षमता अधिक होती है और ग्रहण कर्त्ता की स्वल्प । जिस मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म में प्रयोक्ता की सामर्थ्य ही अपनी इच्छा शक्ति की प्रमुखता का परिचय देती है, वही बात यहाँ भी है । ग्रहणकर्त्ता को, सामान्य, साधारण, सहमत मनःस्थिति का होना चाहिए, उसे प्रतिरोध खड़ा नहीं करना चाहिए । इतने भर से हिप्नोटिज्म प्रयोगों का सिलसिला चल पड़ता है । मनुष्य के जीवन-काल में अथवा मृतक हो जाने पर प्राण शरीर के तेजोवलय का अदृश्य अस्तित्व बना रहता है । वह अपना परिचय जिस भी सम्बन्ध के अनुरूप देना चाहे, दे सकता है । अभिभावक-सन्तान, मित्र-मित्र, पति-पत्नी जैसे रिश्ते प्रमुख होते हैं, उनमें अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठता पाई जाती है । इस प्रकार की मनःस्थिति वाला प्राण शरीर अपने प्रिय सम्बन्धी को अपने अस्तित्व का परिचय सरलतापूर्वक दे सकता है । यदि घोर शत्रुता हो तो भी आक्रामक या भयावह झलक झाँकी देता रह सकता है । यदि अन्यमनस्कता हो तो फिर मिलन-परिचय की बात झीनी पड़ जायेगी और बहुत समय बीत जाने पर वह उपेक्षा के गर्त में भी जा गिरेगी । स्मरण रखने योग्य बात यह है कि जीवित पक्ष का आग्रह आमन्त्रण उतना काम नहीं करता, जितना प्राण शरीरधारी का । फिर सूक्ष्म शरीर की प्रौढ़ता भी आवश्यक है । वयोवृद्ध चिर रोगी, उथले सम्बन्धों वाले; इस प्रकार की मिलन चेष्टा नहीं करते । करते भी हैं तो उनकी शिथिलता अन्यमनस्क स्थिति में रहने के कारण, स्वल्प इच्छा शक्ति के कारण, अपनी ओर से कोई प्रभावी हलचल उत्पन्न नहीं कर पाती । स्वप्न में कभी स्मरण हो आने जैसे प्रसंगों में ही उथला-सा मिलन हो सकता है ।

प्रौढ़ता की मनःस्थिति में प्राण शरीर अपने प्रियजनों को कुछ लाभदायक परामर्श भी दे सकते हैं । सहयोग करने, सहायता देने, कष्ट से उबरने जैसी क्षमता भी उनमें देखी गई है, किन्तु सामर्थ्य की पूँजी स्वल्प रहने के कारण वे कोई वैसी सहायता नहीं दे सकते, जैसी कि जीवित अवस्था में अपने बुद्धि-कौशल अथवा साधन वैभव के सहारे दे सकते हैं । हाँ यदि शत्रुता या प्रतिशोध का भाव हो तो डराने, तनाव उत्पन्न करने, रुग्णता में धकेल देने, बुद्धि भ्रम उत्पन्न करने जैसे संकट खड़े कर सकते हैं । शत्रुता का बदला एक सीमा तक लिया जा सकता है । विश्वासघात, हत्या, आत्महत्या, छल, बहकावा आदि की घटनाओं को प्रायः प्रेतात्माएँ भूल नहीं पातीं और जिस-तिस प्रकार प्रतिशोध लेकर अशान्ति उद्विग्न करती रहती हैं ।

यह विवरण स्थूल शकट की छत्र छाया में बने हुए सूक्ष्म शरीर का है । आमतौर में पुनर्जन्म से पूर्ण पिछला प्राण शरीर समाप्त प्रायः हो जाता है और नये शरीर के साथ नई प्राण विद्युत का तेजोवलय बनना बनाना आरम्भ हो जाता है, किन्तु अपवाद स्वरूप ऐसा भी होता है कि पुराने प्रौढ़ शरीर की छाया मजबूत बनी रहे और नये की विनिर्मित होने में मन्दगति से काम कर रही है तो पहले जन्म की घटनाएँ, स्मृतियाँ बनी रहती हैं और ऐसे बालक अपने पुराने जन्म का प्रमाण परिचय देने और विवरण बताने लगते हैं, किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रहती । दस वर्ष का होते-होते बालक विगत जन्म की स्मृतियों को भुला बैठता है । तब तक नया तेजोवलय परिपक्व होने लगता है और जो बचपन में याद था, उसे भी भूल जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परामनोविज्ञान की पहुँच और पकड़ अभी इसी सीमा तक है । जीवित शरीर के साथ काम करने वाले तेजोवलय की प्रौढ़ता के आधार पर ओजस्, तेजस्, वर्चस् वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है । इस आधार पर व्यक्तित्व का निखार और प्रतिभा का विस्तार होता है । सामान्य जीवन में इस बढ़ोत्तरी के आधार पर मनुष्य साहसी, पराक्रमी होता है । शरीर दुर्बल होने पर भी उसमें प्रभावोत्पादक क्षमता बढ़ी-चढ़ी होती है, किन्तु यदि इस तत्व की कमी रहे, तो व्यक्ति उदास, नीरस, निराश, थका-माँदा दिखाई पड़ता है । यह ओजस् किन्हीं में जन्मजात रूप से अच्छी मात्रा में होता है । कुछ उसे प्रयत्नपूर्वक बढ़ा लेते और कुछ निषेधात्मक चिन्तन से ग्रस्त, भयभीत, शंका शंकित रहने के कारण उसे क्रमशः खोते, गवाँते चले जाते हैं ।

परामनोविज्ञान के अन्तर्गत मस्तिष्कीय प्रसुप्त शक्तियों का जागरण—शरीर के भीतर ठुसी हुई प्राण विद्युत और बाहरी क्षेत्र में तेजोवलय के रूप में अनुभव की जा सकने वाली क्षमता का पता लगाया गया है । उससे यह जाना गया है कि उसकी उन्नति या अवगति की स्थिति में मनुष्य किस प्रकार लाभान्वित होता या घाटे में रहता है । इससे आगे के क्षेत्र में परामनोविज्ञान की पहुँच नहीं है । शरीर विज्ञान भौतिक विज्ञान है । इसलिए उससे सम्बन्धित प्रकट और अप्रकट शक्तियों तथा गतिविधियों के प्रमाणों को जो संग्रह किया गया है । उसे शरीर क्षेत्र का भौतिक विज्ञान ही कह सकते हैं । भले ही वह प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष ।

"फेट" मासिक पत्रिका में मध्य अफ्रीका की कोलोनियल सर्टिस के उच्च पदाधिकारी क्वीलन हेयर ने आप बीती एक घटना प्रकाशित कराई है । उसे सूचना मिली कि किवि नदी को पार करके हाथियों का एक बड़ा झुण्ड मैदानी इलाके में उतर रहा है और उस क्षेत्र की वनस्पतियों को तहस-नहस करने पर उतारू है । उसे तत्काल पीछे लौटाना आवश्यक था । इसलिए क्वीलन अपनी साज-सज्जा के साथ उधर चलने की तैयारी करने लगे ।

उसी बीच उनकी भेंट उस क्षेत्र के प्रख्यात तान्त्रिक 'निगी' से हो गई । उसने विश्वास दिलाया कि उनकी कठिनाई को वह कुछ ही देर में हल कर देगा । उसने चीते की खाल से अपना शरीर ढका और एक वृद्ध के रूप में नियत स्थान पर जा पहुँचा । एक विचित्र ढोल बजाया । फलतः हाथियों का झुण्ड जिधर से आया था, उसी ओर वापस लौट गया ।

इस घटना में न कोई दुराव था न षड्यन्त्र । आँखों देखी घटना और परिस्थिति को देखते हुए, उसे विश्वास करना पड़ा कि जीवित मनुष्य की काया में घुली हुई किसी शक्तिशाली सत्ता का यह चमत्कार था ।

ऐसी ही अनेक प्रत्यक्षदर्शी और आजमाई घटनाओं का संकलन प्रख्यात मनोविज्ञानी गर्नी पाडनेत्या मायर्स ने ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किया है । नाम है उसका—"फिनामिना ऑफ दि लिविंग" । उसके प्रथम संस्करण में १२०० पृष्ठ थे, पर अगले संस्करण में बढ़ी हुई घटनाओं के २०० पृष्ठ और जोड़े गए । इसमें ७०० से अधिक ऐसी घटनाओं का उल्लेख है जिसमें मनुष्य की अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रस्तुत किए गए चमत्कारों का उल्लेख है । उन उल्लेखों में वह सब भी अंकित किया गया है कि घटनाओं की वास्तविकता को किस सुयोग्य पर्यवेक्षकों की समितियों के सम्मुख किस प्रकार जाँचा गया और जब बात को पूरी तरह विश्वस्त मान लिया गया, तभी उनका प्रस्तुत पुस्तक में उल्लेख किया गया ।

'ब्रिटिश सोसाइटी फार साइकिक रिसर्च' में ऐसी घटनाओं का अपने प्रकाशन में उल्लेख किया है कि अमुक व्यक्ति इच्छापूर्वक अपने सूक्ष्म शरीर को रात्रि के समय मंगेतर के यहाँ ले जा पहुँचा । उसके बाल छुए । इसकी पुष्टि मंगेतर ने भी की ।

ऐसे ही विवरणों का संकलन फ्रांसीसी मनोविज्ञान वेत्ता डी. रोकास ने भी अपनी पुस्तक में किया है । जर्मनी की द्विमासिक पत्रिका 'डेर ब्लाक' में लारडल की वर्णित उस घटना का उल्लेख है, जिसमें उसने आर्कविशाप के चौके में, उस समय क्या पक रहा है यह बताया है । तभी यह बात भी कही, ठीक इसी समय सोने की अँगूठी पकाने वाली से खो गई है और वह कोयले की टोकरी में है ।

हर बैकर की जर्मन पुस्तक गैस पेंस्टर एण्ड स्यूक' में विस्तार से लिखा है कि किस प्रकार उसी का छाया पुरुष उसके उलझन भरे गणित को हल करके गायब हो गया था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पराशक्तियों की अन्वेषक श्रीमती एलीन जे. गैरेट ने अपनी पुस्तक "माई लाइफ एण्ड द सर्च फार दि मीनिंग ऑफ मीडियमशिप" में ऐसे अनेक विवरणों का जिक्र कर चुकी है, जिनसे प्रतीत होता है कि मनुष्य उतना ही नहीं है, जितना कि दीख पड़ता है । उसमें अदृश्य क्षमताओं का प्रचुर भण्डार भी भरा पड़ा है जिसे अभी कुरेदा नहीं गया है ।

वह प्रकाश क्या सूक्ष्म शरीर था ?

न्यू हैम्पशायर का इन्सपेक्टर पुलिस स्टेशन—बात ३ सितम्बर सन् १९६५ की है, में नारमैन मसकेरीलो नामक व्यक्ति ने प्रवेश किया । पुलिस स्टेशनों में यों घबराहट से भरे अनेक व्यक्ति पहुँचते और रिपोर्ट दर्ज कराते हैं, पर मसकेरीलो की मुखमुद्रा में व्याप्त भय बहुत गहरा था । आप बीती सुनाते समय उसका मुँह पूरी तरह सूख रहा था । कई बार तो घबराहट के मारे आवाज भी रुँध जाती थी ।

काँपते स्वर में उसने बताया, वह वस्तु गोल थाली की तरह चमकती हुई थी । उसका रंग सफेद था, पर किरणें-सी फूट रही थीं, वह लाल या नारंगी थी । प्रकाश का वह गोला काँप रहा था । उससे मक्खी के भिनभिनाने की सी आवाज थी ·····।

पर वह कौन था ? पुलिस इन्सपेक्टर ने प्रश्न किया और साथ-ही-साथ सान्त्वना भी दिलाई, तब मसकेरीलो ने आगे बताना शुरू किया—मैं अपने घर जा रहा था, समय पता न चलने के कारण जल्दी ही चल पड़ा था । कोई सवारी नहीं मिली, सो पैदल ही आ रहा था । जब मैं केसिंग्टन के एक खुले स्थान से गुजर रहा था । तभी आकाश में वह गोल-सी वस्तु, जिसका व्यास ८० से ९० फीट तक रहा होगा, काँपती हुई मेरी ओर झपटी । सड़क छोड़कर मैं नीचे की ओर भागा तब वह पीछे लौट गई और हवा में उड़ती हुई मकानों की छतों पर घूमी । इसके आगे मुझे पता नहीं । मैं सीधा पुलिस स्टेशन भागकर आया हूँ । मुझे डर लग रहा है, घर तक पहुँचने का प्रबन्ध कर दें ।

इन्सपेक्टर के लिए यह सर्वथा अनहोनी घटना थी । कहते हैं, साइबेरिया में कोई एक व्यक्ति ऐसा है जो शुक्र ग्रह से उतरा है । कहते हैं बेल्जियम में कोई एक ऐसा स्थान है, जहाँ आकाश से प्रायः उड़न तश्तरियाँ आती रहती हैं । भूत-प्रेतों की कहनी-अनकहनी तो घर-घर सुनी जा सकती है, पर जो कुछ मसकेरीलो बता रहा था, वह सत्य तो वैज्ञानिक कहानियों से भी आश्चर्यजनक था । उस पर सहसा विश्वास करना कठिन था । इन्सपेक्टर ने हँसकर कहा भी महोदय ! आपको लगता है, धोखा हो गया ।.

किन्तु अभी वह कुछ व्यवस्था करे, इससे पूर्व ही रात्रि में गश्त (पेट्रोल) के लिए गई पुलिस की गाड़ी वापस लौटी । उसके इन्चार्ज वेरट्रेण्ड ने भी बताया कि थाने से २ मील दूर कार में आ रहे एक दम्पति ने भी ठीक ऐसी ही घटना सुनाई जैसी मसकेरीलो ने । उन्हें तो उस वस्तु ने ९ मील तक—ईपिंग से न्यूहैम्पशायर के उस स्थान तक पीछा किया, जहाँ वह वस्तु मसकेरीलो को मिली थी ।

आखिर सत्यता की जाँच के लिए बरट्रेण्ड तैयार हो गया । उसने मसकेरीलो को भी साथ लिया और उसी स्थान पर जा पहुँचा । टार्च से बड़ी देर तक इधर-उधर देखते रहे पर वहाँ कुछ दिखाई न दिया । वरट्रेण्ड ने व्यंग से कहा—आपने कोई पास से गुजरता हैलीकोप्टर देखा होगा । 'पर मुझे हवाई जहाजों की पूर्ण पहचान है'—मसकेरीलो ने उतर दिया और तभी वह घटना फिर घटी । वहाँ से कुल १०० गज की दूरी पर ही एक 'कृषि भवन' था । उसके ऊपर वह प्रकाश पुंज फिर प्रकट हुआ । वहाँ की प्रत्येक वस्तु, पेड़-पौधे और जमीन तक उसी रंग से नहा गए । कृषि-भवन तो रक्त के रंग में रंगा लगने लगा । बरट्रेण्ड सहित सभी पेट्रोल-कार की ओर भागे ।

उस प्रकाश पुंज की कहानी यहीं से समाप्त हो गई । दूसरे दिन वह घटना अखबारों में छपी । तब जान फुलर नामक लेखक ने अनेक व्यक्तियों से पूछताछ कर लिखा कि यह घटना विलक्षण सत्य थी और विज्ञान के लिए चुनौती भी । ७३ लोगों ने उसे देखा और सबके बयान एक ही थे जो २०० पृष्ठों में टाइप किए गए थे । इस तरह की घटनाओं का संकलन करने वाली संस्था 'नेशनल इन्वेस्टीगेशन कमेटी' एयरियल फेनामिना वाशिंगटन ने भी उसकी पुष्टि की । श्रीमती विरजिनिआ, जो हैम्पटन में पत्रकार हैं, ने भी उसे देखा था और उसकी पुष्टि भी की, पर क्या यह प्रकाश पुंज कोई आत्मा थी, भूत या कोई सूक्ष्म शरीर ? यह अब तक निश्चित नहीं हो सका ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य की असीम अद्‌भुत क्षमताएँ

वर्तमान काल में एक व्यक्ति के विचार दूरवर्ती अन्य व्यक्तियों तक पहुँच सकते हैं, यह तथ्य अतीन्द्रिय विज्ञानियों ने अनेकों साक्षियों के आधार पर सच मान लिया है । इस आधार पर विचार शक्ति की तुलना शब्द-शक्ति एवं प्रकाश-शक्ति के साथ की जाने लगी है, जिनकी तरंगें उन्मुक्त आकाश में ईथर-तत्व के माध्यम से द्रुतगामी भगदड़ मचाती हैं । भूतकाल की घटनाओं को बताने वाले लोगों की अलौकिक शक्तियों का भी इसी आधार पर समाधान हो जाता है कि जो गुजर चुका उसके ध्वंशावशेष सूक्ष्म जगत में भ्रमण करते होंगे और क्रमशः झीने पड़ते हुए विलय की ओर बढ़ रहे होंगे । भूत कथन करने वाले अपनी अतीन्द्रिय शक्ति से उन्हें देख समझ सकते हैं ।

पदार्थों के साथ स्पर्श करने वाले के शरीर-कण चिपक जाते हैं और उनकी गन्ध के सहारे जासूसी कुत्ते चोरों को जा पकड़ते हैं । जिसे हम भूत समझते हैं उसके अवशेष समय के साथ ही समाप्त नहीं हो जाते, वरन् किसी रूप में बहुत समय तक अपना अस्तित्व बनाये रहते हैं । इस रहस्यमय सूक्ष्म दर्शन की क्षमता जिन्हें प्राप्त है, वे अपनी अतीन्द्रिय चेतना के आधार पर उसे जान सकें, बता सकें तो यह समझ में आने वाली बात मानी जायेगी, यद्यपि है आश्चर्यजनक ।

भविष्य कथन की बात उपरोक्त दोनों ही स्थितियों से भिन्न और समझ में न आ सकने योग्य है, जो घटना घटित हुई ही नहीं, उसका अस्तित्व या अवशेष कैसे पाया जा सकता है ? फिर मनुष्य को स्वतन्त्र कर्मकर्त्ता माना जाता है । वह अपनी गतिविधियों को कभी भी किसी भी दिशा में मोड़ सकता है । साधन, प्रयास और अवसर, किसी सम्भावना को किसी अन्य रूप में भी बदल सकते हैं । ऐसी दशा में किसी भविष्य का पूर्व निश्चित होना किस प्रकार माना जाय ? जो अनिश्चित है, उसकी पूर्व घोषणा का क्या आधार हो सकता है ।

संसार के परामनोविज्ञान वेत्ता इस सन्दर्भ में भारी असमंजस अनुभव करते हैं । भविष्य कथन के ऐसे प्रमाण सामने प्रस्तुत है, जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता; किन्तु उसका कारण और आधार कुछ भी समझ में नहीं आता । इसे सैद्धान्तिक मान्यता किस प्रकार दी जाय ?

संसार तीन प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं के पूर्व कथन को अनेक कसौटियों पर ठोका, बजाया गया है और पाया गया है, कि उनमें ज्योतिषियों जैसी द्विपक्षी और गोलमटोल भाषा बोलने की चालाकी भी नहीं थी और प्रस्तुत परिस्थितियों से भावी सम्भावना का तुक मिलाने जैसा कोई बुद्धि-कौशल भी न था । सर्वथा भिन्न परिस्थितियों में भावी भविष्य कथन प्रस्तुत करना और उसका अक्षरशः सही उतरना कुछ ऐसा कौतुक है, जिसे अमान्य न करते हुए भी सामान्य विज्ञान के आधार पर यह नहीं बताया जा सकता, कि आखिर यह सब सम्भव क्यों कर होता है ?

जीनडिक्शन कनैडी की हत्या, भारत का विभाजन, चीन का साम्यवादी बनना ऐसी बातें थीं, जिनकी उन दिनों कोई सम्भावना नहीं थी, जिन दिनों की वे भविष्य-वाणियाँ की गई थीं ।

पीटर हरकौस की चमत्कारिता की तो विधिवत् जाँच की गई । ग्लेनकोव प्रयोगशाला में उसके शरीर एवं मस्तिष्क के अनेकों परीक्षण किए गए । उसकी सभी भविष्यवाणियों और घटनाओं की तारीखें देखी गईं जिनमें काफी अन्तर था । भविष्यवाणियाँ ऐसी थी जिनकी उस समय कोई सम्भावना नहीं थी, पर घटना चक्र विलक्षण रूप से घूमा और वह अनहोनी समझी गईं बातें होनी होकर सामने आईं । उसने अपनी दिव्य शक्ति से कितनी ही दुर्घटनाओं से सचेत करके लोगों को भारी क्षति उठाने से बचाया था ।

हर्वन लिकसन का भी उदाहरण ऐसा ही है, उन्होंने फ्रान्स, जर्मनी और इटली के मूर्धन्य राजनीतिज्ञों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों और कलाकारों ने उनका निज का तथा चल रही गतिविधियों का परिणाम जिस प्रकार बताया था उसी प्रकार सही निकलता चला गया तो वे स्तब्ध रह गए । मनुष्य की अतीन्द्रिय शक्ति का महत्त्व उन्हें स्वीकार करना पड़ा, पर वे यह न समझ पाये कि ऐसा क्यों होता है और उसका बुद्धि-संगत कारण क्या हो सकता है ?

मनुष्य की सम्भावनाओं का अन्त नहीं । उसकी अतीन्द्रिय क्षमताएँ भी अनन्त हैं । मनुष्य तत्व का जितना अंश जाना जा चुका है, वह भी कम चकित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने वाला नहीं फिर जो अभी अविज्ञात है, उसकी सम्भावनाएँ तो और भी अद्‌भुत हैं । वस्तुतः मनुष्य की संरचना हर दृष्टि से असामान्य स्तर की है । उसके प्रत्यक्ष कर्तृत्व को, व्यक्तित्व को देखते हुए उसकी महानता का अनुमान लगाया जा सकता है । यदि अप्रत्यक्ष अस्तित्व को भी खोजा और उभारा जा सके, तो प्रतीत होगा कि मानवी आत्मा अपने उद्‌गम स्रोत परमात्मा के समान ही महान है । उसकी अतीन्द्रिय क्षमताएँ भी अनन्त और एक से एक बढ़कर अद्‌भुत हैं ।

दिव्य शक्तियाँ भी मनुष्य को हस्तगत होंगी

जिस प्रकार प्रत्यक्ष शरीर के पीछे परोक्ष जीवात्मा का निवास है । काया पर जीवात्मा का अधिकार है उसी प्रकार इस पंच भौतिक संसार के पीछे एक चेतन जगत की सत्ता विद्यमान है । स्थूल जगत के विभिन्न पदार्थ यों अलग-अलग आकृति-प्रकृति के हैं और उनके निवास स्थान पृथक्-पृथक् हैं; फिर भी वे सब ही शरीर के मध्य रहने वाले असंख्य कोशाओं की तरह मिल-जुलकर निवास करते हैं । एक-दूसरे के पूरक हैं और परस्पर जुड़े हुए हैं । आकाश में ग्रह-नक्षत्रों का स्थान दूर-दूर है, तो भी वे एक दूसरे के साथ आकर्षण शक्ति के रस्सों से जुड़े हुए और जोड़े हुए हैं ।

इस समूचे ब्रह्माण्ड में ईश्वर तत्व भरा हुआ है उसी के माध्यम से शब्द और प्रकाश की लहरें बहतीं और एक स्थान से दूसरे तक पहुँचती हैं । ग्रह-नक्षत्रों की खोज खबर लेने के लिए जो राकेट भेजे जाते हैं, उनकी प्रेषित सूचनाएँ धरती तक आती हैं । यह परिप्रेषण ईथर की उपस्थिति से ही सम्भव हो पाता है । चन्द्रमा पर हवा न होने से शब्दों को बोलना और सुनना सम्भव नहीं हो सकता, किन्तु ईथर वहाँ भी मौजूद है । इसलिए रेडियो प्रणाली को अपनाकर चन्द्र तल पर खड़े हुए, दो मनुष्य परस्पर वार्तालाप कर सकने में समर्थ हो सकते हैं । विशाल समुद्र के मध्य अनेकों टापू होते हैं, जल-जीव रहते हैं, इसी प्रकार ब्रह्माण्डव्यापी प्रकृति सत्ता के अन्तराल में जो स्थूल शक्तियाँ काम करती हैं, उससे पदार्थ जगत परस्पर बँधा हुआ है और आदान-प्रदान का लाभ उठाता है ।

स्थूल पंच भौतिक जगत की तरह ही उसके अन्तराल में एक प्राणवान चेतना जगत है । उसमें ब्रह्म तत्व भरा हुआ है । इसी व्यापक ब्रह्माण्डीय चेतना में जीवधारियों के अनेकों घटक स्वतन्त्र रूप से विचरण करते हैं । इतने पर भी वे सब एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और आदान-प्रदान का लाभ ले रहे हैं । यह पारस्परिक सम्बन्ध सूत्र इतने पतले हैं, कि उन्हें देख और समझ सकना मोटे तौर से हर किसी के लिए सम्भव नहीं हो सकता । लोग तो अपने आप को भी शरीर भर मानते हैं और उसी के पोषण-तोषण में लगे रहते हैं । आत्मा की प्रतीति तक नहीं होती; यदि होती तो उसके लिए भी कुछ तो करने की बात सोची ही जाती । इतनी गहरी खुमारी में ब्रह्म सत्ता को समझना और उसके साथ सम्पर्क मिलाना अति कठिन है । फिर भी योगाभ्यास और तप साधना के द्वारा उसे प्रयत्नपूर्वक जागृत किया जा सकता है । इस जागृति के फलस्वरूप जो कुछ इन्द्रियातीत है, वह इन्द्रियगम्य बन सकता है जो बुद्धि की सीमा से बाहर है वह उसकी पकड़ में आ सकता है । जानने और करने के मार्ग में जो व्यवधान हैं, वे दूर हो सकते हैं ।

कई बार ऐसे प्रसंग भी आते हैं, कि बिना प्रयत्न के अनायास ही यह शक्तियाँ किन्हीं विशेष व्यक्तियों में जागृत पायी जाती हैं । इसका कारण प्रायः पूर्वसंचित संस्कारों और अभ्यासों का प्रतिफल होता है, पर इस विवाद में न पड़ा जाय तो भी इन चमत्कारी असाधारण कही जाने वाली घटनाओं से इतना तो पता चलता ही है, कि मनुष्य में अतीन्द्रिय क्षमता के स्रोत विद्यमान हैं । उन्हें आध्यात्मिक साधना से अथवा भौतिक उपाय, उपचारों से विकसित अवश्य किया जा सकता है । कठिनाई यह रही है कि शोध में समर्थ, सुयोग्य एवं साधन सम्पन्न व्यक्तियों को ऐसे तथ्यों पर विश्वास नहीं हुआ जो व्यक्ति और विश्व में प्राकृतिक नियमों से ऊपर की किन्हीं अलौकिक सामर्थ्यों को प्रतिपादित करते हैं । जिन्हें विश्वास था, वे शोध एवं विकास के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकने की स्थिति में नहीं थे ।

पिछले दिनों ऐसी अनेकों घटनाएँ सामने आयी हैं, जिनके आधार पर चेतना की स्वतन्त्र सत्ता—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माण्डव्यापी चेतन जगत और अतीन्द्रिय सामर्थ्यों का पता चलता है । विचारशील लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और प्रयत्नपूर्वक यह खोजबीन की जा रही है, कि क्या सचमुच ही चेतना का अपना अस्तित्व, क्षेत्र और बल होता है ? यदि होता है, तो उसको विकसित करके किस उपयोग में लाकर क्या लाभ उठाया जा सकता है ? पिछले बीस वर्षों में जो जानकारियाँ मिली हैं, वे इसके लिए विवश करती हैं कि विज्ञान और आध्यात्म का समन्वय, मनुष्य को अधिक समर्थ एवं संसार को अधिक सुखी बनाने वाले नये आधार खड़े किए जा सकते हैं ।

तन्त्र-विद्या के विश्व कोश एवं साइक्लोपीडिया, ऑफ दि आक्ल्ट' में एण्टीन मेसयर नामक एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन है, जो पेट के माध्यम से अप्रत्यक्ष वस्तुओं का विवरण बताने में समर्थ था । फ्रांसीसी वैज्ञानिक और कवि जूल्स रोमेन्स ने अपने शोध निष्कर्षों से त्वचा में रहने वाले नेत्र कोषाणुओं की उपस्थिति बताई है, जो स्पर्श के आधार पर देखने का बहुत कुछ प्रयोजन पूरा करते हैं ।

सन् १९५९ में फ्रांस के अखबारों में यह समाचार छपा कि अमेरिकी वैज्ञानिकों ने अपने देश की एक नाटिलस नामक पनडुब्बी तक टेलीपैथी के माध्यम से विचार सन्देश भेजने और प्राप्त करने में सफलता पाई है । इस समाचार को रूस में बहुत महत्त्व दिया गया और इस क्षेत्र में अमेरिका के आगे निकल जाने और रूस के पिछड़ जाने की क्या प्रतिक्रिया होगी ? इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ और एक वर्ष के भीतर ही यह निश्चय किया गया कि टेलीपैथी के सम्बन्ध में जो प्रयोग चल रहे हैं । उन्हें और तीव्र कर दिया जाय । तभी यह तथ्य भी सामने आया कि रूस इस सन्दर्भ में अमेरिका से भी पहले अपने प्रयोग चला रहा है और प्रगति काफी आगे तक हो चुकी है । रूसी प्रयोगों में से एक का तभी अखबारों में विवरण भी छपा । एक खरगोश मादा के नवजात बच्चे पनडुब्बी में पहुँचाये गए । मादा समुद्र से बाहर अपनी जगह पर थी । मादा और बच्चों के मस्तिष्क में एक ही तरह के इलेक्ट्रोड्स लगा दिए गए । गहरे पानी में पनडुब्बी के पहुँचने पर बच्चों का एक-एक करके कत्ल किया गया, देखा गया कि हर बच्चे के कत्ल के ठीक समय उसकी माता बेतरह तिलमिलायी । उसकी गतिविधियाँ ऐसी थीं, मानो अपने बच्चों के छीने जाने पर उन्हें बचाने के लिए कुछ प्रयत्न कर रही हो । इस प्रयोग से जाना गया कि प्राणियों के बीच कोई पारस्परिक सम्बन्ध सूत्र है और उसे तीखा बना कर चिन्तन के आदान-प्रदान का द्वार खुल सकता है ।

अमेरिकी जीव विज्ञानी क्लीव वैवस्टेर ने प्राणि मात्र के बीच काम करने वाले एक चेतना प्रवाह की खोज की है, जिसके कारण वे परस्पर एक पतले धागे में बँधे रहते हैं और एक-दूसरे की सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं । यह निष्कर्ष उन्होंने समुद्री केकड़ों में से एक के मारे जाते समय उस क्षेत्र के अन्य केकड़ों को ही नहीं, दूसरे जीवों को भी कष्टकर अनुभूति होती है । इस अनुभूति प्रवाह को रोकने के लिए सीसे की दीवारें खड़ी की गईं, जिससे कष्ट पाने वाले प्राणी का सूक्ष्म सम्पर्क उस क्षेत्र के अन्य प्राणियों से न रहे; फिर भी वह प्रवाह रुका नहीं और एक कष्ट पीड़ित की प्रतिक्रिया अन्यान्यों को प्रभावित करती रही । एक-दूसरे शोध अधिकारी प्रो. गार्डनर मरफी का प्रतिपादन भी ठीक क्लीव वैवस्टेर से मिलता-जुलता ही है । वे कहते हैं, जिस प्रकार समुद्र में पाये जाने वाले ज्वालामुखी द्वीप-समूह बाहर से पृथक दीखते हुए भी अग्नि उगलने के सम्बन्ध में गहराई के अन्तराल में परस्पर जुड़े रहते हैं । उसी प्रकार प्राणियों की सत्ता पृथक-पृथक होते हुए भी उनके बीच एक ऐसा सम्बन्ध सूत्र मौजूद है, जो एक-दूसरों की अनुभूतियों में सहभागी बनाता रहता है ।

सन् १९५६ तक रूस में टेलीपैथी को जादूगरी एवं धोखाधड़ी की संज्ञा दी गई है और उसका तिरस्कारपूर्ण उपहास उड़ाया जाता रहा है । सोवियत एन साइक्लोपीडिया में इस शब्द की व्याख्या इसी रूप में छपी थी । 'दूरानुभूति' की मान्यता को अनेक तर्कों से झुठलाने वाले रूस के मूर्धन्य विज्ञानी अलेक्जेण्डर किताई गोरादस्की का एक प्रतिपादन लिटरेरी गजट में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने जोरदार शब्दों में टेलीपैथी के सिद्धान्त का खण्डन किया था । उनका कथन था कि विचार सम्प्रेषण के लिए मस्तिष्क में इलेक्ट्रो मैगनेटिक तरंगें होनी चाहिए, जबकि वहाँ इनका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई अस्तित्व नहीं है । ऐसी दशा में इस प्रकार की कोई सम्भावना विज्ञान स्वीकार नहीं कर सकता, यह प्रतिपादन उनके आरम्भिक अन्वेषण का है, पीछे उन्होंने कितनी ही परामनोविज्ञानी शोधों से निकट सम्पर्क साधने के उपरान्त अपने विचार बदल दिए और उस परिवर्तन की जानकारी अखबारों में छपाते हुए कहा—टेलीपैथी हमारे लिए शोध का अत्यन्त आवश्यक विषय है ।

वूल्फ मेसिंग नामक एक व्यक्ति में बिना प्रशिक्षण के अनायास ही ऐसी क्षमता पाई गई, जिससे वह दूरस्थ घटनाक्रमों एवं विचारों का परिचय प्राप्त कर लेता था । वह व्यक्ति अनेक वैज्ञानिकों के परीक्षण का विषय बना रहा और टेलीपैथी के अस्तित्व को सही सिद्ध करता रहा ।

मिरवाइलोवा नामक एक अन्य महिला को यह विशेष शक्ति प्राप्त थी, कि वह अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करके मेज पर रखी कितनी ही वस्तुओं को बिना छुए इधर से उधर हटा देती थी । उस घटना को अनेकों प्रामाणिक व्यक्तियों के सामने देखा गया । जिसमें तस्तरी में रखा डबल रोटी का टुकड़ा अपनी जगह पर से उठा, खिसका, खड़ा हुआ और उछल कर मिरवाइलोवा के मुँह में घुस गया । यह शक्ति इस महिला को अपनी माता से उत्तराधिकार में मिली थी । वे भी ऐसे ही चमत्कार दिखाने में ख्याति प्राप्त कर चुकी थीं, पर उन पर कोई परीक्षण नहीं हुआ था । शोध का विषय मिरवाइलोवा ही रही और उन पर कितनी ही प्रयोगशालाओं में कितने ही तरह के प्रयोग होते रहे ।

विश्व का हर पदार्थ अपने साथ ताप और प्रकाश की विद्युत किरणें संजोए हुए है । वे कम्पन लहरियों के साथ इस निखिल विश्व में अपना प्रवाह फैलाती हैं । ईथर तत्व के द्वारा वे दूर-दूर तक जा पहुँचती हैं । यदि उन्हें ठीक तरह पकड़ा जा सके, तो दृश्य बहुत दूरी पर अवस्थित होते हुए भी देखा जा सकता है । जो घटनाएँ सुदूर क्षेत्रों में घटित हो रही हैं उन्हें निकटवर्ती दृश्यों की तरह देखा जा सकता है । इन किरणों को पकड़ने के लिए नेत्र उपयुक्त हैं । प्रत्यक्ष को, समीपवर्ती को वे ही देखते हैं । एक तीसरा नेत्र आज्ञा चक्र है, जिसे नेत्र शक्ति का उद्गम केन्द्र कह सकते हैं । जननेन्द्रिय की काम क्षमता का सूक्ष्म केन्द्र मूलाधार चक्र है । विविध काम सम्वेदनाएँ तथा क्षमताएँ मूलतः वही से उद्भूत होकर जननेन्द्रिय में एवं मनःक्षेत्र में सक्रिय बनती हैं । इसी तरह नेत्रों की शक्ति को अपने क्रिया-कलाप सम्पन्न करने की क्षमता जिस बैटरी-डायनमो या जनरेटर से मिलती है उसे आज्ञा चक्र कहा जा सकता है ।

इतने पर भी यह नहीं समझ लिया जाना चाहिए कि रूप तत्व का सम्बन्ध मात्र नेत्रों से ही है । अग्नि तत्व की प्रधानता से रूप कम्पन उत्पन्न होते हैं । शरीर में जिस अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व नेत्र ही करते हैं । ऐसा नहीं मान लेना चाहिए । अग्नि तत्व शरीर के अन्य अंगों में भी है । समस्त शरीर पंच तत्वों के गुम्फन से बना है । यदि अन्य अंगों का अग्नि तत्व अनायास ही विकसित हो जाय अथवा साधनात्मक प्रयोगों से उसे विकसित कर लिया जाय तो नेत्रों की बहुत कुछ आवश्यकता उससे भी पूरी हो सकती है ।

एक रूसी लड़की कुलेशोवा आँखों से पट्टी बाँधकर मात्र उँगलियों से छूकर पुस्तकें पढ़ती चली जाने की विशेषता से सम्पन्न रहने के कारण संसार भर के वैज्ञानिकों को अचम्भे में डाल चुकी है । डॉ. नोवोमीस्को की अध्यक्षता में इस प्रसंग पर प्रकाश डालने के लिए बने वैज्ञानिकों के आयोग ने इस सम्बन्ध में गहरी जाँच पड़ताल की । समिति ने इसमें कोई छल तो नहीं पाया, पर निश्चित कारण बताने में असमर्थता प्रकट की है । अनुमान कई तरह के लगाए और कहा कि इनमें से कोई अथवा अन्य कारण इस प्रकार की विलक्षण क्षमता का उत्तरदायी हो सकता है पर अभी तो कुछ निश्चित मत प्रकट कर सकना सम्भव नहीं है ।

लेनिन ग्राड यूनिवर्सिटी की शरीर शास्त्री प्रो. वसिलियेव ने रूसी सरकार को प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा था कि अतिरिक्त ऐन्द्रिक अनुभूति (ई.एस.पी.) की मूलशक्ति को खोजना अणुशक्ति की खोज जितनी ही महत्त्वपूर्ण है । इस दिशा में हमें अधिक सतर्कता और तत्परतापूर्वक रहना चाहिए । सरकार ने इस दिशा में समुचित ध्यान दिया और उन्हें ही उस विश्वविद्यालय के परामनोविज्ञान विभाग का शोध अध्यक्ष नियत किया गया और उन्होंने उस कार्य को पूरी तत्परता के साथ निबाहने का प्रयत्न किया । पिछले दिनों इस शोध संस्थान के मार्ग दर्शन में विभिन्न स्थानों पर जो तथ्य सामने आये हैं, उनसे प्रतीत होता है, कि ब्रह्माण्डीय चेतना के सूक्ष्म धारा प्रवाह के साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य अपने को जोड़ सकेगा और नये किस्म के ऐसे लाभ प्राप्त कर सकेगा, जो अभी तो काल्पनिक और अविश्वस्त ही ,समझे जाते हैं ।

मनुष्य अपनी 'छठी' इन्द्रिय विकसित कर सकता है

जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों की तुलना में मनुष्य भले ही बुद्धिमान, विवेकवान और विकसित क्यों न हो ? किन्तु अतीन्द्रिय सामर्थ्य के क्षेत्र में वह इन निरीह प्राणियों से पीछे है । मनुष्येतर प्राणियों में भी ऐसी विशेषताएँ पाई जाती हैं, जिनके रहते वे प्रकृति और वातावरण से समन्वय और संगति बैठाकर अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफल रहते हैं । प्रकृति ने इन क्षुद्र प्राणियों को इन क्षमताओं से विभूषित न किया होता, तो बुद्धि और विवेक तथा बल और शक्ति के अभाव में अब तक ये प्रजातियाँ कब की विलुप्त हो गई होतीं । साधारणतः सृष्टि का ज्ञान पंचेन्द्रियों से ही होता है, किन्तु वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि इसके अतिरिक्त छठी इन्द्रिय भी है, जो इन पाँचों से परे अति सूक्ष्म की जानकारी देने में समर्थ है । प्राणि जगत में यही छठी इन्द्रिय अधिक विकसित पायी जाती है और इसी के उपयोग से वे जीवन के क्रिया-कलाप चलाते देखे जाते हैं ।

चूहों के नवजात शिशु यदि अपनी माँ से बिछुड़ जाते हैं अथवा किसी विपत्ति में फँस जाते हैं तब वे अश्रव्य ध्वनि में चीखते हैं, जिसे मनुष्य चाहे भी तो नहीं सुन पाता, किन्तु शिशुओं के अभिभावकों को अश्रव्य ध्वनि के माध्यम से जानकारी प्राप्त हो जाती है और इतना ही नहीं, वे इन अश्रव्य ध्वनि तरंगों की दिशा का भी ज्ञान कर पाने में समर्थ होते हैं । वे उस सही स्थान पर आनन-फानन में पहुँचने में सफल हो जाते हैं । इसी प्रकार वेस्टइण्डीज में पाया जाने वाला 'आइल वर्ड' पक्षी अँधेरी गुफा में छिप कर रहता है, किन्तु चमगादड़ों की भाँति अँधेरे में भी अल्ट्रासोनिक ध्वनि तरंगों के माध्यम से सही रास्ते, तथा दुश्मन की जानकारी प्राप्त कर लेता है ।

महासागरों की अथाह गहराई में विचरने वाली डालफिन एवं व्हेल मछलियाँ भी सोनार ध्वनि तरंगों के माध्यम से अपना आहार एवं मार्ग, खोजती और शत्रु की जानकारी प्राप्त कर लेती तथा बचाव करती हैं । स्ट्रिंग रेन्ज जल-जीव को अद्‌भुत क्षमता प्राप्त है । वह बालू रेत में छिपे जीव-जन्तुओं की खोज अपने शरीर से विद्युत आवेश का प्रवाह छोड़कर करता है । जीवों के छिपने की जानकारी विद्युत प्रवाह में अवरोध आने से हो जाती है । इस तरह वह छिपे जीव-जन्तुओं को खोजकर अपनी आहारपूर्ति कर लेता है । "रेटल स्नेक" रेंगता साँप अपने इर्द-गिर्द घूमने वाले क्षुद्र जीवों का अँधेरे में ऊष्मा चित्र बनाकर उनकी उपस्थिति ज्ञात कर लेता है क्योंकि उसके नथुनों के इर्द-गिर्द एक विशेष प्रकार की सम्वेदनशील झिल्ली होती है, जिसमें लाखों संवेदनशील कोशिकाएँ होती हैं, जिनसे वह अपने शिकार की उपस्थिति की जानकारी कर लेता है । यह सम्वेदनशील झिल्ली मनुष्य में भी होती है, किन्तु उसमें प्रति वर्ग इंच केवल १६ कोशिकाएँ ही पायी गईं, जबकि साँप के नथुनों के पास पाई जाने वाली झिल्ली के इर्द-गिर्द प्रति वर्ग इंच डेढ़ लाख सम्वेदनशील कोशिकाएँ होती हैं ।

ईश्वर सभी प्राणियों को अतीन्द्रिय क्षमताओं से सम्पन्न बना कर संसार में भेजता है, किन्तु मनुष्य द्वारा सबसे अधिक प्राकृतिक नियमों की अवहेलना, मर्यादाओं का उल्लंघन, अनुशासनों का अतिक्रमण किया जाता है । भ्रष्ट आचरण करने, अचिंत्य चिन्तन करने से उसकी यह क्षमता नष्ट होती चली जाती है । यदि वह पवित्र आचरण को अपनाये तथा बुद्धि को भटकाव से रोककर अपनी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाने की प्रक्रिया सम्पन्न कर ले, तो वह भी अपनी 'छठी इन्द्रिय' को जगा सकता है । इसके लिए आवश्यक है, अन्तःकरण का परिष्कार, पात्रता का विकास तथा उच्चस्तरीय तप पुरुषार्थ ।

सृष्टा का सुव्यवस्थित किन्तु अद्‌भुत संसार

योग साधनाओं के माध्यम से आध्यात्म जीवन की उच्च कक्षाओं में पहुँचे योगी महापुरुष अनेक अलौकिक शक्तियाँ, क्षमताएँ विकसित कर लेते हैं परन्तु प्रकृति ने कई जीव-जन्तुओं को भी अलौकिक शक्तियाँ दी हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनके बिना उनका काम ही नहीं चल सकता था । उन शक्तियों और क्षमताओं के सम्बन्ध में जानकर तो आश्चर्य ही होता है और परमात्मा की अनन्त अनुकम्पा के सम्मुख नतमस्तक हो जाना पड़ता है ।

शीत प्रधान देशों में जहाँ बर्फीले तूफान आते हैं और सामान्य मौसम में भी जहाँ कोई मनुष्य मुश्किल से रह पाता है, वहाँ कई जातियों के पक्षी रहते हैं । बर्फीले तूफान वर्ष में किन दिनों आते हैं, यह कोई निश्चित नहीं है और उनमें जीवन के अस्तित्व की सम्भावना बिल्कुल ही नहीं है, फिर भी कुछ जाति के पक्षी वहाँ रहते हैं और बर्फ गिरने के एक माह पूर्व ही वहाँ से उड़ जाते हैं । कोई दस दिन पहले भी उड़ता है और कोई दो माह पूर्व भी, परन्तु प्रतिवर्ष वे अपने स्वाभाविक नियत अवधि में ही उड़ जाते हैं बर्फ कब गिरेगी । प्रायः यह अनिश्चित ही रहता है, फिर भी उनके उड़ने के समय में कोई भूल नहीं होती ।

इसी प्रकार शीत प्रधान देशों में जब बर्फ गिरने लगती है तो रीछ कई दिनों पहले गुफा में चले जाते हैं और अपना आवश्यक आहार इकट्ठा कर लेते हैं । इसी प्रकार एक जापानी चिड़िया है, वह भूकम्प आने के चौबीस घण्टे पहले उस क्षेत्र को छोड़ देती है । हमारे देश में साधारण चिड़िया की भाँति यह जापान में सर्वत्र पायी जाती है, गाँवों में भी । गाँव के लोग उसे उड़ते और गाँव छोड़कर जाते देख समझ जाते हैं, कि भूकम्प आने वाला है और वे भी गाँव छोड़ जाते हैं । आश्चर्य है कि जब तक विकसित वैज्ञानिक संयन्त्र भी कुछ घण्टे पूर्व ही भूकम्प की भविष्यवाणियाँ करते हैं, फिर इस चिड़िया को चौबीस घण्टा पहले ही कैसे पता चल जाता है ?

उत्तरी कनाडा में शीत ऋतु के समय झीलों पर बर्फ की मोटी सतह जम जाती है, लेकिन वहाँ की झीलों में रहने वाली मछलियाँ इससे पूर्व ही गर्म जगह की ओर चली जाती हैं, जहाँ बर्फ नहीं जमती । अब उन्हें कैसे पता चलता होगा कि बर्फ जम जायेगी और अमुक स्थान पर नहीं जमेगी । टिटिहरी—एक भारतीय पक्षी है जो कभी वृक्षों पर अण्डे नहीं देता और अक्सर नदी, तालाबों के किनारे पर ही अण्डे देता है, वह समय भी प्रायः वर्षा ऋतु के आस-पास होता है । परन्तु नदी तालाब के तट पर भी वह पानी से इतनी दूर और इतने ऊँचे स्थान पर अण्डे देता है कि बाढ़ आ जाने पर भी जल वहाँ तक पहुँचता नहीं । ग्रामीण क्षेत्रों में इसीलिए यह मान्यता है कि जिस वर्ष टिटिहरी के अण्डे पानी में बह जायें, वह बर्ष अति विनाशकारी होता है ।

जलचर प्राणी पृथ्वी या आकाश में मर जाते हैं और नभचर अथवा थलचर पानी में नहीं बचते, परन्तु एक पक्षी है आरिब्डक, जो आकाश में भी उड़ता है और पानी में भी महीनों तैरता रहता है ।

जीव विज्ञान के आचार्य विलियम जे. सॉग ने वर्षों तक प्राणियों की अतीन्द्रिय शक्तियों के सम्बन्ध में खोज की और उन निष्कर्षों को पढ़कर यह आसानी से अनुभव किया जा सकता है, कि मनुष्य बुद्धि कौशल में भले ही पशुओं से काफी आगे निकल गया हो, परन्तु अतीन्द्रिय शक्तियों के क्षेत्र में पशु-पक्षी ही उससे बढ़े-चढ़े हैं ।

कुत्तों और भेड़ियों की घ्राणशक्ति इतनी तीव्र होती है कि वे मीलों दूर की गन्ध ले लेते हैं । गन्ध के आधार पर तो मनुष्य दो फुट दूर खड़े इन्सान को नहीं पहचान सकता लेकिन कुत्ता गन्ध के मामले में इतना होशियार है कि पहने हुए कपड़ों को यहाँ तक कि पद चिन्हों के आधार पर भी वह उस व्यक्ति को कहीं भी पहचानने में सफल हो जाता है, संगीन मामलों में अपराधियों की खोज के लिए कुत्तों का सहारा इसी प्रकार लिया जाता है, पाठक इससे तो भली-भाँति परिचित हैं ।

इसी प्रकार उल्लू, चील और गिद्ध की दृश्य शक्ति अपने ढंग की अनूठी ही होती है । उल्लू के नेत्रों में प्रचण्ड रोशनी भरी पड़ी है कि वह केवल रात में ही देख पाता है । किसी वस्तु का न दिखाई देना अन्धकार के कारण ही नहीं होता, वरन् तीव्र प्रकाश हो तो भी आँखें देखने में असमर्थ होती हैं, जो प्रकाश हमारी आँखों के लिए सामान्य है और उसमें हम आसानी से देख सकते हैं, वही प्रकाश उल्लू की आँखों के लिए चौंधिया देने वाला बन जाता है और उल्लू इसी कारण दिन में देख नहीं पाता ।

चील और गिद्ध मीलों ऊपर उड़ते हुए भी नीचे पड़े माँस के टुकड़े को देख लेते हैं । बाज हजारों फीट ऊपर उड़ते हुए भी घास या झाड़ियों में छुपे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेंढक, चूहे और साँप को आसानी से देख लेता है । हमारे लिए तो पाँच फीट ऊपर से भी घास के नीचे छुपे मेंढक चूहों को देख पाना असम्भव है । खरगोश और मछलियाँ भी बिना सिर हिलाये चारों तरफ देख लेते हैं । श्रोतेन्द्रिय की दृष्टि से हिरण सबसे अद्वितीय है । वह मीलों दूर की आहट सुन लेता है । न सुनाई पड़ने वाली शेर की दहाड़, वह तुरन्त सुन लेता है और उसके कान खड़े हो जाते हैं ।

कई प्राणियों में इस प्रकार की शक्तियाँ और क्षमताएँ विकसित हैं, जिनकी तुलना में मनुष्य बौना सिद्ध होता है । इस दृष्टि से मनुष्य को प्रकृति का सबसे बड़ा पुत्र और सर्वोपरि अनुदानों से युक्त कहा जाना अनुपयुक्त लग सकता है, परन्तु वस्तुतः ऐसा है नहीं । वस्तुतः ये शक्तियाँ मनुष्य को भी जन्मजात मिली हैं । मनुष्य की संरचना का आध्यात्मिक अध्ययन सिद्ध करता है कि सूक्ष्म शरीर में विद्यमान षट्चक्रों में वे सभी सम्भावनाएँ और शक्तियाँ अन्तर्निहित है, जो पिछले किन्हीं जन्मों से विकसित हो चुकी थीं । यह तो एक तथ्य है ही कि सभी जीव-योनियों में भ्रमण कर चुकने के बाद यह मनुष्य को मिली है ।

मानवी कलेवर के सूक्ष्म शरीर में विद्यमान षट्चक्रों में जीवात्मा की यात्रा के समस्त अनुभव और उपलब्धियाँ किसी टेप रिकॉर्डर में रिकॉर्ड की गई आवाज की तरह टेप हैं । आवश्यक है तो उन्हें जागृत भर करना । वे सुप्त इसलिए हैं कि मनुष्य की लम्बी यात्रा के कारण वे पीछे छूट गई हैं और अप्राकृतिक रहन-सहन तथा विकृत जीवन, विकृत मनोभूमि के कारण उनकी अनुभूति भी निष्पद पड़ चुकी है ।

कहा जा सकता है कि प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ अनुदानों का अधिकारी मनुष्य है, तो उसे वे इस जीवन में भी प्रदत्त की जा सकती थीं, लेकिन प्रकृति का यह नियम है कि जिन परिस्थितियों में जिस वस्तु या शक्ति की आवश्यकता हो वह उपलब्ध करा दी जाय । अनावश्यक और अनापेक्षित शक्तियों के दुरुपयोग की ही सम्भावना अधिक रहती है, इसलिए जब तक कोई अपनी पात्रता सिद्ध नहीं कर देता, वे मिल नहीं सकतीं । यह सृष्टा का एक अनिवार्य शाश्वत सिद्धान्त है ।

प्राणधारियों में अतीन्द्रिय चेतना विद्यमान है

शरीर और मस्तिष्क की प्रत्यक्ष शक्तियाँ सर्व विदित हैं । शरीर श्रम करता है और मस्तिष्क सोचता है, भौतिक विज्ञान इतना ही जानता है, पर उनमें अतीन्द्रिय चेतना भी है, यदि है तो क्यों है ? इन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान के पास नहीं । क्योंकि भौतिक शक्तियाँ तो अपने स्थूल नियमों तक ही सीमित रहेंगी । उनमें व्यतिक्रम होने का कोई कारण नहीं, पर देखा जाता है, कि मनुष्यों में ही नहीं, मनुष्येतर प्राणियों में भी कुछ ऐसी विशेषताएँ पायी जाती हैं, जो इन्द्रिय शक्तियों की परिधि से बाहर की बात है । हाड़-माँस का बना शरीर उन्हीं नियमों का पालन करेगा जो उसके लिए निर्धारित हैं । इसी प्रकार मस्तिष्क भी उतना ही सोचेगा जो उसने सीखा है । सामान्य लौकिक ज्ञान की परिधि का उल्लंघन करके कई बार ऐसा कुछ दीखने को मिलता है, जिससे विदित होता है कि आत्मा के भीतर कुछ ऐसी विशेषता है जो ऐसी जानकारी भी प्राप्त कर लेती है, जो उसकी शारीरिक मर्यादा के अनुसार सम्भव नहीं अतीन्द्रिय चेतना का अस्तित्व अनेक बार प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है । उसे झुठलाया नहीं जा सकता ।

यदि भौतिक विज्ञान जीवधारी की जड़ प्रकृति को ही एक स्थूल उत्पादन मानता रहेगा तो उसे अतीन्द्रिय चेतना का कभी कोई आधार एवं कारण न मिलेगा । जब प्राणी एक 'चलता फिरता वृक्ष' ही ठहरा तो उसकी शारीरिक एवं मानसिक हलचलें भी शरीर ज्ञान से बाहर कैसे जा सकती हैं ? पर वे जाती हैं, ऐसी दशा में भौतिक विज्ञान को, प्राणी को जड़ जगत की ही एक हलचल मानने तक सीमित नहीं रहना होगा वरन् आत्मा की अलौकिक सत्ता को स्वीकार करना होगा । अतीन्द्रिय चेतना का समाधान तभी मिल सकता है ।

जार्जिया (रूस) निवासियों में काकेशियाई कुत्ते त्साब्ला की कथा घर-घर प्रचलित है । वह इतना स्वामिभक्त और कर्तव्यपरायण था, कि उसकी तुलना करके लोग अपने कर्मचारियों का उद्बोधन करते रहते थे । तिब्लिसी क्षेत्र में यह कुत्ता अपने मालिक के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानवरों को प्रायः अकेला ही ले जाया करता था । जानवरों को कहाँ चरना है, कहाँ बैठना है, कहाँ पानी पीना है, कब लौटना है यह सब बातें उसके ध्यान में थीं । कोई जानवर झुण्ड से बाहर निकल कर इधर-उधर खिसक न जाय, इसका वह पूरा ध्यान रखता था और भेड़िए, तेन्दुए जो उस क्षेत्र में भेड़-बकरियों की घात लगाते रहते थे, उनसे जूझने के लिए सदा मुस्तैद रहता था । उसने ऐसी कई लड़ाइयाँ जीती भी थीं । घायल होकर भी उसने अपने शिकारियों को भगाया और अपने झुण्ड के किसी जानवर का बाल-बाँका न होने दिया । मालिक के छोटे लड़के सान्द्री से वह इतना हिला-मिला था कि दोनों पास-पास बैठकर खाते और फुर्सत के समय भरपूर खेलते ।

इस कुत्ते की एक दूर के पशु फार्म पर जरूरत पड़ी । मालिक ने उसे देना मंजूर कर लिया । त्साब्ला की आँखें बन्द करके ट्रक में पटककर, उसे सैकड़ो मील दूर उस नये फार्म में ले जाया गया । वहाँ उसे बाँधकर रखा गया । कुत्ते का बुरा हाल था न उसने कुछ खाया न पिया, रोता रहा । एक दिन उसका दाँव लग गया तो रस्सी तुड़ा कर भाग निकला । आँखें बन्द करके ट्रक में डालकर लाया गया था, फिर भी उसने अन्तःप्रेरणा के आधार पर दौड़ लगाई और नदी-नाले पार करता हुआ भूखा, प्यासा, रास्ते के शत्रुओं से जूझता, क्षत-विक्षत शरीर लेकर अपने पुराने स्थान पर लौट आया और अपने प्यारे साथी सान्द्री से लिपट-लिपट कर रोया ।

इस घटना को लेकर जार्जिया विज्ञान एकेडेमी के शरीर शास्त्री आई. एस. वेकेताश्विली ने शोध कार्य आरम्भ किया कि क्या पशुओं में अतिरिक्त अतीन्द्रिय चेतना होती है ? और क्यों वे उसके आधार पर बिना इन्द्रियों का प्रत्यक्ष सहारा लिए वह काम कर सकते हैं, जो आँख, कान आदि से ही सम्भव है ।

उन्होंने यह परीक्षण कई जानवरों पर किए कि क्या उनमें इतनी अतीन्द्रिय चेतना होती है, जिसके सहारे वे प्रधान ज्ञानेन्द्रिय आँख का काम कर सकें । इसके लिए उन्होंने एक बिल्ली पाली । नाम रखा—त्योवा । उसकी आँखों पर ऐसी पट्टी बाँधी गई, जिससे वह कुछ भी देख न सके । उसे साधारणतया बाँधकर रखा जाता, पर जब खाने का वक्त होता तो, उसे खोला जाता और खाने की तश्तरी कमरे के एक कोने पर दूर रख दी जाती । शुरू में तो उसे अपना भोजन तलाश करने में कठिनाई हुई, पर पीछे वह इतनी अभ्यस्त हो गई कि कमरे के किसी भी स्थान पर खाना रखा जाय, वह वहीं पहुँच जाती ।

नाक की गन्ध से सूँघकर उसके आधार पर वह ऐसा कर सकती है । यह बात वैज्ञानिक जानते थे । इसलिए उन्होंने इसके साथ ही अतीन्द्रिय ज्ञान की एक कठिन परीक्षा यह रखी कि तस्तरी में ही पत्थर के टुकड़े भी रख दिए जाते । गन्ध तो सारे प्लेट में से उठती थी इसलिए उसमें रखी हुई किसी चीज को वह मुँह में डाल सकती थी, पर देखा गया कि बहुत ही निश्चित रीति से उसने अपना खाना ही खाया और पत्थर के टुकड़ों को चाटा तक नहीं । इसी प्रकार कुछ दिन में वह रास्ते में रखी हुई कुर्सी, सन्दूक आदि को बचाकर इस तरह अपना रास्ता निकालने लगी, जिससे किसी चीज के गिरने की दुर्घटना भी न हो और चलना भी कम पड़े ।

इसी प्रयोग के लिए एक छोटा काला कुत्ता पाला गया । नाम रखा जिल्डा । इसकी आँखों पर भी पट्टी बाँध दी गई प्रयोगशाला में क्या चीज कहाँ रहती है इसका उसे पता तक न था । वह कुछ दिन में ही सब कुछ भाँप गया और बिना किसी से टकराए बुलाई हुई आवाज पर पहुँचने लगा ।

वेरेताश्विली ने अपने परीक्षणों की शृंखला में मनुष्यों को भी जोड़ा है । उन्होंने एक ऐसे जन्मांध छोटे लड़के की कथा लिखी है, जो उन्हें एक व्यक्ति के पास तक रास्ता दिखाता हुआ, टेड़ी-मेड़ी गलियाँ पार करते हुए ईंट-पत्थरों और गड्ढों को बचाता हुआ उछलता कूदता आगे-आगे गया था ।

इन परीक्षणों से उन्होंने निष्कर्ष निकाला है, कि अतीन्द्रिय चेतना, हर प्राणी में विद्यमान रहती है, किसी में न्यून किसी में अधिक । कुछ जन्म-जात रूप से उसकी पर्याप्त मात्रा साथ लेकर आते हैं और कुछ प्रयत्न करके उसे जगा या बढ़ा सकते हैं । उसने अपने निष्कर्षों में यह भी कहा है, कि अन्धों में यह अतीन्द्रिय ज्ञान का एक स्तर लिविरिंथ रेसेप्टर अपेक्षाकृत अधिक विकसित हो जाता है । यदि प्रयत्न किया जाय तो उनकी यह क्षमता अधिक विकसित हो सकती है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वे नेत्रों वाले मनुष्यों से भी अधिक उपयोगी जीवन जी सकते हैं ।

प्राणियों में एक बड़ी विशेषता यह है कि वे परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल लेते हैं । प्रकृति के उतार-चढ़ाव और परिस्थितियों के प्रवाह विकट तो जरूर होते हैं, पर इतने नहीं कि मनुष्य की जिजीविषा को चुनौती दे सकें । प्राणी की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता ढलती बदलती रहती है और यदि उसे विषम परिस्थितियों में रहना पड़े, तो अपने में तदनुकूल सहनशीलता एवं परिवर्तन उत्पन्न कर लेती है । इसी प्रकार जिनके समीप रहना पड़ता है । उनका प्रभाव ग्रहण करके प्राणी उसी रंग-रूप और आकृति प्रकृति में भी ऐसा हेर-फेर कर लेता है, जिससे वातावरण के साथ उसके सदृश ही प्रतीत होने लगे । समीपता का प्रभाव मानसिक ही नहीं, शारीरिक भी होता है । इसे प्रकारान्तर से अतीन्द्रिय चेतना ही कहना चाहिए । सर्दी में गल जाना, गर्मी में जल जाना ही सम्भव हो सकता है, फिर शरीर अपने ढाँचे और क्रम की ही परिस्थिति के अनुरूप ढलने और बदलने लगे तो इसे अतीन्द्रिय चेतना के अतिरिक्त और क्या कहा जायेगा ?

उत्तरी ध्रुवों पर सफेद भालू होता है वह बर्फ में इस प्रकार बैठा रहता है कि दूसरे को कुछ पता ही नहीं चलता, कि वह भालू है या बर्फ की कोई चट्टान, वृक्षों की झाड़ियों में रहने वाले तेंदुए, जिर्राफ, हिरन, सर्प आदि के शरीरों पर ऐसे निशान बन जाते हैं, कि उन्हें देखने पर वे भी वृक्षों की कोई शाखा जैसे ही दीखते हैं ।

तितलियों की छटा भारतवासी दार्जिलिंग में देख सकते हैं । जैसे रंग के फूल वैसे ही रंग की तितलियाँ । अलग से देखा जाय तो मात्र फूल भर मालूम पड़ता है, उस पर कोई बैठा होगा उसका तनिक भी आभास नहीं होता । पर जब उन फूलों के पास जाया जाये तो उन्हीं जैसे रंग की तितलियाँ उड़ने लगती हैं । इस प्रकार रंग-बिरंगे फूलों के साथ उन्हीं रंगों की तितलियाँ एक अपूर्व छटा दिखाती हैं । कई तितलियाँ तो पत्तों के रंग की ही नहीं, उनके आकार की भी होती हैं । जब पतझड़ में पत्तों का रंग पीला पड़ता है, तो वे भी अपना हरा चोला पीला कर लेती हैं ।

बाँस के पेड़ पर लटका रहने वाला साँप, बिल्कुल बाँस की टहनी जैसा लगता है उस पर गाँठों जैसे निशान तक होते हैं ।

जिन जीवों को शत्रुओं से खतरा होता है और आत्मरक्षा की अतिरिक्त आवश्यकता अनुभव करते हैं, उनकी आकृति और प्रकृति में ऐसा विकास हो जाता है, जिसमें वे आत्मरक्षा सरलतापूर्वक कर सकें ।

समुद्री घोड़ा अपने शरीर को घास-पात से ढके रहता है, ताकि खूँखार जल-जन्तु उसे पेड़ भर समझे और हमला न करें । कुछ घोंघे ऐसे भी होते हैं कि जब मछलियों के आक्रमण के शिकार होते हैं, तो एक काला सा द्रव मुँह से उगल देते हैं; उस कालिमा की धुँध में मछलियाँ उन्हें ठीक तरह देख नहीं पातीं इतने में वे उनकी पकड़ से बाहर खिसक जाते हैं । मेडागास्कर में एक ऐसी छिपकली होती है, जिसमें तेज दौड़ने की क्षमता नहीं होती । उसे माँसाहारी पक्षी आसानी से पकड़ सकते हैं । आत्मरक्षा के लिए उसमें एक अद्‌भुत विशेषता यह उत्पन्न हुई कि पूँछ की जड़ बहुत कमजोर होती है । जब वह मुसीबत में फँसती है तो झिटक कर अपनी पूँछ तोड़ डालती है और वह टुकड़ा कटने के बाद फड़फड़ाने लगता है । आक्रमणकारी उसे ही शिकार समझकर खाने लगता है और चुपचाप चिपकी हुई छिपकली इसी प्रकार अपने प्राण बचा लेती है ।

फलों में शाक-भाजियों में पड़े हुए कीड़े प्रायः उन्हीं रंग के होते हैं । पक्षियों के अण्डों को खा जाने की घात में कितने ही जन्तु फिरते रहते हैं । इसलिए पक्षी इस तरह की टहनियों में या घास में उन्हें छिपाकर सेते हैं, जहाँ वे घातकर्त्ताओं की दृष्टि से अपने अण्डों का बचाव कर सकें ।

हमें यह मानकर चलना होगा कि प्राणी जड़ जगत घास-पात जैसा उत्पादन नहीं और न चलता-फिरता वृक्ष है—जैसा कि विज्ञान द्वारा माना जाता रहा है । जीवधारी की चेतना में आत्मा का प्रकाश है और उस प्रकाश में वह सामर्थ्य विद्यमान है, जो इन्द्रिय सामर्थ्य की परिधि से आगे की बात सोच सके और ऐसे कदम उठा सके, जैसे जड़ पदार्थों के लिए उठा सकना सम्भव नहीं हो सकता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभूतियाँ उनमें भी हैं

मनुष्य सृष्टा की सर्वोत्तम कृति है, उसने उसे समर्थ, सशक्त बनाने के लिए अनेकानेक प्रकार की विभूतियों से सुसज्जित किया है, पर अन्य प्राणियों की सर्वथा उपेक्षा कर दी हो, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता । आवश्यकता के अनुरूप उनमें भी शक्तियाँ सँजोयी गई हैं, ताकि वे इतने अक्षम भी न रह जायें कि विभिन्न प्रकार की आपदाओं से अपनी रक्षा ही न कर सकें और सृजेता के सिर यह कलंक लदे कि सृष्टि-संरचना के सन्दर्भ में उसने दोहरे मानदण्ड की नीति अपनायी है ।

एक घटना बीसवीं सदी के प्रथम दशक की है । अमेरिका के पश्चिमी द्वीप-समूह में स्थिति पाँच हजार फुट ऊँचा एक पर्वत है—माउण्टपीरो । अब से लगभग नब्बे वर्ष पूर्व इसके आस-पास कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिनमें हजारों लोग रहते थे, पर आज इतने वर्षों बाद भी वहाँ की आबादी उतनी सघन नहीं हो पायी है, जितनी पहले कभी थी । कारण वहाँ का जीवित ज्वालामुखी है । सन् १९०३ की गर्मी के एक दिन माउण्टपीरो के जीव-जन्तु न जाने क्यों एक अज्ञात भय से इधर-इधर भागने लगे यह आकुलता पालतू पशुओं में भी दिखाई पड़ी, पर लोग इसका कारण न समझ सके और पाशविक उन्माद समझकर इसकी उपेक्षा कर दी, किन्तु यह क्या ? इस घटना को अभी चार दिन भी नहीं बीते थे कि पर्वत के मध्य एक तीव्र विस्फोट हुआ और लाल लावा पहाड़ के चारों ओर मीलों तक बिखर गया । दुर्घटना में करोड़ों की सम्पत्ति बर्बाद हुई और लगभग ३५ हजार व्यक्ति मारे गए । ज्वालामुखी विस्फोट के बाद ही जन्तुओं के पलायन का कारण विदित हो सका ।

तो क्या माउण्टपीरो के जीवधारियों को इस विपत्ति का आभास समय से पूर्व हो गया था ? प्रसिद्ध अमेरिकी प्राणिशास्त्री डॉ. विलियम जे. लॉग अपनी चर्चित पुस्तक ई. एस. पी. इन. एनिमल में उक्त घटना का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि ऐसा होना आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि उनमें ऐसी क्षमताएँ होती हैं । वे कहते हैं, कि उनकी इसी विशेषता के कारण आज जापानी लोग प्राकृतिक आपदा से आत्मरक्षा कर सकने में समर्थ हुए हैं । उनके अनुसार 'गोल्ड फिश' नामक मछली होती है, जिनमें ऐसी क्षमता उच्चस्तर तक विकसित होती है । ज्वालामुखी विस्फोट अथवा भूकम्प जैसी प्राकृतिक विभीषिकाएँ जब उक्त क्षेत्र में आने वाली होती हैं, तो वह मछली उसकी सूक्ष्म तरंगों को समय से पूर्व पकड़ लेती है, जिसका आभास लोगों को उसकी तीव्र बैचेनी और हलचल से मिलने लगता है । जब कभी ऐसे अवसर उपस्थित होते हैं, तो जापानी लोग इसका अनुमान लगा लेते हैं, कि अवश्य ही कोई अनहोनी उस स्थान विशेष, पर होने वाली है और इस आधार पर अपनी सुरक्षा के उपाय करने लगते हैं ।

अभी कुछ दिनों पूर्व प्रमुख अमेरिकी दैनिक "न्यूयार्क टाइम्स" में एक घटना प्रकाशित हुई थी, जिसमें कहा गया था कि वियना में एक कुत्ता माल चढ़ाने-उतारने की एक क्रेन के समीप पड़ा सुस्ता रहा था । अचानक वह चौंका, उछला और दूर जा बैठा । अभी इसके पाँच मिनट भी नहीं बीते थे, कि क्रेन की जंजीर टूटी और एक भारी उपकरण वहाँ आ गिरा जहाँ कुत्ता पहले बैठा था । घटना विद्लाग नामक एक इंजीनियर के सामने घटी थी । वे इससे इतना प्रभावित हुए कि अभियन्ता अपना धन्धा छोड़कर "प्राणियों में अतीन्द्रिय सामर्थ्य" विषय पर अनुसन्धान करने के लिए एक शोधशाला खोल बैठे । अब वे जेम्स ए. डिकार्डो नामक एक प्राणि-विज्ञानी के साथ इसी विषय पर शोध कर रहे हैं ।

दोनों वैज्ञानिकों का विश्वास है कि विभिन्न जीवधारी अपनी अन्तर्निहित अतीन्द्रिय सामर्थ्य का लाभ इसलिए उठा पाते हैं, क्योंकि वे सर्वथा प्राकृतिक जीवन जीते और कृत्रिमता से दूर रहते हैं । जबकि मनुष्य आज अस्वाभाविकता से इस कदर लद चुका है, कि उसका जीवन प्राकृतिक न रह कर एक प्रकार से यान्त्रिक बन गया है, इस कारण उसकी शक्तियाँ कुण्ठित हो गई हैं, यदि वह भी स्वाभाविक जीवन जी सके तो कोई कारण नहीं, कि उसमें वैसी पूर्वाभास की क्षमताएँ विकसित न हो सकें । जैसे मानवेत्तर प्राणियों में हैं ।

पराज्ञान का कुछ अर्थ भी निकालें

जीवन असामान्य सत्ता का ही सृजन नहीं, वह स्वयं भी उसी तत्व से बना होने के कारण उन सभी पराशक्तियों के परिपूर्ण बन कर आया है । जिनकी महात्तत्व में कल्पना की जाती है । पूर्वाभास मन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात जान लेना, अपनी भावनाओं के सन्देश औरों तक पहुँचाना, प्राणों पर नियन्त्रण आदि अनेक प्रकार के असामान्य चमत्कार देखकर उपरोक्त धारणा की ही पुष्टि होती है । आत्म जिज्ञासायें तब और भी प्रगाढ़ उठती हैं, जब देखने में आता है कि सृष्टि के अन्य जीवों में भी यह क्षमताएँ विद्यमान हैं । इससे यही सिद्ध होता है कि विराट् जगत छोटे-बड़े जिस रूप में अभिव्यक्त है—सब मूल चेतना का ही अंश है । अन्य जीवों को तो ऐसी सुविधाएँ और वृद्धि नहीं मिली, पर मनुष्य को वह सभी सुविधाएँ सुलभ हैं; जिनसे वह अपने अतीन्द्रिय स्वरूप का बोध कर सके । आत्म-तत्व की खोज में जीवन की सार्थकता है । केवल कुछ उदाहरण जैसी क्षमताएँ समस्या का हल नहीं कर सकतीं । ऐसी क्षमताओं से तो पशु-पक्षी भी विभूषित रहते हैं । भारतीयों में उत्तर की ओर सिरहाना लेकर सोना वर्जित है । इसे काफी समय तक अन्धविश्वास निरूपित किया गया, किन्तु जर्मनी के वैज्ञानिक डॉ. बेकर ने यह सिद्ध कर दिया कि वस्तुतः हमारा मस्तिष्क उत्तरी ध्रुव की चुम्बक से प्रभावित होता है, तो बाल बुद्धि मान ली गई । कई बार ऐसा होता है कि लोग किसी ऐसे स्थान में पहुँच जाते हैं । जहाँ दिशा ज्ञान में दिक्कत आती हैं, तो वे दिक्सूचक यन्त्र से यह जानने का प्रयास करते हैं कि उत्तर दिशा किधर है । मनुष्य जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को इतना आश्रित रहना पड़े अचरज ही है, जबकि डॉ. बेकर ने एक अन्य प्रयोग में यह सिद्ध कर दिया कि दीमक जैसे जीवों को भी चुम्बकीयता का पता रहता है, उन्हें कृत्रिम चुम्बक क्षेत्र के सहारे सीधे लिटाने का प्रयास किया गया, किन्तु वे तब तक न सो सकीं जब तक कि वे सही स्थिति में न आ गई ।

रेडियो सक्रियता का माप के लिए फ्रेन्च वैज्ञानिकों ने "गाहगर-वाउण्टर" यन्त्र बनाया, जिसकी कीमत लाखों डालर पड़ती थी । इस बीच जीव शास्त्रियों ने जब यह संकेत दिया कि चींटियों में यह सूक्ष्म संवेदना तो जन्मजात होती है तब से इन यन्त्र का निर्माण बन्द कर दिया गया और अब इस कार्य के लिए वहाँ विधिवत चींटियों की ही सेवा ली जाती है ।

बाँस में कभी फूल नहीं देखे जाते, इनकी जड़ें ही वंशवृद्धि करती रहती हैं, किन्तु ५० वर्ष बाद बाँस में फूल आते और उनमें से फल भी निकलते हैं । ५० वर्ष की अवधि में यदि एक चूहे की वंशवृद्धि प्रारम्भ हो तो उस समय तक ५० पड़पोते पहुँच जायेंगे जिन्हें यह पता भी नहीं होगा कि बाँस में भी फल होते हैं; किन्तु चूहे अपनी सुगन्ध विश्लेषण भी सूक्ष्म बुद्धि से इस फल की उपयोगिता ताड़ कर उसे खूब खाते हैं यह फल उनकी प्रजनन क्षमता को कई गुना अधिक बढ़ा देता है । यह ज्ञान उन्हें किस तरह मिलता है । इस गुत्थी को जीवशास्त्री सुलझा नहीं पाये ।

भूटान नरेश वॉगचुक जिम्मेदोरगी पर किसी ने बम फेंका । बात १९६५ की है । आक्रमणकारियों का बहुतेरा पता लगाया गया, किन्तु अच्छे से अच्छे जासूस असफल रहे, अन्तः कार्य सेना को सौंपा और सेनाधिकारियों ने अपने प्रशिक्षित कुत्ते अलेकसी को इस बात के लिए चुना । कुत्ते ने हथगोले के टुकड़े सूँघे, यह एक विलक्षण बात है कि उन टुकड़ों में बारूद के अतिरिक्त और कोई गन्ध आये, किन्तु इसे कुत्ते की घ्राण शक्ति का चमत्कार ही कहना चाहिए कि उसने टुकड़े में लिपटी हुई मानव गन्ध को पहचान लिया और महल से एक ओर चल पड़ा । घटना को काफी समय हो गया था, तब स्थान की गन्ध सौ बार धुल चुकी होती है, किन्तु कुत्ता वहाँ से चलकर तीन मील दूर एक मकान में रुका, फिर वहाँ से भी आगे चलकर एक बौद्ध मन्दिर में जा घुसा, जहाँ एक आदमी छुपा बैठा था । कुत्ते के संकेत पर उसे पकड़ लिया गया उसने न केवल अपराध स्वीकार किया, अपितु यह भी पता चला कि वह मकान भी उसी का था जहाँ वह गोले फेंकने के बाद कुछ देर रुका था ।

कई बार ऐसा होता है कि जंगल में शेर बैठा होता है तथा हिरण उसके समीप ही घास चर रहा होता है फिर भी वह न तो भयभीत होता है, न आतंकित, क्योंकि उसे ज्ञात रहता है कि शेर भूखा होने पर ही शिकार करता है और इस समय उसे ऐसी कोई परेशानी नहीं है । हिरण मन की बात कैसे जान लेता है ? जीव वैज्ञानिक इस आश्चर्यजनक तथ्य की शोध में लगे हुए हैं, पर अभी तक कुछ जानकारी मिली नहीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शेरनी जब किसी ऐसे युद्ध के लिए चलती हैं, जिसमें शत्रु समान शक्ति का हो तो वह अपने बच्चों को किसी सुरक्षित स्थान पर बैठा जाती है । युद्ध बच्चों की आँखों से ओझल चलता है । बच्चे इसी स्थान पर बैठे रहते हैं, किन्तु इस बात की अनुभूति उन्हें न जाने कैसे हो जाती है, कि अब युद्ध समाप्त हो गया और माँ की विजय हुई । वे शेरनी के पास विजय के बाद बिना बुलाये चले जाते हैं ।

आधुनिक परामनोविज्ञान पूर्वाभास दूर संचार, तथा स्वप्नों में होने वाले भविष्य दर्शन को पाँच ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न व अतीत-छठवीं सम्वेदना (सिक्स्थ सेन्स) की संज्ञा दी है । इस छठवीं को आज बड़ी जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से देखा और खोजा जा रहा है ।

न केवल मनुष्य अपितु जीवों में इस तरह की सूक्ष्म क्षमताएँ पायी गईं तो आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था । आज भी समुद्रों में चलने वाले जहाजों में यदि चूहे निकल कर स्वेच्छा से भाग निकलें तो नाविक आने वाले संकट का अनुमान कर लेते हैं, जबकि अनेक बार अत्यधिक आधुनिक किस्म के यन्त्र भी सही जानकारी देने में असमर्थ रहते हैं ।

बर्मा की कलादान घाटी में एक बिल्ली की एक विचित्र समाधि बनी है । इसके चारों ओर लिखा है—"रैडी, की यह बिल्ली हमारी समय पर सहायता न करती तो हम मारे जाते और पराजित होते"—इन शब्दों में वास्तव में जीवों में अद्‌भुत अतीन्द्रिय क्षमता का इतिहास अंकित है । बात उन दिनों की है जब बर्मा में अंग्रेजों और जापानियों के बीच युद्ध चल रहा था । एक दिन अंग्रेजों की टुकड़ी ने एक जापानी टुकड़ी पर आक्रमण कर दिया । जापानियों ने पीछे हटने का नाटक खेला वास्तव में वे पीछे नहीं हटे वरन् खन्दकों में छिप गए पर बाहर वे इस तरह सामान बिखेर गए मानों वे सचमुच भाग गए हों । एक मेज पर ताजा पका पकाया खाना भी छोड़ गए, उसे देखते ही अंग्रेज उस खाने पर टूट पड़े, किन्तु अभी वे प्लेटों तक नहीं पहुँच पाये थे उनमें से एक सर्जेंट रैडी की काली बिल्ली उस खाने पर जा टूटी और बुरी तरह गुर्राकर अंग्रेज सैनिकों को पीछे हटा दिया अंग्रेजों ने बिल्ली को धमकाया भी, वह अपनी क्रुद्ध मुद्रा में तब तक गुर्राती ही रही, जब तक वहाँ एक भयंकर धमाका नहीं हो गया । वास्तव में उस खाने के साथ बारूदी सुरंग का सम्पर्क जुड़ा था जो उन सैनिकों के प्राण ले सकता था पर बिल्ली ने अपनी आत्माहुति देकर न केवल अपनी स्वामिभक्ति का परिचय दिया, अपितु उसने यह भी बता दिया कि जीव जिन्हें हम तुच्छ समझते हैं, किस तरह विलक्षण आत्मिक गुणों—अतीन्द्रिय क्षमताओं से ओत-प्रोत होते हैं ।

इसी तरह की एक घटना जर्मनी के साथ अंग्रेजों के युद्ध में कैम्बरवेल में घटी थी । मिस्टर ज्योफरी नाम का एक अंग्रेज ने एक बिल्ली पाल रखी थी । एक दिन जर्मनी बमवर्षक जहाज कैम्बरवेल से गुजरे । सारा परिवार घबड़ाकर मकान के एक कोने में दुबक गया तभी उनकी बिल्ली बगीचे के तहखाने से दर्दनाक ध्वनि में म्याऊँ-म्याऊँ चिल्लाने लगी । पहले तो ज्योफरी उसे बुलाते रहे । पर जब वह न आई तथा उसी तरह चिल्लाती रही तो उन्होंने समझा कि बिल्ली मर गई है, सारा परिवार उसके पास पहुँचा अभी वे तहखाने में घुसे ही थे कि दुबारा जहाजों ने आक्रमण कर बम बरसाए और वह मकान बुरी तरह विस्फोट के साथ मलवे में बदल गया । बिल्ली के इस अतीन्द्रिय ज्ञान के कारण ही ज्योफरी व उनका परिवार बच सका ।

इस अतीन्द्रिय ज्ञान से आत्म चेतना की दुर्लभ अवस्था सिद्ध होती है । उसे प्राप्त करने में ही मानवीय पुरुषार्थ की सार्थकता है । हमें सामान्यतः पशु-प्रवृत्तियों तक ही केन्द्रित न रह कर सृष्टि के सूक्ष्म अस्तित्व के अध्ययन अनुभूति की भी अभिरुचि बढ़ानी चाहिए तभी मनुष्य जीवन जैसी परमात्मा की अमूल्यकृति की उपयोगिता और उपादेयता सिद्ध होगी ।

⌘⌘⌘

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवन काल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती । करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युगनिर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है । उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया । स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे । भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता । वे ही लोग जो कभी राष्ट्रनिर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़ पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद कांग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी ।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया । गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रंगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं । जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका-मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोबा जी के चले जाने के बाद अस्तित्त्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया । परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे । १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि. संवत् २०६८ में जन्में राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराम मत्त कहलाने वाले, आचार्य श्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रांति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माता जी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका-अपनी लेखनी से लिखी ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उनने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची । सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रांति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्व दर्शन से जोड़ते हुए चले गये । गायत्री परिवार रूपी विराट वट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में संपन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरु सत्ता को देखकर त्याग करने की यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी । उनने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेघ के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये । अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से संपन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में । प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक आँवल खेड़ा से अपनी जन्मभूमि से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी 12 वर्ष पूर्व आरंभ हो गयी थी । इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंत: स्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना । किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा

हवेली कहा जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जोकि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ बनाई गई। १९५३ में एवं क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों- प्रज्ञा संस्थानों भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों-चरणपीठों का महत्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्य पूर्ण था।

परम पूज्य गुरुदेव की महत्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ, इस प्रकार हैं-

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शांतिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष जन्मा संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ब्राह्म मुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर १९११ के दिन आती थी। एक श्री मंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित-पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ जिसे पूरे गाँव का एक मात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशा धारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धन राशि द्वारा विनिर्मित्त है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ-एवं कन्या इंटर कालेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा एवं एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित संस्कारवान आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव निर्माण की सांस्कृतिक-भावनात्मक क्रांति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीया मण्डी, मथुरा में स्थित हैं। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य

लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुखी, तनाव ग्रसित व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी टेण्ड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजा घर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में 1942-43 में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ सहस्र कुण्डीयज्ञ की आधार शिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन विस्तार डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परम वंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षत: देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू० गुरुदेव की साधना स्थली व प्रात: काल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्य श्री ने युग निर्माण योजना के शत सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युगनिर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युगनिर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार- ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुन: एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने,

सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया । इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने 24 कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़ गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था । पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्त्तन सत्र जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े । यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का तांता लगा रहता है । पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं ।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्त ऋषियों की मूर्त्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को संपन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार संपन्न होते हैं। इस बीच परम वंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ संपन्न करना आरम्भ रखा । देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया । इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा ।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक अकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थ स्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया । यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी । स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है ।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परम-पूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवी स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७९ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था । वर्तमान शांतिकुंज-गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्त्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फल-श्रुतियों सहित स्थापित हैं । द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्त्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये । इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है । यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों-जैव विद्युत आदि पर पड़ा यह देखा जाता है । विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं । तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित हैं, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं । यहाँ प्राय: ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं । यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता ।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीला संदोह रचकर चली गयी । प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान २४००० से अधिक प्रज्ञा मण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जायें तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है ।

ooo

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे--

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५ संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवनः एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete Work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org